Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

INDIA
TODAY

1989
Pt 3

G. K. V.
HARDWAR

In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078593

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078593

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31 अक्तूबर, 1989

इंडिया टुडे

...ावी नीति: लगन और दौरों की मुहिम

क्रिकेट: विवादों के भंवर से बाहर

राजीव गांधी

अयोध्या में मंदिर निर्माण की राम शिला के साथ बजरंग दल कार्यकर्ता

सांप्रदायिकता

नफरत के शोलों को हवा

उग्रपंथी हिंदुओं ने मुस्लिम कट्टरवाद का जवाब देने के लिए राम शिला पूजन अभियान छेड़ दिया है. राजनैतिक दल सांप्रदायिकता को शह दे रहे हैं. और दंगे शहर दर शहर फैल रहे हैं. इन सबके चलते आगामी चुनाव में भारी हिंसा की आशंका है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

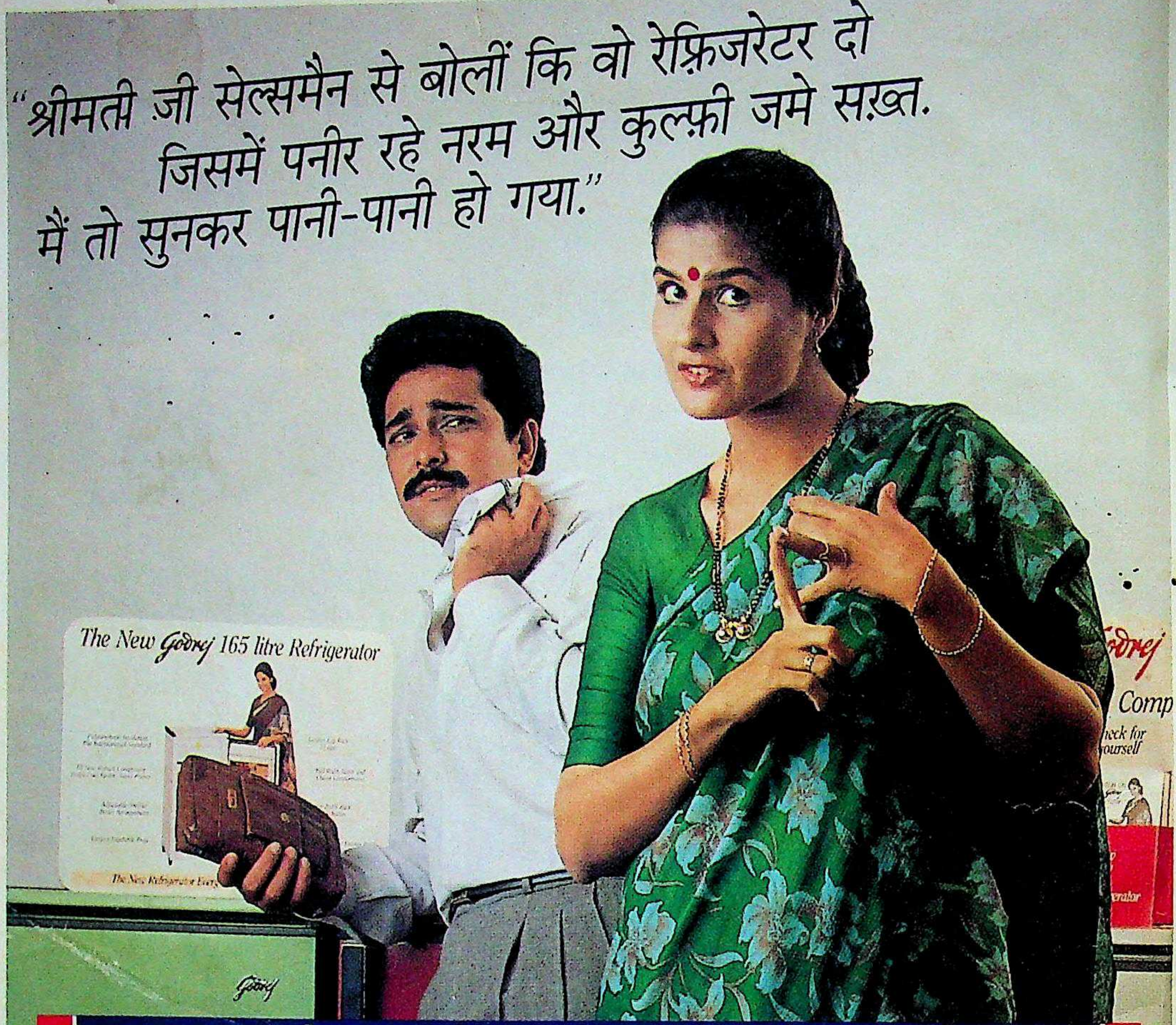

वजह अपनी-अपनी, पसंद मगर एक — गोदरेज.

MEGA FORCE

बिजली बचानेवाला मज़बूत कम्प्रेसर.
कूलगार्ड - अंतर्राष्ट्रीय मानदंडोंवाला 100% पॉलीयूरीथेन इन्स्युलेशन - के सहयोग से यह **तेज़ी से ठंडा करे** और **बिजली भी बचाये.**
अन्य खूबियाँ :
स्पेक्ट्रम - तरह-तरह के ख़ास लुभावने रंगों की अभूतपूर्व श्रेणी .
अल्ट्रास्पेस - ख़ास डिज़ाइन की बदौलत अंदर सामान रखने के लिए ज़्यादा जगह.

देश के कोने-कोने में फैले विक्रेताओं द्वारा तुरंत और भरोसेमंद सेवा.

गोदरेज. सालोंसाल से लोगों का भरोसेमंद नाम.जहां हर दिन हम नयी से नयी तकनीक अपनाने में लगे हैं. आज हमारे अत्याधुनिक स्वचालित कारखाने में सचमुच अंतर्राष्ट्रीय दर्जे के रेफ्रिजरेटर बनाये जाते हैं. क्योंकि हम चाहते हैं कि आपको बस, बेहतरीन ही मिले.

भरोसा. पूरा भरोसा. Godrej®

HTA 1667

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नफरत के शोलों को हवा

जैसे-जैसे 9 नवंबर नजदीक आ रहा है, माहौल में तनाव बढ़ता जा रहा है. यह तारीख अयोध्या के विवादास्पद स्थान पर मंदिर के शिलान्यास के लिए तय की गई है. राजनैतिक दल चुनाव के लिए सांप्रदायिक तनाव का फायदा उठाने की खतरनाक कोशिशें कर रहे हैं.

आवरण कथा 26

लीपापोती का पर्दाफाश

'हिंदू' द्वारा ताजा सबूत छाप देने से बोफोर्स विवाद फिर गरम हो उठा है. इससे अखबार के संपादक जी. कस्तूरी और एसोसिएट संपादक एन. राम के बीच मतभेद पैदा हो गए. राम का आरोप है कि कस्तूरी ने सरकार के डर से रहस्योद्घाटनों पर रोक लगा दी.

खास रपट 18

दान और दौरों की मुहिम

राजीव गांधी ने चुनाव से पहले तूफानी दौरे शुरू कर दिए हैं. पिछले छह हफ्तों में वे 200 से भी ज्यादा चुनाव क्षेत्रों में घूम आए. इस दौरान उन्होंने 8,000 करोड़ रु. की परियोजनाओं की आधारशिलाएं रखीं और विपक्ष पर हल्ला बोलने का अभियान भी जारी रखा.

खास रपट 38

उजियारे की कौंध

चौदह लाख तिब्बतियों के आध्यात्मिक व राजनैतिक नेता दलाई लामा को अब मिला नोबेल शांति पुरस्कार तो काफी पहले ही मिल जाना चाहिए था. लेकिन तिब्बत में चल रहे चीन विरोधी आंदोलन के संदर्भ में इस पुरस्कार को राजनैतिक रंग मिल गया है.

खास रपट 42

हमलों के बावजूद आगे कूच

देश का तीसरा सबसे बड़ा औद्योगिक घराना—रिलायंस इंडस्ट्रीज—4,000 करोड़ रु. की अपनी भारी-भरकम विस्तार योजना शुरू करने जा रहा है. केंद्र में सत्तासीन दल के साथ नजदीकी रिश्तों के लिए मशहूर यह घराना आजकल कई विवादों से भी घिरा है.

विशेष लेख 64

विवादों के भंवर से बाहर

नए कप्तान और पुराने खिलाड़ियों वाली भारतीय क्रिकेट टीम चुनौतियों के ताजा मौसम में हाथ आजमाने के लिए तैयार हो चुकी है. टीम को वेस्ट इंडीज दौरे के सदमे और उसके बाद बोर्ड से हुए विवाद से भी उबरना है. साथ में, कप्तान के. श्रीकांत से बातचीत.

खेलकूद 84

अगले पन्नों पर

कसौटी..........9
तेवर..........10
राजरंग..........11
हिंदोस्तां हमारा..........12
बीता पखवाड़ा..........17
खास रपट
लीपापोती का पर्दाफाश..........18
आवरण कथा
सांप्रदायिकता: नफरत के शोलों को हवा..26
खास रपट
राजीव गांधी:
दान और दौरों से दिल जीतने की मुहिम.38
दलाई लामा: निराशा के घटाटोप में
उजियारे की कौंध..........42
आजकल
चुनाव: अटकलबाजी का आसरा..........47
वायुसेना: कलाबाजी की जोखिम..........48
आंध्र प्रदेश: फिर सड़कों पर..........49
गुजरात: शर्मनाक कार्रवाई..........50
उत्तर प्रदेश: उम्मीदों पर पानी फिरा..........51
जम्मू-कश्मीर: लापरवाही का फल..........52
विशेष लेख
अंबानी: हमलों के बावजूद आगे कूच..........64
कांशीराम-टिकैत-शहाबुद्दीन:
खेल बिगाड़ सकने की ताकत..........70
पर्यावरण: हार न मानने का हौसला..........74
व्यापार चक्र..........79
कारोबार
शेयर बाजार..........81
मुलाकात
हरकिशनलाल भगत:
'दूरदर्शन भारत दर्शन है'..........83
खेलकूद
क्रिकेट:
विवादों के भंवर से बाहर..........84
तीरंदाजी: तीर निशाने पर..........93
सुर-ताल
सारंगी:
विलक्षण वाद्य के विलुप्त होने की व्यथा...94
आरपार..........101
कहानी..........104
किताबें..........108
परदे के उस पार..........110
चर्चित चेहरे..........112

आवरण: भवान सिंह

गु० कां० विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मॉडर्न आकर्षण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

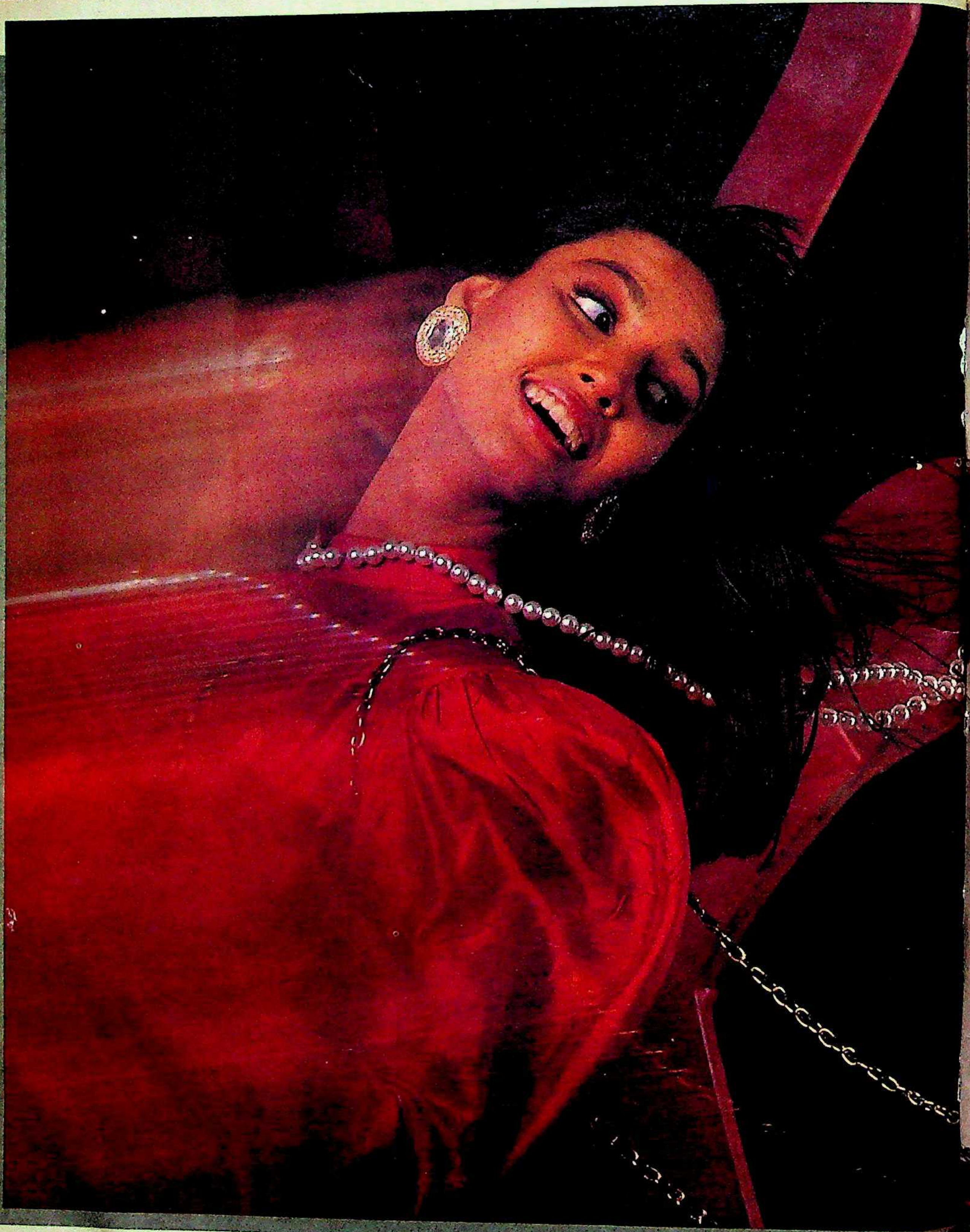

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

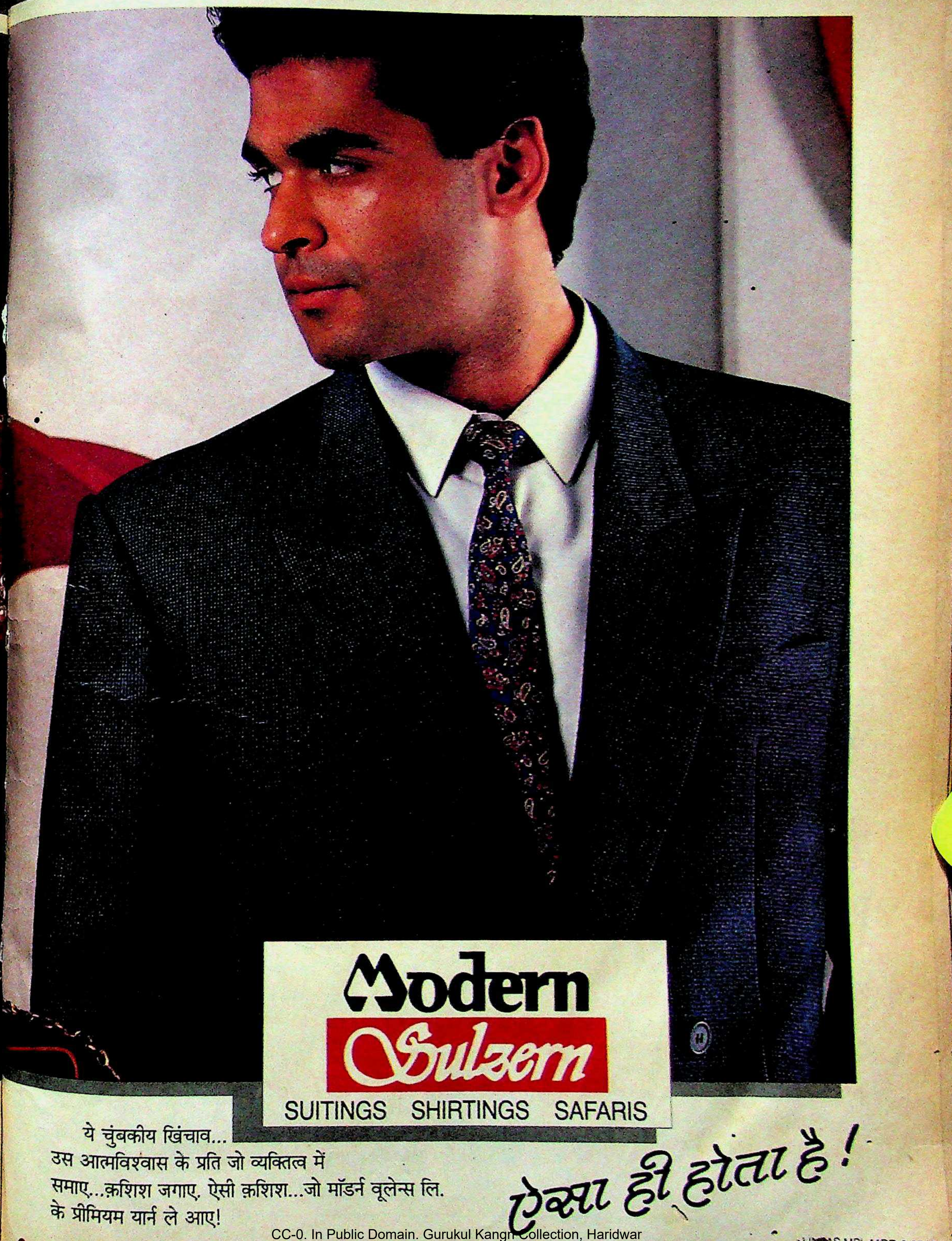

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एप्कोलाइट से आप अपने घर की दीवारों को रंग सकते हैं नीला या नीला या नीला या नीला या नीला या नीला या नीला.

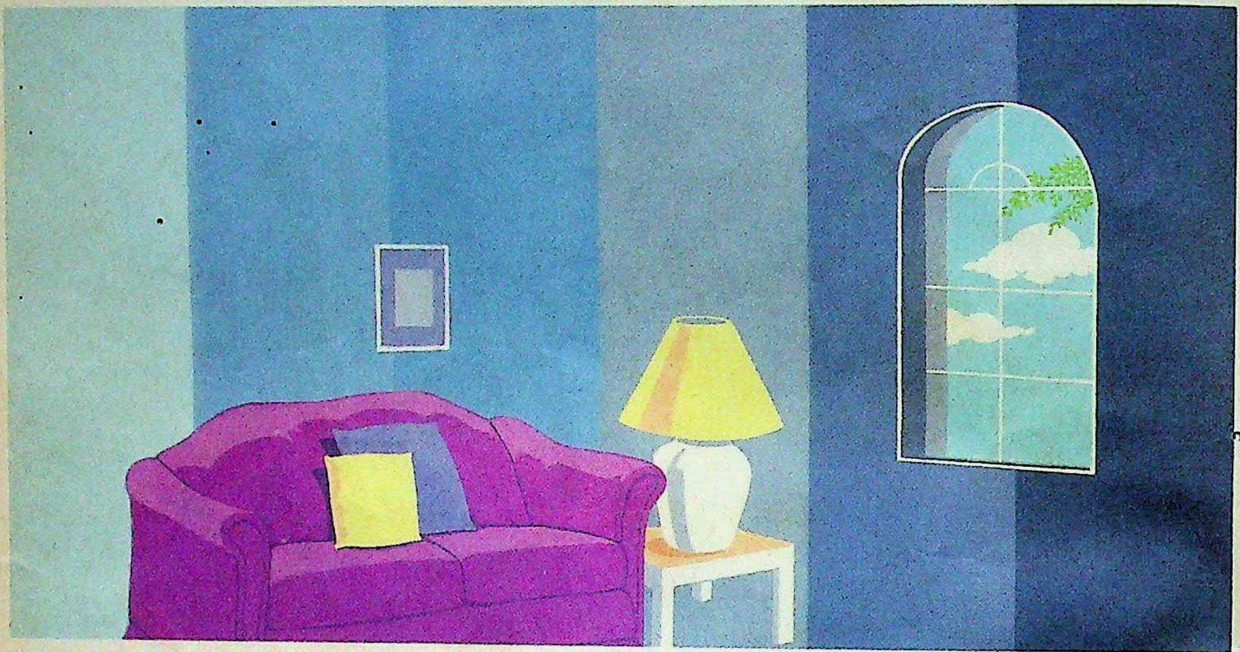

रंग चाहे जो भी हो, एप्कोलाइट में किसी भी और पेन्ट से कहीं ज़्यादा शेड हैं. १५० से भी ज़्यादा शेड– सब एकदम तैयार.

नीले रंग की बात छिड़ी है तो आपको बताएं कि सिर्फ़ इसी में कुल मिला कर २६ शेड हैं. सर्फ़ ब्लू, पिजन ब्लू, मैनर ब्लू, ब्लू बेल, ब्लू चिप, सैफ़ायर, स्टारी नाइट, हॉलीडे स्काय, स्काय वे, पोर्सिलेन क्लाउड... और १५ और भी.

ऐसे ही दिल जीतने वाले और भी कितने सारे रंग हैं. एप्कोलाइट के रंग बिरंगे शेड कार्ड से अपनी पसन्द का रंग चुनिए और अपने घर की साजो सज्जा से मेल खाते रंग से घर की दीवारों को सजाइए रंग भी इतने सारे कि जैसा मन चाहे, वैसा रंग मिल जाए.

सभी रंग इस्तेमाल के लिए एकदम तैयार हैं. इसलिए इनको मिलाकर अपनी पसन्द का शेड तैयार करने की भी ज़रूरत नहीं. आपकी पसन्द तो हमारे एक एक रंग में बसी हुई है. बस इन्तज़ार है आपकी कल्पना का. एक पल सोचिए आपको कौन सा रंग चाहिए और झट जाकर ले आइए. सभी रंग आसानी से मिल सकते हैं.

एप्कोलाइट ही लाइए – क्योंकि सिर्फ़ एप्कोलाइट ही १०० % शुद्ध ऐक्रिलिक इमल्शन है.

१५० से भी ज़्यादा शेड्स के लिए.
एशियन पेन्ट्स
COLOUR CORNER दुकान.

O&M/4233/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RT-1309
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

वर्ष: 3, अंक: 24, 16-31 अक्तूबर 1989

प्रधान संपादक
अरुण पुरी

वरिष्ठ संपादक
प्रभु चावला

संपादकीय विभाग
जगदीश उपासने, अशोक कुमार, विजय क्रांति, ओम प्रकाश सराफ, अरविंद मोहन मिश्र, अ.ला. प्रजापति, विमल पाराशर, हरिमोहन मिश्र, हरजिंदर, आशुतोष चतुर्वेदी

प्रोडक्शन
अनिल शर्मा, सुबाचन यादव, सुनील सैनी

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली.

■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली.

■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई.

■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली • फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. • कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. • लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

जनता क्यों भुगते

चुनाव के लिए शुरू की गई जवाहर रोजगार योजना और पंचायती राज जैसे चोचलों का कोई फायदा लोगों को न तो मिलना था और न मिला. पर अब चुनाव के अर्थशास्त्र ने जिस तरह महंगाई (आवरण कथा, 15 अक्तूबर) बढ़ाई है उसने गरीब और मध्यमवर्गीय लोगों की कमर ही तोड़ दी है. पर इसका दोष किसके मत्थे मढ़ा जाए—सरकार के, कांग्रेस (इ) के या चुनाव व्यवस्था के.

—**दिनेश कुमार गर्ग**, आगरा (उ.प्र)

■ चीनी की मिठास तो अब उन्हीं लोगों से पूछिए जिनकी जेबों में चीनी उद्योग ने 40 करोड़ रु. पहुंचाए हैं या जिन्होंने चीनी की कालाबाजारी से अपने खजाने भरे हैं. हमें तो चीनी 14 रु. किलो में भी कहीं नहीं मिल रही. —**अप्पू झा**, मोतिहारी (बिहार)

बड़ों की चिंता

हवाई हादसों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है. उनमें उतने लोग भी नहीं मरते जितने हर साल रेल तथा सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं. फिर भी हमारा ध्यान वायु सेवाओं की 'निरंतर अवनति की ओर' (15 अक्तूबर) ही ज्यादा खींचा जाता है. वजह एकदम साफ है: मामला अमीर वर्ग का है. जिस लापरवाही और घटिया प्रबंध को हवाई हादसों का कारण माना गया है वह तो सभी तरह की रेल और सड़क दुर्घटनाओं में भी एक अहम वजह होती है.

—**मीनाक्षी त्रिखा**, अबोहर (पंजाब)

भारी महत्वाकांक्षाएं

'दिग्गज का दावा' (15 अक्तूबर) में 'भावी राजनीति और विपक्षी एकता के जनक' देवीलाल के बारे में कहा गया है कि वे 'किंग मेकर' की अपनी भूमिका से आत्मसंतुष्ट दिखे, जबकि हर कोई जानता है कि उनकी निगाह दिल्ली के तख्त पर लगी है और वे 'किंग मेकर' बनना चाहते हैं तो बस अपने बेटों के लिए. खुद तो वे 'किंग' बनकर ही मानेंगे.

—**राजेश चड्ढा**, इंदौर (म.प्र.)

■ अपने 75वें जन्म दिवस पर लाखों की भीड़ और विपक्ष के सभी बड़े नेताओं को जुटाकर देवीलाल ने दो बातें साबित कर दीं. एक तो यह कि वे उत्तर भारत के सबसे असरदार नेता हैं और दूसरे विपक्ष के सभी नेताओं को एक मंच पर खड़ा करने का माद्दा सिर्फ उन्हीं में है.

—**राम शर्मा**, कलकत्ता (प. बंगाल)

सचाई नहीं छुपती

'बाजी पलटने की चतुराई' (15 अक्तूबर) से तो लगता है कि अजेय सिंह के विदेशी खाते का मामला भी उतनी ही टेढ़ी खीर बन गया है जितना कि बोफोर्स घोटाला. लेकिन लोगों को भरमाया नहीं जा सकता. लोग जानते हैं कि सच क्या है.

—**अवधेश कुमार**, बहराइच (उ.प्र.)

काल्पनिक कहानी

औरतों में 'वर्जनाओं से मुक्ति की चाह' (15 अक्तूबर) पता नहीं जागी कि नहीं लेकिन आपने भारी-भरकम विशेष लेख जरूर लिख डाला. पर उन मर्दों को क्या कहिएगा जिनके भीतर यह चाह हर वक्त जगी बैठी रहती है, बस उन्हें मौका ही नहीं मिलता. —**सरला भारती**, पटना (बिहार)

■ यह किन औरतों की कहानी है? किस वर्ग की औरतों की बातें हैं? ये सब किन वर्जनाओं से मुक्ति के किस्से हैं? जिस वर्ग की औरतों में यह बदलाव आ रहा है उसमें क्या कुछ वर्जनाएं थीं भी? ऐसी कल्पनाएं क्यों गढ़ते हैं आप? कम-से-कम यह कहानी तो भारतीय औरतों की नहीं ही है.

—**रमेश रसिक**, नई दिल्ली

■ भारतीय महिलाओं के एक तबके के नजरिये में आ रहा बदलाव भविष्य की ओर एक संकेत है. और अगर यह बदलाव आया तो इन वर्जनाओं के बोझ से महिलाएं ही नहीं वरन पुरुष भी या यों कहें कि पूरा समाज ही मुक्त हो जाएगा. यह स्थिति शायद ठीक न होगी.

—**रामेश्वर प्रसाद**, गया (बिहार)

O&M/4233/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखद आश्चर्य जैसे

'अंदेशे में लिपटी उम्मीदें' (आवरण कथा, 30 सितंबर) में नारायणदत्त तिवारी के महत्व को बखूबी रेखांकित किया गया है. दूसरे नेताओं की तरह वे आसमान से नहीं टपके वरन जमीन से जुड़े रहे हैं. बाकी इंकाइयों की तरह विपक्ष पर छिछले आरोप लगाते रहने की जगह तिवारी अपने काम में यकीन रखते हैं. उनके पिता न राजा थे और न मंत्री. तिवारी जी तो हमारे स्वतंत्रता आंदोलन की देन हैं.

—मनोज पटेल, इलाहाबाद (उ.प्र.)

आवरण कथा तिवारी जी के व्यक्तित्व का दर्पण ही है. इस चतुर एवं सक्षम नेता की निष्ठा को यदि केंद्रीय नेतृत्व शक की दृष्टि से देखता है तो यह उसके लिए आत्मघाती ही होगा. तिवारी जी शायद उत्तर प्रदेश के एकमात्र कांग्रेसी नेता हैं जिन्हें कांग्रेसियों के अलावा विपक्षी भी आदर की दृष्टि से देखते हैं.

—राजेंद्र प्रसाद पांडेय, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ नारायणदत्त तिवारी के संपूर्ण राजनैतिक जीवन का जिस बेबाकी और निष्पक्षता से आपने आकलन किया है वह प्रशंसनीय है. इसमें कोई शक नहीं कि तिवारी अपनी बेदाग और उज्ज्वल छवि, प्रशासनिक कुशलता और राजनैतिक अनुभव के आधार पर इंका की उम्मीद बनकर उभरे हैं.

—मुकेश गुप्ता 'अरुण', गाजियाबाद (उ.प्र.)

■ आज की खोखली राजनीति में तिवारी जी जैसे योग्य और विनम्र नेता भी सुखद आश्चर्य की तरह हैं. बेहतर होता यदि हमारे प्रधानमंत्री उनसे सबक लेने का प्रयास करते और विपक्ष के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते. पर अफसोस कि इंका इन नेताओं का महत्व तभी समझ पाती है जब चुनाव नजदीक आने लगते हैं.

—सीमा अग्रवाल, कानपुर (उ.प्र.)

सुविधा नहीं रिश्वत

अमेठी की तरह दो-चार शहरों की 'पांचों उंगलियां घी में' (30 सितंबर) डालकर क्या शासक दल अपने बिखरे अस्तित्व को बटोरने में सफल होगी. चुनाव जीतने में बाधा विपक्ष नहीं है बल्कि कांग्रेस के टूटे मूल्य और बिखरता अस्तित्व है.

—कैलाश कोठारी, देहरादून (उ.प्र.)

■ अमेठी के बारे में पढ़कर पता चला कि नेता किस तरह जनता को सुविधाओं की रिश्वत देकर अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं. राजीव गांधी को कोई हक नहीं कि वे देश का 15 करोड़ रु. अमेठी को सुविधा-संपन्न बनाने में खर्च कर दें जबकि देश के अनगिनत शहर और गांव बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं.

—मुनीश कुमार, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

मन नहीं जीत पाए

'नाराजगी के प्रति नजरिया बदले' (कसौटी, 30 सितंबर) पढ़कर लगा कि फारूक सरकार अपने खिलाफ आवाज उठाने वालों को देशद्रोही करार देकर जबरदस्ती सत्ता पर काबिज है. कश्मीर की जनता पाक समर्थक इसलिए है कि राजीव सरकार उनके हितों की रक्षा नहीं कर सकती. फारूक जनता का मन नहीं जीत पाए और अब प्रेस पर प्रतिबंध लगाकर वे समस्या को और जटिल बना रहे हैं. यदि समस्या का समाधान नहीं किया गया तो कश्मीर भी पंजाब की तरह आतंक के साये में डूब जाएगा.

—ललित कुमार कालरा, कानपुर (उ.प्र.)

जोहान्नसबर्ग बनेगा?

'खाकी वर्दी का खूंखार चेहरा' (30 सितंबर) भयभीत करने वाला है. पुरुषों के

साथ-साथ महिलाओं पर अमानवीय अत्याचार इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि अब पंजाब किसी के भी हाथ में सुरक्षित नहीं है. यदि महिलाओं पर इसी तरह अत्याचार चलता रहा तो पंजाब भी दक्षिण अफ्रीका का जोहान्नसबर्ग बन जाएगा.

—गुरुदेव सिंह 'पाश', सेंधवा (म.प्र.)

राष्ट्रसंघ पहल करे

मानसिक असंतोष एवं कुंठा मनुष्य को किस सीमा तक ले जा सकते हैं, 'द्वीप में दहका दावानल' (30 सितंबर) इसका जीता-जागता प्रमाण है. भारत के राजनैतिक दल अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों का नाश करते जा रहे हैं और भारत में जैसे सांप्रदायिक दंगे सिर उठा रहे हैं उससे आश्चर्य नहीं कि श्रीलंका जैसी परिस्थितियां भारत पर भी हावी हो जाएंगी.

—आर.एन. माहेश्वरी, पिपरिया (म.प्र.)

■ संयुक्त राष्ट्रसंघ को चार्टर के अनुच्छेद 2 एवं 7 के मुताबिक श्रीलंका में तत्काल सुरक्षा परिषद के माध्यम से हस्तक्षेप करना चाहिए क्योंकि विश्व शांति एवं सुरक्षा की दृष्टि से चिंतन करने की दशा में श्रीलंका की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन किसी मायने में न तो कम महत्वपूर्ण है, न कम खतरनाक. यदि यह कदम तत्काल नहीं उठाया गया तो राष्ट्रीय हित साधने में लगे राष्ट्र इस क्षेत्र को वियतनाम, हंगरी, कंपूचिया, चेकोस्लोवाकिया एवं अफगानिस्तान में बदल सकते हैं.

—जयंत चक्रवर्ती, पटना (बिहार)

■ श्रीलंका की मौजूदा स्थिति एक तरह से हमारी अदूरदर्शी विदेश नीति का ही परिणाम है. मुक्ति चीतों का राजनीति की मुख्यधारा में आने से इनकार, दक्षिण में जविपे द्वारा भारतीय शांति सेना के खिलाफ लोगों को भड़काना, शांति सैनिकों का व्यर्थ का बलिदान और पड़ोसी देशों की शंकालु निगाहों के अलावा हमें क्या मिला.

—सुधांशु 'शशि', पटना (बिहार)

गनीमत है

'हुक्का उठवाने की फिक्र' (आरपार, 30 सितंबर) पढ़कर लगा कि स्वामी सहजानंद ने किसानों का दर्द समझा, चौ. चरण सिंह ने उस पर अमल करने की कोशिश की. लेकिन आज महेंद्र सिंह टिकैत से लेकर अजीत सिंह, देवीलाल और खुद राजीव गांधी किसानों की समस्याओं को राजनैतिक मुद्दा बनाने की कोशिश कर रहे हैं. गनीमत यही है कि अभी उनका स्टेज रिहर्सल चल रहा है.

—वीरेंद्र कुमार, भोजपुर (बिहार)

सतही राजनीति

'चुनावी कृपावृष्टि' (30 सितंबर) ने राजीव सरकार की सतही राजनीति को उधेड़कर रख दिया है. पिछड़े वर्ग को यदि शिक्षा प्राप्त करने में सहायता दी जाए तो ठीक है परंतु नौकरी के लिए सबको समान अवसर मिलना चाहिए. विडंबना तो यह है कि एक पिछड़े वर्ग का कम योग्य व्यक्ति तो नौकरी पा जाता है परंतु वही नौकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष तौर पर उन लोगों के लिए जो अधिक परिश्रम करते हैं।

आप दिनभर समय के साथ भागते हैं. समय सीमाएँ. बैठकें. काम का दबाव. कोई आश्चर्य नहीं कि आप घर पहुँचने तक एकदम थका हुआ महसूस करते हैं.

आज की तेज़रफ़्तार ज़िंदगी के साथ चलने का प्राकृतिक उपाय

केवल एक चम्मच च्यवनशक्ति दिन में दो बार लेने से आप दिनभर ताज़ादम और फुर्तीले बने रहते हैं. आयुर्वेद द्वारा अनुमोदित इसके प्राकृतिक तत्व आपको पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त रखते हैं.

आंवला, च्यवनशक्ति में एक प्रमुख तत्व है, जो विटामिन सी का सबसे समृद्ध स्रोत है.

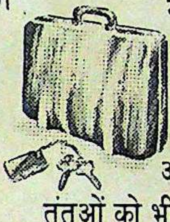

यह न केवल खाँसी-ज़ुकाम की रोकथाम करता है बल्कि आपके शरीर के तंतुओं को भी नई ताकत देता है.

अश्वगंधा, इसकी क्रिया को और भी तेज़ करता है जिससे आप शारीरिक तथा मानसिक दबावों से मुक्ति का अनुभव करते हैं. केसर, जो उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और आपको दिनभर चुस्त बनाए रखता है. द्राक्षा, जो आपको

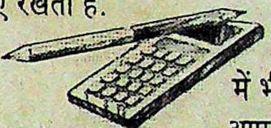

आंत्रशोध की तकलीफ़ों से दूर रखता है और अकरकरा, जो आपके समूचे स्नायुतंत्र को एकदम स्वस्थ बनाए रखता है. इन सभी के गुणों को बढ़ाता है—

ताज़ा प्राकृतिक शहद जो पूरक पोषक तत्व के रूप में भी कार्य करता है. ताकि आप दिन-ब-दिन तरोताज़ा और दमदार रहें जीवन के संघर्ष के लिए तैयार.

च्यवनशक्ति

डाबर च्यवनप्राश के निर्माताओं की ओर से

डाबर इंडिया लिमिटेड
हर्ष भवन ई ब्लाक, कनॉट प्लेस
नई दिल्ली-110001.

everest/d89/DIL/228 hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे अधिक योग्य सवर्ण युवक नहीं पा सकता. —**विभाकर मिश्र**, कानपुर (उ.प्र.)

■ लगता है भारत सरकार शिक्षित बेरोजगारों की योग्यता का गला घोंटकर जातिवाद को बढ़ावा देना चाहती है. सरकार की इस भेदभाव भरी आरक्षण नीति के कारण सामान्य युवा वर्ग में असंतोष फैलता जा रहा है और शिक्षित बेरोजगार युवक गुंडागर्दी और अपराधों की ओर अग्रसर हो रहे हैं.

—**सुनील तेरकर**, जबलपुर (म.प्र.)

घटिया बयान

'दहकते शोलों में नई भभक' (30 सितंबर) में के. सुंदरजी के जवाब से स्पष्ट है कि "सत्य कभी बूढ़ा नहीं होता" किंतु राजीव सरकार सत्य को छिपाने में शुरू से ही युद्ध स्तर पर जुटी हुई है. उद्योगमंत्री जे. वेंगलराव का बयान कि विपक्षी पार्टी 'जनरल सुंदरजी के बयानों से उन्हें सांसद बना देगी' बचकाना एवं अविवेकपूर्ण है. एक केंद्रीय मंत्री स्तर के व्यक्ति की गरिमा के अनुरूप तो बिलकुल नहीं.

—**कुलदीप कुमार श्रीवास्तव**, लखनऊ (उ.प्र.)

खुली जंग में जुटे

'अर्जुन के मारक तीर' (30 सितंबर) पढ़ा. पूर्व मुख्यमंत्री के समर्थक अब खुली जंग के लिए एकजुट हो रहे हैं. इस मामले में

अर्जुन सिंह की रणनीति छापामार शैली जैसी लगती है. इस तीखे आंतरिक संघर्ष के चलते प्रदेश में पार्टी की चुनावी संभावनाएं भी धूमिल हुई हैं.

—**लाखन सिंह गौतम**, गंजबासोदा (म.प्र.)

■ अर्जुन सिंह द्वारा 'युवा विचार मंच' का गठन निश्चय ही युवक कांग्रेस की तर्ज पर असंतुष्टों का समानांतर संगठन है. अर्जुन सिंह मुख्यमंत्री पद पर आसीन थे तब इस प्रकार के मंचों का गठन करने की जरूरत ही नहीं महसूस की गई थी क्योंकि सत्ता की बागडोर उन्हीं के हाथों में थी.

—**सुरेश विश्वकर्मा 'वीरान'**, सतना (म.प्र.)

भ्रामक बातें

विशेष लेख के अंतर्गत 'दो चक्कों से आया चमत्कारी बदलाव' (30 सितंबर) काफी भ्रामक लगा. अन्य शहरों की तो मैं नहीं कह सकता परंतु फिरोजा सिंह के अनुसार 1980 में वे देहरादून में स्कूटर चलाने वाली पहली महिला थी, सत्य से परे है. लेखक ने ओएनजीसी, सर्वे ऑफ इंडिया और बैंकों से संपर्क किया होता तो उन्हें पता चलता कि 1970 के पहले से यहां महिलाओं द्वारा स्कूटर, मोपेड चलाना मामूली बात है. —**जे.एम. बहुगुणा**, देहरादून (उ.प्र.)

कमाल की तेजी

हिंदोस्तां हमारा में 'कमाल का न्याय' (30 सितंबर) रोचक लगा. भारतीय न्यायपालिका की काम की गति को देखते हुए यह एक उपलब्धि है. यदि न्यायपालिका सक्रिय हो जाए तो जनता को राहत मिले.

—**गुंजन कुमार**, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तराजू का तकाजा

आधुनिक जनतांत्रिक समाजों में कानून का शासन ही लोगों को वहशी बनने से, शासकों को तानाशाह बनने से, नौकरशाहों को जीहुजूरिये बनने से, व्यापारियों को मुनाफाखोर शोषक बनने से और प्रेस को निंदा अभियान का औजार बनने से रोकता है. निष्पक्षता, राष्ट्रीय आम सहमति और राष्ट्रीय संस्थाओं में नागरिकों की भागीदारी—यह सब कानून और 'धर्म' में आस्था के कारण ही संभव होता है. इस आस्था को मजबूत करने का काम कार्यपालिका या विधायिका से कहीं ज्यादा न्यायपालिका करती है. इसीलिए न्यायाधीशों को ज्यादा ऊंचे मानदंडों की कसौटी पर कसना चाहिए. उनके कार्यों से पक्षपात या हितों की टकराहट का हल्का-सा भी संकेत नहीं मिलना चाहिए. उन्हें निष्पक्ष और निडर होकर काम करना चाहिए.

ऐसे में यह बात चिंताजनक है कि न्यायपालिका में दखलंदाजी बढ़ रही है. इस कारण यह पंगु होने की हालत में पहुंच गई है. इस तथ्य को पहली बार सार्वजनिक तौर पर कबूल किया है सर्वोच्च न्यायाधीश ई.एस. वेंकटरमैय्या ने. उन्होंने हाल में चेतावनी दी कि लटके पड़े मुकदमे और कार्यकुशलता में कमी के कारण पूरी न्याय व्यवस्था चरमरा कर गिरने की हालत में पहुंच गई है. उन्होंने ठीक ही कहा है कि न्याय में देरी अन्याय के बराबर होती है. उनकी बातों पर गौर करने की जरूरत है.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

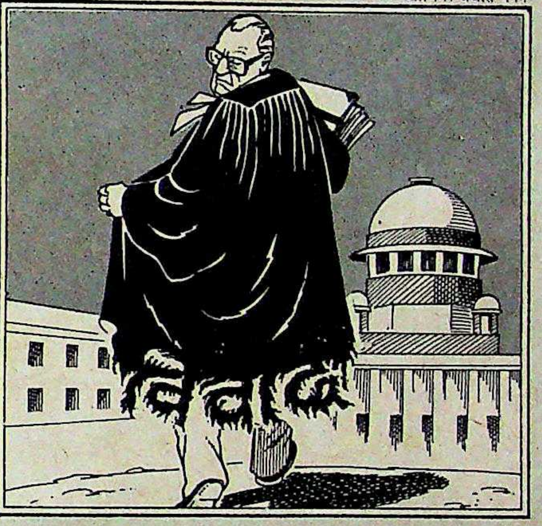

मुख्य न्यायाधीश ने कुछ बुनियादी सुधारों की भी बात की है, मसलन सुप्रीम कोर्ट के अधिकारों को जिला न्यायालयों में बांटने और अदालतों में न्यायाधीशों के खाली पदों पर तुरंत नियुक्तियां करने की. सवाल यह है कि जिस न्यायपालिका का वे नेतृत्व कर रहे हैं वह भी क्या उनकी बातों पर गौर कर रही है. जाहिर है, नहीं. हर वर्ष लगभग दो लाख मुकदमे दर्ज किए जाते हैं लेकिन अदालतें केवल नब्बे हजार मुकदमों का ही निबटारा कर पाती हैं. इस व्यवस्था की असफलता से यह धारणा बनती है कि न्याय पाना अमीरों और प्रभावशाली लोगों का विशेषाधिकार बन गया है.

यह धारणा निराधार भी नहीं है. पिछले पखवाड़े सुप्रीम कोर्ट ने गांधी जयंती के दिन, जबकि सभी अदालतें बंद थीं, नया इतिहास ही रच डाला. सुप्रीम कोर्ट के दो न्यायाधीशों—पी.के. राय और सव्यसाची मुकर्जी—ने बंबई हाईकोर्ट में दर्ज एक याचिका पर सुनवाई के लिए न्यायाधीश मुकर्जी के घर विशेष बैठक की. इसमें सुनवाई का मुद्दा था—अंबानी ग्रुप की कंपनी लार्सन ऐंड टुब्रो को अपने महा निर्गम के लिए अनुमति दी जाए या नहीं.

यहां यह तर्क देने की कोशिश नहीं की जा रही है कि लार्सन ऐंड टुब्रो के मामले पर सुनवाई नहीं होनी चाहिए. सवाल यह है कि क्या इस आपाधापी की जरूरत थी. मामला किसी व्यक्ति को अंतिम समय पर फांसी के तख्ते से लौटाने या किसी रिहायशी कॉलोनी के गिराए जाने के खिलाफ स्थगन आदेश देने का नहीं था. हत्याओं के, आवश्यक उपभोक्ता कानून या गुंडा कानून के उल्लंघन के मामले और मौलिक अधिकारों, बंदी प्रत्यक्षीकरण से संबंधित याचिकाएं तथा मजदूरों से संबंधित मामले वर्षों से लटके पड़े हों, तब किसी कंपनी के मामले को इतनी अहमियत देने की इतनी जरूरत क्या आन पड़ी थी. अदालतें बड़े लोगों या तड़क-भड़क वाले मामलों को कितनी तरजीह देती हैं, यह कुछ क्रिकेट खिलाड़ियों पर लगाए गए प्रतिबंध के मामले से भी उजागर हुआ है.

अदालतों की यह छवि नई नहीं है. दिल्ली हाईकोर्ट ने 1986 में एक जमानत याचिका पर आधी रात सुनवाई करके उद्योगपति ललित थापर को रिहा कराके एक नई परंपरा की नींव डाली थी. यहां इस बात से इनकार नहीं किया जा रहा कि थापर को न्याय की जरूरत थी. मुद्दा यह है कि बड़े और प्रभावशाली लोगों के मामले में अदालतें जो तेजी दिखाती हैं, उसके कारण आम लोगों में यह धारणा बनी है कि न्याय भी विशेषाधिकार ही है.

कुछ अधीनस्थ न्यायाधीशों की कार्रवाइयों से भी न्यायपालिका के आगे प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है. उदाहरण के लिए नाडियाड में पुलिस ने एक मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के साथ जो व्यवहार किया वह निंदनीय था. लेकिन इसके विरोध में दिल्ली के अधीनस्थ न्यायाधीशों ने जो हड़ताल की वह भी आपत्तिजनक ही मानी जाएगी क्योंकि गुजरात सरकार ने मामले की जांच के आदेश पहले ही दे दिए थे. और, हाल में हुआ यह रहस्योद्घाटन भी न्यायपालिका के गौरव को नहीं बढ़ाता कि देश के 80 न्यायाधीशों के रिश्तेदार उन्हीं की अदालतों में वकालत कर रहे हैं.

इसलिए आश्चर्य नहीं कि बुद्धिजीवी, वकील और अवकाशप्राप्त न्यायाधीश उन बातों को लेकर न्यायपालिका की आलोचना करने लगे हैं जिन्हें लेकर पहले उसकी आलोचना नहीं की जाती थी. मसलन, केहर सिंह को फांसी; जांच आयोगों में न्यायाधीशों के इस्तेमाल और 1984 के दिल्ली दंगों के लिए जिम्मेवार लोगों की जांच करने वाली जैन-बनर्जी समिति को भंग करने का फैसला आदि.

इसमें संदेह नहीं कि मुख्य न्यायाधीश ने जिन प्रशासनिक सुधारों के सुझाव दिए हैं उनसे न्यायपालिका के ढांचे को मजबूती मिलेगी. लेकिन न्यायपालिका के सामने आज सबसे बड़ी समस्या है छवि की. इसे सुधारने के लिए न्यायाधीशों को आचरण संहिता पर सख्ती से पालन करना होगा. इस संहिता के तहत उन्हें जायदाद की घोषणा; विरोधी हितों वाले मामलों में जुड़ने से इनकार; अपनी अदालत में अपने रिश्तेदार को वकालत न करने देने; मुकदमे के किसी पक्ष के साथ, चाहे वह सरकार ही क्यों न हो, कोई संवाद न रखने; सरकार द्वारा नियुक्त जांच आयोगों में शामिल न होने जैसे नियमों का पालन करना होगा. यह संहिता अनुल्लंघनीय मानी जाए. इसका उल्लंघन करने वालों को सजा देने के लिए एक समिति बनाई जानी चाहिए. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश वी.आर. कृष्णअय्यर ने एक बार कहा भी था कि न्यायमूर्तियों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होता है न्याय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर न खरीदने का झंझट... न खत्म होने का डर

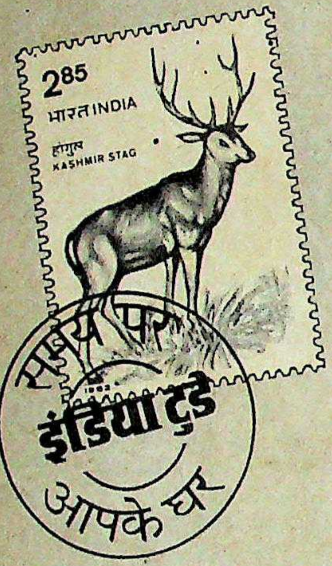

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: ____________________

डाक पता: ____________________

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है.)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

अबु, 'टेलीग्राफ'

● आज राजनैतिक कार्यक्रमों, सम्मेलनों आदि के लिए चंदा लेना पड़ता है जिसमें काला धन भी आता है. ऐसी स्थिति में मूल्यों की बात सोची जाए तो राजनीति करना ही मुश्किल हो जाएगा.
■ **चंद्रशेखर**, *आज*

● चीनी इसलिए महंगी हुई है क्योंकि लोग अपनी गायों को चीनी खिलाने लगे हैं... उत्तर प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में गायों को चीनी खिलाई जा रही है क्योंकि गुड़ बहुत महंगा हो गया है.
■ **राजीव गांधी**, *राजस्थान की एक जनसभा में*

● देवीलाल अपने दो बेटों को तो संभाल नहीं सकते, राज्य क्या संभालेंगे.
■ **वी.एन. गाडगिल**, *माया*

● गनी-टनी खान के बयान पर मैं गौर नहीं करता. फर्क भी नहीं पड़ता.
■ **ज्योति बसु**, *रविवार*

● जिस किसान संगठन को किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने खून से सींचा है उसे किसी की झोली में यों ही नहीं जाने देंगे.
■ **महेंद्र सिंह टिकैत**, *जनसत्ता*

● हमें (मुसलमानों) विदेशी करार दिया जाता है और कहा जाता है बाहर जाओ... अरे हमें तो कई मुल्कों में जगह मिल जाएगी. मगर तुम्हें समंदर के सिवा कहीं जगह मिलेगी?
■ **सैयद अब्दुल्ला बुखारी**, *इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया*

● पंजाब समस्या का समाधान सरकार जानती है मगर राजनैतिक षड्यंत्र के तहत पंजाब को बारूद के ढेर पर बिठाए रखना चाहती है.
■ **दर्शन सिंह रागी**, *दैनिक जागरण*

● कांग्रेस तो हिंदी विरोधी है ही, उसका अनुसरण लोकदल, जनता दल और जनमोर्चा आदि भी कर रहे हैं.
■ **श्रीनारायण चतुर्वेदी**, (साहित्यकार, उ.प्र. में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने के विरोध में भारत भारती पुरस्कार लौटाने के बाद), *स्वतंत्र भारत*

● क्रिकेट में व्यावसायिकता बढ़ी है तो इसमें हमारा क्या दोष है?
■ **कपिल देव**, *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

● मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं बहुत बड़ा बन गया हूं. मैं अब भी वही आदमी हूं जो फंटियर मेल से बरसों पहले इस बंबई में उतरा था.
■ **देवानंद**, *धर्मयुग*

● जिस्म मेरा है, मैं इसे दिखाऊं या छिपाऊं इससे किसी को क्या मतलब.
■ **सोनम**, *पंजाब केसरी*

● मैं अपने कैरियर को लेकर चिंतित नहीं हूं क्योंकि मेरा विश्वास है कि वक्त से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को नहीं मिलता.
■ **डिंपल कपाड़िया**, *नवभारत टाइम्स*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्त को तवज्जो

● पिछले पखवाड़े बंबई दौरे में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अमिताभ के पिता हरिवंश राय बच्चन को देखने के लिए थोड़ा समय निकाल ही लिया. 'मधुशाला' के प्रसिद्ध रचनाकार बच्चन बीमार चल रहे हैं और अपने बेटे के जुहू स्थित आवास में ठहरे हुए हैं.

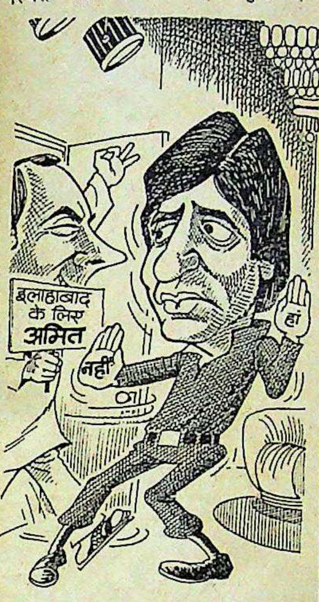

राजीव ने अपने बाल सखा 'अमित' से भी घंटे-भर गुफ्तगू की. फिल्मों की शूटिंग में व्यस्त रहने के कारण अमिताभ कई महीने से दिल्ली से बाहर हैं.

जानकार सूत्रों के मुताबिक दोनों में मुख्यरूप से राजनीति पर चर्चा हुई. राजीव-अमिताभ मुलाकात के बाद अटकलों का दौर शुरू हो गया. एक अटकल यह है राजीव अमिताभ को समझाने-बुझाने में लगे रहे कि वे फिर इंका टिकट पर इलाहाबाद से चुनाव लड़ें. लेकिन अमिताभ उनसे बार-बार यही कहते रहे कि उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया है.

इंका आलाकमान में एक शक्तिशाली गुट का मानना है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह अंततः इलाहाबाद से ही चुनाव लड़ेंगे. इस गुट का यह भी मानना है कि इलाहाबाद में सिर्फ अमिताभ ही विश्वनाथ प्रताप सिंह का मुकाबला कर सकते हैं और उन्हें लोहे के चने चबवा सकते हैं. और यदि विश्वनाथ प्रताप सिंह को इलाहाबाद में कड़ी चुनौती मिलती है, खासतौर पर अमिताभ से, जिन्हें वे बार-बार चुनौती देते रहे हैं, तो ज्यादा आसार यही हैं कि राजा मांडा अपने ही चुनाव क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे और राष्ट्रीय अभियान के लिए मौका नहीं निकाल पाएंगे. शासक दल विश्वनाथ प्रताप सिंह को मात देने के लिए यही रणनीति अपनाने जा रहा है.

इलेक्ट्रॉनिक अभिशाप

● दिल्ली में नए इलेक्ट्रॉनिक टेलीफोन एक्सचेंजों की संख्या बढ़ने के साथ इलेक्ट्रॉनिक कनेक्शनों की मांग करने वाले अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है. इन बड़े लोगों का दावा है कि इन्हें वरीयता के आधार पर ये कनेक्शन दिए जाएं. सो, पिछले पखवाड़े इनमें से कइयों को, जिनमें कई इंका सांसद हैं, इलेक्ट्रॉनिक कनेक्शन दे दिए गए. पहले उनके टेलीफोन पुराने क्रॉस बार एक्सचेंजों से जुड़े हुए थे. लेकिन उनके लिए यह वरदान अभिशाप ही साबित हुआ क्योंकि नए एक्सचेंजों में दिल्ली से बाहर फोन करने का सही समय और तारीख दर्ज हो जाती है. जब एक सांसद के पास एक महीने का 8,000 रु. का बिल आया तो उसने उसे चुनौती देने का फैसला किया.

लेकिन जब सांसद महोदय का सामना कंप्यूटरीकृत सबूत से हुआ

सभी कार्टून: अजीत नैनन

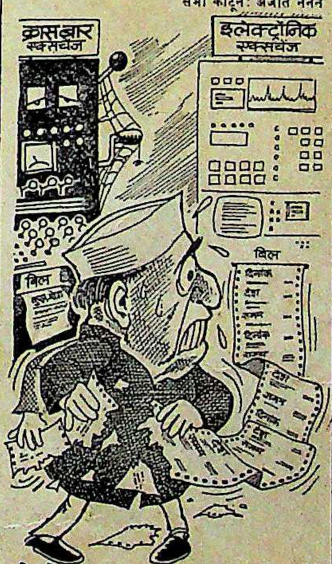

तो वे अवाक रह गए. कंप्यूटर में सब कुछ दर्ज था—कितने कॉल किए गए, कब किए गए और किस तारीख को किए गए. सांसद महोदय ने तर्क के बजाए यह अनुरोध करना ही बेहतर समझा कि उनका कनेक्शन पुराने एक्सचेंज में लौटा दिया जाए. राजधानी के टेलीफोन अधिकारियों के का कहना है कि दूसरे सांसदों से भी इसी तरह के अनुरोध आने लगे हैं.

सबक सीखा है

● कौन कहता है कि शासक दल के दिग्गज नेता और प्रधानमंत्री कार्यालय अपनी गलतियों से नहीं सीखते? उन्होंने कम-से-कम एक सबक तो सीखा ही है, जिसके लिए उन्हें कीमत भी चुकानी पड़ी. और उन्हें यह सबक मिला है विपक्ष के भारत बंद से. सरकार ने नौकर-

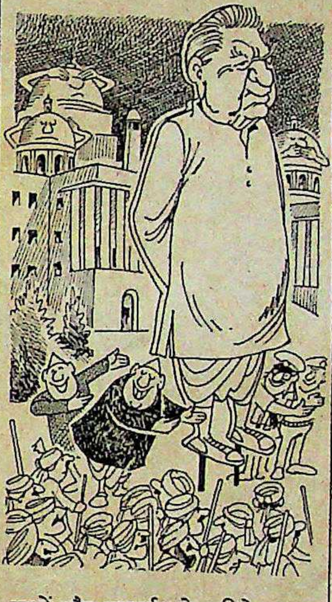

शाहों और दूरदर्शन के जरिये भारत बंद के खिलाफ जबरदस्त प्रचार छेड़ दिया था. नतीजा यह हुआ कि जनता ने मानो बंद को सफल बनाने का बीड़ा ही उठा लिया.

हाल में जब विपक्ष ने जाट नेता देवीलाल का जन्मदिन दिल्ली के बोट क्लब पर मनाने की योजना बनाई और दावा किया कि इसमें पूरे भारत से 30 लाख लोगों के आने की पूरी उम्मीद है तो प्रधानमंत्री के सलाहकार सक्रिय हो गए. राजीव को तरह-तरह की सलाह दी जाने लगी. कुछ सलाहकारों ने सुझाव दिया कि रैली में आने वाले लोगों को दिल्ली सीमा पर यातायात जाम करके पुलिस से परेशान करवाया जाए. उन्होंने एक सुझाव यह भी दिया कि दूरदर्शन से रैली के खिलाफ प्रचार किया जाए.

लेकिन अंततः सद्बुद्धि से काम लेते हुए जो आदेश दिया गया वह इन सुझावों के बिलकुल उलट था. पुलिस से कहा गया कि वह विनम्र रहे और रैली में आने वालों को परेशान न करे ताकि विपक्ष राजनैतिक फायदा न उठा सके. प्रचार अभियान भी नहीं छेड़ा गया. अब वरिष्ठ कांग्रेसी नेता अपनी इस कामयाबी के बारे में बढ़ चढ़कर बता रहे हैं. रैली में जहां 30 लाख लोगों के आने की उम्मीद थी वहां आए महज 5 लाख. इंका के लिए यह एक छोटी विजय रही.

देश नहीं, विदेश

● चुनाव का समय नजदीक आते जाने के बावजूद राजीव गांधी विदेशों में भारत की छवि चमकाने को ज्यादा तरजीह दे रहे हैं, भले ही उसके लिए देश में राजनैतिक कीमत चुकानी पड़े. हाल ही में हिमाचल प्रदेश कांग्रेस ने भाजपा का गढ़ माने जाने वाले कांगड़ा में अपनी शक्ति दिखाने के लिए एक रैली का आयोजन किया.

राज्य के तेजतर्रार सांसद आनंद शर्मा रैली को सफल बनाने के लिए एक महीने तक पूरे जोर-शोर से भिड़े रहे. वे आलाकमान को यह दिखा देना चाहते थे कि राज्य में उनकी ताकत कितनी है. लेकिन मामला ऐन मौके पर गड़बड़ा गया. वे रैली की अगुआई के लिए कांगड़ा जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि उन्हें एक जरूरी संदेश मिला. उन्हें दक्षिण अफ्रीका संबंधी राष्ट्रमंडल समिति के पर्यवेक्षक प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में नामीबिया जाने

को कहा गया था. नतीजतन बेचारे शर्मा ने अपने को हिमाचल के बजाए नामीबिया में पाया. यह कोई नहीं जानता कि पर्यवेक्षक समिति ने नामीबिया में क्या हासिल किया. लेकिन कांगड़ा में आनंद शर्मा की युवा फौज अपने नेता की गैर-हाजिरी में दिग्भ्रमित जरूर रही और रैली का सारा मजा किरकिरा हो गया. रैली जैसी होनी चाहिए थी, नहीं हो पाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमांडो चाहिए

● आम तौर पर मुर्गी और उसके मालिक के आपसी रिश्तों की नींव अंडों पर टिकी रहती है. जब तक मुर्गी अंडे देने लायक नहीं होती तब तक उसका मालिक अंडों की उम्मीद में उसे दाना

सभी कार्टून: अनिल शर्मा

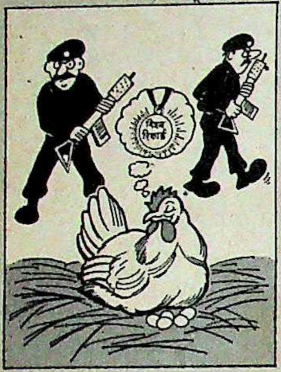

डालता रहता है. उसके बाद अंडे देने की उम्र में वह उसे कमाऊ पूत की तरह मानता है. लेकिन जब अंडे देने बंद कर देती है तो वह मालिक पर बोझ बन जाती है. नतीजा यह होता है कि बेचारी मुर्गी अपने दड़बे से उठकर प्रेशर कुकर में से होती हुई मालिक के डिनर टेबल पर आ बैठती है.

लेकिन जरा उस बेचारे मुर्गी मालिक के बारे में सोचिए जिसकी मुर्गी उसके लिए महज इस वजह से जी का जंजाल बनती जा रही हो कि वह ढेर सारे अंडे देती है. अपनी मुर्गी की इस खासियत से परेशान ये सज्जन हैं बाराबंकी के अमहदा गांव के कासिम मियां. पिछले महीने जब उनकी एक मुर्गी ने अंडे देने शुरू किए तो वे यह देखकर दंग रह गए कि वह एक दिन में सिर्फ एक अंडा नहीं बल्कि पांच अंडे देती है. कासिम मियां ने बहुत फख्र के साथ यह खबर पड़ौसियों को सुनाई. देखते-देखते मुर्गी की यह शोहरत आसपास के कई गांवों तक फैल गई और इस अजूबा मुर्गी को देखने और खरीदने के इच्छुक लोगों का उनके घर पर तांता लगने लगा.

मुर्गी मालिक ने अब तंग आकर जिलाधिकारी से फरियाद की है कि उनकी मुर्गी की रक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड दिए जाएं. जिलाधिकारी समझ नहीं पा रहे हैं कि मुर्गी की रक्षा करने वाले कमांडो कहां से मंगाए जाएं.

पुलिस का भूत

● हिंदुस्तानी पुलिस ने अपने कारनामों के बूते पर अपनी एक ऐसी छवि बना ली है कि पुलिस का नाम सुनते ही लोगों के पसीने छूटने लगते हैं. और अगर बदकिस्मती से उसके साथ किसी का वास्ता पड़ जाए तो सपने में भी वह भूत की तरह पीछा नहीं छोड़ती. लेकिन यह ताजा किस्सा एक ऐसे थाने का है जहां के पुलिसवाले अपने ही एक साथी के भूत से परेशान हैं.

खबर है कि फैजाबाद के एक थाने के एक वरिष्ठ अधिकारी की पिछले महीने गलत दवा खाने के कारण मृत्यु हो गई. और अब इस थाने के कई कर्मचारियों में इस बात को लेकर आतंक व्याप्त है कि उनके मृतक साथी की आत्मा अकसर रात के समय थाने में आ धमकती है. इन कर्मचारियों के मुताबिक आधी रात के समय थाने का मुख्य दरवाजा अपने आप खुल जाता है और मृतक अफसर के डील-डौल से मिलता-जुलता एक साया थाने में इधर-उधर घूमता दिखाई दे जाता है. यह साया उन्हीं जगहों के आसपास देखा जाता है जहां मृतक अधिकारी उठता-बैठता था. उदाहरण के लिए जीप ड्राइवर का कहना है कि उसे रात में कभी-कभी ऐसा लगता है कि मानो मृतक अधिकारी उससे गश्त के लिए चलने को कह रहा है. इसी तरह थाने के मुंशी को भी रात के

उनींदे में ऐसा लगा मानो उक्त अधिकारी उससे रोजनामचा मांग रहा है. इससे थाने में ऐसा आतंक है कि रात की ड्यूटी पर तैनात पुलिसवाले घबराए रहते हैं और हल्की-सी खटपट से भी उनके पसीने छूटने लगते हैं.

सजीव हुआ पात्र

● हर कलाकार अपनी एक ख्वाबी दुनिया में रहता है. भले ही वह कोई संगीतकार हो, मूर्तिकार हो, पेंटर हो या फिर कार्टूनिस्ट. सभी की कल्पना के खूंटों के बीच अपना-अपना इंद्रधनुष लटका

रहता है जिसके झूले में बैठकर वे अपनी कला की दुनिया में उड़ान भरते हैं. कार्टूनिस्टों के मामले में आम तौर पर यह इंद्रधनुष एक ऐसा सतरंगा काल्पनिक व्यक्ति होता है जो हर सुबह अखबार खोलते ही मुस्कराहटों के फूल बिखेरता है. रवींद्र के 'बाबू जी', काक का 'बुढ़ऊ' और आर.के. लक्ष्मण का 'आम आदमी' ऐसे ही चरित्र हैं जिन्हें देखे बिना पाठकों को सुबह का अखबार ही हजम नहीं होता.

लेकिन जरा उस कार्टूनिस्ट के बारे में सोचिए जिसका काल्पनिक चरित्र किसी दिन अचानक आकर उसके सामने खड़ा हो जाए. कार्टूनिस्ट लक्ष्मण के साथ हाल ही में कुछ ऐसा ही हुआ. एक कार्टून प्रदर्शनी और क्विज प्रतियोगिता के सिलसिले में उन्हें महाराष्ट्र के नगूर कस्बे में आमंत्रित किया गया था. समारोह में बैठे-बैठे अचानक ही उन्होंने देखा कि गोल नाक, झाड़ीदार मूंछ और चिकनी चांद वाला उनका 'आम आदमी' चला आ रहा है. एक बार तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ पर गोल फ्रेम वाले चश्मे, चेक वाले कोट और घुटनों तक की धोती को भला वे कैसे न पहचानते?

बेचारे लक्ष्मण अभी सकते की हालत में ही बैठे थे कि उनका यह काल्पनिक चरित्र मंच पर पहुंच गया और उनके गले में माला पहनाकर चलता बना.

यह भी मुसीबत है

● पिछले तीन-चार महीने से कलकत्ता में 'पत्थरमार' हत्यारे ने जो आतंक मचाया है उसने कलकत्ता प्रशासन और पुलिस दोनों के लिए खासा सिरदर्द पैदा कर दिया है. इस दौरान छह लोगों की जान लेने वाला यह हत्यारा रात के समय अपना काम करता है और सड़क पर सोए हुए किसी बेघर मजदूर के सिर को भारी पत्थर से कुचलकर उसका काम तमाम कर देता है. 'पत्थरमार' हत्यारे की इन हरकतों से जन्मे आतंक को रोकने के लिए कलकत्ता पुलिस पिछले कुछ हफ्तों से ऐसे हर व्यक्ति को पकड़कर पूछताछ करने में लगी हुई है जिसकी हुलिया किसी भी मायने में हत्यारे से मेल खाती हो. अपनी ओर से तो पुलिस के इस अभियान का लक्ष्य आम जनता को यह बताना था कि पुलिस अपनी जिम्मेदारी निभाने के प्रति जागरूक है लेकिन लगता है कि यह अभियान अब पुलिस की जगहंसाई का एक बड़ा कारण बनने जा रहा है.

लोगों को पकड़ने के उत्साह में पुलिस ने जिन सैकड़ों लोगों को धर-दबोचा है उनमें सड़कों पर घूमने वाले पागलों की संख्या लगभग 150 हो चुकी है. इस अभियान को पुलिस ने खूब प्रचारित भी किया. लेकिन उसके इस उत्साह पर पागलों ने घड़ों ठंडा पानी डाल दिया है. पुलिस को दिए

गए अपने बयानों में इन डेढ़ सौ लोगों ने अपने जो-जो नाम बताए हैं उनकी संख्या ही 700 से ऊपर हो चुकी है. साथ ही इनमें से लगभग सभी ने यह दावा करके पुलिस को सकते में डाल दिया है कि वही असली 'पत्थरमार' है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की नं. 1 सिलाई मशीन
जो दुनिया भर में लोकप्रिय है

आपकी सुविधा हमसे ज़्यादा कोई और न सोच पाए

विश्व श्रेणी की विशेषताओं ने उषा सिलाई मशीन चलाना कितना सहज व सरल बनाया है। यह देखने के लिए कि यह भारत की नं. 1 सिलाई मशीन क्यों है जरा एक नज़र डालकर तो देखिए!

भारत में केवल उषा सिलाई मशीन में ही ये विशेषताएं

- मज़बूत स्टील के 6 महत्त्वपूर्ण हिस्से-पुर्जे–जो सालोंसाल बिना घिसे चलते हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी यह असामान्य विशेषता है।
- 3 पोजीशन वाला फैब्रिक सिलेक्टर। सूती कपड़े से रेशमी कपड़े तक, कशीदाकारी भी–केवल नॉब घुमाकर। दूसरे ब्रान्ड में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।
- स्वचालित 'सिंगल प्रेस' प्रेसर एडजस्टर
- चित्र में दिखाए उषा प्राइमा मॉडल की ये खास विशेषताएं हैं।
- उषा के अन्य मॉडल्स में ये लगभग सभी खूबियाँ मौजूद हैं।

उषा की अन्य आकर्षक विशेषताएं

- 4 उषा मॉडल्स में ओपन टाइप शटल रे है जिससे बिल्कुल नई-नई सिलाई जान वाले भी एक मिनट से कम समय में शट खोल कर साफ कर सकते हैं। हीन्ज टाइ नीडल प्लेट होने के कारण बॉबि निकालना-लगाना बहुत आसान है।
- उषा मॉडल्स में ढकी हुई नीडल बार जिसके कारण सिलाई करते समय धूल नहीं जमती और टूट-फूट कम से कम।
- आपकी सुविधा–लक्ष्य है हमारा। तभी तो हमने सालों की मेहनत से ऐसी विशेषताएं विकसित की हैं जो अमरीका, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी तथा अन्य कई देशों के–जहाँ उषा सिलाई मशीन निर्यात होती है–बाजारों के उच्च अन्तरराष्ट्रीय स्तर से बेहतर हैं।

उषा

भारत का नं. 1 निर्यात मॉडल घर ले जाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai and eGangotri

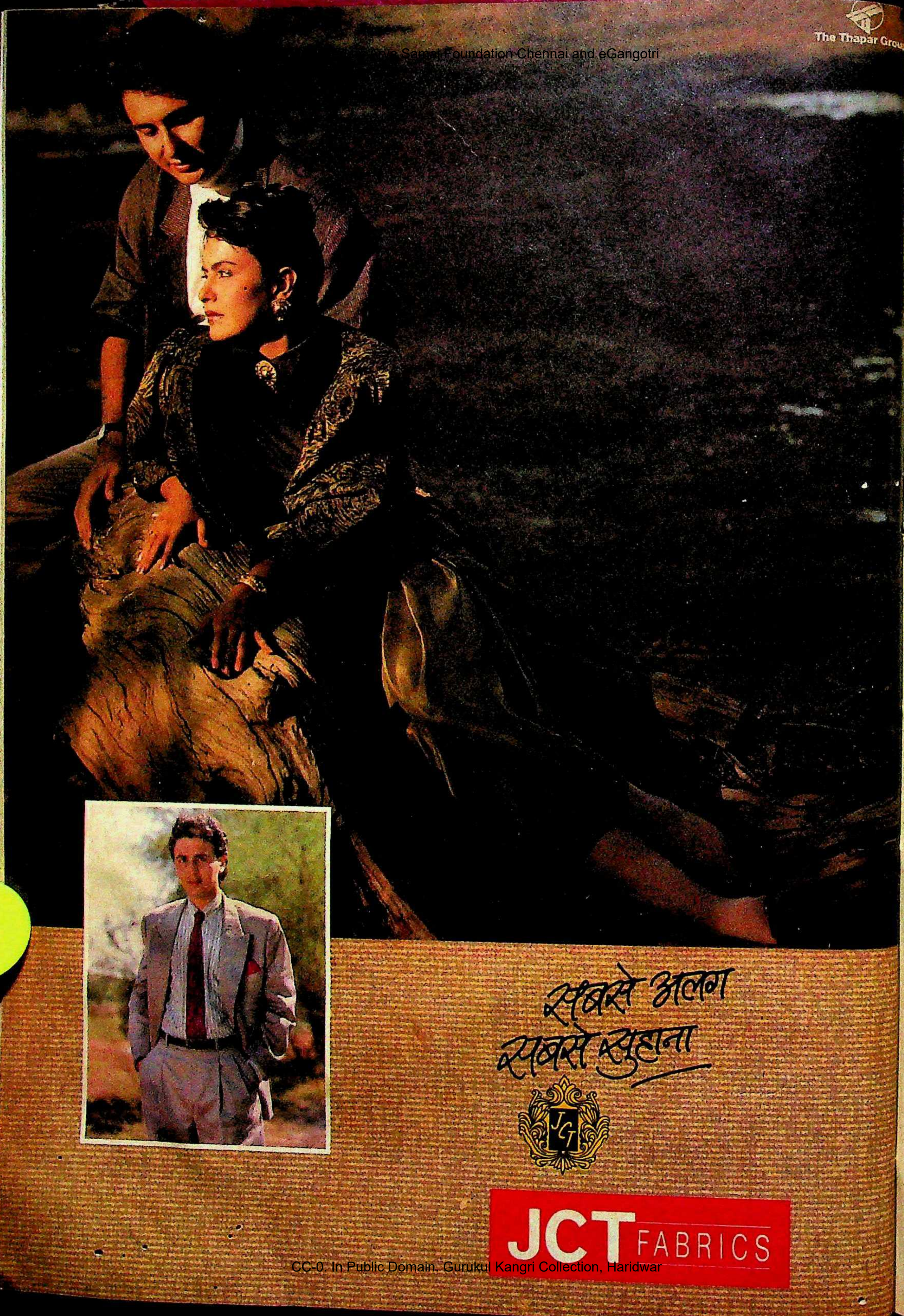

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर उठाते सवाल

रघु राय

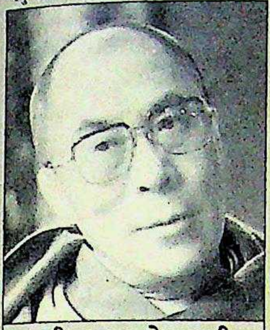
दलाई लामाः प्रेरक जीवन

मोरारजीः परेशान

संगीन सवालों से सनसनी सी रही बीते पखवाड़े. बोफोर्स के भूत ने अपनी उंगली एक बार फिर राजीव गांधी की सरकार की ओर उठाई. लेकिन इस बार हवा यह है कि यह भूत राजीव सरकार को कहीं पूरी तरह गले न लगा ले.

'हिंदू' अखबार ने इस घोटाले से संबंधित जो ताजा सबूत छापे हैं वे अब तक के सबसे गंभीर सबूत माने जा रहे हैं. अब इस बात के कहीं ज्यादा विश्वसनीय सबूत सामने आ गए लगते हैं कि इस सौदे की दलाली खाने वालों को बचाने की जानबूझकर कोशिश की जाती रही है. जाहिर है, यह पूरा मामला राजीव गांधी और उन पर पूरी तरह से आश्रित उनकी पार्टी के राजनैतिक भविष्य के लिए निर्णायक साबित हो सकता है.

चुनावी नजरिये से देखें तो इतना ही गंभीर मामला बड़े राजनैतिक दलों द्वारा सांप्रदायिकता के दानव को जगाने से संबंधित है. सांप्रदायिकता का जहर उन इलाकों में भी फैल रहा है जहां इसका नामोनिशान नहीं था. चुनाव के दिन जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, इन दलों का उतावलापन बढ़ता जा रहा है. भाजपा जैसी पार्टियों ने तो धर्मनिरपेक्षता का झीना आवरण भी उतार फेंका है. यह एक खतरनाक खेल है, और अपशकुन भी कि आगामी चुनाव में सांप्रदायिकता की लपटें तेज हो सकती हैं.

वायुसेना के लड़ाकू विमानों की दुर्घटनाओं से उठे सवाल सिर्फ तकनीकी कौशल से ही नहीं जुड़े हैं

राजनैतिक दल चुनाव के उतावलेपन में अब तो सांप्रदायिकता का खतरनाक खेल भी खेलने लगे हैं

वायुसेना दिवस पर मिराज-2000 विमान का गिरना भी एक दुखद मगर मौके पर मिली चेतावनी जैसा है. दर्शकों की विशाल भीड़ के लिए अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों के बेहद जटिल करतब करना निश्चित तौर पर एक खतरनाक खेल है. लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों की दुर्घटनाओं ने बड़े गंभीर सवाल खड़े किए हैं. ये सवाल सिर्फ अत्याधुनिक तकनीकी कौशल से ही संबंधित नहीं हैं. अंततः नुकसान व्यक्ति से ज्यादा व्यवस्था को होता है.

वायुदूत के सर्वेसर्वा हर्षवर्धन के इस्तीफों के साथ जुड़ी नाटकबाजी भी गौर करने वाली चीज है. सारा नाटक उस व्यवस्था की खामियों को ढकने के लिए किया गया जिसे सुरक्षा को अहमियत देने वाली बनाने की जगह एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए विकृत करने की कोशिशें की जाती रहीं. सत्ता अक्सर बड़ी कीमत वसूलती है.

इस तथ्य की पुष्टि मोरारजी देसाई शायद करें. 94 वर्षीय इस पूर्व प्रधानमंत्री को एक असुविधाजनक सवाल से सामना है. अमेरिकी पत्रकार सिमोर हर्श की किताब 'द प्राइस ऑफ पावर' में उन पर आरोप लगाया गया कि वे सीआइए को गुप्त सूचनाएं देते रहे थे. पर अमेरिकी अदालत ने हर्श के खिलाफ देसाई के मानहानि मुकदमे में प्रतिकूल फैसला देकर उन्हें एक ऐसे सवाल से रू-ब-रू कर दिया है जो जीवन भर उन्हें परेशान करता रहेगा, खासकर इसलिए भी कि वे बेहद ऊंचे नैतिक आदर्शों की बात करते रहे हैं.

लेकिन राजनीति और नैतिकता शायद कभी साथ-साथ नहीं चल सकतीं. इसीलिए दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार दिया जाना खास अहमियत रखता है. महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी के रूप में उन्होंने इन दोनों को साथ लेकर चलने में काफी सफलता हासिल की है. उनका जीवन, और मानवता में उनकी आस्था प्रेरणा देती रहेगी. लेकिन इतिहास ने उन्हें हाशिये पर रहने को मजबूर है. हम जिस दौर में जी रहे हैं उसका इससे दुखद प्रमाण और क्या हो सकता है.

—दिलीप बॉब

संजय शर्मा/हिंदुस्तान टाइम्स

मिराज हादसाः चेतावनी

यशवंत नेगी

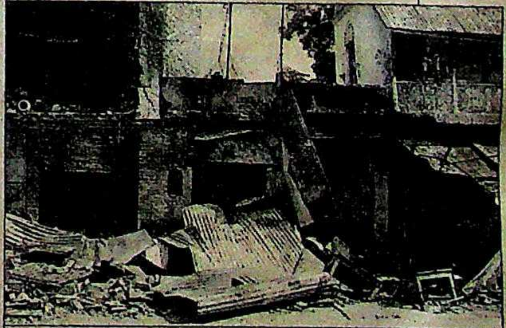
बदायूं दंगाः अभिशाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोफोर्स

लीपापोती का पर्दाफाश

'हिंदू' के रहस्योद्‌घाटनों से भारत और स्वीडन की सरकार कटघरे में

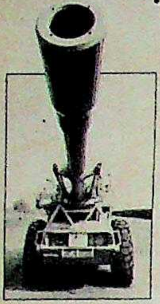

9 अक्तूबर को 'हिंदू' के ताजा बोफोर्स विस्फोट के एक हफ्ते पहले ही सरकार को आसन्न खतरे का आभास हो गया था. नई दिल्ली में ऐसी अटकलों का बाजार गरम था कि मद्रास का यह अखबार जल्दी ही दूसरा 'स्कूप' छापने जा रहा है जो राजीव गांधी की सरकार को उतना ही परेशान करेगा जितना जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी के रहस्योद्‌घाटनों ने उसे किया था.

ये अफवाहें जल्द ही सही साबित हुई. 9 अक्तूबर की छपी रपट, जो रहस्योद्‌घाटनों की नई श्रृंखला की पहली किस्त थी, बेहद सनसनीखेज थी क्योंकि इसमें स्वीडन नेशनल ऑडिट ब्यूरो (स्नैब) की 1 जून 1987 की रिपोर्ट के गोपनीय हिस्से के अंश थे. अखबार का कहना था कि 'रपट जारी रहेगी'. रपट की दूसरी किस्त 11 अक्तूबर को छपने की उम्मीद थी. लेकिन रपट नहीं छपी. उसके बाद जो घटनाएं घटीं, वे रपट से भी ज्यादा सनसनीखेज थीं. उस दिन अखबार के मुखपृष्ठ पर संपादक की टिप्पणी छपी थी, "बोफोर्स घोटाले की लीपापोती और सरकारी एजेंसियों द्वारा जांच में बरती जा रही लापरवाही को उजागर करने के लिए 'हिंदू' में दस्तावेजों सहित काफी कुछ लिखा जा चुका है..."

उस दिन की सबसे गरम अफवाह यह थी कि सरकार ने किसी तरह 'हिंदू' की जबान बंद कर दी है. मद्रास में अखबार के एसोसिएट एडिटर एन. राम के पास पूरे देश से फोन आने लगे कि उनकी रपट का

असलियत की तह तक

बिचौलिए की खोज

15,16 और 18 सितंबर 1987

- नई दिल्ली में बोफोर्स के प्रतिनिधियों और भारत सरकार के अधिकारियों के बीच हुई गुप्त बातचीत में बोफोर्स ने बताया कि मोरेस्को स्विट्‌जरलैंड में पंजीकृत एक कंपनी है जिसे 8.1 करोड़ क्रोनर (16.2 करोड़ रु.) का भुगतान किया गया. इसका पूर्व नाम 'पिटको' है. इससे पहले तक बोफोर्स का यही कहना था कि पिटको और मोरेस्को कोड या संदर्भ नाम है.
- बोफोर्स ने बताया कि इसके पेर ओव मोरबर्ग ने दिसंबर 1986 में स्वीडिश सेंट्रल बैंक के अधिकारियों से स्वेंस्का कंपनी को दिए गए 18.8 क्रोनर (37.7 करोड़ रु.) के बारे में स्पष्टीकरण मांगा था.
- बोफोर्स ने फिर कहा कि उसने किसी भारतीय को कोई पैसा नहीं दिया है.

6 अक्तूबर की चिट्ठी

बोफोर्स ने भटनागर को बताया कि "मोरेस्को एक कंपनी नहीं मोइनिओ एस.ए. का संदर्भ नाम है."

15 अक्तूबर की चिट्ठी

भटनागर ने बोफोर्स से पूछा कि पंजीकृत कंपनी (मोरेस्को) को संकेत नाम की क्यों जरूरत होती है.

4 नवंबर की चिट्ठी

बोफोर्स ने भटनागर को जवाब दिया कि "कंपनी का नाम मोइनिओ एस.ए. है और यही रहा है. बाकी सब संदर्भ या संकेत नाम है जो सुविधा के लिए इस्तेमाल किए गए हैं."

स्वी.ने.ऑ. ब्यूरो रिपोर्ट

1 जून 1987: यह रिपोर्ट जाहिर करती है कि बोफोर्स एफएच-77 सौदे में मदद करने वालों के स्विस खाते में दलाली का भुगतान किया गया है... एबी बोफोर्स के मौजूदा अध्यक्ष ने स्वीडिश नेशनल बैंक के साथ अपनी बातचीत में बताया कि स्वेंस्का कंपनी वाले खाते में जमा राशि मुख्यत: एक भारतीय को मिली जो 10-15 साल से बोफोर्स का एजेंट था (नेशनल बैंक की 18.12.86 की यात्रा का विवरण) "

स्वेंस्का

14 दिसंबर 1978: भारत समेत एशिया में अपने हथियारों की बिक्री पर 4 फीसदी कमीशन की शर्त पर बोफोर्स ने स्वेंस्का कंपनी को अपना एजेंट नियुक्त किया.
11 मार्च 1981: करार का नवीकरण और कमीशन की दर बढ़ाकर 6 फीसदी की गई.
13 जनवरी 1986: कमीशन की दर करीब-करीब आधी कर दी गई. खरीदार द्वारा दी गई अग्रिम राशि का 2.24 फीसदी कमीशन और बोफोर्स द्वारा भारत के साथ एफएच-77 का सौदा हो जाने पर बाद में 0.96 फीसदी (कुल 3.2 फीसदी) की राशि पर दोनों पक्ष तैयार हो जाते हैं.

- 27.2.86 और 18.12.86 के बीच बोफोर्स ने 18.84 करोड़ क्रोनर (37.7 करोड़ रु.) का भुगतान किया.

दलाली किसे मिली

स्वीडिश क्रोनर 18.84 करोड़ (37.7 करोड़ रु.).

स्वीडिश क्रोनर 8.1 करोड़ (16.2 करोड़ रु.).

पिटको

15 अक्तू. 1979: बोफोर्स स्विट्‌जरलैंड में 12 महीने से पंजीकृत और जानी-पहचानी कंपनी पिटको के साथ व्यापारिक परामर्श का अटूट समझौता करती है जिसमें 8 फीसदी कमीशन तय होता है. इसमें से 6 फीसदी राशि खरीदार के अग्रिम भुगतान से तथा 2 फीसदी माल की डिलीवरी के बाद मिलनी थी

7 मई '80: करार का 10 अक्तू. 81 तक के लिए नवीकरण.

22 जून '81: कमीशन की दर बढ़ाकर 10 फीसदी कर दी जाती है जिसका 7 फीसदी अग्रिम भुगतान से और 3 फीसदी माल की डिलीवरी पर मिलना तय.

सोगेवालोर

पिटको की होल्डिंग कंपनी जो स्विटजरलैंड में पंजीकृत है.

हिंदू द्वारा रहस्योद्‌घाटन

22 अप्रैल '88: पांच दस्तावेजों से मोइनिओ एस.ए., मोरेस्को और पिटको के संकेत नाम होने तथा इनका आपसी रिश्ता और संगम लि. से रिश्ता साबित होता है. संगम हिंदुजा की कंपनी है क्योंकि उसका पता मार्फत जी.पी. हिंदुजा दिया जाता है.

20 अक्तू. '88: सरकार 'हिंदू' में छपे दस्तावेजों की वैधता स्वीकार करती है.

मोरेस्को

29 जून '84: बोफोर्स-पिटको का अटूट करार स्विट्‌जरलैंड में ही पंजीकृत मोरेस्को के नाम कर दिया जाता है.

- बोफोर्स 22 मई से 22 दिसंबर '86 के बीच ट्यूलिप संकेत नाम वाले मैन्यूफैक्चरर्स हैनोवर ट्रस्ट, जेनेवा के खाते में 3.7 करोड़ क्रोनर जमा करा देती है.
- 21 मई '86 को मोंट ब्लांक संकेत नाम वाले क्रेडिट सुईस के खाते में 1.2 करोड़ क्रोनर जमा कराती है.
- स्विस बैंक कार्पोरेशन के लोटस संकेत नाम वाले खाते में 13 नवंबर से 22 दिसंबर '86 के बीच 3.2 करोड़ क्रोनर जमा कराती है.

कुल भुगतान: 8.1 करोड़ क्रोनर (16.2 करोड़ रु.)

आर्दबो की डायरी के अंश

30 जन. '87: "लंदन, जीपीएच से भेंट" (संदिग्ध व्यक्ति जी.पी. हिंदुजा).

21 मई '87: "एच. से भेंट हुई"

9 अक्तू '87: "कार्लबर्ग ने फोन किया. वे तुरंत भेंट करना चाहते थे. भारत से जुड़ी बात करनी है. मैंने हैनसन से भेंट की जो नोबेल द्वारा भारत से सौदा करने पर लाल-पीले हो रहे थे. मैंने साफ कह दिया कि सौदा चाहे भाड़ में जाए, मैं फरेब नहीं करूंगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला हिस्सा क्यों नहीं प्रकाशित हुआ. राम ने जवाब में सिर्फ इतना ही कहा, "इंतजार करिए, मैं आज शाम को दिल्ली आ रहा हूं. वहां बाकी बातें आप जान जाएंगे."

दूसरे दिन राजधानी में एक असाधारण पत्रकार सम्मेलन हुआ. कोई 250 पत्रकारों के सामने राम ने अपने संपादक और चाचा गोपालन कस्तूरी पर खुलेआम आरोप लगाया कि वे दबाव के आगे झुक गए और उन्होंने वह रपट नहीं छपने दी जिसमें इस बात के सबूत थे कि सरकार ने स्वीडिश अधिकारियों के साथ मिलकर बोफोर्स सौदे में दलाली के मामले पर भारी लीपापोती की. राम ने कहा कि वे 'हिंदू' की चारदीवारी से निकलकर लोगों के बीच आए हैं तो इस बड़े मुद्दे के साथ कि "क्या लोगों को तथ्यों को जानने का अधिकार है?" फिर उन्होंने कुछ चुनींदा अखबारों को, जिन्हें वे 'स्वतंत्र और ईमानदार' मानते थे, दस्तावेजों सहित वह रपट सौंप दी जिसे 'हिंदू' ने प्रकाशित नहीं किया. ये दस्तावेज उन्होंने और उनकी जेनेवा स्थित संवाददाता चित्रा सुब्रमण्यम ने जुटाए थे.

जैसी उम्मीद थी, कस्तूरी ने राम के आरोपों का खंडन किया. उन्होंने रपट न छापने के बारे में एक तर्क यह दिया कि राम ने पुरानी बातों को ही नए ढंग से लिखा था और उसमें कुछ भी नया नहीं था. लेकिन राम द्वारा चुनींदा अखबारों को दिए दस्तावेज कुछ दूसरी ही कहानी कहते हैं.

पूरे देश को ये ज्वलंत प्रश्न अभी भी परेशान किए हुए हैं कि इस सौदे में गैर-

झूठ का पुलिंदा

बोफोर्स

■ **"बोफोर्स ने न तो कोई बिचौलिया रखा और न कोई दलाली दी."**

● तथ्यः "बोफोर्स के एफएच 177 सौदे का काम देखने वालों को.... दलाली का भुगतान किया गया." (स्नैब रिपोर्ट)

■ **"बोफोर्स ने न तो घूस दी है और न इसकी गुप्त कोशिश ही की है."**

● तथ्यः "घूस देने का अपराध किया गया है, यह मानने का पर्याप्त कारण है." (लार्स रिंगबर्ग)

■ **"कंपनी का नाम मोइनिओ एस.ए. है. बाकी संकेत मर है."**

● तथ्यः "मोइनिओ नाम की कोई कंपनी नहीं है. मोरेस्को रजिस्टर्ड कंपनी है." (हिंदू)

विन चड्ढा

■ **"मेरा स्वेंस्का या ऐसी किसी विदेशी कंपनी से कोई वास्ता नहीं. स्वेंस्का, एई सर्विसेज और मोरेस्को के नाम तो मैंने अखबारों से जाने."**

■ **मेरी जानकारी में बोफोर्स के किसी प्रतिनिधि ने नहीं कहा है कि सौदे में दलाली दी गई."**

■ **"मेरी पूरी जानकारी के मुताबिक न तो पैसे का कोई लेन-देन हुआ और न ही दलाली दी गई."**

● तथ्यः "मोरबर्ग...ने बताया कि स्वेंस्का खाते का असली लाभभोगी एक भारतीय है जो 10-15 वर्षों से बोफोर्स का दलाल है." (स्नैब रिपोर्ट)

चार्टः बी.के. शर्मा, संयोजनः हरपाल सिंह

संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट

25 अप्रैल '88: स्वीडिश और भारतीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा दी गई अधूरी जानकारियों के आधार पर समिति निष्कर्ष निकालती है कि:

- मोरेस्को और पिटको स्विट्जरलैंड में पंजीकृत नहीं हैं.
- विन चड्ढा ने बिचौलिए का काम नहीं किया.
- इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि करार समेटने की राशि किसी भारतीय को देश में या विदेश में दी गई.
- कोई बिचौलिया था, इस बात का कोई प्रमाण नहीं है. इसलिए किसी भारतीय या भारतीय कंपनी को भुगतान किए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता.
- बोफोर्स के साथ सौदा समाप्त करने या उससे 64 करोड़ रु. वापस मांगने के लिए दलाल होने या दलाली दिए जाने का संदेह ही पर्याप्त आधार नहीं बनते.

मोहन कात्रे

सीबीआई को मोरेस्को की जगह भुलावे वाले मोइनिओ एस.ए. की जांच में उलझा दिया जाता है.

मोइनिओ एस.ए.

6 अक्तू. '87: बोफोर्स ने इस पूरे फरेब में मोइनिओ एस.ए. को भी यह कहकर शामिल करा दिया कि 15 अक्तू.'79 को उसने इसके साथ करार किया और 1985-86 के अंत में तोड़ दिया.

4 नवंबर '87: मोइनिओ एस.ए. की हैसियत के बारे में भटनागर के सवाल के जवाब में बोफोर्स ने कहा, "कंपनी का नाम मोइनिओ एस.ए. है और यही रहा है. शेष सभी संदर्भ या संकेत नाम हैं जो सुविधा के लिए रख लिए गए थे." सितं.'87 में बोफोर्स की टोली द्वारा गुप्त बातचीत में भारत सरकार को बताई गई बातों से यह भिन्न है.

सितंबर 1987 में बोफोर्स ने एक गुप्त बैठक में भारतीय अधिकारियों को दलाली पाने वाली कंपनियों के नाम बताए. संयुक्त संसदीय समिति को इसकी सुधारी गई सूचना दी गई

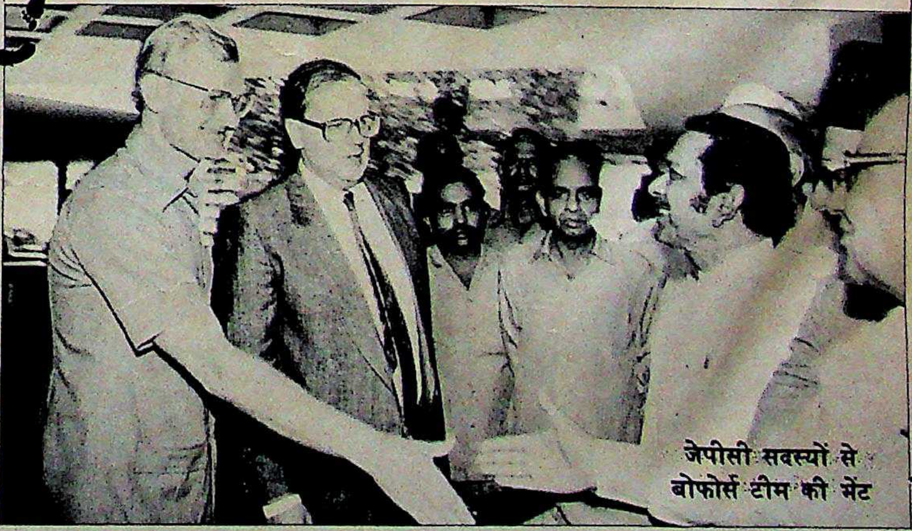

जेपीसी सदस्यों से बोफोर्स टीम की भेंट

प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनी दलाली खाई किसने और क्या भारत सरकार ने सुरागों के आधार पर पूरी जांच-पड़ताल करवाई जो अपराधियों को कटघरे तक पहुंचा सकते थे.

दलाली के मामले में सरकार की अधिकृत और अंतिम स्थिति यह रही है कि संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) ने रक्षा मंत्रालय और सीबीआई प्रमुख मोहन कात्रे के नेतृत्व वाली जांच एजेंसियों की सहायता से इस घोटाले की व्यापक जांच-पड़ताल कराई है.

जेपीसी ने अगस्त 1987 में अपना काम शुरू किया और अप्रैल 1988 में अपनी रिपोर्ट दे दी. रिपोर्ट का निष्कर्ष यह था कि सौदे में न तो कोई बिचौलिया था और न ही सौदा हासिल करने के लिए बोफोर्स ने किसी भारतीय को दलाली दी. विन चड्ढा, स्वेंस्का, मोरेस्को-मोइनिओ और एई सर्विसेज को दिए गए 64 करोड़ रु. बोफोर्स से उनके 'करार समेटने' का शुल्क था. जेपीसी का यह भी कहना था कि सरकार की पुरजोर कोशिशों के बावजूद इनमें से कुछ कंपनियों का अता-पता नहीं चला. और यह भी कि बोफोर्स कंपनी के अधिकारियों ने इस सौदे से लाभ कमाने वालों के नाम गोपनीयता कानून के कारण बताने से इनकार कर दिया.

लेकिन क्या सरकार ने नामों को जानने की सचमुच हर संभव कोशिश की? पहला बड़ा संदेह तो के. सुंदरजी के इस रहस्योद्घाटन से ही पैदा हो गया कि राजीव ने उनकी यह सलाह मानने से इनकार कर दिया था कि बोफोर्स से नाम उगलवाने के लिए उसे तोप सौदा रद्द करने की धमकी दी जाए.

9 अक्तूबर को 'हिंदू' में छपी रपट और 11 अक्तूबर को अप्रकाशित रपट (जिसे कस्तूरी ने छापने से इनकार कर दिया था) से यही बात साबित होती है कि जेपीसी के निष्कर्ष एकदम लचर हैं और यह भी कि लीपापोती में स्वीडिश सरकार भी शामिल है. राम ने अपनी खोजबीन के दौरान स्वीडिश सूत्रों से कई दस्तावेज हासिल किए. इनमें स्वीडिश नेशनल ऑडिट ब्यूरो (स्नैब) की रिपोर्ट का वह गोपनीय हिस्सा भी शामिल है जो दर्शाता है कि "स्वेंस्का इनकार्पोरेटिड की आड़ में मुख्य लाभभोगी विन चड्ढा हैं." स्वेंस्का उन तीन कंपनियों में से एक थी जिसे बोफोर्स ने भारतीय सौदा हासिल करने में मदद करने के एवज में 37.7 करोड़ रु. दिए.

इससे बोफोर्स के इस कथन का, जिसे जेपीसी और भारत सरकार ने लपक लिया था, खुद ही खंडन हो जाता है कि न तो किसी भारतीय को दलाली दी गई और न ही सौदे

नरसिंहन राम

'राजीव गांधी भ्रष्ट सौदे में शामिल हैं'

*'हिंदू' के एसोसिएट एडिटर नरसिंहन राम करीब दो साल से बोफोर्स सौदे में दलाली के दनादन प्रमाण छापकर अखबार के 4.3 लाख खरीदारों को झटके पर झटके दिए जा रहे थे. वे अखबार की जेनेवा स्थित संवाददाता चित्रा सुब्रमण्यम द्वारा जुटाए गए दस्तावेजों और जानकारी पर आधारित कई लेखों के सह लेखक रहे. पर पिछले पखवाड़े वे खुद सुर्खियों में छा गए. उन्होंने अखबार के संपादक जी. कस्तूरी पर बोफोर्स संबंधी रहस्योद्घाटन की अगली कड़ी के प्रकाशन में अड़ंगा लगाने का आरोप लगाया. 'इंडिया टुडे' के एसोसिएट एडिटर **रमिंदर सिंह** ने उनसे बातचीत की. उसके कुछ अंश:*

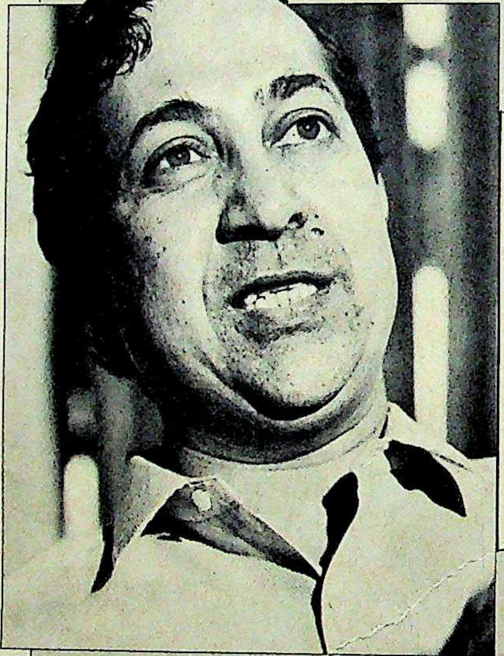

भवान सिंह

● आपने इतने सारे दस्तावेज प्रकाशित किए हैं. उनसे क्या साबित हुआ है?

बोफोर्स कंपनी कहती रही है कि सौदा हासिल करने का भुगतानों से कोई संबंध नहीं रहा है लेकिन प्रकाशित दस्तावेजों से पता चलता है कि सौदे का उनसे ताल्लुक था. मुझे जरा भी संदेह नहीं कि स्वेंस्का नाम वाले खाते में हुए भुगतान का मुख्य लाभ विन चड्ढा को ही मिला. वे 6.2 फीसदी राशि पाने के हकदार थे लेकिन सौदे से चार महीने पहले ही एई सर्विसेज लिमिटेड बीच में टपक पड़ी और उसने तीन फीसदी राशि झटक ली. यह बात चक्कर में डालने वाली है क्योंकि एई सर्विसेज ने कोई काम ही नहीं किया था.

> "राजीव गांधी बोफोर्स की बात छेड़ने पर बेतरह परेशान दिखे. लगता था कि उन्हें या तो कुछ भी पता नहीं या वे बहुत कुछ जानते हैं"

● एई सर्विसेज नामक इस कंपनी के पीछे आखिर कौन-कौन लोग हैं?

इसे मैं आगे के लिए छोड़ देता हूं. हमारे पास एक दस्तावेज है जिसमें एई सर्विसेज के बॉब विल्सन और मार्टिन आर्दबो की भेंट का ब्यौरा है. इसमें विल्सन ने कहा है कि वे एई सर्विसेज की भागीदार कंपनी सिआऊ एंस्टाल्ट के कर्ताधर्ताओं के नाम कभी नहीं बताएंगे.

● सरकार को यह सब पता है?

राजीव गांधी और गोपी अरोड़ा इससे पूरी तरह वाकिफ हैं . सरकार को एई सर्विसेज के वजूद का पता सितंबर 1987 में चला. लेकिन कुछ बड़े लोगों की तरफ से सीबीआई के अधिकारी उससे काफी पहले, जुलाई 1987 में ही एई सर्विसेज के विल्सन से मिल चुके थे.

● सचाई दबाने में ऊपरवाले शामिल हैं, इसका आपको पक्का भरोसा है?

हां, एकदम ऊपर तक के लोग हैं. मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा यकीन है कि वे विन चड्ढा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते, हिंदुजा से पिटको-मोरेस्को का जो रिश्ता है उसकी जांच में हाथ नहीं लगा सकते.

● ***राजीव को इस्तीफा देना चाहिए?***

निश्चित रूप से. राजीव गांधी एक भ्रष्ट सौदे में और उसका भेद जाहिर न होने देने की कोशिश में शामिल हैं.

● ***क्या हमें पैसा पाने वालों के असली नाम भी पता चलेंगे?***

पिछले साल जब मैं राजीव गांधी से मिला था तो मैंने उनसे कहा था कि एई सर्विसेज से ही उनको असली परेशानी होगी. उनका कहना था कि न तो उन्होंने और न उनके परिवार के किसी सदस्य ने पैसा लिया है और अगर किसी मंत्री या पार्टी के नेता ने उनकी आड़ में पैसा लिया तो मैं उसे ढूंढने में मदद करूं. लेकिन अब मुझे लगता है कि मोरेस्को का मामला तो और भी गड़बड़ी वाला है. अप्रैल 1988 में जी.पी. हिंदुजा ने मुझसे जो कुछ कहा था, यह उससे जुड़ता जा रहा है. उन्होंने कहा था, "हां, हमें पता है कि स्वेंस्का, एई सर्विसेज और पिटको के पीछे कौन है लेकिन हम एक बड़े उद्देश्य के कारण इसे जाहिर नहीं कर सकते."

● ***सीधे राजीव गांधी से बात करके आपको क्या लगा?***

वे बेतरह परेशान हुए थे. ऐसा लगता था कि उन्हें या तो कुछ भी पता नहीं या वे बहुत कुछ जानते हैं. वे चाहते थे कि हम इस सौदे से जुड़े मध्य-पूर्व के सूत्रों की भी जांच करें. यही बात हिंदुजा ने भी कही थी.

● ***क्या राजीव ने सुझाव दिया था कि आप बोफोर्स पर और कुछ न छापें?***

ऐसा कुछ नहीं कहा. पहले हम श्रीलंका के बारे में बात करते रहे. बोफोर्स पर बात होने लगी तो थोड़ा तनाव हो गया. उन्होंने यही कहा कि सहयोग कीजिए. बड़ी अजीब बात थी. आपसे दस्तावेज मांगे जाते हैं, सहयोग मांगा जाता है लेकिन आगे कोई कार्रवाई नहीं होती. बाद में जी. पार्थसारथी (प्रधानमंत्री के संयुक्त सचिव) ने कात्रे के साथ एक मुलाकात तय की. कात्रे ने मुझे बताया कि हमने जो दस्तावेज छापे हैं वे प्रामाणिक हैं.

● ***बोफोर्स घोटाले के अलावा राजीव सरकार के बारे में आपकी क्या राय है?***

घोटाले वाले कई और सौदे हुए हैं. मसलन, एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदा. नीतियों के मामले में भी वे कहीं कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं. उन्हें हट जाना चाहिए.

● ***उन पर खास आरोप क्या है?***

खास आरोप यह है कि भारत सरकार ने बोफोर्स और फिर स्वीडिश सरकार के साथ षड्यंत्र रचकर तथ्यों को झुठलाने का फरेब रचा है. पक्की खबर होने के बावजूद सरकार कार्रवाई करने में संदेहास्पद तरीके से चूक गई. और भी कई बातें हैं.

● ***और किन पक्की सूचनाओं के आधार पर वे कार्रवाई करने से चूके?***

अगस्त 1987 में रिंगबर्ग को, जिनके पास खबरों का खजाना था, कोई सहयोग नहीं दिया गया.

● ***आपको पक्का भरोसा है कि पिटको-मोरेस्को हिंदुजा बंधुओं से जुड़ी संस्थाएं हैं?***

पिटको तो निश्चित रूप से हिंदुजा से जुड़ी है. हमने ऐसे तीन दस्तावेज छापे थे जिनमें पिटको का पता था: मार्फत जी.पी. हिंदुजा, संजय लिमिटेड. 1979 में पिटको के साथ हुए मूल समझौते के अनुसार उसे 8 फीसदी राशि मिलनी थी. बोफोर्स सौदे में इसका मतलब 120 करोड़ रु. होता. जब पिटको नाम बदलकर मोरेस्को हो गया तो उसकी कमाई तीन हिस्सों में बंटी और यह राशि ट्यूलिप, लोटस और मोंट ब्लांक नामक तीन सांकेतिक नाम वाले खातों में जमा कराई गई.

"ऊपरवाले इस घोटाले में शामिल हैं. वे चड्ढा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते, हिंदुजा से पिटको-मोरेस्को के रिश्ते की जांच नहीं कर सकते"

● ***आपके इस रुख से अखबार की मिल्कियत पर क्या असर होगा?***

लगता है कि बंटवारा होगा पर अभी क्या कहा जा सकता है. मुझे लगता है जो कोई भी...की कोशिश करेगा लोग उस पर थू-थू करेंगे. खैर, लोगों को फैसला करने दीजिए. 1977 से अब तक मुझे किसी बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा. संपादकीय मामलों में मुझे पूरी आजादी थी. लेकिन जाहिर है कि अखबार के संपादक कस्तूरी कुछ संभावित खतरों की ओर से आशंकित थे.

में कोई बिचौलिया शामिल था. इससे यह बात भी झूठी साबित हो जाती है कि सिर्फ करार समेटने का शुल्क दिया गया. हालांकि जून 1987 में स्वीडिश विदेश व्यापारमंत्री अनीता ग्रेडिन ने मंत्रिमंडल के सामने 'स्नैब' की पूरी रिपोर्ट पेश कर दी थी फिर भी उन्होंने बोफोर्स की जांच करने वाली एक संवैधानिक समिति के सामने 12 अप्रैल 1988 को कहा, 'स्नैब रिपोर्ट से यही निष्कर्ष निकलता है कि यह करार समेटने के शुल्क के अलावा और कुछ नहीं हो सकता.'

इस कथन से यही मतलब निकलता है कि स्वीडिश सरकार ने रिपोर्ट का गोपनीय हिस्सा देने से सीधे इनकार कर दिया जबकि भारत सरकार उसकी मांग कर रही थी. ऐसी स्थिति में जेपीसी और भारत सरकार ने उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर अपने निष्कर्ष निकाले. लेकिन 'हिंदू' के दस्तावेज से जो तथ्य सामने आए हैं, उनसे पता चलता है कि सरकार सुरागों के आधार पर जांच-पड़ताल करने की अनिच्छुक ही नहीं थी बल्कि उसने जेपीसी को जानबूझकर गुमराह भी किया. इस तरह सरकार ने बोफोर्स प्रतिनिधियों और भारत सरकार के सचिवों के बीच सितंबर 1987 में हुई बैठक के दौरान जो महत्वपूर्ण सुराग उभरे थे उन्हें बेकार हो जाने दिया.

बोफोर्स अध्यक्ष पेर ओव मोरबर्ग और मुख्य वकील लार्स गोथलीन 16 और 18 सितंबर 1987 के बीच एक उच्चस्तरीय भारतीय दल से मिले. इस दल में तत्कालीन रक्षा सचिव एस.के. भटनागर, विधि सचिव पी.के. करथा, प्रधानमंत्री के विशेष सचिव गोपी अरोड़ा और अतिरिक्त रक्षा सचिव एन.एन. वोहरा शामिल थे. यह बैठक मोरबर्ग और गोथलीन के जेपीसी के सामने पेश होने की निर्धारित तारीख से पहले हुई थी. इसमें सरकार के हाथ दो महत्वपूर्ण बातें लगीं. पहली यह कि मोरबर्ग ने माना कि उन्होंने स्वेंस्का को हुए भुगतान के बारे में स्वीडिश सेंट्रल बैंक को पूरा ब्यौरा दे दिया है. अब यह सवाल उठता है कि क्या उस समय भारत सरकार में किसी को स्नैब रिपोर्ट के उस गोपनीय हिस्से की जानकारी थी जिसमें बैंक को दिए गए मोरबर्ग के ब्यौरे के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया था कि चड्ढा बिचौलिए थे. सवाल यह है कि जेपीसी के सामने मोरबर्ग के इस ब्यौरे को लेकर प्रश्न क्यों नहीं उठाए गए.

शायद इसकी वजह यह रही हो कि बोफोर्स और भारतीय दल के बीच की बैठक के गुप्त ब्यौरों को जेपीसी से छिपाया गया था. इन ब्यौरों में दीगर बातों के अलावा यह भी बताया गया था कि पिटको (बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसका नाम बदलकर मोरेस्को कर दिया गया) और एई सर्विसेज को कैसे और कितना भुगतान किया गया. ब्यौरे के मुताबिक, मोरेस्को स्विट्जरलैंड में और एई सर्विसेज ब्रिटेन में विधिवत पंजीकृत हैं. मोरेस्को ही वह कंपनी है जिसकी असलियत छिपाने के लिए तमाम तरह की लीपापोती की गई है. यहां आकर साजिश और गहरी हो जाती है क्योंकि बोफोर्स अधिकारियों ने शायद अनजाने में जरूरत से ज्यादा जानकारी दे दी थी.

अप्रैल-जून 1987 में 'हिंदू' ने दस्तावेजों के जरिए जाहिर कर दिया था कि दलाली इन्हीं कंपनियों को मिली. उसने पिटको को हिंदुजा परिवार से भी जोड़ा था. सरकार ने कात्रे से कहा था कि वे जेपीसी को 'हिंदू' में छपे दस्तावेजों की असलियत जांचने में मदद दें. और चार महीने बाद स्वीडिश सरकार ने कबूल किया कि मोरेस्को नाम की एक पंजीकृत कंपनी है जिसे दलाली की रकम का कुछ हिस्सा दिया गया है.

राम-चित्रा की रपट के अनुसार बोफोर्स और भारत सरकार इस बात से काफी चिंतित थी कि अगर मोरेस्को के बारे में संसदीय समिति को जानकारी दी गई तो असलियत सामने आ जाएगी इसलिए दोनों

हिंदू

अंतर्द्वंद्व की आंच

"हिंदू अखबार मुझे एक ऐसी सलीकेदार, भद्र महिला की तरह लगता रहा है. जिसके सामने अगर कोई शरारतभरा शब्द बोल दिया जाए तो उसे भारी सदमा लग जाए. यह अखबार आरामतलब जिंदगी जीने वाले बुर्जुआ लोगों का अखबार है. इसके लिए आम लोगों की जिंदगी के संघर्ष और टकराव कोई अर्थ नहीं रखते..."

वर्षों पहले जवाहरलाल नेहरू ने यह टिप्पणी की थी, 'द ओल्ड लेडी ऑफ माउंट रोड' (माउंट रोड की बुजुर्ग महिला) के बारे में. 'हिंदू' को प्यार से इसी नाम से पुकारा जाता है. लगभग एक शताब्दी पुराने अखबार के लिए यह उपनाम उपयुक्त लगता है. आखिरी पन्ने पर हिंदू धर्मगुरु का धार्मिक प्रवचन छापने की परंपरा इसने जारी रखी है. 20 लाख पक्के पाठकों (प्रसार संख्या: 4,28,672) वाला मद्रास मुख्यालय वाला 'हिंदू' अखबार तमिल संस्कृति और पहचान का वैसा ही हिस्सा है जैसा कि इडली और सांबर.

हाल में दिल्ली संस्करण शुरू करने के बावजूद इसने अपनी क्षेत्रीय छवि तब तक बनाए रखी जब तक कि चित्रा सुब्रमण्यम और एसोसिएट एडिटर तथा इसके एक हिस्सेदार नरसिंहन राम ने बोफोर्स घोटाले पर सनसनीखेज रहस्योद्घाटनों का सिलसिला नहीं शुरू किया था.

पिछले पखवाड़े पत्रकार सम्मेलन में राम ने अपने चाचा तथा संपादक गोपालन कस्तूरी पर सरकार के दबाव के आगे झुकने का जिस तरह आरोप लगाया वह भी असामान्य बात ही थी क्योंकि मामला अंततः उनके ही अखबार से जुड़ा था. सनसनीखेज सुर्खियां और रहस्योद्घाटन, गहन छानबीन और पारिवारिक कलह 'हिंदू' की छवि से उतने ही बेमेल थे, जितना राम का अभूतपूर्व कदम. दरअसल यह पारिवारिक कलह अखबार के आंतरिक संघर्ष का प्रतीक है जिसका नेतृत्व राम कर रहे हैं. वे इसकी रूढ़िवादी छवि को तोड़ने की कोशिश करते रहे हैं.

विडंबना यह है कि 'हिंदू' की प्रारंभिक छवि दुस्साहसी, यहां तक कि बागी वाली रही है. 1889 में यह दैनिक बना और 16 वर्षों बाद यह इसके कानूनी सलाहकार कस्तूरीरंगा आयंगर के हाथों 75,000 रुपए में बिक गया. राजनैतिक रूप से महत्वाकांक्षी इस वकील ने इस अखबार का रूप समाज सुधार के औजार से बदलकर व्यावसायिक बना दिया.

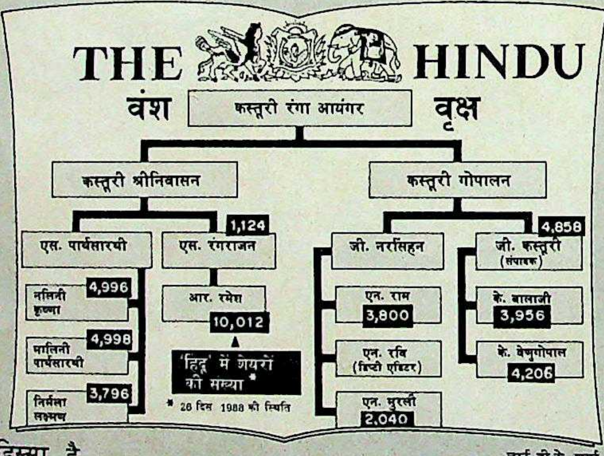

चार्ट: बी.के. शर्मा

उसी दौरान अखबार एनी बेसेंट और जॉर्ज अरुंदले के विचार-दर्शन पर हमला करके विवादास्पद हो उठा. लेकिन 'हिंदू' की सर्वोत्तम घड़ी तब आई जब इसने 1918 में देश की आजादी के लिए लड़ने का संकल्प किया. इसके बाद से इसका विकास और अस्तित्व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया.

परिवार के ही लोगों के संपादक बनने से अखबार की संपादकीय नीति में भारी बदलाव आते रहे. 1928 में ए. रंगास्वामी के संपादक बनने के बाद इसकी संपादकीय नीति खबरों से ज्यादा विचारों को अहमियत देने की हो गई और विचार भी मध्यमार्गी. इसने लंदन के 'टाइम्स' अखबार को अपना आदर्श बना लिया और उसी की नकल करने लगा.

यही विरासत परिवार के वर्तमान विभाजन की वजह है. 1965 से इसके संपादक चल रहे जी. कस्तूरी रंगास्वामी रूढ़िवादी हैं. दूसरे छोर पर हैं एन.राम. वे विद्रोही मनोवृत्ति के हैं और कॉलेज के दिनों में सक्रिय मार्क्सवादी रहे. एक अंग्रेज महिला से शादी करके उन्होंने पारिवारिक परंपराओं को तोड़ दिया. उन पर टीम भावना से काम न करने का आरोप लगाया जाता है.

ये बातें अखबार में उनके भविष्य का फैसला करेंगी. कस्तूरी ने इस बात से इनकार किया है कि सरकार ने कोई दबाव डाला. वे अपनी इस बात पर जमे रहे हैं कि बोफोर्स संबंधी ताजा रिपोर्टों में 'कुछ भी नया नहीं' है. अखबार के ज्यादातर लोग उनसे सहमत नहीं हैं और उनका मानना है कि सरकार ने नहीं, तो घोटाले में शामिल दूसरे लोगों ने कस्तूरी पर दबाव डाला होगा.

रहस्योद्घाटनों को जारी न रखने के सवाल पर पिछले पखवाड़े परिवार के हिस्सेदारों की बैठक में ज्यादातर सदस्यों ने कस्तूरी का ही समर्थन किया. पिछले पखवाड़े मामला टूटन के कगार पर पहुंच गया. अब यह परिवार इस उधेड़बुन में है कि राम को साथ रखा जाए या अलग कर दिया जाए. 'हिंदू' का भविष्य इसी सवाल के जवाब पर टिका है. —दिलीप बॉब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्तज़ार की घड़ियां समाप्त...

कौशाम्बी अपार्टमेन्ट्स
(फेज़-III)

- दिल्ली शहर के विकसित क्षेत्र के निकट
- भूमि का अधिग्रहण तथा कार्य निरन्तर प्रगति पर
- कब्जा दो साल के अन्दर
- **भुगतान 2 वर्षों में** (छः माही किश्तों में)

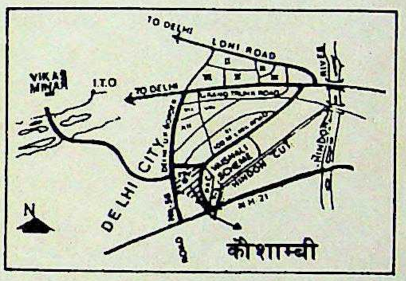

20% आरक्षण नगद भुगतान करने पर

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत अपार्टमेन्टस का विवरण

क्रम सं.	विवरण	कवर्ड एरिया (वर्ग मी. में) (आच्छादित एरिया सहित)	अपार्टमेन्ट्स का मूल्य लगभग रु.	पंजीकरण धनराशि + रु. 20.00
1.	एक रूम सेट/गेस्ट हाउस	27.87	1,75,000	17,520
2.	दो कमरे वाला अर्पाट्मेन्ट	57.59	3,60,000	36,020
	कम्पोजिट डीलक्स टाईप			
3.	दो कमरे का अर्पाटमेन्ट (दो कमरे, ड्राईंग/डायनिग व सुविधायें)	84.72	4,65,000	46,520
4.	तीन कमरे का अर्पाटमेंट (दो कमरे ड्राईंग/डायनिग लांज व सुविधायें)	113.34	6,20,000	62,020
5.	चार कमरे का अर्पाटमेन्ट (तीन कमरे, ड्राईंग/डायनिग लांज व सुविधायें)	134.24	7,25,000	72,520

आकर्षण : चौबीस घन्टे पानी व बिजली की व्यवस्था ● टेलीफोन, गीजर, मल्टी चैनल ऐन्टीना तथा डबल लिफ्ट की व्यवस्था ● स्कूल, क्लब, कम्युनिटी सेन्टर तथा पर्याप्त पार्किंग की सुविधा

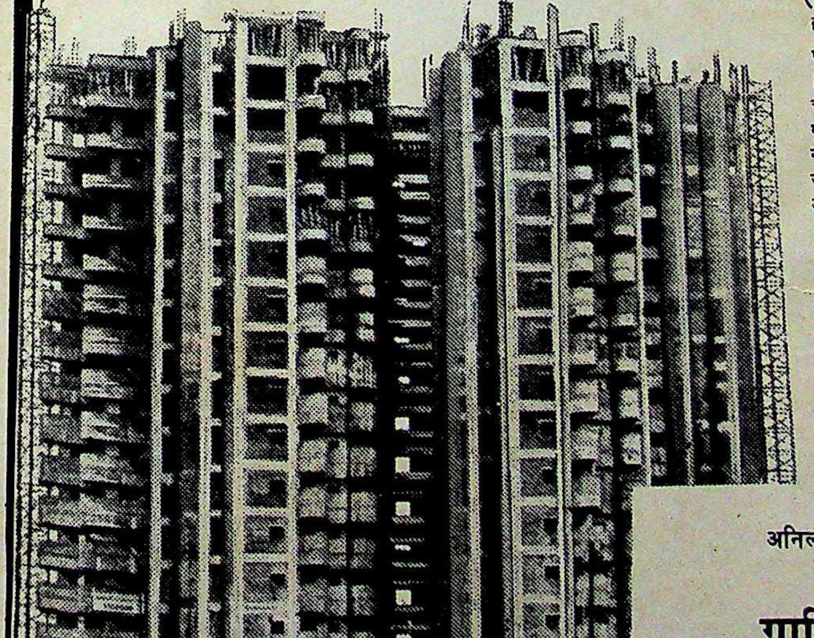

पंजीकरण पुस्तिका रु. 35/- (रु. पैतीस) का भुगतान करके **इलाहाबाद बैंक** (राईट गंज)की निम्नलिखित शाखाओं से तथा रु. 45/- (रु. पैतालिस) के मनीआर्डर द्वारा इलाहाबाद बैंक राईट गंज, (घंटा घर) से सीधे मंगाई जा सकती है।

गाजियाबाद : राईट गंज (घंटाघर), ● नवयुग मार्केट ● दिल्ली गेट, **नई दिल्ली** : 17, पार्लियामेंट स्ट्रीट, ● लाजपत नगर, ● करोल बाग, ● दरिया गंज, **दिल्ली** : चांदनी चौक, ● पार्क रोड, कृष्णा नगर, **बम्बई** : फोर्ट, **मद्रास** : माउन्ट रोड, **कलकत्ता** : 14, इन्डिया एक्सचेन्ज प्लेस, **लखनऊ** : हजरतगंज, **कानपुर** : स्वरूप नगर, **इलाहाबाद** : सिविल लाइन्स, **मेरठ** : बेगम ब्रिज, **चण्डीगढ़** : सेक्टर 17/बी, **जालन्धर** : सिविल लाइन्स, **लुधियाना** : क्लाक टावर, **अमृतसर** : कटरा आहलूवालिया. **वाराणसी** : चौक ब्रांच.

पंजीकरण
दिनांक 28.9.89 से 27.10.89 तक

अनिल कुमार शर्मा
सचिव

प्रभु नाथ मिश्र
उपाध्यक्ष

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण
विकास पथ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश.

एक सुन्दर शहर—हमारा संकल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन कात्रे

गोपी अरोड़ा

एस.के. भटनागर

हिंदू के रहस्योद्घाटनों से संकेत मिलता है कि वरिष्ठ भारतीय अधिकारी संकट टालने के लिए स्वीडिश अधिकारियों के साथ लीपापोती में शामिल हैं

ने मिलीभगत से समिति को इस बारे में अंधेरे मे रखा. 6 अक्तूबर 1987 को बोफोर्स ने भारत सरकार के रक्षा सचिव एस.के. भटनागर को लिखा कि कंपनी का नाम मोरेस्को नहीं है. वह तो मोइनिओ एस.ए. नाम की उस कंपनी का गुप्त नाम है जिसका 1979 से बोफोर्स से समझौता था. मोरबर्ग ने भटनागर को लिखा था, "19 सितंबर 1987 के पत्र के संदर्भ में हम आपको निम्न सूचना देना चाहेंगे—मोरेस्को किसी कंपनी का नाम नहीं बल्कि मोइनिओ एस.ए. का संदर्भ नाम है." मोइनिओ पता जेनेवा का था. 'हिंदू' की कुशल टीम भी शुरू में इससे गुमराह हो गई और उसने मोइनिओ की जांच शुरू कर दी पर जल्द ही वह पिटको-मोरेस्को नामक कंपनियों के संबंधों को समझ गई.

जेपीसी की रिपोर्ट के अनुसार सितंबर वाली बैठक में स्वीडिश अधिकारियों ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल को जो जानकारी दी थी और जो गोपनीय मेमो में दर्ज थी वह जेपीसी को सौंप दी गई. पर रिपोर्ट पर नजर डालने से जाहिर हो जाता है कि ऐसा नहीं था. सरकार ने जेपीसी को सिर्फ 6 अक्तूबर के पत्र की ही जानकारी दी थी जिसमें बोफोर्स ने पहली बार मोरेस्को की जगह मोइनिओ का नाम दिया था. जेपीसी की रिपोर्ट में कहीं भी सितंबर 1987 की उस बैठक का जिक्र नहीं था जिसमें दलाली खाने वालों में मोरेस्को का नाम भी बताया गया था.

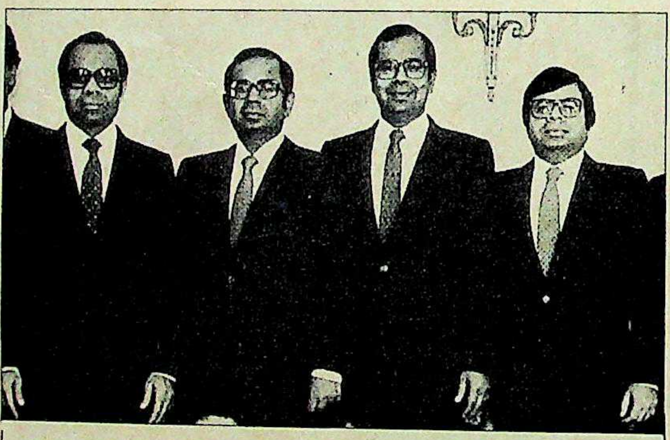

जून 1987 में 'हिंदू' ने ऐसे दस्तावेज छापे जिनमें भुगतानों का संबंध हिंदुजा बंधुओं से बताया गया था. अक्तूबर 1988 में सीबीआई ने इन दस्तावेजों को वैध ठहराया

'हिंदू' के अनुसार इसका एकमात्र मकसद था मोरेस्को-हिंदुजा संबंधों की ओर से ध्यान हटाना. अगर सितंबर वाली बैठक की पूरी जानकारी जेपीसी को दी जाती तो कात्रे के मातहत काम कर रही खुफिया एजेंसी को मोरेस्को की असलियत की पड़ताल करनी पड़ती. लेकिन कात्रे मोइनिओ में उलझ गए.

यह सच है कि मोइनिओ एस.ए. नाम की कोई कंपनी नहीं थी. परंतु सितंबर 1989 में जब 'हिंदू' ने कंप्यूटर की मदद से बेर्ने के सेंट्रल फेडरल रजिस्ट्री में जांच कराई तो पिटको और मोरेस्को का अस्तित्व साबित हो गया. राम और चित्रा की खोजबीन अब पिटको-मोरेस्को और साथ ही एई सर्विसेज की मिल्कियत का पता लगाने पर केंद्रित हो गई. राम के अनुसार इस बात की पक्की दस्तावेजी सूचना है कि सितंबर 1987 की बैठक के महीनों पहले से भारत सरकार के बड़े लोगों और एई सर्विसेज के बीच संपर्क थे. सितंबर 1987 की बैठक में पहली बार एई सर्विसेज का नाम आधिकारिक तौर पर भारतीय प्रतिनिधिमंडल को बताया गया था.

मोरेस्को को सौदे में से आठ फीसदी दलाली मिलनी थी. 'हिंदू' की रपट ने इस बात की विस्तृत जानकारी दी है कि किस तरह से चड्ढा और स्वेंस्का के 6 फीसदी कमीशन में कटौती कर दी गई. स्वेंस्का को इसका आधा कमीशन मिला और बाकी 3 फीसदी एई सर्विसेज को. एई सर्विसेज ने स्वीकार किया है कि उसने इस तोप सौदे के लिए भारत में कुछ भी नहीं किया.

'स्नैब' की सेंसर की हुई रिपोर्ट से यह जाहिर होने के बाद भी कि चड्ढा को बड़ी रकम मिली है, उनके साथ नरमी बरती गई. उन्हें हाथ लगाने से सरकार डरती रही. उन्हें खुद उनकी ही शर्तों पर देश छोड़ने और फिर लौटने की इजाजत दी गई और विदेशी मुद्रा विनिमय कानून का तकनीकी उल्लंघन करने के लिए उन पर महज 70,000 रु. जुर्माना किया गया.

कुल मिलाकर 'हिंदू' का यह रहस्योद्घाटन सरकार के लिए घातक है. अखबार के अनुसार कुल दलाली 155 करोड़ रु. के आसपास होगी; सरकार और जेपीसी के दावों के विपरीत बोफोर्स सौदे में दलाल और बिचौलिए शामिल थे; सरकार को मिली जानकारी से मोरेस्को के खिलाफ जांच की जा सकती थी पर इस कंपनी का नाम जेपीसी से छिपाया गया और उसे एक फर्जी कंपनी का नाम दे दिया गया. साथ ही अक्तूबर 1988 में यह बात आधिकारिक रूप से साबित हो गई थी कि अप्रैल 1987 में पिटको-मोरेस्को और हिंदुजा के संबंधों पर 'हिंदू' ने जो दस्तावेज छापे, वे प्रामाणिक थे.

इन सारे तथ्यों के बाद पुराना सवाल एक बार फिर खड़ा हो गया है कि वह कौन है जिसे सरकार बचाना चाह रही है? और क्यों? 'हिंदू' की रपट के बाद निश्चित है कि इन सवालों का जवाब पाने के लिए खोजी रपटों का नया सिलसिला चल पड़ेगा.

—इंद्रजीत बधवार, रमिंदर सिंह के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिकता

नफरत के श

शहर-दर-शहर दंगे जैसे-जैसे भड़क रहे हैं और अयोध्या में मंदिर-मस्जिद वाली विवादास्पद जगह पर नया मंदिर बनाने के लिए लाखों शिलाओं के पहुंचने का दिन—9 नवंबर—जैसे-जैसे करीब आता जा रहा है, देश का वातावरण आपसी वैमनस्य से कटु से कटुतम होता चला जा रहा है. स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि प्रधानमंत्री तक को 'हिंदू राष्ट्र बनाने की कोशिश करने वालों' की आलोचना में मुंह खोलना पड़ा है.

गृह मंत्रालय के एक ताजा दस्तावेज के अनुसार, "किसी एक मुद्दे ने हिंदू-मुस्लिम समुदाय के आपसी सद्भाव को इस कदर नहीं बिगाड़ा जितना कि इस राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद ने बिगाड़ दिया है." इसमें कहा गया है कि "राजनीति को सांप्रदायिकता का जामा पहनाने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण संप्रदायों के आपसी संबंध सामान्य बनाने की प्रक्रिया में बड़ी बाधा पैदा हो गई है." यह भयावह चेतावनी देने के ठोस कारण भी हैं. अल्पसंख्यक समुदाय ने अगर एकजुट होकर जवाबी कार्रवाई की तो पूरा देश अपनी नींव से हिल सकता है. मुसलमान अगर अल्पसंख्यक हैं तो महज आबादी के प्रतिशत के हिसाब से. लेकिन कश्मीर से कन्याकुमारी तक उनकी कुल संख्या 10 करोड़ से ज्यादा ही है. तभी तो भारत दुनिया का दूसरा देश है जहां मुसलमानों की आबादी सबसे ज्यादा है.

कट्टरपंथी हिंदू संगठनों का मानना है कि राम शिला पूजन के आयोजनों से वे पूरे हिंदू समुदाय को एकजुट कर सकते हैं

लेकिन यह आंकड़ा हिंदूवाद के पैरोकारों को कतई परेशान नहीं करता. विश्व हिंदू परिषद के महामंत्री अशोक सिंघल का यह बयान इसका सबूत है, "जल्द ही आप पाएंगे कि इस देश का हर राजनैतिक दल दो धाराओं में बंट गया है—एक वह जो हिंदू राष्ट्रवाद को मानता है और दूसरा जो इसे नहीं मानता." सिंघल ने मई 1986 में एक इंटरव्यू में यह बयान पूरी गंभीरता से दिया था. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आनुषंगिक संगठन विश्व हिंदू परिषद उन दिनों राम

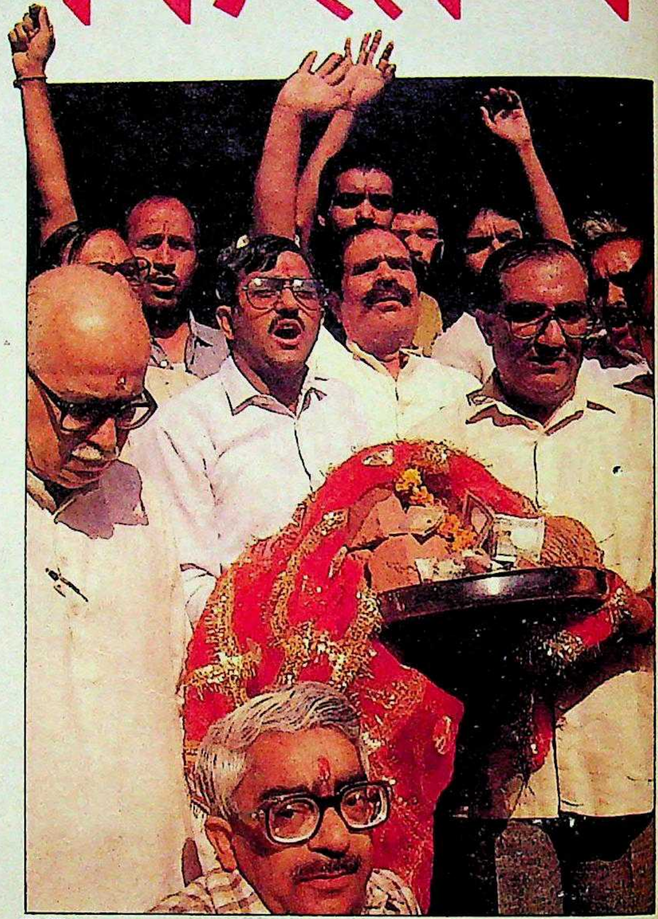

रघु राय

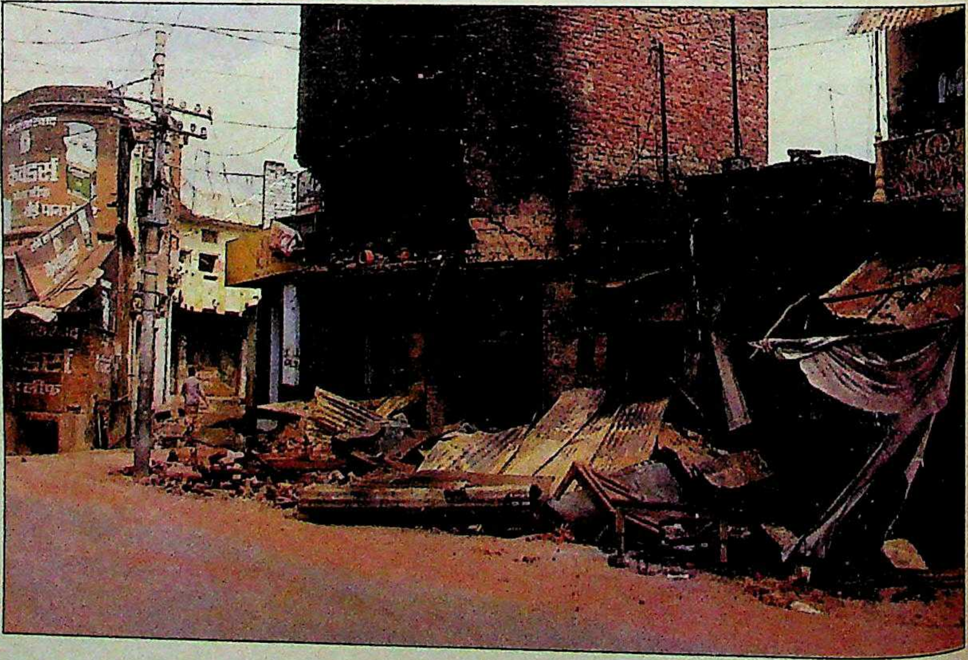

यशवंत नेगी

(ऊपर) शिला पूजन में भाजपा नेता; और दंगे से तबाह कोटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शोलों को हवा

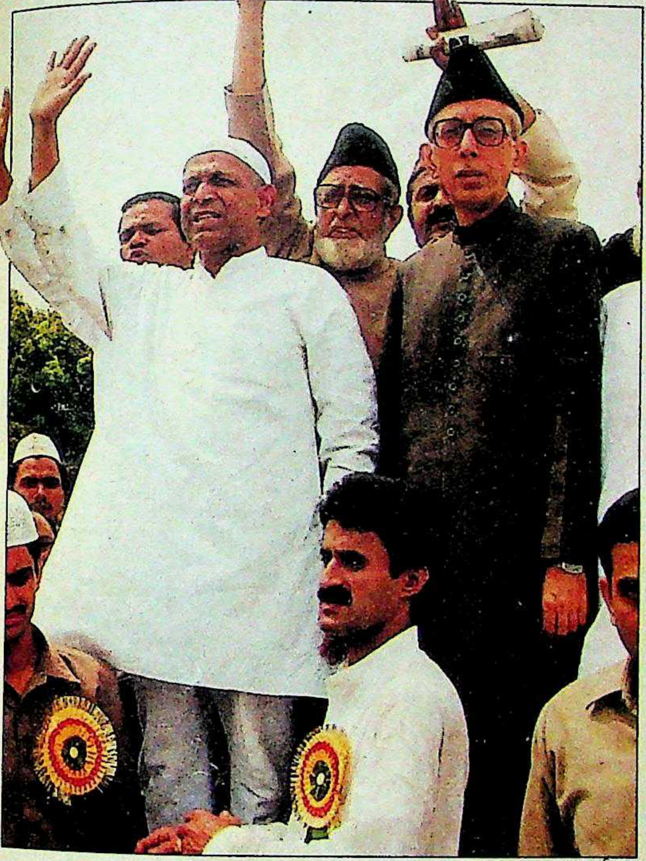

प्रशांत पंजियार

जन्मभूमि को मुक्त कराने की जंग का बिगुल फूंक रहा था. हिंदू आक्रामकता को उभारने के इसके जनजागरण अभियान के चार सूत्र थे—हिंदुत्व की खातिर लड़ने के लिए सभी हिंदुओं को एक झंडे के नीचे इकट्ठा करना, धर्मांतरण पर रोक लगाना, संस्कृत को सबके इस्तेमाल की भाषा के रूप में प्रोत्साहित करना और हिंदूवादी राजनैतिक उम्मीदवारों का समर्थन करना.

सांप्रदायिक आधार पर मतदान कोई नई बात नहीं है. मुसलमान परंपरागत रूप से एक-सी ही पसंद-नापसंद से वोट डालते हैं. करीब 100 महत्वपूर्ण चुनाव क्षेत्रों में इस समुदाय के 20 फीसदी से ज्यादा मतदाता हैं. हर दल, खास तौर पर शासक दल यह वोट बैंक हथियाने के लिए हमेशा लालायित रहता है. लेकिन इस बार एक अंतर है. एकीकृत हिंदू वोटों का एक नया वोट बैंक उभरने की संभावनाएं दिखने लगी हैं. जांत-पांत के बंधनों से परे यह वोट बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में भी रूपाकार लेने लगा है जहां अभी तक मतदान धार्मिक आधार पर नहीं बल्कि जातीय आधार पर होता आया है.

नवंबर की 9 तारीख जैसे-जैसे करीब आ रही है, सांप्रदायिक विभाजन गहराता जा रहा है, मुसलमान असुरक्षित महूसस करने लगे हैं

अयोध्या में मंदिर निर्माण के लिए स्थान-स्थान पर ईंटों की पूजा—जिसे राम शिला पूजन का नाम दिया गया है—करवाकर परिषद हिंदुत्व का संदेश हर शहर-कस्बे और गांव-गांव तक ले जा रही है. इस अभियान के पीछे भारतीय जनता पार्टी ने भी अपनी ताकत लगा दी है. गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार स्थिति निश्चित रूप से बदतर होती जा रही है. गृहमंत्री बूटा सिंह कहते हैं, "इस हिंसा में अंतरराष्ट्रीय ताकतें शामिल हैं. हमारे यहां दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है. यह हमारी परीक्षा है" (देखें इंटरव्यू).

पिछले दो महीनों में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में भड़के दंगों ने 60 से ज्यादा लोगों की बलि ले ली और 200 लोग घायल हो गए.

आर के शर्मा

(ऊपर) दिल्ली रैली में मुस्लिम नेता; बदायूं दंगे के शिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा परेशानी वाली बात तो यह है कि हिंसा इस बार उन इलाकों में भी हुई जो अभी तक सांप्रदायिकता की विषबेल से मुक्त थे. मसलन राजस्थान का कोटा, उत्तर प्रदेश का बदायूं, बिहार का सासाराम और मध्य प्रदेश का महू.

केरल में चर्च को माकपा की अगुआई वाली ई.के. नयनार सरकार से डर है कि वह उसकी शिक्षा संस्थाओं पर पाबंदियां जड़ देगी. उधर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राम जन्मभूमि को प्रमुख मुद्दा बनाने पर तुला है. राज्य युवा इंका के अध्यक्ष रमेश चेन्नीथला को "केरल में सांप्रदायिक राजनीति से मुक्त होने का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता." वामपंथियों के नेतृत्व वाले एक और राज्य—पश्चिम बंगाल—को भी फिरकापरस्ती की आंच झेलनी पड़ रही है. यहां विश्व हिंदू परिषद ने दुर्गा पूजा के दौरान राम शिला पूजन की शुरुआत की. ज्योति बसु ने इसके खिलाफ कड़ा रवैया अपनाया, "अगर कोई ईंटों की पूजा करना चाहता है तो वह इसे अपने घर पर करने के लिए स्वतंत्र है. हम इसे सार्वजनिक स्थानों पर नहीं होने देंगे."

गुजरात में सांप्रदायिकता का रूप—कर्णवती (विश्व हिंदू परिषद अहमदाबाद को यही नाम देना चाहती है) में देखा जा सकता है. यह नाम चल निकला है. उत्तरी गुजरात का शहर पालनपुर पिछले महीने भर में सांप्रदायिक हिंसा की चपेट में आने वाला नौवां शहर था.

विवाद का घटनाक्रम

1984:

अप्रैल: विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित धर्म संसद ने अयोध्या में विवादास्पद राम जन्मभूमि की 'मुक्ति' का आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया जहां 16वीं शताब्दी में बाबर ने मस्जिद बनवाई थी.

जून: राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन.

1985:

राम जानकी रथ-यात्रा का प्रारंभ.

1986:

फरवरी: फैजाबाद के जिला न्यायाधीश ने इस पूजा स्थल से ताला खोलने का फैसला सुनाया.

मार्च: बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का गठन.

1987:

मार्च: बाबरी मस्जिद की वापसी की मांग के लिए बोट क्लब पर तीन लाख मुसलमान इकट्ठे हुए.

अप्रैल: अयोध्या में हिंदू राम जन्मभूमि मुक्ति की शपथ लेने के लिए इकट्ठे हुए.

1988:

अगस्त और अक्तूबर: बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का अयोध्या मार्च का आह्वान. बाद में रद्द.

दिसंबर: बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी में फूट.

1989:

फरवरी: कुंभ मेले में लगे महासंत समागम में अयोध्या में मंदिर बनाने का फैसला.

मई: हरिद्वार में एक और संत समागम में मंदिर निर्माण की तिथि निर्धारित की गई.

जुलाई: बजरंग दल के युवकों ने अयोध्या में मंदिर बनाने के लिए जीवन न्यौछावर करने की शपथ ली.

अगस्त: हाईकोर्ट ने आखिरी फैसले को स्थगित रखते हुए विवादास्पद स्थल पर यथास्थिति कायम रखने का अंतरिम आदेश दिया. बाबरी मस्जिद आंदोलन समन्वय समिति ने फैसला मानने पर सहमति जताई पर बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी ने तीन सदस्यीय विशेष खंडपीठ की मांग की.

27 सितंबर: परिषद विवादास्पद स्थल से दूर शिलान्यास करने पर राजी हुई.

30 सितंबर: परिषद ने कहा कि वह हिंदू विरोधी फैसले को नहीं मानेगी. परिषद ने 2,000 से अधिक आबादी वाले गांवों में शिला पूजन प्रारंभ किया.

अक्तूबर: मध्य प्रदेश और गुजरात तक में दंगे भड़के. सरकार ने घोषणा की कि मस्जिद को गिराया नहीं जा सकता. पूजा स्थल को सौंपने की परिषद की मांग पर विवाद जारी.

9 नवंबर: अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के शिलान्यास का दिन. पूरा विवादास्पद स्थल हिंदुओं को सौंपने के लिए सरकार को नई तारीख देने के बारे में परिषद निर्णय करेगी.

मध्य प्रदेश में चार साल से बनते सांप्रदायिक माहौल के परिणाम सामने आने लगे हैं. पिछले पखवाड़े महू, रतलाम और खरगौन में हुए दंगों में पांच लोगों की जान गई और कई लाख की संपत्ति नष्ट हो गई. उग्रवादी तेवर को हवा देने का काम किया भाजपा ने. भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष सुंदरलाल पटवा ने यह कहते हुए सोनिया और राजीव पर हमला बोला, "राष्ट्रीयता की बात प्रधानमंत्री कर रहे हैं जिन्होंने खुद अपने घर में विदेशी और विधर्मी बीवी रखी है, जिसने देश की स्वतंत्रता तथा सार्वभौमिकता को खतरे में डाल दिया है."

देश भर में सांप्रदायिकता के कड़ाह खौल रहे हैं. आशावादी लोग आंकड़ों के सहारे संतोष कर सकते हैं. 1986 की तुलना में इस साल सांप्रदायिक हादसों और उनमें मरने वालों की संख्या कम है. पर हकीकत में स्थिति निराशाजनक है. खुफिया ब्यूरो के एक गोपनीय अध्ययन के अनुसार, "सांप्रदायिक समस्या का गहराई से अध्ययन करने पर कोई गुणात्मक फर्क नहीं दिखाई देता. संप्रदायों में परस्पर अविश्वास अभी भी काफी ज्यादा है. 'गंभीर' कहे जाने वाले दंगों की संख्या देश में इस बार 1986 से ज्यादा है."

एक खतरनाक बात यह भी हुई है कि सांप्रदायिकता ग्रामीण इलाकों

नक्शा: बी.के. शर्मा

बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि

भवान सिंह

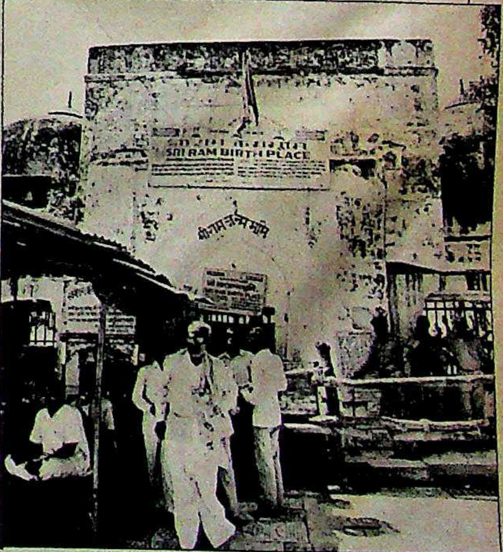

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी फैल रही है. 1988 के 611 सांप्रदायिक हादसों में 55 फीसदी गांवों में हुए. यह तथ्य इस चिंता को इसलिए भी बढ़ा देता है कि इन इलाकों में दंगों पर काबू पाना पुलिस के भी बस में नहीं. परेशान करने वाला तथ्य यह भी है कि 1971 में "अति गंभीर किस्म के दंगों की संख्या 80 थी जो पिछले साल बढ़कर 213 पर पहुंच गई." पिछले साल तक अति संवेदनशील "जिलों की संख्या 82 थी जो इस साल सौ का आंकड़ा पार कर चुकी है."

एक नए किस्म की संकीर्णता हर ओर दिखने लगी है. विश्व हिंदू परिषद के पोस्टरों में मनोहारी छवि वाले राम की जगह अब धनुष की प्रत्यंचा ताने युद्धाभिमुख राम ने ले ली है. पहले नारे लगते थे—'सौगंध राम की खाते हैं, हम मंदिर वहीं बनाएंगे' और 'बच्चा-बच्चा राम का, जन्मभूमि के काम का.' अब नारा गूंजता है—'जिस हिंदू का खून न खौले, खून नहीं वह पानी है, जन्मभूमि के काम न आए वह बेकार जवानी है.' बजरंग दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष बैकुंठ लाल शर्मा 'प्रेम' कहते हैं, "हम मंदिर के लिए समर्पित हैं." विश्व हिंदू परिषद से जुड़े कुछ हिंदू संगठनों के ऐसे गरममिजाज लोगों को लेकर खुद इनके नेता भी चिंतित रहते हैं क्योंकि उनके कट्टरवादी बड़बोलेपन की वजह से हिंदू आंदोलन की लगाम उदार नेतृत्व के हाथों से निकल भी सकती

बदायूं

एक शहर की दर्दनाक मौत

आर.के. गुप्ता

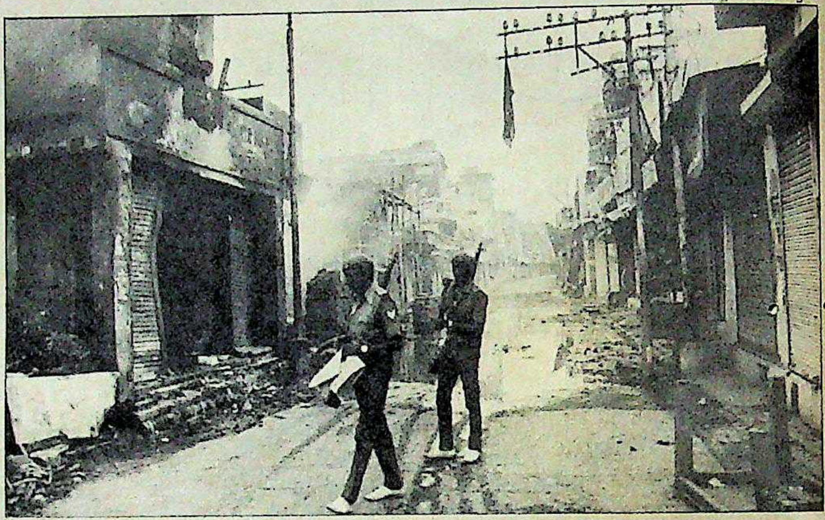

बरबादी की कहानी कहता शहर

पिछले पखवाड़े बदायूं शहर की धड़कन रुक गई. पश्चिम उत्तर प्रदेश का एक लाख आबादी वाला यह शहर, जिसमें हिंदू और मुसलमान लगभग आधे-आधे हैं, यहां के बाशिंदों के लिए वैसे भी निर्जीव-सा था. यहां है भी क्या? गंदगी से अटे पड़े मक्खियों से भिनभिनाते बाजार, भरी हुई नालियां और सर्पाकार तंग गलियां! कारीगरों, व्यापारियों, ट्रांसपोर्टरों, अनाज और कपड़ा व्यवसायियों की इस बस्ती में कोई उद्योग तो है नहीं. हां, लोटनपुरा जैसी गंवई हरिजन गंदी बस्तियां और नई सराय जैसी मुसलमानों की खिच-पिच बसाहटें जरूर हैं जहां के लोग ले-देकर अपना पेट पालते हैं.

फिर भी यहां पले-बढ़े लोगों के लिए इस शहर की कई सुखद अनुभूतियां हैं. मसलन जालंधरी सराय और कचहरी रोड के मकानों की छतों पर बसंत की बयार में पतंगबाजी का आनंद, मम्मन खां हलवाई की दुकान के आगे पेड़ों के लिए लगती कतार, परेड ग्राउंड में हॉकी खेलना. बदायूं और बगल के कस्बे उझानी में मुसलमान और हिंदू घुले-मिले थे. उनमें एक-दूसरे के पूजा स्थलों—मंदिरों और मस्जिदों के प्रति समान आदरभाव हुआ करता. यहां बकरीद के दिन मुसलमान उम्दा मांस हिंदुओं के यहां भेजा करते और होली में मुसलमान बढ़िया खादी और मलमल के झक सफेद कुर्ते-पायजामे पर रंगीन टोपी पहनकर हिंदुओं के यहां होली मिलन के लिए जाते.

यहां हिंदू और मुसलमान एक ही भाषा—उर्दूमिश्रित हिंदुस्तानी बोलते हैं और दूरदर्शन पर बोली जाने वाली हिंदी को कठिन भाषा कहा जाता है. आखिरकार बदायूं ने ही शकील बदायूंनी और फतरी बदायूंनी जैसे शायर पैदा किए. और बदायूं में ही दूरदराज से हिंदू, सूफी संतों—बड़े सरकार और छोटे सरकार की जियारत करने आते हैं और वह भी मौलवियों के मार्गनिर्देशन में. बदायूं जिले की एक सीमा गंगा बनाती हैं. यहीं वर्षों पुराने काकोरा मेले में लाखों हिंदू श्रद्धालु आते हैं.

सचमुच बदायूं का चरित्र न तो मुस्लिम है, न ही हिंदू. इसके मुहल्लों में कहीं भी किसी से पूछिए कि आप किस बिरादरी के हैं, तो फौरन उत्तर मिलेगा कि वह ब्राह्मण, कायस्थ, महाजन, मुराव, कुर्मी, यादव, जाटव, ठाकुर, गद्दी, जुलाहा, अंसारी या पठान है. आपको कभी 'हिंदू' या 'मुस्लिम' जैसे शब्द सुनने को नहीं मिलते.

बदायूं के बाशिंदों को एक बात पर हमेशा गर्व रहा. हाल के वर्षों में शाहजहांपुर, पीलीभीत, मुरादाबाद, इलाहाबाद और बाराबंकी जैसी पड़ोसी इलाकों में हिंदू-मुसलमानों के दंगे भड़के लेकिन बदायूं में नहीं. यहां तक कि देश-विभाजन के समय भी यहां छिटपुट तनाव ही दिखा. बदायूं के सांसद एक मुसलमान, इंका के सलीम शेरवानी हैं और विधायक हिंदू, पर्यटन राज्यमंत्री प्रमिला मेहरा हैं. दोनों ही मुसलमानों और हिंदुओं के साझा वोटों से जीतते आए हैं.

आज यह धर्मनिरपेक्ष रूप तार-तार हो गया है. जियारत श्रद्धालुओं से खाली है. अब खैराती चौक और चूना मंडी की गलियों में बच्चे एक-दूसरे को खदेड़ते भाग-दौड़ नहीं करते. बदायूं में 10 दिनों के कर्फ्यू के बाद अब तक लोग आतंक में जी रहे हैं. उनके हाथ खून से सन गए हैं. उनकी आंखों में घृणा है. उनके दिल बदले की आग में धधक रहे हैं. उनका दिमाग अब सिर्फ अफवाहों को ही तरजीह देता है. किसी शरारती लड़के द्वारा फोड़ा गया पटाखा भी मशीनगन का हमला मान लिया जाता है. शहर की पानी की टंकी पर बैठे गिद्धों को 'दूसरे' समुदाय की बंदूक से लैस दंगाई मान लिया जाता है. मान लिया गया है कि बदायूं और उझानी में बाहर से ट्रकों में भरकर दंगाइयों को लाया गया है.

कौन विश्वास करेगा कि 28 सितंबर को बदायूं में भड़का 30 लोगों की बलि लेने वाला दंगा विधानसभा में उर्दू विधेयक लाने से हुआ? किसे नहीं मालूम, बदायूं को यह भाषा कितनी प्रिय है. उर्दू विधेयक लाने का समय भी मूर्खतापूर्ण था क्योंकि यह ऐसे समय लाया गया जब देश भर में हिंदू सांप्रदायवादियों का असर बढ़ने और कुछ स्थानीय मुस्लिम नेताओं की अदूरदर्शिता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और महासचिव केदारनाथ साहनी द्वारा शिला पूजन के समय यह बात स्पष्ट दिखी. पूजन खत्म होते ही युवकों ने सांप्रदायिक नारे लगाने शुरू कर दिए और आडवाणी तथा साहनी असहाय-से देखते रहे. बाद में साहनी ने चुनौती भरे स्वर में कहा, "हमने सरकार को ताला खोलने की तारीख दे दी थी और उसने ताला खोल दिया. अब हम उन्हें मंदिर बनाने की तारीख दे रहे हैं और वे यह काम भी करेंगे."

निस्संदेह, हिंदू उग्रवादियों में जगे नए आत्मविश्वास के लिए सरकार भी एक हद तक दोषी है. भाजपा की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष प्रमोद महाजन चुनाव को सांप्रदायिक रंग में रंगने के लिए इंका को दोषी ठहराते हैं. वे इसके तीन उदाहरण देते हैं. एक उदाहरण मिजोरम का चुनाव है जहां जारी एक पर्चे में इंका ने कहा था कि वह ईसाई अधिकारों के लिए लड़ेगी. दूसरा उर्दू को राजभाषा बनाने का मुद्दा है, जिसकी वजह से बदायूं में दंगा हुआ और तीसरा दूरदर्शन सीरियल 'रामायण' में राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल से 1988 के इलाहाबाद उपचुनाव में चुनाव प्रचार कराना.

अपने उग्रवादी रवैये के पक्ष में हिंदू संगठन कई तर्क देते हैं:

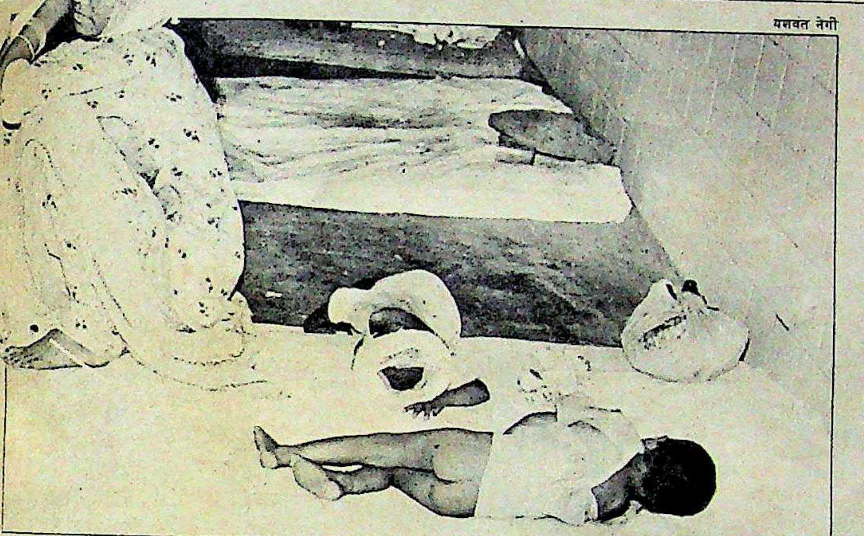
यशवंत नेगी

अस्पताल में दंगे के शिकार: बेकसूर

चलते यहां भी तनाव उभरने लगे थे.

इस सब की शुरुआत हुई 27 सितंबर को उर्दू विधेयक के विरोध में निकले एस.के. इंटर कॉलेज के छात्रों के शांतिपूर्ण जुलूस से. यह प्रदर्शन भाजपा की प्रेरणा से निकला था. हिंसा तब भड़की जब दूसरे दिन इस्लामिया कॉलेज के करीब 200 छात्रों का जुलूस एस.के. कॉलेज में घुसने की कोशिश करने लगा. फिर तो घमासान शुरू हो गया. ईंट-पत्थर, छुरे सब चलने लगे. आधे घंटे में शहर के मुख्य चौक चहसरका तक हिंसा फैल गई.

रेलगाड़ी रोककर की गई हत्याओं के मामले में जिस रामसेवक को गिरफ्तार किया गया वह कुर्मी जाति का अपराधी तत्व है जिसने बाद में राजनैतिक चोगा पहन लिया. उसके नाम हत्या के कई मामले दर्ज हैं और जैसा कि पुलिसवाले बताते हैं कि वह पहले लोकदल का 'जुझारू कार्यकर्ता' हुआ करता था और अब जनता दल का कार्यकर्ता है.

बदायूं के अग्रणी वकील प्रभाशंकर से पूछा गया, "बदायूं में यह सब क्यों कर हुआ?" उनका जवाब है, "जाहिर है हिंदू अपनी ही सरकार द्वारा दोयम दर्जे के नागरिक जैसा बरताव सहने को तैयार नहीं हैं." प्रभाशंकर कतई सांप्रदायिक नहीं हैं. शायद वे जिस 'तुष्टिकरण' की बात करते हैं उसे जानते नहीं. इस तुष्टिकरण में सत्तारूढ़ पार्टी के वोट के मद में फायदे के अलावा एक सामाजिक पहलू भी है क्योंकि मुसलमानों की 60 फीसदी से ज्यादा आबादी गरीबी रेखा के नीचे गुजर-बसर करती है.

लेकिन वे हिंदुओं में उस आम धारणा के शिकार लगते हैं जिसके अनुसार अल्पसंख्यकों को तो तुष्ट करने की नीति अपनाई जा रही है जबकि बहुसंख्यक समाज को अपनी अहमियत जताने से रोका जा रहा है. और यह भी कि एक दिन ऐसा आएगा जब धर्म परिवर्तन होने से तथा परिवार नियोजन की मनाही के कारण अल्पसंख्यक उनसे आगे हो जाएंगे. उधर सरकार की ओर से यह बताने की कोई कोशिश नहीं की गई है कि 1951 की जनगणना में मुसलमानों की संख्या कम बताई गई और 1941 की जनगणना को आधार माना जाए तो हिंदू और मुसलमानों की आबादी दर में वृद्धि लगभग बराबर है.

इसी तरह के विचारों से बहुसंख्यक समुदाय में अल्पसंख्यकों जैसी असुरक्षा की भावना घर कर गई है और बदायूं जैसी जगह में हिंदू पुनरुत्थानवाद के आंदोलन को शह मिली है. बदायूं के मुसलमानों का राजनैतिक रवैया भी शायद अदूरदर्शी है. उनके वोट देने के तौर-तरीके ने भी उन्हें अलग-थलग कर दिया है. हालांकि बदायूं के मुसलमानों ने हिंदू उम्मीदवारों को वोट दिए हैं पर वे एक समुदाय के तौर पर वोट देते हैं.

ये तौर-तरीके बदायूं जिले के हिंदुओं की चिंता का विषय बने हैं. जून में नगर निगम चुनावों के दौरान मुसलमानों के अपने समुदाय के उम्मीदवार को वोट देने से हिंदुओं में एक तरह की असुरक्षा भावना कर गई कि मुसलमान सांसद और नगरपालिका के मुसलमान चेयरमैन के जरिये मुस्लिम राज बनाने की कोशिश चल रही है. इसके कुछ हफ्ते बाद उझानी में इसी डर को जनता दल के नेता श्रीकृष्ण गोयल ने अपने फायदे के लिए भुनाया. उन्होंने ऐसा सांप्रदायिक भाषण दिया कि हिंदुओं ने एक हिंदू चेयरमैन को वोट देकर जिताया और मुसलमानों के एकमुश्त समर्थन के बावजूद डॉ. निहाल अहमद हार गए.

मोटे तौर पर यह सांप्रदायिक विभाजन ही है. चुनाव नजदीक आने के साथ बदायूं में यह विभाजन और तेज हो गया है क्योंकि पहली दफा हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए. इसलिए असुरक्षा के कारण मुसलमान अब पहले से अधिक एक समुदाय के तौर पर वोट देंगे. और शायद उनके वोट इंका को ही मिलें. हिंदू अपने निर्वाचित नेताओं से दंगे में शामिल 60 लोगों की रिहाई की मांग कर रहे हैं. कुछ को तो अपराधी रामसेवक में हिंदू नायक नजर आता है. हिंदू-मुसलमान तनाव की खबरें अब बदायूं जिले के गांवों में फैल रही हैं जहां यादव, ठाकुर और मुराव जाति के लोगों को बताया जा रहा है कि वे हिंदू हैं और उन्हें हिंदुओं को ही वोट देना चाहिए.

भविष्य में क्या होगा, इसकी सिर्फ अटकलें ही लगाई जा सकती हैं. लेकिन बदायूं का चरित्र अभी तक भारतीय ही हुआ करता था. आज वह मुसलमान और हिंदू होकर रह गया है.

—इंद्रजीत बधवार, बदायूं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

▶ शाहबानो के मामले में राजीव सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को नहीं माना और सांप्रदायिक दबाव के चलते मुस्लिम महिला विधेयक पास करवाया. अब विश्व हिंदू परिषद कहती है कि वह भी राम जन्मभूमि के मामले पर लखनऊ हाईकोर्ट का फैसला मानने के लिए बाध्य नहीं हैं.

▶ मुस्लिम संगठन हमेशा अपनी समस्याओं का अंतरराष्ट्रीयकरण कर देते हैं. अब हिंदू संगठन भी 20 देशों से पवित्र शिलाएं और चंदा हासिल कर रहे हैं. बांग्लादेश में हिंदुओं की स्थिति को लेकर संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग के समक्ष प्रदर्शन किया गया.

▶ राजनैतिक दल हमेशा मुसलमानों को एक वोट बैंक मानते रहे हैं. अब बजरंग दल ने भी नारा लगाना शुरू कर दिया है—'जो हिंदू धर्म का मान करेगा, वोट उसी को जाएगा.' चुनाव से पहले इंका हमेशा इमाम अब्दुल्ला बुखारी जैसे धार्मिक नेताओं से गठजोड़ बना लेती है. अब भाजपा नेता भी साधुओं के संग मंच पर विराजते हैं.

▶ मुस्लिम नेता, खासकर बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी (बीएमएसी) के सैयद शहाबुद्दीन हमेशा शहीदाना अंदाज अपनाने की चालें चलते हैं. उन्होंने पहले स्वतंत्रता दिवस समारोहों के बुखारी का कहना है, "ताला खोलने से ही बेइंतहा नुकसान हुआ है. अब यह स्थायी झगड़े के बीज बोएगा." उग्रवादी मुस्लिम संगठन आस्तीनें चढ़ा रहे हैं. पाकिस्तान से संबंध रखने वाली जमाते-इस्लामी और 637 अध्ययन केंद्र चलाने वाली स्टुडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया मुस्लिम जीवन शैली पर जोर दे रहे हैं जबकि 1982 में स्थापित जमात की युवा इकाई स्टुडेंट्स इस्लामिक आर्गेनाइजेशन टेलीविजन पर 'महाभारत' और 'रामायण' के प्रसारण का विरोध कर रही है. फिर अहमद बुखारी की आदम सेना और बीएमएसी के उग्रवादी धड़े के नेता जफरयाब जिलानी की अगुआई वाला कौमी मोर्चा भी है.

फिलहाल तो सभी पार्टियां चुनाव के संदर्भ में सांप्रदायिक स्थिति का आकलन करने में जुटी हुई हैं. दांव पर लोकसभा की वे 98 सीटें लगी हैं जहां 20 फीसदी मुस्लिम मतदाता हैं (देखें चार्ट). पिछले चुनाव में इंका ने इनमें से दो-तिहाई पर जीत हासिल कर ली थी. पर अब उसे भी डर है कि वह सांप्रदायिक हिंसा की वजह से इस वोट बैंक को खो सकती है. जून में इंका ने विश्व हिंदू परिषद के हाथ से पहल छीनने के लिए चित्रकूट में एक समांतर सम्मेलन किया

मुसलमानों का सम्मेलनः दिग्भ्रमित नेतृत्व

लगभग 100 निर्वाचन क्षेत्रों में 20 फीसदी से अधिक मुसलमान मतदाताओं के होने के कारण हर पार्टी हमेशा उनके वोट हासिल करने की इच्छुक रही है

नक्शाः बी.के. शर्मा

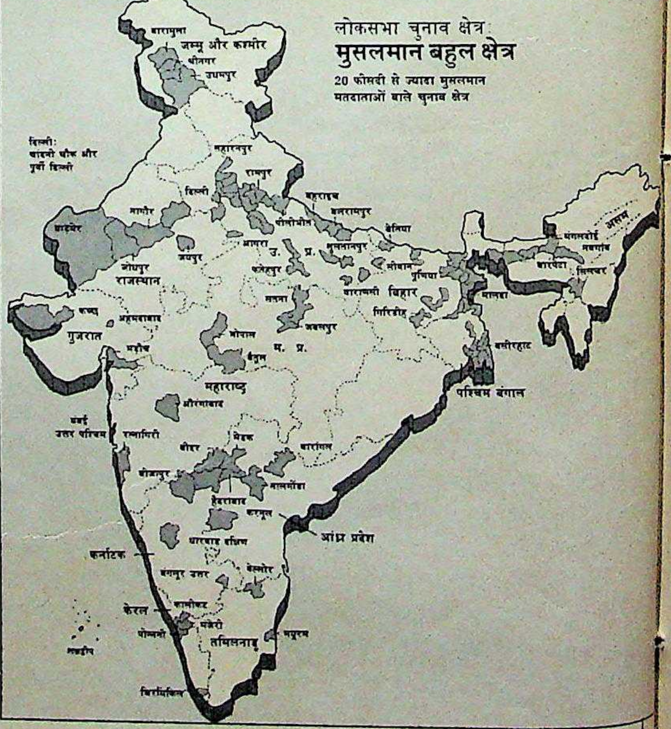

बहिष्कार की अपील की और फिर उसे रद्द कर दिया. फिर बाबरी मस्जिद तक मार्च का आह्वान किया और सरकार से बातचीत के बाद वापस ले लिया. हिंदू संगठन भी अब यही खेल खेल रहे हैं.

चौंकाने वाली बात यह है कि सरकार सब कुछ पहले से ही जान-बूझ रही थी. जुलाई में ही खुफिया ब्यूरो (आईबी) के निदेशक एम.के. नारायणन ने राज्यों के मुख्य सचिवों को लिख दिया था कि "साधुओं की गतिविधियों, उनके यहां-वहां जाने तथा बजरंग दल और संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा ईंटों को अयोध्या ले जाने के प्रयासों से शांति भंग हो सकती है." अभी भी सरकार हिंदू उग्रवादियों के प्रति नरम रवैया अपनाए हुए है. मसलन पिछले महीने उत्तर प्रदेश प्रशासन से शिलाओं को एकत्रित करने के लिए विवादास्पद स्थल के पास अरविंद आश्रम की जमीन लेने को कहा गया. मंदिर की नींव रखने के लिए नजूल की जो जमीन सरकार अधिग्रहित कर रही है वह विश्व हिंदू परिषद और हिंदू संतों के संगठन राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति को सौंप दी जाएगी. जाहिर है कि मुसलमानों में इससे भारी नाराजगी है. शहाबुद्दीन कहते हैं, "जब तक मालिकाना तय नहीं हो जाता, इस तरह के किसी भी अलाटमेंट का मतलब गैर-कानूनी गतिविधियों को सरकारी संरक्षण ही माना जाएगा." शाही इमाम के बेटे और बीएमएसी के उग्रवादी गुट के नेता अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

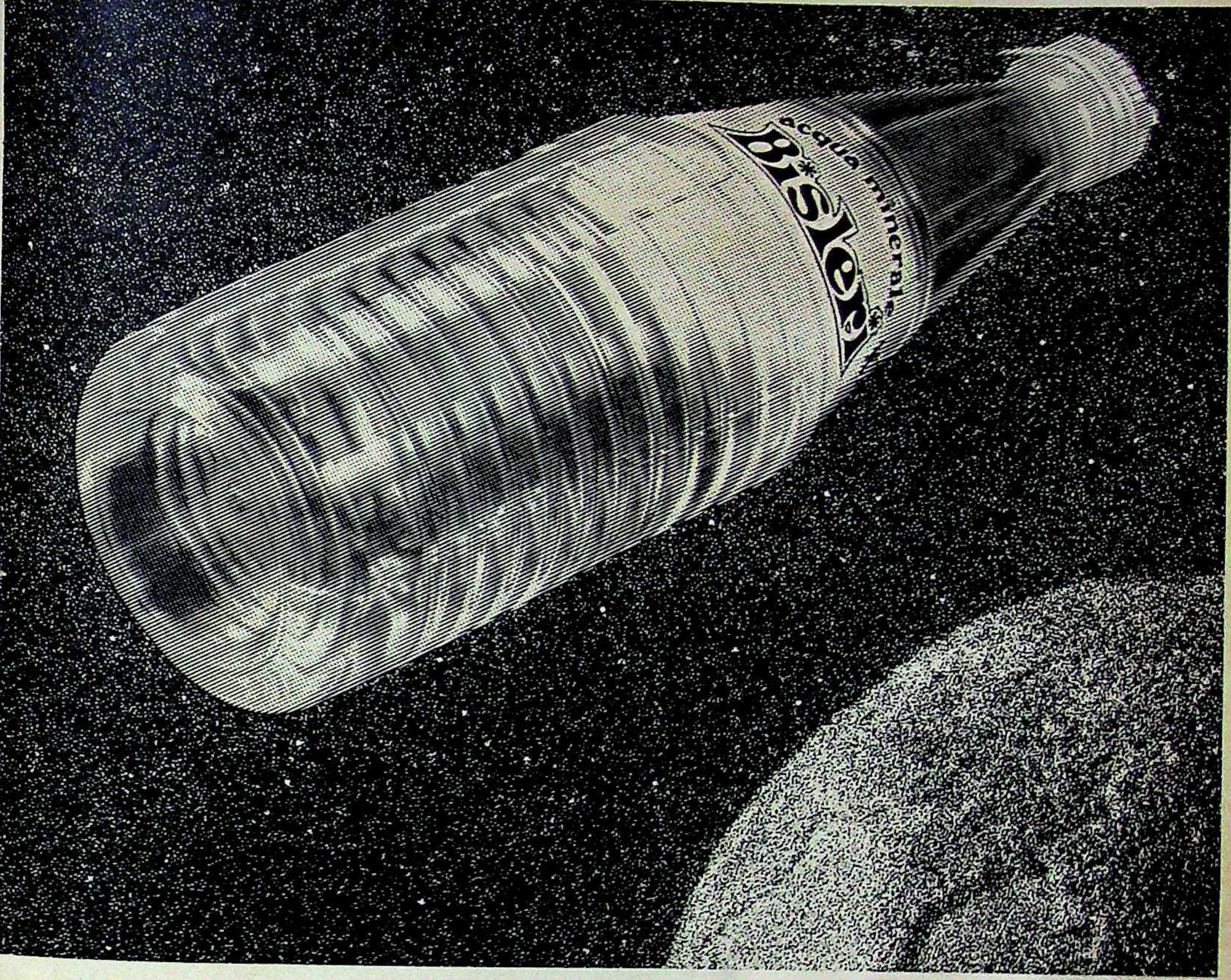

पानी को शुद्ध करने के लिए अक्वा मिनरल बिसलेरी में भी उसी चांदी प्रक्रिया का इस्तेमाल होता है जो 'नासा' द्वारा अन्तरिक्षयानों में की जाती है

पानी को शुद्ध करने की २३ अलग-अलग पद्धतियों का परीक्षण करने के बाद 'नासा' के वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्षयानों पर इस्तेमाल के लिए चांदी प्रक्रिया का चयन किया. अक्वा मिनरल बिसलेरी (ए एम बी) ने भी चांदी को जलशुद्धि के लिए सर्वोश्रेष्ठ पाया. क्योंकि चांदी प्रक्रिया के बाद ओलीगोडायनामिक प्रभाव के कारण पानी में किटाणु जीवित नहीं रह पाते हैं. चांदी प्रक्रिया के बाद पानी को माइक्रोबियल प्रोसेस द्वारा भी ट्रीट किया जाता है. यह पानी डिस्पोज़ेबल बोतलों में पैक मिलता है. ए एम बी ऊबाल कर फ़िल्टर किए गए पानी से भी ज़्यादा सुरक्षित है क्योंकि वह किटाणुरहित पानी है. ए एम बी घर में हर किसी को बिना खटके पिलाया जा सकता है फिर वे बीमार व्यक्ति हों या नवजात शिशु. यात्रा में भी इसे साथ रखिए फिर चाहे यात्रा धरती पर हो या अन्तरिक्ष में.

अक्वा मिनरल बिसलेरी

Bisleri

धरती पर इससे सुरक्षित पानी नहीं कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें वह द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती को लाने में कामयाब हो गई. हिंदुओं के धार्मिक नेताओं में दरार डालने की यह रणनीति प्रधानमंत्री कार्यालय की राज्यमंत्री शीला दीक्षित ने तैयार की थी. बूटा सिंह ने भी कुछ लोगों को बताया कि वे इस मामले में शंकराचार्य की मदद ले चुके हैं.

पर योजना नाकाम रही और अब इंका अपने परंपरागत मुस्लिम वोट बैंक की ओर मुड़ती दिख रही है. उसे उम्मीद है कि इनके साथ पिछड़ी जातियों और हरिजनों के वोट मिलाकर वह बाजी मार लेगी. गांधी परिवार के स्तुतिगान में गाल बजाने वाले अली सिद्दीकी अब शहाबुद्दीन से पींगें बढ़ा रहे हैं. राजीव गांधी भी यह घोषणा करते हुए खुलकर जन्मभूमि अभियान के खिलाफ आ गए कि "हिंदू राष्ट्र नहीं बनेगा." अब पार्टी की रणनीति मुसलमानों को अपनी ओर खींचने के साथ ही सांप्रदायिक वारदातों में शामिल लोगों के खिलाफ नरम रुख अपनाकर हिंदुओं का भी दिल न दुखाने की दिखाई देती है.

जनता दल के लिए इस सबका मतलब है भारी संकट. भाजपा के लगातार उग्र होते जाने से सीटों के बंटवारे के सवाल पर दल में मतभेद हो गए हैं. वजह: विश्वनाथ प्रताप सिंह हर किसी को खुश करना चाहते हैं. हाल में दल के अल्पसंख्यक सेल की बैठक में उन्होंने कहा कि अगर दल भाजपा को मुख्यधारा के गठबंधन में ला सका तो सांप्रदायिकता कम होने लगेगी. पर बाकी लोग इससे सहमत नहीं हैं. सेल के अध्यक्ष मुफ्ती मुहम्मद सईद का कहना है, "सभी सदस्य इस पर एकमत थे कि सांप्रदायिकता के सवाल पर भाजपा से खरी-खरी बात कर ली जाए."

वी.पी. सिंह ने अपने साथियों को असमंजस में डाल दिया है. धर्मनिरपेक्षता का हलफ उठाने के बाद भी वे अब्दुल्ला बुखारी जैसे कट्टरवादियों से रिश्ते बनाते हैं और मुफ्ती और आरिफ मुहम्मद खान जैसे उदार मुस्लिम नेताओं को भी राष्ट्रीय नेतृत्व में अपने साथ रखना चाहते हैं. साथ ही बीएमएसी के महासचिवों—आजम खान और शकीकुर रहमान बर्क जैसों का साथ भी नहीं छोड़ना चाहते. सीटों के बंटवारे के

बूटा सिंह

'बाहरी ताकतें सक्रिय हैं'

प्रमोद पुष्करणा

गृहमंत्री बूटा सिंह पिछले तीन साल से राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर सरकारी नीति के नियंता रहे हैं. धर्म में आस्था रखने वाले बूटा सिंह के लिए अयोध्या की चुनौती अलग ही किस्म की है. वे मथुरा के उस देवराहा बाबा के भक्त हैं जो अयोध्या में विवादास्पद स्थल पर मंदिर निर्माण की पहल करने वालों में शामिल हैं. निजी तौर पर बूटा सिंह इस हिंदू भावना से सहमत हैं कि राम की तुलना बाबर से नहीं की जा सकती. लेकिन गृहमंत्री की हैसियत से उनका मानना है कि देश के मौजूदा कानूनों के तहत ही इस मुद्दे का निबटारा होना चाहिए. कार्यकारी संपादक ***इंद्रजीत बधवार*** *और वरिष्ठ संवाददाता* ***पंकज पचौरी*** *से उनकी बातचीत के कुछ अंश:*

● ***क्या देश सांप्रदायिक विभाजन के कगार पर है?***

सांप्रदायिक ताकतों का असर सिर्फ तात्कालिक और भावनात्मक ही होता है. देश के लोगों के मन में सांप्रदायिकता के लिए कोई स्थान नहीं है. औसत भारतीय धर्मनिरपेक्ष है.

● ***विवाद में कौन-सी ताकतें सक्रिय हैं?***

बाहरी ताकतें इसमें सक्रिय हैं. न सिर्फ भारी-भरकम रकम बाहर से आ रही है बल्कि सांप्रदायिक हिंदू तत्वों को विदेशी संगठनों से बौद्धिक सलाह भी मिल रही है. यह बात गौरतलब है. चूंकि हमारा देश सबसे बड़ा लोकतंत्र है, इसलिए जाहिर है चुनावों के करीब आने से अंतरराष्ट्रीय ताकतें हमारे मामलों में रुचि लेने लगी हैं.

● ***क्या आप इसे साबित कर सकते हैं?***

ऐसी बातों को पक्के सबूत के आधार पर साबित करना हमेशा मुश्किल होता है. ऐसी ताकतें बहुत सोच-समझकर आगे बढ़ती हैं. लेकिन हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश के लोग यह खेल भांप गए हैं.

● ***सरकार इस विवाद से बचने की कोशिश कर रही है?***

हम आम सहमति के धरातल पर पहुंच चुके हैं पर मुश्किल यह है कि सहमति का यह क्षेत्र बहुत सीमित है. मामला अब अदालत में है और अब कानून के मुताबिक ही तय होगा.

● ***आप किस समुदाय के रवैये को तर्कसंगत पाते हैं?***

मुसलमान कहते हैं कि अगर अदालत इस फैसले पर पहुंचती है कि उस स्थान पर मंदिर पहले से था तो वे पीछे हटने को राजी हैं. दुर्भाग्यवश, विश्व हिंदू परिषद उस फैसले को स्वीकार करने को तैयार नहीं जो उसके खिलाफ जाए.

● ***तब सरकार ने हिंदुओं के शिला पूजन के लिए अयोध्या में जमीन का अधिग्रहण क्यों किया है?***

वे कहां शिलान्यास करने जा रहे हैं, इसकी पूरी जानकारी मेरे पास नहीं है. परिषद विवादास्पद भवन पर यथास्थिति बनाए रखने को तैयार हुई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल ठाकरे

'हिंदुस्तान केसरिया ही रहेगा'

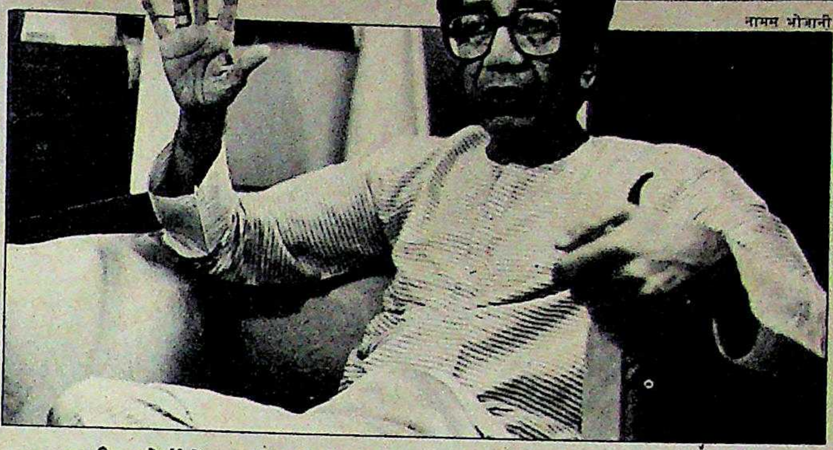
नामस भोजानी

शिवसेना के मुखर अध्यक्ष बाल ठाकरे को हिंदू उग्रवाद और पुनरुत्थानवाद का प्रतीक माना जा सकता है. वरिष्ठ संवाददाता **रघुनंदन धर** *ने बंबई में उनसे बातचीत की. उसी के कुछ अंश:*

● ***सांप्रदायिक तुरुप फेंकने से क्या आपको चुनावों में फायदे की उम्मीद है?***

हमें सांप्रदायिक बताना ही गलत है. हमने हमेशा राष्ट्रीय हित के मुद्दे उठाए हैं.

● ***मसलन?***

राम जन्मभूमि, कश्मीर में हिंसा और यहां तक कि शहाबुद्दीन के आचरण के मसले हमने उठाए. जब श्रीनगर में तिरंगा जलाया जा रहा हो अथवा 'भारतीय हमलावरो कश्मीर छोड़ो' सरीखे बैनर नजर आएं तो हमसे चुप रहने की उम्मीद आप कैसे करते हैं. हमारे लिए ये अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मसले हैं.

● ***क्या इससे आपको हिंदू वोट हासिल करने में मदद मिलती है?***

सवाल हिंदू वोटों का नहीं बल्कि मसलों पर ध्यान केंद्रित करने का है. महाराष्ट्र में हम ही चुनाव जीतेंगे.

● ***राष्ट्रीय मोर्चे से तालमेल किए बिना ही?***

जी हां, अगर वी.पी. सिंह का हाल का यह बयान ही अंतिम है कि इस राज्य में उन्हें शिवसेना और भाजपा से कोई लेना-देना नहीं है तो मुझे एक ही बात कहनी है. वह यह कि महाराष्ट्र में मधु दंडवते समेत राष्ट्रीय मोर्चे के सभी उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो जाएगी.

● ***आपके सांप्रदायिक प्रचार की वजह से चुनावों के दौरान हिंसा की उम्मीद की जा रही है.***

हमारा रुख हिंसात्मक नहीं है लेकिन हम पर हमला हुआ तो हम जवाब देंगे.

● ***माना जाता है कि राम जन्मभूमि का मसला और उसके लिए सुझाया गया आपका समाधान महज चुनावी खेल है.***

अगर ऐसा है तो राजीव गांधी और शरद पवार पिछले कुछ महीनों से गरीबों के लिए जो कुछ कर रहे हैं, वह भी चुनावी स्टंट है. राजीव की मां ने जो किया उसे भूल जाएं. यह लड़का 1984 से सत्ता में है और चुनावी वर्ष में ही उसे रोटी, कपड़ा और मकान की याद आ रही है.

● ***यह आम धारणा है कि आप सबसे ज्यादा मुस्लिम विरोधी हैं?***

आप ही बताएं जब कश्मीर में स्वतंत्रता दिवस को भी राष्ट्रविरोधी गतिविधियां जारी रहें और पाकिस्तानी झंडा फहराया जाए तो आप हमसे कैसी प्रतिक्रिया की उम्मीद करते हैं? जब मैं किसी राष्ट्र-विरोधी कार्रवाई का विरोध करता हूं तो मुझे खलनायक करार दे दिया जाता है. मुसलमान अपनी ये हरकतें बंद कर दें तो मैं भी उनका विरोध नहीं करूंगा.

● ***आप हिंदुत्व की रक्षा कर रहे हैं?***

अगर सरकार और अल्पसंख्यकों ने ऐसी ही हरकतें जारी रखीं तो हिंदू क्या करेंगे? हमारा मानना है कि इस देश का रंग युगों-युगों से केसरिया रहा है और हम इसे कभी हरा नहीं बनने देंगे. हिंदुस्तान हमेशा केसरिया ही बना रहेगा.

बारे में वे शहाबुद्दीन से भी बात चला रहे हैं.

हालात वही जाने-पहचाने हैं. दस साल पहले जनता पार्टी सांप्रदायिकता के मुद्दे—पार्टी और संघ की दोहरी सदस्यता के सवाल पर टूट गई थी. आज सांप्रदायिकता का मुद्दा फिर गरम हो उठा है. राजीव को हराने के लिए इंकाई उम्मीदवार के खिलाफ साझा उम्मीदवार खड़ा करने की विपक्ष की रणनीति ढहती नजर आ रही है. चंद्रशेखर ने अभी तक इस मुद्दे पर अपना मुंह नहीं खोला है. पर संघ के प्रति अपने विरोध के कारण वे जनता दल के इस संकट को और बढ़ा सकते हैं क्योंकि भाजपा विरोधी गुट उनके साथ है.

माकपा ने भी, जो भाजपा को विपक्षी मुख्यधारा में शामिल करने के विचार को स्वीकार करने लगी थी, कड़ा रवैया अपना लिया है. जब तक वाजपेयी और आडवाणी ने बंबई सम्मेलन में उग्र रवैया नहीं अपनाया था तब तक ज्योति बसु की अगुआई वाला एक गुट जनता दल के भाजपा से चुनावी गठजोड़ कर लेने की हालत में भी दल का साथ देने को तैयार था. हरकिशन सिंह सुरजीत तो वाजपेयी से मिले भी. पार्टी की केंद्रीय समिति के एक सदस्य के अनुसार, "हमने उन्हें (वी.पी. सिंह को) बता दिया था कि जब तक उनका खुद का दिमाग साफ रहेगा, हम भाजपा को नजरअंदाज करेंगे." माकपा की बनिस्बत इंका के ज्यादा करीब रहने वाली भाकपा ने भाजपा-रा.स्व.संघ-विश्व हिंदू परिषद पर अपना हमला तेज कर दिया है. हालत एक तरह से कम्युनिस्टों के हक में है.

सांप्रदायिक कहें या दुराग्रही, लगता है कि भाजपा इन सबकी खिल्ली उड़ा रही है, "हम अकेले लड़ेंगे और जीतकर दिखाएंगे." बंबई में हाल ही में हुई राष्ट्रीय परिषद की बैठक में पार्टी का यही स्वर था. अपने क्षत्रपों के दृढ़निश्चय से निश्चिंत हो वाजपेयी ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "भाजपा और जनता दल में कोई औपचारिक गठजोड़ नहीं है. हम तो राष्ट्रीय मोर्चे में भी नहीं हैं. सिर्फ सीटों के बंटवारे के बारे में कोशिश चल रही है. अगर वे (जनता दल वाले) सोचते हैं कि भाजपा का साथ देने से वे मुस्लिम वोट खो देंगे तो वे अपने साथी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं." भाजपा के रणनीतिज्ञ दीर्घकालिक नजरिया अपना रहे हैं. पार्टी यह माने बैठी है कि राजीव फिर सत्ता में नहीं आ पाएंगे. और अगर राष्ट्रीय मोर्चा अपने बूते पर सरकार बनाने लायक स्थिति में आ गया तो भी अपने अंतरविरोधों की वजह से वह जल्द ही चरमरा जाएगा. उथल-पुथल के इस माहौल में भाजपा केंद्रीय सत्ता की प्रबल दावेदार हो सकती है. भाजपा इसी की तैयारी में जुटी है.

अनुच्छेद 370, अल्पसंख्यक आयोग और अयोध्या विवाद पर भाजपा का कड़ा रुख दरअसल इसकी व्यावहारिक जरूरतों से उपजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बाएं) भाजपा की बैठक; चित्रकूट हिंदू सम्मेलन

है. 1984 के चुनाव में सफाए के बाद पार्टी में यह भावना घर करने लगी थी कि उसे हिंदुओं के मामलों को उठाने में नरमी बरतने की कीमत चुकानी पड़ी है. जड़ों की ओर लौटने की उसकी प्रक्रिया 1986 में आडवाणी को पार्टी अध्यक्ष बनाने के साथ ही शुरू हो गई थी. राम जन्मभूमि के मुद्दे को पार्टी ने अपनी हिंदू छवि पुनर्स्थापित करने और अपने परंपरागत वोट बैंक पर वापस पहुंचने के जरिये की तरह देखा. पार्टी का मानना है कि पंजाब के हालात और कश्मीर में हाल के उपद्रवों की वजह से हिंदुओं में व्यापक प्रतिक्रिया रूपाकार ले रही है. वह इंका को पहले की तरह इसका फायदा न उठाने देने के लिए दृढ़संकल्प है. पार्टी के महासचिव कृष्णलाल शर्मा का कहना है, "इस बार हम राजीव को हिंदू कार्ड नहीं फेंकने देंगे."

पर बहुत से लोगों को भाजपा के इन दावों में ज्यादा दम नहीं दिखता. हरकिशन सिंह सुरजीत के अनुसार, "उत्तर प्रदेश में भाजपा का असर 15 से ज्यादा सीटों पर नहीं है जबकि 50 सीटों पर मुसलमान ही नतीजा तय करने की स्थिति में हैं." भाजपा को अपने मंत्रिमंडल में शामिल करने वाले देवीलाल भी उर्दू पर इसके रवैये की निंदा करते हैं. उनका कहना है कि सरकार टूटने की कीमत पर भी वे भाजपा के साथ पार्टी के रिश्तों की समीक्षा करने से नहीं हिचकेंगे. वे चंद्रशेखर जैसे लोगों की तरफ से सांप्रदायिकता विरोधी कदम उठाने की संभावना के मद्देनजर यह रुख अपना रहे हैं. पर भाजपा पर इन सबका कोई असर नहीं. उसका कहना है कि सांप्रदायिक कहे जाने के डर मात्र से वह कोई मुद्दा उठाने से नहीं हिचकेगी. इसलिए वी.पी. सिंह को अब मुस्लिम वोट और भाजपा में से किसी एक का चुनाव करना होगा.

सांप्रदायिक गठबंधन का सबसे बड़ा चुनावी फायदा शायद महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को मिलेगा. उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पूरे राज्य में सेना की 9,657 शाखाएं हैं और मुस्लिम लीग या जमाते इस्लामी की तरह सेना विभाजित नहीं है.

इस ही-हल्ले में बस एक ही बात निश्चित है कि आने वाला चुनाव बेतरह सांप्रदायिक होगा. दाऊदी वोहरा सुधारक असगर अली इंजीनियर कहते हैं, "शिवसेना और भाजपा के ताजा बयानों को देखकर लगता है कि मतदान के समय सांप्रदायिक तनाव चरम सीमा पर पहुंचेगा." वे शासक दल की भूमिका की आलोचना करते हैं, "मुसलमानों को खुश करने के लिए उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाया गया है. पर शासक दल के लिए इसका नतीजा उलटा हो रहा है. अगर दंगे जारी रहते हैं तो मुसलमान भाजपा के बजाए इंका को वोट देना ज्यादा पसंद करेंगे."

सांप्रदायिक पागलपन में, जो कि हिंदुओं और मुसलमानों को अपने शिकंजे में जकड़े हुए है, धर्म-निरपेक्षता अंतिम सांसें गिन रही है

9 नवंबर की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आ रही है तथा सांप्रदायिक विभाजन बढ़ रहा है, मुस्लिम नेता आम तौर पर खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं. वे मानते हैं कि सिर्फ शहाबुद्दीन ही इस स्थिति का फायदा उठा सकते हैं. इसके अलावा बीएमएसी में विभाजन की वजह से मध्यमवर्गीय मुसलमान तो खुद को और भी असुरक्षित महसूस करने लगते हैं.

जनता दल के मधु दंडवते को नहीं लगता कि चुनाव बहुत ज्यादा सांप्रदायिक होगा. वे कहते हैं, "हिंदू ने कभी हिंदू के रूप में वोट नहीं डाला. कई क्षेत्रीय, जातीय और उपजातीय बाधाएं हैं. फिर गांवों में सांप्रदायिकता से ज्यादा महत्वपूर्ण है तात्कालिक समस्याएं."

वरिष्ठ खुफिया अधिकारी इस नजरिये को अति आशावादी मानते हैं. मसलन महाराष्ट्र में शिवसेना अब छोटे-छोटे गांवों तक पहुंच गई है. उसने विभिन्न जिलों में 57 एंबुलेंस, 18 जीपें, पानी के चार टैंकर और यहां तक कि शव ढोने वाली एक गाड़ी भी लोगों की सेवा में लगा रखी है. बंबई में हाजी मस्तान ने भी अपनी एंबुलेंस का उद्घाटन किया है. मसले की गंभीरता 'सेवा' के इस सद्वाक्य को निरर्थक बना देती है. देश में सांप्रदायिक पागलपन की हवाएं उस धर्मनिरपेक्षता का मृत्युगीत गा रही हैं जो अभी भी इस देश को एक बनाए रखने का एकमात्र सही रास्ता है.

इस धर्मनिरपेक्षता को जितना नुकसान राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद ने पहुंचाया है उतना किसी और विवाद ने नहीं. मतांध लोग जिसे हिंदू एकजुटता कह रहे हैं वह एक छोटी-सी चिनगारी से बहुसंख्यकों की सांप्रदायिकता में तब्दील हो सकती है. ये साधु-संत, विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता, संघ के अति-उत्साही लोग, बजरंग दल के स्वयंसेवक, शिवसेना के दुस्साहसी सैनिक, आदम सेना, कौमी मोर्चा, जमाते इस्लामी हिंद, स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट और स्टूडेंट्स इस्लामिक आर्गेनाइजेशन सांप्रदायिकता की ऐसी सेनाएं हैं, जो देश को घटाटोप अंधेरे में धकेल सकती हैं.

—इंद्रजीत बधवार और पंकज पचौरी,
साथ में भास्कर राय, कंवर संधू और ब्यूरो रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

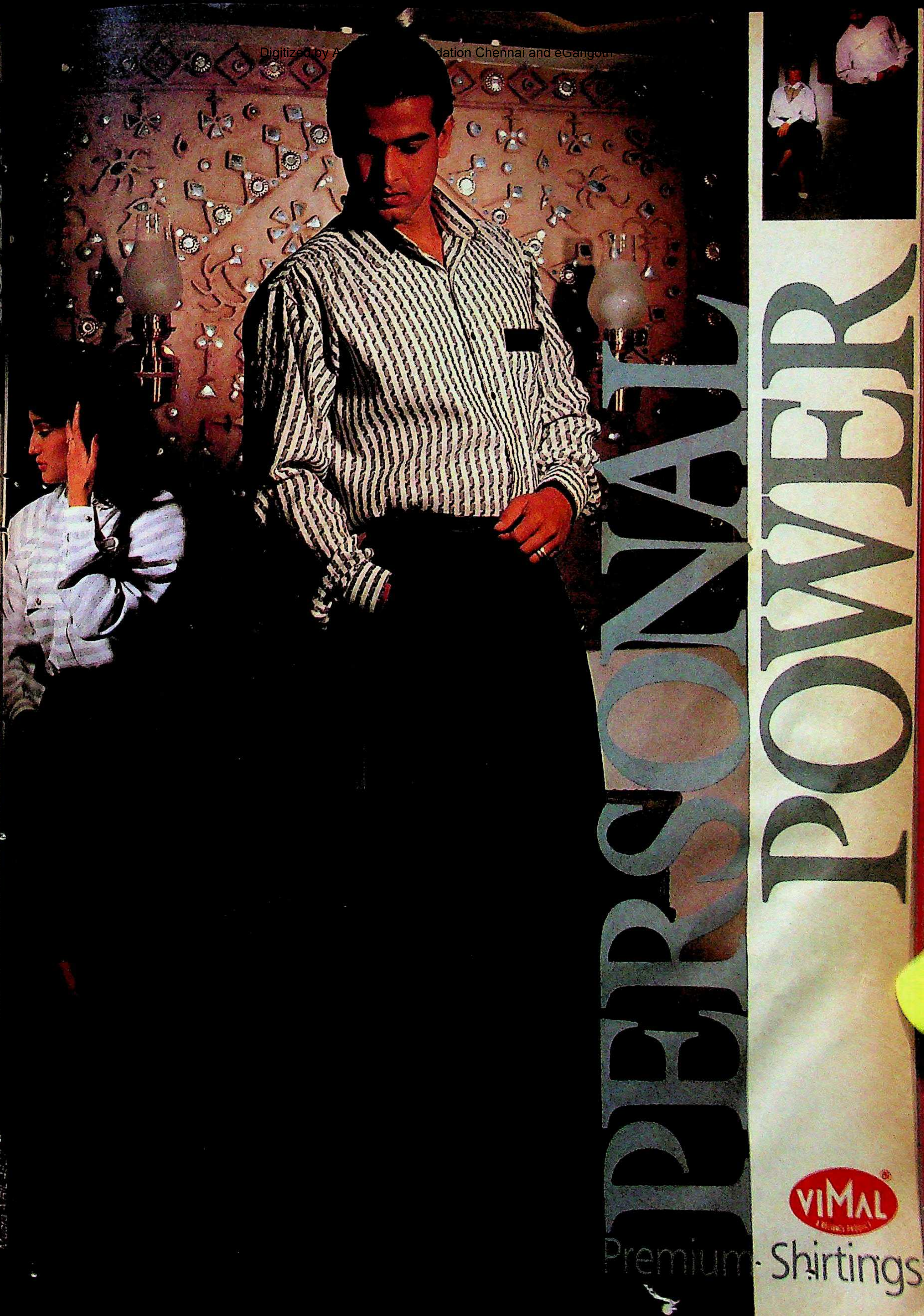
PERSONAL POWER
VIMAL
Premium Shirtings

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी

दान और दौरों से दिल जीतने की मुहिम

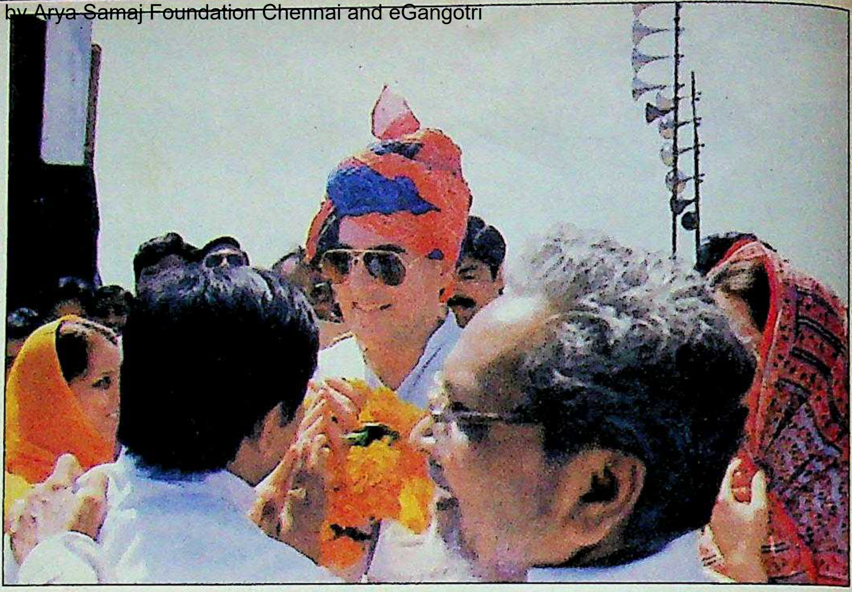

आम चुनाव में कड़े मुकाबले की संभावना देखकर राजीव गांधी एक तरफ विपक्ष पर करारा हमला कर रहे हैं और दूसरी ओर अपनी धर्म-निरपेक्ष छवि चमका रहे हैं

पिछले कुछ महीने में राजीव ने देश के आधे हिस्से का दौरा किया और 8,000 करोड़ रु. वाली लगभग दो दर्जन परियोजनाओं का शिलान्यास किया

चुनाव के पहले के महीनों में देश के विभिन्न हिस्सों का तूफानी दौरा करने और आधारशिलाएं रखने का राज-नैतिक अनुष्ठान प्रायः हर प्रधानमंत्री करते रहे हैं. राजीव गांधी भी अगले आम चुनावों में कड़े मुकाबले की संभावना को देखते हुए यही सब कर रहे हैं लेकिन आक्रामक शैली में. अपनी रणनीति के तहत वे इन दिनों देश में इधर-से-उधर फर्राटे भर रहे हैं.

छह हफ्ते से भी कम समय में प्रधानमंत्री ने लोकसभा के 200 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा किया, 50 जनसभाओं को संबोधित किया और 8,000 करोड़ रु. की लागत वाली लगभग दो दर्जन नई परियोजनाओं का शिलान्यास किया.

उत्तर प्रदेश जनता दल के प्रमुख मुलायम सिंह यादव कहते हैं, "वे अपनी मां की तरह ही चुनाव अभियान चला रहे हैं. विशुद्ध राजनैतिक उद्देश्यों के लिए जनता के पैसे का दुरुपयोग किया जा रहा है." लेकिन शासक दल कुछ दूसरी ही सफाई देता है. इंका महासचिव गुलाम नबी आजाद कहते हैं, "प्रधानमंत्री हमेशा जनता और पार्टी कार्य-कर्ताओं के बीच जाना पसंद करते हैं. पार्टी के कामकाज और सरकारी योजनाओं के क्रिया-न्वयन पर लोगों की प्रतिक्रियाएं जानने का यह शायद सबसे कारगर तरीका है."

इसमें कोई शक नहीं कि देहातों पर ध्यान केंद्रित करने की राजीव की नीति बहुत सोची-समझी है. उनके दौरे ज्यादातर हिंदी-भाषी क्षेत्रों में सीमित रहे जहां उन्हें भाजपा और जनता दल से भारी खतरा है. पिछले महीने उन्होंने राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र का दौरा किया. इन राज्यों को बहुत सोच-समझकर ही चुना गया. महाराष्ट्र में जहां झोंपड़पट्टी निवासियों को ध्यान में रखा गया वहीं गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में किसानों को.

इस तरह के दौरों में राजीव के भाषणों पर गौर करने से स्पष्ट हो जाएगा कि विभिन्न राज्यों की राजनीति से जुड़े अहम मुद्दों से उन्हें अवगत कराने के लिए उनके अभियान प्रबंधकों ने कितनी मशक्कत की है. प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश और गुजरात में भाजपा पर हमला किया, तो उत्तर प्रदेश में जनता दल पर. राजस्थान में किसानों को नई रियायतें देने का वादा किया, तो बंबई के धरावी के झोंपड़पट्टी निवासियों को नागरिक सुविधाएं बढ़ाने का भरोसा.

सभी नक्शे: बी.के. शर्मा

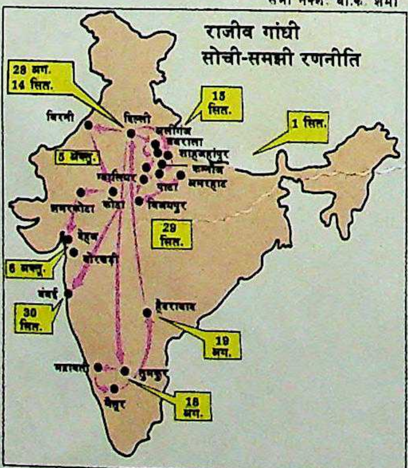

राजीव दो महीने के भीतर 200 निर्वाचन क्षेत्रों में गए और 50 जनसभाएं कीं

उन्होंने 5 अक्तूबर को राजस्थान के गंगानगर जिले के बिरानी में 103 करोड़ रु. की सिद्धमुख सिंचाई परियोजना का शिला-न्यास किया. फिर एक जनसभा में उन्होंने कहा कि अक्तूबर में संसद के सत्र के दौरान किसानों को कई तरह की रियायतें देने की घोषणा की जाएगी. दूसरे दिन गुजरात में उन्होंने विश्वनाथ प्रताप सिंह पर नर्मदा घाटी परियोजना का विरोध करने का आरोप लगाया और लोगों को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने विपक्ष को वोट दिया तो यह परि-योजना अधूरी ही रह जाएगी. गौरतलब बात यह है कि एक दिन पहले ही विश्वनाथ प्रताप सिंह ने स्पष्ट किया था कि इस परियोजना पर 700 करोड़ रु. खर्च हो चुके हैं, इसलिए इसे पूरा किया जाना चाहिए.

प्रधानमंत्री के अभियान प्रबंधकों ने उन्हें गुजरात में भाजपा की बढ़ती ताकत के बारे में बताया था. सो, उन्होंने भाजपा पर सांप्रदायिक हिंसा भड़काने और 'हिंदू राष्ट्र' के लिए काम करने का आरोप लगा डाला. उन्होंने भाजपा पर हमला करते समय बीच-बीच में कम्युनिस्टों की प्रशंसा करने की चतुराई भी दिखाई. इसका मकसद था विपक्ष को किसी भी तरह बांटे रखना. उन्होंने लोगों से पूछा, "आखिर, भाकपा और माकपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

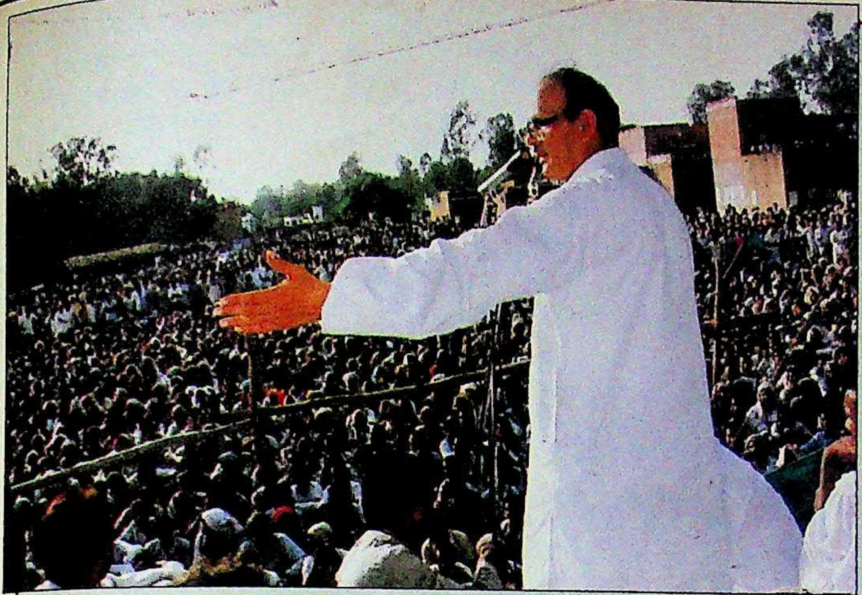

आर.के. गुप्ता

एक रैली को संबोधित करते वी.पी. सिंह

वी.पी. सिंह

जनता में पैठने की जद्दोजहद

हिंदी क्षेत्र के चार राज्यों और 50 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा. वनवासियों, छात्रों, किसानों और मजदूरों की एक के बाद दूसरी रैली का अंतहीन सिलसिला. अपनी पार्टी और दूसरे विपक्षी दलों के नेताओं से मंत्रणा. सब कुछ सिर्फ एक महीने में. जाहिर है, जनता दल अध्यक्ष विश्वनाथ प्रताप सिंह चुनाव अभियान में जोर-शोर से जुट गए हैं. उन्होंने कहा, "राजीव सरकार को हटाना मेरे जीवन की सबसे बड़ी चुनौती है. इसके लिए मैंने अपनी पूरी ताकत लगा दी है."

यह मकसद पूरा करना कोई आसान काम नहीं है. वी.पी. सिंह के रास्ते में कई तरह की बाधाएं हैं. सरकार ने उनके खिलाफ पूरी ताकत झोंक दी है. आकाशवाणी और दूरदर्शन से उनके खिलाफ प्रचार हो रहा है. जनता दल के विभिन्न दबाव गुटों की आपसी तकरार से भी उन्हें निबटना पड़ रहा है. बावजूद इसके, वी.पी. सिंह में जोशखरोश बरकरार है.

उनके विरोधी विमानों और हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें देखने के लिए ही लोगों की भीड़ जुट जाती है. लेकिन वी.पी. सिंह साधारण वाहनों को काम में ला रहे हैं. उद्देश्य स्पष्ट है, खुद को जनसाधारण से जोड़ना. उन्हें लोगों का समर्थन मिला भी. वी.पी. सिंह ने न तो राजीव की निंदा की और न ही दूरदर्शन के खिलाफ जहर उगला. उन्होंने दूरदर्शन को बस 'झूठदर्शन' या 'राजीव दर्शन' की संज्ञा दे डाली, जिससे उसकी विश्वसनीयता पर काफी आंच आई. जनसभाओं में लंबा-चौड़ा भाषण देने के बजाय उन्होंने लोगों से सवाल किए. लोगों को इनका जवाब देने में मजा भी आया.

यह रणनीति पिछले महीने स्पष्ट दिखी. 5 सितंबर से शुरू हुए एक माह के तूफानी अभियान में वी.पी. सिंह ने 17 बड़ी रैलियों में भाग लिया.

रैलियों का दौर पूर्वी उत्तर प्रदेश से शुरू हुआ. वी.पी. सिंह जानते हैं कि यही राज्य संभवतः चुनावों का नतीजा तय करेगा. इसके अतिरिक्त यह समूचे हिंदी क्षेत्र का मूड भी निर्धारित कर सकता है. इसलिए उन्होंने यहीं अपना ध्यान केंद्रित किया. इसका नतीजा भी अच्छा रहा. राजनैतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि राज्य में 'वी.पी. लहर' चल रही है.

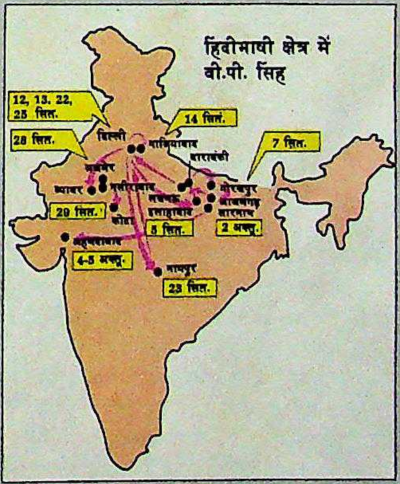

वी.पी. सिंह ने एक महीने में चार राज्यों में 17 रैलियां कीं

अभियान के पहले दौर के बाद 12 सितंबर को वे दिल्ली लौट आए. यहां भाजपा नेता अटलबिहारी बाजपेयी के साथ उन्होंने सरकारी कर्मचारियों की एक सभा को संबोधित किया.

अगले दिन वी.पी. सिंह ने देवीलाल को साथ लेकर पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु से, जो मार्क्सवादी नेताओं में सबसे अधिक व्यावहारिक माने जाते हैं, बातचीत की. उद्देश्य यह था कि वामपंथियों और दक्षिणपंथियों दोनों से चुनावी तालमेल कर हर निर्वाचन क्षेत्र में साझा उम्मीदवार खड़ा करके इंका को कड़ी टक्कर दी जा सके.

वी.पी. सिंह का अगला पड़ाव नागपुर था, जहां उन्होंने कई रैलियों को संबोधित किया. फिर दिल्ली पहुंचकर उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल के जन्मदिन पर आयोजित एक विशाल जनसभा को दूसरे कई दिग्गज विपक्षी नेताओं के साथ संबोधित किया.

इसके बाद वे देवीलाल के साथ दो दिन के राजस्थान दौरे पर चले गए. वहां उन्होंने चीनी और दूसरी जरूरी जिंसों की आसमान छूती कीमतों के लिए सरकार की जमकर खिंचाई की.

फिर वे आचार्य नरेंद्र देव शताब्दी समारोह में भाग लेने सारनाथ गए. और अंत में गुजरात का दौरा किया.

दरअसल, वी.पी. सिंह उन लोगों में हैं, जो यह विश्वास करते हैं कि उनके भाग्य में संघर्ष करना ही लिखा है. हालांकि उनके विरोधियों के पास आधुनिकतम हथियार हैं पर वी.पी. सिंह को धीरे-धीरे लग रहा है कि इन हथियारों का विरोधियों पर भी उलटा असर हो सकता है.

मसलन, दूरदर्शन को ही लें. इसके जरिए राजीव गांधी की राष्ट्रव्यापी पहुंच है. और चूंकि शासक दल निष्पक्ष खेल में विश्वास नहीं करता, इसलिए वह निडर होकर वी.पी. सिंह पर हमला कर सकता है. लेकिन यह असंयम खुद उसी के लिए भारी पड़ गया है.

वी.पी. सिंह के पास न तो वीआईपी प्रशंसक हैं और न ही सुरक्षा कर्मचारियों का घेरा, जो उन्हें लोगों के बीच जाने से रोके. यही अंतर आखिर में महत्वपूर्ण साबित हो सकता है.

—भास्कर राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रस्तावित भाजपा-जनता दल चुनाव गठबंधन पर) क्यों चुप हैं?"

मध्य प्रदेश के मंदसौर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने व्यापारियों को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने जरूरी जिंसों की बढ़ती कीमतों पर अंकुश नहीं लगाया तो उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी. प्रधानमंत्री ने सितंबर के आखिर में महज दो दिनों के भीतर मध्य प्रदेश के 12 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा कर डाला. जनसंपर्क में भी उन्होंने तेजी दिखाई. कलकत्ता के एक नर्सिंग होम में बीमार मदर टेरेसा को देखा, तो दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती पूर्व क्रिकेट सितारे लाला अमरनाथ को.

राजीव अंबाजी मंदिर में; (नीचे) एक पेट्रोरसायन परियोजना का शिलान्यास करते हुए

राजीव की व्यापक चुनावी रणनीति नौकरशाहों और पार्टी पदाधिकारियों की एक टीम ने तैयार की है. लोकसभा से विपक्ष के सामूहिक इस्तीफे के तुरंत बाद इंका ने फैसला किया कि राजीव देश के हर निर्वाचन क्षेत्र में एक जनसभा को संबोधित करें. उनके इस अभियान के लिए कुछ विशेषज्ञों से भी सलाह-मशविरा किया गया. प्रधानमंत्री की सलाहकार मंडली इस तथ्य से प्रभावित थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति के पिछले चुनाव में डेमोक्रेट उम्मीदवार माइकल डुकाकिस की अच्छी शुरुआती स्थिति के बावजूद जॉर्ज बुश ने आक्रामक नकारात्मक अभियान चलाया और अंततः विजयी हुए. इंका महासचिव वी.एन. गाडगिल मानते भी हैं, "हमारा चुनाव अभियान नकारात्मक और सकारात्मक—दोनों होगा."

शासक दल की रणनीति से यही लगता है कि वह विपक्ष पर हमले को तरजीह दे रहा है. पार्टी आकाओं ने समझ लिया है कि पंचायती राज और जवाहर रोजगार योजना जैसे बहुप्रचारित कार्यक्रमों से ज्यादा फायदा नहीं होगा. सो, उन्होंने जो नई रणनीति अपनाई है, वह यह है कि हमला ही बचाव का सबसे अच्छा और कारगर उपाय है.

प्रधानमंत्री विभिन्न राज्यों में जिन परियोजनाओं का शिलान्यास कर रहे हैं, उन्हें बड़ी उदारता से मंजूरी दी जा रही है. दो बड़ी पेट्रोरसायन परियोजनाओं—भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड की औरैया और इंडियन पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड की गुजरात परियोजना—को महज 48 घंटे में मंजूरी दी गई ताकि राजीव को चुनाव अभियान शुरू करने में सुभीता हो. इन दोनों की संभावित लागत 400 करोड़ रु. है.

राजीव जहां अपने विरोधियों पर हमले को तेज कर रहे हैं, वहां वे ग्रामीणों को लुभाने में भी विश्वास करते दिखते हैं. ग्रामीण मतदाताओं को पंचायती राज के फायदे बताने के लिए हाल ही में उन्होंने गांवों के सरपंचों को सीधे एक चिट्ठी लिखी थी. चिट्ठी में उन कार्यक्रमों और परियोजनाओं का जिक्र था जिनके लिए पंचायतों को रकम दी जाएगी. महत्वपूर्ण बात तो यह है कि चुनाव अभियान के दौरान राजीव द्वारा किए गए वादे शायद ही पूरे हुए हैं. कुछ मिसालें:

- प्रधानमंत्री ने जून 1987 के विधानसभा चुनावों के पहले करनाल में 1,500 करोड़ रु. की लागत से तेल परिशोधक कारखाना लगाने का वादा किया था. लेकिन इसे अभी तक मंजूरी नहीं मिली है. सतलुज-यमुना जोड़ नहर को पूरा करने का वादा भी अभी अधूरा है.
- उन्होंने फारूक अब्दुल्ला से समझौते के बाद जम्मू-कश्मीर में अतिरिक्त परियोजनाएं शुरू करने के लिए 1,000 करोड़ रु. देने का वचन दिया था. लेकिन अभी तक राज्य को सिर्फ 150 करोड़ रु. मिले हैं.
- महाराष्ट्र में झोंपड़पट्टियों के विकास के लिए 100 करोड़ रु. देने का वादा किया था. अभी तक 35 करोड़ ही मिले हैं.

बावजूद इसके, राजीव नए वादे करते जा रहे हैं. वे आश्वासनों से भरी झोली लेकर एक जगह से दूसरी जगह दौड़ रहे हैं, इस आशा में कि लोग पिछली बातों को भूल जाएंगे और उन्हें फिर ताज पहनाएंगे.

—भास्कर राय

शिला दर शिला...

राजीव द्वारा किए गए शिलान्यास:

18 अगस्त: कर्नाटक के तुमकूर में मेडिकल कॉलेज का, मैसूर में बीड़ी मजदूर कॉलोनी का

28 अगस्त: दिल्ली में हज मंजिल का.

1 सितंबर: उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में 695 करोड़ रु. के खाद कारखाने का.

15 सितंबर: उत्तर प्रदेश के ही अलीगंज में अखबारी कागज कारखाने का, बबराला में एक खाद कारखाने का, पिनहट घाट में एक सड़क-पुल का और पाटा में 2,000 करोड़ रु. वाले औरिया गैस कांप्लेक्स का.

29 सितंबर: मध्य प्रदेश के विजयपुर में एम.पी. पेट्रोकेमिकल्स कांप्लेक्स का.

5 अक्तूबर: राजस्थान के बिरानी में सिद्धमुख नहर का, झामर कोटा में राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड के एक अयस्क अपचयन संयंत्र का.

6 अक्तूबर: गुजरात के देहेज में इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन की 2,290 करोड़ वाली परियोजना का, और बोरखाड़ी में जीएनएफसी की टीवी ग्लास शेल परियोजना का.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभी फोटो : रघु राय

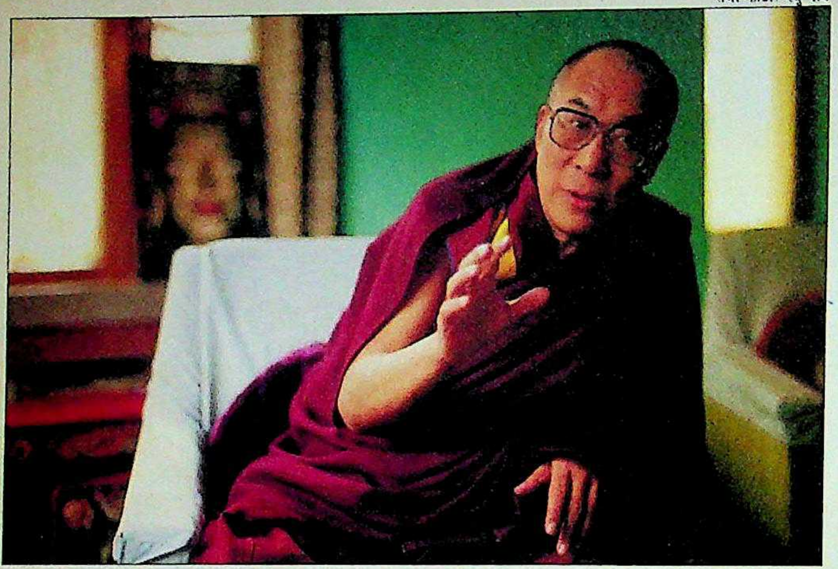

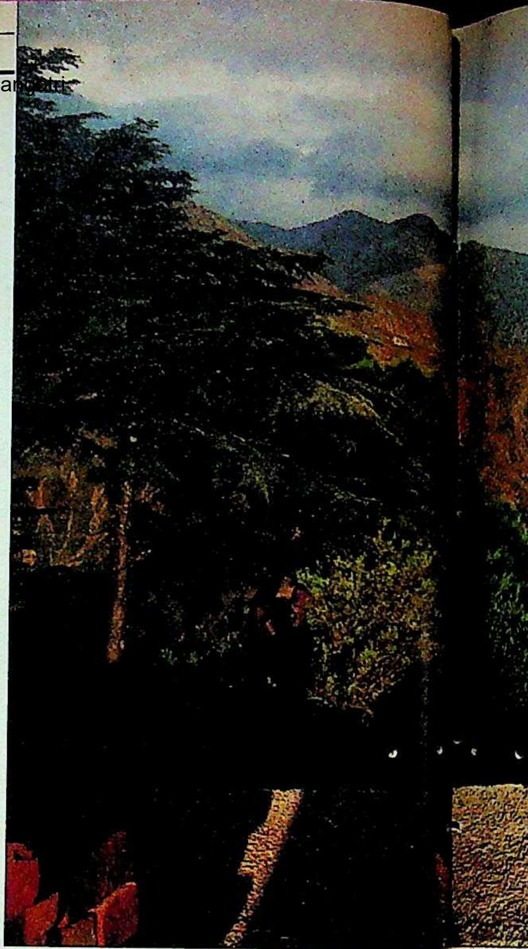

दलाई लामा

निराशा के घटाटोप में उजियारे की कौंध

लगभग 60 लाख तिब्बतवासियों के नेता दलाई लामा का व्यक्तित्व मानो धर्म प्रचारक और संकोची राजनीतिक का मिला-जुला रूप है. वे नोबेल शांति पुरस्कार के सबसे उपयुक्त पात्र हैं.

बर्फीली चोटियों से घिरी जांस्कार घाटी का वह मैदान धार्मिक वातावरण से ओतप्रोत था. आंखें मूंदकर बैठे श्रद्धालुओं के कान लाउडस्पीकर से आ रहे प्रवचन पर लगे थे. अचानक ही लाउडस्पीकर शांत हो गए. सभी आंखें सामने रंग-बिरंगे आसन पर बैठे दलाई लामा (54 वर्ष) पर जा टिकीं जो प्रवचन को बीच में ही छोड़ अपना पूरा ध्यान उस नन्हे से चींटे पर जमाए हुए थे जो कहीं से उनकी गोद में आ बैठा था. दलाई लामा ने बहुत सावधानी से चींटें को अपनी एक उंगली पर बिठाया और एक कोने की ओर ले जाकर उसे फूंक मारकर उड़ा दिया. कीड़े के जमीन पर सुरक्षित उतरते ही उनके चेहरे पर संतोष की मुस्कराहट फैल गई. प्रवचन शुरू होने के इंतजार में बैठे लोगों की ओर मुखातिब होते हुए वे बोले, "मेरा खयाल है कि यह उस सब के मुकाबले ज्यादा महत्वपूर्ण था जो मुझे आपसे कहना है." और पूरी घाटी लाउडस्पीकर से निकले उनके जोरदार ठहाके से गूंज उठी.

यह छोटी-सी घटना उस सीधे-सादे व्यक्ति के परिचय के लिए काफी है जिसे दुनिया भर के लाखों बौद्धधर्मी 'जीवित बुद्ध' के रूप में पूजते हैं. गंभीर से गंभीर परिस्थिति में भी बालसुलभ हंसी बिखेरने वाले इस व्यक्ति के व्यक्तित्व में रची-बसी सादगी का आलम यह है कि भले ही 60 लाख तिब्बती और लाखों दूसरे लोग उन्हें दया के देवता अवलोकितेश्वर (चेन-रेज़ी) का अवतार मानते हों पर अपने बारे में उनका कहना है, "मैं तो सिर्फ एक बौद्ध भिक्षु ही हूं."

लेकिन इस विनम्रता के बावजूद यह संकोची राजनेता पिछले पखवाड़े तब दुनिया भर में चर्चा का केंद्र बन गया जब नोबेल शांति पुरस्कार समिति ने 1989 के सर्वोच्च अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के लिए दलाई लामा के नाम की घोषणा की. इस घोषणा पर चीन सरकार ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की. 1950 में तिब्बत पर जबरन सैनिक अधिकार जमा लेने वाली और 1959 में दलाई लामा को भारत में शरण लेने पर मजबूर करने वाली चीनी सरकार की यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही थी. नार्वे में चीनी राजदूत ने पुरस्कार घोषणा को 'चीन के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी' की संज्ञा देकर यह बताने की कोशिश की कि यह थ्येन आन मन चौक की घटनाओं पर पश्चिमी प्रतिक्रिया है.

दुनिया भर में फैले तिब्बती शरणार्थियों तथा उनके समर्थकों के लिए बरसों बाद खुशी मनाने का यह पहला मौका था. 'नन्हे ल्हासा' के रूप में प्रसिद्ध हो चुके और दलाई लामा की निर्वासित सरकार के मुख्यालय धर्मशाला में अगले कई दिन तक समारोहों का अनवरत सिलसिला चलता रहा. दुनिया भर के अखबारों ने भी इस घोषणा का स्वागत किया. 'द वाल स्ट्रीट जर्नल' ने अपने संपादकीय में इसे 'दलितों का सम्मान' (नोबेल फॉर द ऑप्रेस्ड) बताया.

दुनिया के इस सर्वोच्च सम्मान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके स्वागत का ही शायद यह नतीजा था कि दलाई लामा ने भी चीनी नेतृत्व को आड़े हाथों लिया. अपने वक्तव्य में उन्होंने चीन पर तिब्बत में एक प्रकार का 'नरसंहार' चलाने का आरोप लगाते हुए कहा, "आज तिब्बत के सामने एक राष्ट्र और समाज के रूप में नष्ट हो जाने का खतरा मंडरा रहा है."

दलाई लामा का यह बदला हुआ तेवर उनके व्यक्तित्व में होशियार राजनेता वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

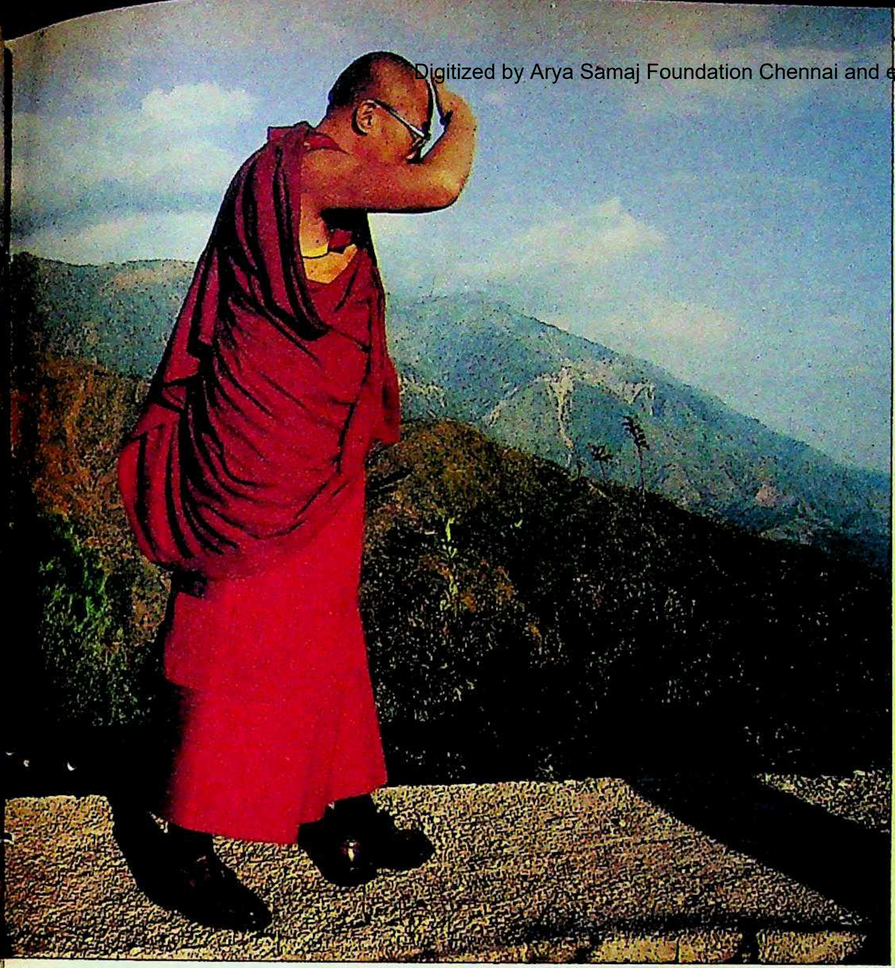

उस पहलू को भी दर्शाता है जिसे वे बहुत नफासत के साथ जगजाहिर होने से बचाए रहे हैं. पिछले 30 साल में भारत में रहते हुए उन पर दिल्ली सरकार लगातार यह दबाव बनाए रही है कि वे राजनैतिक गतिविधियों से खुद को अलग रखें. लेकिन दूसरी ओर तिब्बती जनता, खासकर नई युवा पीढ़ी की बढ़ती बेचैनी के दबाव को देखते हुए उनके लिए कुछ हासिल करना भी जरूरी हो चुका था. ऐसे में सभी दिशाओं से आने वाले दबावों को झेलते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने का काम उन्होंने बखूबी निभाया है. उनकी सफलता का महत्वपूर्ण पहलू यह रहा है कि इस दौरान शांतिवादी नेता के रूप में उनकी अंतरराष्ट्रीय छवि भी निखरी है.

महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानने वाले इस तिब्बती नेता ने चीन के साथ बातचीत की पहल करके न केवल अपनी राजनैतिक साख बढ़ाई बल्कि तिब्बत के सवाल पर अच्छी-खासी राजनयिक पहल भी हासिल की है. पिछले एक दशक में तिब्बत की यात्रा पर चार प्रतिनिधिमंडल भेजकर

■ दलाई लामा एक धर्म सभा में (नीचे), धर्मशाला मुख्यालय में (ऊपर बाएं); और टहलते हुए

क्रिया
दूत ने
दरूनी
र यह
न मन
या है.
ार्थियों
खुशी
हासा'
लामा
शाला
नवरत
र के
वागत
ंपाद-
नोबेल

और
का ही
ने भी
अपने
एक
ारोप
ी एक
ने का

तेवर
वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

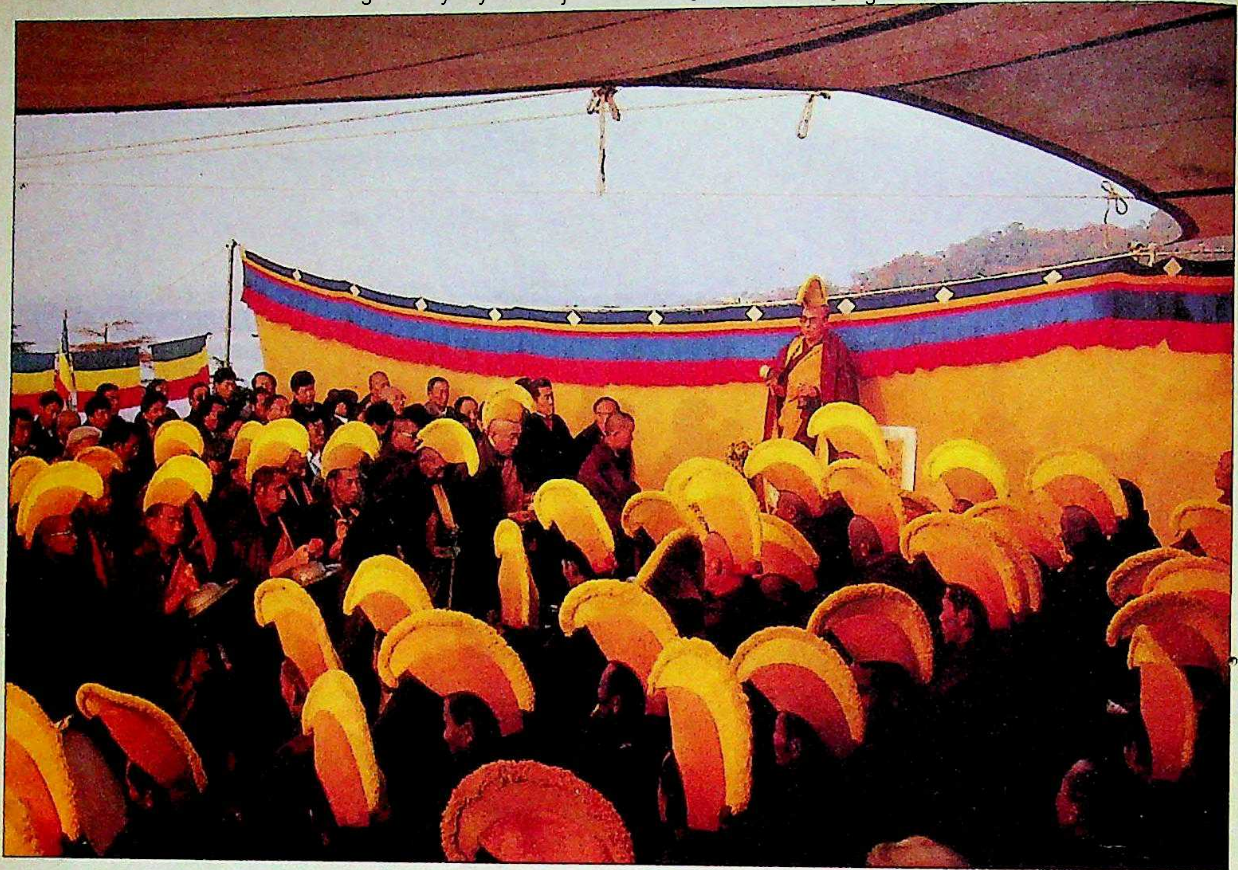

उन्हें न केवल वहां की भीतरी सचाई जानने का मौका मिला है बल्कि इससे चीनी नियंत्रण में रहने वाली तिब्बती जनता में भी नए सिरे से आत्मविश्वास पैदा हुआ है. पिछले दो-तीन साल से वहां विकसित होने वाला जनांदोलन इसका गवाह है. इसी तरह पिछले कुछ साल के दौरान विश्व भर में घूम-घूमकर उन्होंने तिब्बत के सवाल पर अच्छा-खासा अंतरराष्ट्रीय जन समर्थन जुटाने में सफलता हासिल की है. दो साल पहले अमेरिकी कांग्रेस में तिब्बत को 'शांतिक्षेत्र' बनाए जाने के सवाल पर उन्होंने जोरदार समर्थन जुटाया. और 1987 में यूरोपीय संसद के सामने तिब्बती समस्या के हल के लिए अपना पांच-सूत्री शांति प्रस्ताव पेश करके तो उन्होंने चीन को संकट में डाल दिया.

धर्मशाला में उनके निवास पर देश-विदेश से आने वाले तिब्बती शरणार्थियों तथा प्रशंसकों का लगा रहने वाला तांता उनके व्यक्तित्व के मिलनसार पहलू को उजागर करता है. आने वाले किसी मेहमान का हाथ पकड़कर उसके परिवार के बारे में

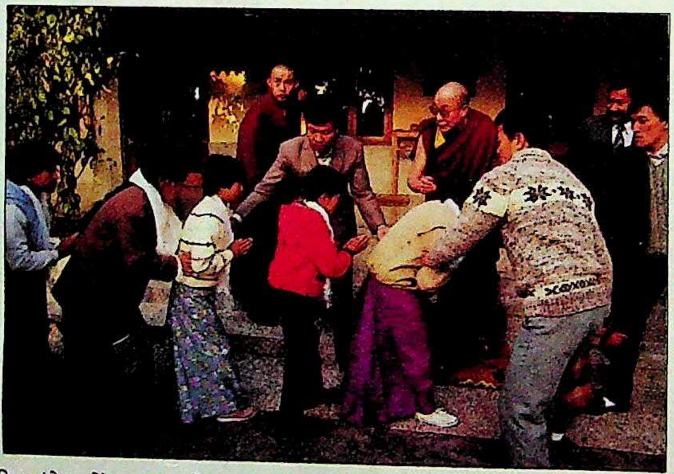

■ धर्म सभा को संबोधित करते दलाई लामा (ऊपर); श्रद्धा से नत लोग

सवाल पूछने या फिर बातचीत के दौरान हंसी-मजाक की उनकी शैली उनके प्रशंसकों की संख्या में अगर हर दिन बढ़ोत्तरी कर रही है तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं होनी चाहिए.

नोबेल समिति ने पुरस्कार घोषणा के साथ जारी किए गए प्रशस्तिपत्र में दलाई लामा की इस बात के लिए खास तौर से प्रशंसा की है कि "उन्होंने प्राणि मात्र के प्रति आदरभाव तथा मानवता और प्रकृति के प्रति प्रेम की सार्वभौमिक जिम्मेदारी के सिद्धांत पर अपनी शांति नीति को आधारित किया है." पिछले साल जांस्कार में 'इंडिया टुडे' के साथ बातचीत के दौरान उन्होंने बताया था, "तिब्बत में जब भी पोताला महल की छत से मैं किसी किसान को भेड़ें या यॉक लेकर कसाईखाने की ओर जाते देखता था तब मैं अपना प्रतिनिधि भेजकर उसके सभी जानवर खरीद लेता था. इस तरह मैंने लगभग 20 हजार जानवरों को कसाई की छुरी से बचाया. लेकिन अब एक गरीब शरणार्थी होने के नाते मैं ऐसे मौके पर आंखें बंद कर लेता हूं और 'मनी' (प्रार्थना) का जाप करके दिल को तसल्ली दे लेता हूं." और फिर शरारत भरी हंसी के साथ उनका सवाल था, "क्या तुम्हें नहीं लगता कि 'मनी' (पैसे) के मुकाबले 'मनी' (प्रार्थना) ज्यादा असरकारी होती है?" और सुबह 4 बजे से रात 9-10 बजे तक उनकी दिनचर्या में पढ़ने-लिखने, सरकारी कामकाज देखने और लोगों से मिलने का स्थान भी प्रार्थना स्थल जैसा ही है. इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित है.
टिकाऊ है.
यह वीलाइन है.

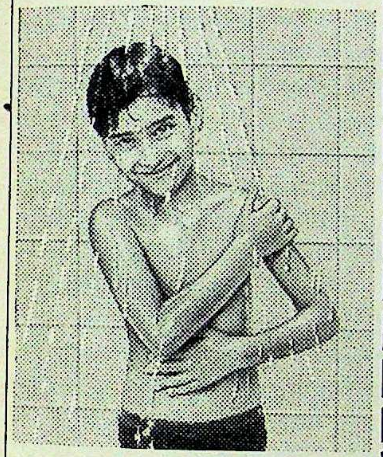

सुरक्षा : वीलाइन स्टोरेज वॉटर हीटर में सुरक्षा के तीन उपाय हैं. 'ओवर हीटिंग' से बचाव के लिए थर्मोस्टेटिक टैंपरेचर कन्ट्रोल. ज़रूरत से ज़्यादा दबाव को रोकने के लिए पिघल जाने वाला फ्यूज़िबल प्लग. और प्रेशर रिलीज़ वॉल्व.

टिकाऊपन : ख़ास स्टील कन्टेनर पर उपयोगी इनेमल की परत चढ़ी है. जिसमें इसे ज़ंग लगने से बचाने का विशेष गुण है. अमेरिका में इस तकनीक को स्टोरेज वॉटर हीटरों में सफलतापूर्वक उपयोग में लाया गया है.

वोल्टास का वीलाइन स्टोरेज वॉटर हीटर... सुरक्षित, भरोसेमंद, टिकाऊ... साल दर साल तक.

वीलाइन
स्टोरेज वॉटर हीटर

CLARION/B/V/128/244 HIN

विक्रेता :
वोल्टास लिमिटेड
एल्लाऐंसेज़ बिज़नेस ग्रुप,
१९, जे. एन. हरडिया मार्ग,
बेलार्ड एस्टेट,
बंबई-४०० ०३८.

वोल्टास
वीलाइन
घरेलू इस्तेमाल के भरोसेमंद उपकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्रों से खेल-खिलवाड़ करने और बागवानी जैसे अपने प्रिय कामों के लिए भी वे समय निकाल लेते हैं.

दलाई लामा जैसी महत्वपूर्ण पदवी के कारण उनके अनुयायी और प्रशंसक उन्हें गहरे सम्मान से देखते हैं और अधिकांश सरकारें अब उन्हें लगभग वही सम्मान और सुविधाएं देने लगी हैं जो किसी राष्ट्राध्यक्ष को दी जाती हैं. लेकिन इसके बावजूद दलाई लामा की निजी जिंदगी की सादगी हमेशा की तरह बरकरार है. उदाहरण के लिए अपनी विदेश यात्राओं के दौरान वे आज भी हवाई जहाज की सामान्य श्रेणी में ही यात्रा करना पसंद करते हैं.

600 साल पुरानी दलाई लामा परंपरा के 14वें दलाई लामा का निजी नाम तेनजिन ग्यात्सो है. उनके इस सादे व्यक्तित्व का संबंध शायद पूर्वी तिब्बत के आम्दो प्रांत के उस छोटे से गांव से है जहां दो साल की उम्र में उन्हें पिछले दलाई लामा के अवतार के रूप में पहचाना गया था. एक सादे ग्रामीण घर में रहने वाले उनके पिता एक गरीब किसान थे.

जब माओ की मुक्ति सेना ने तिब्बत को 'मुक्त' कराने के लिए हमला किया तब मात्र 15 साल की उम्र में ही तेनजिन को दलाई लामा का राजनैतिक कार्यभार संभालते हुए पेइचिंग जाकर माओ से सौदेबाजी करनी पड़ी थी. लेकिन चीनी कब्जे के विरुद्ध 1959 में तिब्बती क्रांति के विफल होने पर दलाई लामा को एक सैनिक की वर्दी में भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी. तब से वे लगभग एक लाख शरणार्थियों के साथ भारत में ही रह रहे हैं.

पर आज अपनी 40 बरस की इस तकलीफदेह कहानी को याद करते हुए वे मुस्कराते हुए कहते हैं, "शुक्र है चीन का कि उसने अपनी करतूतों से मुझे ऐसा पहला दलाई लामा बना दिया जिससे बीबीसी भी बात करना चाहता है और दुनिया भर के अखबार भी." पर तुरंत ही उनके शब्द दर्द में डूब जाते हैं, "लेकिन तिब्बत के इतिहास का यह सबसे अंधकार भरा और नाजुक दौर है. यही वजह है कि तिब्बत के मौजूदा इतिहास ने इस दलाई लामा को सबसे महत्वपूर्ण, सबसे उपयोगी और सबसे दुखी दलाई लामा बना दिया है." और शायद नोबेल शांति पुरस्कार का सबसे उपयुक्त पात्र भी.

—दिलीप बॉब और विजय क्रान्ति

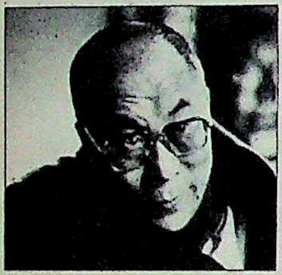

बातचीत

'इससे अहिंसा में मेरी आस्था मजबूत हुई है'

पिछले पखवाड़े ओस्लो में नोबेल पुरस्कार समिति के अध्यक्ष एगिल आरविक ने 1989 के पुरस्कार के लिए दलाई लामा के नाम की घोषणा करके दुनिया भर में फैले तिब्बती शरणार्थियों में खुशी की लहर दौड़ा दी. उन्होंने प्रार्थनाओं, नाच-गाने और 'छांग' (घरेलू बियर) के साथ इस खबर का स्वागत किया. लेकिन उस समय 'केलिफोर्निया विश्वविद्यालय' में एक सेमिनार में गए 14वें दलाई लामा तेनज़िन ग्यात्सो (54 वर्ष) ने 30 लाख क्रोना (75 लाख रु.) के पुरस्कार की खबर को बहुत ही शांत भाव से सुना. बाद में उन्होंने टेलीफोन पर वरिष्ठ संवाददाता ***विजय क्रान्ति*** *के सवालों के जवाब दिए. इसी बातचीत के कुछ अंश:*

● ***दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार मिलने से क्या आप खुश हैं?***

भिक्षु होने के नाते मुझे पुरस्कारों से फर्क नहीं पड़ना चाहिए. पर मैं समझता हूं कि यह पुरस्कार मुझे शांति और मानवाधिकारों के लिए अपने प्रयासों की वजह से मिला है. हालांकि मैं वैसे भी इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखता पर इससे अहिंसा में मेरी आस्था को बल मिला है.

● ***तिब्बती जनता के संघर्ष पर इसका क्या असर पड़ेगा?***

इससे तो शांति में आस्था रखने वाले हर व्यक्ति को लाभ होगा. अब लोग जानना चाहेंगे कि तिब्बत का सवाल क्या है और यह दलाई लामा कौन है. इससे मेरे देशवासियों को नया उत्साह मिलेगा और उनका इरादा पक्का होगा.

● ***आप इस रकम का क्या करेंगे?***

अभी मैंने कुछ तय नहीं किया है. हां, कुछ विचार जरूर मेरे दिमाग में हैं. एक तो यह कि इसका एक हिस्सा दुनिया से भुखमरी समाप्त करने वाले किसी अच्छे कार्यक्रम में लगाया जाए. हालांकि हमारे कई तिब्बती शरणार्थियों का पुनर्वास पैसे की कमी के कारण नहीं हो पाया है पर उनके मुकाबले इस पैसे की ज्यादा जरूरत हमारे उन भाई-बहनों को है जिन पर अफ्रीका या दूसरे इलाकों में भूख की वजह से मौत मंडरा रही है.

● ***कोई और योजना भी है?***

हां, एक विचार यह है कि इस पैसे का एक हिस्सा विश्व शांति की स्थापना वाले किसी अभियान में लगाया जाए. भुखमरी को हमेशा के लिए खत्म करने का एकमात्र रास्ता यही है कि शांति स्थापित की जाए. मेरा खयाल है कि पूंजी लगाने का यह एक सही रास्ता है.

● ***क्या इसके लिए कोई विशेष संस्था है आपके ध्यान में?***

ऐसी कई संस्थाएं हैं. जैसे कोस्टारिका का शांति विश्वविद्यालय. और भी कई हैं. इसके अलावा मेरे खयाल में विश्व स्तर पर खासकर युवा पीढ़ी में शांति और पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागृति बढ़ाने का काम भी किया जाना चाहिए. इस दिशा में काम करने वालों का एक साझा कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए.

● ***और तिब्बत में शांति के बारे में आपका क्या विचार है?***

वहां मानवाधिकारों की स्थापना के लिए लोग पिछले दो साल से प्रदर्शन कर रहे हैं. मुझे खुशी है कि यह आंदोलन अहिंसक है. चीनी छात्रों के अहिंसक आंदोलन ने भी चीन और तिब्बत के बारे में मुझे नई आशा प्रदान की है.

● ***पर चीन सरकार तो आपकी तरह नहीं सोचती?***

दुर्भाग्य से यह बात सही है. पर मुझे महात्मा गांधी के अहिंसा के रास्ते पर पूरा भरोसा है. मुझे हमेशा इसी से प्रेरणा मिली है और मुझे आशा है कि तिब्बत का सवाल इसी रास्ते से हल होगा.

● ***क्या आपको नहीं लगता कि हताशा में तिब्बती युवा हिंसा के रास्ते पर जा सकते हैं?***

इस सवाल के लिए मेरा जवाब सीधा-सादा है. अगर हालात मेरे हाथ से निकल जाते हैं या तिब्बती आजादी का आंदोलन मेरे नियमों के खिलाफ रास्ता अपनाता है तो मैं यही कर सकता हूं कि इससे नाता तोड़ लूं. अहिंसा के अलावा कोई और रास्ता नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव

अटकलबाजी का आसरा

लोकसभा-विधानसभा चुनाव साथ कराने के सवाल पर राय अलग

"हम तो वही करेंगे जो राज्यों के मुख्यमंत्री चाहेंगे."

लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाने की संभावना के बारे में पूछे जाने पर राजीव गांधी.

राजनीति में एकदम स्पष्ट और बिना वचनबद्धता वाले बयान से भी तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो सकती हैं. अगर यह बयान प्रधानमंत्री का हो और वह भी चुनाव से संबंधित, तब तो ये चर्चाएं और भी अधिक होती हैं. इसलिए बंबई में पिछले पखवाड़े राजीव गांधी ने जब पत्रकारों के सवाल के जवाब में बहुत सावधानी भरा बयान दिया तो फिर अटकलबाजियों का दौर शुरू हो गया. तुरंत नए सिरे से राजनैतिक गणित जोड़ा जाने लगा और दोनों चुनाव साथ कराए जाने की संभावनाओं को लेकर नए तरह के समीकरण बनने-बिगड़ने लगे.

लोकसभा के साथ ही विधानसभा के चुनाव आखिरी बार 1967 में हुए थे. चुनाव आयोग के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय निर्वाचन सदन में बैठे अधिकारी इस संभावना से इनकार करते हैं लेकिन इंकाई इस बारे में ज्यादा गंभीरता से सोचने लगे हैं. शासक दल की रणनीति बनाने वाले इसके नफा-नुकसान का हिसाब लगाने लगे हैं. राजीव के कई सलाहकार उन्हें इसके फायदे समझाने लगे हैं.

अनेक कांग्रेसियों का मानना है कि साथ-साथ चुनाव कराए जाने से जनता दल में अंदरूनी विवाद का एक और दौर शुरू हो जाएगा. विपक्ष की एकता अभी भी बहुत नाजुक हालत में है और अगर फिर विवाद शुरू हुए तो एका खत्म हो जाएगा. एक इंका नेता समझाते हैं, "लोकसभा चुनाव में तो वे जैसे-तैसे सीटों का बंटवारा कर लेंगे और काफी सीटें अपनी भागीदार पार्टियों के लिए छोड़ देंगे. लेकिन विधानसभा के लिए 2,000 टिकटों का बंटवारा वे शांति से नहीं कर सकेंगे." उनकी भविष्यवाणी है कि अपने-अपने लोगों को टिकट दिलवाने के चक्कर में जनता दल के विभिन्न धड़ों के नेता एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाएंगे.

शासक दल की रणनीति साफ है: अगर फिर आपसी सिर फुटौवल शुरू हुई तो जनता दल के नेता खासकर इंका के लिए बड़ा खतरा बने विश्वनाथ प्रताप सिंह इसे शांत करने के तात्कालिक उपाय ढूंढ़ने में ही व्यस्त हो जाएंगे. इस तरह उनके और देवीलाल जैसे भीड़ जुटा सकने वाले नेताओं के पास चुनाव प्रचार करने का कम ही समय बच पाएगा और इससे इंका फायदे में रहेगी.

पीआईबी

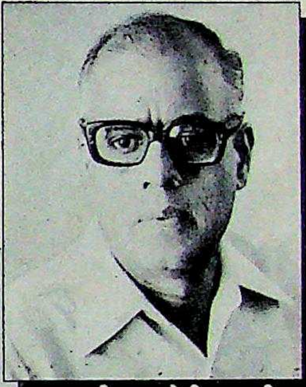

आर.वी.एस. पेरी शास्त्री

संसदीय तथा विधानसभा चुनाव साथ-साथ कराने की अटकलें राजीव गांधी के बयान से पहले तब शुरू हुई थीं जब मुख्य चुनाव आयुक्त पेरी शास्त्री ने कहा था कि भविष्य में दोनों चुनाव साथ-साथ कराए जा सकते हैं

एक साथ चुनाव कराने के पक्षधरों का कहना है कि इससे एक और फायदा होगा. उनका मानना है कि इससे राजीव को राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर अपनी पार्टी के असंतुष्टों से एक ही बार छुटकारा पा लेने का मौका मिल जाएगा.

लेकिन सारे कांग्रेसी इस प्रस्ताव के पक्षधर नहीं हैं. कुछ का मानना है कि एक साथ चुनाव कराने से राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों का घालमेल हो जाएगा. और इंका की सिर्फ अपने आपको ही राष्ट्रीय एकता का रखवाला बताने की रणनीति फेल हो जाएगी. स्थानीय मुद्दे राष्ट्र की स्थिरता जैसे राष्ट्रीय मुद्दों पर हावी हो जाएंगे.

इस प्रस्ताव का विरोध होने का एक और कारण भी है. अगर लोकसभा के चुनाव विधानसभा चुनाव से पहले होंगे तो विधानसभा का टिकट चाहने वाले तमाम नेता पार्टी के लिए पूरा दम लगाकर काम करेंगे. लेकिन विधानसभा चुनाव के उम्मीदवारों के नाम तय हो जाने पर टिकट न पाए लोग असंतुष्ट होकर परेशानी पैदा करेंगे.

राजनैतिक गणित को छोड़ दें तो कई और व्यावहारिक कारण भी हैं जो दोनों चुनाव साथ कराने के पक्ष में जाते हैं. वर्तमान संसद का कार्यकाल 13 जनवरी 1990 को खत्म हो रहा है और 17 विधानसभाओं का कार्यकाल 1 अप्रैल को. दरअसल राजीव गांधी के बयान से काफी पहले जून में मुख्य चुनाव आयुक्त आर.वी.-एस.पेरी शास्त्री के एक बयान से ही इस बारे में अटकलें शुरू हो गई थीं. राज्यों के मुख्य चुनाव अधिकारियों की सभा में उन्होंने कहा था, "निकट भविष्य में ही लोकसभा और 17 विधानसभाओं के लिए आम चुनाव होने वाले हैं."

अगर ये दोनों चुनाव साथ हुए तो करीब 150 करोड़ रु. की बचत की जा सकती है. जहां तक राजनैतिक दलों द्वारा चुनाव पर किए जाने वाले खर्च का सवाल है, कम-से-कम 1,000 करोड़ रु. का अनुमान तो हर कोई बताता है.

वैसे तकनीकी रूप से चुनाव आयोग विधानसभाओं के चुनाव आम चुनाव के साथ कराने के लिए उनका कार्यकाल छह महीने बढ़ा तो सकता है लेकिन वह किसी विधानसभा का कार्यकाल समाप्त हुए बिना उसे भंग नहीं कर सकता. लेकिन इस बात की संभावना नहीं है कि इस मुद्दे पर कोई चुनाव आयोग का विरोध करेगा. आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन.टी. रामराव ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वे दोनों चुनाव एक साथ कराए जाने के पक्ष में हैं. भारतीय जनता पार्टी ने तो अपने चुनाव घोषणापत्र के प्रारूप में दोनों चुनाव साथ कराने का वादा भी शामिल किया है.

अब चुनाव आयोग ने घोषणा की है कि जो राज्य सरकारें आम चुनाव के साथ ही अपने यहां विधानसभा चुनाव कराना चाहती हैं, वे 15 नवंबर के पहले सूचित कर दें. लेकिन दोनों चुनाव एक साथ करने का फैसला अंततः इंका के मुख्यमंत्रियों को ही करना होगा (क्योंकि ज्यादा राज्यों में उन्हीं का राज है). देश को इसके आर्थिक लाभ की परवाह न करते हुए इंका ऐसा तभी होने देगी जब यह उसके फायदे में रहेगा. —भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय वायुसेना

कलाबाजी की जोखिम

वायुसेना दिवस पर करतब दिखाता मिराज-2000 गिरा

वे अपने करतब से चार मिनट 50 सेकंड तक दर्शकों को मंत्रमुग्ध किए रहे. आसमान में जाकर जब उन्होंने कलाबाजी खाई तो तालियां गड़गड़ा उठीं. फिर जब उन्होंने '8' की खड़ी आकृति बनाई तो दर्शकों की सांसें थम गईं. और जब आखिरी करतब दिखाने के लिए त्रिभुजाकार पंखों वाला उनका मिराज-2000 एकदम आक्रामक शैली में धीरे-धीरे परेड ग्राउंड की तरफ नीचे आने लगा तो लोगों के मुंह से 'आह' निकल पड़ी.

मिराज-2000 जैसे ही सीटों की अगली कतार को पार कर आगे बढ़ा, उससे लपटें निकलने लगीं. साढ़े नौ टन वाला यह जेट तेज गति से ऊपर की ओर जाने लगा और सूरज की रोशनी से चमकते हुए आसमान में जैसे ही गायब होता दिखा, इसके 38 वर्षीय पायलट विंग कमांडर रमेश 'जोए' बख्शी ने विमान को कलाबाजी खिलाते हुए सीधे नीचे लाने का करतब दिखाने के लिए उसे पीठ के बल उलटा कर दिया. विमान तीन पलटा खा चुका था और जब चौथा पलटा खा रहा था कि एक पानी की टंकी के दाहिनी ओर पेड़ों में गायब हो गया. तभी एक धमाका हुआ और चारों तरफ आग ही आग दिखने लगी. तकरीबन 12 लोग घायल हुए जिनमें से एक की दूसरे दिन मृत्यु हो गई. बीसियों झोंपड़ियां जलकर राख हो गईं. एक बस और एक ट्रक में भी आग लग गई.

आतंक अभी थमा भी नहीं था कि एक और धमाका हुआ. पायलट की विशेष सीट के नीचे रखे कारतूस फट गए थे. भीड़ में फिर हड़कंप मच गया. इस तरह 8 अक्तूबर को भारतीय वायुसेना की 57वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह कुछ ही सेकंडों के भीतर त्रासदी में तब्दील हो गया.

फिर भी बड़ी मात्रा में नुकसान होने से बच गया. पेड़ों और मूवमेंट कंट्रोल यूनिट के खाली भवन ने कवच का काम किया और विमान के मलबों और जलते हुए टुकड़ों को परेड ग्राउंड तक नहीं पहुंचने दिया जहां सेनाओं के उच्चाधिकारी और दूसरे वीआईपी बैठे हुए थे. इनका बचना किसी चमत्कार से कम नहीं रहा.

संजीव शर्मा

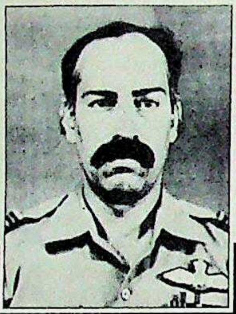

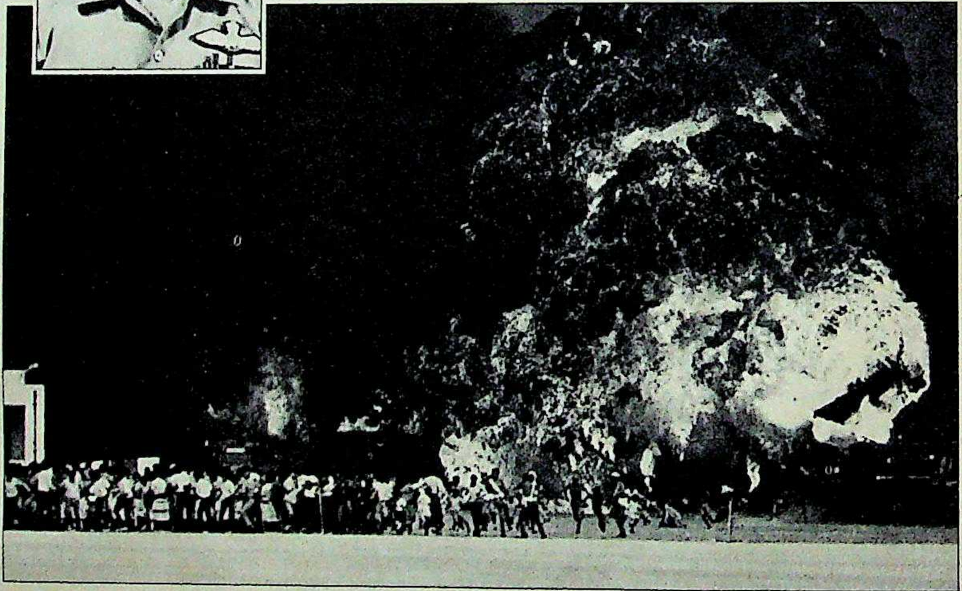

विंग कमांडर बख्शी; और मिराज हादसा: उत्सव जो त्रासदी में बदल गया

बाद में वायुसेना के विशेषज्ञों ने पता लगाने पर पाया कि मिराज पानी की टंकी के पास खाली जमीन पर टक्कर मारने के बाद आगे की तरफ उछला और झोंपड़ियों के ऊपर से होता हुआ एक नाले के बांध से टकरा गया. वहां से फिर उछला तो वायुसेना अड्डे की 10 फुट ऊंची बाड़ को पार करता हुआ मूवमेंट कंट्रोल यूनिट पर गिर पड़ा और ध्वस्त हो गया.

एअर चीफ मार्शल एस.के. 'पॉली' मेहरा ने कहा, "इस दुर्घटना पर हम बेहद दुखी हैं. लेकिन वायुसेना का इरादा इस तरह के प्रदर्शन पर रोक लगाने का नहीं है. विमानन में ऐसा तो होता ही रहता है." उनके मुताबिक पायलट ने फैसला लेने में भूल की इसलिए यह दुखद घटना हुई.

दूसरे वरिष्ठ अधिकारियों के मुताबिक, चौथे करतब के समय, जो कि कार्यक्रम में शामिल नहीं था, बख्शी दुविधा में पड़ गए थे. एक अधिकारी ने कहा, "या तो वे कलाबाजियों की संख्या भूल गए होंगे या फिर यह सोचा होगा कि चौथी कलाबाजी के लिए उपयुक्त ऊंचाई है." चौथी कलाबाजी के कारण वे जमीन से काफी करीब आ गए थे. जमीन से उनकी ऊंचाई करीब 3,000 फुट रह गई थी. चालकों की राय में फिर ऊपर उठने के लिए यह ऊंचाई काफी कम है.

बख्शी को कलाबाजी का काफी अनुभव था. मिराज-2000 पर इस कला को दिखाने में तो वे माहिर थे. फिर भी इस त्रासद अवस्था में वे कैसे पड़ गए, इस सवाल का जवाब विशेषज्ञ अभी नहीं दे सकते. यह तो उड़ान डाटा रिकॉर्डर के अध्ययन से ही पता चलेगा. बख्शी के एक कनिष्ठ सहयोगी ने कहा, "तथ्य तो यह है कि बख्शी ही यह जानते रहे होंगे कि उपयुक्त ऊंचाई या पर्याप्त समय न होने के बावजूद उन्होंने चौथी कलाबाजी दिखाने की जोखिम क्यों मोल ली? इस सवाल का जवाब अब कभी नहीं मिलेगा."

बख्शी के कुछ स्क्वैड्रन साथियों का कहना है कि दुर्घटना के एक दिन पहले उन्होंने पीठ में दर्द की शिकायत की थी. उनकी पत्नी अरुणा इतने सदमे में थीं कि कुछ नहीं बोल सकीं. लेकिन दूसरे लोगों का मानना है कि इस दुर्घटना का कारण पीठ का दर्द नहीं था.

कुछ भी हो, 30 करोड़ रु. के एक लड़ाकू विमान की बरबादी और एक अमूल्य लड़ाकू पायलट को गवांने के बाद उम्मीद है भारतीय वायुसेना इस तरह के प्रदर्शनों को सुरक्षित बनाने के उपायों पर गंभीरता से विचार करेगी.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

फिर सड़कों पर

रामराव विरोधी इंकाई मुहिम

आंध्र प्रदेश में खादी की दुकानों पर पिछले पखवाड़े 'माल खत्म' की पट्टी लगी हुई थी. इंकाइयों के नए जोश-खरोश का इसे सबसे बढ़िया उदाहरण माना जा सकता है. लगभग साढ़े छह साल पहले तेलुगु देशम ने उन्हें सत्ता से वंचित करके सन्नाटे में डाल दिया था. अब इंकाई कार्यकर्ता फिर से गांधी टोपी और खादी के वस्त्रों में सड़कों पर दिखने लगे हैं.

उन्होंने 'रामराव सरकार की विफलताओं' के खिलाफ गांधी जयंती के दिन से लगातार तीन दिनों तक मंडल, नगरपालिका और राज्य के सरकारी दफ्तरों के सामने धरना दिया और पार्टी के जेल भरो अभियान के तहत गिरफ्तारी दी. जनता के बीच कभी-कभार ही दिखने वाले पूर्व इंकाई मंत्री, विधायक और सांसद लंबे समय बाद आम कार्यकर्ताओं के कंधे-से-कंधा मिलाकर इन कार्यक्रमों में हिस्सा लेते देखे गए.

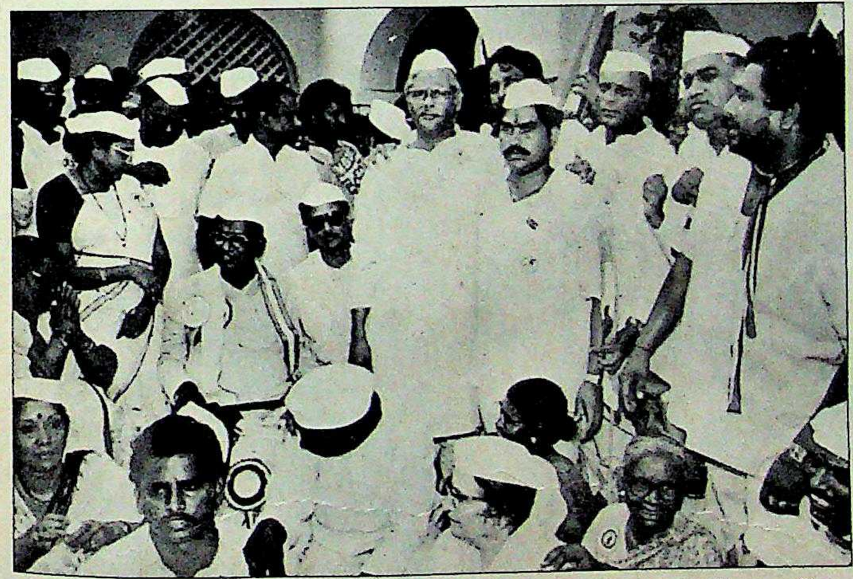

सत्याग्रह करते चेन्ना रेड्डी

जेल भरो आंदोलन के आखिरी दिन 6 अक्तूबर को प्रदेश इंका अध्यक्ष डॉ. चेन्ना रेड्डी ने पत्नी, बेटों और पोते-पोतियों तक के साथ पुलिस उपायुक्त के दफ्तर के सामने धरना दिया. आंदोलन लगभग शांतिपूर्ण ही रहा. लेकिन मेडक जिले के सिद्दीपेट में कुछ उद्दंड इंका कार्यकर्ता राजस्व दफ्तर में जबरन घुस गए ताकि माहौल गरम हो.

तनाव बढ़ता देख आंध्र प्रदेश विशेष पुलिस बल ने आंदोलनकारियों पर लाठियां बरसाईं और तीन राउंड गोली चलाई. इसमें पार्टी के कार्यकर्ता घायल हुए. तीन को अस्पताल में भर्ती करना पड़ा. सिद्दीपेट संसदीय क्षेत्र के लिए पार्टी के टिकट की आकांक्षी, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. गीता रेड्डी ने कहा, "यह घटना एक अक्खड़ राजस्व अधिकारी की वजह से हुई जिसने शांतिपूर्ण आंदोलनकारियों से ज्ञापन लेने के लिए बाहर आने से साफ इनकार कर दिया था. सचाई तो यह है कि 2 अक्तूबर को जब शहर के दो थानों पर आंदोलनकारियों ने धरना दिया तो कोई गड़बड़ी नहीं हुई."

जेल भरो आंदोलन में शिरकत करने वाले सभी लोगों ने एक शपथपत्र पर दस्तखत किए. जिसमें रामराव के खिलाफ पार्टी द्वारा समय-समय पर लगाए जाने वाले 16 आरोप दर्ज हैं.

यह अभियान चतुर संगठक चेन्ना रेड्डी द्वारा पार्टी को एकजुट करने और चुनावों के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं को तैयार करने की रणनीति का हिस्सा है. इसके पहले 7 सितंबर को सिकंदराबाद में 'राष्ट्रपति निलयम', जो दक्षिण भारत में राष्ट्रपति का सरकारी दफ्तर है, पर राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन को हजारों दस्तखतों वाला ज्ञापन देने के लिए पड़ोसी जिलों और शहर के कार्यकर्ता ट्रकों में भरकर पहुंचे.

इंका के इस अभियान का मकसद जनाधार बढ़ाना भी है. पार्टी के महासचिव ए. मदन मोहन ने कहा, "लोग अब पहले की तरह रामराव के नारों से झांसे में नहीं आते. उन्हें उनके वादों की असलियत का पता लग गया है."

उम्मीद के मुताबिक, मुख्यमंत्री रामराव जेल भरो अभियान के प्रति लोगों के उत्साह से चिंतित हो उठे. उन्होंने अपनी पार्टी की चुनाव प्रचार समिति के गठन की फौरन घोषणा कर दी और मतदाताओं को लुभाने के नए तरीकों पर गंभीरता से सोच-विचार करने लगे.

इस बीच अपने चिरपरिचित तरीकों के अनुरूप इंका के एक महासचिव के.केशव राव और पिछड़े वर्गों के कुछ इंका कार्यकर्ताओं ने चेन्ना रेड्डी पर सांप्रदायिकता का आरोप लगाया और मांग की कि वे या तो अपना रवैया बदलें या फिर प्रदेश अध्यक्ष के पद से हट जाएं. इस धमकी को न तो रेड्डी और न ही पार्टी के किसी पदाधिकारी ने गंभीरता से लिया. जैसा कि पार्टी के एक और महासचिव कहते हैं, "पार्टी में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें धक्के देकर बाहर करो तब भी वे नहीं जाएंगे. यह तो बेमतलब का गुलगपाड़ा है."

गिरफ्तारी अभियान में भारी संख्या में कार्यकर्ताओं की मौजूदगी ने पार्टी में जोश भर दिया है. जाहिर है, इंका अब हाथ पर हाथ धरे बैठने को तैयार नहीं है.

—अमरनाथ के. मेनन

गुजरात

शर्मनाक कार्रवाई

सरकार भी पुलिस के पक्ष में

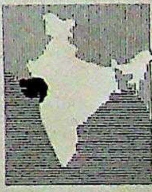

नाडियाड के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एन.एल. पटेल की पिटाई और उन्हें हथकड़ी लगाने के जिम्मेदार गुजरात पुलिस के पांच अधिकारियों की गिरफ्तारी और फिर जमानत पर उनकी रिहाई से न्यायपालिका और पुलिस के बीच खतरनाक सूरत लेता विवाद फिलहाल टल गया लगता है.

पिछले महीने पटेल के खिलाफ हुई पुलिस कार्रवाई से देश भर में गुस्से की लहर दौड़ गई. वकीलों और मातहत न्यायिक अधिकारियों ने हड़ताल की. गुजरात न्यायिक सेवा संघ के अध्यक्ष बी.पी. मुंशी ने इस शर्मनाक कार्रवाई के दोषियों को सजा देने की मांग करते हुए कहा, "इससे समूची न्यायपालिका का स्वाभिमान और स्वतंत्रता दांव पर लग गई है." पटेल द्वारा खिंचाई किए जाने पर ही पुलिस ने उनके खिलाफ बदले की कार्रवाई की थी.

जाहिर है, पटेल पर इस तरह का जुल्म करके पुलिस ने दोहरा संकेत देने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशिश की है. एक तो मजिस्ट्रेट को रास्ते पर लाना और साथ ही पुलिसिया मनमानी के दूसरे आलोचकों को चेतावनी देना. राज्य पुलिस की ज्यादतियों की कई घटनाएं उजागर करते हुए गुजरात हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील भास्कर टन्ना कहते हैं, "गुजरात में पुलिस ज्यादतियों की जांच-पड़ताल के लिए एक संस्था बनाने का समय आ गया है."

राज्य सरकार पर दोषी अधिकारियों को संरक्षण देने के आरोप लगाए गए. मुख्यमंत्री अमर सिंह चौधरी ने विधानसभा में बयान दिया कि पटेल शराब के नशे में थे और उन्होंने पुलिस अधिकारियों से दुर्व्यवहार किया. उधर, अपनी सफाई में पटेल का कहना है कि उनके कपड़े शराब से तर कर दिए गए और उन्हें रस्सी से बांध दिया गया. बहरहाल, दिलचस्प तथ्य यह है कि इस घटना की तस्वीरों से संविधान की धारा 21 का उल्लंघन करके पटेल को हथकड़ी पहनाने और उनकी पिटाई करने की पुष्टि होती है.

उधर, पटेल की निजी शिकायत पर नाडियाड के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा पांचों पुलिस अधिकारियों के खिलाफ जारी जमानती वारंट की भी स्थानीय पुलिस तामील नहीं करा पाई. इससे विवाद और भड़का. आखिरकार न्यायिक सेवा और वकील संघों ने सुप्रीम कोर्ट को कई तार भेजे और उसे हस्तक्षेप करना पड़ा. मुख्य

योगेन्द्र सी. पटेल

हथकड़ी में पटेलः पुलिस जुल्म

न्यायाधीश ई.एस. वेंकटरमैया की अध्यक्षता में तीन न्यायाधीशों की पीठ ने इस मामले को जनहित का मुकदमा माना और राज्य सरकार को इसका पूरा ब्यौरा मुहैया कराने का आदेश दिया. इसके बावजूद सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की. आखिरकार, जब अदालत ने दोषी पुलिसवालों को दो दिनों में गिरफ्तार करने का आदेश दिया, तब जाकर वे पांचों पुलिस अधिकारी नाडियाड की अदालत में हाजिर हुए.

गुजरात और आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट में मुख्य न्यायाधीश रहे बी.जी. दीवान कहते हैं, "इसकी मूल वजह पुलिस बल का अपराधीकरण और राजनीतिकरण होना है. राज्य सरकार को उन पुलिसवालों के खिलाफ तत्काल और समुचित कदम उठाने चाहिए थे." गुजरात हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश एन.एच भट्ट कहते हैं, "पुलिसवालों का व्यवहार किसी निरंकुश सम्राट के अमले की तरह था." हालांकि सच्चाई क्या है, यह बात तो मामले की जांच के बाद ही उभरकर सामने आएगी लेकिन इससे एक बार फिर पुलिस और राजनीतिकों के बीच सांठगांठ उजागर हुई है.

—उदय माहूरकर

तितलियों की रंग बिरंगी छटा
दीवारों पर कैद करें.

गुणवत्ता, रंग व सुन्दरता में सर्वोत्तम
साथ ही किफ़ायती भी

अंगूर ® एवं चेरी

• लाइम कलर्स • ड्राई डिस्टेम्पर • सीमेंट ऑक्साइड कलर्स

बच्छराज कलर्स (प्रा) लि.

रजि. कार्यालय : मच्छरहट्टा, पटना सिटी-८००००८
दूरभाष : ४२३८९, ४२०९२, ४११११५

शाखा कार्यालय : ११९, सेक्टर ३७, नौएडा-२०१३०१
दूरभाष : २२०५०

mahima/bcpl/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

उम्मीदों पर पानी फिरा

राज्य मंत्रिमंडल के विस्तार में महज दो मंत्री शामिल

नारायणदत्त तिवारी ने दशहरे के दिन अपने मंत्रिमंडल का अचानक विस्तार किया. इस तरह उन्होंने इन उम्मीदों पर पानी फेर दिया कि वे 'काम न करने वाली' सरकार की छवि को सुधारेंगे. उनके मंत्रिमंडल में जब दो और कैबिनेट मंत्रियों—इलाहाबाद संसदीय उपचुनाव में हारे सुनील शास्त्री और वरिष्ठ विधायक खान गुफरान ज़ाहिदी—ने शपथग्रहण की तो जाहिर हो गया कि तिवारी अपने पार्टी सदस्यों की नाराजगी मोल लेने को तैयार नहीं.

चुनाव नजदीक होने पर भी अगस्त के अंतिम हफ्ते में तिवारी ने एक पत्रकार सम्मेलन में संकेत दिया था कि उनके मंत्रिमंडल में करीब आठ पद खाली हैं. इसलिए विस्तार की संभावना बढ़ गई थी. इसके अलावा कुछ और भी कारण थे जिनसे इसकी संभावना व्यक्त की जा रही थी. पहला तो यह कि उनके अनेक वरिष्ठ मंत्री न केवल नाकारा साबित हुए हैं बल्कि कुछेक तो भ्रष्टाचार सहित गंभीर विवादों में बुरी तरह फंस गए दिखते हैं. ऐसे में राजनैतिक प्रेक्षकों का अनुमान था कि मुख्यमंत्री अपनी सरकार की साफ-सुथरी छवि पेश करने के लिए फेरबदल कर सकते हैं.

आर.के. गुप्ता

कैबिनेट मंत्री पद की शपथ लेते शास्त्री और ज़ाहिदी

उनके कुल सोलह कैबिनेट मंत्रियों में से सात पर या तो अकुशलता या भ्रष्टाचार अथवा असंतोष भड़काने की कोशिश के आरोप हैं. ऐसे मंत्रियों के बारे में उम्मीद की जा रही थी कि इन्हें तिवारी या तो चलता कर देंगे या फिर उनके विभाग बदलकर उनका कद छोटा कर देंगे.

उन्होंने मंत्रिमंडल विस्तार का जोखिम तो उठाया लेकिन महज दो मंत्रियों—शास्त्री और ज़ाहिदी—को लेकर सुरक्षित चाल चली. दोनों ही लंबे अरसे से इंतजार कर रहे थे. इन दोनों नामों पर शायद ही कोई विवाद हो सकता है. 25 जून 1988 को गद्दीनशीन होने के बाद मंत्रिमंडल के दूसरे विस्तार के बाद भी मुख्यमंत्री ने चारा फेंक रखा है. वे अभी भी दर्जन भर और मंत्री अपनी टीम में शामिल कर सकते हैं.

उनके आलोचकों का कहना है कि तिवारी अपने मंत्रियों के विभागों में फेरबदल के लिए केंद्र को राजी करने में नाकाम रहे. लेकिन यदि केंद्र ने तिवारी को अपने मंत्रिमंडल की छवि सुधारने का मौका नहीं दिया, तो तिवारी भी मंत्रिमंडल के व्यापक विस्तार के आलाकमान के दबाव को टालने में सफल रहे.

बीरबहादुर सिंह के इस्तीफे और साथ ही तिवारी की उत्तर प्रदेश वापसी के बाद से ही शास्त्री आस लगाए बैठे थे. दरअसल 31 जुलाई 1988 को हुए पहले मंत्रिमंडल विस्तार में वे शामिल होते-होते रह गए थे. उसके बाद शास्त्री के लिए दो विशेष शपथग्रहण समारोहों की योजना बनी पर बीरबहादुर फिर शास्त्री और मंत्री पद के बीच आ गए. शास्त्री ने बीरबहादुर की सरकार पर निकम्मेपन और भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए 20 जुलाई 1987 को मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था. बीरबहादुर इसे कभी नहीं भूले और जब भी तिवारी ने शास्त्री को आगे बढ़ाना चाहा, बीरबहादुर आलाकमान को यह तर्क देते कि ऐसे शख्स को कैसे शामिल किया जा सकता है जो इलाहाबाद चुनाव हारा हो और जिसकी वजह से मुख्यमंत्री (खुद बीरबहादुर) को हटाया गया हो. लेकिन बीरबहादुर की मृत्यु के बाद शास्त्री की वापसी निश्चित हो गई थी. शपथग्रहण के बाद शास्त्री ने कहा, "बीरबहादुर सिंह की मृत्यु से पूर्वी उत्तर प्रदेश में पार्टी को जो क्षति हुई उसकी भरपाई की मैं कोशिश करूंगा." एक राज्यमंत्री ने कहा, "उनकी वापसी से पूर्वी उत्तर प्रदेश में शायद ही कोई मदद मिले. वहां इंका को जरूरत है ठाकुर नेता की, न कि किसी ऐसे शख्स की जो गोरखपुर की महज एक सीट का प्रतिनिधित्व करता हो और जिसका अपने ही क्षेत्र में कोई असर न हो."

तकरीबन ऐसा ही मामला वरिष्ठ विधायक 55 वर्षीय खान गुफरान ज़ाहिदी का है. अब वे पहली बार मंत्री बने हैं. ज़ाहिदी ने कहा, "मंत्रिमंडल के 25 विस्तार हुए और हर बार मैं मंत्री बनते बनते रह जाता." उत्तर प्रदेश आवास निगम के अध्यक्ष पद पर 1985 से काम कर रहे ज़ाहिदी को मुसलमानों को पटाने की तिवारी की कोशिशों के तहत लाया गया लगता है.

बहरहाल, तिवारी मंत्रिमंडल का, छोटा ही सही, विस्तार करने में सफल रहे हैं. इससे साफ है कि मुख्यमंत्री से मतभेदों के बावजूद आलाकमान राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की नहीं सोच रहा. तिवारी एक बार फिर एकमात्र ऐसे इंका नेता के रूप में उभरे हैं जिसमें मौजूदा हालात में राज्य की बागडोर संभालने की कुव्वत है.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू-कश्मीर

लापरवाही का फल

अलगाववादी बना हीरो

विस्फोटक हालात से गलत तरीके से निबटने और सरकार की लापरवाही ने कश्मीर में एक उग्रवादी को शहीद का दर्जा दे दिया है. कट्टर अलगाववादी संगठन पीपुल्स लीग के 37 वर्षीय नेता शबीर अहमद शाह घाटी में तेजी से 'हीरो' बनते जा रहे हैं. पिछले पखवाड़े अचानक और नाटकीय तरीके से उनकी गिरफ्तारी के बाद जनता में हुई तीव्र प्रतिक्रिया ने यह एहसास करा दिया.

28 सितंबर को जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर रामबन के नजदीक शाह को दूसरे उग्रवादी मुहम्मद नईम खान के साथ गिरफ्तार किया गया. वे राजौरी-पुंछ सीमा के नजदीक नियंत्रण रेखा को पार कर पाकिस्तान में घुसने की योजना बना रहे थे. शाह की गिरफ्तारी की एक कहानी यह है कि राज्य की पुलिस ने उन्हें उनके ही एक साथी की सूचना पर गिरफ्तार किया जो उनकी बढ़ती ताकत से खुश नहीं था. दूसरी कहानी के मुताबिक शाह को खुफिया ब्यूरो के उन जासूसों ने पकड़ा जिन्होंने अपने कुछ लोग उनकी चौकड़ी में शामिल करा दिए थे. हकीकत जो भी हो, राज्य में बढ़ते अलगाववाद के खिलाफ अधिकारियों की यह सबसे बड़ी सफलता थी.

उनकी गिरफ्तारी पर लोगों की प्रतिक्रिया से साफ जाहिर हो गया कि वे उन अलगाववादियों के निर्विवाद सरगना हैं जिन्होंने पिछले दो वर्षों से कश्मीर में तबाही मचा रखी है. चार दिनों के बंद के दौरान घाटी पूरी तरह ठप रही थी. बहुत ही कम लोग घर से बाहर निकले. हिंसा कई जगहों पर फूट पड़ी थी. सबसे ज्यादा गड़बड़ी हुई दक्षिण कश्मीर में शाह के गृह नगर अनंतनाग और उत्तर में सोपोर में. दोनों शहरों में बेमियादी कर्फ्यू लगा दिया गया और सेना बुलानी पड़ी. अनंतनाग में पुलिस की गोली से तीन लोग मारे गए, सोपोर में पुलिस की गोली का एक युवक निशाना बना. श्रीनगर में भी पुलिस ने अंधाधुंध गोलियां चलाईं जिससे नौ वर्षीय बालक जहूर अहमद मारा गया.

घाटी में शाह के बढ़ते असर के बारे में सभी संदेह उनकी गिरफ्तारी के बाद खत्म हो गए. उनकी गिरफ्तारी की खबर फैलते ही श्रीनगर में हजारों मर्द, औरतें और बच्चे सड़कों पर निकल आए और अपनी छातियां पीटने लगे. वे गिरफ्तार उग्रवादी के लिए प्रार्थना करने लगे. 5 अक्तूबर तक हालात इतने विस्फोटक हो गए कि अधिकारियों को रेडियो और टीवी पर बार-बार घोषणा करनी पड़ी कि शाह जिंदा और सकुशल हैं.

शाह से सूचनाएं उगलवाने के लिए पुलिस ने यातनादायी तरीके नहीं आजमाए हैं क्योंकि उनका स्वास्थ्य खराब है. सरकार उनके मामले में कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहती. बताया जाता है कि श्रीनगर की डल झील की दूसरी ओर हरिनिवास कांप्लेक्स में बंदी पड़े शाह ने अभी तक कुछ महत्वपूर्ण नहीं उगला है. शाह के लिए बंदी जीवन जाना-पहचाना है और 17 वर्षों की सक्रिय राजनीति में से 11 वर्ष उन्होंने सलाखों के पीछे बिताए हैं.

लेकिन इस बार सलाखों के पीछे भी शाह उतने ही खतरनाक बने हुए हैं जितने कि खुले में थे. शाह सरीखा कोई अलगाववादी हीरो बन जाता है तो इसकी वजहें हैं—मुख्यधारा के नेताओं से लोगों का मोहभंग, राज्य सरकार का निकम्मापन, कश्मीर के मसले पर केंद्र का अस्पष्ट रवैया और मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला की नाकामियां.

शाह सरीखे अलगाववादी के हीरो बन जाने की वजह यह है कि मुख्यधारा के नेताओं से लोगों का मोहभंग हो चुका है

पुलिस दमन और कुशासन ने अलगाववादियों को पैर जमाने का मौका दिया है और नरमपंथियों तक को उग्रवादी बनने पर मजबूर किया है. इस साल अलगाववादी गतिविधियों में तब इजाफा हुआ जब शाह के पिता गुलाम मुहम्मद शाह अनंतनाग में पुलिस हिरासत में मरे. इसके बाद हुए दंगों ने शाह की अहमियत बढ़ा दी और जल्द ही वे कश्मीर के सबसे प्रभावशाली भूमिगत अलगाववादी नेता बन गए.

पुलिस के दिमागी दिवालियेपन के अलावा केंद्र की दिग्भ्रमित नीतियां भी एक उग्रवादी को हीरो बनाने में मददगार साबित हुईं. कुछ लोगों का मत है कि दूसरे अलगाववादी नेताओं को निष्प्रभावी करने के लिए केंद्र ने एक वक्त शाह को बढ़ावा दिया था, उसी तरह जैसे उसने पंजाब में भिंडरांवाले को बढ़ावा दिया था.

सभी फोटो: मेराजुद्दीन

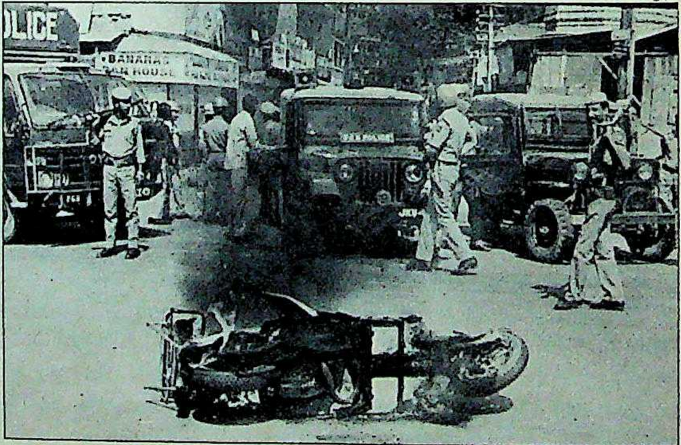

शबीर शाह; श्रीनगर में आगजनी; और हबला बेगमः खतरनाक संकेत

अब केंद्र और राज्य दोनो सरकारें निस्सहाय होकर केवल नजारा ही देख सकती हैं क्योंकि घाटी के दूरदराज के गांववाले शाह की सेहत और लंबी उम्र के लिए सामूहिक प्रार्थनाएं करते हैं. और, फारूक महज हताश हो सकते हैं लेकिन शाह की मां हबला बेगम को मादरे मेहरबान (मेहरबान मां) कहने से लोगों को नहीं रोक सकते. किसी समय घाटी में यह खिताब फारूक की मां अकबर जहां के लिए ही सुरक्षित था.

—जफ़र मेराज, श्रीनगर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

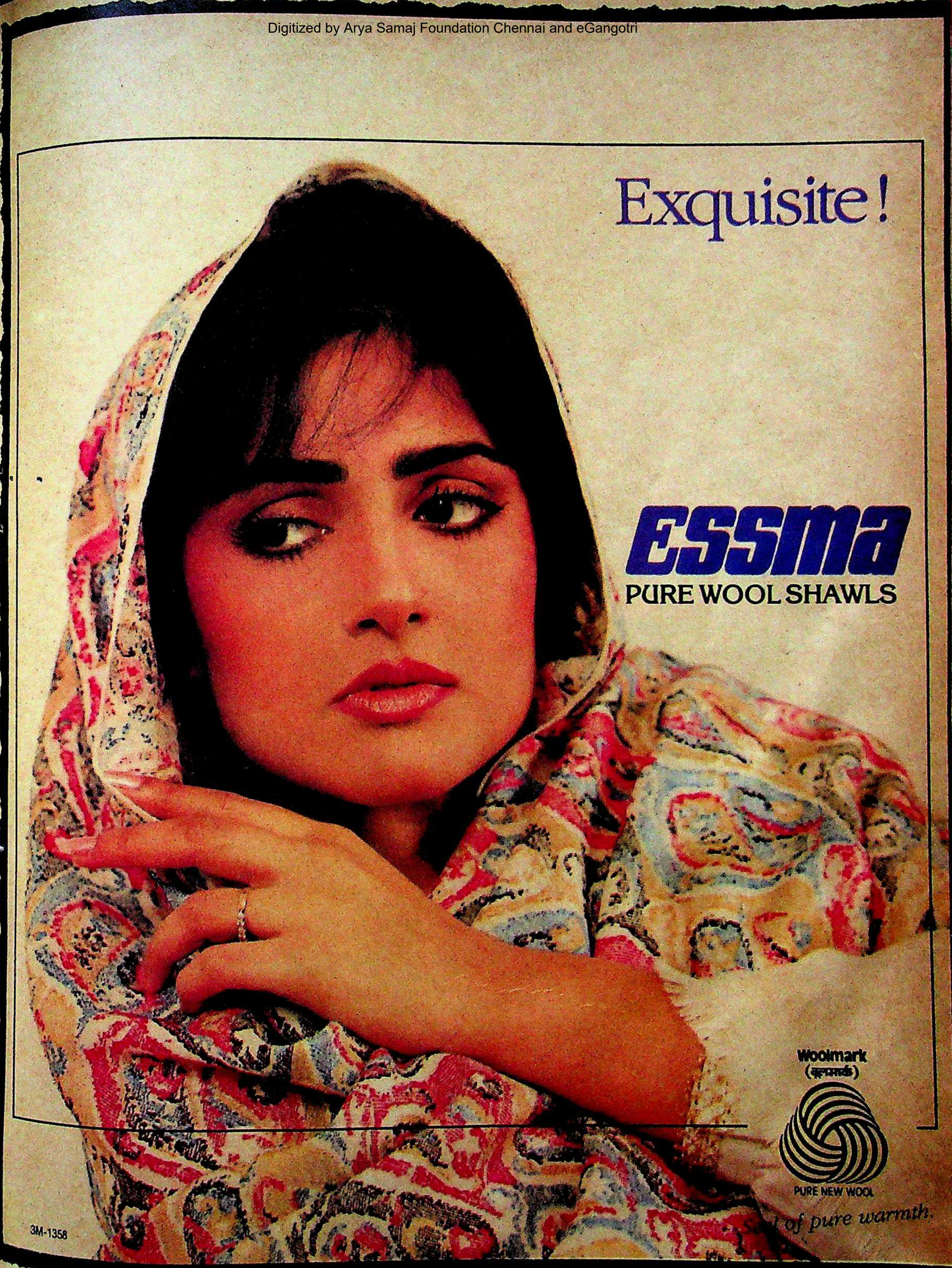

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुधियाना

मेहनत से पलटी किस्मत

लुधियाना किसी समय बेहद पिछड़ा हुआ शहर था. लेकिन उद्यमों, उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाने की तत्परता और बढ़ते निर्यात बाजार ने इस शहर को भारत के अग्रणी औद्योगिक शहरों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया.

एम.एस. भोगल मशीन मरम्मत की छोटी-सी दुकान खोलने के लिए 50 साल पहले जबलपुर से लुधियाना आए थे. जल्द ही उन्हें एहसास हो गया कि इस धंधे में भविष्य नहीं, इसलिए उन्होंने साइकिल के पुर्जे बनाने की इकाई शुरू की. आज भोगल साइकिल लिमिटेड देश की साइकिल पुर्जे बनाने वाली बड़ी कंपनियों में से एक है. पिछले साल इसने 12 करोड़ रु. का कारोबार किया.

गुरचरण सिंह ने लुधियाना की हीरो साइकिल फैक्टरी में बतौर फोरमैन 15 बरस से भी ज्यादा अरसे तक काम किया. वे वहां साइकिल के पुर्जों की गुणवत्ता की जांच करते और अपने साथी श्रमिकों को ज्यादा उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करते. इस एकरसता से उकताकर एक दिन उन्होंने नौकरी छोड़ दी और साइकिल के हैंड लैग (हैंडिल की मूठ) बनाने की इकाई खोल ली. अब वे अपना उत्पाद अनेक साइकिल निर्माताओं को बेचते हैं. इनमें उनके पूर्व मालिक भी हैं. उनकी सालाना बिक्री है—40 लाख रु.

ये फकीर से अमीर बनने की कहानियां नहीं हैं. ये तो सिर्फ उदाहरण हैं उस सफलता के जो आज लुधियाना के चरण पखार रही है. भोगल और गुरचरण जैसे नए-नए उद्यमी यहां लगातार पनप रहे हैं. जहां कहीं जगह मिलती है या नहीं भी मिलती, वहां वे अपने शेड डाल रहे हैं, फैक्टरियां खड़ी कर रहे हैं. स्थानीय तकनीकी विशेषज्ञता, आज्ञाकारी मजदूर, सस्ती दर पर बिजली की उपलब्धता और बढ़ते निर्यात बाजार ने मिलकर किसी वक्त के इस उनींदे शहर को देश के अग्रणी औद्योगिक शहर में तब्दील कर दिया है. इसे उद्योगपतियों का विश्वविद्यालय कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी.

सौ फीसदी निर्यातोन्मुख इकाई, 2.2 करोड़ रु. की साडम इंडस्ट्रीज के प्रबंध निदेशक सतीश ढांडा कहते हैं, "यदि मैं कहीं और जाता तो असफल हो जाता. किसी और शहर के मुकाबले यहां उत्पादन लागत 20 फीसदी सस्ती है. इस छोटे से शहर में नट-बोल्ट निर्माता से लेकर कोटिंग इकाइयां तक

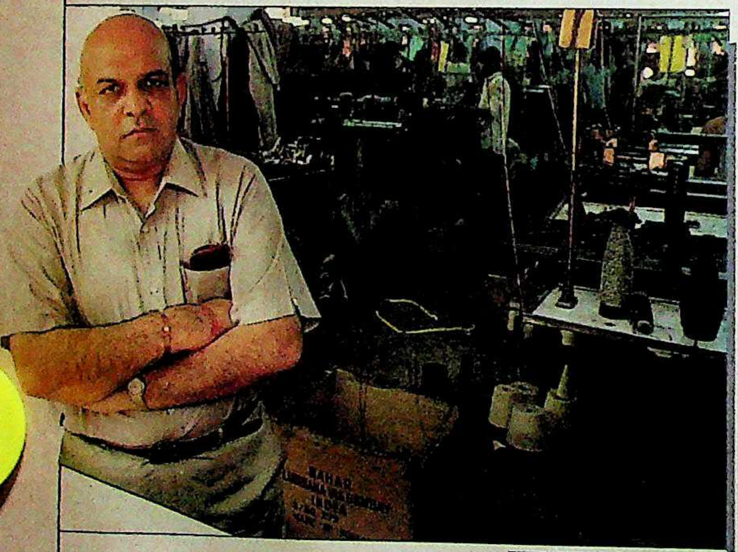

ओसवाल का कहना है कि उद्यमशीलता लुधियानावासियों के रग-रग में है. हर आदमी दूसरों का काम करने के बजाय खुद उद्यमी बनना चाहता है

■ जे.एल. ओसवाल, प्रबंध निदेशक, ओसवाल वूलन मिल्सः लुधियाना से प्रेम

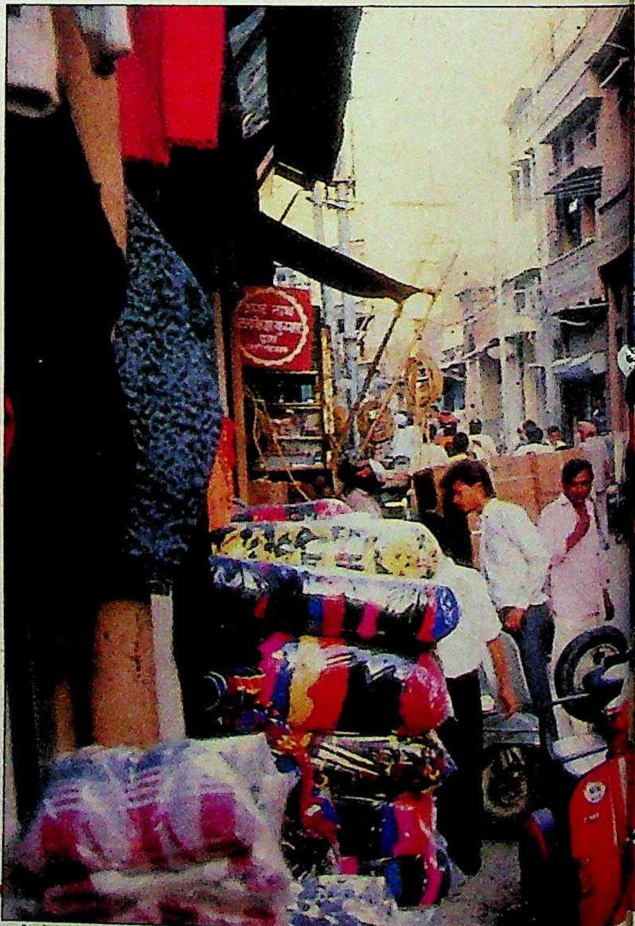

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौजूद हैं." ढांडा की कंपनी ब्रिटिश साइकिल निर्माता मडी फैक्स सरीखी संसार भर की कंपनियों को साइकिल पुर्जे निर्यात करती है.

शहर के बड़े उद्योगपतियों पर एक नजर डालें: हीरो साइकिल वाले मुंजाल (सालाना कारोबार: 208 करोड़ रु.), अभय ओसवाल समूह (कारोबार: 600 करोड़ रु. से ज्यादा) अरिहंत समूह (कारोबार: 75 करोड़ रु.) और मेट्रो टायर (100 करोड़ रु.). यहां तक कि थापर ने भी बड़े उद्योगपतियों की श्रेणी में पहुंचने की अपनी औद्योगिक यात्रा लुधियाना से ही शुरू की थी.

चार्ट: बी.के. शर्मा

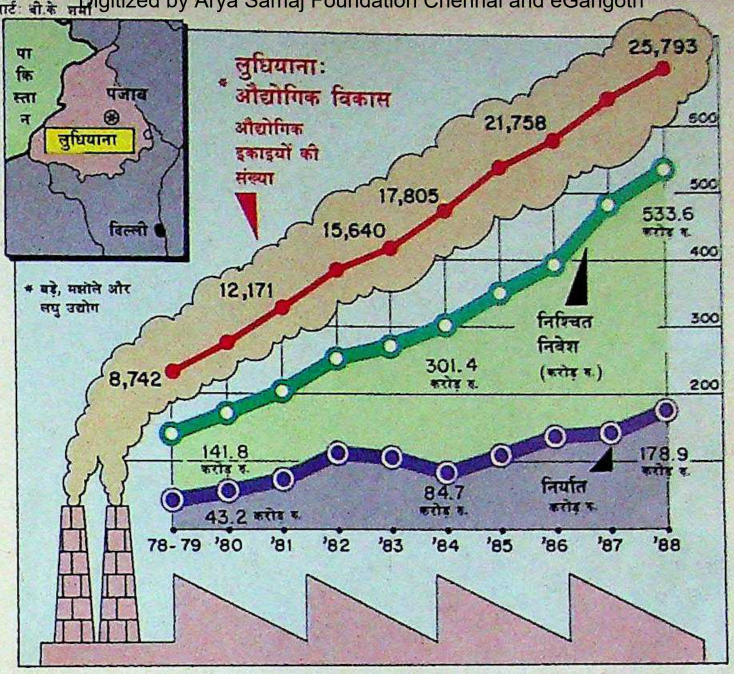

आंकड़े लुधियाना की सफलता की कहानी के गवाह हैं. दस साल पहले शहर में 400 करोड़ रु. कारोबार वाली 8,700 बड़ी, मझोली और छोटी इकाइयां थीं. आज ऊन, होजियरी, साइकिल पुर्जों, सूती धागे, सिलाई मशीनों, वाहनों के पुर्जों और इस्पात की 47,00 इकाइयां हैं. इनका कुल सालाना कारोबार है: 4,000 करोड़ रु. जो राज्य के औद्योगिक उत्पादन का 60 फीसदी है. इसके एक बड़े हिस्से का निर्यात किया जाता है.

इतना ही नहीं, यह शहर अपने कुछेक उत्पादों के क्षेत्र में भी अग्रणी है. भारत की 95 फीसदी होजियरी, 85 फीसदी सिलाई मशीनें 60 फीसदी साइकिलें तथा उनके पुर्जे इसी शहर में तैयार होते हैं.

दूसरे आंकड़े लुधियाना की औद्योगिक छलांग को ज्यादा साफ तौर से रेखांकित करते हैं. पिछले छह महीनों में लुधियाना की 10 से ज्यादा कंपनियों ने शेयरों के सार्वजनिक निर्गम किए. इनकी कुल कीमत थी: 27,00 करोड़ रु.. लुधियाना शेयर बाजार का कारोबार 200 करोड़ रु. पहुंच गया जिससे यह देश का पांचवां सबसे बड़ा शेयर बाजार बन गया जबकि 1983 में स्थापित किए जाते वक्त यह 2 करोड़ रु. था. इसी अवधि के दौरान शेयर पंजीयकों की संख्या 15 से बढ़कर 158 तक पहुंच गई.

किसी भी मापदंड से देखें तो यह विलक्षण आर्थिक चमत्कार है. 210 करोड़ रु. कारोबार वाली ओसवाल वूलन मिल्स लिमि. के

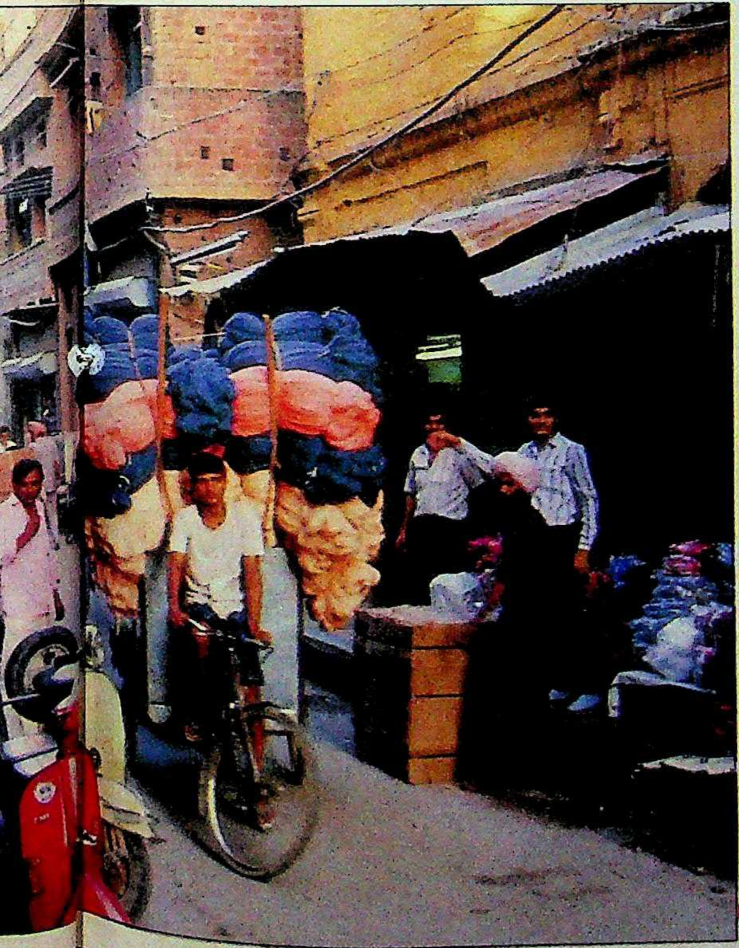

■ लुधियाना का होजियरी बाजार; और एम.एस. भोगल: मेहनत रंग लाई

भोगल ने एक छोटी-सी दुकान से शुरुआत की थी. लेकिन आज वे देश के साइकिल कल-पुर्जों के बड़े निर्माताओं में गिने जाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Guruku... Kangri Co...tion, Harid...

Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

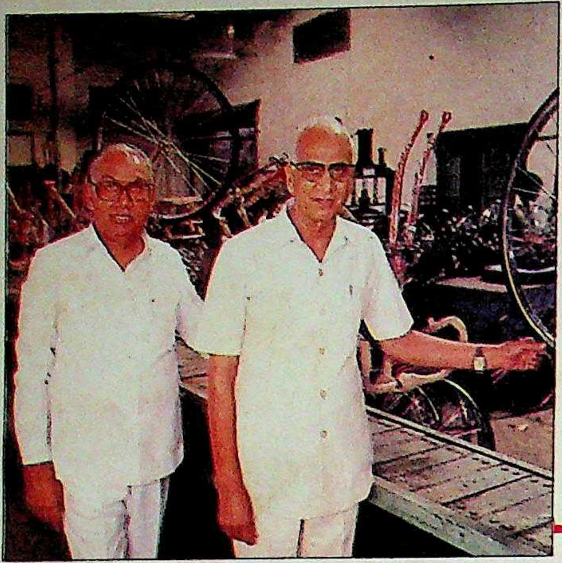

■ बी.एम. मुंजाल, सत्यानंद मुंजाल; (ऊपर) गुरचरण सिंह और उनके बेटे

गुरचरण सिंह अपने पूर्व नियोक्ता हीरो साइकिल्स को कल-पुर्जे बेचते हैं.

प्रबंध निदेशक जवाहर लाल ओसवाल कहते हैं, "यह औद्योगिक रूप से बेतहाशा बढ़ता शहर है जहां किसी और का काम करने के बजाय हर व्यक्ति का लक्ष्य है उद्यमी बनना. उद्यमशीलता यहां हरेक के खून में है."

यह कोई अतिशयोक्ति नहीं. शहर विभिन्न उत्पाद बनाने वाली सैकड़ों लघु इकाइयों से अटा पड़ा है. कल-पुर्जे बनाने वाली कई इकाइयां बड़े उद्योगों की सहायक इकाइयां हैं. 160 करोड़ रु. कारोबार वाली हीरो साइकिल के अध्यक्ष मोहन मुंजाल कहते हैं, "हमारी नीति सदा से सहायक इकाइयों को प्रोत्साहित करने की रही है. इससे हमें मदद मिलती है क्योंकि हमें कल-पुर्जों के उत्पादन में निवेश नहीं करना पड़ता." हीरो साइकिल 100 से ज्यादा सहायक इकाइयों को आधार प्रदान करती है जिनका कुल कारोबार 40 करोड़ रु. है.

इसमें से एक है 75 करोड़ रु. कारोबार वाली अनिल सुरपाल की सुरपाल साइकिल्स लिमि. जो सिर्फ हीरो साइकिल्स के लिए हैंडल तैयार करती है. सुरपाल कहते हैं, "मुंजाल परिवार ने हमें जमीन और कर्ज हासिल करने में मदद की. हम अब हीरो साइकिल्स की गाजियाबाद फैक्टरी की जरूरतें पूरी करने के लिए वहां दूसरी इकाई स्थापित करने की योजना बना रहे हैं."

दूसरे बड़े निर्माताओं ने भी सहायक इकाइयों की मदद की और उन्हें इसका लाभ मिला. वर्धमान मिल्स अपनी बुनाई मशीन की तकलियों के लिए दक्षिण भारतीय निर्माताओं से पेपर ट्यूब खरीदा करती थी. तब बिजली विभाग के एक कर्मचारी ने उससे पेशकश की कि वह ट्यूब बना सकता है. उसने इस तरह की इकाई की स्थापना के लिए वर्धमान से मदद मांगी. उन्होंने मदद की. इकाई अच्छी तरह चल निकली और प्रोत्साहन से इसे सफलता भी हासिल हुई. ऐसी ही तीन और इकाइयां लगाई गईं और वे चल रही हैं.

शहर का ज्यादातर कच्चा माल—ऊन, स्टील, रसायन, राज्य के बाहर से आता है. आधे तैयार उत्पाद और भी ज्यादा दूर से आते हैं. सिलाई मशीन का लकड़ी का ढांचा बटाला से, वाहन के अर्धनिर्मित पुर्जे फगवाड़ा से और कच्चा धागा अमृतसर तथा जालंधर सरीखे स्थानों से आता है.

पंजाब में राजनैतिक अस्थिरता का लुधियाना में मुश्किल से ही असर दिखता है. भारत टेलीकॉम लिमि. के प्रबंध निदेशक राकेश बी. मित्तल कहते हैं, "इसके विपरीत 1984 के दंगों के बाद देश के दूसरे हिस्सों के सिखों ने यहां इकाइयां स्थापित कीं ताकि अपने राज्य में उनका आधार बन सके."

लुधियाना के उद्यमियों को दूसरों के मुकाबले ज्यादा फायदे मिलते हैं. सबसे मुख्य है—भाखड़ा नंगल विद्युत संयंत्र से आसानी से उपलब्ध बिजली. चूंकि यह जल विद्युत है इसलिए पड़ोसी राज्य हरियाणा की तुलना में 30 फीसदी सस्ती है. एक और अहम तत्व है. बिहार और उत्तर प्रदेश से आने वाले प्रवासी मजदूर जो कुल श्रमिक संख्या का 60 फीसदी होते हैं. ओसवाल कहते हैं, "हमारे यहां हड़ताल जैसी कोई चीज नहीं. हमारी फैक्टरी के 80 फीसदी मजदूरों को प्रति वस्तु की दर के आधार पर भुगतान होता है.

प्रमोद कुमार उत्तर प्रदेश से 15 बरस पहले लुधियाना आए थे. रोजाना 13 घंटे होजियरी फैक्टरी में मजदूरी करके उन्होंने छह फ्लैट-बेड होजियरी मशीनें खरीदने लायक पैसा बचा लिया. इनमें से पांच मशीनें उन्होंने 500 रु. महीने पर दूसरे लोगों को किराए पर दे दी. साथ ही फैक्टरी में काम करना भी जारी रखा. वहां वे अपनी ही मशीन इस्तेमाल करते हैं इसलिए उन्हें 25 फीसदी ज्यादा मजदूरी मिलती है.

शहर के उद्यमियों ने उपलब्ध सुविधाओं से पर्याप्त लाभ उठाया है. और वे बहुत कम लाभ लेकर धंधा चलाते हैं. मिसाल के तौर पर हीरो साइकिल की कीमत प्रतियोगियों से 20 फीसदी कम है. शहर के सबसे बड़े निर्माताओं में से एक—7 करोड़ रु. कारोबार वाली लक्ष्मी सिलाई मशीन कंपनी अपनी मशीन की कीमत दूसरों से 100 रु. कम रखती है. जाहिर है, खरीदारों की बाजार में भीड़ रहती है. लक्ष्मी सिलाई मशीस 60 फीसदी माल उषा और मेरिट सरीखी कंपनियों के लिए तैयार करती है.

लुधियाना का ज्यादातर विकास मुख्यतः पिछले दशक में हुआ. लेकिन शुरुआत आधी शताब्दी पहले हुई. लुधियाना उस वक्त एक छोटा शहर था यहां साइकिलों और मशीन मरम्मत करने की कुछ दुकानें थीं. सर्दियों के महीनों में कश्मीरी मुसलमान यहां आकर शॉलें और ऊनी सामान तैयार करते.

1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत ने सारा नक्शा ही बदल दिया. स्रोतों की हिफाजत के लिए ब्रिटिश सरकार ने साइकिल पुर्जों, ऊनी सामान और सिलाई मशीनों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया. नतीजतन इन वस्तुओं और पुर्जों की भारी कमी हो गई.

यही वक्त था जब लुधियाना ने पांव पसारे. हर जगह छोटी-छोटी फैक्टरियों के शेड डल गए और उनमें ऊनी सामान और आयातित पुर्जों की नकल तैयार होने लगी. मुंजाल कहते हैं, "लुधियाना विकल्प उपलब्ध कराने में सक्षम साबित हुआ. पंजाबियों की व्यावसायिक कुशाग्रता और रामगढ़िया सिखों की तकनीकी विशेषज्ञता ने सफलता में अहम भूमिका अदा की."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दो खरीदिए एक पाइए मुफ़्त

आपके लिए हॉकिन्स की ओर से.

दो हॉकिन्स प्रेशर कुकर खरीदिए — ५ लीटर के या उससे बड़े. शर्तों के मुताबिक अपना 'क्लेम फ़ॉर्म' भर कर डाक से भेजिए. और पाइए ३ लीटर का एक हॉकिन्स बिलकुल मुफ़्त, जो आपके घर पहुंचा दिया जाएगा.

एक परिवार को केवल एक ही कुकर मुफ़्त मिलेगा. नियम और शर्तों की विस्तृत जानकारी के लिए पूछें. केवल इस योजना में भाग लेनेवाले डीलरों के यहां तथा सभी सी.एस.डी कैंटीनों में उपलब्ध. केवल १० नवंबर तक. जल्दी करें.

और कुकर क्यों ?

आपके पास अपनी रसोई की हर ज़रूरत के मुताबिक सही साइज़ के हॉकिन्स प्रेशर कुकर हों तो आपको समय और पैसे की और भी अधिक बचत होगी. मध्यम साइज़ का कुकर आपकी दैनिक ज़रूरतों के लिए सबसे अच्छा है. बड़े साइज़ के कुकर से त्योहारों और दावतों के वक्त बड़ी सुविधा होती है. सिर्फ़ एक या दो लोगों का खाना पकाने में छोटे कुकर से बहुत बचत होती है.

और, हॉकिन्स एक ऐसा उपहार है जिसकी हर कोई बड़ी तारीफ़ करता है.

सबसे सुरक्षित, सबसे जल्द, स्वादिष्ट खाना पकाए.

लाजवाब हॉकिन्स 'डिज़ाइन' और 'क्वॉलिटी'. ९८ व्यंजन विधियोंवाली हॉकिन्स पाक-पुस्तिका १३ भाषाओं में. पूर्व, दक्षिण, पश्चिम या उत्तर भारत की पाक विधियां. आपकी सेवा के लिए चुस्त, विनम्र, कुशल कर्मचारियोंवाले ३११ अधिकृत केंद्र.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

१९८९ कॉपीराइट हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा आरक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना में भाग लेनेवाले हॉकिन्स विक्रेता

दिल्ली

□ नई दिल्ली: भोगल जैन बर्तन भंडार, ३३ समन बाज़ार ● चांदनी चौक बाबुल, १९००, बैंक ऑफ इंडिया के सामने ● बख्शी वेयर हाउस, शॉप नं. १८५१. ● भगवानदास जगन्नाथ, ६३३, कूचा नटवां के सामने. ● बुध सिंह एंड संस १८५४, चांदनी चौक ● आई.के. सेल्स, ४७८०, बल्लीमारान, ● लाईट होम, १८०९ चांदनी चौक ● कनाट प्लेस जानकी दास एंड कं., २३/ एफ, कनाट प्लेस ● सोहन लाल मतवाल. ● मोहनसिंह प्लेस, दुकान नं. ६०-६१ ● सुपर बाजार, मेन ब्रांच ● फतेहपुरी अमरसिंह एंड संस, दुकान नं. २०४ ● लाड़ली प्रसाद बन्सीधर, २५६, कूचा काशीराम के बाहर ● आर.डी. स्टोर्स, दुकान नं. ६५०४. ● रघुबर दयाल एंड संस, दुकान नं. ६५०४ ● राम किशोर इलेक्ट्रिक्स, दुकान नं. २३४ ● गांधीनगर भूपिंदर सिंह एंड संस, १० पुराना पोस्ट ऑफिस बिल्डिंग, मेन बाजार ● देसराज राम प्रकाश, ५१३/२६ मेन बाजार ● झंड्रामल किशनलाल, ४१३/१, मेन बाजार, ● ग्रेटर कैलाश महेंद्र डिपार्टमेन्टल स्टोर, एम-४९/ए ● हौज़ खास जैन ब्रदर्स, ३६/२, जैन बर्तन सेंटर वाले ● आई.एन.ए. सुपर बाजार, मेन मार्केट ● कालकाजी दास इलेक्ट्रानिक्स, एच ११, मेन रोड ● कालका स्टील सेंटर, एम-६४, मेन रोड ● कमलानगर क्रॉकरी एम्पोरियम, ११ एफ कमला नगर ● करोल बाग गिफ्ट सेंटर, ५/३८, अजमल खाँ रोड. ● लरोधा बर्तन स्टोर्स, २५६७, अजमल खाँ रोड ● विशाल बर्तन भंडार, २५६८, अजमल खाँ रोड ● कोटला मुबारकपुर भगवान दास अगरवाल, ४८२/ आय, सुभाष मार्केट ● राजस्थान हार्डवेयर स्टोर, एच ४८२, सुभाष मार्केट ● कृष्णा नगर श्री कृष्ण बर्तन स्टोर, डी ४/१, लाल क्वार्टर्स ● लाजपत नगर बंदी बर्तन भंडार, ३० सेंट्रल मार्केट ● डावर यूटेंसिल्स, ३३, सेंट्रल मार्केट ● नेशनल बर्तन भंडार, ३४, सेंट्रल मार्केट ● सूरी बर्तन भंडार, ३२ सेंट्रल मार्केट ● मोती नगर भूटानी बर्तन स्टोर, मेन मार्केट ● मुनीरका लवली किचन सेंटर, बी.ए/१० डी.डी.ए मार्केट, सुपर बाजार के पास ● पहाड़गंज फैंसी बर्तन भंडार, दुकान नं ४५५३, मेन बाजार ● पटेल नगर सुपर बाजार, मेन मार्केट ● रजौरी गार्डन न्यू वेराइटी स्टोर्स, जे-८३, मेन बाजार ● रोहताश नगर शाहदरा अगरवाल बर्तन स्टोर, १/६९६६, बाबरपुर रोड ● सदर बाजार अमोलक चन्द आरहन्त कुमार जैन, ४२१७, पहाड़ी धीरज ● भारत क्रॉकरी हाउस, ६११७, मेन बाजार ● ब्रिज किशोर एंड संस, ४५२२, पहाड़ी धीरज ● दिल्ली साईकल कं. ६११९, मेन मार्केट ● ग्रोवर संस, ३१०, निरंजन एस्टेट प्रताप मार्केट ● हीरा लाल एंड संस, ६१२०, मेन बाजार ● मलिक लाईट हाउस, ९ क्रॉकरी मार्केट, ● नितिन स्टील्स, १०/४७६३, डिप्टी गंज ● पंजाब क्रॉकरी हाउस, २७७८, कुतुब रोड चौक ● राम रक्खा मल शांति प्रसाद जैन, ६०४, मेन बाजार ● विशाल वस्तु भंडार, ८९ क्रॉकरी मार्केट ● सरोजिनी नगर आहूजा बर्तन स्टोर, ६५, बाबू मार्केट ● पंजाब बर्तनस्टोर, ६४, बाबू मार्केट ● ब्रदर्स, १३, सरोजिनी नगर ● सब्जी मंडी क्रॉकरी एंड एलाईड स्टोर्स, १५३५, चंद्रावल रोड ● त्रिनगर जैन इलेक्ट्रानिक्स, १५३२, तोता राम बाजार ● बसंत विहार ओसाबा एम्पोरियम, ५६, बसंत लोक ● युसुफ सराय, जैन युटेंसिल्स, मन्दिर वाली गली ● लक्ष्मी हाउसहोल्ड एम्पोरियम ७४/२, ● मुन्नीलाल बिरान सरूप ७२/६. ● राम किशन एंड संस, ७२/७, ● श्री वर्धमान ट्रेडर्स, ६/२.

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

□ पोर्ट ब्लेयर: आर.जी.टी. रोड दयाल कं.

आंध्र प्रदेश

□ हैदराबाद: नामपल्ली स्टेशन रोड अंजली इलेक्ट्रनिक्स ● लक्ष्मी होम एप्लायंसेज़ रेवेन्यू बोर्ड के सामने ● सुल्तान बाज़ार बलिराम खियाराम, □ सिकंदराबाद: राष्ट्रपति रोड डेकन आयर्न वर्क्स, बाटा के सामने □ काकिनाडा: सूर्यारावपेट गुप्ता एम्पोरियम, मेन रोड

अरुणाचल प्रदेश

□ पासीघाट: पासीघाट एल/एस/पी को ऑप. सो. लि.

आसाम

□ बरपेटा रोड: न्यू वेरायटी स्टोर्स, मेन रोड □ विश्वनाथ चारिआली: उदय शंकर स्टोर्स, परभई रोड □ बंगाईगांव: मेन रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं., मेन रोड □ देरगांव: एन.सी.सी. रोड विजय स्टोर □ दुबरी: डी.डी. रोड जे.सी. राय एंड संस □ डिब्रुगढ़: एच.एस. रोड न्यू क्रॉकरी स्टोर ● न्यू मार्केट एस. दत्त एंड कं. □ गोलाघाट: मेन रोड कल्पना एंटरप्राइज़ □ गुवाहाटी: पांडुबाजार विडियो ब्लू, ● राजधानी ग्लास हाउस, दिसपुर ● फैन्सी बाज़ार सांगानेरिया एजेंसीज़, एस.आर.सी.बी. रोड ● सी.एम. स्टोर, लाखटोकिया □ मालिगांव नैशनल वेराइटी स्टोर्स, पी.एन.जी.बी. पथ ● सिटी सेंटर, एस.एस. रोड □ हाफलांग: मेन रोड हाफलांग होलसेल कंज्यूमर को-ऑप. सोसायटी लि., ● होजाय एंड संस □ जोरहाट: ए.टी. रोड छगनलाल शंकरलाल ● चौकबाज़ार एकेश चंद दास □ गढ़ाली न्यू इंडिया स्टोर्स ● रॉय एंड कं. □ ताश ट्रेडिंग एजेंसी □ करीमगंज: स्टेशन रोड स्टेशनरी स्टोर्स □ नगांव: डाकपट्टी न्यू वैरायटी स्टोर्स □ उत्तर लखीमपुर: एन.टी. रोड दत्त ब्रदर्स, □ शिवसागर: टेम्पल रोड मुंगेलाल बनवारीलाल □ सिलचर: जानीगंज मैत्री एंटरप्राइज़ □ तिनसुकिया: डेली बाज़ार नज़ीर अहमद एंड संस ● थाना रोड विरुला कॉर्पोरेशन

भूटान

□ फुंट शोलिंग: डोलमा एंटरप्राइज़ेस ● ताशी कमर्शियल कॉर्पोरेशन

बिहार

□ बेगूसराय: मेन रोड, देव ब्रदर्स ● आइ.ओ.सी. टाउनशिप, बरौनी रिफायनरी को-ऑपरेटिव लि. □ भागलपुर: डी.एन. सिंह रोड, डोकानिया एंड संस ● ग्लास कॉर्नर, लाइट सेंटर, मेला स्टोर्स, □ बोकारो स्टील सिटी: सिटी सेंटर, आकाशवाली, सेक्टर-४ ● बॉम्बे वेराइटी स्टोर्स, ई-१३ सेक्टर-४ □ चाईबासा: सदर बाज़ार के.सी. कॉल एंड ब्रदर्स, □ चास: बाई पास रोड, केमिज़ ● मेन रोड शीतल स्टोर्स, □ दलसिंह सराय: लक्ष्मी नारायण लाल विजय शंकर प्रसाद, □ दरभंगा: लालबाग लवली कॉर्नर □ नॉर्थ-बिहार, केडिया, सुभाष-चौक, □ डेहिऑन सोन: सिनेमा रोड स्वासिना, □ देवघर: स्याम गंज रोड, वैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ धनबाद: बैंकमोर बैंगल सेंटमिक □ गया: गोल पत्थर न्यू ट्रेडिंग कं. □ गिरडीह: चौक बाज़ार शंकर ट्रेडर्स, □ गुमला: मेन रोड, श्याम सुन्दर ग्लास स्टोर्स □ जमशेदपुर: बिष्टुपुर, रामसिंह ... ● साकची बाज़ार कुकर हाउस, २५, पुराना आलू लाइन ● ललितकुमार ● नील कमल स्टील सेंटर, २४, पुराना आलूलाइन ● स्टील सेल्स कॉर्पोरेशन, १६१, □ झरिया: धर्मशाला रोड, आर्टिफिशियल ट्रेडिंग कं. ● मेन रोड स्टील कॉर्नर, □ कटिहार: साह कटरा, स्वर्ण, □ किशन गंज: अस्पताल रोड, प्रकाश स्टोर्स □ मुंगेर: टाउन हाल रोड सुलतान ट्रेडर्स □ मुज़फ़्फ़रपुर: मोतीझील दास स्टोर एंड जोकरी, मोतीझील हाउस ● न्यू स्टेनलेस एम्पोरियम ● सरैयागंज भारत ग्लास कं., □ पटना: बोरिंग रोड एस.सी. इंटरप्राइज़ेस, नेपाली कोठी ● कदम कुआं पटना स्टील कॉर्नर ● डाकबंगला रोड, स्टील हाउस □ मुरादपुर स्टील कॉर्नर बंकीपुर पोस्ट ऑफिस के सामने ● न्यू मार्केट क्रॉकरीज़ ● सहनी इलेक्ट्रिकल्स □ रांची: चर्च रोड भोला मेटल स्टोर ● मेन रोड कैलाश क्रॉकरी हाउस ● प्रभात - श्री हनुमान साईकिल स्टोर्स ● दि राँची मोटर एंड साईकिल कं., बड़ा बाटा के बगल में ● उदयन ● अपर बाजार अशोक एंटरप्राईज़ेस, ● स्टेनलेस स्टील सेल्स कारपोरेशन □ सहरसा: दहलान - चौक दहलान ग्लास हाउस ● डी.बी. रोड, अपोलो इलेक्ट्रिक हाउस □ समस्तीपुर: मगरदही रोड राजा स्टील, □ सासाराम: चौखंडी रोड न्यू जनता ग्लास स्टोर्स □ सिन्दरी: सहरपुरा उप्पल जनरल स्टोर, १५, टिन शेड, □ सिवान: दरबार सिनेमा कम्पाउंड सरन इलेक्ट्रिक वर्कस □ लहरियासराय: बाकरगंज दयाल क्रॉकरी हाउस ● कमर्शियल चौक, स्टील हाउस.

चण्डीगढ़

□ चण्डीगढ़: सेक्टर १५डी, इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं ४५ ● सेक्टर १७ई जगतसिंह एंड संस, एस.सी. एफ ३२ ● सेक्टर १८सी धर्मचंद अग्रवाल, एस.सी.एफ-१७ ● सेक्टर १९सी गुप्ता क्रॉकरी हाऊस, एस.सी.एफ ३९, ● जैन ग्लास हाउस, एस.सी.एफ १४ ● सेक्टर २६ अग्रवाल डिस्ट्रिब्युटर्स, शो रूम नं. ३० ● सेक्टर ३५-सी, न्यू इंडियन क्रॉकरी हाउस, एस.सी.ओ ८९.

गोवा

□ मापुसा: म्युनिसिपल मार्केट इस्माइल जुसब विरानी, दुकान नं.१९. ● कैनरा बैंक के पास लक्ष्मीकांत एंड कं., खालप बिल्डिंग ● मयुर एजन्सीज, १७, रामचंद्र बिल्डिंग, □ मडगाँव: न्यू मार्केट दिनानाथ डी सडेकर एंड संस, १०, पी.ओ. बॉक्स नं ३३१, न्यू मार्केट ● दि बॉम्बे मेटल मार्ट, सिनेलता के सामने ● स्टेशन रोड टी.ए. हजारे एंड संस, न्यू मार्केट □ पणजी: आजाद मैदान के सामने एस.टी. पोखले एंड कं. ● डॉ. पिसुरलेकर रोड एम.एस.बी. काकुलो, पी.ओ. बॉक्स ६३ □ पोंडा: बेलगाम रोड शांता इलेक्ट्रिक स्टोर्स, गावणेकर बिल्डिंग.

गुजरात

□ अहमदाबाद: मेघाणीनगर अजंता स्टील सेंटर, मीना बाज़ार ● तीन दरवाज़ा, अकबर अली कादर भाई, १८२२ ● अब्दुल कादर मोहम्मद हुसैन, १८१२, ● अकबरअली एंड संस. १८२२/१, ● बॉम्बे नॉवेल्टी स्टोर्स, १८३९/१ □ राजकोट: लाखाजीराज रोड अप्सरा एजेंसीज़, सांगणवा चौक □ बड़ौदा: जुबिली बाग हैपी होम, शालीमार चेंबर्स, सरदार भवन के सामने.

हरियाणा

□ अम्बाला शहर: जैनबाजार जनता क्रॉकरी एंड जनरल स्टोर ● कोतवाली बाजार फैन्सी बर्तन स्टोर, □ बहादुरगढ़: रेलवे रोड सुरेश चंद संजय कुमार, □ फरीदाबाद: मार्केट नं.१ कृष्ण लाल संजीव कुमार, दुकान नं ११६, □ गुड़गाँव: सदर बाजार क्लासिक किचन वेयर, □ जगाधरी: चौक बाजार, सुरुचि सेल्स ● रेलवे रोड ओ.पी. मेटल इंडस्ट्रीज, □ कालका: गांधी चौक बेनी प्रसाद प्रदुमान कुमार, □ करनाल: जी.टी. रोड दिवान चंद करमवीर, □ पानीपत: हलवाई हट्टा बाजार, जिया लाल जैन दास ● मेन बाजार मोहर सिंह धारी मल, □ रेवाड़ी: मोती चौक हरसहायमल सुखदेव सहाय, □ सरसा: रोड़ी बाजार, अग्रवाल बर्तन भंडार, ● गाबा बर्तन भंडार, □ थानेशर: कृष्ण गेट, कुमार बर्तन स्टोर.

हिमाचल प्रदेश

□ कांगड़ा: मेन बाजार गुप्ता सुईंग मशीन. □ कुल्लू: अखाड़ा बाजार, विगसन जनरल स्टोर्स. □ मनाली: मेन बाजार थॉमस स्टोर्स. □ रामपुर बुशहर: मेन बाजार मेहरचंद मूलराज. □ शिमला: लोअर बाजार, संत लाल इंदर सैन अग्रवाल, ३१, ● दि माल, सेंट्रल ट्रेडर्स, २.

जम्मू-कश्मीर

□ अनंतनाग: लाल चौक अब्दुल रशीद कोचक एंड कं. ● न्यू मार्केट, कश्मीर बर्तन स्टोर ● सुपर बाज़ार इस्लामाबाद डिस्ट्रिक्ट कन्ज़्युमर को-ऑपरेटिव स्टोर. □ जम्मू: कनक मण्डी तारा चंद कपूर चंद जैन ● न्यू मार्केट लाधूमल देस राज जैन, रघुनाथ बाज़ार ● रघुनाथ बाजार प्रिंस वेज़, □ सोपोर: डी.पी. धर मेमोरियल अस्पताल के पास, मलिक हाउस, □ श्रीनगर: हरि सिंह हाई स्ट्रीट, कस्तूरी लाल जैन एंड संस, ● प्यारा लाल कुल भूषण लाल जैन ● लाला रुख होटल बिल्डिंग अपना बाजार (जे.के. कॉनफेड) लाल चौक ● माईसुमाँ बाजार, मिराज एंड कं. ● पिलेडियम स्ट्रीट कॉसमॉस हाउस, लाल चौक ● टंकीपुरा रोड आहूजा एजेंसीज़, डी.सी. ऑफिस के सामने.

कर्नाटक

□ बेंगलोर: एवेन्यू रोड बागरेचा एंड ब्रदर्स, ३१४, बागरेचा बिल्डिंग ● चोप हॉल, १९५, एवेन्यू रोड ● ब्रिगेड रोड पॉटस एंड पैन्स, ११, कर्ज़न कॉम्प्लेक्स ● चिकपेट राजाट्रेडिंग कं., बालेपेट स्क्वेयर के पास ● रिचईस स्क्वेयर ऐडम्स एंड कं., १९ रिचईस स्क्वेयर ● संपिगे रोड आनंद डिपार्टमेंट्स, ५३२, संपिगे रोड ● सुधामानगर मास्टर मार्केटिंग एजेंसी, १३, अन्नीपुरम मेन रोड □ बीजापुर: आज़ाद रोड शा फुलचंद केसरीमल, कैनरा बैंक के सामने □ चिकमगलूर: विजयपुरा एक्स्टेंशन मल्टी एजेंसीज़, रत्नागिरी रोड □ हुबली: ब्रॉडवे पात्र भंडार, ५३, ब्रॉडवे □ कारकला: मेन रोड सॉवेरेन एंटरप्राइज़ □ मेंगलोर: बलमट्टा सोज़ा इलेक्ट्रानिक्स, कुमुदावती बिल्डिंग ● के.एस. राव रोड सुपर सप्लाईज, गोकुल मार्केट ● मार्केट रोड भारत स्टील एंड गिफ्ट सेंटर □ शिमोगा: नेहरू रोड साधना ट्रेडिंग कं.

केरल

□ अलवाय: कैथलिक सेंटर वायरलेस मेट्रो □ कालीकट: मुतालकुलम ब्राइट मेटल्स □ चालकडी: मेन रोड सिल्वी वेसल्स, पेल्लिचेरी बिल्डिंग □ एर्नाकुलम: ब्रॉडवे एंथनी फ्रांसिस एंड सन ● लाइफस्टायल्स, के.टी.डी.सी. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स ● महमूद क्रॉकरीज़, वक्फबोर्ड बिल्डिंग ● एम.जी. रोड इलेक्ट्रिकल सेल्स कॉर्पोरेशन, कॉलेज ग्राउंड के सामने □ माही: पारकल कर्मा एंटरप्राइज़ेस, मेन रोड □ पालघाट: जी.बी. रोड स्टील पैलेस □ पेरुम्बावूर: पी.पी. रोड मूकाडा एजेंसीज़, न्यू प्राइवेट बस स्टैण्ड के पास □ तलश्शेरी: लोगन्स रोड श्रीनिवास इलेक्ट्रानिक कं. □ त्रिचुर: पोस्ट ऑफिस रोड स्टीलालयम, ● राउंड साउथ केरला लेदर कं.

मध्य प्रदेश

□ अंबिकापुर: देवी गंजरोड फेयर डील □ बालाघाट: मेन रोड मेटल हाउस □ बैतूल: गंज बाल मुकुंद गुप्ता ● कोठी बाज़ार आहूजाट्रेडर्स □ भिलाई: कैम्प २ सर्क्युलर मार्केट, गार्गी जनरल स्टोर्स, दुकान नं बी १४,१५,१६ ● सिविक सेंटर सुरेश ब्रदर्स, २१ इंदिरा प्लेस ● सेक्टर ६ सुगना सेल्स, १८६ ए, ए मार्केट □ भिण्ड: सदर बाजार शाह मेवा राम नरेन्द्र कुमार □ भोपाल: टी.टी. नगर अनिमेष ट्रेडर्स, १९, न्यू मार्केट ● रोशन पुरा नाका दर्वेश बर्तन भंडार □ बिलासपुर: सदर बाजार आकाश स्टोर्स, कपोना शू स्टोर्स के पास ● विजय स्टोर्स □ छतरपुर: चौक बाजार हज़ारीलाल नारायण दास ● हटवारा अमित इलेक्ट्रानिक्स ● कोतवाली रोड चॉईस सेंटर ● महल रोड अग्रसेन एम्पोरियम □ छिंदवाड़ा: बुधवारी बाज़ार गृह शोभा स्टील एम्पोरियम ● स्टेशन रोड मयूर, चार फाटक □ डबरा: कमला मार्केट आधुनिक किचन वेयर □ दमोह: सिनेमा रोड अजंता ट्रेडर्स □ धार: ९३, जवाहर मार्ग गोयल ट्रेडर्स, □ गाडरवारा: झंडा चौक मंगल कलश □ ग्वालियर: दौलत गंज राजू क्रॉकरी हाउस, दाऊद मार्केट ● सराफ़ा बाजार होमराज हजारी लाल ● गोयल स्टील एम्पोरियम ● नरसिंह दास रेनवाल ● टोपी बाज़ार अशोक क्रॉकरी हाउस ● पहूराम पेसूराम लोकवानी □ इन्दौर: जवाहरमार्ग कुकर हाउस, दुकान नं. ३३० ● राम लक्ष्मण बाजार, एन.आर. इलेक्ट्रोनिक्स, दुकान नं २३ □ जबलपुर: आशीर्वाद मार्केट आशीर्वाद स्टील एम्पोरियम, दुकान नं. १८ ● स्टील एम्पोरिम, दुकान नं. ३६ ● सिविक सैंटर इलैक्ट्रिकल्स एंड इलेक्ट्रानिकस, दुकान नं. ७२ ● जवाहर गंज नैशनल स्टोर्स, भार्गव चौराहा ● करमचंद चौक स्टील पैलेस ● नया बाजार पोके ट्रेडर्स, दुकान नं ३० □ जगदलपुर: गांधी चौक ऊनवाला □ कटनी: रघुनाथगंज श्यामलाल मोहनलाल ● शालीमार मार्केट भारत स्टील्स ● खण्डवा: बोम्बे बाजार खण्डवा प्लास्टिक सेंटर दुकाननं. २६२ □ खरगोन: अस्पताल रोड कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, दुकान नं १० □ कोरबा: मेनरोड अग्रवाल ट्रेडर्स ● गणेश स्टील एम्पोरियम ● राम गोपाल राधेश्याम अग्रवाल □ मन्दसौर: कालिदास मार्ग जनता ट्रेडर्स, □ मनेन्द्र गढ़: पुरानी सब्जी मंडी सुप्रीम इलैक्ट्रिकल्स, नगरपालिका बिल्डिंग □ मुरैना: सदर बाजार दुर्गा बुक स्टोर्स □ नागदा: महात्मा गांधी रोड रामचंद प्रेम कुमार कसेरा, दुकान नं १९. □ नरसिंहपुर: कन्देली ज्योति बर्तन भंडार, मेनरोड □ नीमच: टैगोर मार्ग अगरवाल स्टोर्स ● रवदीप एजेंसीज़ □ रायपुर: मालवीय रोड सुगना सेल्स ● सदर बाजार खेम राज जसराज एंड ब्रदर्स. एम.एस. ट्रेडर्स ● श्री पात्र भंडार, होटल मधुबन के सामने ● स्टील एम्पोरियम □ राजनांद गाँव: आज़ाद चौक श्री बर्तन वाला ● जूनीहटडी छोटे साउंड सिस्टम्स □ रतलाम: डालूमोदी बाजार अग्रवाल इलैक्ट्रिकल्स, दुकान नं. २४ ● दो बत्ती रुपायन स्टोर्स ● माणक चौक जैन संस. □ रीवा: कला मंदिर रोड गुप्ता सेल्स कॉरपोरेशन ● प्रकाश चौक प्रकाश एजेंसीज़ □ सागर: कटरा बाजार जैना स्टील्स ● नैशनल स्टोर्स □ सतना: अशोक टॉकीज के सामने केशरी स्टील सेंटर ● पन्नीलाल चौक गिफ्टो स्टील सेंटर □ शिवनी: बुधवारी बाज़ार, सुनील मेटल स्टोर्स ● विशाल स्टील सेंटर □ शाजापुर: न्यू रोड ए.जी. तख्तवाला □ उज्जैन: फ्रीगंज लक्ष्मी स्टील सेंटर, २३/४ भोजमार्ग ● जवाहर मार्ग मनोज पात्र भंडार ● पटनी बाजार महालक्ष्मी पात्र भंडार, दुकान नं. १२५

महाराष्ट्र

□ अहमदनगर: शहाजी रोड आंभोरे अँण्ड कं. ● काशीनाथ त्रिंबक रासने, एम.जी. रोड ● सुरेख संगम, डिपार्टमेन्ट स्टोर्स, □ अकोला: एम.जी. रोड, अनुपम वेराइटी हाऊस □ अमरावती: जवाहर रोड, इसरानी स्टील एंड गिफ्ट सेंटर ● जवाहर गेट के अंदर, नानकानी एंड कं. □ औरंगाबाद: सुपारी हनुमान रोड कृष्णा कॉरपोरेशन, □ बम्बई: अंधेरी (प.), अपना बाज़ार, जे.पी. रोड, आज़ाद नगर ● हेमको स्टील सेंटर, २१२, एस.वी. रोड ● मेघराज उमेदमल एंड कं, म्युनिसिपल मार्केट के सामने ● श्री मुधुलक्ष्मी स्टील पैलेस, बी-१०६, लायम सेंटर ● बांदरा (प.), अनुपम एम्पोरियम, पाली मार्केट के सामने, शहजाहन, ३४ हिल रोड ● बोरीवली (प.), ओस्वाल स्टील सेंटर, १८ गोयल शॉपींग आरकेड ● प्रामाणीक सेंटर, रेल्वे स्टेशन के सामने ● चेम्बूर, अकबरअलीज, सायन - ट्राम्बे रोड ● मिलन एम्पोरियम, ५, लक्ष्मी मार्केट ● नटराज एम्पोरियम, ४ नटराज सिनेमा बिल्डिंग सिल्वर सेंटर, ३, लक्ष्मी मार्केट ● विजय स्टील, सेंटर स्टेशन रोड ● दादर (प.) सी.ऐम. मेहता एण्ड कं. डॉ. एम.सी. जावले मार्ग ● धीरज सेल्स कॉरपोरेशन, ३३, पाण्डेवाडी, बी.एस. रोड ● कमल स्टोर्स, कबूतरखाना के सामने, ● फोर्ट अपना बाज़ार, नोबल चेम्बर्स, घोगास्ट्रीट ● फाउंटन अकबरअलीज, वीर नरीमन रोड, ● ग्रांट रोड वेरायटी जनरल स्टोर्स, २९७, लैमिंग्टन रोड, ● जेकब सर्कल रमणलाल जयंतीलाल एंड कं., चर्च के सामने, साने गुरुजी रोड ● कंसारा चाल रतीलाल मोहनलाल, ४६, कालबादेवी रोड ● खार (प.) डी.एन. जैन एंड कं. स्टेशनरोड ● लोहार चाल एशियाटीक इलेक्ट्रिक ट्रेडींग कं, ४६-४८, जयमहल बिल्डिंग ● संघवीज़ इन्टरनैशनल, ६२, ● माहीम (प.) अरुणोदय स्टोर्स, सिटी लाईट सिनेमा के सामने ● भैरव भांडी भंडार, शोभा रिफ्रेशमेन्टस के पास ● मालाड (प.), महावीर स्टील सेंटर, नटराज मार्केट ● शिरीष ट्रेडर्स, स्टेशन रोड, ● मुलुंड (प.) अपना बाजार, जवाहरलाल नेहरू रोड ● नायगांव अपना बाज़ार, गोविंदजी केनी रोड ● पांजरापोल सोनिया एंटर प्राइज़ेस १७९/ए, कांडेरी बिल्डींग, सर्वोदयनगर के सामने ● सांताक्रुज़ (प.) अकबरअलीज, एस.वी. रोड ● महावीर स्टोर्स, स्टेशन रोड ● सायन (पू.) कानी एवरशायनींग एम्पोरियम, सायन अस्पताल के सामने ● श्री मुरुगन स्टील हाउस, सायन सर्कल के पास, ● ठाकुरद्वार अमर एंटरप्राईजेस, शॉपनं. ४, २३८-ए, डॉ. बी.जे मार्ग ● विलेपार्ले (पू.) मनसुख मेटल मार्ट, अगरवाल मार्केट ● मुस्मन एप्लाएन्सेज़, ३६, अगरवाल मार्केट, पंकज स्टील सेंटर, ३८ अगरवाल मार्केट, ● पार्ले नॉवेल्टीज, रेल्वे स्टेशन के सामने, ● विक्रोली (प.) मुकेश सेल्स एजेंसी, स्टेशन रोड, □ चिपलुण: मेन रोड, राजन स्टील भंडार, जि. रत्नागिरी □ धुलिया: श्री राममंदिर के सामने सिल्वर शॉप, १४४२, आग्रा रोड □ डोंबिवली: पाटकर बिल्डींग, पंकज स्टील एंड नोवेल्टी ● पराग स्टील एंड नोवेल्टी, केनरा बैंक के पास □ गोंदिया मेन रोड, अंजली स्टील सेंटर, □ इचलकरंजी व्यंकटराव हायस्कूल के पास, हेरंब ट्रेड ग्रुप, १०/१५२ □ जळगाँव: फुले मार्केट, वेरायटीज □ कल्याण: बाजार पेठ प्रभात भांडी भंडार, विष्णु मंदिर के सामने □ कराड मंडई के पास, राजलक्ष्मी एन्टरप्राइजेस, ३८६, रविवार पेठ □ कोल्हापुर: शिवाजी रोड, जी. आर. शाह □ मालेगाँव: कैंप रोड, एन. जोशी प्रा. लिमिटेड. एल.आई.सी. ऑफिस के सामने □ नागपुर: गोकुलपेठ, साठे एजन्सी, वेस्ट हायकोर्ट रोड ● जगन्नाथ बुधवारी, गितांजली स्टिल सेंटर, तांजेवार गल्ली ● सीताबर्डी, एम.एस. पांडे एंड संस, वेरायटी चौक के पास, □ नासिक शहर: भांडीबाज़ार, प्रकाश रामदास काळे, ८४८, ● शालीमार बिल्डींग, विजय ट्रेडिंग कं., शिवाजी रोड, ● नासिक रोड: मुक्तिधाम के सामने, मोहन मेटल मार्ट, छाया निवास, म. गांधी रोड □ नई बम्बई: वाशी, अपना बाज़ार, सेक्टर १७ □ उस्मानाबाद: मारवाडी गल्ली, बेदमुथा संस, म. महावीर पथ □ पंढरपुर: तालुका .प्लेस गंजेवार ट्रेडर्स, २८९४, पुष्पांजली पश्चिमद्वार □ पिंपरी: स्टेशन रोड, राजकुमार एंटरप्राइजेस, आर्य समाज के पास □ पुणे: कर्वे रोड, जैन मेटल्स, ३९/२४ बी, कर्वे रोड, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के सामने, ● नारायण पेठ, नीलम, ६८९, नारायण पेठ, लोखंडे तालीम के सामने, ● रामेश्वर चौक, बी.सी. मेहता एंड कं., मंडई ● रविवार पेठ, राजेंद्र एंड कं., ८९४ दारुवाला ब्रिज ● जैन मेटल कॉरपोरेशन, ६३५, बोहरी मस्जिद बिल्डिंग ● शास्त्री चौक नितीन मेटल वर्क्स, १६२६, न्यू शुक्रवार पेठ, ● तुलसी बाग तुलसी, ११८३, बुधवार पेठ, ● एन.एच. पंड्या एंड संस, १४७३, शुक्रवार पेठ, जिलब्या मारुती के पास, तुलसी बाग के सामने ● मेहता ब्रदर्स, द्वारा ममता स्टील, १४७१, शुक्रवार पेठ □ सांगली: हरभट रोड पगारे स्टील सेंटर, आरवाडे हायस्कूल के पास, ● मेन रोड श्री अमेय स्टील सेंटर, फलमरकर बिल्डींग ● मारुती रोड मांगले एंड संस ● मिरज तालुका पश्चिम भाग सहकार गृह वैभव भांडार ● सराफ बाजार पी.एम. शिंदे, सराफ कॉर्नर ● स्टेशन चौक देवकर स्टील सेंटर, स्टेशन रोड, □ सातारा: मोती चौक गुहराज स्टेनलेस स्टील सेंटर, सांगली बैंक के सामने ● सदाशिव पेठ लांजेकर वडके एंड कं. सब्जी मंडई के पास, □ सोलापूर: मांडे गल्ली शशिकांत जयकुमार मोहिरे, १९३, शुक्रवार पेठ, ● नवीपेठ गोल्डन इलेक्ट्रानिक्स, शास्त्री शॉपिंग सेंटर ● कट्टे ब्रदर्स स्टील हाउस, जनता शॉपिंग सेंटर ● लक्ष्मी स्टेनलेस स्टील, सेंटर, ४२-४३/ जनता शॉपिंग सेंटर, ● सोलापुर स्टेनलेस स्टील हाउस, ४, पारस एस्टेट ● स्टील सेंटर ८, जनता शॉपिंग सेंटर □ राहुरी: मेन रोड, रासने ब्रदर्स □ रत्नागिरी: एम.जी. रोड प्रकाश वस्तु भंडार, विठ्ठल मंदिर के पास □ ठाणे: नौपाडा, किचन शाइन, डॉ. आंबेडकर चौक ● महावीर

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स®
दो खरीदिए एक पाइए मुफ़्त

योजना में भाग लेनेवाले हॉकिन्स विक्रेता

(पिछले पृष्ठ से आगे)

मणिपुर

☐ इम्फाल: एम.जी. एवेन्यू मणिपुर बिजार स्टोर ● पावना बाज़ार पामा एंटरप्राइज़ ● थंगल बाज़ार रूपक एजेंसी

मेघालय

☐ शिलोंग: धानखेती बी.के. घई एंड क. बावरी मैंशन

मिज़ोरम

☐ ऐज़वाल: बड़ा बाज़ार बी.सी. डे एंड संस ● ईस्टर्न ट्रेडिंग एजेंसी ● लाल हुलुनी एंड सन्स, जायन स्टोर ● नेशनल बिज़नेस एंटरप्राइज़ ● मिज़ोफेड ☐ लुंगले: चांदमवारी जे.बी. प्रेस एंड स्टोर्स

उड़ीसा

☐ अनुगोल: मेडिकल रोड अगरवाल एंटरप्राइज़र्स, संजीवनी मार्केट ● सुनील इलेक्ट्रिक सप्लाय ☐ आस्का: बस स्टैंड अशोका एंटरप्राइज़ेस ☐ बालेश्वर: सिनेमा बाज़ार फेयरडील कॉर्पोरेशन ☐ बड़बिल: मेन रोड भवानी वेरायटीज़ ☐ बरगढ़: मेन रोड रूप शृंगार एजेंसीज़ ☐ बारिपदा: लाल बाज़ार न्यू इलेक्ट्रिकल एजेंसी ● सेवासंघ हॉल एम. जाइस ☐ बेरहामपुर: भापुर बाज़ार मिल्ला गोपालन एंड संस ● गिरी मार्केट एलाइड स्टोर्स, १३, गिरी मार्केट ● वन वे ट्रैफ़िक रोड जे.के. एंटरप्राइज़ेस ● मधु एंटरप्राइज़ेस ● मानो बाज़ार रामचंद्र एंड क. ☐ भवानीपटना: गांधी चौक अमित फैन्सी एम्पोरियम, भवानी पात्रा ● महेश्वरी जनरल स्टोर ☐ भुवनेश्वर: अशोक नगर टी. कृष्ण पात्र ● ईस्टर्न मार्केट बिल्डिंग वाणिज्य विकास ● लालचंद एंड संस ● राजमहल चौक गीता ● शहीद नगर सुरुचि ☐ बोलांगीर: बस स्टैंड नारायण दास आदुमल ● स्टील होम ● सिनेमा हॉल रोड सामुका स्टील सेंटर ● सूर्या होटेल कॉम्प्लेक्स बॉम्बे स्टील एम्पोरियम ☐ बुर्ला: मेन रोड बुर्ला इलेक्ट्रिकल्स ● पंजाब जनरल स्टोर्स ☐ चांदपुर: मेन रोड गौर जेना इलेक्ट्रिकल्स ☐ छत्रपुर: मेन रोड दुर्गा इलेक्ट्रिकल्स ☐ कटक: बक्र कबाटी रोड कोणार्क लाइट हाउस ● चौधरी बाज़ार जनता जनरल स्टोर ● बादामबाड़ी गायत्री स्टेनलेस स्टील ● कॉलेज स्क्वेयर लक्ष्मी प्रकाश एजेंसी ● महताब रोड इंडियन इंडस्ट्रीज़ ● राजा बगीचा डी. पात्र ● तिनकोनिया बगीचा गुप्ता सेल्स कॉर्पोरेशन ● शंकर जनरल स्टोर ● सुनीता ● उत्कल सेल्स कॉर्पोरेशन ☐ ढेंकानाल: कांचन बाज़ार ब्यूटी हाउस ☐ हिराकुद: न्यू मार्केट प्रधान जनरल स्टोर्स ☐ जाशीपूर: मेन रोड जनता एजेंसीज़ ☐ जटणी: रेलवे मार्केट पॉप्युलर स्टोर्स ☐ जयपुर: मेन रोड शांति स्टोर्स ● एम.जी. रोड विश्वनाथ स्टील सेंटर ☐ झारसुगुडा: मेन रोड झारसुगुडा मेटल स्टोर्स ☐ करंजिया: मेन रोड शंकर स्टोर्स ☐ किओन्झार: न्यू मार्केट आशा लेडीज़ कॉर्नर ● भवानी स्टोर्स ● प्रिया स्टोर्स ● श्री दुर्गा एजेंसीज़ ☐ कोरापुत: बस स्टैंड के पास विक्रम रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स ☐ नालको नगर: नालको टाउनशिप नालको एम्प्लाईज़ मल्टी पर्पज़ कन्ज्यूमर को-ऑ. स्टोर्स लि. ☐ पदमपुर: राज बोरा संबर राहास बिहारी स्टोर्स, मेन रोड ☐ पुरी: ग्रांड रोड टी. कृष्ण पात्र ☐ रायरंगपुर: मेन रोड फ्रेंड्स कॉर्नर ☐ राजगंगापुर: मेन रोड मॉडर्न वेरायटी सेंटर ● प्रदीप स्टोर्स ☐ राउरकेला: फ़र्टिलाइज़र

पंजाब

☐ अमृतसर: हाल बाजार हरबंस क्रॉकरी स्टोर ● रघुबीर सिंह कटारिया एंड सन्स ● कटड़ा बगियाँ मगन सिंह एंड संस ● कटड़ा जैमल सिंह पॉप्युलर ट्रेडिंग कं. ● प्रताप बाजार पुरी बैटरी स्टोर ☐ बटाला: जी.टी. रोड अग्रवाल एंटरप्राइज़ेस, पंजाब नेशनल बैंक के पास ☐ भटिण्डा: धोबी बाजार बॉम्बे स्टील एंड क्रॉकरी हाउस ● गांधी मार्केट कांचन क्रॉकरी हाउस ● सुभाष एंड कं. ☐ गुरदासपुर: हनुमान चौक केदारनाथ एंड संस ☐ होशियारपुर: जालन्धर रोड बंसल क्रॉकरी हाउस, घण्टाघर के पास ● कश्मीरी बाजार वैष्णोदास एंड संस, ☐ जगरांव: मेनबाज़ार कैलाश चन्द एंड संस ☐ जालंधर: वाल्मिकी गेट, भारत लाईट हाउस, सोमा पैलेस के पास ● बाजार शेखाँ खरबंदा शॉपिंग सेंटर ● रमेश चंदर मित्तर पाल ● चौक रैनक बाज़ार गिफ़्ट सेंटर ● जी.टी. रोड जे. ओम प्रकाश एंड संस, सिविल अस्पताल के सामने ● नया बाजार बॉम्बे स्टेनलैस स्टील (रजि.), लव-कुश चौक के पास ● रैनक बाज़ार बहल एंड संस ☐ कोटकपुरा: रेलवे रोड आहूजा गिफ़्ट हाउस ☐ लुधियाना: चौड़ा बाज़ार जैन सन्स ● कपूर क्रॉकरीज़ ● ऑफ़र क्रॉकरी हाउस ● साबुन बाज़ार गुप्ता गिफ़्ट हाउस ● जैन क्रॉकरी हाउस ☐ मोगा: बागगली क्रॉकरी पैलेस ● मेनबाज़ार नंद किशोर अग्रवाल एंड संस ☐ नसराला: जालंधर रोड कैलाश सेरेमिक ☐ नवाँ शहर: रेलवे रोड हरसिंह जसवंत सिंह आनंद, ☐ पटियाला: चौक आर्यसमाज, मलहोत्रा स्टोर्स, ☐ फगवाड़ा: लोहा मण्डी रोड, ए.के. ट्रेडर्स, द्वारा/तिलकराज दर्शन कुमार मट्टा ● चड्ढा मेटल स्टोर ☐ रोपड़: मेन बाज़ार बस्ती रामनरेन्द्र कुमार धवन ☐ समाना मण्डी: सदर बाज़ार मोहनलाल सुदर्शन कुमार.

राजस्थान

☐ अजमेर: केसर गंज गोयल ब्रदर्स, स्टेशन रोड ● नया बाजार जैन सुगनमल शंकरचन्द्र ☐ अलवर: होप सर्कस जनता बर्तन भंडार, दुकान नं.३९ ☐ बांसवाड़ा: आज़ाद चौक कसारा शंभुलाल माणकलालजी ● न्यू क्लॉथ मार्केट राजस्थान फर्नीचर, दुकान नं.४ ☐ भरतपुर: नीमगेट किशोरी श्याम ब्रिजेश कुमार ☐ विजयनगर: सदर बाजार गणेश क्रोकरी स्टोर ☐ चित्तौड़गढ़: राणा सांगा मार्केट स्टील एम्पोरियम, दुकान नं.४९ ☐ जयपुर: कटला पुरोहितजी करमचन्द प्रेम चंद जैन ● नेहरू बाजार अशोका (डिपार्टमेंटल स्टोर) मयूर सिनेमा के पास ● राजा पार्क लॉंग लाईफ डिपार्टमेंटल स्टोर ३७२, गली नं. १ ● त्रिपोलिया बाजार महावीर जनरल स्टोर दुकान नं.२१५ ● राजधानी बर्तन भंडार दुकान नं. १८६ ☐ जोधपुर: सोजाती गेट अरोड़ा स्टोर्स ● स्टेशन रोड सलूजा एजेंसीज़ ☐ खेतड़ी नगर: सुभाष मार्केट अमरज्योति फैन्सी स्टोर, दुकान नं.३८ ☐ शिवगंज: गांधी चौक विष्णु क्रोकरी एंड जनरल स्टोर. ☐ श्री गंगा नगर: पब्लिक पार्क लायलपुर बर्तन भंडार, दुकान नं.४६-४७ए ☐ उदयपुर: बापू बाज़ार, शाह लक्ष्मी लाल प्रकाश चंद जैन, दुकान नं.१०८ ● चौखला बाजार, गणेश ट्रेडर्स, चित्तौड़ा मंदिर के पास. ☐ उदयपुर: सूरज पोल के अन्दर लक्की स्टोर्स.

तमिल नाडु

चिदम्बरम: साउथ कार स्ट्रीट श्री विनयगर पंडिरकडय २५ ☐ कोयंबतूर: गांधी पुरम कोवय स्टोर्स,नं.४८, श्री लक्ष्मी कॉम्प्लेक्स, क्रॉस कट रोड ● आर.एस.पुरम आईडियल गिफ्ट हाउस, ८, भाश्यगारलू रोड ☐ दिंडिगल: एस.एम.बी. माणिकम नाडार, १६३-१६४, बिग बाज़ार स्ट्रीट ☐ मद्रास: पार्ट टाउन एम.ए. एतिराजुलू नायडू, १८, ईविनिंग बाज़ार ● पी.एल.डी. राजेंद्रन ब्रदर्स, १५-सी, ईविनिंग बाज़ार ● एस. संतोष नाडार सन (फ़र्म), ८८,नारायणअप्पा नायकन स्ट्रीट ● टी. नगर रत्ना स्टोर्स (फ़र्म) (शिवा कॉम्प्लेक्स), ४७, पोंडी बाज़ार ● रत्ना स्टोर्स, १५, रंगनाथन स्ट्रीट ● वॉशरमैन पेट एस. सेल्लदुरइ नाडार कॉर्पोरेशन, ३६०, टी. एच. रोड ☐ मदुरै: अम्मनसन्नदी एस.एस. कंदसामी पांडियन, ३, अम्मनसन्नदी स्ट्रीट ● बुलियन बाज़ार आनंद स्टोर्स,४२, साउथ आवनी मूला स्ट्रीट ● कामराजर स्ट्रीट एस. चेलय्या नाडार, २६७, कामराजर स्ट्रीट ● नेताजी रोड मुत्तुसेल्वी कॉर्पोरेशन, १०९,नेताजी रोड ☐ पदुकोटै: तलयारी स्ट्रीट श्री रामु फ़र्निचर, १९, तलयारीस्ट्रीट ☐ सेलम: बाज़ार स्ट्रीट चंद्रशेखरन एंड संस, ३५७,बाज़ार स्ट्रीट ● नैशनल एजेंसीज़, ३४८, बाज़ार स्ट्रीट ● वी.सी.आर. मेटल एंड कं., ८७, बाज़ार स्ट्रीट ☐ शिवकासी: साउथ कार स्ट्रीट एम.वी.के.डी. तंगयल नाडार, ८, साउथ कार स्ट्रीट ☐ तिरुप्पूर: पूकडै कॉर्नर कविता एजेंसीज़, ४५, ईश्वरन कोइल स्ट्रीट ☐ त्रिची: एन.एस.बी. रोड मंगल मेटल मार्ट, २४/२, एन.एस.बी रोड ☐ वेल्लोर: सी.एम.सी. अस्पताल के सामने सीनु एजेंसीज़, ८०/ए, आर्कॉट रोड ● मेन बाज़ार आनंद एजेंसीज़, ४७८, मेन बाज़ार

त्रिपुरा

☐ उदयपुर: सेंट्रल रोड इलेक्ट्रिक हाउस

उत्तर प्रदेश

☐ आगरा: जौहरी बाजार दादा ग्लास एंड क्रॉकरीज़ ● कसेरट बाजार आगरा बर्तन भण्डार प्रा.लि., दुकान नं.१/७८ ● सुभाष बाजार गुप्ता ग्लास स्टोर ☐ अलीगढ़: महावीर गंज लीलाधर बाबूलाल कसेरा ● रेलवे रोड गुलाटी स्टोर, न्यू मार्केट ● जय भारत क्रॉकरी हाउस ☐ इलाहाबाद: चौक गुरुप्रसाद हीरा लाल, जैन भवन ● सिविल लाइन्स अल्का एंटर प्राइज़ेस, ३०, एम.जी. मार्ग ● कमला नेहरू मार्ग नावेल्टी हाउस, बिजली घर के पास ● प्रिया स्टोर्स ● दि सायर कम्पनी ● कटरा चौराहा जैन ट्रेडिंग कं., दुकान न.११/४८ ● विवेकानन्द मार्ग डायमण्ड टी सेल्स, चमेली धर्मशाला के सामने, ☐ अनपरा बाजार: मोती रेडियो सेंटर, ☐ आज़मगढ़: चौक जालान इलैक्ट्रिकल्स, अहमद मार्केट, ☐ बहराईच: चौक श्याम लाल एंड संस, बाटा शॉप के पास, ☐ बलिया: चौक स्टेशन रोड महेश्वरी क्रॉकरी स्टोर्स ● स्टेशन माल गोदाम रोड, विजय गन हाउस ☐ बरेली: चौक बाजार स्वदेशी जार हाउस, ☐ बिजनौर: सदर बाजार रहमानी एंड संस घन्टा घर के सामने, ☐ बुलन्दशहर: अन्सारी रोड कंसल क्रॉकरी स्टोर, ☐ देहरादून: पीपल मण्डी सी.वी. ब्रास एंड हार्डवेयर दुकान नं. ३ ● पल्टन बाजार सुशील एंड कंपनी, दुकान नं. ९५ ☐ देवरिया: अंसारी रोड मीरजापुर मेटल स्टोर्स ● मोती लाल रोड ओम स्टोर्स, ☐ फैजाबाद: चौक करीम खान ☐ गाजियाबाद: सिंहानी गेट गोयल इलैक्ट्रिक स्टोर्स, दुकान नं. १८६ ☐ गाजीपुर: गांधी रोड आदर्श बर्तन भंडार, ☐ गोंडा: उत्तरौला रोड पारस स्टील एम्पोरियम, राजा रघुराज मार्केट ☐ गोरखपुर: सिनेमा रोड गणेशी लाल एंड संस, गोलघर फाईन क्रॉकरी, हाउस १६, जल कल भवन ● गणेशी लाल राम निवास एजेंसी, स्टेशन रोड ● गोरखनाथ रोड मोती स्टील हाउस, दुकाननं.११, सुन्दर कटरा, ● माया बाजार अमर क्रॉकरी सेंटर, कोतवाली रोड, ● टाउन हॉल किचन म्यूज़ियम, ११, हेल्थ ऑफ़िसर्स बिल्डिंग ● श्री बर्तन स्टोर्स, पेट्रोल पम्प के सामने ● स्टील कार्नर, दुकान नं. १४ ● विजय एजेंसीज, दुकान नं.१६-१७ ● ☐ हलद्वानी बरेली रोड सरदार क्रॉकरी हाउस ● बर्तन बाजार प्रेम सिंह बर्तन वाले, दुकान नं. ७३-७४ ☐ जौनपुर: कचहरी रोड आनंद स्टोर्स जोगियापुर ● हरलालका रोड ग्लासस्टोर्स, बाटा दुकान के पास ☐ झांसी: जवाहर चौक सरण ब्रदर्स ☐ कानपुर: भूसा टोली कानपुर मेटल कं., दुकान नं.६६-३१७ ● बिरहाना रोड सुप्रीम रेडियो एण्ड इलक्ट्रिक कॉर्पो. दुकान नं २६-४९ ● गोविंद नगर इंडिया क्रॉकरी दुकान नं. १२४ एंड ११६, बाटा चौराहा के पास ● एम.के. सेल्स कॉर्पोरेशन, २/७, विद्यार्थी मार्केट ● यूनीवर्सल सेल्स कॉर्पोरेशन, ४१, आर्य कन्या मार्केट ● गुमटी नं. ५ ईश इलेक्ट्रिकल्स, जयहिंद सिनेमा के सामने ● हर्षनगर एम.के. एजेन्सीज, दुकान नं. १११/२, बैंक ऑफ इंडिया के सामने ● मेस्टन रोड एशिया लाइट हाउस ● नवीन मार्केट कुमार फैन्सी स्टोर्स ● सीसामऊ बाजार आदर्श स्टील हाउस दुकान नं.१०८/१४० ● लक्ष्मी बर्तन भंडार, दुकान नं. १०८/१३० ● शंकर बर्तन भंडार, दुकान नं. १०८/१४६ ☐ खुर्जा: बर्तन बाजार भोलानाथ हरचंद राय ☐ लखीमपुर खीरी: मेन रोड आलोक एजेंसीज़, चम्पा भवन ● मेहरोत्रा एजेंसीज़ ☐ लखनऊ: अमीनाबाद इंदर चंद जैन ● राम सरण एंड कंपनी द्वारा बाँके लाल राम सरण ● सुशील बर्तन भंडार ● अमीनाबाद रोड ताराचंद किशन गोपाल जैन, १८, अवध मार्केट ● तारा डिस्ट्रिब्यूटर्स, अवध मार्केट ● हजरत गंज जैन संस, ११ चर्च बिल्डिंग ● नजीराबाद कन्हैया लाल प्राग दास ● याहियागंज कन्हैया लाल प्राग दास, पॉली कोठी ☐ मथुरा: छत्ता बाजार डी.सी. प्रकाश चंद आनन्द पंजाबी ● श्रीजनरल स्टोर ☐ मेरठ: बेगमपुल शकुन बर्तन भंडार, जगदीश शरण इंटर कॉलेज बिल्डिंग ● खैर नगर बाजार मॉडर्न लाइट हाउस, दुकान नं. २२२, पन दरीबे के सामने ☐ मिर्जापुर: सरदार भगत सिंह मार्ग मोहन ब्रदर्स,कोतवाली रोड ● वेसली गंज, आकाश वाणी एंड कं., स्वामी दयानद मार्ग, ● कृष्णा इलेक्ट्रिकल्स एजेंसी सरदार भगत सिंह मार्ग, ☐ मुरादाबाद: बाजार गंज जैन क्रॉकरीज़, ● प्रदीप क्रॉकरीज़ ● कोतवाली के सामने क्रॉकरी एम्पोरियम, ☐ मुगलसराय: जी.टी. रोड कृष्ण बंधु ☐ ओबरा: खड़तिया बाजार, माई राम जय भगवान ☐ रेनुकूट: सुपर बाजार हिण्डाल्को ☐ रुद्रपुर: भगत सिंह रोड इंडिया इंडस्ट्रीज़ ☐ रुपईडीहा: रामदूत स्टोर्स, रामदूत क्लाथ स्टोर्सके पास ☐ सहारनपुर: नेहरु मार्केट निहालचंद हरबंस लाल दुकान नं. १४ ☐ शक्तिनगर: विद्युत विहार अग्रवाल फैन्सी स्टोर्स, दुकान न.३२, शॉपिंग सेंटर ● ज्योति स्टोर दुकान नं ६, शॉपिंग सेंटर ☐ शामली: बड़ा बाजार सुगम चंद सोहन लाल ☐ सीतापुर: ग्रीक गंज मेहरा ब्रदर्स, ☐ सुल्तानपुर: मेजरगंज नारायण स्टेनलैस स्टील रिटेल शॉप ● शाहगंज अनुपम इलैक्ट्रिकल्स, शिव भवन ● एस.आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूरज लाल मार्केट ☐ उन्नाव: सदर बाज़ार, न्यू हरीश चंद्र गुप्ता एंड संस, ७२-७३, शाहगंज ☐ वाराणसी: बांस फाटक गिरधर दास एंड संस, ● स्टेनलैस स्टील सेंटर ● दालमण्डी ग्लास एंड प्लाय्वुड सेंटर ● आइडियल ग्लास हाउस ● गोविन्दपुरा खुर्द रामजी साव सत्यनारायण प्रसाद, राजा दरवाजा के पास ● काशीपुरा महादेव प्रसाद हरी राम, दुकान नं. सी.के. ६२/३० ● लहुराबीर एशिया इलेक्ट्रॉनिक्स, थाना चेतगंज के सामने ● यू.पी. ग्लास स्टोर्स, भारतीय स्टेट बैंक के सामने ● शिवाला एस.पी. इंजिनियरिंग, बी १०/४५, किरीम कुण्ड ● विश्वनाथ गली मोहनलाल किशन चंद, दुकान नं. डी १०/४५

पश्चिम बंगाल

☐ अंडाल: जी.टी. रोड नेशनल वेरायटी स्टोर्स ☐ आसनसोल: बस्तिन बाज़ार साहा स्टील हाउस, १९, लिटन स्ट्रीट ● जी.टी. रोड ईगल ग्लास हाउस, १०३, जी.टी. रोड ● फॉर्ट फ़र्निचर हाउस, ३६१, जी.टी. रोड ● प्रभात रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स ● हटन रोड ए.के. मित्रा एंड कं., १, हटन रोड ☐ अशोक नगर: गोल बाज़ार (मेन गेट) रेणुका स्टोर्स ☐ औरंगाबाद: नेताजी मोड़ साहदत्त बासनालय, द्वारा मिलन कुमार सिन्हा ☐ बालूरघाट: चौरंगी हेमंत स्टोर्स ● लेनिन सरणी श्री कृष्ण स्टोर्स ☐ बांकुड़ा: लालबाज़ार मोड़ रेडियो सेंटर,३०३, लालबाज़ार क्रॉसिंग ● सुभाष रोड गोयन्का स्टोर्स ☐ बारसात: कैपिटल मार्केट न्यू संसार ☐ बशीरहाट: नूतन बाज़ार सुरुलिपी ● पुरातन बाज़ार मॉडर्न इलेक्ट्रिक ☐ बाटानगर: बाटानगर एम्प्लाईज़ को-ऑप. सोसायटी ☐ बेलडांगा: बेलडांगा बाज़ार रेडियो घर ☐ बेरहामपुर: आजकल ५३, बी.बी. मेन रोड ● कल्पना सिनेमा के पास बासक एंटरप्राइज़, बी.बी. मेन रोड ● खागड़ा घोष एंड कं., २२६, मनीन्द्र रोड ● राय ब्रदर्स, २०२, मनीन्द्र रोड ☐ बोलपुर: श्रीनिकेतन रोड आनंद स्टोर्स ☐ वर्दमान: खोलदिघी हिंदुस्तान एलुमिनियम, जी.टी. रोड ● तेंतुलतला वेस्ट बंगाल स्टोर्स, बी.बी. घोष रोड ☐ कलकत्ता: बागड़ी मार्केट शाम ब्रदर्स, सी-२३, बागड़ी मार्केट ● युनाइटेड स्टेशनर्स, सी-२१, बागड़ी मार्केट ● बागुइआटि (दुर्गाबाडी) मणिमाला, ए ए/१२, बागुइ आटि रोड, देशबंधु नगर ● बरानगर काशीनाथ एंड कं.,१/१/ए/४, नरसिंह प्रसाद दत्त रोड, ● बरानगर बाज़ार मनोरंजन, १६, काशीपुर रोड ● बिडन स्ट्रीट (हेदुआ) अवंतिका, १७३/३, बिधान सरणी ● बेहाला बाज़ार बेहाला स्टील हाउस, ४००/१, डी.एच रोड ● नारायणी, १३, ब्रह्म समाज रोड ● भवानीपुर अमिता स्टोर्स, १८४-ए,ए.टी. मुखर्जी रोड (पूर्णा सिनेमा के पास) ● पोर्सिलेन स्टोर्स, २बी, एस.पी. मुखर्जी रोड, (पूर्णा सिनेमा के पास) ● बिधानसरणी टाउन स्कूल मॉडर्न म्यूज़ियम, १३७/१ ए, बिधान सरणी ● कैनिंग स्ट्रीट लैम्प हाउस प्रा. लि., २३, कैनिंग स्ट्रीट ● चांदनी चौक क्रॉकरी सेंटर, ४१-बी, चांदनी चौक स्ट्रीट ● नाग एंड सन,६, चांदनी चौक स्ट्रीट ● कॉलेज स्ट्रीट दत्त ब्रदर्स, बी ४१/४२,कॉलेज स्ट्रीट मार्केट ● कॉटन स्ट्रीट (सत्यनारायण पार्क) मोहनलाल माधवजी,५९, कॉटन स्ट्रीट ● देशप्रिया पार्क नेपाल शंकर एंड कं., ८५ रास बिहारी एवेन्यु ● डनलप विक्रम सुपर मार्केट संजय सेल्स, १४०,बी.टी.रोड, ब्लॉक-डी, रूम-१४ ● हालतु एच.बी. फ़ायनान्स एंड ट्रेडिंग सेंटर लि., ४, कायस्थपाड़ा मेन रोड ● हेर स्ट्रीट कलकत्ता टेलिफोन डिस्ट्रिक्ट कन्ज्यूमर को-ऑप., ८, हेर स्ट्रीट ● हातीबागान अशोक ट्रेडिंग कार्पोरेशन, ८२/२ई, बिधान सरणी ● हाज़रा शाम ट्रेडर्स, ६२/१ए, हाज़रा रोड (न्यू ऐलेनबेरी के पास) ● इंडिया एक्सचेंज प्लेस रामदेव एंटरप्राइज़ेस, पी- ३६, इंडियाएक्सचेंज प्लेस ● जादूबाबूर बाज़ार दशकर्मा भंडार (द्वारा/आर.साहा), ३१, ए.टी. मुखर्जी रोड ● कसबा प्रयोजनी, २२, बी.बी. चटर्जी रोड (पूर्वाशा सिनेमा के सामने) ● खांगड़ा पट्टी बी. दयाल एंड संस , १०९ए, पंडित पुरुषोत्तम राय स्ट्रीट ● लेक मार्केट श्री दुर्गा स्टोर्स, दुकान नं. डी-५, १०४, आर.बी. एवेन्यु ● लेनिन सरणी नवीन इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इलेक्ट्रिकल्स, द्वारा/वाचेल मोल्ला एंड संस प्रा. लि., ८, लेनिन सरणी ● लिंडसे स्ट्रीट समवायिका,१३, लिंडसे स्ट्रीट ● न्यू मार्केट घोष एंड घोष, बी-६५, न्यू मार्केट ● ओल्ड चीना बाज़ार अमरनाथ कुंडु एंड ब्रदर्स, १४/३, ओल्ड चीना बाज़ारस्ट्रीट ● अभय चरण कुंडु, २०७, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट ● आर. शांतिलाल फ्रेश लाईट एंड कं., ५३/ए, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट ● सातकौड़ीदास एंड कं., १९६, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट ● एस.एल. कुंडु एंड कं., २०६,ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट ● पद्मश्री सिनेमा युनाइटेड सेल्स एम्पोरियम, पी-४५ राजा एस.सी. मल्लिक रोड ● पोस्ता (सेंट्रल बैंक) नंदी स्टोर्स, ५०, कालिकृष्ण टागोर स्ट्रीट ● सियालदह लक्ष्मीनारायण बासनालय, १३३/एच, ए.जे.सी. बोस रोड (अशोका होटेल, ग्राउंड फ्लोर) ● रूबी साईकल स्टोर्स, ११, एम.जी. रोड ● शाम बाज़ार संगीता एंटरप्राइज़ेस, १२३, बिधान सरणी ☐ चकदह: पोस्ट ऑफ़िस के सामने स्टील वेरायटीज़, एन.एस. रोड ☐ कांथि: मेन रोड सावित्री भंडार ☐ कूचबिहार: बी.एस. रोड दास ब्रदर्स ● नृपेन्द्रनारायण रोड तोलाराम डालिमचंद ☐ दार्जिलिंग: चौक बाज़ार करामत अली एंड संस ☐ डायमंड हार्बर: यूको बैंक के पास खोटोकृष्ण पाल एंड संस ☐ दुर्गाचौक: कॉलोनी मार्केट प्रतिक ☐ दुर्गापुर: बेनाचिति ज्योति ● न्यू टॉल, नाचंद रोड, ● चंडीदास मार्केट प्रिन्स ● मामरा बाज़ार संसार, चटर्जी मार्केट ● स्टेशन बाज़ार रुज ब्रदर्स, हाटताला रोड ☐ फ़राक्का: चित्तरंजन मार्केट मॉडर्न ट्रेडिंग एजेंसी, दुकान नं. जी-१९ ☐ हाबरा: जैसोर रोड माकाली भंडार, ● दि हिंदुस्तान बेतार, ● जिराट रोड हावड़ा सुइंग कन्सर्न, उषा शॉप ☐ हावड़ा: शिबपुर बाज़ार श्री गुरु बासनालय, ३४/2, शिबपुर रोड ☐ जांगिपाड़ा: जांगिपाड़ा बाज़ार चीना स्टोर्स ☐ जियागंज: चूड़िपट्टी जोगमाया स्टोर्स ☐ जिराट: जिराट स्टेशन रोड पोद्दार स्टील वेरायटी हुगली ☐ कालना: भादुड़ीपाड़ा शॉ सरकार एंड कं., ओल्ड बसस्टैंड ☐ कांचड़ापाड़ा: वर्कशॉप रोड, बंगलक्ष्मी बासनालय ☐ कांदि: कलाबागान निवानानी इलेक्ट्रिक (पुलिस स्टेशन के पास) ☐ खड़गपुर: गोलबाज़ार अरविंद स्टोर्स, ८७, रेल्वे मार्केट ● गंगा जमुना, टी ई-२, रेल्वे मार्केट ● हिंदुस्तान स्टोर्स, १२३, ए, रेल्वे मार्केट ☐ कृष्णनगर: गोवारी सोनापट्टी शैलेन कुमार दत्त एंड ब्रदर्स, बी.के. चटर्जी लेन (मिनिहॉल के पास) ● हाइस्ट्रीट राम कृष्ण स्टोर्स, आर.एन. टैगोर रोड ● देवनाथ हाई स्कूल के पास नदिया बासनालय, विश्वंभर राय रोड ☐ लालबाग: लालबाग कोर्ट दे ब्रदर्स ☐ मालदा: विनय सरकार रोड मालदा इलेक्ट्रिक हाउस (छाता भंडार), ११/४, विनय सरकार रोड ● डी.सी. आर मार्केट मालदा वेरायटी स्टोर्स, ३/४९,डी.सी.आर मार्केट ● नेताजी सुभाष रोड रेडियो साइन, २७,नेताजी सुभाष रोड ☐ मेदिनीपुर: बीबीगंज चावरी एंटरप्राइज़ ☐ मुरारई: स्टेशन रोड गौरंग दत्त, स्टेशन रोड ☐ नवद्वीप: बासनपट्टी बलाई चंद्र दास, बाज़ार रोड ☐ पुरुलिया: चौक बाज़ार दत्त ब्रदर्स ☐ रघुनाथगंज: दरवेशपाड़ा प्रभात स्टोर्स, दुलु की दुकान ● सदर घाट सुकांता म्युनिसिपल सुपर मार्केट ☐ रामपुरहाट: डाकबंगला पाड़ा रेडियो स्टोर्स, नेताजी सुभाष रोड ● यू.बी.आई के पास दत्त स्टेनलेस स्टील हाउस, देशबंधु रोड ☐ राणाघाट: भांगापाड़ा चक्रवर्ती डिस्ट्रिब्यूटर्स, कालीमय घटक लेन ☐ राणीगंज: बड़ा बाज़ार सेठ ब्रदर्स, २५,एम.जी. रोड ☐ सैंथिया: नंदी केसरी तला शंकर वेरायटी स्टोर्स, ओल्ड कांदी रोड ☐ शांतिपुर: पब्लिक लायब्रेरी साहा इलेक्ट्रिक, ३३/ए, नेताजी सुभाष रोड ☐ श्रीरामपुर: मानसी सिनेमा के पास ईस्ट एंड ट्रेडर्स, ३९, एन.एस. एवेन्यू ☐ सिलिगुड़ी: आलूपट्टी नीलम मेटल मार्केट, हिल कार्ट रोड ● बिधान मार्केट नदिया स्टोर्स, बी-३ (आर) बिधान मार्केट ● स्टेनलेस हाउस, ४९३ (आर), बिधान मार्केट ● बिधान रोड नॉर्थ बेंगाल स्टोर्स ☐ सिमुराली: सिमुराली बाज़ार उपहार ☐ सोनामुखी: रथतला पॉल्स फ़र्निचर ☐ तामलुक: पांसकुड़ा बस स्टैंड ताम्रलिप्ता एलुमिनियम स्टोर्स, पदम बासन ☐ तारकेश्वर: बी.पी.आर. गेट सुपरसॉनिक रेडियो, चाउलपट्टी ☐ उत्तरपाड़ा: उत्तरपाड़ा बाज़ार तापसी, २१९, जी.टी. रोड

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगढ़िया सिख, जिनमें अनेक लुहार और मिस्त्री हैं, अपनी तकनीकी क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं. वे आयातित मशीनों की मूल कीमत से बहुत कम पर हू-ब-हू मशीन तैयार करने के लिए जाने जाते हैं. रामगढ़िया सिख भोगल गर्व से अपना गढ़ाई संयंत्र दिखाते है जिसे उन्होंने खुद अपने हाथों से तैयार किया और केवल विदेशी सूचीपत्र ही मार्गदर्शन के लिए इस्तेमाल किया. इसकी लागत 2.5 लाख रु. आई. ऐसी ही जापानी मशीन की कीमत है 25 लाख रु..

मेट्रो टायर के प्रबंध निदेशक मान सिंह की ऐसी ही प्रभावशाली कहानी है. वे कहते हैं, "हम टायर संयंत्र स्थापित करने में 150 करोड़ रु. निवेश कर रहे हैं जो कि हमारे प्रतियोगियों द्वारा स्थापित किए जाने वाले कारखाने की लागत का आधा है. अंतर केवल इतना है कि जहा उनकी मशीनें आयातित होंगी वहीं हमारी मशीनें रामगढ़िया तैयार करेंगे."

लागत में ऐसे खासे लाभ का निर्यात बाजार में बड़ा फायदा मिलता है. शहर के कुल उत्पादन का एक तिहाई—तकरीबन 200 करोड़ रु. का होजियरी सामान सोवियत संघ को निर्यात होता है. इसी तरह यह शहर साइकिल पुर्जों के विश्व निर्यात के 20 फीसदी का भी हिस्सेदार है.

इसलिए निर्यात केंद्र कुकुरमुत्तों की तरह उग आए हैं. पांच साल पहले शहर में केवल दो निर्यात केंद्र थे—आज 30 हैं जो सोवियत संघ, अमेरिका, लातिनी अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व को अनेक तरह के सामान निर्यात करते हैं. इस सामान की कुल कीमत 300 करोड़ रु. है.

इन उपलब्धियों की अहमियत इसलिए भी है क्योंकि ये बिना पर्याप्त ढांचे के हासिल की गई हैं. मिसाल के तौर पर देश के सबसे बड़े साइकिल पुर्जे के निर्माता भोगल साइकिल्स लिमि. को ही लें. उनके पास न तो प्रबंधकीय विशेषज्ञ हैं और न ही प्रशिक्षित इंजीनियर. पुराने जमाने की मशीनें जहां पुर्जों तैयार करती हैं वहीं अशिक्षित रामगढ़िया सिख काम की देख-रेख करते हैं. ज्यादातर कंपनियों का प्रबंध मालिकों के परिवारों के ही हाथों में है. मसलन हीरो साइकिल्स में सभी अहम पदों पर परिवार के सदस्य हैं.

■ अविनाश औलख, प्रबंध निदेशक, सी.आर. औलख ऐंड संस

औलख की ज्यादातर सिलाई मशीनें बड़ी कंपनियों को बेची जाती हैं.

लेकिन बदलते वक्त के साथ-साथ बदलाव भी आ रहा है. एक दशक पहले तक हालत यह थी कि लुधियाना के कुछ ही उद्यमी सार्वजनिक शेयर निर्गम करने की बात सोचते थे. आज कई उद्यमी शेयर बाजार में सफलतापूर्वक उतर चुके हैं और दूसरे कई ऐसे भी उद्यमी हैं जो इसकी तैयारी कर रहे हैं. वर्धमान स्पिनिंग ऐंड जनरल मिल्स लिमि. के प्रबंध निदेशक एस.पी. ओसवाल कहते हैं, "हर कोई तेजी से प्रगति करना चाहता है."

तेजी से प्रगति का ही नतीजा है कि आज लुधियाना के अनेक उद्यमी शहर के बाहर और यहां तक कि पंजाब के बाहर भी अपने कारोबार का विस्तार करने की योजना बना रहे हैं. इसकी वजह यह है कि तेजी से तरक्की करते दूसरे औद्योगिक केंद्रों की तरह यहां भी श्रमिक महंगे होते जा रहे हैं. देश के दूसरे भागों में कारोबार के स्थानांतरण के और दूसरे कारण भी बताए जा रहे हैं. 40 करोड़ रु. कारोबार वाली अरिहंत फैब्रिक्स के प्रबंध निदेशक के.एल. जैन कहते हैं, "लुधियाना को नए औद्योगिक लाइसेंस नहीं मिल रहे. और न ही इसके पास गैस सरीखे स्रोत हैं जिनसे बड़ी योजनाएं यहां लग सकें." इसलिए अरिहंत फैब्रिक्स 100 करोड़ रु. का एक्रिलिक फाइबर संयंत्र हरियाणा में शुरू कर रहा है और बिदल एग्रो गैस पर आधारित 1,000 करोड़ रु. का उर्वरक संयंत्र उत्तर प्रदेश में लगाने जा रहा है.

लुधियाना में जो यह औद्योगिक विस्फोट हुआ है उसके जो दुष्परिणाम हो सकते हैं वे भी इस शहर को झेलने पड़ रहे हैं. उद्योग बेतरतीब लग गए हैं. सड़कों पर लोगों और वाहनों की भीड़ बढ़ती जा रही है. रिक्शों और कंटेसा कारों में आगे निकलने के लिए होड़ लगी रहती है. होटल भरे रहते हैं और लुधियाना से आने-जाने वाली उड़ानों का तुरत-फुरत टिकट पाना तकरीबन असंभव ही है.

■ राकेश बी. मित्तल, प्रबंध निदेशक, भारत टेलीकॉम

मित्तल कहते हैं राजनैतिक अस्थिरता से औद्योगिक विकास प्रभावित नहीं हुआ

तो क्या भारत के तमाम दूसरे शहरों की तरह अपनी ही प्रगति के भारी होते बोझ के नीचे लुधियाना का भी धीरे-धीरे मगर निश्चित रूप से दम घुट जाएगा? अथवा क्या वह प्रगति का नियमन और बढ़ती मांग के मद्देनजर सुविधाओं का संयोजन कर पाएगा? दूसरे शहरों के अनुभवों से तो भविष्य अनिश्चित नजर आता है. लेकिन लुधियाना फिर भी लुधियाना है, कोई और शहर नहीं. यह अपने लिए राह ढूंढ ही लेगा.

—सुरजीत दासगुप्त, लुधियाना और चंडीगढ़ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिलायंस इंडस्ट्रीज

हमलों के बावजूद आगे कूच

हमेशा विवादों के घेरे में रहे अंबानी परिवार को इस बार कठिन परीक्षा के दौर से गुजरना पड़ रहा है. लेकिन इससे परेशान हुए बिना अंबानी 4,000 करोड़ रु. की विस्तार योजना में मशगूल हैं जिसके बाद वे बाजार में अगुआ हो जाएंगे.

पिछले कई हफ्तों से वे चारों ओर से घिरे हुए जी-जान से अदालती लड़ाइयां लड़ रहे थे. व्यावसायिक जगत को हत्प्रभ करने वाले एक सनसनीखेज आपराधिक मामले से उनके नाम जोड़े गए. वे देश के एक भारी-भरकम इंजीनियरिंग उद्योग पर काबिज हुए तो एक राष्ट्रीय समाचार पत्र ने इसकी जोरदार जांच-पड़ताल शुरू कर दी. जनता से पैसे इकट्ठे करने की उनकी कोशिशों को कई कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ा. सिर्फ इतना ही नहीं, आजादी के बाद पहली बार देश के किसी औद्योगिक घराने की किस्मत किसी राजनैतिक दल की किस्मत से जुड़ी दिखी.

चर्चाओं के केंद्र में बैठी इस तिकड़ी के लिए यह कोई नई बात नहीं. रिलायंस उद्योग के 56 वर्षीय अध्यक्ष धीरूभाई अंबानी और उनके दोनों बेटे—32 वर्षीय मुकेश और 30 वर्षीय अनिल—पहले भी विवादों के घेरे में रहे. पर इस बार वे कड़ी परीक्षा से गुजर रहे हैं. विपक्ष के अगुआ उनके खिलाफ मोर्चा लगाए हुए हैं और खुद धीरूभाई भी अब वैसे नहीं रहे जैसे पहले हुआ करते थे.

और उस पर से आफत यह कि रिलायंस के हर कदम और उसके लिए सरकार के हर कथित पक्षपात पर 'इंडियन एक्सप्रेस' पहले पेज पर रिपोर्ट छाप देता है. (देखें बॉक्स). नतीजतन, रिलायंस को बंबई के वकील हरीश जगतियाणी की लोकहित याचिका का सामना करना पड़ा जिसमें लार्सन ऐंड टुब्रो के हस्तांतरण पर सवाल खड़ा किया गया है और उसके 820 करोड़ रु. के परिवर्तनीय ऋणपत्र निर्गम पर स्थगन मांगा गया है. इसके पहले रिलायंस के एक वरिष्ठ अधिकारी कीर्ति अंबानी (जो धीरूभाई के रिश्तेदार नहीं हैं) को अंबानी के कट्टर प्रतिद्वंद्वी बांबे डाइंग इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष नुस्ली वाडिया की हत्या का षड्यंत्र रचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था. उन्हें बाद में जमानत पर छोड़ा गया. रिलायंस का यह संकट उसके शेयरों में भी दिखाई पड़ा. 1986 में जिन शेयरों की कीमत 386 रु. तक पहुंच गई थी अब वे 105 से 110 रु. में बिक रहे हैं.

इस सबका एक ही मतलब दिखता है कि देश के तीसरे बड़े औद्योगिक घराने के सिर पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं. लेकिन बंबई के नरीमन प्वाइंट पर रिलायंस इंडस्ट्रीज के मुख्यालय में माहौल निराशा भरा नहीं है. दबावों और अखबारी हमलों का अंबानी पर

मुख्य कारोबार: कपड़ा, पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न (33,000 टन), पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर (45,000 टन), प्यूरीफाइड टेरेपैथलिक एसिड (1 लाख टन), लीनियर एल्काइल बेंजीन (60,000 टन).
कारखाने: महाराष्ट्र के पातालगंगा और गुजरात के नरोडा में.
बिक्री: 1,169 करोड़ रु., शेयर पूंजी: 157.91 करोड़ रु.
कुल परिसंपत्तियां: 1502.76 करोड़ रु. नई परियोजनाएं: एथिलीन क्रेकर: क्षमता 4 लाख टन, लागत 750 करोड़ रु., निर्यातोन्मुख प्यूरीफाइड टेरेपैथलिक एसिड इकाई, लागत: 750 करोड़ रु., पेट्रोलियम रिफायनरी: दुबई के जेबल अली में स्थित लागत: 1,120 करोड़ रु., पातालगंगा में विस्तार: पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर का उत्पादन 60,000 टन करना, लीनियर एल्काइल बेंजीन का 80,000 टन और प्यूरीफाइड टेरेपैथलिक एसिड का 1 लाख टन करना.

रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स लिमि.
हजीरा में नई परियोजना
लागत: 750 करोड़ रु.
शुरू होने का वर्ष: 1990

उत्पाद	क्षमता (टनों में)
मोनो एथिलीन ग्लाइकॉल	60,000
पॉलिविनाइल क्लोराइड	1,00,000
उच्च घनत्व का पॉलिएथलीन	50,000

मुद्रा

मुद्रा
कम्युनिकेशंस
विज्ञापन एजेंसी
कारोबार: 50 करोड़ रु.

कॉमर्स

कॉमर्स
पब्लिकेशन लिमि.
पांच संस्करणों वाला
नया वित्तीय दैनिक
शुरुआत: 1989 के
आखिर में

धीरूभाई का सपना एक ऐसा एकीकृत समूह है जो तेल परिष्कृत करेगा और ढेर सारे मध्यवर्ती उत्पादों के लिए कच्चा माल निकालेगा

लार्सन ऐंड टुब्रो लिमि.

मुख्य धंधा: इंजीनियरिंग, सीमेंट, जहाजरानी, निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स.
बिक्री: 1,085 करोड़ रु.
शेयर पूंजी: 60.75 करोड़ रु.
नई परियोजनाएं

परियोजना	क्षमता
टायर	30 लाख
सीमेंट विस्तार	30 लाख टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई असर नहीं. इसके विपरीत उनका आत्मविश्वास बुलंदी पर है. पिछले पखवाड़े अनिल और मुकेश ने जश्न मनाया. वजह: इस बात के पूर्व संकेत थे कि लार्सन ऐंड टुब्रो का निर्गम तय सीमा से ज्यादा रकम इकट्ठी कर लेगा. नियमानुसार कंपनी अतिरिक्त धन का 15 फीसदी अपने पास रख सकती है. साफ है कि अंबानी अपनी मर्जी से इस्तेमाल के लिए 953 करोड़ रु. का खजाना बटोर लेंगे.

अंबानी अगले पांच साल में 4,000 करोड़ रु. की विस्तार योजना बना रहे हैं. वे

> **"रिलायंस अब एक ऐसी अवधारणा है जिसमें अंबानी अप्रासंगिक हो गए हैं"**
>
> **धीरूभाई अंबानी**
> अध्यक्ष, रिलायंस इंडस्ट्रीज

एक ऐसा एकीकृत समूह बनाना चाहते हैं जो खनिज तेल परिशोधित करेगा. उससे सिंथेटिक यार्न के उत्पादन में काम आने वाला मोनो एथिलीन ग्लाइकॉल (एमईजी) और प्यूरीफाइड टेरेफैथलिक एसिड (पीटीए) जैसा माल निकालेगा और साथ ही तेल से ऐसे उत्पाद भी तैयार करेगा जिनका इस्तेमाल प्लास्टिक बनाने में होता है.

यह समूह 1,000 करोड़ रु. के सालाना निर्यात की तैयारी भी कर रहा है जबकि लार्सन ऐंड टुब्रो के पास 30 लाख टन सीमेंट

रघु राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पादन के विस्तार की योजना है. साथ ही 750 करोड़ रु. की लागत से गुजरात के हजीरा में क्रैक एथिलीन बनाने की इकाई लगाने की योजना है. रिलायंस दुबई के निर्यात संसाधन क्षेत्र जेबल अली में भी 60 लाख टन क्षमता की एक रिफाइनरी लगा रहा है. इन सबके साथ अंबानी बंबई में अचल संपत्ति भी खरीद रहे हैं.

फिर आती है समाचार जगत में कूदने की महत्वाकांक्षी योजना. धीरूभाई के दामाद दत्ताराज सालगावकर का कॉमर्स पब्लिकेशन दिसंबर में एक व्यापार दैनिक निकालने जा रहा है. इसका एकमात्र लक्ष्य है खबरों के धंधे में पूरी तरह से झंडे गाड़ना. अगर ये सभी योजनाएं जस की तस पूरी हुई तो रिलायंस अगले पांच साल में 5,000 करोड़ रु. कारोबार वाला औद्योगिक घराना बन जाएगा.

जाहिर है कि इस सब के लिए पैसा जनता से ही इकट्ठा किया जाएगा. 1977 में जनता की पूंजी से चलने के बाद से यह कंपनी अपने परिवर्तनीय ऋणपत्रों के जरिए शेयर बाजार से तकरीबन 2,500 करोड़ रु. इकट्ठे कर चुकी है. दरअसल, रिलायंस उद्योग समूह बाजार से आसानी से 1,400 करोड़ रु. और इकट्ठे कर सकता है.

प्रमोद पुष्करणा

नामस भोजानी

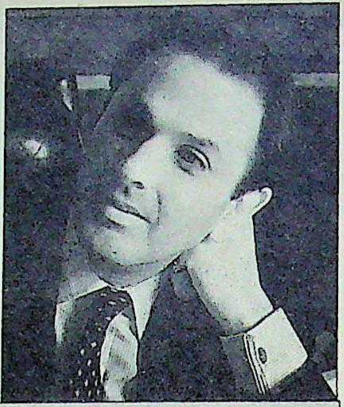

अंबानी परिवार को गुरुमूर्ति के भंडाफोड़ों और नुस्ली वाडिया की हत्या का षड्यंत्र रचने के आरोप में रिलायंस के एक कर्मचारी की गिरफ्तारी से मुश्किलों का सामना करना पड़ा है

इसी पृष्ठभूमि में अंबानी का कहना है कि 'इंडियन एक्सप्रेस' का हमला परेशान करने के अलावा और कुछ नहीं है तथा चुनाव के नतीजों की उन्हें ज्यादा चिंता नहीं. धीरूभाई अंबानी कहते हैं, "रिलायंस अब एक अवधारणा है जिसमें अंबानी अप्रासंगिक हो गए हैं." निजी बातचीत में रिलायंस के अधिकारी यह तर्क देते हैं कि कंपनी को उसके रास्ते से हटाने की देश को भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है.

साफ है कि अंबानी उद्योगों में अपना दबदबा कायम करने के चक्कर में हैं और उनका आधार क्षेत्र है रिलायंस और रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स के 39 लाख शेयरधारक. रिलायंस इंडस्ट्रीज के कार्यकारी निदेशक मुकेश अंबानी का कहना है, "रिलायंस बाजार की अगुआ है. हम उत्पादित वस्तुओं का निर्यात करके 1,000 करोड़ रु. हासिल करने की योजना भी बना रहे हैं. मैं समझता हूं कि आप इसे खासी अच्छी पैठ मानेंगे."

यहां पर मुख्य तत्व हैं निवेशक. देश के तीन में से दो निवेशक रिलायंस समूह के शेयरधारक हैं. रिलायंस, रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स और लार्सन ऐंड टुब्रो के कुल शेयरों का मूल्य शेयर बाजार के कुल शेयरों के मूल्य का 11 फीसदी है. सरकारी मिल्कियत वाले भारतीय जीवन बीमा निगम और भारतीय यूनिट ट्रस्ट मोटी आमदनी के लिए शेयर बाजार पर निर्भर करते हैं. इसलिए अगर रिलायंस के शेयरों की कीमत अचानक घट जाती है तो दूसरे शेयरों की कीमत भी घट सकती है और इन दोनों वित्तीय संस्थानों की आमदनी भी कम हो सकती है. 'इंडियन एक्सप्रेस' के वित्तीय सलाहकार एस. गुरुमूर्ति इस मुद्दे पर जोर देते हुए कहते हैं, "रिलायंस के शेयरों की कीमत ऊंची रखने में इन संस्थाओं का निहित स्वार्थ है. अगर शेयर मूल्य सूचकांक गिर जाता है तो हर ओर दहशत फैल जाती है."

हाल में अंबानी घराना बंबई में अचल संपत्ति खरीदने में भी जुट गया है

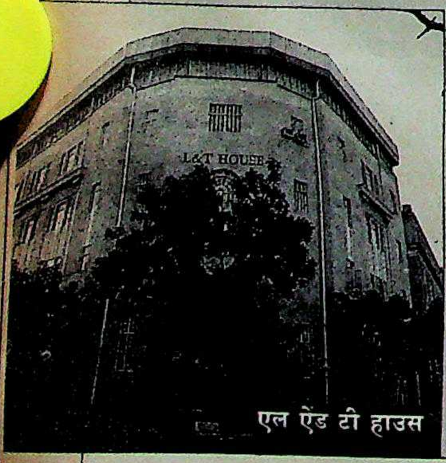

एल ऐंड टी हाउस

रिलायंस हाउस

आरपीएल हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□ 180 मौलिक चित्र आलेखों सहित
□ 12 बहुरंगीय (रंगीन) तस्वीरें आर्ट पेपर पर

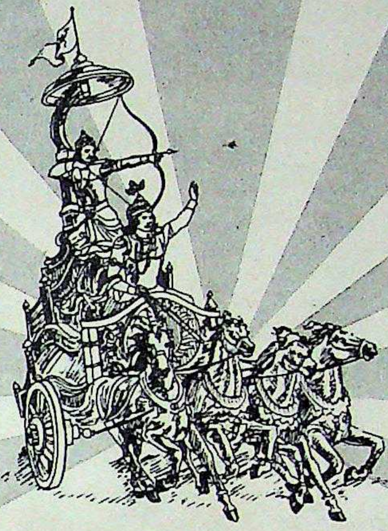

महाभारत डायरी

प्रस्तुत करते है **9 STAR**

एक संभाल कर रखने योग्य भेंट

अमर महाकाव्य महाभारत। अब डायरी के रूप में। हर पृष्ठ पर। शानदार तस्वीरें वृतांत सहित। सभी पौराणिक दृष्टों का वर्णन। भगवत गीता के अंशों का विवरण। उत्तम सिल्क में बंधी ज़िल्द। तीन तरफा स्वर्ण पालिश। सुरक्षा के लिए पारदर्शी आवरण।

महाभारत डायरी, 9 स्टार की अन्य सैंकड़ों मोहक डायरियों सहित शीघ्र ही भारत भर में मुख्य स्टेशनरों एवं डीलरों के यहाँ उपलब्ध होगी।

9 STAR top quality products

QUALITY PRODUCERS
India's leading Diary Manufacturers. Since 1961.
26, P. K. Tagore St, Sudama Sadan,
Calcutta-700006. Phone : 54-3940, 54-2831, 55-8400
Telex : 021-7252/55 & 021-7622/23

USER IT 380

-Cut along this line-
Ms Quality Producers
26, P.K. Tagore St. Sudama Sadan
CALCUTTA - 700 006
Please mail ———— (number in words)
Mahabharat Diary/Diaries to my below address :

Name : ————
Address : ————
———— City ————
Pin ————
★ I enclose herewith Demand Draft/Money Order for Rs.———— @ Rs.180/- per Diary.
★ I agree to receive your Diary/Diaries by VPP @ Rs.180/- per Diary.

★ Offer valid for a limited period within India only.

V Diwan

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन एक्सप्रेस — आरोप और जवाब — रिलायंस

अंबानी ने 100 करोड़ रु. से ज्यादा के प्यूरीफाइड टेरेफ्थैलिक एसिड (पीटीए) के लिए पहले की तारीख वाला साखपत्र दिया. सीबीआई ने उसके खिलाफ कार्रवाई का सुझाव दिया. पर सरकार ने अभी तक कुछ नहीं किया.

आरोप में कोई सचाई नहीं थी इसलिए कई विशेषज्ञ समितियों से रिपोर्ट लेने के बाद मामले को छोड़ना पड़ गया.

रिलायंस ने 1984 के मध्य में मोनो एथिलीन ग्लाईकॉल (मैग) पॉलिविनाइल क्लोराइड (पीवीसी) और उच्च घनत्व की पॉलिएथिलीन (एचडीपीई) के उत्पादन का लाइसेंस लिया पर इनमें से किसी भी परियोजना पर पांच साल बाद भी अमल नहीं हुआ.

यह सही नहीं है. अंतिम स्थानीय अनुमति 1988 में दी गई थी. इसलिए परियोजना अपने पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पूरी नहीं हो सकती थी.

सारी प्रमुख परियोजनाओं की लागत काफी तेजी से बढ़ी.

लागत में वृद्धि सीमा शुल्क से अनुमति मिलने में हुई देरी और विदेशी मुद्रा विनिमय में हुए उतार-चढ़ाव से हुई और इन पर कंपनी का कोई नियंत्रण नहीं.

रिलायंस ने एक ही परियोजना के लिए बार-बार पैसा इकट्ठा किया. अक्तूबर 1986 में इसने शेयर बाजार से विभिन्न परियोजनाओं के लिए 500 करोड़ रु. इकट्ठा किए. इनमें लैब और मैग परियोजना भी शामिल थी.

कंपनी ने लैब परियोजना के लिए कभी पैसा इकट्ठा नहीं किया. पैसा मैग परियोजना के लिए इकट्ठा किया गया था. सरकार की इजाजत के बाद ही चालू परियोजनाओं के लिए पैसा इकट्ठा किया गया.

रिलायंस इंडस्ट्रीज ने एक हैरत भरा कदम उठाते हुए मैग और एचडीपीई परियोजनाओं का लाइसेंस रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स (आरपीएल) को हस्तांतरित कर दिया. इन परियोजनाओं के लिए जनता से इकट्ठा की गई अतिरिक्त रकम पीटीए और लैब परियोजना पर अमल करने के बाद करीब 300 करोड़ रु. थी.

अतिरिक्त धन का इस्तेमाल बोर्ड, शेयरधारकों, वित्तीय संस्थाओं और सरकार की इजाजत से चालू परियोजनाओं और विस्तार के लिए किया गया.

आरपीएल की तीन परियोजनाओं की मूल अनुमानित लागत 345 करोड़ रु. थी पर अब वह 700 करोड़ रु. हो गई.

मूल लागत 1982 में तय की गई थी. अनुमानित लागत तीन साल बाद संशोधित की गई. 1988 में एमआरटीपीसी ने इसे 700 करोड़ रु. आंका.

रिलायंस से पास पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर (पीएसएफ) और लैब का ढेर सारा अनबिका भंडार पड़ा है जबकि पीएसएफ की उपयोग क्षमता 55 फीसदी है और लैब की 60 फीसदी.

कंपनी के पास सिर्फ दो हफ्ते का ही भंडार है.

रिलायंस का सालाना मुनाफा उसे राजस्व और सीमा शुल्क में सरकार से मिली कुल रियायतों से काफी कम है. उसे 280 करोड़ रु. की रियायतें मिली हैं जबकि उसका मुनाफा महज 112 करोड़ रु. हैं.

ऐसी वित्तीय रियायतें पूरे उद्योग को मिलती हैं. कोई भी रियायत सिर्फ रिलायंस के लिए ही नहीं है. सभी रियायतों का फायदा उपभोक्ता को मिलता है.

पैसा कहां जाता है

कंपनी	निर्गम/वर्ष	आकार	उद्देश्य	स्थिति
रिलायंस इंडस्ट्रीज	'ई' सीरिज परिवर्तनीय ऋणपत्र (1984)	80 करोड़ रु.	कपड़ा उद्योग का आधुनिकीकरण	कार्यरूप दे दिया गया
रिलायंस इंडस्ट्रीज	'एफ' सीरिज परिवर्तनीय ऋणपत्र (1985)	309 करोड़ रु.	पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न (पीएफवाई) डिवीजन, पीएसएफ और पीटीए परियोजनाओं का विस्तार	पीएफवाई विस्तार पर अमल, पीएसएफ, पीटीए परियोजनाओं में तीन साल की देरी
रिलायंस इंडस्ट्रीज	'जी' सीरिज परिवर्तनीय ऋणपत्र (1986)	500 करोड़ रु.	लैब/मैग/एचडीपीई. पीटीए परियोजनाएं	पीटीए परियोजना की लागत में बढ़ोतरी (268 करोड़ रु. से 550 करोड़ रु.). लैब संयंत्र में विलंब. दोनों 1988 के आरंभ में शुरू
रिलायंस इंडस्ट्रीज	राइट्स इक्विटी (1987)	198 करोड़ रु.	पूंजी में वृद्धि	
रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स	परिवर्तनीय ऋणपत्र (1988)	593 करोड़ रु.	मैग/पीवीसी/ एचडीपीई परियोजनाएं	1990 के शुरू में आरंभ होने की योजना
लार्सन ऐंड टुब्रो	परिवर्तनीय ऋणपत्र (1989)	820 करोड़ रु.	आरपीएल को आपूर्तिकर्ता का उधार और दूसरी गोपनीय परियोजनाएं	
	कुल	**2,500 करोड़ रु.**		

पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि रिलायंस की छवि काफी खराब हुई है और इसके तौर-तरीकों के बारे में कई सवाल उठ खड़े हुए हैं और ये सारे सवाल सिर्फ 'इंडियन एक्सप्रेस' ने ही नहीं उठाए. मसलन, अक्सर इस पर आरोप लगाया जाता है कि यह एक ही परियोजना के लिए कई बार पैसा एकत्र करती है (देखें बाक्स).

अंबानी की बाजीगरी उन्हें और गंभीर समस्याओं में फंसा सकती है. पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न (पीएफवाई) के बाजार में अंबानी की 48 फीसदी हिस्सेदारी है. इस उत्पाद की बिक्री से पिछले साल 421 करोड़ रु. आए. लेकिन उद्योग में इसकी भरमार हो गई है. यही हाल पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर (पीएसएफ) का है जिसके 35 फीसदी बाजार पर इसका कब्जा है. और इन दोनों से रिलायंस का आधा कारोबार होता है. लेकिन अनिल अंबानी का तर्क है, "रिलायंस एक बहुउत्पाद कंपनी है और हम हर आंधी-तूफान का मुकाबला कर लेंगे."

अगर रिलायंस ताजा संकट से उबर सकी तो यह ऐसी आम धारणाओं पर भी जीत हासिल कर लेगी. और यह भी साफ है कि अंबानी परिवार की किस्मत राजनैतिक स्थितियों के आसरे है. यानी राजनीति और अर्थजगत का ऐसा अनोखा मेल पहले कभी नहीं हुआ था.

—एस.एन. वासुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांशीराम-टिकैत-शहाबुद्दीन

खेल बिगाड़ सकने की ताकत

देश के राजनैतिक क्षितिज पर महेंद्र सिंह टिकैत, सैयद शहाबुद्दीन और कांशीराम का उदय ऐसे धूमकेतु की तरह हुआ है जो महत्वपूर्ण चुनाव क्षेत्रों में किसी की किस्मत तय कर सकते हैं. इसी के मद्देनजर इंका और विपक्ष दोनों ही इन्हें अपने पक्ष में करने की कसरत में जुटे हैं.

आम चुनाव नजदीक आते ही राजनैतिक क्षितिज पर उनकी चमक तेज हो गई है. किसी धूमकेतु की तरह बड़े सितारों की चमक फीकी करने की ताकत रखने वाली तिकड़ी—कांशीराम, महेंद्र सिंह टिकैत और सैयद शहाबुद्दीन ने आसन्न चुनावी समर में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का एहसास करा दिया है.

वैसे इन तीनों में दूर-दूर तक कोई समानता नहीं है लेकिन इनमें इंका और विपक्ष दोनों के वोट काटने की समान क्षमता है. साथ ही वे आगामी चुनाव में सत्ता के बड़े दावेदारों के विजय रथ को रोक देने की भी अच्छी खासी ताकत रखते हैं.

चुनाव के पहले के राजनैतिक बाजार में हर रोज इनका भाव चढ़ता जा रहा है. उन्हें अपने पलड़े में बिठाने के लिए प्रधानमंत्री राजीव गांधी और जनता दल अध्यक्ष विश्वनाथ प्रताप सिंह के दूत उनके आसपास मंडरा रहे हैं.

अपनी इस अहमियत का अंदाज पाकर ये तीनों मोल-भाव में पटु साबित हो रहे हैं. वे इस बात को मानते भी हैं. हाल ही में गठित इंसाफ पार्टी के अध्यक्ष सैयद शहाबुद्दीन कहते हैं, "मैं बाजार में गरमी बढ़ने का इंतजार कर रहा हूं. मोल-तोल वाले इस बाजार में मेरी हैसियत विक्रेता की है न कि खरीदार की."

उधर, कहने के लिए तो दोनों प्रमुख पार्टियों के नेता बेफिक्री दिखा रहे हैं और इन नेताओं के बढ़ते राजनैतिक असर से अपनी घबराहट को छुपाने की कोशिश कर रहे हैं. वे खास समूहों के वोटों पर इन नेताओं की असर डालने की क्षमता को हौवा मात्र कहकर खारिज कर देते हैं. इंका महासचिव वी.एन. गाडगिल कहते हैं, "हरिजन कोई एकसूत्रबद्ध समूह नहीं है. अक्सर जाति की भावनाएं पीछे रह जाती हैं और वर्गीय भावनाएं हावी हो जाती हैं. दरअसल चुनाव में जो बात महत्वपूर्ण हो उठती है, वह है, जिसे अमेरिका में 'मिज़री इंडेक्स' (तंगहाली सूचकांक) कहते हैं. यह हमारे देश के संदर्भ में बेरोजगारी और महंगाई है." जनता दल के नेता सतपाल मलिक इन तीनों नेताओं पर 'गलत राजनीति' करने का आरोप लगाते हैं 'जिससे कुछ खास जातियां या समुदाय अलग-थलग पड़ते जा रहे हैं.'

भवान सिंह

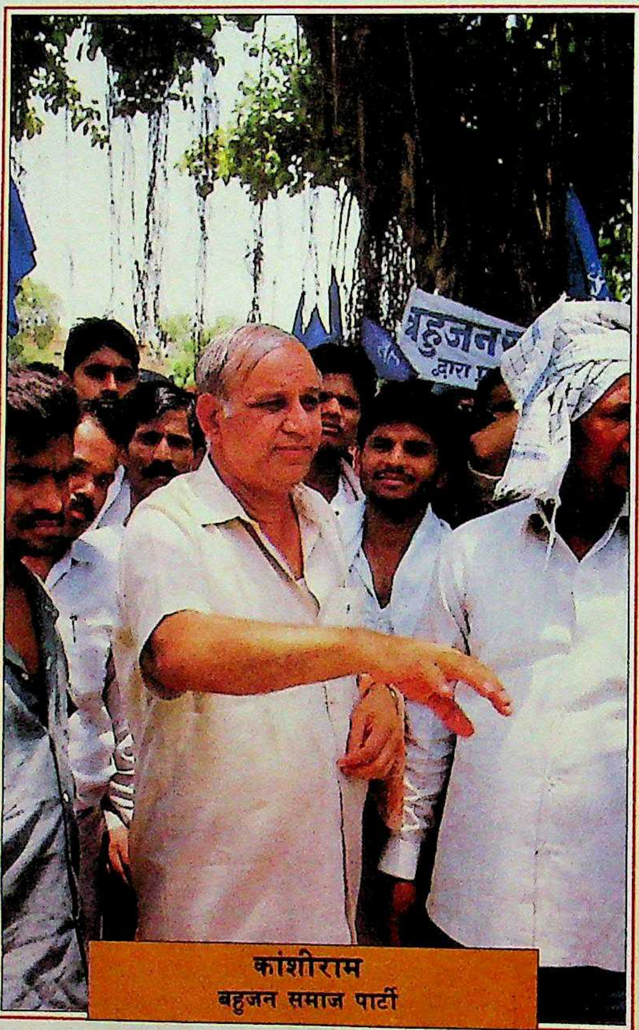

कांशीराम
बहुजन समाज पार्टी

कांशीराम हरिजन राजनीति में उग्र भावनाएं भरने में जुटे हैं. उन्हें दलितों का भी भारी समर्थन हासिल है

पिछले पांच साल से कांशीराम हरिजन राजनीति में उग्र भावनाएं भरने का अलगाववादी अभियान छेड़े हुए हैं. अब उन्हें दलितों का जबरदस्त समर्थन हासिल है जो कई राज्यों में फैला हुआ है. उनकी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के चुनावों में बेहतर से बढ़िया प्रदर्शन करने से भी हरिजनों में उनकी पकड़ का अंदाज लगता है. मार्च 1985 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में बसपा को कुल मतदान के मात्र 2.4 प्रतिशत वोट मिले थे. लेकिन मार्च 1987 में उत्तर प्रदेश में हुए उपचुनावों में बसपा को 26.7 प्रतिशत मत मिले. फिर, कांशीराम ने पिछले साल इलाहाबाद के महत्वपूर्ण संसदीय उपचुनाव में अपनी जबरदस्त ताकत दिखाई. संयुक्त विपक्ष के उम्मीदवार वी.पी. सिंह और इंका के सुनील शास्त्री के खिलाफ उन्हें 72,000 मत मिले. कांशीराम कहते हैं, "आप मेरे जन-समर्थन में तेजी से वृद्धि का अंदाज सिर्फ इसी से लगा सकते हैं कि दिसंबर 1984 के आम चुनाव में इलाहाबाद में मेरे उम्मीदवार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेंद्र सिंह टिकैत
भारतीय किसान यूनियन के नेता

टिकैत ने अपने लिए विकल्प खुले रखे हैं. वे इंका के राजेश पायलट से भी बात चला रहे हैं, तो जनता दल के दिग्गज देवीलाल के दूतों से भी सौदेबाजी कर रहे हैं

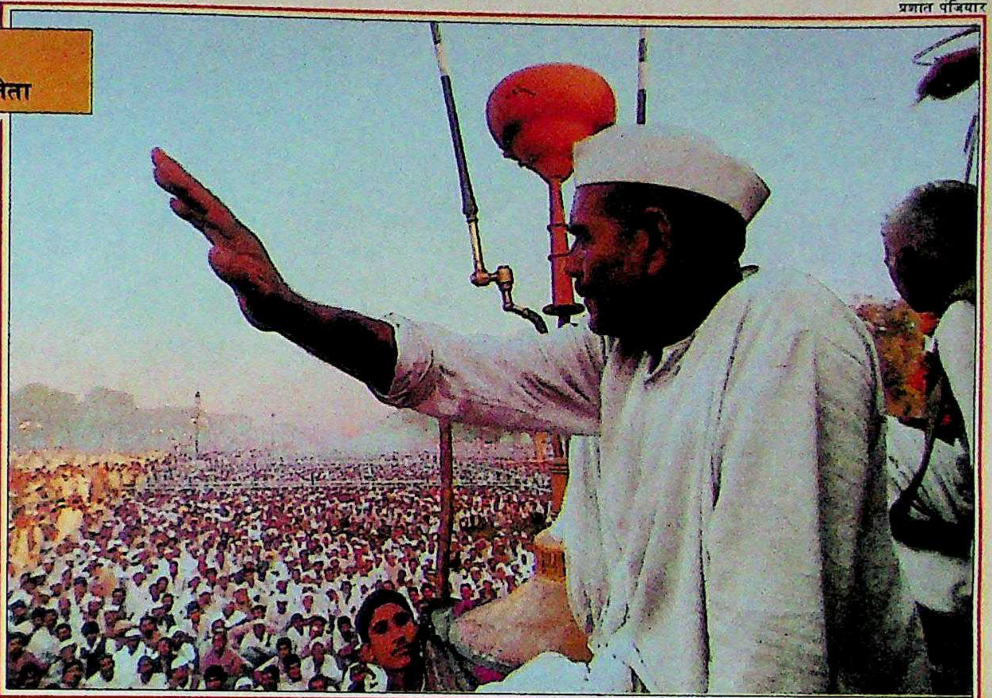
प्रशांत पंजियार

सिर्फ 1,716 मत मिले थे."

पिछले साल बोट क्लब पर बेमिसाल धरना देने वाले, हठी किसान नेता टिकैत शायद इस हिसाब-किताब से सहमत न हों. भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) का जनाधार पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है और वहां वे करीब दर्जन भर संसदीय क्षेत्रों में किसी का भी हिसाब गड़बड़ा सकते हैं.

और शहाबुद्दीन भी ऐसा ही कर सकते हैं. चुनाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण दो राज्यों—उत्तर प्रदेश और बिहार के मुसलमानों में उनकी अच्छी पकड़ है. शहाबुद्दीन ने अपनी छवि मुसलमानों के मसीहा की बनाने की कोशिश की है. हालांकि उनका दावा तो यह है कि वे 'जनता विश्वविद्यालय के स्नातक' हैं लेकिन जनता दल द्वारा भाजपा से सीटों का तालमेल करने के फैसले की वजह से वे मौजूदा दल में अपनी जगह नहीं बना पाते. बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में हाल के दंगों की वजह से चुनाव के पहले सांप्रदायिक भावनाओं के ध्रुवीकरण के कारण शहाबुद्दीन फायदे में दिखते हैं.

मजेदार बात यह है कि ये नेता शायद अपने उम्मीदवार तो न जिता पाएं पर दोनों प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों को नुकसान जरूर पहुंचा सकते हैं. मसलन सितंबर 1985 में पंजाब विधानसभा चुनाव में बसपा को हालांकि मात्र 2.2 प्रतिशत मत मिले लेकिन उसके कारण इंका का भाग्य तय हो गया जो एक प्रतिशत से भी कम मतों से हार गई.

इसी वजह से इलाहाबाद उपचुनाव के तुरंत बाद इंका और विपक्ष दोनों के नेता कांशीराम को फुसलाने में जुट गए. शीला दीक्षित और राजेश पायलट सरीखे कई केंद्रीय मंत्रियों ने उनसे बातचीत की. कांशीराम कहते हैं कि उन्होंने बसपा का इंका में विलय करने के एवज में केंद्रीय मंत्री पद की पेशकश ठुकरा दी.

शासक दल की इस चिंता की वजहें भी हैं. कांशीराम ने इंका के परंपरागत मतदाता वर्ग—ब्राह्मण, हरिजन, मुसलमान—में सेंध लगा ली है. मुसलमान इंका से अब भी नाराज हैं. ऐसे में हरिजनों को गंवाना पार्टी के लिए काफी खतरनाक साबित होगा. अपनी मौजूदा अहमियत के मद्देनजर बसपा नेता यह बताना नहीं भूलते कि कई मंत्री और वरिष्ठ इंकाई नेता उनसे मिल चुके हैं. कांशीराम का दावा है कि अभी हाल में इंका महासचिव गुलाम नबी आजाद, पायलट और प्रधानमंत्री के खासमखास सतीश शर्मा ने उनसे राजीव से मिलने का आग्रह किया.

कहा जाता है कि बसपा के नेता ने यह पेशकश मंजूर कर ली है. कांशीराम ने इंका के साथ सीटों के तालमेल का सुझाव दिया है पर वे इसके नतीजों के प्रति सावधान भी हैं. वे मानते हैं, "मेरे समर्थकों के वोट तो दूसरे लोगों को मिल सकते हैं पर इंका के समर्थकों के साथ ऐसा नहीं है." दिल्ली के करोलबाग में पार्टी के छोटे-से दफ्तर की दीवार पर लटके हिंदीभाषी राज्यों के नक्शे पर छड़ी घुमाते हुए वे दावा करते हैं कि इस इलाके की 240 संसदीय सीटों में से बसपा लगभग 80 सीटें जीतेगी. वे कहते हैं, "इंका और जनता दल दोनों ही यथास्थितिवादी पार्टियां हैं. हम परिवर्तन चाहते हैं. दूसरे लोग वोट खरीदते हैं जबकि मैं उन सभी से एक रुपया लेता हूं जो मुझे समर्थन करने को तत्पर हैं."

कांशीराम कहते हैं कि सत्तारूढ़ दल की एक पेशकश है कि जहां जीत निश्चित न हो वहां पिछड़े वर्ग के उम्मीदवार (हरिजन नहीं) खड़े किए जाएं. मकसद साफ है कि पिछड़ा वर्ग विपक्ष के साथ एकजुट होता दिख रहा है तो कांशीराम का इस्तेमाल करके जनता दल के वोट काटे जाएं. बसपा नेता ने अमेठी में राजीव गांधी को मिलने जा रही जनता दल की चुनौती तोड़ने के लिए ऐसा उम्मीदवार खड़ा करने का वादा भी किया है. उनकी हंसी में उनकी जोड़-तोड़ की इच्छा नहीं छिप पाती. दरअसल वे चुनावी बाजार में अपना भाव बढ़ाना चाहते हैं.

यही वजह है कि उन्होंने देवगौडा की जनता पार्टी के साथ मिलकर देश में 'आमूल परिवर्तन लाने के लिए' परिवर्तनशील मोर्चा बनाया है. कांशीराम बताते हैं कि मोर्चा इंका और जनता दल दोनों का विकल्प बनेगा. मोर्चा बनाए जाने के एक दिन बाद जब वी.पी. सिंह उनसे हवाई अड्डे पर मिले तो उन्होंने (वी.पी. ने) कहा कि वे परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करने के लिए साथ मिलकर काम कर सकते हैं.

उधर, शहाबुद्दीन के भी आगे कुआं, तो पीछे खाई है. वी.पी. सिंह की जनता दल संसदीय बोर्ड का सदस्य बनाए जाने की पेशकश के बावजूद वे 'हिंदू उग्रवाद' की समर्थक भाजपा से पार्टी के सीटों के तालमेल के फैसले पर बरस पड़े. डांवाडोल हो रहे दूसरे नेताओं के साथ अपने को जोड़े जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार पर सूझ-बूझ वाले ये सांसद कहते हैं, "दरअसल भाजपा ही डांवाडोल होती पार्टी है." इंकाई आका भी उन्हें अपनी ओर करने की जुगत भिड़ा रहे हैं. गांधी परिवार की जी-हुजूरी करने वाले एक शख्स अली सिद्दीकी को शहाबुद्दीन को इंका के साथ लाने के काम में लगाया गया है.

जॉर्ज फर्नांडीस, यशवंत सिन्हा और सुरेंद्र मोहन जैसे जनता दल के पुराने समाजवादी साथियों का अभी भी आग्रह है कि वे अपने फैसले पर फिर विचार करें. लेकिन लगता है शहाबुद्दीन इंका को अल्पसंख्यकों के लिए सांपनाथ ही मानते हैं, नागनाथ नहीं. वे कहते हैं, "अगले चुनावों में मुख्य मुद्दा हिंदू उग्रवाद की लहर का ही होगा और इस पर अंकुश लगाना जरूरी है. मेरे लिए यह बात कोई मायने नहीं रखती कि कौन प्रधानमंत्री बनता है."

टिकैत ने भी अपने विकल्प खुले रखे हैं. वे राजेश पायलट और देवीलाल दोनों के दूतों के साथ बातचीत जारी रखे हुए हैं. 1987 के उथल-पुथल वाले दिनों में जब जनमोर्चा नेता पश्चिम उत्तर प्रदेश का दौरा कर रहे थे तब खुद टिकैत ने ही वी.पी. सिंह से मिलने की पेशकश की थी. हालांकि हाल के महीनों में वे इंका का लोभ संवरण नहीं कर पाए. वे कहते हैं, "अगर इंका हमारी मांगें मान लेती है तो चुनाव हों या न हों, मैं अकेले ही यह आश्वासन दे सकता हूं कि इंका सत्ता में बनी रहेगी." उनका कहना है कि मतदान के दो-एक दिन पहले वे अपने समर्थकों के लिए फतवा जारी करेंगे. टिकैत कभी दिल्ली दरबार के साथ युद्ध की घोषणा करते हैं तो दूसरे ही पल प्रधानमंत्री की सराहना करने लगते हैं. टिकैत को जानने वालों का मानना है कि उनमें सौदेबाजी की खास चतुराई झलकती है.

डांवाडोल हो रहे इन नेताओं को अपने पक्ष में करने में निश्चय ही इंका ने विपक्ष से बढ़त ले ली है. सरकार मतदाताओं के एक वर्ग को खुश करने के लिए आसानी से नई रियायतों की घोषणा कर सकती है या पुराने वादों पर अमल कर सकती है. उधर, विपक्ष सिर्फ वादे ही कर सकता है. पायलट कहते हैं, "हम नीतियों पर समझौता किए बगैर हर किसी से मदद लेने की कोशिश करेंगे." हाल ही में शेतकरी संघटना के नेता शरद जोशी की प्रधानमंत्री से मुलाकात को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है.

इसके विपरीत इन नेताओं से जनता दल की बातचीत पार्टी के विभिन्न गुटों की प्रतिद्वंद्विता में खो जाती है. बताया जाता है कि कांशीराम के साथ लंबी बातचीत के दौरान देवीलाल ने कहा, "आपके समर्थक नंगे हैं और मेरे समर्थकों के पास लंगोट भर है. आप मेरे साथ मिलकर काम क्यों नहीं करते?" हालांकि जनता दल ने इन तीनों नेताओं से बातचीत में सीटों के तालमेल की पेशकश की है. किसान यूनियन अराजनैतिक संगठन है इसलिए जनता दल ने इसके उम्मीदवारों को अपने चुनाव चिन्ह पर लड़ाने की तैयारी दिखाई है. इस प्रस्ताव पर क्या प्रतिक्रिया हुई, अभी इसका पता नहीं चल पाया है.

हालांकि इन नेताओं के लिए किसी भी पार्टी को खास समूहों के वोट दिलवा पाना उतना आसान नहीं होगा. मसलन, टिकैत को दिवंगत चौधरी चरण सिंह के जाट समर्थकों का ही समर्थन हासिल है. परंपरा से जाट किसान इंका विरोधी हैं और अगर टिकैत इंका को वोट देने का फतवा जारी करते हैं तो वे उनकी बात नहीं भी मान सकते हैं. लोग टिकैत को किसान आंदोलन का नेता तो मानते हैं पर चरण सिंह का राजनैतिक समर्थन तो उनके बेटे अजीत सिंह को ही मिला है. टिकैत उस समर्थन में सेंध लगाने की ताकत तो कम-से-कम नहीं रखते. जनता दल के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य सोमपाल कहते हैं, "उन्हें लोगों के मूड का ध्यान रखना होगा."

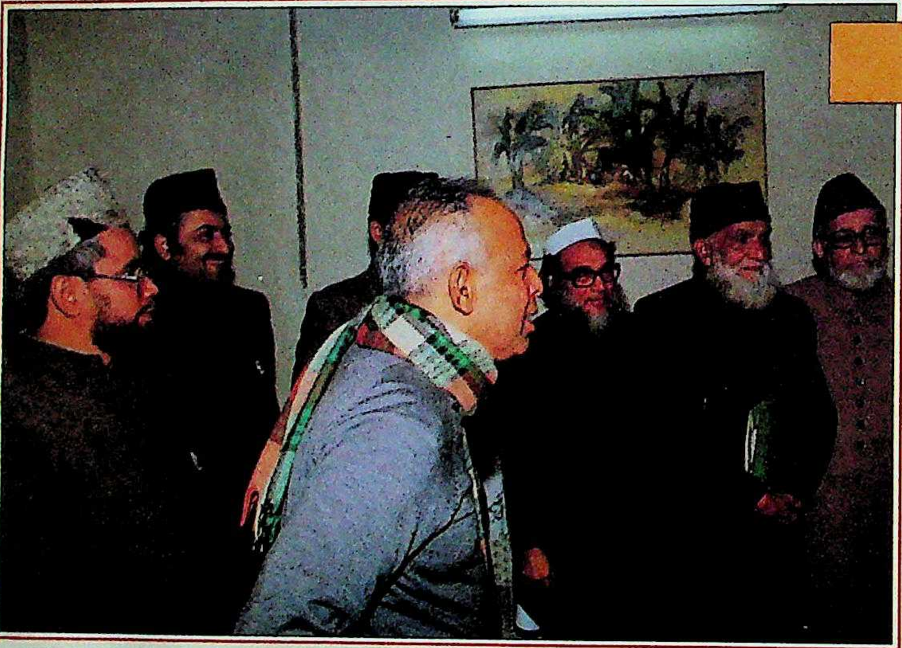

सैयद शहाबुद्दीन
इंसाफ पार्टी के अध्यक्ष

शहाबुद्दीन ने प्रमुख मुद्दों पर उग्र रुख अपनाकर मुसलमानों का मसीहा बनने की कोशिश की है. हिंदीभाषी क्षेत्र में उन्होंने अपना थोड़ा-बहुत आधार भी बनाया है

इसी तरह शहाबुद्दीन के लिए भी मुसलमानों को इंका को वोट देने के लिए तैयार कर लेना मुश्किल होगा. मुसलमान इंका सरकार को 1987 के हाशिमपुरा के नरसंहार का जिम्मेदार मानते हैं. कांशीराम को भी फूंक-फूंककर चलना होगा क्योंकि उन्होंने अपना जनाधार इंका विरोध पर ही स्थापित किया है. सतपाल मलिक कहते हैं, "अगर ये नेता इंका के साथ जाते हैं तो वे अपना जनाधार खो देंगे."

बहरहाल, इस जोड़-तोड़ से दो तथ्य उजागर होते हैं—एक, इन तीन नेताओं का महत्वपूर्ण क्षेत्रों में असर और दूसरे, प्रमुख पार्टियों की खस्ताहाल अवस्था. जाहिर है, इन तीनों को अपनी अहमियत का पूरा-पूरा अंदाज है. उनका जोर इस बात पर है कि राजनीति की मुख्यधारा की वाहक राष्ट्रीय पार्टियां नहीं—बल्कि वे ही हैं. लेकिन लगता है भारतीय राजनीति में मुख्यधारा और किनारे के बीच विभाजक रेखा मिटती जा रही है.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

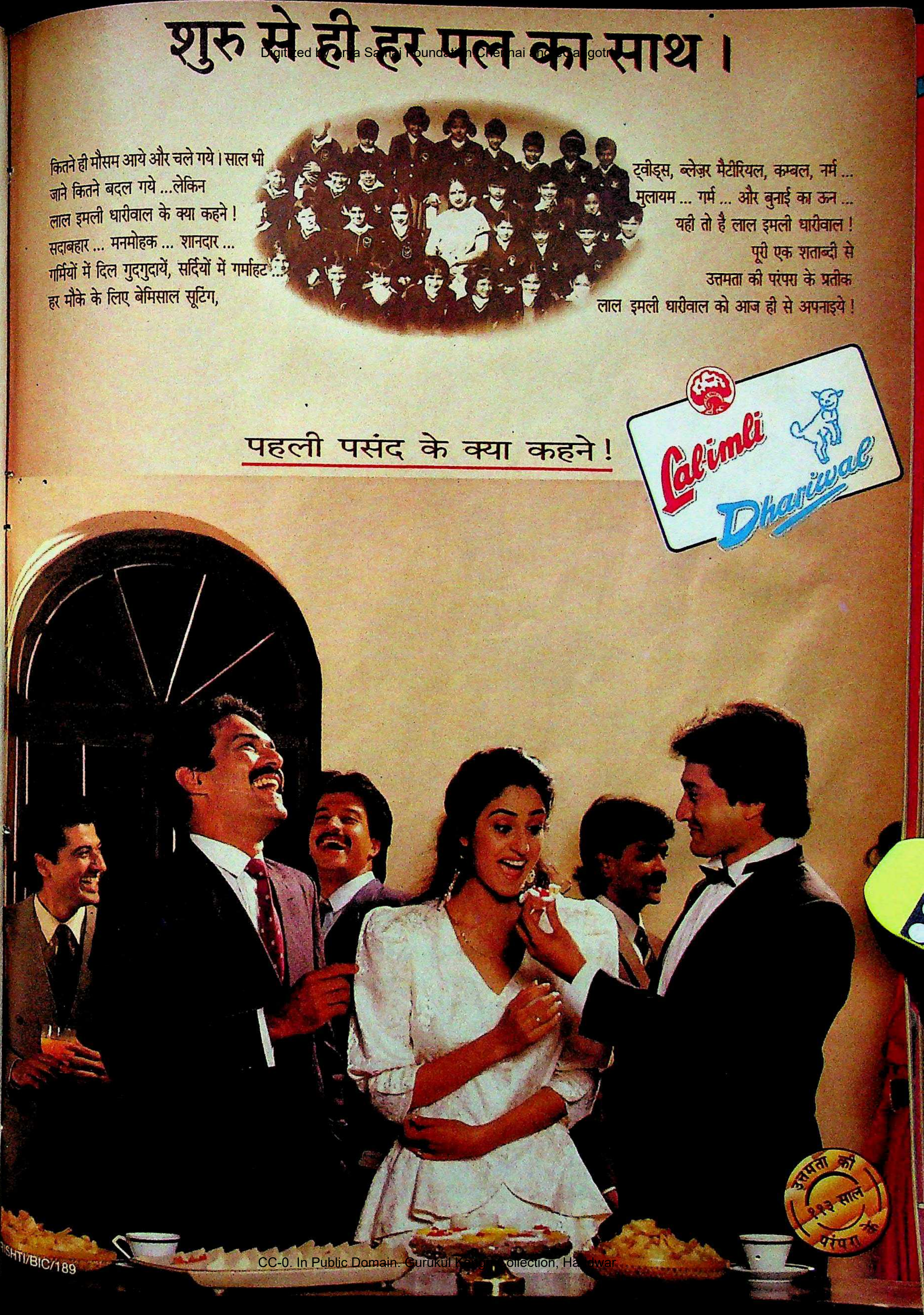

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: रघु राय

पर्यावरण

हार न मानने का हौसला

नर्मदा घाटी परियोजना के चलते डूब में आने का खतरा झेल रहे हरसूद कस्बे में पिछले दिनों वनवासी, ग्रामीण और सामाजिक कार्यकर्ता जमा हुए. उन्होंने 'विनाशकारी विकास' के खिलाफ आवाज बुलंद कर इस कस्बे को पर्यावरणवादियों के जेहन में बिठा दिया.

पर्यावरणवादियों का यह मानों कुंभ ही लग गया था. वहां परंपरागत वेशभूषा में सजे नर्मदा घाटी के वनवासी, मिसाइल टेस्ट रेंज के खिलाफ आंदोलन करके जीती वलियापाल (ओडीसा) की 'फौज', कर्नाटक के सर्वोदय कार्यकर्ता, मध्य प्रदेश की बड़ी सिंचाई और बिजली परियोजनाओं से विस्थापित होने वाले ग्रामीण और इन सबके ऊपर बाबा आमटे, शबाना आजमी, सुंदरलाल बहुगुणा, कन्नड लेखक शिवराम कारंत और स्वामी अग्निवेश—सभी तो मौजूद थे. और जब इतनी जमात जुट जाए तो फिर राजनेता कैसे दूर रहते, सो विद्याचरण शुक्ल और मेनका गांधी भी थे.

लेकिन इन लोगों के जमावड़े ने जो उपलब्धि हासिल की वह और भी महत्वपूर्ण थी. इन्होंने 'विनाशकारी विकास' की ओर पूरी दुनिया का ध्यान खींचा और मध्य प्रदेश के अनजान-से कस्बे हरसूद (आबादी: 18,000) को दुनिया भर के पर्यावरण-वादियों के जेहन में बिठा दिया.

इस कस्बे को चुना भी इसीलिए गया था क्योंकि यह जल्दी ही विश्व के सबसे बड़े मानव निर्मित झील के अंदर समा जाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्मदा घाटी के वनवासी: विरोध

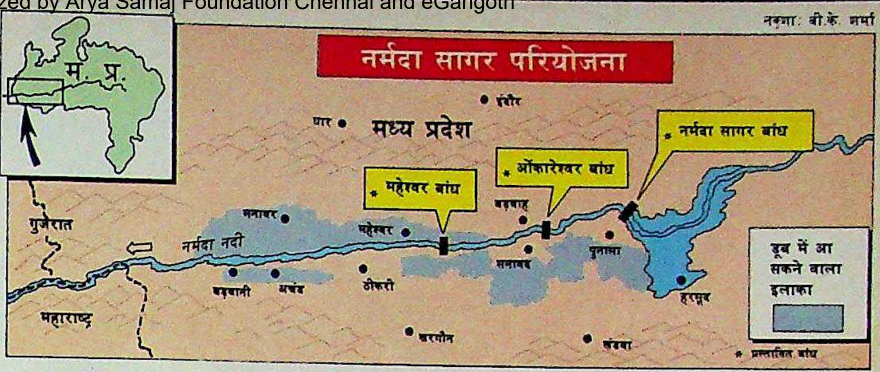

है. यह झील नर्मदा घाटी परियोजना के तहत बननी है. स्थानीय लोगों को संगठित करने के काम में जुटे शांतिनाथ सारंगी कहते हैं, "आज हम जिस जगह खड़े हैं, यहां 50 फीट ऊंचा पानी होगा." मध्य प्रदेश और गुजरात में नर्मदा पर बनने वाले दो विशालकाय बांधों से 4,000 हेक्टेयर में फैले सागौन के वन और 84,000 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि डूब जाएगी और दो लाख लोग बेघर होंगे.

लेकिन हरसूद के जमावड़े से एक बहुत बड़ा संदेश भी निकला कि देश में पर्यावरण आंदोलन महत्वपूर्ण दौर में पहुंच चुका है और वह मजबूत होता जा रहा है. हरसूद रैली का आयोजन सौ से अधिक पर्यावरणवादियों और सामाजिक संगठनों ने मिलजुलकर किया था. कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इसका सक्रिय समर्थन किया था. पर्यावरण से जुड़े मुद्दे पर यह देश में अब तक का सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन था.

इसका विचार पिछले साल बाबा आमटे के आनंदवन में, जहां कुष्ठरोगियों का उनका आश्रम है, आया था. बाबा आमटे कहते हैं, "ऐसा मोर्चा बनाने का उपयुक्त समय आ गया है जो एक 'दबाव गुट' के रूप में काम करेगा और राजनैतिक दलों पर दबाव डालेगा कि वे पर्यावरण के नाश तथा तथाकथित विकास योजनाओं से लाखों लोगों की परेशानियों की ओर ध्यान दें."

ग्रामीणों का उत्साह इस आयोजन में दर्शनीय था. देश भर से जुटे ये लोग अपने साथ अपने यहां की थोड़ी-थोड़ी मिट्टी लेकर आए थे जिसे मिलाकर एक स्तंभ खड़ा किया गया. यह स्तंभ देश भर के पर्यावरणप्रेमी लोगों की एकजुटता का नमूना बना. रैली के बाद हजारों लोगों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़कर एक मानव कड़ी बनाकर हरसूद कस्बे को घेर लिया.

इस पूरे आयोजन पर निश्चित रूप से बाबा आमटे का व्यक्तित्व सबसे अधिक छाया रहा. कुष्ठपीड़ित वनवासियों की सेवा के लिए विख्यात बाबा आमटे की एक बांह हफ्ते भर पहले ही टूटी थी. फिर भी वे एंबुलेंस में ही 600 किमी की सवारी करके हरसूद पहुंचे थे. रीढ की हड्डी की परेशानी के चलते उन्हें वैसे भी लेटे या खड़े ही रहना पड़ता है. उन्हें खाट पर लादकर मंच पर लाया गया और खाट से ही उन्होंने जब अपनी प्रतिज्ञा की घोषणा की, "जब तक मेरी सांस चल रही है तब तक मैं आपके साथ हूं. इस बांध को बनने नहीं दिया जाएगा."

सबसे अधिक उत्तेजक भाषण शबाना आजमी ने दिया. उन्होंने कहा, "क्या शहरी लोगों को ग्रामीणों की तुलना में जीने का

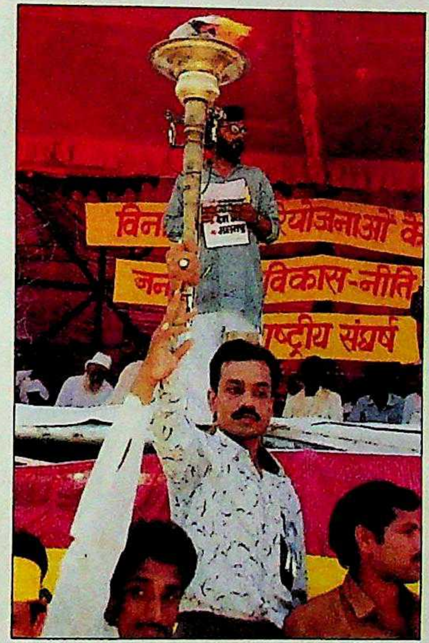

मशाल जुलूस; (नीचे) आमटे, बहुगुणा, शबाना और पाटकर

अधिक हक है? हरसूद के लोगों के रहने की एक ही जगह है और वह है हरसूद." कुमाऊं-गढ़वाल में चिपको आंदोलन के अगुआ रहे सुंदरलाल बहुगुणा भी अपनी सदाबहार मुद्रा में दिखे. उन्होंने कहा, "मैं आप लोगों के लिए हिमालय का संदेश लाया हूं." उनका संदेश: उपभोक्तावाद हर जगह प्रकृति को बरबाद कर रहा है.

इस आयोजन में जुटे अन्य प्रमुख लोगों में 87 वर्षीय कन्नड लेखक शिवराम कारंत भी थे. यह बुजुर्ग और प्रतिष्ठित लेखक पश्चिमी घाट के शोला वनों को बचाने के संघर्ष में सक्रिय रूप से जुड़ा है. बंधुआ मजदूरों में काम करने वाले स्वामी अग्निवेश भी अपने भगवा वस्त्रों के कारण सबका ध्यान खींच रहे थे. नर्मदा घाटी परियोजना के खिलाफ संघर्ष की अगुआई करने वालों में से एक मेधा पाटकर तो मौजूद थीं ही, राजस्थान के वनवासियों के बीच काम करने वाली श्रीलता स्वामीनाथन भी अपने इलाके के 30 वनवासी गांवों के डूबने के खिलाफ अपनी नाराजगी जताने आई थीं. उनका कहना था कि "उदयपुर के

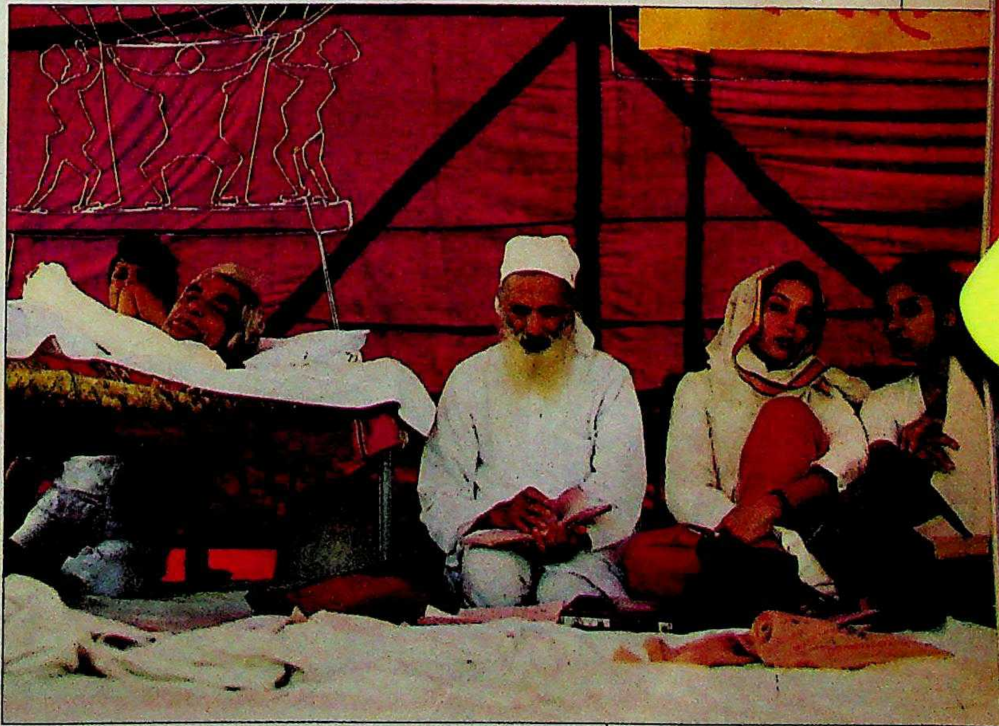

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीरों के लॉन के लिए जो पानी लाया जा रहा है उसी से ये गांव डूब रहे हैं.''

लेकिन इस तथाकथित विकास के असर के बारे में उन ग्रामीणों की बातें ही सबसे भावनापूर्ण थीं, जिन्हें बोलने के लिए मंच पर बुलाया गया. हरसूद के मजदूर 50 वर्षीय सेतुन अपा ने कहा, ''मैं हरसूद नहीं छोड़ना चाहता. मैं इसी जमीन पर अंतिम सांस लेना चाहता हूं. किसी सरकार को हमें बेघर करने का हक नहीं.''

पर्यावरणवादियों ने इस आयोजन में राजनेताओं की मौजूदगी पर आपत्ति की. मेधा पाटकर ने विद्याचरण शुक्ल से कहा, ''हम नहीं चाहते कि नेता लोग यहां आएं.'' बहुगुणा ने तो धमकी दे दी कि अगर शुक्ल या मेनका गांधी ने रैली को संबोधित किया तो वे मंच से उतर जाएंगे. सभा से बाहर निकलने के पहले मेनका ने कहा, ''स्पष्ट रूप से आंदोलन वामपंथी बुद्धिजीवियों के हाथ में चला गया है और मुझे संदेह है कि ये लोग अपने बूते सफलता हासिल कर लेंगे.''

आंदोलन सफल होगा या नहीं इस बात को छोड़ दें तो भी यह साफ है कि इसका वक्त आ गया है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

बड़ी सिंचाई परियोजनाएं

पानी में गया पैसा

पिछले 16 साल से हम पैसा खपाते आ रहे हैं. बदले में लोगों को कुछ नहीं मिला—न सिंचाई सुविधाएं, न पानी, न पैदावार में वृद्धि और न रोजमर्रा जिंदगी में कोई सहूलियतें.'' यह किसी विपक्षी नेता का सरकार के खिलाफ विषवमन नहीं बल्कि खुद प्रधानमंत्री द्वारा इस कड़वे सच की स्वीकारोक्ति है कि महंगी और भारी-भरकम सिंचाई परियोजनाओं पर आधारित सिंचाई नीति बुरी तरह नाकाम हो चुकी है. इनके फायदे तो विवादास्पद हैं ही, घाटा भी भारी-भरकम है और इनके चलते पर्यावरण संबंधी कई प्रकार के खतरे खड़े हो गए हैं.

महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इन प्रमुख परियोजनाओं की आलोचना का पुख्ता आर्थिक आधार भी है. भारत ने पिछले चार दशकों में 804 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई के लिए 33,771 करोड़ रु. खर्च किए हैं. पर सरकारी आंकड़े भी कागजों पर इन परियोजनाओं की क्षमताओं और सिंचाई सुविधाओं के वास्तविक उपयोग में अंतर होने की बात मानते हैं. सिंचाई नीति के निष्प्रभावी रहने का अंदाज तो इसी तथ्य से मिल जाता है कि खेती लायक 1,040 लाख हेक्टेयर भूमि का 59 फीसदी हिस्सा अभी भी असिंचित है.

फिलहाल सिंचित क्षेत्र की करीब 90 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई सुविधाओं का कोई मतलब नहीं क्योंकि राज्य सरकारें इसे सही ढंग से समतल नहीं करवा सकी हैं. योजना आयोग के सलाहकार (सिंचाई) सी.जी. देसाई के अनुसार, ''परियोजना पूरी हो जाने के बाद भी हम किसी किसान को यह बताने की स्थिति में नहीं होते कि उसका खेत सिंचित क्षेत्र में आएगा या नहीं.''

जिन खेतों को करीब 40,000 रु. प्रति हेक्टेयर खर्च से सींचा जा रहा है, वहां भी पैदावार 1,700 किलो है जो कि अनुमानित 5,000 किलो से बहुत कम है. बदतर तो यह है कि सिंचित क्षेत्रों की पैदावार लगातार घट रही है. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक आई.पी. अबरोल बताते हैं, ''सिंचित क्षेत्र की 90 फीसदी भूमि पर पैदावार तो अनुमान से आधी हो रही

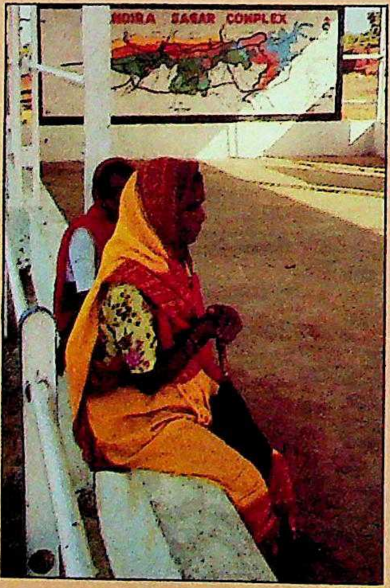

बांध स्थलः किसका फायदा

है.'' पैदावार में कमी की मुख्य वजह मिट्टी की परतें जमना और दलदली जमीन हो जाना है. इससे 10 फीसदी सिंचित जमीन बेकार हो गई है.

देश में 182 सिंचाई परियोजनाएं अधूरी पड़ी हैं. कुछ तो पहली पंचवर्षीय योजना के समय से ही पैसा निगलती आ रही है. 1959 में नागार्जुन सागर परियोजना, 1960 में गंडक परियोजना और 1970 में शुरू हुई इंदिरा गांधी नहर परियोजना इसके बड़े उदाहरण हैं. ये सभी परियोजनाएं देरी और लागत वृद्धि के दुष्चक्र में फंस गई दिखती हैं.

सिंचाई क्षेत्र अब जनता के पैसे पर जीने वाला परजीवी बन चुका है. चालू योजना के पहले तीन साल में ही इसका घाटा 1,757 करोड़ रु. तक पहुंच चुका है. शुरुआती निवेश की अवस्था में हुए खर्चों के अलावा सरकार इसे कई तरह की रियायतें देती हैं. फिर भी एक हेक्टेयर भूमि की सिंचाई का रोजाना औसतन खर्च 3,250 रु. बैठता है. इसमें किसान सिर्फ 100 रु. देता है और बाकी सरकार को झेलना पड़ता है.

बड़ी सिंचाई योजनाओं से फैली निराशा के बाद अब विकल्पों की खोज होने लगी है. अबरोल का सुझाव है, ''ट्यूबवेल और सिंचाई के दूसरे परंपरागत तरीके पर्यावरण के हिसाब से सुरक्षित हैं और आर्थिक रूप से भी बेहतर हैं.'' जाने-माने मृदा शास्त्री एस.एस. खन्ना बताते हैं, ''बड़ी परियोजनाओं से प्रति हेक्टेयर सिंचाई की लागत 40,000 रु. आती है जबकि छोटे स्तर पर यही काम 8,000 रु. में ही किया जा सकता है.'' अगर इसमें दलदली जमीन से पानी निकालने का खर्चा भी जोड़ दिया जाए तो बड़ी परियोजनाओं की लागत और भी बढ़ जाएगी. केंद्रीय क्षारीय मृदा शोध संस्थान के अनुसार यह लागत 25,000 रु. प्रति हेक्टेयर के करीब बैठती है.

पर सभी अर्थशास्त्री बड़ी और छोटी सिंचाई परियोजनाओं के इस अंतर को नहीं मानते. योजना आयोग के पूर्व सदस्य सी.एच. हनुमंतराव के अनुसार, ''इनमें कोई विरोधाभास नहीं है. दरअसल बड़ी, मझोली और छोटी सिंचाई परियोजनाओं के बढ़िया संयोजन की जरूरत है.''

सिंचाई नीति पर कई मूलभूत सवाल खड़े किए जा रहे हैं पर सरकार अपने लक्ष्य से नहीं हट रही. वह सन् 2001 तक 1,00,000 करोड़ रु. की लागत से 1,130 लाख हेक्टेयर जमीन सिंचाई की क्षमता विकसित करना चाहती है. समस्या यह है कि आज किया गया फैसला भविष्य में ऐसा आर्थिक और पर्यावरणीय संकट बन सकता है जिसका रुख पलटा नहीं जा सकेगा.

—सुधीरेंद्र शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"**प्र**शिक्षित जनशक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे कीमती सम्पत्ति होती है, सोने, चांदी और धन से भी ज्यादा कीमती।"

जवाहरलाल नेहरू

महानगर टेलीफोन निगम में सघन प्रशिक्षण जीवन का अभिन्न अंग बन गया है, जिससे हमें अपनी व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने और मानवीय प्रतिभा निखारने में मदद मिलती है।

- **हाई-टैक प्रशिक्षण देने के लिए ज़िला और क्षेत्रीय दूर संचार केन्द्र**
  दूर संचार टैक्नॉलॉजी में तकनीकी दक्षता बढ़ाना ही इसका उद्देश्य है।
- **प्रशिक्षण परियोजनाओं के ज़रिए करीब 5000 टेलीफोन ऑपरेटरों/निरीक्षकों को लाभ**
  अन्तर्राष्ट्रीय ट्रंक एक्सचेंजों और विशेष सेवाओं (197,198 और 199) की कार्यकुशलता बढ़ाने और बेहतर प्रदर्शन के लिए मानव संसाधनों का विकास हो रहा है।
- **मानव संसाधन विकास के 73 कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न स्तरों पर 1875 कर्मचारियों को लाभ**
  इससे व्यवहार संबंधी और प्रेरणात्मक प्रशिक्षण के जरिए दृष्टिकोण बदल रहा है।
- **कुशल श्रमशक्ति के लिए नियोजन**
  मौजूदा अकुशल श्रमिकों को प्रशिक्षण देकर लगातार उनकी योग्यता बढ़ाई जाएगी, ताकि वे दिनों-दिन बढ़ती दूर संचार सेवाओं को कारगर ढंग से चला सकें।
- **व्यावसायिक संगठनात्मक ढांचा**
  इससे ग्राहकों की संतुष्टि के लिए सम्पूर्ण कार्यकुशलता सुनिश्चित हुई है।
- **उत्पादकता से जुड़ी प्रोत्साहन योजना**
  ट्रंक एक्सचेंजों और विशेष सेवाओं में बढ़ती कार्यकुशलता इसी योजना का परिणाम है।
- **नई कार्य संस्कृति, नई कार्य शैली**
  पुरानी प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है, और विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया से सेवाओं में सुधार हुआ है।

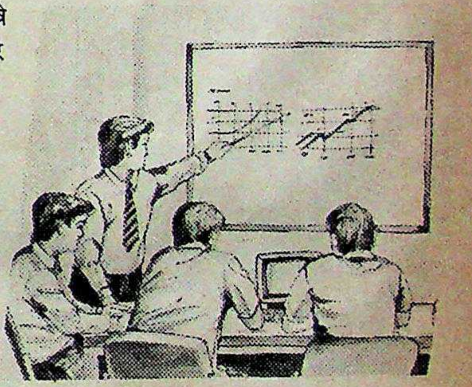

महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड में दृष्टिकोण बदलने और नई कार्य शैली से संगठन को विश्व स्तर की दूर संचार सेवाएं प्रदान करने की प्रेरणा मिल रही है।

महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
MAHANAGAR TELEPHONE NIGAM LIMITED
(A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

जवाहरलाल नेहरू जन्मशती
JAWAHARLAL NEHRU CENTENARY
1889 1989

हम नेहरू की दृष्टि के अनुगामी हैं,
जो हमें शक्ति देती है।

Sista's-MTNL-308/89HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बच्चे के लिए गढ़िए सुरक्षित भविष्य

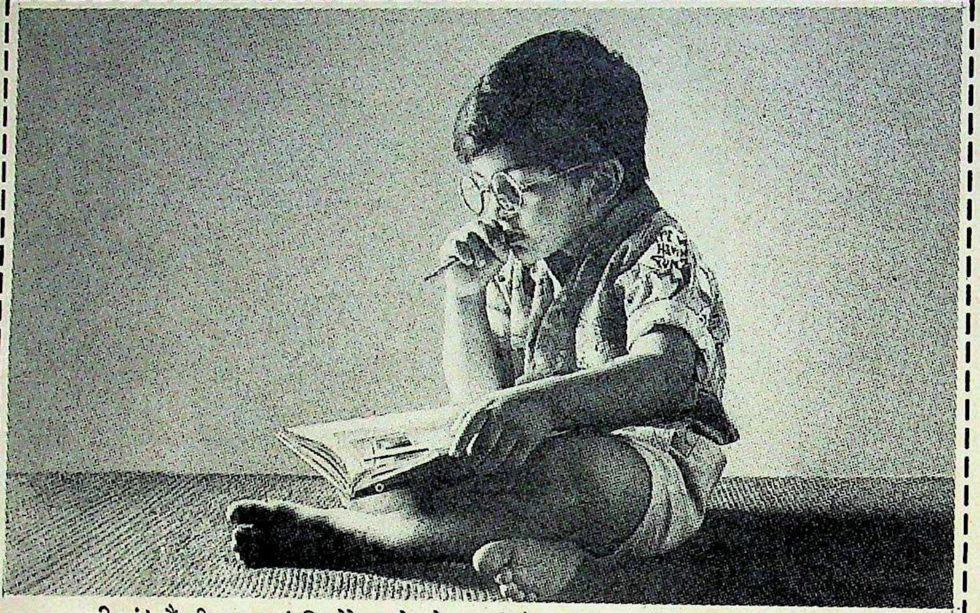

जी हां! मैं भी चाहता हूं कि मेरे बच्चे को अच्छी से अच्छी, ऊंची से ऊंची शिक्षा मिले. कृपया मुझे अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस की **बाल कल्याण योजना** के विवरण भेजें.

नाम : ....

पता : ....

....

अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस
प्रस्तुत करते हैं
विवेकपूर्ण पूंजी-निवेश की योजनाएं

कई आकर्षक विकल्प

- अतिरिक्त मासिक आय योजना
- कम पूंजी-निवेश योजना
- अधिक आमदनी योजना
- सुखी सेवानिवृत-जीवन योजना
- आकस्मिक ऋण सुविधा
- आसान खरीदारी की सुविधा

अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िसः सुदर्शन बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, ८६, चेमियर्स रोड, मद्रास ६०० ०१८

इलेक्ट्रिक मैंशन, अप्पा साहेब मराठे मार्ग, दूसरी मंज़िल, प्रभादेवी, बम्बई ४०० ०२५

फ़ोनः ४३०५०९३/४३०५०७६/४३०५४६०

नं. ९/११, आशीर्वाद बिल्डिंग, कोचरब आश्रम के सामने, एलिस ब्रिज, अहमदाबाद ३८० ००६

सभी प्रमुख दलालों के पास आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और स्वीकार किए जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखी प्रतिक्रियाएं

पिछले जून में अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि द्वारा भारत के खिलाफ प्रतिबंधात्मक व्यापार कानून 'सुपर 301' के तहत कार्रवाई करने की धमकी पर उसे कुछ अनोखी प्रतिक्रियाएं मिली हैं. केटरपिलर इनकार्पोरेटेड ने अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि से अनुरोध भी किया है कि उसके सामान को प्रतिबंध वाली सूची से बाहर ही रखा जाए. कॉलगेट पामोलिव ने कहा है कि भारत ने विदेशी प्रभुत्व वाली कंपनियों के साथ कोई भेदभाव नहीं बरता सो, प्रतिबंध की धमकी देकर उसे बदले की कार्रवाई के लिए न उकसाया जाए. पर अमेरिकी फैसले के इस विरोध अभियान में उसका एक समर्थक भी मौजूद है. भारत में दवा का कारखाना लगाने के लिए आठ वर्षों तक भागदौड़ करके निराश हुआ एक आप्रवासी भारतीय अमेरिका में भारतीय सामान के आयात पर अधिक शुल्क लगवाना चाहता है.

कार्ड डालो, पैसा निकालो

देश के बैंकों में आजकल एक नई सुविधा शुरू करने की होड़ लगी है. ऑटोमेटेड टेलर मशीन (एटीएम) रूपी यह सुविधा हो जाने से ग्राहक बैंक में आकर मशीन में अपना कार्ड डालेंगे और पैसा लेकर चलते बनेंगे. इंडियन बैंक ने पिछले पखवाड़े ऐसी एक मशीन मद्रास में लगवाई. साल भर पहले उसने रिजर्व बैंक से ऐसी 125 मशीनें लगवाने की इजाजत ले ली थी. विजया बैंक ने भी ऐसी ही एक मशीन बंगलूर में लगवाने में दिलचस्पी दिखाई है. लेकिन इन मशीनों को लेकर सरकारी हलकों में कुछ संदेह है. कुछ महीने पहले रिजर्व बैंक की एक समिति ने सुझाव दिया था कि बैंक इन मशीनों को न लगाएं (क्योंकि इन्हें मंगाने में काफी विदेशी मुद्रा खर्च होती है). फिर भी सरकार ने मद्रास स्थित एचएमए डाटा सिस्टम्स को, जिसने इंडियन बैंक (मद्रास) में एएमटी मशीन लगाई है, इन मशीनों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया है. बंबई की वेलमैन हिंदुस्तान कंपनी को भी एएमटी मशीन बनाने की अनुमति मिल चुकी है.

आलीशान करार

उद्योगपति सतीश कुमार मोदी ने एक ऐसा सौदा किया है जिससे सरकार के ऊंचे हलकों में खुशी की लहर दौड़ गई है. पिछली मई में मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के बड़े भाई प्रेस्कॉट एस. बुश (जूनियर) की अध्यक्षता वाली कंपनी बुश रिसोर्सेज इनकार्पोरेटेड के साथ दिल्ली में 90 करोड़ रु. की लागत से हाउसिंग कांप्लेक्स बनाने का करार किया है. इस योजना के तहत दिल्ली में आप्रवासी भारतीयों के लिए 180 खूबसूरत बंगले बनाए जाएंगे जो 34 लाख से लेकर 58 लाख रु. तक में बिकेंगे. यह भुगतान विदेशी मुद्रा में होगा. पिछले पखवाड़े मोदी ओवरसीज ने बुश रिसोर्सेज द्वारा तैयार योजना को मंजूरी के लिए दिल्ली प्रशासन के पास भेजा. इसके लिए पालम हवाई अड्डे के पास जमीन ली जाएगी. मोदी को उम्मीद है कि अगले साल के शुरू तक निर्माण कार्य भी शुरू हो जाएगा.

सितारों से हटकर

होटलों की प्रतिष्ठा को सितारों से जोड़ने की होड़ शायद समाप्त होने वाली है. पर्यटन विभाग की एक समिति होटलों का वर्गीकरण सितारों की जगह डीलक्स, फर्स्ट क्लास, स्टैंडर्ड और प्लेन बजट के तहत करने की सोच रही है. इससे कई पांच सितारा होटल डीलक्स वर्ग में आ जाएंगे जबकि दूसरे पांच सितारा और सभी चार सितारा होटल फर्स्ट क्लास श्रेणी में. तीन व चार सितारा होटल बजट वर्ग में होंगे.

बढ़ता अंतर

पिछले कुछ महीनों के दौरान विदेशी मुद्रा की अधिकृत दर और हवाला दर के बीच अंतर बढ़ता आया है. डॉलर की हवाला दर इस साल जनवरी से अप्रैल के बीच 18 रु. के आसपास थी जबकि जून और जुलाई में यह 21 रु. हो गई (देखें चार्ट). उधर, जनवरी से अप्रैल के बीच अधिकृत दर 15 से 16 रु. हो गई

चार्ट: बी.के. शर्मा

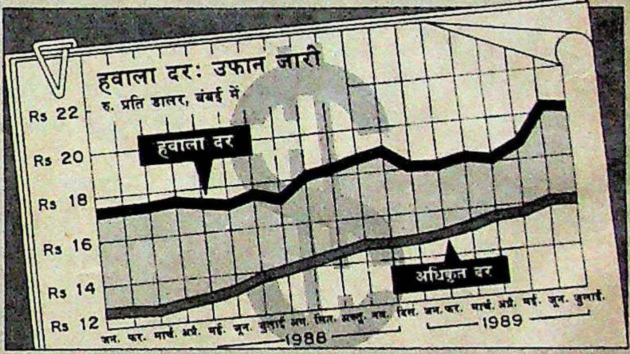

पर जुलाई तक यह 16 रु. से थोड़ी ही ऊपर पहुंची. जाहिर है अवैध विदेशी मुद्रा की मांग अचानक बहुत बढ़ गई है. सरकारी सूत्र इसका कारण सोने और चांदी की तस्करी में वृद्धि (इन्हें लेने के लिए अधिक विदेशी मुद्रा देनी पड़ती है) और व्यापारियों द्वारा बीजकों में हेराफेरी करना बताते हैं. दूसरे लोग इसकी वजह आगामी चुनाव बताते है. पिछले चुनाव से पहले विदेश में कुछ लोगों ने विदेशी मुद्रा का भंडार जमा कर लिया था जिसे रुपए में बदलकर मनपसंद लोगों और पार्टियों को दिया गया था.

तेजी का ताजा नमूना

तेजी से काम करने वाली सरकार का एक और नमूना सामने आया है. 1986 में केंद्र ने दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास केंद्रीय उत्पाद कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड के दफ्तर का निर्माण करने के लिए 2.96 करोड़ रु. मंजूर किए थे. लेकिन तभी कई विवाद उठ खड़े हुए. पहला विवाद प्रस्तावित इमारत की ऊंचाई का था. यह मसला सुलझा. फिर जमीन के शुल्क का विवाद उठा. इसके बाद प्राधिकरण ने अपना निर्माण का काम ठेकेदारों से कराना चाहा. पर सीमा शुल्क विभाग यह काम केंद्रीय लोक निर्माण विभाग को दिलाना चाहता था और जीत उसी की हुई. अंततः सीमा शुल्क बोर्ड के वित्तीय सलाहकार ने इमारत के फर्श में संगमरमर लगाने पर आपत्ति की. इन विवादों का नतीजा यह हुआ है कि इमारत की लागत 2.96 करोड़ रु. से बढ़कर 5 करोड़ रु. तक पहुंच गई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना करें अगर पुमाप्लाई को २००° सेंटीग्रेड तापमान में एक घंटे तक ओवन के भीतर रख दिया जाये तो क्या होगा ?

100°C

200°C

इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। जी हां – कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

पानी १००°सेंटीग्रेड पर उबलने लगता है ।

पुमाप्लाई इससे कहीं अधिक–बहुत अधिक तापमान सहन कर सकता है ।

क्योंकि यह १००% हीट रेज़िसटेंट है ।

जरा गौर कीजिये, आपके किचन केबिनेटों के लिए यह कितना उपयुक्त प्लाइवुड है जो कि चूल्हा, प्रेशरकूकर, टोस्टर और रोज़-२ तलने व रसोई बनाने के काम से पैदा होने वाली गर्मी का लगातार मुकाबला करते रहते हैं ।

सिर्फ यही नहीं, पुमाप्लाई दीमक प्रतिरोधक भी है ।

इसीलिए पुमाप्लाई आपके घर और ऑफिस के लिए एक आदर्श प्लाइवुड है । जहां कहीं भी टिकाऊपन चाहिए, वहीं है इसकी ख़ास जरूरत ।

याद रखिये, अगली बार फर्नीचर बनवाते समय ड्यूरो-पुमाप्लाई ही लें । तब आप २००% निश्चिंत होकर कह सकेंगे कि यह वही प्लाइवुड है जो सही माने में जीवन भर साथ निभाने में सक्षम है ।

DURO पुमाप्लाई (TM)

ड्यूरोबोर्ड निर्माता का एक अनोखा उत्पादन

जीवनभर साथ निभाये !

सारदा प्लाइवुड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
कलकत्ता • दिल्ली • बम्बई • अहमदाबाद • मद्रास • बंगलौर

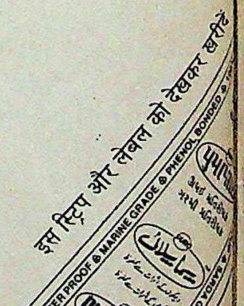

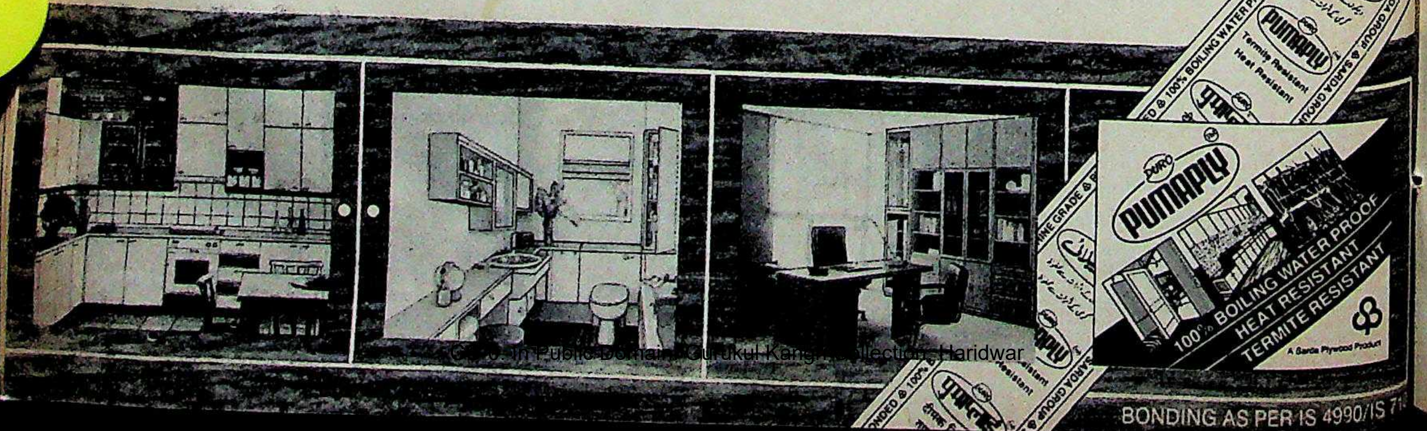

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

चुनावी परछाइयां

हालत पहले से सुधरी

सितंबर के शुरू से शेयर मूल्यों में उठापटक का जो दौर शुरू हुआ है, उसके स्थिर होने के संकेत नहीं दिखते. पिछले पखवाड़े एक महानिर्गम के खुलने के बावजूद यह उठापटक जारी ही रही. लेकिन देश के शेयर बाजारों का रुख सावधानी भरा होने पर भी आशावादी था. कंपनियों के कर्ताधर्ता आत्मविश्वास में दिख रहे थे पर निवेशक चौकन्ने थे.

शेयर बाजार की यह स्थिति शेयर मूल्य सूचकांक से भी झलकती है. सितंबर के आखिर तक इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक 389.1 अंकों तक आकर 7 सितंबर वाले 391.5 के पास पहुंच गया था. 5 अक्तूबर को यह 384.6 पर बंद हुआ जबकि 25 सितंबर को यह गिरते-गिरते 380.7 तक आ गया था. बंबई शेयर बाजार के 100 शेयरों वाले सूचकांक और सबसे प्रमुख शेयर, टाटा स्टील ने भी इसी तरह की उठापटक देखी.

चार्ट: बी.के. शर्मा

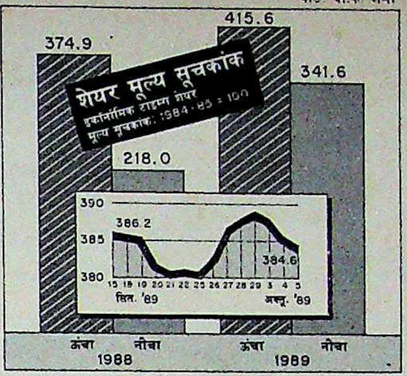

इस्पात उद्योग को नियंत्रण से मुक्त करने की सरकारी कोशिश की अफवाह से टाटा स्टील के शेयर 22 सितंबर से 29 सितंबर के बीच 100 रु. चढ़ गए. इस दौरान इनकी कीमत 1191.50 रु. से बढ़कर 1290 रु. हो गई. और जब यह स्पष्ट हो गया कि सरकार चुनाव से पहले इस्पात उद्योग से संबंधित कोई बड़ा फैसला लेने नहीं जा रही है तो ये शेयर 4 अक्तूबर को 1225 रु. पर स्थिर हुए.

निवेशकों में बहुत उत्साह नहीं था पर नए शेयर और ऋणपत्रों के बाजार में जरूर काफी उत्साह था. कानूनी विवाद में फंसने के बावजूद लार्सन ऐंड टुब्रो का पहला महानिर्गम सफल रहा. इसके बाद उषा रेक्टिफायर्स और बिड़ला एग्रो केमिकल्स के सार्वजनिक निर्गम आते हैं.

नए निर्गमों के मामले में उत्साह का शेयर बाजार पर भी अप्रत्यक्ष असर पड़ा और कुछ प्रमुख शेयरों के भाव चढ़े. रिलायंस, एसीसी और टेल्को जैसे शेयर हाल के दिनों में थोड़े मंद पड़ गए थे. यह तेजी एसीसी के अध्यक्ष की घोषणा के बाद आई. कंपनी को पिछले साल घाटा हुआ था जबकि अध्यक्ष ने आगे के लिए बड़ी उम्मीद भरी घोषणाएं कीं.

शेयर मूल्यों में चाहे जो उठापटक चले, बाजार में भले ही निराशा हो, इतना स्पष्ट है कि बाजार आज पिछले वर्ष की तुलना में बहुत बढ़िया हालत में है. 1988 में इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक अधिकतम 374.9 अंकों तक चढ़ा था जबकि वह 218 अंकों तक नीचे भी आ गया था. इसके विपरीत इस वर्ष अक्तूबर के शुरू का सूचकांक पिछले वर्ष के उच्चतम स्तर से भी 10 अंक ऊंचा है.

लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि क्या अस्थिरता का यह दौर समाप्त होगा? अभी तो दोनों ही तरह की संभावनाएं दिख रही हैं. लेकिन बाजार पर जिस तरह चुनाव की परछाइयां पड़ने लगी हैं, उनसे कोई भी भविष्यवाणी कर पाना मुश्किल हो गया है.

जमा स्टॉक

	1989 ऊंचा	1989 नीचा	बंद 5.10.89	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	84.00	61.00	76.00	2.00 +
एसोसिएटेड सीमेंट	345.00	230.00	268.00	4.00 +
एशियन पेंट्स	226.25	165.00	205.00	5.00 +
एटलस कोप्को	53.00	32.00	41.00	2.50 +
बजाज ऑटो	450.00	290.00	302.50	3.75 −
बड़ौदा रेयॉन	755.00	285.00	702.50	27.50 −
बाटा इंडिया	89.00	60.00	66.00	0.50 −
बेयर	910.00	580.00	730.00	10.00 −
भारत फोर्ज	202.50	68.75	71.25	6.25 −
बिरला जूट	73.75	41.50	51.50	1.00 +
बॉम्बे डाइंग	162.00	104.00	127.00	1.00 +
ब्रिटानिया इंडिया	120.00	89.00	111.00	1.00 +
बुक बांड	155.00	75.00	91.00	5.00 +
सेंचुरी स्पिनिंग	2240.00	1230.00	2155.00	25.00 −
फ्लोराइड इंडिया	88.50	72.00	84.00	1.00 +
कोलगेट पामो	371.25	162.50	178.75	6.25 +
सायनामिड	92.00	55.00	82:50	4.50 +
डीसीएम	85.00	31.00	58.00	3.00 +
डनलप	95.50	70.00	73.00	2.00 −
ईआई होटल्स	68.00	50.00	60.00	1.50 +
एस्कार्ट्स	84.00	58.00	80.00	1.50 −
फिनोलेक्स केबल्स	430.00	290.00	310.00	10.00 +
फूड स्पेशिलिटीज	224.00	154.00	161.00	1.00 +
गरवारे नाइलोन	55.50	36.00	49.50	—
जी.ई. शिपिंग	46.50	33.75	40.50	0.50 +
गुजरात स्टेट फर्टि.	177.50	123.75	162.50	2.50 −
ग्लासिम इंडिया	137.00	75.00	101.00	4.00 −
हिंदु. एल्यूमिनियम	327.50	155.00	240.00	15.00 −
हिंदु. सीबा	1090.00	600.00	970.00	110.00 +
हिंदुस्तान कोकोला	141.25	98.75	130.00	5.00 −
हिंदुस्तान लीवर	102.00	69.50	101.00	1.50 +
हिंदुस्तान मोटर्स	52.50	26.75	28.30	3.20 −
आई.सी.आई.	68.00	39.00	52.00	1.00 −
इंडियन आर्गेनिक	54.00	23.00	51.00	5.00 +
इंडियन रेयन	106.00	75.75	83.75	0.25 +
इंड्रॉल	335.00	218.75	248.75	6.25 +
इंगरसॉल-रैंड	423.75	267.50	402.50	5.00 −
आई.टी.सी.	129.00	46.25	66.00	3.00 −
जे.के. सिंथेटिक्स	92.00	66.00	73.00	3.00 −
काइनेटिक इंजी.	395.00	130.00	137.50	12.50 −
किर्लोस्कर क्युमिंस	88.75	54.50	67.50	0.50 −
केसीबी पंप्स	445.00	187.50	192.50	2.50 −
लारसन-टुब्रो	128.00	81.50	100.00	1.50 −
लिप्टन	88.75	65.00	87.50	10.00 +
लोहिया-मशीन्स	28.00	12.50	17.00	1.00 −
मदुरा कोट्स	104.00	92.25	100.00	—
महिंद्रा-महिंद्रा	113.50	76.50	94.00	1.00 +
मिल्क फूड	300.00	180.00	220.00	2.50 −
मोटर इंडस्ट्रीज	695.00	560.00	660.00	40.00 +
मुकुंद लिमि.	140.50	75.00	134.00	3.50 +
नेशनल आर्गेनिक	1180.00	710.00	1065.00	15.00 +
निरलॉन	17.00	8.00	14.00	2.75 +
ओरके सिल्क मिल्स	29.00	13.50	17.50	2.00 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	30.50	16.50	24.25	0.25 +
फाईजर	80.00	58.00	74.00	9.00 +
पांड्स	212.50	151.25	173.75	7.75 +
प्रीमियर ऑटो	68.00	40.00	58.50	0.50 −
रेमंड	85.00	65.50	73.50	2.75 −
रिलायंस इंडस्ट्रीज	158.00	99.50	101.50	0.50 −
सीमेंस इंडिया	95.00	65.00	76.00	1.00 −
शॉ वैलेस	103.25	62.00	91.00	3.50 −
श्रीराम फाइबर्स	94.00	55.00	60.00	2.00 +
एसकेएफ बेयरिंग्स	3020.00	1140.00	1260.00	30.00 +
स्पिक	67.00	39.00	49.00	1.25 +
टाटा स्टील	1580.00	1062.50	1195.00	18.75 −
टेल्को	1075.00	657.50	1011.25	12.50 +
वाम ओर्गनिक	178.00	136.00	160.00	5.00 −
वीडियोकोन	172.50	55.00	165.00	12.50 +
वोल्टास	1000.00	470.00	920.00	30.00 −
विमको	32.00	15.00	17.75	1.50 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	[illegible]	[illegible]
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.1066	12.9631
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	1.2845	1.2706
बहरीन	दीनार	1	44.4568	44.3028
बांग्लादेश	टका	100	52.9628	52.8312
कनाडा	डालर	1	14.3858	14.2354
डेनमार्क	क्रोना	1	2.3108	2.2869
मिस्र	पौंड	1	6.2000	6.0000
फ्रांस	फ्रैंक	1	2.6954	2.2724
हांगकांग	डालर	1	2.1646	2.1426
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.0958	0.9000
ईरान	रियाल	100	23.2600	23.1628
इटली	लीरा	100	1.2302	1.2170
जापान	येन	100	12.1655	11.8624
केन्या	शिलिंग	1	0.7528	0.7000
कुवैत	दीनार	1	54.2696	54.1608
मलेशिया	डालर	1	6.2783	6.2130
मारीशस	रुपया	1	1.0620	1.0000
नेपाल	रुपया	1	0.6000	0.5823
हालैंड	गिल्डर	1	7.9659	7.8823
पाकिस्तान	रुपया	1	0.7526	0.7000
सिंगापुर	डालर	1	8.8020	8.5114
स्पेन	पेसो	1	0.1410	0.1300
श्रीलंका	रुपया	1	0.4100	0.4000
स्वीडन	क्रोना	1	2.8282	2.6018
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	10.4142	10.3833
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1160	0.1000
थाईलैंड	बहत	100	62.1292	62.0000
ब्रिटेन	पौंड	1	27.1706	26.9197
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	16.8919	16.7224
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.55	4.50
सोवियत संघ	रूबल	1	25.7228	25.5886
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	9.1491	8.9200

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 5.10.89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

gitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

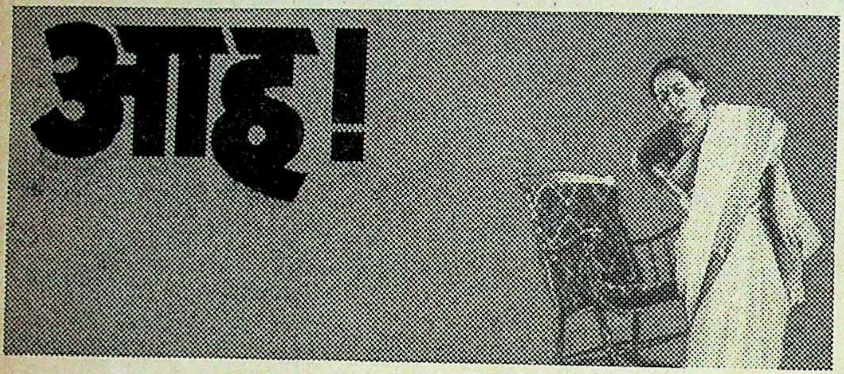

ऊह! आह! आउच! को दूर भगाइए!

बदन दर्द और पीठ दर्द पर भी उसी तरह ध्यान देने की ज़रूरत है जैसे कि मोच, पेशियों में खिंचाव और जोड़ों की जकड़न पर.

इसलिए, आयोडेक्स हमेशा अपने पास रखिए.

आयोडेक्स न सिर्फ़ दर्द से छुटकारा दिलाता है बल्कि चोट खायी कोशिकाओं को भी अच्छा करता है.

और आयोडेक्स दिन में दो बार मलें तो दुगुना फ़ायदा मिले.

इसलिए 'ऊह! आह! आउच!' को दूर भगाने के लिए आयोडेक्स लगाइए. और काम पर जाइए.

आयोडेक्स मलिए, काम पर चलिए!

आयोडेक्स®

SKF एसकेएफ का उत्पादन

HTA 8927

भरिए

यह कूपन और अपनी चहेती आवाज़ सुनिए: बच्चे की खिलखिलाहट

हंसी-खुशी और मौज-मस्ती बच्चों के लिए उतनी ही ज़रूरी हैं जितने ज़रूरी हैं खाना-पीना और हवा. और डिस्नी टुडे लेकर आया है यही मस्ती... यही मज़े.
बस तो फिर यह कूपन भर दीजिए और हर एक को खुश कर दीजिए.

आकर्षक छूट का लाभ उठाईये.

कूपन निम्नलिखित पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो.बॉ. न० 706 दिल्ली-मथुरा रोड
फ़रीदाबाद - 121 007

मुझे अपने बच्चे के लिए सबस्क्रिपशन चाहिए. यह रहा मेरा सालाना सबस्क्रिपशन ☐ हिंदी रु. 78/- ☐ अंग्रेजी रु. 96/- प्रति के लिए. मैं भुगतान चैक/मनी आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट नं. ______ द्वारा कर रहा हूँ.
कृपया प्रति निम्नलिखित नाम व पते पर भेजें:
नाम ______
उम्र ______ लिंग ______
डाक-पता ______
______
विद्यालय : ______
माता-पिता/अभिभावक के हस्ताक्षर ______
कृपया भुगतान लिबिंग मीडिया इंडिया लि० के नाम पर बनाएं.

© 1987 THE WALT DISNEY CO. USA.

DISNEY COMICS
डिस्नी टुडे

अब उपलब्ध हर पखवाड़े हिन्दी और अंग्रेज़ी में

MILESTONES/DT/114 Hin a

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

एच.के.एल. भगत

'दूरदर्शन दरअसल भारत दर्शन है'

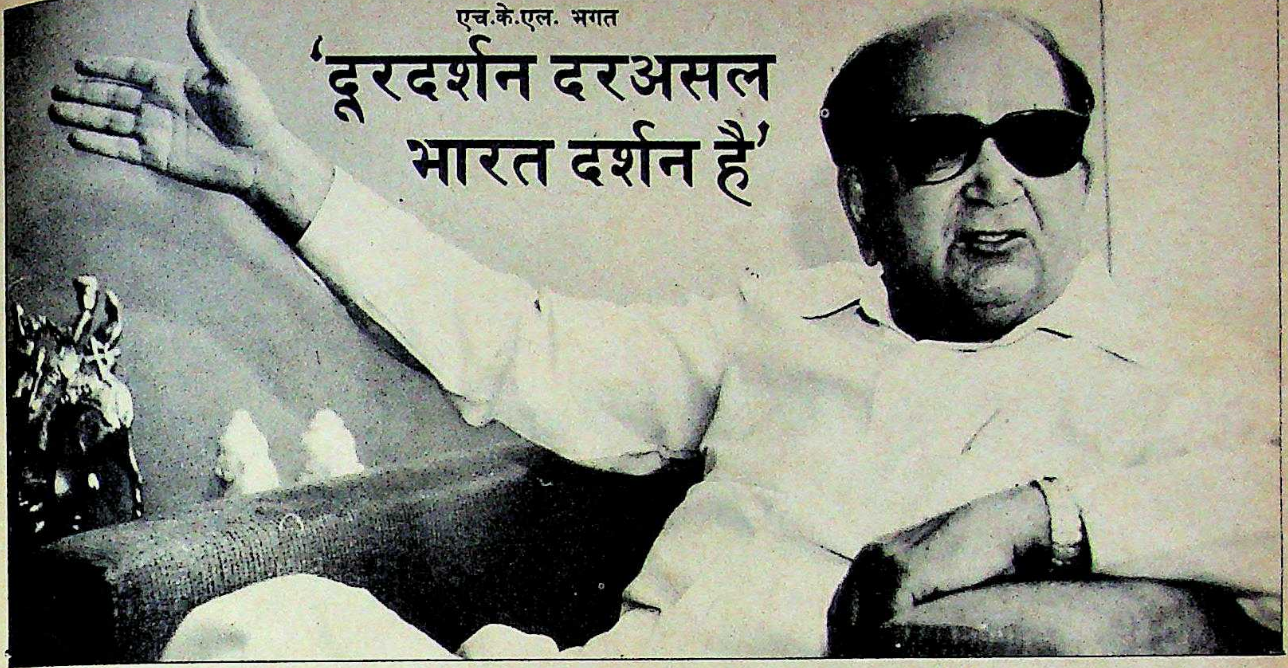

दिल्ली की राजनीति के बेताज बादशाह माने जाने वाले केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण-मंत्री हरकिशनलाल भगत कई राजनैतिक विवादों के केंद्र में रहे हैं. अब चुनाव के ठीक पहले सरकारी प्रचार माध्यमों के दुरुपयोग के आरोप से बचाने का मुश्किल काम उन्हीं के ऊपर है. विपक्ष इसे अपने चुनाव अभियान का एक प्रमुख मुद्दा बना रहा है. नेहरू-गांधी परिवार के चित्रों से सजी अपनी बैठक में उन्होंने जब वरिष्ठ संपादक ***प्रभु चावला*** *से बात की तो उनका स्वर विश्वास से भरा था. उसी के अंश:*

● **क्या आप मानते हैं कि दूरदर्शन राजीव दर्शन बन गया है?**

दूरदर्शन राजीव दर्शन नहीं है, यह भारत दर्शन है, विश्व दर्शन है. वे सिर्फ शासक दल के अध्यक्ष ही नहीं बल्कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री भी हैं. क्या हम उनके बयान और आयोजनों की अनदेखी कर सकते हैं? क्या पश्चिमी देशों में समाचार जगत मार्गरेट थैचर, जॉर्ज बुश या दूसरे शासनाध्यक्षों के बयानों और आयोजनों की उपेक्षा करता है?

● ***क्या यह सरकारी समाचार माध्यमों का दुरुपयोग नहीं है?***

हम सिर्फ सरकारी समाचार माध्यमों की बात ही क्यों कर रहे हैं. अखबार-पत्रिकाएं भी, जिन पर सरकार का नियंत्रण नहीं है, किसी दूसरे नेता की तुलना में राजीव गांधी को अधिक स्थान देती हैं. देश का ऐसा कोई प्रकाशन नहीं है जिसने उनसे इंटरव्यू का समय न मांगा हो.

● ***क्या आपको नहीं लगता कि लोकतंत्र में विपक्षी नेताओं की खबरें रेडियो-टीवी पर आने से नहीं रोकी जानी चाहिए?***

दूरदर्शन विपक्ष की उपेक्षा नहीं करता, विपक्षी मुख्यमंत्रियों को इस पर इंका के मुख्यमंत्रियों से अधिक समय मिलता है. यह खबर और उससे जुड़े आदमी के महत्व के हिसाब से चलता है.

● ***लेकिन विपक्ष की गलतियों के बारे में ही अधिक खबरें होती हैं?***

उनका झगड़ा भी तो खबर है, शायद इसी कारण ऐसा होता है. विपक्ष में कई नेता हैं इसलिए वह अधिक समय ले जाता है. एक प्रधानमंत्री और एक कांग्रेस पार्टी के मुकाबले आपको प्रधानमंत्री पद के अनेक दावेदारों और वैकल्पिक पार्टियों के बीच चुनाव तो करना ही पड़ेगा.

● ***इस सबसे आपकी पार्टी और प्रधानमंत्री की छवि खराब हुई है.***

एकदम नहीं. विपक्ष द्वारा पूरे जोर से हमला करने के बावजूद वे ही देश के सबसे लोकप्रिय नेता हैं. चाहे जितना चरित्रहनन हो, साइकिल चलाई जाए और रैलियां की जाएं उनका महत्व कम नहीं होगा.

● ***क्या आपको आकाशवाणी और दूरदर्शन की विश्वसनीयता की चिंता है?***

अगर हमारी विश्वसनीयता कम है तो वे लोग इतने परेशान क्यों हैं. हम लोग मूर्खता कर रहे हैं तो उन्हें खुश होना चाहिए. हमें ही नुकसान होगा. असलियत यह है कि वे जानते हैं कि आकाशवाणी और दूरदर्शन समाचार के सबसे विश्वसनीय स्रोत हैं. वे झूठा शोर मचाकर लोगों को गुमराह करते हैं और इसकी विश्वसनीयता खत्म करना चाहते हैं.

● ***ये दोनों शासक दल का भोंपू बन गए हैं, इस आरोप पर आप ध्यान नहीं देते.***

यह आरोप राजनीति से प्रेरित है. दरअसल सरकारी समाचार माध्यमों की विश्वसनीयता जनता शासन काल में घटी जब लालकृष्ण आडवाणी सूचना और प्रसारणमंत्री थे. दूरदर्शन पर श्रीमती गांधी के खिलाफ आरोप लगाए गए और हमारे खिलाफ दायर झूठे हलफनामों को प्रमुखता दी गई. अब उन्हीं आडवाणी से सरकारी समाचार माध्यमों की आजादी पर भाषण सुनकर बड़ा अचंभा होता है.

● ***क्या प्रधानमंत्री पर लगने वाले आरोपों का मुकाबला करने के लिए सरकारी समाचार माध्यमों को अधिक वित्तीय सहायता दी जा रही है?***

पूरा देश इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रसार बढ़ाना चाहता है, इसीलिए इस पर अधिक पैसा खर्च किया जा रहा है. लोग पिछले 40 वर्षों में हुए विकास का आनंद लेना चाहते हैं. एक भी ऐसा विपक्षी नेता नहीं है जिसने अपने इलाके में टीवी टावर लगाने की मांग नहीं की होगी.

● ***क्या इसका मतलब यह है कि सरकार पत्र-पत्रिकाओं पर वित्तीय बोझ लाद दे जिससे उनका विस्तार न हो?***

ऐसा नहीं है. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विस्तार का अखबारों पर बुरा असर नहीं हुआ है. दोनों साथ-साथ चल सकते हैं. विदेशी मुद्रा की कठिन स्थिति के चलते पत्र-पत्रिकाओं को परेशानी हो रही होगी. अखबारी कागज बनाने की लागत बढ़ गई है. लेकिन कागज की महंगाई का बोझ तो पाठकों के माथे पर ही डाल दिया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

आखिर विवादों के भंवर से बाहर

बोर्ड से दो-दो हाथ करने के बाद भारतीय टीम सचमुच का खेल खेलने को तैयार

क्रिकेट खिलाड़ियों और कंट्रोल बोर्ड का महीने भर पुराना विवाद सुलझने के साथ ही खिलाड़ियों और कप्तान के चुनाव, भुगतान, प्रतीक चिन्ह, खिलाड़ियों द्वारा स्तंभ लेखन, करार वगैरह पर विवादों और अनिश्चितता का भी अंत हो गया है. अब मामला खेल और सिर्फ खेल पर आ गया है. रन औसत, विकेट कैच, जीत-हार के मुद्दों का मौसम फिर आ गया है.

यह सत्र क्रिकेटप्रेमियों के लिए भरपूर मनोरंजन देने वाला साबित होगा. सिर्फ 21 दिनों में 24 अंतरराष्ट्रीय एकदिवसीय मैचों से अधिक और चाहिए भी क्या? पहले छह मैच तो शारजाह में होंगे जहां परंपरागत प्रतिद्वंद्वी भारत और पाकिस्तान तिकोने मुकाबले में वेस्ट इंडीज से भी भिड़ेंगे. फिर मुकाबले का दौर भारत में चल पड़ेगा जहां एमआरएफ-नेहरू विश्व कप मुकाबले में न्यूजीलैंड को छोड़कर दुनिया के दूसरे सभी प्रमुख देश जुट रहे हैं. इस आयोजन को दूसरा विश्व कप कहा जाने लगा है. राष्ट्रीय चयनकर्ता राज सिंह डूंगरपुर कहते हैं, "यह हमारे लिए सबसे व्यस्त सत्रों में से एक होगा और सबसे चुनौतीपूर्ण भी."

भारतीय क्रिकेट के कर्णधार इस चुनौती का सामना कैसे करते हैं, इस पर भी भारतीय क्रिकेट का भविष्य निर्भर करेगा. वेस्ट इंडीज और पाकिस्तान के हाथ पिटने के बाद भारतीय क्रिकेट बहुत बुरी स्थिति में है. नए कप्तान कृष्णमाचारी श्रीकांत कहते हैं, "टीम फिर से बनाने और उसका खोया आत्मविश्वास वापस दिलाने का यह हमारे लिए एक अवसर है" (देखें इंटरव्यू).

दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम में इस टीम ने अपने पांच दिन के प्रशिक्षण शिविर में जिस लगन से मेहनत की, उससे भी टीम का निश्चय झलकता है. 39 वर्षीय मोहिंदर अमरनाथ की दाढ़ी में भले ही सफेद बाल दिखने लगे हों पर उनकी चुस्ती-फुर्ती में कमी नहीं आई है. वे कहते हैं, "टीम में मेरी वापसी कितनी बार हुई, यह मैं भूल गया हूं. टीम में लौट आना बहुत अच्छा लग रहा है."

छह प्रमुख खिलाड़ी

■ **कपिल देव:** गेंदबाजी में पहले जैसी धार न रह गई हो लेकिन ज्यादा चालाकी भरी गेंदबाजी करते हैं. 137 एकदिवसीय मैचों में प्रति पारी औसत 27.26 रन बनाए और 26.85 प्रति रन के औसत पर 160 विकेट लिए.

■ **अमरनाथ:** अभी अच्छी बैटिंग कर रहे हैं पर यह भारतीय टीम में उनकी आखिरी वापसी लगती है. 60 एकदिवसीय मैचों में प्रति पारी औसत 29.86 रन बनाए और 42 रन के औसत पर 40 विकेट बटोरे हैं.

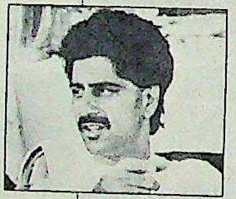

■ **श्रीकांत:** चमक जाएं तो अकेले मैच का पांसा पलट दें लेकिन भरोसा नहीं कब सस्ते में निबट जाएं. 110 एकदिवसीय मैचों में 4 शतकों के साथ औसत 29.17 रन और 16.2 के औसत पर 24 विकेट.

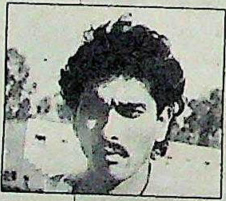

■ **रवि शास्त्री:** अभी भी बल्लेबाजी क्रम में अपना स्थान निश्चित करने में फंसे. 109 एकदिवसीय मैचों में दो शतकों समेत औसत 24.03 रन और 34.97 के औसत पर 103 विकेट.

■ **वेंगसरकर:** भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बेहतरीन पर सबसे कम चर्चित बल्लेबाज जिन्होंने 114 एकदिवसीय मैचों में 36.52 के औसत से रन बनाए हैं. इस बार मध्य क्रम की रीढ़ रहेंगे.

■ **नवजोत सिद्धू:** अगर श्रीकांत के साथ जम जाएं तो आधा काम पूरा ही मानिए. 27 एकदिवसीय मैचों का औसत 43.10 रन. लेकिन प्रारंभिक बल्लेबाज के रूप में स्थापित करने के लिए और ठोस प्रदर्शन की जरूरत.

कपिल देव आत्मविश्वास से कहते हैं, "हमें आंकने में भूल मत कीजिए. हमारी टीम बहुत जबरदस्त है." नवजोत सिंह सिद्धू, मुहम्मद अजहरुद्दीन, रवि शास्त्री और श्रीकांत चुस्ती-फुर्ती पर अधिक ध्यान दे रहे हैं. उनकी नजर एकदिवसीय मैचों के बाद पाकिस्तान में होने वाले टेस्ट मैचों की शृंखला पर भी है. किरण मोरे उत्साह में हैं. टीम के मैनेजर और पूर्व आल राउंडर चंदू बोर्डे कहते हैं, "लड़कों को खेलते देखना अच्छा लगता है. ये सभी एकदम फिट हैं."

लेकिन उनके और श्रीकांत के लिए खिलाड़ियों की फिटनेस कोई बड़ी समस्या नहीं है. अमरनाथ और अजहरुद्दीन की फिटनेस को लेकर कुछ अंदेशे जाहिर किए जा रहे थे लेकिन देवधर ट्राफी मैचों में दोनों ने शानदार खेल दिखाकर संदेहों को दूर कर दिया. असली समस्या तो खेल की रणनीति तय करने की है.

डूंगरपुर कहते हैं, "टीम की बल्लेबाजी बहुत अच्छी है और यह गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षण की कमियों को भी भर देगी." यही कारण है कि टीम के लिए रणनीति बनाने वाले दो प्रतियोगिताओं के लिए बल्लेबाजी की प्रमुखता वाली रणनीति अपनाने पर जोर दे रहे हैं. श्रीकांत कहते हैं, "एकदिवसीय खेल में बल्लेबाजी प्रमुख होती है. गेंदबाज सीधी गेंद डालते हैं और इसी बात का इंतजार करते हैं कि बल्लेबाज गलती करे." इसी सोच के अनुरूप उनकी रणनीति होगी कि टॉस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आंखों पर!

रेमण्ड

ग्लेंडेल ट्वीड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल फेनोल-बॉन्डेड प्लाईउड

उबलते पानी से अप्रभावित !
दीमक रोधक !
विशेष तौर से उपचारित !
ISI अनुमोदित !

फर्नीचर, छत और दीवाल चौखटों, पार्टिशन, रसोईघर अथवा बाथरुम, दरवाजों के चौखटों और खिड़कियों में इस्तेमाल के लिए आदर्श।

दि नेशनल प्लाईउड ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रिज

National PLYWOOD | Pioneer National GROUP | PRESTIGE National GROUP

नेशनल नाम पर ही भरोसा रखिये।

प्रधान कार्यालय 5 फैन्सी लेन, कलकत्ता 700 001, फोन 280116/17, फैक्श (91) (33) 281246, ग्राम उडशीट, टेलेक्स 021 2208 उड इन
शाखायें : कलकत्ता 268878 ● बंबई 332058 ● नयी दिल्ली 517100 ● मद्रास 35295 ● हैदराबाद 41234 ● कानपुर 66401 ● अहमदाबाद 25520 ● रायपुर 28457 ● पटना 34080 ● भुवनेश्वर 57217 ● गोवा 2154 ● चंडीगढ़ 27408 ● बंगलोर 77470

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

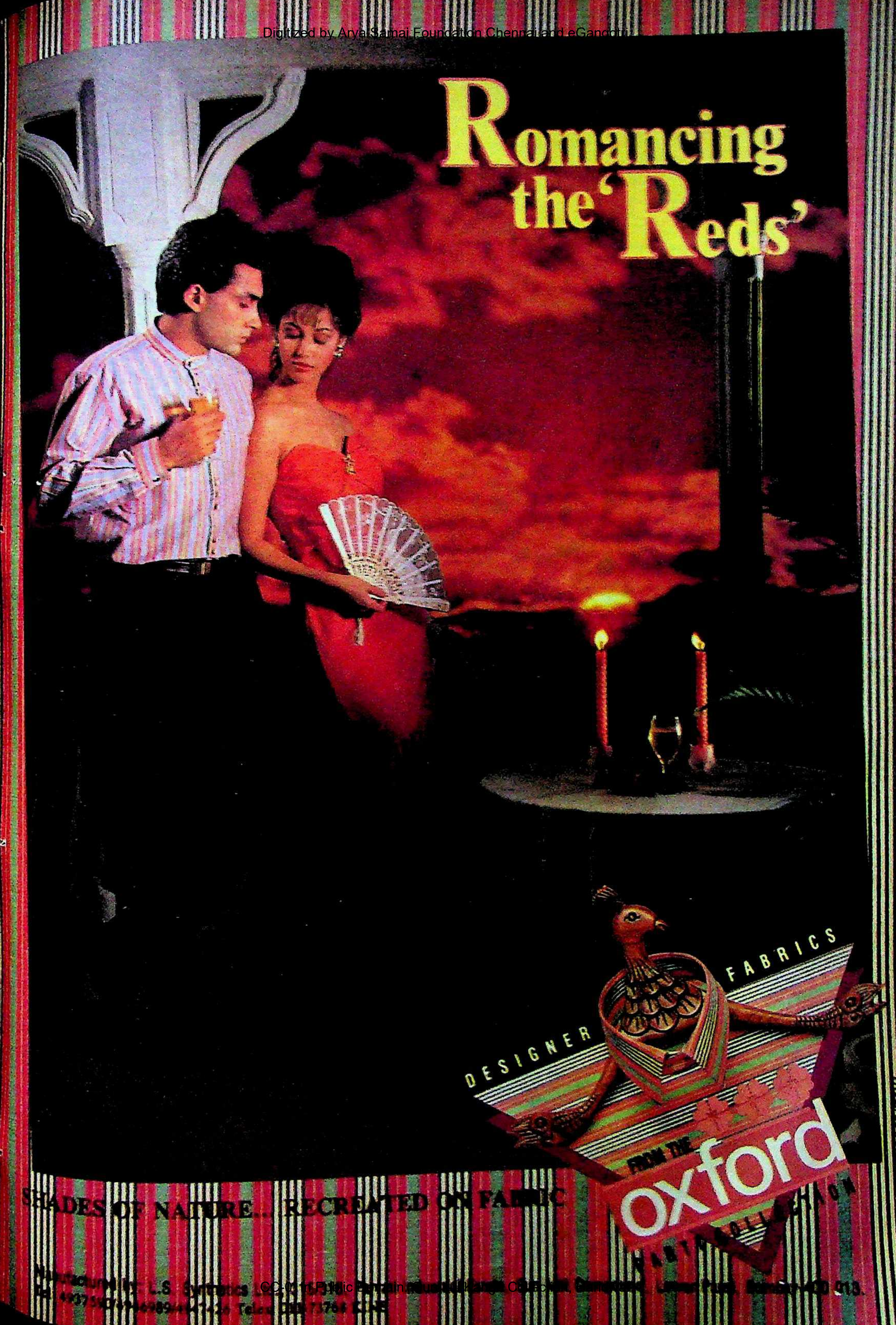

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीतने पर पहले बल्लेबाजी करें.

कई मायनों में भारतीय बल्लेबाजी दुनिया में कुछ अलग किस्म की है भी. इस टीम में तेज खेलने वाले तो पहले आते हैं और उनके बाद शास्त्रीय शैली के बल्लेबाज. इस खूबी का फायदा खेल की मांग के अनुसार उठाया जा सकता है. पहले जो मध्य क्रम के बल्लेबाज थे वे जमने में इतना अधिक समय ले लेते थे कि तब तक अनेक कीमती ओवर नष्ट हो गए होते थे या प्रारंभिक बल्लेबाजों की मेहनत पर पानी फिर गया होता था. टीम की रणनीति बनाने वाले अब इस बात का खास ध्यान रख रहे हैं कि इस पुरानी गलती को कहीं आइंदा न दोहराया जाए.

टीम के वरिष्ठ सदस्यों का मानना है कि टीम को अपनी बल्लेबाजी की खूबी का जबरदस्त फायदा मिलेगा. एकदिवसीय क्रिकेट के नियम के अनुसार जब शुरुआती ओवरों में क्षेत्ररक्षण एक सीमा से अधिक रक्षात्मक नहीं हो सकता तब श्रीकांत, सिद्धू,

कृष्णमाचारी श्रीकांत

'कप्तानी की इच्छा तो थी पर मैं लालायित नहीं था'

प्रमोद पुष्करणा

कृष्णमाचारी श्रीकांत भाग्य में विश्वास रखते हैं. भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान बनाए जाने के बाद इस 28 वर्षीय खिलाड़ी ने गुरुवायूर मंदिर में चांदी की थाली चढ़ाते समय क्रिकेट विवाद नाटकीय ढंग से सुलटने के लिए भी भगवान का शुक्र मनाया होगा.

उन्हें करार का उल्लंघन न करने वाले 'मिलनसार व्यक्ति' होने का फल मिला. दूसरे, मद्रास के अखबारों और दक्षिण क्षेत्र के अधिकारियों ने भी उनके लिए जबरदस्त लॉबीइंग की.

*वे हमले को सबसे अच्छा बचाव मानते हैं. अब समय आ गया है कि वे अपने इस विश्वास को साबित करें. फीचर संपादक **शेखर गुप्ता** से घंटे भर की बातचीत में उन्होंने अपनी धांसू शैली, खेल, उसके विवादों और टीम में अपने व्यक्तिगत संबंधों पर प्रकाश डाला. बातचीत के कुछ अंश:*

● ***अंततः कप्तान पद पा लेने पर आप कुछ कहना चाहेंगे?***

टीम में इतने साल खेलने के बाद कप्तानी की इच्छा रखना स्वाभाविक ही है. लेकिन इसकी भूख मुझे कभी नहीं रही. मैं हर चीज को सामान्य तरीके से लेता हूं. दरअसल, मेरी बल्लेबाजी जीवन के प्रति मेरे नजरिये की सबसे बढ़िया अभिव्यक्ति है.

● ***कई लोगों का मानना है कि कप्तानी से आपकी बल्लेबाजी पर असर पड़ेगा. आप सुरक्षात्मक खेल खेलने लगेंगे.***

कतई नहीं. बल्लेबाजी करते समय मैं कप्तानी के बारे में नहीं सोचता. दक्षिण क्षेत्र की कप्तानी मैं चार-पांच साल से कर रहा हूं. लोग मुझे सिर्फ आक्रामक बल्लेबाज के रूप में देखते हैं तो यह उनकी गलतफहमी है. सधे हमले का सामना करते वक्त घंटों टिके रहने के लिए महान बल्लेबाज गावसकर जैसी तकनीक अपनाना जरूरी है. लेकिन मुझमें उतनी क्षमता नहीं. सो, जब तक मैं विकेट पर रहता हूं, तेजी से रन बनाने में विश्वास करता हूं. मैं वैज्ञानिक ढंग से गेंद की धुनाई करता हूं.

● ***और उसमें मजा भी आता है.***

सबसे अधिक मजा तो तब आता है जब कोई तेज गेंदबाज अत्यधिक रफ्तार से गेंद फेंकता है और आप उसे बड़ी शान से हुक करते हैं. गेंद बल्ले के बीचोबीच आती है और टक की आवाज होती है. इसी में मजा आता है.

● ***वेस्ट इंडीज के सभी मैचों में आप नहीं खेल पाए, इसके लिए आप अपने को भाग्यशाली नहीं मानते?***

बात इसके उलट है. मेरी हमेशा यह महत्वाकांक्षा रही है कि वेस्ट इंडीज जाऊं और वहां की धरती पर रनों का अंबार लगा दूं. लेकिन चोट लगने के कारण मेरी यह महत्वाकांक्षा पूरी नहीं हुई. बहरहाल, वेस्ट इंडीज में हार से हमें अपने क्रिकेट के बारे में पुनर्विचार करना ही चाहिए.

● ***मसलन? वेस्ट इंडीज को हराने के लिए क्या आपके पास कोई बनी-बनाई रणनीति है?***

पहली बात तो यह है कि वेस्ट इंडीज या पाकिस्तान से भिड़ते समय हमारे इरादे दृढ़ होने चाहिए ताकि वक्ती तौर पर पलड़ा उनके पक्ष में झुका दिखने पर भी हमारी लड़ाई जारी रहे. वेस्ट इंडीज का मुकाबला करते वक्त बेहतर यही होगा कि आप पहले बल्लेबाजी करते हुए विशाल स्कोर खड़ा करें और फिर आक्रामक गेंदबाजी के जरिये उन पर दबाव डालें.

● ***बाउंसरों के बावजूद? रूह कंपा देने वाली गेंदबाजी के बारे में आप क्या कहेंगे?***

बाउंसरों से मैं नहीं डरता. उनकी संख्या भी सीमित ही होती है. तेज गेंदबाज इसी तरह गेंदबाजी करते हैं. तेज गेंदबाजों से ऐसी गेंदबाजी की उम्मीद न करना उतना ही हास्यास्पद है जितना कि किसी स्पिनर के बारे में यह सोचना कि वह गेंद को दो इंच से ज्यादा टर्न नहीं देगा या उसे फ्लाइट नहीं देगा या ज्यादा डिप नहीं करेगा. क्या आप तेज गेंदबाज से हाफवाली की उम्मीद करेंगे? वे तो गेंद को उछाल देते हैं, आप कट करें या हुक. वरना वेस्ट इंडीज के गेंदबाजों को नहीं झेल पाएंगे.

● ***क्या ऐसी टीम की कप्तानी से आप पर दबाव पर नहीं पड़ेगा जिसमें तीन पूर्व कप्तान हों?***

नहीं. हम काफी दिनों तक एक साथ खेले हैं. एक दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं. जहां तक दबाव की बात है, आपने सुना ही होगा कि परेशानी के समय सब लोग एकजुट हो जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

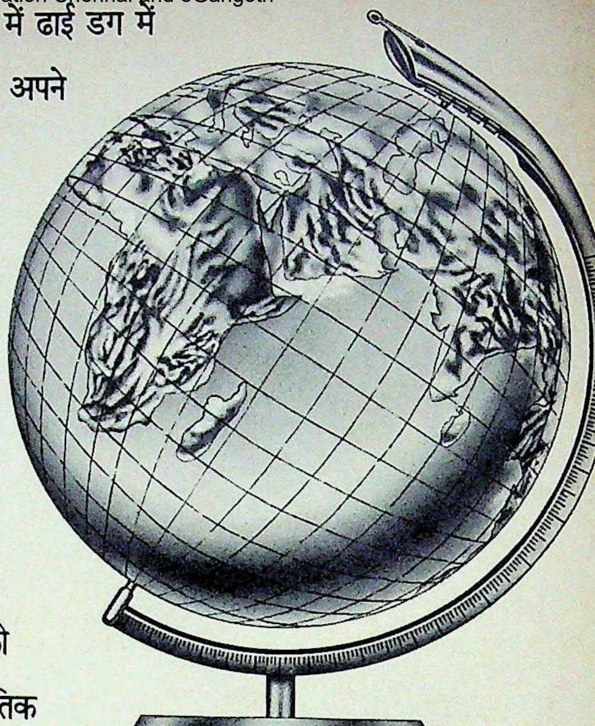

कथा है कि विष्णु ने वामनावतार रूप में ढाई डग में सारी दुनिया नाप ली थी. हिंदी इंडिया टुडे ने भी अपने 16″ के छोटे कलेवर में पूरी दुनिया को नापकर अपनी अद्‌भुत पहुंच और विस्तार का परिचय दिया है.

हिंदी पत्रकारिता में पाठकों की दुनिया सिकुड़कर रह गई थी. हिंदी इंडिया टुडे ने उनके लिए सारी दुनिया के दरवाज़े खोल दिए.

विस्तार जो सिर्फ भौगोलिक पहलुओं को ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं को भी पूरी ज़िम्मेदारी और सजगता से हिंदी पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है.

विस्तार के साथ-साथ पैनेपन, गहराई और ताज़गी ने इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी की सर्वोत्कृष्ट पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 40 लाख से भी अधिक पाठकों का विश्वास प्राप्त है.

और दुनिया सिर्फ समाचारों और घटनाओं की ही नहीं है. दुनिया कला की भी है, साहित्य की भी है, संस्कृति की भी है! इसलिए हिंदी इंडिया टुडे ने कहानी और उपन्यास अंश भी प्रकाशित करना शुरु कर दिया है.

ढाई डग में दुनिया सारी

देश की भाषा में देश की धड़कन

वार्षिक ग्राहक बनिए – प्रति अंक 1.50 रु. बचाइए (यानी 36/- रु. प्रति वर्ष) और अपनी चहेती पत्रिका घर बैठे पाइए! 132/- रु. चैक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिए 'लिविंग मीडिया इंडिया लि०' के नाम थॉमसन प्रेस बिल्डिंग, पो. बॉ. 706, फरीदाबाद-121007 (हरियाणा) पर भेजिए, अपने नाम व पते के साथ.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)

MILESTONES/IT/274 a

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमन लांबा और अजहरुद्दीन जैसे स्वाभाविक आक्रामक खेल वाले खिलाड़ी थोड़ा खुलकर हाथ दिखा सकते हैं. ऐसे ही एक बड़े खिलाड़ी ने कहा, "हमारी मूल रणनीति यही होगी कि शुरुआती खिलाड़ी आक्रामक खेल खेलें. अगर वे सफल नहीं रहते तो अमरनाथ, वेंगसरकर और शास्त्री जैसे लोग खेल संभालें और कपिल देव, मोरे तथा अजय शर्मा जैसे आक्रामक खिलाड़ियों के खुलकर खेल सकने लायक स्थिति बनाएं."

लेकिन समस्याएं फिर भी बनी रहती हैं. श्रीकांत और वेंगसरकर ने अभी तक अपना फॉर्म नहीं दिखाया है. देवधर ट्राफी में अजहरुद्दीन ने भले ही मनिंदर सिंह को धुनकर रख दिया हो लेकिन उन्हें भी वेस्ट इंडीज के तेज गेंदबाजों और इमरान की गेंदों को संभालने में दिक्कत होगी. उप-कप्तान शास्त्री भी अभी तक बल्लेबाजी में अपना क्रम तय नहीं कर पाए हैं."

इससे भी बड़ी बात है कि टीम की सबसे बड़ी ताकत—बल्लेबाजी ही अब तक इसके लिए सबसे बड़ा छलावा साबित होती रही है. यह अक्सर मौके पर धोखा दे जाती है और शायद ही कभी अपनी पूरी क्षमता का प्रदर्शन कर पाती है. कई बार प्रारंभिक बल्लेबाजों के शानदार खेल के बाद पूरी टीम के लड़खड़ा जाने के उदाहरणों की ओर इशारा करते हुए टीम का एक सदस्य कहता है, "इतने धाकड़ बल्लेबाजों की टीम कितनी बार 300 रनों से ऊपर पहुंच पाई है?" श्रीकांत भी कलकत्ता के ऐसे ही एक प्रदर्शन को अपनी बड़ी निराशा कहते हैं जिसमें बाद के बल्लेबाजों के घटिया प्रदर्शन से यह मैच पाकिस्तान के हाथ चला गया था. वैसे उस मैच में सलीम मलिक का प्रदर्शन भी हार-जीत के फैसले में मुख्य कारण बना था. श्रीकांत कहते हैं, "हम थोड़ा और दृढ़निश्चय दिखाकर बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे."

पिछले कई वर्षों से भारतीय टीम की सबसे बड़ी समस्या गेंदबाजी में कोई धार न रह जाने की ही है. गर्म वातावरण और शुष्क पिच पर होने वाले मैचों में यह कमी सबसे ज्यादा उजागर होती है. जो मध्यम तेज गेंदबाज इंग्लैंड के नमी वाले मौसम में तबाही मचा देते हैं, वही भारतीय उपमहाद्वीप के मौसम के कारण एकदम साधारण दिखने लगते हैं. एकदिवसीय मैचों में भारत के खराब प्रदर्शन का यह भी एक कारण रहा है. अभी तो टीम को इस कमी के साथ ही काम करना है. पिछले तीन वर्षों से अपनी गेंदबाजी की धार खो चुकने के बावजूद कपिल ही प्रमुख गेंदबाज हैं. पर एकदिवसीय मैच में वे 10 ओवर से अधिक गेंद फेंक भी नहीं सकते.

हो सकता है कि शारजाह की समुद्री हवा में दिल्ली के मनोज प्रभाकर भी नई गेंद से कुछ मूवमेंट पा लें लेकिन आदर्श विकेट मिलने पर कपिल, चेतन और मनोज की गेंदबाजी बहुत ही हल्की दिखने लगती है. इस टीम का क्षेत्ररक्षण भी ठीक नहीं है.

इसी तरह इस बार भारतीय टीम में कोई ऐसा स्पिनर भी नहीं है जो विपक्षी खेमे में तहलका मचाने की क्षमता रखता हो मनिंदर फिर चयनकर्ताओं की निगाह में नहीं चढ़ पाए. डूंगरपुर कहते हैं, "दुर्भाग्य से वह पहले जितनी अच्छी गेंद नहीं फेंक रहा है." लेकिन उसकी नपी-तुली गेंदबाजी, मजबूत क्षेत्ररक्षण और संघर्ष की प्रवृत्ति से टीम को फायदा हो सकता था.

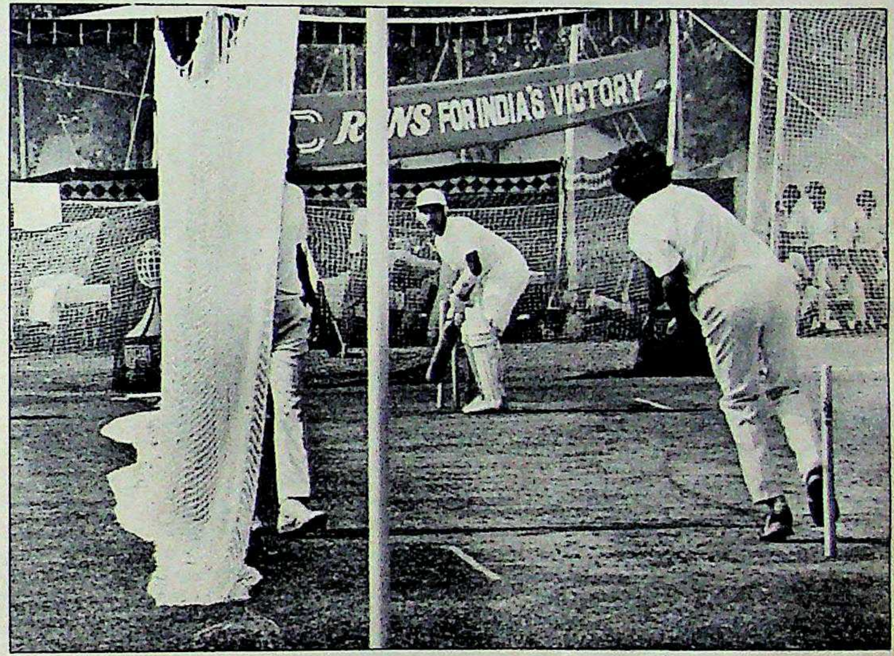

अभ्यास करती टीमः कड़ी चुनौती

मनिंदर का टीम में न चुना जाना शायद टीम चयन की सबसे जटिल पहेली है. पर 14 लोगों का चुनाव करने की मजबूरी के कारण यह जरूरी-सा हो गया था. श्रीकांत का कप्तान चुना जाना भी कुछ अचरज पैदा करता है. उनका नाम समझौता उम्मीदवार के रूप में आया. वेंगसरकर के नेतृत्व में वेस्ट इंडीज गई टीम हार गई थी और उसके बाद वे जिस तरह से क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड से उलझे, उससे उनकी पद से विदाई आसान हो गई. वेंगसरकर अपनी निराशा छुपाते भी नहीं. वे कहते हैं, "निश्चित रूप से मैं निराश हूं. मैंने 10 टेस्ट मैचों में भारत का नेतृत्व किया जिसमें से सात वेस्ट इंडीज के खिलाफ थे. मैं कोई चमत्कार तो नहीं कर सका. अब यही आशा करता हूं कि श्रीकांत कोई चमत्कार कर देंगे." वे कहते हैं कि वे अपनी सबसे अच्छी फॉर्म पाकर कुछ रन बनाने की कोशिश करेंगे. वे जानते हैं कि बोर्ड के कुछ लोग उनसे खार खाते हैं.

बोर्ड के अधिकारियों का मानना है कि वेंगसरकर को तो किनारे करने में कोई खास परेशानी नहीं हुई लेकिन कपिल देव के साथ ऐसा करना खासा मुश्किल होगा. खास तौर पर बोर्ड से विवाद के समय उनका खिलाड़ियों के नेता बन जाने के बाद यह काम और कठिन हो गया है. उधर शास्त्री को भी जब कभी कप्तानी की जिम्मेवारी सौंपी गई उन्होंने बहुत हेकड़ी दिखाई मोहिंदर भी 40 की उम्र में पहुंच रहे हैं. बोर्ड ने कप्तान का फैसला करते समय इस बात का खास ध्यान रखा कि उससे उलझने वाले वरिष्ठ खिलाड़ी कप्तान न बन पाएं. एक वरिष्ठ खिलाड़ी ने व्यंग्य से कहा, "जिम्मी (अमरनाथ) समेत हम सभी लोगों का टीम में आ जाना बोर्ड के लिए तो शर्म की बात ही है." लेकिन बोर्ड के अनेक लोग भी इन तानों से जले-भुने बैठे हैं और उनका मानना है कि अगर ये बड़े खिलाड़ी असफल हुए तो उनके खिलाफ कार्रवाई करने में कोई हिचक नहीं होगी. इन सारी बातों को देखते हुए यही लगता है कि श्रीकांत की टीम के लिए वेस्ट इंडीज और इमरान जितने बड़े खतरे नहीं हैं, उतने बड़े खतरे तो खुद उसके अंदर ही छिपे पड़े हैं.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

When You Are Taxed For Being Literate-

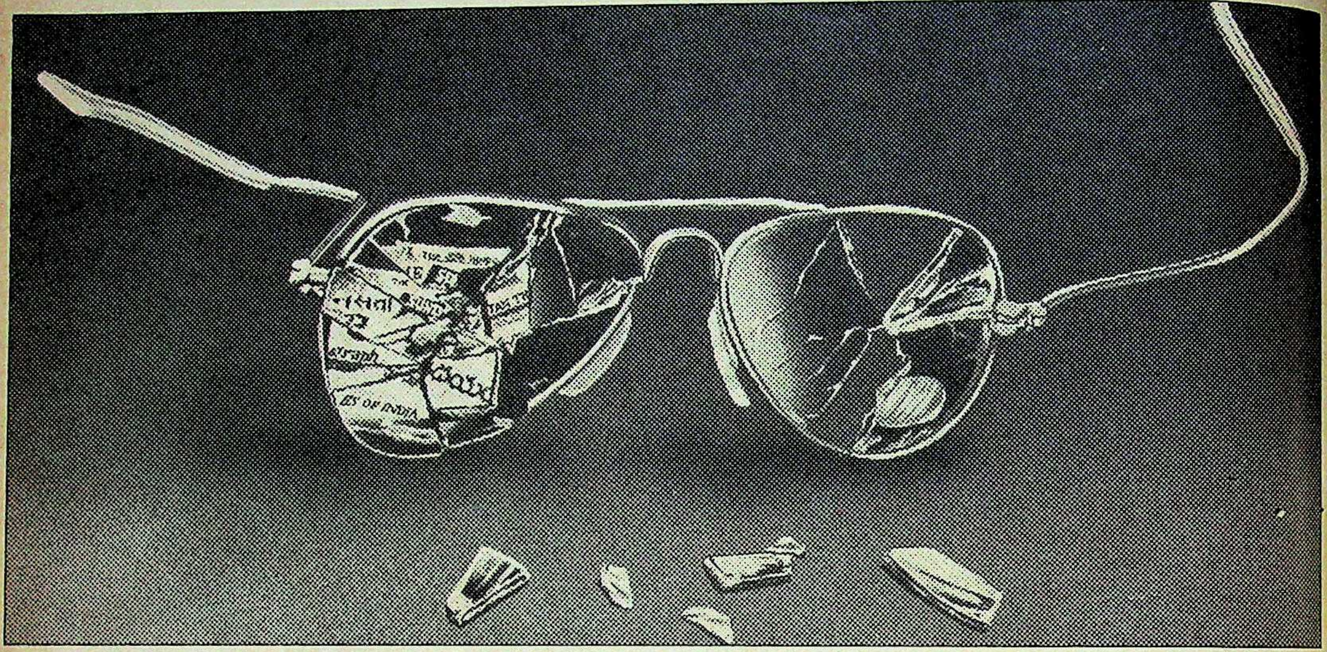

Literacy Must Be Harmful To The Nation.

It is "an imposition on knowledge and would virtually amount to a burden imposed on a man for being literate and for being conscious of his duty as a citizen to inform himself about the world around."

That is what the Supreme Court said in 1984 as it reduced a Rs. 850 per tonne duty levied on the import of newsprint by the Government to Rs. 550 per tonne.

Now the Government newsprint mills have hiked newsprint prices by as much as 40 per cent, and the duty on glazed newsprint has been increased by 7-fold.

While some welcome concessions have been granted to small and medium newspapers, the rest who account for more than 80% of newsprint consumption still bear the crippling burden.

The implications spell themselves out : increased cost, increased prices of publications, increased advertising tariffs, mounting financial pressure on the newspaper industry. A pressure that retards growth, curtailing coverage and reach. Doubtless, the burden for being literate is becoming heavier.

Every citizen has the right to 'free' knowledge, information, stimulation and entertainment. The press is their only independent and affordable source. It is the heart of a democracy, the life-blood of political and social intercourse. In a country like India, with its multifarious cultures, religions and languages, it is the press which reflects the diversity. It is the symbol of freedom, the voice of the people, the safety valve for bottled-up emotions. As long as it is neither state-controlled, nor muzzled.

Now the Government has put it under severe financial strain, even as it has unleashed resources to expand the official media.

All this will extract a heavy cost. And it is not the newspaper industry that will suffer the final cut. It is the democratic spirit of the country that will fray; the tenets of our founding fathers that will flounder. That price will be paid by the people.

The Nation's Loss Cannot Be The Government's Gain.

Issued in the interest of the Nation by the Indian Newspaper Society

MILESTONES/INS/342

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशिया कप के साथ भारतीय खिलाड़ी

तीरंदाजी

तीर निशाने पर

एशिया कप पर पहली बार भारत का कब्जा

खेल के मैदान में बार-बार हार का मुंह देखने के आदी हो चुके भारत के लिए पिछला पखवाड़ा खासा भाग्यशाली सिद्ध हुआ. उसके तीरंदाजों ने पेइचिंग में आयोजित एशियाई मुकाबलों में एशिया कप पर कब्जा जमाकर सभी को चकित कर दिया. इतिहास में यह पहला मौका है जब भारत ने इस खेल में एशियाई स्तर पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की. इस विजय का सबसे शानदार पहलू यह रहा कि इन मुकाबलों में अपने से कई गुना अनुभवी जिन टीमों को भारतीय खिलाड़ियों ने धूल चटाई उनमें एशिया चैंपियन, विश्व चैंपियन और ओलंपिक चैंपियन के सिंहासन पर बैठी दक्षिण कोरियाई टीम भी थी.

खुशी से गद्गद खेल राज्यमंत्री मार्गरेट अल्वा की टिप्पणी थी, "यह भारत के लिए और मेरे लिए एक महान दिन है." और भारतीय तीरंदाजी महासंघ के अध्यक्ष वी.के. मल्होत्रा ने गर्व से कहा, "किसी भी मायने में यह एक शानदार उपलब्धि है."

दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में वातावरण दिवाली जैसा था. वहां प्राधिकरण की विशेष क्षेत्र खेल योजना (एसएजी) के तहत देश भर के पिछड़े इलाकों से ढूंढ़कर लाए गए प्रतिभाशाली मगर गुमनाम खिलाड़ियों ने अपने साथियों की इस पहली बड़ी उपलब्धि का जोरदार जश्न मनाया.

भारत को तीरंदाजी के अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर आदर के स्थान पर बिठाने वाली इस टीम में कोच प्रमोद चांदूरकर (26) के अलावा चार खिलाड़ी सदस्य थे—लिंबाराम (18), शामलाल (20), कालसांग दोरजी (16) और राजेंद्र गुड्या (15). टीम चैंपियनशिप जीतने के अलावा लिंबाराम ने वैयक्तिक मुकाबलों में रजत पदक तथा 50 मीटर स्प्रिंग ऐरो में कांस्य पदक भी जीते.

नई एशिया चैंपियन टीम की एक खूबी यह है कि आज से तीन साल पहले तक इनमें से किसी भी खिलाड़ी ने आधुनिक किस्म के तीर-कमान देखे तक नहीं थे. 1987 में चित्तौड़ में लगाए गए खोज शिविर में खोजे गए लिंबाराम उदयपुर के निकट अपने गांव में बांस की कमान और घराड़ झाड़ी की सींकों से खरगोश, तीतर और कलड़ा पक्षी का शिकार किया करते थे जबकि बांसवाड़ा के एक वनवासी गांव के शामलाल का मुख्य शौक गुलेल से उड़ते हुए तीतर और तोते मार गिराना था. इसी तरह हिमाचल के काजा इलाके से आए कालसांग बताते हैं कि बांस और सीया लकड़ी से बने दाह-जू (तीर-कमान) से वे और उनके साथी बच्चे पहाड़ी लोमड़ी का शिकार किया करते थे और सालाना ल्हातरचा मेले में होने वाली तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया करते थे.

लेकिन एसएजी योजना में शामिल होने के बाद पिछले ढाई साल में उन्होंने न केवल आधुनिक तीरंदाजी उपकरणों में महारत हासिल कर ली है बल्कि उनमें से अधिकांश लड़के अब फर्राटेदार हिंदी और कामचलाऊ अंग्रेजी भी बोलने लगे हैं. बचपन में ही चौथी तक पढ़कर स्कूल छोड़ चुके शामलाल ने इंदिरा गांधी स्टेडियम के अपने हॉस्टल में रहते हुए अब इतनी पढ़ाई कर ली है कि इस साल वे 10वीं की परीक्षा देने जा रहे हैं. प्राधिकरण की विशेष योजना 1986 में शुरू हुई थी. इसका उद्देश्य वनवासी क्षेत्रों से प्रतिभासंपन्न खिलाड़ी ढूंढ़ निकालना है.

इन खिलाड़ियों को दी जाने वाली प्रशिक्षण सुविधाओं में आए बदलाव की चर्चा करते हुए टीम के कोच और अपने जमाने में जूनियर राष्ट्रीय चैंपियन रह चुके चांदूरकर बताते हैं, "मैं अपने लिए हर रोज बांस की कमान बनाकर प्रैक्टिस किया करता था. पर आजकल हमारे इन खिलाड़ियों के पास ऐसे आधुनिक कमान हैं जिनकी कीमत 20 हजार रु. से कम नहीं."

साल भर एक ही स्थान पर रहकर हर रोज अभ्यास करने के नियम पर आधारित इस योजना की सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए मल्होत्रा कहते हैं, "इस अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि अगर भारत को खेलों की दुनिया में अपनी जगह बनानी है तो हर खेल में इसी तरह की प्रशिक्षण नीति अपनानी होगी. मुकाबलों से पहले एक-दो महीने कैंप लगाकर जिम्मेदारी निबटा देने से अब काम नहीं चलेगा." उम्मीद की जाए कि तीरंदाजी के इस अनुभव के तीर ठीक निशाने पर पहुंचेंगे.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारंगी

विलक्षण वाद्य के विलुप्त होने की व्यथा

सभी फोटो: भवान सिंह

पंडित रामनारायण: सारंगी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय

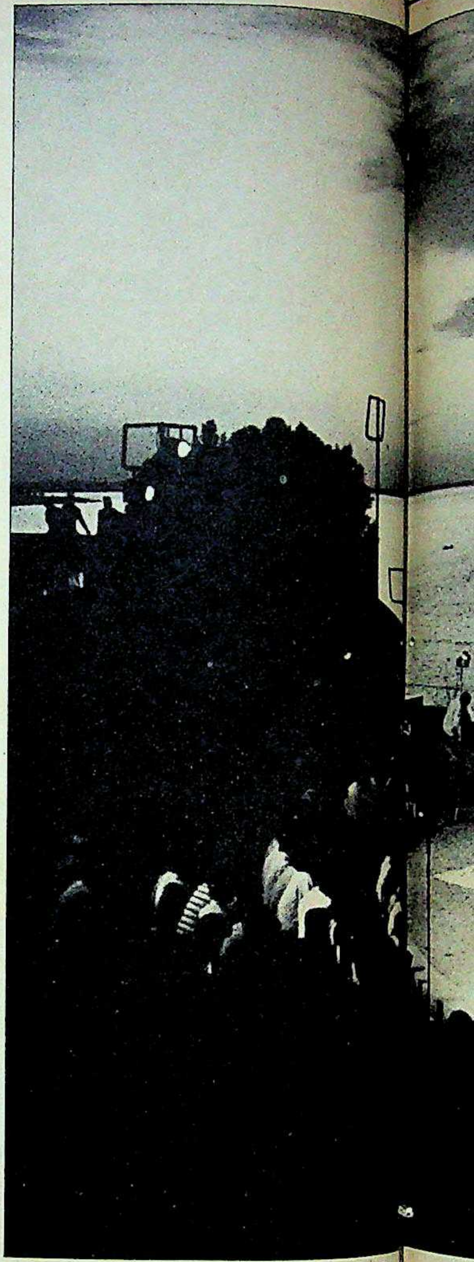

रात जादुई थी और संगीत लोगों को झुमा देने वाला. भोपाल ताल के किनारे 68 वर्षीय पद्मश्री पंडित रामनारायण की प्रेरणा पर 70 से अधिक सारंगी वादकों—नामी उस्तादों से लेकर गुमनाम रेडियो कलाकारों और सत्तर पार के बुजुर्ग वादकों से लेकर किशोर वादकों तक—ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया. यह पहला मौका था जब एक ही वाद्य बजाने वाले इतने वादक (करीब 125) एक स्थान पर जमा हुए. भोपाल स्थित भारत भवन द्वारा आयोजित यह तीन दिवसीय 'सारंगी मेला' इस वाद्य के लिए बड़ा उत्सव साबित हुआ.

वैसे इस आयोजन के पीछे संगीत महोत्सव करने की मंशा नहीं थी. मेले का उद्देश्य इस 400 वर्ष पुराने वाद्य के विलुप्त होने के खतरे पर विचार करना और उससे उबरने के संभावित तरीकों पर गौर करना था. लेकिन आयोजन पर संगीत ही हावी रहा.

पिछले दो दशकों में सारंगी के रुतबे में जिस तेजी से गिरावट आई है उससे लगता है कि भोपाल का यह आयोजन सारंगी की शोकांतिका ही साबित हो. जो वाद्य कभी राज दरबारों में एकल प्रदर्शन, शास्त्रीय गायन तथा नृत्य में मुख्य संगत के लिए प्रयोग किया जाता था, आज उसका कोई माई-बाप नहीं रह गया है.

ग्वालियर संगीत विद्यालय के सारंगी शिक्षक सरदार खान, जिन्हें साल में दो-तीन से अधिक शागिर्द नहीं मिलने की शिकायत बनी रहती है, बताते हैं, "सारंगी में महारत हासिल करना काफी मुश्किल काम है, इसलिए कम बच्चे ही इसे अपनाते हैं."

बुंदू खान के पूर्व शिष्य राजेश बहादुर का मानना है कि सारंगी वादन में जीवंतता होनी चाहिए. वे कहते हैं, "प्रचार माध्यमों ने सारंगी को सिर्फ विषण्णता और विलाप का वाद्य बना दिया है जो किसी व्यक्ति की मृत्यु पर ही बजाया जाता है. सारंगी हर्ष तथा उल्लास का भी वाद्य है और उसे उस रूप में भी दिखाया जाना चाहिए."

लोग भी सारंगी को मात्र संगत करने वाला वाद्य मानने लगे हैं. जहां तक संगत देने वाले वाद्य का सवाल है, उसमें भी सारंगी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

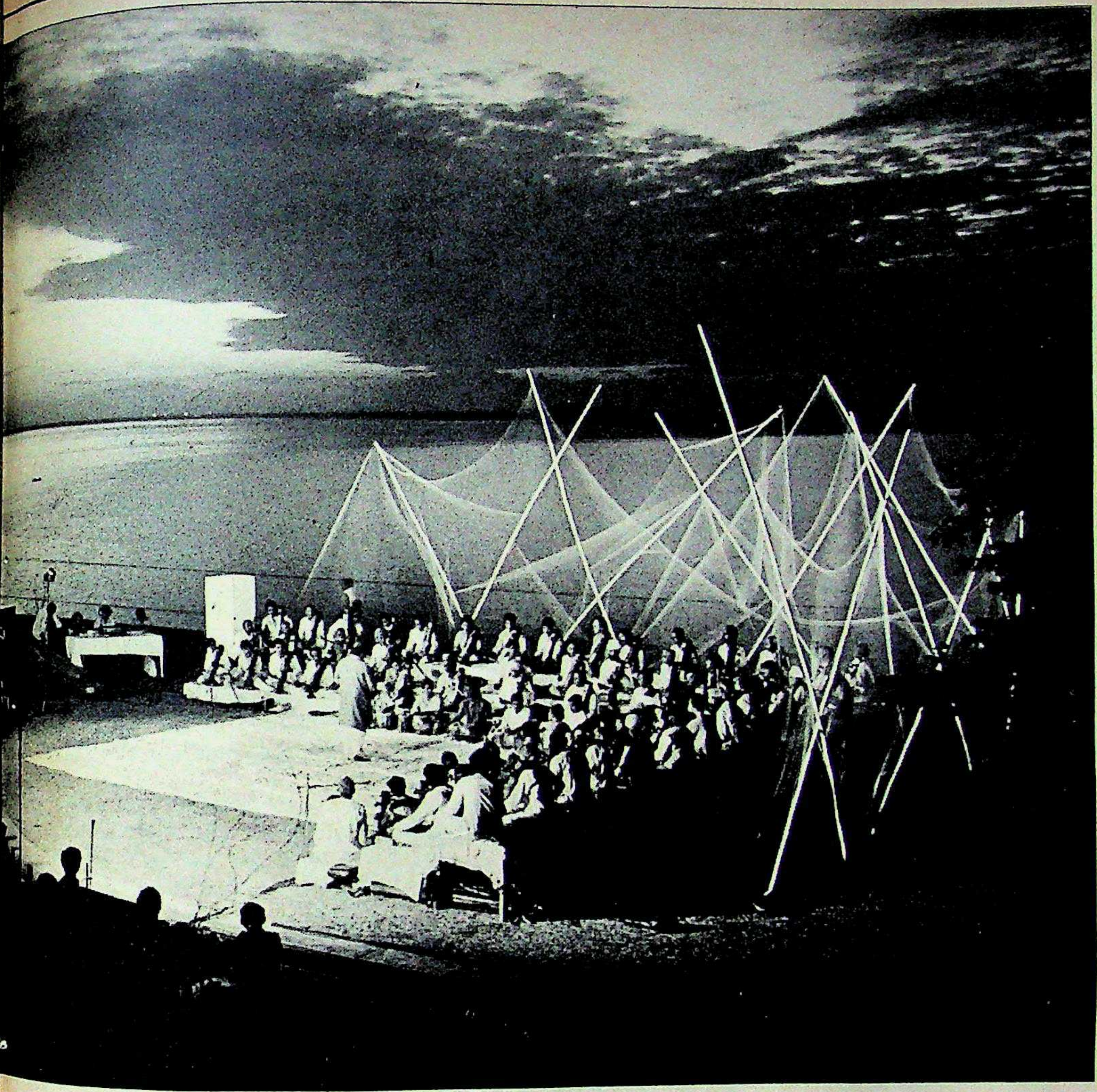

भोपाल में सारंगी मेले का शानदार समारोहः वाद्य की महत्ता

हार्मोनियम से कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा है. पंडित रामनारायण बताते हैं, "ऐसा लगता है कि संगत देने के मामले में हार्मोनियम सारंगी की जगह लेता जा रहा है. लेकिन असलियत यही है कि हार्मोनियम बेसुरा होता है."

इस आयोजन में भी हार्मोनियम बनाम सारंगी का विवाद तीखे ढंग से उभरा. जब दर्शकों में से कुछ लोग हार्मोनियम के खिलाफ कही जा रही बातों का जवाब देने के लिए खड़े हुए तो भारत भवन के सचिव अशोक वाजपेयी ने उन्हें यह कहते हुए चुप कराया कि "यह मंच सारंगिया लोगों का है, उन्हें अपनी बात कहने दीजिए."

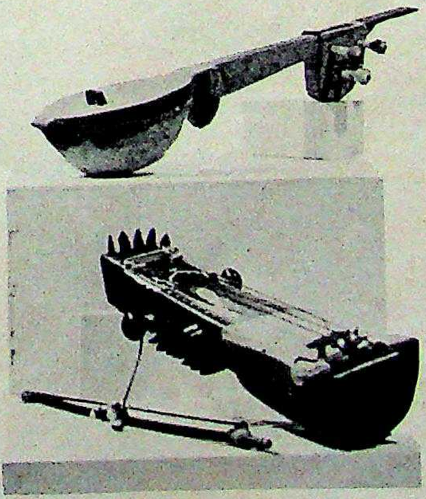

जहां सितार, तबला, सरोद और हार्मोनियम की शिक्षा देने वाले असंख्य संस्थान खुल गए हैं, वहीं सारंगी सिखाने वाले संस्थान गिने-चुने ही हैं. परिणाम यह कि इसका जोर कम होने से अनेक सारंगिये शास्त्रीय संगीत की दूसरी विधाओं की ओर मुड़ गए. अब्दुल करीम खान, अब्दुल वाहिद खान, बड़े गुलाम अली खान और अमीर खान खयाल गायकी करने लगे तो साहबदाद खान सितार और अब्दुल अजीत खान वीणा बजाने लगे.

इसके बावजूद अगर सारंगी आज तक बची हुई है तो इसका श्रेय कुछ पुराने उस्तादों और कुछ नौजवान सारंगी वादकों को जाता है. जैसे 30 वर्ष की उम्र में काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

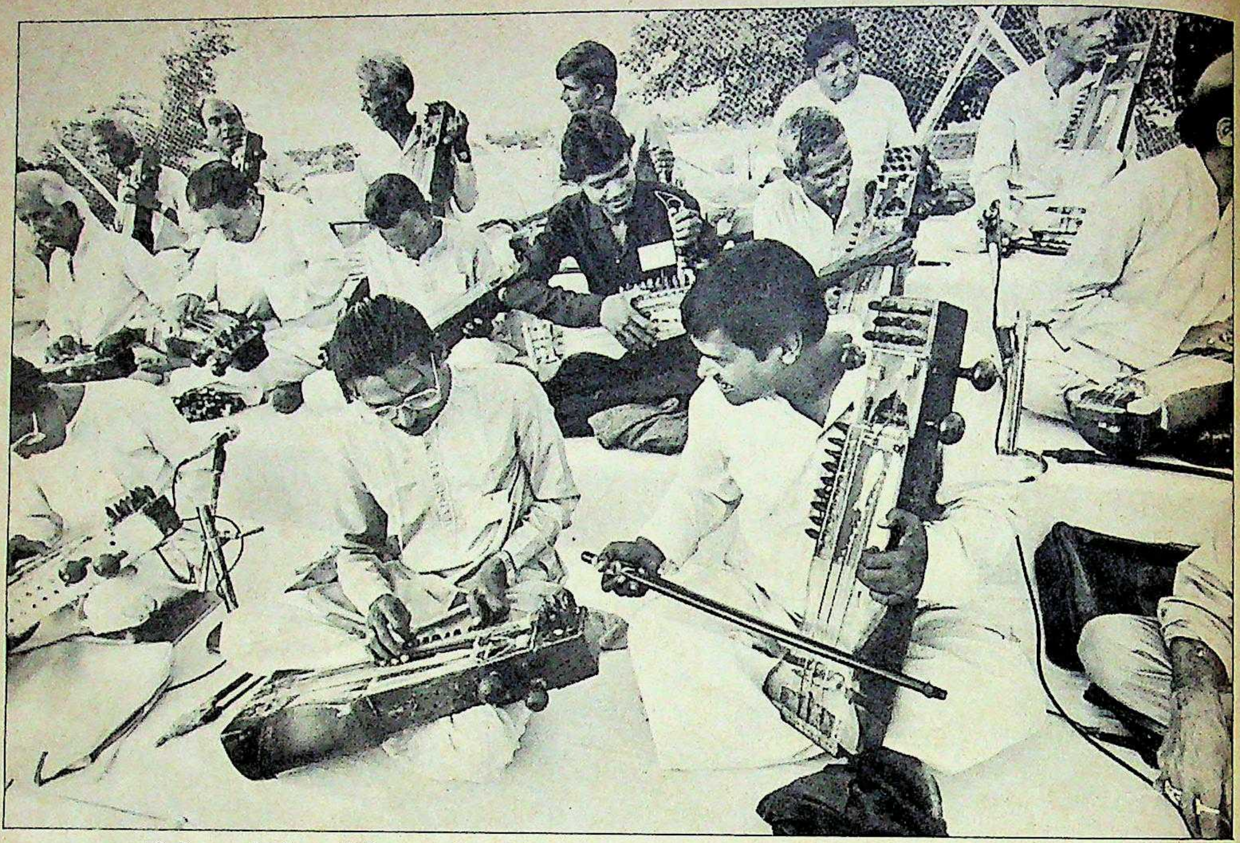

सारंगी के तार छेड़ते सारंगिये: काल के गर्त में खोती जा रही परंपरा अब प्रोत्साहन और सुविधा की तलाश में

नाम कमा लेने वाले ध्रुव घोष ने अधिक मनोरंजन के लिए इस वाद्य में "असंख्य संयोजन और सुरों की भिन्नता पैदा करने के लिए कुछ बदलाव वैज्ञानिक ढंग से किए."

इस परिवर्तन से मात्र आधे घंटे की जगह तीन घंटे से अधिक समय तक सारंगी बजाते रहना संभव हुआ. घोष ने सारंगी के तार के रूप में घोड़े के बालों की जगह टेनिस रैकेट में लगने वाले तारों का इस्तेमाल शुरू किया.

लेकिन विशुद्धतावादी लोगों ने इसे सारंगी को 'भ्रष्ट' करने वाला कदम बताया. पंडित रामनारायण कहते हैं, "मैं सारंगी में झाला को नहीं मान सकता. इससे लय में बाधा पड़ेगी."

सारंगी वादकों की जमात तो धीरे-धीरे सिकुड़ ही रही है, सारंगी बनाने वाले भी गायब होते जा रहे हैं. जोधपुर के निकट बोरूंदा गांव में स्थित 'इंस्टीट्यूट ऑफ फोकलोर' के निदेशक कोमल कोठारी कहते हैं, "सारंगी बनाने वाली कंपनियां तो अब रह ही नहीं गई हैं. सिर्फ कुछ लोग रह गए हैं जो इसे बनाते हैं. विभिन्न स्वरों वाले 35 से लेकर 45 तारों को ठीक-ठीक कसना एक मुश्किल काम है." जोधपुर जिले के कल्लेरान गांव के बढ़ई रिदमल खान लांगा इस पेशे को अपनाए रखने वाले ऐसे ही व्यक्ति हैं.

लांगा: चुनींदा साज निर्माता

जिस वाद्य को यहूदी मेनुहिन ने भारतीय सोच की मूल आत्मा उजागर करने वाला सबसे अच्छा माध्यम बताया था उसकी आज दुर्गति हो गई है

भोपाल के आयोजन में कुछ अच्छी बातें भी हुईं. इस वाद्य को आगे बढ़ाने के लिए सुझावों का एक लिखित प्रारूप तय किया गया. इनमें आकाशवाणी और दूरदर्शन को सारंगी को अधिक समय देने के लिए लिखना, शास्त्रीय गायन में हार्मोनियम की संगत पर रोक, सारंगी में मनोरंजन के लिए जरूरी बदलाव लाना, मौत और शोक के अवसरों पर सारंगी बजाने पर रोक, सारंगी की शिक्षा देने के लिए संगीत विद्यालयों को प्रोत्साहन देना, छात्रवृत्तियां देना और सारंगी निर्माण का प्रशिक्षण देना शामिल है.

जिस वाद्य को यहूदी मेनुहिन ने भारतीय सोच और भावना की मूल आत्मा उजागर करने वाला सबसे अच्छा माध्यम बताया था वही आज मानो दया की भीख मांग रहा है. भोपाल आयोजन में इसकी हालत पर जितना रोना रोया गया उससे यही उजागर होता है.

—शर्मिला चंद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुर जिले
ढ़ई रिद-
पेशे को
ऐसे ही

में कुछ
इस वाद्य
सुझावों
रूप तय
काशवाणी
रंगी को
के लिए
यन में
र रोक,
बदलाव
सरों पर
ी शिक्षा
ोत्साहत
सारंगी
है.
भारतीय
उजागर
ताया था
ांग रहा
लत पर
उजागर
मिला चंद्रा

"अपने डॉक्टर से यह जानकर
मुझे बड़ी खुशी हुई कि
केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र
से सचमुच बालों का
झड़ना रुक जाता है।

लेकिन मुझे विश्वास तब हुआ
जब मैंने इसका इस्तेमाल किया।"

"मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र*, व्यापक गवेषणा पर आधारित एक अपूर्व वैज्ञानिक फार्मूले से बना है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बालों की जड़ों को मज़बूत करनेवाले सभी आवश्यक प्रोटीन तत्व, को-एन्जाइम और विटामिन भी उपलब्ध करता है।

मैं तो बस यही कहना चाहता हूँ कि इसने मेरे बालों का झड़ना निश्चितरूप से रोक दिया है और साथ ही रूसी भी खत्म हो गई है।"

देखिए, गवेषणा-रिपोर्ट से उद्धृत एक अंश :

"सभी मामलों में रूसी के सम्पूर्ण खात्मे के साथ ६६.६६% मामलों में शानदार एवं ३३.३३% में बढ़िया नतीजा हासिल हुआ और बालों का झड़ना तो लगभग शत प्रतिशत रुक गया...इसलिए, यह कहा जा सकता है कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र की सफलता-दर शत प्रतिशत है।"

इंडियन मेडिकल गज़ट ११८ २२३ (१९८४)

बालों का झड़ना रोकने और रूसी खत्म करने का प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

Dey's® डे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा।

* यह श्रृंगार सामग्री नहीं है।

TSA-C/DMHV/189HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश में जबलपुर के पास कुन्डम गाँव। शाम ढले, जब पंछी अपने नीड़ की ओर लौटते हैं, सुशीलाबाई भी अपने कर्मवीर पति की वापसी की राह देखती हुई अपनी नन्हीं-मुन्नी रजनी को बहलाती है। उसका नन्हा बेटा बलराम भी गौओं के साथ खेलता-कूदता लौटने वाला है। नन्हीं रजनी की किलकारियाँ उसे उस वक्त की याद दिलाती है... आज से ९ साल पहले जब उनका नया-नया ब्याह हुआ था और उन्होंने परिवार कल्याण के लिए नियोजन का संकल्प लिया था, ताकि उनका भविष्य सुरक्षित और खुशहाल रहे। आई टी सी ने उन्हें राह दिखायी...

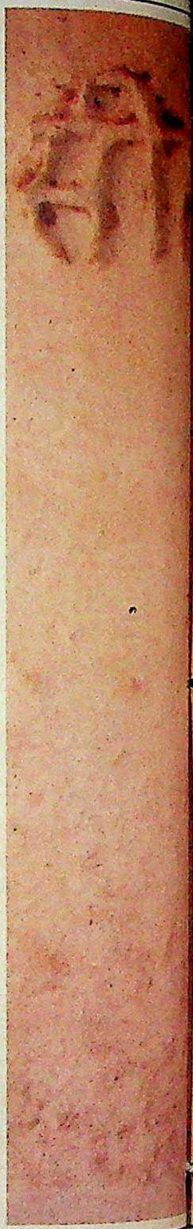

कुन्डम की सुशीलाबाई।
नये ब्याह के हुलास के साथ इन्हें चिन्ता थी कि इनकी नियति छः बच्चों के बोझ से थकी-टूटी इनकी माँ जैसी न हो।

तभी आई टी सी के माध्यम से इनके पति ने परिवार नियोजन साधनों को अपनाया।

आई टी सी भारत के गाँवों में निरोध साधनों की वितरक।

भारत में फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन के सहयोग से कुन्डम ग्रामीण सामूहिक परियोजना की तहत आई टी सी पारम्परिक अंधविश्वासों को जड़ से मिटाकर मातृत्व और बाल-स्वास्थ्य को लोकप्रिय बना रहा है। भारत के कोने-कोने में फैले विशाल वितरण व्यवस्था और मार्केटिंग तजुर्बों के दम पर आई टी सी सन् १९६८ से निरोध साधनों का प्रचार कर रही है।

जिन क्षेत्रों में समूचे देश की आधी से ज्यादा आबादी बसी है, सन् १९८९-९० में आई टी सी इस परियोजना के माध्यम से जन-शक्ति प्रशिक्षण और निरोध साधनों के प्रचार-वितरण पर १ करोड़ से भी ज्यादा रुपये खर्च करेगी।

देश भर में निरोध साधनों की सबसे बड़ी वितरक के रूप में आई टी सी के अथक प्रयासों को समुचित इनाम भी मिला है—परिवार कल्याण के क्षेत्र में सन् १९८८ का एफ आई सी सी आई पुरस्कार। यह एक ऐसे सम्मान का प्रतीक है, जो सैकड़ों-हजारों परिवारों के लिए सुरक्षित भविष्य और खुशहाली का संदेश देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण
१ करोड़
बड़ी
प्रयासों
कल्याण
सी आई
है, जो
भविष्य

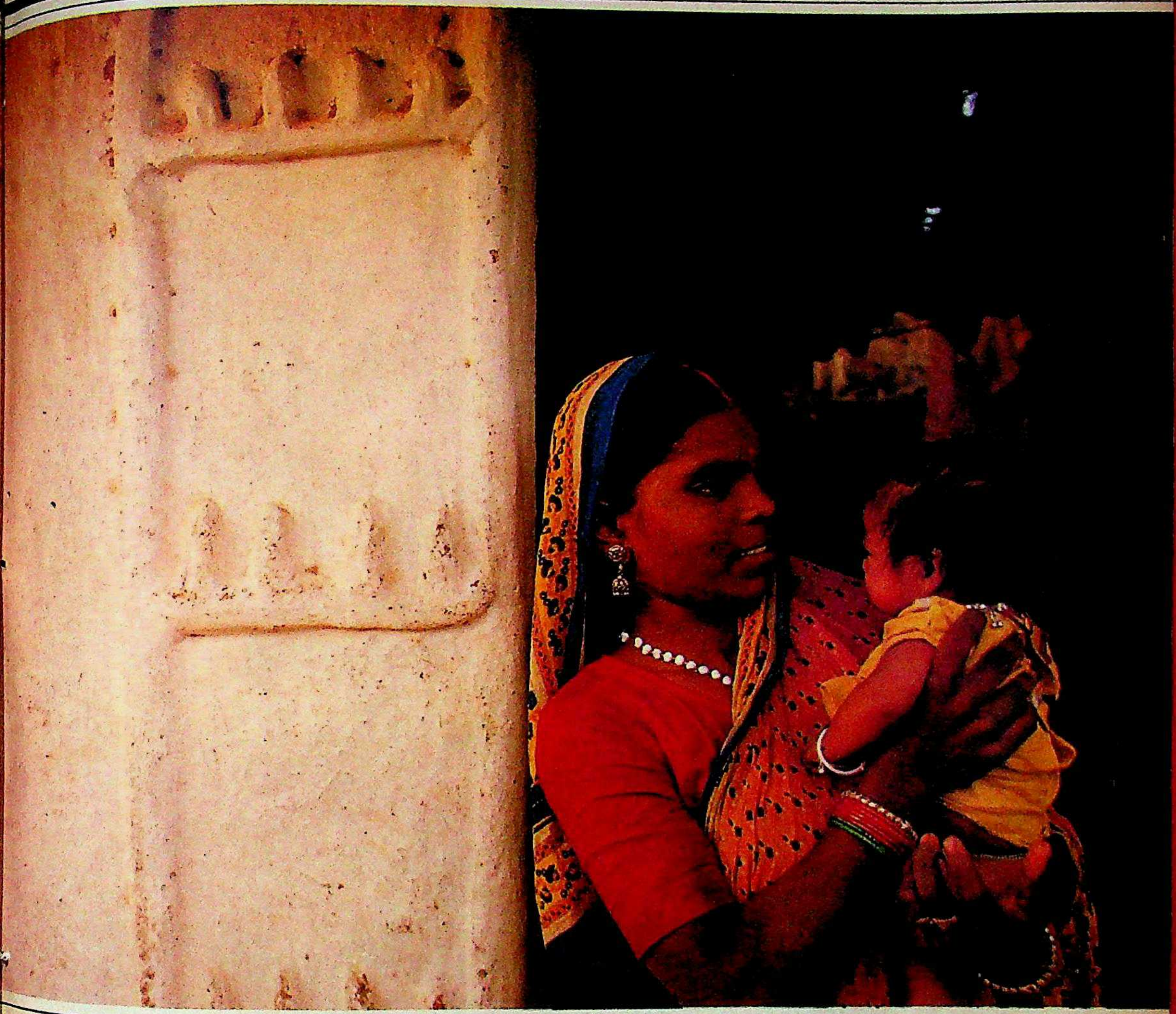

आई टी सी भारत के लिए और कहाँ-कहाँ कार्यरत है?

कृषि उद्योग : सालों के शोध और विकास के दम पर आई टी सी ने कई-कई किस्मों के तैल बीजों के उत्पादन और विकास का भी सूत्रपात किया है, जिससे आयात की मात्रा कम होगी और हजारों-हजार किसानों के फलने-फूलने में मदद मिलेगी। खाद्य-अखाद्य तेलों एवं सहायक उत्पादनों के निर्माण और मार्केटिंग के साथ-साथ, आई टी सी ने आयात भी कम किया है।

कुटीर उद्योग : हथकर्घे, कच्चे माल और तकनीकी विशिष्टताओं के दम पर आई टी सी ने त्रिवेणी हैंडलूम्स के ज़रिये शाहजहांपुर की प्राचीन कालीन-बुनाई कला को पुनर्जीवित किया है। अब कालीनों के साथ-साथ अन्यान्य लघु और कुटीर उद्योगों की सामग्रियाँ भी आई टी सी द्वारा निर्यात की जाती हैं।

पेपर और बोर्ड — कोर सैक्टर में : आई टी सी द्वारा विकसित भद्राचलम पेपरबोर्ड्स अपने क्षेत्र में अग्रणी है। इसने रिकॉर्ड उत्पादकता के साथ साथ वन संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा और आदिवासी कल्याण के प्रति गहरी जागरूकता का नया मानदंड स्थापित किया है।

I.T.C. Limited

नई दिशाएँ, नई आशाएँ

Contract ITC 57.89 HIN R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उसे बहुत खुश देखना चाहता हूँ"

शर्मिला को मेरे काम-काज की व्यस्तता से एक शिकायत रहती है कि हम साथ, समय नहीं गुजार पाते। इसलिए उसके जन्मदिन पर मैंने एक ऐसी दावत रखी जहाँ कोई भीड़ नहीं - सिर्फ वो और मैं। मोमबत्ती की मद्धिम पर गर्म रोशनी में उसकी आँखें मेरी ग्वालियर की मनपसंद डिनर जैकेट पर थीं और नजरें बहुत कुछ कह रही थीं।

— एम.ए.के. पटौदी

GRASIM
GWALIOR
SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD.

MAPP-GR-89-088

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहर उजियार योजना की प्रतीक्षा

फिलहाल अपने शहर में क्रांति और कत्लेआम का माहौल है. दिन में बम और पटाखे फूटते हैं. रात को फुलझड़ी-अनार की आगजनी है. तय करना मुश्किल है कि यह दंगा है या दिवाली. हमने स्थिति की गंभीरता को ध्यान में रख पड़ोस के पप्पू के पापा से सलाह ली—

"घर से निकलना 'सेफ' है क्या?"

"कहां जाना है", उन्होंने जानना चाहा.

"बस यहीं बाजार तक."

"जरूर जाइए. मेरी 'लिस्ट' भी ले लीजिएगा. अगर आपको कुछ हो गया तो हम लोग तो हैं ही."

पड़ोसी से चर्चा का यही फायदा है. इंसान जान जाता है कि उसे क्या नहीं करना है. यों भी इधर बाजार में कीमतों का आतंक, मोल-तोल की मारपीट और सीमित क्षेत्र में असीमित भीड़ का विद्रोह-विप्लव है. इस युद्धस्थल में काले धन की स्टेनगन से लैस निडर और निर्भीक रणबांकुरों का ही बेरोकटोक भ्रमण मुमकिन है. अपने जैसे कमजोर काया वाले कायरों का नहीं.

"इस बार खील-बताशे, दिये, मिठाई, पूजा की सामग्री नहीं लानी है क्या?", अपने गृह मंत्रालय ने चेतावनी दी.

समय के साथ सब तरक्की करते हैं. गांधीवादी किसान नेता बर्थ डे पर केक और कबूतर उड़ाते हैं. महान नेता हीरो बन फिल्में बनाते हैं. साधू-संत राम नाम की ईंटें चलाते हैं. बदलते वक्त के संदर्भ में हमने होम मिनिस्ट्री से अनुरोध किया, "क्यों न इस बार प्रतीकात्मक दिवाली मनाई जाए."

"मतलब?"

"नेता किसी इमारत के शिलान्यास पर सिर्फ एक बार श्रमदान का फावड़ा चलाते हैं. हम भी बतौर शगुन एक दिया जला लें."

त्योहार के मौके पर घर फूंक तमाशा देखना हमारे मुल्क की स्थापित परंपरा है. हमारी अर्जी खारिज हो जाती है. बस इतनी रियायत है कि अगर शक्कर का जुगाड़ हो जाए तो मिठाई घर में बन जाएगी. हमने कर्तव्यबोध से प्रेरित होकर राशन की दुकान का रुख किया. सड़क पर एक लंबा 'क्यू' है. सहज जिज्ञासावश हमने इस जमावड़े का सबब जानना चाहा, "कोई तांत्रिक बाबा दर्शन दे रहे हैं क्या!"

"जी नहीं."

"भाई साहब! क्या मुफ्त का सदाव्रत बंट रहा है."

हमारे अज्ञान पर तरस खा एक सज्जन ने बताया कि यह चींटी-कतार चीनी की खातिर है. हमें विश्वास नहीं हुआ. रेडियो, टीवी के अनुसार तो चीनी की इफरात है. हमें लगा कि दूरदर्शन में वह होता है जो देश में नहीं होता. हम शिकायत करने मुहल्ले के नेता के घर बढ़ लिये.

रेखाचित्र: ज़िया फ़ैज़ी

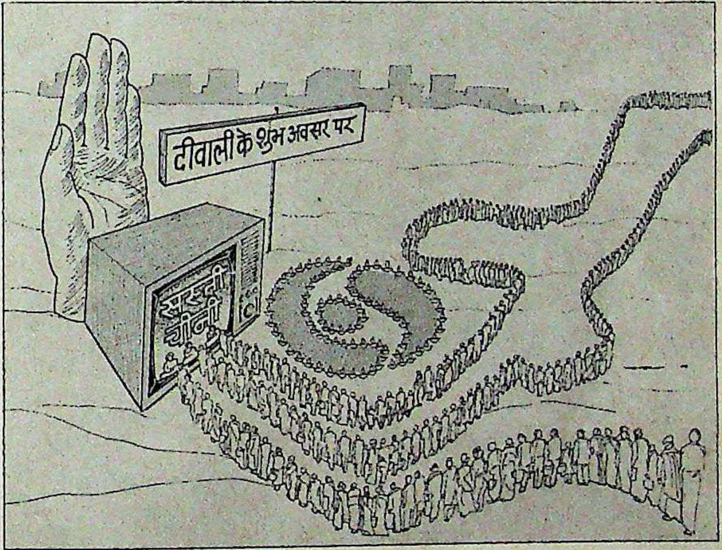

नेता जी ने भरोसा दिलाया, "अभी शक्कर की होम डिलीवरी करवाता हूं. जरा इस नंबर पर फोन तो लगाइए." आध घंटे तक हम "पिट्रोदा, पिट्रोदा" का मंत्र जपकर बेकार फोन घुमाते रहे. फिर पिटी आवाज में नेता के आगे रोना रो पड़े, "त्योहार सिर पर है और चीनी भूमिगत."

"ऐसा हमारी नीति के अनुसार है. ज्यादा चीनी खाने से डाइबिटीज हो जाती है. जीवन में मिठास लाने के लिए आप सेब खाएं जो शक्कर से सस्ते हैं."

"पर त्योहार कैसे मनाएं?"

"लड्डू-पेड़े चढ़ाकर क्यों लक्ष्मी पूजते हैं. पैसे बचाइए. दिवाली की रोशनी तो 'फ्री' है. कहीं आतंकवादियों की आतिशबाजी है, कहीं दंगाइयों की."

इतने में खुफिया खुशखबरी लिये उनके 'सीनियर' आ गए, "देसी दियों की क्वालिटी सुधारने के लिए सरकार 'जवाहर उजियार योजना' शुरू कर रही है. इसमें हम हर परिवार को न बुझने वाला उम्मीद का एक आयातित दिया 'फ्री' देंगे. बस स्वीडन से सौदा पटने ही वाला है."

"बड़ा अच्छा रहेगा सर!" छोटे नेता एकदम चहक उठे.

"इंदिरा उपहार योजना भी आ रही है. अगले अधिसूचित त्योहार से अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को किलो भर मिठाई तथा महिलाओं को एक सूती साड़ी सरकार मुफ्त में बांटेगी."

मुहल्ले के नेता अपने 'सीनियर' की शायरी पर आह-वाह करते रहे. चूंकि हमें कुछ न मिलना था, हम मुंह लटकाए निकल लिये. रास्ते में विपक्षी मोर्चा 'देश के हर लल्लू-पंजू के लिए उल्लू उधार त्योहार स्कीम' की ललकार लगा रहा था. "सरकार से उधार की, तरकीब तुम्हारी, उसे माफ करने की जिम्मेदारी हमारी. हिचकिचाओ मत. उधार से त्योहार मनाओ. और हमें वोट देकर सत्ता में लाओ."

उत्साह के अतिरेक में हमें लगा कि उत्सव सिर्फ अंतर के उल्लास से होता है. पर घर पहुंचते ही शक्कर के भंवर में फंस गए. हमने नेता के संपर्क का लाभ उठाया, "हमारे ऐसे केवल वेतन पर निर्भर लोग बमुश्किल दाल-रोटी खाते हैं. मिठाई-मलाई जैसी नायाब चीजें तो सिर्फ ऊपर की कमाई वाले भाग्यशालियों के लिए हैं."

इस पर बिना जीत-हार की तकरार छिड़ गई. हम तंग आकर नींद की गोली खाकर सो गए. हमने देखा कि हम नेता जी के साथ खड़े हैं और शहर धू-धू कर जल रहा है. हम चीखे तो नेता जी ने आश्वस्त किया, "घबराइए नहीं! यह अपना दिवाली मेला है. फुलझड़ी-पटाखे चुनाव तक चलेंगे. फिर सब ठीक हो जाएगा."

अपनी आंखें खुल गईं. समझ गए कि दिवाली तो एक रोज होती है, उसकी आतिशबाजी इधर रोज क्यों हो रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहिताई

आधुनिक जामा

नए ढंग के पुजारी चमके

टी. एस. अश्विनी शास्त्रिगल और टी. एस. रोहिणी शास्त्रिगल के मद्रास स्थित दफ्तर में सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक टेलीफोन की घंटी घनघनाती रहती है. जवाब देते-देते और फोन करने वालों के नाम डायरी में दर्ज करते-करते उनके हाथों में दर्द होने लगता है. कभी-कभार वे अपने ग्राहकों से किया वायदा पूरा करने मोटर साइकिलों पर निकल पड़ते हैं.

शास्त्रिगल बंधु पुरोहित हैं. और यह दफ्तर है पुरोहित उपलब्ध कराने की अनोखी सेवा का. उनकी सूची में आंशिक और पूर्णकालिक पुरोहितों के नाम दर्ज हैं जो श्राद्ध, उपनयन अथवा शादी कराने सरीखे विभिन्न कार्यों के विशेषज्ञ हैं.

अश्विनी और रोहिणी शहर में पेशेवर पुरोहितों की जमात की नई पौध हैं. हालांकि दोनों का कहना है कि उनकी एजेंसी "धंधा नहीं बल्कि लोगों की सेवा के लिए है." पुरोहितों की संख्या कम हो जाने से तुरंत सूचना पर उन्हें पाना आसान नहीं. अश्विनी और रोहिणी पाठशाला भी चलाते हैं जहां वे किशोरों को वैदिक अनुष्ठानों की शिक्षा देते हैं. इनमें से सर्वोत्तम पुरोहितों की सेवाएं उनकी एजेंसी ले लेती है. अश्विनी और रोहिणी फिल्मी पूजा और शादी सरीखे बड़े समारोहों में भाग लेते हैं. छोटे-छोटे कार्यक्रमों के लिए कनिष्ठ पुरोहितों को भेजा जाता है.

आज के युग में अश्विनी और रोहिणी सरीखे तेज-तर्रार पुरोहित ही पारंपरिक तौर-तरीकों में बदलाव लाकर फल-फूल सकते हैं. इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कुछ अनुष्ठान दरकिनार कर दिए गए हैं. यहां तक कि मंत्रों को संपादित और संशोधित किया गया है. सभी अनुष्ठान एक दिन की अवधि के रखे गए हैं. नई पीढ़ी के पुरोहित पूजा के लिए जरूरी सामानों में भी कटौती करने लगे है.

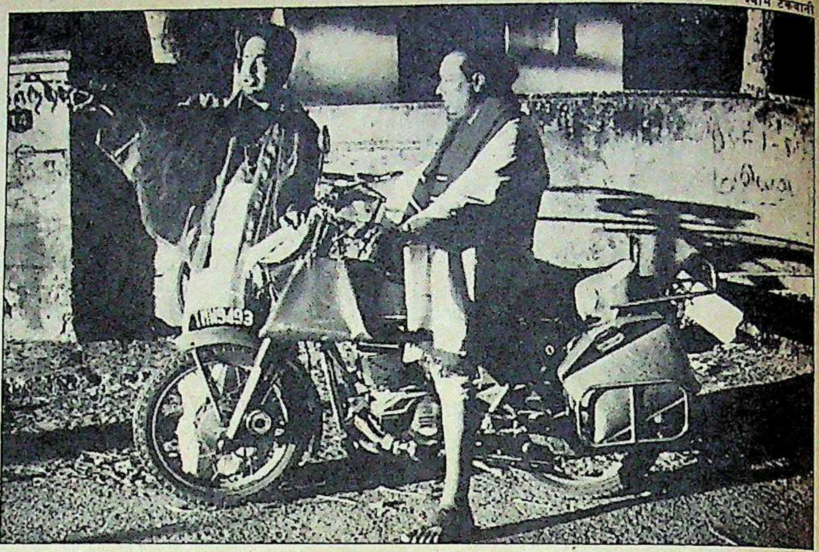

श्याम टेकवानी

शास्त्रिगल बंधु: नई पौध

इतना ही नहीं, पारंपरिक पुरोहितों के धंधे को खतरे में डालने के लिए मंत्रों और पूजा के कैसेट भी चल पड़े हैं. इनसे मदद लेकर कोई भी व्यक्ति छोटी-मोटी पूजा या कार्यक्रम अपने कर ले सकता है. शास्त्रिगल बंधु इस फायदेमंद धंधे में भी हैं. उन्होंने सुने जाने वाले ऐसे 10 टेप बनाए हैं. ज्यादातर टेप अमेरिका और सिंगापुर के ग्राहकों के पास भेजे गए हैं. लेकिन पूजा-अनुष्ठान में मार्गदर्शन देने वाले वीडियो टेप उस तरह नहीं चल पाए.

औसतन 750 से 2,000 रु. के बीच आमदनी की वजह से पुरोहित आय के दूसरे स्रोत तलाशने को मजबूर हुए हैं. एक राष्ट्रीयकृत बैंक में काम करने वाले पुरोहित लक्ष्मीनारायण कहते हैं, "अब कोई भी पुरोहितों का आदर नहीं करता. पुरोहिती से पेटपूजा नहीं हो सकती."

लक्ष्मीनारायण की तरह अश्विनी और रोहिणी का वैकल्पिक पेशा है—फिल्मों में अभिनय करना. इन भाइयों को 'सिनेमा शास्त्री' कहा जाता है. उन्होंने 100 से ज्यादा फिल्मों में काम किया है जबकि उनकी एजेंसी फिल्म उद्योग को पुरोहित सप्लाई करती है. वर्तमान में दोनों भाई दसारी नारायण राव के हिंदी टीवी सीरियल 'विश्वामित्र' में काम कर रहे हैं. रोहिणी गर्व से दावा करते हैं, "हमें फिल्म उद्योग में अच्छे भविष्य का सूचक माना जाता है. इसलिए हमें फिल्म की शुरुआत में पूजा करने के लिए बुलाया जाता है."

लेकिन कटु सत्य यह है कि पुरोहिताई मरता हुआ पेशा है. और टी नगर, मद्रास के पोंडी बाजार की संकरी गली के अपने दफ्तर से शास्त्रिगल बंधुओं ने बचे रहने का एक रास्ता दिखाया है. —कविता शेट्टी, मद्रास में

भक्ति संगीत कैसेट

फलता-फूलता धंधा

धर्म में माया काफी है. सुने जाने वाले कैसेटों के निर्माता आजकल इसीलिए चांदी काट रहे हैं. नतीजा यह है कि दक्षिण में हर महीने भक्ति संगीत के 50,000 कैसेट बिक जाते हैं. इस मैदान के बड़े खिलाड़ी हैं संगीत, एवीएम, ईको, इंड्रेको और यहां तक कि सीबीएस. संगीत वालों की सूची में 1,200 शीर्षकों के कैसेट हैं और वह हर साल चार लाख से भी ज्यादा कैसेट बेचती है.

भक्ति संगीत के कैसेटों का यह धंधा त्योहारों के मौसम के साथ घटता-बढ़ता रहता है. मसलन सबरीमाला के समय भगवान अयप्पा के भक्ति गीतों के कैसेटों की बिक्री काफी बढ़ जाती है जबकि नवरात्रि के मौके पर अम्मा के गीत काफी बिकते हैं. 'संगीत' के श्रीकृष्ण बताते हैं, "फिल्म के सिनेमाहाल से उतर जाने के बाद उसके गीतों की बिक्री काफी घट जाती है जबकि भक्ति संगीत के कैसेटों में उतार-चढ़ाव आता रहता है."

इन भक्ति संगीत के कैसेटों की कीमत भी बहुत कम—12 रु. है. बाला मुरलीकृष्ण जैसे शास्त्रीय कलाकार इन गीतों से लोकप्रिय हुए हैं पर सबसे ज्यादा बिक्री एस.पी. बालासुब्रमण्यम, के.जे. येसुदास और एस. जानकी के कैसेटों की है. एम.एस. विश्वनाथन जैसे संगीत निर्देशक भी अब भक्ति संगीत के क्षेत्र में उतर आए हैं.

कड़वा सच तो यह है कि भक्ति संगीत के इस आकर्षक धंधे ने उसे आध्यात्मिक अनुभव से लोकप्रिय मनोरंजन में बदल दिया है.

—कविता शेट्टी, मद्रास में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Why the Tandons are a family in Vogue?

Vogue Blankets offer something for everybody in the family.

"Just what I was looking for" – says Mrs. Tandon

"When I first saw Vogue Blankets, I couldn't believe they were made here. I found such lovely shades, such pretty prints! Now, after using them for two seasons, I find they're so easy to wash, fold and store. They're mothproof, too! And even after regular use, they're still as good as new!"

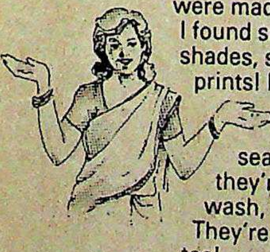

"Light yet warm" – adds Mr. Tandon

"Being a textile engineer, I know how Vogue Blankets, made from synthetic fibres, are lighter yet warmer than woollens. The secret is their nonwoven structure. And, at their price, they offer real value for money!"

Mrs. Tandon finds them perfect for kids too!

"Vogue Blankets are not only soft and snug, but totally non-allergenic for babies.

And now that our little one has grown, I've got her a Vogue Blanket from the Junior Range that's just been introduced."

Vogue Blankets. What a lovely gift idea!

Vogue Blankets make an ideal gift. Marriages, arrivals, anniversaries, festivals... you name it and Vogue meets the need!

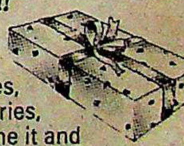

VOGUE BLANKETS

What a lovely way to tuck in this winter!

CLARION D 280

A quality product from UNIPRODUCTS (INDIA) LTD., in technical collaboration with UNIPRODUCTS CANADA INC.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल कुमार

साड़ियाँ

कमल कुमार कहानी, उपन्यास, आलोचना, कविता तथा पत्रिकाओं के लिए लेखन जैसे कई क्षेत्रों में एक साथ सक्रिय हैं. दो कविता संग्रहों और दो उपन्यासों के अलावा 'पहचान' तथा 'एक झरना मेरे लिए' जैसे कहानी संग्रहों की लेखिका की मौजूदा कहानी कामकाजी युवतियों की अपेक्षाओं, उम्मीदों और जिंदगी की असलियत का झरोखा खोलती है.

वह अंदर आया था, "हैलो."

"हाय." नीरू ने बिना देखे ही कहा था.

"व्यस्त हो क्या?"

"हूं तो! पर—बैठो तुम—बैठो!"

वह कुर्सी खिसकाकर बैठ गया था—"कैसी हो?"

"ठीक हूं."

हमेशा की तरह वह उसकी ठंडी मुद्रा से हतोत्साहित नहीं हुआ था.

"चलो तुम्हें कॉफी पिला लाऊं."

"इतनी गर्मी में कॉफी—जाने दो!"

"कॉफी न सही कुछ ठंडा ही सही."

"कहां?"

"त्रिवेणी चलते हैं."

"च्-च्" वह जानती थी वह यही कहेगा. पिछले पांच बरसों में वह त्रिवेणी और कॉफी से एक सेंटीमीटर आगे नहीं बढ़ा था. इतनी गर्मी में त्रिवेणी की कैंटीन में मूढ़ों पर पंखे की गरम हवा के नीचे बैठकर कॉफी पीने के बजाए कैंपा सिप करना और उसकी इंटलेक्चुअल टॉक सुनना—उसे उबकाई सी आई थी.

नहीं प्लीज आज नहीं—फिर सही. आज यह फाइल पड़ी है—पूरी की पूरी.

"तो चलता हूं."

"बैठो कुछ देर! कैसे आए थे? कुछ काम था क्या इस तरफ?"

"नहीं काम कुछ नहीं था. तुमसे ही मिलने आया था और तुम्हें नया साल विश करने आया था. तुम सोच रही होगी मार्च में नया साल. तीन महीने बंगलूर में ही रहा, वर्कशाप पूरी हुई तो लौटा हूं. मार्च में इतनी गर्मी यहां. एडजस्ट ही नहीं कर पा रहा हूं." उसने एक बड़ा-सा भारी लिफाफा उसकी मेज पर रख दिया था. लिफाफे के ऊपर खूबसूरत लिखाई में लिखा था—

"नए वर्ष की शुभकामनाएं"—विजय.

उसने लिफाफा नजदीक सरकाया.

"थैंक्स-थैंक्स विजय!"

"थैंक्स की जरूरत नहीं."

"तो भी."

"चलता हूं अब." वह उठ खड़ा हुआ था.

"शनिवार को क्या कर रही हो? मेरा मतलब शाम को?"

"अभी तो कुछ ऐसा याद नहीं पड़ रहा. तुम्हें फोन कर दूंगी—हू अ्." उसने बचना चाहा था.

"कब करोगी?"

"शुक्रवार तक. ठीक रहेगा न!"

"ठीक है—अच्छा!"

"अच्छा. बाय और इसके लिए थैंक्स."

"थैंक्स की जरूरत नहीं—कहा न! शुभकामनाओं का उत्तर धन्यवाद नहीं होता."

"अच्छा-अच्छा नहीं सही थैंक्स. आई विश यू द सेम. ए वैरी हैप्पी न्यू इयर."

"यह ठीक है." वह हंसा था और चला गया था.

उसने इत्मीनान से लिफाफा खोला था.

सभी रेखांकन: जिया फैज़ी

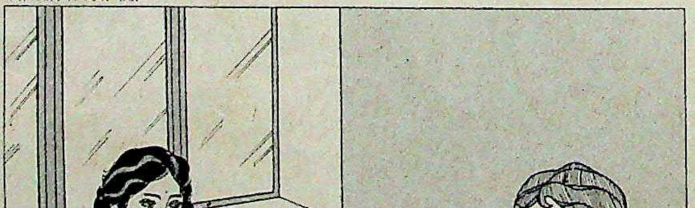

नए साल की डायरी थी. किसी मल्टी नेशनल फर्म की. अच्छे बड़े आकार की. बेहद खूबसूरत. ऊपर साफ्ट लेदर का कवर था. डायरी के शुरू के पन्नों में कंपनी की और संसार भर की सूचनाएं थीं. हर पन्ने पर सुनहरी लाईनिंग का हाशिया था. सुनहरे अक्षरों में ही तारीख, महीना और वर्ष लिखा था. पन्ने के नीचे पिछले, अगले और चल रहे साल का कैलेंडर था. पन्नों पर महीन फूल-पत्तियां धीमे रंगों में बिना डिस्टर्ब किए उनकी सुंदरता बढ़ा रही थीं. लगता था इसकी प्रोडक्शन कीमत बहुत अधिक होगी. उसे विजय पर तरस आया था. पिछले पांच साल से वह इसी तरह आता जाता रहा था और कुछ न कुछ उपहार में उसके लिए लाता भी रहा था. उसकी तरफ से कोई उत्साह न दिखाने पर भी वह आता था.

इस दफ्तर में आने के बाद उसके दूसरी तरह के संबंध विकसित हो गए थे. ज्यादा उत्तेजक और समृद्ध संबंध. उसे विजय में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी. उसे लेकर घर के बोझ से दबी घरेलू पत्नी का जो चित्र उसके मानस में उभरता था उससे अलग परिंदों की उड़ान को अपनी मुट्ठियों में कैद करने वाली औरत को संजोए थी वह अपने भीतर. विश्वविद्यालय के दिनों का बौद्धिकतावाद, चर्चाएं वगैरा उसे सब बेकार लगने लगी थीं. विजय की गहरी विचारात्मक कविताओं, उसके कलात्मक व्यक्तित्व की परिष्कृति उसे बोदी प्रतीत होती थी. विजय को एमए के बाद ही नौकरी मिल गयी थी पर प्राध्यापक की बंधी-बंधाई तनख्वाह में दिमागी घोड़े दौड़ाने के सिवा कुछ नहीं था. एक उम्मीद जगी थी जब विजय फुलब्राइट स्कालरशिप लेकर अमेरिका गया था. उसका विचार था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी चली जाएगी वहीं पर और जिंदगी ने जो यहां खोया वहां पाया जा सकेगा. पर विजय पीएचडी करके आदर्शवाद की झोंक में स्वदेश लौट आया था. वही पुराना अलाप ब्रेन ड्रेन नहीं. उसके विचार-व्यवहार में तीन बरस अमेरिका में रहकर भी कोई परिवर्तन नहीं आया था. उसका विजय की तरफ से मन बुझ गया था. उसकी सारी दिलचस्पी खत्म हो गई थी पर पता नहीं क्यों वह उसकी पूरी तरह उपेक्षा भी नहीं कर पाती थी. उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था जो सामना होते ही उस पर भारी पड़ता था. उसकी आंखों से गहरी सदाशयता का भाव आज तक उनकी मित्रता को कायम रखे था. पर अब उसे अपना स्वार्थ उसके अस्तित्व से ज्यादा अनिवार्य लगने लगा था. आज उसे अनिल से मिलकर निर्णय करना ही होगा. दो साल से ऐसे ही टलता आ रहा था.

लिफाफे में कुछ और भी था. उसने खोला, नए साल का टेबल कैलेंडर और एक पेन था. उसी फर्म का नाम था उन पर भी जिस फर्म की डायरी थी. तीनों चीजें ऊंचे स्तर की, महंगी और खूबसूरत थीं. कुछ देर वह सोचती रही थी तब उसे कुछ सूझा था. उसने पेन उठाकर अपने पर्स में डाल लिया और कैलेंडर और डायरी वापस लिफाफे में. उसने घड़ी देखी थी पांच बजने में वक्त था अभी. फोन का चोंगा उठाया और नंबर मिलाया था.

"हाय—अनिल." आवाज पहचान गई थी वह.

"फोन क्यों नहीं किया?" उसने नाराजगी दिखाई थी.

"आज ही तो आया हूं यार.."

"तो आज क्यों नहीं किया?"

"आज अभी है न! तुम नहीं करती तो मैं करता."

"फट्टे मत मारो."

"फट्टे नहीं मार रहा. सच कह रहा हूं."

"अच्छा सुनो—पांच बजे तुम्हारा इंतजार करूंगी—वहीं."

"नहीं, सवा पांच बजे के आसपास."

"सवा पांच बजे ठीक.

"ठीक. रखो तुम—बॉस का फोन है."

वह दूसरे फोन पर बात कर रहा था. यस सर—ओ के सर "रखना नहीं अनिल सुनो-सवा पांच बजे से देर मत करना."

"तुम रखो फोन—बॉस का फोन है—" उसकी आवाज में झुंझलाहट थी.

"सुनो वहां अकेले इंतजार करना मुझे अच्छा नहीं लगता. पिछली बार की तरह—"

"सिली!" उसने फोन काट दिया था.

उसने चोंगा पटक दिया. घड़ी देखी अभी भी पांच बजने में कुछ मिनट बाकी थे. वह उठकर बाथरूम गई, मुंह-हाथ धोया. ताजा मेकअप किया. बालों में ब्रश फिराया. फेशनर और सेंट छिड़का. साड़ी क्रश लग रही थी. उसने अपने लॉकर से उसी मैचिंग की साड़ी निकाली. इसकी व्यवस्था वह हमेशा रखती थी. उसकी जॉब ही ऐसी थी. बॉस के साथ आफिस के बाद भी जाना पड़ जाता था तो कैसे जाए इन मुड़े—तुड़े कपड़ों में. खासकर गर्मी के दिनों में वह एक ही मैचिंग की दो साड़ियां उठाती थी सवेरे. एक पहन आती थी और दूसरी लाकर लॉकर में रख देती थी. अगर नहीं भी जाना हुआ तो वैसे ही लौटा ले जाती थी. उसने साड़ी बदली और कमरे से बाहर निकली.

सचाई की चौंध से उसे साफ दिखाई दे रहा था. सीढ़ियों से ऊपर या नीचे ही जाया जा सकता है. बस! किसी ऊंची कुर्सी पर बैठे व्यक्ति की कल्पना में भविष्य साकार होने का सपना वह खामखाह ही देखती रही थी. परिस्थितियों और परिवेश को अलग नहीं किया जा सकता.

"हाय जानिम! इतनी फ्रेश—आफिस आ रही हो या जा रही हो." पूनम सामने खड़ी मुस्करा रही थी.

"हॉय जानिम! जा भी रही हूं और आ भी रही हूं."

"दोनों एक साथ कैसे?"

"यह मत पूछो." उसने उसके गाल पर चिकोटी काटी थी. "सारे सीक्रेट ऐसे थोड़े ही बताए जाते हैं. अपने को गुरु मानो—गुरुदक्षिणा दो तो बताएं."

"सोचेंगे—फिलहाल तो चार्टर्ड बस जा रही है. तुम्हें तो नहीं चलना है—लगता है." लिफ्ट रुकी और वह जल्दी ही उसमें चढ़ गई थी.

"ठीक लगता है—बॉय!" उसने हाथ हिलाया था और लिफ्ट भरी होने से सीढ़ियों की ओर मुड़ गई थी. सीढ़ियां उतरना अच्छा होता है—फिगर के लिए. वह मंद मुस्कराई थी.

उसने स्कूटर ले लिया था. जाना चाहे थोड़ी ही दूर था. पर पसीने से लथपथाना उसे अच्छा नहीं लगता था. अनिल से मिलने जाना और तमतमाया चेहरा लेकर पहुंचना उसे पसंद नहीं था. अगर अनिल उससे पहले पहुंचा हो तो स्थिति कितनी एम्बैरेसिंग होगी. यूं अनिल के पहुंचने की संभावना एक प्रतिशत ही होती थी पर वह इस मामले में एक प्रतिशत रिस्क उठाने को भी तैयार नहीं थी. यूं जाने को तो वह अनिल की गाड़ी में भी जा सकती थी उसके साथ. पर आफिस की चक्-चक् से वह दूर ही रहना चाहती थी. एक आफिस में काम करने का यही नुकसान था. उसने देखा पांच बजकर बीस मिनट हो चुके थे. पार्किंग में कहीं उसकी गाड़ी दिखाई नहीं दी. वह खीझी थी. कभी समय पर नहीं आता. बड़ी खराब आदत है इसकी. और वह बाहर खड़ी न होकर दरवाजा स्लाइड करके रिसेप्शन में आ गई थी. एयर कंडीशनर की भीनी सी ठंडक थी. वह अनिल के आने तक ऐसे ही तरोताजा दिखना चाहती थी. घड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

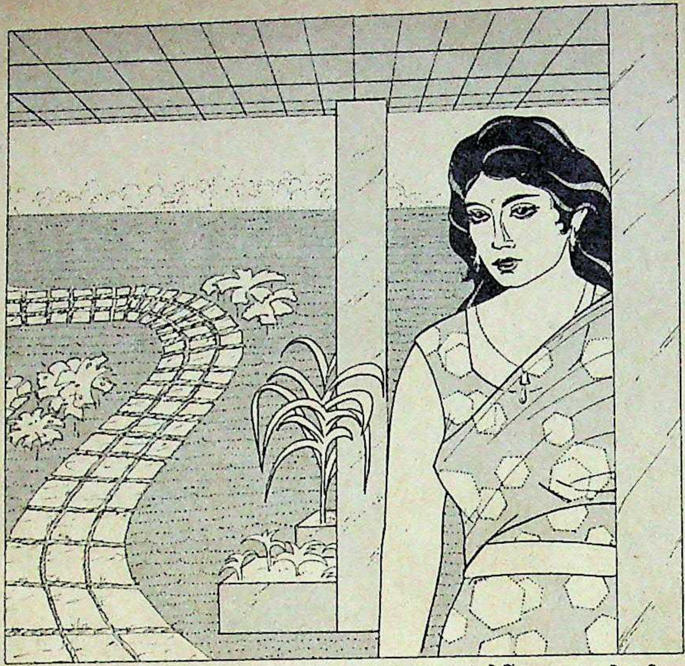

की सुइयां तेजी से घूम रही थीं. छह बज चुके थे. अनिल का कहीं पता न था. वह दो-तीन बार परदा खिसकाकर बाहर झांक चुकी थी. रिसेप्शन पर लगे सारे चित्रों, फूलों, पौधों की सजावट को वह कई-कई बार देख चुकी थी. पर अभी तक अनिल नहीं पहुंचा था. उसे गेट से नीली मारुति आती दिखाई दी थी. उसने सोचा बाहर निकलकर जाऊं पर फिर वहीं खड़ी रही थी. उसने गाड़ी पार्क की थी. हमेशा की तरह कि अगली और दाएं-बाएं की कारें बाहर न निकल सकें. पार्किंग का आदमी उसे गाड़ी दूसरी जगह पार्क करने के लिए कह रहा था लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा था. उसे देखकर लग रहा था उसे कतई कोई जल्दी नहीं थी. पार्किंग वाले से निपटकर वह आ रहा था. इधर-उधर झांकता हुआ. रिसेप्शन का दरवाजा स्लाइड करके भीतर आया था. वह बेसब्री से उसकी ओर लपकी थी.

"इतनी देर कर दी. अब तुम्हारे सवा पांच बजे हैं! देखो घड़ी, छह बज चुके हैं." मुक्के और मुट्ठियों से उसकी छाती ठोंक दी थी. वह सकपकाया था. रिसेप्शनिस्ट ने एक टेढ़ी मुस्कान फेंकी थी और टेलीफोन का चोंगा उठाकर बतियाने में व्यस्त हो गई थी. उन्हें रुकना नहीं पड़ा था. वे लिफ्ट में आ गए थे. उन दोनों के सिवा लिफ्ट में कोई नहीं था. उसने दूसरी मंजिल की बजाए तेरहवीं मंजिल का बटन दबाया था. लिफ्ट के उठते ही बढ़कर उसे बांहों में घेर लिया था.

"जंगली बिल्ली अब कहो—"

उसका चेहरा तमतमा आया था. "हमेशा लेट आते हो."

"सूद समेत तुम्हारे इंतजार को चुका भी तो देता हूं."

"डोंट टॉक शिट्."

"वाय वाय शिट्." वह फिर बढ़ा था. उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर उस पर झुक गया था. तभी लिफ्ट रुकी थी और दरवाजा सरका था. वह पीछे हट गया था. कोई विदेशी महिला भीतर आई थी. उनकी तरफ एक मुस्कान फेंकी थी और अगले फ्लोर पर ही उतर भी गई थी. उसके उतरने के बाद विजय ने फिर से ग्राउंड फ्लोर का बटन दबाया था.

"क्या कर रहे हो—ऊपर-नीचे ही जाते रहोगे?"

वह हंसता रहा था. "इट्स ए इंटरेस्टिंग प्लेस— लगता है तुमसे हवाई जहाज में प्यार कर रहा हूं." उसने उसे फिर घेर लिया था.

लिफ्ट ग्राउंड फ्लोर पर रुकी थी. दरवाजा खुला तो रिसेप्शनिस्ट की टेढ़ी नजर उन पर पड़ी थी. वह बाहर निकल आया था.

"एक्सक्यूज मी—मैडम. कॉफी शॉप कौन-सी मंजिल पर है?"

"दूसरी."

"थैंक्स," वह वापस आ गया था.

"पूछने क्यों गए थे."

"समझो यार—उसको शक हो रहा था."

"तुम्हारी असलियत जान रही थी."

"पहले तुम तो जान लो मेरी असलियत. चलो, आओ."

उसे विजय में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी. उसे लेकर घर के बोझ से दबी घरेलू पत्नी का जो चित्र उसके मानस में उभरता था उससे अलग परिंदों की उड़ान को अपनी मुट्ठियों में कैद करने वाली औरत को संजोए थी वह अपने भीतर. पर विजय आदर्शवाद की झोंक में खो गया था

वे अपनी पुरानी जगह बैठ गए थे. खिड़की के पास वाली मेज पर हमेशा की तरह.

"कुछ खाओगी?"

"कुछ भी लाइट. हां तो—कैसा रहा तुम्हारा टूर."

"मार्केटिंग में आकर बोर हो गया हूं. टिकने ही नहीं देते. बाहर का खाना और सफर सूट नहीं करता मुझे."

"क्यों हवाई जहाज से जाते हो और फाइवस्टार में खाते हो. तो भी?"

"नानसेंस! आई वांट टू हैव ए सैटल्ड लाइफ ऐंड ए होमली वाइफ." वह हंसा था—"डिजाइनिंग में वापस चला जाऊंगा." धम्म से उसके भीतर कुछ गिरा था. एक आहत सीझ उभरी थी. ब्लडी हिप्पोक्रेट. सब के सब एक जैसे हिप्पोक्रेट. उसने याद दिलाया था.

"उस नागराजन का किस्सा याद है तुम्हें. पूरे दो साल गीता कपूर के साथ खेल-कटारी करता रहा और ब्याह के लाया था वही अपनी जात-बिरादरी की चिकने मुंह वाली दक्षिण भारतीय यायम्मा को."

"डाइवरशन माई डियर. लिटिल डाइवरशन मेक्स लाइफ सो गे! पर मैं किसी दक्षिण भारतीय यायम्मा को नहीं ब्याह कर लाने वाला." वह हंसा था. "चलें अब?"

"क्यों, जल्दी है क्या?"

"हां—मम्मा को शापिंग करनी है. दफ्तर से सीधे घर आने को कहा था."

"तो श्रवणकुमार जी! यह सीधा कैसे हुआ?"

"लिटिल डाइवरशन इज अलाउड." उसकी आंखों में शरारत कौंधी थी.

"अच्छा सुनो—" उसने लिफाफा उसके सामने रख दिया था मेज पर, "तुम्हारे लिए नए साल की शुभकामनाएं."

"क्या है इसमें?"

"तुम देखो न."

उसने लिफाफा खोला था. "ब्यूटीफुल!"

"गुड वन. कहां से मारी?"

"मारी मतलब? लाई हूं तुम्हारे लिए."

"थैंक्स! शुभकामनाओं के लिए थैंक्स नहीं करते." उसे लगा था कुछ बातें ऐसी होती हैं हवा में तैरती-सी गंध बिखेरती हैं. पकड़ से बाहर और अदृश्य, पर तो भी कितनी असरदार.

उसने उसका हाथ दबाया था. "यह सैंटी कब से होने लगी? ह् अ्. चलें अब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर निकल आए थे.

अनिल ने उस डायरी को उलट-पलटकर देखा था. कैलेंडर उठाकर ब्रीफकेस में रख लिया था. उसने सोचा था. इतनी खूबसूरत डायरी पर्सनल इस्तेमाल के लिए नहीं होती. इससे किसी को ऑब्लाइज किया जाए तो?

"मे आई कम इन सर?"

खुली फाइल से सिर उठाकर बॉस ने चश्मे के ऊपर से झांका था.

"यस यस! कम!"

"सर मैं अनिल मेहरा मार्केटिंग में."

"आई नो आई नो! कम यंगमैन. टेक ए सीट."

"थैंक्यू सर!"

"सो... कैसा रहा तुम्हारा टूर. टेंडर मिलेगा कि नहीं?"

"उम्मीद तो सौ प्रतिशत है सर!"

बॉस खुश लगा था. "यू आर ए प्रामिसिंग यंग मैन." उसे लगा यही वक्त है इससे अपनी ट्रांसफर की बात कहूं. पर, फिर कुछ सोचकर रुका था वह. उसने लिफाफे से डायरी निकालकर मेज पर रखी थी.

"सर आपको नया साल विश करने आया था."

"वैरी गुड. थैंक्यू."

"थैंक्यू सर!" वह बाहर आ गया था. उसने सोचा था चारा डाल दिया है. शिकार तो फंसेगा ही.

सवेरे वह दफ्तर समय से ही आई थी. अभी उसने पर्स वगैरह रखा ही था कि बॉस का बुलावा आ गया. उसे कई बार ऐसा लगा था कि यह बॉस और कुछ नहीं तो ठरकी जरूर है. यूं दफ्तर में उसकी हवा खराब नहीं थी. पर जब भी वह उसके कमरे में अकेली होती, वह बिना वजह पिघलने लगता. जरूरत से ज्यादा नरम पड़ जाता. दफ्तर के समय के बाद भी उसे कई काम सूझते रहते. ठीक है ओवर टाइम देता है. लगता है इसको घर या दफ्तर में कोई फर्क महसूस नहीं होता. मुरदार छह बजे निकलकर भी फाइलों का ढेर अपनी गाड़ी में रखवा लेता है और दूसरों की शामों पर झाड़ू मार जाता है. वह बुदबुदाई थी, "कल आठ बजे जाकर भी यह मुरदार सवेरे नौ बजे से पहले पहुंचा होता है. धत् तेरे की." उसने एक बार नज़र दौड़ाई. सब ठीक-ठाक है. कल का कोई काम छूटा तो नहीं. आज के पेपर, डायरी के

उसे कई बार ऐसा लगा था कि यह बॉस और कुछ नहीं तो ठरकी जरूर है. यूं तो दफ्तर में उसकी हवा खराब नहीं थी. पर जब भी वह उसके कमरे में अकेली होती, वह बिना वजह पिघलने लगता. जरूरत से ज्यादा नरम पड़ जाता.

एप्वायंटमेंट्स रेडी थे. विश्वास से भरकर वह अंदर गई थी. "गुड मार्निंग सर."

"गुड मार्निंग. मिस नीरू. बैठिए."

उसने पैड और पेन निकाला था.

"यस सर! डिक्टेशन?"

"ओह नो डिक्टेशन! रिलैक्स!" उसने रिलैक्स होने की कोशिश की थी और वह बैठा बैठा मुस्कराता रहा था.

"वाई आर यू लुकिंग सो टेंस?"

"नो सर! मैं बिल्कुल ठीक हूं."

"आप कभी आफिस से हटकर कुछ नहीं सोचतीं क्या?" उसे लगा यह ठरकी जरूर अपने दांतों के बीच कुछ चबा रहा है. अभी उगलेगा. उसने मानसिक रूप से अपने को तैयार किया था.

"दिस इज फॉर यू मिस नीरू."

बॉस ने एक बड़ा-सा पैकेट उसकी ओर बढ़ा दिया था.

"ओह! नो सर!" वह हड़बड़ी में कह गई थी. यह बॉस उसे उपहार देगा. इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी. फिर विचार आया उपहार देगा तो क्यों?

"वाई नो? यू डोंट लाइक इट? पहले देख तो लो खोलकर!"

"यस सर. थैंक्स सो मच."

उसने लिफाफा खोला था. उसकी आंखें फटी की फटी रह गई थीं. मुंह से भयावह चीख निकलते-निकलते बची.

"क्या हुआ?"

वह संभली थी. "नथिंग सर. थैंक्स सर! थैंक्स ए लाट." वह बाहर आई थी. अपनी सीट पर बैठकर उसने गर्दन और माथे का पसीना पोंछा था. उसके हाथ में वही डायरी थी. उसका खून खौल रहा था. "अपॉर-चुनिस्ट कहीं का. उसे ट्रांसफर चाहिए डिजाइनिंग में. बॉस को मक्खन लगाने के लिए—मेरा उपहार." अपना स्वार्थ दूसरे के अस्तित्व से ज्यादा जरूरी क्यों लगने लगता है. उसकी विचारधारा ने पलटा खाया था. सचाई की चौंध से उसे सारी स्थिति साफ दिखाई दे रही थी. सीढ़ियों से ऊपर या नीचे जाया जा सकता है. बस! वह कब से यहां यूं ही खड़ी उधारी ऊंचाई पर इन बहुमंजिला इमारतों की वातानुकूलित खिड़कियों के बंद कांचों के परदों के पार कमरे में किसी ऊंची कुर्सी पर बैठे व्यक्ति की कल्पना में अपना भविष्य साकार होने का सपना लेती रही. आज उसे साफ दिख रहा था कि अपनी परिस्थितियों और परिवेश को काटकर यूं अलग नहीं किया जा सकता. औरत बनकर राह नहीं बदली जा सकती. उसने चोंगा उठाया और नंबर मिलाया था.

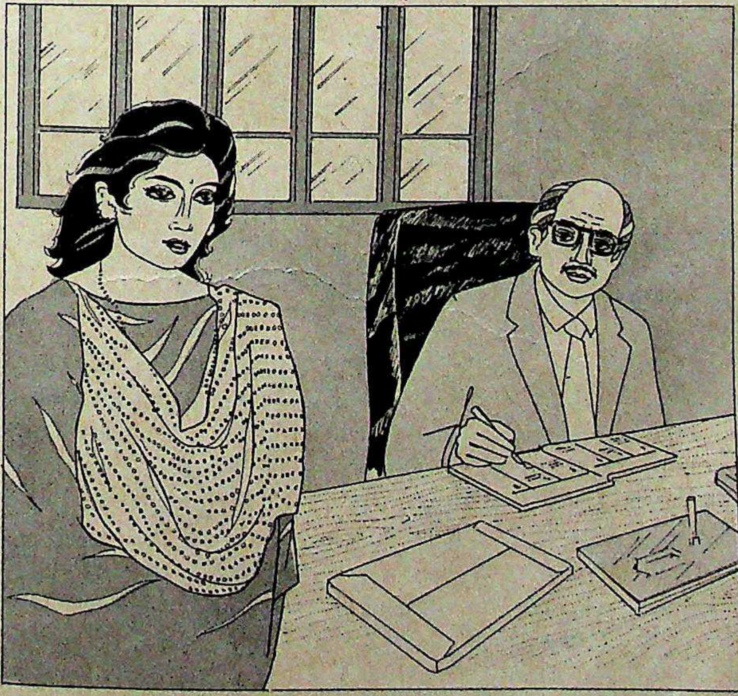

"हैलो—विजय. हां मैं हूं—नीरू. तुमने कहा था न शुक्रवार तक फोन कर दूंगी. कल शनिवार—खाली रहोगे—शाम को—ठीक है—त्रिवेणी में ही मिलते हैं—बाय!" उसने चोंगा नीचे रखा. गर्दन कुर्सी के पीछे टिकाकर कंधों के पीछे फेंक ली थी. उसे लगा वह बिलकुल तनावमुक्त हो गई थी. कुछ देर यूं ही आंखें बंद करके बैठी रही. फिर वह उठी थी आज के सारे कामों को मन में दोहराते हुए टाइपराइटर पर कागज चढ़ाकर फटाफट फटाफट टाईप करने लगी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

आस्था का संदेश

और दुर्दशा पर सहज दृष्टि

यशपाल का 'झूठा सच' अगर स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद की स्थितियों एवं मानसिकता का जीवंत दस्तावेज था तो श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' में स्वाधीन भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार का व्यंग्यात्मक अंकन. उपन्यासों की इसी कड़ी में है विवेकी राय का उपन्यास 'समर शेष है.' आठवें दशक में भारतीय ग्रामीण जनों को विकास के नाम पर मिलने वाली 'सुविधाओं', शिक्षा, शिक्षार्थियों और शिक्षकों की स्थितियों, उनके बदले दिमाग़ और सड़कों तथा पुलों के लिए संघर्ष करते सीधे-सच्चे ग्रामीणों का प्रतिनिधित्व करते हुए पंडित संतोष कुमार त्रिवेदी उर्फ संतोषी पंडित, सुराज और रामराज के चरित्रांकन के माध्यम से उपन्यासकार ने अपने कथ्य में संघर्ष की अस्मिता को बरकरार रखते हुए हार न मानने का परोक्ष संदेश दिया है.

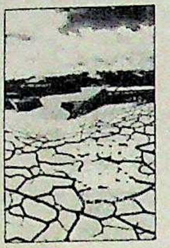

समर शेष है
उपन्यास
विवेकी राय
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-6
कुल पृष्ठ: 514
कीमत: 150 रुपए

संतोषी पंडित गांव के एक कॉलेज में प्राध्यापक हैं और उनमें एक सहज और आस्थावान शिक्षक के गुण हैं. अपने योग्य विद्यार्थियों को पहचानने में भी रुचि लेते हैं और परीक्षा में नकल करने वालों को रोकने पर भी खूब पिटते हैं, मगर रपट तब भी नहीं लिखाते. उनमें एक बुद्धिजीवी की प्रश्नाकुलता, संवेदनशीलता पर्याप्त मात्रा में मिलती है. साथ ही सुराज के प्रति प्रीति-भाव और रामराज को अपनी बेटी कालिंदी के लिए वर स्वरूप अपनाने की चाह भी है. मगर ऊहापोह, खोजबीन तथा जीवन के दूसरे संघर्षों में उलझे संतोषी पंडित अनवरत जूझने की स्थिति में तैयार मिलते हैं और उनका यह 'समर' अभी भी 'शेष' बना रहता है.

विवेकी राय ने अपनी समस्त क़िस्सागोई, सूक्ष्म चित्रण, वर्णन, गहन अंतरंगता के बीच 'सुराज', 'रामराज' और 'जनता' जैसे प्रतीकों का सहारा लेकर भी कथा का ताना-बाना बुनने में संपूर्ण कौशल का परिचय दिया है.

'समर शेष है' में पात्रों, चरित्रों की बहुतायत स्वाभाविक है, क्योंकि इसका फलक विशाल है और राजनैतिक तथा सामाजिक विसंगतियों का मायाजाल इन चरित्रों और पात्रों के माध्यम से स्पष्ट होता है. तस्करी के धंधे में जुटे लोग संतोषी पंडित की गरीबी को ललचाते हुए उन्हें भी धनवान बनने का लालच दे डालते हैं. मगर संतोषी पंडित मध्यमवर्गीय स्थिति के बावजूद अपने विवेक, अपने चरित्र और अपनी दृढ़ता को बनाए रखने में काफ़ी सीमा तक तत्पर मिलते हैं.

'समर शेष है' जैसी व्यापक रचना में विकास की विसंगतियां, अनुदानों की हेरफेर, निष्ठा की खरीद-फरोख्त, गुटबंदी के दांव-पेचों का अंकन है. मगर संतोषी पंडित के सहज विश्वासों का सम्मान करने वालों की भी कमी नहीं.

विवेकी राय का यह उपन्यास अपनी मिट्टी की गंध, उससे जुड़ाव, ग्रामीण अंचल के माध्यम से संपूर्ण देश की दुर्दशा को देख सकने की सहज दृष्टि और उपन्यास में विद्यमान रोचकता के कारण चर्चा का विषय बनेगा, ऐसा विश्वास है.—**शेरजंग गर्ग**

कहानी संग्रह

मात्र उपस्थिति

इसमें आत्मतत्व गायब

साहित्य के अलिखित 'शब्दकोश' में 'संपादन' का अर्थ है—'आत्मतत्व निष्पादन'. अपने चोले के हिसाब से यह 'अर्थ' खासा गुरु गंभीर दिखता है मगर अपनी अर्थ-ध्वनि में एकदम पारदर्शी है. उदाहरणार्थ हिंदी कहानी के सफर को ही लें जिसमें संपादित पुस्तकों की खासी मात्रा है (राजेंद्र यादव की 'एक दुनिया समानांतर' से लेकर महेश दर्पण की 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी कोश' तक). मगर इस मात्रा से कथा यात्रा का कुछ भला हुआ हो, ऐसी भी कोई गवाही नहीं मिलती. प्रश्न उठता है कि फिर कहानी संग्रहों के संपादन या तथाकथित संपादन का औचित्य क्या है?

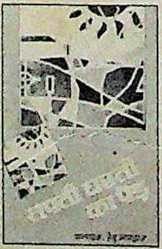

तपती धरती का पेड़
कहानी संग्रह
संपादक—हेतु भारद्वाज
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
कीमतः 65 रु.;
कुल पृष्ठः 220

जहां यह काम लगभग सर्जनात्मक होता है, वहीं यह बेहद सतही ढंग से भी अंजाम दिया जाता है. कुछ उत्साही कहानीकारों का संयुक्त प्रयास, प्रकाशन की सुविधा प्राप्त 'मूर्तियां', ऊंची खरीद के स्विच बोर्ड पर बैठे अधिकारी-कर्मचारीगण तथा संपादक के रूप में गिने जाने के प्रत्याशी 'साहित्यकार' आदि के लिए सबसे उम्दा तथा सरल काम 'संपादन' करना ही है. सरकार द्वारा पाली-पोसी जाने वाली अकादमियों के लिए तो यह काम लगभग वरदान है जिसके चलते वह अपने प्रदेश के अधिकांश 'साहित्यकारों' को किताबबंद होने का संतोष दे सकती हैं. प्रसंगतः समीक्षित किताब भी 'राजस्थान के कहानीकार' शृंखला के तीसरे भाग के रूप में 'तपती धरती का पेड़' शीर्षक तले पाठकों के सामने आई है.

इस बात को कतई नजर अंदाज नहीं किया जा सकता कि ऐसे प्रयासों में दबी-ढंकी प्रतिभाओं पर से अ-चर्चा की धूल को हटाया जा सकता है. प्रतिभाओं की ऐसी ही खोज के लालच में ये कहानियां पढ़ने पर यह किताब इस 'खोज' को सुखद नहीं बनाती. संकलन की अधिकांश कहानियों का परिवेश व्यवस्था के तले दबे-पिसे पात्रों का जीवन तो है मगर इसमें जीवंतता नहीं है. तात्कालिक, सतही, अवास्तविक तथा अविश्वसनीय (या फुटपाथिया) कथ्यों पर बुनी गई इन प्रायः सभी कहानियों को पढ़ा तो जा सकता है मगर महसूस नहीं किया जा सकता. आज लिखी जा रही हिंदी कहानी का कमोबेश पत्रकार की रपट में 'रिड्यूस' हो जाना आज की कहानी का सबसे बड़ा संकट है. यह संकलन भी इसी संकट की पुष्टि करता है.

संपादक की भूमिका से यदि राजस्थान के अतिरिक्त आग्रह को संपादित कर दिया जाए तो यह एक अच्छा, पठनीय लेख है. कहानियों में 'अनस्तित्व', 'इधर मत बहो', 'हवा', 'धारा के विरुद्ध', 'नाटक' तथा 'वह लड़की अभी जिंदा है'...ऐसी रचनाएं हैं जो किसी हद तक अवश्य सराही जा सकती हैं. यह लगभग चौंकाने वाली-सी बात है कि मालचंद, रामानंद राठी या मोहर सिंह आदि सक्रिय कथाकारों के पास बेहतर कहानियां तो हैं मगर इस संकलन में अपेक्षाकृत कमजोर कहानियां ही संकलित की गई हैं.

—**राजकुमार गौतम**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होता
अंजाम
कारों
सुविधा
वोर्ड
संपा-
त्याणी
उम्दा
ही है.
वाली
लगभग
देश के
ताबवंद
संगत:
न के
के रूप
पाठकों

न नहीं
दबी-
पूर्ल को
ऐसी ही
पर यह
बनाती.
परिवेश
जीवन
हीं है.
तथा
यों पर
को पढ़ा
किया
हिंदी
पट में
नी का
इसी

जस्थान
आग्रह
कर
तो यह
पठनीय
नियों में
'इधर
'हवा',
विरुद्ध',
'वह
जिंदा
द तक
लगभग
लचंद,
सक्रिय
तो हैं
कमजोर

र गौतम

आपकी स्वाभाविक पसंद

...के शुद्ध, सही अनुपात में मिश्रित ...किस्मों में. हरेक में औसतन अठारह ...मसाले. मिलावट से सुरक्षित, तिहरे ... फ़ॉइल पैकेटों में सीलबंद. ..., डालिए और पकाइए.

... स्वाद. 'प्रेशर कुकिंग' के लिए ... द्वारा ख़ास तौर से तैयार किए गए. ... के बिना भी खाना पकाने के ...

३३ व्यंजन-विधियोंवाली मुफ़्त पाक-पुस्तिका के लिए हॉकिन्स मसाले के एक खाली पैकेट के साथ इस पते पर लिखिए: हॉकिन्स विभाग ००७, पी.ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई ४०० ०१६.

१०० ग्राम के पैकेट का अधिकतम खुदरा मूल्य रु. १५.०० (सभी करों सहित).

हॉकिन्स®
प्रेशर कुकिंग
मसाला

... स्टॉकिस्ट और डिस्ट्रीब्यूटर चाहिए. तुरंत आवेदन करें.
... हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा आरक्षित.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा. हॉकिन्स.

HC4376 H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी-अपनी फीस

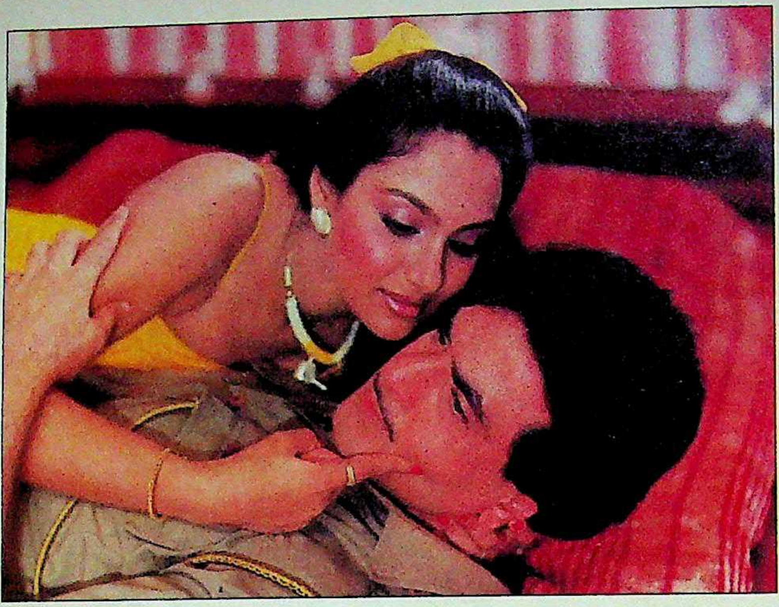

जीतेंद्रः बेबाक बयानी

इस बात को **जीतेंद्र** की उन कई 'ईमानदारियों' में ही गिना जाना चाहिए जिनके लिए वे मशहूर रहे हैं. मसलन, उन्होंने कहा था कि लड़कियों के साथ चक्कर चलाना अब उन्होंने छोड़ दिया है क्योंकि बच्चे बड़े हो गए हैं. यानी, बीवी की ओर से तो कभी इस बारे में चिंता थी ही नहीं! उन्होंने यह भी कहा था कि किसी भी हीरो की सबसे बडी पूंजी उसका फेस और फिगर ही तो है इसलिए वे इन्हें बनाए रखने में कोई कसर नहीं छोड़ते (शायद इसीलिए एक्टिंग के खाते में कुछ नहीं जोड़ते)

अब उन्होंने इसी 'ईमानदारी' से एक नई बात स्वीकार कर ली है. उनके मुताबिक, लोग उन्हें चाहे कितना भी रईस क्यों न समझें, खुद उन्होंने एक लाख रु. एक साथ कभी नहीं देखे. इस बात को हालांकि कुछ लोगों ने चुटकुले की तरह लिया है लेकिन भीतर ही भीतर तीन बड़ी और गंभीर अभिनेत्रियां उनके पीछे पड़ी हुई हैं, उनसे कुछ सद्ज्ञान पाने के लिए क्योंकि उनके सामने जीतेंद्र के कुछ निकटवर्ती सूत्रों ने जीतेंद्र की ईमानदारी का रहस्य जो खोल दिया है. उन्होंने कहा है, "वे एक्टर कैसे भी हों, व्यापारी इतने चतुर हैं कि एक जगह पर एक साथ ज्यादा पैसा जमा होने ही नहीं देते. पैसा आने के पहले ही वे हिसाब लगा चुके होते हैं कि उसे कहां लगा देने से वह कितनी जल्दी दोगुना हो जाएगा. ऐसे गरीब के सामने पैसा भला आए कैसे? आने के पहले ही वह चला जो जाता है दोगुना होने?"

अभिनेत्रियां यही गणित सीखना चाहती हैं. लेकिन डरती हैं जीतेंद्र की फीस से, जो जरूरी नहीं कि नकद रुपयों में ही वसूली जाती हो.

यह कौन-सी शूटिंग

हो सकता है कि सच वही हो जो **मंदाकिनी** बार-बार कह रही थीं, "मैं शूटिंग कर रही थी", क्योंकि सच के बारे में कहा जाता है कि एक ही झूठ को सौ बार कहें तो वह सच ही लगने लगता है. लेकिन कम-से-कम आज तो वे शूटिंग कर ही रही थीं और हर मिलने वाला उनसे पूछ रहा था, "कहां थीं आप इतने दिन? कहीं नजर नहीं आईं?"

मंदाकिनी के जवाब को अगर सच मान लिया जाए तो सवाल यह पैदा होता है कि अगर वे तीन महीने तक शूटिंग कर रही थीं तो कहां? वह शूटिंग काहे की हो रही थी जिसमें वे किसी को नजर नहीं आईं? लेकिन लड़कियों से ऐसी बातें पूछना शालीन नहीं समझा जाता, खास तौर पर तब, जब उनके संबंध पूर्व, मध्यपूर्व और सुदूर-पूर्व सभी तरफ बताए जाते हों. लेकिन ऐसी शालीनता फिल्म इंडस्ट्री में हर कोई बरतता नहीं है और इसलिए जवान लडकियों की मांओं को जरा अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ती है. और बेचारी मंदाकिनी तो वैसे भी इस बात से अपरिचित ही हैं कि शालीन क्या होता है और अश्लीलता किसे कहते हैं?

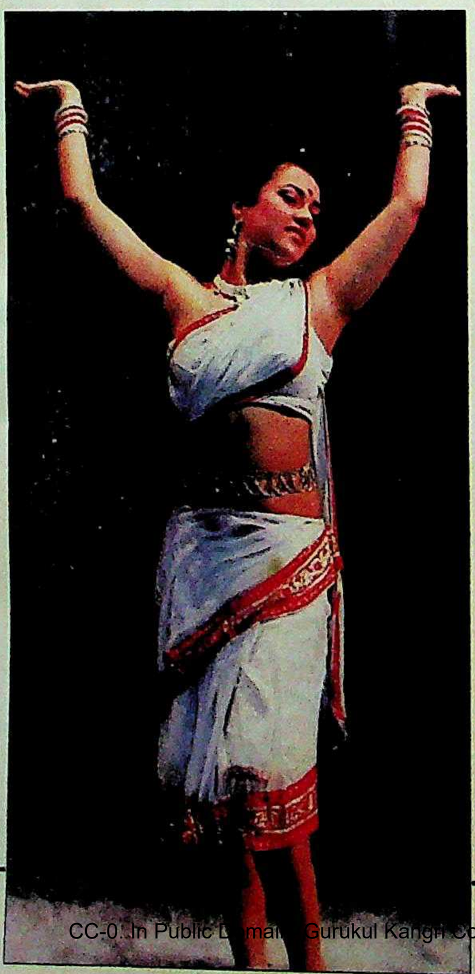

मंदाकिनीः लंबी गैरहाजिरी

इस शूटिंग में वे निर्देशक की उस मांग को पूरा किए जा रही थीं जिसमें वह एक लड़की को अपने भीगे कपड़े अंगडाई ले-लेकर बदलते दिखाते हुए उनसे काफी कपड़े कम करवा चुका था. बेटी की साया बनकर हरदम साथ रहने वाली उनकी चतुर मां ने इस बात का दोहरा फायदा उठाते हुए निर्देशक को डांट पिलाई, "मंदा ऐसे सीन नहीं करेगी" और खींच ले गई बेटी को कार में, वहां से रफूचक्कर हो जाने के लिए!

अपनी तरफ से तो उन्होंने होशियारी ही बरती पर शायद जल्दी में यह भूल गईं कि जब चोर की दाढ़ी में तिनका नहीं होता तब वह दाढ़ी को छिपाने की कोशिश भी नहीं करता.

जहाज के पंछी

बंबई से दूर, बंगलूर में बस जा... के बावजूद **वहीदा रहमान** के जीव... की वे दरारें भर नहीं सकीं हैं जो उन्हें फिल्म जगत ने दी थीं. उनके पति हालांकि खुद फिल्मी ग्लेमर का शिकार रह चुके हैं लेकिन पत्नी अपने भव्य अतीत की बात भी करे यह उन्हें बरदाश्त नहीं होता. पत्नी का बंबई जाना तो दूर, बंबई से किसी का बंगलूर चले आना भी उन्हें नहीं सुहाता.

विरोध की ऐसी खाद में ही सद... विद्रोह के अंकुर फूटे हैं. अब वहीदा ने लगभग साफ जाहिर कर दिया है कि वे फिल्मों में लौटने को आतुर हैं. पहले उन्होंने महेश भट्ट की फिल्म 'स्वयं' स्वीकार की और बहाना बनाया कि महेश बार-बार फोन करते थे और एक बार फोन पति के हाथ पड़ गया तो महेश ने फोन पर ही उन्हें कहानी सुना डाली. पति को कहानी इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने तुरंत अनुमति दे दी.

'स्वयं' कहां है, दर्शक नहीं जानते. लेकिन फिल्मों से विदा ले चुकी वहीदा 'चांदनी' के एक्स... जैसे रोल के जरिए क्या कोशिश कर रही हैं और क्यों, यह अब वहीदा छिपाने के बावजूद छिपा नहीं ... गया है. 'सुखी गृहस्थी' की ... कहानियां फ्लॉप हो चुकी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खट्टे अंगूर

चाहें तो यह कह लें कि 'पुष्पक' जैसी शानदार फिल्म की, हल्की हरी आंखों वाली जानदार अभिनेत्री द्वारा लगाया गया हर आरोप सिर्फ 'खट्टे हैं अंगूर' माना जाना चाहिए. बड़ी-बड़ी फिल्में मिल जाने और 'पुष्पक' को अपार प्रचार पुरस्कार के बावजूद **अमला** बंबई की फिल्म इंडस्ट्री में जगह नहीं बना सकीं, हालांकि उनकी प्रतिभा, सौंदर्य और अभिनय कुशलता को देखते हुए उन्हें 'पुष्पक' और 'दयावान' के दौर में अभिनेत्री के लिए खतरा साबित किया जाने लगा था. इसकी वजह साफ करते हुए अमला ने कहा है कि "बंबई में फिल्म में काम देने की बात के बहाने लोग उंगली तक पहुंचते हैं और फिर सीधे दबोच लेने की कोशिश में उतर आते हैं. जैसे-तैसे काम हासिल कर लेने वालियों को यह सब बरदाश्त होता होगा पर मैं कभी भी हिंदी फिल्मों में आने को उनकी तरह उत्सुक नहीं थी. मुझे तो लोग मद्रास में मेरे दरवाजे आकर लिवा लाए."

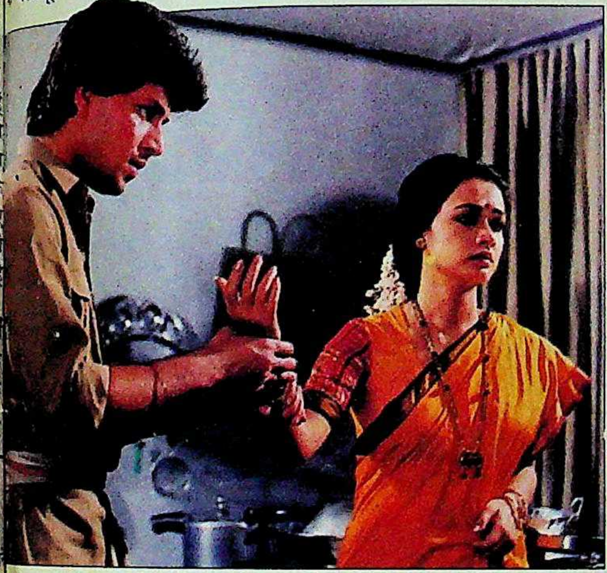

अमलाः सौ-सौ बहाने

किस-किस पर है अमला का यह प्रहार और क्यों? क्या यह मान लेना चाहिए कि हर असफल अभिनेत्री यही कहती है या यह कि हर चीज खरीदी नहीं जा सकती?

लाजवाब तारीफ

पांसा कभी-कभी यों उलटा भी पड़ सकता है. लेकिन इस मामले में तो लोग दोष पांसे को ही दे रहे हैं, जिसका, उनके मुताबिक कोई सीधा पक्ष है ही नहीं. "चाल चलनी ही थी तो क्या यही एक चुनाव रह गया था?" उनका सीधा लगने वाला सवाल आजकल सबकी मुश्किल बना हुआ है?

सरकार के हाथ मजबूत करने के लिए पार्टी ने सुनील दत्त को संसद का चुनाव लड़वाया. दत्त साहब ने अपने ढंग से कुछ कर दिखाने की कोशिश तो भरपूर की ही है. पर जब उन्हें अपने हाथ मजबूत करने की जरूरत पड़ी तो युवा कांग्रेस का पदाधिकारी बनाने के लिए उन्हें अपने सुपुत्र **संजय दत्त** से ज्यादा योग्य कोई नहीं दिखा. शायद सुनील भी अपनी पार्टी की परंपराओं के ईमानदारी से पालन पर उतर आए हैं. वरना वे बंबई में भला ऐसा क्यों करते? उनके बेटे से भी काबिल लोग वहां मौजूद थे. इस पर कइयों की भौंहें टेढ़ी हुई हैं.

लेकिन अभी विपक्ष के एक बड़े नेता ने संजय दत्त की भरपूर सराहना करके इस चुनाव को सर्वथा श्रेष्ठ सिद्ध करते हुए कइयों की बोलती बंद कर दी है. उन्होंने कहा है, "संजय दत्त विदेश से चाकू, छुरी और पिस्तौल की गोलियां लाते समय झंझट में पड़ चुके हैं, नशे की गोलियों की लत में गिरफ्तार रह चुके हैं, बंदूक चलाकर पड़ोसियों को आतंकित कर चुके हैं, प्रेम लीलाओं के लिए जाने-पहचाने हैं, असफल हैं, तब फिर भला कांग्रेस संस्कृति की कौन-सी कमी है उनमें? और सबसे बढ़कर, वे एम.पी. के बेटे जो हैं."

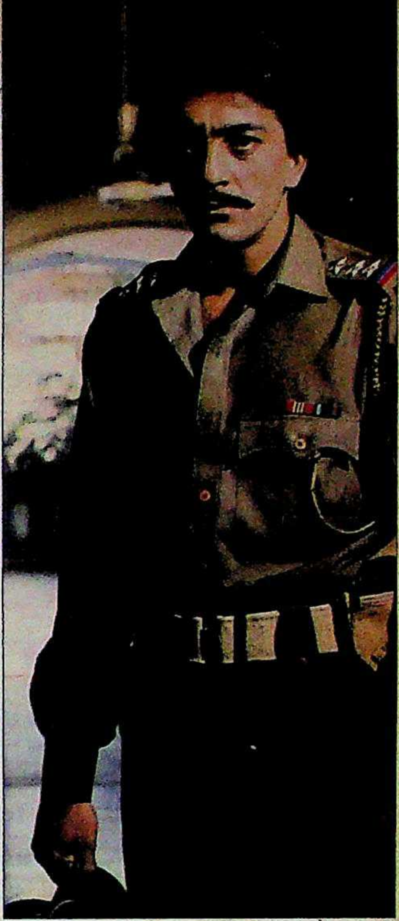

संजयः पिता की कृपादृष्टि

कांग्रेस के नए-नए सिपाही संजय उलझन में हैं कि इस तजुर्बेकार तारीफ का जवाब दें तो क्या?

मर्दानगी का सबूत

उस दिन बात बहुत बढ़ जाने का खतरा पैदा हो गया था लेकिन **धर्मेंद्र** के मिजाज को पहचानने वाले जानते हैं कि वह ज्वार की तरह धीरे-धीरे नहीं, वायरल फीवर की तरह एकदम से सौ पांच पर पहुंच जाता है.

बंबई के बाहर से किसी कालेज के छात्र शूटिंग देखने आए हुए थे. उनके साथ छात्राएं भी थीं. एक छात्रा ने धर्मेंद्र के साथ कुछ देर बातें करने की इच्छा जाहिर की. उस वक्त वे शॉट में व्यस्त थे इसलिए उन्होंने एक सहायक को निर्देश दिया कि उसे ले जाकर मेकअपरूम में बिठा दें. शॉट के बाद वे वहीं आएंगे.

शिष्टाचार तथा मेहमाननवाजी के लिए मशहूर धर्मेंद्र की इस बात को छात्रा ने गलत अर्थ में ले लिया और सहायक को पलटकर जवाब दिया, "कह देना अपने साहब से कि हर लड़की हेमा मालिनी नहीं है जो आपके मेकअप रूम में आ जाएगी. कुछ कहने से पहले अपनी उमर का तो लिहाज किया होता!"

धर्मेंद्रः गुस्सा सातवें आसमान पर

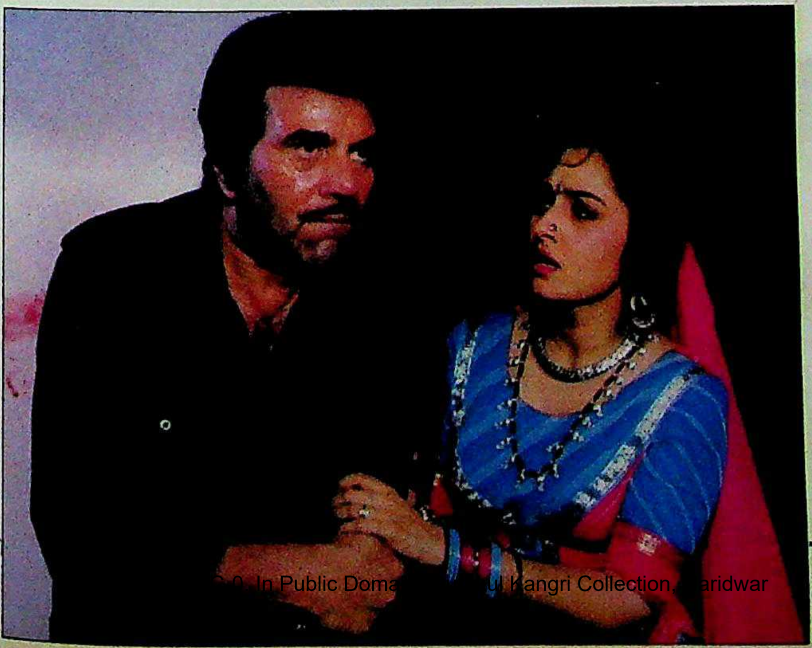

धरम की पत्नी हेमा तो उनकी कमजोरी हैं ही, उम्र उनसे भी बड़ी कमजोरी है. अपनी मर्दानगी के सबूत पेश कर दिखाने को उन्होंने उस वक्त ऐसे-ऐसे प्रस्ताव पेश कर डाले कि सबने कानों पर हाथ धर लिये!

लेकिन अपने 'भ्रा जी' को भली-भांति जानने वाले जरा भी चिंतित नहीं हुए. बात बढ़ती देख वे उन्हें स्टुडियो से ही सरका ले गए और ले जाकर डुबा दिया प्यालों में. अगले रोज सब ठीक हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ उनकी तमन्ना थी तो बस इतनी कि विमान परिचारिका बनी रहूं. और लोग थे कि उन्हें सबसे खूबसूरत होने का ताज पहनाने को आतुर थे. एअर इंडिया की विमान परिचारिका, चंडीगढ़ की 21 वर्षीया **सुनीता सोढी** को यह ताज पहनने के लिए ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी. पेरिस के कैसीनो डि पेरिस में अपने मुकाबले 16 बालाओं को उन्होंने मोहिनी मुस्कराहट से मात दे दी. और 'मिस वर्ल्ड एअरलाइंस' का पट्टा उनके कंधों पर लहरा गया. सुनीता ने बड़ी सौम्यता और शालीनता से कहा, "मैं विमान परिचारिका बनी रहकर एअर इंडिया की सेवा करती रहना चाहती हूं."

सुनीताः ताज तक उड़ान

◆ भारत और पाकिस्तान के बीच इस नए रिश्ते में तनाव से ज्यादा मिठास ही थी, बावजूद इसके कि दिल्ली के ऊंचे हलकों में लोकप्रिय सुरमई आंखों वाली जिंदादिल संपादिका 31 वर्षीया **सादिया देहलवी** ने अपने जीवन की डोर पाकिस्तान के 52 वर्षीय **रजा परवेज** के साथ बांधकर कई दिल्लीवालों के दिल तोड़ दिए. चांदी जैसे सफेद बालों वाले परवेज इस्लामाबाद में ऑटोमोबाइल उद्योग में काम करते हैं. सादिया ने अपनी चिरपरिचित साफगोई के साथ कहा, "सारे भारतीय पिछड़ गए... परवेज ही अकेले ऐसे शख्स निकले जिन्होंने हाथ थामने का प्रस्ताव रखा और उस बोझ को उठाने का साहस दिखाया जिसका नाम सादिया देहलवी है." पाकिस्तान में अपनी दावतों के लिए मशहूर परवेज कहते हैं, "मैं उनसे उनके बेलाग तौर-तरीकों की वजह से मुहब्बत करता हूं." और दिल्लीवालों के दिल भी तो सादिया इसी वजह से उड़ा ले जाती रही हैं.

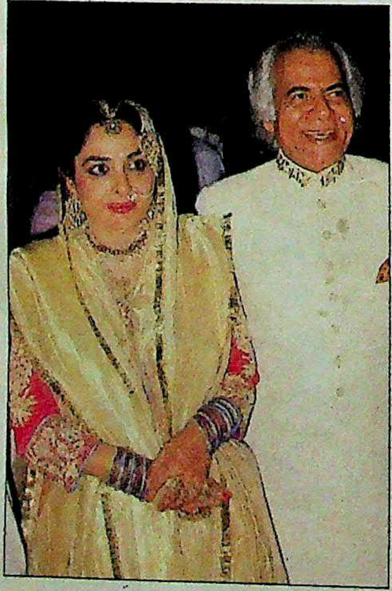

सादिया और परवेजः रिश्ते की मिठास

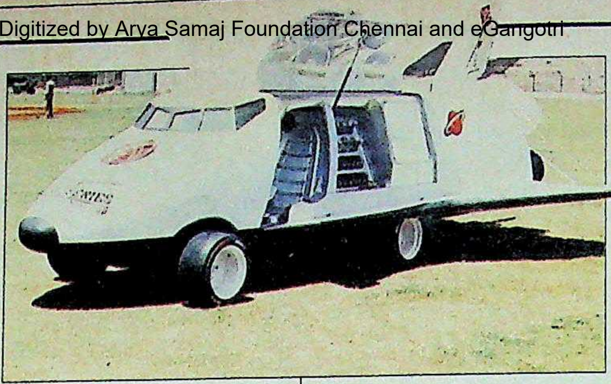

एमआरएफ शटलः नायाब

◆ विव रिचर्ड्स, कपिल देव, इमरान खां और एलन बॉर्डर को और बेहतर बनाना तो नामुमकिन है क्योंकि वे अपने चरम पर हैं. लेकिन एक विश्व कप आयोजन को दूसरे आयोजन से बेहतर जरूर बनाया जा सकता है. जाहिर है, तड़क-भड़क में इजाफा करके. 1987 के रिलायंस कप में खिलाड़ियों के लिए पेय वगैरह ले जाने वाली ट्रॉली मोटर पर सजी थी, तो एमआरएफ ने नेहरू कप मैचों के लिए इसे अंतरिक्ष युग के विमान की शक्ल दी है. **एमआरएफ ड्रिंक्स शटल** में संगीत की भी व्यवस्था होगी. लेकिन संगीत कौन-सा होगा इसका फैसला क्षेत्ररक्षण करने वाली टीम का कप्तान करेगा. एमआरएफ के प्रवक्ता ने कहा, "हम लोग कुछ बिलकुल नायाब ही करना चाहते थे." जहां चाह वहां राह!

◆ पुरुषों के आखिरी गढ़ को तोड़ने का काम उन्होंने किया है. 62 वर्षीया **मीरा साहिब फातिमा बीबी** ने सुप्रीम कोर्ट की प्रथम महिला न्यायाधीश बनने का गौरव पाया है. भारतीय न्यायपालिका के लिए वे मील का पत्थर बन गई हैं. केरल की क्विलोन जिला अदालत में कदम रखते ही संघर्ष उनकी जिंदगी की नियति बन गई थी. सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए उन्हें मध्यमवर्गीय मुस्लिम रूढ़िवादियों से लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी. उनका मानना है कि ज्यादा से ज्यादा महिला न्यायाधीशों की जरूरत है क्योंकि वे कम भ्रष्ट होती हैं. इसके अलावा वे औरतों को 'जागरूक बनाने में' मदद कर सकती हैं. वे कहती हैं, "आज की दुनिया में अकेली औरत के लिए टिके रहना मुश्किल नहीं बशर्ते उसमें आत्मविश्वास हो और खुद के प्रति ईमानदार हो."

प्रमोद पुष्करणा

फातिमा बीबीः अनूठा कीर्तिमान

◆ ऐसा नहीं कि है कि भारतीय लोग हमेशा पश्चिम से मिलने वाले पुरस्कारों का मुंह ही जोहते रहते हों. वे खुद भी कुछ प्रतिष्ठित पुरस्कार बांटते हैं. इस वर्ष उस्ताद हाफिज अली खां मेमोरियल सोसायटी ने जिन चार विश्वप्रसिद्ध कलाकारों को सम्मानित किया है उनमें से एक हैं प्रख्यात शास्त्रीय गिटार वादक **जॉन विलियम्स**. बाकी तीन कलाकार हैं—उस्ताद अली अकबर खां, एम.एस. सुब्बालक्ष्मी और उस्ताद बिस्मिल्ला खां.

आंद्रे सेगोविया के शिष्य रहे विलियम्स ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "यह भारतीय शास्त्रीय संगीत की महान परंपरा द्वारा पश्चिमी शास्त्रीय संगीत का सम्मान है." साथ ही एक संगीतज्ञ द्वारा दूसरे संगीतज्ञ का सम्मान' भी, क्योंकि पुरस्कार देने वाले व्यक्ति हैं समिति के अध्यक्ष सरोद वादक अमजद अली खां.

विलियम्सः सम्मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की बुलंद तस्वीर

हमारी जगमगाती ख़ुशियों की एक झलक

एक आनंद है दीपावली का

दूजा स्कूटर है बजाज का

एक पर्व है भारत का

दूजा गर्व है भारत का

लाखों लाख हैं दोनों के चाहनेवाले

दोनों ही बुलंद भारत की

बुलंद तस्वीर दर्शानेवाले

बजाज स्कूटर्स:
सुपर, चेतक, प्रिया और कब

bajaj auto

You just can't beat a bajaj

बजाज ऑटो लि. आकुर्डी, पुणे ४११०३५.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण कथाएं

राजीव गांधी

फीकी पड़ी चकाचौंध

पिछले हफ्ते राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में पांच साल पूरे कर लिए. इस दौरान उनकी प्रतिष्ठा जहां आसमान छूती दिखी, वहीं पाताल नापती भी नजर आई. उनके शुरुआती वायदों की चमक-दमक बाद की उनकी असफलताओं के आगे फीकी पड़ गई है.

.......58

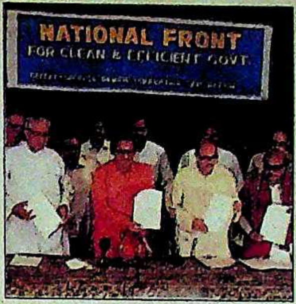

विपक्ष

मौका न चूकने का संकल्प

विपक्ष बेहद उत्साहित है. आपसी मेलजोल का अद्भुत उदाहरण पेश करते हुए धुर वामपंथी से लेकर दक्षिणपंथी विपक्षी पार्टियों ने इंका का मुकाबला करने की साझी रणनीति बनाई है. अधिकांश चुनाव क्षेत्रों में उन्होंने इंका के मुकाबले अपने साझे उम्मीदवार खड़े किए हैं.

.......32

इंका

चुनौतियों की गंभीरता

चुनाव की एकाएक घोषणा करके कांग्रेस (इ) ने विपक्ष को अचंभित तो किया ही, शुरुआती बढ़त भी ले ली है. लेकिन अधिकांश चुनाव क्षेत्रों में विपक्ष के साझा उम्मीदवारों से सीधी भिड़त की संभावना से इंका नेताओं के हाथ-पांव फूलने लगे हैं.

.......20

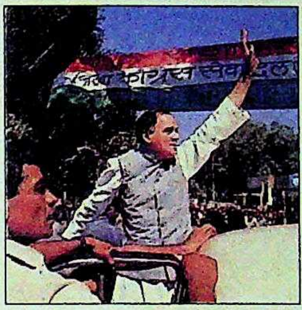

क्षेत्रीय पार्टियां

अपने गढ़ में गुरु

तेलुगु देशम, द्रमुक और अकाली दल सरीखी क्षेत्रीय पार्टियों का अपने-अपने राज्य में अच्छा-खासा असर है और वे चुनावी पलड़े को किसी भी तरफ झुका सकती हैं. इसलिए शासक दल और विपक्ष दोनों के लिए इनकी उपेक्षा करना नामुमकिन था.

.......43

उत्तर प्रदेश

कांटे की टक्कर

'किंग मेकर' की भूमिका में होने के कारण उत्तर प्रदेश पर कांग्रेस (इ) और विपक्ष दोनों की निगाहें हैं. यहां से राजीव गांधी समेत कई इकाई दिग्गज और वी.पी. सिंह जैसे कई विपक्षी महारथी चुनावी अखाड़े में हैं.

चुनाव चर्चा 82

क्रिकेट

उगते-डूबते सितारे

नेहरू कप ने रोमांचक क्रिकेट को जन्म दिया है जिसमें कई कप्तानों के सितारे उगते-डूबते रहे हैं. भारत और वेस्ट इंडीज सेमी फाइनल में पहुंच गए. पाकिस्तान और इंग्लैंड का मुकाबला दूसरे सेमी फाइनल में हुआ.

खेलकूद.......92

अगले पन्नों पर

कसौटी 9
तेवर 10
राजरंग 11
हिंदोस्तां हमारा 12
बीता पखवाड़ा 16
आवरण कथाएं
आम चुनाव: समझदारी की सनद 18
इंका: चुनौतियों की गंभीरता का एहसास ..20
विपक्ष: मौका न चूकने का संकल्प 32
क्षेत्रीय पार्टियां: अपने-अपने गढ़ में गुरु 43
चुनाव आयोग: जिम्मेदारियां बेहिसाब 55
राजीव गांधी के पांच साल:
फीकी पड़ी चकाचौंध 58
आजकल
बिहार: दंगों की चपेट में 64
मध्य प्रदेश: हैरतअंगेज हरकत 69
उत्तर प्रदेश: किताबें और बंदूक 70
बंबई: छवि पर कालिख 75
हिंदी साहित्य सम्मेलन: बदहाली का आईना 76

राज्य-दर्पण 81
चुनाव चर्चा
उत्तर प्रदेश: कांटे की टक्कर 82
फिल्मी सितारे: चुनावी मंच पर चमक 86
व्यापार चक्र 88
कारोबार
शेयर बाजार 90
खेलकूद
क्रिकेट: उगते-डूबते सितारे 92
समाचार माध्यम
प्रेस जगत: मार करने की नफासत 98
टीवी
बाइबिल की कहानियां:
एक और धार्मिक आख्यान 102
विशेष लेख
पंजाब: अनाथों को अपनाने का अभियान .106
आरपार 113
स्वास्थ्य
लेसर: कमाल करने वाली किरणें 115

कहानी 116
किताबें 120
परदे के उस पार 122
चर्चित चेहरे 124

चुनाव चर्चा 82

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

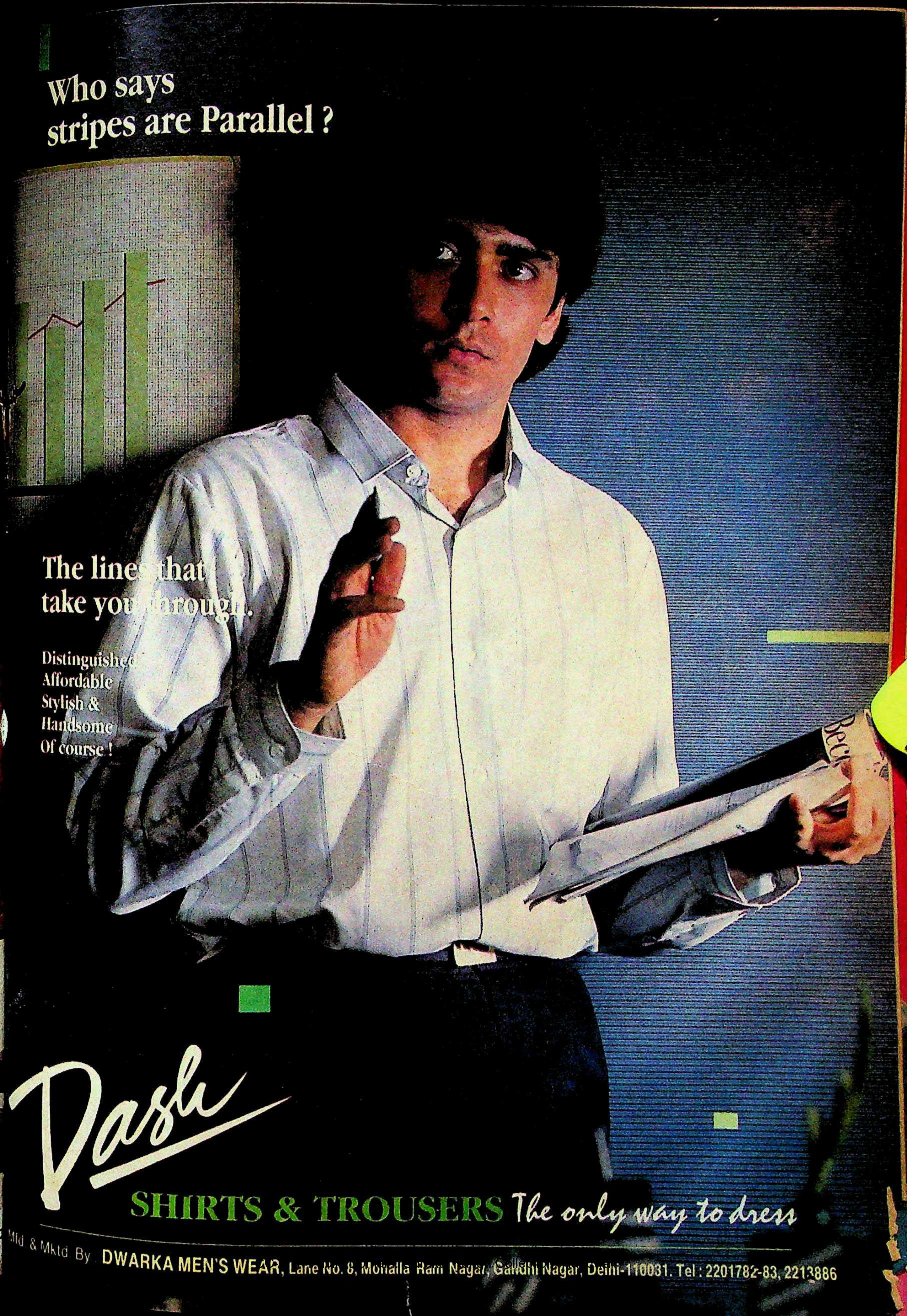

Who says
stripes are Parallel ?
The lines that
take you through.
Distinguished
Affordable
Stylish &
Handsome
Of course !
Dash
SHIRTS & TROUSERS The only way to dress
Mfd & Mktd By DWARKA MEN'S WEAR, Lane No. 8, Mohalla Ram Nagar, Gandhi Nagar, Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

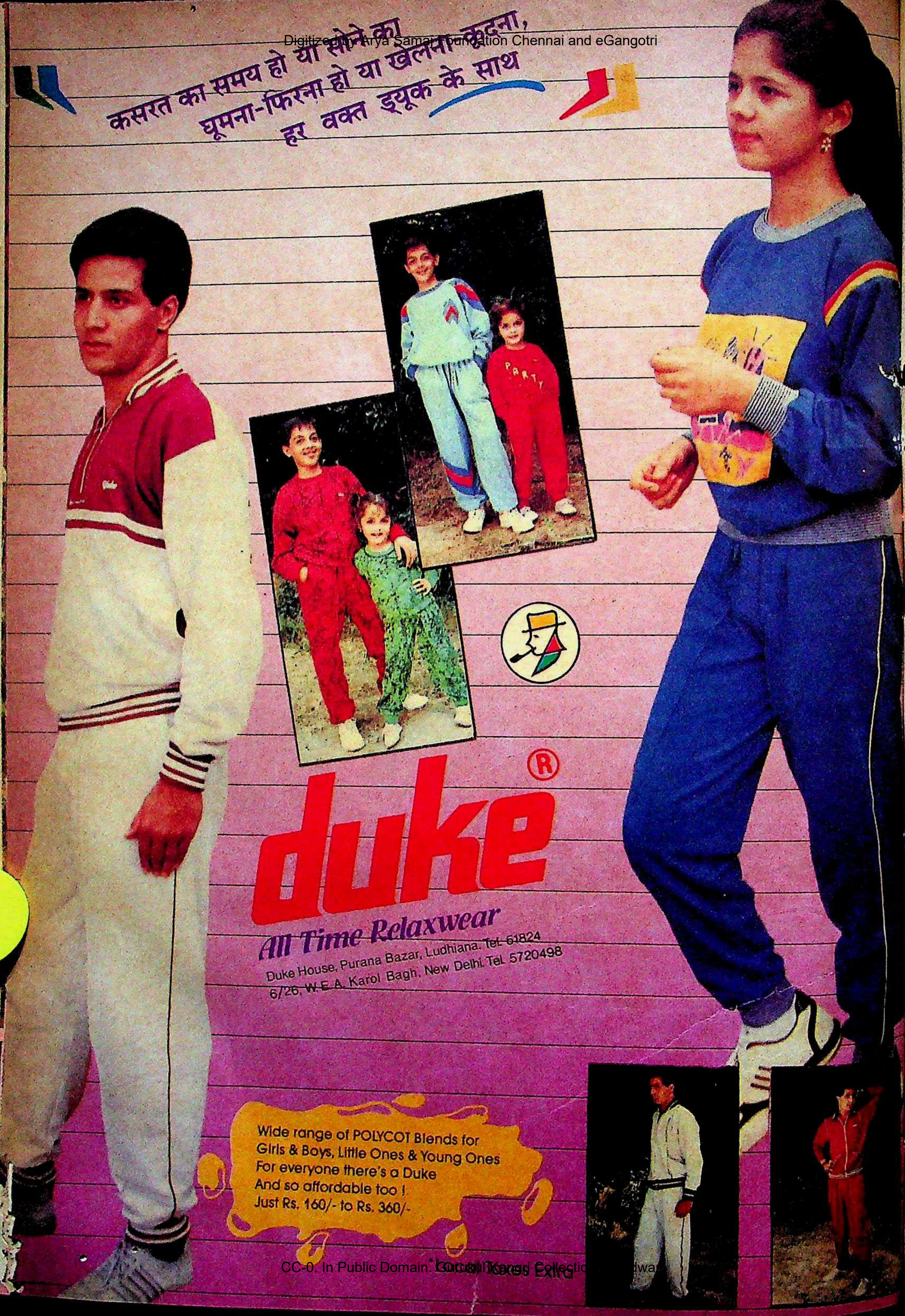

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे
संपूर्ण समाचार पत्रिका

वर्ष: 4, अंक: 1 1-15 नवंबर, 1989

प्रधान संपादक
अरुण पुरी

वरिष्ठ संपादक
प्रभु चावला

संपादकीय विभाग
जगदीश उपासने, अशोक कुमार, विजय क्रांति, ओम प्रकाश सराफ, अरविंद मोहन मिश्र, अ.ला. प्रजापति, विमल पाराशर, हरिमोहन मिश्र, हरजिंदर, आशुतोष चतुर्वेदी

प्रोडक्शन
अनिल शर्मा, सुबाचन यादव, सुनील सैनी

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली.

■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलिट, नई दिल्ली.

■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई.

■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली • फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 212448, 213037. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. • कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता • लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

राजनीति का अभिशाप

'नफरत के शोलों को हवा' (आवरण कथा: 31 अक्तूबर) देने में राजनैतिक पार्टियों ने कसर नहीं छोड़ी है. सांप्रदायिक दंगे आज उस भारतीय लोकतंत्र के लिए अभिशाप बन गए हैं जिसे धर्मनिरपेक्ष की संज्ञा दी गई है. चाहे उत्तर प्रदेश में राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवाद हो या कोटा के दंगे या फिर पंजाब का आतंकवाद, जब तक हमारे देश के राजनीतिक वोटों की गंदी राजनीति त्यागकर धर्म एवं राजनीति को अलग-अलग नहीं करते तब तक भारत की जनता कोटा और बदायूं जैसे दंगों के लिए अभिशप्त रहेगी.

—**एस.के. अग्रवाल**, लखनऊ (उ.प्र.)

■ आज देश का हर प्रांत धर्म, जाति और भाषा के नाम पर सुलग रहा है और नेता इस आंच पर अपने राजनैतिक स्वार्थ की रोटियां सेंकने में व्यस्त हैं. ऐसे में बूटा सिंह का यह बयान कि इसके लिए विदेशी ताकतें जिम्मेदार हैं, हास्यास्पद और गैर-जिम्मेदाराना ही माना जाएगा. क्या असलियत नहीं जानती.

—**सुनीता केसरी**, धनबाद (बिहार)

काबिले तारीफ

हरसूद कस्बे के लोगों का 'हार न मानने का हौसला' (31 अक्तूबर) काबिले तारीफ है. नर्मदा सागर परियोजना से यदि ग्रामीणों का नुकसान होता है तो सरकार को इसे बंद कर देना चाहिए. इस आंदोलन से जुड़े बाबा आम्टे, सुंदरलाल बहुगुणा, शबाना आजमी और मेधा पाटकर बधाई के पात्र हैं जिन्होंने ग्रामीण जनता को उनके अधिकारों के लिए प्रेरित किया. यदि लक्ष्य महान हो, और जनता संघर्षशील तो सफलता जरूर मिलेगी.

—**डॉ. कौशल किशोर**, पठानकोट (पंजाब)

सराहनीय साहस

बोफोर्स तोप सौदे में सरकार की 'लीपा-पोती का पर्दाफाश' (31 अक्तूबर) करके एन. राम ने खोजी पत्रकारिता और प्रेस की निष्पक्षता को आगे ही बढ़ाया है. जी. कस्तूरी ने चाहे स्वेच्छा से, चाहे सरकारी दबाववश जो किया वह लोकतंत्र के हित में नहीं है.

—**अशोक राय**, वाराणसी (उ.प्र.)

अकुशल नेतृत्व

'महंगाई की मार' (आवरण कथा 15 अक्तूबर) के विश्लेषण से साबित हो गया कि इस जानलेवा महंगाई के लिए प्रधानमंत्री से लेकर निचले तबके के अधिकारी तक कहीं न कहीं सभी जिम्मेदार हैं. सरकार ने बुनियादी चीजों को सस्ते दाम पर जनता को मुहैया न करवाकर उसके साथ विश्वासघात किया है.

—**संजय टिबड़ेवाला**, देवघर (बिहार)

■ आवरण कथा के जरिये आपने जनता की दुखती रग पर हाथ रख दिया है. पिछले कुछ महीनों की स्थिति का जायजा लिया जाए तो जाहिर होता है कि यह वृद्धि उद्योगपतियों, मिल मालिकों व सरकार की मिलीभगत के कारण है. चीनी मिल मालिकों द्वारा सरकार को 250 करोड़ रु. का चंदा देने की बात तो जग-जाहिर है ही.

—**नरेंद्र सिंह यादव**, नारनौल (हरियाणा)

■ आज देश की आर्थिक परिस्थितियां इतनी विकट हो चली हैं जितनी पहले कभी नहीं थीं. आम आदमी को इससे कोई सरोकार नहीं कि मुद्रास्फीति की दर कितनी है. न ही उस दिखावटी मूल्य

सूचकांक से मतलब है. वह तो सिर्फ दो जून की रोटी और मूलभूत जरूरतों की पूर्ति ही चाहता है. लेकिन अब यह भी उससे दूर होती जा रही हैं. निश्चित रूप से चुनाव में बोफोर्स से भी अहम मुद्दा महंगाई होगा.

—**ओमप्रकाश बाटड़**, सीकर (राज.)

■ महंगाई व मुद्रास्फीति के लिए काफी हद तक सरकार की जवाहर रोजगार योजनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी कई योजनाएं ही जिम्मेदार हैं क्योंकि ये परियोजनाएं वोट बटोरने के लिए खैरात बांटने जैसी हैं. इनका कोई उत्पादक स्वरूप तो है ही नहीं. **—पी. कुमार,** कानपुर (उ.प्र.)

■ चुनाव में महीना ही बाकी है, तब भी सरकार महंगाई पर रोक नहीं लगा पा रही. विपक्ष का आरोप सही लग रहा है कि सरकार बड़े-बड़े उद्योगपतियों से, व्यापारियों से चुनाव के लिए पैसे जमा कर रही है. इसी से महंगाई बढ़ रही है. बाद में महंगाई पर थोड़ी बहुत रोक लगाकर सरकार कहेगी कि हम गरीबी हटा रहे हैं.

—नारायण सेठी, चालीसगांव (महाराष्ट्र)

सही चित्रण

'बंदूक के बंधक' (कसौटी, 15 अक्तूबर) देश की वर्तमान परिस्थिति का सही विश्लेषण है. जब जनता के पास जरूरत से ज्यादा हथियार होंगे तो उनका अनुचित प्रयोग तो होगा ही. आज धार्मिक, जातीय, भाषायी और राजनैतिक मतभेदों को बुलेटों के जरिये निबटाने का जो दौर शुरू हो चुका है, उसने देश को ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठा दिया है. और इसके छोटे-छोटे छिद्र कश्मीर, पंजाब, असम और बिहार में खुल ही चुके हैं जिनसे निरंतर जहरीला लावा निकल रहा है. कुछ राजनैतिक दलों ने तो सांप्रदायिक उन्माद भड़काकर उसके जहर से वोट निचोड़ने को चुनावी रणनीति का हिस्सा बना लिया है.

—अब्दुल हमीद इदरीसी, कानपुर (उ.प्र.)

आग में घी

'शोला बनती चिनगारी' (15 अक्तूबर) सरकार की अदूरदर्शिता का ही

परिचायक है. जिस प्रांत में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद भयंकर सांप्रदायिक तूफान ला चुका हो, वहां उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने का विचार यही साबित करता है कि वोट की खातिर सरकार कोई भी उचित-अनुचित कदम उठा सकती है.

—बिमा मल्होत्रा, नई दिल्ली

■ उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने के पीछे काम कर रही राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं ने न केवल सांप्रदायिक वैमनस्य के बीज बो दिए हैं बल्कि देश की मान्यता प्राप्त 15 भाषाओं के समर्थकों को भी ही उद्वेलित कर दिया है. हिंदी को तो ये सरकारी संत अभी तक जनता में पूरी तरह स्वीकृत करा नहीं पाए. अब दूसरी राजभाषा की बैसाखी के सहारे सत्ता की पगडंडियां नापने लगे हैं.

—अजय मूंदड़ा, भीलवाड़ा (राज.)

■ कैसी विडंबना है कि हमारे सत्तालोलुप नेता अपने फायदे के लिए देश को सांप्रदायिकता के ऐसे बम पर बैठाने को तैयार रहते हैं जो परमाणु बम से भी खतरनाक प्रतीत होता है. उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा देकर उत्तर प्रदेश सरकार ने आग में घी डाल दिया है.

—अजय चतुर्वेदी, रुड़की (उ.प्र.)

कैसी चकाचौंध

'सितारों की चकाचौंध' (15 अक्तूबर) नेहरू जन्म शताब्दी समारोह मनाने का एक महत्वपूर्ण आयोजन था. लेकिन नेहरू जी का ज्यादा प्रेम बच्चों से ही था. क्या इन पैसों को बच्चों व निम्न वर्ग की जातियों के कल्याण के लिए नहीं खर्च किया जा सकता था? **—सब्बू चौहान,** मारवाड़ (राज.)

वे भी जिम्मेदार

'असहिष्णुता की आंच' (15 अक्तूबर) में कोटा शहर के सांप्रदायिक उपद्रवों की संक्षिप्त दास्तान के जरिये आपने सारा दोष प्रशासन के मत्थे मढ़ दिया और उन तमाम तथ्यों की अनदेखी कर दी, जिनकी वजह से यह सब हुआ. कोटा के दंगों के लिए धर्मनिरपेक्षता का दम भरने वालों ने स्वार्थों के लिए अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ बनाकर अपने कार्यकर्ताओं को सांप्रदायिक तुष्टीकरण की राजनीति खेलने की अनुमति दे रखी है.

—ब्रजेश विजयवर्गीय, कोटा (राज.)

झूठा प्रचार

'बीता पखवाड़ा' (15 अक्तूबर) में यह पढ़कर हैरत हुई कि पंजाब पुलिस के अधिकारी के बेटे की जान बचाने के लिए आतंकवादियों की रिहाई की गई. दूरदर्शन पर तो खबर दी गई थी कि आतंकवादियों ने बच्चे को बिना शर्त सकुशल लौटा दिया. यदि प्रेस इतनी निष्पक्ष न होता तो कितनी खबरें जनता तक पहुंच ही नहीं पातीं.

—निमेष आसर, सिवनी (म.प्र.)

एकांगी विवेचन

'वर्जनाओं से मुक्ति की चाह' (15 अक्तूबर) समाज की कुछ महिलाओं को होगी मगर महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मुक्ति कितनी स्थायी हो सकती है. सिर्फ स्वच्छंदता की बलिवेदी पर हम अपने भावनात्मक सुखों और नैतिक मूल्यों की वह कुरबानी नहीं कर सकते जिससे जीवन के अंतिम क्षण कष्टदायक बन जाएं और आगामी पीढ़ियों का नैतिक पतन हो जाए.

—के.पी. श्रीवास्तव, गोरखपुर (उ.प्र.)

■ लेख पिछले एक दशक में मध्यमवर्गीय महिलाओं के बदलते दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों का तथ्यपरक दस्तावेज है लेकिन इस परिवर्तन की वजह उनकी कामेच्छा व पाश्चात्य संस्कृति बताना बेमानी है. जब वे देहरी से बाहर कदम रख ही रही हैं तो अपनी सामाजिक स्थिति व संवेदनशीलता को पुराने दृष्टिकोण से ही कैसे देखें?

—रिपुदमन सिंह, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ विवाहित महिलाओं के परिवर्तित होते दृष्टिकोण का बड़ा ही संकीर्ण और एकांगी विवेचन पढ़ने को मिला. कुछ उन्मुक्त महिलाओं के दृष्टिकोण संपूर्ण विवाहित महिला समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते. जहां तक सेक्स पर खुले विचार विमर्श का संबंध है, वह ज्ञान-विज्ञान के बढ़ते प्रसार का अवश्यंभावी परिणाम है, अन्यथा भारत की 95 फीसदी महिलाएं आज भी भारतीय आदर्शों का ही अनुकरण करती हैं.

—प्रेमचंद्र श्रीवास्तव, ललितपुर (उ.प्र.)

■ लेख का प्रस्तुतीकरण यह भ्रम पैदा करता है कि भारतीय महिलाओं के नजरिये में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन आया है. वस्तुतः यह जीवन के हर क्षेत्र में हो रहे नैतिक मूल्यों के पतन का ही एक और आयाम है. पश्चिमी समाज में उन्मुक्त सेक्स के कारण विवाह संस्था भंग हो गई है और लोगों की मानसिक शांति व सुरक्षा भी. यदि भारत के लोग इसी राह पर चलते हैं तो उनका भी यही हश्र होगा.

—रंजीत कुमार जायसवाल, इंदौर (म.प्र.)

■ भारतीय महिलाओं का आत्मनिर्भर होना तो ठीक है लेकिन आत्मनिर्भरता की आड़ में उनका चरित्र जिस तेजी से गिर रहा है वह लज्जाजनक है. समानता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूसरे सारे डाई एक तरफ़ गोदरेज खुद-ब-खुद फ़ैलने वाला हेयर डाई दूसरी तरफ़ फिर भी गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करनेवाले ज़्यादा ही होंगे !

३ खास कारणों से :

दो कुदरती रंगों में उपलब्ध : काला और गहरा भूरा

१ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलने वाला हेयर डाई बालों को कुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कन्डीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलने वाला हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. **जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितनी.**

३ आप गोदरेज खुद-ब-खुद फैलने वाले हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों और त्वचा की हिफाजत के लिए बनाया गया है. **पूर्ण-सुरक्षा-यही गोदरेज का वादा है.**

गोदरेज® खुद-ब-खुद फैलने वाला पर्मानेंट हेयर डाई

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाने इस तरह का वर्जनाहीन जीवन भावी पीढ़ी के लिए घातक होगा.

—**रमेश कुमार**, पानीतोला (असम)

■ इस लेख ने मेरे नीरस वैवाहिक जीवन को सरस बनाने का मार्ग दिखाया है और विवाहेतर संबंध हेतु आवश्यक मनोबल प्रदान किया है. क्या भारतीय नारी ने ही जीर्ण-शीर्ण सभ्यता को बचाने का बीड़ा उठाया हुआ है. सुशिक्षित और संपन्न महिलाओं को यह अधिकार तो सुलभ होना ही चाहिए.

किरण, कानपुर (उ.प्र.)

बेसिर-पैर के आरोप

'बाजी पलटने की चतुराई' (15 अक्तूबर) पढ़कर लगा कि हमारे प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह को किसी भी तरह भ्रष्ट साबित करने की जी-तोड़ कोशिश में लगे हुए हैं ताकि अपने दामन में लगे भ्रष्टाचार के दाग से लोगों का ध्यान हटा सके. लेकिन गलत आरोपों से वी.पी. सिंह को फायदा ही होगा.

—**मधु कटियार**, इटावा (उ.प्र.)

■ अजेय सिंह के विदेशी खातों के बारे में राजीव सरकार के बेसिर-पैर के आरोपों को देखकर लगता है कि अगर आज मानहानि विधेयक होता तो इसका फायदा इंका से ज्यादा विपक्ष को होता.

—**राकेश नाबेड़ा**, मद्रास (तमिलनाडु)

बोर्ड की फजीहत

हमारा क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अपने तानाशाही रवैये के कारण ही 'बाउंसर से लहूलुहान' (15 अक्तूबर) हुआ है. अब तक सिर्फ बोर्ड ने ही बाउंसर फेंके थे लेकिन

न्यायपालिका ने इस बार उसे हिट विकेट करार दिया है. खिलाड़ियों के साथ साधारण कर्मचारियों जैसा बरताव करने वाले बोर्ड ने अपने कर्तव्यों की हमेशा ही अनदेखी की है.

—**विनोद शर्मा**, मोमासर, (राज.)

खोखले दावे

'दिग्गज का दावा' (15 अक्तूबर), विपक्ष की लड़खड़ाती एकता का एक और प्रमाण है. ऐसे समय जबकि विपक्ष को रचनात्मक कार्यों द्वारा अपनी एकता और कार्यक्षमता का परिचय देना चाहिए कुछ विपक्षी नेता निजी स्वार्थों के लिए अपनी ताकत का खोखला प्रदर्शन करते नजर आ रहे हैं.

—**नंदकिशोर पाल**, बड़ौदा (गुजरात)

■ विपक्ष और देवीलाल की ताकत के बारे में पढ़ा. सचमुच यह रैली देवीलाल की ताकत का एहसास कराने के लिए ही आयोजित की गई थी. जिस तरह भिवानी से लोगों को हांक कर ले जाया गया, वह उनके मंसूबों को पहले ही जाहिर कर चुका था.

—**अशोक शर्मा**, भिवानी (हरियाणा)

■ बोट क्लब की रैली ने आखिरकार जनता दल की पोल खोल ही दी. इसके सभी नेता अलग-अलग सुर अलाप रहे थे. रोचक बात यह रही कि इस रैली में किसी नेता ने भी देवीलाल के जन्मदिन पर उनकी दीर्घायु की कामना नहीं की.

—**युक्तिनाथ मिश्र**, भोजपुर (बिहार)

हर चेहरे पर हो मुस्कान... यही हमारा काम.

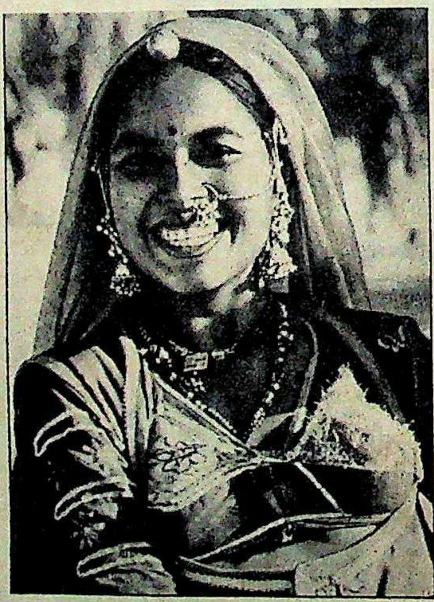

प्रगतिपथ पर चलकर... हम जनकल्याण की ओर हैं अग्रसर. विशेषतया गरीब और कमज़ोर वर्ग के कल्याण के लिए.

संयुक्त प्रचार समिती सरकारी क्षेत्र के बैंक

सचिवालय :
भारतीय स्टेट बैंक,
न्यू एडमिनिस्ट्रेटीव बिल्डिंग,
कॉर्पोरेट डिपार्टमेन्ट,
सेंट्रल ऑफिस, बम्बई-४०००२१.

सरकारी क्षेत्र के बैंक
–हर दिन, हर जगह सबके जीवन में नया विश्वास जगा रहे हैं.

28 सदस्य बैंक

- इलाहाबाद बैंक
- आंध्रा बैंक
- बैंक ऑफ़ बड़ौदा
- बैंक ऑफ़ इंडिया
- बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
- केनरा बैंक
- सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
- कार्पोरेशन बैंक
- देना बैंक
- इंडियन बैंक
- इंडियन ओवरसीज़ बैंक
- न्यू बैंक ऑफ़ इंडिया
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ़ कॉमर्स
- पंजाब नैशनल बैंक
- पंजाब एंड सिंध बैंक
- स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
- स्टेट बैंक ऑफ़ बिकानेर एंड जयपुर
- स्टेट बैंक ऑफ़ हैदराबाद
- स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर
- स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर
- स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला
- स्टेट बैंक ऑफ़ सौराष्ट्र
- स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावनकोर
- सिंडिकेट बैंक
- यूको बैंक
- यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
- यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया
- विजया बैंक

Imageads-JPC-89169-C-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दागदार दामन का दंश

राजीव गांधी की सरकार के दामन पर बोफोर्स घोटाले के कारण लगा दाग न तो चुनावी साबुन से धुल सकता है और न ही उस दूरदर्शनी झाड़-फूंक से गायब हो सकता है जिसके तहत समाचार वाचकों को बोफोर्स को 155 मिलीमीटर होवित्जर तोप के नाम से पुकारने को कहा गया है. सरकारी अधिकारियों और मंत्रियों की तमाम बयानबाजी और 'खोजबीन' भी इस दाग को हल्का नहीं कर पाई है. बल्कि हर बीतते दिन के साथ इस घोटाले की सड़ांध और तेज होती जा रही है.

असली मुद्दा यह नहीं है कि दलाली में दी गई 64 करोड़ या 100 करोड़ की रकम स्वीडिश तोप कंपनी से वापस ली जा सकती है या नहीं. रकम या पैसा तो छोटी चीज है. असली सवाल है लोगों के भरोसे का—भरोसा व्यवस्था में, सरकार में और प्रधानमंत्री में. किसी भी लोकतंत्र या देश के जिंदा रहने या आगे बढ़ने के लिए यह भरोसा बेहद जरूरी है. लोगों का यह भरोसा अगर टूटा है तो इसलिए नहीं कि विपक्षी दलों ने अपने राजनैतिक लाभ के लिए, या प्रेस जगत में राजीव विरोधी षड्यंत्रकारियों ने अदृश्य विदेशी ताकतों की सांठगांठ से इसके लिए कोशिश की हो.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

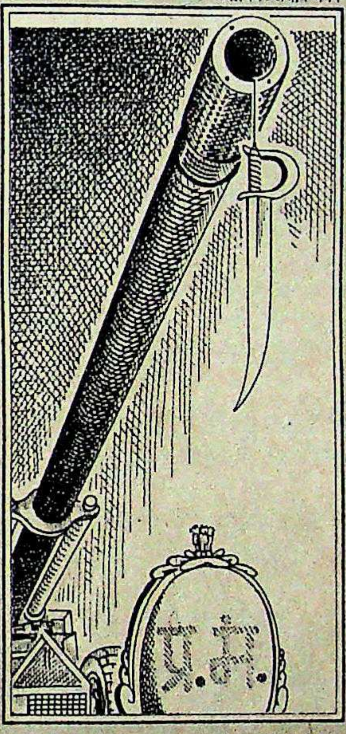

यह हालत खुद सरकार की बनाई हुई है. अप्रैल 1987 में जब इस घोटाले का रहस्योद्घाटन हुआ था तब प्रधानमंत्री और उनके तमाम मंत्रियों ने बढ़-चढ़कर वादे किए थे कि मामले की तह तक जाकर दोषी का पता लगाया जाएगा और उसे सजा दी जाएगी. उन्होंने कहा था कि "सरकार मामले की तह तक जाने में कोई कसर बाकी नहीं रखेगी." "हम यह जानना चाहते हैं कि स्विस बैंक में खाते किसने कब खोले थे और उन्हें कौन चला रहा है." "अगर हम दोषी हैं तो हमें फांसी पर लटका दीजिए...देश का पैसा लेकर कोई भाग गया है. आइए-हम उसे तलाशें और देश को दिखा दें कि हम सचाई जानना चाहते हैं."

इस तरह के बयानों से सरकार ने यह जाहिर कर दिया था कि राष्ट्रीय गौरव दांव पर लगा हुआ है. इन बयानों से यह भी साफ होता था कि पूरी व्यवस्था जवाबदेह है. सरकार के अपने ही बयानों के हिसाब से बोफोर्स घोटाले के अपराधियों को पकड़ना एक राष्ट्रीय लक्ष्य बन गया था. इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर सरकार ने अपने प्रतिनिधिमंडल स्विट्जरलैंड भेजे और बोफोर्स के प्रतिनिधि विन चड्ढा के नाम नोटिसें जारी कीं. 'हिंदू' अखबार की रिपोर्टों के अनुसार ये सारी कार्रवाइयां पहेली बुझाने जैसी थीं. और चूंकि सरकार ने अपने ही निर्देशों पर गंभीरता से काम नहीं किया इसलिए बोफोर्स का भूत आज भी उसे बुरी तरह परेशान कर रहा है. अब जबकि 'हिंदू' ने यह उजागर कर दिया है कि सचाई को सामने लाने की सरकार की तमाम कोशिशें—चाहे वह संसदीय समिति द्वारा की गई पड़ताल हो या चड्ढा के साथ नरमी का व्यवहार— आंडबर मात्र थीं, सरकार ने फिर एक प्रतिनिधिमंडल स्विट्जरलैंड भेजा है.

बात यहीं खत्म नहीं होती. सबसे क्रूर विडंबना तो यह है कि सरकारी प्रवक्ता ने प्रेस की मंशा पर संदेह जाहिर किया है. ऐसा नहीं है कि बोफोर्स घोटाले की पड़ताल करने वाले सभी पत्रकार या दूसरे लोग राजीव गांधी या उनकी पार्टी के दुश्मन ही हों. ये लोग तो एक तरह से सरकार द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय लक्ष्य को ही पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं. इनके रहस्योद्घाटन अगर विश्वसनीय हैं और सचाई की ओर ले जाते हैं तब सरकार को इनके प्रयासों की सराहना करनी चाहिए. लेकिन हो रहा है ठीक इसका उलटा. इन लोगों की न केवल भर्त्सना की जा रही है बल्कि इनके प्रयासों में भी अड़ंगा लगाने की कोशिशें की जाती रही हैं. ऐसा करके सरकार ने न केवल बोफोर्स विवाद को जिलाए रखा है बल्कि लोगों के भरोसे को भी तोड़ा है.

आजादी के बाद सबसे बड़े जनादेश के साथ सत्ता में आई सरकार को इस विवाद ने दो से ज्यादा वर्षों से उलझाए रखा है और उसके प्रशासन को जड़वत कर दिया है. और दुखद तथ्य यह है कि राजीव अगर दोबारा चुने जाते हैं तो उसके बाद भी यह जड़ता कायम रहेगी क्योंकि नए रहस्योद्घाटन होंगे जो नई सरकार को डगमगाते रहेंगे. और चूंकि संभावना यह भी है कि अगली संसद में विपक्ष और भी मजबूत होकर आएगा इसलिए यह विवाद आसानी से खत्म नहीं होने वाला. इसलिए व्यवस्था की स्थिरता ही दांव पर लगी हुई है.

इसी तरह खतरनाक तथ्य यह भी है कि विदेशी सरकारें नई सरकार को ब्लैकमेल कर सकती हैं. अटकल यह लगाई जा रही है कि बड़े देश अपने विशाल संसाधन के बूते यह जान चुके होंगे कि बोफोर्स सौदे में दलाली किसने खाई. इसलिए आशंका यह की जा रही है कि विदेशी ताकतें इस तरह की जानकारी के सहारे भारत सरकार को ब्लैकमेल कर सकती हैं और इस तरह भारत की संप्रभुता को ही खतरा हो सकता है. इन्हीं सब कारणों से बोफोर्स घोटाला महज 64 करोड़ की दलाली का मामला नहीं है. इसलिए लोगों की आस्था, व्यवस्था की स्थिरता और देश की संप्रभुता की मांग है कि जनता को असलियत की जानकारी दी जाए.

बोफोर्स विवाद का निबटारा जरूरी है. देश को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है कि हम इस व्यवस्था की मदद से ही सचाई की तह तक पहुंचें. यह काम अगर कोई कर सकता है तो वह हैं खुद राजीव गांधी. अब जबकि वे दूसरे आम चुनाव की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें इस मौके का इस्तेमाल बोफोर्स विवाद को दरकिनार करने के लिए नहीं बल्कि अपनी सरकार को इस विवाद में पाक-साफ साबित करने के लिए करना चाहिए. अगर वे ऐसा कर पाते हैं तब वे न केवल राष्ट्रीय गौरव को बल्कि खुद अपनी साख को पुनर्स्थापित कर पाएंगे और पूरे देश का विश्वास हासिल कर पाएंगे. अगर वे ऐसा नहीं कर पाते और फिर भी चुनाव में विजयी होकर सत्तासीन होते हैं तो लगेगा कि जैसे उनका सिर राजमुकुट से छोटा हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट... न खत्म होने का डर

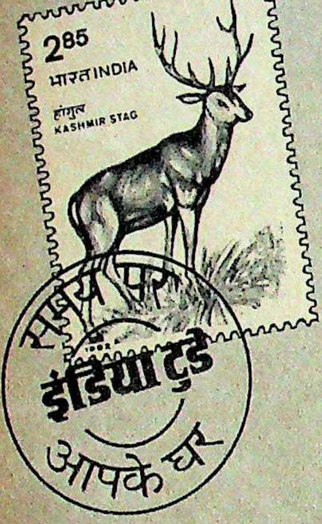

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम:
डाक पता:

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि दें।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

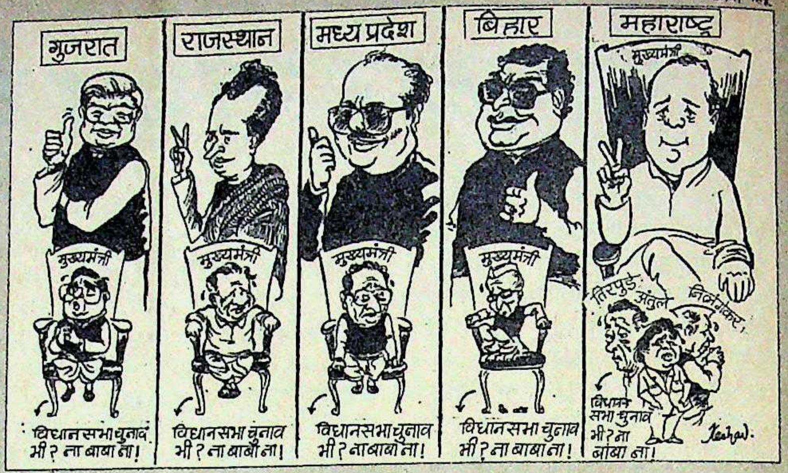

- मेरा भारत महान है पर इनका (विपक्ष का) भारत बेईमान होगा.
  ■ राजीव गांधी, राज्यसभा में

- बोफोर्स ने दलाली दी इसे लेकर हम क्यों माथापच्ची करें. उनका पैसा था. वे चाहें जिसे दें.
  ■ जनार्दन पुजारी, *जनसत्ता*

- कोई अच्छी चीज का विकल्प बनना हो तो ठीक रहता है. कांग्रेस का क्या विकल्प बना जाए.
  ■ विश्वनाथ प्रताप सिंह, *नवभारत टाइम्स*

- न जाने किस क्षण मैंने राजनीति में आने का फैसला किया. मैं अपने आपको दुखी महसूस कर रहा हूं. मेरे सारे सपने टूट गए. सब कुछ बिखर गया और अब कहीं कोई आशा की किरण दिखाई नहीं देती.
  ■ अटल बिहारी वाजपेयी, *हिंदुस्तान*

- जनता पार्टी को विधवा और जनता दल को बेसहारा बनाने के लिए एक बिगड़ा हुआ 'राजा' जिम्मेदार है.
  ■ बूटा सिंह, *आज*

- यदि अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिराकर राम मंदिर बनाने की चेष्टा की गई तो उसके खिलाफ पहली शहादत मैं दूंगा.
  ■ कमलापति त्रिपाठी, *दैनिक ट्रिब्यून*

- हम कांग्रेस राज को समाप्त करने के लिए पैदा हुए हैं. ■ सत्यपाल मलिक, *रविवार*

- विदेशी क्रिकेटर्स के आगे हम मूंगफली के दाने जितना कमाते हैं.
  ■ कपिलदेव, *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

- आपको बता दूं कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड दुनिया का सबसे धनी क्रिकेट बोर्ड है और भारतीय खिलाड़ी सबसे गरीब खिलाड़ी.
  ■ दिलीप वेंगसरकर, *जेंटलमैन*

- मेरे रूखे व्यवहार की एक वजह यह रही है कि मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे हलवा समझें.
  ■ सोनम, *फिल्मफेअर*

- डर हमारी सबसे बड़ी समस्या है. डर बिकता है. डराइए और राज कीजिए. हमारा देश भी तो दुर्योधन और दुःशासन जैसे लोगों के गिरोह के चंगुल में फंस गया है.
  ■ राज बब्बर, *धर्मयुग*

- मुझे राजनीति नहीं करनी... मैं किसी मंत्रालय में लल्लू प्रसाद मंत्री की तरह कुर्सी से चिपककर ऊंघता रहूं यह मुझे गवारा नहीं. मैं जहां भी हूं, जो भी हूं बस ठीक हूं.
  ■ शत्रुघ्न सिन्हा, *माया*

- मैं वैसा पेड़ या दरख्त बनना चाहूंगा जो फल लदने से झुक जाया करता है. ताकि उसके फल से कोई भूखा पेट भर ले.
  ■ आमिर खान, *स्वतंत्र भारत*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुरुस्तगी का दौर

● माना जाता है कि आम चुनावों के नजदीक आते ही अफसरशाहों की कार्यकुशलता में कमी आ जाती है. लेकिन केंद्रीय कैबिनेट सचिव टी.एन. शेषन इससे सहमत नहीं हैं. देश के इस सबसे शक्तिशाली अफसर ने विभिन्न मंत्रालयों के अतिरिक्त और संयुक्त सचिवों के

कामकाज की समीक्षा का अभियान चलाकर अपने सहयोगियों में डर पैदा कर दिया है. जाहिरा तौर पर इसका मकसद अच्छे अफसरों का चयन करना और काम में ढीले रहे लोगों की छंटाई करना है.

शेषन यह सब अपनी चिरपरिचित बेलौस शैली में ही कर रहे हैं. किसी मंत्रालय के प्रमुख अधिकारियों को इस आशय का ब्यौरा तैयार करने को कहा जाता है कि उनके विभाग क्या कर रहे हैं और भविष्य में उनकी क्या योजना है. इसके बाद वे सभी उच्चाधिकारियों की बैठक बुलाते हैं जिसमें हर अफसर को अपनी बात रखने के लिए 12 मिनट का समय दिया जाता है. फिर ब्यौरेवार पूछताछ के दौरान शेषन उनसे बेतरह जिरह करते हैं.

इस परीक्षा में खरे उतरने वालों को अपने पद पर बने रहने दिया जाता है या फिर उनकी प्रोन्नति की सिफारिश कर दी जाती है. और उन्हें किसी अहम मंत्रालय में पहुंचा दिया जाता है. बाकियों का तबादला कम महत्व के मंत्रालयों में कर दिया जाता है. हाल ही में एक प्रमुख मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव इस परीक्षा में खरी नहीं उतर पाईं. हफ्ते भर बाद ही उनके तबादले के आदेश आ गए. इस बीच शेषन दूसरे मंत्रालयों को भी चुस्त-दुरुस्त करने में जुटे हैं.

सिंहों से समस्या

● पिछले पखवाड़े मलेशिया सरकार ने एक असामान्य घोषणा की कि कुआलालम्पुर में राष्ट्रकुल देशों के सरकार प्रमुखों की तीन दिवसीय बैठक के खत्म होने तक सिंह नामधारी किसी व्यक्ति को देश में प्रवेश का वीसा नहीं दिया जाएगा. यह घोषणा भारत सरकार की व्याकुलता के मद्देनजर की गई. दरअसल मलेशिया में आतंकवादियों के प्रवेश को रोकने के लिए यह एक भद्दी कोशिश थी.

लेकिन यह घोषणा खुद भारत के विदेश मंत्रालय के लिए ही परेशानी का सबब बन गई. दरअसल भारत के विदेश राज्यमंत्री के. नटवर सिंह और विदेश सचिव एस.के. सिंह दोनों ही सिंह नामधारी हैं. कुआलालम्पुर में भारत के उच्चायुक्त प्रीत मोहन भी सिंह हैं.

एस.के. सिंह ने मलेशिया सरकार का ध्यान इस ओर खींचा. पर उसका कहना था कि सम्मेलन में

सभी कार्टूनः अजीत नैनन

राजीव गांधी के आने की उम्मीद के मद्देनजर सुरक्षा कारणों से ऐसा किया गया. आखिर मलेशिया सरकार ने कुछ रियायत की और ताजा घोषणा हुई कि सरकारी या कूटनीतिक काम के लिए आने वाले सिंह नामधारी व्यक्तियों को मलेशिया प्रवेश की इजाजत दी जाएगी. इस तरह नटवर सिंह और एस.के. सिंह को कुआलालम्पुर हवाई अड्डे पर प्रवेश मिल पाया.

सनसनीखेज संस्मरण

● अनुमान लगाइए कि राजधानी के प्रकाशन जगत में सबसे सनसनीखेज चीज क्या आने वाली है? जी नहीं, यह शोभा दे की 'सोशलाइट इवनिंग्स' जैसी कोई किताब नहीं बल्कि पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के संस्मरण हैं, जो जल्दी ही प्रकाशित होने वाले हैं.

ज्ञानी जी पिछले कई महीनों से अपने उतार-चढ़ाव भरे जीवन के संस्मरणों को चुपचाप कलमबंद करने में लगे हैं. या ठीक कहें तो वे इसे आकाशवाणी के एक पूर्व अधिकारी को सुना रहे हैं जो फिर उन्हें कागज पर उतार रहे हैं.

ज्ञानी जी भारत के हाल के इतिहास के सबसे करीबी दर्शक रहे हैं. इसलिए आश्चर्य नहीं कि उनके संस्मरणों को छापने के लिए कई प्रकाशक उम्मीद लगाए बैठे हैं. वैसे तो एक अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन समूह बाकियों से इस दौड़ में आगे है पर उसके साथ कई समस्याएं भी जुड़ी हुई हैं. इसके चतुर संपादकों की रुचि सिर्फ इस बात में है कि ज्ञानी जी गृहमंत्री और राष्ट्रपति के अपने कार्यकाल के दौरान हुई राजनैतिक घटनाओं का पूरा ब्यौरा लिखें.

लेकिन ज्ञानी जी आजकल अपने बचपन, गांव, युवा दिनों की यादों तथा इस तरह की दूसरी बातों को ही लिपिबद्ध करने को आतुर हैं. उधर, प्रकाशकों द्वारा उन्हें राजनीति का सनसनीखेज कच्चा चिट्ठा लिखने पर जोर देने की वजह से शासक दल के कई लोगों की नींद हराम हो रही है. लेकिन अगर ज्ञानी जी यह सब कुछ बयान करने का फैसला ले भी लेते हैं तो क्या वे अपने विपक्षी मित्रों की मंशाओं के मुताबिक चुनावों से पहले यह काम पूरा कर पाएंगे?

बदलाव की बयार

● बाहरी दुनिया से गुपचुप, पड़ोस में भारी परिवर्तन होते दिख रहे हैं. यों तो राजधानी में पाकिस्तानी दूतावास के समारोहों में पत्रकारों को ठंडे पेय जैसी चीजें ही मिला करती थीं लेकिन पिछले महीने वहां शराब, और वह भी मुंहमांगी मात्रा में, परोसे जाने पर पत्रकारों को सुखद अनुभूति हुई. यह आयोजन राष्ट्रकुल में पाकिस्तान के पुनः प्रवेश के मौके पर था.

लेकिन इसके साथ ही और भी चीजें बदलेंगी. पाकिस्तानी दूतावास अब उच्चायोग बन जाएगा और राजदूत को उच्चायुक्त कहा जाएगा. इस दूतावास के लेटरहेड, लिफाफे और नामपट भी अब बदल जाएंगे. इस पर खर्च करीब 50,000 रु. आएगा.

और वह भी तब जब सिर्फ बाहरी संवाद के लिए ही लिफाफा-लेटरहेड वगैरह छपवाया जाए. आयोग के भीतर और इस्लामाबाद

से संवाद के लिए पुराने कागज-पत्रों से ही काम चलाया जाएगा. इन कागजों पर सिर्फ 'दूतावास' की जगह 'उच्चायोग' का एक स्टांप लगा दिया जाएगा.

वैसे, अतीत में जिस तरह से पाकिस्तान राष्ट्रकुल से एकतरफा बहिर्गमन कर गया था, उससे यही लगता है कि इस दूतावास/उच्चायोग के लिए पुराने कागज-पत्रों को संजोए रखने में ही बुद्धिमानी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोर पर मोर

● कहावत है 'सौ दिन चोर के, एक दिन शाह का.' बात तब और भी मजेदार बन जाती है जब शाह की भूमिका निभाने की जिम्मेदारी भी कोई दूसरा चोर उठा ले—यानी चोर पर मोर

सभी कार्टून: सुब्रतो रॉय

पिछले दिनों बंबई में ठगी का धंधा करने वाले एक गिरोह के साथ कुछ ऐसी ही दुर्घटना हुई.

चर्चगेट स्टेशन के बाहर ऐसे उस्तादों की संख्या अच्छी-खासी रहती है जो वहां से गुजरने वाले राहगीरों को फांसकर चांदी काटते हैं. पिछले एक महीने से वहां एक ऐसा गिरोह सक्रिय था जो ढेर सारे पैसे जीतने का लालच देकर लोगों को ठग रहा था. इस गिरोह का एक सदस्य हाथ में प्लास्टिक के एक जैसे दिखने वाले तीन गोल टुकड़ों को हाथ की सफाई से एक कपड़े पर गिराता था. इनमें से केवल एक टुकड़े के नीचे काले रंग का स्टिकर लगा होता था. खेल की शर्त यह थी कि जो भी सही टुकड़े पर दांव लगाएगा उसे दुगने पैसे दिए जाएंगे. लेकिन ग्राहकों में ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा रहती थी जो इसी गिरोह के सदस्य थे और वे दांव लगाने वालों को उकसाकर गलत जगह दांव लगवाते थे. गिरोह खूब पैसा कमा रहा था.

लेकिन पिछले पखवाड़े एक और गिरोह ने सारी बाजी पलट दी. दांव लगाने वाले उक्त गिरोह के लोगों को इस गिरोह ने धमकाकर परे कर दिया और खुद दांव लगा-लगाकर जुआरी दुकानदार की दिन भर की कमाई साफ कर दी. इस लूट का परिणाम यह हुआ कि अगले दिन वह गिरोह अपनी दुकान बढ़ा गया और लोगों को इस खुराफात से मुक्ति मिल गई.

अंधविश्वास

● दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं है जहां के लोगों में किसी न किसी तरह का अंधविश्वास गहरी जड़ें न जमाए हुए हो. कहीं शुभ काम के समय छींक आने पर काम को जहां का तहां रोक दिया जाता है तो कहीं करोड़ों डॉलर के खर्च से बने जहाज को तब तक पानी में नहीं उतारा जाता जब तक उसे शराब की बोतल फोड़कर शराब से नहला न दिया जाए. इसलिए तावीज और भस्म बांटकर लोगों को बेवकूफ बनाने वालों की पांचों उंगलियां घी में रहती हैं.

लेकिन दुनिया में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो अंधविश्वासों के खिलाफ लोगों को जागरूक करने में लगे रहते हैं. अपने इस अभियान में वे कई बार ठीक उसी तरह के चमत्कार करके दिखाते हैं जिनके बूते पर बाबा और महंत लोग भक्तों को प्रभावित करते हैं.

लेकिन हाल ही में ऐसे एक सज्जन तब धर्मसंकट में फंस गए जब उनके इन कारनामों से प्रभावित होकर एक दर्शक ने उन्हें चमत्कारी बाबा मान लिया. यह हादसा हुआ श्याम मानव के साथ जो अपने अंधविश्वास-विरोधी अभियान के सिलसिले में बंबई के चर्नी रोड इलाके की एक जनसभा में इस तरह के करतब दिखा रहे थे. उन्होंने एक लोटे में पानी भरकर जादू का डंडा घुमाया और लोटे में पानी की जगह पेड़ा आ

गया. उन्होंने पेड़ा चखने के लिए दर्शकों में से कुछ लोगों को बुलाया लेकिन उनसे पहले ही एक बुजुर्ग सज्जन धड़धड़ाते हुए मंच पर आए, पेड़ा उठाकर हाथ जोड़ते हुए उसे माथे से लगाया और मानव के पांव छूकर चलते बने.

हे राम!

● दशहरे का मौसम आते ही उत्तरी भारत का वातावरण राम-लीलामय हो जाता है. एक साथ सैकड़ों-हजारों जगह रामलीलाओं के आयोजन की वजह से आयोजकों में इस बात को लेकर होड़

चल निकलती है कि किसकी रामलीला में कितने अच्छे कलाकार पेश किए जाते हैं. दूसरों से मुकाबलेबाजी मारने का आम तरीका तो यह है कि गली-मोहल्लों से अच्छे से अच्छे कलाकार चुने जाएं और अभ्यास कराया जाए. लेकिन बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के चलते यह काम बहुत आसान नहीं रहता. ऐसे में आयोजक उन कलाकार मंडियों का रुख करते हैं जहां रामलीला की भूमिकाएं निभाने वाले कलाकार ठेके पर मिलते हैं. ऐसी ही एक मंडी कानपुर में लगती है जहां के कलाकार दूर-दूर के इलाकों में होने वाली रामलीलाओं में भाग लेते हैं.

हालांकि रामलीला में नायक की भूमिका राम की ही होती है पर इस मंडी में कीमतों को देखकर पता चलता है कि बाजार भाव के मामले में रामलीला के दूसरे कई चरित्र राम से आगे हैं. पिछले दिनों कानपुर की कलाकार मंडी में रावण का भाव राम से दुगना-तिगुना था. औसत दर्जे के 'राम' का रेट 55 रु. प्रतिदिन के आस-पास था जबकि लक्ष्मण जैसे चंचल चरित्र की भूमिका निभाने वाले कलाकार का रेट 100 रु. के आसपास था. और रावण का 150 रु. लेकिन इन सबसे अधिक महंगा स्थान रहा परशुराम का जिसकी भूमिका निभाने वाले कलाकारों का रेट 500 रु. या इससे भी अधिक रहा.

ऐसा भी बेरोजगार

● बेरोजगारी की समस्या इतनी नई नहीं है कि इसके कारणों की चर्चा की जाए. रोजगार के बाजार में डिग्रियां और हुनर के सर्टिफिकेट लेकर खड़े लोगों की कतारें इतनी लंबी हैं कि बेहतर स्थानों पर खड़े लोग इन कतारों की ओर से आंखें बंद किए रखने में ही अपनी भलाई मानने लगे हैं. लेकिन कलकत्ता में एक होनहार मगर बेरोजगार उम्मीदवार ऐसा भी है जिसकी ओर आंखें मूंद लेने से ही अधिकारियों का काम नहीं चलने वाला. इसके लिए आंखें बंद करने के अलावा उन्हें कानों में प्लग भी ठूंसने पड़ेंगे—कारण यह है कि यह उम्मीदवार कोई बेजुबान इंजीनियर या डॉक्टर नहीं बल्कि एक जासूसी कुत्ता है.

गोल्डन लेब्राडोर जाति के इस कुत्ते का नाम है वेस्पा, जिसे दो साल पहले कलकत्ता के खुफिया विभाग ने एक पिल्ले के रूप में खरीदा था. कुछ समय के प्रशिक्षण में वेस्पा ने यह दिखा दिया कि वह खासा होनहार कुत्ता है. अपना प्रशिक्षण पूरा होने के बाद अब वह बहुत मुस्तैदी के साथ बमों और मादक दवाओं को ढूंढ़ निकालता है. वेस्पा की इस खूबी को देखते हुए उसे प्रधानमंत्री की हाल ही की एक कलकत्ता यात्रा के दौरान सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात किया गया था. लेकिन अपनी इन खूबियों के बावजूद यह होनहार कुत्ता आजकल

बेकार पड़ा हुआ है. कारण यह है कि खुफिया विभाग के कुत्तों वाले दस्ते में कोई स्थान रिक्त नहीं है. इसलिए बेचारा वेस्पा आजकल इस इंतजार में है कि कुत्ता दस्ते में कोई स्थान खाली हो और उसे नौकरी मिले.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

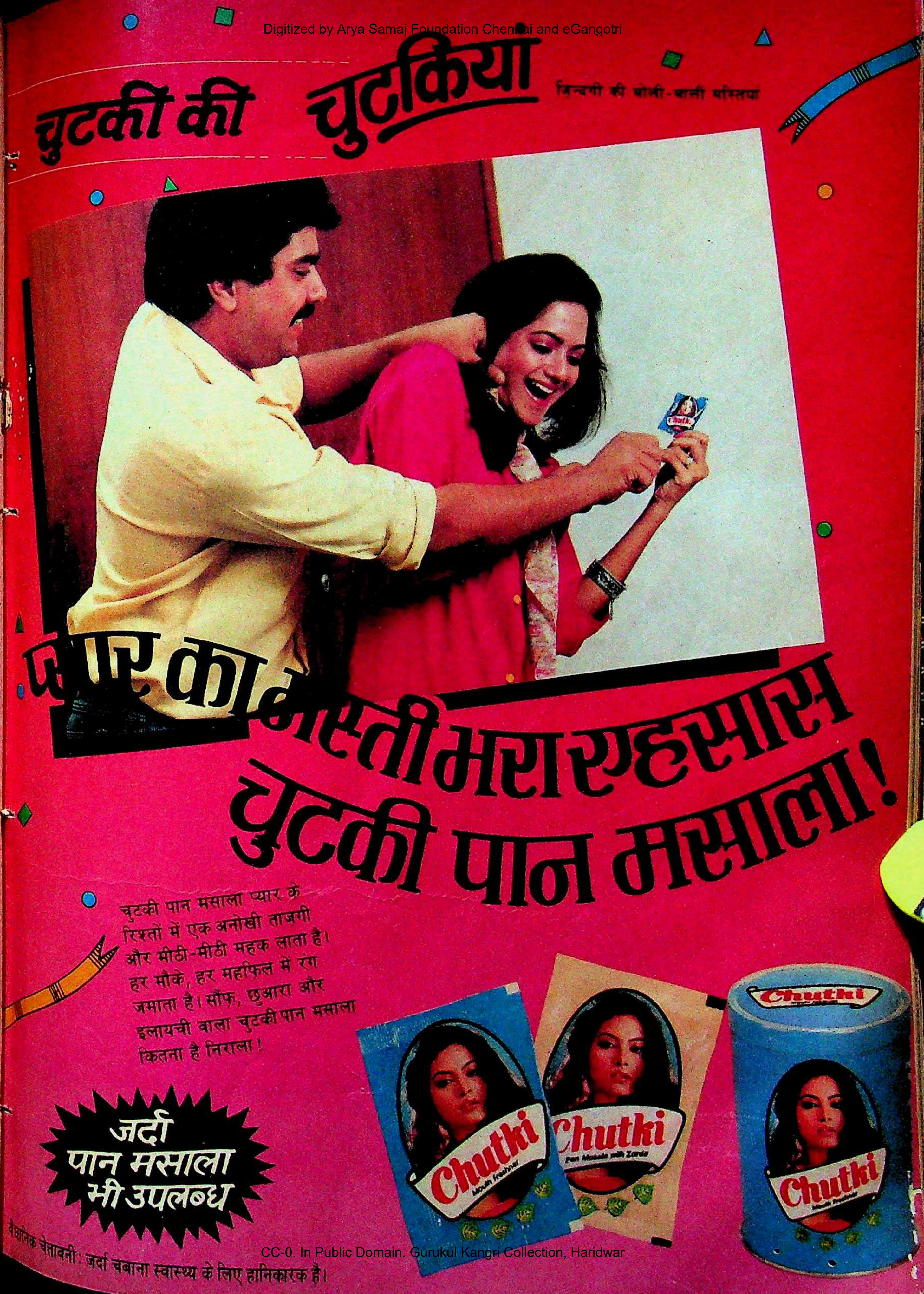

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए दौर की दहलीज पर

अचानक जैसे करेंट-सी दौड़ गई है. एक पखवाड़े में ही देश इतिहास के नए दौर की दहलीज पर पहुंच गया है. एक फैसला, जो अब तक आशंका के रूप में लोगों के मन में दबा पड़ा था, अब डरावने रूप में नजदीक आता जा रहा है. हर पहलू से देखें तो इस तरह का फैसला इस गणतंत्र के लिए पहले कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा था. अगले तीन हफ्तों में यह देश 529 राजनैतिक नेताओं के भविष्य का ही फैसला नहीं करेगा बल्कि यह भी तय कर देगा कि भारतीय लोकतंत्र का भावी स्वरूप क्या होगा.

रघु राय

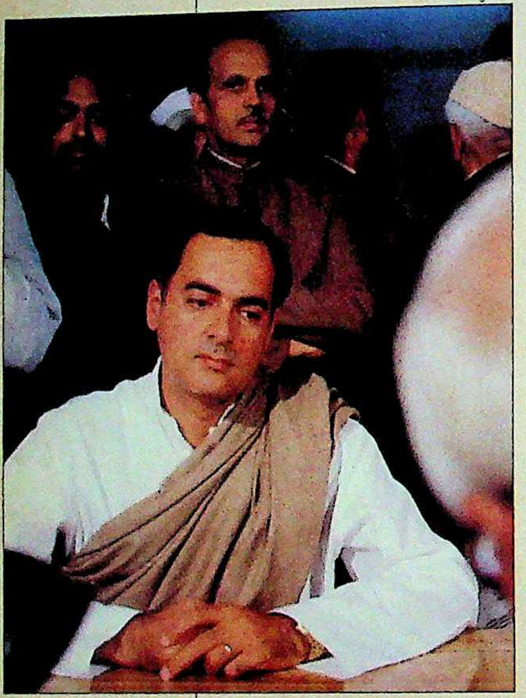

सवाल स्थायित्व का नहीं है. अतिशयोक्तिपूर्ण प्रचार अगर चुनावी संघर्ष का सर्वमान्य हथियार न होता तो शासक दल द्वारा लोगों को सावधान करने के लिए जो विज्ञापन जारी किए जा रहे हैं वे अक्षम्य माने जाते. सच तो यह है कि भारत आकार और आबादी के हिसाब से इतना विशाल है, इसका संघीय चरित्र इतना ओजपूर्ण है और यह राजनैतिक उठापटक को बरदाश्त करने वाली ऐसी संस्थाओं पर टिका है कि महज सत्ता में परिवर्तन से इसकी अखंडता को कतई कोई फर्क नहीं पड़ने वाला.

आज मुद्दा यह है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के राजनैतिक नेताओं ने लोगों के साथ विश्वासघात किया है

सच यह भी है कि अस्थिरता का हौवा सरकारें ही उठाती रही हैं, अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए. सच यह भी है कि अपने स्वार्थ के लिए राजनैतिक नेता ही सांप्रदायिकता का जहर फैलाते हैं. सच यह भी है कि समसामयिक राजनैतिक मजबूरियों के दबाव में राजनैतिक पार्टियां ही संस्थाओं को कमजोर करने की साजिश करती हैं, और सच यह भी है कि 1952 के चुनाव के बाद से भारत के स्थायित्व या उसकी अस्थिरता में कोई फ़र्क नहीं आया है.

फर्क आया है तो यह कि देश और ज्यादा समझदार हुआ है, राजनैतिक जोड़तोड़ को बरदाश्त करने में और ज्यादा सक्षम हुआ है और राजनैतिक परिवर्तन के प्रति और ज्यादा उदार हुआ है. इसकी लोकतांत्रिक छवि और चमकदार हुई है.

देश के भावी कर्णधारों को जनता अपने फैसले के जरिये क्या संदेश देना चाहती है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण होगा

इसी लिहाज से आगामी चुनाव ने अचानक बेहद अहमियत अख्तियार कर ली है, खासकर इसलिए भी कि मतदाताओं के सामने विकल्प इतना उलझन भरा पहले कभी नहीं था. शासक दल के चुनाव प्रचार का मुख्य जोर अगर यह हौवा खड़ा करने पर है कि विपक्ष सत्ता में आया तो देश टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, तो यह विपक्ष से ज्यादा खुद उसके दिवालियेपन का परिचायक है. इससे जाहिर है कि राजीव सरकार के पास लोगों को दिखाने के लिए अपनी उपलब्धियों का अभाव है. उधर विपक्ष के पास भी एक ही चुनावी नारा है—राजीव हटाओ. यानी इस चुनाव में जोर नाकारात्मक मुद्दों पर रहेगा.

यह ठीक है कि विपक्षी खेमे में वैचारिक उलझन का माहौल है. आशंका यह भी है कि विपक्ष को इतिहास ने दूसरा मौका दिया तो 1979 फिर से दोहराया जा सकता है. लेकिन लोगों के लिए राजनैतिक विचारधाराएं आज बहुत महत्वपूर्ण नहीं रह गई हैं. आखिर सत्ता की वेदी पर इन विचारधाराओं की बलि अक्सर दी जो जाती रही है!

आज मुद्दा यह है कि दोनों पक्ष के राजनैतिक नेताओं ने लोगों के साथ विश्वासघात किया है. देश की राजनैतिक बिरादरी की विश्वसनीयता और उसकी छवि पहले कभी इतनी धूमिल नहीं हुई थी. और चुनावी वायदे पहले कभी इतने बेमानी नहीं हुए थे.

आगामी चुनाव को इन्हीं कसौटियों पर कसा जाएगा, इस पर नहीं कि अंततः सत्ता में कौन आता है. देश के भावी कर्णधारों को जनता अपने फैसले के जरिये क्या संदेश देना चाहती है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण होगा. चुनावी उठापटक और तनातनी के बीच इस तथ्य को भले भुला दिया जाए कि भारतीय मतदाता हमेशा सही फैसला करता रहा है. लेकिन इस बार भी कोई कारण नहीं कि वह सही फैसला न करे.

—दिलीप बॉब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

by Arya S

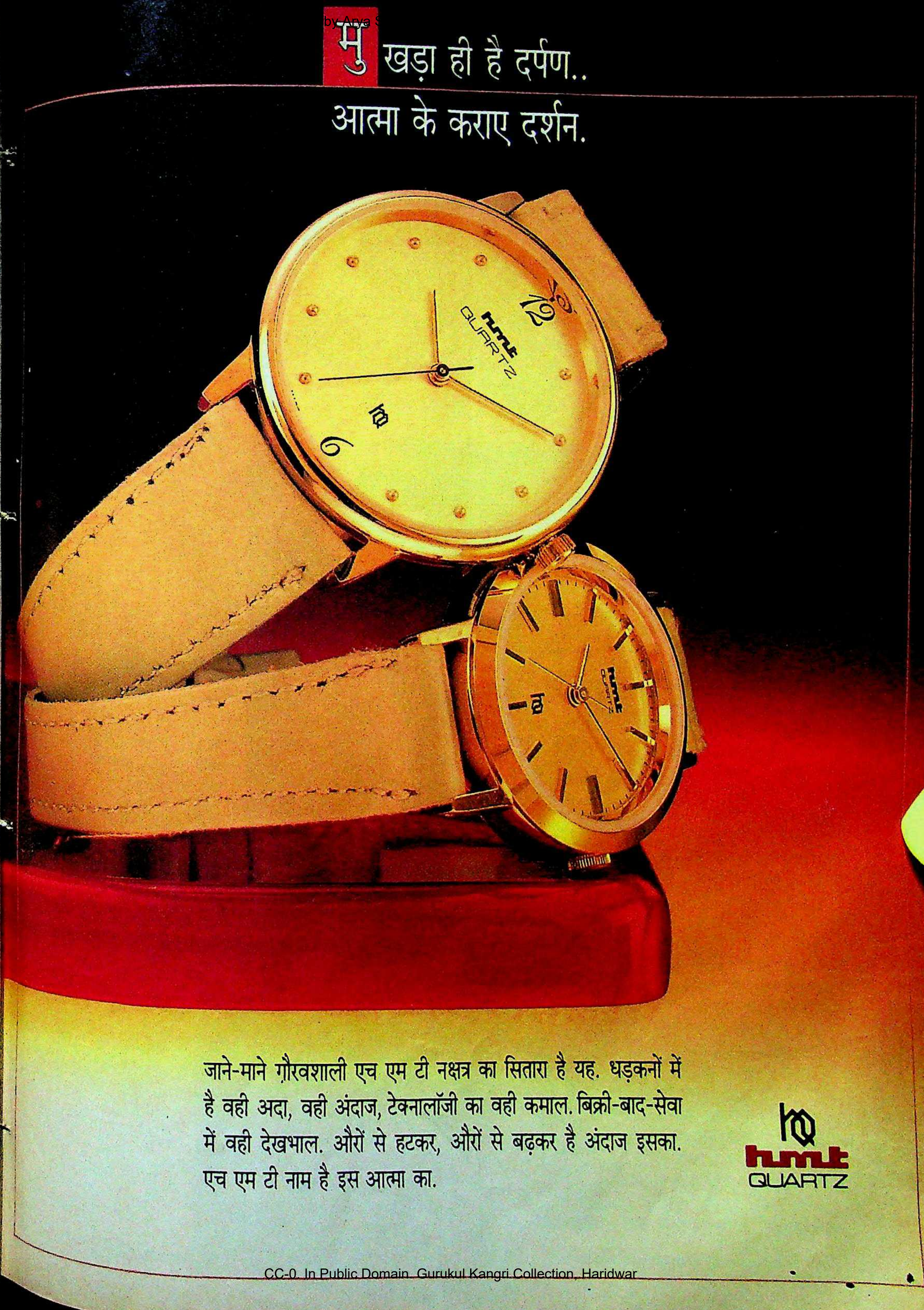

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

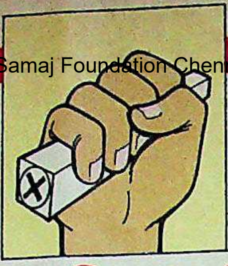

आम चुनाव

समझदारी की सनद

भारत पर आगामी तीन हफ्तों तक जो राजनैतिक बवंडर हावी रहने वाला है उसकी मिसाल कहीं नहीं मिलेगी. भारत की जनता लोकतांत्रिक जवाबतलबी के अपने जन्मसिद्ध अधिकार का प्रयोग करेगी जिसके तहत उसे उन लोगों को दंडित या पुरस्कृत करने का हक हासिल है, जिन्हें उसने पांच साल के लिए सत्ता सौंपी थी. उत्तरी अमेरिका की कुल आबादी से दोगुने यानी 48.9 करोड़ मतदाता हजारों मतदान केंद्रों पर प्रत्यक्ष मतदान करके दुनिया को दिखा देंगे कि यह अशिक्षित, अभागा, आंतरिक संघर्षों से अस्तव्यस्त, संप्रदायों में बंटा, गरीबी ढोने को अभिशप्त देश, जिसे तमाम पारंपरिक तर्कों के हिसाब से अराजकता की गर्त में डूब जाना चाहिए, आज भी उस नीति-व्यवहार पर चल रहा है जिसके तहत निरक्षर और निपट असहाय व्यक्ति को भी क्षण भर के लिए ही सही—वोट देते वक्त—अपनी महत्ता का एहसास हो जाता है. आज जबकि पूरी दुनिया स्वतंत्रता या असहमति के लिए उठे हाथों को टैंकों और बूटों के तले रौंदा जाना चुपचाप देख रही है, भारत में होने वाले चुनाव उसकी बंदूकों या उसके लड़ाकू विमानों से कहीं बेहतर प्रतीक हैं उसकी आंतरिक शक्ति के.

जो राजनैतिक बवंडर उठने वाला है उसके केंद्र में होगा भारत का फटेहाल मतदाता. यह मतदाता हर बार एक पहेली साबित होता रहा है. यह बड़े-बड़े राजनैतिक पंडितों की पंडिताई की कलई उतारता रहा है, चुनाव धुरंधरों के सारे समीकरणों को और भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को उलटता-पलटता रहा है और समाजविज्ञानियों को उसके दिमाग का अंदाज लगाने के लिए नए-नए मसाले देता रहा है. वह अनपढ़ होने के बावजूद राजनैतिक रूप से सजग है, विवेकशील है. वह दिमाग गिरवी रख चुके लोगों का झुंड नहीं जो राजनीति से प्रेरित धार्मिक, सांप्रदायिक और भावनात्मक नारों पर जानवरों की तरह रंभाने लगे.

भवान सिंह

जो लोग यह तर्क देते हैं कि चुनाव के वक्त जनता के निचले स्तर पर मुद्दे बहुत मायने नहीं रखते और यह कि असली चीज है सुनियोजित तरीके से वोट बैंक को फुसलाए रखना और उसे भुनाना, ऐसे लोगों को 1967 के चौथे आम चुनाव पर नजर दौड़ानी चाहिए. यह इसलिए भी कि 1967 और 1989 में कई समानताएं दिख रही हैं. 1967 में इंदिरा गांधी अपने राजनैतिक अस्तित्व के लिए जूझ रही थीं. परिवारवाद की देन, आधुनिक विचारों वाली, महत्वाकांक्षी इंदिरा गांधी का बाहर वालों के अलावा अपनी ही पार्टी के भीतर के सत्ता के दलालों से भी चुनौतियों का सामना था. प्रशासन में भ्रष्टाचार का बोलबाला था, सूखा पड़ने के बावजूद सरकार की कृषि नीति ढुलमुल थी, जनसंघ ने गोहत्या के खिलाफ आंदोलन छेड़ा हुआ था. तब आम धारणा यह थी कि ये 'मुद्दे' छोटे से शहरी संभ्रांत वर्ग को ही चिंतित करते हैं. अशिक्षित, राजनैतिक तौर पर अपरिपक्व मतदाताओं को ये मुद्दे कतई प्रभावित नहीं करेंगे.

लेकिन 1967 के आम चुनाव और विधानसभा चुनाव के नतीजों में चौंकाने वाली बात यह थी कि भारतीय मतदाता के राजनैतिक विवेक ने न केवल भ्रष्ट नेता बल्कि राज्यों के शासक दल के कृषिमंत्रियों तक को हराकर इंदिरा गांधी को बहुत मामूली बहुमत से सत्ता में भेजा.

इन चुनावों में इंदिरा गांधी को एक महत्वपूर्ण सीख यह मिली कि इस देश की जनता मुद्दों पर अपना फैसला सुनाती है. यह भी कि यदि वे सिंडिकेट के शिकंजे से बचना चाहती हैं

CC-0. In Public D

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उन्हें वोट बैंक को राजनैतिक संरक्षण देने की प्रवृत्ति से बचना होगा. भारतीय मतदाता पर पकड़ मजबूत करने के लिए पार्टी आकाओं की अनदेखी करके भी जनता से सीधे सिद्धांतों और मुद्दों पर आधारित नीतियों की बात करनी होगी. भले ही इसके लिए पार्टी का विभाजन करना पड़ जाए. सो, 1971 में सिंडिकेट द्वारा विश्वासघात के बावजूद उन्होंने 'इंदिरा हटाओ' के जवाब में प्रभावी नारा ढूंढ़ लिया था—"ये लोग कहते हैं, इंदिरा हटाओ. मैं कहती हूं, गरीबी हटाओ." और यह नारा कारगर रहा.

उनके विरोधी, जिनमें न एकता थी और न जिनके पास कोई मुद्दा था, 1977 में कांग्रेस को हराने तक बचाव की मुद्रा ही अपनाए रहे. लेकिन इंदिरा गांधी की यह हार वोट बैंक पर विपक्ष की मजबूत पकड़ के कारण नहीं हुई बल्कि एक मुद्दे को लेकर हुई—इमरजेंसी में लोकतंत्र के हनन के लिए इंदिरा को सजा दो. इसके बाद आए 1980 के चुनाव. ये भी ठोस मुद्दे पर लड़े गए. इस बार जनता पार्टी विरोधी लहर सभी जातीय व धार्मिक सीमाओं को लांघ गई. मतदाताओं ने फिर अपने राजनैतिक विवेक का इस्तेमाल करते हुए उन लोगों को सत्ता से निकाल बाहर किया जिन्होंने उनके विश्वास को तोड़ा था.

आज के राजनैतिक पंडितों का मानना है कि 1984 के चुनाव में कोई बड़ा मुद्दा नहीं था. ये लोग मानते हैं कि हिंदू समर्थक और सिख विरोधी लहर ने राजीव गांधी को सत्ता में बिठाया. लेकिन क्या किसी ने इस तर्क का सूक्ष्म विश्लेषण किया है? 1984 का साल इंदिरा गांधी के लिए हर तरह से बुरा था. सत्ता के दलाल फिर उभर आए थे, देश भ्रष्टाचार के चंगुल में फंसता जा रहा था, और इंदिरा गांधी के कुशल नेतृत्व का दौर भी खत्म हो चला था. विपक्ष हालांकि बिखरा हुआ था लेकिन हालात से फायदा उठाने की उम्मीद उसे जरूर थी. लेकिन इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस के समर्थन में चली सहानुभूति की लहर से जो वोट इंका को मिले उनमें से कम-से-कम आधे वोट एक स्थायी सरकार के पक्ष में डाले गए थे. बाकी के आधे वोट राजीव को ही मिले, क्योंकि राजीव तब गति, बदलाव और स्वच्छ राजनीति के प्रतीक दिखते थे. कुल मिलाकर 1984 का फैसला राष्ट्र के भटकाव और अवनति के खिलाफ था.

चाहे कोई भी चुनावी नारा लगा हो और प्रचार के चाहे कितने ही लुभावने रूप रहे हों, अगर वे असलियत से नहीं जुड़ पाए तो भारतीय मतदाता हमेशा भ्रष्टाचार और कुव्यवस्था के खिलाफ और स्थायित्व के पक्ष में फैसला सुनाता रहा है. वह नए चेहरे को आजमाने में भी नहीं हिचकता. 1984 में उसने नितांत नए चेहरे—राजीव गांधी—को चुना. मतदाता की खासियत यह है कि वह बहुत सूझबूझ और विवेक से अपना वोट देता है. लेकिन नेता को एक बार सत्ता सौंपने के बाद वह उसे भगवान और उद्धारक का दर्जा दे देता है. और जब वह नेता कोई चमत्कार करने में असफल रहता है तो मतदाता उसे कभी माफ नहीं करता और भगवान को फिर आसमान से जमीन पर ला बिठाता है.

यहां तक कि जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी जैसे दिग्गज भी अपने अंतिम दिनों में वादे पूरे न कर पाने के कारण लोगों की नजरों में उतने महान नहीं रह गए थे. सो, हैरत की बात नहीं कि देश को मायूसी और शिथिलता से बाहर निकाल तीव्र विकास का वादा करते हुए 1984 में राजनीति के मंच पर उतरने वाले राजीव 1989 तक आते-आते बचाव की मुद्रा में आ गए हैं. वे जनता के साथ विश्वासघात करने और वादे पूरे न करने के आरोपों के कटघरे में नजर आ रहे हैं.

यदि सरकार बचाव की मुद्रा में आ जाए तो देश को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि एक तो यह मजबूत सरकार देने का अपना वादा पूरा नहीं कर पाई दूसरे, अपने बचाव के लिए यह लोकतंत्र की सभी आधार संस्थाओं—नौकरशाही, न्यायपालिका, संसद और प्रेस—का इस्तेमाल करती है तथा इनकी गरिमा को चोट पहुंचाती है. इस तरह की व्यवस्था यह गारंटी नहीं दे सकती कि सरकारें जवाबदेह बन पाएं.

निश्चित रूप से 1989 के चुनाव में सबसे अहम मुद्दा यही रहेगा. क्या देश की सर्वोच्च अदालत—भारत के मतदाता—राजीव सरकार के खिलाफ यह फैसला सुनाएगी कि यह अपने शासनकाल में जवाबदेहियों से मुंह चुराती रही? क्या यह अदालत कोई कड़ा निर्णय लेगी? क्या मतदाता आर्थिक मुद्दों की अनदेखी करके संवैधानिक मुद्दों को तरजीह देंगे? इमरजेंसी के दौरान यद्यपि अर्थव्यवस्था अच्छी रही थी, लेकिन 1977 के चुनाव में मतदाओं ने निरंकुशता जैसे अहम राजनैतिक मुद्दे को लेकर ही अपना महत्वपूर्ण फैसला सुना दिया था.

अब 1989 में क्या मतदाता यह महसूस कर रहा है कि उन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संस्थाओं का इस्तेमाल राजनैतिक स्वार्थ सिद्धि के लिए किया गया जिन्हें दरअसल सरकार के गलत कार्यों पर रोक लगानी चाहिए थी. तो क्या वह इस बार लोकतांत्रिक संतुलन के लिए बेहद जरूरी उन संस्थाओं की गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए वोट देगा? क्या मतदाता सरकार-नियंत्रित टीवी और रेडियो पर पिछले चार साल से जो कुछ चल रहा था उन सबके खिलाफ अपना फैसला सुना कर दुनिया को दिखा देगा कि भारत के अनपढ़ किसान को सरकारी माध्यमों का झूठा प्रचार जरा नहीं सुहाता?

या क्या वह इस बार भी स्थायित्व के लिए वोट देगा? क्या वह विपक्षी एकता के प्रयासों को सत्तालोलुप अवसरवादियों के बीच अस्थायी समझौता बताकर दरकिनार नहीं कर देगा. क्या वह इतना विवेकशील है कि विपक्ष को संसद में सिर्फ मजबूत बनाने के लिए वोट देगा. यदि ऐसा होता है तो क्या वह राजीव को उनके खराब रिकार्ड के बावजूद एक और मौका देगा लेकिन इस बार मौका भर ही, भारी जनादेश नहीं?

यह भारतीय मतदाता कुछ भी कर सकता है. उसके बारे में निश्चित हो जाना खतरे से खाली नहीं होगा.

—इंद्रजीत बधवार

अनपढ़ होने के बावजूद मतदाता राजनैतिक रूप से सजग है, विवेकशील है, दिमाग गिरवी रख चुके लोगों का झुंड नहीं जो राजनीति से प्रेरित धार्मिक, सांप्रदायिक और भावनात्मक नारों पर जानवरों की तरह रंभाने लगे

भारत का मतदाता क्या राजीव सरकार के खिलाफ यह फैसला सुनाएगा कि वह अपने शासनकाल में जवाबदेहियों से मुंह चुराती रही? या वह विपक्षी एकता की कोशिशों को अवसरवादियों का अस्थायी समझौता मानकर स्थायित्व के पक्ष में वोट देगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

चुनौतियों की गंभीरता का एहसास

उम्मीदवारों की सूची से साफ है कि राजीव गांधी को सिर्फ अपने बूते चुनाव न जीत पाने का एहसास हो गया है

आम चुनाव की अप्रत्याशित घोषणा के बाद लग रहा था कि राजनैतिक हालात ऊपर से जितने बदले लग रहे हैं, भीतर से उतने ही स्थिर हैं. इस घोषणा से पहले तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही थीं जिनके स्रोत प्रधानमंत्री राजीव गांधी के करीब तक पहुंचते थे. सुना जा रहा था कि राजीव ने चुनाव कराने की चाल सोच-समझकर चली है. यह भी कि पार्टी के लिए सिरदर्द बन चुके क्षेत्रीय आकाओं और बदनाम नेताओं को पार्टी से बाहर कर नए उम्मीदवारों के साथ मतदाता का सामना किया जाए. अपनी छवि सुधारने और स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए वे पार्टी का विभाजन करने से भी नहीं हिचकेंगे.

लेकिन चुनावों की अप्रत्याशित घोषणा के बाद ऐसा कुछ नहीं हुआ. लग रहा था कि खिलाड़ियों ने चौसर की गोटियां समेट ली हैं. 1984 के 'मि. क्लीन' को 1989 में नया खिताब मिल गया है—'मि. सेफ' यानी वह व्यक्ति जो कोई खतरा मोल न ले. पिछले साल गुंडू राव, प्रणव मुकर्जी, चेन्ना रेड्डी, आर.के. धवन की वापसी पार्टी में जोड़-तोड़ की राजनीति में माहिरों और बाहुबलियों की वापसी का संकेत तो थी ही, यह 1984 की सर्दियों में राजीव द्वारा शुरू किए सुधार अभियान के पटाक्षेप का भी द्योतक थी. आगामी चुनाव के इंका उम्मीदवारों की सूची पर सरसरी नजर दौड़ाने से साफ हो जाता है कि इस बार पार्टी ने सारा दारोमदार अपने अध्यक्ष राजीव गांधी पर ही छोड़ दिया है.

यथास्थिति और समझौता मानो इस पार्टी का नया नारा बन गया है. चुनाव के मौके पर भीतरी असंतोष का बदसूरत चेहरा न उभर आए इसके लिए मौजूदा पार्टी सांसदों में से 80 फीसदी को फिर से उम्मीदवार बनाया गया है. वह भी तब जबकि राजीव की बेहद भरोसेमंद खुफिया एजेंसियों ने इनमें से दर्जन भर सांसदों के दोबारा चुने जाने की संभावना के बारे में बेहद निराशाजनक रिपोर्ट दी थी. पार्टी ने इस बार कुछ जाने-माने असंतुष्टों को भी छेड़ने की हिम्मत नहीं की. मिसाल के तौर पर, पार्टी नेतृत्व की खुलेआम आलोचना करने वाले नवलकिशोर शर्मा को भी दोबारा टिकट दे दिया गया, हालांकि राजीव पहले घोषणा कर चुके थे कि ज्यादातर पार्टी महासचिव और प्रदेश अध्यक्ष चुनाव नहीं लड़ेंगे. लेकिन मौजूदा राजनैतिक दंगल लड़ने वालों में ऐसे कई नाम देखे जा सकते हैं. मसलन—पश्चिम बंगाल के ए.बी.ए. गनी खान चौधरी, कर्नाटक के वीरेंद्र पाटील, बंबई के मुरली देवड़ा और उत्तर प्रदेश के के.एन. सिंह. लेकिन बंबई के अब्दुल रहमान अंतुले और बिहार में काली पांडे जैसे भ्रष्टाचार और आपराधिक रिकार्ड वाले नेताओं को टिकट दिया जाना इस बात का संकेत है कि पार्टी ने आचार-संहिता के सारे नियमों की ओर से आंखें मूंद ली है.

इस बार इंका का लक्ष्य युवाओं और महिलाओं के वोट बटोरने का था. युवाओं के वोट खींचने के लिए उसने संविधान में संशोधन करके मतदान की आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दी. लेकिन दोनों ही वर्गों को इंका उम्मीदवारों की सूची से भारी निराशा हुई. राजीव द्वारा महिलाओं को 30 फीसदी आरक्षण देने का वादा करने के बावजूद इंका की पहली सूची के 206 नामों में महिला उम्मीदवारों की संख्या महज 17 थी. इसी तरह पार्टी आकाओं से टिकट की उम्मीद में दिल्ली में डेरा डाले युवा इंका कार्यकर्ता बुरी तरह निराश हो वापस लौटे हैं.

शासक दल के भीतर उभर रहे इस नए चुनावी परिदृश्य से सबसे ज्यादा फायदा

राजीव गांधी के चित्र वाले पोस्टरों

सिंडिकेट यानी पार्टी के उन क्षेत्रीय आकाओं को हुआ है जिनके पर कतरने की कोशिश राजीव करते रहे थे. लेकिन अब इन लोगों ने साबित कर दिया है कि पार्टी और खुद राजीव का भविष्य उनके हाथों में है.

चूंकि हिंदीभाषी क्षेत्र के वोट ही तय करेंगे कि सत्ता के शिखर पर कौन काबिज होगा, इसलिए आने वाले चुनावों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी, बिहार इंका प्रदेश अध्यक्ष जगन्नाथ मिश्र, मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल और बिहार के मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा—की भूमिकाओं पर जमकर बहस चलती रही है. इन सभी का अपने-अपने क्षेत्र में व्यापक जनाधार है. और जिस तरह केंद्र इन्हें अपनी उंगलियों पर नचाता रहा है उसके कारण ये आलाकमान से नाराज भी रहे हैं. अब चुनाव के मौके पर वे बदला लेने पर उतारू दिख रहे हैं. उदाहरण के लिए तिवारी नैनीताल संसदीय क्षेत्र को वर्षों से अपने लिए तैयार करते रहे थे. यहां से वे अपने रिश्तेदार को खड़ा करना चाहते थे. लेकिन आलाकमान रक्षामंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...का ढेर: नाम भुनाने का अभियान

कि टेलीफोन खराब है. उन्होंने आंवला या नई दिल्ली से उम्मीदवार बनने के पार्टी निर्देश को मानने से इनकार कर दिया. लेकिन उन्होंने अपने को इंका का पक्का कार्यकर्ता बताया और कहा कि वे पार्टी के लिए प्रचार करेंगे. केंद्रीय मंत्रिमंडल में अपनी स्थिति के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, "मुझे इस बारे में भी फैसला करना पड़ेगा."

लेकिन समस्या सिर्फ उत्तर भारत में ही नहीं है. पश्चिम में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री माधवसिंह सोलंकी के भी केंद्र के साथ कोई मधुर संबंध नहीं रहे. पवार पर तो संदेह किया ही जाता रहा है कि यदि पार्टी हार गई तो वे पार्टी ही छोड़ देंगे. और, पार्टी का वफादार होने का दम भरने के बावजूद सोलंकी की शिकायत रही है कि केंद्र ने उनके और अमरसिंह चौधरी के बीच 'फूट डालो, राज करो' की नीति अपनाई है.

चुनावों की अप्रत्याशित घोषणा का एक मकसद विपक्ष को तैयारी का ज्यादा मौका न देना तो था ही, सिंडिकेट के आकाओं को यह जताना भी था कि वे अपनी हद में ही रहें क्योंकि राजीव चुनावी लड़ाई के लिए उन पर ही निर्भर नहीं हैं. उनके साथ नौकरशाहों की फौज है, प्रचार मैनेजर हैं, जो चुनाव संभाल सकते हैं. साथ ही आलाकमान असंतुष्टों को यह जता देना चाहता था कि टिकट न मिलने पर यदि उन्होंने पार्टी छोड़ी तो वे कहीं के न रहेंगे. टिकट के लिए खींचातानी से त्रस्त विपक्ष इंका से निकले असंतुष्टों को हरगिज नहीं खपा पाएगा.

कांग्रेस का नया नारा यथास्थिति बनाए रखना है. उभरती नाराजगी को चुनाव के पहले समाप्त करने के लिए उसने अपने 80 फीसदी सांसदों को टिकट दिया है

चार्ट: बी.के. शर्मा

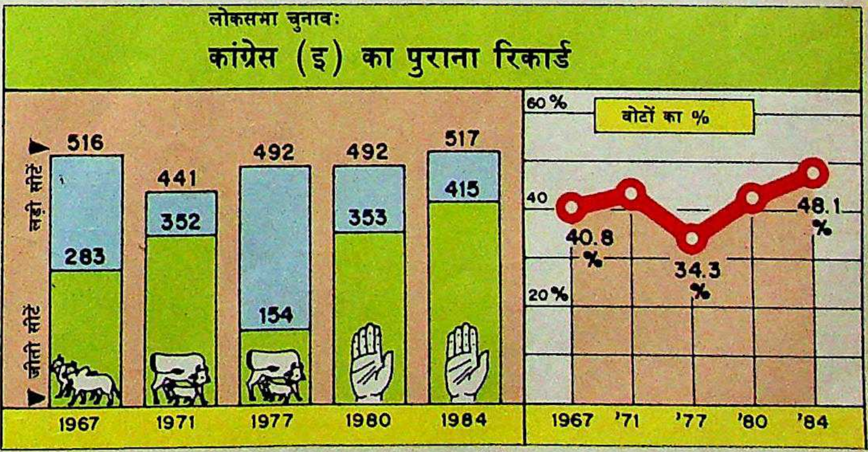

कृष्णचंद्र पंत के लिए यह सीट चाहता था. लेकिन तिवारी अड़ गए.

पंत भी पीछे हटने को तैयार नहीं थे. उनके अनुसार प्रधानमंत्री ने खुद उनसे कहा था कि वे नैनीताल से उम्मीदवार होंगे. सो, नामांकन पत्र भरने के अंतिम दिन 30 अक्तूबर को उन्होंने पत्रकार सम्मेलन बुला लिया और 'पार्टी के क्षेत्रीय नेताओं की दादागीरी' के दौर की वापसी की निंदा की.

उन्होंने राजीव के नाम लिखे अपने दो पत्र भी पढ़कर सुनाए. एक पत्र में उन्होंने लिखा है, "आपको दबाव में आकर अपना दिमाग बदलना पड़ा होगा. लेकिन मैं इस परिवर्तन के पीछे के तर्क को मानने को तैयार नहीं... अपने गृह जिले में मैं किसी की राजनैतिक जमींदारी मानने को तैयार नहीं हूं." उन्होंने यह भी शिकायत की कि जब उन्होंने राजीव से फोन पर बात करनी चाही तो कहा गया

लेकिन चुनाव जल्दी कराने की असल रणनीति पार्टी आकाओं में व्याप्त भारी असंतोष के मद्देनजर ही तय की गई थी. राजीव को शायद यह एहसास हो गया है कि वे अपने बूते चुनाव नहीं जीत सकते. फिर भी उन्होंने यह जताने की भरपूर कोशिश की कि वे अपने बूते जीत सकते हैं.

लेकिन चुनाव जल्दी कराने की असल मजबूरियां कुछ और ही हैं. पिछले तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

महीनों से इंका के नेतागण जल्दी चुनाव होने की उम्मीद कर रहे थे. अपनी तरफ से तो वे बोफोर्स घोटाले को लोकसभा के मानसून सत्र में ही हमेशा के लिए दफना आए थे. राजीव के सलाहकारों का खयाल था कि यदि पार्टी कोई प्रभावी नारा ढूंढ़ ले तो काफी वोटों से जीत सकती है. पंचायती राज विधेयक से उन्हें यह नारा मिल ही गया. यह नारा है—'जनता की सत्ता जनता के हवाले.' यह विधेयक हालांकि संसद के पिछले सत्र में लाया जा सकता था लेकिन चुनाव से पहले पेश करने के लिए सहेज कर रख लिया गया क्योंकि चुनाव जल्दी कराने की चर्चाएं जून में ही शुरू हो गई थीं. लेकिन इसका समय बिलकुल गुप्त रखा गया. सारी रूपरेखा प्रधानमंत्री के करीबी सलाहकारों—धवन, सतीश शर्मा, अरुण नंदा, मणिशंकर अय्यर और सैम पित्रोदा—ने मिलकर तय की थी.

मध्य अक्तूबर तक प्रधानमंत्री कार्यालय को 4,000 उम्मीदवारों के नामों की तीन सूचियां मिल चुकी थीं. यह सूची बिहार के सांसद एस.एस. अहलूवालिया द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर बनाई गई थी जिन्होंने सीधे प्रधानमंत्री के अधीन रहकर यह काम अंजाम दिया था. इसके अलावा खुफिया ब्यूरो भी अपनी रिपोर्ट सीधे प्रधानमंत्री को ही देता था. राज्य की खुफिया इकाइयों की सूची वहां के मुख्यमंत्रियों के जरिये दिल्ली पहुंचा दी जाती थी. इस पूरी प्रक्रिया में कम-से-कम एक महीना लग जाता. अंदाजा लगाया जा रहा था कि चुनावों की घोषणा नवंबर में हो सकती है और यह कि पंचायती राज विधेयक का चाहे जो हश्र हो, इंका उसे

समय से पहले चुनाव

सरताज बनने की कवायद

समय पूर्व चुनाव कराने की घोषणा का नाटक 16 अक्तूबर को शुरू हुआ. उस दिन प्रधानमंत्री के दफ्तरनुमा आवास 7, रेसकोर्स रोड में काम आम दिनों की तरह चल रहा था. राजीव गांधी दक्षिण भारत के अपने दौरे से लौटे ही थे और उनका पूरे दिन आराम करने का कार्यक्रम था. लेकिन परिवार के

शरद सक्सेना

इंका संसदीय बोर्ड: कोई आश्चर्य नहीं

सदस्यों से मिलने से पहले उन्होंने अपने विश्वस्त सहयोगी वी. जॉर्ज से बातचीत की. आदेश के मुताबिक जॉर्ज ने सभी 58 केंद्रीय मंत्रियों से संपर्क साधा और उन्हें अगले दिन सुबह ठीक 9 बजे एक बैठक में आने को कहा. किसी भी मंत्री को हवा तक न थी कि क्या होने वाला है.

पौ फटते ही राजीव ने राजनैतिक मामलों संबंधी मंत्रिमंडलीय समिति के पांचों सदस्यों को सुबह 8.30 बजे मुलाकात का बुलावा भेजा. इनमें से तीन—गृहमंत्री बूटा सिंह, रक्षामंत्री कृष्णचंद पंत और विदेशमंत्री पी.वी. नरसिंहराव—ठीक वक्त पर आ गए. वित्तमंत्री एस.बी. चव्हाण और मानव संसाधन विकासमंत्री पी. शिवशंकर विदेश में थे. राजीव ने घोषणा की, "मैं चुनावों के लिए तैयार हूं." किसी ने भी ऐसे समय में चुनाव कराने या उनके फैसले के खिलाफ बोलने की जुर्रत नहीं की.

इसके बाद राजीव की अगुआई में तीनों मंत्री अगले हॉल में होने वाली बैठक में पहुंचे, जहां करीब 40 मंत्री मौजूद थे. राजीव ने कहा, "हमने चुनाव कराने का फैसला किया है." इस बार भी उनके मंत्रियों को अगर कोई आशंका थी तो उन्होंने जाहिर नहीं की. फिर भी एक मंत्री ने पूछ ही लिया कि इतने थोड़े समय में पार्टी चुनाव के लिए कैसे तैयार हो पाएगी. तभी राजीव ने उन्हें सचमुच चौंका दिया. उन्होंने बताया कि विज्ञापन अभियान, भाषण सामग्री, दृश्य-श्रव्य सामग्री, वाहन, पोस्टर और पर्चे, पैसा और चुनाव क्षेत्रों की पृष्ठभूमि सरीखे चुनाव प्रचार के सारे मसाले तैयार हैं.

सारी कवायद प्रधानमंत्री की यह छवि बनाने की थी कि वे ही सर्वोच्च कर्ताधर्ता हैं. यानी पार्टी को शामिल किए बिना, मात्र कुछ सहायकों की मदद से ही उन्होंने चुनाव के लिए विस्तृत जानकारी जुटा ली है. उनके कहने का आशय कुछ ऐसा था कि उन्हें पार्टी की जरूरत नहीं बल्कि पार्टी को उनकी जरूरत है. और यह भी कि वे अभी भी काम करने वाले शख्स हैं. लगता है कि वे न केवल अपनी पार्टी बल्कि देश को भी इस रणनीतिक भ्रम में डालने में कामयाब हो गए कि सारा दारोमदार उन्हीं पर है.

झलकियां

सुरक्षित स्थिति

□ इस बार के चुनावों में राजीव की स्थिति राजनैतिक रूप से न सही, व्यक्तिगत रूप से बहुत सुरक्षित दिखती है. एक विशेष सुरक्षा दल (एसपीजी) खुफिया ब्यूरो और अपने अफसरों को सुरक्षा के मामले में तालमेल के लिए उन राज्यों के अधिकारियों के पास भेज रहा है जहां प्रधानमंत्री का चुनाव प्रचार का कार्यक्रम तय है. खतरों की आशंका से प्रधानमंत्री के सुरक्षा संबंधी दिशा-निर्देशों वाली ब्ल्यू बुक में भी फेरबदल किया गया.

संशोधित योजना के अनुसार प्रधानमंत्री के कार काफिले में क्रम कुछ इस प्रकार रहेगा. पहले चेतावनी कार होगी और उसके बाद पायलट और पत्रकारों की कार, इनके पीछे प्रधानमंत्री की बुलेटप्रूफ कार, सुरक्षा दस्ता-1 (एसपीजी) और सुरक्षा दस्ता-2 (राज्य पुलिस), अतिरिक्त कार और एंबुलेंस, राज्यपाल/मुख्यमंत्री की कार, राज्य प्रशासन की कार, पार्टी नेताओं की कारें, और आखिर में ऊंची गाड़ी (जो दूसरी किसी गाड़ी को काफिले से आगे जाने से रोकेगी).

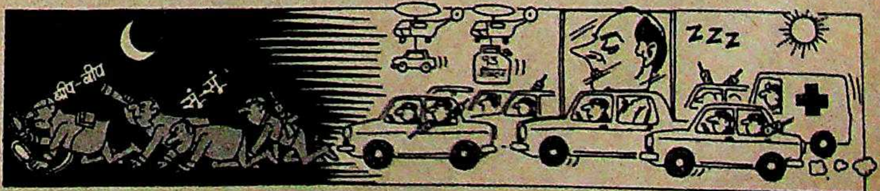

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

चुनावी मुद्दा बनाकर अपने पक्ष में भुना लेगी. यदि यह विधेयक मंजूर हो जाता है तो उसका नारा होगा— 'हमने जनता की सत्ता उसे सौंप दी'. यदि विधेयक मंजूर न हुआ तो नारा होगा, 'विपक्ष ने आपको उस सत्ता से वंचित रखा है जो हम आपको सौंपना चाहते थे'.

परंतु बोफोर्स घोटाले ने सारे किए कराए पर पानी फेर दिया. 'हिंदू' द्वारा किए गए ताजा रहस्योद्घाटन के बाद लगता है कि यह घोटाला तो जैसे चुंबक की तरह चिपक ही गया है. राजीव के सलाहकारों ने उन्हें बता दिया है कि अगर उन्हें फंसाने वाला कोई और भंडाफोड़ हुआ तो पार्टी के असंतुष्टों के लिए यह दलबदल का एक बहाना बन जाएगा. इसके अलावा विपक्ष के तरकस में एक और तीर चला जाएगा. विपक्ष प्रधानमंत्री के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज करने की इजाजत लेने के लिए राष्ट्रपति भवन तक निर्वाचित विपक्षी नेताओं का जुलूस ले जाने की सोच रहा है.

प्रधानमंत्री को यह भी सूचना मिली कि उत्तर भारत के कुछ वरिष्ठ सांसदों ने 'राजीव हटाओ, कांग्रेस बचाओ' का नारा बुलंद किया है. फिलहाल यह कोई बगावत नहीं है, पर यह भावी समस्याओं का संकेत जरूर है. इसका संकेत जनता दल नेता चंद्रशेखर द्वारा बिहार में 'राजनीति के अपराधीकरण' विषय पर की गई सभा में कमलापति त्रिपाठी के शामिल होने से भी मिल जाता है. दिल्ली की एक सभा में त्रिपाठी, वी.पी. सिंह के साथ भी मौजूद थे.

राजीव को सलाह दी गई कि चुनाव की तुरंत घोषणा की गई तो—

▶ बोफोर्स घोटाले के एक और भंडाफोड़ से नुकसान के लिए समय काफी कम रह

अभियान के सूत्रधार

बहुपक्षीय और बहुआयामी

इंका का भारी-भरकम चुनाव अभियान बहुपक्षीय और बहुआयामी है. पिछले पखवाड़े पार्टी का संसदीय बोर्ड उम्मीदवारों को चुनने की कसरत में दिन-रात व्यस्त था तो अधिकांशतः राजीव के निजी दोस्तों से गठित एक छोटा-सा गुट परदे के पीछे से निर्देशन देने में सक्रिय था. इंका में 'बैकरूम ब्वॉयज' नाम से मशहूर इन लोगों ने प्रचार और आंकड़े जुटाने का काम संभाला है.

दून स्कूल में राजीव गांधी के हमजोली रहे विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह केंद्रीय चुनाव कोऑर्डिनेटर की भूमिका में राज्यों को प्रचार सामग्री भेजने का बंदोबस्त कर रहे हैं. चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद पृथ्वीजीत सिंह पोस्टर तैयार करवाने और प्रदेश इंका समितियों से उनकी विभिन्न जरूरतों का ब्यौरा जमा करने में व्यस्त हो गए.

राजीव के साथ चुनाव की तैयारियों में जुटे उनके अन्य स्कूली दोस्तों में रीडिफ्यूजन विज्ञापन एजेंसी के प्रबंध निदेशक अरुण नंदा और रोमी चोपड़ा भी हैं. दोनों को चुनाव प्रचार का तेवर तीखा बनाने का काम सौंपा गया है. वे इंका के चुनाव प्रचार का तेवर और विषयवस्तु तय कर चुके हैं. चुनाव की घोषणा से कुछ ही पहले भारतीय विदेश सेवा से इस्तीफा देने वाले मणि शंकर अय्यर ने राजीव के चुनाव दौरों का कार्यक्रम तय कर लिया है. बिहार से राज्यसभा सदस्य सुरिंदरजीत सिंह अहलूवालिया पार्टी मुख्यालय में बने उस नियंत्रण कक्ष को संभाले हुए हैं जो राज्य इकाइयों से संपर्क रखेगा. यहां 4,500 रु. प्रतिदिन के खर्च पर 30 हॉटलाइनें लगा दी गई हैं. उन्होंने विभिन्न केंद्रीय मंत्रियों और राज्यस्तरीय नेताओं के चुनाव प्रचार का कार्यक्रम भी तैयार किया है. प्रदेश इंका समितियां उनसे लगातार संपर्क बनाए हुए हैं और उन्हें लिख रही हैं कि वे अपने राज्यों में चुनाव प्रचार के लिए किन नेताओं को चाहती हैं.

इस गुट में अलग दिखने वाले वरिष्ठ सदस्य हैं इंका के मशहूर कोषाध्यक्ष सीताराम केसरी, जिन्हें संसाधन वितरण का काम दिया गया है. परदे के पीछे चल रहे इस अभियान की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आर.के. धवन और सतीश शर्मा को सौंपी गई है. उन्हें विपक्षी खेमे के इक्के-दुक्के नेताओं को फुसलाने और विपक्षियों को परेशान करने वाली चालें चलने का काम मिला है. हाल ही में इस गुट में युवा इंका के पूर्व अध्यक्ष आनंद शर्मा भी जुड़ गए हैं. लंबे वनवास के बाद उन्हें पार्टी का प्रवक्ता बनाया गया है. अय्यर और कुछ मित्र अखबारों के संपादकों की सलाह लेकर वे रोज शाम को पत्रकार सम्मेलन के लिए पार्टी मुख्यालय में आ जुटते हैं. बड़बोलेपन के लिए मशहूर शर्मा ने अपनी एक अलग पहचान बना ली है. उन्हें 'इंका महासमिति का के.के. तिवारी' करार दिया गया है.

प्रधानमंत्री
राजीव गांधी

संसाधन
सीताराम केसरी

कोऑर्डिनेटर
विश्वजीत सिंह

राजनैतिक मामले
आर.के. धवन — सतीश शर्मा

नियंत्रण
सुरिंदरजीत सिंह

प्रेस
आनंद शर्मा

दौरा
मणि शंकर

प्रचार
अरुण नंदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा. और अगर भंडाफोड़ हो भी जाता है तो चुनाव के समय इसे राजनैतिक स्टंट बताकर खारिज किया जा सकता है.

▶ बोफोर्स के मुद्दे पर पार्टी छोड़ने वालों पर असंतुष्ट होने का आरोप लगाते हुए कहा जा सकेगा कि उन्होंने पार्टी घोटाले के कारण नहीं बल्कि टिकट न मिलने के कारण छोड़ी.

▶ और अब तक झगड़ रहे विपक्ष को एकजुट होने के लिए काफी कम समय मिलेगा.

▶ इससे राजीव को अपनी पसंद का उम्मीदवार चुनने का मौका मिलेगा. साथ ही विधानसभा चुनाव न करवाकर वे क्षेत्रीय नेताओं से अपनी शर्तें मनवा सकेंगे.

परंतु राजीव द्वारा चुनाव की नाटकीय घोषणा के बाद यह सारा गणित जैसे गड्डमड्ड हो गया. उन्हें 30 फीसदी मौजूदा सांसदों को टिकट न देने का इरादा भी छोड़ना पड़ा. वे सिर्फ 10 फीसदी सांसदों का नाम ही काट सके. इंका के ताजा इतिहास में पत्ता कटने वाले सांसदों की यह सबसे कम संख्या है जो राजीव गांधी की असहायता का एक अच्छा संकेत है. 1984 के लोकसभा चुनावों और उसके बाद के विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री ने 40 फीसदी सांसदों व विधायकों का पत्ता साफ कर दिया था. प्रदेशों के पार्टी ढांचे में भी उन्होंने फेरबदल करना चाहा था तो पिछले साल बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश और राजस्थान में पार्टी में बगावत फूट पड़ी थी.

विज्ञापन अभियान

राजीव गांधी और उनकी पार्टी को राष्ट्रीय अखंडता का रक्षक बताने वाला इंका का प्रचार अभियान अब आकर्षित नहीं करता

पिछले पखवाड़े राजीव फिर ऐसी ही समस्या में फंस गए. जब उन्होंने एकाएक चुनाव की घोषणा करके सबको हैरत में डाल दिया तो वे इस उम्मीद में थे कि राज्यों के नेता उम्मीदवार चुनने में उनकी मदद करेंगे. जाहिर है कि यह खासी नासमझी भरी उम्मीद थी. अर्जुन सिंह, पवार, सोलंकी और तिवारी जैसे घुटे हुए नेताओं ने तुरंत ही विधानसभा चुनाव साथ-साथ कराने के लिए गुटबाजी शुरू कर दी. उनका अनुमान था कि लोकसभा चुनाव में चंद सीटों का ही खेल होगा इसलिए उनके कम समर्थकों को टिकट देकर उनका आधार कमजोर किया जा सकता है. लेकिन अगर साथ ही विधानसभा चुनाव भी हुए तो सौदेबाजी की उनकी ताकत काफी हद तक बढ़ जाएगी.

इसके लिए उन्होंने जो रणनीति तैयार की वह बड़ी सरल मगर प्रभावी थी. एक तो उन्होंने लोकसभा के लिए आलाकमान को किसी उम्मीदवार का नाम सुझाने से इनकार कर दिया. और दूसरे, जिन्हें टिकट देने या दोबारा टिकट देने से इनकार किया गया उनका गुस्सा प्रधानमंत्री के खिलाफ मोड़ना.

पहला तीर नारायणदत्त तिवारी ने छोड़ा. देर रात को वे प्रधानमंत्री से मिले और उनसे विधानसभा चुनाव भी साथ ही साथ कराने का आग्रह किया. उनका तर्क था कि तब विपक्षी नेता अपने-अपने राज्यों में उलझे रह जाएंगे और राष्ट्रीय प्रचार नहीं कर पाएंगे. उन्होंने यह भी कहा कि इससे स्थानीय मुद्दे अहम हो जाएंगे और लोगों का ध्यान बोफोर्स जैसे मुद्दों से हटेगा. प्रधानमंत्री इस पर कुछ फैसला कर पाते इसके पहले ही तिवारी लखनऊ उड़ गए

झलकियां

फरमान पूरा हुआ

□ इस बार राजीव गांधी अमेठी से नामांकन पत्र दाखिल करने पहुंचे तो सुलतानपुर के जिलाधीश सुभाष कुमार उनसे हाथ मिलाने के लिए खड़े नहीं हुए. कुमार को केंद्रीय कानूनमंत्री हंसराज भारद्वाज का फरमान मिला था कि 1984 में तत्कालीन जिलाधीश पुलक चटर्जी ने जो बेतुकी हरकत की थी, वे उसे न दोहराएं. इंका अब सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप अपने सिर नहीं लेना चाहती.

ऐसी भी हाजिरजवाबी

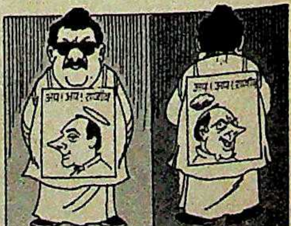

□ बड़बोलेपन के लिए चर्चित रहे गुंडूराव हाजिरजवाबी में अभी भी कइयों के कान काटते हैं. इंका में उनकी वापसी के फौरन बाद पत्रकार सम्मेलन में उन्होंने राजीव की नीयत पर तीखी जबान चलाई थी. लेकिन राव को घेरना आसान नहीं था. उन्होंने फौरन अपनी हाजिरजवाबी दिखाई, "जब राजीव की छवि साफ-सुथरी थी, मैं उनका समर्थक था और अब चूंकि उनकी छवि साफ-सुथरी नहीं, इसलिए मैं उनका समर्थक हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें

जिनमें छलके
मुग़लों की आन-बान
सदियों की शान और
प्राकृतिक अद्भुतता!

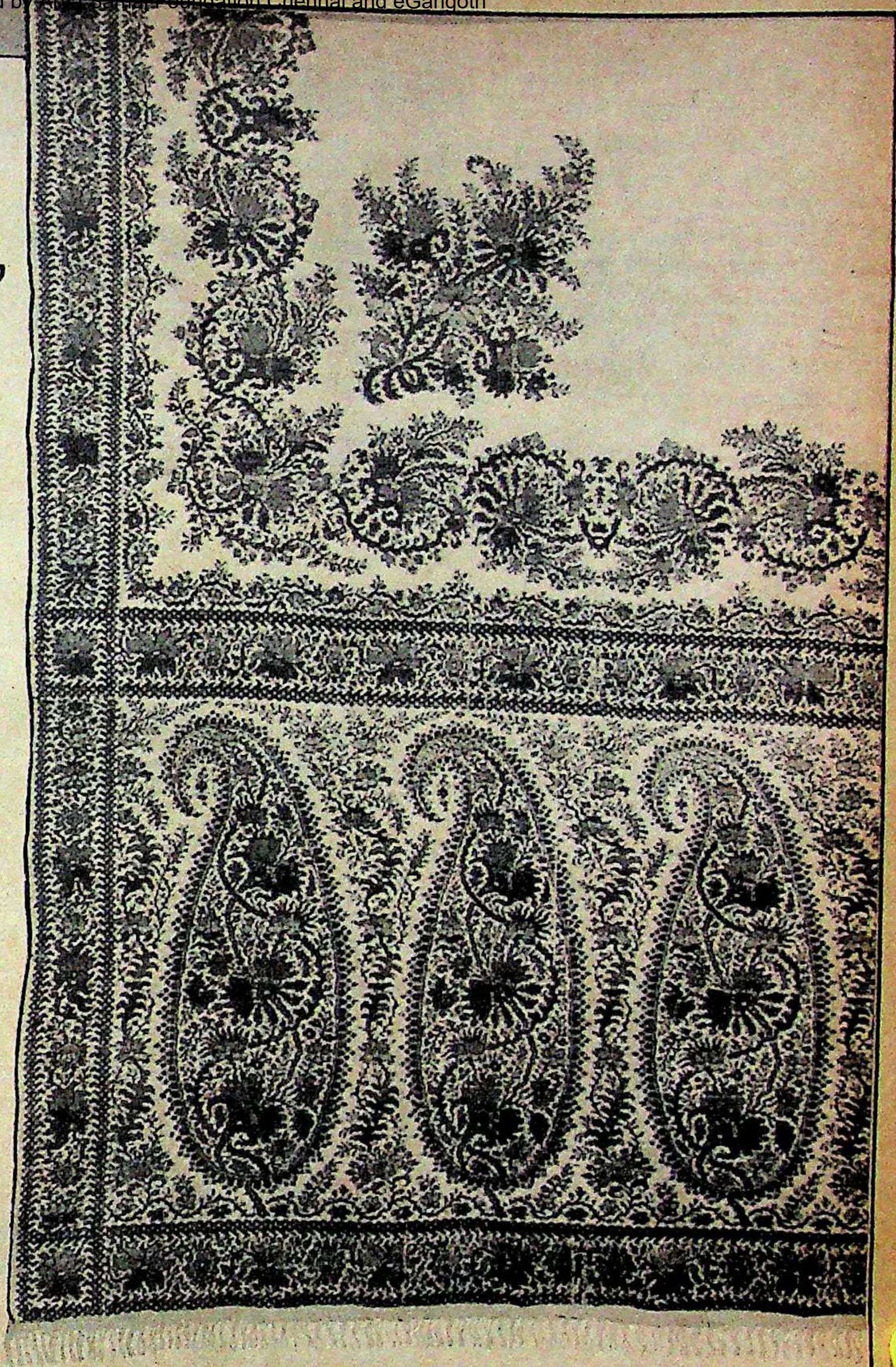

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रही हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है — वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—जिनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

Trends/1798/89

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 583154

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी ज़रूरतें कम किये बिना आप सुखी सेवानिवृत्त-जीवन बिता सकते हैं

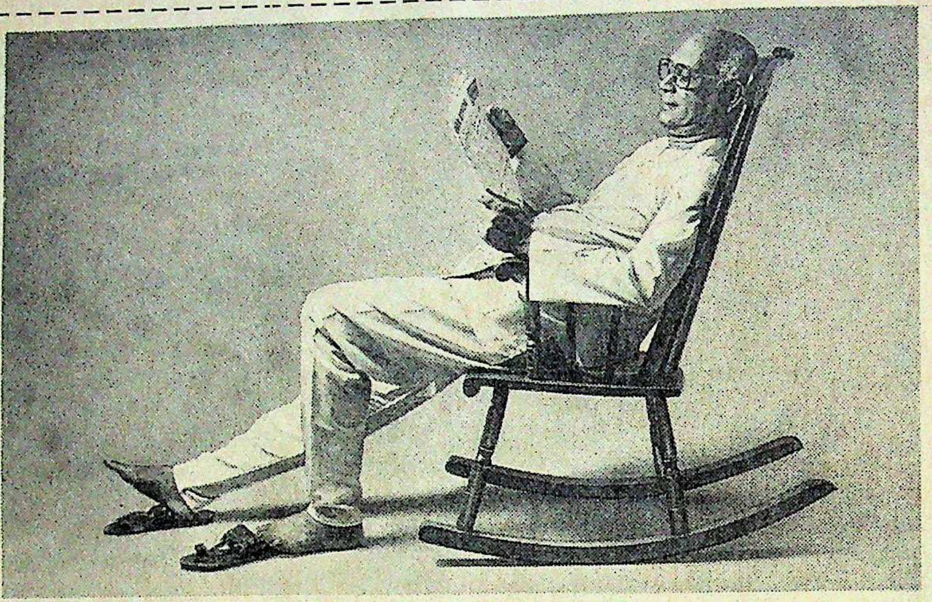

जी हां! मेरी नौकरी के अभी दस वर्ष बाकी हैं. मगर मैं समुचित पेंशन सहित तनावमुक्त सेवानिवृत्त-जीवन बिताने की योजना अभी से बनाना चाहता हूं. कृपया मुझे अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस की **सुखी सेवानिवृत्त-जीवन योजना** के विवरण भेजें.

नाम : ....

पता : ....

....

अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस
प्रस्तुत करते हैं
विवेकपूर्ण पूंजी-निवेश की योजनाएं

कई आकर्षक विकल्प

- अतिरिक्त मासिक आय योजना
- कम पूंजी-निवेश योजना
- अधिक आमदनी योजना
- बाल कल्याण योजना
- आकस्मिक ऋण सुविधा
- आसान खरीदारी की सुविधा

अशोक लेलैंड फ़ाइनैंस लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िसः सुदर्शन बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, ८६, चेमियर्स रोड, मद्रास ६०० ०१८

इलेक्ट्रिक मैंशन, अप्पा साहेब मराठे मार्ग, दूसरी मंज़िल, प्रभादेवी, बम्बई ४०० ०२५

फ़ोनः ४३०५०९३/४३०५०७६/४३०५४६०

नं. ९/११, आशीर्वाद बिल्डिंग, कोचरब आश्रम के सामने, एलिस ब्रिज, अहमदाबाद ३८० ००६

सभी प्रमुख दलालों के पास आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और स्वीकार किए जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपने मंत्रिमंडल की बैठक करके अपने प्रस्तावों के पक्ष में उसका फैसला प्रधानमंत्री को भेज दिया. और उन्होंने अखबारों के लिए यह घोषणा भी कर दी कि साथ ही विधानसभा चुनाव कराने का फैसला इंका ने नहीं वरन राज्य सरकार ने किया है. उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "हम ही जीतेंगे लेकिन अगर विपक्ष के जीतने की जरा भी संभावना है तो भी मैं साथ-साथ चुनाव कराने की ही हिमायत करूंगा. इससे ज्यादा लोकतांत्रिक बात और कुछ नहीं होगी."

अनिश्चितता बढ़ी तो राजधानी में टिकटार्थियों और विभिन्न गुटों के समर्थकों की जैसे बाढ़ ही आ गई. दिल्ली में राज्यों के भवन खचाखच भर गए; पूरे देश से हजारों की संख्या में इंकाई यहां पहुंच गए. वे अपने राज्य और केंद्र के नेताओं से मिलना चाहते थे. तीन साल बाद पहली बार कमलापति त्रिपाठी के निवास पर भी रौनक लौट आई.

उधर, पश्चिम में दूसरे नेताओं की तरह पवार भी चुनाव की घोषणा से चकित रह गए. उस समय वे नागपुर में विधानसभा सत्र में भाग ले रहे थे. वे तुरंत दिल्ली भागे. महाराष्ट्र के एक विधायक ने कहा, "विपक्षी नेता भी उस समय के अपने काम भूल गए. हममें से भी कई लोग सब कुछ छोड़कर दिल्ली भागे." गुजरात में अमरसिंह चौधरी ने स्वीकार किया, "चुनाव की घोषणा ने हमारी नींद मानो तोड़ दी. लेकिन हम इसके लिए तैयार हैं."

लेकिन ज्यादातर मुख्यमंत्रियों को चूंकि अपनी जमीन पहले ही खिसकती लग रही थी इसलिए वे चुनाव के समर्थन में बोलने लगे. पवार और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने विधानसभा के चुनाव साथ ही कराने की खुलकर हिमायत शुरू कर दी. एक दिन बाद राजस्थान के शिवचरण माथुर ने भी उनके सुर में सुर मिलाना शुरू कर दिया. माहौल बनता देखकर मध्य प्रदेश में अर्जुन सिंह, गुजरात में सोलंकी और बिहार में जगन्नाथ मिश्र ने भी विधानसभा चुनाव साथ ही कराने की मांग शुरू कर दी. यह सब एकदम अपूर्व था.

क्षेत्रीय नेता

नामस भोजानी

शरद पवार

भवान सिंह

नारायण दत्त तिवारी

भवान सिंह

जगन्नाथ मिश्र

भवान सिंह

अर्जुन सिंह

मजबूत राजनैतिक आधार वाले इंका के क्षेत्रीय नेताओं ने दिखा दिया है कि अपनी मुश्किलों को न्यौता देकर ही पार्टी उनकी उपेक्षा कर सकती है

वरिष्ठ इंका नेता प्रधानमंत्री की सलाह के बगैर चुनाव जैसे गंभीर मुद्दे पर सार्वजनिक रूप से अपनी आवाज उठा रहे थे.

अगले चार दिन तक पूरी तरह अनिश्चय की स्थिति बनी रही. पार्टी के सभी मुख्यमंत्री रेसकोर्स रोड से फैसले का इंतजार करते रहे. वहां सभी राज्यों के उम्मीदवारों का चुनाव करने के लिए पार्टी संसदीय दल की बैठक चल रही थी. इस बैठक में प्रधानमंत्री, संबद्ध मुख्यमंत्री, प्रदेश इंका अध्यक्ष और पांच सांसद शामिल होते. बैठक में विभिन्न सूचियों और फिर उम्मीदवारों और वैकल्पिक संभावनाओं पर विचार होता. यह प्रक्रिया इतनी लंबी चलती कि बिहार और दिल्ली की 50 सीटों के उम्मीदवार तय करने में ही आठ घंटे लग गए.

और जो नतीजा निकला वह राजीव और पार्टी के अलंबरदारों की अलग-अलग रणनीतियों का प्रतिफल था. राजीव की रणनीति किसी काम नहीं आई. उन्होंने उत्तर प्रदेश के अलावा कहीं भी विधानसभा चुनाव करवाने से इनकार कर दिया. लेकिन हर मौजूदा सांसद को टिकट देने का सुझाव स्वीकार कर लिया. पार्टी के अलंबरदार इससे कुछ संतुष्ट हो गए क्योंकि 100 ऐसे सांसदों को फिर से टिकट मिल गया जो तिवारी, अर्जुन सिंह, मिश्र, पवार और सोलंकी के समर्थक हैं. पर इससे प्रधानमंत्री को अपनी मनमर्जी के नए उम्मीदवार खड़ा करने का मौका नहीं मिला. आलाकमान के एक पदाधिकारी के अनुसार, "प्रधानमंत्री ने तो लगभग कोरे कागज पर ही दस्तखत कर दिए."

अब इंका का सारा जोर देश की एकता और अखंडता जैसे मुद्दों पर ही होगा. लेकिन पंचायती राज विधेयक गिरा देने के लिए राजीव विपक्ष पर जितना भी चीखें-चिल्लाएं, बोफोर्स सौदे में दलाली के आरोप खत्म नहीं होने वाले. और राजीव के आला सलाहकारों ने जवाबी रणनीति तैयार की है. हालांकि यह कतई विश्वसनीय नहीं लगती. जिन 300 चुनावी जनसभाओं में राजीव गांधी भाषण देंगे उनमें उनका यही तर्क होगा कि जब कभी भी किसी इंका सदस्य के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप ठीक पाए गए पार्टी ने उसके खिलाफ कार्रवाई करने में कोई कोताही नहीं बरती. इसके लिए अंतुले, निलंगेकर और अर्जुन सिंह वगैरह के उदाहरण दिए जाएंगे. शायद वे यही कहेंगे कि बोफोर्स के अखबारी भंडाफोड़ में किसी भी दलाल का नाम नहीं बताया गया.

आगामी चुनावी लड़ाई बहुत हद तक वीडियो के परदे पर लड़ी जाएगी. दिल्ली के जैन स्टुडियो ने जब इंका के लिए फिल्म बनाने से इनकार कर दिया (स्टुडियो के मालिक जे.के. जैन खुद भाजपा के उम्मीदवार हैं) तो पार्टी ने चुनाव प्रचार और फिल्म बनाने का जिम्मा कुछ विज्ञापन एजेंसियों को सौंपा. पार्टी के एक महासचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अनुसार, इन 10 फिल्मों में इंका और राजीव गांधी के शासन की 'उपलब्धियों' को दर्शाया जाएगा.

यह चुनाव अब तक का सबसे महंगा चुनाव होगा. अखिल भारतीय इंका समिति के परिसर में लगे एक भारी-भरकम शामियाने के नीचे पोस्टरों और झंडों के ढेर लगे हैं. ये पोस्टर विभिन्न भाषाओं में हैं. पार्टी सूत्रों के अनुसार हर संसदीय चुनाव क्षेत्र को ऐसे एक लाख पोस्टर और 15,000 बैनर दिए जाएंगे. इन प्रचार सामग्रियों की भाषा और शैली में व्यावसायिक तेवर काफी स्पष्ट है. एक बैनर पर लिखा है, "स्थायी सरकार, मजबूत हो देश/सभी की प्रगति, हमारा उद्देश्य." दिल्ली के ग्राफिक आर्ट्स ने पार्टी के पोस्टरों के डिजाइन तैयार किए हैं. चुनाव प्रचार के लिए हर उम्मीदवार को प्रत्येक विधानसभाई क्षेत्र के लिए छह से सात गाड़ियां दी जाएंगी. पार्टी मुख्यालय और प्रदेश मुख्यालयों के बीच हॉट लाइन भी लगा दी गई है.

तमाम नारेबाजी और तामझाम के बावजूद चुनावी वादों में कोई नई बात नहीं है. पर दूसरे खेमे में एक नई बात जरूर है. आश्चर्य किंतु सत्य जैसी बात यह है कि विपक्ष में एक हद तक एकता कायम हो चुकी है. यह नारा भी बेअसर होता दिख रहा है कि राजीव और उनकी पार्टी ही बिखराव के कगार पर खड़े देश को बचा सकते हैं. अखबारों में छप रहे इंकाई विज्ञापनों से बेवजह का पागलपन ही जाहिर होता है. एक विज्ञापन है—क्या भारत में खिचड़ी सरकार टिक पाएगी? विज्ञापन के साथ के कार्टून में दर्शाया गया है कि वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर हेगड़े और रामराव एक काठ के घोड़े को विभिन्न दिशाओं की ओर ले जा रहे हैं. इस विज्ञापन का घटियापन इसी से उजागर होता है कि इसमें रामराव को हिजड़े की तरह दिखाया गया है.

राजधानी में नेताओं की भीड़ लगी है पर इंका के खेमे में उत्साह का माहौल नहीं है. एक प्रमुख इंका नेता बताते हैं, "जिंदगी में पहली बार सीधी टक्कर की संभावना से सब डरे हुए हैं." खुफिया ब्यूरो के ताजा अनुमान के अनुसार अगर सीधी टक्कर हुई तो इंका को 180 से भी कम सीटें मिलेंगी. वरिष्ठ नौकरशाह इस कोशिश में हैं कि इस अनुमान की भनक राजीव गांधी को न लगे. लेकिन इंका पर्यवेक्षकों का दावा है कि उनकी पार्टी 350 से ज्यादा सीटों पर जीतेगी. एक विज्ञापन एजेंसी ने 300 सीटों पर जीत का अनुमान लगाया है.

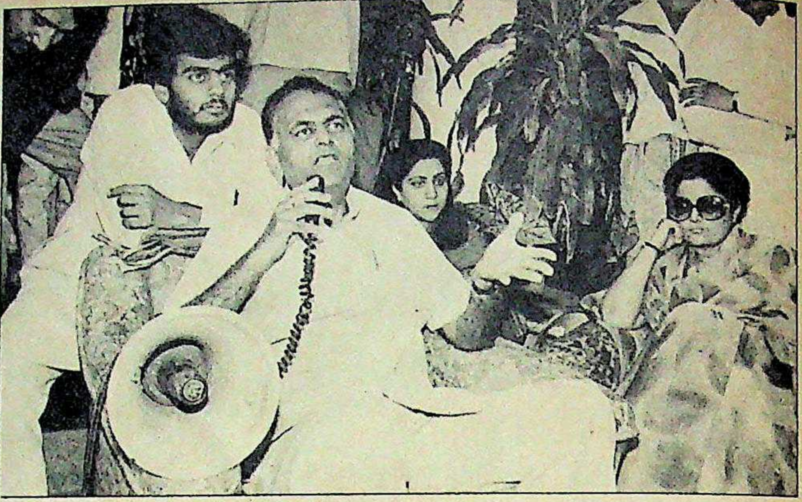

संवाददाता सम्मेलन में पंतः नाराजगी का इजहार

पार्टी के क्षेत्रीय नेताओं द्वारा अपना हक जताने के चक्कर में पंत मारे गए. वे नैनीताल से लड़ना चाहते थे

अंतिम नतीजे जो रहें, फिलहाल तो जिस तरह से उम्मीदवार तय किए गए हैं उससे लगता है कि पार्टी की हालत घर लौटे बुद्धू वाली हो गई है. और वह फिर अपने परंपरागत वोट बैंक—ब्राह्मण, हरिजन और मुसलमान—पर निर्भर हो गई है. यानी मामला फिर वहीं है जहां वह इंदिरा गांधी की हत्या से पहले था.

इन तथ्यों के मद्देनजर राजीव गांधी के सिर पर भारी जिम्मेदारियां आन पड़ी हैं. इस बार राजीव अकेले हैं. मां की हत्या से बना सहानुभूति का माहौल नहीं है. इसलिए उन्हें सारा कुछ अपने बलबूते करना है. पार्टी में अकेले वे ही ऐसे नेता हैं जो राष्ट्रीय स्तर का अभियान चला सकते हैं. खुद को कामयाब नेता साबित करने के लिए उन्हें अपनी पूरी ताकत लगा देनी पड़ेगी. कांग्रेस (इ) के भूत से पीछा छुड़ाकर कांग्रेस (राजीव) की नई दुनिया बनाने का उनके लिए यह आखिरी मौका है.

—प्रभु चावला, साथ में भास्कर राय और ब्यूरो रिपोर्ट

झलकियां

कृष्ण दर्शन

□ दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में जहां राजीव छाये रहते हैं, वहीं केंद्रीय सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री कृष्ण कुमार तिरुअनंतपुरम दूरदर्शन के कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं. कृष्ण कुमार का कार्यक्रम अब दूरदर्शन के कैमरे से नहीं बच पाता. इसलिए इसे अब कृष्ण दर्शन भी कहा जाने लगा है. उनके पास इन दिनों ढेरों आमंत्रण पहुंच रहे हैं.

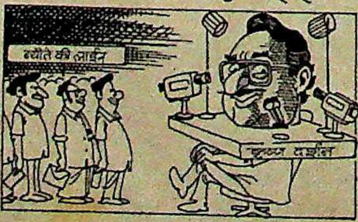

दिलचस्प दलील

□ इंका मुख्यालय के बाहर टिकटार्थियों की भीड़ में एक मजाक खासी दिलचस्पी का कारण बना रहा. एक 'कुशाप्रबुद्धि' के चमचे ने बोफोर्स दलाली के पक्ष में नई दलील ढूंढ़ ली. उसका कहना था, "अगर राजीव 64 करोड़ रु. खा गए तो क्या हुआ. यह पांच साल की सेवा के लिए हर भारतीय के हिस्से में 75 पैसे भी से कम ही तो बैठता है." अगर तोप दलाली के रहस्य से कभी परदा उठा तो जो बात मजाक में चल पड़ी है, शायद वही राजीव के बचाव की दलील साबित हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपक्षी दल

मौका न चूकने का संकल्प और उत्साह

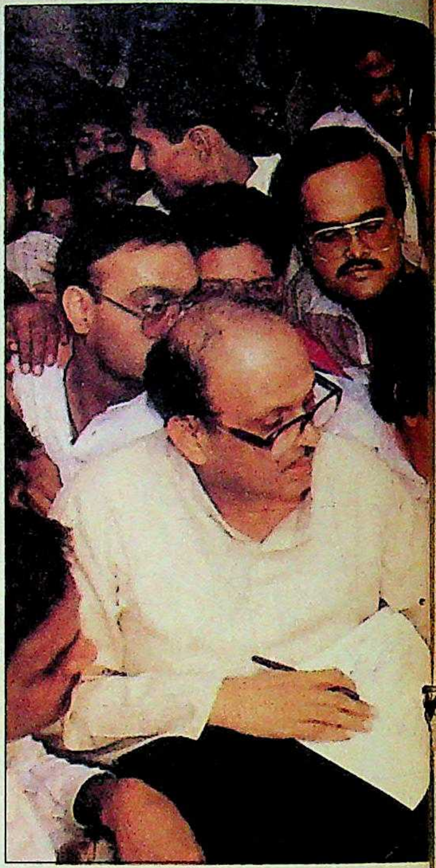

फतेहपुर संसदीय सीट के लिए नामांकन

विपक्ष के हौसले बुलंद हैं क्योंकि वह अधिकांश चुनाव क्षेत्रों में साझा उम्मीदवार खड़े कर इंका को सीधी टक्कर देने की स्थिति में है.

माहौल, मुद्दे, मुखड़े, सब वही जाने-पहचाने हैं. और, चुनौती भी वही पुरानी है. पहले मुखड़ों पर नजर डालें—हथेली पर गाल टिकाए बैठे विश्वनाथ प्रताप सिह; किसी की भी भुनभुनाहट को बगावत का संकेत समझकर दबा देने वाले परम उत्साही देवीलाल; अपनी फिल्म 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' की शूटिंग रोककर अपने प्रदेश में तेलुगु देशम और पूरे देश में राष्ट्रीय मोर्चे की बागडोर संभाल लेने वाले भगवाधारी एन.टी. रामराव; काला चश्मा और गहरे लाल रंग की चादर ओढ़े रहने और कभीकभार बोलने वाले एम. करुणानिधि; और कभीकभार ही मुस्कराने वाले प्रफुल्ल कुमार महंत. विपक्ष के इन बेचैन नेताओं को जब कभी चुनावी चुनौती का समाना पड़ा, वे एकता के लिए उन्हीं जानी-पहचानी जगहों पर इकट्ठा होते रहे मगर एक होने के बजाय बिखरते रहे.

लेकिन इस बार बात कुछ और है. नए तरह के दबाव हैं और नए तरह का उत्साह है. विपक्ष के इन अखाड़ेबाजों को—जो जितनी कुश्ती इंका के खिलाफ लड़ते थे उतनी ही आपस में भी—इस बार लक्ष्य को हासिल करने के संकल्प के साथ इकट्ठा होना पड़ा. अपने-अपने दावों और महत्वाकांक्षाओं के शोर को उन्हें विवेक के उभरते स्वर के आगे दबाना पड़ा क्योंकि इस स्वर की उपेक्षा उनके लिए आत्मघाती ही होती. विवेक के इस स्वर का संदेश है—1977 को छोड़ दें तो विपक्ष के लिए दो दशकों में सत्ता प्राप्ति का आगामी चुनाव से बेहतर मौका नहीं हो सकता. इन अखाड़ेबाजों को यह भी एहसास हो गया कि इस बार वे एक नहीं हुए तो उनका पक्का से पक्का समर्थक भी उन्हें माफ नहीं करने वाला. उत्तर प्रदेश के फतेहपुर से अपना नामांकन पत्र भरने के लिए रवाना होने से पहले उत्साह से भरे विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा, "एक भ्रष्ट और क्रूर सरकार का जुआ उतार फेंकने का यह एक ऐतिहासिक अवसर है."

अनेक बाधाओं, अनेक झड़पों, अनेक बार बैठकों के बहिष्कार के बावजूद विपक्षी नेता अंततः राष्ट्रीय स्तर पर कामचलाऊ एकता स्थापित करने में सफल रहे. इस तथ्य को नजरअंदाज करते हुए कि आज सहयोग और सद्भाव का वह 1977 वाला माहौल नहीं है, ये नेता 80 फीसदी चुनाव क्षेत्रों में राजीव को सीधी टक्कर देने पर सहमत हो गए. पिछले पखवाड़े के अंत तक संकेत थे कि 450 से ज्यादा सीटों पर सीधे मुकाबले होंगे.

यह अपनेआप में एक बहुत बड़ी बात है क्योंकि कुछ ही दिन पहले जब प्रधानमंत्री ने अचानक चुनाव की घोषणा कर दी थी, लगता था विपक्ष को जैसे सांप सूंघ गया हो. जनता दल के एक महासचिव ने इस घोषणा पर टिप्पणी की थी कि यह तो ऐसा ही हुआ जैसे अंधेरे कमरे में आप नंगे हों और अचानक कोई बत्ती जला दे. "हर आदमी कपड़े की ओर झपट रहा था जैसे."

लेकिन विपक्ष ने इस सदमे से उबरने में तेजी दिखाई. इंका ने चुनाव की ओर सधे हुए कदम बढ़ाए लेकिन विपक्ष ने भी कमर कसने में अधिक देर नहीं लगाई. भाजपा और वापमंथी दलों के साथ सीटों के तालमेल पर बातचीत हो गई. वी.पी. सिंह ने अरुण नेहरू को 'आंतरिक सुरक्षा', यानी पार्टी की अंदरूनी खटर-पटर को निबटाने और शांति बनाए रखने का जिम्मा सौंपा.

और जिस सफल तरीके से उन्होंने अपनी जिम्मेवारी को पूरा करना शुरू किया, उससे स्थिति सुलझती गई. पहली सफलता तो भाजपा से जनता दल के तालमेल के मामले में मिली. भाजपा के बड़े नेताओं ने पहले ही तय कर लिया था कि तालमेल के बिना चुनाव लड़ना आत्मघाती होगा. और तालमेल की बातचीत में भाजपा जनता दल के साथ 'दबाव डालो और बचाव करो' की नीति के जरिये अधिक से अधिक सीट हथिया लेने के उद्देश्य से की गई. तालमेल पर कभी सवाल नहीं उठा. भाजपा को लगता था कि इस बार अगर चुनाव में वह बुरी तरह पिटी तो फिर आगे के लिए उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा.

हौसला

चुनाव की अचानक घोषणा ने विपक्ष को अपूर्व एकजुटता के लिए प्रेरित किया

जनता दल के विभिन्न घटकों के नेताओं ने भी यही नीति अपनाई, क्योंकि उन्हें जीत का आभास हो गया है. वे भी चुनाव से पहले नैया डुबोने वाली बात नहीं करना चाहते थे. जनता दल के अंदर देवीलाल, चंद्रशेखर और पार्टी के 'चाणक्य' अरुण नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटक जनता दल के लिए तब मुश्किल खड़ी हो गई जब जनता पार्टी के इंदुभाई पटेल और सुब्रह्मण्यम स्वामी ने पार्टी के मूल चुनाव चिन्ह—चक्र-हलधर—पर दावा किया. मुख्य चुनाव आयुक्त आर.वी.एस. पेरी शास्त्री ने इस चिन्ह को जब्त कर लिया. स्वामी यही चाहते थे. बाद में उन्होंने बहुत खुश होकर कहा कि अपनी पत्नी की कानूनी बुद्धि के बूते वे जीत गए हैं. लेकिन जल्दी ही जनता दल के नेताओं की निराशा दूर हो गई. उन्हें इसके बाद चक्र का चुनाव चिन्ह मिल गया. उनका मानना है कि यह भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र का प्रतीक है.

चुनाव चिन्ह का मसला संतोषजनक ढंग के साथ निबटते ही जनता दल ने उम्मीदवारों की सूची तय करना और चुनाव जीतने के लिए संयुक्त रणनीति बनाने का काम शुरू किया. अब विपक्षी रणनीति साफ होती जा रही है.

रणनीति

लोगों को यह विश्वास दिलाना कि इंका भ्रष्टाचार और निकम्मेपन का प्रतीक है

विपक्षी रणनीति का सार है: अपने लक्ष्य राजीव गांधी पर से नजर न हटाओ. राष्ट्रीय मोर्चा अपने अभियान को राजीव पर केंद्रित रखेगा. इसके नेताओं का मानना है कि वे स्थानीय मुद्दों और घोषणापत्रों के मामलों में उलझे तो खेल खराब हो जाएगा क्योंकि उन सबके हित अलग-अलग हैं. कुछ विधानसभाओं के चुनाव भी साथ-साथ होने से इस बात का अंदेशा बढ़ गया है कि मामूली मुद्दों पर आंतरिक मतभेद बढ़ सकते हैं.

शरद सक्सेना

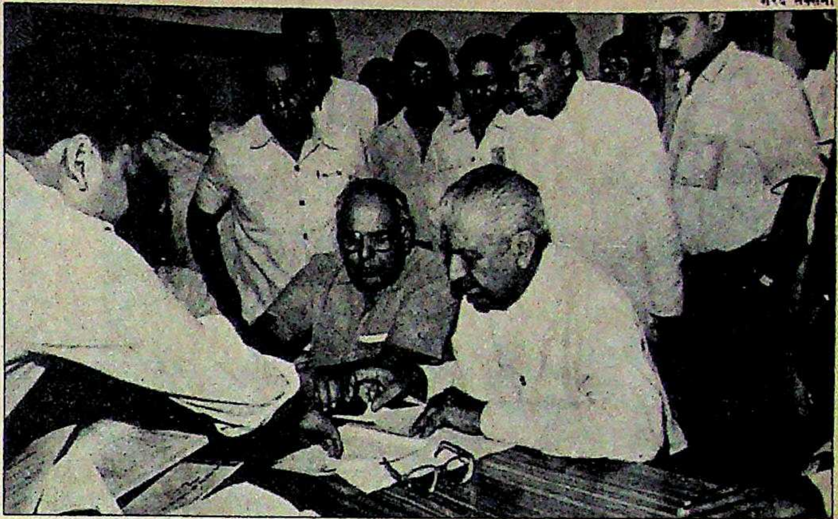

प्रमोद पुष्करणा

देवीलाल; और (नीचे) एक बैठक में भाजपा नेता: कूटनीतिक गठजोड़

इसलिए विपक्षी हमले का मुख्य निशाना होगा 'राजीव का भ्रष्टाचार'. विपक्षी खेमे को अभी भी पक्की उम्मीद है कि बोफोर्स घोटाले से संबंधित कुछ और रहस्योद्घाटन चुनाव से पहले होंगे और ये उनके हक में जाएंगे. ऐसे में आश्चर्य नहीं कि विपक्ष के सबसे चर्चित नारे भ्रष्टाचार और बोफोर्स से जुड़े ही हैं—'राजीव भाई, राजीव भाई, तोप दलाली किसने खाई' आदि. पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में एक और नारा जोर पकड़ रहा है, 'मंगल भवन अमंगल हारी, देश का माल गया ससुरारी.'

झलकियां

मंत्रियों की परेशानी

□ लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ कराने की घोषणा के तत्काल बाद टिकटार्थियों की भीड़ मंत्रियों के इर्दगिर्द चक्कर काटने लगी. इन लोगों को उस समय ताज्जुब हुआ जब उत्तर प्रदेश के एक मंत्री ने कबूल किया, "पहले मेरा टिकट तो पक्का हो जाए, फिर मैं आप लोगों का मामला आगे बढ़ा पाऊंगा." दूसरे अधिकांश मंत्री आवेदन लेते रहे पर परेशानी में यह न कह सके कि उनका अपना राजनैतिक भविष्य दांव पर लगा हुआ है.

बैंड बजा देंगे

□ अमेठी के नारेबाजों ने 'अमेठी का डंका, बिटिया प्रियंका' और 'अमेठी का बिगुल, बेटा राहुल' सरीखे नारे गढ़ लिए हैं. दोनों वाद्ययंत्रों की श्रेणी में आते हैं, इसलिए एक पत्रकार ने टिप्पणी की कि "इन लोगों ने तो राजीव परिवार को बैंडवादकों की टोली बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी है." एक और राजनैतिक पत्रकार ने कहा, "ये राजीव का बैंड बजा देंगे!"

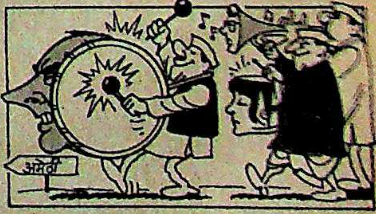

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

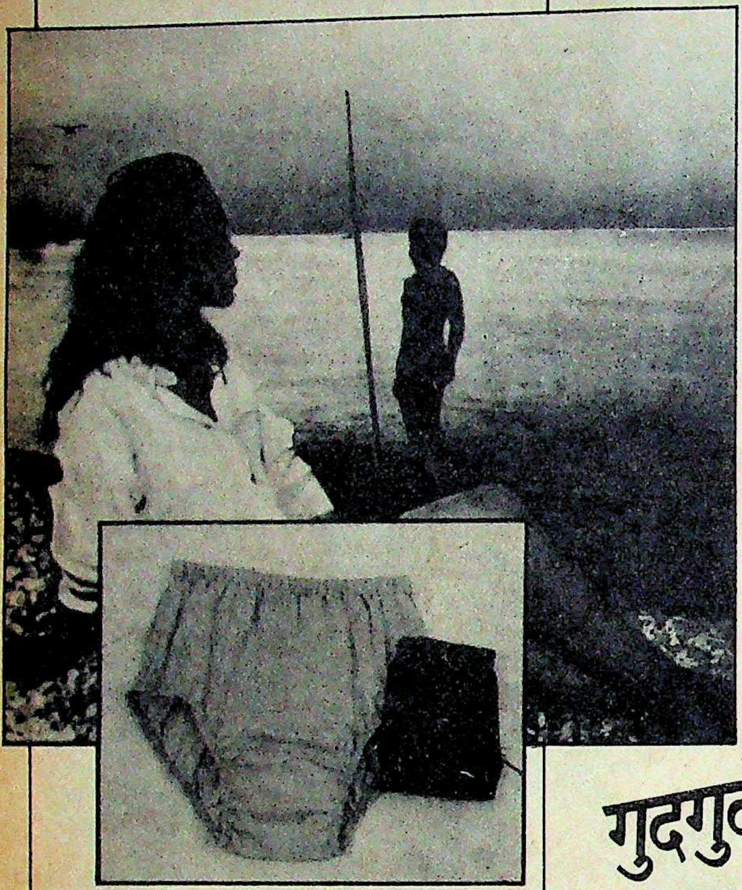

लिरिल अण्डरवियर, बनियान और लेडीज पेण्टीज का जवाब नहीं! लिरिल . . . यानी रेशमी कोमलता का वो ताज़गी भरा अहसास, जो आपको स्फूर्ति दे हर दिन . . . हर पल।

लिरिल . . . आन्तरिक वस्त्रों की अतुलनीय श्रृंखला, जो आधुनिकतम मशीनों पर एक्सपोर्ट क्वालिटी के 100% कोम्ब्ड, गांठरहित धागों से बनाए जाते हैं . . .

कोमल स्पर्श का गुदगुदाता अहसास. . .

Lyril® लिरिल

- अण्डरवियर
- बनियान
- लेडीज पेण्टीज

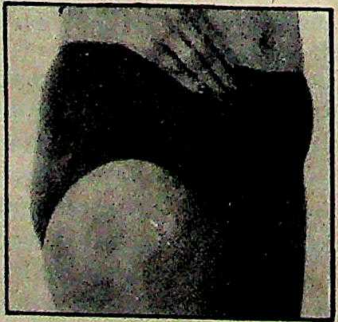

ATUL PUBLICITY

लिरिल — कोमल अनुभूति, अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपक्षी रणनीति का दूसरा पहलू यह है कि भ्रष्टाचार के आरोप झेल रहे बड़े इंका नेताओं के खिलाफ स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवार खड़े किए जाएं. राजीव गांधी के खिलाफ महात्मा गांधी के पोते राजमोहन गांधी को उम्मीदवार बनाया गया है जबकि बूटा सिंह के खिलाफ कृपाराम पूनिया को.

भ्रष्टाचार, सरकार की अक्षमता, महंगाई, पंजाब और श्रीलंका—विपक्ष की तरकश में एक से एक तीर पड़े हैं जो सरकार और खास तौर से प्रधानमंत्री को बहुत परेशान करेंगे. राष्ट्रीय मोर्चा सांप्रदायिकता के मुद्दे पर भी सरकार को नहीं बख्शेगा. वह सरकार पर यह आरोप लगाकर वोट हथियाने की कोशिश करेगा कि सरकार सांप्रदायिकता को शह देकर माहौल को बिगाड़ना चाहती है. शहाबुद्दीन से तालमेल के कारण जनता दल को मुसलमानों के कुछ और वोट मिलने की उम्मीद है.

राष्ट्रीय मोर्चे के नारे तीन मुद्दों—स्वदेशी, स्वाभिमान और स्वच्छता—पर ही केंद्रित होंगे. देसी नजरिया और स्वच्छ छवि

जैन स्टुडियो

कैमरे का कमाल

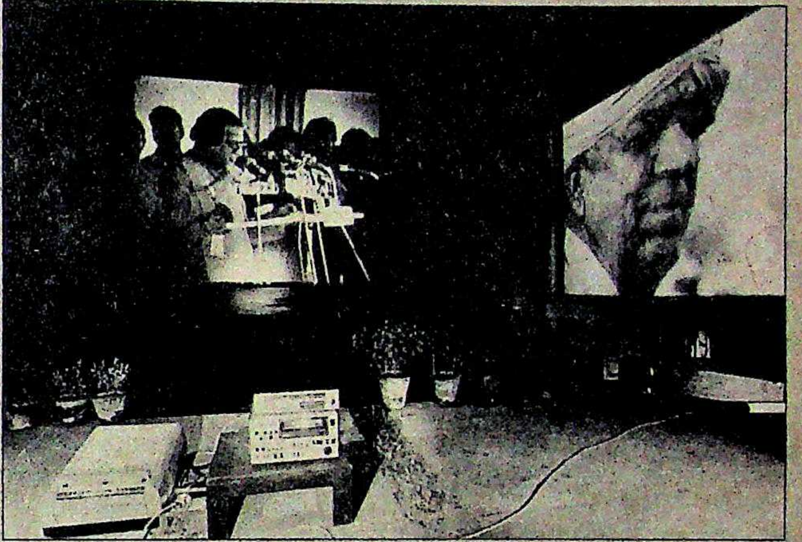

विपक्षी नेताओं पर बनी फिल्मः लुभाने की कसरत

पीले सरसों के खेतों का सौंदर्य कैमरे के विशेष तकनीकी कमाल से दोगुना हो गया लगता है. और इस दृश्य को समेटते हुए कैमरे की आंख जब एक मानव आकृति पर टिकने लगती है तो एक गीत गूंजने लगता है. यह मानव आकृति फूलों को दुलारती है.

नहीं, इन फूलों के बीच यह आकृति न तो रेखा की है, न ही श्रीदेवी की. ये हैं हरियाणा के अलंबरदार देवीलाल और फूल हैं हरियाणवी सरसों के. यह उस वीडियो फिल्म का दृश्य है जिसे जैन स्टुडियो ने तैयार किया है. और देवीलाल उन बड़े नेताओं में से एक हैं जो अपनी फीचर फिल्म बनवाने के लिए इस स्टुडियो के चक्कर लगा चुके हैं. इन नेताओं की सूची बहुत लंबी है—अजीत सिंह, एन.टी. रामराव, बाल ठाकरे आदि. देवीलाल के मुताबिक पिछले चुनाव में उनकी कामयाबी का खासा श्रेय इस इलेक्ट्रॉनिक प्रचार को दिया जा सकता है. फिलहाल उन्होंने 10 फिल्में बनाने के ऑर्डर दिए हैं.

फिल्म की लोकेशन और संगीत सब कुछ नायक के हिसाब से तय होता है. देवीलाल जब अपने मनभावन सरसों के खेत में होते हैं तो माहौल कुछ और होता है और जब चुनावी सभा में, तो कुछ और. पर विषय हर जगह एक होता है और वह है देवीलाल. एक उदाहरण देखिए:

देवीलाल एक जट
काढ़ देगा सारे वट
गाड़ देगा लट्ठ
हरियाणा खुशहाल हो

गीत में किसानों को बिजली और पानी का पूरा कोटा व दुकानदारों को वाजिब मुनाफा दिलवाने का वादा किया जाता है. पर जल्द ही यह गीतगाथा 'युगपुरुष' देवीलाल पर लौट जाती है.

देवीलाल अगर युगपुरुष कहलाना पसंद करते हैं तो उनसे छत्तीस का रिश्ता रखने वाले अजीत सिंह ने अपने लिए 'लौहपुरुष' की उपाधि चुनी है. देवीलाल को अगर सरसों पसंद है तो अजीत सिंह ने एक झाड़ीनुमा फसल चुनी है. देवीलाल के विपरीत वे गांधी के डांडी मार्च की तरह लंबे-लंबे डग भरते हुए चलते हैं. साथ ही आता है लोगों में जोश भर देने वाला गीत:

कृषकों के नेता अजीत सिंह
पतझड़ में फूल खिलाएंगे
तूफानों का अब क्या कहना
वे आएंगे और जाएंगे.

रामराव की फिल्म इंद्रधनुषी नृत्य से शुरू होती है. जैन स्टुडियो के चश्माधारी एक्जीक्यूटिव एडीटर रवि बजाज बताते हैं, "हम अपने ग्राहकों को वही देते हैं जो वे चाहते हैं."

इसलिए जब शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने अपनी धाकड़ छवि पेश करनी चाही तो स्टुडियो ने वैसी ही फिल्म बना दी. इसमें दिखाया जाता है कि जंगल का राजा शेर जंगल में टहल रहा है, शिवाजी की मूर्ति और हाथ जोड़े हुए ठाकरे का भद्र चेहरा बार-बार परदे पर आता है. फिल्म में विस्फोटों के दृश्य हैं, लाल किला दिखाया जाता है और आग की लपटें तिरंगे व राम जन्मभूमि को घेर रही हैं.

कई दूसरे नेता भी लाइन में लगे हैं. पिछले पखवाड़े सुब्रह्मण्यम स्वामी अपनी और देवगौडा की फिल्म के प्रिंट देखने के लिए जैन स्टुडियो में जमे रहे. और चंद्रशेखर तो जनता दल संसदीय बोर्ड की बैठक से उठकर शूटिंग के लिए खास तौर पर वहां गए. स्टुडियो भाजपा के लिए बन रही सभी फिल्मों के बारे में चुप्पी साधे हुए है. स्टुडियो के मालिक जे.के. जैन इसी पार्टी के समर्थक हैं.

पर स्टुडियो ने धंधे में कभी भेदभाव नहीं बरता. तमिलनाडु चुनाव में इंका के लिए फिल्में बनाईं. परंतु एक पाक्षिक (सूर्या) के मालिक डॉक्टर जैन अपने बचाव में कहते हैं, "जब मैं किसी मरीज का पित्ताशय निकालता हूं तो मैं यह नहीं देखता कि वह आदमी हिंदू है या मुसलमान, इंका का है या भाजपा का." लगता है राजनीतिक भी इसी तरह से सोचते हैं.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले लोगों को आगे लाने पर जोर दिया जाएगा. इसके अलावा विपक्ष नेहरू रोजगार योजना और पंचायती राज विधेयक का विरोध करेगा. भाजपा ने अपने कार्यकर्ताओं के लिए अधिकृत रूप से जो आठ नारे जारी किए हैं उनसे पता लगता है कि यह चुनाव अभियान कितना अधिक नफरत पैदा करने वाला होगा. इन आठ नारों में एक यह भी है, "खूनखराबा विश्वासघात, राजीव तुम्हारी यह सौगात."

विपक्षी रणनीति बनाने वाले नेता विपक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी—एक न रह पाने की बदनामी—से भी परिचित हैं. इंदिरा गांधी ने उनकी एकता को खिचड़ी नाम दिया था. अब विपक्षी नेता इस छवि को तोड़ने के जोरदार प्रयास कर रहे हैं. वी.पी. सिंह कहते हैं, "1984 के बाद से सिर्फ विपक्ष ही स्थायी राज्य सरकारें देने में सफल रहा है. हरियाणा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक की राज्य सरकारें इसका उदाहरण हैं."

नेतृत्व की विविधता भी विपक्ष के फायदे की चीज है. इंका की तरह विपक्ष किसी एक नेता पर आश्रित नहीं है. इसके पास तो हरेक क्षेत्र और राज्य के लिए एक या दो बड़े नेता हैं. देवीलाल अगर हरियाणा पर ध्यान देते हैं तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश की बागडोर अजीत सिंह संभालेंगे. ओडीसा में अगर बीजू पटनायक इंका का मुकाबला करने में सक्षम हैं तो राजस्थान में भाजपा के भैरो सिंह शेखावत को शायद ही किसी बाहरी मदद की जरूरत होगी. इसी तरह करुणानिधि, रामराव और अकाली तथा वामपंथी नेता अपने-अपने इलाकों और 'किलों' की रक्षा करने में समर्थ हैं.

दूसरी ओर इंका पूरी तरह राजीव पर आश्रित है. यह तथ्य विपक्ष के लिए फायदेमंद है. इसी क्रम में उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव भी घोषित हो जाना राजीव को अधिक उलझाने वाला होगा.

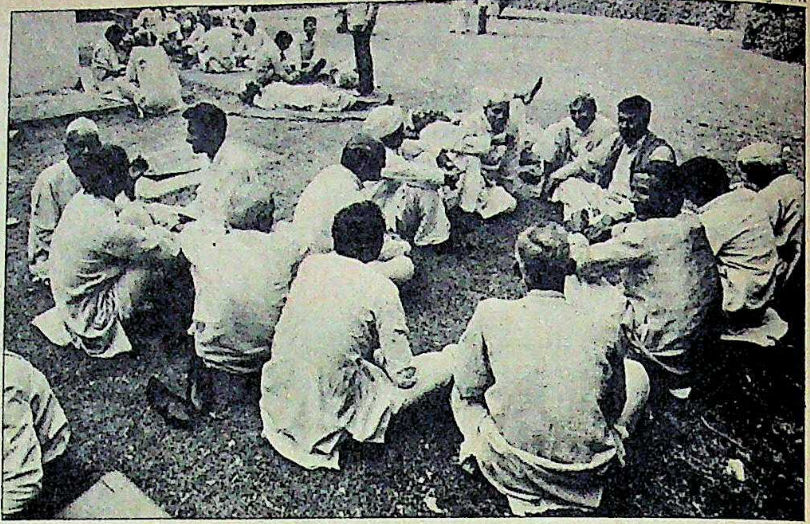
प्रमोद पुष्करणा

जनता दल कार्यालय पर टिकटार्थियों की भीड़. हवा का अंदाजा

लेकिन विपक्ष के लिए यह कोई लॉटरी खुलने जैसी बात है. पहले राजीव ने सोचा था कि साथ-साथ चुनाव होने से चुनाव अभियान की अगुआई करने वाले विपक्षी नेता उलझकर रह जाएंगे. उलटे अब राजीव ही उत्तर प्रदेश में फंसे रह जाएंगे क्योंकि उनकी पार्टी वहां हार की जोखिम नहीं उठा सकती. उत्तर प्रदेश की जगह अगर गुजरात या राजस्थान में विधानसभा चुनाव घोषित हुए होते तब विपक्ष को अधिक मुश्किल होती क्योंकि वहां सीटों का तालमेल करना उनके लिए मुश्किल होता.

लेकिन नेतृत्व के मुद्दे पर विपक्ष अभी भी बचाव की मुद्रा में ही है. किसी एक आदमी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बताने के स्पष्ट फायदे होते हैं. लेकिन परस्पर विरोधी महत्वाकांक्षा वाले नेताओं के कामचलाऊ गठजोड़ से इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती. इसीलिए राष्ट्रीय मोर्चा के समन्वयकर्ता पी. उपेंद्र कहते हैं, "हम प्रधानमंत्री पद के लिए किसी एक आदमी को क्यों पेश करें? यह कोई राष्ट्रपति पद का चुनाव नहीं है." अजीत सिंह का तर्क है, "हम तो वंशानुगत शासन के खिलाफ लड़ रहे हैं."

समस्याएं

आंतरिक कलह, अविश्वास, महत्वाकांक्षाओं की टक्कर और पैसे की कमी राह के रोड़े बने हैं

अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की बातें अपनी जगह. सचाई यह है कि एक पखवाड़े के तेज घटनाक्रम में ही यह साफ हो गया कि हर विपक्षी नेता एक-दूसरे की टांग खींचने में भी लगा रहा. चुनाव की घोषणा के साथ ही यह टांग खिंचाई भी शुरू हो गई. राष्ट्रीय मोर्चे के दफ्तर में आरिफ मोहम्मद खान ने जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी से भेंट करने के लिए वी.पी. सिंह की खिंचाई की. शहाबुद्दीन से सीटों के तालमेल के मुद्दे पर बातचीत करने के कारण भी वे

झलकियां

जीत पाने की योजना

□ बिहार इंका के एक पूर्व मुख्यमंत्री ने अपनी चुनावी योजना समझाते हुए कहा, "आम चुनावों में जीत हासिल करने के लिए तीन लोगों—पीएम, सीएम और डीएम (प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और जिला मजिस्ट्रेट) को मिलजुलकर काम करना चाहिए." फिर खुशी से चहकते हुए उन्होंने कहा, "ये तीनों इसी योजना के मुताबिक काम कर रहे हैं."

कुर्सी कौन छोड़े

□ पूरा एक हफ्ता भर भोपाल में कोई मंत्री नहीं दिखा. अधिकांश लोगों ने यही समझा कि वे लोग दिल्ली में टिकटार्थियों की कतार में लगे होंगे, या फिर ऊपर वालों के साथ जुगाड़ बिठा रहे होंगे.

परंतु मध्य प्रदेश के मंत्री दरअसल केंद्रीय नेताओं को यह समझाने में लगे हुए थे कि उन्हें उम्मीदवार बनाया गया तो पार्टी चुनाव नहीं जीत पाएगी. पता नहीं यह राजनैतिक सनक थी या अपनी सुविधाएं छिनने का डर. मंत्री की कुर्सी कौन छोड़ना चाहता है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी प्रगति फल के आप भी हिस्सेदार हैं.

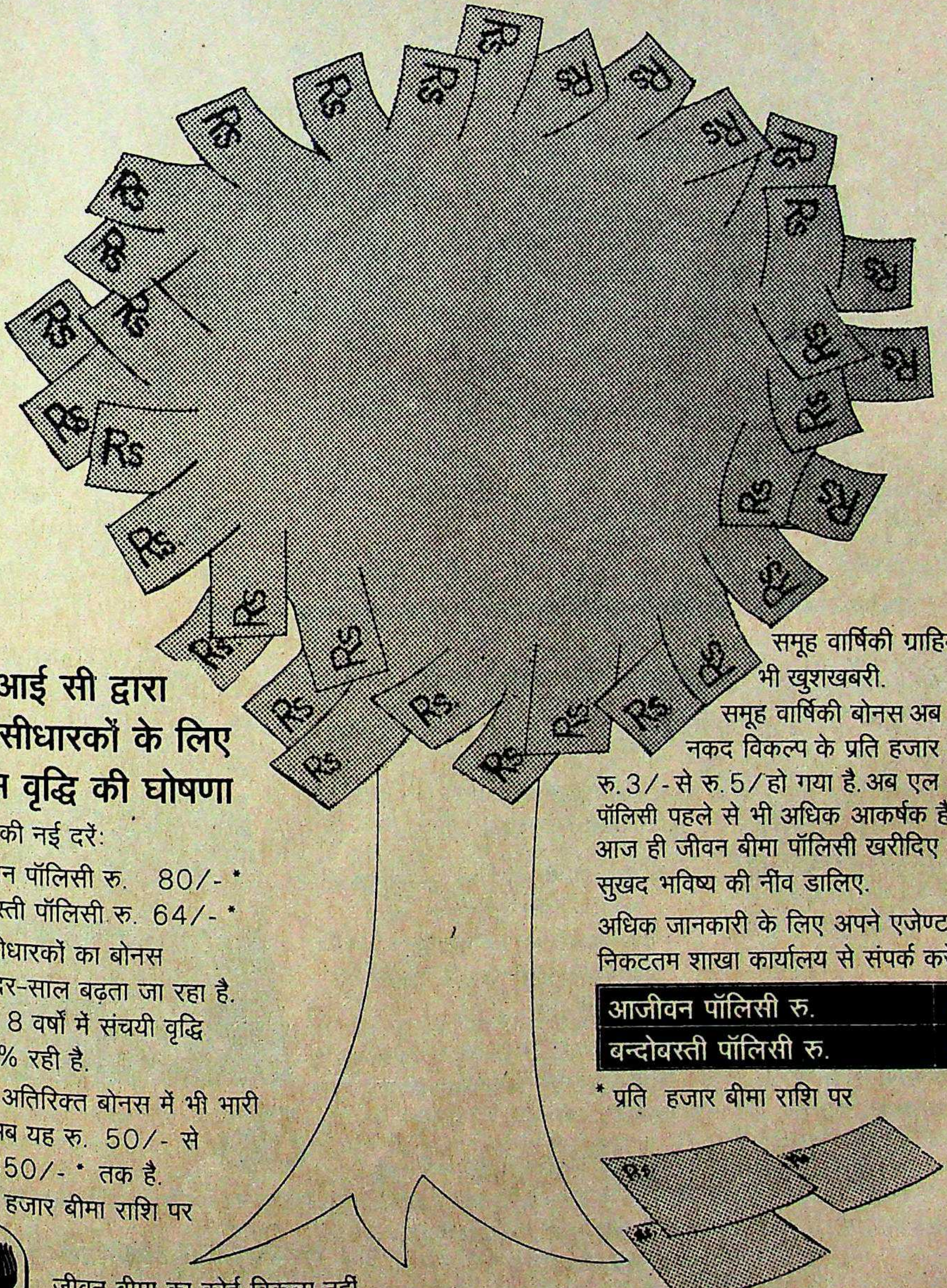

एल आई सी द्वारा पॉलिसीधारकों के लिए बोनस वृद्धि की घोषणा

बोनस की नई दरें:

आजीवन पॉलिसी रु. 80/- *
बन्दोबस्ती पॉलिसी रु. 64/- *

पॉलिसीधारकों का बोनस साल-दर-साल बढ़ता जा रहा है. पिछले 8 वर्षों में संचयी वृद्धि 128% रही है.

अंतिम अतिरिक्त बोनस में भी भारी वृद्धि. अब यह रु. 50/- से रु. 350/- * तक है.

* प्रति हजार बीमा राशि पर

समूह वार्षिकी ग्राहियों के लिए भी खुशखबरी.

समूह वार्षिकी बोनस अब बढ़कर नकद विकल्प के प्रति हजार राशि पर रु. 3/- से रु. 5/ हो गया है. अब एल आई सी पॉलिसी पहले से भी अधिक आकर्षक है. आज ही जीवन बीमा पॉलिसी खरीदिए और सुखद भविष्य की नींव डालिए.

अधिक जानकारी के लिए अपने एजेण्ट या निकटतम शाखा कार्यालय से संपर्क करें.

आजीवन पॉलिसी रु.	80 *
बन्दोबस्ती पॉलिसी रु.	64 *

* प्रति हजार बीमा राशि पर

जीवन बीमा का कोई विकल्प नहीं.

भारतीय जीवन बीमा निगम

Efficient/LIC/11-89 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

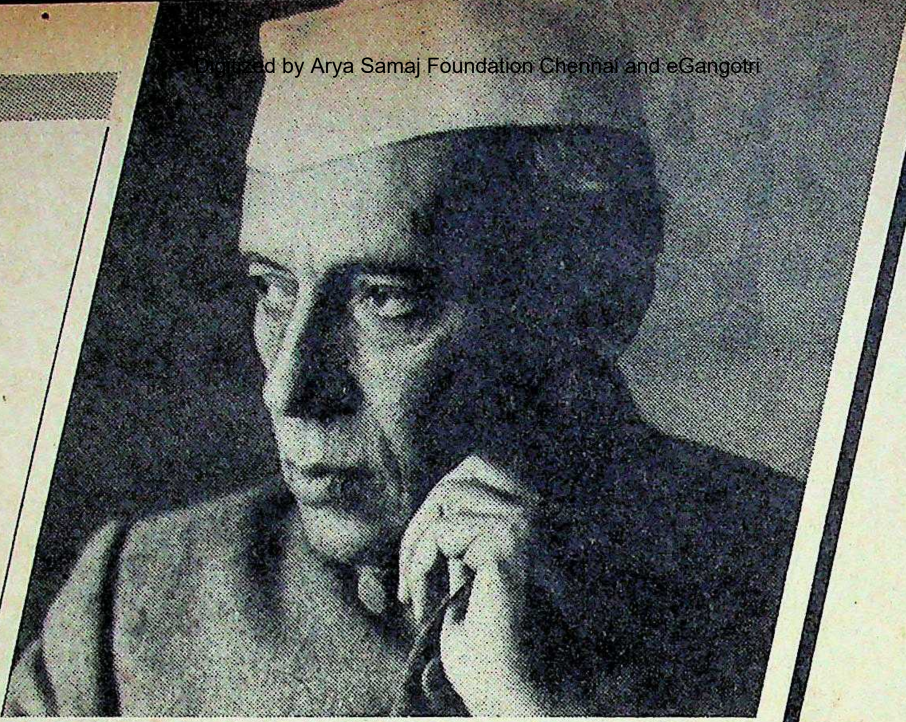

"दुनिया ने टैक्नॉलॉजी और सामग्री के विकास में अभूतपूर्व प्रगति की है। ये बहुत फायदेमंद बात है और हमें इससे पूरा लाभ उठाना चाहिए।"

जवाहर लाल नेहरू

वीडियोटैक्स्ट, टेलीटैक्स्ट, इलैक्ट्रानिक मेल, रेडियो पेजिंग ... महानगर टेलीफोन निगम टैक्नॉलॉजी का उपयोग भविष्य में सबकी भलाई के लिए बेहतर और अधिक संचार प्रणालियों की व्यवस्था हेतु कर रहा है।

- **आज की ज़रूरतों के अनुसार सेवाओं में वृद्धि**
  ऑन लाइन डायरेक्टरी पूछताछ, नई मांगों के लिए पंजीकरण और सभी सुविधाओं से लैस टेलीकॉम ब्यूरो सेवाएं शुरू हो चुकी हैं।
- **भविष्य की महत्वाकांक्षी और विविध योजनाएं**
  सब के लाभ के लिए आधुनिकतम दूर संचार टैक्नॉलॉजी का उपयोग किया जा रहा है।
- **फोन प्लस सेवाएं**
  आधुनिकतम टेलीफोन उपकरण, नई खूबियों के साथ... आपके लिए सम्पर्क सुविधाएं बनाएं बेहद आसान।
- **दूर संचार के क्षेत्र में नए युग का सूत्रपात**
  इलैक्ट्रॉनिक मेल, वीडियोटैक्स्ट, वॉयस मेल ऑडियोटैक्स्ट, हाई स्पीड डाटा कम्युनिकेशन, पेजिंग, कार्डलेस टेलीफोन, कॉयन कार्ड ऑप्रेटेड पे फोन ....
  आधुनिकतम दूर संचार सेवाएं जो दुनिया की सर्वोत्तम सेवाओं का मुकाबला कर सकती हैं।

महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड की भावी योजनाओं का उद्देश्य है, देश और उसकी जनता के लाभ के लिए नई चुस्त संचार सेवाओं का विकास।

महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
MAHANAGAR TELEPHONE NIGAM LIMITED
(A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

Sista's-MTNL-324/89

हम नेहरू की दृष्टि के अनुगामी हैं,
जो हमें शक्ति देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वी.पी. सिंह से नाराज थे. आरिफ गरजे, "आपने किसी ऐसे आदमी के सामने मुझे छोटा दिखाने की हिम्मत क्यों की जो पार्टी का सदस्य भी नहीं है? अगर आप मेरे खिलाफ बुखारी को खड़ा कराना चाहते हैं तो खड़ा कराइए और उनके लिए चुनाव प्रचार कीजिए. मैं राजनीति आपके दम पर नहीं करता." उनको शांत कराने के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को काफी मेहनत करनी पड़ी. लेकिन इस घटना से अरुण नेहरू को साथ लेकर भाजपा से गठजोड़ के लिए जोर लगाया.

जनता दल संसदीय बोर्ड की बैठक जब भी हुई तब झगड़ा हो गया. हर राज्य के टिकटों के बंटवारे पर भी चिखचिख हुई.

जब बिहार की सूची पर बात हो रही थी तब हाजीपुर से अपना टिकट कटने पर रामविलास पासवान तो रोने लगे. 1977 में सबसे बड़े अंतर से चुनाव जीतने के कारण उनका नाम गिनीज़ बुक में दर्ज है. उनके आंसुओं ने उन्हें टिकट दिलवा दिया लेकिन निश्चित रूप से जनता दल भी नहीं चाहेगा कि उनके उम्मीदवार इसी तरह दुखी मन से चुनाव मैदान में उतरें.

जब ओडीसा की सूची पर बात शुरू हुई तो रवि राय को केंद्रपाड़ा सीट दिए जाने पर बीजू पटनायक और चंद्रशेखर उलझ पड़े. गुस्सा इतना बढ़ गया कि चंद्रशेखर ने चप्पल हाथ में उठा लिया और चीख पड़े "चुप रहो, वरना....." चंद्रशेखर समर्थक रवि राय उस समय बैठक से बाहर चले गए थे जब बीजू ने केंद्रपाड़ा से उनके नाम का प्रस्ताव किया.

इन विवादों से एक बात स्पष्ट होती है कि अभी के दबावों के चलते भले ही ये बड़े नेता मान गए होंगे लेकिन तनाव बने हुए हैं और बाद में ये उभर भी सकते हैं.

संसाधनों की कमी भी एक मुश्किल है. जितनी जल्दी चुनाव हो रहे हैं और चंदा वसूलने के बारे में वी.पी. सिंह की जो जिद है उससे ऐसा नहीं लगता कि इस मामले में हालत सुधरेगी. पार्टी के अनेक नेताओं का कहना है कि ऐसे उद्योगपतियों की कमी नहीं है जो पैसा देना चाहते हैं. लेकिन वे चाहते हैं कि वी.पी. सिंह खुद यह पैसा थामें. यह करने के लिए वे एकदम तैयार नहीं हैं. जनता दल के एक नेता कहते हैं, "अगर वी.पी. सिंह किसी आदमी को अंदर आकर सलाम भी करने नहीं देंगे तो कौन उद्योगपति हमारे पास आएगा."

संसाधनों के मामले में धनी माने जाने वाले पार्टी के कोषाध्यक्ष कमल मोरारका कहते हैं, "अगर आप मेरी कंपनी के बारे में पूछेंगे तो उसकी वित्तीय स्थिति तो ठीक नहीं है लेकिन मेरी पार्टी की राजनैतिक स्थिति ठीक है." वे कहते हैं कि केंद्रीय कोष संग्रह तो संभव नहीं है. लेकिन वे वी.पी. सिंह की इस राय से सहमत हैं कि छोटे और स्वैच्छिक चंदों से ही चुनाव का खर्च आ जाएगा.

यह बहुत अजीब बात है कि वी.पी. सिंह

भवान सिंह

विश्वनाथ प्रताप सिंह

भवान सिंह

देवीलाल

चार्ट: बी.के. शर्मा

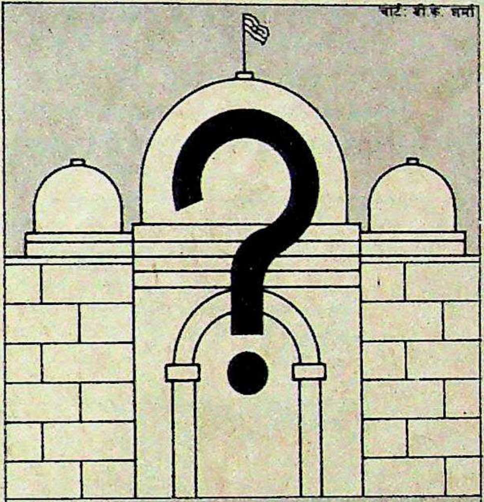

नंबूदिरिपाद

एल.के. आडवाणी

अगर विपक्ष जीतता है तो इसके चार धड़ों में जबरदस्त सत्ता संघर्ष छिड़ सकता है. तब भाजपा तथा वामपंथी दल नेतृत्व के बारे में निर्णय करने की स्थिति में होंगे

भवान सिंह

चंद्रशेखर

एन.टी. रामराव

जितना नुकसान होना था वह तो हो चुका था क्योंकि यह सारा कुछ कई पत्रकारों के सामने हुआ.

उधर, चंद्रशेखर अपना खेल खेलते रहे. भाजपा के साथ तालमेल से उनको मनचाहा मौका मिल गया. उन्होंने शिकायत की, "आज भाजपा हमारे लिए भगवान हो गई है. उसका भाव बढ़ाने के लिए हमीं जिम्मेदार हैं. आज हमें उनके सामने कटोरा फैलाना पड़ेगा." लेकिन चंद्रशेखर को भी देवीलाल ने पीछे छोड़ दिया. अभी उधर गालीगलौज चल ही रही थी कि देवीलाल ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनके करीब के महत्वपूर्ण लोगों के पास तो पैसे नहीं हैं लेकिन देवीलाल, हेगड़े, चंद्रशेखर, अजीत और नेहरू जैसे एक-एक गुट के नेताओं के पास काफी पैसा है और ये लोग इस राशि को अपने घटकों के उम्मीदवारों में बांटेंगे.

अंतिम खेल

सत्ता हथियाने के लिए वी.पी. सिंह का इस्तेमाल और इसके बाद ज्यादा के लिए जोड़तोड़

ये सभी बड़े नेता जिस चुनावी नाटक की तैयारी में हैं उसके लिए पैसा बेहद महत्वपूर्ण है. अभी तो उन्हें अपने-अपने लोगों को जिताने की पड़ी है. टिकटों के लिए देवीलाल, अजीत सिंह और चंद्रशेखर ने यही सोचकर इतना जोर लगाया कि सत्ता संघर्ष के अंतिम दौर में ये अपने लोग ही असली ताकत साबित होंगे. वी.पी. सिंह भी यह जानते हैं. उनके समर्थकों का कहना है कि विभिन्न घटकों के नेता अगर आखिर में बाजी वी.पी. सिंह से छीन लेने के फिराक में हैं तो वे गलतफहमी में हैं. उनका कहना है कि इंका में अरुण नेहरू ने जितने लोगों को टिकट दिलवाया था उनमें से कितने लोग उनके प्रति निष्ठावान रहे.

अभी तक तो वी.पी. सिंह बहुत प्रयास नहीं करने के बावजूद विपक्ष के सबसे अधिक मान्य नेता बने हुए हैं. माना जाता है कि देवीलाल ने कुछ लोगों से कहा है कि वे खुद तो प्रधानमंत्री नहीं बनना चाहते लेकिन 'किंग मेकर' बने रहना चाहते हैं.

चुनाव के लिए एक पखवाड़ा और कम होने के साथ ही विपक्ष के लिहाज से स्थिति कुछ यह है: जनता दल करीब 260, भाजपा 140, तेलुगु देशम 32, द्रमुक 30 और वामपंथी पार्टियां 90 स्थानों पर चुनाव लड़ेंगी. भाजपा के ज्यादा उम्मीदवार वाम मोर्चे के गढ़ केरल और पश्चिम बंगाल में हैं. यह लड़ाई नाममात्र की ही है. इसका मतलब यह कि करीब 450 सीटों पर इंका और विपक्ष में सीधा मुकाबला होगा. राष्ट्रीय मोर्चा 325 सीटों पर लड़ेगा.

लेकिन अगर विपक्ष हार जाता है तो यह सारा हिसाब बेमतलब हो जाएगा. वैसे, पिछले पखवाड़े विपक्ष आत्मविश्वास से भरा था. मधु दंडवते ने कहा, "अगर सीटों का तालमेल ठीक हो जाता है तो हम जीतेंगे. अगर नहीं भी होता है तो यह चुनाव संसद का चरित्र बदल देगा. प्रचंड बहुमत वाले दिन अब लद गए. यानी दोनों ही स्थितियों में जीत हमारी ही होगी." **—शेखर गुप्ता,** **पंकज पचौरी** और **हरिंदर बवेजा** के साथ

झलकियां

सितारों से मिले संकेत

भारतीय राजनीतिक हमेशा ज्योतिषियों के मुरीद रहे हैं. 'इंडिया टुडे' ने नई दिल्ली, मद्रास, बंबई और पटना में कुछ जाने-माने ज्योतिषियों से बातचीत की.

जे.एन. शर्मा (48 वर्ष), दिल्ली: अमेरिका और यूरोप में उनके अनुयायियों की खासी संख्या है. अमेरिका में तो वे अक्सर टीवी पर भी दिखाई देते हैं. ईरान के शाह का पतन, वाटरगेट कांड, रोनाल्ड रेगन की हत्या की कोशिश और श्रीमती गांधी की हत्या सरीखी उनकी कई भविष्यवाणियां सही साबित हो चुकी हैं.

उन्होंने भविष्यवाणी की, "चुनाव की अवधि में राजीव का बृहस्पति बहुत मजबूत स्थिति में है. वे सत्ता में लौटेंगे लेकिन 275-280 सीटें ही निकाल पाएंगे. कई प्रमुख कांग्रेसी इस बार मुंह की खा जाएंगे.

जगजीत उप्पल (44 वर्ष), बंबई: वायुसेना अधिकारी से ज्योतिषी बने उप्पल कई अखबारों में ज्योतिष का स्तंभ लिखते हैं. 1979 में उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि इंदिरा गांधी की जगह संजय गांधी नहीं बल्कि नया कोई युवक राजनीति में आएगा.

"राजीव जीतेंगे और इंका केंद्र तथा महाराष्ट्र में सत्ता में लौटेगी. रामराव अपने राज्य में तो जीतेंगे पर मुझे तेलुगु देशम की सफलता पर संदेह है. वी.पी. सिंह अपने निर्वाचन क्षेत्र से विजयी होंगे."

विश्वनाथ शर्मा (32 वर्ष), नई दिल्ली: ज्योतिषी परिवार के शर्मा आकाशवाणी में संस्कृत समाचार वाचक हैं. वे पहली बार राजनैतिक भविष्यवाणी कर रहे हैं.

"इंका की जन्म कुंडली के अनुसार रवि और शनि धनुराशि में हैं जो कि एक खतरनाक योग है. दसवें गृह में शनि का होना भी शुभ नहीं. इसलिए इंका नहीं जीतेगी. साझा सरकार बनने की संभावना है लेकिन तनाव बरकरार रहेगा."

आर. नारायणन (58 वर्ष), मद्रास: केंद्रीय समुद्री मत्स्य पालन शोध संस्थान के कर्मचारी नारायणन के मुरीदों में मद्रास के बड़े व्यावसायिक घराने और श्रीलंका के राष्ट्रपति आर. प्रेमदास भी हैं. उन्होंने इंदिरा गांधी की वापसी, एमजीआर की मृत्यु, करुणानिधि की जीत की भविष्यवाणी की थी.

"कांग्रेस 276 से 310 के बीच सीटें जीतेगी. राजीव भारी बहुमत से जीतेंगे."

लक्ष्मणदास मदान (67 वर्ष), दिल्ली: ज्योतिषी परिवार के मदान सरकारी अधिकारी रह चुके हैं. 1969 में उन्होंने इमरजेंसी लगने और मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी करते हुए किताब लिखी थी.

"वी.पी. सिंह की किस्मत में प्रधानमंत्री बनना लिखा है. इसे कोई नहीं बदल सकता. राजीव को उनके 46वें वर्ष में झटका लगेगा समय कांग्रेस के अनुकूल होने के बावजूद वी.पी. सिंह की किस्मत कहीं ज्यादा बड़ी है. रामराव और वी.पी. सिंह राम-लक्ष्मण की तरह एक साथ काम करेंगे."

आर. संथानम (45 वर्ष), नई दिल्ली: दिल्ली के मौर्य शेरटन होटल से अपना कामकाज करने वाले संथानम ने धवन की वापसी, इंका से वी.पी. सिंह का इस्तीफा और बोफोर्स घोटाले के रहस्योद्घाटन जैसी कई सही भविष्यवाणियां की हैं.

"राजीव को 315 से 320 सीटें मिलेंगी. जुलाई से नवंबर 1990 तक का समय राजीव के लिए ठीक नहीं है. वी.पी. सिंह जहां से भी चुनाव लड़ें, जीतेंगे. रामकृष्ण हेगड़े को कर्नाटक में मुश्किलें होंगी. रामराव के सितारे बुलंद हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रीय पार्टियां

अपने-अपने गढ़ में गुरु

तेलुगु देशम, द्रमुक और अकाली दल किसी के भी पक्ष में पलड़ा भारी कर सकते हैं

अकाली दल, तेलुगु देशम और द्रविड मुनेत्र कडगम (द्रमुक)—इन तीनों पार्टियों के चरित्र में, इनकी नीतियों में, इनके नेताओं की कार्यशैली में जमीन-आसमान का अंतर है. लेकिन तीनों में एक बहुत ही स्पष्ट समानता भी है. वह यह कि तीनों की छवि क्षेत्रीय पार्टी वाली है. यह समानता इन तीनों के लिए सबसे बड़ी कमजोरी भी है और इनकी ताकत भी. क्षेत्रीय पार्टियां होने के कारण इनका प्रभाव अपने-अपने राज्यों तक ही सीमित है. लेकिन इसके साथ यह भी काबिलेगौर है कि अपने-अपने घरों—पंजाब, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु—में ये पार्टियां बेहद मजबूत हैं. लोकसभा की 529 सीटों में से 94 सीटें—यानी 20 प्रतिशत—इन राज्यों के प्रत्याशी भरेंगे. ये क्षेत्रीय पार्टियां कांटे के मुकाबलों में पलड़ा किसी भी तरफ झुका देने की सामर्थ्य रखती हैं.

आंध्र प्रदेश में लोकसभा की 42 सीटों का फैसला होगा. यानी मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम के सर्वेसर्वा नंदमूरि तारक रामराव चुनाव के बाद की जोड़-तोड़ में निर्णायक भूमिका निभाएंगे. लेकिन चुनाव से पहले हुए दंगल में रामराव को अपने क्षेत्रीय मंच से ही बंधे रहने को बाध्य कर दिया गया है, हालांकि वे राष्ट्रीय राजनीति में ज्यादा बड़ी भूमिका निभाने की अपनी इच्छा जाहिर करने में भी संकोच नहीं करते रहे हैं. उन्हें अपने ही क्षेत्र में इसलिए बंधकर रहना पड़ा है क्योंकि लोकसभा चुनावों के साथ-साथ आंध्र प्रदेश की 294 सीटों वाली विधानसभा के लिए भी चुनाव होने वाले हैं.

हालांकि लोकसभा के साथ-साथ विधानसभा के भी चुनाव कराने की मांग रामराव ने खुद ही की थी लेकिन चुनावों की अप्रत्याशित घोषणा से वे सकते में पड़ गए. 'दिल्ली में इंका शासन खत्म करने' का वादा करने वाले रामराव अब आंध्र प्रदेश में ही इंका का मुकाबला करने में व्यस्त हैं. उन्होंने कहा, "मैं अपने लोगों को हतोत्साहित नहीं करना चाहता. मैं उनका बने रहना चाहता हूं. मैं दिल्ली दरबार की सत्ता हथियाने को कतई लालायित नहीं."

लेकिन इस शुरुआती सदमे का असर खत्म होते ही रामराव फिर अपने रंग में आ गए. 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' नामक अपनी फिल्म की शूटिंग स्थगित करके उन्होंने कई तरह के राजनैतिक तीर छोड़े. विभिन्न वर्गों के लिए तरह-तरह की रियायतों और नई लुभावनी परियोजनाओं की घोषणा कर डाली. इनमें महबूब नगर में 359 करोड़ रु. की लिफ्ट सिंचाई परियोजना और तेलंगाना जैसे पिछड़े क्षेत्र में पांच करोड़ के शुरुआती बजट से तेलुगु ग्रामीण विद्यापीठम यानी ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना जैसी योजनाएं शामिल हैं.

यहीं नहीं, रामराव ने कॉलेज प्राध्यापकों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संशोधित वेतनमान लागू करने के लिए 64 करोड़ रु. भी मंजूर किए. नया वेतनमान चुनाव से पहले ही लागू किया जाएगा. मुसलमान मतदाताओं को रिझाने के लिए राज्य सरकार ने उर्दू अध्यापकों के

श्याम टेकवानी

चैतन्य रथम पर सवार रामराव (बाएं) ; और समर्थकों के साथ करुणानिधि: मुकाबले की तैयारी

> **क्षेत्रीय पार्टियों का प्रभावक्षेत्र सीमित होना उनकी कमजोरी है, पर अपने-अपने क्षेत्र में उनकी मजबूत स्थिति उनकी असली ताकत भी है**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

1,100 खाली पदों पर नियुक्ति की घोषणा की. मुसलमानों द्वारा चलाए जा रहे 227 स्कूलों और कॉलेजों को भी अनुदान देने की घोषणा हुई.

लेकिन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात तो यह है कि रामराव एक लाख सरकारी कर्मचारियों के नेताओं से भी मिले. उनसे उन्होंने 1986 की हड़ताल के लिए काटे गए 53 दिन के वेतन देने का वादा भी किया. फिर भी कई बातें तेलुगु देशम के

पड़ोसी राज्य तमिलनाडु में शासक दल द्रमुक को अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं का भरोसा है. यहां मुख्यमंत्री करुणानिधि बाकी विपक्षी पार्टियों के मुकाबले मजबूत स्थिति में हैं. सत्ता संभालने के बाद नौ महीनों में उन्होंने निचले स्तर पर द्रमुक की पकड़ को और सुदृढ़ किया है. इस चतुर मुख्यमंत्री ने हर वर्ग के लोगों को खुश रखने की कोशिश की है. अपने पूर्ववर्ती मुख्यमंत्री एमजीआर के पदचिन्हों पर चलते हुए उन्होंने कई

भूलते कि वे 40 साल तक एमजीआर के बहुत करीब रहे. यही नहीं, उन्होंने कामराज के जन्मदिन पर स्कूली बच्चों के लिए एक पुरस्कार भी शुरू किया है. हाल में उन्होंने कामराज की बहन को आर्थिक सहायता देने की भी पेशकश की.

13 वर्ष बाद सत्ता में लौटने के बाद करुणानिधि ने इंका के साथ अपने संबंधों में खास चौकसी बरती है. वे बखूबी जानते हैं कि केंद्र मामूली बहाने पर भी विपक्षी

श्याम टेकवानी

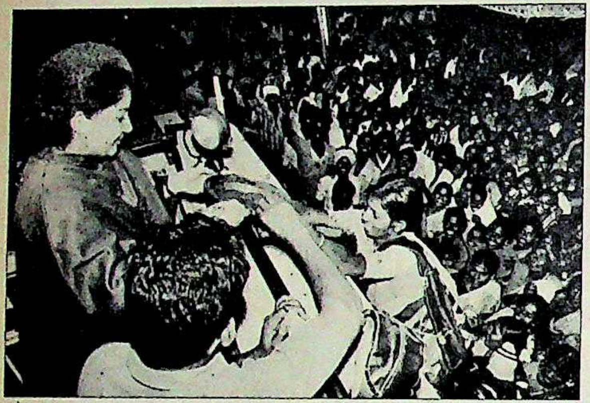

भवान सिंह

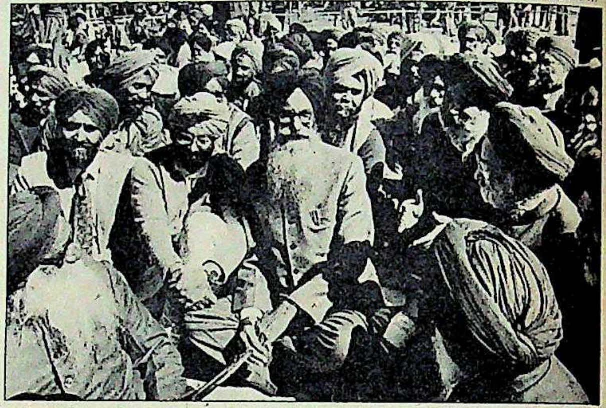

एक जनसभा में जयललिता (बाएं) ; और सरबत खालसा में बरनाला ; सीमित असर

खिलाफ हैं. मसलन, पार्टी में अंदरूनी असंतोष, कप्पू समुदाय का अलग-थलग होना और रामराव पर भ्रष्टाचार के आरोप वगैरह.

लेकिन चुनावों में जिस चीज का सबसे ज्यादा फायदा तेलुगु देशम को हो सकता है, वह है दूसरी विपक्षी पार्टियों—जनता दल, भाजपा और माकपा—के साथ उसका गठजोड़. और अभी पिछले दिनों रामराव ने भाकपा से गठजोड़ करके चमत्कार कर दिया, जबकि भाकपा तीन साल से उनकी कटु आलोचक रही है. इस तरह पूरे विपक्ष के एकजुट हो जाने से आंध्र प्रदेश में इंका को काफी कड़ा मुकाबला करना पड़ेगा.

लोक-लुभावन कार्यक्रमों को चालू रखा है. इनमें मुफ्त चावल, साड़ी और धोती बांटने की योजना, युवा महिलाओं को शादी के लिए अनुदान और स्कूलों में दोपहर का भोजन वितरण करने की योजना शामिल है. यही नहीं, अखबारों को ढेरों सरकारी विज्ञापन देकर उन्होंने प्रेस के साथ भी मधुर संबंध बनाए रखा है.

करुणानिधि की एक रणनीति अपने विरोधी राजनीतिकों को परेशान न करने की भी है. असल में द्रमुक के सत्ता संभालने के बाद ही मद्रास में एमजीआर की समाधि बनाने का काम तेजी से शुरू हुआ है. और करुणानिधि यह बताना कभी नहीं

सरकार को गिराने का मौका नहीं छोड़ेगा. इसलिए राष्ट्रीय मोर्चे के साथ गठजोड़ करने के बावजूद उन्होंने इंका के लिए भी दरवाजे खुले रखे हैं और अपनी पार्टी के लोगों को हिदायतें दे रखी हैं. लेकिन प्रदेश इंका अध्यक्ष वी. राममूर्ति ने जयललिता की अध्यक्षता वाली अन्ना द्रमुक से समझौता किया है. इससे उन्हें जितना फायदा हुआ है, उतना शायद द्रमुक से समझौता करने पर नहीं होता, क्योंकि जयललिता लोकसभा की 40 सीटों में से 30 सीटें इंका के लिए छोड़ने को राजी हो गई हैं.

द्रमुक की बेमिसाल संगठनात्मक ताकत के बल पर इंका-अन्ना द्रमुक गठबंधन द्रमुक को कड़ी टक्कर दे सकता है. वैसे भी

झलकियां

एकांत की तलाश में

□ बंदूकधारी सुरक्षा गार्डों से हमेशा घिरे रहने वाले अकाली नेताओं को आपस में बात करने की एक एकांत सी जगह चुनाव आयोग कार्यालय का प्रतीक्षालय मिली. चुनाव आयोग कार्यालय के सुरक्षा गार्डों ने इन नेताओं के अंगरक्षकों को अंदर नहीं जाने दिया. इस तरह आयोग के अधिकारियों का इंतजार करते हुए इन अकाली नेताओं को सीटों की तालमेल पर बात करने का मौका मिल गया.

चुनावी धमकी

□ अभी एक साल पहले तक विपक्ष मुख्य चुनाव आयोग आर.वी.एस. पेरी शास्त्री को केंद्र का आदमी मानता रहा लेकिन अब गृहमंत्री बूटा सिंह के करीबी माने जाने वाले दो चुनाव आयुक्तों एस.एस. धनोआ और वी.एस. सैगल को देखकर विपक्ष ने अपना राग बदल दिया. जनता दल संसदीय बोर्ड के सदस्य पिछले दिनों जब विरोध दर्ज कराने शास्त्री के कार्यालय में गए तो उन्होंने धनोआ से बात तक करने से इनकार कर दिया. चंद्रशेखर ने झिड़की दी, "हम आपको नहीं मानते." उन्होंने यहां तक घोषणा की कि विपक्ष सत्ता में आया तो इन नए अधिकारियों की छुट्टी कर दी जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

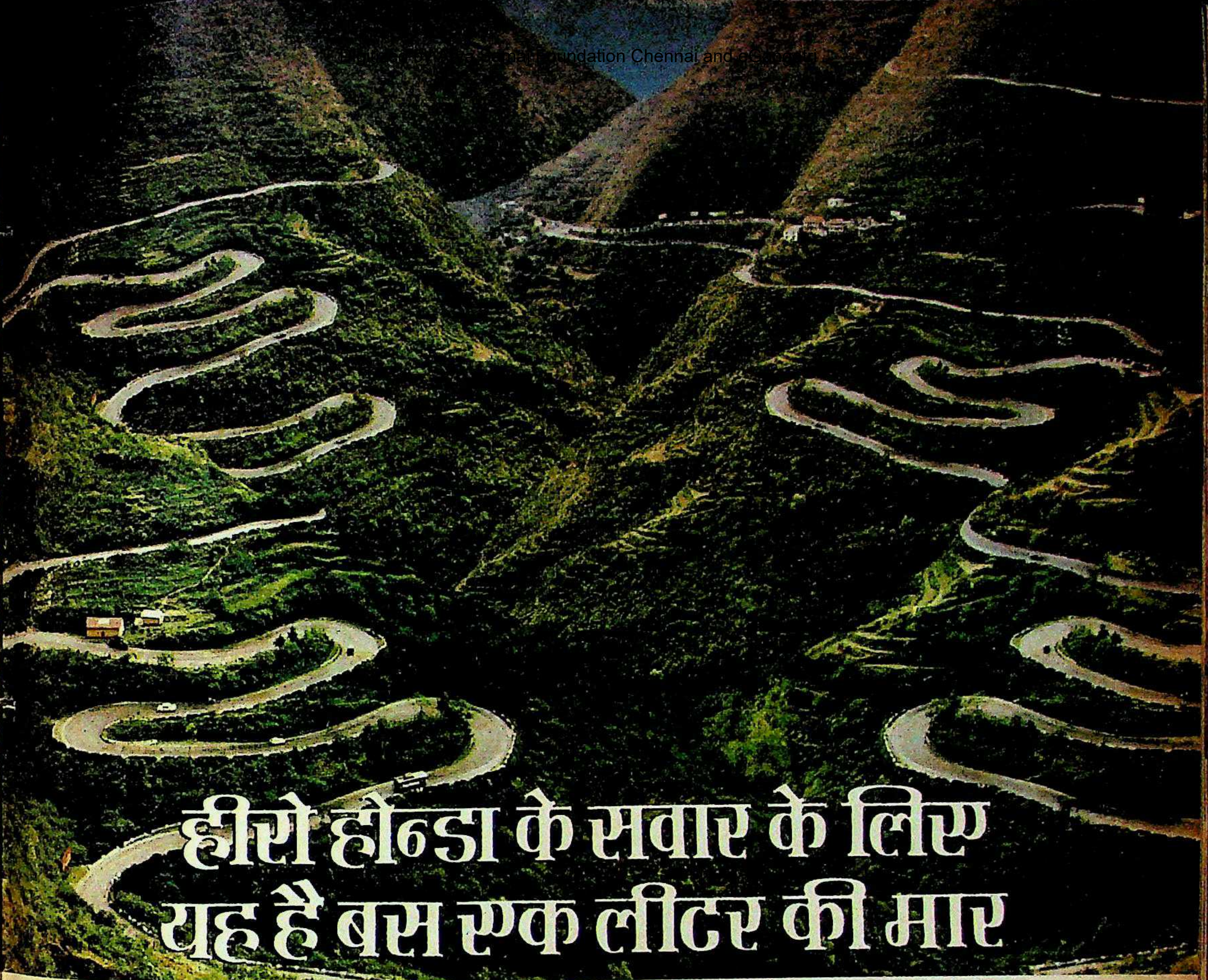

हम यह बात ज़रा भी बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कह रहे। अगर आप हीरो होन्डा सी डी 100 पर सवार हैं तो एक लीटर पेट्रोल आपको बहुत दूर—80 किलोमीटर दूर तक—ले जाएगा।

एक लीटर में आपको *इतनी* दूर भला और कौन सी मोटरसाइकिल ले जाएगी?

टैंक भरिए. और चलते चलिए.

होन्डा की तकनीकी श्रेष्ठता हीरो होन्डा सी डी 100 के असाधारण 4-स्ट्रोक इंजन की हर विशेषता में देखी जा सकती है। ईंधन पूरी मात्रा में जलने के कारण देखभाल में आसानी, 80 किलोमीटर प्रति लीटर* चलने की कुशलता, और साथ में प्रदूषणहीन एग्ज़ास्ट सुनिश्चित हैं...मीलों-मील बिना-परेशानी अच्छी सेवा के लिए।

हां, हीरो होन्डा को लाखों ने अपनाया है। उन्हीं ने इसे भारत की सबसे अधिक बिकने वाली मोटरसाइकिल बनाया है।

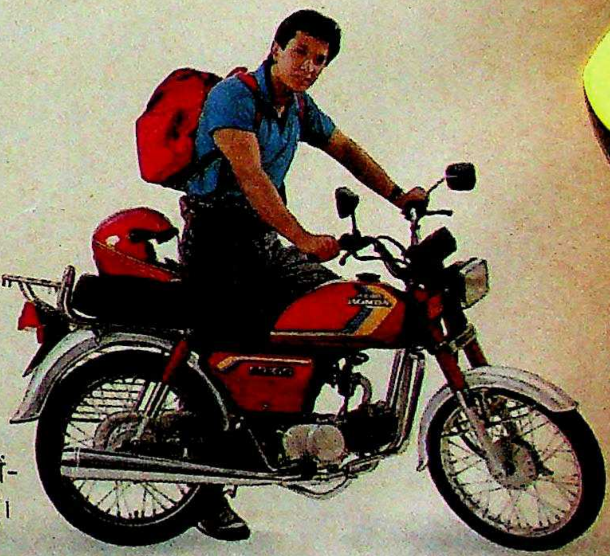

HERO HONDA

आपका शानदार हमसफ़र!

*40 कि.मी. प्रति घंटा और 130 किलो भार सहित

HTA 6347H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

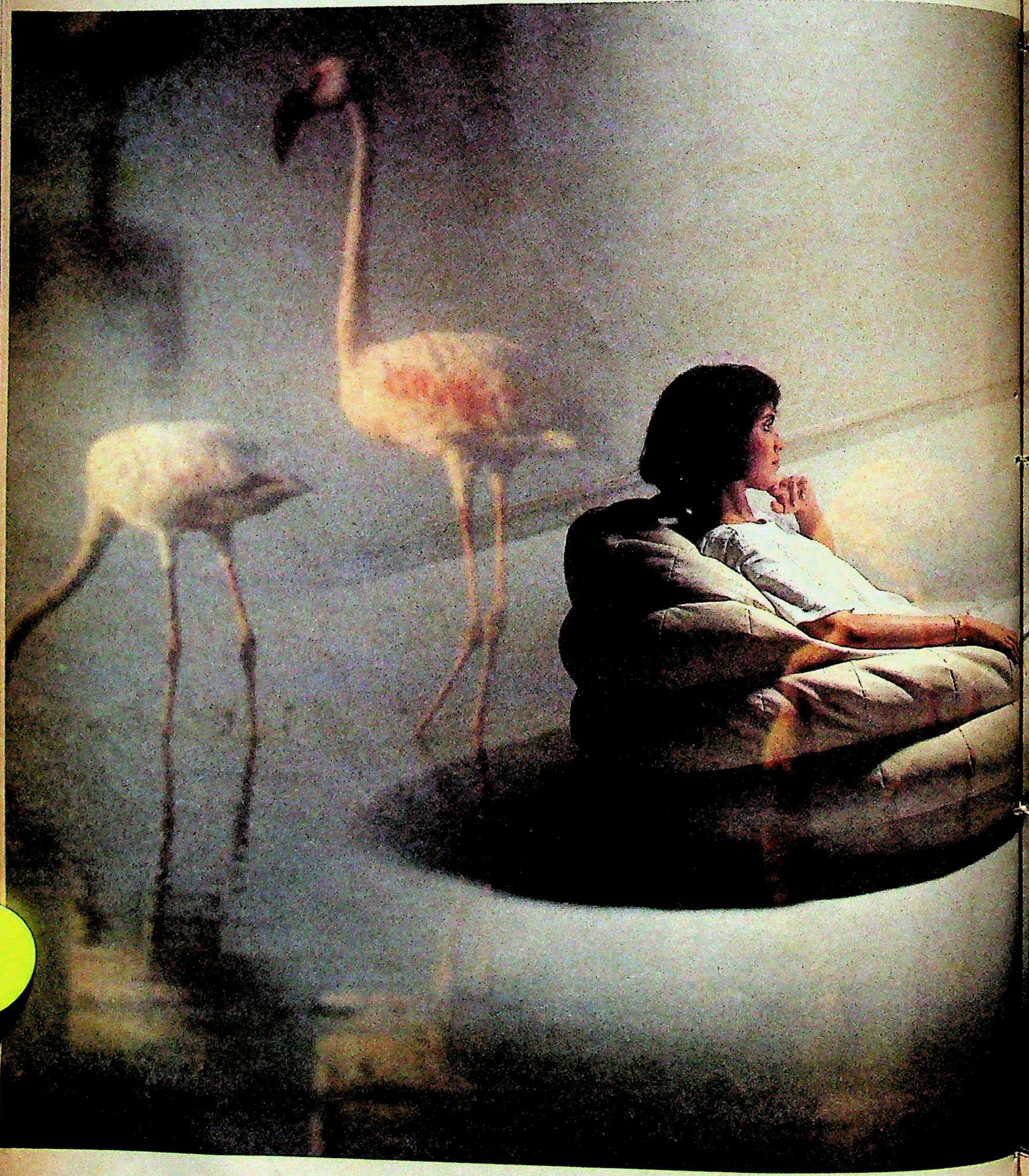

Routes/BHN-15

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

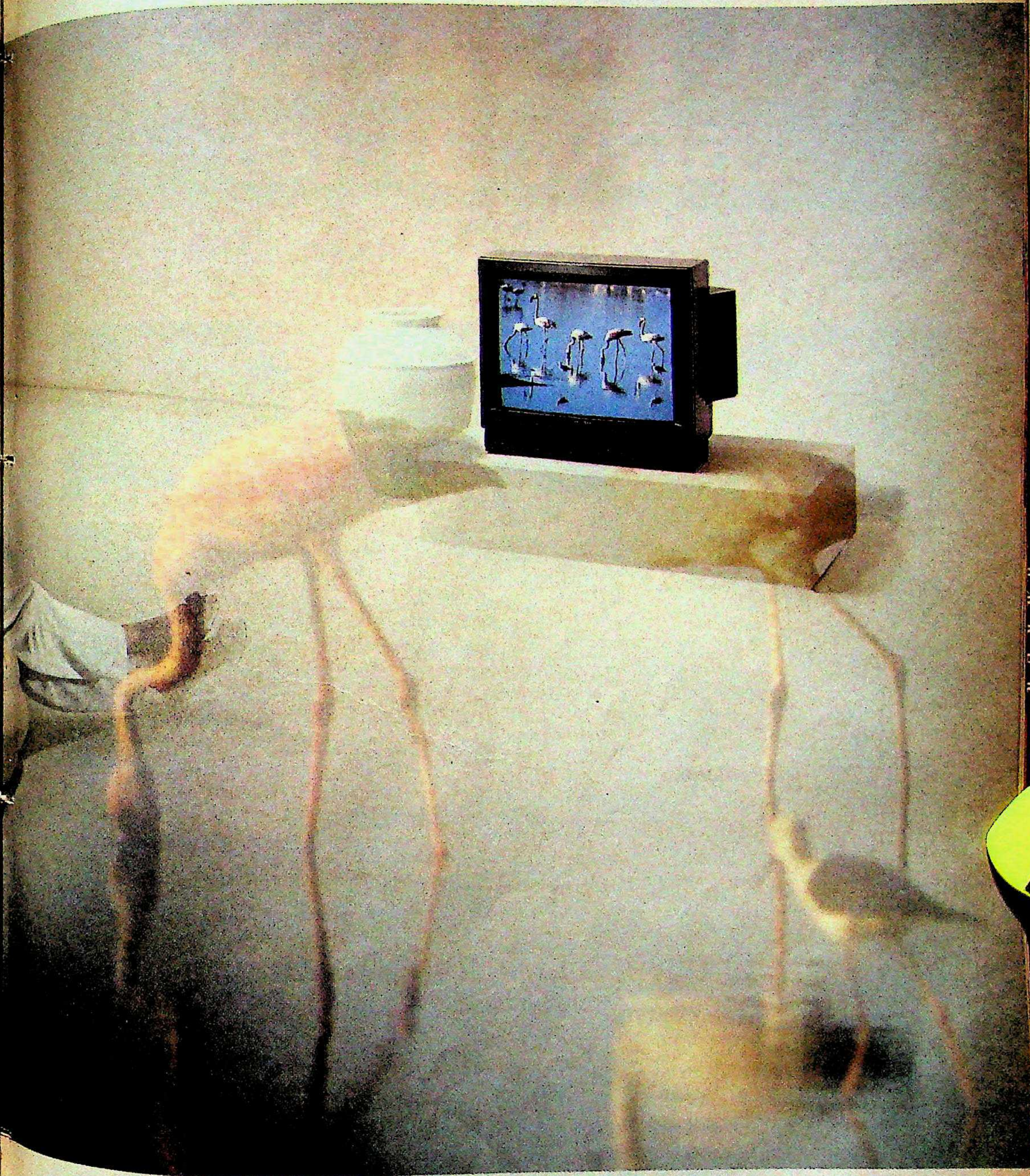

BUSH TV एक जीवंत एहसास.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसे के पीछे हैं कारण अनेक

गोदरेज. गुणवत्ता और तकनीकी कुशलता का प्रतीक.
इसके नये स्वचालित कारखाने में आधुनिकतम तकनीक की मदद से सही मायनों में अंतर्राष्ट्रीय दर्जे के रेफ्रिजरेटर बनाये जाते हैं. तभी तो लोग गोदरेज का ही नाम लेते हैं. ऐसा नाम जिस पर वे पूरी तरह भरोसा कर सकें.

COOLGUARD

ज़्यादा ठंडा, ज़्यादा मज़बूत, ज़्यादा साफ़-सुथरा. 100% पॉलीयूरीथेन इंसुलेशन - संसार के नामी रेफ्रिजरेटरों के बराबर. बेहतर इंसुलेशन के कारण गोदरेज ज़्यादा देर तक ज़्यादा ठंडा रहता है. पॉलीयूरीथेन से मिलनेवाली मज़बूती व सख़्ती रेफ्रिजरेटर को ज़्यादा सुदृढ़ बनाती है. कैबिनेट और भीतरी दीवारों के बीच की सारी जगह इंसुलेशनयुक्त होने के कारण अंदरूनी ठंडक घटने नहीं पाती और कीड़े-मकोड़े अंदर नहीं घुस पाते.

MEGA FORCE

बिजली बचानेवाला मज़बूत कम्प्रेसर जो 160 से 250 वोल्ट तक की भारी घट-बढ़ को भी मज़े में संभाल लेता है. कूलगार्ड के सहयोग से यह **तेज़ी से ठंडा करता है** और **बिजली भी बचाता है.**

SPECTRUM

तरह-तरह के **खास** लुभावने रंगों की अभूतपूर्व श्रेणी. डेज़र्ट सैंड. डस्की ब्लू. इलेक्ट्रिक रेड. स्प्रिंग ग्रीन. कूल ब्लू. क्लासिक व्हाइट. इम्पीरियल आइवरी और मिस्टी ग्रे. सब के सब एपॉक्सी पाउडर कोटेड फ़िनिश में, जो खूबसूरत भी लगें और ज़्यादा टिकें भी.

ULTRASPACE

गोदरेज 165 लीटर रेफ्रिजरेटर में है सबसे बड़ी सब्ज़ी ट्रे - किसी दूसरे रेफ्रिजरेटर के मुक़ाबले कम से कम 30% ज़्यादा जगह. बेहतर व्यवस्था के फलस्वरूप शेल्फ़ में कहीं ज़्यादा जगह. और खास डिज़ाइन की बदौलत दरवाज़े के पैनल में भी बोतलों और अंडों के लिए ज़्यादा जगह.

भरोसा, पूरा भरोसा

Godrej®

HTA 1643

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिलनाडु के मतदाता राज्य के लिए भले ही क्षेत्रीय दलों को चुनते रहे हों, लोकसभा के लिए उन्होंने कांग्रेस का ही पक्ष लिया है. और इस बार भी वे यही कर सकते हैं. इंका के अक्षय कोष और जयललिता के ग्लैमर के गठजोड़ के मुकाबले द्रमुक को अपने सीमित कोष के कारण मुश्किल हो सकती है.

तमिलनाडु में जहां चुनावी गठजोड़ अब साफ दिखने लगे हैं, पंजाब में स्थिति अभी भी अस्पष्ट है. अकाली दल के विभिन्न गुट— सुरजीत सिंह बरनाला के नेतृत्व वाला नरमपंथी लोंगोवाल गुट, सिमरनजीत सिंह मान गुट, जगदेव सिंह तलवंडी गुट और बाबा जोगिंदर सिंह गुट—चुनाव घोषणा के बाद भी आपस में लड़ रहे हैं. सभी गुट केवल एक ही मुद्दे पर सहमत दिखे कि राजीव गांधी का विरोध किया जाना चाहिए और मान (फिलहाल जेल में) को तरनतारन से खड़ा किया जाए.

पंजाब की 13 लोकसभा सीटें जीतने वाली इंका काफी उत्साहित है. एक वरिष्ठ इंका नेता ने कहा, "मैं तो चाहता था कि विधानसभा चुनाव भी करा लिए जाते."

फिर भी पंजाब के लिए ये चुनाव खासी अहमियत रखते हैं क्योंकि वे पंजाब में राजनैतिक गतिविधियों की फिर शुरुआत के संकेत हैं और विधानसभा चुनावों के लिए जमीन तैयार कर सकते हैं. एसजीपीसी के अध्यक्ष गुरचरण सिंह तोहड़ा के एक समर्थक वसंत सिंह खालसा ने कहा, "सिख नेतृत्व आज जिस उलझन में पड़ा है उसे मतदाताओं का फैसला शायद दूर कर देगा."

संभव है ऐसा हो जाए. और जब उपरोक्त तीन राज्यों में मतदाता चुनावी पहेली को सुलझाने के लिए अपनी पहल करेंगे तब शायद वे राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय पार्टियों की भूमिका भी तय कर देंगे.

—**अमरनाथ के. मेनन** हैदराबाद में, **कविता शेट्टी** मद्रास में और **कंवर संधू** चंडीगढ़ में

वामपंथी पार्टियां

सपनों के सच होने की आस

पहली बार केंद्रीय सत्ता में भागीदारी की संभावना प्रबल

प्रभात पजियार

चार्टः बी.के. शर्मा

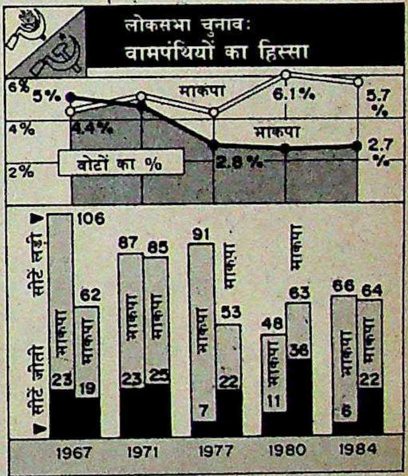

माकपा के आकाः ऊंचे लक्ष्य

वामपंथी पार्टियों ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि वे अपने इतने छोटे इतिहास में इस मुकाम पर पहुंच जाएंगी. यह मुकाम यानी केंद्र की सत्ता में भागीदारी. लेकिन नौवें आम चुनावों ने उनके लिए इस संभावना के सच होने की उम्मीद जगा दी है. केंद्रीय सत्ता में भागीदारी, और और वह भी तीन दशक पहले केरल में पहली बार सत्ता का स्वाद लेने के बाद. संसार में पहली बार लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई वामपंथी सरकार 1957 में सत्ता में आई थी.

इस पहली मार्क्सवादी सरकार को दो साल बाद ही बरखास्त कर दिया गया था. लेकिन इस क्रांति के सूत्रधार बचे रहे. उसके साथ बरकरार रहा उनका उन्मादी तेवर और वामपंथी ख्वाब. माकपा को राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय जाता है इसके महासचिव ई.एम.एस.

झलकियां

सितारों की चकाचौंध

□ **राज बब्बर जब दिल्ली में देवीलाल से मिलने हरियाणा भवन आए तो बहुत-से पार्टी कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया. बब्बर का ऑटोग्राफ पाने के लिए धक्कामुक्की कर रहे लोगों को देखकर देवीलाल ने खुश होकर कहा, "वे हमारा प्रचार करने जा रहे हैं."**

रथों पर महाभारत

□ **रामराव पर अक्सर मध्ययुगीन तौरतरीके अपनाने का आरोप लगता है लेकिन जब चुनावों की बात आती है तो वे ही नई पहल के प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं. उन्हीं का 'चैतन्य रथम्' चुनाव प्रचार के समय हर कहीं रथों की भरमार की शुरुआत करने वाला साबित हुआ. हरियाणा के पिछले विधानसभा चुनावों में देवीलाल ने 'न्याय रथ' चलाया. 1985 के विधानसभा चुनाव में हेगड़े ने 'जय वाहिनी' को चुनाव प्रचार के लिए इस्तेमाल किया. अब देवगौड़ा स्वराज माजदा पर 'जनता वाहिनी' बनवा रहे हैं. संयोग से यह वाहन राज्य के नारियल पैदा करने वाले किसानों के चंदे से खरीदा गया है.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासचिव ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद के दिमाग में राष्ट्रीय स्तर पर वैसी ही संविद सरकार की कल्पना है जैसी 1987 में केरल में उन्होंने सफलतापूर्वक बनाई थी. वे कहते हैं, "फिलहाल राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी पार्टियां सबसे बड़ा और सशक्त मोर्चा बना सकते हैं."

भारतीय वामपंथियों की बढ़ती अहमियत का एक संकेत यह भी है कि चुनावों की अचानक घोषणा से चंद दिनों पहले राजीव गांधी ने पश्चिम बंगाल में अरसे से रुकी पड़ी हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स योजना की आधारशिला रखी. बाद में उन्होंने तिरुअनंतपुरम में युवक कांग्रेस की एक सभा को संबोधित किया. इस बार वे वामपंथियों पर नहीं बरसे बल्कि उनके प्रति दोस्ताना रुख दिखाया. वजह साफ थी—यह माकपा को जनता दल से अलग रखने की आखिरी कोशिश थी. लेकिन माकपा ने राजीव की दोस्ती के हाथ को स्वीकार नहीं किया. हरकिशन सिंह सुरजीत सरीखे वरिष्ठ पार्टी नेता जनता दल को विश्व हिंदू परिषद विरोधी बयान जारी करने को जहां राजी कर रहे थे, वहीं माकपा के घोषणा-पत्र में इंका को "लोगों के विश्वास पर पूरी तरह असफल" ठहराया गया.

पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चे ने मैदान में आने में देरी नहीं की. इसने सबसे पहले अपने उम्मीदवारों की सूची जारी की. वाम मोर्चे के अध्यक्ष सरोज मुकर्जी ने दावे से कहा, "हम सभी 42 सीटें जीतेंगे."

लेकिन वाम मोर्चे के घटकों के रिश्ते मधुर हों, ऐसा नहीं है. फॉरवर्ड ब्लॉक उत्तर-पश्चिम कलकत्ता की अपनी सीट अशोक सेन को दिए जाने से खफा थी. सेन राजीव मंत्रिमंडल में कानूनमंत्री थे लेकिन अब राज्य जनता दल के अध्यक्ष हैं. फॉरवर्ड ब्लॉक के राज्य सचिव अशोक घोष कटुता से कहते है, "हमने एवज में रामगंज सीट मांगी थी लेकिन अनदेखी कर दी गई."

लेकिन माकपा नेता जानते हैं कि प्रचार के जोर पकड़ते ही ऐसी खींचतान भुला दी जाएगी. तीन विधायक और जाने-माने अर्थशास्त्री डॉ. विप्लव दासगुप्ता सहित 13 नए चेहरों के साथ पार्टी मैदान में है.

कृष्ण मुरारी किशन

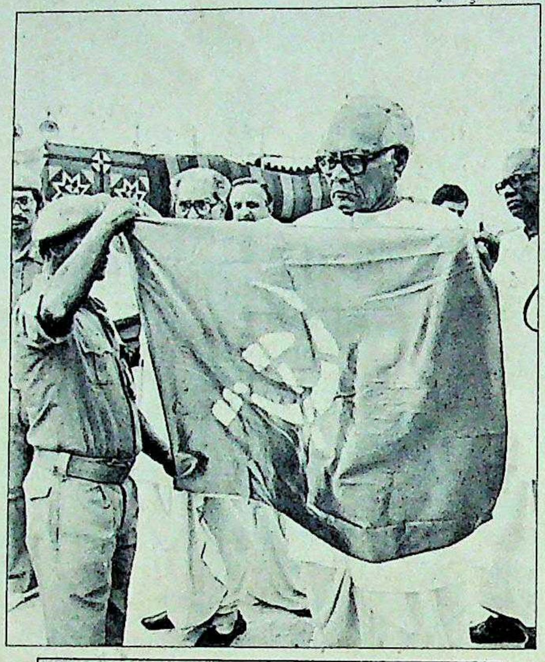

भाकपा के राजेश्वर रावः प्रभावशाली

आंकड़े माकपा के पक्ष में हैं. 1967 के बाद वोटों में उसकी हिस्सेदारी बढ़ी है. 1967 में 15.7 फीसदी से 1977 में बढ़कर 26.2 फीसदी और 1980 में 39.9 फीसदी पहुंची. लेकिन 1984 में जब यह गिरकर 35.9 फीसदी रही तब इंका ने 16 सीटें जीती थीं.

भाकपा की सिर्फ छह सीटें थीं पिछली लोकसभा में. बिहार में कहीं-कहीं उसकी स्थिति मजबूत है. वह बिहार में 15 सीटों पर लड़ना चाहती है. आंध्र प्रदेश में यह माकपा के साथ मिलकर अपने आधार क्षेत्र में बढ़ोतरी चाहती है.

केरल में भी वाम मोर्चे को 1984 के उस झटके से उबरना है, इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे ने 20 में से 17 सीटें जीती थीं. अब वह नए चेहरों को आगे बढ़ाना चाहती है. मसलन प्रख्यात कवि ओ.एन.वी. कुरुप और एसएफआई के अध्यक्ष विजयराघवन. राष्ट्रीय मोर्चा ने 1984 में केरल में चुनाव जीतने वाले माकपा नेता सुरेश कुरुप और विपक्षी नेता के.पी. उन्नीकृष्णन को फिर उम्मीदवार बनाया है.

पश्चिम बंगाल की तरह केरल में लोकसभा चुनावों में माकपा की हिस्सेदारी नहीं बढ़ी. 1957 में भारतीय संयुक्त कम्युनिस्ट पार्टी को 37.5 फीसदी वोट मिले थे, 1967 में माकपा ने 24.6 फीसदी, 1971 में 26.2, 1977 में 20.3 और 1980 में 19.1 और 1984 में 22.3 फीसदी वोट हासिल किए.

लेकिन नंबूदिरिपाद कहते हैं, "मैं राष्ट्रीय मोर्चे में शामिल होने अथवा समर्थन करने का वादा नहीं करता."

यदि किसी आश्चर्यजनक चुनावी गणित के चलते माकपा राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार में शामिल होने को राजी हो जाती है तो यह एक और मिसाल होगी.

निजी तौर से नंबूदिरिपाद के लिए यह एक ऐसे अविश्वसनीय सफर की समाप्ति होगी जो पांच दशक पहले उन्होंने शुरू किया था. तब उन्होंने मतदान पेटी को ही बंदूक मान लिया था और यही पेटी आज वामपंथियों की उम्मीदों का संबल बनी है.

—फरजंद अहमद और रमेश मेनन

झलकियां

खबर ने जान डाल दी

□ चुनाव एक किस्म की बलवर्धक दवा भी है. कम-से-कम जनता दल के उपाध्यक्ष रामकृष्ण हेगड़े के लिए यह दवा ही साबित हुई. चुनाव की घोषणा के एक हफ्ते पहले से हेगड़े बुखार के कारण बिस्तर पर पड़े थे. चुनाव की खबर आते ही वे उठ खड़े हुए. वे उसी दिन इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के सेमिनार में भी गए जहां उन्होंने बताया कि इस खबर ने उनमें जान डाल दी.

'टिकट मिलेगा बोफोर्स से'

□ उत्तर प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के दफ्तर के बाहर खड़ी टिकटार्थियों की भीड़ बेचैन हुई जा रही थी. अंदर चुनाव समिति की बैठक चल रही थी. बैठक को लंबी खिंचता देख लोग तरह-तरह की अटकलें लगा रहे थे. बैठक लंबी खिंचती गई. एक बेचैन परंतु तेजतर्रार टिकटार्थी फुसफुसाया "ना सोर्स से, ना फोर्स से; टिकट मिलेगा बोफोर्स से."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

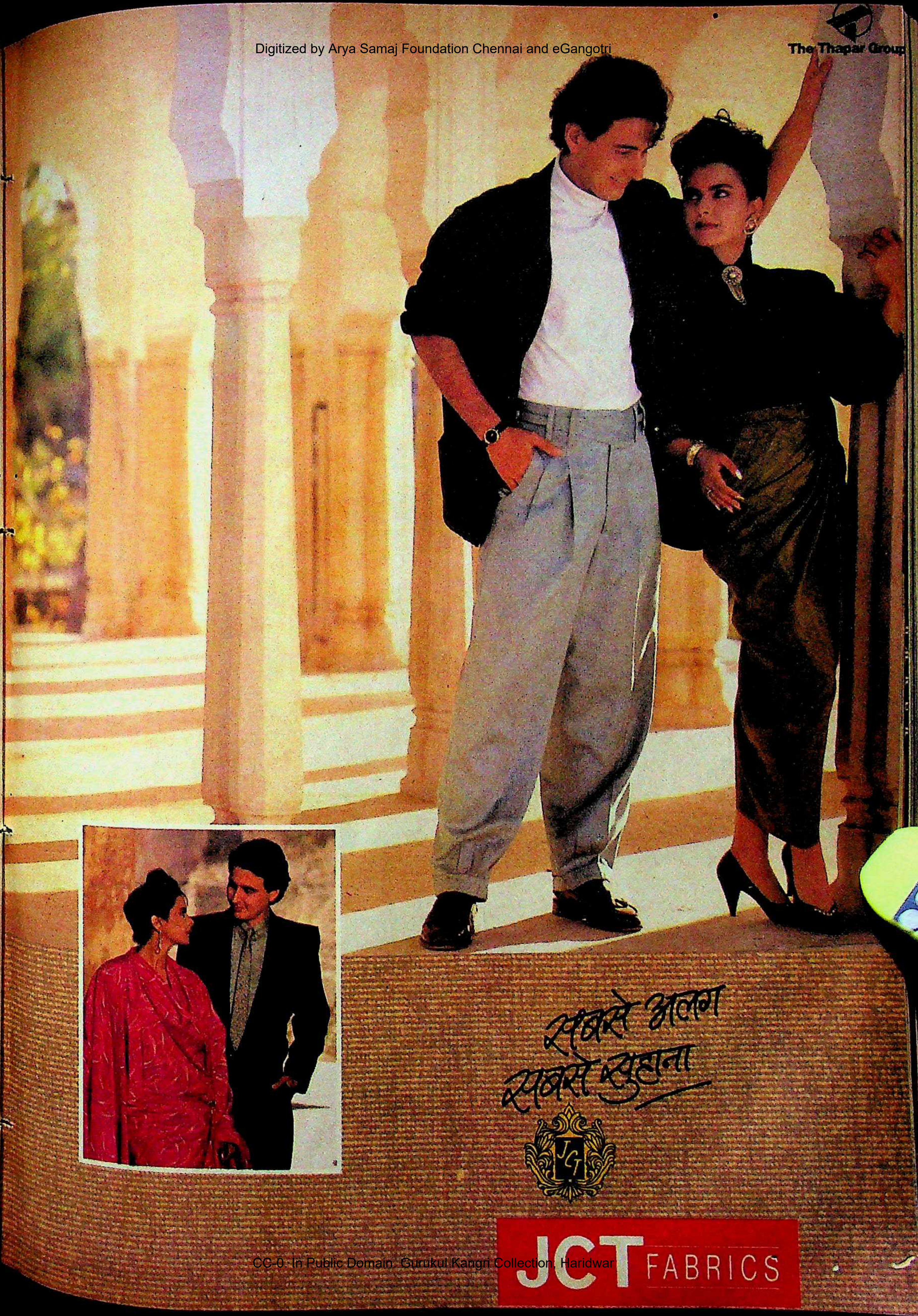

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई वर्षों बाद, हैदराबाद के करीब कुरनूल में, दूर-दूर तक हँसते झूमते सूरजमुखी फूलों की कतारें नज़र आती हैं। अपने खेत में, इन फूलों को निहारते हुए, रघुराम रेड्डी की आँखें खुशी से चमक उठीं। जल्दी ही, अब सुनहरी फसल लहलहा उठेगी। इस बार का मौसम उन्हें बेहद खुशनुमा लगा है, क्योंकि उन्होंने पहली बार महसूस किया कि सूरजमुखी की खेती आसान और मुनाफ़ेभरी है। यह फसल न तो बारिश की मोहताज है, न ही इसके लिए ज़रूरत से ज्यादा कीमती खाद्य या किटाणुनाशक दवाएं ज़रूरी हैं। लहलहाती फसल की उम्मीद में रघुराम ने अपनी १९ एकड़ ज़मीन पर सूरजमुखी की खेती का फैसला किया। अब वे अपनी पत्नी और दो-वर्षीय बेटे के सुखद भविष्य के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हैं। उन्हें पिछले साल की याद हो आती है, जब आई टी सी उनकी मदद के लिए आगे आयी...

कुरनूल के रघुराम रेड्डी। बारिश के अभाव में अपने सूखे खेतों को देखकर वे बेहद हताश थे।

तभी आई टी सी के एग्री-बिज़नेसेज़ डिवीज़न की मदद से उनके खेतों में सुनहरी फसलें झूम उठीं।

आई टी सी का 'सनड्रॉप'— आजकल बाज़ार में अग्रणी ब्रांड।

लगभग आठ दशक से खेती के मामले में आई टी सी के वैज्ञानिक तरीके, तम्बाकू की खेती करनेवाले किसान भाइयों के लिए काफी मददगार साबित हुए हैं। अब राष्ट्रीय कार्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में तैल-बीजों के उत्पादन और माँगों के बीच की खाई को पाटने के लिए आई टी सी इस सैक्टर को आधुनिक तरीकें सिखा रही है। आई टी सी के सरकार अनुमोदित शोध केन्द्र में सूरजमुखी, कुसुम, बिनौले, रेंडी और मूंगफली की कई किस्मों के बीजों का विकास किया गया है और इस कारण किसानों की पैदावार काफी बढ़ गयी है। इन सब कार्यों की सुनहरी कड़ी के रूप में आई टी सी उनकी फसलें खरीदकर खाद्य और अखाद्य तेलों के निर्माण में जुट गयी है। यह कम्पनी पिछड़े इलाकों में तेल प्रोसेसिंग काम्प्लेक्स संस्थानों को भी सहयोग दे रही है। इनमें से एक यूनिट अब चालू भी हो चुकी है, बाकी के लिए योजनाएं बनायी जा रही हैं।

आई टी सी की मार्केटिंग शक्ति के ज़रिये एग्री-बिज़नेसेज़ डिवीज़न ने सफलतापूर्वक 'सनड्रॉप' लॉन्च किया है, जो उनके यहाँ निर्मित तेलों के अन्यान्य ब्रांडों में सर्वप्रथम है। इसके अलावा, फल, सब्ज़ी और मसालों के निर्यात से भी आई टी सी देश के लिए विदेशी मुद्रा की आमदनी में वृद्धि कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई टी सी भारत के लिए और कहाँ-कहाँ कार्यरत है?

परिवार कल्याण : अपनी विस्तृत वितरण व्यवस्था द्वारा आई टी सी करोड़ों की संख्या में निरोध साधन वितरित कर रही है और छोटे परिवार एवं कई साल के अन्तर में सन्तान-प्राप्ति के लाभ का प्रचार-प्रसार कर रही है। इसके अथक प्रयासों को सन् १९८८ के एफ आई सी सी आई पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

कुटीर उद्योग : हथकर्घे, कच्चे माल और तकनीकी विशिष्टताओं के दम पर आई टी सी ने त्रिवेणी हैंडलूम्स के ज़रिये शाहजहांपुर की प्राचीन कालीन-बुनाई कला को पुर्नजीवित किया है। अब कालीनों के साथ-साथ अन्यान्य लघु और कुटीर उद्योगों की सामग्रियाँ भी आई टी सी द्वारा निर्यात की जाती हैं।

पेपर और बोर्ड — कोर सैक्टर में : आई टी सी द्वारा विकसित भद्राचलम पेपरबोर्ड्स अपने क्षेत्र में अग्रणी है। इसने रिकॉर्ड उत्पादकता के साथ साथ वन संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा और आदिवासी कल्याण के प्रति गहरी जागरूकता का नया मानदंड स्थापित किया है।

I.T.C. Limited

नई दिशाएँ, नई आशाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आस्ट्रेलिया के मेरे मित्र जॉन और सूसन ने मध्यप्रदेश में छुट्टियाँ गुज़ारने की सलाह दी तो मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन मुझे और भी ज़्यादा ताज्जुब तब हुआ, जब मैंने मध्यप्रदेश को ख़ुद देखा... जाना. स्मारक, मंदिर, अभयारण्य. यहाँ तक कि हिल स्टेशन भी! मध्यप्रदेश में मुझे बहुत ही सुखद अनुभव हुआ.

पहले ही दिन से, नए चमत्कार सामने आते गए.
मांडू — 'आनंद का शहर' — रूपमती और बाज़ बहादुर की दर्दनाक प्रेम कथा का शहर. और **ओरछा**, अच्छी तरह संजोकर रखा गया मध्ययुगीन शहर, जिसके सुंदर मंदिर और क़िले देखकर लगता है कि 20वीं शताब्दी सैकड़ों प्रकाश वर्ष दूर है.

इतिहास का सजीव रूप **ग्वालियर** में भी झलकता है. बड़े-बड़े दुर्ग जो राजकुलों के उत्थान और पतन की इतिहास गाथा के साक्षी हैं.

खजुराहो में शिल्पियों की कला देखकर हम मंत्र-मुग्ध रह गए, जिन्होंने मात्र पत्थरों को सुंदर और आकर्षक रूपों में ढाल दिया.

जॉन और सूसन बाघ से आमना-सामना करने को उत्सुक थे. **कान्हा** और, **बांधवगढ़** में बाघ से हुई उनकी मुलाकात. हमने हिरण, गौड़, नीलगाय और रंगबिरंगे पक्षी देखे.

सांची में शांति भी सुनी जा सकती है... स्तूप द्वारों पर चित्रित जातक कहानियाँ जॉन और सूसन को समझाने में मुझे बहुत मज़ा आया.

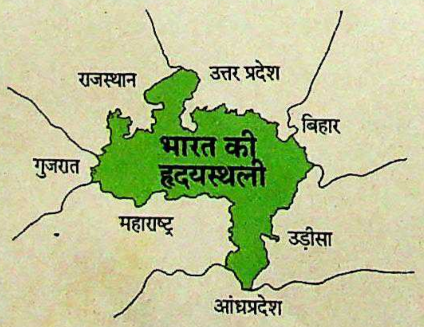

और **भीमबेटका** में पत्थरों पर कई शताब्दियों में अलग-अलग सभ्यताओं के विभिन्न कलाकारों द्वारा चित्रित पूर्व ऐतिहासिक काल की चित्रकारी.

उज्जैन, ओंकारेश्वर और **महेश्वर** में विश्वास, समर्पण और प्रार्थना के संगम को देखकर हम अभिभूत हो गए.

वापस **भोपाल** आकर, हमने झीलें, संग्रहालय, सफ़ारी पार्क और भारत भवन देखा.

जहाँ भी हम गए, सुंदर लॉग हट्स, बंगले और तत्पर परिवहन सुविधा मिली और ख़र्च भी हमारे बजट से ज़्यादा नहीं हुआ!

लेकिन बहुत से स्थान तो मैंने अभी भी नहीं देखे हैं.
पचमढ़ी — हरा-भरा हिल स्टेशन. **मार्बल रॉक्स, अमरकंटक** और **चित्रकूट. शिवपुरी** की शानदार छतरियाँ. मुझे याद रहेगा कि अगर जॉन और सूसन न होते तो शायद मैं कभी नहीं देख पाता जादू मध्यप्रदेश का!

धन्यवाद जॉन. धन्यवाद सूसन.
और सबसे अधिक धन्यवाद तुम्हारा, मध्यप्रदेश!
तुमसे मिलने पर मुझे गर्व है."

मध्यप्रदेश आइए... आप भी मुग्ध-चकित रह जाएँगे.

अधिक जानकारी और **कम्प्यूटर से तुरंत बुकिंग** के लिए मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लि. से तुरंत संपर्क कीजिए. **नई दिल्ली:** 204-205, दूसरी मंजिल, होटल कनिष्क शॉपिंग प्लाजा, 19 अशोक रोड, नई दिल्ली-110 001. फ़ोन: 3321187, 3324422 (एक्सटें 2353). टेक्सटेल: 011-3327264. **बंबई:** 74 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, कफ़ परेड, कोलाबा, बंबई-400 005. फ़ोन: 214860, 219191 (एक्सटें 299). टेक्सटेल: 022-217603. **कलकत्ता:** 'चित्रकूट', कमरा नं. 7, छठी मंज़िल, 230 ए, ए.जे.सी.बोस रोड, कलकत्ता-700 020. फ़ोन: 448543. टेक्सटेल: 033-448543. **भोपाल:** 'गंगोत्री', टी.टी. नगर, भोपाल-462 003. फ़ोन: 66383, 66342, 64388. टेलेक्स: 0705-275 टूर-इन. टेक्सटेल: 0755-61629.

MILESTONES/MPT/153a Hin R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

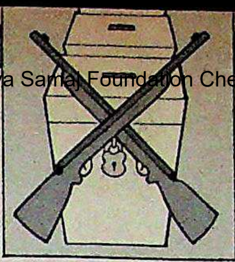

चुनाव आयोग

जिम्मेदारियां बेहिसाब

करीब 50 करोड़ मतदाताओं का विश्वास बनाए रखने की मशक्कत

नई दिल्ली में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की पीठ—संसद—भवन से कुछ ही दूरी पर स्थित निर्वाचन सदन भारत के चुनाव आयोग का मुख्यालय है. पीली, बदरंग फाइलें और धुंधली-सी रोशनी वाले इस दफ्तर में आजकल सबसे बड़े गुप्त मतदान के आयोजन को पूरा करने की दिन-रात मशक्कत चल रही है.

वी.एस. सैगल, आर.वी.एस. पेरी शास्त्री और एस.एस. धनोआ

भारतीय चुनाव अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की शानोशौकत और ब्रिटिश चुनाव के अत्याधुनिक प्रचार के मुकाबले भले ही फीका हो पर जब भारत में वोट पड़ते हैं तो सब कुछ पीछे छूट जाता है. यहां कुल मिलाकर अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, जापान, नाइजीरिया और बांग्लादेश से भी ज्यादा वोट पड़ते हैं. जाहिर है इतने बड़े चुनाव की तैयारी भी एक मुसीबत है. चुनाव आयोग का हर कर्मचारी यह बात स्वीकार करता है. एक आला अफसर की टिप्पणी थी, "हमारे लोकतंत्र की तरह इसमें भी कई उलझनें हैं."

आंकड़े ही दिमाग को उलझाने के लिए काफी हैं. करीब 49.86 करोड़ लोग 529 सांसदों को चुनने के लिए वोट डालेंगे. साथ ही उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गोवा और सिक्किम विधानसभाओं के चुनाव भी होंगे जिनमें 15.11 करोड़ से अधिक लोग 1,547 विधायकों को चुनेंगे. इन आंकड़ों को जुटाने में ही चुनाव आयोग को छह महीने से ज्यादा समय खपाना पड़ा. इसके लिए आयोग के 9.97 लाख गणनाकारों ने घर-घर जाकर सर्वेक्षण किया और इस पर करीब पांच करोड़ रु. खर्च बैठा.

देश भर में मतदाता 5.98 लाख मतदान केंद्रों पर वोट डालेंगे जिनमें 30 लाख सरकारी कर्मचारी तैनात किए जाएंगे. मतदान शांतिपूर्ण हो, यह पक्का करने के लिए एक लाख मजिस्ट्रेट भी तैनात होंगे. चुनाव आयोग ने मतपत्र से लेकर मतपेटियां सील करने की लाख तक करीब 50 चीजें मतदान केंद्रों पर भेजने के इंतजाम किए हैं. इसके अलावा सरकार ने 4.5 लाख लिटर अमिट स्याही का भी आर्डर दिया है जो वोट डाल चुकने वाले लोगों के नाखूनों पर पहचान के लिए लगाई जाएगी.

> **सबसे बड़ी अड़चन यह है कि चुनावी भ्रष्टाचार पर काबू पाने के चुनाव आयोग के अधिकांश अधिकार कागजों तक ही सीमित हैं**

सरकार इस बार चुनाव पर 150 करोड़ रु. से अधिक खर्च करेगी जो 1971 के मुकाबले 10 गुना ज्यादा है. इसके अलावा राजनैतिक दल भी मोटी रकमें लगाएंगे. आयोग ने मोटा अनुमान लगाया है कि 1977 के चुनाव में विभिन्न पार्टियों ने 30 करोड़ रु. से ज्यादा खर्च किया था. तब से यह खर्च कई गुना बढ़ गया है.

चुनावों में धनशक्ति और उसके साथ बाहुबल के प्रवेश से चुनाव आयोग को मतदान केंद्रों पर कब्जे की नई मुश्किल से दो-चार होना पड़ रहा है. 1980 में 12 निर्वाचन क्षेत्रों के 39 मतदान केंद्रों में फिर से मतदान का आदेश देना पड़ा था. 1984 में 53 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों के 264 मतदान केंद्रों पर दोबारा मतदान करना पड़ा था. इस बार अब तक के सबसे खूंखार और तीखे चुनाव होने का खतरा है.

मुख्य चुनाव आयुक्त आर.वी.एस. पेरी शास्त्री को सबसे ज्यादा चिंता इस बात की है कि प्रमुख पार्टियों में अपराधी पृष्ठभूमि वाले लोग बड़े पैमाने पर प्रवेश पा चुके हैं. वे बताते हैं, "हमने सरकार से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की अधिकाधिक कंपनियां मुहैया कराने के लिए कहा है." 1987 में आयोग ने प. बंगाल के उपचुनावों के लिए 60 कंपनियों की मांग की थी तो केंद्र ने 16 कंपनियों की ही मंजूरी दी थी.

और इस बार गृह मंत्रालय के पास नाजुक इलाकों में तैनात करने के लिए ही जब अर्धसैनिक बलों की दर्जन भर कंपनियां हैं, तो हालात भी बुरे होने का अंदेशा है. ज्यादातर सुरक्षा बल पंजाब, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में तैनात हैं. चुनाव के लिए केंद्रीय बलों की जो 25 बटालियनें बनाने की योजना थी उनका अभी प्रशिक्षण ही चल रहा है. चुनाव की अचानक घोषणा से गृह मंत्रालय ने प्रशिक्षु रंगरूटों वाली 150 कंपनियों की व्यवस्था कर ली है. एक चिंतातुर अधिकारी कहते हैं, "हमें जटिल काम को पूरा करना है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर आयोग मतदान के लिए इलेक्ट्रॉनिक मशीनें लगाने में सक्षम हो पाता तो चुनाव में धांधली और मतदान केंद्रों पर कब्जे की घटनाओं पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता था. सात साल प्रयोग करने के बाद आयोग द्वारा उपयुक्त पाई गई इन मशीनों में ऐसी व्यवस्था है जिसमें पीठासीन अधिकारी मतों में संभावित धांधली या अवैध मतदान पर रोक लगा सकता है. दरअसल, आयोग ने बंगलूर की भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड और हैदराबाद की इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया सरीखे सरकारी उपक्रमों को 1.5 लाख मशीनों की खरीद का आर्डर दिया था. धांधली और हिंसा के लिए बदनाम रहे 150 निर्वाचन क्षेत्रों में इन मशीनों के उपयोग की योजना थी. लेकिन चुनावों की तत्काल घोषणा से यह योजना धरी रह गई. अब इनका इस्तेमाल 50 क्षेत्रों में ही हो पाएगा.

इस सीमित इस्तेमाल पर भी राजनैतिक विवाद उठ खड़ा हुआ है. गलत सूचनाओं से व्यग्र होकर जनता दल ने इसकी विश्वसनीयता को चुनौती दी है. अमेरिकी चुनावों में कंप्यूटर से धांधली की खबरें जब उजागर हुई तो जनता दल के कुछ नेताओं के कहने पर एक निजी कंप्यूटर विशेषज्ञ अरुण मेहता ने कंप्यूटर से धांधली का प्रदर्शन कर दिखाया. लेकिन उन्होंने इस तथ्य की अनदेखी कर दी कि अमेरिका की मतदान मशीनें भारत की मशीनों से अलग किस्म की हैं.

इन मशीनों के साथ ही आयोग की विश्वसनीयता पर भी गंभीर आशंकाएं जाहिर की जा रही हैं. सबसे अधिक उंगलियां चुनाव के ठीक पहले बहुसदस्यीय आयोग की अवधारणा को अंजाम देने के सरकारी फैसले पर उठ रही हैं. पिछले तीन मुख्य चुनाव आयुक्तों ने सरकार की इस अवधारणा का विरोध किया था. दोनों नए चुनाव आयुक्तों एस.एस. धनोआ और वी.एस. सैगल नियुक्ति के पहले दिन से ही नाजुक फैसले लेने लगे हैं. पेरी शास्त्री का मानना है कि आयोग चुनाव की तैयारी पहले ही पूरी कर चुका था. सरकार के फैसले से उन्होंने इस्तीफा देने का मन बना लिया था पर बाद में विचार बदल दिया. खुफिया विभाग की सैगल की पृष्ठभूमि और गृहमंत्री बूटा सिंह से उनकी प्रगाढ़ता के कारण विपक्ष की आशंकाएं और बढ़ गई हैं.

लेकिन आयोग की सबसे बड़ी अड़चन यह है कि चुनावी भ्रष्टाचार पर काबू पाने के उसके अधिकांश अधिकार कागजों तक ही सीमित हैं. अगर चुनावों की व्यवस्था कारगर और भरोसेमंद तरीके से करनी है तो उसके लिए कारगर अधिकारों और पर्याप्त संसाधनों की तत्काल जरूरत है. खासकर संसद में कानून बनाकर आयोग को नियंत्रक और महालेखा परीक्षक सरीखी हैसियत दिए जाने की जरूरत है.

जाहिर है, आयोग की स्थिति मजबूत करने वाले मूल चुनावी सुधारों के बिना भारतीय लोकतंत्र का कद कभी ऊंचा नहीं उठ सकता.

—पंकज पचौरी

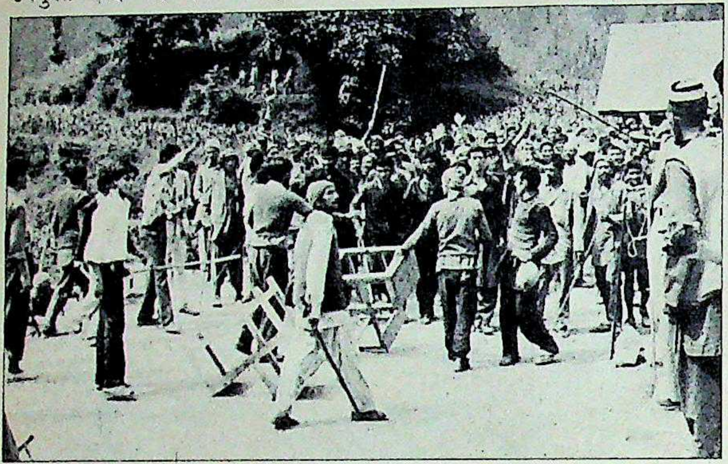

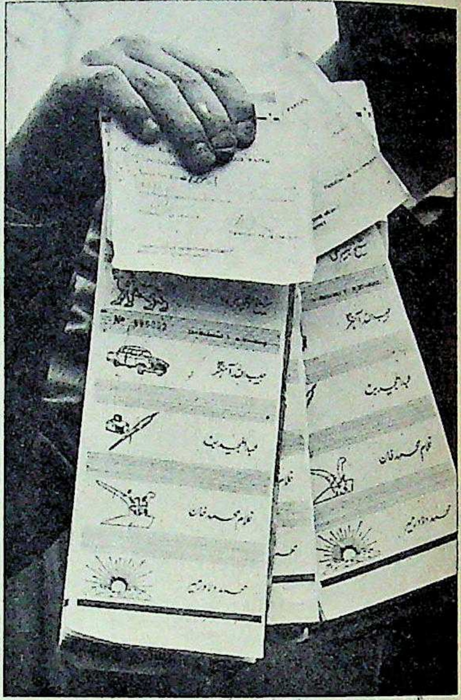

प्रशांत पंजियार

1984 के चुनाव में भीड़ द्वारा दंगा और (दाएं) मतपत्र

चुनाव चर्चा

बेमिसाल चाटुकारिता

□ इंका विधायक रामसेवक ने सेवा का इजहार बेहद बेतुके तरीके से किया. नामांकन पत्र दाखिल कराते समय राजीव के एक प्रस्तावक के तौर पर उन्होंने जिस कलम से दस्तखत किए, उसे पहले दंडवत प्रणाम किया. नामांकन पत्रों के प्रति भी उन्होंने यही श्रद्धाभाव दिखाया. एक अधिकारी की टिप्पणी थी, "चाटुकारिता नई बुलंदियां छू रही है."

दोनों ओर वही रोना

□ हाल ही में जब पत्रकार उत्तर प्रदेश जनता दल के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव से मिलने गए तो वे एक चुनावी गीत सुनाने पर अड़े हुए थे. दुखी श्रोताओं को जल्द ही पता चल गया कि माजरा क्या है. गीत में यादव को ऐसा महान योद्धा और नेता बताया गया है जो किसी भी विरोधी को चित कर सकता है. चाहे वह कितना ही मजबूत क्यों न हो. इस आत्मप्रशंसा के मुरीद तो विपक्ष और इंका दोनों ही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आप दोनों को मिलकर लेना होगा

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों ने एक दूसरे का हो जाने व जीवन के उतार-चढ़ाव में साथ निभाने का निर्णय ले लिया है। अब अपने जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने का आप दोनों के लिए यही समय है। आप दोनों को सन्तान व अन्य बढ़ती ज़िम्मेदारियों के दैनिक चक्र में बन्धने से पूर्व अपने आप को कुछ वर्ष देने होंगे। इसके लिए आपको आवश्यकता है एक ऐसे गर्भनिरोधक की जो आप दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

ttk उत्पादन

MAA COMMUNICATIONS 914A HIN

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी के पांच साल

नाकामियों से फीकी पड़ी वायदों की चकाचौंध

31 अक्तूबर को राजीव गांधी ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री के रूप में अपना हंगामाखेज कार्यकाल पूरा किया. एक मूल्यांकन

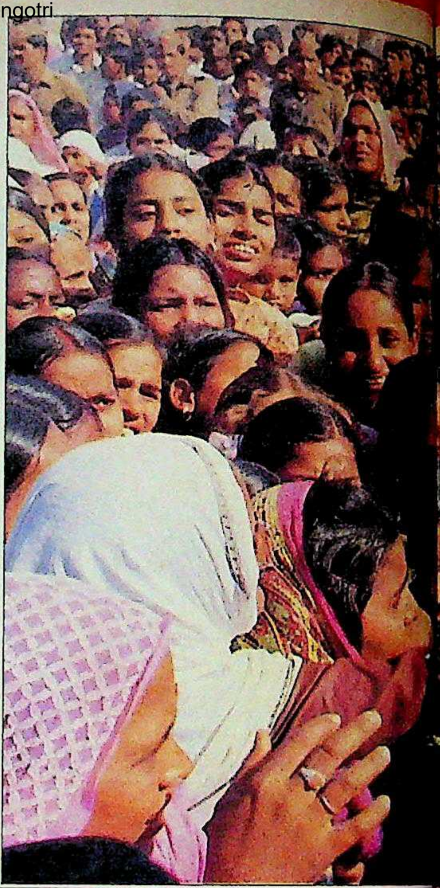

अमेरिकी पत्रकार जैक एंडरसन द्वारा 1985 में बनाए गए वृत्तचित्र 'राजीव्स इंडिया' (राजीव का भारत) के अंतिम दृश्य में अखबारी दुनिया की जानी-मानी हस्ती रामनाथ गोयनका भी नजर आते हैं. फिल्म की विषयवस्तु के साथ सुर से सुर मिलाते हुए परदे पर गोयनका किसी बुजुर्ग की तरह कहते हैं, "मैं अब शांति के साथ मर सकता हूं क्योंकि देश सुरक्षित हाथों में है."

लेकिन चार साल बाद स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है. गोयनका आज राजीव के सबसे कट्टर दुश्मन बन गए हैं. उनका मानना है कि भारत के सत्ता शिखर पर बैठा व्यक्ति हिटलर की तरह ही विफल साबित हुआ है. उनकी यह मान्यता अतिवादी ही मानी जाएगी क्योंकि वे सरकार के साथ अपनी निजी दुश्मनी के नजरिये से चीजों को देखते हैं. लेकिन हालात में यह नाटकीय बदलाव गोयनका से ज्यादा राजीव गांधी के बारे में कई खुलासे करता है.

पिछले हफ्ते राजीव ने अपने हंगामाखेज शासन के पांच साल पूरे कर लिए. इस दौरान वे कभी आकाश चूमते दिखे तो कभी पाताल की नीचाई नापते नजर आए. पांच साल पहले लगता था कि वे सीधे सितारों की दुनिया से उतरे हों. उनका युवा रूप, चमक-दमक, जोश-खरोश, आदर्शवादिता की धधकती लौ और सबसे बढ़कर अपूर्व जनादेश. यह कुल मिलाकर एक चमत्कारी कथा ही तो है. 20वीं शताब्दी के मसीहा के लिए प्रार्थना कर रहे देश को राजीव गांधी के रूप में मानो वरदान मिल गया था. मानव जाति के पांचवें हिस्से ने अचानक मानो मिलजुल कर एक सपना देखना शुरू कर दिया था.

इस सपने का जिक्र राजीव ने जून 1985 में अमेरिकी संसद के सामने भी किया था, "मेरा भी एक सपना है. मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूं जो शक्तिशाली, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और मानवता की सेवा में लगे विश्व के देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो." 'चंद क्षणों के लिए' तो राजीव ने मानो भारत को कोई अद्वितीय और अमूल्य चीज सौंप दी—उसमें आत्मगौरव की भावना भर दी.

लेकिन यह गौरव क्षणभंगुर ही था. इसके तत्काल बाद पतन की शुरुआत हो गई. राजीव शासन के पहले 18 महीने तो अब किसी सपने की तरह ही लगते हैं. उनके पांच साल के शासन को समग्रता में देखें तो उनके शुरुआती वादों की चकाचौंध बाद की उनकी नाकामियों में दब जाती है. इतिहास के लेखे-जोखे में राजीव का नाम स्पष्ट रूप से हारे खिलाड़ियों में लिखा जाएगा. इसके लिए अकेले वे ही जिम्मेदार हैं. आज प्रधानमंत्री पद पर बैठे शख्स की 1984 में इसके लिए निर्वाचित व्यक्ति से कोई तुलना नहीं है.

उस समय वे सचमुच 'मि. क्लीन' का ऐसा पर्याय बन गए थे जो भारतीय राजनीति से भ्रष्टाचार की मैली चादर हटा देने को कृतसंकल्प हो. आज वे बोफोर्स घोटाले के कलंक से आच्छादित हैं. उन्हें मिले विशाल जनमत की वैधता पर उंगली उठाने वाला यह प्रकरण दूसरे घोटालों में सर्वप्रथम है. उस समय वे 'श्रीमान समझौता' भी हुआ करते थे, जो राष्ट्र हितों और उसकी गरिमा को बरकरार रखते हुए शांति के लिए झोली फैलाए था. श्रीलंका, पंजाब, मिजोरम, असम जम्मू-कश्मीर—एक के बाद एक समझौतों की मानो झड़ी लग गई. आज वे सब के सब नाकामी और अदूरदर्शिता के मील के पत्थर बन कर रह गए हैं.

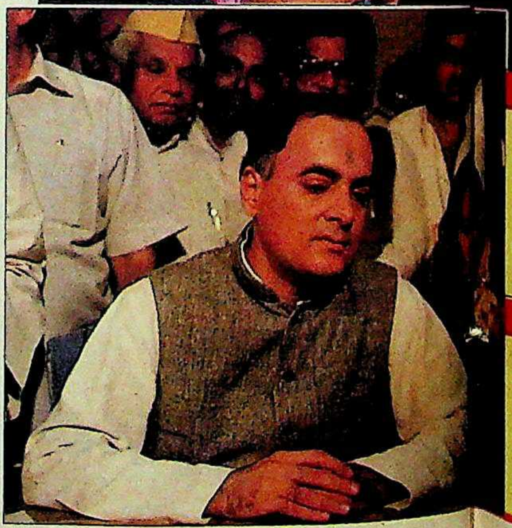

पंजाब में संत लोंगोवाल की हत्या के बाद भी राजीव ने समझौते में चंडीगढ़ के हस्तांतरण सरीखी धाराओं को लागू करके शांति स्थापित कर ली होती पर इसके बजाय केंद्र ने सुरजीत सिंह बरनाला की सरकार को गिराकर शांति प्रक्रिया में बाधा डाली. श्रीलंका में 1,100 से अधिक सैनिक मारे जाने के बाद अब शांति सेना को वापस बुलाया जा रहा है, जो कूटनीतिक अदूरदर्शिता का एक दुखदायी प्रमाण है. कश्मीर समझौता राजीव और फारूक अब्दुल्ला के बीच की संधि बनकर रह गया है. दोनों में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

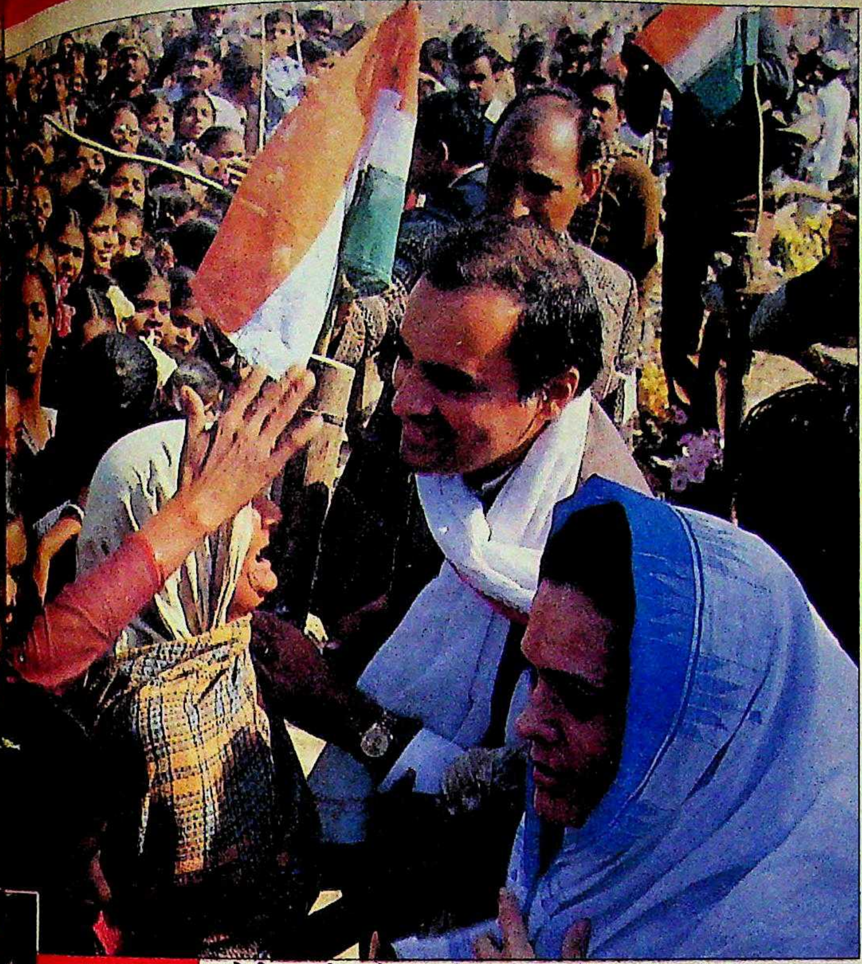

1984 अमेठीः राजीव को भारतीय इतिहास में अपूर्व जनादेश मिला

मसीहा के लिए प्रार्थना कर रहे देश को राजीव गांधी के रूप में मानो वरदान मिल गया था. लोगों ने अचानक एक सपना देखना शुरू कर दिया था

1989 अमेठीः गंभीरता ओढ़े राजीव अपना नामांकन पत्र भरते हुए

राजीव गांधी में बदलाव इतना स्पष्ट और प्रचंड है कि शुरुआती जोशोखरोश वाली सुगठित टीम से हटकर वे सलाहकारों के अंतरविरोधी गुटों पर निर्भर हो गए हैं

कोई भी नेता राज्य के तीव्र विकास जैसी मूल धाराओं तक को लागू नहीं कर पाया है. नतीजा यह है कि उग्रवादी असंतोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है.

दरअसल राजीव गांधी में बदलाव इतना स्पष्ट और प्रचंड है कि ये पांच साल अब एक युग की तरह लगते हैं. उनके करीबी सहयोगियों अरुण सिंह और वी.पी. सिंह की जगह सतीश शर्मा और राजेंद्र कुमार धवन का आ जाना इस बदलाव का सटीक उदाहरण है. शुरुआती जोशोखरोश और आदर्शों को कामयाबी से प्रचारित करने वाली सुगठित टीम से हटकर राजीव सलाहकारों के अंतरविरोधी गुटों पर निर्भर हो गए हैं. इनमें राजीव के राजनैतिक भाग्य में अपने निजी हित साधने वाले नौकरशाह, परंपरागत लीक पर चलने वाले बूटा सिंह और हरकिशनलाल भगत सरीखे पुरानी पीढ़ी के नेता तथा सतीश शर्मा, ललित सूरी और अमिताभ बच्चन सरीखे ऐसे घनिष्ठ मित्र शामिल हैं जिनकी राजनैतिक सलाह भी संदेहास्पद हैं.

इस तरह यह बदलाव अपरिहार्य था. आज भारत की सत्ता पर बैठा व्यक्ति वैसा नेता नहीं रहा जिसने दिसबंर 1985 में बंबई के कांग्रेस शताब्दी सम्मेलन में अपनी तेजोमय कल्पना को इन शब्दों में व्यक्त किया था, "देश भर में लाखों आम कार्यकर्ता कांग्रेस की नीतियों से प्रेरित हो उठे हैं. पर उनके रास्ते में बाधाएं हैं. सत्ता के दलाल उनकी पीठ पर कुंडली जमाए बैठे हैं. इन दलालों ने जनांदोलन को सामंती तंत्र में बदलने में सरपरस्ती की है." आज उन्हीं सत्ता के दलालों ने राजीव को अपने बोझ तले दबा रखा है.

और 1984 का संकोची, सलोना राजकुमार आज अपने ही बुने दुष्चक्र में फंसा राजा जैसा दिखने लगा है. 1985 के राजीव गांधी ने निश्चय ही यह नहीं कहा होता, जो हाल में राजीव ने एक जनसभा में कहा, "षड्यंत्र रचे जा रहे हैं और उनके आका विदेशों में बैठे हैं. हम उन्हें ऐसा सबक सिखाएंगे कि नानी याद दिला देंगे." जिस सत्ता ने कभी उन्हें प्रेरणा की बुलंदियों पर पहुंचा दिया था, वही आज काल्पनिक खतरे बुनने और चापलूसों के तुष्टीकरण में लग गई है. जिस दूरदर्शिता ने उन्हें कभी संत लोगोंवाल के साथ पंजाब समझौते पर दस्तखत करने की प्रेरणा दी थी, आज वही मुठभेड़ की राजनीति के रूप में सामने आने लगी है.

उनकी सरकार निकम्मी नहीं, तो समस्याओं के प्रति उदासीन जरूर रही है. मसलन, उसने भ्रष्टाचार के आरोपों के प्रबल थपेड़ों की अनदेखी की, हालांकि इसमें साफ-सुथरे होकर निकलने से उनकी भलाई ही ज्यादा होती. ऐसे समय में जब उनकी विश्वसनीयता एकदम नीचे आ गई थी, वे स्थापित संस्थाओं के पतन के प्रति भी उदासीन रहे. यहां तक कि उन्होंने अपने किए वादों को भी भुला दिया. हद तो यह रही कि वे खुद को मिले उस जनमत के प्रति भी उदासीन थे जो ऐसी लापरवाही के चलते बिखरता गया.

पीछे की ओर झांकें तो लगता है ऐसा होना अवश्यंभावी था. भारतीय राजनीति में राजीव गांधी जैसी स्थिति किसी व्यक्ति की नहीं रही और सर्वोच्च सत्ता पर रहे लोगों में से तो किसी की भी नहीं. 1984-85 में राजीव सत्तारूढ़ पार्टी के लिए उतने ही बेमेल थे जितनी सत्तारूढ़ पार्टी उनके लिए. एक तरफ आधुनिक दिमाग वाला नफीस युवक था जो राजनैतिक-सामाजिक सुधारों, कंप्यूटर और उच्च टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल, व्यापार के विनियंत्रण और उदारता तथा नौकरशाही में उलटफेर के लिए किसी विचारधारा से बंधा हुआ नहीं था. दूसरी तरफ, उस युवक के मुकाबले में पुरातनपंथियों और सत्ता के दलालों के नियंत्रण वाली जर्जर पार्टी मशी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोंगोवाल; जयवर्द्धने के साथ समझौते: अंततः बिखर गए

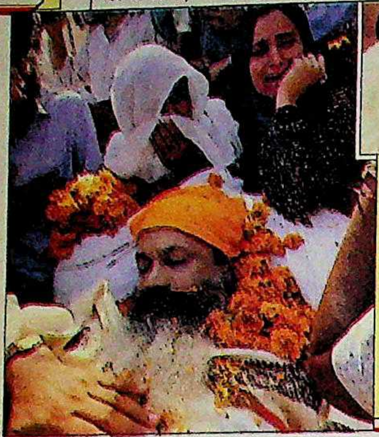

शुरुआती दिनों में राजीव 'श्रीमान समझौता' भी हुआ करते थे. आज मुठभेड़ की राजनीति उनका मुख्य आधार बन गई है

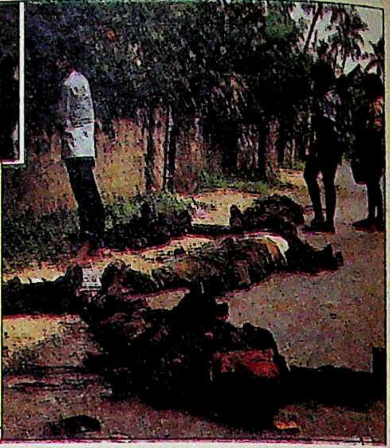

नरी थी. इन्हें राजीव का हर कदम अपने अस्तित्व के लिए खतरा लगता था. इस मोर्चेबंदी में एक पक्ष को झुकना ही था. और राजीव झुक गए.

चार महीने पहले राजीव ने विज्ञान भवन में कहा था, "मैंने जब भी व्यवस्था को बदलने और उसे कल्याणकारी बनाने की कोशिश की तो पाया कि निहित स्वार्थी तत्व मेरा जबरदस्त विरोध कर रहे हैं. वे मुझे किसी भी तरह से आगे नहीं बढ़ने दे रहे थे. जब भी मैंने सोचा कि मुझे समाधान मिल गया है, मैं उच्च-स्तर पर बैठे लोगों को इसका भरोसा नहीं दिला पाया..."

किसी प्रधानमंत्री द्वारा इस तरह की स्वीकारोक्ति आश्चर्यजनक है, लेकिन राजीव गांधी के लिए नहीं. पिछले पांच साल में उन्होंने अपने चेहरे पर इतने मुखौटे ओढ़ लिए हैं कि आज वे लोगों की नजर में गूढ़ पहेली बन गए हैं.

राजीव की सबसे बड़ी समस्या छवि बहाल करने की है. खुले दिल वाला एक पारिवारिक व्यक्ति—जो बिना किसी आलोचना के अपने मित्रों के साथ बाहर छुट्टियां मना सकता है—से लेकर आज एक हताश नेता बन जाने के इस सफर में राजीव ने कई भूमिकाएं निभाई हैं. हर भूमिका में वे पहले से बड़ी पहेली बनकर उभरे.

एक राजीव गांधी वे हैं जिन्होंने चीन और पाकिस्तान के मामले में अभेद्य-सी दिखने वाली कूटनीतिक दीवार को तोड़ डाला था. एक राजीव गांधी वे भी हैं जिनकी सरकार की कार्रवाइयों से भारत को पड़ोसियों पर धौंस जमाने वाले देश का खिताब मिला है. एक राजीव गांधी वे हैं जो लोकतंत्र की रक्षा के बारे में बहुत भरोसे से बोलते हैं. एक राजीव गांधी वे भी हैं जो अपने विरोधियों का मुंह बंद करने के लिए मानहानि विधेयक सरीखे प्रतिगामी कदम उठाने की कोशिश करते हैं.

लेकिन अब उनका राजनैतिक कैरियर अधर में लटकने से असली राजीव का चेहरा थोड़ा-बहुत स्पष्ट होने लगा है. वे अपनी दिवंगत मां की तरह ही घाघ और अवसर-वादी राजनीतिक हैं, जनमत की उपेक्षा करते हैं, राजनैतिक मर्यादाओं को ताक पर रखते हैं और परस्पर विरोधी साजिशों में फंसे हुए हैं. वैसे कभी-कभार असली राजीव भी प्रकट होते दिखे हैं. 1986 के मध्य में 'इंडिया टुडे' के एक इंटरव्यू में उन्होंने बड़ी ईमानदारी और साफगोई से कहा था, "कई बार मुझे लगता है जैसे मैं प्रधानमंत्री नहीं हूं. मैं खुद को पहले जैसा ही महसूस करने लगता हूं. शायद जिस दिन मैं अपने को प्रधानमंत्री मानने लगूंगा, उस दिन कुछ गलत हो जाएगा."

लेकिन ऐसे एहसास के क्षण अब शायद ही आते हैं. राजीव धीरे-धीरे खुद ही षड्यंत्रों में फंसने लगे हैं और उन्हें घेरे हुए लोग तरह-तरह की सलाह देने लगे हैं. नतीजा यह है कि ऊपरी विश्वास के बावजूद राजीव की असुरक्षा भावना ने उनके धुंधले पक्ष को सामने ला दिया है. वे अपने विरोधियों को बुरा-भला कहते हैं, षड्यंत्र के बेतुके आरोप लगाते हैं, अविश्वास और संदेह करते हैं. यही वजह है कि वे वास्तविकता और शायद लोगों से भी दूर होते गए. पिछले चार साल में मंत्रिमंडल में 27 बार फेरबदल करना और 12 मुख्यमंत्रियों को बदलना असुरक्षा की इसी भावना का सबूत है. नतीजतन इंका में उनके खिलाफ किसी को बोलने की हिम्मत नहीं रही. वही पार्टी के एकमात्र नेता हैं और उन्हीं की बात अंतिम होती है.

तेवर

यादगार

□ जनता की उम्मीदें आसमान पर हैं *—जनवरी, 1985 में*

□ मेरी सरकार तेजी से काम करने वाली सरकार है.
—जुलाई, 1985 में

□ मजबूत और खुशहाल भारत बनाने के लिए हम ऊंचे सिद्धांतों और बड़े आदर्शों की बात करते हैं. लेकिन हम किसी अनुशासन, किसी कानून को नहीं मानते. नैतिकता के किसी सिद्धांत पर नहीं चलते, सामाजिक जागरूकता का कोई भाव नहीं दर्शाते, जनहित के प्रति कोई चिंता नहीं जताते. भ्रष्टाचार को न केवल सहन किया जाता है बल्कि नेतृत्व की निशानी समझा जाता है. कथनी और करनी का फर्क हमारे जीने के रंग-ढंग में शुमार हो गया है.
—दिसंबर, 1985 में बंबई के कांग्रेस शताब्दी समारोह में

□ इन नरम दस्तानों के भीतर लोहे का एक हाथ है. अगर नरमी से काम नहीं चला तो हम ये दस्तानें उतार फेंकेंगे.
—16 मई, 1987 को इंका की रैली में.

□ क्या मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं भौंकने वाले हर कुत्ते को जवाब दूं. *—17 जून, 1987 को*

□ कुछ प्रधानमंत्रियों को अपने राष्ट्रपति से परेशानी होती है कुछ राष्ट्रपतियों को अपने प्रधानमंत्री से. *—जुलाई, 1987 में*

CLARION/B/V/137/244 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित हैं. टिकाऊ हैं. यह वीलाइन हैं.

सुरक्षा : वीलाइन स्टोरेज वॉटर हीटर में सुरक्षा के तीन उपाय हैं. 'ओवर हीटिंग' से बचाव के लिए थर्मोस्टेटिक टैंपरेचर कन्ट्रोल. ज़रूरत से ज़्यादा दबाव को रोकने के लिए पिघल जाने वाला फ्यूज़िबल प्लग. और प्रेशर रिलीज़ वॉल्व.

टिकाऊपन : वीलाइन स्टोरेज वॉटर हीटर का **अन्दरूनी कन्टेनर स्टेनलैस स्टील का एक टैंक है*** जो सालों-साल साथ निभाता है.

वोल्टास का वीलाइन स्टोरेज वॉटर हीटर... सुरक्षित, भरोसेमंद, टिकाऊ... साल दर साल तक.

वीलाइन

स्टोरेज वॉटर हीटर

CLARION/B/V/137/244 HIN

* IS:2082:1985 के अनुरूप

विक्रेता :
वोल्टास लिमिटेड
एप्लाऐंसेज़ बिज़नेस ग्रुप,
१९, जे. एन. हरडिया मार्ग,
बेलार्ड एस्टेट,
बंबई-४०० ०३८.

वोल्टास
वीलाइन
घरेलू इस्तेमाल के भरोसेमंद उपकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

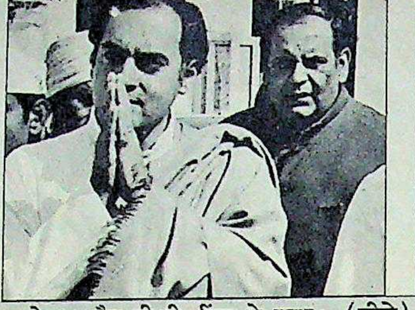

1984 राजीव अरुण सिंह, अरुण नेहरू और वी.पी. सिंह के साथ; (नीचे) धवन की वापसी

कभी वे सचमुच 'मि. क्लीन' का ऐसा पर्याय बन गए थे जो भारतीय राजनीति से भ्रष्टाचार की मैली चादर हटा देने को दृढ़संकल्प हो. लेकिन धवन की वापसी से ये उम्मीदें बिखर गईं

राजीव की उपलब्धियां उनकी निराशा के गर्त में समा गई हैं. इसकी एक स्पष्ट मिसाल है अर्थव्यवस्था. अपने शासन के पहले दो वर्षों में राजीव ने भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाने के लिए ढेरों कदम उठाए, पर विडंबना वह है कि वी.पी. सिंह का साथ छूटने से यह प्रक्रिया सुस्त पड़ गई है.

1987 में सूखे के दौरान राहत देने के मामले में सरकार ने प्रशंसनीय काम किया और उसके बाद तो दो अच्छी फसलें भी हुई. सातवीं पंचवर्षीय योजना में वास्तविक सालाना आर्थिक विकास दर 5.4 फीसदी तक पहुंच जाने की उम्मीद है जबकि '60 और '70 के दशक में तथा '80 के दशक के प्रथम पांच वर्षों में यह वृद्धि दर महज 3.5 फीसदी रही. औद्योगिक विकास दर नौ फीसदी से अधिक होना भी बेहतर आर्थिक प्रबंध का एक और संकेत है.

पर इसका धुंधला पक्ष भी है. ज्यादातर आर्थिक विकास आयात की उदार नीति और घाटे की वित्त व्यवस्था से ही संभव हुआ है. आर्थिक परिदृश्य में अच्छे संकेतों के बावजूद मुद्रास्फीति बढ़ गई है जिससे जरूरी जिंसों की कीमतें आसमान छूने लगी हैं. और यही इस चुनाव में सबसे बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है.

यहां तक कि विदेश नीति के मामले में राजीव की जिस दूसरी सफलता का ढोल पीटा जाता है, वह भी विवादास्पद है. यह सही है कि विश्व मंच पर भारत की आवाज सुनी जाती है. गोर्वाचेव और जॉर्ज बुश सरीखे नेताओं से राजीव के व्यक्तिगत संबंध भी कायम हुए हैं. राजीव के समर्थक अफ्रीका कोष और धरती रक्षा कोष जैसे उनके मौलिक विचारों के अलावा निरस्त्रीकरण के मामले में उनके अभियान को भी उपलब्धियों में गिनाते हैं.

लेकिन व्यापक स्तर पर भारत की विदेश नीति में तदर्थवाद ही हावी रहा है. राजीव के शासन में अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के मामलों में विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के मुकाबले प्रधानमंत्री दफ्तर के अफसरशाहों की ही ज्यादा चलती आई है. पिछले पांच साल में छह विदेश मंत्री, छह विदेश राज्यमंत्री और छह विदेश सचिव आए. इससे एक ऐसे हलके में गैरजरूरी उठापटक होती रही जहां एकलयता और समन्वय का सर्वाधिक महत्व होता है.

बहरहाल, सफलता और विफलता भी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. लेकिन मौजूदा चुनावी माहौल में विपक्ष को जहां अभी अपना स्थायित्व साबित करना है, वहीं प्रधानमंत्री राजीव गांधी का कामकाज कुछ अलग ही पलड़ों पर तौला जाएगा. आखिरकार राजीव के शासन पर फैसला मतदाता ही सुनाएंगे और वे उनके प्रति शायद उतने कटु न हों, जितना इतिहास होगा.

—दिलीप बॉब

तेवर

निंदात्मक

□ **यह राष्ट्रीय अपमान है, राष्ट्रीय मोर्चा नहीं.**
—दिसंबर, 1988 में

□ **गद्दार खुले घूम रहे हैं, संसद में घुस आए हैं.** *—1989 में*

□ **जरा देखिए दूसरे सदन में क्या हालत है. वहां वे जोंक की तरह कुर्सियों से चिपके हैं.**
—लोकसभा में, 1989 में

□ **जो हमारी विरोधी पार्टी है, वो बिलकुल एक्सपोज हो जाएगी और नंगी हो जाएगी.**
—नवंबर 1988 में

आक्रामक

□ **जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती ही है.**
—19 नवंबर 1984 को दिल्ली में हुई रैली में

□ **अगर वह (इमर्जेंसी) कुछ दिनों में ही खत्म हो गई होती तो ठीक रहता. छह महीने काफी होते.**
—अक्तूबर 1985 में

□ **हमें याद रखना चाहिए कि जयचंदों और मीर जाफरों ने देश को कमजोर करने और बेचने की किस तरह कोशिश की....साजिशें की जा रही हैं, इनके पीछे काम करने वाले लोग विदेशों में हैं. हम उन्हें उनकी नानी याद करा देंगे.**
—मई, 1987 में वोट क्लब पर हुई रैली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तस्वीर कहती है क्या, सुनिए मेल्ट्रैक पर

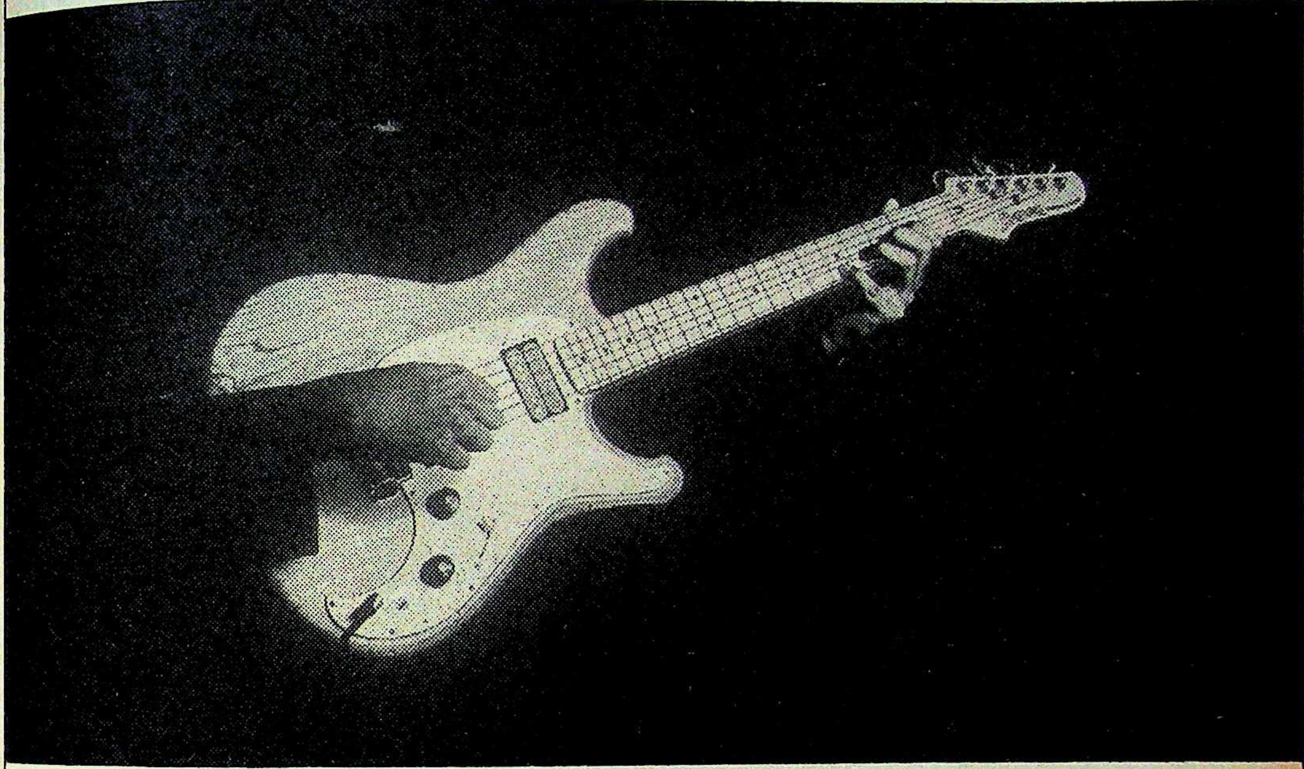

स्वरों से खेलती उंगलियां♪ आलाप♪
सरगमी तान♪ रसीले राग♪ मचलती लय♪
धड़कते गीत♪ यह है संगीत♪ मन का मृदुल महानाद♪
और संगीत को एक अनमोल भेंट - मेल्ट्रैक♪

जापान की प्रमाणित तकनॉलॉजी♪
सख़्त क्वालिटी कंट्रोल और परीक्षण♪
इन सब का नतीजा है आवाज़ का यह जादूगर♪
मेल्ट्रैक♪ ताकि संगीत का वही रस मिले जिससे
आपको प्रेम है♪ अनुराग है♪

मेल्ट्रैक♪ संगीत की सांसों ने बुना यह
सुरीला नाम♪

MURUGAPPA ELECTRONICS LTD.

मेल्ट्रैक
ऑडियो कैसेट
सुरीली सुहानी आवाज़.

Mudra:M:ME:3747 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

दंगों की चपेट में

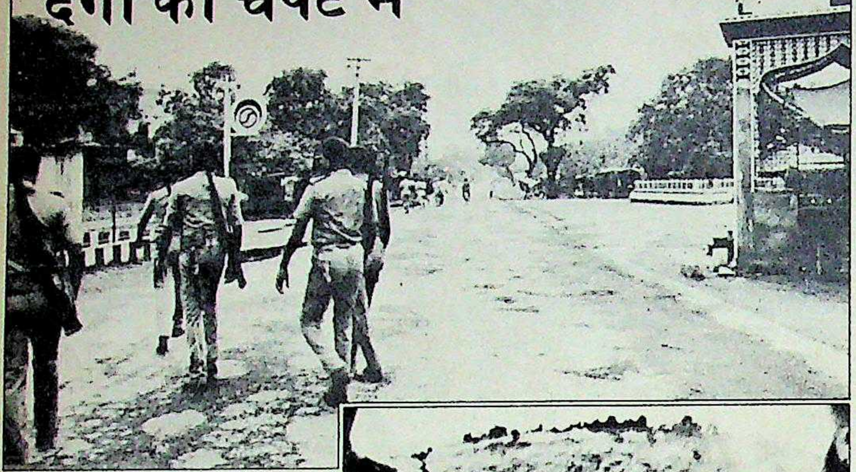

"सांप्रदायिक ताकतों ने फिर मुसीबत पैदा की है लेकिन हम उन पर अंकुश रखेंगे"

सत्येंद्र नारायण सिन्हा
मुख्यमंत्री, बिहार

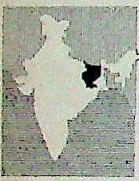

उग्रवादियों द्वारा की जा रही हत्याएं जारी ही थीं कि सांप्रदायिक दंगों का कहर भी टूट पड़ा. अक्तूबर का महीना बिहार के लिए खूनखराबे भरा साबित हुआ. कुछ वक्त तक खामोश रहने के बाद पहले तो नक्सलवादियों ने नरसंहार किया. फिर सांप्रदायिक दंगों ने भी बिहार को चपेट में ले लिया. राज्य सरकार के न्यूनतम आंकड़ों के हिसाब से भी पिछले महीने बिहार में भारी खूनखराबा हुआ.

हिंसा की शुरुआत सबसे पहले 16 अक्तूबर को धनबाद जिले के झरिया कस्बे से हुई जहां राम शिला शोभायात्रा के जुलूस पर हमला किया गया. दक्षिण बिहार के झरिया से पैदा हुआ सांप्रदायिकता का विष जल्द ही उत्तर के सीतामढ़ी, भागलपुर और मधुबनी जिलों में फैल गया. नतीजतन, 23 और 25 अक्तूबर के बीच हिंदुओं और मुसलमानों में सड़कों पर खूंरेज जंग हुई. सरकार के न्यूनतम आंकड़ों के मुताबिक भी मरने वालों की संख्या 35 थी.

भागलपुर में 24 अक्तूबर को फिर राम शिला शोभायात्रा ही गड़बड़ी का कारण बनी. हिंसा उस समय शुरू हुई जब 10,000 से 15,000 लोगों की भीड़ ने प्रशासन द्वारा अनुमति न दिए जाने के बावजूद मुस्लिमबहुल इलाके नाथनगर के रास्ते से शोभायात्रा निकालने की जबरदस्ती कोशिश की. पुलिस शोभायात्रा को रोकने की कोशिश कर ही रही थी कि बड़ी

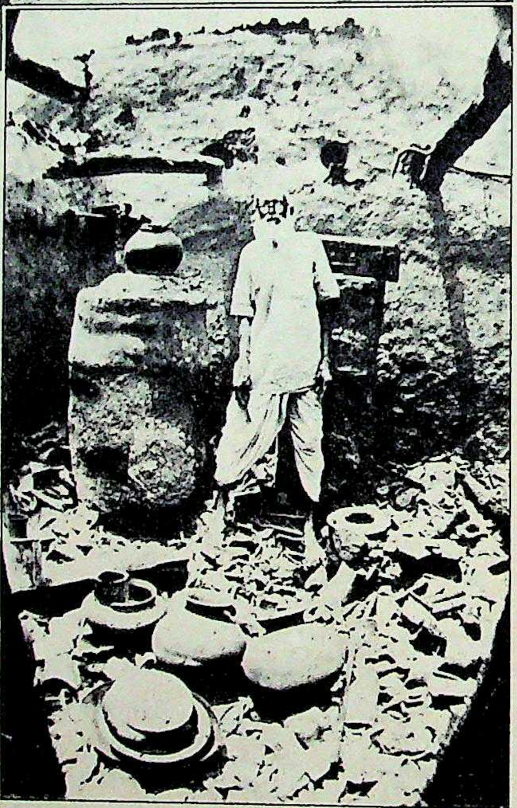

कर्फ्यू वाले इलाकों में पुलिस गश्त; दंगे के बाद अपने घर में एक व्यक्ति

संख्या में मुसलमान जमा हो गए. तभी किसी ने गोली दाग दी और तुरंत दंगा शुरू हो गया. पुलिस ने गोली चलाई जिससे तीन लोग मारे गए. मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा उसी रात विमान से भागलपुर पहुंचे लेकिन अगले दिन हालात और खराब हो गए. हिंसा में 13 लोगों की जानें जाने की वजह से सेना बुला ली गई और दंगाइयों देखते ही गोली मारने के आदेश दिए गए.

सीतामढ़ी में भी राम शिला शोभायात्रा की वजह से ही 23 अक्तूबर को हिंसा भड़की जिसमें 12 लोग जान से हाथ धो बैठे. जिला प्रशासन ने अक्षम्य भूल यह की कि उसने हिंदुओं को मुस्लिमबहुल इलाके से शोभायात्रा निकालने की अनुमति दी. मुसलमानों ने उस रास्ते से शोभायात्रा निकाले जाने पर हिंसा भड़कने की चेतावनी दी थी लेकिन उसे अनसुना कर दिया गया. यही नहीं, सांप्रदायिक तौर से संवेदनशील फतेहपुर गांव से पुलिस चौकी भी हटा ली गई.

ऐसे ही वाक़यात मधुबनी जिले में भी हुए. राम शिला यात्रा में शामिल भीड़ बेकाबू हो गई, उत्तेजक नारे लगे, मुसलमानों की तरफ से पत्थरबाजी हुई, हिंदुओं ने जवाबी हमला किया और पुलिस ने गोली चलाई.

निवारक कदम उठाने के बजाए प्रशासन ने हर जगह आग से खेलने की जहमत मोल ली. नतीजों की अनदेखी कर उसने राम शिला शोभायात्राओं में उत्तेजक नारे लगने दिए. 'हमें डर नहीं बाबर की संतानों का' जैसे नारे लगाए गए. 24 अक्तूबर को विमान से सीतामढ़ी आए केंद्रीय गृह राज्यमंत्री संतोष मोहन देव, वित्तमंत्री एस.बी. चव्हाण और इंका महासचिव ए.आर. मल्लू की केंद्रीय टीम से ग्रामीणों ने पुलिस द्वारा तत्परता से कार्रवाई न करने की शिकायत की. राम शिला शोभायात्राओं पर तुरंत पाबंदी लगाने की मांग करते हुए भाकपा सांसद और एटक के अध्यक्ष चतुरानन मिश्र ने कहा, "केवल इंकाशासित प्रदेशों में ही सांप्रदायिक हिंसा हो रही है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सुरक्षा रेमण्ड सीमेंट से मिले वह पीढ़ी दर पीढ़ी चले.

इसलिए चाहे आपका अपना घर हो या दफ़्तर या फिर कोई अन्य निर्माण कार्य, भरोसा कीजिए केवल रेमण्ड सीमेंट पर. क्योंकि रेमण्ड सीमेंट ठोस हैं

इसके फ़ायदे : उत्तम दबाव शक्ति (कम्प्रैसिव स्ट्रैंथ), जमाव का बढ़िया मानक, मज़बूत पैकिंग.

जी हां, रेमण्ड सीमेंट को बरसात, धूप और समय जैसी कुदरत की फौलादी शक्तियों से मुकाबला करने के लिए ही बनाया गया है.

याद रखिए, रेमण्ड सीमेंट के कण-कण में भरी है सर्वोत्तम सुरक्षा और सर्वोत्तम शक्ति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनिर्भर भारत का भविष्य है केमिकल्स के संग. और एच ओ सी निश्चय ही है कल का एक अंग.

एच ओ सी में भारतीय बुद्धिमत्ता की रचनात्मकता सक्रिय है. देश के केमिकल आधारों को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक तन मन से क्रियाशील हैं. व्यर्थ पदार्थों को धन में बदलने के बेहतर साधनों को विकसित कर रहे हैं. केमिकल्स निर्माण की वर्तमान पद्धति से कहीं अधिक उत्कृष्ट व उत्तम उपायों की खोज में हैं. ताकि आनेवाला कल अधिक सक्रिय, उज्ज्वल व गतिशील हो.

जो कार्य जवाहरलाल जी की कल्पनाओं को साकार करने के लिए एक छोटे से प्रयास के रूप मे प्रारम्भ हुआ था, वह आज केमिकल्स की दुनिया में मल्टीयूनिट, मल्टीटेक्नोलॉजी एन्टरप्राइज़ के रूप में खड़ा हमारा गौरव बढ़ा रहा है. रसायनी (महाराष्ट्र), कोचीन तथा हैदराबाद में आज इसके २० से भी अधिक प्लांट हैं.एच ओ सी अनेकानेक बढ़ते हुए उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण केमिकल्स का निर्माण करता है. ये उद्योग हैः संचार (परिवहन), अंतरिक्ष, डाइज़, ड्रग्ज़, व फार्मास्युटिकल्स, फर्टिलाइज़र्स (खाद), प्लाई/पल्पबोर्ड, कीटनाशक, प्लास्टिक, रबर, पेंट, लेमिनेट्स .... अनगिनित नाम हैं. लेकिन हर प्रयास, हर कदम में समाया है एक ही लक्ष्य - प्रगति के दृढ़ पथ पर बढ़ते हुए देश का उत्थान. एच ओ सी की प्रगति के बुनियादी आधार हैं उसके कर्मचारी. समर्पित, गतिशील, प्रतिबद्ध. एच ओ सी अपने इन आधार स्तंभो कि कद्र करता है. ये प्रगति व प्रवर्तन के प्रति पूर्ण समर्पित हैं. इनका केवल एक ही उद्देश्य है. वह है केमिकल्स का उत्पादन. और इसी ध्येय के साथ भारत के विकास तथा २१वीं सदी की हर मांग को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प है.

उत्पाद श्रेणी

टायर उद्योग
- एनिलिन • साइक्लो हेक्जाइल अमाइन
- नाइट्रोबेंजीन • पेरानाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- रिसोर्सीनोल

अंतरिक्ष अनुसंधान
- डाइ-नाइट्रोजन टेट्रोक्साइड (एन२ ओ४)
- ३, ३' - डाइनाइट्रो डाइफेनाइल सल्फोन
- हाइफ्लोन (पी टी एफ इ)

डाइस्टफ उद्योग
- एनिलिन • मोनोक्लोरोबेंजीन
- मेटा-डाइनाइट्रोबेंजीन • डाइक्लोरोबेंजीन्स
- नाइट्रोबेंजीन
- मेटा-नाइट्रोटोल्यून
- ऑर्थो-नाइट्रोटोल्यून
- पेरा-नाइट्रोटोल्यून
- ऑर्थो-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- पेरा-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन • फेनोल

ड्रग उद्योग
- एसेटामिलाइड • एनिलिन
- मेटा-अमिनो फेनोल • एसेटिक एनहाइड्राइड
- एसेटिक एसिड • एसेटोन
- मोनोक्लोरोबेंजीन • डाइक्लोरोबेंजीन्स
- फार्मलडिहाइड • मेटा-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- पेरा-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- पेरा-नाइट्रोटोल्यून • फेनोल

किटनाशक उद्योग
- मेटा-अमिनो फेनोल
- बुटेन-१, ४ डायल
- मोनो-क्लोरोबेंजीन
- ऑर्थो-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- पेरा-नाइट्रोक्लोरोबेंजीन
- मेटा-नाइट्रोटोल्यून • फेनोल

प्लास्टिक/रेज़िन/पेंट उद्योग
- एसेटोन • ३, ३' डाइमिनो डाइफेनाइल सल्फोन • फार्मलडिहाइड
- हाइफ्लोन (पी टी एफ इ) • फेनोल

सामान्य केमिकल्स
- हाइड्रोजन • कॉन्सन्ट्रेटेड नाइट्रिक एसिड ९८%
- ओलियम २०% • ओलियम २४%
- ओलियम ६५% • सल्फ्यूरिक एसिड ९८%

सह-उत्पाद
- एसेटिक एसिड (डाइल्यूट)
- कार्बन डाइऑक्साइड
- ३, ३' - डाइनाइट्रो डाइफेनाइल सल्फोन
- हाइड्रोक्लोरिक एसिड • आयरन स्लज
- फेनाइल साइक्लोहेक्जाइल अमाइन
- स्पेंट सल्फ्यूरिक एसिड ७०%
- सल्फाइट स्लज • सल्फर स्लज

JYESHTA-HOC-26/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

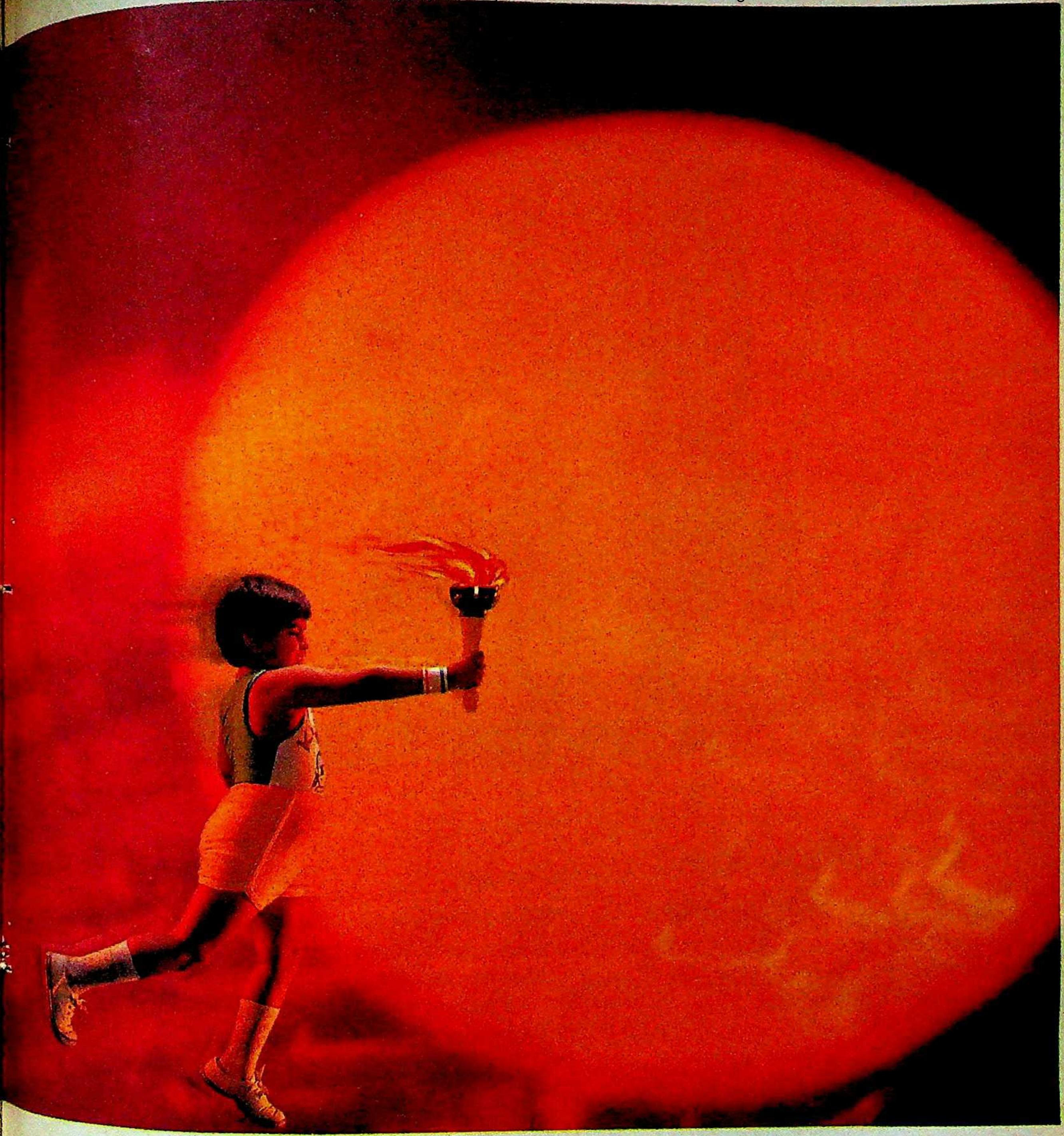

एच ओ सी

हिन्दुस्तान ऑर्गैनिक केमिकल्स लिमिटेड
(भारत सरकार का एक उद्यम)
रसायनी, जिल्हा रायगढ़, महाराष्ट्र ४१० २०७.

सर्वोच्च प्रगति का आधार – केमिकल्स.

"... अगर मैं अपनी बात दोहराऊं, तो यही कहूंगा, हमारी नीतियां अनिवार्य तौर पर जल्द से जल्द उत्पादन व रोजगार बढानेवाली होनी चाहिएं. ऐसा करते समय यह भी परम आवश्यक है कि सार्वजनिक क्षेत्र का अत्यंत तेजी से विकास हो".

– जवाहरलाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू जन्मशती
JAWAHARLAL NEHRU CENTENARY
1889 1989

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

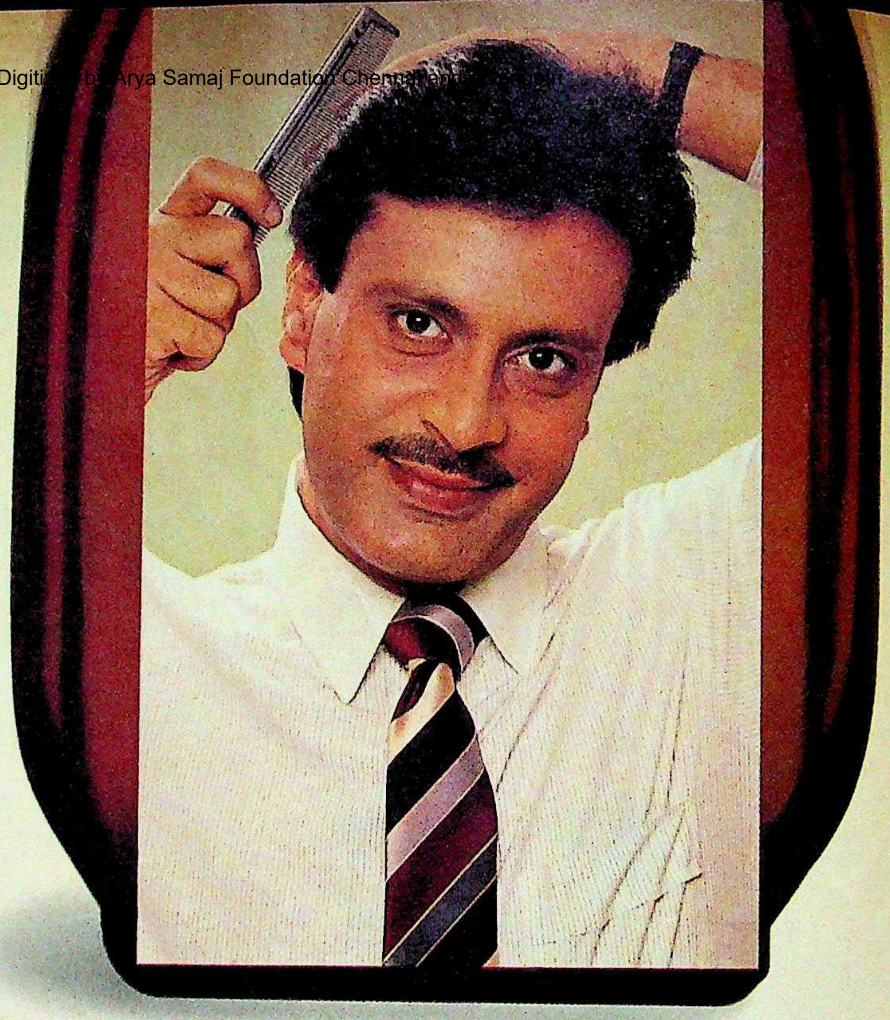

"अपने डॉक्टर से यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र से सचमुच बालों का झड़ना रुक जाता है।

लेकिन मुझे विश्वास तब हुआ जब मैंने इसका इस्तेमाल किया।"

"मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र*, व्यापक गवेषणा पर आधारित एक अपूर्व वैज्ञानिक फार्मूले से बना है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बालों की जड़ों को मज़बूत करनेवाले सभी आवश्यक प्रोटीन तत्व, को-एन्जाइम और विटामिन भी उपलब्ध करता है।

मैं तो बस यही कहना चाहता हूँ कि इसने मेरे बालों का झड़ना निश्चितरूप से रोक दिया है और साथ ही रूसी भी खत्म हो गई है।"

देखिए, गवेषणा-रिपोर्ट से उद्धृत एक अंश :

"सभी मामलों में रूसी के सम्पूर्ण खात्मे के साथ ६६.६६% मामलों में शानदार एवं ३३.३३% में बढ़िया नतीजा हासिल हुआ और बालों का झड़ना तो लगभग शत प्रतिशत रुक गया...इसलिए, यह कहा जा सकता है कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र की सफलता-दर शत प्रतिशत है।"

इंडियन मेडिकल गज़ट ११८ २२३ (१९८४)

बालों का झड़ना रोकने और रूसी खत्म करने का प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

* यह शृंगार सामग्री नहीं है।

Dey's® दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा।

TSA-C/DMHV/189/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर मुख्यमंत्री का कहना था कि जब देश के अन्य हिस्सों में राम शिला शोभा-यात्राओं की अनुमति है तो बिहार में उन पर पाबंदी लगाना संभव नहीं. उनका कहना था, "जब हमें किसी जुलूस के शांतिपूर्ण होने का आश्वासन दिया गया हो तो हम उस पर कैसे पाबंदी लगा सकते हैं? यह सही है कि सांप्रदायिक ताकतों ने फिर मुसीबत पैदा की है लेकिन हम उन पर अंकुश रखेंगे."

इसमें कोई शक नहीं कि राज्य सरकार आतंकवादी हिंसा के फिर जोड़ पकड़ने के तुरंत बाद सांप्रदायिकता के उभार से मुसीबत में पड़ गई. 14 अक्तूबर को मुख्यमंत्री ने दिल्ली के अखबारनवीसों को गर्व से सूचित किया था कि बिहार में अब नक्सलवादी हिंसा पर काबू पा लिया गया है.

अगले ही दिन सिन्हा का दावा गलत साबित हुआ. 15 अक्तूबर को नक्सलवादियों ने जहानाबाद जिले के सिकादिया गांव पर हमला किया. पार्टी यूनिटी नामक नक्सलवादियों के एक धड़े के चार सशस्त्र दस्ते गांव में घुसे. तीन दस्तों ने गांव को चारों ओर से घेर लिया. एक दस्ता कुंती देवी नामक महिला की झोंपड़ी पर पहुंचा. सशस्त्र नक्सलवादियों ने झोंपड़ी घेर ली और लोगों को आत्मसमर्पण करने को कहा. चार लोग बाहर आए लेकिन पांचवें व्यक्ति सहजानंद ने गोली चला दी. घुसपैठियों ने झोंपड़ी में आग लगा दी और जब सहजानंद दौड़ता हुआ बाहर भागा तो उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई. चार बंधकों में से दो तो भागने में सफल रहे लेकिन बाकी दो की गोली मारकर हत्या कर दी गई.

इस बार पुलिस सचमुच ही सोती पाई गई. बिहार सशस्त्र पुलिस के जवान सिकादिया गांव की पुलिस चौकी पर दोपहर की नींद ले रहे थे और उग्रवादी ग्रामीणों की हत्याएं कर रहे थे.

मारे गए सभी लोग मजदूर किसान संग्राम समिति के सदस्य थे. इस गुट से पार्टी यूनिटी की प्रतिद्वंद्विता के चलते पहले ही कई जानें जा चुकी हैं. जाहिर है जहानाबाद की हत्याएं दोनों गुटों में आगे खूनखराबे का संकेत हैं. संग्राम समिति के अध्यक्ष डॉ. विनयन ने भी एक पत्रकार वार्ता में आरोप लगाया कि पार्टी यूनिटी गुट उन लोगों का सफाया कर रहा है जो उनका साथ छोड़ कर संग्राम समिति में शामिल हो गए हैं.

इस बढ़ती हिंसा का ताल्लुक आम चुनावों से भी है. नेता समुदायों के ध्रुवीकरण और वोट हासिल करने के लिए बेशर्मी से सांप्रदायिक राजनीति का खेल खेल रहे हैं. चुनावी जंग के इस शोरशराबे में लगता नहीं कि बिहार को नवंबर में भी राहत मिल पाएगी.

—उत्तम सेनगुप्त

मध्य प्रदेश

हैरतअंगेज हरकत

नियुक्तियों में दोहरे मानदंड

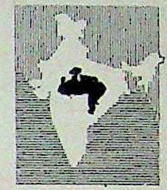

हैरतअंगेज हरकतें मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा के स्वभाव में नहीं हैं. पर पिछले पखवाड़े नए मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक के नामों की घोषणा करके उन्होंने राज्य के आईपीएस और आईएएस अधिकारियों में सनसनी फैला दी.

राज्य के वरिष्ठतम आईएएस अफसर होने के नाते मुख्य सचिव राम सिंह खन्ना की नियुक्ति पूरी तरह अप्रत्याशित नहीं थी.

फोटो: आर.सी.साहू

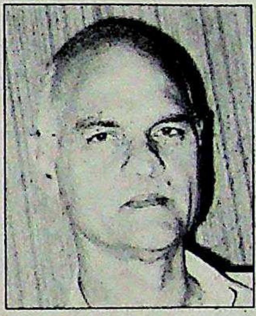

सुरेंद्र विक्रम सिंह (बाएं); और मालवीयः हित टकराए

> **आठ महानिदेशकों की वरीयता लांघकर पुलिस महानिदेशक बनाए गए मालवीय की नियुक्ति से कुछ ज्यादा ही असंतोष फैला है**

वैसे भी वे दो महीने बाद रिटायर होने वाले हैं. लेकिन पुलिस महानिदेशक के पद पर प्रेमधर मालवीय के चयन से राज्य पुलिस में खलबली मच गई है. एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा भी, "उनकी नियुक्ति की किसी को उम्मीद नहीं थी."

लगता है इन दो महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां करते समय मुख्यमंत्री ने दोहरे मानदंड अपनाए हैं. मुख्य सचिव का चयन तो वरिष्ठता के आधार पर किया गया लेकिन 1957 बैच के आईपीएस अफसर मालवीय को 1956 बैच के तीन और उनके अपने ही बैच के एक अधिकारी की वरीयता लांघकर पुलिस महानिदेशक बनाया गया है. मध्य प्रदेश पुलिस आवास निगम के अध्यक्ष और 1955 बैच के सुरेंद्र विक्रम सिंह ने तो इस सिलसिले में राज्य सरकार से विरोध भी प्रकट किया है. जाहिर है कि यह चयन करते समय दूसरी कई बातें भी ध्यान में रखी गईं.

पुलिस महानिदेशक का चयन निश्चय ही मुख्यमंत्री के अधिकार क्षेत्र में आता है, फिर भी मालवीय के मामले को अनोखा माना जा रहा है. अब तक सरकार बराबर के अधिकारियों में से ही महानिदेशक पद का चयन किया करती थी. भले ही एक की जगह दूसरे अफसर को लाना हो. मसलन, अपने पिछले कार्यकाल के दौरान वोरा ने अर्जुन सिंह द्वारा नियुक्त बी.के. मुकर्जी को हटाकर उसी रैंक के एम. नटराजन को नियुक्त किया था. पिछले साल जब अर्जुन सिंह सत्ता में लौटे तो नटराजन को हटाकर फिर मुकर्जी को पदासीन कर दिया. वोरा फिर मुकर्जी की जगह नटराजन को ले आए.

मालवीय की नियुक्ति से अधिक ही असंतोष फैला है क्योंकि कनिष्ठ अधिकारी को पुलिस महानिदेशक बनाकर सरकार ने पुरानी परंपरा को तोड़ा है. विभागीय प्रमुख बनने से पहले मालवीय महज महानिरीक्षक थे जबकि विभाग में महानिदेशक रैंक के आठ अधिकारी मौजूद थे.

जिन अधिकारियों की वरीयता का उल्लंघन किया गया उनमें से अधिकांश काबिल माने जाते हैं, खासकर धर्मनारायण आहूजा (1955 बैच) और सतीशचंद्र विद्यार्थी (1957 बैच). वोरा ने बेहद काबिल अधिकारी मुहम्मद कुरैशी (1956 बैच) के दावे की भी अनदेखी कर दी. उन्हें केंद्रीय गृह मंत्रालय में विशेष सचिव नियुक्त किया गया है.

मालवीय की पदोन्नति की वजहें अभी अस्पष्ट नहीं हैं. लेकिन इसी पद के दावेदार कुछ आईपीएस अधिकारियों का आरोप है कि वोरा अपने समुदाय के लोगों की तरफदारी करते आए हैं और इसी के चलते राज्य में सभी महत्वपूर्ण पदों पर ब्राह्मण अधिकारी विराजमान हैं. दूसरे लोगों का मानना है कि मालवीय एक ईमानदार अधिकारी हैं. सचाई जो भी हो पर एक परंपरा को बिना किसी वजह के तोड़ दिया गया.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

किताबें और बंदूक

इलाहाबाद विवि में अराजकता

एस.के. यादव

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में किताबों के साथ-साथ बंदूक भी मानो पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गई है. यहां के कुलपति बहीउद्दीन मलिक ने एक अनोखी निजी सेना बनाई है. इसे नाम दिया गया है—इलाहाबाद विश्वविद्यालय सुरक्षा बल (इविसुब) हाल ही में छात्रों और अध्यापकों ने इस विवादास्पद सुरक्षा बल के खिलाफ अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू की है (विश्वविद्यालय में हड़ताल दस वर्षों के बाद हुई). उनका आरोप है कि यह सुरक्षा बल कुलपति का विरोध करने वालों को 'सबक' सिखाने का काम करता है. कहने को इसका गठन विश्वविद्यालय के कुछ उच्च प्रशासकों की सुरक्षा के लिए किया गया है.

मलिक ने इस सुरक्षा बल का गठन फरवरी 1988 में तीस नए और पुराने छात्रों को मिलाकर किया था. इनमें से पांच को वरिष्ठ सुरक्षा कर्मचारी बनाया गया, बाकी को कनिष्ठ सुरक्षा कर्मचारी. वरिष्ठ सुरक्षा कर्मचारियों को 1000 रु. प्रति माह दिये जाते हैं और कनिष्ठ को 750 रु.. सुरक्षा बल के गठन के पक्ष में मलिक की दलील है, "वे मुझे काम ही नहीं करने देते थे और पुलिस मेरी मदद को कभी नहीं आती थी." लेकिन उनके इस तर्क से विश्वविद्यालय का शायद ही कोई व्यक्ति सहमत हो. ज्यादातर लोगों का तो यही मानना है कि विश्वविद्यालय में आपराधिक गतिविधियों के लिए यही सुरक्षा बल जिम्मेदार है. जंतु-विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष यू.एस. श्रीवास्तव का, जो फिलहाल विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य हैं, कहना है, "कुलपति के इन सैनिकों के डर से तो हम कार्यकारिणी की बैठकों में भाग लेने से भी डरते हैं. पहले ऐसा माहौल नहीं था."

असलियत यह है कि यह सुरक्षा बल पिछले साल हुई कई वारदातों में शामिल रहा. लेकिन इसका विरोध तब शुरू हुआ जब 16 मार्च 1988 को सुंदरलाल छात्रावास के अधीक्षक पी.एन. पांडेय पर हमला हुआ. हमलावरों की शिनाख्त करने पर दो व्यक्ति इस सुरक्षा बल के सदस्य पाए गए. इसके थोड़े ही दिन बाद 3 अप्रैल को इस बल का एक सदस्य गाजीपुर में पुलिस मुठभेड़ में मारा गया. फिर 16 मई को

कुलपति की निजी सेना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन; (नीचे) मलिक

विरोध प्रदर्शनों के बाद लगातार यह आरोप लगा कि विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने विरोधियों को दबाने के लिए यह सुरक्षा बल गठित किया है

विजय अग्रवाल

जी.एन. झा छात्रावास के अधीक्षक के.एम. शर्मा को इस सुरक्षा बल के कुछ लोगों ने पीट डाला. थोड़े दिनों बाद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक मनीष देव की बेटी के साथ इस बल के कुछ लोगों ने छेड़खानी की. छात्र संघ के पूर्व महासचिव प्रभाकर भट्ट, जिन्होंने लड़की को बचाने की कोशिश की थी, कहते हैं, "मैंने उन्हें तुरंत पहचान लिया था कि वे इस बल के सदस्य ही थे. जब मैंने उनसे लड़की को छोड़ देने को कहा तो उन्होंने मेरी तरफ गोली चला दी." विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने जब राज्य के गृहमंत्री को पत्र लिखकर मामले की सीआईडी द्वारा जांच कराने की मांग की तो उनके साथ गाली-गलौज करके उन्हें धमकाया गया. तत्कालीन मुख्यमंत्री बीरबहादुर सिंह जब इलाहाबाद के दौरे पर आए तो इस सुरक्षा बल के खिलाफ विरोध जताने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल उनसे मिला, लेकिन इस सुरक्षा बल के लोगों ने इस प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों पर इलाहाबाद जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस अधीक्षक के सामने ही हमला कर दिया.

हालांकि विश्वविद्यालय में इस सुरक्षा बल के खिलाफ हवा बहुत दिनों से थी लेकिन हड़ताल की तात्कालिक वजह थी 9 सितंबर को हुई कार्यकारिणी की बैठक. इसमें अवैध हथियारों से लैस इस सुरक्षा बल के लोगों ने कार्यकारिणी के उन सदस्यों के साथ गाली-गलौज करके उन्हें धमकाया, जिन्होंने मलिक का विरोध करने का साहस किया था. इसके अलावा यह आरोप भी है कि सुरक्षा बल के सदस्यों ने कार्यकारिणी के कमरे में घुसकर पूर्व विधायक और केंद्रीय मंत्री राजेंद्र कुमारी बाजपेयी के बेटे अशोक बाजपेयी पर हमला करने की कोशिश की. अशोक की गलती यह थी कि उन्होंने मलिक से इस सुरक्षा बल पर खर्च किए जा रहे पैसे का ब्यौरा मांगा था. कुछ प्राध्यापकों ने घुसपैठ कर रहे सुरक्षा बल के लोगों को रोका. बैठक खत्म होने के बाद अशोक और उनके एक साथी श्याम पांडेय किसी तरह भाग निकले. अशोक कहते हैं, "हम दोनों पर कभी भी हमला हो सकता था."

अगले दिन बैठक जब दोबारा शुरू हुई तो बी.के. त्रिपाठी ने, जो प्राध्यापक होने के अलावा कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं, कुलपति से एक प्रतिवेदन का जवाब देने को कहा. उनका इतना कहना था कि सुरक्षा बल के लोगों ने त्रिपाठी को उठाकर कमरे से बाहर फेंक दिया. कार्यकारिणी के बाकी सदस्य असहाय से यह देखते रहे. तभी अपने बंदूकधारी समर्थकों के साथ पांडेय और अशोक वहां आ पहुंचे. मलिक के साथ उनकी लंबी झड़प चली. अंततः कुलपति को बैठक स्थगित करनी पड़ी.

अब छात्र, अध्यापक और कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोविनो गोल्ड दो के पैक में भरी शक्ति चार की !

नोविनो पेनलाइट बैटरियों के क्षेत्र में एक नए युग का प्रारंभ करता है... नोविनो गोल्ड के साथ. ज़िंक क्लोराइड की नवीनतम तकनीक से बनी बैटरी. इसमें परम्परागत पेनलाइट बैटरियों से दुगनी शक्ति है.

ज़्यादा शक्ति की ख़पत वाले उपकरणों, कैमरे, वॉकमैन, इलेक्ट्रॉनिक खिलौने, डिक्टोफ़ोन आदि में इसे इस्तेमाल कीजिए. आप पाएंगे कि नोविनो गोल्ड दुगना चलती है. इतना ही नहीं, कैमरा फ़्लैश में, उदाहरणार्थ, आपको ११० फ़्लैश मिलते हैं, सिर्फ़ ५० नहीं.

ज़ोरदार ख़बर, लीक का नहीं डर !

अब आप अपने मँहगे उपकरण खराब होने की चिंता से छुट्टी पा सकते हैं. बैटरी डालिए और निश्चिंत हो जाइए. नोविनो गोल्ड प्रायः १०० % लीकप्रूफ है. यही एकमात्र पेनलाइट बैटरी है जिसकी मैटल जैकट और वन-पीस थर्मो प्लास्टिक सील है. लीकप्रूफ होने के गुणों के कारण यह ज़्यादा शक्ति की ख़पत वाले व कम शक्ति की ख़पत वाले, दोनों ही प्रकार के उपकरणों के लिए आदर्श है (जैसे कैल्कूलेटर, घड़ियां, पॉकेट रेडियो, हियरिंग ऐड आदि)

सिर्फ़ नोविनो ही कर सकता है ऐसा कमाल !

पहले हमने प्रस्तुत की नोविनो हाइपर और नोविनो स्पेशल. अन्य के मुकाबले दोनों ही आगे थीं और अब पेश है नोविनो गोल्ड.

आप तक नोविनो गोल्ड पहुंचाने के लिए हम जापान तक गए ताकि वहाँ विश्व प्रख्यात नेशनल और पेनासॉनिक उत्पादनों के निर्माता मात्सुशिता से नवीनतम ज़िंक क्लोराइड टेक्नॉलॉजी हासिल कर सकें.

हमने इंदौर के पास रु. १६ करोड़ लागत वाला नया संयंत्र भी स्थापित किया.

हमने कोशिशों में कोई कसर नहीं छोड़ी.

हमने लागत की भी परवाहं नहीं की.

उसी का नतीजा है कि आज हम आपको ऐसी बेमिसाल पेनलाइट बैटरी दे सके.

नोविनो गोल्ड अपनाइए.

National नोविनो गोल्ड

पे न ला इ ट

टेक्नॉलॉजी की सही विजय

लखनपाल नेशनल लिमिटेड,

नोविनो हाइपर, नोविनो स्पेशल और नोविनो गोल्ड के निर्माता.

Sista's-LNL-228/89-A HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिछले दशक में ही सिर्फ लोहा निर्माण के क्षेत्र में हमने ऊर्जा के रूप में १०० करोड़ रु. की बचत की है।"

यदि श्री एल. एम. चटर्जी, ब्लास्ट फर्नेस के डिविजनल मैनेजर को अपनी कम्पनी की उपलब्धि पर गर्व है तो शायद यह स्वाभाविक ही है।

ज्यों ज्यों दुनिया का ऊर्जा भण्डार तेजी से खत्म होता जा रहा है, ऊर्जा का मूल्य भी सातवें आसमान तक पहुँचने लगा है। इसलिये सारी दुनिया के विभिन्न शिल्पोद्योग अधिक से अधिक ऊर्जा की बचत करने के लिये हर सम्भव उपाय ढूँढ़ निकालने में संलग्न हैं।

भारत में जहाँ उच्चकोटि के लौह अयस्क भारी परिमाण में मौजूद हैं, वहाँ उसे लोहे का रूप देने के लिये कोकिंग कोयला उपलब्ध नहीं। इस संदर्भ में देश के कच्चे मालों को बचाने वाला संरक्षण कार्यक्रम अत्यन्त आवश्यक है। और इसलिये इस्पात कारखाने में ऊर्जा-प्रबंधन कितना महत्वपूर्ण है यह बताने की ज़रूरत नहीं है।

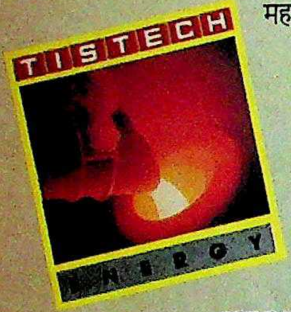

वास्तव में टाटा स्टील तकनीक या टिस्टेक इस क्षेत्र में अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

सिर्फ लौह निर्माण करने वाले जहाँ ६५ प्रतिशत ऊर्जा खर्च करते हैं वहाँ अधिक से अधिक ऊर्जा-संरक्षण निर्धारित करने के लिये विभिन्न उपायों का एक सिलसिला अपनाया गया।

कोक-अवन में बेहतर ताप नियंत्रण, ईंधन-हवा के अनुपात में उत्तम प्रबन्ध होने के कारण जहाँ कोक की क्वालिटी में उन्नति हुई, वहीं ऊर्जा में भारी बचत भी।

ब्लास्ट फर्नेस में वेरियेबल थ्रोट आर्मर और रोटेटिंग श्यूट् चालू होने से कोक के खर्च में भारी कमी आई। बेहतर कोक के उत्पादन, सिन्टर के अनुपात में वृद्धि तथा ब्लास्ट की उच्चतर तापमात्रा आदि से ऊर्जा बचत में उल्लेखनीय मदद मिली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज, बढ़िया कोक उत्पादन के लिये स्टैम्प चार्जिंग तकनीक का प्रयोग तथा सिन्टर की तैयारी में ब्लू डस्ट के उपयोग में उन्नत प्रक्रिया का मतलब प्रासंगिक ऊर्जा प्रबन्ध कार्यक्रम में टिस्टेक की शानदार सफलता। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके अन्तर्गत खनन-कार्य से लेकर इस्पात निर्माण और उसकी अन्य प्रक्रिया शामिल है। ऐसा कार्यक्रम जिसमें टाटा स्टील का हर कामगार संलग्न है। ऐसा कार्यक्रम जो आने वाले वर्षों में राष्ट्र के राजस्व में करोड़ों रुपये भरेगा।

सिर्फ मशीन और प्रक्रिया ही नहीं, टिस्टेक, चेतना पर भी असर करता है। लम्बी-अवधि ऊर्जा प्रबन्ध नीति को सफल बनाने के लिये लोगों के मन को भी असल विषयों के बारे में सचेत रखना चाहिये। आज, कोलियरी में काम करने वाले सिर्फ 'टन' की ही बात नहीं करते, वे 'ऊर्जा मूल्य' और 'राख की मात्रा' जैसे विषयों की भी चर्चा करते पाये जाते हैं। अब ब्लास्ट फर्नेसों के कर्मी 'कैलोरी' के बारे में दिलचस्पी ले रहे हैं, दूसरे शब्दों में एक सम्पूर्ण नई भावना टाटा स्टील में काम कर रही है।

टिस्टेक ऊर्जा, स्टील प्लान्टों के ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एक मार्गदर्शक प्रयास—जिसका लक्ष्य है एक प्रासंगिक तकनीक का उद्भावन, एक आधुनिक प्रगतिशील धारणा का प्रसारण। आने वाले कल के प्रयोजन को न भूल कर आज के जमाने की आवश्यकताओं को पूरा करने के वायदों का एक और नाम है—टिस्टेक!

- **गरम ब्लास्ट के तापमान में १००° सेन्टीग्रेड वृद्धि के दौरान कोक के उपयोग में कटौती।**
- **केवल लोहा निर्माण में ऊर्जा के रूप में १०० करोड़ रुपये की बचत।**
- **कोक की दर में कमी के लिये रोटेटिंग श्यूट् और वेरियेबल थ्रोट आर्मर चालू।**
- **ब्लास्ट फर्नेसों में बढ़िया कोक प्रयोग के लिये स्टैम्प चार्जिंग तकनीक जारी।**

टाटा स्टील
सबसे पहले सबसे आगे

ब्लास्ट फर्नेस की एक बाहरी झलक

एक ब्लास्ट फर्नेस में रोटेटिंग श्यूट्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

oundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहम्मद उस्मान आरिफ के, जो राज्यपाल होने के नाते विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं, पास अपनी शिकायत दर्ज करवाई है. जवाब में सरकार ने मामले की जांच शुरू कराई है और इस सुरक्षा बल को भंग करने का आदेश दिया है. लेकिन सरकार का विरोध करने को कटिबद्ध दिखते मलिक का कहना है, "यदि सरकार मुझे सुरक्षा प्रदान करे तो मैं सुरक्षा बल को भंग करने को तैयार हूं. लेकिन जब तक सरकार बंदूकधारियों को लाकर कार्यकारिणी की बैठकं में बाधा डालने वालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करती, मैं उसकी बात नहीं सुनूंगा."

लेकिन मलिक के इस तेवर के बावजूद स्थिति यह है कि विश्वविद्यालय के ज्यादातर प्राध्यापक इस सुरक्षा बल के खिलाफ हैं. वरिष्ठ प्राध्यापक रंजना कक्कड़ कहती हैं, "कमांडो फोर्स को तो खत्म करना ही पड़ेगा. लेकिन इसके साथ-साथ उन बाहरी तत्वों पर रोक लगाना भी जरूरी है जो कैंपस में अपराध फैला रहे हैं." अध्यापकों, छात्रों और कर्मचारियों की यूनियनों ने एक संयुक्त परिषद बनाई है जिसने 16 सितंबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू कर दी. परिषद के महासचिव डी.एन. श्रीवास्तव कहते हैं, "शायद ही कोई ऐसा प्राध्यापक छात्र या कर्मचारी नेता होगा जिसे, सुरक्षा बल ने परेशान न किया हो. मैं खुद भी भुगत चुका हूं."

हालांकि विश्वविद्यालय के ज्यादातर लोग इस बल के सख्त विरोधी हैं लेकिन कुछ प्राध्यापकों को इसका फायदा भी नजर आता है. मसलन, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष एस.सी. श्रीवास्तव का कहना है, "मलिक ने जब कुलपति का कार्यभार संभाला तो कुछ निहित स्वार्थ उनके खिलाफ थे." कुलपति के समर्थकों का आरोप है कि जब अप्रैल 1987 में उन्होंने कार्यभार संभाला तो कर्मचारियों और छात्रों ने करीब चार बार उन पर हमला किया. इससे भी ज्यादा गंभीर बात यह कि पुलिस से सहायता मिलनी तो दूर, उसने मामले की रिपोर्ट दर्ज करने से भी इनकार कर दिया. कार्यकारिणी के सदस्य विजय कुमार सिन्हा के अनुसार, "इस सुरक्षा बल के बिना मलिक पांच मिनट भी काम नहीं कर सकते."

विश्वविद्यालय सुरक्षा बल को भंग करने का मुद्दा और उसे लेकर चल रही हड़ताल ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय को अराजकता के दौर में पहुंचा दिया है. 'पूरब का ऑक्सफोर्ड' कहे जाने वाले इस विश्वविद्यालय की गरिमा यदि बचाए रखनी है तो इस विवाद का जल्दी ही कोई न कोई हल खोजना होगा.

—दिलीप अवस्थी

बंबई

छवि पर कालिख

बंबई के एल्फिस्टन कॉलेज के पुराने छात्रों की फेहरिस्त में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कई धुरंधरों के नाम दर्ज हैं. इतने शानदार अतीत वाले इस 130 साल पुराने कॉलेज को आज इतने बुरे दिन भी देखने थे. पिछले पखवाड़े इस कॉलेज को एक आईएएस अधिकारी की पुत्री के, जो कि इस कॉलेज की छात्रा है, साथ सामूहिक बलात्कार कांड का अपमान झेलना पड़ा.

यह हादसा तब हुआ जब क्लास वगैरह खत्म होने के बाद छात्रों का एक समूह वहां एक पार्टी में भाग ले रहा था. यह पार्टी बी.ए. के छात्र और विधान परिषद के पूर्व सदस्य माधव धैगुड़े पाटील के बेटे अविनाश पाटील के बंबई विश्वविद्यालय छात्र संघ में प्रतिनिधि निर्वाचित होने के उपलक्ष्य में दी जा रही थी.

खबरों के अनुसार वहां मौजूद कुछ लड़कियों के चले जाने के बाद पार्टी हुड़दंग में बदल गई. पर एक लड़की बदकिस्मती से वहीं रह गई थी. कहा जाता है कि अविनाश व कुछ दूसरे लड़के उसे एक कमरे में ले गए जहां उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया. खून के धब्बों से सनी अपनी स्कर्ट संभाले वह लड़की चौकीदार के क्वार्टर में पहुंची, जिसने प्राचार्य एस.वी. घोलकर को खबर की. घोलकर ने लड़की के पिता को टेलीफोन किया, जो आकर अपनी सुबकती बेटी को वहां से ले गए.

हादसे के 10 दिन से ज्यादा गुजर गए हैं पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है क्योंकि प्राचार्य और लड़के के पिता इस वारदात को कबूल नहीं करते. कहा जाता है लड़की को बेहोश करके बंबई के बाहर भेज दिया गया. लेकिन अखबार में खबर छपने के कई दिन बाद तक अविनाश छात्रावास में दिखाई पड़ता रहा. बल्कि एक इंटरव्यू में उसने कहा, "एक बार फिर मैं यह कह रहा हूं कि हमने कोई बलात्कार नहीं किया." इसके बाद वह कहीं मिल नहीं सका पर जब उसके पिता से संपर्क किया गया तो उन्होंने यह कहते हुए किसी भी टिप्पणी से इनकार कर दिया कि "इंतजार कीजिए और देखिए क्या होता है."

फावशान एच.

हादसे की खबर जब लोगों तक पहुंची तो न्यायमूर्ति एच.एन. सीरवई और राजनैतिक टीकाकार मीनू मसानी की अगुआई में पुराने छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल घोलकर से मिला और मामले की जांच की मांग की. इसके बाद मामले में घोलकर की भूमिका की आलोचना भी शुरू हुई. पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने बलात्कार की घटना से इनकार किया. और तो और, उन्होंने अविनाश पर शराब पीने और हिंसक व्यवहार करने के पुराने आरोपों को भी गलत बताया. मसानी कहते हैं, "प्राचार्य का रवैया मुझे अच्छा नहीं लगा."

कॉलेज के लड़के सड़कों पर उतर आए. उनके बैनर पर लिखा था "घोलकर झूठे हैं, अविनाश बलात्कारी है." वे संयुक्त पुलिस आयुक्त अरविंद ईनामदार से मिले जिन्होंने मामले की जांच का आदेश दे दिया. इस मुद्दे को महिला संगठनों ने भी उठाया और रोज मोर्चा

शैलेंद्र पशवंत

(ऊपर) घोलकर; अविनाश; और प्रदर्शनकारी छात्राएं: खुला विरोध

निकलना शुरू हुआ तो परीक्षाएं स्थगित करनी पड़ी.

घोलकर कुछ नहीं बोल रहे पर यह स्पष्ट है कि एक प्रतिष्ठित संस्थान की छवि को अपूरणीय क्षति पहुंची है.

—एम. रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी साहित्य सम्मेलन

बदहाली का आईना

अधिवेशन पर ठंडेपन, उदासीनता और नीरसता की परत चढ़ी रही

पिछले पखवाड़े नई दिल्ली में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) का 44वां अधिवेशन लगभग हर मायने में हिंदी की मौजूदा हालत का आईना था. उत्तरी भारत के हिंदीभाषी इलाकों के अलावा लगभग सभी अहिंदीभाषी राज्यों से आए प्रतिनिधि इस बात का सबूत थे कि हिंदी का प्रभाव क्षेत्र अब बहुत दूर तक फैल चुका है—उन क्षेत्रों तक भी जो किसी जमाने में हिंदी विरोध के गढ़ हुआ करते थे. लेकिन इसके साथ ही अधिवेशन में व्याप्त अव्यवस्था, हिंदी से जुड़े मुद्दों पर चर्चा के बजाय मान-सम्मान तथा कुर्सियों पर काबिज रहने की शतरंज यह भी दिखाने के लिए काफी थी कि हिंदी किस तरह के दुष्चक्र में फंसकर कदमताल करने पर मजबूर हो चुकी है.

'हिंदी माता' की स्तुति में पेश की गई नीरस कविताओं और ढीले-ढाले भाषणों वाले इस सम्मेलन पर कसे हुए उदासीनता के शिकंजे का हाल यह था कि दो दिन की कार्यवाही के दौरान एक भी मौका ऐसा नहीं आया जब किसी वक्ता ने हिंदी के प्रति सरकारी उपेक्षा, हिंदी साहित्य और प्रकाशन से जुड़े सवालों या फिर हिंदी पाठक की अपेक्षाओं के किसी भी पक्ष पर सार्थक बहस शुरू करने की कोशिश की हो.

वातावरण पर छायी इस उदासीनता को इस मायने में स्वाभाविक ही मानना होगा कि देश के कोने-कोने से आए लगभग 400 प्रतिनिधियों में से तीन-चौथाई से अधिक लोग 50 से ऊपर की उम्र वाले वे लोग थे जिन्होंने किसी जमाने में हिंदी की लड़ाई आजादी की लड़ाई मानकर लड़ी थी.

लेकिन आयोजन पर शुरू से अंत तक छायी अव्यवस्था से नाराज उन प्रतिनिधियों की संख्या भी अच्छी-खासी थी जो सम्मेलन में किसी सार्थक बहस या हिंदी के विकास के लिए किसी रचनात्मक कार्यक्रम की उम्मीद लेकर आए थे. जयपुर से आए वरिष्ठ हिंदी विद्वान डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय (60) की नाराजगी भरी टिप्पणी थी, "हिंदी के प्रति हम लोगों की श्रद्धा का यहां कुछ खास लोगों की दुकानदारी चलाने के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है. यहां भाषणबाजी बहुत हुई. लेकिन हिंदी की चर्चा करने की फुरसत किसी के पास नहीं थी."

प्रतिनिधियों की इस शिकायत को जायज ठहराने में सम्मेलन के 'प्रधानमंत्री' प्रभात शास्त्री समेत सभी आयोजकों ने कोई कसर नहीं छोड़ी. केंद्रीय मंत्री हरकिशन-लाल भगत को लिवाने के चक्कर में जिस तरह शास्त्री अधिवेशन से गायब रहे और सिर्फ इसी वजह से पहले सत्र को घंटे भर रुकवाए रखा गया, वह आयोजकों की राजनैतिक मोहताजी का अच्छा-खासा उदाहरण था. उसके बाद जिस तरह मंच पर सभापति रामेश्वर अंचल तथा शास्त्री के बीच एक दूसरे की कुर्सी पर बैठने का खेल चला, वह हिंदी सम्मेलन के भीतर पदों के लिए चलने वाली राजनीति का एक हास्यास्पद मगर सटीक नमूना था. अधिवेशन में हुई देरी के बावजूद जिस तरह नामजद सभापति डॉ. विजयेंद्र स्नातक के नाम का 'समर्थन' करने के लिए एक के बाद एक लगातार 22 अधिकारियों के वक्तव्य दिलाए गए वह हिंदी में चलने वाली व्यक्तिवादी और सस्ते तुष्टीकरण की मानसिकता को उघाड़ने के लिए काफी था.

साहित्य सम्मेलन में कुर्सियों को लेकर चलने वाली राजनीति में खींचतान का सबसे बड़ा मुद्दा 'हिंदी विश्वविद्यालय' की प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, वैद्य, कृषि, संपादन कला और विशारद जैसी वे परीक्षाएं हैं जिनमें हर साल एक लाख से ज्यादा लोग बैठते हैं. पढ़ाई, वैद्यक प्रशिक्षण और दूसरी मूलभूत सुविधाएं न होने के बावजूद सम्मेलन पिछले 25 साल के दौरान 10 लाख लोगों को अपनी डिग्रियां बांट चुका है. वैद्य की डिग्री पाने वाले कई लोग तो इसके बूते पर आरएमपी के रूप में अपनी डॉक्टरी भी चला रहे हैं.

अधिवेशन मंचः राजनीति का अखाड़ा

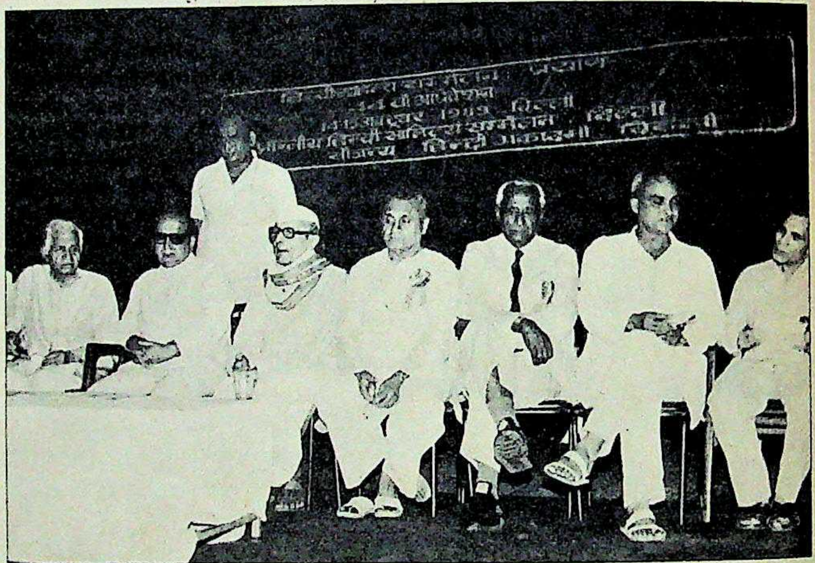

हरीश वन्त

> **हिंदी के नाम पर हुए अधिवेशन में भाषणबाजी तो बहुत हुई पर हिंदी के हाल पर चर्चा की फुरसत किसी को नहीं थी**

इस बारे में प्रतिनिधियों में व्याप्त असंतोष को स्वर देते हुए बरेली से आए प्राध्यापक सत्यप्रकाश का कहना था, "हम लोग कई सवालों पर बहस कराए जाने के पक्ष में थे. लेकिन सम्मेलन पर कब्जा जमाए लोगों ने उद्घाटन, महाभारत और पुरस्कार समारोह के लंबे भाषणों के बाद इतना समय भी नहीं छोड़ा कि हिंदी के बारे में भी बात की जा सके. मैं तो यह सवाल भी नहीं उठा पाया कि जिस सरकारी बारात घर में हम 400 लोगों को ठूंस दिया गया था, वहां मंजन करने के लिए लोटा भर पानी भी नहीं था."

और इस तरह हिंदी के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन इस सवाल का एक सटीक जवाब दे गया कि हिंदी के विकास में असली रुकावटें कहां हैं.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

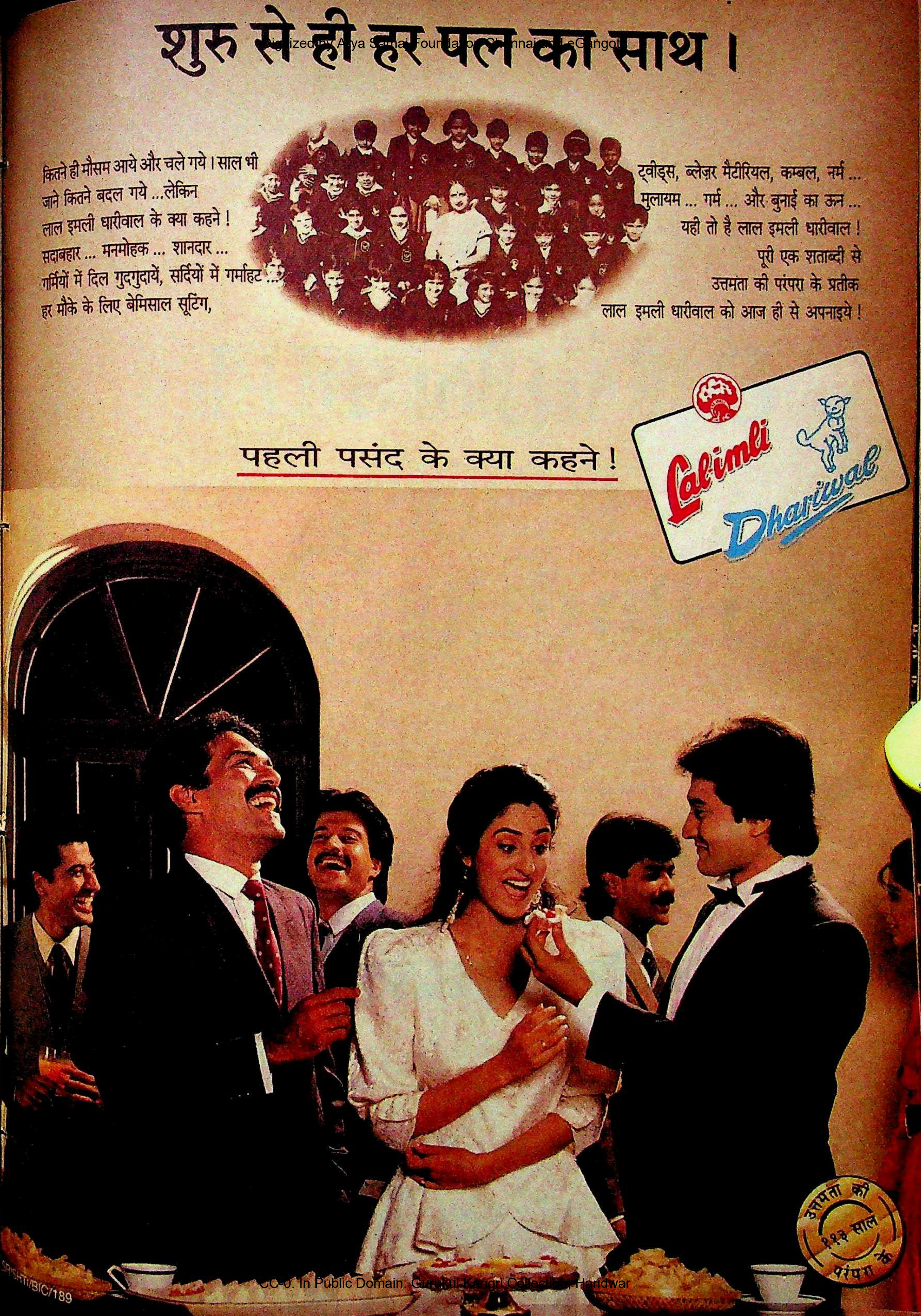

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोयोटा के अग्रणी होने का राज़...

निप्पोन डेनरो इस्पात पेश करते हैं मोटर कार उत्तम श्रेणी का कोल

भारतीय मोटर-कार निर्माताओं को अभी तक विश्व स्तर के कोल्ड रोल्ड स्टील की कमी के कारण जितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, उन सभी का अन्त अब करीब है।

वे अब अपने उत्पादन की क्षमता व क्वालिटी बखूबी बढ़ा सकते हैं। क्योंकि निप्पोन डेनरो इस्पात लि. अब भारत में लाये हैं पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का कोल्ड रोल्ड स्टील।

पूरी तरह से कम्प्यूटर संचालित कारखाने में, यह कोल्ड रोल्ड स्टील अत्याधुनि जापानी तकनीक से निर्मित है। हिताची द्वारा उप्लब्ध की गई 6-हाई सिंगल-स्टैन्ड ह क्राउन कन्ट्रोल रिवर्सिबल कॉम्बिनेशन रोलिंग व स्किन पास मिल। रख-रखाव संचालन जानकारी टाइयो स्टील से। और कन्टिन्युअस पिकलिंग व इलेक्ट्रोलि क्लीनिंग संयन्त्र-निप्पोन डेनरो मैन्युफ़ैक्चरिंग कंपनी के सौजन्य से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सेन्ट्रल मार्केटिंग ऑफिसः 'गुमान' छठी मंज़िल 77 रेज़िडेन्सी रोड, सदर, नागपुर - 440 001 फ़ोनः 25742, 25750 टेलेक्सः 0715-426 NDIL IN फ़ैक्सः 0712-33194 ग्रामः 'NIPPON'.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मारुति, प्रीमीयर, हिन्दुस्तान मोटर्स व महिन्द्रा के भी पास!

मोटर-कार उद्योग के लिये भारत में पहली बार कोल्ड रोल्ड स्टील

अत्याधुनि...
...ल-स्टैंड ह...
रख-रखाव
इलेक्ट्रोलि...

...IPPON'.

अनेक लम्बाइयों, चौड़ाइयों व गेज की विशाल रेंज में उपलब्ध यह कोल्ड रोल्ड स्टील राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मापदंडो के अनुरुप हैं - IS 513; DIN 1623; JIS G3141... निप्पोन की यह पेशकश देश भर में फैली हुई विस्तृत वितरण प्रणाली से आसानी से उपलब्ध है। और अब भारतीय मोटर-कार उद्योग को प्रगति के रास्ते पर कम कठिनाइयों का सामना करना पडेगा — जापानी मोटर-कार उद्योग की तरह।

ISPAT

NIPPON DENRO ISPAT LTD.

Park Plaza (Ist Floor), 71, Park Street, Calcutta-700016

THE NEW BREED OF STEEL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:D:NDIL:7377/Hn

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक

शृंगेरी पीठम् पर धर्माभिषेक

● यह देश की सर्वाधिक शक्तिशाली धार्मिक पीठों में से एक है. पिछले पखवाड़े 38 वर्षीय शिवराम अजेय को, जो भारती तीर्थ स्वामी के नाम से जाने जाते हैं, शृंगेरी शारदा पीठम् का 36वां शंकराचार्य बनाया गया. पिछले महीने श्री अभिनव विद्या तीर्थ स्वामीजी की मृत्यु के बाद यह पीठम् खाली हो गई थी.

कर्नाटक में पवित्र तुंगभद्रा नदी

36वें शंकराचार्य का धर्माभिषेक

के किनारे आयोजित धर्माभिषेक के समय राज्यपाल पी. वेंकटसुब्बैया और केंद्रीय इस्पातमंत्री माखनलाल फोतेदार भी मौजूद थे. लेकिन राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े चुनाव में बुरी तरह व्यस्त होने के कारण इस समारोह में नहीं आ पाए.

जब भारती तीर्थ स्वामी रजत सिंहासन पर बैठे तो उन्हें हीरे-मोतियों से जड़ित का स्वर्ण मुकुट पहनाया गया. इस मुकुट का वजन 6.5 किलोग्राम था. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर स्वामी ने कहा, "सभी संबंधित पक्षों को अदालत का फैसला अंतिम रूप से मान लेना चाहिए." जाहिर है, उनके इस कदम से कट्टरपंथियों को बड़ा झटका लगेगा. किसी बड़े हिंदू धार्मिक नेता ने अब तक इतनी स्पष्ट राय नहीं दी थी.

असम

अपने ही आपा खो रहे

● बोडो आंदोलन अभी चल ही रहा है कि अखिल असम छात्र संघ (आसू) ने भी आंदोलन की धमकी दे दी है. सो, असम सरकार की मुसीबत और भी बढ़ गई है.

मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत के नेतृत्व वाली असम गण परिषद (अगप) को सत्ता में लाने वाले 'आसू' ने पिछले पखवाड़े राज्य में बंद का आह्वान किया जो कि सफल और शांतिपूर्ण रहा. इसने अनिश्चितकालीन असहयोग आंदोलन भी छेड़ दिया और 'अगप' से सारे संबंधों को तोड़ लेने की धमकी दे डाली. उसकी यह शिकायत है कि असम सरकार विदेशियों की शिनाख्त के लिए मतदाता सूचियों के संशोधन में नाकाम रही है. असम आंदोलन के 'शहीदों' के पुनर्वास की व्यवस्था नहीं की है और सबसे महत्वपूर्ण यह कि असम आंदोलन के

महंतः संकटों से घिरे

दौरान आसू कार्यकर्ताओं के खिलाफ दर्ज मामलों को उसने वापस नहीं लिया है.

वैसे, मुख्यमंत्री इन मुद्दों पर बातचीत का वादा करके फिलहाल संकट टालने में सफल हो गए हैं.

पंजाब

सहेलियों में तकरार

● इंका की वरिष्ठ सदस्याएं अमरजीत कौर और रजिंदर कौर भट्ठल घनिष्ठ सहेलियां हुआ करती थीं. अगस्त 1988 में भट्ठल को पंजाब राज्य समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा बनाए जाने के बाद अमरजीत को दिल्ली में केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की कमान सौंपी गई थी. लेकिन दो दिन के भीतर ही इन दोनों सहेलियों के बीच ठन गई. अमरजीत ने भट्ठल के 'मनमाने कामकाज' की शिकायत की. तबसे एक दूसरे के खिलाफ शिकायतों का अटूट सिलसिला चल पड़ा है.

भट्ठल का आरोप है कि अमरजीत 1985 में पटियाला संसदीय क्षेत्र से चुनाव में पिटने के बाद अब जिले में सामाजिक-आर्थिक परियोजनाएं लागू करने में मुस्तैदी दिखा रही हैं. पर अमरजीत इसका खंडन करती हैं. उनका कहना है कि संगरूर (जिसमें भट्ठल का चुनाव क्षेत्र पड़ता है) सरीखे दूसरे जिलों की परियोजनाओं को संबद्ध आंकड़े न होने की वजह से मंजूरी नहीं दी गई. इस तर्कहीन लड़ाई का नतीजा यह निकला कि केंद्रीय बोर्ड ने राज्य बोर्ड का फंड जाम कर दिया. लड़ाई अभी जारी है.

अमरजीत (बाएं) और रजिंदर: कड़वाहट

प्रमोद पुष्करणा

महाराष्ट्र

व्यापार का वीभत्स रूप

● मानव अंगों के व्यापार ने वीभत्स रूप ले लिया है. गुर्दे की खराबी से पीड़ित एक 35 वर्षीया महिला मरीज एक एड्स पीड़ित दानदाता का गुर्दा लेने से बाल-बाल बच गई.

कश्मीर की इस महिला को एक एजेंट ने 25,000 रु. में गुर्दा देने की पेशकश की थी. गुर्दा निकाले जाने के पहले जब दानदाता का परीक्षण किया जा रहा था तो भारतीय स्वास्थ्य संगठन के महासचिव डॉ. आई.एस. गिलाडा को, जो एड्स के खिलाफ अथक अभियान चला रहे हैं, किसी ने उस एड्स पीड़ित रोगी की जानकारी दे दी. गुर्दा दान करने वाला यह बेरोजगार स्नातक व्यावसायिक रक्तदाता था. वह एड्स पीड़ित होने के बावजूद अपना रक्त बेचा करता था. लेकिन विभिन्न रक्त बैंकों में अपना गलत नाम लिखाने के कारण गिरफ्तारी से बच निकलता था.

गिलाडा के अनुसार, उन्हें एक दूसरे रक्तदाता ने सूचना दी कि एक एड्स पीड़ित रक्तदाता अपना गुर्दा बेचने वाला है. गिलाडा ने शहर के एक महंगे अस्पताल में उस

डॉ. गिलाडा: चौकसी

रोगी को ढूंढ निकाला और इस तरह उसके गुर्दे का दूसरे के शरीर में प्रत्यारोपण होने से बच गया.

इस सनसनीखेज मामले से स्पष्ट है कि रक्तदाताओं का एड्स परीक्षण और अपने गुजारे के लिए रक्त बेचने वाले एड्स पीड़ितों के पुनर्वास की व्यवस्था कितनी जरूरी है. साथ ही मानव अंगों की खरीद-फरोख्त के बाजार को समाप्त करने के लिए इसे व्यापक पैमाने पर जन आंदोलन का रूप देने की जरूरत भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

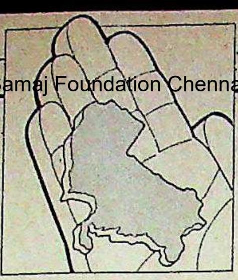

उत्तर प्रदेश

कांटे की टक्कर

विपक्षी एकता के मद्देनजर इंका की नैया पार कराने का दारोमदार तिवारी पर

उत्तर प्रदेश में राजनीतिकों का 'महाकुंभ' शुरू हो गया है. लोकसभा की 85 और विधानसभा की 425 सीटों पर अपना-अपना दावा करने वाले विभिन्न दलों, जातियों और वर्गों के नेता 7.94 करोड़ मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए कवायद करने लगे हैं.

राज्य में इंका और जनता दल दोनों के बहुत ऊंचे दांव लगे हुए हैं. सो, कई निर्वाचन क्षेत्रों में कांटे की लड़ाई होने की संभावना है. एक तरफ शासक दल के प्रधानमंत्री राजीव गांधी के अलावा दिनेश सिंह, मोहसिना किदवई और राजेंद्र कुमारी वाजपेयी समेत कई दिग्गज हैं तो दूसरी ओर विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर, अजीत सिंह, अरुण नेहरू और आरिफ मोहम्मद खान सरीखे कई विपक्षी महारथी. लेकिन रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत नैनीताल संसदीय सीट का टिकट न मिलने के कारण चुनाव नहीं लड़ रहे हैं. हालांकि उन्हें आंवला और नई दिल्ली संसदीय सीटें देने की पेशकश की गई थी लेकिन उन्होंने मना कर दिया.

बहरहाल इस बार राज्य में न तो 1980 जैसी जनता पार्टी विरोधी कोई लहर है और न ही 1984 की सहानुभूति लहर जो कि इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी थी. राज्य की स्थिति शासक दल के पक्ष में पूरी तरह नहीं दिखती. मुख्यमंत्री तिवारी द्वारा केंद्रीय संसदीय बोर्ड को सौंपे गए एक आकलन के मुताबिक कांग्रेस 32 लोकसभा सीटों और 175 विधानसभा सीटों पर जीत सकती है, बशर्ते कि वहां सही उम्मीदवार खड़े किए जाएं. सरकारी मशीनरी द्वारा किए गए इस आकलन में कहा गया है कि अगर विपक्षी दलों ने साझा उम्मीदवार खड़े नहीं किए तो उन्हें (विपक्ष को) लोकसभा की 20 और विधानसभा की 115 सीटें मिलेंगी. इस तरह लोकसभा की बाकी बची 32 और विधानसभा की 135 सीटों के लिए इंका और विपक्ष में घमासान होने की संभावना है. और अगर विपक्ष ने इन सीटों पर साझा उम्मीदवार खड़े किए तो उसके बाजी मार ले जाने के आसार ज्यादा हैं, नहीं तो कांग्रेस थोड़े अंतर से ही सही, फायदे में रहेगी.

एक आमसभा को संबोधित करते तिवारी: नारायण भरोसे

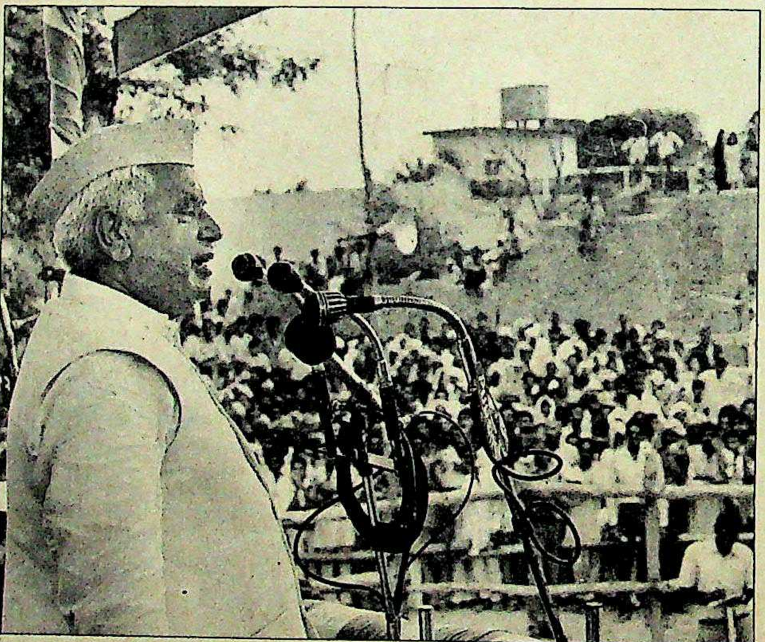

भवान सिंह

> **संसदीय चुनावों में ही नहीं, विधानसभा चुनावों में भी तिवारी को राज्य में विपक्ष का सामना अकेले करना होगा**

इसलिए दिलचस्प और कड़े मुकाबले की संभावना है. इंका और जनता दल दोनों ही जातिगत समीकरण के आधार पर चुनाव अखाड़े में कूदने की तैयारी कर रही हैं. इंका जहां ब्राह्मणों को अपना वोट बैंक मानती है, वहीं जनता दल राजपूतों को. दोनों पार्टियां यादवों, हरिजनों और मुसलमानों के वोट भी अपनी तरफ खींचने में लगी हुई हैं.

हालांकि राज्य में ठाकुर और यादव वोट कुल वोटों के क्रमशः 10 और 9 फीसदी ही हैं बावजूद इसके इनका ज़बरदस्त प्रभाव है. पूर्वी उत्तर प्रदेश की राजनीति में जहां राजपूतों और ब्राह्मणों का वर्चस्व है, वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति में जाटों और यादवों का प्रभाव है.

इंका ब्राह्मणों, मुसलमानों और यादवों के वोटों पर किस कदर निर्भर है, यह इसी से स्पष्ट है कि विधानसभा के लिए घोषित 425 उम्मीदवारों में 80 से ज्यादा ब्राह्मण, करीब 55 मुसलमान और 20 यादव हैं. यानी इन जातियों को कुल मिलाकर 36 फीसदी टिकट दिए गए जबकि 64 फीसदी टिकट दूसरी जातियों में बांटे गए हैं. इस बार 45 नए चेहरों को भी टिकट दिया गया है. इसी तरह लोकसभा के लिए घोषित उम्मीदवारों में तकरीबन 21 ब्राह्मण, 16 ठाकुर और 10 मुसलमान हैं. इनमें 9 उम्मीदवार तिवारी समर्थक माने जाते हैं.

मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी समेत प्रदेश के सभी काबीना और राज्यमंत्री विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं. इनमें विधान परिषद सदस्य जगदंबिका पाल भी शामिल हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश के 6 उपमंत्रियों में से सिर्फ तीन को टिकट दिया गया है. लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि प्रदेश इंका अध्यक्ष बलराम सिंह यादव न तो लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं और न ही विधानसभा चुनाव. हाल में इंका में शामिल होने वाले अकबर अहमद डंपी को टिकट नहीं दिया गया. उन्हें मेनका गांधी के खिलाफ पीलीभीत से लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए कहा जा रहा था लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया. उधर, जनता दल से इंका में शामिल हुए ज़फ़र अली नकवी को लखीमपुर से विधानसभा का टिकट दे दिया गया.

कई ऐसे इंका नेताओं को भी विधानसभा का टिकट दिया गया है जिन्हें 1985 में तत्कालीन प्रदेश इंका अध्यक्ष विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पार्टी सफाई अभियान के तहत टिकट नहीं दिया था. इनमें बच्चा पाठक, गुलाब सेहरा और रणजीत सिंह जूदेव प्रमुख हैं. इन्हें पिछली बार भ्रष्टाचार के आरोप में टिकट नहीं मिला था. इसके अलावा माफिया सरदार हरिशंकर तिवारी और अवैध शराब के धंधे में लिप्त आज़ाद कुमार कर्दम को भी टिकट मिला है.

ब्राह्मणों के अलावा मुसलमान भी इंका के परंपरागत वोट बैंक रहे हैं. लेकिन 1988 के इलाहाबाद उपचुनाव के बाद मुसलमानों का मन बदला हुआ दिखा और उन्होंने वी.पी. सिंह के पक्ष में सामूहिक मतदान किया. उन्होंने मेरठ दंगों में मुसलमानों की फजीहत का जिम्मेदार पूर्व मुख्यमंत्री बीरबहादुर सिंह को माना. गद्दी संभालने के बाद तिवारी लगातार कोशिश करते रहे कि मुसलमानों का दिल जीतना संभव न भी हुआ तो उन्हें वोट जरूर दिया जाए.

मुसलमान उत्तर प्रदेश के कम-से-कम 35 जिलों में कुल मतदाताओं का 17.2 फीसदी होने के कारण चुनाव को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं. संयोग से 'खतरनाक क्षेत्र' मानी जाने वाली 32 लोकसभा और 135 विधानसभा सीटें मुसलमानों की रिहायश वाले बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बदायूं, बरेली, पीलीभीत और शाहजहांपुर सरीखे 35 जिलों में पड़ती हैं. यह गणित इतना प्रभावी है कि मुख्यमंत्री तिवारी ने हड़बड़ी में उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा देने की घोषणा कर दी. और अभी हाल में जब एक महिला ने केंद्रीय मंत्री जेड.आर. अंसारी पर छेड़खानी का आरोप लगाया तो इंका उन्हें सरकार से निकालने और टिकट न देने की हिम्मत नहीं जुटा पाई.

इसके साथ ही कांग्रेस हिंदुओं में बदले की भावना को भुनाने की भी सोच रही है, जो प्रतिक्रियास्वरूप उभर सकती है. स्थिति इस कदर विकट है कि कांग्रेस बदले की भावना उभरने की हालत में हिंदुओं से मुंह मोड़ने की नहीं सोच सकती. अपने मौजूदा सांसद सलीम शेरवानी को बदायूं से हटाकर एटा से लड़ाने की इंका की रणनीति की शायद यही वजह है. 1984 में जिन दो सीटों पर इंका हारी थी उनमें एटा भी है. बदायूं में जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव शरद यादव के खिलाफ इंका ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रामनरेश यादव को खड़ा किया है.

मुलायम सिंह यादव और संजय सिंहः जोर आजमाइश

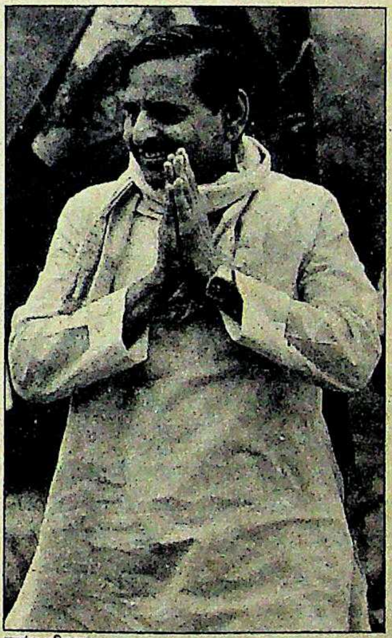
प्रशांत पंजियार

प्रमोद पुष्करणा

> **संजय सिंह और मुलायम सिंह यादव के गुपचुप तौर-तरीकों के मुकाबले तिवारी निश्चय ही उनसे आगे हैं**

इस स्थिति में भाजपा ऐसा प्रमुख कारक बन गई है जो कांग्रेस के लिए छिपा वरदान साबित हो सकता है. इसलिए जनता दल ने ज्यादातर सीटों पर इंका को सीधी टक्कर देने के लिए भाजपा से तालमेल किया पर मामला इसकी घोषणा को लेकर फंसा हुआ था. जनता दल नेता जानते थे कि भाजपा के साथ उनके तालमेल की सार्वजनिक घोषणा से मुस्लिम वोटों पर बुरा असर पड़ेगा. दूसरी ओर, भाजपा के समर्थन से उन्हें हिंदू भावनाओं के उभरने का फायदा मिलेगा. इंका और जनता दल की समस्या यह है कि वे हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का समर्थन पाना चाहते हैं. पर इस बार स्पष्ट सांप्रदायिक विभाजन के चलते इसकी संभावना बहुत कम है.

मुसलमान नेताओं का मानना है कि भाजपा से गठजोड़ के चलते जनता दल मुसलमानों का समर्थन खो बैठेगा. मगर कुछ लोगों का मानना है कि भाजपा से गठजोड़ के बावजूद मुसलमान मतदाता जनता दल को ही वोट देंगे. आगरा मंडल के खांडसारी आयुक्त अयूब खान कहते हैं, "कांग्रेस विरोधी मुसलमान हर हालत में जनता दल को वोट देंगे लेकिन भाजपा को तो किसी भी कीमत पर नहीं. जहां कहीं भाजपा का उम्मीदवार रहेगा, कांग्रेस को मुसलमानों का समर्थन मिलना तय है."

9 नवंबर को अयोध्या में नए राम मंदिर के प्रस्तावित शिलान्यास का मुद्दा दोनों समुदायों के बीच की सांप्रदायिक खाई को बढ़ा सकता है. विश्व हिंदू परिषद ने अपने तय कार्यक्रम को रद्द करने से साफ इनकार कर दिया है और कार्यक्रम को कुछ दिनों के लिए टाल दिए जाने की सरकारी चालों को नाकाम बना दिया है.

हाल के चुनाव इतिहास पर नजर डालें तो इंका के पास गर्व करने लायक कुछ नहीं है, क्योंकि दिसंबर 1984 की सहानुभूति लहर के बावजूद (जिसके कारण उसे 85 में से 82 लोकसभा सीटें मिली थीं) मार्च 1985 के विधानसभा चुनावों में महज 268 सीटें उसके हाथ लगीं. लोकसभा चुनावों में उसे मिले 51.22 फीसदी वोट तीन महीने बाद ही विधानसभा चुनावों में घटकर 39.31 फीसदी रह गए. दूसरी तरफ लोकदल, भाजपा, जनता पार्टी और कांग्रेस (ज) को लोकसभा चुनावों में कुल मिलाकर 33.18 फीसदी वोट मिले जो विधानसभा चुनावों में बढ़कर 38.98 फीसदी हो गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी.पी. सिंह

सुरक्षित गढ़ में

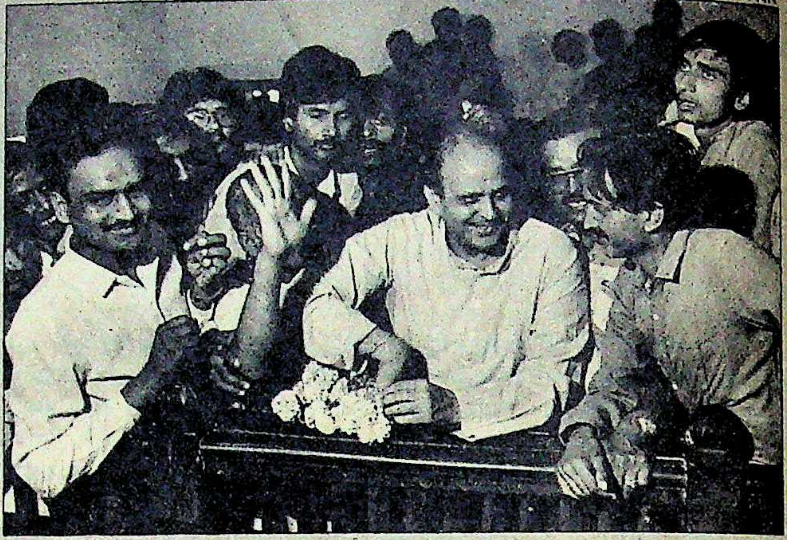

फतेहपुर में नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद वी.पी. सिंह

आखिरी वक्त तक अपने चुनाव क्षेत्र के बारे में संशय बनाए रखने की वी.पी. सिंह की चाल उन्हीं पर उलटी पड़ती दिखी. वायुदूत की उड़ान से वे कानपुर के लिए रवाना हुए ही थे कि विमान को वापस दिल्ली उतार दिया गया. सरकारी कैफियत यह दी गई कि हवाई अड्डे के अधिकारियों को इस विमान में टाइम बम होने की सूचना मिली थी. पर वी.पी. सिंह का मानना है कि यह सरकार की सोची-समझी चाल थी. उनका कहना था, "वे मुझे फतेहपुर नहीं पहुंचने देना चाहते थे."

आखिर वे कामयाब रहे. उनके समर्थक और इंतजार कर रही भारी भीड़ उनके पहुंचने की उम्मीद छोड़ चुकी थी. केंद्रीय राज्यमंत्री और फतेहपुर से इंका उम्मीदवार हरेकृष्ण शास्त्री को घेरे उनके समर्थक एक दूसरे को बधाइयां दे रहे थे.

लेकिन वी.पी. सिंह के विमान में रखा कथित बम मानो इंका समर्थकों पर ही आ गिरा. यह खबर पहुंचते ही कि वी.पी. सिंह कानपुर में उतर चुके हैं और किसी भी क्षण फतेहपुर पहुंच सकते हैं, इंका खेमे में मुर्दनी छा गई. जिलाधीश के दफ्तर के बाहर अफवाहों का बाजार गरम था. वी.पी. सिंह के किसी भी क्षण वहां पहुंचने की खबर से अचानक सजीव हो उठे जनता दल कार्यकर्ताओं ने भी इसमें योगदान दिया. उनका कहना था कि शास्त्री को फतेहपुर से नाम वापस लेने का निर्देश मिला और वे मिर्जापुर से नामांकन दाखिल करने चले गए.

बाद में शास्त्री का कहना था, "मैं यहीं हूं और चुनाव लड़ रहा हूं."

एक लाख आबादी वाले इस छोटे-से शहर की जनता सुबह से ही वी.पी. सिंह की राह ताक रही थी. फतेहपुर संसदीय क्षेत्र के 35 किमी के रास्ते में तुरंत स्वागत द्वार खड़े किए गए क्योंकि वी.पी. सिंह को कानपुर से कार द्वारा जी.टी. रोड के रास्ते आना था. लोगों के झुंड गांवों के बाहर इंतजार कर रहे थे और युवक सिर पर हरी पट्टी बांधे थे. चुनाव क्षेत्र की सीमा पर कारों और जीपों का काफिला सुबह 7.30 बजे से उनका इंतजार कर रहा था.

वी.पी. सिंह का कार्यक्रम तीन बार बदला. 30 अक्तूबर की सुबह 10 बजे तक जनता दल कार्यकर्ताओं में पूरी तरह भ्रम का माहौल था. यहां तक कि नेताओं को भी यह आशंका होने लगी कि फतेहपुर से वी.पी. सिंह के चुनाव लड़ने की घोषणा महज एक हथकंडा है.

वी.पी. सिंह ने नारेबाजी के बीच जिलाधीश दफ्तर के परिसर में आम सभा को संबोधित करते हुए बताया कि फतेहपुर पहुंचने से उन्हें रोकने के लिए किस कदर कोशिशें की गईं. उनके मुताबिक विमान को बहाना बनाकर उतार लिया गया और देवीलाल, अरुण नेहरू और दूसरे विपक्षी नेताओं द्वारा दिल्ली हवाई अड्डे पर धरना दिए जाने के बाद ही सुबह 11.15 पर फिर से विमान उडा.

फतेहपुर वी.पी. सिंह के लिए नया नहीं है. उनके भाई संत बख्श सिंह 1967 और 1971 में दो बार इस संसदीय सीट का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं.

जातिगत समीकरण के हिसाब से भी फतेहपुर वी.पी. सिंह के लिए सर्वाधिक सुरक्षित सीट है. पांच विधानसभा क्षेत्रों में से तीन—तिंदवारी, हसुआ और बिंदकी—ठाकुर प्रभुत्व वाले हैं. वी.पी. सिंह इस चुनाव क्षेत्र के ब्राह्मणों का वोट भी अपने पक्ष में आंक रहे हैं. इसी वजह से उन्होंने ब्राह्मणों की उपेक्षा के मुद्दे को उठाया. कांग्रेस ने पांचों विधानसभा क्षेत्रों में से कोई ब्राह्मण उम्मीदवार नहीं खड़ा किया.

जातिगत समीकरण के हिसाब से भी फतेहपुर विश्वनाथ प्रताप सिंह के लिए सर्वाधिक सुरक्षित सीट मानी जाती है

मौजूदा सांसद शास्त्री 1980 में भी इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं. आज भी उन्हें यहां सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है. शास्त्री ने अपने कार्यकाल के दौरान शहर में दो मध्यम दर्जे के और 20 से ज्यादा लघु उद्योग लगवाकर इसके औद्योगिक विकास में खासा योगदान दिया है. लेकिन दूसरे हलकों में फतेहपुर पिछड़ा रहा. यहां केवल एक डिग्री कॉलेज है और चार इंटर कॉलेज हैं. नागरिक सुविधाओं का भी भारी अकाल है.

यह दूसरा मौका है जब वी.पी. सिंह का मुकाबला शास्त्री परिवार के किसी व्यक्ति से हो रहा है. 1988 में इलाहाबाद में छोटे भाई सुनील उनके मुकाबले खड़े थे, तो इस बार लालबहादुर शास्त्री के सबसे बड़े बेटे हरेकृष्ण हैं. फतेहपुर में हुई पत्रकार वार्ता में किसी ने वी.पी. सिंह से पूछा कि वे शास्त्री परिवार के पीछे क्यों पड़े हैं? सिंह ने जवाब दिया, "ऐसा नहीं है. मेरा इस परिवार के प्रति गहरा अनुराग है. इसी वजह से एक भाई—अनिल शास्त्री (हरि से छोटे और सुनील से बड़े) वाराणसी से मेरी पार्टी के उम्मीदवार हैं."

—दिलीप अवस्थी, फतेहपुर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

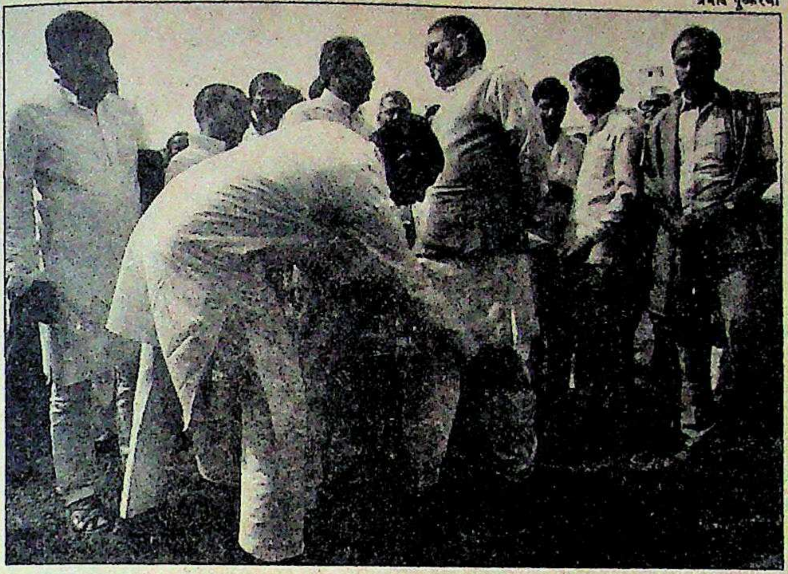
प्रमोद पुष्करणा

लोकपति त्रिपाठी (चश्मा पहने) के निवास पर टिकटार्थियों की भीड़

विधानसभा चुनावों के लिए इंका के पास मध्य उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड में ही कुछ गढ़ बचे हैं. पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, रुहेलखंड और यहां तक कि कुछ पर्वतीय इलाकों में भी उसे बड़ा झटका लग सकता है. 1985 में इंका को पूर्वी उत्तर प्रदेश की 159 में से 97 सीटें मिलीं जबकि 1980 में यह तादाद 121 थी. दूसरी तरफ विपक्ष को 1980 में यहां से 38 सीटें मिली थीं, जो 1985 में बढ़कर 62 हो गईं. इसी तरह पश्चिमी उत्तर प्रदेश की 101 सीटों में से इंका को 1985 में 54 सीटें मिलीं जबकि 1980 में 70. दूसरी तरफ विपक्ष की स्थिति मजबूत हुई और उसे 1980 की 31 सीटों के मुकाबले 47 सीटें मिलीं. इन दोनों क्षेत्रों में इंका ने कुल 40 सीटें गंवाईं. उसे फैजाबाद, आजमगढ़, बलिया, जौनपुर, इलाहाबाद, मैनपुरी, आगरा, अलीगढ़, गाजियाबाद, इटावा, एटा और मेरठ में जबरदस्त झटका लगा था.

रुहेलखंड में 1980 में इंका को 50 में से 32 और 1985 में 35 सीटें मिलीं थीं. लेकिन इस बार यहां के सात जिलों में स्थिति भिन्न है क्योंकि यहां 15 से 40 फीसदी मुसलमान मतदाता हैं. बदायूं दंगे के कारण यहां हिंदू प्रतिक्रिया प्रमुख भूमिका निभा सकती है. उत्तराखंड क्रांति दल के कारण पर्वतीय इलाकों में भी इंका की स्थिति ठीक नहीं. इस क्षेत्र में कुल 19 सीटें हैं जिनमें 16 सीटें 1985 के चुनाव में इंका की झोली में गई थीं.

मध्य उत्तर प्रदेश की 75 और बुंदेलखंड की 21 सीटों में से ज्यादातर इस बार भी इंका की झोली में जा सकती हैं. इन इलाकों में 20 से 45 फीसदी ब्राह्मण होने से यहां की राजनीति में वे प्रमुख भूमिका निभाते हैं. यहां कांग्रेस का जबरदस्त प्रभाव है. 1980 में मध्य उत्तर प्रदेश में उसे 55 और 1985 में 51 सीटें मिली थीं. बुंदेलखंड में उसे 1980 और '85 में क्रमशः 17 और 15 सीटें मिली थीं. लेकिन गौरतलब बात यह है कि यहां वोट बैंक के नाम पर इंका के पास सिर्फ ब्राह्मणों का वोट है. हरिजन मतदाता बहुजन समाज पार्टी की तरफ झुक सकते हैं.

इधर हाल के कुछ वर्षों में तेजी से उभरने वाली बहुजन समाज पार्टी ने कांग्रेस के हरिजन वोट बैंक में सेंध लगा दी है. 1987 में हरिद्वार, राठ और पट्टी उपचुनावों में 26.7 फीसदी वोट बटोरकर दूसरे या तीसरे नंबर पर रहने वाली इस पार्टी ने जता दिया है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती. राज्य में 21 फीसदी हरिजन मतदाता हैं और इनमें से ज्यादातर इस पार्टी की तरफ झुके तो कांग्रेस को भारी नुकसान हो सकता है.

सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों में क्रमशः मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी और प्रदेश जनता दल प्रमुख मुलायम सिंह यादव सरीखे दिग्गजों के होने से विधानसभा चुनावों में मुकाबला कांटे का होगा. तिवारी जहां अपनी प्रशासनिक कुशलता और राजनैतिक चतुराई के लिए जाने जाते हैं, वहीं यादव की प्रसिद्धि जोड़-तोड़ में माहिर खिलाड़ी और निरंकुश तौर-तरीकों की वजह से है. संसदीय चुनावों में तिवारी को राज्य में विपक्षी दिग्गजों का सामना तो एक तरह से अकेले करना ही होगा. विधानसभा चुनावों में भी उनके अकेले ही कमान संभालने की उम्मीद है.

विपक्ष में यादव और प्रदेश जनता दल महासचिव संजय सिंह के गुपचुप तौर-तरीकों के सामने तिवारी निश्चय ही उनसे आगे हैं. तिवारी विकास कार्यों के लिए अधिकारियों की नाक में दम किए हैं लेकिन इस समय उनकी सबसे बड़ी असफलता यह है कि वे प्रभावी मंत्रिमंडल या कम-से-कम मंत्रियों का एक ऐसा गुट तैयार नहीं कर पाए हैं जो उनके साथ-साथ चल सके. उधर जनता दल की रणनीति राष्ट्रीय मुद्दे उठाने की ही होगी.

कुछ भी हो, इंका और जनता दल दोनों इस राज्य पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किए हैं और मुकाबला कांटे का होने जा रहा है. चुनाव के महासमर की रूपरेखा एकदम तैयार हो चुकी है और ऐसा लगता है कि एक बार फिर यह राज्य अपनी निर्णायक भूमिका निभाएगा. नतीजे चाहे शासक दल के पक्ष में जाएं या विपक्ष के, आखिरी फैसला इसी राज्य से होना है.

—दिलीप अवस्थी

(बाएं से) बच्चा पाठक, हरिशंकर तिवारी और जेड.आर. अंसारी: आरोपों के घेरे में

प्रवीण शाह

प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

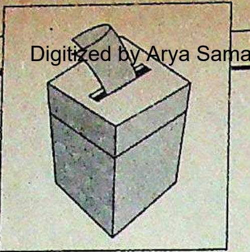

फिल्मी सितारे

चुनावी मंच पर चमक

प्रचार की पहल में विपक्ष समर्थक सितारे आगे

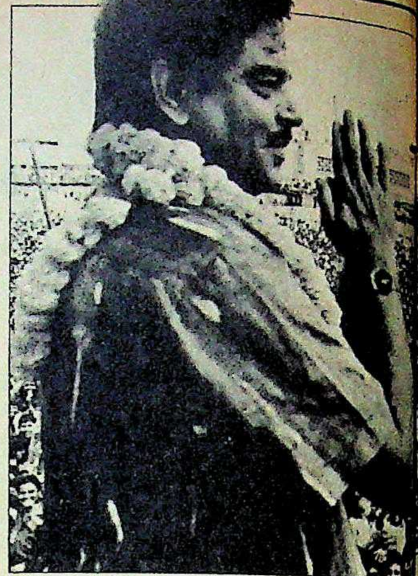

तोप दलाली के भंडाफोड़ और जवाबी हमलों से उड़ने वाली धूल में सना राजनैतिक मंच अब उस रंगमंच के सामने फीका पड़ता दिखता है जिस पर राजनेताओं के बजाय फिल्म जगत के अभिनेताओं की बिरादरी आगामी आम चुनाव के महाभारत की रणभेरी बजाने के लिए मेकअप किए तैयार खड़ी है.

नौवीं लोकसभा के लिए लड़े जाने वाले इस महाभारत की कतारों में आ खड़े होने वाले योद्धाओं की सूची में पिछले हफ्ते तक जो नाम जुड़ चुके थे उनमें राज बब्बर, शत्रुघ्न सिन्हा, शबाना आजमी, सुनील दत्त, राजेश खन्ना, वैजयंतीमाला, धर्मेंद्र और आशा सचदेव जैसे नाम प्रमुख थे. इनके अलावा अमिताभ बच्चन, दिलीप कुमार और अरुण गोविल जैसे कई दूसरे अभिनेताओं के नामों का इंतजार बेसब्री से किया जा रहा था. हालांकि पिछले हफ्ते तक यह स्पष्ट नहीं था कि इस युद्ध में कौन अभिनेता उम्मीदवार के रूप में उतरेगा और कौन माइक्रोफोन पर केवल रणभेरी बजाने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर लेगा.

आगामी चुनाव में फिल्मी सितारे जड़ने की शुरुआत शबाना आज़मी, शत्रुघ्न सिन्हा और राज बब्बर के साथ ही हो गई थी. और अब चुनावों की घोषणा ने राजेश खन्ना, धर्मेंद्र और सुनील दत्त जैसे इंका समर्थक कलाकारों को भी खेल में उतरने पर मजबूर कर दिया है.

हालांकि चुनाव अभियान के दौरान इनमें से कौन-सा पक्ष दूसरे के मुकाबले पहल हासिल कर पाता है यह तो आने वाले हफ्तों में ही पता चलेगा पर अब तक के संकेत तो यही हैं कि यह पहल विपक्ष समर्थक फिल्मी सितारों के ही हाथ में है.

भवान सिंह

लेकिन चुनावी राजनीति में फिल्मी बिगुल बजाने का असली काम शत्रुघ्न और बब्बर ने किया. नवगठित 'विकल्प मंच' के माध्यम से बब्बर ने अपने अभियान का श्रीगणेश प्रधानमंत्री राजीव गांधी के गढ़ अमेठी पर 22 सितंबर को धावा बोलकर किया. मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, जगदीशपुर, जौनपुर, मछलीशहर और वाराणसी में अपनी उम्मीद से भी बड़ी जनसभाओं के बारे में बब्बर का कहना था, "लोगों ने जिस उत्साह से मेरी बातें सुनीं उससे यह जाहिर होता है कि लोग महसूस कर रहे हैं कि एक खानदान के शासन ने उन्हें ठग लिया है."

6 और 7 अक्तूबर को ग्वालियर के आसपास वाले इलाकों में बब्बर की रैलियों की सफलता का आलम यह था कि धारा 144 के बावजूद ग्वालियर के फूलबाग मैदान में 25 हजार से अधिक लोग उन्हें देखने

*चुनावों की घोषणा ने जिन तीन प्रमुख फिल्मी सितारों को खबरों के घेरे में ला खड़ा किया, संयोग से वे तीनों ही सत्ताधारी इंका के खिलाफ झंडा गाड़े हुए हैं. वरिष्ठ संवाददाता **विजय क्रांति** के साथ बातचीत में उनकी कुछ चुनी हुई टिप्पणियां:*

शत्रुघ्न सिन्हा

▶ सत्ता के खिलाफ खड़े होने के लिए बहुत साहस चाहिए. ऐसा साहस वही दिखा सकता है जिसका दामन साफ-सुथरा हो.

▶ विपक्ष का साथ देकर मुझे फायदा नहीं बल्कि हमेशा घाटा ही हुआ है.

▶ खुद चुनाव लड़कर संसद में जाने के बजाय बेहतर है कि मैं विपक्षी उम्मीदवारों को जिताने में मदद देकर राजीव और उनके साथियों के शिकंजे से देश को मुक्त कराऊं.

▶ मैं विपक्ष को इसलिए समर्थन दे रहा हूं कि सरकार में आने पर वे अच्छा काम करेंगे. वरना उन्हें मेरे विरोध का सामना करना होगा.

▶ इंका का समर्थन करने की हिम्मत किन फिल्मी कलाकारों में है? श्रीदेवी तो अपने पिताजी की जमानत भी नहीं बचा पाई, और बेचारे राजेश खन्ना तो अपने घर में ही नहीं खड़े हो सकते, चुनाव में क्या खा कर खड़े होंगे?

▶ प्रोफेसर के.के. तिवारी तो शायद अश्लीलता के प्रोफेसर हैं. मैं उनके गढ़ में जाकर उनको बता आया हूं कि इस बार चुनाव में मैं तुम्हारी जमानत जब्त करवा के ही छोडूंगा.

▶ न मैं आज से पहले कभी चुनाव मैदान में उतरा हूं और न इस बार उतरूंगा.

शबाना आजमी

▶ मैं पार्टी पर आधारित राजनीति का हिस्सा बनने को तैयार नहीं हूं. लेकिन राजनीतिक पार्टियां बेमानी नहीं हैं.

▶ इंका को छोड़ लगभग सभी दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव

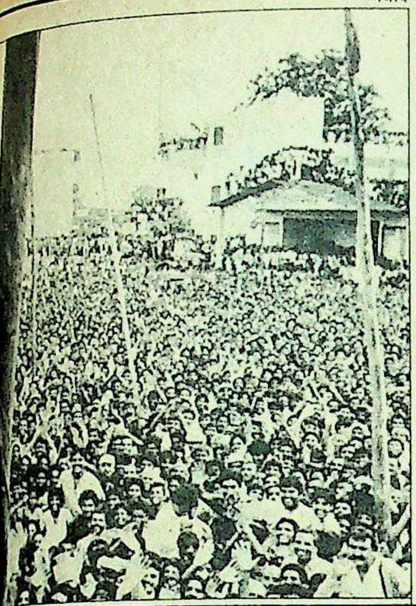

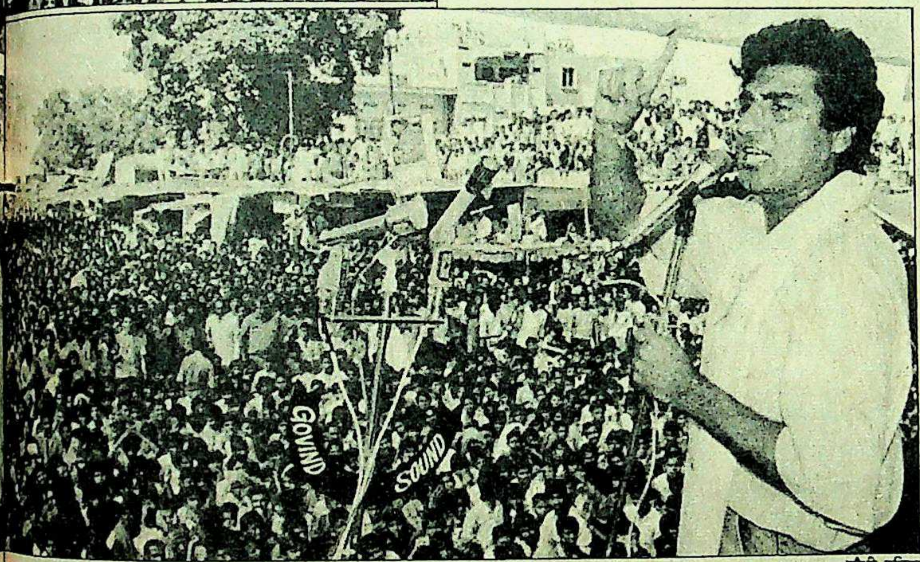

चौथी दुनिया

शत्रुघ्न सिन्हा (ऊपर); शबाना आजमी; और (नीचे) राज बब्बर: फिल्मी जगमगाहट

और सुनने के लिए आए. और सुलतानपुर में तो प्रशासन द्वारा कर्फ्यू लगाए जाने के बावजूद लगभग 1 लाख लोगों की भीड़ ने बब्बर का स्वागत किया.

लगभग इसी अंदाज में शत्रुघ्न सिन्हा ने 'बिहार बचाओ' आंदोलन और शत्रुघ्न सिन्हा फैंस एसोसिएशन के तहत 16 सितंबर को हाजीपुर और मुजफ्फरपुर से शुरू हुए अपने दौरे में मोतीहारी, बेतिया और पटना में विशाल जनसभाओं को संबोधित करके इंकाई खेमे में हड़कंप मचा दिया. पिछले पखवाड़े बक्सर में हिंदुस्तानी आंदोलन के तत्वाधान में उन्होंने एक और जोरदार जनसभा करके इंका नेता के.के. तिवारी के राजनैतिक अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा दिया. बक्सर से लौटने पर उत्साह में भरे शत्रुघ्न का कहना था, "तिवारी को मैं उनके गढ़ में जाकर बता आया हूं कि इस बार चुनाव में मैं तुम्हारी जमानत जब्त करवा के ही छोड़ूंगा." लेकिन चुनाव लड़ने के सवाल पर अपने बारे में उड़ने वाली खबरों को उन्होंने गलत बताया. उनकी टिप्पणी थी, "न तो मैं पहले कभी चुनाव में उतरा हूं और न इस बार उतरूंगा. मुझे नहीं चाहिए... मैं अपना पूरा समय इंका को हराने में ही लगाऊंगा." इस बारे में उन्होंने विपक्षी नेताओं को पत्र लिखकर स्पष्ट कर दिया है. कि, "मैं सिर्फ उन्हीं चुनाव क्षेत्रों में जाऊंगा जहां विपक्ष संयुक्त उम्मीदवार खड़ा करेगा."

चुनावी राजनीति में बब्बर और शत्रुघ्न जैसा ही रवैया शबाना आजमी का है जो बंबई झोंपड़पट्टी निवासियों के बीच तथा नर्मदा आंदोलन में अपनी सक्रियता की वजह से चर्चा का केंद्र बन चुकी हैं. उन्होंने कहा, "इंका को छोड़ लगभग सभी पार्टियां मुझसे चुनाव लड़ने की पेशकश कर चुकी हैं. पर मैं चुनाव लड़ना ही नहीं चाहती." लेकिन वे विपक्षी उम्मीदवारों के पक्ष में 'चुनाव प्रचार करने में पीछे नहीं रहेंगी.'

इंका की ओर से अपनी इस 'सामाजिक जिम्मेदारी' को निभाने के लिए सामने आने वाले कलाकारों की संख्या भी कम प्रभावशाली नहीं है पर इंका आलाकमान की टिकट नीति ने उनमें से अधिकांश को मायूस किया है. इंका के लिए खुलकर काम करने वाले राजेश खन्ना का नाम बंबई इंका अध्यक्ष मुरली देवड़ा से अदावत के कारण आरंभिक सूचियों में कहीं नहीं था. उधर आशा सचदेव को भी इंका की भीतरी कलह ने उलटे पांव लौटने पर मजबूर कर दिया. और अमिताभ बच्चन तो बोफोर्स विवाद के कारण चुपचाप इंतजार करने को मजबूर हैं ही. लेकिन इसके बावजूद इंका के चुनावी तरकश में सुनील दत्त, वैजयंतीमाला, धर्मेंद्र, दिलीप कुमार, श्रीदेवी और अरुण गोविल जैसे कई तीर हैं जो विपक्ष के अभियान पर अंकुश लगाने में इस्तेमाल किए जाएंगे.

इस चुनावी महाभारत में फिल्मी सितारों की भागीदारी क्या गुल खिलाती है यह तो चुनाव परिणाम से ही पता चलेगा. लेकिन इतना तय है कि मतदाताओं को इस बार रूखे-सूखे नारों के साथ फिल्मी जगमगाहट भी देखने को मिलेगी.

—विजय क्रान्ति

पार्टियों ने मुझसे चुनाव लड़ने की पेशकश की है. लेकिन मैं चुनाव नहीं लड़ना चाहती.

▸ मेरी पहली शर्त यह है कि मैं सिर्फ उसी पार्टी और उम्मीदवार के पक्ष में बोलूंगी जो धर्मनिरपेक्ष हो.

▸ मेरे खयाल से इस बार के चुनाव में फोटोफिनिश जैसी बात होगी. कौन पक्ष जीतता है यह तो वक्त ही बताएगा.

▸ अचानक यह सवाल क्यों उठ रहा है कि फिल्म स्टार राजनीति में क्यों उतर रहे हैं? यह कदम तो उन्हें पहले ही उठाना चाहिए था. जो फिल्मी स्टार देश के प्रति यह जिम्मेदारी नहीं निभाता वह अपराधी है.

▸ बदकिस्मती से कुछ हिंदुओं ने यह तय कर लिया है कि राम सिर्फ राम शिलाओं में और अयोध्या में ही हैं. और मुसलमान लीडर यह तय करके बैठे हैं कि खुदा सिर्फ बाबरी मस्जिद में ही है.

राज बब्बर

▸ राजीव तो देश को नेहरू परिवार की प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनाना चाहते हैं.

▸ कांग्रेस ने जानबूझकर ऐसी हालत पैदा की हैं कि भले लोग राजनीति से परे रहें.

▸ मैं दावे से कहता हूं कि इस बार राजीव सरकार को जनता का 'मैंडेट' नहीं मिलेगा.

▸ जब तक राज बब्बर की सांस में सांस है वह लड़ता रहेगा. आई डोंट केयर कि मुझे इसकी कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी.

▸ इंका वाले कहते हैं कि 1977 में जनता पार्टी के नेताओं ने आपस में लड़कर अपनी सरकार तोड़ दी. पर मैं कहता हूं कि वे आपस में लड़कर खुद तबाह हुए पर देश को दलालों के हाथों में बेचकर तो उसे तबाह नहीं किया.

▸ इंका तो कौरवों का गुट है जिसमें दुर्योधन राज कर रहा है और भीष्म, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे भले लोग हाथ पर हाथ धरे चुप बैठे हैं. इस लड़ाई में मैं विपक्ष के साथ हूं जो पांडवों की तरह सच के लिए लड़ रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर मंजूरी मिल ही गई

अक्तूबर के शुरू में रिलायंस समूह को 125 करोड़ रुपए शेयर पूंजी वाली वित्तीय कंपनी बनाने की अनुमति मिल गई. तीन साल पहले तत्कालीन वित्तमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंजूरी नहीं दी थी. कोई भी वित्तीय कंपनी अपने शेयर मूल्य से दस गुना राशि बैंकों से उधार ले सकती है. सिंह का मानना था कि अगर रिलायंस की इस कंपनी के पास 1250 करोड़ रुपए आ गए तो यह शेयर बाजार में हंगामा कर देगी. रिलायंस के एक प्रवक्ता ने बताया कि यह वित्तीय कंपनी रिलायंस समूह की कंपनियों की निवेश की जाने वाली पूंजी एकत्र करके शेयर बाजार में लगाएगी. लेकिन बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े लोगों का मानना है कि यह वित्तीय कंपनी कंपनियों की जमा पूंजी में दखलदाजी करने के अलावा इस समूह के लिए कंपनियां हथियाने का औजार भी साबित होगी.

'बल्लारपुर' के इरादे

थापर समूह की प्रमुख कंपनी बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लिमिटेड जायदाद और निर्माण सामग्री का कारोबार भी शुरू करने जा रही है. जायदाद संबंधी अलग विभाग बनाने के बाद कंपनी ने दो करोड़ रु. के कारोबार वाली मॉडर्न स्ट्रामिट लि. नामक कंपनी खरीद ली है. आंध्र प्रदेश के राजामुंदरी के इसके कारखाने में पुआल और भूसे से अग्निरोधक तख्ते बनते हैं जो दरवाजे-खिड़कियों में इस्तेमाल होते हैं. हरियाणा के पलवल में 27 करोड़ रुपए की लागत से फ्लाई ऐश (राख) के हल्के कंकरीट ब्लॉक बनाने का कारखाना लगाने का काम चल ही रहा है. यहां फ्लाई ऐश बदरपुर बिजलीघर से आएगा.

सिंहानिया की योजनाएं

एक के बाद एक बड़े औद्योगिक घराने खाद्य संसाधन के क्षेत्र में उतरते जा रहे हैं. इस क्षेत्र में उतरने वाला नवीनतम घराना है जे.के. हरिशंकर सिंहानिया की जे.के. इंडस्ट्रीज ने उत्तर प्रदेश में 43 करोड़ रु. की लागत से खाद्य संसाधन की दो इकाइयां लगाने के लिए सरकार की अनुमति मांगी है. रामपुर जिले में लगने वाली पहली इकाई में विभिन्न स्वाद वाले योगर्ट, दूध और पनीर की चीजें बनेंगी. दूसरी इकाई में मक्के से 'हाई फ्रुक्टोज' पेय बनेगा. पर यह कहां लगेगी अभी तय नहीं है. विजयपत और अजयपत सिंहानिया वाले जे.के. का एक उप समूह भी दूसरे क्षेत्रों में उतरने की तैयारी कर रहा है. इस बार वह दूरसंचार उपकरण के क्षेत्र में उतरने जा रहा है. टेलीफोन एक्सचेंज बनाने की इसकी इकाई श्रीनगर के पास लगने वाली है.

अनूठी तरकीब

अमेरिका द्वारा भारत के खिलाफ धारा सुपर-301 के तहत प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की धमकी का जवाब देने के लिए हैदराबाद के डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज समूह ने एक अनूठी तरकीब सोची है. अनेक भारतीय दवा कंपनियां अमेरिका को होने वाले अपने निर्यात में कटौती के अंदेशे से परेशान हैं जबकि 60 करोड़ रु. के कारोबार वाली रेड्डीज लैबोरेटरीज को बहुत चिंता नहीं है. यह समूह मेक्सिको में निर्यातोन्मुख इकाई लगाने की योजना बना रहा है जहां से अमेरिका को निर्यात में कोई बाधा नहीं है. हो सकता है कि यहां इकाई लगाकर एक भारतीय कंपनी को तेजी से बढ़ते लैटिन अमेरिकी दवा बाजार में पैर रखने की जगह मिल जाएगी. अभी डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज प्रति वर्ष 50 करोड़ रु. मूल्य की मिथाइल्डोफा और इब्यूप्रोफेन अमेरिका को निर्यात करती है.

धमाकों का असर नहीं

शेयर बाजार के सूचकांक अर्थव्यवस्था की सेहत का सही अंदाज दे भी सकते हैं और नहीं भी. लेकिन जब कभी भी बोफोर्स घोटाले के बारे में नया रहस्योद्घाटन होता है, निवेशकों का दिल दहल जाता है. बोफोर्स सौदे में दलाली की खबर स्वीडिश रेडियो द्वारा दिए जाने के एक हफ्ते के अंदर इकॉनॉमिक टाइम्स

चार्ट: बी.के. शर्मा

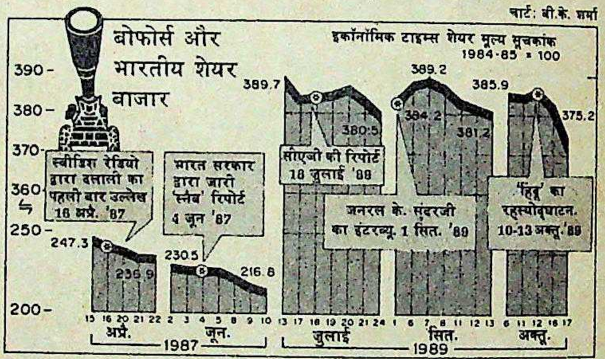

शेयर मूल्य सूचकांक में छह अंकों से अधिक गिरावट आ गई. जब सरकार ने स्वीडिश नेशनल ऑडिट ब्यूरो की रिपोर्ट जारी की तब सूचकांक में इससे दोगुनी गिरावट आई. लेकिन नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट आने, इंडिया टुडे में जनरल के. सुंदरजी द्वारा किए गए रहस्योद्घाटन और एन. राम तथा चित्रा सुब्रह्मण्यम की रिपोर्ट के बाद गिरावट इतनी तेज नहीं हुई. क्या शेयर बाजार बोफोर्स घोटाले से आंख मूंदने लगे हैं?

फैलने की मंशा

आईसीआई इंडिया लिमिटेड के मजदूर नेताओं द्वारा कंपनी पर अपनी संपत्ति बेचते जाने का आरोप लगाए जाने के बाद इसके प्रबंधकों को यह समझाने में भारी मुश्किल हो रही है कि कंपनी इस देश में अपने कारोबार को कम नहीं करना चाहती. यह सही है कि कानपुर स्थित इसका खाद कारखाना बिकने वाला है लेकिन यह अभय ओसवाल समूह के हाथ ही जाएगी, यह निश्चित नहीं है. अखबारों में यह जोरदार चर्चा है. बिड़ला घराना समेत तीन और घराने इसके लिए कोशिश कर रहे हैं और अभी तक अंतिम फैसला नहीं हुआ है. कंपनी की पॉलिएस्टर स्टेपल धागा इकाई घाटा दे रही है लेकिन कंपनी उसे नहीं बेच रही है. अपने खाद कारखाने की बिक्री से मिली राशि से कंपनी विशेष जरूरतों वाले रसायन बनाने की नई इकाई लगाने की योजना बना रही है. इस कंपनी की संकर बीज के उत्पादन की भी योजना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Hindustan Lever Limited

ASSISTANT MANAGERS (ACCOUNTS)

We offer a unique opportunity for young (under 30) and competent accounting professionals to build a career with us.

Applicants must be graduates who are well on their way to qualify as, if not already, Cost Accountants. They must have atleast 3 years of hands-on accounting experience preferably in a factory and should have familiarity with computerised accounting systems. Sound commercial sense and the ability to manage people are essential pre-requisites. Selected candidates will have considerable opportunities for growth covering the areas of financial and management accounting, treasury, purchasing, commodity buying etc.

An attractive remuneration package which compares with the best in the industry will be offered. Those selected should be willing to be located in any of our units including the new manufacturing units situated away from the main towns.

If you are interested in a career opportunity with us, please reply with a detailed resume within 10 days, superscribing the position applied for on the envelope, which should be addressed to: Selection Manager, Hindustan Lever Limited, P.O. Box 409, Bombay 400 001.

LINTAS HLL HRD 351 134

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

मिला-जुला रुख

चुनावी बयार का असर

पिछले दो महीनों से भारतीय शेयर बाजार में उठापटक का दौर जारी है. पिछले पखवाड़े भी यही हुआ. आम चुनाव की घोषणा के अगले दिन शेयर बाजार के सूचकांक एकदम से गिर गए. लेकिन जल्दी ही वे चढ़ भी गए. 16 अक्तूबर को इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक 383.1 से 375.2 पर आ गया. चार दिन बाद यह 387.3 पर पहुंच गया जो इस माह के सर्वोच्च अंक से थोड़ा नीचे था.

लेकिन महीने के बीच में बाजार निश्चित रूप से मंदी वाला था. मंदड़ियों की चलती हो गई थी और निवेशक भी दनादन अपने पुराने शेयर निकालकर नए महानिर्गमों में पूंजी लगा रहे थे. राइट आधार पर शेयर और डिबेंचरों की भरमार हो जाने से इनके शेयरों के लिए महामारी भी मची. कई शेयरों के लिए बुकिंग अधिक हो गई और जब शेयर देने की बात आई तो कमी पड़ गई. लार्सन ऐंड टुब्रो का मामला

चार्ट: बी.के. शर्मा

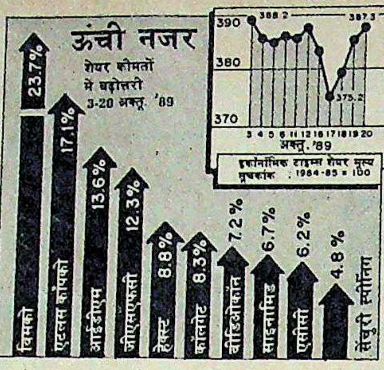

ऐसा ही था. इसके एक-एक शेयर के लिए 13-13 रुपए तक स्थगन शुल्क देना पड़ा.

मंदी के माहौल को बोफोर्स दलाली से जुड़ी खबरों की एक और खेप ने और गहरा किया. चुनाव की खबर से बाजार को एक बड़ा झटका लगा लेकिन यह गिरावट की अति थी. इसके तुरंत बाद बाजार संभल गया. निवेशकों को लग गया कि इतनी जल्दबाजी में चुनाव कराने से विपक्ष को नहीं, शासक दल को ही लाभ होगा. इसलिए बंबई शेयर बाजार का 100 शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक 16 अक्तूबर को तो 377.72 से गिरकर 369.3 पर आ गया लेकिन अगले ही दिन वह 376.6 अंक पर पहुंच गया.

इसके बाद बाजार में जो तेजी दिखी वह तो सिर्फ सरकारी वित्तीय संस्थानों द्वारा खरीद तेज कर दिए जाने के कारण ही थी. और अभी भी इस बात के संकेत नहीं हैं कि इस तरह की खरीद में कोई ढील दी जाएगी. क्योंकि चुनावी माहौल में सरकार खुद ही शेयर बाजारों में इतनी गिरावट नहीं आने देगी.

20 अक्तूबर को समाप्त हुए पखवाड़े में कोई शेयर बहुत ऊपर नहीं चढ़ा (देखें चार्ट). लेकिन रुख कुल मिलाकर मिला-जुला ही रहा. कई शेयर कमजोर भी पड़े. फूड स्पेशियलिटीज, हिंदुस्तान मोटर्स, जेके सिंथेटिक्स, सदर्न पेट्रोकेमिकल्स और वोल्टास ऐसे ही शेयर हैं. उधर, वित्तीय संस्थानों द्वारा डीसीएम के बंटवारे की अनुमति देने के बावजूद इसके शेयरों में जान नहीं लौट सकी.

दूसरी तरफ इस बात के आशाजनक संकेत हैं कि टेल्को के पुणे कारखाने का श्रमिक असंतोष शांत हो जाएगा. और महानिर्गम जारी करने वाली कंपनियों के कर्त्ताधर्त्ताओं का दावा है कि निवेशकों ने उनके निर्गम को जबरदस्त समर्थन दिया है. बाजार के पंडितों का मानना है कि जैसे-जैसे चुनाव पास आते जाएंगे, शेयरों के मूल्य ऊपर ही चढते जाएंगे.

जमा स्टॉक

	1989 ऊंचा	1989 नीचा	बंद 20.10.89	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	84.00	61.00	78.00	2.00+
एसोसिएटेड सीमेंट	345.00	230.00	292.00	24.00+
एशियन पेंट्स	226.25	165.00	211.25	6.25+
एटलस कोप्को	53.00	32.00	48.00	7.00+
बजाज ऑटो	450.00	290.00	321.25	18.75+
बड़ौदा रेयॉन	755.00	285.00	740.00	10.00+
बाटा इंडिया	89.00	60.00	67.00	1.00+
बेयर	910.00	580.00	720.00	17.50+
भारत फोर्ज	202.50	65.00	72.50	1.25+
बिरला जूट	73.75	41.50	51.00	0.50−
बॉम्बे डाइंग	162.00	104.00	124.00	3.00−
ब्रिटानिया इंडिया	126.00	89.00	126.00	15.00+
ब्रुक बांड	155.00	75.00	97.00	6.00+
सेंचुरी स्पिनिंग	2295.00	1230.00	2295.00	140.00+
क्लोराइड इंडिया	88.50	72.00	83.50	0.50−
कोलगेट पामो	371.25	162.50	195.00	16.25+
सायनामिड	92.00	55.00	88.00	5.50+
डीसीएम	85.00	31.00	52.50	5.50−
डनलप	95.50	70.00	74.00	1.00+
ईआई होटल्स	68.00	50.00	61.00	1.00+
एस्कार्ट्स	84.00	58.00	79.00	1.00−
फिनोलेक्स केबल्स	430.00	280.00	320.00	10.00+
फूड स्पेशियलिटीज	224.00	100.50	106.00	55.00−
गरवारे नाइलोन	55.50	36.00	50.00	0.50+
जी.ई. शिपिंग	46.50	33.75	43.35	2.85+
गुजरात स्टेट फर्टि.	190.00	123.75	182.50	20.00+
ग्रासिम इंडिया	137.00	75.00	102.00	1.50+
हिंदु. एल्यूमिनियम	327.50	155.00	255.00	15.00+
हिंदु. सीबा	1090.00	600.00	970.00	−
हिंदुस्तान कोकोआ	141.25	98.75	128.75	1.25−
हिंदुस्तान लीवर	103.00	69.50	101.50	0.50+
हिंदुस्तान मोटर्स	52.50	24.40	24.40	3.90−
आई.सी.आई.	68.00	39.00	50.00	2.00−
इंडियन आर्गेनिक	54.50	23.00	51.50	0.50+
इंडियन रेयन	108.00	75.75	84.50	0.75+
इंड्रॉल	335.00	218.75	242.50	6.25−
इंगरसॉल-रैंड	423.75	267.50	385.00	17.50+
आई.टी.सी.	129.00	46.25	66.50	0.50+
जे.के. सिंथेटिक्स	92.00	62.50	65.50	8.00−
काइनेटिक इंजी.	395.00	126.25	133.75	3.75−
किर्लोस्कर क्युमिंस	88.75	54.50	68.50	1.00+
केसीबी पंप्स	445.00	185.00	195.00	2.50+
लारसन-टुब्रो	128.00	81.50	104.00	4.00+
लिप्टन	90.00	81.50	104.00	4.00+
लोहिया-मशीन्स	28.00	12.50	16.00	1.00−
मदुरा कोट्स	104.00	92.25	98.00	2.00−
महिंद्रा-महिंद्रा	113.50	76.50	95.50	1.50+
मिल्क फूड	300.00	180.00	210.00	10.00−
मोटर इंडस्ट्रीज	695.00	560.00	660.00	−
मुकुंद लिमि.	140.50	75.00	136.00	2.00+
नेशनल आर्गेनिक	1180.00	710.00	1090.00	25.00+
निरलॉन	17.00	8.00	12.50	1.50−
ओरके सिल्क मिल्स	29.00	13.50	16.50	1.00−
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	30.50	16.50	23.00	1.25−
फाइजर	80.00	58.00	73.00	1.00−
पांड्स	212.50	151.25	175.00	1.25+
प्रीमियर ऑटो	68.00	40.00	62.00	3.50+
रेमंड	85.00	60.00	68.00	5.50+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	158.00	84.00	95.00	6.50−
सीमेंस इंडिया	95.00	65.00	74.00	2.00−
शॉ वैलेस	103.25	62.00	87.00	4.00−
श्रीराम फाइबर्स	94.00	55.00	57.00	3.00−
एसकेएफ बैयरिंग्स	3020.00	1140.00	1260.00	−
स्पिक	67.00	39.00	44.30	4.70−
टाटा स्टील	1580.00	1062.50	1237.50	42.50+
टेल्को	1097.50	657.50	1070.00	58.75+
वाम ओर्गेनिक	178.00	138.00	160.00	−
वीडियोकोन	192.50	55.00	185.00	20.00+
वोल्टास	1000.00	470.00	900.00	20.00−
विमको	32.00	15.00	23.50	5.75+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.1581	13.0144
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	1.3079	1.2937
बहरीन	दीनार	1	44.5236	44.4128
बांग्लादेश	टका	100	53.2928	53.1726
कनाडा	डालर	1	14.4505	14.2988
डेनमार्क	क्रोना	1	2.3560	2.3306
मिस्र	पौंड	1	6.1526	6.1029
फ्रांस	फ्रैंक	1	2.7473	2.6774
हांगकांग	डालर	1	2.1721	2.1500
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9526	0.9428
ईरान	रियाल	100	23.2928	23.1526
इटली	लीरा	100	1.2482	1.2338
जापान	येन	100	12.1655	11.8624
केन्या	शिलिंग	1	0.7926	0.7528
कुवैत	दीनार	1	55.9288	55.7128
मलेशिया	डालर	1	6.2984	6.2333
मारीशस	रुपया	1	1.0420	1.0100
नेपाल	रुपया	1	0.6528	0.6128
हालैंड	गिल्डर	1	8.1242	8.0347
पाकिस्तान	रुपया	1	0.7826	0.7528
सिंगापुर	डालर	1	8.6716	8.5799
स्पेन	पेसो	1	0.1300	0.1200
श्रीलंका	रुपया	1	0.4200	0.4000
स्वीडन	क्रोना	1	2.6422	2.6136
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	10.4952	10.3831
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1160	0.1000
थाईलैंड	बहत	100	63.2829	63.0000
ब्रिटेन	पौंड	1	27.0083	26.8097
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	16.9635	16.7926
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.1526	4.1000
सोवियत संघ	रूबल	1	25.9829	25.7928
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	9.3485	9.1158

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 21.10.89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: भवान सिंह

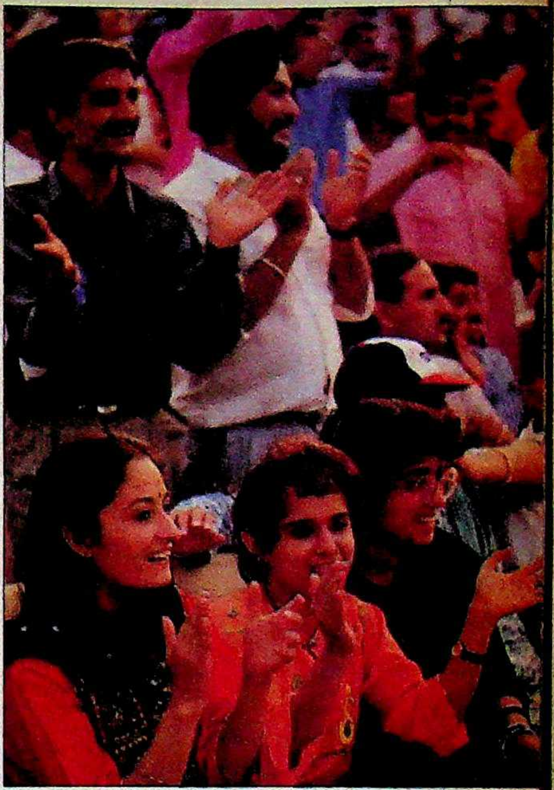

वाले अजहरुद्दीन की बाईं हथेली में चोट लग गई थी. उधर फुर्ती लाने के लिए कपिल देव मैदान में कसरत कर रहे थे. उन्होंने कहा, हमें बहुत मशक्कत करनी पड़ी. मन तो खेलना चाहता है पर शरीर इजाजत नहीं देता."

भारत की टीम द्वारा खेले गए मैचों को छोड़कर बाकी मैचों में गिने-चुने दर्शक ही मौजूद थे. मैचों का दूरदर्शन पर प्रसारण भी किसी काम का नहीं था.

पूरे खेल पर बोरियत हावी न होने की

गरमी से परेशान रॉबिन स्मिथ और उत्साह से भरी भीड़: कठिन कार्यक्रम

एक वजह यह थी कि शुरुआती खराब प्रदर्शन के बाद भारत ने अच्छा खेल दिखाया और सेमी फाइनल में पहुंच गया. भीतरी असंतोष और शारजाह के गहरे घावों को भरने के लिए भारत की टीम ने सुस्त जैसा खेल दिखाया. मजबूत बल्लेबाजी क्रम के बावजूद भारतीय खिलाड़ी श्रीलंकाई खिलाड़ियों के सामने भारतीय शांति सेना की तरह लड़खड़ाते नजर आए. कपिल देव ने आखिरी ओवर बड़ी चतुराई से फेंक कर अपनी टीम को शर्मनाक हार से बचा लिया.

इस भाग्यशाली जीत के बावजूद भारतीय बल्लेबाजों ने वेस्ट इंडीज के खिलाफ अगले मैच में निराशाजनक प्रदर्शन किया. कमजोर माने जाने वाले भारतीय तेज गेंदबाजों ने भारी वातावरण और मंद हवा का भरपूर लाभ उठाते हुए वेस्ट इंडीज को महज 196

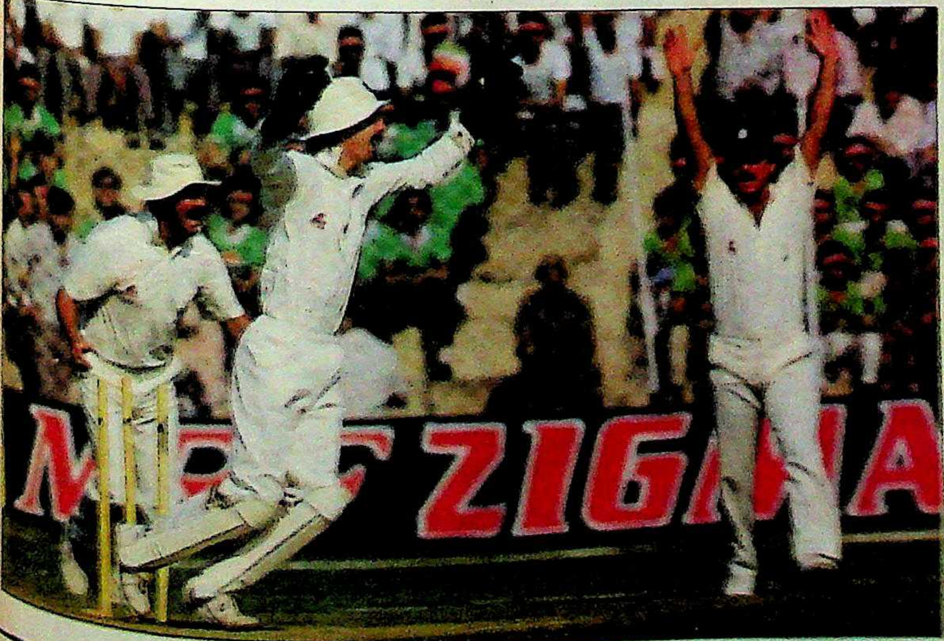

CRICKET FOR UNITY

इंग्लैंड की टीम ने शुरू में कुछ बेहतर खेल का प्रदर्शन किया लेकिन बाद में वह ढीली पड़ गई और कप जीतने का मौका गंवा बैठी

इंग्लैंड का जोरदार खेल: संकल्प का जादू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

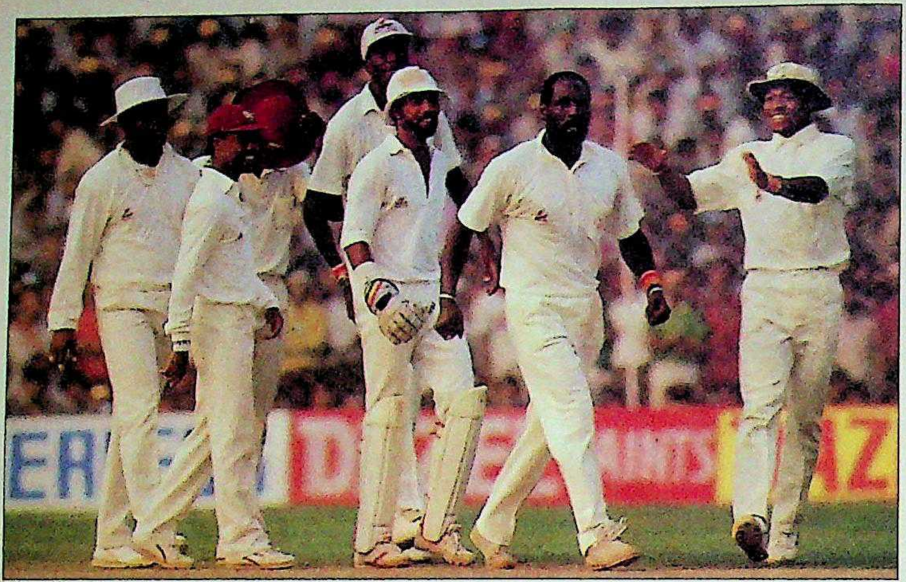

वेस्ट इंडीज टीम की शुरुआत अनिश्चयपूर्ण रही पर उसने अपने खेल को सुधारा और खतरनाक दिखने लगी

रिचर्ड्स का उत्साह बढ़ाते उनके खिलाड़ी: लाजवाब खेल

रनों पर रोक दिया. दर्शकों ने जीत पक्की समझकर 'मेरा भारत महान' के बैनर तान दिए. लेकिन यहां भी भारत की मध्य क्रम की बल्लेबाजी चरमरा गई और जीत का सेहरा वेस्ट इंडीज के सिर बंधा.

इस जीत के साथ ही वेस्ट इंडीज की लगातार पांचवीं बार हार का सिलसिला टूट गया. उनकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी में अचानक पहले वाली धार लौट आई. भारत को हराने की खुशी से झूमते विव रिचर्ड्स ने कहा, "सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हम टीम भावना के कारण सफल हुए."

इसी तरह की टीम भावना कानपुर में इंग्लैंड के खिलाफ भारतीय खिलाड़ियों में भी दिखी. उन्होंने खेल में वही चमक दिखाई जिससे 1983 में विश्व कप जीता था. खेल के पहले गूच ने कहा था कि 250 से ज्यादा का स्कोर मैच जीतने के लिए पर्याप्त होगा. हालांकि उनकी टीम ने 50 ओवरों में 225 रन बनाए लेकिन उन्हें जरा भी गुमान नहीं था कि उत्साह से भरे हुए ठिगने कद के खिलाड़ी चेतन शर्मा भी अपना हाथ दिखा सकते हैं. श्रीकांत ने दूसरे विकेट के गिरने के बाद चेतन को बल्लेबाजी के लिए भेजकर एक दांव खेला. उसके बाद जो कुछ हुआ वह विस्फोटक इतिहास है.

पूरी शृंखला में यह पहला मौका था कि इंग्लैंड की टीम को शर्मनाक हार का मुंह देखना पड़ा. गर्मियों में ऑस्ट्रेलिया से 'एशेज रबर' हारने के बाद उसे कमजोर टीम समझा जा रहा था. लेकिन नेहरू कप में उसने योजनाबद्ध तरीके से अपने पांच में से तीन शुरुआती मैच जीते.

ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड से पहला मुकाबला हारने के बाद वेस्ट इंडीज को बड़ी आसानी से पीट दिया. इस जीत से खुश एलन बॉर्डर ने कहा, "अंततः हमारे खिलाड़ियों में टीम भावना आ गई दिखती है." लेकिन दो दिन बाद ही बंबई में ऑस्ट्रेलियाई टीम ने पाकिस्तान टीम के सामने हथियार डाल दिए. बंगलूर में भारत से हारने के बाद तो नेहरू कप में उसकी चुनौती ही खत्म हो गई.

उस जीत से सेमी फाइनल में भारत का स्थान पक्का हो गया. लेकिन बंबई में वेस्ट इंडीज के खिलाफ सेमी फाइनल मैच खेलते हुए भारतीय टीम में अजीब सुस्ती दिखी. श्रीकांत के मूर्खतापूर्ण तरीके से रन आउट हो जाने पर भारतीयों के जूझने की क्षमता चुक गई दिखी. मध्य क्रम की बल्लेबाजी पहले की तरह एक बार फिर चरमरा गई और वेस्ट इंडीज ने 165 रन का लक्ष्य बड़ी आसानी से पार कर लिया.

भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन निश्चित रूप से घटिया रहा. हालांकि श्रीकांत की कप्तानी में कई सकारात्मक पहलू देखने को मिले लेकिन वे अधीर और भावना में बहते नजर आए. उनकी नई भूमिका से शुरू में उनकी बल्लेबाजी की शैली दबी नजर आई. लेकिन ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के खिलाफ उनके बल्ले की चमक फिर लौट आई. रमन लांबा और सिद्धू के अच्छे प्रदर्शन के कारण शुरू की बल्लेबाजी ठोस दिख रही थी. लेकिन मध्य क्रम कमजोर दिखा. गेंदबाजी में पैनापन नहीं था और वे सिर्फ रन रोकने तक ही सीमित रहे. टीम के मैनेजर चंदू बोर्डे ने कानपुर में कहा भी, "हमारा प्रदर्शन कहीं-कहीं ही अच्छा रहा."

भारत की कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तानी टीम शुरू में जैसी भी रही हो लेकिन थी वह शारजाह कप चैंपियन. उसके सामने हर

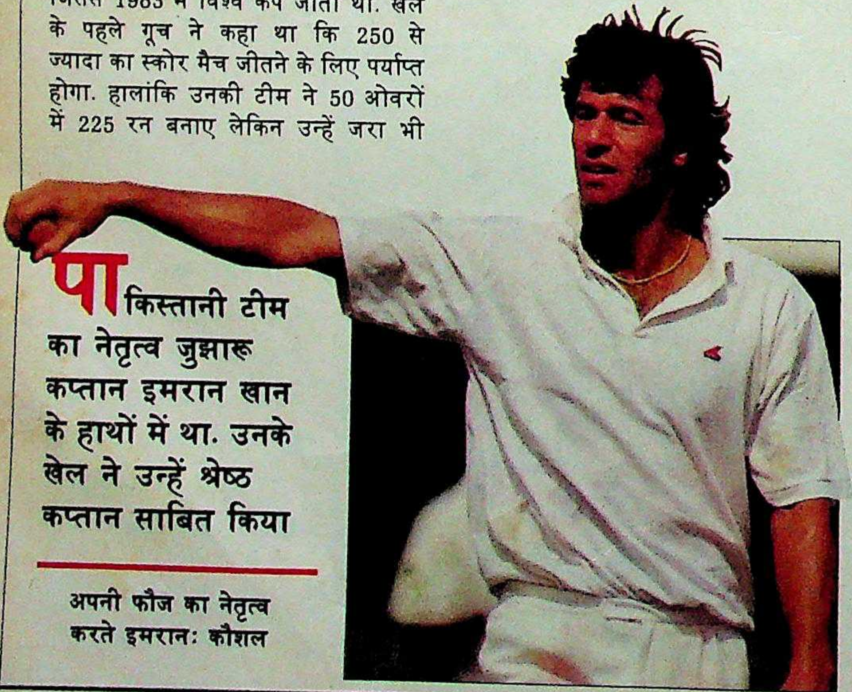

पाकिस्तानी टीम का नेतृत्व जुझारू कप्तान इमरान खान के हाथों में था. उनके खेल ने उन्हें श्रेष्ठ कप्तान साबित किया

अपनी फौज का नेतृत्व करते इमरान: कौशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम टेकवानी

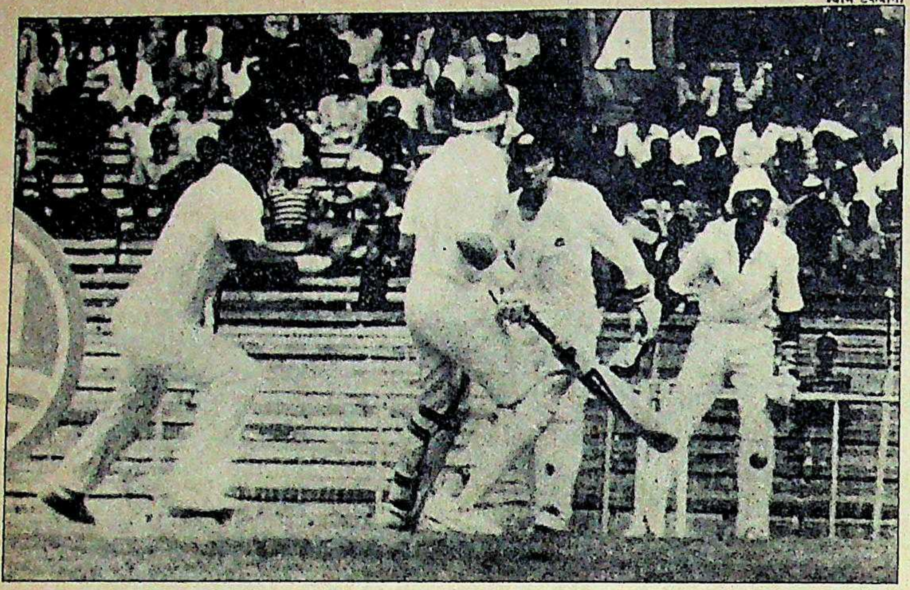

बड़ी उम्मीदें थीं ऑस्ट्रेलियाई टीम से परंतु वह खरी उतरी नहीं. टूर्नामेंट से वह बेआबरू होकर निकली

मद्रास में ऑस्ट्रेलिया और वेस्ट इंडीज का मुकाबला

तरह की मुश्किलें आईं. उसके धांसू बल्लेबाज जावेद मियांदाद फॉर्म में नहीं थे. उसके गेंदबाजों में भी ज्यादा पैनापन नहीं दिख रहा था. लेकिन अपनी चतुराई भरी गेंदबाजी, आक्रामक बल्लेबाजी और कुछ प्रतिभाशाली कप्तानी से इमरान खान टीम को परेशानियों से उबारते रहे. इंग्लैंड को हरा कर वह फाइनल में प्रवेश कर गई.

मैदान के बाहर इमरान जहां जाते, लोगों की निगाहें उन्हीं पर जम जातीं. उनसे बार बार चटपटे सवाले पूछे जाते. मसलन, "क्या आप अपने को सेक्स सिंबल मानते हैं? (जवाब: मैं इस नजरिए से क्रिकेटरों को नहीं देखता). आप भारतीय महिलाओं को पसंद करते हैं या पाकिस्तानी (जवाब: दोनों)."

सभी टीमों ने हालांकि व्यस्त कार्यक्रम की शिकायत की लेकिन कोई भी टीम भारी धनराशि को देखते हुए इसमें भाग लेने की अनिच्छुक नहीं थी. हर टीम को टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए 20.37 लाख रु. देने का वादा किया गया था. फाइनल मैच के विजेता के लिए 6.52 लाख, उप विजेता के लिए 4.07 लाख और सेमी फाइनल में पहुंचने वाली हर टीम के लिए 2.03 लाख रु. रखे रखे गए थे. इसके अतिरिक्त 19,650 रु. का मैन ऑफ द मैच पुरस्कार भी था.

नेहरू कप से यह उपमहाद्वीप अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की राजधानी के प्रबल दावेदार के रूप में उभरा है. क्रिकेट पर रकम खर्च करने के लिए कई प्रायोजक अचानक सामने आ गए हैं. ज्यादातर स्टेडियमों में नेहरू कप टूर्नामेंट लिए 3.5 करोड़ रु. खर्च करने वाली मद्रास की टायर कंपनी एमआरएफ के विज्ञापन तो लगे ही हुए थे, दूसरे विज्ञापनों की भी भरमार थी. एमआरएफ के प्रबंध निदेशक रवि मम्मेन कहते हैं, "क्रिकेट राष्ट्रीय खेल है और हमें पता है कि हमारे 90 फीसदी दर्शक स्कूटर, कार रखते हैं. इस तरह के खेल प्रायोजित करने से हमारी बिक्री बढ़ना स्वाभाविक ही है."

और एकदिवसीय क्रिकेट में जो उत्तेजना होती है उससे इसमें और भी मदद मिलती है. अनिश्चितता, उतार-चढ़ाव इसकी विशेषताएं हैं. जैसा कि बॉर्डर ने कहा, "एकदिवसीय क्रिकेट की खूबी ही यही है कि कोई भी टीम किसी भी दिन अपने प्रतिद्वंद्वी को पीट सकती है." दुर्भाग्यवश, सबसे पहले उन्हीं की टीम को यह कड़वी सचाई झेलनी पड़ी. —**राज चेंगप्पा** कानपुर, दिल्ली और मद्रास में, **सलिल त्रिपाठी** अहमदाबाद और बंबई में

श्रीलंका के खिलाड़ियों ने वेस्ट इंडीज के छक्के छुड़ा दिए लेकिन अनुभव की कमी उनके लिए अभिशाप बनी

अर्जुन रणतुंगे: शानदार साहसिक पारी

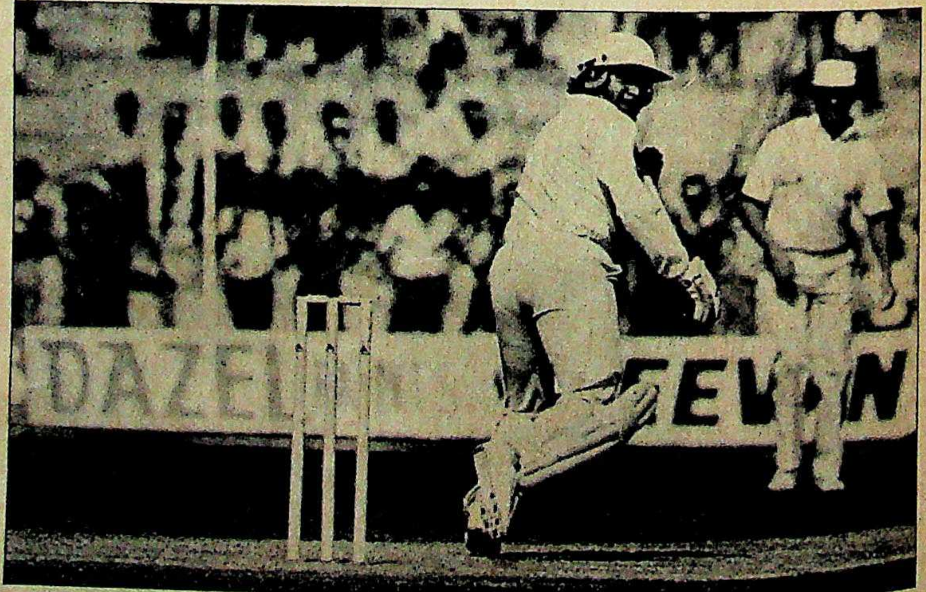

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Why the Tandons are a family in Vogue?

Vogue Blankets offer something for everybody in the family.

"Just what I was looking for" – says Mrs. Tandon

"When I first saw Vogue Blankets, I couldn't believe they were made here. I found such lovely shades, such pretty prints! Now, after using them for two seasons, I find they're so easy to wash, fold and store. They're mothproof, too! And even after regular use, they're still as good as new!"

"Light yet warm" – adds Mr. Tandon

"Being a textile engineer, I know how Vogue Blankets, made from synthetic fibres, are lighter yet warmer than woollens. The secret is their nonwoven structure. And, at their price, they offer real value for money!"

Mrs. Tandon finds them perfect for kids too!

"Vogue Blankets are not only soft and snug, but totally non-allergenic for babies. And now that our little one has grown, I've got her a Vogue Blanket from the Junior Range that's just been introduced."

Vogue Blankets. What a lovely gift idea!

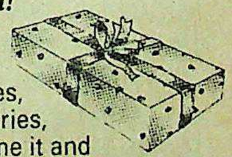

Vogue Blankets make an ideal gift. Marriages, arrivals, anniversaries, festivals... you name it and Vogue meets the need!

VOGUE BLANKETS

What a lovely way to tuck in this winter!

CLARION D 280

A quality product from UNIPRODUCTS (INDIA) LTD., in technical collaboration with UNIPRODUCTS CANADA INC.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेस जगत

मार करने की नफासत

संपादकीय स्वतंत्रता के लिए अखबारों द्वारा संघर्ष

पिछले पखवाड़े प्रेस की आजादी का नाजुक मुद्दा फिर चर्चित हो उठा जिसने मद्रास के 'हिंदू', दिल्ली के 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'टाइम्स ऑफ इंडिया' सरीखे भारत के कुछ अति प्रतिष्ठित अखबार समूहों को भी विवाद में खींच लिया. पहले समूह के दो संपादकों का झगड़ा सार्वजनिक मुद्दा बना, तो दूसरे के संपादक हरिकृष्ण दुआ ने इस्तीफे की धमकी दी जबकि 'टाइम्स' समूह के नवीनतम अखबार 'इंडिपेंडेंट' के नवनियुक्त संपादक विनोद मेहता ने तो सचमुच इस्तीफा ही दे दिया.

किसी कानूनी सुरक्षा के अभाव में भारतीय प्रेस को अक्सर सरकारी हस्तक्षेप के आगे झुकना पड़ता है, जिसकी सबसे बड़ी मिसाल इमरजेंसी में सेंसरशिप थी. बहरहाल, तीनों ताजा विवादों के उभरने के बाद कुछ वरिष्ठ पत्रकार महसूस करने लगे हैं कि राजीव की इस गुपचुप मार करने की नफीस नीति से बेहतर तो इंदिरा गांधी के खुले हमले ही हुआ करते थे. मौजूदा नीति में एक तरफ दूरदर्शन के लुभावने कार्यक्रमों और 'सलाहकार' बनाने के लालच हैं तो दूसरी तरफ जांच और कानूनी कार्रवाई की धमकी.

एसोसिएट एडिटर नरसिंहन राम ने आरोप लगाया कि उनके चाचा, संपादक जी. कस्तूरी सरकारी दबाव के आगे झुक गए हैं

आम चुनावों के पहले यह दोधारी तलवार खुलकर करतब दिखाने लगी. सबसे पहले 'हिंदू' के एसोसिएट एडिटर और भागीदार नरसिंहन राम ने आरोप लगाया कि उनके संपादक और चाचा गोपालन कस्तूरी ने बोफोर्स तोप सौदे में दलाली के उनके सनसनीखेज रहस्योद्घाटनों को आगे छापने से मना कर दिया.

'हिंदू' के एसोसिएट एडिटर को अगर आशंका हुई कि खबर दबाने के लिए सरकार उनके संपादक पर दबाव डाल रही है, तो 'हिंदुस्तान टाइम्स' के संपादक दुआ को कुछ दिन बाद यह संदेह हुआ कि अखबार में मनगढ़ंत रिपोर्ट छपवाने के लिए वह उनके एक वरिष्ठ सहयोगी को इस्तेमाल कर रही है. अखबार में विपक्षी नेता वी.पी. सिंह के बेटे अजेय सिंह के तथाकथित गुप्त खातों से संबंधित रिपोर्ट छपी तो उन्होंने हस्तक्षेप किया. यह रिपोर्ट वरिष्ठ संपादक शुभव्रत भट्टाचार्य के नाम के साथ सेंट किट्स डेटलाइन से छपी थी.

दरअसल भट्टाचार्य उदयपुर में हनीमून मनाने के नाम पर छुट्टी पर गए थे. कब उन्होंने सेंट किट्स की राह पकड़ी और लौटकर रिपोर्ट छपवाई, यह सब संपादक की जानकारी में नहीं था. युवक कांग्रेस के पूर्व कार्यकर्ता भट्टाचार्य लेखों में अपने राजनैतिक विचारों को छुपाने की कोशिश नहीं करते. इस विवाद पर कोई टिप्पणी करने से इनकार करते हुए उन्होंने इस आरोप का खंडन नहीं किया कि उनकी यात्रा का खर्च इंका समर्थकों ने उठाया था.

ज्यादातर पाठकों का मानना था कि सेंट किट्स के खातों की रिपोर्ट बोफोर्स दलाली के रहस्योद्घाटनों की ओर से ध्यान हटाने के लिए सत्तारूढ़ पार्टी की कीचड़ उछालू विभाग की करतूत है. ऐसे 'रहस्योद्घाटनों' से अखबार की विश्वसनीयता पर आंच ही आती. हालांकि दुआ के ढाई साल के संपादकत्व में इसकी प्रसार संख्या बढ़ी थी. कम-से-कम तीन अखबारों ने यह खबर दी कि दुआ ने इस्तीफा दे दिया है पर उन्होंने इन खबरों की पुष्टि या खंडन करने से इनकार कर दिया. उन्होंने इतना ही कहा कि "मेरे और मालिकों के बीच कोई समस्या नहीं है. प्रेस की आजादी का मुद्दा निश्चय ही महत्वपूर्ण है."

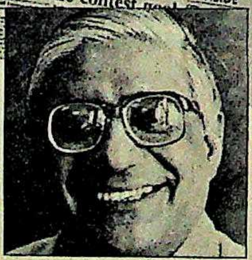

संपादक हरिकृष्ण दुआ को संदेह है कि सरकार उनके अखबार में मनगढ़ंत रिपोर्ट छपवाने के लिए उनके एक वरिष्ठ सहयोगी का इस्तेमाल कर रही है

दुआ हालांकि सरकार विरोधी खेमे से काफी दूर हैं लेकिन उन्होंने अपने मालिक और इंका सांसद कृष्ण कुमार बिड़ला के राजनैतिक प्रतिबद्धताओं के विपरीत कठोर रवैया पहली बार नहीं अपनाया है. कुख्यात मानहानि विरोधी विधेयक पर भी उनका रवैया ऐसा ही था.

लेकिन मेहता इतने भाग्यशाली नहीं थे. उनके 29 दिन पुराने अखबार 'इंडिपेंडेंट' के मुखपृष्ठ पर छपी एक खबर पर जब हो-हल्ला मचा तो उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया गया. 19 अक्तूबर को छपी इस रिपोर्ट में दावा किया गया था कि पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने नहीं बल्कि पूर्व उपप्रधानमंत्री यशवंत राव चव्हाण ने सीआईए के लिए जासूसी की थी. यह खबर 'रॉ' के असंतुष्ट कर्मचारियों की एक चिट्ठी के आधार पर लिखी गई थी. इसमें आरोप लगाया गया था कि अमेरिकी महिला कूटनयिक से चव्हाण के गुप्त संबंध थे. जिसके जरिये वे सीआईए को सूचनाएं भेजा करते थे.

यशवंत राव चव्हाण से जुड़ी हंगामेदार खबर वापस लेने और माफी मांगने के बाद टाइम्स समूह के 29 दिन पुराने अखबार 'इंडिपेंडेंट' से संपादक विनोद मेहता ने इस्तीफा दे दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब स्वतंत्र प्रेस पर आर्थिक दबाव पड़ेगा-

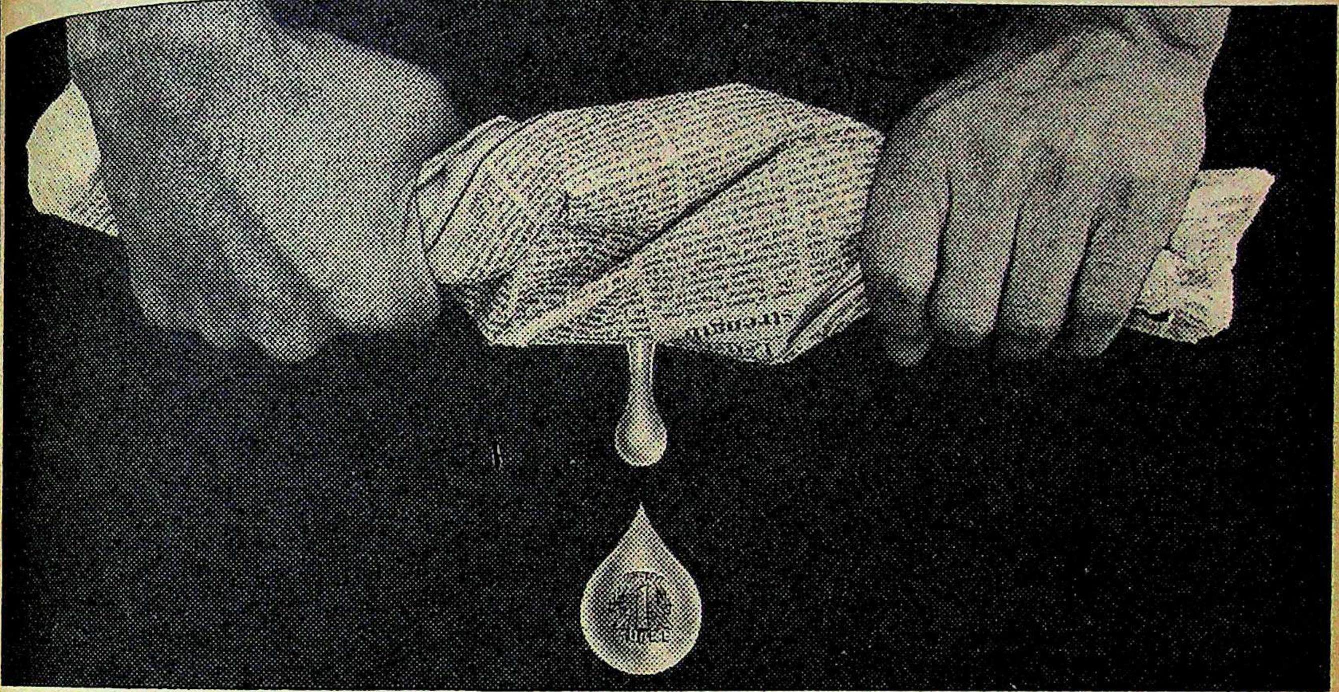

तो लोकतंत्र की आवाज़ घुट कर रह जाएगी.

यह तो "ज्ञान पर थोपा गया प्रतिबंध है और इसका सीधा-सादा मतलब है कि किसी भी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए बोझ से लाद दिया जाए कि वह पढ़-लिख सकता है और अपने चारों ओर की दुनिया की जानकारी रखने के लिए अपने नागरिक कर्त्तव्य के प्रति सजग है."

सुप्रीम कोर्ट ने 1984 में यह कहा था और साथ ही उसने अखबारी कागज पर सरकार द्वारा लगाए गए 850 रुपए प्रति टन के आयात शुल्क को घटा कर 550 रुपए प्रति टन करने का फैसला भी दिया था.

अखबारी कागज की सरकारी मिलों ने अखबारी कागज की कीमत 40% तक बढ़ा दी है. चिकने अखबारी कागज पर शुल्क सात गुना बढ़ा दिया गया है. छोटे और मध्यम दर्जे के अखबारों को कुछ स्वागत योग्य रियायतें भले ही दी गई हों लेकिन बाकी अखबारों को, जो 80% से भी ज्यादा अखबारी कागज का इस्तेमाल करते हैं, पंगु बना देने वाला यह बोझ झेलना ही पड़ रहा है.

परिणाम एकदम स्पष्ट है—लागत में वृद्धि, प्रकाशनों की कीमत में वृद्धि, विज्ञापन दरों में वृद्धि, अखबार उद्योग पर कमरतोड़ वित्तीय दबाव. यह दबाव प्रगति की रफ्तार को मंद करता है, कोने-कोने से खबरें लाने और कोने-कोने तक खबरें पहुंचाने के काम में बाधा पहुंचाता है. पढ़ा-लिखा होना बेशक अब बड़ा बोझ बनता जा रहा है.

हरेक नागरिक को 'मुक्त' ज्ञान, सूचना, बौद्धिक संतुष्टि और मनोरंजन पाने का अधिकार है. इसके लिए प्रेस ही उनका एकमात्र स्वतंत्र और सस्ता स्रोत है. प्रेस लोकतंत्र की जान है, राजनैतिक और सामाजिक संवाद का प्राण तत्व है. भारत जैसे विविध संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं वाले देश में अखबार ही इस इंद्रधनुषी विविधता के आइने होते हैं. यह स्वतंत्रता का प्रतीक है, जन-जन की आवाज है. दबी-घुटी भावनाओं के लिए सेफ्टी वाल्व है लेकिन अखबार यह सब तभी तक कर सकते हैं जब तक उन पर सरकारी अंकुश न हो, उसकी आवाज दबाई न जाए.

सरकार ने अखबारों पर तो भारी वित्तीय दबाव डाल दिया है जबकि सरकारी प्रचार माध्यमों के विस्तार के लिए थैलियां खोल दी गई हैं.

इन सबकी भारी कीमत चुकानी होगी. और यह कीमत अंततः केवल अखबार उद्योग ही नहीं चुकाएगा. खतरे में पड़ेगी देश की लोकतांत्रिक चेतना, डूबेंगे राष्ट्र निर्माताओं के आदर्श. और यह कीमत जनता को चुकानी होगी.

राष्ट्र को नुकसान से सरकार का भला नहीं हो सकता.

राष्ट्र के हित में इंडियन न्यूजपेपर सोसाइटी द्वारा जारी

MILESTONES/INS/343a Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चव्हाण महाराष्ट्र के नायक सरीखे हैं. इस खबर पर व्यापक भावनात्मक प्रतिक्रिया हुई. आसन्न चुनावों ने इसे और भी विस्फोटक बना दिया. सरकार ने चिट्ठी वितरित करने वाले दो कर्मचारियों को बरखास्त कर दिया और मुख्यमंत्री शरद पवार ने अखबार से माफी मांगने को कहा.

मेहता ने अपने संपादकीय में माना कि अखबार के पास अपना कोई दस्तावेज नहीं है. लेकिन उन्होंने यह दावा किया कि दस्तावेज खुफिया ब्यूरो के पास हैं. उन्होंने यह भी कहा कि यदि सरकार दस्तावेज पेश कर खबर को गलत साबित कर दे तो वे माफी मांग लेंगे.

लेकिन यह पर्याप्त नहीं था. पवार दिल्ली में टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के मालिकों से मिले. मेहता ने 25 अक्तूबर को खबर वापस ले ली और मुखपृष्ठ पर माफी मांगी. इसके 12 घंटे के भीतर उन्होंने इस्तीफा दे दिया और कहा कि इसके साथ ही अखबार पर उनका नैतिक अधिकार नहीं रहा.

इस बीच 'हिंदू' में अनिश्चितता बनी रही. राम के आरोपों के बाद अखबार के संपादक और प्रबंध निदेशक कस्तूरी 18 अक्तूबर को निदेशक मंडल की बैठक में उन्हें निलंबित कराने और संपादक के आदेशों की खुलेआम अवहेलना करने के लिए उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करवाने में कामयाब हो गए. राम के भाई और अखबार के महाप्रबंधक एन. मुरली को बैठक में वोट देने से रोक दिया गया क्योंकि उन्हें 'पक्षपाती' माना जा रहा था. दूसरे दिन मुरली और उनके चाचा एस. रंगराजन (जो मुरली और कस्तूरी के अतिरिक्त तीसरे पूर्णकालिक निदेशक हैं) हाईकोर्ट से निलंबन का स्थगन आदेश ले आए.

कस्तूरी ने 24 अक्तूबर को एक जवाबी हलफनामा दायर किया. लेकिन दूसरे दिन जब इस पर सुनवाई शुरू हुई तो उनके वकील ने समझौते के लिए कुछ समय मांगा. सो, 3 नवंबर तक मामले की सुनवाई स्थगित कर दी गई.

इस बीच, राम स्वीडन, जेनेवा और लंदन चले गए और वहां रहस्योद्घाटन किया कि बोफोर्स दलाली के मामले में उनके हाथ 'एक महत्वपूर्ण सुराग' लगा है. स्वीडन में खचाखच भरी एक प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने संकेत दिया कि उनके नए रहस्योद्घाटनों से बड़े-बड़े लोग लपेट में आ जाएंगे.

इससे अखबार में फिर लड़ाई छिड़ सकती है. परिवार के सदस्यों में अब यह संदेह बढ़ गया है कि कोई अदृश्य हाथ एक कड़े आलोचक को कुचलने की कोशिश में जुटा हुआ है.

—डेविड देवदास और ब्यूरो रिपोर्ट

जिया-उर-रहमान अंसारी

नाजुक मामला

बलात्कार के प्रयास का आरोप

किसी साधारण लड़की के साथ वह सब हुआ होता जो 26 वर्षीय मुक्ति दत्ता के साथ हुआ तो वह घर जाकर दो दिन तक रोती रहती और फिर आंसू पोंछकर सब कुछ भुला देती. लेकिन मुक्ति दत्ता कोई साधारण लड़की नहीं हैं. कुमाऊं के बिनसर में फलों के बागान के मालिक के यहां जन्मी मुक्ति की शिक्षा जयपुर के महारानी गायत्री देवी स्कूल में हुई है. पिछले चार साल से वे पिता की जायदाद के नजदीक लगभग 300 गांवों में निचले तबके के लोगों के बीच काम कर रही हैं. पर्यावरण संरक्षण के लिए काम कर रही 'जन-जागरण समिति' की सचिव होते हुए मुक्ति ने जो कुछ काम किया है उनसे उनकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता बढ़ी ही है.

सो, 11 अक्तूबर को अपने साथ हुए एक हादसे को सार्वजनिक मुद्दा बनाते हुए मुक्ति ने बताया कि 64 वर्षीय केंद्रीय वन एवं पर्यावरणमंत्री जिया-उर-रहमान अंसारी ने अपने दफ्तर में उनके साथ दुर्व्यवहार किया और बलात्कार करने की कोशिश तक की. मुक्ति अल्मोड़ा की एक पर्यावरण संस्था में फैली कुव्यवस्था और वहां पनप रहे रेजिन व टिंबर माफिया के बारे में बताने के लिए अंसारी के पास आई थीं.

नई दिल्ली की लोदी कॉलोनी के थाने में मुक्ति द्वारा दर्ज एफआईआर के अनुसार, जब वे चैंबर में घुसीं तो अंसारी ने पीछे से दरवाजे की कुंडी लगा ली. "वे मेरे ऊपर लद गए, मुझे बांहों में भरकर चूमने की कोशिश की और मेरे बदन पर और कपड़ों के अंदर हाथ फेरने लगे. मैं बच निकलने के लिए हाथ-पांव मारने लगी. इस छीना-झपटी के दौरान अंसारी ने मुझे सोफे पर लिटा दिया और मेरे ऊपर झुक गए." लेकिन मुक्ति किसी तरह भाग निकलीं.

यह हरकत करते वक्त अंसारी को पता नहीं था कि मुक्ति ऊंचे तबके से संबंध रखती है. वे प्रधानमंत्री राजीव गांधी के संपर्क में आ चुकी हैं और बिनसर को अभयारण्य घोषित करने की पैरवी कर चुकी हैं. कैबिनेट सचिव टी.एन. शेषन जब पर्यावरण विभाग के अध्यक्ष थे तब काम के सिलसिले में मुक्ति उनके काफी करीब रहीं.

बहरहाल, अंसारी वाले हादसे के कुछ ही घंटे बाद मुक्ति ने शेषन को फोन पर सारा किस्सा बयान करते हुए कहा कि वे प्रधानमंत्री को इसकी जानकारी दे दें. इस दौरान उनके एक परिवारिक मित्र बृजेंद्र सिंह ने सीधे राजीव से बात की. इससे मुक्ति को लगा कि अंसारी को कैबिनेट से निकाल दिया जाएगा.

प्रमोद पुष्करणा

महिला संगठनों का विरोध; और (इनसेट) अंसारी

लेकिन शेषन, देशमुख और कल्याण राज्यमंत्री राजेंद्र कुमारी वाजपेयी के आश्वासन के हफ्ते भर बाद ही मुक्ति को यकीन हो गया कि अब कुछ नहीं होने वाला. मुक्ति बताती हैं कि राजेंद्र कुमारी वाजपेयी ने उनसे कहा कि जो हुआ वह निश्चित रूप से दुखद है लेकिन चुनाव सिर पर होने से स्थिति काफी नाजुक है.

जब अंसारी को उन्नाव से इंका का टिकट मिल गया तो मुक्ति ने उनके खिलाफ खुली लड़ाई छेड़ दी. 'मानुषी' से लेकर 'पीपल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज' जैसी 13 संस्थाएं मुक्ति का समर्थन कर रही हैं. सुकुमार-सी मुक्ति खुद भी पूरे जोश से इस लड़ाई में जुटी हैं, "यदि इतने सीधे-साफ मामले पर कोई कार्रवाई नहीं की गई तो कैसे मामले पर की जाएगी." उनका मानना है कि यह मामला अब उनसे और अंसारी से ही जुड़ा नहीं रह गया है. मुक्ति की बात में उन अनगिनत महिलाओं का दर्द छिपा है जिनकी ऊपर तक पहुंच नहीं होती और जो ऐसे हादसों को चुपचाप सह जाती हैं.

—डेविड देवदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच उंगलियाँ साथ मिले तो मुट्ठी कहलाए
उंगलियों की चुस्ती-फुर्ती मुट्ठी की जान बन जाए.

जैसे
झंडु पंचारिष्ट
पाचन शक्ति बढ़ाए,
तन्दुरुस्ती जगाए.

क्या आप जानते हैं कि ज़्यादातर बीमारियाँ हाज़मे की ख़राबी से शुरू होती हैं? उनके लक्षण भले ही अलग-अलग हों लेकिन उनका मूल कारण एक ही होता है. कमज़ोर हाज़मा. ख़राब तन्दुरुस्ती. तो सुनिए! झंडु पंचारिष्ट. पांच गुणों वाला पाचक टॉनिक. आपके हाथ की उंगलियों की तरह झंडु पंचारिष्ट भी है आपकी पाचनक्रिया सुधारने का सुरक्षित व असरदार उपाय. चाहे वो बदहज़मी हो, ज़्यादा खाने की तकलीफ़ या गैस, वायुरोग या फिर हल्के जुलाब की ज़रूरत या भूख बढ़ाने का सवाल – झंडु पंचारिष्ट आपकी इन पाचन समस्याओं का समाधान है. और फिर यह केवल लक्षण विशेष के लिए ही असरकारक नही है. ५ उंगलियों के अलग अलग इस्तेमाल की अपेक्षा ज़्यादा प्रभावशाली मुट्ठी की तरह ही झंडु पंचारिष्ट में वे आयुर्वेदिक गुण हैं जो एक साथ मिलकर आपकी पूरी पाचन क्रिया को सुधारते और उसे स्वस्थ बनाते हैं. झंडु पंचारिष्ट का नियमित इस्तेमाल कीजिए. कुछ ही दिनों में आप जान जाएंगे कि आप सेहतमंद हो रहे हैं. याद रखिए, अच्छा हाज़मा याने अच्छी तन्दुरुस्ती! और फिर जान है तो जहान है!

४५० मिली. और
२०० मिली.
में उपलब्ध.

झंडु पंचारिष्ट
पाँच गुणोंवाला पाचक टॉनिक

CLARION/ZP/9025/3 HIN

भरिए
यह कूपन और
अपनी चहेती आवाज़ सुनिए:
बच्चे की खिलखिलाहट

हंसी-खुशी और मौज-मस्ती बच्चों के लिए उतनी ही ज़रूरी हैं जितने ज़रूरी हैं खाना-पीना और हवा. और डिस्नी टुडे लेकर आया है यही मस्ती... यही मज़े.
बस तो फिर यह कूपन भर दीजिए और हर एक को खुश कर दीजिए.

आकर्षक छूट का लाभ उठाईये.
कूपन निम्नलिखित पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो.बॉ. न० 706 दिल्ली-मथुरा रोड
फ़रीदाबाद - 121 007

मुझे अपने बच्चे के लिए सबस्क्रिपशन चाहिए. यह रहा मेरा सालाना सबस्क्रिपशन ☐ हिंदी रु. 78/- ☐ अंग्रेजी रु. 96/- प्रति के लिए. मैं भुगतान चैक/मनी आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट नं. ______ द्वारा कर रहा हूं.
कृपया प्रति निम्नलिखित नाम व पते पर भेजें:
नाम ______
उम्र ______ लिंग ______
डाक-पता ______
विद्यालय : ______
माता-पिता/अभिभावक के हस्ताक्षर ______
कृपया भुगतान लिविंग मीडिया इंडिया लि० के नाम पर बनाएं.

Walt Disney's
डिस्नी टुडे
अब उपलब्ध हर पखवाड़े
हिन्दी और अंग्रेज़ी में

© 1987 THE WALT DISNEY CO. USA.
MILESTONES/DT/114 Hin a

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाइबिल की कहानियां

एक और धार्मिक आख्यान

रामायण और महाभारत के बाद अब बाइबिल

छोटे परदे पर 'रामायण' और 'महाभारत' की सफलता के बाद अब बारी है एक और धार्मिक सीरियल—'बाइबिल की कहानियां' की. 39 प्रकरणों का यह सीरियल क्रिसमस से कुछ पहले शुरू होगा. हर इतवार की सुबह यह छोटे परदे पर दिखाया जाएगा.

5 करोड़ रु. की इस भारी-भरकम योजना का बीड़ा अप्पाचन नाम से जाने जाने वाले एम.सी. पुन्नोस की एर्नाकुलम स्थित नवोदय फिल्म्स ने उठाया है. मलयाली फिल्म उद्योग के अगुआ नवोदय के खाते में देश की पहली त्रिआयामी फिल्म 'माई डियर कुट्टीचेतन' भी है. किंग जेम्स की बाइबिल पर आधारित पटकथा बंबई के भूषण वनमाली ने तैयार की है. मगर इसको अंतिम स्वीकृति चर्च के नेताओं, विभिन्न समुदायों के प्रमुख लोगों और विद्वानों की एक 12 सदस्यीय समिति ने दी. सीरियल के 30 प्रकरण ओल्ड टेस्टामेंट पर और नौ न्यू टेस्टामेंट पर आधारित हैं.

225 फुट का जलपोत; नूह बने रज़ा मुराद; और (नीचे) निमरोद बने शम्मी कपूर: बड़ा खेल

बाढ़ के दृश्य स्टुडियो में फिल्माने के लिए इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों और बड़े जलपोत के छोटे नमूने का इस्तेमाल करने की योजना है

पिछले महीने शूटिंग की शुरुआत कन्याकुमारी के नजदीक तिरुनेलवेली में 225 फुट चौड़े और 300 फुट ऊंचे नूह के जलपोत और बाबेल की मीनार के लिए तैयार शानदार सेट से हुई. शैतान का दृश्य तिरुअनंतपुरम के नजदीक एक पहाड़ी सैरगाह पोनमुडी में फिल्माया गया. फिल्म की ज्यादातर शूटिंग हालांकि केरल और तमिलनाडु में होगी लेकिन सीरियल को प्रामाणिक बनाने के लिए कुछ दृश्य मिस्र और येरूसलम में भी फिल्माए जाएंगे.

बाढ़ के दृश्यों को स्टुडियो में फिल्माने के लिए इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों और जलपोत के छोटे नमूने के इस्तेमाल की भी योजना है. अप्पाचन के बेटे और सीरियल के एक निर्देशक जीजो कहते हैं, "आधुनिक तकनीक के अपने फायदे हैं. 'टेन कमांडमेंट्स' फिल्म बनाते वक्त ये सुविधाएं नहीं थीं."

यह टेली सीरियल इस वजह से भी बेमिसाल है कि इसमें हर प्रकरण का अलग निर्देशक होगा. जीजो कहते हैं, "इससे हर प्रकरण में ताजगी बरकरार रहेगी." अप्पाचन का कहना है, "इससे निर्देशकों में प्रतियोगिता की भावना रहेगी." आश्चर्य नहीं कि जीजो, फाजिल, राजीव कुमार, सीबी मलयालिल और प्रताप पोथेन सरीखे निर्देशक अपनी निर्देशन क्षमता दिखाने के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं.

दक्षिण भारत में फिल्म संगीत की हस्ती इलयाराजा इसका शीर्षक गीत तैयार कर रहे हैं, तो फिल्म उद्योग और टीवी के कई सितारों को इसके लिए अनुबंधित किया गया है. निमरोद की भूमिका शम्मी कपूर, नूह की रज़ा मुराद और जैकब की भूमिका आलोकनाथ निभाएंगे.

लेकिन असल दिलचस्पी इस बात में है कि यीशु मसीह की भूमिका कौन अदा करेगा? निर्माता इसका जवाब नहीं दे रहे.

अप्पाचन को उम्मीद है कि 'बाइबिल की कहानियां' सारे धार्मिक बंधनों को तोड़ 'रामायण' और 'महाभारत' से ज्यादा लोकप्रिय हो जाएगा. वे कहते हैं, "बाइबिल का संदेश सार्वभौमिक है. इस सीरियल को लंबे अरसे तक याद किया जाएगा." लगता है दूरदर्शनप्रेमियों के लिए धर्म अब अफीम बन जाएगा.

—रमेश मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या अपनी जीप को जी - जानसे
आप अपनी बेटी ब्याह सकेंगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ानसे चाहनेवाले शख़्स से
ो?

क्यों कि बड़ी अजीब होती है उसकी शख़्सियत. एक तरफ़ उसे चाहिए दुनिया का हर ऐशो आराम... और दूसरी तरफ वो रखता है हर मुश्किल से जूझने की ज़बरदस्त शक्ति.

पर आप अगर उसे क़रीब से जानना चाहे तो एक दिन चाय पर बुलाइए... और उससे बुलवाइए.

लेकिन अपने बारे में वो आसानी से कुछ नहीं कहेगा. (मसलन कुछ ही सालों में अपने फलते-फूलते कारोबार या विदेशों से मिलनेवाले बिज़नेस के बारे में).

पर एकबार उसकी जीप का जिक्र छेड़कर देखें, फिर तो वो रोके नहीं रुकेगा. बताएगा कि किस क़दर चाह है उसे किसी तेज रफ्तार शक्ति पर हुकूमत करने की... एक ऐसे दोस्त की जो हर अच्छे-बुरे वक़्त में उसका साथ निभाए. और फिर शान से कहेगा ये सारी खूबियां मौजूद है उसकी जीप में. जो लेती बहुत कम है, देती है ढेर सारे फायदे (25 पैसे में चले 1 किलोमीटर)*... यानी बचत ही बचत. और बताएगा कि जीप की यही ख़ूबी तो उसके कारोबारी दिमाग को बेहद जचती है.

चलते-चलते बेधड़क ये भी कहेगा कि दुनिया चाहे कुछ सोचे-समझे, अपनी बला से, मैं वही करता हू, जो मेरा दिल चाहता है.

लेकिन फिर भी आपसे छुप नही सकेगी ये बात कि भले ही इसे दुनिया की रत्तीभर परवाह नही, पर अपने प्यार (आपकी बेटी) पर ये सारी दुनिया कुर्बान कर सकता है!

अब आपके लिए फैसला क्या मुश्किल... यक़ीनन आपकी बेटी राज करेगी उसके दिल पर... है न सच! तो करवाइए मुंह मीठा!

Mahindra
Jeep MM 540
DIESEL

जोशीली रफ़्तार... सूझबूझ अपार

*वर्तमान डीज़ल मूल्यों के अनुसार, परीक्षण परिस्थितियों में इंधन-खपत 40 कि.मी. प्रति घंटा वेग पर 15 कि.मी. प्रति लीटर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS MM P3 2537 HI

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार की किसी समुचित नीति के अभाव में आरएसएस के एक कार्यकर्ता प्रकाशचंद जोशी ने आतंकवादियों की गोलियों से अनाथ हुए पंजाब के 8,000 बच्चों का भविष्य संवारने और उन्हें घरेलू माहौल में पालने पोसने के लिए मानवतावादी अभियान शुरू किया. उनका संदेश था, 'सांप्रदायिकता की दीवारें मत खड़ी करो, बच्चों का भविष्य संवारो'. उनका आंदोलन अब और लोगों ने संभाल लिया है.

पंजाब

अनाथों को अपनाने का अनूठा अभियान

प्रश्नः तुम्हारे पिता को क्या हुआ?
उत्तरः उग्रवादियों ने दुकान पर मार डाला.
प्रश्नः उग्रवादी कौन हैं?
उत्तरः वे डाकू हैं.
प्रश्नः उन्होंने तुम्हारे पिता क़ो क्यों मारा?
उत्तरः मैं नहीं जानता.

इन सवालों के जवाब देते हुए पांच वर्षीय राजीव कुमार की आंखों से उसकी उलझन, उसका दर्द और सदमा साफ झलकता है. इस सदमे में जी रहे हैं पंजाब के तकरीबन 8,000 बच्चे, जो आतंकवादियों की बंदूकों के कारण अनाथ हो गए हैं. पिताविहीन, आर्थिक रूप से टूटे हुए ये बच्चे और उनकी विधवा माताएं आतंकवाद का सबसे दर्दनाक चेहरा हैं. किसी समुचित सरकारी नीति के अभाव में इन अनाथ बच्चों व विधवाओं के पास बीते दिनों की यादों के सिवा कुछ भी नहीं.

उस अभागी शाम को याद करते हुए राजीव का आठ वर्षीय भाई संजीव कुमार बताता है कि वह पिता के साथ अमृतसर की अपनी राशन की दुकान में बैठा था. तभी कुछ नकाबपोश दुकान में घुस आए और उन्होंने उसके पिता को गोली मार दी. संजीव आज तक नहीं समझ पाया कि उसके पिता को गोली क्यों मारी गई. वह कहता है, "मुझे रात में डर लगता है और सपने में अक्सर डैडी दिखते हैं."

चार वर्षीय दीपक कुमार जब भी किसी ऐसे व्यक्ति को देखता है जिसकी शक्ल उसके पिता से मिलती है तो रोने लगता है. ये दहशतज़दा अनाथ अब जर्जर मकानों में रहते हैं और उनके लिए रोटी जुटाने की जिम्मेदारी उनकी माताओं के कंधों पर आ पड़ी है. और रोटी जुटाना ही इतना मुश्किल हो गया है कि कपड़ों और पढ़ाई की तो बात ही बेमानी हो गई है.

लेकिन इस घटाटोप अंधेरे में उम्मीद की किरण साबित हुआ है पीड़ित प्रकल्प सेवा समिति के संयोजक प्रकाशचंद जोशी का साहसिक अभियान. इस संगठन को उन्होंने ही खड़ा किया और पंजाब की त्रासदी के शिकार बेकसूरों की तकरीबन अकेले ही मदद करने में आखिर तक जुटे रहे. अभी पिछले दिनों उनकी मृत्यु हो गई. आतंकवादियों की हिंसा से अनाथ हुए बच्चों के दर्द से विचलित होकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक जोशी ने 'अनाथों को गोद लेने' की बेमिसाल योजना चालू की थी. उन्होंने अमीरों को प्रति बच्चा 1,000 रु. सालाना पर 'अपना लेने' को राजी किया. यह पैसा स्कूल की फीस, यूनीफार्म और किताबें आदि खरीदने में इस्तेमाल किया जाता है. इसका मकसद है बच्चे का भविष्य बनाने के लिए आर्थिक मदद उपलब्ध कराना.

योजना तब बनी जब जोशी उन परिवारों को देखने गांवों में गए जिन पर आतंकवादियों ने कहर बरपाया था. उन्होंने बच्चों को अपनी माताओं से चिपटे अथवा कोने में बैठे शून्य में ताकते पाया. इन मासूमों के भविष्य की चिंता ने जोशी को यह योजना बनाने को प्रेरित किया.

पहले जोशी उन लोगों के पास गए जो इन बच्चों को 'अपना' सकते थे. कुछ ने आतंकवादियों के डर से हाथ खींच लिए. लेकिन आम प्रतिक्रिया उत्साहजनक रही. समिति के अध्यक्ष बलदेव चावला कहते हैं, "योजना को हाथोहाथ लिया गया." अब तक 1,200 बच्चे 'अपनाए' गए हैं. पूर्व मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला ने भी ऐसे एक बच्चे को 'अपनाया' है.

जब भी आतंकवादी हमले की खबर समिति के सदस्यों तक पहुंचती है, वे तुरंत प्रभावित गांव पहुंचते हैं. विधवा को सात्वंना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैनेंद्र गुरुकुल में बच्चे: घरेलू माहौल; (इनसेट) प्रकाशचंद जोशी

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

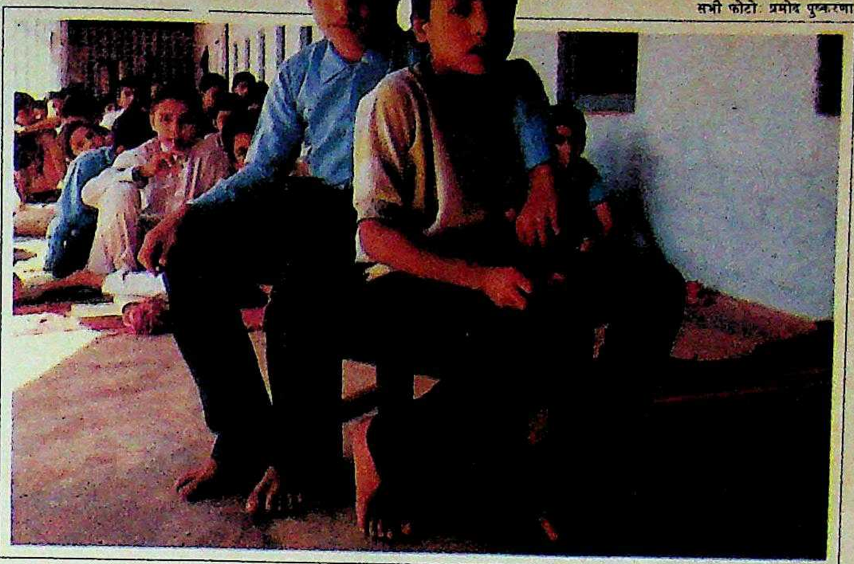

राजीव और संजीव कुमार: मासूम शिकार

पीड़ित प्रकल्प सेवा समिति की 'एक अनाथ को गोद लें' की बेमिसाल योजना आतंकवादी हिंसा से प्रभावित बच्चों के लिए आर्थिक सहारा बन गई है

मां संपती देवी के साथ रजनी, विजय, अजय और दीपक: संघर्षपूर्ण भविष्य

कई मामलों में परिवार के सभी मर्दों की हत्या कर दी गई है. खाना और शिक्षा तो दूर, औरतें अंत्येष्टि का खर्चा भी वहन नहीं कर पातीं

...ने के अलावा वे और भी कई तरह से मदद करते हैं. कई ऐसे उदाहरण हैं जिनमें परिवार के सभी मर्दों की हत्या कर दी गई. औरतें अंत्येष्टि तक का खर्च भी वहन नहीं कर सकीं. समिति ऐसे परिवार को 3,000 से 5,000 रु. तक की रकम तात्कालिक खर्चों के लिए देती है. चावला कहते हैं, "सवाल केवल अंत्येष्टि का ही नहीं है. माताएं यह सोचकर सबसे ज्यादा परेशान होती हैं कि वे अपने बच्चों का भरण-पोषण कैसे करेंगी, उन्हें पढ़ाएंगी कैसे."

चार बच्चों की मां संपती देवी का मामला इसका एक उदाहरण है. अमृतसर के कृष्णानगर में 21 मई 1986 को 21 लोगों के साथ उनके पति मदनलाल शर्मा भी मारे गए. समिति ने शर्मा के बच्चों रजनी, दीपक, विजय और अजय के लिए पालक माता-पिता खोज निकाले. जोशी की योजना ने उन्हें भारी राहत पहुंचाई और बच्चों को अपनी पढ़ाई जारी रखने में मदद मिली. इससे भी अहम बात रही कि इसने बच्चों को घर के भारी माहौल से बाहर निकलने का मौका दिया, उन्हें अपने हमउम्र बच्चों के साथ मिलने-खेलने का अवसर दिया ताकि वे अपने आपको सामान्य महसूस कर सकें.

पिछले महीने अमृतसर के पब्लिक स्कूलों के प्रमुखों के संघ ने भी घोषणा की कि वह उनमें से हरेक पांच बच्चों को 'अपनाएगा' तीस प्रधानाचार्यों ने अनाथ बच्चों की सूची तैयार करनी शुरू कर दी है. संघ के महासचिव अरुण अरोड़ा कहते हैं, "अमृतसर में 400 पब्लिक स्कूल हैं. सभी इस काम में सहयोग करना चाहते हैं."

पंचकुला के जैनेंद्र गुरुकुल हाईस्कूल ने हाल ही में 50 बच्चों को 'अपनाया' और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

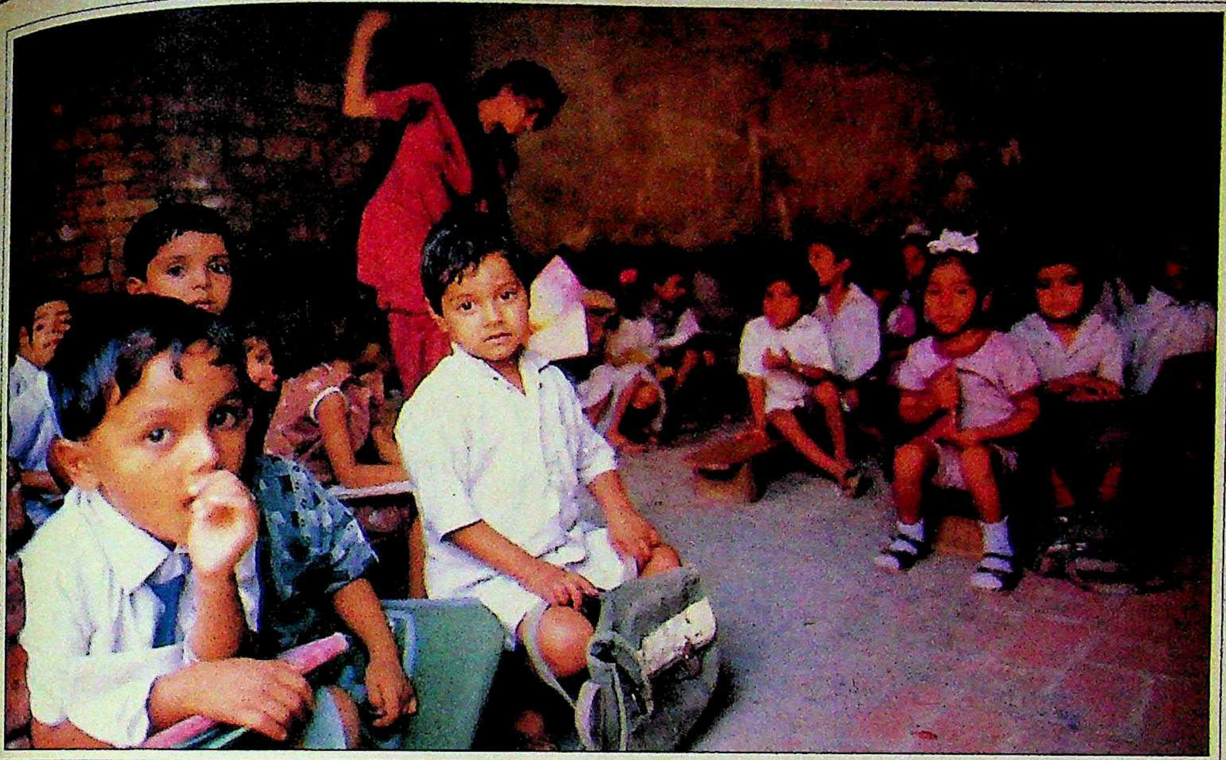

अमृतसर के एक स्कूल में दीपक कुमार (बीच में): दुखद यादें

अपने छात्रावास में उन्हें जगह दी गुरुकुल के अध्यक्ष वेद प्रकाश जैन ने बताया, "उनका पूरा माहौल बदलने की जरूरत है." दो साल पहले आए बच्चों की याद करते हुए वे कहते हैं, "ज्यादातर बच्चे तो अब सामान्य बरताव करते हैं लेकिन यादें अभी भी उन्हें परेशान करती हैं." जुलाई, 1986 में आतंकवादी हिंसा में अपने माता-पिता को खो चुका नौ वर्षीय दीपक मोहन अपनी दादी को पत्र लिखता है, "आप यहां जरूर आएं और मुझसे मिलें. हर बच्चे की मां यहां आती है लेकिन मुझसे मिलने कोई नहीं आता." दीपक ने आगे लिखा है, "मैं बड़ा होकर पुलिस अफसर बनना चाहता हूं जिससे मैं आतंकवादियों को सबक सिखा सकूं."

गुरुकुल में इन बच्चों के लिए वही माहौल बनाने की कोशिश की जाती है जो उनके घर में आतंकवादी कहर से पहले था. जैन कहते हैं, "यहां माहौल घर सरीखा है. त्यौहार के दिन हम विशेष खाना बनवाते हैं जैसा कि वे अपने घर खाया करते थे." ज्यादातर बच्चे

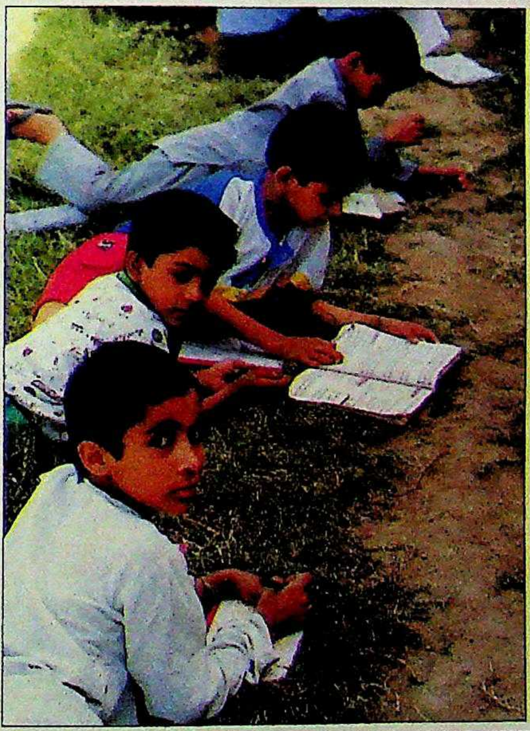

गुरुकुल में दीपक मोहनः एकाकी बचपन

अनाथ बच्चे सामान्य महसूस करें इसके लिए गुरुकुल ने उन्हें घरेलू माहौल देने की कोशिश की है

पढ़ाई में अच्छे हैं. प्रधानाचार्य आर. के. जैन कहते हैं, "केवल एक बच्चा फेल हुआ. वह मानसिक रूप से असंतुलित था. आतंकवादियों ने उसके दिमाग पर स्थायी घाव छोड़ दिया है."

अमृतसर में एसएसपी संजीव गुप्ता ने एक लड़की को अपनाया है, क्योंकि उनकी कोई बेटी नहीं है. वे कहते हैं, "हम पंजाब पुलिस के रंगरूटों से अनुरोध करेंगे कि वे समिति द्वारा अनाथ बच्चों के लिए बनवाए जा रहे छात्रावास के निर्माण में मदद करें. यह भी कार सेवा ही होगी." यह विडंबना ही है कि पुलिस अधिकारियों को निजी तौर पर पंजाब के इन बच्चों की मदद करनी पड़ रही है जबकि सरकार प्रभावित परिवारों को महज 20,000 रु. अदा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेती है.

जोशी की मौत के बाद चावला और समिति के सचिव ताराचंद डोगरा समिति के अभियान को जारी रखने को कटिबद्ध नजर आते हैं. उनका संदेश है, "सांप्रदायिकता की दीवारें मत खड़ी करो. 'बच्चों का भविष्य संवारो," शायद यही एकमात्र संदेश है जो पंजाब में आज कारगर होता जा रहा है.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेड़ों को भायें तो कैसे

टीवी का 'महाभारत' यकायक चुनाव बनकर भारत पर छा गया. फर्क इतना है कि आज कौरव-पांडव गड्डमड्ड हो गए हैं. कहना मुश्किल है कि चुनावी दंगल में कौन कंस है, कौन कृष्ण.

फिलहाल नेताओं की अहम समस्या है कि जनता की भेड़ को अपनी ओर कैसे हांकें. जब भी मौका मिला है, उन्होंने बिना अपवाद उलटे उस्तरे से उसे मूंढा है. कभी नए नारों की दूब खिलाकर, कभी हरे चरागाहों के सपने दिखाकर. आजादी के बाद मुसल्सल मुंढते-मुंढ़ते भेड़ें कुछ समझ-दार हो चली हैं. पांच साल में केवल एक बार उनके दिन फिरते हैं. नेता मंत्र की तरह लगातार दोहराते हैं, "हम भेड़ों के भेड़ हमारी." भेड़ें हैं कि "में, में" करके अपने हक और नेताओं की नीयत पर सवाल उठाने की जुर्रत करती हैं. नेता डरते हैं. इस खास अवसर पर भेड़ों को वे न भाये तो?

वे परेशानी में अपने प्रचार के मुखिया से सलाह लेते हैं.

"सर! पिछले पांच साल के दौरान आपकी नाक कुछ कट-सी गई है. जरूरी है कि भेड़ों को लुभाने के लिए इस बार आप नई नाक लगाएं."

"नमूने लाए हैं!" सही नेता वही होता है जो सफलता के लिए नाक क्या ईमान तक बदलने को तैयार हो.

"देखिए न सर!" कहते हुए उसने चपटी, लंबी, ऊंची, चौड़ी और पिचकी नाकों की बानगी पेश की. फिर स्वयं ही सुझाव दिया, "मेरी राय में यह ऊंची नाक आपको 'सूट' करेगी सर! मुल्क के सम्मान और स्वाभिमान की नाक. अपने भारत महान की नाक. हर भेड़ के सुखद भविष्य के अरमान की नाक."

नेता ने तत्काल नई नाक लगाई और हेलिकॉप्टर पर सवार होकर भेड़ों को भरमाने उड़ लिये.

नेता अधिक हैं और प्रचार विशेषज्ञ कम. एक से फुरसत मिली नहीं थी कि दूसरे का बुलावा आ गया, "पिछली बार आप ही के वीडियो रथ ने हमें विजय पथ पर चलाया था. अब क्या करें?"

"वीडियो, भजन और बंसी पुराने पड़ गये सरकार! आपके चेहरे की झुरियां भी बढ़ गई हैं. आप नया चेहरा क्यों नहीं लगा लेते." यह कहते हुए उसने नेता को एक 'सैंपल' दिखाया. उस चेहरे में नेता का अपना ही अक्स झलक रहा था. उनकी बांछें खिल गईं. शीशे के इस विशिष्ट चेहरे में हिंदू, मुसलमान, निर्धन, धनवान, किसान, हरिजन, गिरिजन जो भी ताकता अपनी जानी-पहचानी शक्ल ही पाता.

"सरकार! इस एकता के चेहरे को लगाकर जब आप भेड़ों के सामने जाएंगे तो वह खुद-ब-खुद मुंढने के लिए आपके पीछे-पीछे हो लेंगी."

"पर एक धर्म की आईं तो दूसरे की कहीं बिदक न जाएं", नेता ने शंका उठाई.

रेखाचित्र: ज़िया फ़ैजी

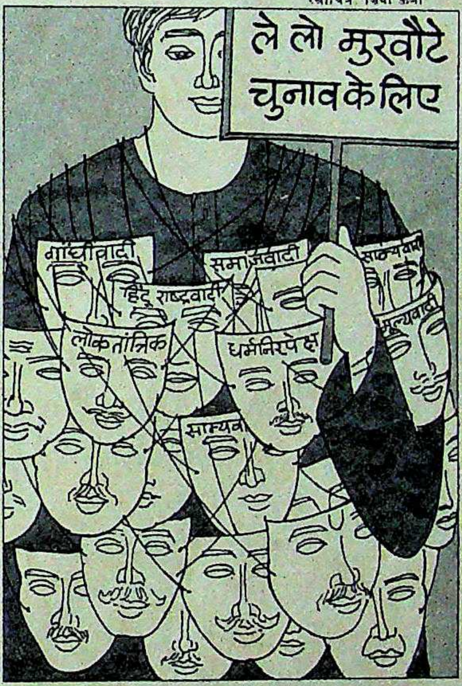

"यही तो इस चेहरे की अनूठी धर्म-निरपेक्षता है. आप अपने सिवा किसी के नहीं होते पर दिखते सबके हैं!"

चुनाव के पंडित अपनी-अपनी अटकलों में व्यस्त हैं. अखबार और पत्रिकाएं पिछले चुनावों के वोटों का प्रतिशत, क्षेत्रों का जातीय जोड़-तोड़, सत्ता दल की पारंपरिक भितरघात, विपक्ष के स्वाभाविक आपसी टकराव के समान आंकड़ों के आधार पर अपने मनपसंद और चुने हुए दल और प्रत्याशी की जीत की घोषणा कर रहे हैं. एक की राय है, "भेड़ों के लिए भ्रष्टाचार कभी भी महत्व का मुद्दा नहीं रहा है!" दूसरे का निष्कर्ष है, "पिछले चुनाव की तरह इस बार सहानुभूति की भेड़ चाल नहीं है!" तीसरे का मत है, "भेड़ें पिछली जनता सरकार की उठापटक से परिचित हैं. वह शक्तिशाली केंद्र चाहती हैं वरना कोई बाहर का आक्रामक भेड़िया घुसपैठ कर सकता है." जितने मुंह, उतनी बातें.

हर नेता अनिश्चय और असमंजस की मनोस्थिति में है. कमरे में बैठ देश की नब्ज पर हाथ रखने वाले चुनाव समीक्षकों और भेड़ों का भरोसा क्या! इस मुल्क के गुणी हर कानून का काट निकाल लेते हैं. कौन जाने कंप्यूटरी गणित तक को गलत कर दें. बस अपने पुराने विश्वासपात्र पंडित जी का ही सहारा है.

"प्रभु! आपकी कृपा से टिकट तो पा गए. आप जितना भी दीजिए न", एक नेता स्वामी जी के पैर पकड़ते हैं. "सब ठीक हो जायेगा", कहकर वह हवा में हाथ हिलाकर एक चमत्कारिक अंगूठी निकालते और भक्त को देते हैं.

इसी मुद्रा में ऐसी ही अंगूठी और यही आशीर्वाद सिद्ध स्वामी विरोधी नेता को भी देते हैं. स्वामी जी को पता है कि विजयी नेता कोई भी हो, चेला उनका ही होगा.

ऐसी तांत्रिक तरकीबों के कारण हर नेता 'नर्वस' है. सत्ता दल वाले को लगता है कि वह चुनाव के जंगल में बिना किसी सुरक्षा गारद के निपट असहाय और अकेला है. कल तक की भेड़-बकरी जनता उसे भेड़ियों-सा घेरे हैं. वह हाथ उठाकर 'हाथ' के लिए वोट की भिक्षा की याचना करता है. भेड़िये दांत दिखाकर और पंजे उठाकर "चोर चोर" चिलाते हैं. विरोधी नेता क्रोध में बिफरकर "बोफोर" "बोफोर" की हांक लगाता है और "बोर बोर" की अनगूंज पाता है.

भारत की अधिकतर भेड़ें भाग्यवादी हैं, और कुछ दार्शनिक. उनको आशंका है कि कोई भी नेता या किसी भी उसूल का दल सत्ता में आए, ऊन तो उन्हीं की मुंढ़नी है. नारे चाहे भेड़ों को भेड़ पंचायत के जरिये उनकी सत्ता उनको ही अर्पित करने के हों या देश का धन सौदों में कमीशन के बतौर खाने वालों को दंडित करने के. नेता विवश और निराश हैं. वह उनका भजन-कीर्तन कर रहे हैं और भेड़ें हैं कि पाहन के भगवान-सी मौन हैं. दिक्कत यही है. कोई नहीं जानता कि भेड़ें किस भाग्यशाली को विजय-श्री का वरदान देंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

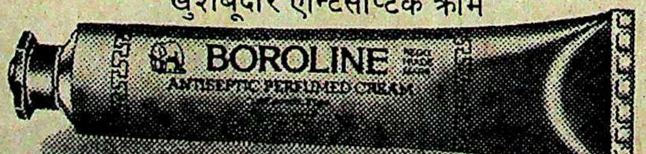

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल, आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1039

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेसर

कमाल करने वाली किरणें

अब भारत में पहुंचा कांटैक्ट एनडी-वाईएजी लेसर

शल्यक्रिया के लिए यह बहुत ही उपयुक्त उपकरण है. आंख के डॉक्टर इसका इस्तेमाल अलग हुई रेटिना को जोड़ने के लिए करते हैं. न्यूरो सर्जन इसकी तेज गरमी से मस्तिष्क के ट्यूमर को भाप बनाकर उड़ा देते हैं. चर्म रोग विशेषज्ञ त्वचा के धब्बों को साफ करने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं. फोड़े-फुंसियों के इलाज के माहिर इससे कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करते हैं.

फिर भी भारत में लेसर अभी तक एक विजातीय उपकरण रहा है, जो ज्यादातर डॉक्टरों की पहुंच से बाहर है. पर प्रथम कांटैक्ट एनडी-वाईएजी (न्यूरोडाइमियम-वाईट्रियम एल्युमिनियम गार्नेट) लेसर के आ जाने से यह स्थिति अब बदल सकती है. पिछले महीने यह अजूबा लेसर अमेरिका के सिनसीनाटी मेडिकल सेंटर विश्वविद्यालय के डॉ. एम.वाई. शंकर ने हैदराबाद के सी.डी. रेड्डी अस्पताल में भारतीय शल्यचिकित्सकों को सौंपा. इस लेसर को विकसित करने वाले तीन सदस्यीय अंतरराष्ट्रीय दल के सदस्य शंकर ने बताया, "यह एक बहु-विषयक, बहु-विशेषज्ञता प्राप्त मशीन है."

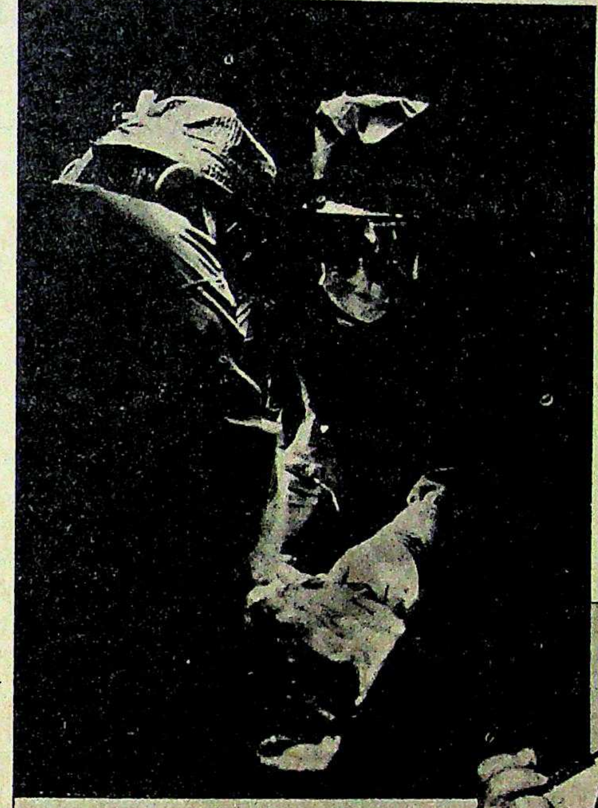

लेसर से ट्यूमर को निकालते शल्यचिकित्सक; और डॉ. शंकर: अद्भुत खोज

लेसर रक्तनलिकाओं का मुंह बंद करता है और कैंसरयुक्त कोशिकाओं को नष्ट करता है

एनडी-वाईएजी अत्याधुनिक उपकरण है जिससे शल्यचिकित्सक प्रकाश की तरंग दैर्ध्य और विद्युत शक्ति घटा-बढ़ाकर ऊतक भेदन की गहराई को नियंत्रित कर सकता है. ऑपरेशन के समय ऊतकों को काटने के अलावा यह रगों का मुंह भी बंद कर सकता है ताकि खून का बहना कम किया जा सके.

पुराना चिकित्सकीय लेसर—कार्बन डाइऑक्साइड लेसर अपरिष्कृत मशीन जैसा था, जिसका इस्तेमाल सिर्फ सतही घावों के इलाज में होता था. इसमें हत्था लगा होने के कारण आंख के डॉक्टर इसका इस्तेमाल कर लेते थे. पर लेसर से शल्य कैंची का काम लेना तब शुरू हुआ जब 'औथ' छुरी (उन्नत लेसर) का विकास हुआ. इसमें भी कुछ खामियां थीं.

पर नया लेसर पहले दोनों तरह के लेसर से कहीं ज्यादा विकसित है. यह कार्बन डाइऑक्साइड लेसर की तरह सफाई से ऊतकों को काटता है. इससे बहुत कम धुंआ निकलता है जिससे शल्यचिकित्सक एक ही जगह पर लगातार काफी देर तक ऑपरेशन कर सकता है. यह ऊतकों को काटता तो है ही, उन्हें जोड़ भी सकता है. शंकर कहते हैं, "शल्यचिकित्सक को बस किरणपुंज का घनत्व और वह समय निर्धारित करना होता है कि कितनी देर तक उसे ऊतकों के संपर्क में रखा जाए."

लेसर का इस्तेमाल शरीर की ऊपरी सतह तक ही सीमित नहीं है. एंडोस्कोपिक यंत्रों के इस्तेमाल से इससे शरीर के भीतरी अंगों के ऑपरेशन भी किए जा सकते हैं. मसलन पेट का ऑपरेशन करने के लिए ऑप्टिकल फाइबर की एक नली मुंह के रास्ते अंदर डाल दी जाती है. शल्यचिकित्सक ऑप्टिकल फाइबर के एक और तंत्र से शरीर की भीतरी रचना देखकर लेसर से ऑपरेशन कर सकता है.

मरीज के लिए लेसर शल्य-चिकित्सा परंपरागत शल्यचिकित्सा के मुकाबले कई तरह से बेहतर है. इसमें घाव कम होता है और खून भी कम बहता है. इसलिए अस्पताल में दाखिले की अवधि काफी कम की जा सकती है. फिर भी, शंकर की चेतावनी है, "यह चमत्कारी किरण रामबाण नहीं है."

यह विधि महंगी भी है. पूरे तामझाम के साथ इस लेसर की कीमत 25 लाख रु. है. इसलिए ज्यादातर शल्य-चिकित्सक और कई अस्पताल इसे नहीं खरीद सकते. शंकर का सुझाव है कि लागत कम करने के लिए खास लेसर शल्य-चिकित्सा केंद्र खोले जा सकते हैं.

पर लेसर मशीन खरीद लेने भर से ही काम नहीं बनता. कोई भी विशेषज्ञ छह हफ्ते के प्रशिक्षण के बाद ही इस मशीन पर महारत हासिल कर सकता है. घाव भरने का एक अद्भुत तरीका होने के बावजूद लेसर नौसिखुए हाथों में पड़कर घातक भी सिद्ध हो सकता है.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ममता कालिया

सेवा

मध्यमवर्गीय समाज खासकर महिलाओं की जिंदगी पर कलम चलाने वाली लेखिकाओं की जमात के सबसे चर्चित नामों में हैं ममता कालिया. 'छुटकारा', 'एक अदद औरत' जैसे कहानी संग्रहों और 'बेघर', 'लड़कियां' तथा 'नरक दर नरक' जैसे उपन्यासों की लेखिका की यह कहानी मध्यमवर्गीय मजबूरियों के नीचे दरकते पारिवारिक संबंधों पर केंद्रित है.

अस्पताल के अहाते में गेट से लेकर पोर्च तक कतार में अशोक के पेड़ लगे थे. अपने प्रतीकात्मक अर्थ में वे बड़े सुंदर थे. फिर भी सचाई यह थी कि अशोक के होते हुए भी अस्पताल के अहाते में शोक और दुख के दृश्य प्रायः रोज देखने को मिलते. आकस्मिक वार्ड में आकस्मिक दुर्घटना के मरीज लाए जाते, कुछ देर डॉक्टरों, नर्सों, वार्ड बॉय की चुस्ती-फुर्ती दिखाई देती, फिर लाल कंबल से ढका स्ट्रेचर या तो ग्लूकोज की बोतल के साथ ऑपरेशन थिएटर की तरफ मुड़ जाता या बाहर की ओर जहां से हाहाकार का एक थपेड़ा कानों पर पड़ता.

इसीलिए नरोत्तम सहाय अहाते में बैठने से कतराते. इस वक्त वे पत्नी के पलंग के पास कुर्सी डाले बैठे थे. कहने को उनके हाथ में आज का अखबार था लेकिन पिछले आध घंटे से उन्होंने इसका एक भी शब्द नहीं पढ़ा. वे न अखबार की तरफ देख रहे थे, न बाहर. वे शायद अपने अंदर झांक रहे थे.

उनके अंदर अकस्मात एक बियाबान उगकर फैलने लगा था. वे हैरान थे कि यह बियाबान उस दिन नहीं उगा जब वे नौकरी से रिटायर हुए, उस दिन भी नहीं उगा जब उनकी बेटियों की शादी हुई. यहां तक कि जब उनके लाडले बेटे विस्मय को घर छोड़कर दिल्ली जाना पड़ा जहां विशाल इंडस्ट्रियल कांप्लेक्स में उसकी नियुक्ति हुई थी, वे उदास नहीं हुए. लेकिन अब पत्नी की आकस्मिक बीमारी ने उनके सर्वांग को निरुपाय बना डाला. पहले कभी अकेला लगता तो वे खट् से रेडियो खोल लेते. रेडियो के चलते ही वे समूची दुनिया से जुड़ जाते. कभी-कभी वे टीवी और रेडियो एक साथ खोल लेते. पत्नी मना करती तो कहते, "मैं देख रहा हूं किसके कार्यक्रम बेहतर हैं." लेकिन इधर पंद्रह दिन से जब से पत्नी बीमार पड़ी है नरोत्तम सहाय भयंकर अकेले हो गए. उन्हें हैरानी थी कि कैसे जरा-सी चोट लगने से वह घायल होकर अस्पताल पहुंच गई और यहां भी पंद्रह दिन से बेहोश है. बाथरूम में पांव फिसल जाने से उसकी कनपटी पर हल्की-सी चोट आई थी पर वह तत्काल बेहोश हो गई. नरोत्तम जी ने उसे कॉरामिन, गोल्ड ड्रॉप्स और जो भी उनकी समझ में आया, देकर देखा, कुछ न हुआ. लाचार वे पड़ोसियों के कहने पर पत्नी को अस्पताल ले आए. पता चला उन्हें ब्रेन हैमरेज हो गया है.

घबराहट में उन्होंने तीनों बच्चों को खबर कर दी. दो दिन के अंदर उनकी दोनों लड़कियां आ गईं 'ममी, ममी' करती. जब नरोत्तम जी ने उन्हें चोट के बारे में बताया लड़कियों ने गुस्से से उनकी तरफ देखा मानो उन्हीं की गलती से पत्नी गिर पड़ी थी. लड़कियों को मां की बेहद फिक्र थी पर दोनों अपने-अपने दफ्तर से छुट्टी लेकर आई थीं. ज्यादा देर टिककर बैठना उनके लिए मुमकिन न था. तीन दिन उन्होंने अस्पताल का उपचार देखकर संतोष प्रकट किया, "इलाज ठीक हो रहा है. पास ही सिस्टर का ड्यूटी रूम है. पापा आप ममी का ठीक से इलाज कराइए. आप ही को ध्यान रखना है इनका."

पत्नी की नाक में नली लगी थी जिससे रास्ते दूध, जूस और पानी उन्हें दे दिया जाता था. ड्यूटी पर तैनात नर्स नियम से तीन घंटे बाद आती और उन्हें पथ्य पिला जाती.

बेटियों ने अफसोस में सिर हिलाया

सभी रेखांकन: जिया फैजी

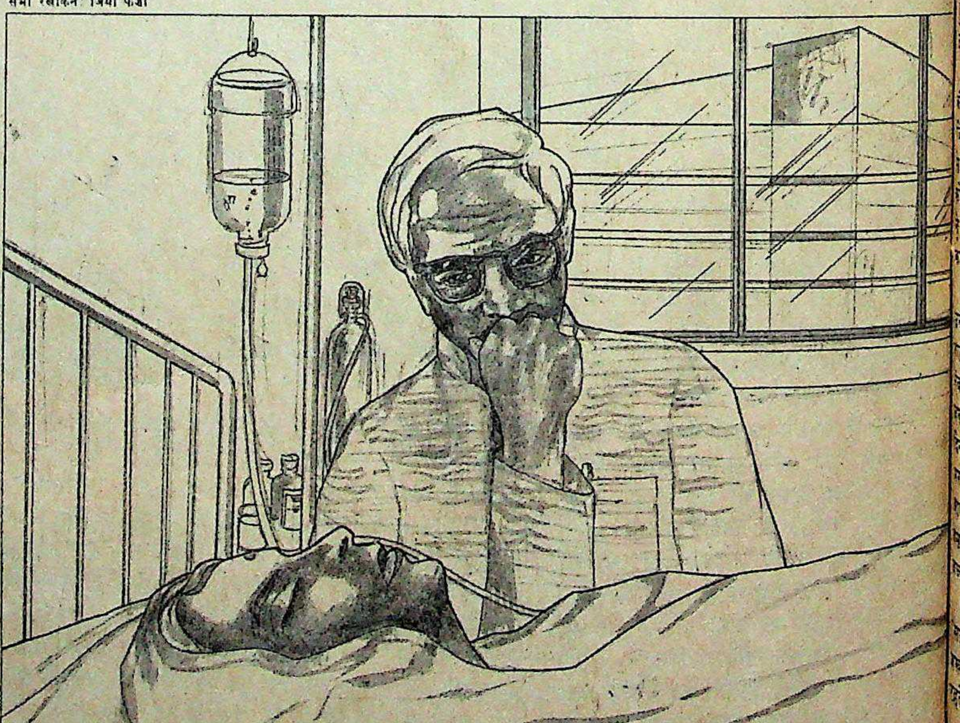

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम्मी होश में होतीं तो हम कोई ताकत की चीज बनाकर इन्हें खिलाते पर अब तो लिक्विड डाइट के सिवा कुछ दिया ही नहीं जा सकता. हमारा रुकने का क्या फायदा पापा, हम जाएं?"

नरोत्तम जी का मन बेटियों के आने से थोड़ा संभला था. उनके जाने की सुनकर वे फिर चिंतित हो गए, "मैंने अखबारों में पढ़ा है कि कोमा वाले मरीज कई बार साल-साल भर होश में नहीं आते. अगर ऐसा हो गया तो..." बेटियों ने कहा, "पापा, आप तो अभी से घबरा गए. जरा सोचिए हमारी मां ने चालीस साल आपकी सेवा की है, वह भी तब जब आप स्वस्थ और सक्षम थे. आज वे बीमार पड़ी हैं तो आपका फर्ज है आप इनकी सेवा करें."

अपनी हृष्ट-पुष्ट बेटियों को देखकर नरोत्तम जी के मन में आया कहें 'सेवा तो इन्होंने तुम्हारी भी कम नहीं की है बिटिया, चूहे जैसी पैदा हुई थीं तुम दोनों.' पर वे लड़कियों का दिल दुखाना नहीं चाहते थे. वे जानते थे उनके ऊपर गृहस्थी और नौकरी के दोहरे झंझट हैं.

"याद रखिए पापा हमारी मम्मी के हाथ की छोटी उंगली भी हिलती रहे तो भी इन्हें जिलाये रखना है. हमें अपनी मां सारे संसार से ज्यादा प्यारी है. और कुछ नहीं तो कहने को तो है कि हमारी मां अभी है," बड़ी बेटी ने अपनी कीमती काली साड़ी की पटली ठीक करते हुए कहा.

पुराने दिनों के साथियों को खबर लगी तो उनमें से कई आकर मिसेज सहाय को देख गए. सहृदय लोग थे. सबने अपने-अपने फोन नंबर नरोत्तम जी को दे दिए जिससे किसी भी जरूरत में वे उनसे संपर्क कर सकें. चार-पांच दिन में नरोत्तम जी की डायरी फोन नंबरों से भर गई. एक दिन दो पड़ोसी भी उनसे मिलने आए. मरीज की हालत जैसी की तैसी थी. बस इतना सुधार था कि वे कभी-कभी अपने बच्चों के नाम अस्फुट स्वर में दोहरातीं.

पड़ोसियों ने बड़ी आत्मीयता से कहा, "सहाय साहब आपको किसी चीज की जरूरत हो तो बताइए, आप भी यहां रहते-रहते बहुत थक गए होंगे."

हमदर्दी के बोल सुनकर नरोत्तम जी को लगा वे वाकई बहुत थक गए हैं. उन्होंने दिनों से कोई मनपसंद चीज नहीं खाई है. अस्पताल के कैंटीन के खाने की तरफ उनकी देखने की भी इच्छा नहीं होती थी. उन्होंने बड़े संकोच से कहा, "अगर हो सके तो थोड़ा मीठा दलिया बनवाकर भिजवा देते." "जरूर जी", पड़ोसी ने कहा और विदा ली.

अगले दिन सुबह पड़ोसी दफ्तर जाते हुए

बेटियों को मां की बेहद फिक्र थी. पर वे दफ्तर से छुट्टी लेकर आई थीं. उन्होंने अफसोस में सिर हिलाया, "मम्मी होश में होतीं तो हम कोई ताकत की चीज बनाकर इन्हें खिलाते पर अब तो लिक्विड डाइट के सिवा कुछ दिया ही नहीं जा सकता. हमारा रुकने का क्या फायदा पापा, हम जाएं?"

दो मिनट के लिए अस्पताल आए, "लो जी सहाय साहब, इसमें दलिए का सब सामान है. वाइफ़ ने कहा है उसे तो दलिया बनाना आता नहीं है, यहां कैंटीन में बनवा लें आप." नरोत्तम जी हक्के-बक्के दलिए, चीनी और दूध के पैकेट देखते रह गए.

पत्नी की चेतना जब-जब लौटती वह 'विस्सू विस्सू' पुकारतीं. नरोत्तम जी ने एक परिचित से बेटे को फिर फोन करवा दिया.

चार दिन तक वे तनाव में रहे. क्या हुआ. विस्मय क्यों नहीं आया. कहीं वह खुद तो बीमार नहीं है. उसने कोई खबर क्यों नहीं भेजी. पांचवें दिन सुबह नौ बजे विस्मय की नीली मारुति वॉर्ड के सामने आकर रुकी. उनका बेटा, बहू, दोनों पोते कमरे में दाखिल हुए. पीछे-पीछे फलों के थैले लिए हुए ड्राइवर. इन सबके बाद नन्हा पालतू कुत्ता नॉटी.

"मैं तो जापान गया हुआ था कान्फ्रेंस में. अभी रात दो पैंतालीस पर लौटा. तब डॉली ने बताया मम्मी अस्पताल में हैं." डॉली तो आ सकती थी नरोत्तम जी ने बहू की तरफ देखते हुए सोचा.

शायद डॉली ने उनके मन की बात सुन ली, "पापा कार गैरेज गई हुई थी. मैं इतनी परेशान हुई कि पूछिए मत. कहने को दिल्ली इतनी पास है पर टैक्सी वाले तैयार नहीं होते गाजियाबाद आने को." डॉली ने सफाई दी.

सबने अपनी-अपनी तरह से बेहोश मां को प्यार किया. विस्मय ने मां का तकिया ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए कहा, "पापा, मम्मी बिलकुल ठीक हो जाएगी, देख लेना. विदेश में तो एक लड़की तेईस साल बाद कोमा से एकदम भली-चंगी होकर निकली. कार एक्सीडेंट हुआ था उसका."

नरोत्तम जी का पोर-पोर थकान से बेजान हो रहा था. डॉली ने उनके लिए संतरा छीलकर दिया तो उन्हें लगा अब उन्हें भी सेवा और आराम की जरूरत है.

दोनों पोते, स्वागत और प्रतीक कुछ देर दादी के बिस्तर के पास खड़े रहे. जब उनकी आवाज से भी दादी नहीं जगीं तो वे नॉटी को लेकर बाहर निकल गए.

नरोत्तम जी खिड़की से बाहर बच्चों को नॉटी के साथ खेलते देखते रहे. फिर वे बताने लगे कैसे मां का स्वास्थ्य पिछले कई महीनों से लश्टम-पश्टम तो चल ही रहा था. आधी रात में पेशाब करने उठीं तो बाथरूम में फिसल पड़ीं.

"पापा जब मम्मी इतनी कमजोर थीं तो उनके बिस्तर के पास कमोड क्यों नहीं रखवा दिया आपने?" डॉली ने कहा.

"इसे गंदा लगता है. क्या करूं, पुरानी आदतें हैं, बदली नहीं जातीं."

"आप भी तो जिद्दी टाइप हैं. आदत से ज्यादा इंपोर्टेंट जरूरत होती है पापा," विस्मय ने कहा.

नरोत्तम जी को अपनी गलती महसूस हुई. वे बेटे के सामने अपने को अनाड़ी और पुराना पा रहे थे. यों तो वे भी अपने समय में उच्चपदस्थ अधिकारी रहे थे और अपने दफ्तर के शहंशाह, लेकिन बेटे ने अपनी कंपनी में कुल सात साल में इतनी तरक्की कर ली थी कि उसने न सिर्फ पिता को बल्कि अपने साथियों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया था. आए दिन उसका देश-परदेस का दौरा रहता. महज तीस साल की उम्र में उसके व्यक्तित्व में गजब का आत्मविश्वास था.

बेटे को देख-देख नरोत्तम जी की व्यग्रता शब्द ढूंढ़ रही थी. कभी वे डॉक्टरों के पर्चे दिखाने लगते, कभी दवाओं की शीशियां.

"पापा कोमा पेशेंट के साथ सबसे अच्छी बात यह होती है कि हर मिनट की देखभाल नहीं करनी पड़ती. डॉक्टर क्या कहते हैं, कब तक होश आ सकता है?"

बेटा, बहू और दोनों पोते कमरे में दाखिल हुए. सबने अपनी-अपनी तरह से बेहोश मां को प्यार किया. बेटे ने मां का तकिया ठीक किया और बच्चे दादी के बिस्तर के पास खड़े रहे. लेकिन जब उनकी आवाज से भी दादी नहीं जगी तो दोनों पोते कुत्ते को साथ लेकर बाहर खेलने चले गए

"कहते हैं, कभी भी आ सकता है."

"आप ऐसा कीजिए अलग से एक नर्स रख लीजिए. आप पर बहुत स्ट्रेन है चौबीसों घंटे का."

डॉली ने कहा, "पापा फिर तो आप घर जाकर रिलेक्स भी कर सकते हैं."

"अकेला घर मुझे काटने दौड़ता है. क्या करूं मेरी तो अक्ल हैरान है. पंद्रह दिन से बस मैं हूं और इसका बिस्तर है. रात में भी ठीक से सो नहीं पाता, कहीं यह गिर न पड़े. बिस्तर ऊंचा है न और यह बीच-बीच में चौंकती है."

डॉली ने बिस्तर का मुआयना किया. "ऐसा कीजिए पापा, एक तरफ बिस्तर दीवार से सटा दीजिए, दूसरी तरफ जंगला चढ़ा दीजिए, बस हो गई आपकी परेशानी खत्म."

नरोत्तम जी इस व्यवस्था पर गौर कर चुके थे पर उनकी व्यग्रता फिर भी बनी हुई थी, "वहां हवा नहीं लगती ठीक से. फिर दीवार से कोई कीड़ा-वीड़ा बिस्तर पर आ जाए..."

"अब पापा, आपको तो लगता है कि परेशानी में मजा आने लगा है."

नरोत्तम जी बता रहे थे, "मंगलवार का दिन था. नहीं, इसका ब्लडप्रेशर उस दिन बिलकुल ठीक था. शाम को ही डॉ. तुली ने घर आकर देखा था हम दोनों को. यह स्लिप न हुई होती तो आज हम अच्छे-भले घर पर होते."

विस्मय बेचैनी से एक बार मां को, एक बार पिता को देख रहा था.

"मंगल को बड़े चाव से इसने बेसन के लड्डू बनाए थे. कहने लगी बच्चों को बड़े

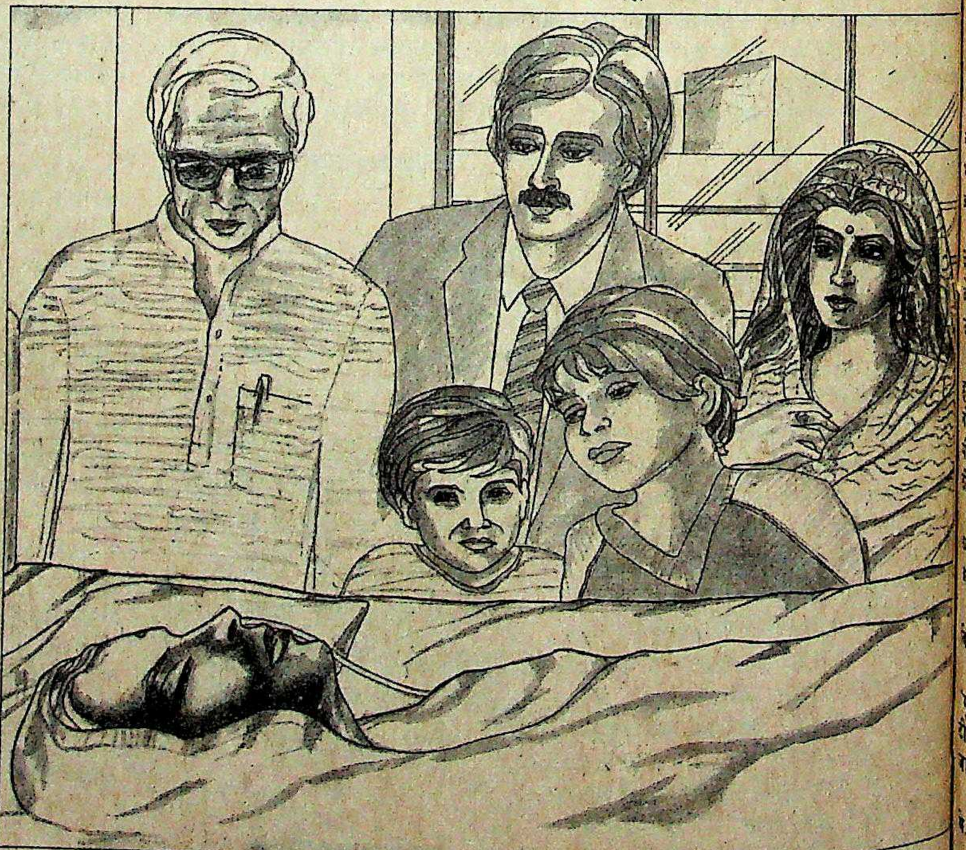

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

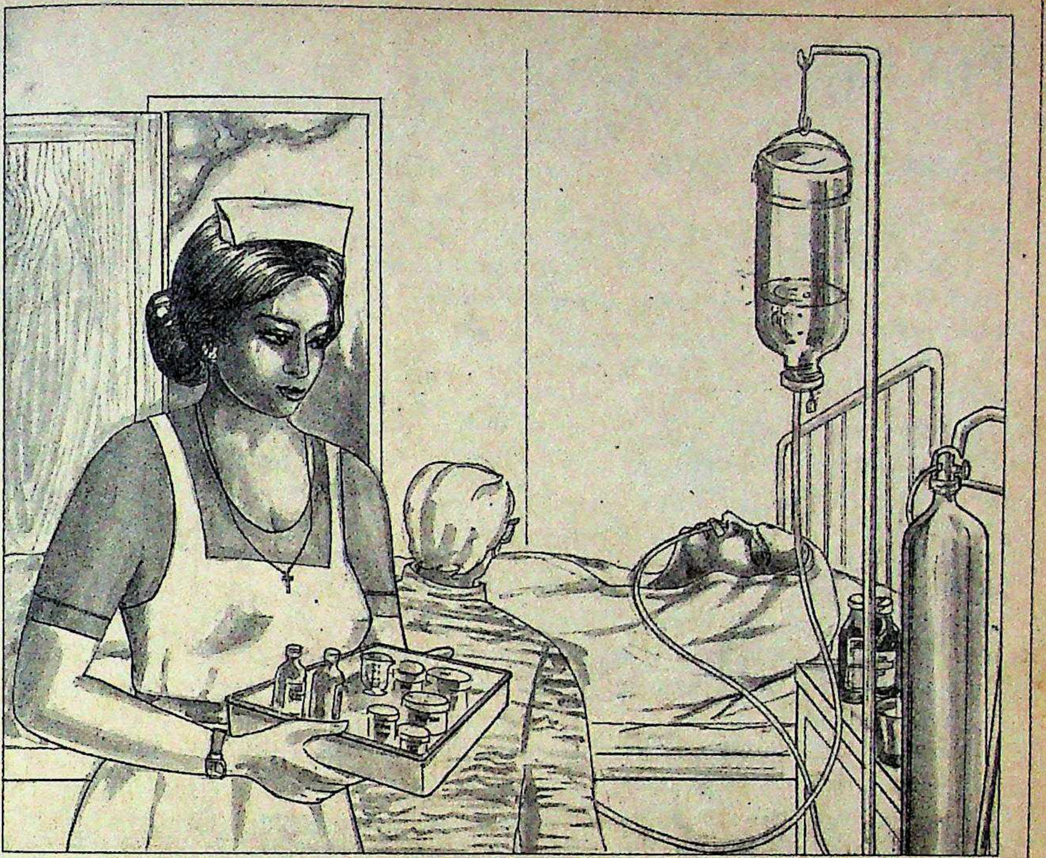

...द हैं मेरे हाथ के लड्डू. ...न उसे तभी आ रही ... फिर शाम का खाना ...या. मुझे खिलाया पर ...द नहीं खाया. कहने लगी ...से एक प्याला दूध दे दो, ... सो जाऊं.'

"मैंने ग्लूकोज़ मिलाकर ... दिया. मैं अकेले बैठा ...ती देखता रहा, यह ... गई."

"जब इनसे नहीं होते तो ...ने झंझट के काम करती ...ों हैं ममी?" डॉली ... कहा.

"शरीर के साथ शौक तो ...हीं जाता न. इससे पहले ...क दिन डॉक्टर दुबे को ...खाया था. उन्होंने कहा ...रीर में खून की कमी हो ...ई है. सारे पेपर्स हैं मेरे ...स. एक साल से डॉक्टर ...बे का इलाज चल रहा है, ...तुम्हें पता ही है."

"वह सब मैं जानता हूं ...पा, आप बस नटशैल में ...बताइए. अब इनकी तबियत ...सी है, डॉक्टर क्या कहता है?" विस्मय ने ...ी बेचैनी से पिता की तरफ देखा.

नरोत्तम जी के कलेजे में बेटे की बेचैनी, ...लबड़ी और शब्द बर्फ की नोक की तरह चुभ ..., "जो है तुम देख रहे हो, डॉक्टरों का ...कहना है ब्रेन हैमरेज से उठने पर यह फालिज ...भी हो सकता है. ऐसे में शायद दिमाग उतनी ...अच्छी तरह काम न करे."

"आप ममी का बुरा क्यों सोचते हैं. अगर ...मेरी ममी हैं तो इन्हें कुछ नहीं होगा. चियर ...अप पापा, ममी ठीक हो जाएंगी." विस्मय ...उठ खड़ा हुआ. डॉली भी खड़ी हो गई.

"पापा आप सुबह-शाम मुझे ममी की ...हालत के बारे में फोन करते रहिए. आई मस्ट ...नो हाउ शी इज़. मुझे कलकत्ते जाना था ...मीटिंग में. वह मैं पोस्टपोन कर दूंगा. ममी के ...ठीक होने पर ही जाऊंगा."

डॉली ने कहा, "पापा आप अपना भी ...ध्यान रखिएगा. यह न हो कि ममी के बाद ...आप पड़ जाएं."

"आप कहें तो मैं डॉली को छोड़ जाऊं?' ...विस्मय ने चलते-चलते कहा.

डॉली ने खीझकर पति की तरफ देखा, ..."मुझे कल बच्चों के स्कूल जाना है, पेरेंट-...टीचर मीटिंग है. पिछले महीने भी मैं नहीं ...जा सकी थी."

बाहर बच्चे खेल से थककर कार में बैठे ... नॉटी अभी भी बगनबेलिया की नीची डालों को उलांकने की कोशिश में उछलकूद कर रहा था.

"नॉटी चलो." डॉली के आवाज लगाते ही वह उछलकर गाड़ी में चढ़ गया.

प्रतीक ने कहा, "दादा जी मैं दादी-मां के लिए गेट-वेल कार्ड भेजूंगा, ओ.के."

"कहता है नटशेल में बताइए ममी को क्या हुआ है. बदतमीज, गधा कहीं का. दफ्तर की भाषा अपने बाप से बोलता है. क्या तुम्हारी हालत और अपनी परेशानी मैं नटशेल में बता सकता हूं. क्या यह हाउ आर यू, फाइन, थैंक यू जैसी सिचुएशन है? मैंने भी अफसरी की है पर कभी बाप को अपना क्लर्क नहीं समझा"

कार चली गई. नरोत्तम जी वापस कमरे में आ गए. पत्नी अर्धचेतन अवस्था में 'विस्सू' को याद कर रही थी. नरोत्तम जी पत्नी से बोलने लगे, "चला गया तुम्हारा विस्सू. आध घंटे को आया था. हां, तुम्हारा बेटा विस्सू. इसे तुमने पैदा किया, पाला-पोसा. याद है कैसे इसकी जरा नाक बहते ही तुम मेरी नाक में दम कर देती थीं, 'डॉक्टर को बुलाओ, खिड़की बंद करो, नया कंबल लाओ' यह लाट साब सो जाता था, तुम इसका होमवर्क करती थीं, आधी-आधी रात तक. आज तुम बेहोश पड़ी हो और बेटे को फुर्सत नहीं है तुम्हारे पास बैठने की. मुझसे कहता है 'नटशैल में बताइए ममी को क्या हुआ है.' बदतमीज, गधा कहीं का. दफ्तर की भाषा अपने बाप से बोलता है. क्या तुम्हारी हालत और अपनी परेशानी मैं नटशेल में बता सकता हूं. क्या यह हाउ आर यू, फाइन, थैंक्यू जैसी सिचुएशन है? मैंने भी बहुत अफसरी की पर कभी अपने बाप को अपना क्लर्क नहीं समझा. ये तुम्हें देखने नहीं, विज़िट पे करने आए थे. जब ये पोते पैदा हुए, तुम अपना नहाना, खाना भूल रात-दिन लगी रहीं इनमें. आज बहू को तुम्हारे लिए वक्त नहीं है. सुना तुमने, किसी को फुर्सत नहीं है तुम्हारे लिए. तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा, मैंने अभी से देख लिया है. तुम जल्दी से ठीक हो जाओ. देखो आंखें खोलो. तुम्हारे सिवा मेरा और है ही कौन?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

फिर वही त्रिकोण

विषयवस्तु पुरानी पर रोचक

सत्तर के बाद के हिंदी साहित्य के विकास का एक सशक्त पहलू महिला कथाकारों और उपन्यासकारों की एक टोली का उभरना भी है. लेकिन इस टोली की दो बड़ी सीमाएं रहीं हैं. एक तो इनका साहित्य कभी भी मध्यम वर्ग के बाहर की जिंदगी को अपना क्षेत्र नहीं बना सका. और यदि अपवादों को छोड़ दें तो इन लेखिकाओं ने आम तौर पर प्रेम कहानी, खास तौर से प्रेम त्रिकोण को ही विषयवस्तु बनाया.

उम्र एक गलियारे की
उपन्यास
शशिप्रभा शास्त्री
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली-110002
कीमत: 75 रु.;
पृष्ठ: 264

शशिप्रभा शास्त्री का नवीनतम उपन्यास 'उम्र एक गलियारे की' भी इन्हीं सीमाओं में कैद है. परंपरागत विवाह करके मुश्किल जीवन जीती अपनी बड़ी बहन और जाति बंधन तोड़कर पति के साथ डॉक्टरी करते हुए शानदार जीवन जीती मंझली बहन का उदाहरण सामने होने पर भी सबसे छोटी सुनंदा पिता की इच्छा के अनुसार नवल मोहन से शादी कर लेती है. पर एक बच्चे के जन्म के बावजूद नवल का उपेक्षापूर्ण व्यवहार उसे अपने पूर्व प्रेमी देवेश की याद दिलाता है.

नवल और देवेश के बीच झूलती सुनंदा बीच में अपनी दोनों बहनों के पास जाकर उनका जीवन भी देख आती है. शायद यही कारण है कि उपन्यास के आखिर में सुनंदा देवेश के पास चली जाती है. और इस मायने में उपन्यास एक दिशा भी बताता है. बार-बार लिखे जाने वाले विषयवस्तु (प्रेम त्रिकोण) को अपनाने के बावजूद यह रोचक बना रहता है. और ये दो बातें लेखिका की सफलता दिखाती हैं. घटनाक्रम में बहुत नाटकीयता न होने पर भी उपन्यास की रोचकता में बाधा नहीं आती. हां, उपन्यास के नायक (या खलनायक) नवल मोहन की निष्ठुरता का चित्रण जरूर कुछ अस्वाभाविक लगता है. और जिस तरह से नायिका सुनंदा उसे झेलती हैं उससे यह उम्मीद भी नहीं लगती कि उपन्यास के अंत आने तक वह नवल को छोड़कर देवेश के पास चली जाएगी.

घटनाओं के नाटकीय मोड़ के अभाव वाले इस उपन्यास का यह अंत तो खटकता ही है, आखिरी हिस्से में सुनंदा का व्यवहार भी खटकता है. एकदम 'गऊ' बनी रहने वाली सुनंदा जिस तरह से अचानक होटल में देवेश से मिलने चल देती है और वहां जो कुछ करती है, वह अखरता है. इसी प्रकार उपन्यास के मुख्य हिस्से में भी नवल मोहन का पत्नी के प्रति उपेक्षा का कोई कारण समझ नहीं आता. ऐसा शायद कभी होता नहीं कि कोई अकारण अपनी पत्नी की तरफ से मुंह फेर ले. सुनंदा का मन पति और प्रेमी के बीच विभाजित हो, यह तो स्वाभाविक है लेकिन नवल मोहन सिर्फ पेट्रोल पंप पर काम करके कुछ सौ रुपए अतिरिक्त कमाने के चक्कर में इतना निष्ठुर हो जाए, यह स्वाभाविक नहीं.

इन अखरने वाली बातों और उपन्यास द्वारा एक दिशा-निर्देश देने के बावजूद यह सवाल बना ही रहता है कि शास्त्री जैसी लेखिकाएं मध्यमवर्गीय प्रेम त्रिकोण की मूल कथावस्तु को छोड़ने का साहस क्यों नहीं कर पा रही हैं.

—अरविंद मोहन

कहानी संग्रह

मन की परतें

रिश्तों को पकड़ने की कोशिश

प्रकाशकीय के अनुसार ये कहानियां 'नारी मन की विभिन्न परतों को खोलती' हैं. किंतु यदि इन्हें इसी निष्कर्ष पर परखा जाए तो शतशः खरा उतरने में इन्हें बहुत कश्मकश करनी पड़ेगी. इसका कारण यह नहीं कि ये नारी मन की परतों को नहीं खोलतीं. खोलती हैं, पर जहां खोलती हैं, वहां उन्हें ढांप भी देती हैं. फिर इस संग्रह में एक कहानी 'तलाक' भी है जो केवल पुरुष मन की उधेड़बुन को ही सामने लाती है; और फिर 'तीन मूर्तियां' नामक रचना भी है जिसमें नारी या पुरुष मन ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलता, न ही कहानी के तत्व दिखते हैं.

मुश्क रंगी हिरणी
कहानी संग्रह
कश्मीरी लाल जाकिर
दिशा प्रकाशन, त्रिनगर, दिल्ली
कीमत: 30 रु.;
पृष्ठ: 112

दरअसल, कहानी के नाते जो रचना वाकई प्रभावित करती है वह है 'बासी फूल', जिसमें कविता की ताजगी तो है ही, भाषा की चुस्ती भी है और जीवन के 'कंसर्न' को रेखांकित करने की मुस्तैदी भी! 'मुश्क रंगी हिरणी' में इसके बरअक्स, स्त्री-पुरुष के बीच महीन रिश्ते को पकड़ने की कोशिश है. अपनी अधपकी भाषा के कारण यह कहानी परेशान भी करती है. भाषा की यह परेशानी लेखक की दूसरी कहानियों में भी बनी रहती है, क्योंकि हिंदी का मुहावरा वह आत्मसात् नहीं कर पाए! 'उसे कहीं कोई कठिनाई नहीं पहुंची थी', 'वह बहुत देर खड़ी रही', 'उन्होंने पंजाबी गिद्दा डाला था' जैसे प्रयोग कहानी के प्रवाह में बाधा खड़ी करते हैं. कहीं-कहीं ऐसे प्रयोग भी हैं—'रात को मैं रमा के कमरे में सोई और हरिवंश पांडे अलग कमरे में पड़े जागते रहे और फिर खर्राटों से छत के पंखे के खोल के घोंसले में दुबकी चिड़ियों को डराते रहे.' निश्चित रूप से कहानियों में भाषा और अभिव्यक्ति के स्तर पर लेखक से कुछ अधिक अपेक्षाएं हो सकती थीं.

'एक थर्ड क्लास आदमी' भी नारी मन को समझने का प्रयास है, पर कहानी का शीर्षक इस प्रकार की किसी संभावना का सूचक नहीं है. दो व्यक्तियों—स्त्री और पुरुष—का आकस्मिक रूप से रेल के फर्स्ट क्लास के डिब्बे में मिलना और फिर मन में कुछ मीठा-सा भाव लिए एक-दूसरे से अलग हो जाना, इस आशा से कि शायद जिंदगी में फिर कभी ऐसी भेंट हो जाए—कुछ ऐसे ही ताने-बाने को लेकर बुनी गयी है यह कहानी. किसी ऊंचाई तक तो यह नहीं ले जा पाती पर पूरी तरह से निराश भी नहीं करती. भाषा यहां फिर निराश करती है.

यह संग्रह हरियाणा साहित्य अकादमी के प्रकाशन सहायतानुदान से प्रकाशित हुआ है. "बस सच यही है!" शीर्षक से अपने प्राक्कथन में लेखक ने 11 जनवरी से 17 जनवरी 1989 तक भोपाल में संपन्न वागर्थ विश्व कविता समारोह में अपने सम्मिलित होने का ब्यौरा दिया है जिससे कविता के प्रति उनकी संलग्नता का संकेत मिलता है. प्राक्कथन में किसी प्रश्नकर्ता का यह प्रश्न भी दोहराया गया है: "जाकिर साहिब, आपकी कहानियों के शीर्षक बहुत आकर्षक होते हैं. क्या कारण है?"

नहीं, जाकिर साहब, आपके इस कौल से सहमत हो पाना इतना आसान नहीं.

—श्रवण कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Gangotri

है 'बासी
तो है ही,
जीवन के
तैदी भी!
क्स, स्त्री-
कड़ने की
के कारण
भाषा की
हानियों में
मुहावरा
'उसे कहीं
'वह बहुत
द्दा डाला
बाधा
प्रयोग भी
सोई और
जागते रहे
खोल के
राते रहे.'
पा और
से कुछ

नारी मन
हानी का
वना का
नी और
के फर्स्ट
र मन में
से अलग
जदगी में
ऐसे ही
है यह
नहीं ले
भी नहीं
रती है.
दमी के
हुआ है.
ही है!"
अपने
लेखक ने
से 17
39 तक
संपन्न
कविता
अपने
ने का
जिससे
संकेत
कर्ता का
जाकिर
बहुत

कौल से

कुमार

Maharishi Ayurved

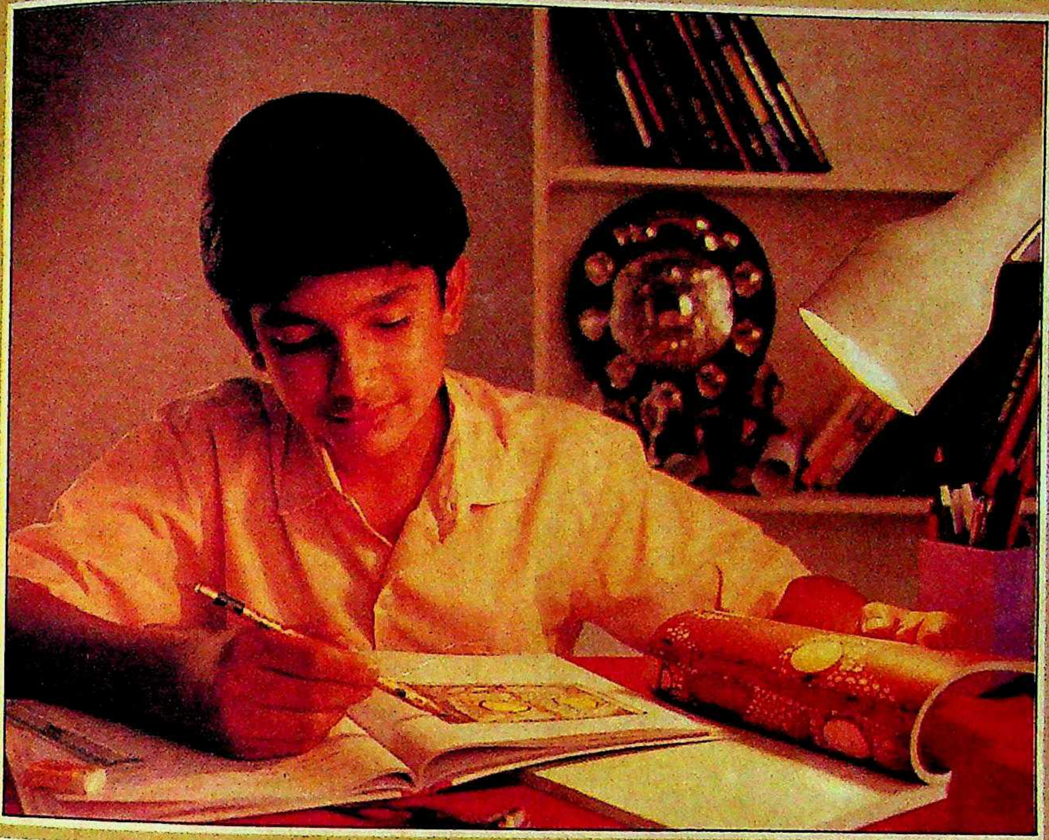

बच्चों की बुद्धि, स्मरणशक्ति और 'शारीरिक विकास के लिए अब एक आयुर्वेदिक टॉनिक.

बचपन का विकासकाल मनुष्य के पूरे जीवन का आधार होता है। यही वह समय है जब शरीर और मस्तिष्क की विकास प्रक्रिया सबसे तेज़ होती है।

अब उपलब्ध है आपके बच्चों की बुद्धि, स्मरणशक्ति और शारीरिक विकास प्रक्रिया को तेज़ी से बढ़ाने वाला एक अनूठा टॉनिक – विद्यार्थी अमृत।

महर्षि आयुर्वेद विद्यार्थी अमृत दुर्लभ और उपयोगी जड़ी बूटियों का विशेष मिश्रण है जो विख्यात वैद्यों की कुशल देख रेख में तैयार किया गया है।

यह सारे आवश्यक विटामिन और खनिज प्रदान करता है तथा शरीर के विकास के लिए ज़रूरी तत्वों को संतुलित रखता है। एक चम्मच टॉनिक दिन में दो बार लेने से रोगों से बचाव की क्षमता बढ़ती है और भोजन को पोषक तत्वों में बदलने की प्रक्रिया तेज़ हो जाती है।

इसके परिणाम स्वरूप बच्चा हमेशा शक्ति से भरपूर, चुस्त और सक्रिय रहता है।

इसलिए इसका नाम रखा गया है विद्यार्थी अमृत.....

यह महर्षि आयुर्वेद की विशुद्ध, प्रामाणिक आयुर्वेदिक औषधियों की व्यापक श्रृंखला का मात्र एक हिस्सा है। इस श्रृंखला में अस्थमा, जोड़ों का दर्द, अनिद्रा, एनीमिया, एसिडिटी, लिवर, सर्दी, खांसी इत्यादि के लिए उपचार शामिल हैं। ये सारी औषधियां कुशल वैद्यों की देख-रेख में तैयार की जाती हैं।

महर्षि आयुर्वेद उत्पाद प्रभावशाली और प्रतिकूल प्रभाव रहित उपचार के लिए सारे विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

सभी प्रमुख औषधि विक्रेताओं के यहाँ उपलब्ध।

महर्षि आयुर्वेद
ए-34 मोहन इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मथुरा रोड,
नई दिल्ली-110044.
फोन : 6846501.

विद्यार्थी अमृत
बच्चों के लिए एक आयुर्वेदिक टॉनिक

ULKA-D-MA-782-HIN

म ह र्षि आ यु र्वे द – नि रो ग स मा ज का नि र्मा ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

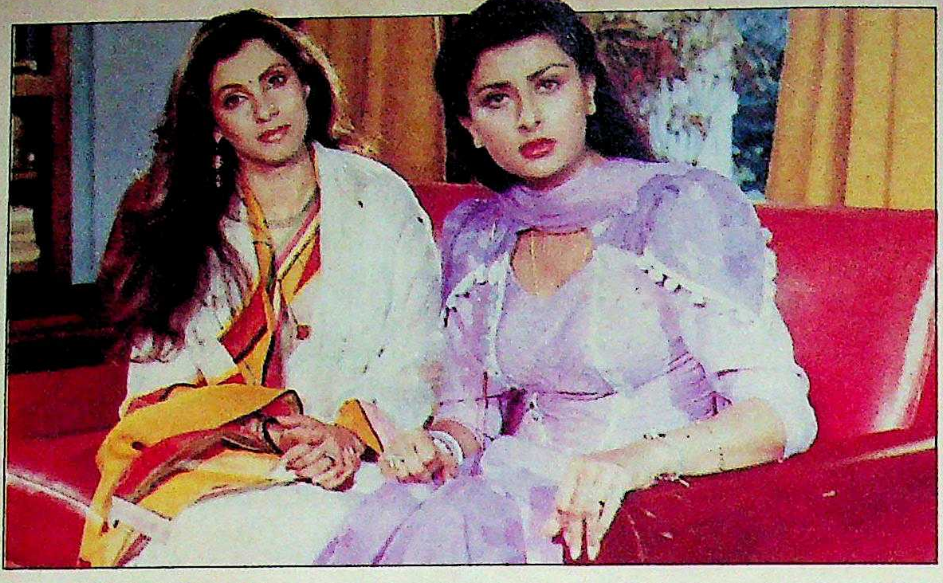

डिंपल और पूनमः गहरा राज

मसालेदार खिचड़ी

डिंपल कापड़िया और **पूनम ढिल्लों** के बीच आखिर क्या खिचड़ी पक रही है? ये दोनों हीरोइनें राजेश खन्ना की फिल्म 'जय शिव शंकर' में साथ काम कर रही हैं, इसलिए यह स्वाभाविक है कि दोनों जरा ज्यादा ही साथ-साथ दिखाई देने लगी हैं."

लेकिन यह दोस्ती इतनी सतही नहीं है. बड़े सोच-विचार के साथ एक महत्वाकांक्षी योजना पर काम हो रहा है. पूनम अभिनय में अपनी सीमाएं जानती हैं और इसलिए बड़ी ख्याति पाने का अरमान निर्देशन के जरिये पूरा करने की तैयारी में हैं. उधर, नंबर एक बनने का सपना डिंपल की आंखों में अभी भी तैर रहा है पर एक बात वे भी जानती हैं और उसे साफ कहने से हिचकिचाती भी नहीं, "मैं दो बच्चों की मां न होती तो 'चांदनी' जैसे रोल देने प्रोड्यूसर मेरे पास भी दौड़े चले आते. मेरी उम्र इतनी ज्यादा भी नहीं और न मुझमें ग्लैमर की कमी है लेकिन शादीशुदा और बच्चों की मां होना ही मेरी कमियां हैं."

इस दर्द पर पूनम ने मरहम लगाया तो डिंपल को रास्ता नजर आया. आखिर पूनम के निर्देशन में कोई नामी अभिनेत्री तो काम करने से रही. डिंपल ने पूनम को हीरोइन की प्रमुखता वाली फिल्म बनाने के लिए राजी करके एक बड़ा हीरो ला देने का वायदा भी किया है और भरोसा दिलाया है कि पूनम की इस फिल्म मे वह इतना धांसू काम करेंगी कि लोग भूल जाएंगे 'चांदनी' को. है न बीरबल की खिचड़ी.

नाना का गुस्सा

समर्थ अभिनेता नाना पाटे[कर] को गुस्सा कब आता है? नाना से भले ही कुछ न कहें पर [उ]नके करीबी जानते हैं कि उन्हें ... ज्यादा चिढ़ 'छोटी फिल्मों ... सदाशिव अमरापुरकर' कहे जा[ने से] होती है. प्रेम चोपड़ा की उम्र ... जाने के बाद जो विलेन उभरे ... सदाशिव का नाम बहुत ऊपर ... 'अर्द्धसत्य' के रामा शेट्टी को ... आज भी भूले नहीं. वे बड़ी ... फिल्मों में अटके रह गए.

लेकिन विनोद चोपड़ा की ... 'परिंदा' में माफिया किंग ... भूमिका में नाना का काम देख[ने के] बाद उन्हें बधाई देने वालों [की] संख्या बढ़ती जा रही है, ... छुट्टी कर दी तुमने सदाशिव ... और नाना मुस्कराकर अपने ... मोशन स्टाइल में जवाब देते ... "सदाशिव को क्या फिक्र है? ... जाकर तंबाकू की दुकान संभाल[ेगा] फिर से."

सदाशिव को जब नई-नई ... लता मिली थी और उसके नशे ... बड़े तथा नामी प्रोड्यूसरों [की] फिल्में भी ठुकराने लगे थे तब ... शिव का एक ही जवाब होता ... "मैं फिल्मों में पैसा कमाने ... आया जो हर फिल्म ले लूं. पै[सा] कमाना होता तो अपनी ... तंबाकू की दुकान क्या बुरी ... आज वे उसी राह पर हैं.

भुनाना छवि को

आखिर डूबते को तिनके का सहारा मिल ही गया. सरकारी (यानी जनता के) पैसे से एक से एक उबाऊ फिल्म बनाकर पैसा डुबाने के लिए मशहूर एनएफडीसी की डूबती प्रतिष्ठा को यह तिनका मिला है 'तृषाग्नि' के रूप में. इस छोटी-सी फिल्म ने बड़ी-बड़ी फिल्मों के मुकाबले बड़ा बिजनेस किया है और अब तक अच्छी चल रही है. एनएफडीसी ने इस फिल्म में पैसा लगाया है और पहली बार किसी फिल्म से पैसा आता देख इसके अधिकारी हर जगह इसी का उदाहरण देते फिर रहे हैं.

लेकिन 'तृषाग्नि' की सफलता की सबसे बड़ी वजह है इसकी कमसिन नायिका **पल्लवी जोशी** अभी कल तक पल्लवी को दर्शक टीवी सीरियलों में देखते थे. जवानी की देहरी पर कदम रखती यह मासूम लगने वाली बाला इतनी जल्दी इतने गरम गुल खिला देगी, इसका उन्हें अनुमान भी नहीं था. छोटी-सी उम्र की सुंदर, गोरी पल्लवी को जरा ज्यादा ही सेक्सी लड़की के रूप में दिखाकर उसके साथ बड़ी उम्र के सांवले, कठोर नाना पाटेकर के चुंबन-आलिंगन के दृश्यों से इस फिल्म के कई दर्शकों को जो सुख मिल रहा है, आजकल व्यापारिक फिल्मों के निर्माता उसी को भुनाने की कोशिशों में लगे हुए हैं. पल्लवी के दरवाजे लाइन लगी है लेकिन कोई भी उसकी प्रतिभा के कारण नहीं आता. सभी 'जवानी के जलवे' मार्का फिल्में बनाने वाले हैं. हर कोई छोटी उम्र की गरम लड़की की कहानी ला रहा है.

तो क्या इस फिल्म की सफ[लता] का श्रेय बटोरने वाला एनएफ[डीसी] इस बात का 'श्रेय' लेने को तैयार होगा कि उसने फिल्मों [को] एक और सोनिका गिल दे दी?

पल्लवीः गरम गुल

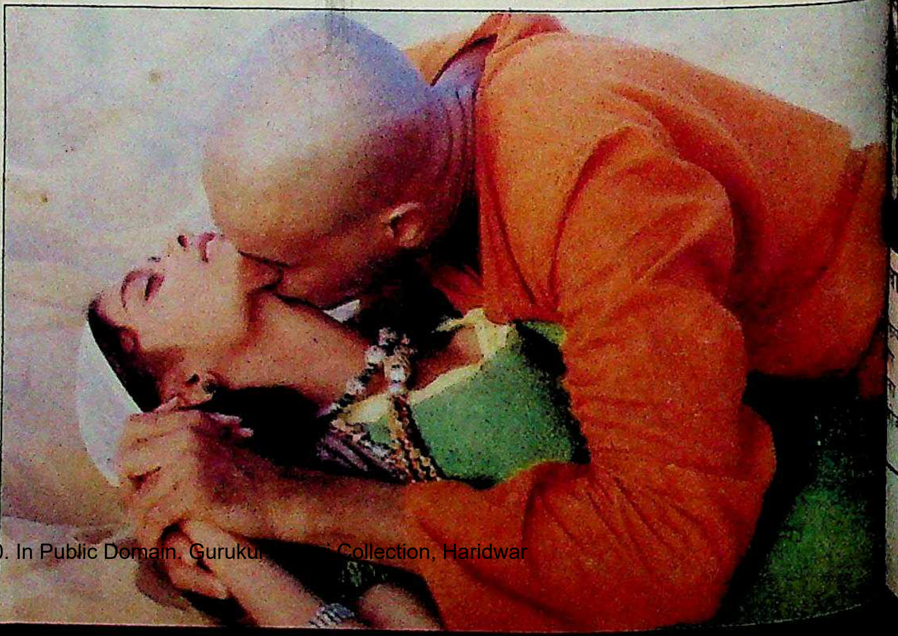

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह का योग

...ह जानबूझकर फैलाई गई ...ह है या सचमुच ज्योतिष का ...च्चा गणित? फिल्म इंडस्ट्री ... चर्चा अब आम हो चली है ...श्रीदेवी की जन्मकुंडली में ... का योग है ही नहीं.

... लोगों का कहना यह है कि ... अमृतराज के साथ श्रीदेवी ...शादी की कोशिश इसलिए ... नहीं हुई कि अशोक की मां ...क क्रिश्चियन बहू चाहती हैं. ... चक्रवर्ती के साथ शादी की ...क पहुंचता रोमांस भी इस-...लम नहीं हुआ कि योगिता ने ... का जीना हराम कर दिया ...जह सिर्फ इतनी है कि जिस ... में श्रीदेवी पैदा हुई हैं उसमें ... इंसान शासक वर्ग में आते ... बंधन में नहीं बंधते.

... खबरों से सबसे ज्यादा त्रस्त ...देवी की मां, जो चाहती हैं कि ... जल्दी हो सके, बेटी के हाथ

पीले हो जाएं. "क्या आपको बेटी का इतना नाम और दाम कमाना अच्छा नहीं लगता?" इस प्रश्न पर उन्होंने कहा, "बहुत कमाया नाम और दाम. मैं जानती हूं कि सब दिन एक समान नहीं रहते. बेटी का कोई कदम गलत पड़ जाए इससे अच्छा क्या यह नहीं है कि वह भले नाम के साथ ससुराल चली जाए?"

"तो फिर, कुंडली में विवाह योग न होने की बात आप नहीं मानतीं?"

"श्री की कुंडली मेरे पास है कि धोखेबाज पंडितों के पास?"

यह है सफलता के शेर पर बेखटके सवार बेटी की दुनियादार मां का काबिले तारीफ जवाब!

श्रीदेवीः विवाह योग नहीं?

...ार्ली का चक्कर

...म निर्माण के अंतरराष्ट्रीय ... में जब चार्ली चैप्लिन की ... निभा सकने वाले कलाकार ...ज शुरू हुई तो हिंदुस्तान से सिर्फ एक नाम उभरा—राजेश पुरी उर्फ लल्लू. उन्हें चार्ली चैप्लिन के रूप में लेकर बनाया गया बूट पॉलिश का विज्ञापन इस बात के प्रमाणस्वरूप पेश किया गया कि वे बेहतरीन चार्ली साबित हो सकते हैं.

इसके बाद से छोटे कद के कलाकारों में अंदर ही अंदर चार्ली बनने की होड़ लगी हुई है. हालांकि इस बार तो राजेश का काम भी नहीं बना पर क्या जाने कब फिर ऐसा ही मौका हाथ आ जाए! इस रेस में आगे-आगे दौड़ रहे हैं असरानी और उनसे भी तेज दौड़ने की कोशिश में हैं **सचिन,** जो हिंदी में भले ही हीरो के रूप में राजश्री प्रोडक्शंस की फिल्मों से आगे नहीं बढ़ सके लेकिन मराठी फिल्मों में जिन्होंने निर्देशक के रूप तहलका मचा रखा है.

असरानी ने चैप्लिन बनकर खिंचाई हुई फोटो अपने ड्राइंगरूम में लगा रखी है ताकि हर आने-जाने वाले की नजर उस पर पड़ती रहे. लेकिन सचिन ने मराठी फिल्मों में अपनी कलाकार-निर्देशक की मजबूत स्थिति का फायदा उठाते हुए राजेश पुरी को मुंहतोड़ जवाब देने का फैसला किया है. उन्होंने एक फिल्म में चार्ली बनकर यह दिखाने की ठान ली है कि चार्ली की छवि सिर्फ बूट पॉलिश करके नहीं बनाई जाती.

सचिनः नकल की होड़

अधूरी बात

फिल्म जगत में कदम धरने के साथ ही **नीता पुरी** ने धमाका कर दिया था. उस धमाके का उन्हें फायदा भी खूब मिला.

छरहरे शरीर की इस स्वामिनी ने भरपूर शरीर प्रदर्शन के साथ थोड़ी 'अक्लमंदी' दिखानी भी शुरू की. बहुत ही संयत ढंग से उसने महेश भट्ट और गुलजार जैसे डायरेक्टरों के पास संदेश भिजवाए कि अगर वे उसे जरा-सा भी मौका दें तो वह हमेशा 'पूरे कपड़े पहने रहने को' तैयार है.

शब्दों के जादूगर गुलजार ने इस प्रस्ताव को हंसकर किनारे सरका दिया, "यह बात फिल्मों के रोल के लिए है या बाकी समय के लिए भी?" और महेश भट्ट पहले तो समझ नहीं पाए कि नीता पुरी हैं कौन? और फिर तुरंत यह कहकर फूट लिये, "हर वक्त पूरे कपड़े? बाप रे बाप?"

नीता पुरीः काया का कमाल

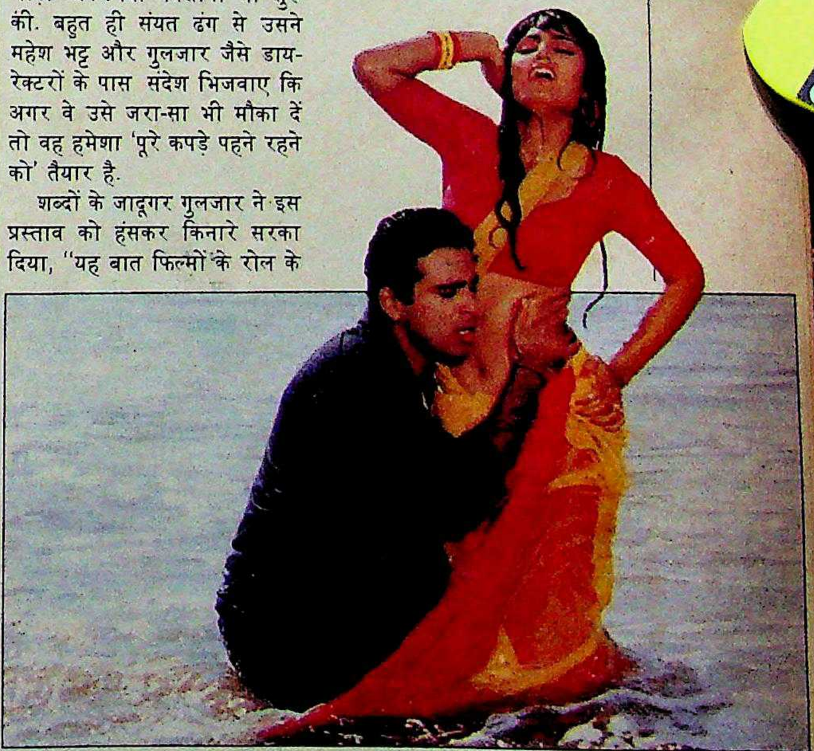

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

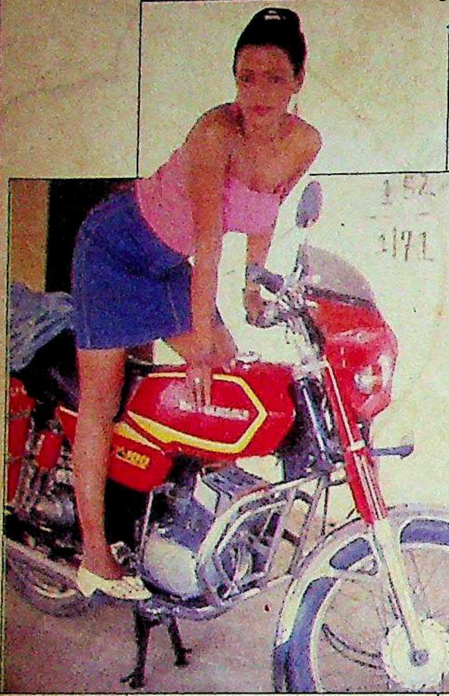

संजय मवानी

पार्वतीः पॉप का शोर

◆ **मेहंदी हसन** और **पार्वती खान** एक मंच पर! कितना अद्‌भुत संयोग होगा यह. दोनों ने ही गजल को ख्याति दिलाई है. पर आज मेहंदी हसन जिस निष्ठा से इसमें जुड़े हैं, पार्वती नहीं. पार्वती तो पॉप, रॉक आदि में व्यस्त हैं. उनके इस रूप के दीवानों की फौज भी काफी बड़ी है. लखनऊ में पिछले दिनों एक कार्यक्रम में ये दोनों साथ-साथ मौजूद थे. इसमें करीब एक लाख लोग आए. मेहंदी हसन पार्वती की चमक-दमक के आगे फीके ही रहे. उस दिन रिलीज हुए पार्वती के कैसेट 'दिल दीवाना हो गया' के दो संस्करण बिक चुके हैं. बंबई में बस चुकी यह गायिका अब दूरदर्शन पर इतवार की रात नौ बजे के कार्यक्रम के लिए, एक पॉप शो की शूटिंग कर रही है. उन्हें छोटे परदे पर भी अपना सिक्का जम जाने का भरोसा है. वे कहती हैं, "मैं टीवी पर सचमुच में हंगामा कर देना चाहती हूं." यानी इतवार की रात का विशेष खयाल रखना होगा.

◆ परदे के लिए विश्वामित्र को ढूंढने में तो कभी परेशानी नहीं हुई पर मेनका की तलाश आसान नहीं रही. दूरदर्शन पर 'विश्वामित्र' लाने वाले दसारि नारायण राव इस मामले में एन.टी. रामराव से कम परेशान नहीं हुए हैं. जिस तेजी से उन्होंने मुकेश खन्ना को मुख्य भूमिका के लिए चुना, उतनी ही परेशानी उन्हें मेनका को तलाशने में हुई. लेकिन अब श्रीदेवी समेत अनेक नामी अभिनेत्रियों को पीछे छोड़ते हुए **भानुप्रिया** द्वारा बाजी जीत लेने से यह समस्या भी सुलझ गई है. तेलुगु फिल्मों की इस सेक्सी हीरोइन ने अब तक आठ हिंदी फिल्मों समेत 70 से भी अधिक फिल्मों में काम किया. पर वे इतने से संतुष्ट नहीं हैं. उनकी और भी महत्वाकांक्षा है. वे कहती हैं, "मैं पुरस्कार जितवा देने वाला रोल चाहती हूं. इससे मुझे संतुष्टि होगी." उम्मीद तो यही है कि राजर्षि विश्वामित्र की दाढ़ी का स्पर्श यह महत्वाकांक्षा भी पूरी करा देगा.

भानुप्रियाः रिझाने वाला रोल

◆ उनके संगीत में जादू है और उंगलियों पर वीणापाणि का वास. 69 वर्ष की उम्र में भी पूरी तरह सक्रिय रहने वाले विश्वविख्यात सितारवादक **रविशंकर** अपनी संपूर्ण प्रतिभा का उपयोग नशीली दवाओं के खिलाफ करने जा रहे हैं. मूक अभिनय, गीतिनाट्य और नृत्य-नाट्य को मिलाजुलाकर तैयार हुए उनके संगीत नाटक 'घनश्याम' की पिछले पखवाड़े लंदन के साउथ बैंक में धूम रही. घनश्याम नामक कथक नर्तक इस नाटक का नायक है (यह भूमिका **दुर्गालाल** ने निभाई है) जो नशे की गिरफ्त में आ जाता है. इंग्लैंड में इस नाटक का हर शो हिट हो रहा है. रविशंकर कहते हैं, "ब्रिटेन के लोगों की प्रतिक्रिया देखकर मैं अभिभूत हूं." और यह उस आदमी का कथन है जो चार दशक तक हर तरफ से वाहवाही ही पाता रहा है.

दुर्गालालः नशे के खिलाफ नृत्य

◆ खबरों में बने रहना तो उन्हें बखूबी आता है. इसके लिए उन्हें थोड़ा ताना भी झेलना पड़ता है. जब कभी रिचर्डस के खेल का जिक्र आता है अखबार-पत्रिका वाले **नीना गुप्ता** का नाम भुनभुनाने लगते हैं. अब खबर यह है कि वे भूतनाथ नामक टीवी धारावाहिक में आ रही हैं. इसके साथ ही फुसफुसाहट शुरू हो गई है. बाबू देवकीनंदन खत्री के नामी उपन्यास पर बनने वाले धारावाहिक में अशोक कुमार, नवीन निश्चल और नताशा सिन्हा भी हैं. नीना के (भूत) पति बने हैं बेंजामिन गिलानी. क्या यह भूमिका उन्होंने प्रेस से कुट्टी करने के लिए ली है, यह पूछे जाने पर नीना कहती हैं, "मैं किसी से नफरत नहीं करती. मैं तो खबरों से दूर रहकर ही खुश हूं." लेकिन लगता है कि यह भी खबरों में बने रहने का ही एक तरीका है.

धनंजय

नीनाः 'भूत' के भरोसे

◆ इंका का वे खुल्लमखुल्ला प ले रहे थे तो इसकी वजह वही जो आज उनकी उपलब्धि के रूप नजर आ रही है यानी चुनाव ल का टिकट. लेकिन 'टेलीग्राफ' अखबार के 38 वर्षीय तेजतर्रा संपादक **एम.जे. अकबर** कुछ औ ही वजह बताते हैं. वे कहते हैं देश बढ़ती सांप्रदायिकता के खिला अपने जेहाद के तहत ही वे चुना मैदान तक पहुंच गए हैं. औ मुकाबले के लिए उन्होंने अप पुराने 'दुश्मन'—सैयद शहाबुद्दीन—को ही चुना है. परंतु ऐसा लगता कि वे चुनावी 'चंगुल में फंस गए हैं'. अकबर कहते हैं, "हमने सोने जै लंका को जिस तरह नरक में बदल देखा है, अगर हमने शहाबुद्दीन औ ठाकरे जैसों के षड्यंत्र को चल दिया तो देश सांप्रदायिक नफरत वैसे ही नरक बन जाएगा." लेकिन अकबर को भरोसा है कि वे 'कलम से भी यह लड़ाई' जारी रखें. उनका यह सोचना बेहतर है. शायद उन्हें फिर कलम उठानी पड़े.

अकबरः नई भूमिका

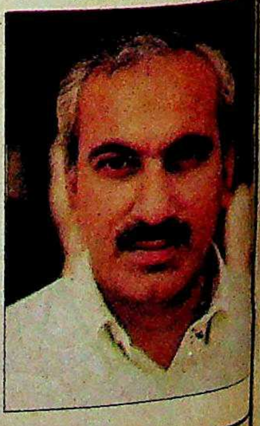

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

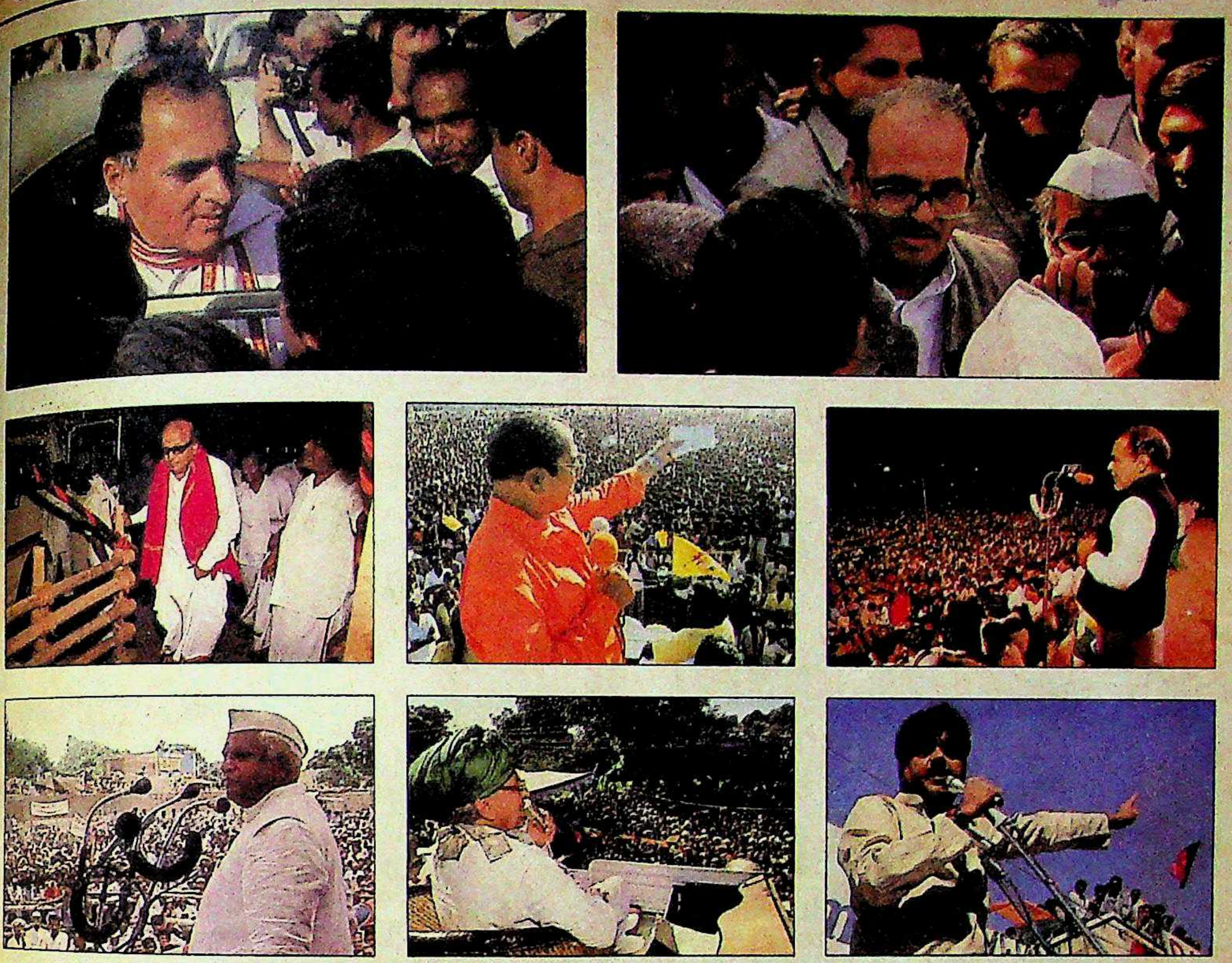

आम चुनाव '89

इस युद्ध का शंखनाद तभी हो गया था जब 1987 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने राजीव गांधी और इंका से किनारा कर लिया था. अब लगभग ढाई वर्षों बाद यह युद्ध अपने अंतिम, निर्णायक दौर में है. राजीव के प्रचार अभियान में तेजी तो है मगर लगता है हिंदी क्षेत्र में वी.पी. सिंह ने ही बढ़त ले ली है. दूसरे राज्यों में भी चुनावी बुखार का पारा नीचे नहीं है. करुणानिधि और रामराव जैसे क्षत्रपों को इंकाई हमले का कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा है मगर लगता है वे अपने गढ़ में सेंध नहीं लगने देंगे. बहरहाल, चुनाव प्रचार की रंगीनियों और गुलगपाड़े ने खासी सनसनी पैदा की है. नए चेहरों, अनूठे नारों तथा गानों, विचित्र रथों, फिल्मी चकाचौंध और विलक्षण संयोगों ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के चुनाव को चमत्कारी आयोजन बना दिया है.

अगले पन्नों पर

चुनाव-दर्पण 7

आम चुनाव '89
फैसले की घड़ी 14

चुनाव चर्चा
राजीव के दौरे: रस्मअदायगी की रवानी.....18
विश्वनाथ प्रताप सिंह:
सिर्फ इन्हीं के चर्चे हैं 24

जनमत सर्वेक्षण 32

राज्य-दर्शन
उत्तर प्रदेश: चुनावी महाभारत का कुरुक्षेत्र...36
कर्नाटक: मुद्दे नहीं, व्यक्तियों की टक्कर....50
आंध्र प्रदेश: कड़ी चुनौती का सामना........54
बिहार: जो बोया सो काटिए 57
महाराष्ट्र: गढ़ में पड़ी दरार....................61
राजस्थान: पांच वर्षों में पलटे हालात.......69
हरियाणा: लाल किले की आस 74
पश्चिमी बंगाल: मोर्चे का मोर्चा मजबूत....79
दिल्ली: दर्शनीय दंगल............................81
तमिलनाडु: द्रमुक के लिए दांव ऊंचे..........84
मध्य प्रदेश: पैर उखड़ने के आसार 88

मुकाबले में माफिया
बंदूक का साया 91

पहली बार मैदान में
राजनीति का सम्मोहन 96

प्रचार वाहन
रथों पर सवार महारथी.........................98

मुकाबले में घराने
अपने अपनों की जंग...........................104

चुनाव मंच
जमीं पर सितारे..................................110

चुनावी चेहरे 112

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे

सुरुचि समाचार पत्रिका

वर्ष 4, अंक: 2, 16-30 नवंबर 1989

प्रधान संपादक
अरुण पुरी

वरिष्ठ संपादक
प्रभु चावला

संपादकीय विभाग
जगदीश उपासने, अशोक कुमार, विजय क्रांति, ओम प्रकाश सराफ, अरविंद मोहन मिश्र, अ.ला. प्रजापति, विमल पाराशर, हरिमोहन मिश्र, हरजिंदर, आशुतोष चतुर्वेदी

प्रोडक्शन
अनिल शर्मा, सुबाचन यादव, सुनील सैनी

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली.

■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली.

■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई.

■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली • फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता.

• कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
• लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

अपनी बात

आम चुनावों के दौर में देश का दौरा करना अपने-आप में आंखें खोल देने वाला अनुभव होता है. यह भारत की धड़कनों को सुनने और इसके लोकतंत्र की महानता का साक्षात अनुभव करने का वक्त होता है. हर बार चुनावों में मैं चुनाव अभियानों का जायजा लेने के लिए कुछ दिनों के दौरे पर निकलता रहा हूं. इस बार भी मैं दौरे पर गया था और पहले की ही तरह उत्साह से भरकर लौटा.

चुनाव का वक्त ऐसा होता है जब सारे सामान्य समीकरण उलट-पलट जाते हैं. इस दौर में गांव के आम लोग तक देश के सर्वशक्तिमान को उसकी हैसियत बताने से डरते नहीं, तब बड़े-से-बड़े राजनैतिक दिग्गज भी देश के दीन-हीन लोगों के सामने झोली फैलाए नजर आते हैं. यह दौर कितना भी क्षणिक क्यों न हो, साधारण से साधारण नागरिक को भी खुद के खुदा होने का एहसास करा जाता है. फटेहाल भारतीय मतदाता को वोट डालते हुए देखकर मुझे मेरा भारत महान होने का बोध होने लगता है. हालांकि इस उदात्त भावना का व्यवसायीकरण करके इसका खासा मजाक उड़ाया गया है.

भारतीय चुनावों को दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन कहा जा सकता है. सीधे दिल में उतर जाने वाले नारों और गानों, आधुनिक प्रचार रथों, कल्पनाशील पोस्टरों और चित्रों तथा तमाम दूसरी तरह की नाटकबाजियों के कारण भारत न केवल सबसे बड़ा बल्कि सबसे जीवंत लोकतंत्र के रूप में उभरकर सामने आता है.

इन तमाम रंगीनियों को एक साथ समेटने के लिए पूरी पत्रिका को चुनावों पर केंद्रित करने का फैसला किया गया. इस विशेष अंक के लिए 18 संवाददाताओं और संपादकों ने चुनावी माहौल का जायजा लेने के लिए करीब 30 हजार किलोमीटर की यात्राएं कीं और 7 छायाकारों ने करीब 10 हजार तस्वीरें खींचीं. इसके अलावा 'इंडिया टुडे' ने कुछ ठोस आंकड़ों पर भी ध्यान दिया जिसे हमारे सहयोगी, चुनावी आंकड़ा विशेषज्ञ प्रणय राय और 'मार्ग' ने जुटाया. ये दोनों पिछले दो आम चुनावों में भी चुनाव नतीजों की सफल भविष्यवाणियां कर चुके हैं. इस बार चुनावों की अचानक घोषणा के कारण प्रचार देरी से शुरू हुआ इसलिए जनमत सर्वेक्षण भी देरी से कराना ठीक समझा गया. इस कारण यह अंक कुछ देर से प्रकाशित हो रहा है.

चुनावों के दौरान राजनैतिक नेता प्रेस के लिए बहुत आसानी से उपलब्ध होते हैं. लेकिन दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री के साथ ऐसी बात नहीं है. उनके पहरेदारों ने स्वतंत्र समाचार माध्यमों को उनके चुनाव अभियान से अलग रखा. उस व्यक्ति का, जो एक बार फिर देश का नेतृत्व करने का दावा कर रहा है, जनता पर क्या असर है यह प्रत्यक्ष जानने के उद्देश्य से उसके साथ दौरा करने के तमाम अनुरोध ठुकरा दिए गए.

छपे हुए शब्दों की ताकत को कम करके आंकने की प्रवृत्ति रही है शासकों में. भारत के पढ़े-लिखे शहरी तबके में प्रेस के प्रति जो अविश्वसनीयता का भाव है वह अभी आम लोगों तक नहीं पहुंचा है. आम लोग अनपढ़ भले हों लेकिन नासमझ नहीं हैं. अखबारों में क्या छप रहा है उन्हें यह बताने वाला कोई-न-कोई मिल ही जाता है. किसी भी गांववाले से पूछ लीजिए कि उसे भ्रष्टाचार के बारे में कहां से पता चला तो उसका एक ही जवाब होगा—हमने अखबारों में पढ़ा है. इस बार का चुनाव कई अहम मुद्दों पर फैसला सुनाएगा. इनमें से एक यह भी है कि कलम ज्यादा ताकतवर है या भारतीय जनता पर थोपा गया गलत सूचनाएं देने वाला दूरदर्शन.

अरुण पुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्योर न्यू वुल. एक अपना ही अन्दाज़.

प्योर न्यू वुल के बने शानदार ऊनी कपड़े.
मौसम के रुख को ऐसे पहचानें कि सर्दी में आपको गर्म रखें और गर्म में ठंडा-ठंडा. पहनने में भी कितने नरम, मुलायम. सिकुड़न को तो पास भी नहीं आने देते. आपके सपनों की तरह आपसे लिपट जाएं. इनका स्टाइल ऐसा कि हमेशा फ़ैशन से मेल खाए.

प्योर न्यू वुल के ऊनी कपड़े. इन्हें घर ले आइए.

Woolmark
(वूलमार्क)
PURE NEW WOOL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई उम्मीदें

आवरण कथा के अंतर्गत विपक्ष का 'मौका न चूकने का संकल्प और उत्साह' (15 नवंबर) नई उम्मीदें जगा रहा है. हालांकि सत्ता हाथ में आते ही निजी महत्वाकांक्षाओं और मतभेदों के फिर सिर उठाने की पूरी संभावना है लेकिन कांग्रेस को जगाने और केंद्र से निरंकुश शासन हटाने के लिए विपक्षी एकता बहुत जरूरी है. **—महेश प्रसाद रस्तोगी**, कलकत्ता (प. बंगाल)

■ चुनाव की आधी-अधूरी तैयारी किए विपक्ष को चौंका देना ही राजीव की अप्रत्याशित घोषणा का मकसद रहा होगा. लेकिन विपक्षी दल जिस आसानी से एक हुए हैं, उससे हैरानी मतदाताओं को भी हुई है, क्योंकि हर बार एक होने से पहले बिखर जाना ही विपक्ष की नियति बन चुकी थी.

—अभयराज यादव, वाराणसी (उ.प्र.)

वायदों की बलि

'नाकामियों से फीकी पड़ी वायदों की चकाचौंध' (15 नवंबर) राजीव शासन के पांच साल का निष्पक्ष विवरण है. राजीव यदि चाहते तो संसद में प्रबल बहुमत का इस्तेमाल अपने चुनावी वायदों को पूरा करने में कर सकते थे लेकिन इसका उपयोग उन्होंने बोफोर्स दलालों को बचाने, मान-हानि विधेयक पारित करने में ही किया.

—निधि, आगरा (उ.प्र.)

निराधार संकेत

'सितारों से मिले संकेत' (15 नवंबर) के तहत आपने कुछ ज्योतिषियों की भविष्य-वाणियां छापकर जीती जाने वाली सीटों की संख्या भी बतलाई है. पर ज्योतिष में ऐसी कोई गणना पद्धति नहीं जिससे किसी दल विशेष की सीटों की गणना की जा सके. जिस समय भारत में ज्योतिष का विकास हो रहा था, लोकतांत्रिक शासन पद्धति ही नहीं थी. आज ये गणनाएं कुछ विशिष्ट लोगों को खुश करने के लिए ही की जाती हैं, इनका ज्योतिषीय आधार नहीं है.

—विश्वनाथ शर्मा, नई दिल्ली

■ आवरण कथा में आपने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आगामी चुनावों में राजीव गांधी प्रधानमंत्री पद पर नहीं रहेंगे. इस संबंध में जो तर्क पेश किए गए हैं वे बचकाने हैं. जैसे ज्योतिषियों के अंध-विश्वासी विचारों को छापना. जैसा कि लिखा है कांग्रेस अपने जाल में खुद फंस गई है. परंतु विपक्ष इस समय किस हालत में है? भारत का मतदाता 1977 का प्रयोग दोहराने को तैयार नहीं.

—सुरेश चंद्र गुप्ता 'बंटी', मुरादाबाद (उ.प्र.)

काला अध्याय

राजीव के 'दागदार दामन का दंश' (15 नवंबर) उनके शासन का सबसे काला अध्याय है और यह दाग भी उस प्रधानमंत्री के दामन पर लगा है जो स्वच्छ प्रशासन का पर्याय बनकर राजनीति में आए थे. आम मतदाता के लिए बोफोर्स मुद्दा इतना महत्व-पूर्ण नहीं, इसलिए उनकी हार की संभावना कम ही है लेकिन इतिहास उन्हें इसके लिए कभी माफ नहीं कर पाएगा.

—विनिता शर्मा, अंबाला (हरियाणा)

■ जिस गहराई से आपने सच को उजागर किया है वह पाठकों को झकझोरने के लिए काफी है. यदि कांग्रेस दोबारा सत्ता में आई तो कोई संदेह नहीं कि विपक्ष बोफोर्स का मसला फिर न उठाए. राजीव दोषी को दंड देने की बात 1987 से कर रहे हैं, लेकिन स्वीडिश ऑडिट ब्यूरो की रिपोर्ट को सही नहीं मानते. 'हिंदू' में प्रकाशित दस्तावेजों को सही नहीं मानते, न ही पूर्व सेनाध्यक्ष सुंदरजी के बयानों को. तब सच क्या है वे खुद जनता के सामने क्यों नहीं रखते.

—राकेश राणा 'कुंअर', भिंड (म.प्र.)

सोची-समझी नासमझी

'नफरत के शोलों को हवा' (आवरण कथा: 31 अक्तूबर) देने की राजनीतिकों की कोशिशें दुखद ही नहीं, शर्मनाक भी हैं. यह जानते हुए भी कि सांप्रदायिकता ने ही देश के दो टुकड़े किए थे, नेताओं ने इसे हवा देने की परंपरा-सी बनाई हुई है. उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा देना, रामशिला पूजन और राम मंदिर शिलान्यास जैसे नाजुक मसलों को चुनावी स्टंट बनाना देश में देर-सबेर लेबनान और श्रीलंका जैसी स्थिति पैदा कर सकता है.

—विकास कुमार, रांची (बिहार)

■ सांप्रदायिकता शायद भारत की राजनीति का ऐसा मुद्दा है जिसे समझकर भी कोई समझना नहीं चाहता. समझते तो हैं दोनों पक्ष परंतु सही बात बोलना नहीं चाहते. यह देश ईसाई, मुस्लिम एवं कम्यु-निस्ट षड्‌यंत्रों एवं योजनाओं का क्रीडास्थल बन गया है. आखिर हिंदू हितों की बात उठाना सांप्रदायिकता क्यों मानी जाती है?

—प्रतिभा, कानपुर (उ.प्र.)

■ आवरण कथा पूर्वाग्रह से ग्रस्त और एकपक्षीय लगी. क्या आपके पास इस बात का जवाब है कि लोकतंत्र में अल्पसंख्यक आयोग की जगह मानवाधिकार आयोग की मांग सांप्रदायिक कैसे है? 'भारत माता की जय' बोलने पर आपत्ति करने वाले सभ्य हैं, तिरंगा जलाने वाले धर्मनिरपेक्ष हैं लेकिन अपने राष्ट्र की जय बोलने वाले सांप्रदायिक हैं. **—राजीव शर्मा**, लाडनूं (राज.)

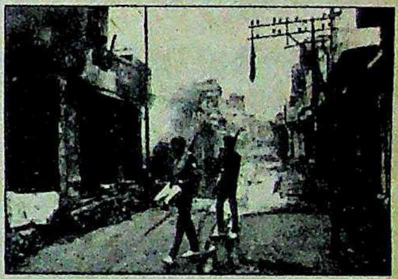

■ यदि कोई खुद को 'हिंदू' कहे तो कांग्रेस और वामपंथी लोग उसे सांप्रदायिक कह देते हैं लेकिन कांग्रेस कई राज्यों में उस मुस्लिम लीग के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है, जिसके लोग खुद को पाकिस्तानी कहने में गर्व महसूस करते हैं. राजीव गांधी जब मिजोरम में ईसाई धर्म के नाम पर वोट मांगते हैं या कश्मीर में जब हिंदुओं के मंदिर जलाए जाते हैं तब यह सांप्रदायिकता क्यों नहीं कहलाती?

—सुशील शर्मा, अमृतसर (पंजाब)

■ जहां-जहां दंगा हो रहा है, सरकार 'रामशिला पूजन यज्ञ' तथा बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद को ही दोषी मान रही है. लेकिन गौरतलब बात यह है कि ये दंगे आखिर कांग्रेस शासित प्रदेशों में ही क्यों फैले, जबकि 'रामशिला पूजन' तो पूरे भारत में ही हुआ?

—राजेश 'अकेला', सोहसराय (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असरदार की तरफदार

आजकल 'तराजू का तकाजा' (कसौटी: 31 अक्तूबर) यही है कि जिस पलड़े पर असरदार व्यक्ति बैठा हो, वह उधर ही झुक जाए. ग्रामीण जनता आज भी न्यायपालिका में 'दादा ले पोता भुगते' की तर्ज पर मुकदमे दर्ज कराती है. इस लोकतंत्र में जहां एक असरदार व्यक्ति के लिए, जो वस्तुत: दोषी था, आधी रात ज्यूरी बैठती है वहीं एक निर्दोष आम आदमी को, जो बिना किसी आरोप में बंद है, जमानत कराने के लिए कितने दिन इंतजार करना पडेगा, यह न्यायपालिका या ईश्वर ही जान सकता है.

—संजीव कश्यप, बुबकपुर (उ.प्र.)

■ हमारे देश में राजनीति ही सर्वोपरि है. बड़े-बड़े उद्योगपतियों के इशारे पर ही सरकार चलती है. वे कानून और न्याय को जब चाहे जिधर तोड़-मरोड़ लेते हैं. अपने हित में कानून की व्याख्या कर लेते हैं. काश! देश की न्यायपालिका राजनीति से अछूती होती तो आम जनता को सरकार की तरफ उंगली उठाकर यह न कहना पड़ता कि सरकार बनाम उद्योपति बनाम न्याय.

—भारत सिंह राठौड़, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

असभ्यता

नाडियाड में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एन.एल. पटेल के साथ 'शर्मनाक कार्रवाई' (31 अक्तूबर) देश के लोकतंत्र और समाज की सभ्यता के मुंह पर तमाचा है. यदि पटेल शराब के नशे में थाने गए थे तो उन्हें रोका जा सकता था. हथकड़ी लगाकर घुमाना तथा पिटाई करना, गिरफ्तारी के आदेश की तामील न करना पुलिस की निरंकुशता जाहिर करता है. गुजरात पुलिस की यूनियनबाजी ने ही उन्हें मजिस्ट्रेट को सबक सिखाने की हिम्मत दी है.

—के.बी. सिंह बनाफर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

दिमागी दिवालियापन

दलाई लामा को मिले नोबेल शांति पुरस्कार 'निराशा के घटाघोप में उजियारे की कौंध' (31 अक्तूबर) का चीन सरकार द्वारा विरोध उसके दिमागी दिवालियेपन का दूसरा सबूत है. पहला सबूत वह छात्र आंदोलन के समय दे चुकी है. वैसे हमारी सरकार भी इस मामले में कम नहीं. चीन से संबंध बिगड़ने के डर से उसने दलाई लामा को थोड़ा सम्मान देने की जरूरत भी नहीं समझी.

—सुरेंद्र शर्मा, पाली मारवाड़ (राज.)

■ तथाकथित गांधीवादी भारतीय राजनेताओं से कहीं ज्यादा खरे दलाई लामा को दिया नोबेल शांति पुरस्कार गांधीवाद की आधुनिक यूरोपीय स्वीकृति है. संभव है अब वे भारत सरकार की नजर में नेहरू शांति पुरस्कार के योग्य हो जाएं?

—डॉ. वेदप्रकाश त्रिपाठी, विदिशा (म.प्र.)

और भी चेहरा है

'मेहनत से पलटी किस्मत' (31 अक्तूबर) पढ़ा. निस्संदेह लुधियाना वह विश्वविद्यालय है जहां फैक्टरी के मालिक यह सीखते हैं कि मजदूरों को थोड़ा-सा अधिक पैसा देकर किस तरह ज्यादा काम लिया जा सकता है. इस समृद्धि से परे शहर का एक और निस्तेज चेहरा उन दो लाख प्रवासी मजदूरों का भी है जिन्हें स्थायी श्रमिकों को मिलने वाली सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है.

—राज्य वर्द्धन, मुंगेर (बिहार)

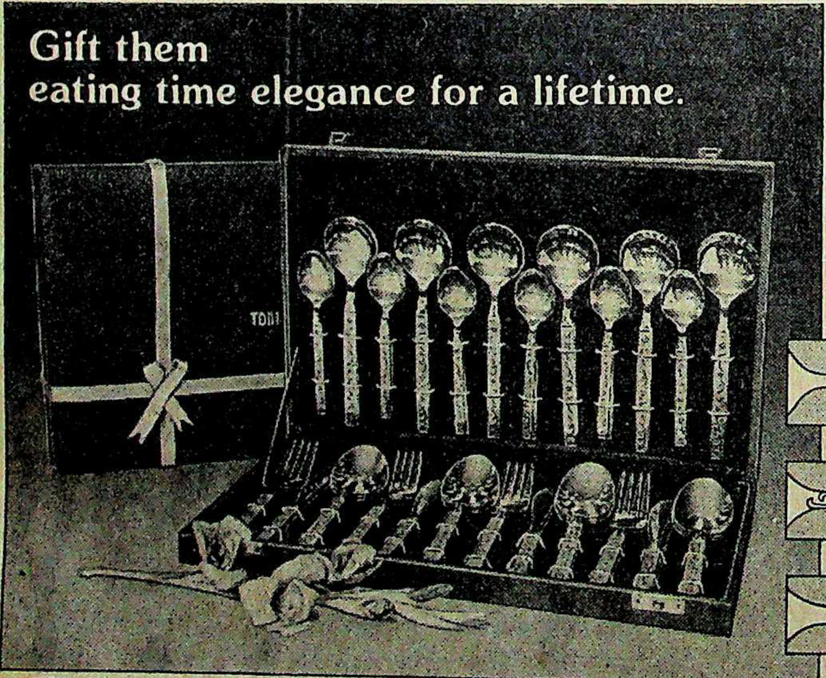

From the house of TODI comes a range of stainless steel cutlery that retains its glittering elegance for a lifetime.
Hand-crafted designs, the convenience of perfect balance and a velvet lined gift pack as exclusive as the cutlery it contains.
Could anything make a more lasting impression?

Choose from a range of exclusive designs.

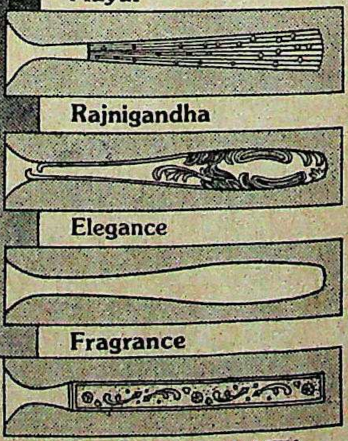

Todi Cutlery

Hand-crafted designs in solid stainless steel.

5 STAR EXPORT QUALITY

MAKHIJA 1649

Manufacturers:
TODI METAL INDUSTRIES 35, Saki Vihar Rd., Saki Naka, Bombay-400 072. Tel: 6345787.

वितरक: बंबई: विक्टरी मैटल्स, फोन: 380073, 354507 बंगलौर: पीटूमू ऐंड पैलूस फोन: 574232, 575389 कलकत्ता: एपेरटन इंजीनियरिंग कं. (प्रा.) लि., फोन: 288431 (5 लाइनें) दिल्ली: वैशाली प्लास्टिक एजेंसी, फोन: 514357, 516484, 526660 इंदौर: ज्योति क्राकरी सेंटर, फोन: 65473, 65472 जयपुर: चंदर क्राकरी हाउस, फोन: 62594 मद्रास: आस्तिक इन्टरप्राइजेज फोन: 33584, 38929 मेरठ: सोना सेल्स प्रा. लि. फोन: 76073 जालंधर: कक्कड़ ट्रेडर्स फोन: 4868 पटना: आर.एन. कटारुका ऐंड कंपनी फोन: 32973, 32907 गुवाहाटी: एपेरटन इंजीनियरिंग कं. (प्रा.) लि. फोन: 27444 ऐजेंट: कोचीन: साम्रू ऐंड कंपनी फोन: 361139

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नाम में क्या रखा है

□ आखिर नाम में क्या रखा है. पर चुनाव अच्छे-अच्छों को समझा देता है कि नाम (या उपनाम) में क्या रखा है.

नई दिल्ली सीट से इंकाई उम्मीदवार मोहिनी गिरि से किसी ने पूछा, "आप गिरी हैं!" "हां." फिर पूछा, "आप खड़ी हैं." फिर वही "हां." पूछने वाले ने कहा, "आप पहले यह तय कीजिए कि आप गिरी हैं या खड़ी."

उधर पूर्वी दिल्ली के इंका उम्मीदवार हरकिशनलाल भगत बेटे के नाम के कारण जनसंघी हो गए. एक सभा में किसी ने कहा, "भगत ने जनसंघ के चुनावचिन्ह दीपक पर बेटे का नाम रख लिया."

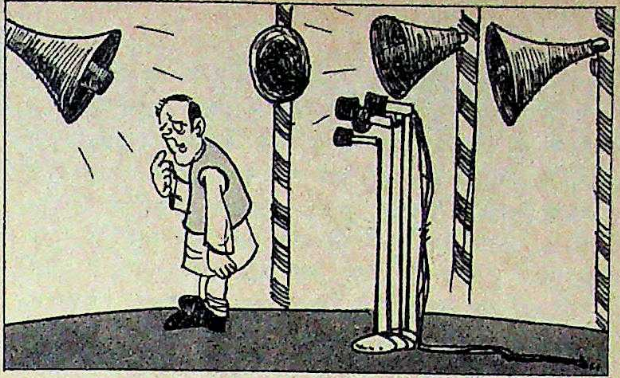

फिसलती जबान

□ भाषण में गलतियां करना अब जैसे उनकी पहचान बन चुकी है. स्वतंत्रता दिवस को गणतंत्र दिवस कहने की घटना लोगों को आज तक याद है. लेकिन चुनाव प्रचार जैसे नाजुक दौर में भी, जिसमें प्रतिद्वंद्वी अर्थ का अनर्थ करने का मौका ऐसे ताड़ते रहते हैं जैसे बगुला मछलियों को, प्रधानमंत्री राजीव गांधी अपनी जबान को फिसलने से रोक नहीं पा रहे.

अमेठी में नामजदगी का पर्चा भरने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए राजीव ने कहा कि आज यहां मैं दूसरी बार नामांकनपत्र भरने आया हूं, जबकि हकीकत यह है कि वे अमेठी में तीसरी बार नामांकनपत्र भरने गए थे.

ऐसी ही एक गलती उन्होंने फैजाबाद में चुनाव अभियान का श्रीगणेश करते हुए की. फैजाबाद की प्रशंसा में उन्होंने कह डाला कि नैमिषारण्य यहीं पैदा हुए थे. अब लोग हैरत में हैं कि ये नैमिषारण्य कौन हैं? यह तो उत्तर प्रदेश के एक तीर्थस्थल का नाम है, किसी व्यक्ति का तो नहीं.

नाम एक, काम जुदा

□ जनता दल वाले अगर अपने नेता वी.पी. सिंह के दरवाजे पर जमघट लगाएं तो बहुत स्वाभाविक है मगर इंका वाले भी वी.पी. सिंह के दरवाजे पर? यह विचित्र परंतु सत्य है. विचित्र बात यह है कि एक ही नाम की दो हस्तियों में एक और भी समानता है. दोनों के ही बंगले लोदी एस्टेट में हैं. मगर एक

राजीव की हवा बनाने में लगे हैं तो दूसरे राजीव की हवा निकालने में.

इनमें से एक तो हैं जनता दल के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रताप सिंह और दूसरे हैं इंका के चुनाव प्रचार की बागडोर संभालने वाले विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह.

तेवर

• आज यह हमारे देश का सौभाग्य है कि देश का प्रधानमंत्री एक मजदूर है.

—*चंद्रजीत यादव, आज*

• जनता दल को बहुमत मिलने पर प्रधानमंत्री पद के चुनाव में दिक्कतें तो हो सकती हैं लेकिन इस मुद्दे पर पार्टी टूटेगी नहीं.

—*चंद्रशेखर, दैनिक जागरण*

• जनता दल में नेता ही नेता हैं पार्टी नहीं.

—*अर्जुन सिंह, (पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश), ऑनलुकर*

...तो बीवी बन जाऊंगी

□ वे न तो बोफोर्स घोटाले से संबंधित एन. राम द्वारा लाए गए कोई दस्तावेज थे और न ही किसी गुप्त अभियान के कागजात. परंतु इंका के पदाधिकारी अपनी चुनाव प्रचार सामग्री को शुरू के दिनों में इस तरह गुप्त रखे हुए थे कि अगर वह जगजाहिर हो गई तो न जाने कौन-सा आसमान टूट पड़ेगा और उनका सारा खेल ही बिगड़ जाएगा. यही नहीं पत्रकारों को कानोकान इसकी खबर न लगे इसके लिए तो विशेष इंतजाम किए गए थे. लेकिन सुराग लेने वालों को राह सूझ ही जाती है.

एक महिला संवाददाता इस प्रचार सामग्री पर कुछ लिखना चाहती थीं इसलिए एक इंका पदाधिकारी के दफ्तर पहुंच गईं. पदाधिकारी ने पार्टी की रणनीति के मुताबिक उन्हें टाल दिया. महिला संवाददाता को उसे जानने का दूसरा तरीका सूझ गया और उन्होंने उसका ऐलान भी कर दिया. वे बोलीं, "मैं किसी बड़े कांग्रेसी नेता का नाम लेकर कहूंगी कि मैं उनकी बीवी हूं और सारी प्रचार सामग्री देख लूंगी." जब सैयां ही कोतवाल हों तो फिर भला कौन मना करेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकट टिकट

□ चुनाव लड़ने का टिकट मिल जाए वह भी शासक दल इंका की ओर से और फिर भी टिकट पाने वाला परेशान, हैरान हो ऐसा कभी-कभार ही होता है. पंडित चिरंजीलाल शर्मा के साथ ऐसा ही कुछ घट गया. शर्मा जी कभी अपनी किस्मत को कोसते कभी इंका के कंप्यूटर को.

इंका उम्मीदवारों की जो

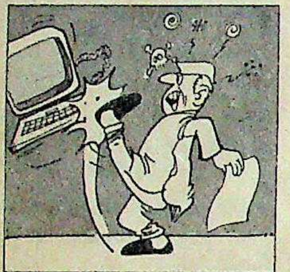

सूची जारी हुई उसमें उन्हें अंबाला लोकसभा क्षेत्र से टिकट दिया गया था. पंडित जी की परेशानी यह थी कि अंबाला सुरक्षित क्षेत्र है और वे कुछ भी कर लें कम-से-कम उस सीट पर तो चुनाव नहीं ही लड़ सकते. उन्होंने काफी दौड़-भाग की तब जाकर इंका ने सफाई दी कि हरियाणा से तीन उम्मीदवारों के ही नाम की घोषणा होनी थी चौथा नाम गलती से जुड़ गया. अंततः जब उन्हें करनाल उम्मीदवार बनाया गया तब उन्होंने राहत की सांस ली.

संयोग की बात

□ पर्यावरणमंत्री जियाउर रहमान अंसारी ऐन चुनाव के मौके पर ऐसे बदनाम हुए कि उत्तर प्रदेश के उनके चुनाव क्षेत्र उन्नाव का चुनावी पर्यावरण ही उनके खिलाफ हो गया. वे दो बार विधानसभा और तीन बार लोकसभा चुनाव जीत चुके हैं. उम्र व तजुर्बे के लिहाज से इंका के वरिष्ठ मंत्रियों में गिने जाते हैं. लेकिन इस 'मुफ्त' की बदनामी ने सब कुछ जैसे धो-पोंछ दिया है और उनका गढ़ माने जाने वाले उन्नाव में उनकी स्थिति कमजोर लग रही है. जनता दल के सत्यपाल मलिक की टिप्पणी थी, "वे सौ वर्षीय कांग्रेस के वरिष्ठ मंत्री हैं. हम कांग्रेसी नहीं हैं फिर भी ऐसे आरोप से हमें शर्म आ रही है." उधर पत्रकारों ने प्रवक्ता आनंद शर्मा को घेर लिया. शर्मा अभी इस उलझन में थे कि क्या जवाब दें कि तभी बीबीसी के सतीश जैकब ने ऊंचे स्वर में कहा, "अंसारी का नंबर 420 है." दरअसल यह महज संयोग ही है कि यह उस चुनाव क्षेत्र का नंबर है जहां अंसारी चुनाव लड़ रहे हैं.

अनूठा अभियान

□ इस चुनावी दौर में रोहतक में अगर कोई बस की पुरानी टिकटें, सिगरेट की खाली, बेकार डिब्बियां और रद्दी कागज वगैरह बांटता मिल जाए तो निश्चित जानिए कि वे यहां की लोकसभा सीट के निर्दलीय उम्मीदवार भलेराम झीमर हैं. उन्होंने अपने प्रचार का यही अनूठा और कम खर्चीला तरीका अपनाया है.

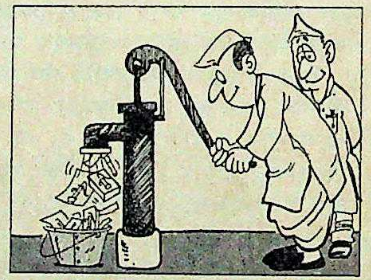

उनका चुनावचिन्ह है हैंडपंप. उन्होंने इस चुनावचिन्ह की एक मोहर बनवा रखी है जिसे वे इन टिकटों, डिब्बियों और रद्दी कागजों पर लगा देते हैं. वे इन्हें बांटते तो हैं ही, गांव जाने वाली सड़कों के किनारे लगी झाड़ियों के कांटों में भी फंसा देते हैं जिन्हें राहगीर, चरवाहे और खेतों में काम करने वाले उतारकर देखते हैं. झीमर का दावा है कि महंगे चुनाव प्रचार के इस दौरे में अपने अनूठे तरीके से वे हजारों मतदाताओं से संपर्क कर चुके हैं.

गलतफहमी न रहे

□ हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल आखिर गलतफहमी दूर करने में जुट ही गए. उन्हें शायद डर है कि यह गलतफहमी बनी रही कि उन्हें अंग्रेजी आती ही नहीं तो

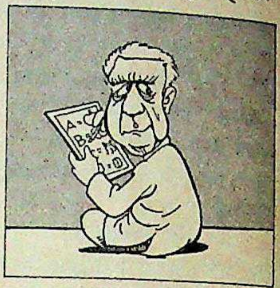

पूरा भारत उन्हें शायद न स्वीकार करे. ऐसे में तो....

इस बार जब जनता दल द्वारा चुनावचिन्ह देने का पत्र भेजा गया तो उस पर देवीलाल ने अंग्रेजी में दस्तखत किए. इतना ही नहीं, जब वी.पी. सिंह राष्ट्रीय मोर्चे का घोषणापत्र पढ़कर पत्रकारों को सुना रहे थे तो देवीलाल उसे बड़े ध्यान से सुन रहे थे. वी.पी. सिंह जब इसे पढ़ चुके तो देवीलाल बोले, "पता नहीं क्यों वी.पी. सिंह इसके सबसे महत्वपूर्ण अंश को 'ओवरलुक' कर गए हैं. जयपाल जरा उसे पढ़ो." यह कहते हुए उन्होंने घोषणापत्र का वह अंश ढूंढ़कर जयपाल रेड्डी को पकड़ा दिया. यह घोषणापत्र अंग्रेजी में था.

तेवर

• सरकारी हवाई जहाज को देवीलाल परिवार ने घर का रेहड़ू समझ रखा है. अर ईब तो चौटाला के टींगर भी इसे ठाए हांडे सै. (और अब तो चौटाला के बच्चे भी इसकी सवारी गांठने लगे हैं).

—*बंसीलाल, एक चुनाव सभा में*

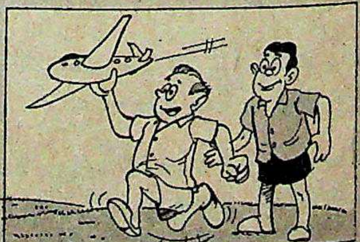

• हमारे विद्वान संविधान निर्माताओं ने कभी स्वायत्तता शब्द का प्रयोग नहीं किया क्योंकि इसके अर्थ बड़े व्यापक हैं लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा स्वायत्तता के लिए संविधान संशोधन करने की बात कर रहा है.

—*राजीव गांधी (केंद्र-राज्य संबंध पर), हिंदुस्तान*

• बूटा तो झूठा है, आतंकवादियों का फूफा है.

—*राजस्थान के जालौर में विपक्ष का नारा*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

जनरुचि के 50 लघु विश्वकोशों की एक अनूठी संग्रहणीय भृंखला

मूल्य: 18/- प्रत्येक
डाकखर्च: 4/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें
मंगाने पर डाकखर्च माफ

■ प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री ■ प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित ■ सरस कथा शैली ■ फोटोटाइप सैट ■ बढ़िया कागज पर ऑफसैट छपाई ■ बहुरंगी आवरण ■ वाजिब दाम

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार है।

उदाहरणार्थ **रोमांचक कारनामे** में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो **खोजें** में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। **अनसुलझे रहस्य** में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो **खेल और खिलाड़ी**, ***101 व्यक्तित्व*** व **वैज्ञानिक** जीवनी-प्रधान पुस्तकें हैं। **विनाश-लीलाएं** व **दुर्घटनाएं** में मर्मांतक तबाहियों का लेखा-जोखा है तो **गुप्तचर संस्थाएं**, **जासूस** व **जासूसी कांड** में जासूसों की रोमांचकारी गतिविधियां हैं। **सभ्यताएं**, **मिथक एवं पुराण कथाएं** और **प्रेरक-प्रसंग** किसी भटके हुए मन के लिए प्रकाश-स्तंभ हैं तो **हत्यारे** में रक्त-पिपासु हैवानों की कथाएं हैं। **रोमांस-कथाएं** तथा हस्तियों के **प्रेम-प्रसंग** में लैला-मजनूं से लेकर हिटलर, कैनेडी, चार्ली चैपलिन, नेहरू जैसे व्यक्तियों के दिलों की धड़कनें हैं तो **अनमोल खजाने** में रहस्य और रोमांच से भरे खजाने हैं। **दुस्साहसिक खोज-यात्राएं** में कोलंबस, मार्को पोलो जैसे खोज-यात्रियों की गौरव-गाथाएं हैं तो **जन-क्रांतियां** में सभी महत्त्वपूर्ण क्रांतियों का ब्यौरा है। **भूत-प्रेत** घटनाएं, **अलौकिक रहस्य** तथा **मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़-पौधे** पढ़कर आपकी रातों की नींद उड़ जायेगी। **कुख्यात महिलाएं** व **विलासी सुंदरियां** में मर्लिन मुनरो, जैक्लीन कैनेडी जैसी औरतों का निजी जीवन है तो **सनकी तानाशाह**, **राजनैतिक हत्याएं**, **तख्ता-पलट घटनाएं** व **आतंकवादी संगठन** में आपको विश्व-कूटनीति का असली चेहरा दिखायी देगा।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र मिनि एनसाइक्लोपीडिया है।

आगामी प्रकाशन

अपने निकट व ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुकस्टालों पर मांगें। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते:–

पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली-110006

[illegible] मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला का मामला

□ चुनाव के मौसम में कुछ चीजों की भारी कमी हो जाती है. मगर जयपुर के इंका उम्मीदवार महाराज भवानी सिंह ने फूलमालाओं की कमी से निबटने का तरीका आखिर खोज ही लिया. जब उनका जुलूस निकला तो उसके आगे-आगे कुछ लोग सड़क पर खड़े लोगों को फूलमालाएं बांटते चल रहे थे. लोग ये मालाएं महाराज भवानी सिंह के गले में डाल देते थे. जब उनका गला दस-बीस मालाओं से लद जाता तो वे उन्हें उतारकर अपने साथ चल रहे कार्यकर्ताओं को पकड़ा देते. वे उन्हें फिर आगे पहुंचा देते थे जहां से ये मालाएं लौटकर फिर महाराज के गले की शोभा बढ़ाने लगतीं.

विवाह मंडप बना चुनाव मंच

□ चुनाव के माहौल में उम्मीदवार को हर मजमा मंच ही नजर आता है. अब चाहे मजमा खुद उसकी शादी के मौके पर ही क्यों न जुटा हो. मदुरै लोकसभा सीट के लिए इंका उम्मीदवार ए.जी.एस. रामबाबू ने अपने विवाह मंडप को ही चुनाव प्रचार का मंच बना डाला. वे भी क्या करते? पंडितों ने उनकी शादी का लगन ही ऐसे वक्त निकाला. चुनावी लगन तो और भी बड़ा होता है.

और जब बैंड-बाजों के पीछे सजी-धजी कार में वे दूल्हे मियां बनकर सवार हुए तब भी उम्मीदवारी का भूत उनके सिर पर सवार रहा. कार में बैठे वे हाथ जोड़कर राजीव गांधी के हाथ मजबूत करने की अपील करने लगे तो लोग समझ नहीं पा रहे थे कि यह बारात है या चुनावी जुलूस. शादी के मंडप में भी रामबाबू ने मंत्रोच्चार के

बीच मतदाताओं से उनके पक्ष में वोट देने की अपील कर डाली, मानो वे वेदी के फेरे न ले रहे हों बल्कि चुनावी पदयात्रा कर रहे हों. अब यह नहीं मालूम कि बड़े-बुजुर्गों ने इस जोड़ी को सदा सलामत रहने का आशीर्वाद दिया या विजयी होने का.

उम्र का तकाजा

□ कहा जाता है कि प्यार किसी बंधन को नहीं मानता, उम्र के बंधन को भी नहीं. लेकिन चुनाव लड़ने के मामले में इस कहावत को चरितार्थ करना कभी-कभी विपक्षियों के हाथ में एक और हथियार देना साबित हो सकता है. ऐसा ही कुछ हो रहा है इंदौर लोकसभा सीट के इंका उम्मीदवार प्रकाशचंद्र सेठी के साथ. उनकी प्रतिद्वंद्वी भाजपा की सुमित्रा महाजन मतदाताओं को यह समझाती फिर रही है कि सेठी को चुनाव लड़ने के बजाय घर में आराम करना चाहिए. एक सभा में उन्होंने कहा, "मैं सेठी जी को पिता जी कहूं या ससुर जी. मेरा उनसे इतना ही निवेदन है कि उनकी उम्र अधिक हो गई है, वे बीमार भी रहते हैं, अब उन्हें आराम की जरूरत है, इसलिए उन्हें घर की चाबी अपनी बहू के हाथों में सौंप देनी चाहिए."

तेवर

• यदि मैंने कभी संसद की कुर्सी या सीकर के हितों को आंच आने दी तो जनता मुझे गुनहगार मानकर दिल्ली के चांदनी चौक पर फांसी पर लटका दे.

—बलराम जाखड़,
सीकर की सभा में

देश इमेज मेलि मुख माहीं,
संसद लांघे संशय नाहीं!
बोगस काम जगत के जेते,
सभी सहज हैं तुम्हरे ते ते! !
दीन रूप धरि कुर्सी पावा,
विकट रूप धरि लंका जरावा!
थोक कमीशन चमचे खाए,
मिस्टर क्लीन हरषि उर लाए! !

—सतीश शर्मा की 'राजीव चालीसा' के जवाब में एक पाठक द्वारा तैयार रॉबर्ट चालीसा के अंश

टिकट की जुगत में कई बहाने

□ चुनाव रूपी वैतरणी को पार करना हर राजनीतिक का शाश्वत लक्ष्य होता है. लेकिन इसमें पहली बाधा होती है टिकट हासिल करना. इस बाधा को पार करने के लिए वे क्या-क्या करतब नहीं करते. आलाकमान के नाम अर्जी के साथ अपना परिचय देने में ही क्या-क्या करिश्मा किया जाता

है इसकी कुछ बानगी:

खुद को किसी खास नेता का खासमखास बताना तो पुरानी बात हो गई है. उत्तर प्रदेश से इंका के एक टिकटार्थी ने लिखा कि वे 1977 में जेल गए थे, तो दूसरे ने बताया कि उन्होंने वी.पी. सिंह की सभा में उपद्रव कराया था. एक नेता ने लिखा कि उन्होंने 1978 में इंदिरा जी की गिरफ्तारी के बाद पढ़ाई छोड़ दी और पार्टी की सेवा में जुट गए. कानपुर के एक नेता का तर्क था कि उन्होंने फूलबाग की रैली में छात्र सेना के पत्थर खाए हैं, इसलिए टिकट मिला तो सहानुभूति लहर से जीत निश्चित है. एक नेता ने कहा, "मुझे टिकट दीजिए मैं नेहरू जी, इंदिरा जी, राजीव जी व सोनिया जी और भविष्य के नेता राहुल गांधी के प्रति निष्ठावान रहूंगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाचा-भतीजा

□ वह रिश्ता ही क्या जो चुनावी समीकरण से गड़बड़ा जाए. चाहे वह चाचा-भतीजे का ही रिश्ता क्यों न हो.

पलानी के मौजूदा सांसद इंका के सेनापति गुंडुर जब अपना नामांकन पत्र भरने पहुंचे तो उन्हें पता लगा कि उनका भतीजा राजकुमार भी नामांकन पत्र दाखिल करने आया है. राजकुमार को द्रमुक ने अपना उम्मीदवार बनाया है. दोनों पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे. इससे पहले कि मामला आपस में उलझने की नौबत तक पहुंचता, राजकुमार आगे बढ़े और अपने चाचा सेनापति के सामने नतमस्तक हो गए. चाचा ने भतीजे को आशीर्वाद दिया. और इसके साथ ही दोनों पक्षों की एक-दूसरे के खिलाफ नारेबाजी भी शांत हो गई.

दादा कौन?

□ किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत ने तो राजीव गांधी का गोत्र पूछा था. पर अब हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल लोगों से राजीव के खानदान का ब्यौरा मांगते घूम रहे हैं. एक जनसभा में उन्होंने पहले राजीव की मां का नाम पूछा और फिर नाना का. इसके बाद उन्होंने उनके दादा का नाम पूछा तो सन्नाटा छा गया. इस पर देवीलाल ने नारा बुलंद किया, "यह देश है देशवालों का, नहीं सास, ससुर और सालों का."

तेवर

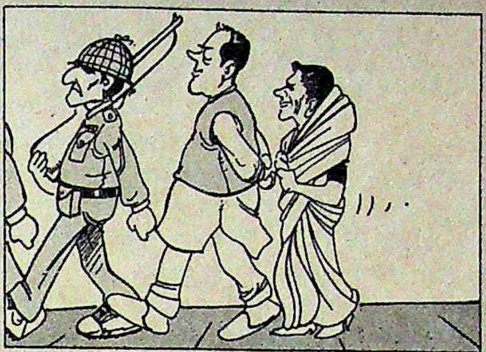

● लोग अब राजीव को प्रधानमंत्री नहीं स्वीकार करेंगे. उनके आगे बटालियन है तो पीछे इटालियन है. —*चतुरानन मिश्र,* भाकपा नेता

● नेहरू टोपी वाला, चेहरा भोला भाला, नानी याद आने लगी है, कुर्सी अब जाने लगी है. —*ओए, ओए की तर्ज पर जद का प्रचार गीत*

● तूफान में, आंधी में
विश्वास राजीव गांधी में —*इंकाई नारा*

● *तख्त भी बदलेगा, ताज भी बदलेगा पर तुम पहले जाखड़, बूटा और पायलट को दिल्ली भेजने का रिवाज बदल दो.* —*देवीलाल,* एक चुनाव सभा में

● गांधी जी ने कई मौकों पर वल्लभभाई पटेल से नेहरू को आगे बढ़ाने के लिए कहा था. इसलिए जायज तो यही है कि नेहरू के नाती मेरे खातिर रास्ते से हट जाएं. —*राजमोहन गांधी* (अमेठी में जद उम्मीदवार), संडे मेल

● कुछ शब्द नेताओं के साथ जैसे जुड़ ही जाते हैं. जैसे निक्सन के नाम से वाटरगेट जुड़ गया, वैसे ही राजीव गांधी के साथ बोफोर्स लग गया है. —*लालकृष्ण आडवाणी,* भाजपा नेता

● जिसका नाम (उम्मीदवारी के लिए) होता है उसका नाम अखबारों में नहीं उछाला जाता. —*मोहिनी गिरी,* नई दिल्ली से इंका की उम्मीदवार

● भरत सिंह इधर आया तो उसके सिर पर मटकी दे मारूंगी. —*बाहरी दिल्ली की एक मतदाता* (इंकाई उम्मीदवार भरत सिंह के बारे में)

बात ऐसे बनी

□ चुनाव आयोग को मजबूरी में जनता दल की नेता मेनका गांधी की 'वास्तविक' उम्र पूछने की असभ्यता करनी ही पड़ी.

उत्तर प्रदेश की पीलीभीत लोकसभा सीट के लिए भरे नामांकन पत्र में मेनका ने अपनी उम्र 33 वर्ष भरी थी. पर जब इस नामांकन पत्र को मतदाता सूची से मिलाया गया तो पता चला कि वहां उनकी उम्र 29 वर्ष दर्ज है. नामांकन पत्र रद्द करने के लिए इतनी ही वजह काफी थी. पर बाद में जब मेनका ने अपना पासपोर्ट पेश किया तो मजिस्ट्रेट ने उसमें दर्ज उम्र को सही मान लिया. और बात संभल गई.

राजीव का भाव तीन पैसे

□ चुनाव के मौसम में सटोरियों ने अपनी-अपनी पोटली की रकमें बड़े-बड़े नेताओं की किस्मत के साथ दांव पर लगा दी है. इन सटोरियों की भाषा में राजीव गांधी का भाव तीन पैसे है, हरकिशनलाल भगत की

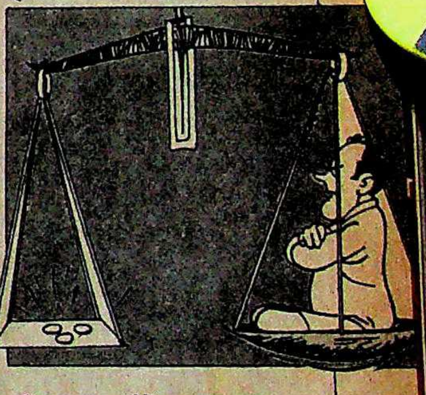

कीमत सात पैसे, लालकृष्ण आडवाणी की 40 पैसे और मदनलाल खुराना की 80 पैसे.

राजीव की कीमत तीन पैसे का मतलब है कि जिस सटोरिये ने राजीव गांधी की हार पर एक लाख का सट्टा लगाया है उसे उनके हारने पर 33 लाख रु. मिलेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनावी चपत

❑ चुनाव से कुछ लोगों की चांदी हुई है तो कुछ की चांद पर चपत भी पड़ी है. यह चपत कुछ फिल्म निर्माताओं पर पड़ी है. कई फिल्मों के प्रदर्शन का मामला गड़बड़ा गया है. जी.पी. सिप्पी की फिल्म 'भ्रष्टाचार' नवंबर में रिलीज होने वाली थी पर पता नहीं क्यों और कहां रुक गई. लेकिन निर्माता अशोक त्यागी इस बात के लिए कमर कसे हुए हैं कि उनकी फिल्म 'अंधेरगर्दी' चुनाव से पहले रिलीज हो ही जाए. वे अपनी इस फिल्म को चुनाव के माहौल के लिए बहुत हद तक प्रासंगिक मानते हैं.

उधर चुनाव प्रचार के लिए बन रही आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन.टी. रामराव की फिल्म 'विश्वामित्र' पूरी नहीं हो पाई. लेकिन उन्होंने इसका ट्रेलर तैयार कर लिया है जो आंध्र प्रदेश में चुनाव प्रचार के दौरान लोगों को दिखाई जाएगा. इसके एक दृश्य में विश्वामित्र बने रामराव ध्यानमग्न बैठे हैं और उनके सामने मेनका बनी मीनाक्षी शेषाद्रि नृत्य कर रही हैं. और देवीलाल, वी.पी. सिंह, अजीत सिंह, करुणानिधि समेत विपक्षी दलों के कई नेता इसका आनंद लेते दिख रहे हैं.

समाज नहीं तो संसद

❑ बारह प्रदेशों में फैली उनकी 18 लाख की आबादी किसी भी पार्टी के लिए बहुत बड़ा वोट बैंक हो सकती है. परंतु विडंबना यह है कि

चुनाव के दिनों में कोई उम्मीदवार उनकी बस्तियों के पास फटकने का साहस भी नहीं कर सकता. समाज में भले ही उन्हें सम्मानजनक स्थान न मिला हो, पर पतित उद्धार सभा के अध्यक्ष खैराती लाल भोला वेश्याओं को राजनीति में सम्मानजनक स्थान पर दिलाना चाहते हैं.

उन्होंने मांग की है कि संसद में वेश्याओं का कम-से-कम एक प्रतिनिधि मनोनीत किया जाना चाहिए. इससे वेश्याओं के अधिकारों की रक्षा हो सकेगी और उनकी समस्याओं के बारे में प्रभावी ढंग से आवाज उठाई जा सकेगी.

तेवर

• न खाने को अन्न, न करने को काम, न रहने को मकान, फिर भी मेरा भारत महान.

—शत्रुघ्न सिन्हा, हिंदुस्तान

• आप कभी सीकर, कभी फिरोजपुर जा रहे हैं—क्यों नहीं अपने राज्य हरियाणा में फरीदाबाद की सीट पर मेरे साथ दो-दो हाथ कर लेते?

—भजनलाल (देवीलाल को फोन पर), पंजाब केसरी

• देश की सेवा करने के लिए जनता दल कुर्सी चाहता है. *—मुलायम सिंह यादव, दैनिक जागरण*

• मैं भी प्रत्याशी हूं. मेरा भी लोगों से परिचय कराइए. *—पी. चिदंबरम, (राजीव गांधी से), मदुरै की चुनाव सभा में*

• समूची भारत भूमि राम की भूमि है. वैसे, पूरी अयोध्या ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्मभूमि है. इस बात को हम भी स्वीकार करते हैं. लेकिन हमारे अनुसार बाबरी मस्जिद में राम की जन्मभूमि नहीं है.

—सैयद शहाबुद्दीन, दैनिक जागरण

नतीजे से पहले कुर्सी

❑ चुनाव के नतीजे तो अभी नहीं आए हैं परंतु उन्हें 'कुर्सी' मिल गई है. उत्तर प्रदेश के आंवला से चुनाव लड़ने वाले मौजूदा इंका सांसद कल्याण सिंह सोलंकी को मिलने वाली यह 'कुर्सी' दरअसल उनका चुनावचिन्ह है.

आंवला से रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत ने चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया तो सोलंकी को पर्चा दाखिल करना पड़ा. लेकिन वे पार्टी का अधिकृत पत्र नहीं पेश कर पाए. चुनाव अधिकारी ने उन्हें निर्दलीय मानकर 'कुर्सी' चुनावचिन्ह दे दिया.

बच्चों ने किया निरुत्तर

❑ यह मताधिकार की उम्र घटाने का असर है या कुल चुनावी माहौल का, यह कहना तो मुश्किल है परंतु स्कूली बच्चों ने हिमाचल प्रदेश के राजस्वमंत्री चौधरी धर्म सिंह को अजीब पशोपेश में डाल दिया. वे मंडी जिले के अमरोह गांव में एक माध्यमिक विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल हुए. इससे पहले कि वे स्कूली बच्चों के सामने अपना भाषण शुरू करते, बच्चों ने अपना चुनाव गीत शुरू कर दिया.

गीत की कुछ पंक्तियां इस तरह थीं, "फिरी तुसीं कैहंदे

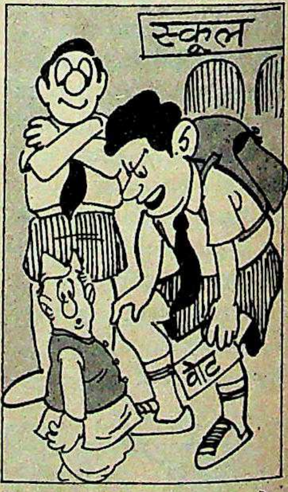

वोट नहीं दिंदे, इस स्कूलां जो हाई बणायी जाणा, फिरी वोटां जो आयी जाणा..." (फिर आप कहेंगे कि वोट नहीं देते, इस स्कूल को हाई स्कूल बनाने पर ही वोट मिलेंगे). अब बेचारे मंत्री जी क्या कहते?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की नं. 1 सिलाई मशीन
जो दुनिया भर में लोकप्रिय है

इतनी मज़बूत, टिकाऊ मशीन कोई और न दे पाए

विश्व श्रेणी की विशेषताओं ने उषा सिलाई मशीन चलाना कितना सहज व सरल बनाया है। यह देखने के लिए कि यह भारत की नं.1 सिलाई मशीन क्यों है ज़रा एक नज़र डालकर तो देखिए!

भारत में केवल उषा सिलाई मशीन में ही ये विशेषताएँ

- मज़बूत स्टील के 6 महत्त्वपूर्ण हिस्से-पुर्ज़े–जो सालोंसाल बिना घिसे चलते हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी यह असामान्य विशेषता है।
- 3 पोज़ीशन वाला फैब्रिक सिलेक्टर। सूती कपड़े से रेशमी कपड़े तक, कशीदाकारी भी–केवल नॉब घुमाकर। दूसरे ब्रान्ड में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।
- स्वचालित 'सिंगल प्रेस' प्रेसर एडजस्टर
- चित्र में दिखाए उषा प्राइमा मॉडल की ये खास विशेषताएं हैं।
- उषा के अन्य मॉडल्स में ये लगभग सभी खूबियाँ मौजूद हैं।

उषा की अन्य आकर्षक विशेषताएं

- 4 उषा मॉडल्स में ओपन टाइप शटल रेस है जिससे बिल्कुल नई-नई सिलाई जानने वाले भी एक मिनट से कम समय में शटल खोल कर साफ कर सकते हैं। हीन्ज टाईप नीडल प्लेट होने के कारण बॉबिन निकालना-लगाना बहुत आसान है।
- उषा मॉडल्स में ढकी हुई नीडल बार जिसके कारण सिलाई करते समय धूल नहीं जमती और टूट-फूट कम से कम।
- आपकी सुविधा–लक्ष्य है हमारा। तभी तो हमने सालों की मेहनत से ऐसी विशेषताएं विकसित की हैं जो अमरीका, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी तथा अन्य कई देशों के–जहाँ उषा सिलाई मशीन निर्यात होती है–बाजारों के उच्च अन्तरराष्ट्रीय स्तर से बेहतर हैं।

उषा

मज़बूत स्टील के हिस्से-पुर्ज़ों की खूबी ... जीवन भर की मज़बूती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसले की

सभी फोटो: रघु राय

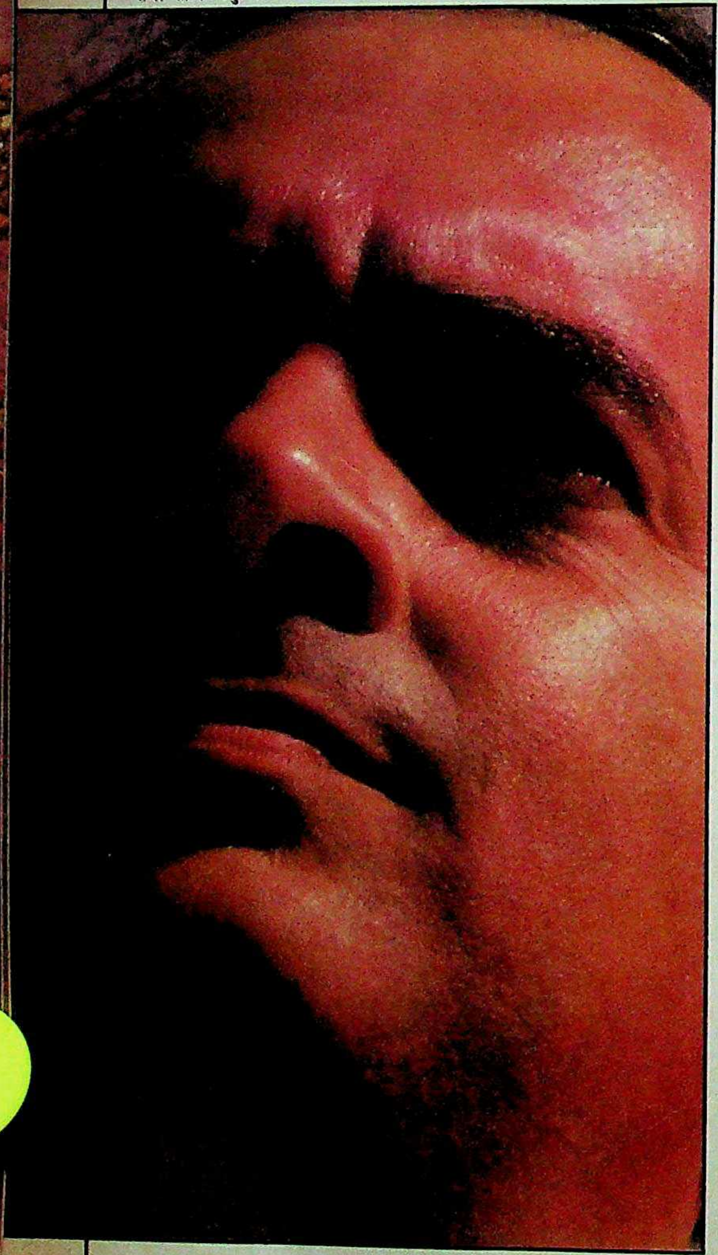

राजीव गांधी लोगों को यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे हैं कि वे और उनकी पार्टी ही देश को टूटने से बचा सकती है

राजनैतिक चौपड़ पर बिछी गोटियों का फैसला अगले पखवाड़े हो जाएगा. यह फैसला करेंगे भारत के मजदूर, किसान, नौकरी-पेशा, व्यवसायी, व्यापारी और आम लोग. परस्पर विरोधी हितों और विचारों वाले ये सभी लोग एक साथ मिलकर अपने वोटों से एक ऐसी व्यवस्था तैयार करेंगे जो अगले पांच वर्षों के लिए देश की किस्मत तय करेगी. इसमें एक नेता होगा और हजारों जन-प्रतिनिधि होंगे. भावी व्यवस्था के स्वरूप का आभास होने लगा है, हालांकि आम चुनाव के लिए प्रचार अभियान शुरू हुए बमुश्किल 15 दिन हुए हैं.

चुनाव के लिए गिनती के दिन बचे हैं लेकिन कांग्रेस (इ) यानी इंका भारतीय इतिहास में अपनी गहरी जड़ों, अपने समर्पित कार्यकर्ताओं, योग्य राज्यस्तरीय व केंद्रीय नेताओं और अकूत धनशक्ति के बावजूद नेताविहीन और नाराविहीन पार्टी दिख रही है. दूसरी तरफ विपक्ष के बारे में, जिसके खिलाफ जोरदार प्रचार किया जा रहा था कि वह कभी एकजुट हो ही नहीं सकता, अब यह धारणा बनती जा रही है कि वह शासक दल से कहीं ज्यादा एकजुट है. इंका के अभियान के सारे प्रमुख तत्व—सांप्रदायिक समीकरण, चुनाव घोषणापत्र, विज्ञापन और नारे, उम्मीदवारों का चयन—उसी के लिए भारी पड़ते दिख रहे हैं.

राजीव गांधी कभी इतने अकेले, इतने असहाय नहीं दिखे थे. इस बार उनका राजनैतिक अस्तित्व ही दांव पर लगा है. वे एक राज्य से दूसरे राज्य तक मानो दौड़-दौड़कर लोगों को यह यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे हैं कि सिर्फ वे और उनकी पार्टी ही देश को टूटने से बचा सकती है, और यह कि विपक्ष अवसरवादियों का जमावड़ा है जिसने पंचायती राज जैसे प्रमुख जन कल्याणकारी विधेयक को संसद में गिरा दिया.

लेकिन धीरे-धीरे यह साफ होता जा रहा है कि सत्ता के दरवाजे की चाबी रखने वाले हिंदी क्षेत्र के लोगों पर राजीव का जादू चल नहीं पा रहा है. उधर, राजीव को मुख्य निशाना बनाने की विपक्ष की दो महीने पहले घोषित रणनीति सफल होती दिख रही है. और राजीव के पास विपक्ष के तीखे प्रहारों की कोई काट नहीं है. मानो उनके तरकश में कोई कारगर तीर नहीं बचा है.

इसके विपरीत जनता दल के विश्वनाथ प्रताप सिंह कुशल प्रचारक साबित हुए हैं. वे जहां भी जाते हैं, देसी मुहावरों और कटाक्षों से लसी उनकी बातें लोगों को गहरे छू जाती हैं. शासक दल और विपक्ष—दोनों के अभियान एक अर्थ में नकारात्मक हैं, चाहे वह राजीव की खिंचाई हो या विपक्ष को जहरीले बिच्छू और लड़ने वाले मुर्गे बताना. लेकिन वी.पी. सिंह के अभियान की खूबी यह है कि वे राष्ट्रीय मुद्दों को बड़ी चतुराई से स्थानीय मुद्दों में बदल देते हैं. राजीव मंडली पहले यही मानकर चल रही थी कि बोफोर्स और दूरदर्शन के दुरुपयोग जैसे मुद्दों में भारत की अनपढ़ जनता की कोई दिलचस्पी नहीं है.

राजीव मंडली की यह मान्यता कितनी गलत और भ्रामक है, यह देश के किसी भी देहाती इलाके में जाने से स्पष्ट हो जाता है. जब वी.पी. सिंह गांव के किसी नुक्कड़ पर पूछते हैं, "बोफोर्स का दलाल कौन?" तो तुरंत जवाब आता है, "राजीव गांधी." जब आरिफ मुहम्मद खान या अरुण नेहरू दूरदर्शन के दुरुपयोग या अखबारों का गला दबाने की सरकारी कोशिश की निंदा करते हैं तो भीड़ 'राजीव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ले की घड़ी

दर्शन' का मजाक उड़ाती है और 'शर्म, शर्म' चीखने लगती है. जब विपक्षी नेता ग्रामीण विकास में ज्यादा धन लगाने को कहते हैं, महंगाई को कोसते हैं और राजीव के पंचायती राज विधेयक को स्टंट बताते हैं तो भीड़ तालियों की गड़गड़ाहट से आसमान गुंजा देती है.

भ्रष्टाचार के सवाल पर विपक्ष का प्रचार कहीं ज्यादा असरदार दिखता है. अधिकतर मतदाता, यहां तक कि हिंदी क्षेत्र के मतदाता भी, राजीव को भ्रष्टाचार और लीपापोती का पर्याय मानने लगे हैं. शासक दल द्वारा वी.पी. सिंह पर कीचड़ उछालने का आम जनता पर कोई असर नहीं हुआ है. यही नहीं, इंका ने तो अब वी.पी. सिंह पर व्यक्तिगत हमला करना और सेंट किट्स बैंक खाते का जिक्र करना भी छोड़ दिया है. पंचायती राज और आनंदपुर साहिब प्रस्ताव पर राजीव का भाषण सुनते-सुनते लोग ऊब चुके हैं. हिंदी क्षेत्र में तो इक्के-दुक्के मतदाताओं ने ही आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के बारे में सुना है जिसकी तुलना राजीव विपक्ष के घोषणापत्र से करते हैं. जाहिर है, इंका ने राजीव का जिस तरह से इस्तेमाल किया है, उससे कहीं बेहतर तरीके से विपक्ष ने वी.पी. सिंह का इस्तेमाल किया है.

वैसे, वोटों का गणित विपक्ष के पक्ष में रहता आया है लेकिन वह एका के अभाव में उसका फायदा उठाने में विफल रहा है. यहां तक कि जब इंका भारी बहुमत से जीती है, तब भी 50 फीसदी से अधिक वोट इंका के विरोध में गिरे और विभिन्न विपक्षी उम्मीदवारों में बंट गए. मिसाल के तौर पर, 1984 के चुनाव में इंका की झोली में रिकार्ड 415 सीटें आने के बावजूद विपक्षी उम्मीदवारों को कुल 51.5 फीसदी वोट मिले थे. इस बार विपक्ष 400 से अधिक सीटों पर साझा उम्मीदवार खड़े करके इंका को कड़ी चुनौती दे रहा है.

इंका के लिए परेशानी का एक सबब यह भी है कि उसके अभियान का दारोमदार एक ही सितारे—राजीव गांधी—पर है. विपक्ष के हमलों का जवाब देने का समूचा भार अपने कंधे पर लिये हुए वे पूरे देश में भागदौड़ कर रहे हैं. इसके विपरीत विपक्ष के पास वरिष्ठ नेताओं की पूरी जमात है जो मंजे हुए प्रचारक हैं और अपने-अपने राज्य में कारगर ढंग से अभियान चला सकते हैं. विपक्ष ने दक्षिण को रामकृष्ण हेगड़े, नंदमूरि तारक रामराव और करुणानिधि के हवाले कर दिया है, तो उत्तर को भैरों सिंह शेखावत, देवीलाल, अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और चंद्रशेखर में बांट दिया है. उसने वी.पी. सिंह को उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस का सफाया करने के लिए छोड़ दिया है जहां से लोकसभा के लगभग 25 फीसदी यानी 139 सदस्य संसद में आते हैं.

ऐसा नहीं है कि विपक्ष रातोरात एकता और लोकतांत्रिक आदर्शों का प्रतीक बन गया हो. यह अभी भी विरोधाभासों और गुटबाजी से त्रस्त है. चुनाव के बाद सत्ता शिखर पर काबिज होने के झगड़े की आशंका से राष्ट्रीय मोर्चे के नेतृत्व वाली सरकार की स्थिरता पर अभी से प्रश्नचिह्न लग गया है. इसके अलावा यह सवाल भी बना हुआ है कि यदि भाजपा और वामपंथी दलों ने एक-दूसरे से अलग दिशाओं की ओर रुख किया तो राष्ट्रीय मोर्चे का क्या होगा. लेकिन चुनाव अभियान के आखिरी दौर तक की स्थिति यह है कि विपक्ष हर मोर्चे पर इंका को मात देता दिख रहा है:

- सांप्रदायिकता के मुद्दे पर शासक दल की स्थिति डांवाडोल हो गई

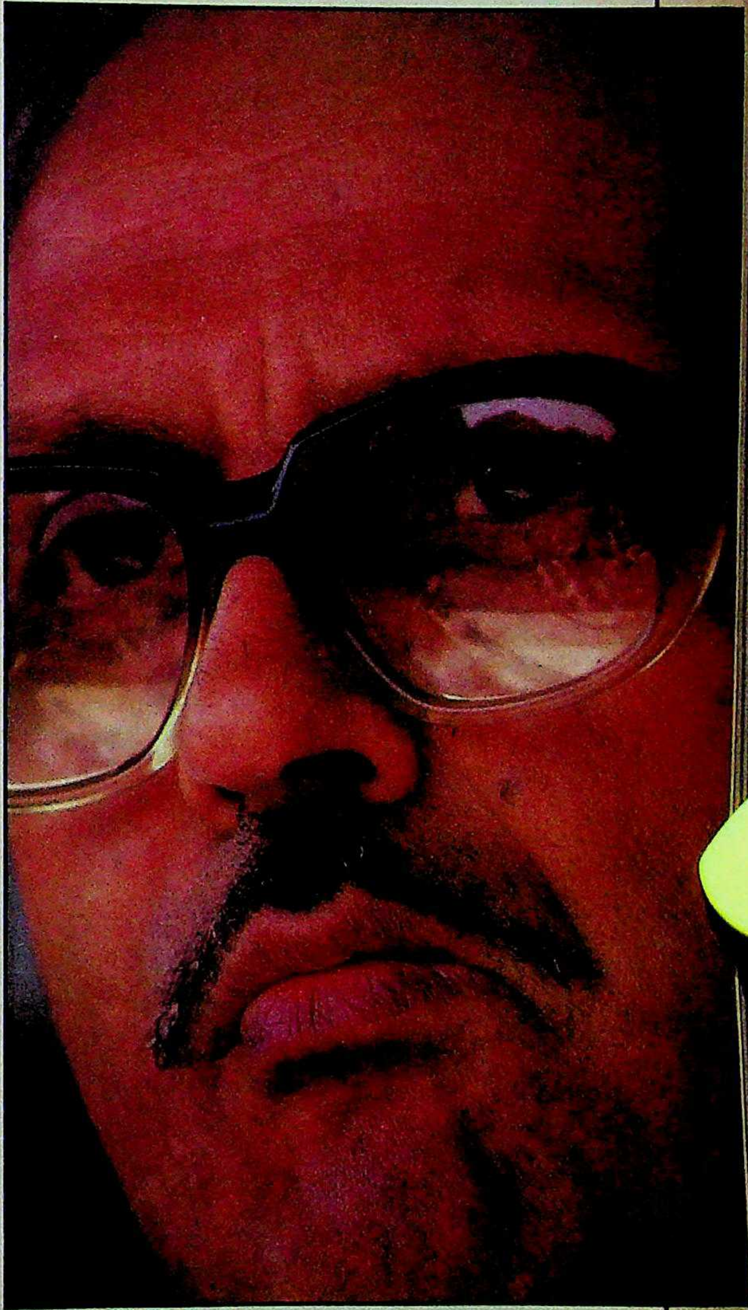

वी. पी. सिंह की रणनीति बिलकुल साफ हैः इंका को ध्वस्त करने के लिए राजीव गांधी पर हमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. वह मुस्लिम तथा हिंदू कट्टरवाद के अप्रत्याशित बदले का शिकार हो सकती है. पहले इसने मुस्लिम महिला विधेयक और विभिन्न उर्दू विधेयकों के जरिये मुसलमानों को खुश करने की कोशिश की जिससे कट्टरपंथी हिंदू नाराज हो गए. बाद में अयोध्या में विश्व हिंदू परिषद के रामशिला पूजन का समर्थन करके हिंदुओं को खुश करने की चाल चली. यही नहीं, राजीव ने अपने चुनाव अभियान की शुरुआत ही अयोध्या से सटे फैजाबाद से की और रामराज्य लाने का वादा किया. लेकिन आखिरी मौके पर तय की गई इस रणनीति से इंका को शायद ही लाभ हो, क्योंकि शांतिपूर्वक संपन्न हुए रामशिला पूजन का श्रेय भाजपा ले रही है. हिंदुओं के बीच इंका की थोड़ी-बहुत पैठ हुई भी होगी तो भी उससे होने वाला लाभ मुसलमानों में व्यापक असंतोष के चलते बेमानी हो जाएगा. इसके अलावा, उत्तर प्रदेश और बिहार में मुसलमानों को दंगे का दर्द झेलना पड़ रहा है. दिल्ली के इमाम बुखारी ने मुसलमानों को जनता दल का समर्थन करने के लिए कहा है.

गौरतलब बात यह है कि वी.पी. सिंह ने अपने अभियान की शुरुआत मुस्लिम विरोधी हिंसा के शिकार भागलपुर से की. विपक्ष हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को पटाने में सफल दिख रहा है. अगर वी.पी. सिंह ने विश्व हिंदू परिषद का विरोध करके मुसलमानों का समर्थन पक्का कर लिया है तो भाजपा ने विश्व हिंदू परिषद का समर्थन करके अपनी हिंदूवादी छवि बनाए रखी है.

► विपक्ष ने राजीव द्वारा चुनाव की अचानक घोषणा किए जाने के 10 दिन के भीतर ही हिंदी क्षेत्र की 85 फीसदी सीटों पर तालमेल करके अपनी फुर्ती दिखा दी. यही नहीं, शासक दल द्वारा चुनाव घोषणापत्र जारी करने के एक हफ्ता पहले ही उसने अपना घोषणा-पत्र भी जारी कर दिया.

► देश पर 40 वर्षों से शासन करने वाली पार्टी को घोषणापत्र जारी करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए थी. लेकिन इस सिलसिले में कई दिनों की देरी और अनिश्चितता के बाद प्रधानमंत्री दिल्ली स्थित इंका दफ्तर पहुंचे जहां 200 पत्रकार इंतजार कर रहे थे. प्रधानमंत्री ने घोषणापत्र को छोड़ दूसरे किसी भी विषय से जुड़े सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया. घोषणापत्र की कुछ ही प्रतियां उपलब्ध थीं. सो, पत्रकारों ने जब उनसे पूछा कि घोषणापत्र की और अधिक प्रतियां क्यों नहीं उपलब्ध हैं तो प्रधानमंत्री ने जवाब दिया, "माफ कीजिएगा, फोटोकॉपिइंग मशीनें खराब हो गई हैं."

इसे इंका की बढ़ती हुई मुश्किलों का प्रतीक माना जा सकता है. जाहिर है, इंका भारी कुव्यवस्था का शिकार हो गई है जिसका खामियाजा उसे अपने चुनाव अभियान में भी भुगतना पड़ रहा है. मुख्यमंत्रियों को प्रधानमंत्री के दौरे का कोई स्पष्ट कार्यक्रम न दिए जाने से भी उलझन बढ़ी. नतीजा यह कि कार्यकर्ताओं को संगठित करने का मौका ही नहीं मिला और प्रधानमंत्री को मुट्ठी भर भीड़ के सामने भाषण देना पड़ा.

► विपक्ष का अभियान आम तौर पर विकेंद्रित और आडंबर रहित है, जबकि इंका का अतिकेंद्रित. इससे इंका को नुकसान हो रहा है. इसके अतिरिक्त, उसके खुद के विज्ञापन भी 'मियां की जूती, मियां के सिर' वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं. 'मेरा भारत महान' जैसे नारों की देश के हर भाग में पैरोडी बनाई जा रही है, जिसमें कभी-कभी इतनी अश्लीलता होती है कि सुनकर स्तब्ध रह जाना पड़ता है. यहां तक कि बिच्छुओं और मुर्गों की लड़ाई वाले विज्ञापनों ने भी, जिन्हें खुद राजीव ने अपने घनिष्ठ शुभचिंतकों की इच्छा के खिलाफ मंजूरी दी थी, पार्टी के भीतर विवाद पैदा कर दिया और उनकी आलोचना हुई. इन विज्ञापनों को छापने वाले कुछ अखबारों ने असरदार जवाबी विज्ञापन अभियान चलाकर शासक दल के 27 करोड़ रु. के विज्ञापनी हमले की धज्जियां उड़ा दीं.

► विपक्षी एकता के स्थायित्व पर संदेह करते हुए जमकर प्रचार

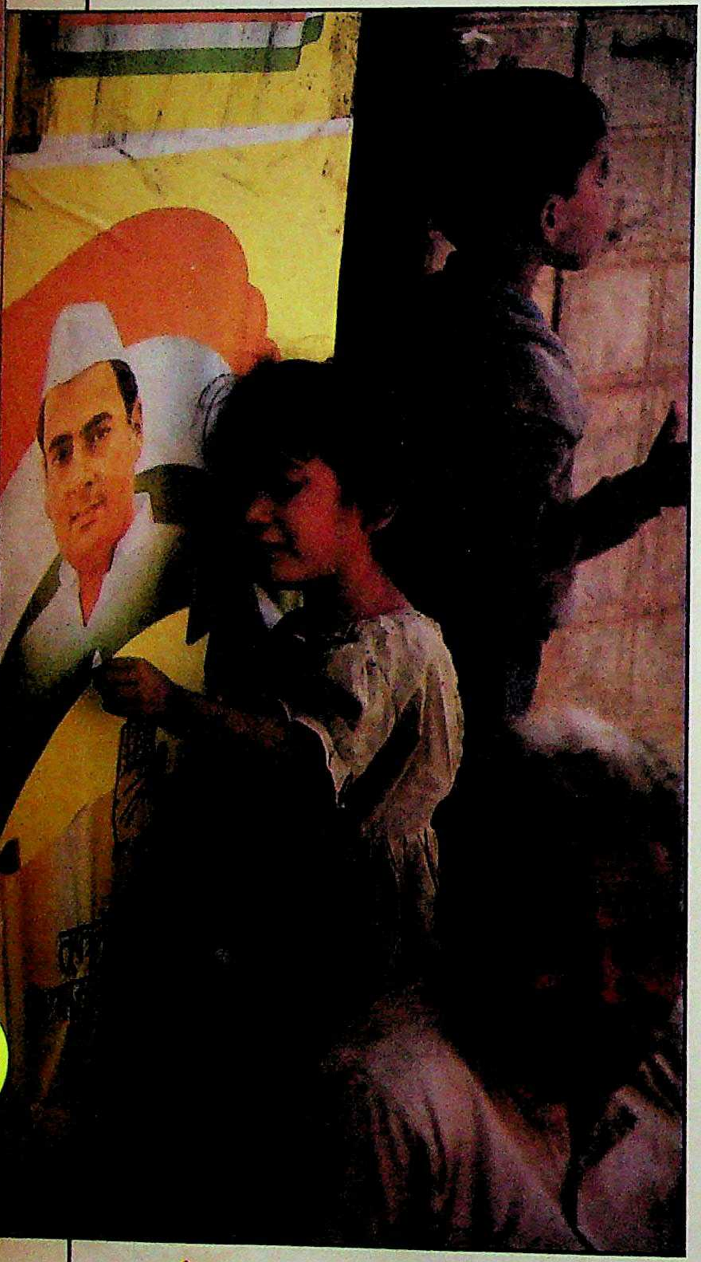

इंका का विज्ञापन अभियान भी 'मियां की जूती, मियां के सिर' वाली कहावत चरितार्थ कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया लेकिन उम्मीदवारों के चयन में विपक्ष ने इंका से कहीं ज्यादा समझदारी दिखाई. नए उम्मीदवारों को खड़ा करने के कारण उसमें उत्साह का माहौल दिखता है जबकि इंका ने थक चुके पुराने सैनिकों को ही मैदान में उतारा है.

इंका की प्रचार व्यवस्था से उसके नेताओं और कार्यकर्ताओं का मनोबल गिरा है और उनमें असंतोष पैदा हुआ है. मुख्यमंत्रियों और प्रदेश इंका अध्यक्षों को निर्देश देने के लिए राजनीति के नौसिखुओं, दोस्तों, करीबी सलाहकारों और राज्यसभा के युवा सदस्यों की एक टोली बनाई गई है. राज्यों के वरिष्ठ नेता इन लोगों को 'कल का छोकरा' कहकर उनसे बातचीत करने से इनकार कर देते हैं.

इससे कुल मिलाकर प्रधानमंत्री को ही नुकसान हो रहा है. उनकी छवि धूमिल हुई है. एक जमाने में जिस शख्स को कांग्रेसियों ने सिर आंखों पर बिठाया था, आज वही उनके ऊपर बोझ बन गया दिखता है. राजीव के चित्र वाले पोस्टरों की मांग नहीं है. उम्मीदवार ऐसे पोस्टरों को अपने क्षेत्रों में लगाने से मना कर रहे हैं. इंकाई अपने नेता का बचाव करना तो दूर, उनका नाम तक लेने से कतरा रहे हैं. वे सिर्फ स्थानीय मुद्दों को उछाल रहे हैं.

इंका में जब भी कोई करिश्माई नेता रहा है, उसने चुनावों में बढ़िया प्रदर्शन किया है. आज पार्टी के लिए सबसे खतरनाक बात यह है कि उसका नेतृत्व ही बिखर गया है. राजीव में अब वोट खींचने की ताकत नहीं रही है और पार्टी के पास दूसरा कोई वैकल्पिक नेता नहीं है. इसके लिए और कोई नहीं बल्कि खुद पार्टी ही पूरी तरह से जिम्मेदार है. व्यक्ति पूजा को बढ़ावा देते हुए इंका विपक्ष के जाल में उलझती जा रही थी. यह सही है कि अतीत में भी इस तरह की व्यक्ति पूजा होती रही है, मिसाल के तौर पर नेहरू और इंदिरा गांधी की. लेकिन इनमें से किसी भी नेता पर भ्रष्टाचार के इतने गंभीर आरोप नहीं लगे और भारत का कोई भी प्रधानमंत्री राजीव जितना उपहास का पात्र नहीं बना.

सो, जब राजीव ने पार्टी के प्रचार की बागडोर अपने हाथ में ली तो विपक्ष ने उन पर हमला तेज कर दिया. रणनीति बिलकुल साफ थी: राजीव की छवि को ध्वस्त कर देने पर इंका ताश के महल की तरह अपने-आप भरभरा कर गिर जाएगी. विपक्ष को यकीन हो गया है कि एक बार शासक दल के इस सितारे के टूटने पर राज्यों के नेता भी दुबक जाएंगे और राष्ट्रीय अभियान में पूरे उत्साह से भाग नहीं ले पाएंगे. वे अपना ही घर बचाने में लगे रहेंगे.

1984 में राष्ट्रपति जैल सिंह ने राजीव को प्रधानमंत्री नियुक्त करने का फैसला पार्टी द्वारा उन्हें नेता चुने जाने के पहले ही कर लिया था. उनका कहना था कि ऐसा उन्होंने वंश उत्तराधिकार में विश्वास के कारण नहीं. बल्कि इंका को टूटने से बचाने के लिए किया था. आज तो लग रहा है कि पार्टी तो ढहेगी ही, खानदानी शासन का भी खात्मा हो जाएगा.

और चूंकि राष्ट्रीय मोर्चा सिर्फ 350 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ रहा है, और बाकी पर उसका समर्थन पाने वाली पार्टियां लड़ रही हैं, इसलिए भारतीय राजनीति में एक नए युग की शुरुआत हो सकती है, जिसका मतलब है निरंकुश बहुमत का खात्मा और साझा सरकारों का आगमन. इस बार एक महत्वपूर्ण अंतर यह भी है कि 'नेहरू के बाद कौन', 'इंदिरा के बाद कौन' जैसे आतंकित करने वाले सवाल भी नहीं हैं. और लोग बदलाव की आशंका से भी आतंकित नहीं हैं. हो सकता है, मतदाता शायद यह सोच रहा है कि राजीव तो जाएं, उनके बाद चाहे जो भी आए. लेकिन वह अपने अधिकारों के प्रति पहले से ज्यादा जागरूक भी हो गया है और अपने अधिकारों के एहसास के बाद खुद को सरकार से बड़ा मानने लगा है. वह सोचने लगा है कि यदि वह सरकार बदल सकता है तो उसे लोगों के हित में काम करने पर मजबूर भी कर सकता है. लोकतंत्र की परिपक्वता के यही तो लक्षण हैं.

—इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

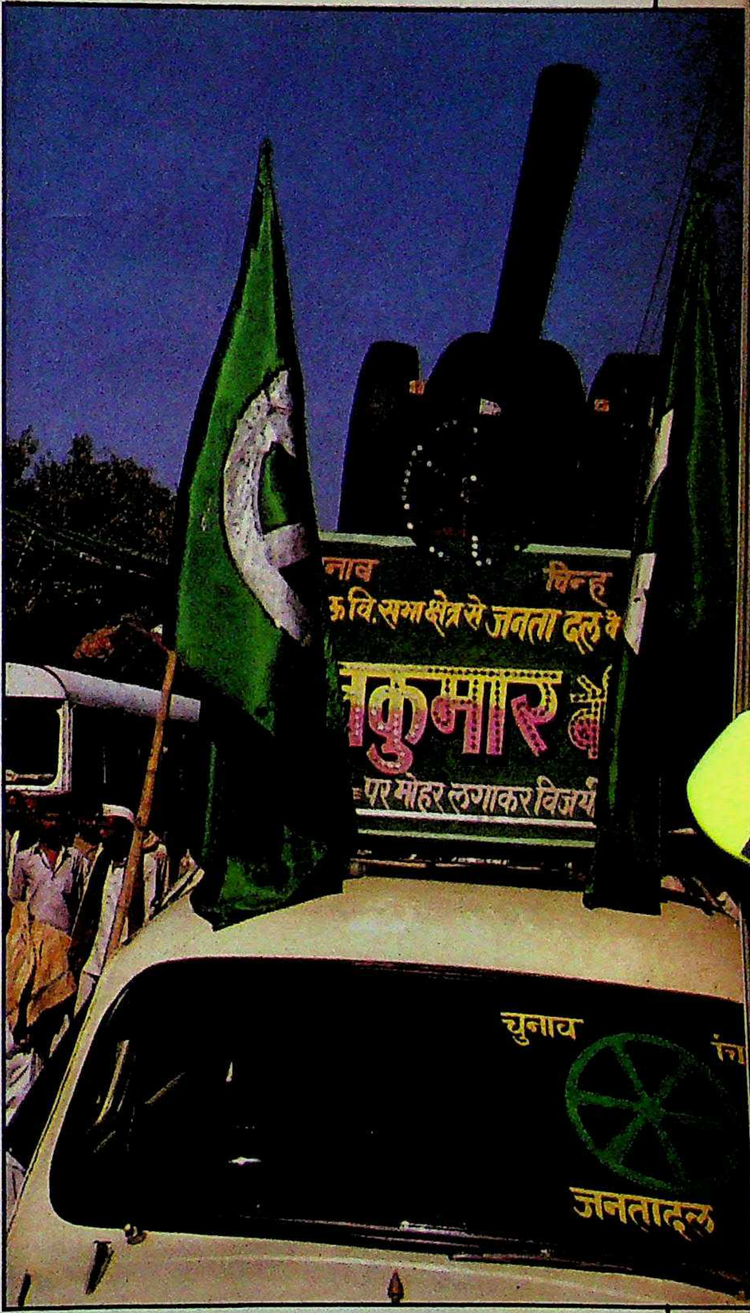

यह धारणा गलत साबित हुई कि बोफोर्स जैसे मुद्दों में आम लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव का स्वागत करते पार्टी कार्यकर्ता: हौसले का दिखावा

रस्मअदायगी की रवानी

राजीव गांधी के चुनाव प्रचार अभियान में तेजी तो है मगर एक तरह का निरुत्साह भी. पहले वाला जोश-खरोश नहीं रह गया है. केवल रस्मअदायगी का भाव दिखता है. इन कारणों से उनकी सभाओं में लोग भी उदासीन दिखते हैं.

प्रधानमंत्री राजीव गांधी के निर्वाचन क्षेत्र अमेठी की हर झोंपड़ी, हर दीवार पर जो नारा सबसे ज्यादा लिखा नजर आता है वह है—'तूफान में आंधी में, विश्वास राजीव गांधी में.' लेकिन उनके इस मजबूत गढ़ में उस दिन न कोई तूफान दिखा, न कोई आंधी जिस दिन वे नामांकन पत्र दाखिल करने यहां आए थे. और तो और, कोई बयार तक नहीं महसूस की गई.

और अब जबकि पूरा देश चुनावी बुखार की गिरफ्त में है, राजीव के हवाई चुनाव दौरों में भी जोश-खरोश की वही कमी नजर आती है जो अमेठी में उनके नामांकन पत्र भरने के दिन दिखी थी. आज वे जेट विमानों और हेलिकॉप्टरों से देश के शहर-दर-शहर, कस्बा-दर-कस्बा घूम रहे हैं लेकिन वह खास बात कहीं भी नजर नहीं आती जिसने 1984 में उन्हें देश के करोड़ों लोगों की आंखों का तारा बना दिया था.

उनके व्यक्तित्व का वह जादुई रूप जैसे लुप्त हो गया है. आज वे चिंतित, परेशान नजर आते हैं. 1984 में जिस दिन उन्होंने अमेठी में पर्चा भरा था उस दिन वहां किसी त्यौहार या मेले-सा माहौल था, हालांकि उनकी मां की मृत्यु के ज्यादा दिन नहीं बीते थे. लेकिन तब उनसे लोगों ने बेहिसाब उम्मीदें लगाई थीं. मगर 1989 में इसी मौके पर भीड़ नगण्य थी. राजीव कभी हताश दिखाई दिए तो कभी बेहद चिंतित. ऐसा शायद लगातार यात्रा और नींद पूरी न हो पाने की वजह से होगा. लेकिन उनके व्यवहार में आया बदलाव करीबी लोगों से छिप न सका. शायद इसका असर उनके चुनाव प्रचार पर भी पड़ रहा है.

यहां तक कि उनका विमान उड़ाने वाले से भी उनके व्यवहार में आया बदलाव छिप नहीं सका है. राजीव खुद भी पायलट रहे हैं और उड़ान के दौरान अक्सर वायुसेना के अफसरों से बातें करते रहे हैं. लेकिन इन अफसरों के अनुसार राजीव अब उखड़े-उखड़े से अलग-थलग रहते हैं.

पिछले चुनाव में वे एक ऐसे जांबाज योद्धा दिखते थे जो जंग के मैदान में ऐन वक्त पर पहुंचने को तत्पर हो. देश भर में वे घूम-घूमकर सभा-दर-सभा लोगों को अपने नए मुहावरों, 21वीं सदी के अपने सपनों से उत्साहित करते नजर आते थे. लेकिन इस बार का चुनाव उनके लिए मानो महज एक औपचारिकता भर रह गया है जिसे किसी न किसी तरह निभाना ही है.

हर सभा में वे लेट-लतीफ होते हैं. मुस्कराहट उनके चेहरे पर जैसे ही उभरती है वैसे ही नदारद भी हो जाती है. उनके चुटकुले भी फीके पड़ गए हैं जैसे भीड़ की ओर अब वे हाथ लहराते हैं तो भी कोई लहर नहीं उठती. वे उस जादूगर की तरह लगते हैं जिसकी जादुई छड़ी कहीं खो गई हो और खरगोशों ने पिटारे में से निकलने से इनकार कर दिया हो. उनकी चुनावी लफ्फाजी लचर दिखती है और उनके हाव-भाव का लोगों पर कोई असर नहीं पड़ता. और गलतियां वे अक्सर ही करते रहते हैं.

अमेठी में उनकी पहली चुनावी यात्रा का पहला दिन. लगता है कस्बे को राजीव गांधी के विशाल पोस्टर में लपेट दिया गया हो. हेलिपैड से एक किलोमीटर दूर उन्हें एक स्कूल के मैदान में भाषण देना है. एमआई-8 हेलिकॉप्टर से उन्हें दोपहर में वहां पहुंचना है, परंतु नियत समय से आधा घंटे बाद तक उनके आगमन की कोई संभावना कहीं नजर नहीं आ रही है.

और कस्बे में भी कहीं कोई खास उत्साह नहीं नजर आ रहा है. राजनैतिक सनसनी पैदा कर सकने वाले लोग मानो बेअसर हो

सभी फोटो: रघु राय

अमेठी में पहली चुनाव सभा करते राजीव: बदला हुआ माहौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए हों. पुलिस और होमगार्ड के सैकड़ों हथियारबंद जवान शहर में बिखरे पड़े हैं. इस 'धरती के लाल' के दौरे के प्रति लोगों में कोई उत्साह नहीं नजर आ रहा है. मैदान में करीब 10,000 लोगों की भीड़ जमा है. लोग या तो मूंगफली खा रहे हैं या बीड़ी फूंक रहे हैं. विशेष मंच से कुछ स्थानीय नेता राजीव और कांग्रेस राज का गुणगान कर रहे हैं. एक नेता लोगों से जिंदाबाद के नारे इतने जोर से बोलने को कह रहा है कि "राजीव जब मंच पर आएं तो आपकी आवाज उनके कानों तक पहुंचे." मंच के पीछे सफेद वर्दी पहने सेवा दल के दर्जन भर कार्यकर्ताओं को समझाया जा रहा है कि उन्हें किस तरह सलाम ठोंकना है, किस तरह से खड़ा होना है. उनमें से एक को अस्थायी तौर पर बने शौचालय के बाहर खड़े रहकर उसकी सुरक्षा का काम सौंपा गया है.

किसी वजह से संवाददाताओं को प्रधानमंत्री के साथ समूह में यात्रा करने से रोक दिया गया है. वे सुरक्षा कर्मचारियों और स्थानीय खुफिया अधिकारियों से बात कर रहे हैं. एक खुफिया अधिकारी सफाई देता है, "उनकी सभाओं में भीड़ कम होती जा रही है शायद इसीलिए प्रधानमंत्री के सलाहकार आप लोगों को उनके साथ घूम-घूमकर यह नहीं देखने देना चाहते." ये अधिकारी महोदय याद करते हैं कि 1984 और 1985 में प्रधानमंत्री के अमेठी दौरों के समय भीड़ इससे दस गुना होती थी.

मंच के नीचे लिखा 'मेरा भारत महान' का नारा मजाक का विषय बना हुआ है. सभा में आया एक नौजवान दुकानदार अभय सिंह कंडोम के विज्ञापन की नकल पर बना नारा दोहराते हुए कहता है कि इस नारे का यह हश्र हो गया है, "खरीदने में आसान, रखने में आसान, इस्तेमाल करने में आसान, पहले चार आने में तीन मिलते थे, आजकल मुफ्त में मिल रहे हैं, मेरा भारत महान." इस तरह की बातें वह भी अमेठी में और वह भी प्रधानमंत्री के आगमन से चंद मिनट पहले! पूरी तरह हैरत में डाल देती हैं.

सभा स्थल की भीड़ कुछ देर बाद तो बढ़ जाती है जब इंका कार्यकर्ता लोगों को हांककर वहां ले आते हैं. लेकिन लोगों को और यहां तक कि पुराने पुलिस कर्मचारियों को जो चीज सबसे खटकी वह यह कि हेलिपैड से सभा स्थल का पूरा रास्ता सूना पड़ा था.

राजीव एक घंटा लेट हैं. वे अपनी बुलेटप्रूफ कार से निकलते हैं, पीछे-पीछे सोनिया भी हैं. उन्हें मालाएं पहनाई जाती हैं. जब तक वे मंच पर पहुंचते हैं, जिंदाबाद के नारे लगते रहते हैं. राजीव परेशान दिखते हैं, सोनिया का भी यही हाल है. पीछे-पीछे चली आ रही है प्रियंका. उसकी मासूमियत और उसका निष्कलुष

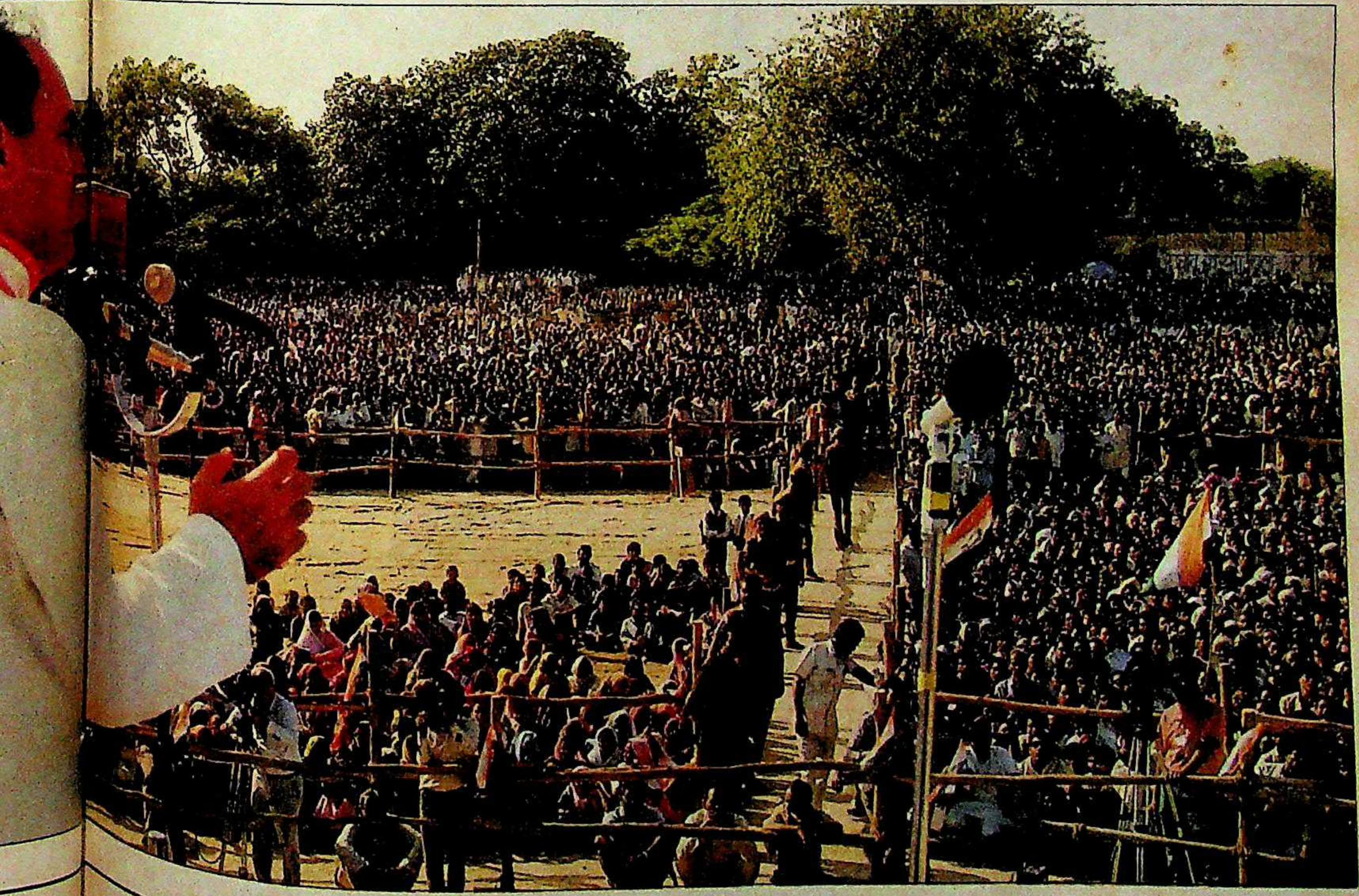

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...ya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैशोर्य पूरे माहौल से अलग ही दिखता है. राजीव अपने नाना की तरह तेज कदमों से बढ़ते हुए मंच की सीढ़ियां चढ़ते हैं. मंच पर उनके पीछे सोनिया और प्रियंका है. उनके बाईं तरफ नारायणदत्त तिवारी काला चश्मा चढ़ाए बैठे हैं. नजदीक से राजीव की आंखों के नीचे सूजन साफ देखी जा सकती है. वे चिंतित दिखाई देते हैं, उनकी आंखें बार-बार झपकती हैं, वे अपने होंठ चबाते हैं, बिखरे बालों को संवारते हैं.

भीड़ में कोई उत्साह नहीं है. बस आगे की दाईं कतार में बैठे कुछ कार्यकर्ता जोश में जिंदाबाद के नारे लगा देते हैं. अनायास ही शुरू हो जाने वाले नारे कहीं नहीं सुनाई देते. राजीव अमेठीवालों को बताते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने उनके इलाके को किस तरह बदल दिया है. वे लोगों को 'इंदिराजी के बलिदान' की याद दिलाकर बताते हैं कि किस तरह उनकी हत्या के बाद इंका ने देश को 'अंधेरे' से उबारा था. फिर वे पंजाब की बात करते हैं. वे बताते हैं कि वहां अलगाववाद खत्म हो गया है और सरकार आतंकवाद का खात्मा करने में कामयाब रही है. वह आगे भी इससे लड़ती रहेगी. आगे की कतारों में बैठे एक नेता

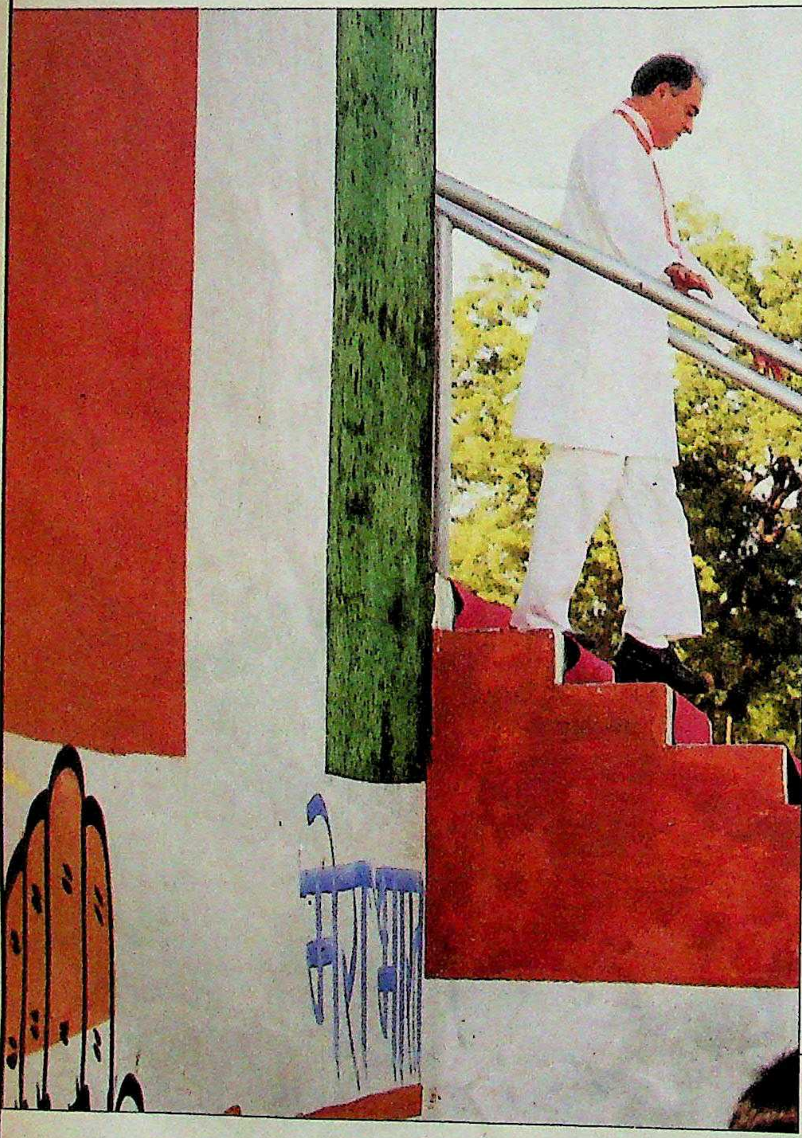

मंच से उतरते राजीवः हड़बड़ी में

जिंदाबाद का नारा लगाते हैं. एक अधिकारी उन्हें चुप कराने की कोशिश करता है. पर राजीव उस तरफ देखकर कहते हैं, "बोलने दो, बोलने दो."

और इसके बाद वे मानो तुरुप का पत्ता चलते हैं. वे अपनी जेब से राष्ट्रीय मोर्चे के चुनाव घोषणापत्र की एक प्रति निकालकर ऐसे लहराते हैं मानो वे लोगों को कोई अत्यंत गोपनीय दस्तावेज दिखाने जा रहे हों. वे चीखते हैं, "इस घोषणापत्र में आतंकवाद के खिलाफ एक भी शब्द नहीं है. क्या विपक्ष के लिए देश में आतंकवाद का कोई वजूद ही नहीं है या फिर वे इसके खिलाफ कुछ भी कहने से डरते हैं?"

उनके दौरे का अगला पड़ाव मद्रास का मरीना तट. यह वही जगह है जहां एक साल पहले राष्ट्रीय मोर्चे के गठन की घोषणा की गई थी. अमेठी के मुकाबले यहां का माहौल ज्यादा रंगीन है. तिरंगे झंडे और अन्ना द्रमुक के काले-लाल परचम पूरे समुद्र तट पर फहरा रहे हैं. चांदी-सी चमकती रेत पर काले खंभों की बाड़ लगी हैं. एक ओर 20 फुट ऊंचा बुलेटप्रूफ मंच है, जिसके सामने बिजली के रंगीन लट्टुओं से जगमगाता राजीव का आदमकद कटआउट भी बौना लग रहा है. चुनाव से पहले होने वाली रैलियों में हर जगह के मुताबिक पोशाक पहनकर मंच पर आने वाले राजीव इस बार वैसी किसी सजीली पोशाक में नहीं हैं. न तो उन्होंने धोती-जिबा पहना है और न ही उनकी गरदन से अंगवस्त्रम लटक रहा है. वे झक सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए हैं. उन्हें इंद्रधनुषी रंग की दर्जनों मालाएं भेंट की जाती हैं. उनके पीछे मैसूर सिल्क की काली गुलाबी साड़ी पहने अन्ना द्रमुक की महासचिव जयललिता हैं. राजीव तेजी से मंच की सीढ़ियां चढ़ते हैं और भीड़ में खुशी की लहर दौड़ जाती है. सबसे पहले वे अपना पंजा—अपनी पार्टी का चुनाव चिन्ह—लोगों को दिखाते हैं और फिर एम.जी. रामचंद्रन की तरह दो उंगलियों से अंग्रेजी 'वी' का निशान बनाते हैं. 50,000 की भीड़ की हर्षध्वनि गूंज उठती है.

राजीव भाषण की शुरुआत तमिल में करते हैं—"सहोदरा, सहोदरा गिले." (भाइयो-बहनो) "वनक्कम" (नमस्कार!) इसके तुरंत बाद वे अंग्रेजी पर उतर आते हैं. पहले वे माहौल को थोड़ा भावुक बनाने के लिए उन मौकों की याद दिलाते हैं कि जब वे मंच पर एमजीआर के साथ खड़े हुए थे या एमजीआर और उनकी मां के संबंध कैसे थे. परंतु लोगों पर इसका असर पड़ता नहीं दिखता. फिर वे पार्टी की जवाहर रोजगार योजना और महिलाओं के कल्याण की योजनाओं का जिक्र करते हैं जिन्हें उनकी सरकार ने शुरू तो किया परंतु विपक्ष के अडंगों की वजह से संतोषप्रद ढंग से लागू नहीं कर सकी.

वे कहते हैं, "गरीबी हटाने वाली योजनाओं के लिए अगर मैं 100 रु. अलग करता हूं तो मुझे मालूम है कि सिर्फ 15 रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आम लोगों तक पहुंच पाते हैं. बाकी सारा पैसा बिचौलिए, दलाल और भ्रष्ट ठेकेदार हजम कर जाते हैं." वे इसकी वजह बताते हैं कि दिल्ली और राज्यों की राजधानियों में बहुत ज्यादा सत्ता केंद्रित हो गई है. फिर वे अपने तेवर दिखाते हैं—"अगर विपक्ष पंचायती राज विधेयक को न गिराता तो एक ऐसी व्यवस्था बन जाती जिससे कल्याणकारी योजनाओं का पैसा सीधे जनता तक पहुंचता. हम 83 लोगों का फैसला कतई नहीं मान सकते. अब 83 करोड़ जनता ही इसका फैसला खुद करेगी."

इसके बाद वे आनंदपुर साहिब प्रस्ताव पर बरसते हैं जिसमें पंजाब को ज्यादा स्वायत्तता देने की मांग की गई है. वे कहते हैं, "इस प्रस्ताव में दिल्ली को कमजोर बनाने की बात है विपक्ष के घोषणापत्र भी यहीं बात कह रहे हैं." और यहीं पर उनकी बातों का विरोधाभास पूरी तरह जाहिर हो जाता है. एक तरफ तो वे पंचायती राज और सत्ता के विकेंद्रीकरण को राष्ट्र के लिए रामबाण बताते हैं, दूसरी तरफ विकेंद्रीकरण की विपक्ष की मांग को बड़े तिरस्कार से अलगाववादी कहकर ठुकरा देते हैं.

हर जगह, हर भाषण में वे यही तर्क देते हैं. अमेठी में वे कहते हैं, "दिल्ली की शक्ति खत्म हो जाएगी और यह शक्ति राज्यों में चली जाएगी. जो गरीब प्रदेश हैं, जैसे उत्तर प्रदेश गरीब प्रदेश है, वे भुगतेंगे." एक ही भाषण में परस्पर विरोधी बातें करते हुए वे जरा भी नहीं हिचकिचाते.

यहां तक कि अमेठी में भी उनके इस तर्क की आम तौर पर आलोचना ही होती है कि गरीबी हटाओ योजना के पैसे बिचौलिए हड़प लेते हैं. सभा में शामिल राजेश गुप्ता की टिप्पणी थी, "परंतु यह तो उन्हीं की सरकार है, सत्ता उन्हीं की है. इसे रोकना उनका काम है. ऐसे तो लगता है वे बहाने बना रहे हों."

दलाली पर राजीव का बरसना कोई गलत नहीं है. इसका असर पड़ सकता है बशर्ते वे इसे वाजिब आक्रामकता के साथ कहें. लेकिन उनके हाव-भाव की वजह से इसका उलटा असर पड़ता है. अमेठी में जब राजीव यह कह रहे थे, "हम जानते हैं, गरीबी हटाने का पैसा जो आपको भेजा जाता है, वह पूरी तरह से आप तक नहीं पहुंच पाता. हम यह भी जानते हैं कि बीच में लोग हैं जो इसे खा जाते हैं." उस समय उनके चेहरे पर कुटिल मुस्कराहट थी. इस मुस्कान में उनकी नाराजगी झलकने के बजाय धोखे की बू आ रही थी. इससे बात बनती नहीं

शेखर गुप्ता

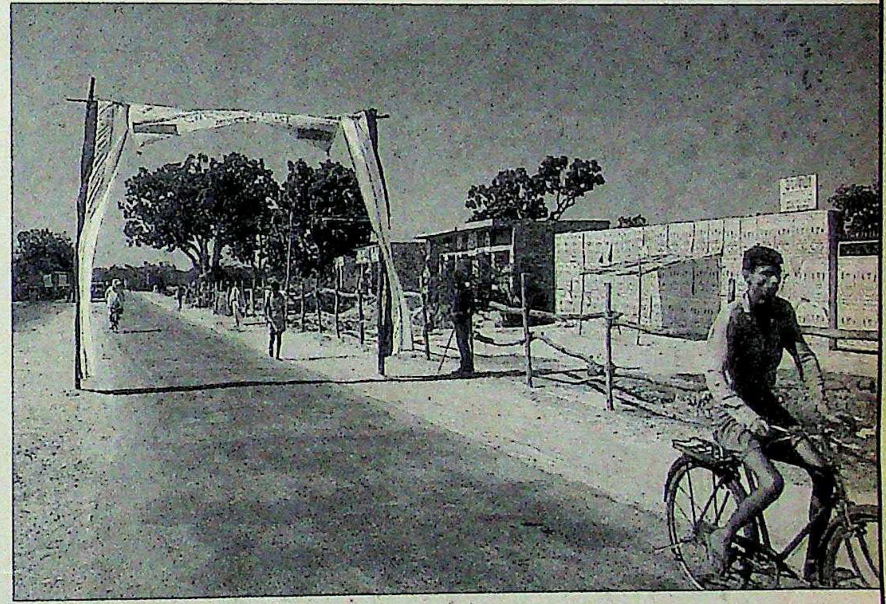

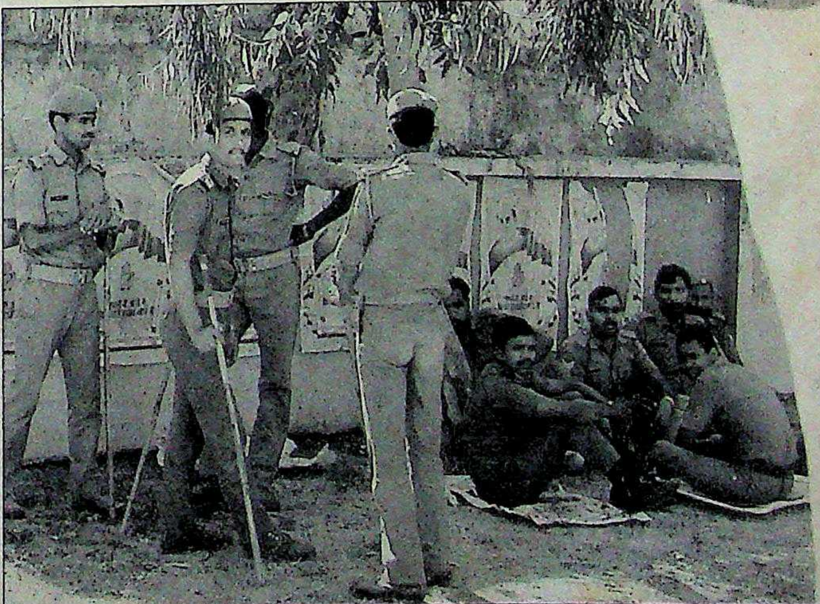

(बाएं ऊपर से नीचे) राजीव का हेलिकॉप्टर, यात्रा का रूट; आराम करते सुरक्षा गार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि बिगड़ती ही जाती है. और न ही उनके चुटकुले रंग जमा पाते हैं. तमिलनाडु में अन्ना द्रमुक की जयललिता उनके पास खड़ी थीं और वे कह रहे थे, "मैं मानता हूं कि एमजीआर की विरासत के बारे में थोड़ा विवाद है." वहां मौजूद हुजूम जयललिता के कट्टर समर्थकों का था जिनकी नजर में इस तरह का कोई विवाद नहीं है. जनता राजीव के इस बयान पर हैरत में पड़ गई. इलाहाबाद के पास चैल में वे कुछ देरी से पहुंचे. 5,000 लोग वहां मौजूद थे जबकि 1984 में इसी जगह हुई सभा में 50,000 लोग आए थे. राजीव ने भाषण शुरू किया, "मैं माफी चाहता हूं लेट होने के लिए, मगर कभी-कभी हेलिकॉप्टर भी रास्ता भूल जाते हैं." इंतजार कर रही भीड़ पर ऐसी बातों का उलटा ही असर पड़ता है.

उनके 18 एमआई-8 हेलिकॉप्टरों ने भी उनके अभियान का भुर्ता बना दिया है. पायलट को सूर्यास्त से पहले ही हेलिपैड से उड़कर हवाई अड्डे पहुंच जाना होता है जहां राजीव का जेट विमान उन्हें किसी दूसरे प्रदेश में ले जाने के लिए तैयार खड़ा होता है. वे जितनी देरी से पहुंचते, उतनी देरी से ही सभा शुरू होती और फिर पूरा कार्यक्रम ही गड़बड़ा जाता था. मसलन चैल में राजीव का इंतजार करते हुए नारायणदत्त तिवारी ने भाषण देना शुरू कर दिया कि कहीं जनता चली न जाए. अभी उनका भाषण चल ही रहा था कि हेलिकॉप्टर की आवाज सुनाई पड़ी. भाषण बीच में ही रोककर वे आसमान की ओर ताकने लगे. हेलिकॉप्टर देखकर उन्होंने लोगों से कहा कि राजीव आ गए हैं. शाम के साये लंबे होने लगे थे. राजीव मच पर तो पहुंच गए लेकिन जल्दबाजी में थे क्योंकि अंधेरा घिरने से पहले ही उन्हें हेलिकॉप्टर से उड़ जाना था. उन्होंने स्थानीय उम्मीदवारों का परिचय कराना शुरू किया. पहला नाम कमला बहुगुणा का था. उन्होंने पूछा, "पर कमला बहुगुणा जी हैं कहां?" वे मंच पर थी हीं नहीं, नीचे बैठी हुई थीं.

राजीव मध्य प्रदेश के रीवा से चैल आए थे. हेलिकॉप्टर को अब उन्हें इलाहाबाद ले जाना था जहां से उन्हें भुवनेश्वर जाना है. वहां से रात्रि सभा के बाद वे तड़के 3.30 बजे हैदराबाद के लिए रवाना होंगे. 12 घंटे में ही उन्होंने मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और ओडीसा से आंध्र प्रदेश तक की दूरियां नाप दीं. 20 दिनों में ऐसी 168 सभाएं करने की प्रधानमंत्री की योजना है.

राजीव के दौरे का यह कार्यक्रम मणि शंकर अय्यर ने तीन दिन तक कंप्यूटर में अपना दिमाग खपाने के बाद तैयार किया है. चुनाव क्षेत्रों को तीन वर्गों में बांटा गया—जीत वाले, कठिन और हाथ से गए हुए क्षेत्र. कार्यक्रम इस तरह तैयार किया गया कि प्रधानमंत्री कठिन माने गए निर्वाचन क्षेत्रों में जरूर जाएं. इस श्रेणी के ज्यादातर क्षेत्र कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश में हैं. सभाओं के स्थल इस तरह से चुने गए हैं कि कम-से-कम तीन संसदीय क्षेत्रों की जनता को तीन के बजाय एक ही सभा में संबोधित किया जा सके.

कुछ लोगों का मानना है कि टिड्डी उड़ान वाले इस अभियान की वजह से प्रधानमंत्री किसी एक इलाके या एक प्रदेश में अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर सकेंगे. परंतु प्रधानमंत्री के सलाहकारों का कहना है कि इससे यह छवि बनेगी कि प्रधानमंत्री किसी भी समय कहीं भी पहुंच सकते हैं. प्रधानमंत्री को सर्वव्यापी होना चाहिए.

पर सब कुछ जिस तरह से चल रहा है, उससे प्रधानमंत्री का असर सर्वव्यापी होने के बजाय सतही होकर रह गया है.

—इंद्रजीत बधवार

पोस्टरबाजी: औपचारिकता का निर्वाह

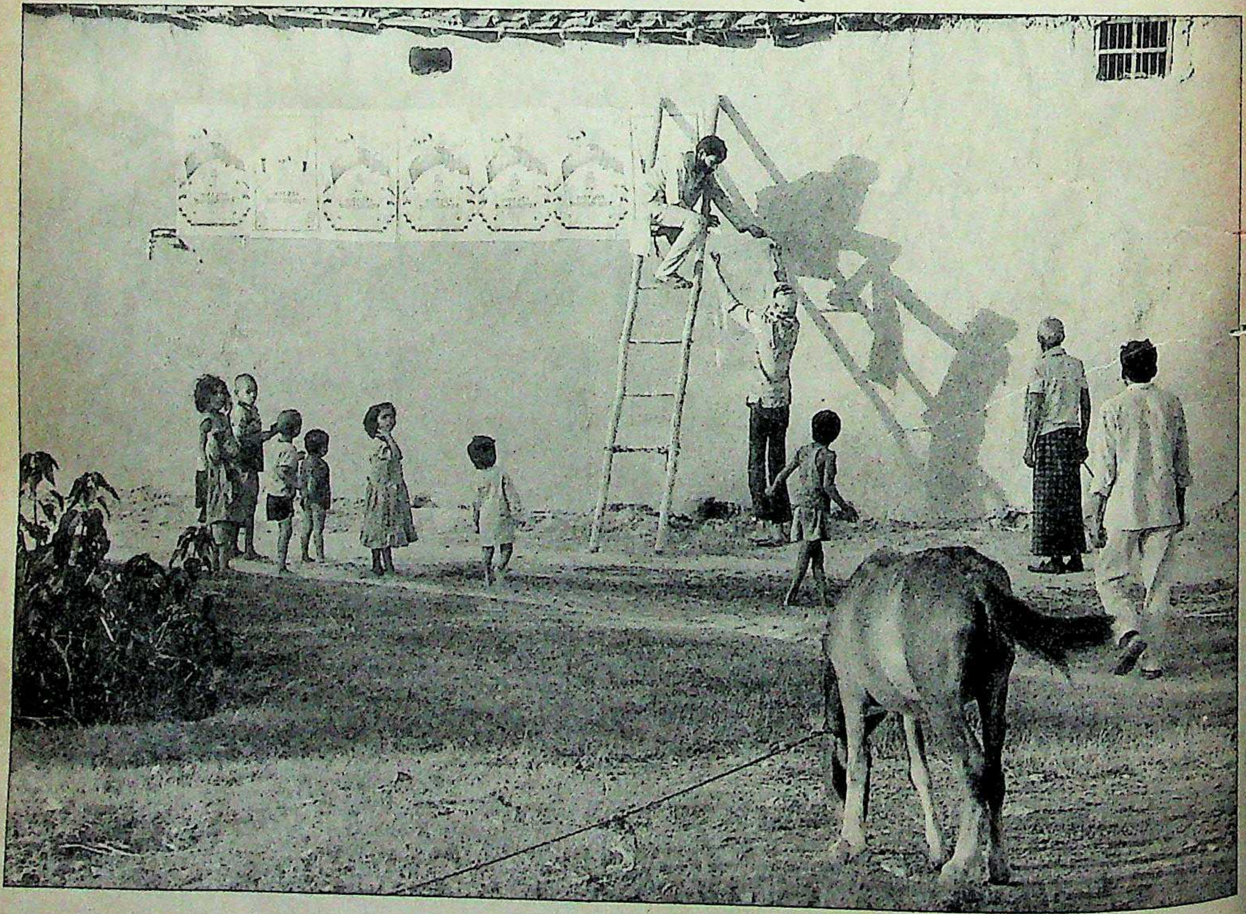

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

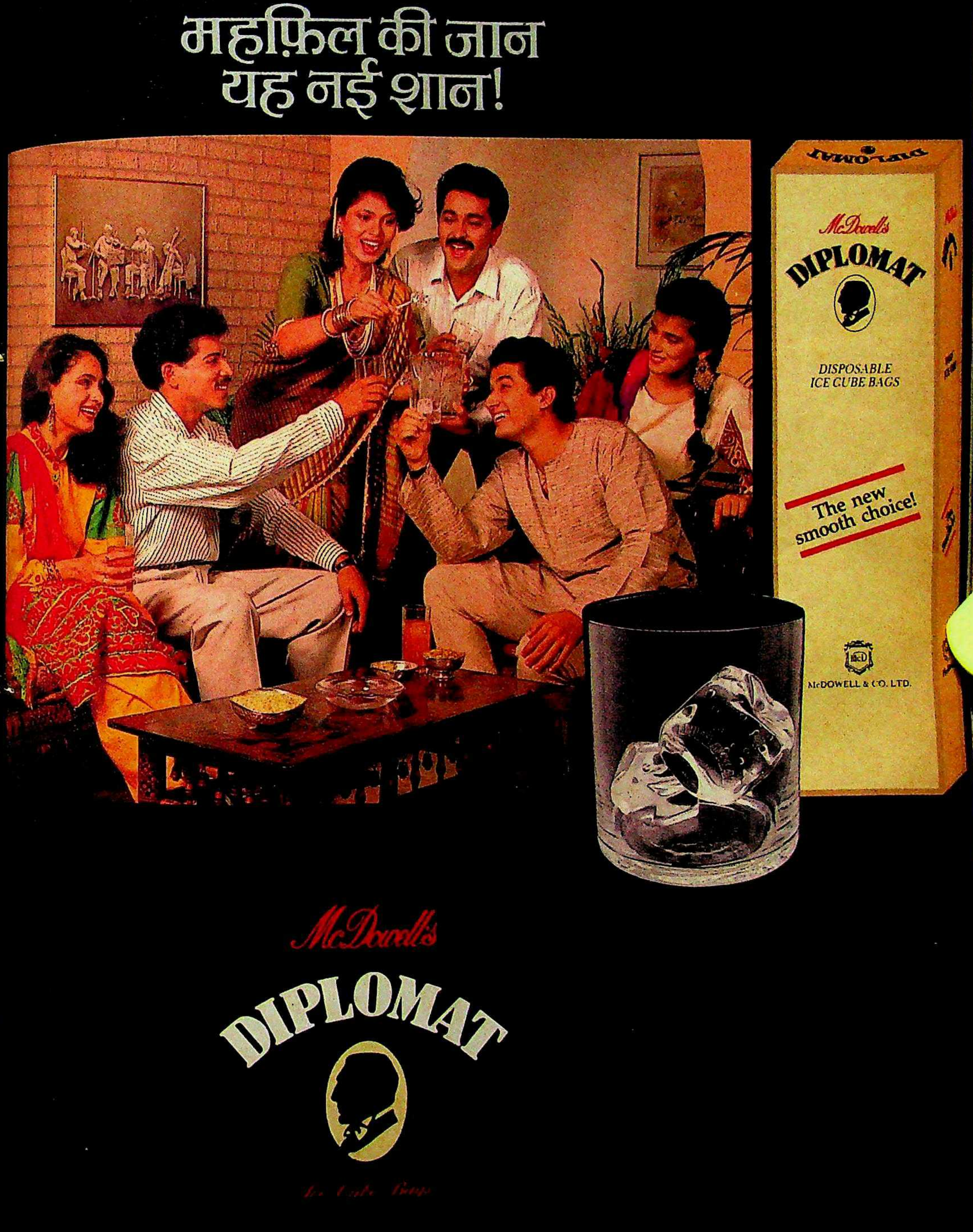
महफ़िल की जान
यह नई शान!
McDowell's
DIPLOMAT
DISPOSABLE
ICE CUBE BAGS
The new
smooth choice!
McDOWELL & CO. LTD.
McDowell's
DIPLOMAT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

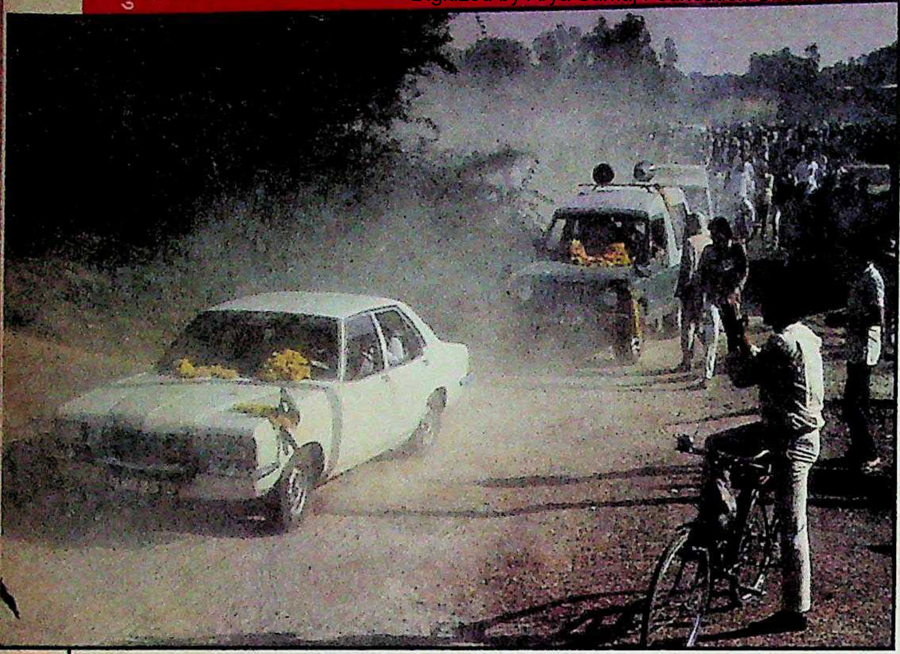

सिंह की सफेद कांटेसा: अश्वमेध का अश्व

विश्वनाथ प्रताप सिंह

सिर्फ इन्हीं के चर्चे हैं

वी.पी. सिंह ने राजीव सरकार को उखाड़ फेंकने का बीड़ा उठाते हुए हिंदी क्षेत्र में जो प्रचार अभियान शुरू किया है उसने लोगों में जबरदस्त लहर पैदा कर दी है.

प्राचीन भारत में राजे-महाराजे विजय के लिए अश्वमेध या राजसूय यज्ञ किया करते थे. अपने देश की सीमा का विस्तार करने के लिए राजा एक सफेद घोड़े को स्वतंत्र छोड़ देता था. जहां से यह घोड़ा बिना चुनौती के निकल जाता, उस क्षेत्र पर राजा अपना अधिकार समझता था और जहां घोड़ा रोका जाता, वहां युद्ध होता था.

आज चुनाव के दौर में भी कुछ-कुछ ऐसा ही होता दिख रहा है. जनता दल नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह की सफेद कांटेसा कार मानो अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा बन गई है. पिछले पखवाड़े उन्होंने औपचारिक चुनाव प्रचार अभियान पूर्वी उत्तर प्रदेश में शुरू किया. और अब जहां से उनका यह 'घोड़ा' गुजर रहा है, वहां-वहां शासक दल के क्षत्रपों में दहशत फैलाता जा रहा है. अपनी इस कार में वी.पी. सिंह अगली सीट पर ड्राइवर के पास ही बैठे होते हैं. यह कार गांवों की धूल भरी ऊबड़-खाबड़ राहों पर रवानगी से आगे बढ़ती जाती है. और हालत यह है कि कांग्रेसी कार्यकर्ता और छोटे-मोटे नेता तक उनका अभिवादन न करने की जुर्रत नहीं कर पाते.

यह ऐसा चुनावी अभियान है जिसने इन ग्रामीण इलाकों में सनसनी भर दी है. वी.पी. सिंह अपने नए चुनाव क्षेत्र फतेहपुर में प्रचार अभियान शुरू करने के लिए 7 नवंबर को पहुंचे. उसी दिन शहर में इंका के कट्टर समर्थक 500 सदस्यों वाले 'ब्राह्मण समाज' ने उनके प्रतिद्वंद्वी तथा दो बार इस क्षेत्र से सांसद रह चुके हरिकृष्ण शास्त्री का दामन छोड़कर वी.पी. सिंह का साथ देने की घोषणा की. यहां का इंकाई मुख्यालय सूना दिखता है और शास्त्री भी इस कड़ी चुनौती का आधे मन से मुकाबला करते दिख रहे हैं. वी.पी. सिंह का काफिला जब घाटमपुर पहुंचा तो वहां उनकी अगवानी में एक स्वागत समिति के लोग तीन घंटे से तेज धूप में खड़े इंतजार कर रहे थे. इस स्वागत समिति के सभी सदस्य उसी दिन इंका छोड़कर वी.पी. सिंह के साथ हो गए थे.

वी.पी. सिंह से पूछा गया, "क्या इसे लहर कह सकते हैं?" वे मुस्कराते हुए कहते हैं, "खुद ही देख लीजिए. लोगों को गिनिए मत. उनकी धड़कन महसूस करने की कोशिश कीजिए. उनकी आंखों में देखिए. ये आंखें ही आपको सब कुछ बता देंगी." अगला सवाल: "लेकिन प्रचार तो आपने अभी दो दिन पहले ही शुरू किया है. यह सब हुआ कैसे?" जवाब, "नहीं. मैं तो ढाई साल से इस प्रचार में जुटा हूं. मैंने तो इसे तभी देख लिया था. हो सकता है आप न देख पाए हों." "आपने क्या देखा था?" जवाब: "कि एकदम साधारण और निपट गरीब आदमी भी राष्ट्रीय मुद्दों को समझता है, उस पर अपनी राय रखता है और देश के स्वाभिमान को बचाना चाहता है." सवाल: "आपका मतलब है कि वह बोफोर्स जैसे मुद्दों को समझता है और उस पर प्रतिक्रिया जाहिर करता है." जवाब: "अच्छा तो लीजिए, मैं आपको अभी दिखा देता हूं."

उनकी कांटेसा कार मूसानगर के पास एक चौराहे पर धूल उड़ाती हुई रुकती है. कुछ युवा किसानों ने सुन रखा था कि वी.पी. सिंह इधर से गुजरने वाले हैं. सो, वे एक नीम के पेड़ के नीचे इंतजार कर रहे थे. कार रुकते ही वे दौड़े चले आते हैं. उनकी आंखों में आदर और उत्साह की चमक है. नारा गूंज उठता है—'राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है'. वी.पी. सिंह कार से उतरते हैं और उन्हें शांत कराते हैं. वे उनसे कहते हैं, "दिल्ली से एक सज्जन आए हैं. वे जानना चाहते हैं कि गांववालों को बोफोर्स के बारे में पता भी है या नहीं. आपमें से कितने लोग बोफोर्स के बारे में जानते हैं?" सभी हाथ उठा देते हैं. "बोफोर्स का दलाल कौन है?" वे एक साथ बोल उठते हैं, "राजीव गांधी." और उनकी कांटेसा कार बिल्हौर की ओर बढ़ जाती है.

इस अभियान में न तो कोई आडंबर है, न कोई साज-सामान, न ही लकदक विज्ञापनों का सहारा और न सलाहकार या प्रचार प्रबंधक. सिर्फ एक बिखरा-बिखरा-सा संगठन है. यहां तक कि साथ में कोई काफिला भी नहीं. बहुत हुआ तो एक जीप भर. कोई सुरक्षा गार्ड नहीं. वी.पी. सिंह का यह अभियान सिर्फ उनके बूते है. उनके भाषण खुद उनके होते हैं, किसी के द्वारा लिखे गए या सुझाए गए नहीं. और अमूमन उनकी जनसभाओं की घोषणा एक दिन पहले होती है. लेकिन सिर्फ उनके आने की खबर सुनकर ही बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती है. एक देसी नारा इस अभियान के बारे में जैसे सब कुछ बता जाता है, 'न पोस्टर हैं, न पर्चे हैं; सिर्फ वी.पी. सिंह के चर्चे हैं.'

7 नवंबर को फतेहपुर में उनके प्रथम आगमन का ही उदाहरण लिया जाए. वहां उनके तिमंजिले मुख्यालय पर सिर्फ एक बैनर टंगा है जिस पर वी.पी. सिंह की तस्वीर और जनता दल का चुनाव चिन्ह 'चक्र' छपा है. 6 नवंबर की शाम को ही राजनीति में आए कुछ नौसिखुए युवक वी.पी. सिंह के बेटे अजेय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह की अगुआई में प्रचार योजना की तैयारी में जुट गए थे. वैसे, अजेय भी अभी राजनीति में नौसिखुए ही हैं. प्रचार योजना, रणनीति, जनसभाओं के बारे में पूछे जाने पर वे कुछ बता नहीं पाते. वे विलायती अंग्रेजी में कहते हैं, "मुझे इतना ही मालूम है कि वे (वी.पी. सिंह) सुबह 6.15 बजे रेलगाड़ी से आने वाले हैं. सर्किट हाउस में तरोताजा होने के बाद 9.30 बजे वे कार्यकर्ताओं की बैठक करेंगे." "क्या स्टेशन पर उनकी अगवानी का भारी इंतजाम है?" अजेय जवाब देते हैं, "कितने लोग पहुंचेंगे, पता नहीं."

भागलपुर से ट्रेन तय समय पर पहुंचती है. और हजारों लोग नारा लगाने लगते हैं— 'वी.पी. सिंह जिंदाबाद', 'वी.पी. सिंह संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं'. इसके बाद उन्हें मालाओं से लाद दिया जाता है.

प्रचार मुख्यालय के विशाल हॉल में सिंह की प्रतीक्षा मुश्किल से सौ कार्यकर्ता ही कर रहे थे. संगठन का अभाव और कौशल की कमी साफ दिखती है. कोई भी उनके कार्यक्रमों के बारे में ठीक-ठीक नहीं जानता. बाहर गलियों में लोग उत्सुक दिखते हैं. सिंह अपनी कार में घंटे भर देर से पहुंचते हैं. वे लोगों से घिर जाते हैं.

> **वी.पी. का अभियान सिर्फ उनके बूते है. उनके भाषण खुद उनके होते हैं, उनके आने की खबर लगते ही भीड़ लग जाती है**

एकाएक चारों ओर लोग ही लोग नजर आने लगते हैं, मानो वे कहीं छिपे हुए थे और अचानक प्रकट हो गए. ये लोग कूद रहे हैं, चीख रहे हैं, नाच रहे हैं. सिंह को 100 फुट दूर मंच तक पहुंचने में भी 10 मिनट लग जाते हैं. हॉल में लोगों की संख्या सौ से हजारों में पहुंच गई है. गलियां खचाखच भर गई हैं. लोग छतों पर जाकर भीतर का नजारा लेना चाहते हैं. और जब वी.पी. सिंह बोलने के लिए खड़े होते हैं तो चीख-पुकार मचाती भीड़ शांत हो जाती है. उनके भाषण में वही सब होता है जो वे थोड़ा-बहुत हेरफेर करके ढाई साल से अपनी सभाओं में दोहराते रहे हैं. (देखें बॉक्स). संक्षेप में उनके मुद्दे ये होते हैं— राजीव गांधी द्वारा देश के स्वाभिमान को गिरवी रखना, राष्ट्रीय संस्थाओं का पतन और उन्हें महत्वहीन बनाया जाना, बोफोर्स घोटाला, महंगाई, सरकारी जवाबदेही का अभाव, राजीव सरकार को उखाड़ फेंकने की जरूरत वगैरह. उनके चेहरे पर घृणा और हिकारत के भाव आते-जाते दिखते हैं. प्रधानमंत्री पर हमला करते वक्त उनके होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल जाती है.

नाराजगी और उदासी के साथ वे कहते हैं, "अपने राजनैतिक जीवन में मैंने कई तरह की सौदेबाजी देखी है पर देश के स्वाभिमान और गौरव के साथ पिछले पांच वर्षों में जिस तरह सौदेबाजी की गई, वैसा मैंने कभी नहीं देखा था." इस पर लोग सिर हिलाते हैं और हॉल में भुनभुनाहट गूंज उठती है. उनके भाषण के दौरान हर मुद्दे पर लोग इसी तरह

अकबरपुर में अरुण नेहरू के साथ: उत्साहपूर्ण स्वागत

सभी फोटो: रघु राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी.पी. के भाषण

नब्ज पर हाथ

विश्वनाथ प्रताप सिंह के भाषण आम तौर पर 20 मिनट से ज्यादा के नहीं होते. उनमें देसी मुहावरों और कहावतों की भरमार होती है. इन मुहावरों को सुनकर उन्हें बेहद ध्यान से सुन रही भीड़ में उबाल-सा आ जाता है. इसके तुरंत बाद वे राजीव गांधी की सरकार को आड़े हाथों लेते हैं. थोड़ी-बहुत हेरफेर के साथ हर जगह उनके मुद्दे लगभग समान होते हैं:

"अपने राजनैतिक जीवन में मैंने कई चीजों की सौदेबाजी देखी लेकिन पिछले पांच वर्षों में देश के ईमान और स्वाभिमान की जैसी सौदेबाजी की गई वैसा पहले कभी नहीं देखा. लेकिन क्या राजीव गांधी इसकी माटी को अपने माथे लगाकर यह कसम खा सकते हैं कि उन्होंने अपने देश की कीमत पर सौदेबाजी नहीं की."

"जब मैंने एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदे में दलाली की जांच का आदेश दिया तो वे मुझसे खफा हो गए. उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता का गला घोंटने की कोशिश की. उनका विरोध करना अंतरात्मा की आवाज का मामला था. एक दिन हम सबको जाना है. हमारी मिट्टी हमारी जन्मभूमि की मिट्टी में मिल जाएगी. और इस धरती की माटी हमसे पूछेगी कि जब धरती को लूटा जा रहा था तब हम मूक दर्शक क्यों बने हुए थे तो क्या जवाब देंगे?

"इस देश में एक पक्षी तक का अपना घोंसला होता है. तो हमारे हरिजन भाइयों को मकान की गारंटी क्यों नहीं दी जानी चाहिए? गरीब गांववालों के लाभ की योजनाओं में पैसा क्यों नहीं लगाना चाहिए, 10,000 रु. तक के कर्जे क्यों नहीं माफ करने चाहिए और युवकों को अपने पांवों पर खड़े होने के लिए कर्जे की रकम बढ़ाकर 50 हजार क्यों नहीं की जानी चाहिए."

"आइए आपको एक बात बताऊं. मैंने इतना थका-हारा प्रधानमंत्री नहीं देखा. उनकी हालत बिस्तर पर पड़े ऐसे रोगी जैसी है जिसे हर तरह की दवा चाहिए—पंचायती राज, जवाहर रोजगार योजना, नगरपालिका राज और भगवान जाने कौन-कौन-से राज."

"आप सभी जानते हैं कि जब पांच साल बाद आप अपना ड्राइविंग लाइसेंस रिन्यू करवाते हैं तो आपको कुछ टेस्ट देने पड़ते हैं. आइए आज राजीव गांधी का टेस्ट हो जाए. जो लोग बेरोजगार हैं वे हाथ उठा दें (हजारों हाथ हवा में उठ जाते हैं). यानी बेरोजगारी के मामले में राजीव का लाइसेंस?..." जब वे लाइसेंस शब्द कहते हैं तो उनकी आवाज ऊंची हो जाती है और भीड़ जवाब देती है—'जब्त!' "जो लोग महंगाई से परेशान हैं वे अपने हाथ उठा दें (और भी ज्यादा हाथ उठ जाते हैं) और इसी तरह कीमतों के मुद्दे पर, राजीव का लाइसेंस?..." भीड़ चिल्लाती है, 'जब्त!' "ईमानदारी और भ्रष्टाचार के मामले में?..." भीड़ दोनों हाथ हवा में उठाकर जवाब देती है: 'जब्त! जब्त! जब्त!'

"तो आपने अपना फैसला कर लिया है. अब मुझे और सवाल पूछने की जरूरत नहीं. केवल एक और सवाल. राजीव और उनकी पार्टी के उम्मीदवारों की जमानत..." भीड़ चिल्लाती है 'जब्त!'

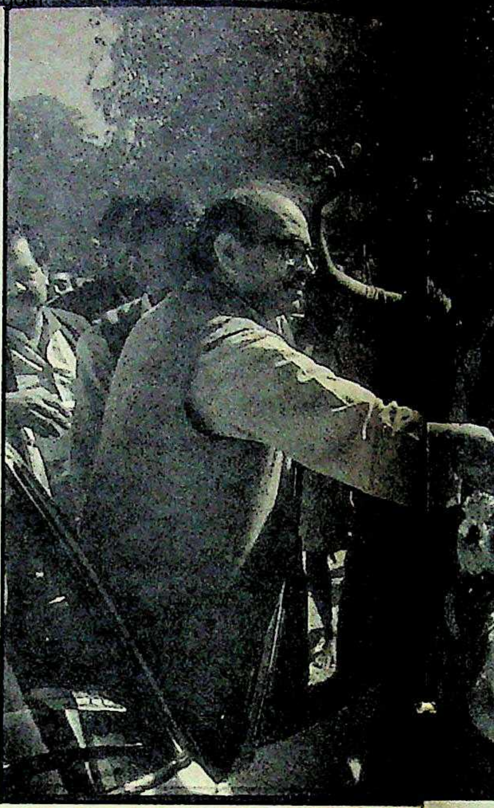

जोगिंदर चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारे लगाते समर्थक

सहमति में अपना सिर हिलाते हैं. लेकिन भाषण खत्म होते ही भीड़ फिर उच्छृंखल हो जाती है. जोर-जोर से नारे लगने लगते हैं—'राजा तुम संघर्ष करो.' 'अब तो यह स्पष्ट है, राजीव गांधी भ्रष्ट है'. 'भ्रष्टाचार नहीं चलेगा, नहीं चलेगा.'

दो घंटे बाद बिना किसी पूर्व सूचना के कांटेसा कार जिला अदालत के परिसर में पहुंच जाती है. वे एक वकील से हाथ मिलाते हैं, फिर एक मुवक्किल से. उस समय वहां लोग 10 से ज्यादा नहीं हैं. और देखते ही देखते जो कुछ हो जाता है उससे साफ हो जाता है कि लहर पैदा करने का मतलब क्या होता है. आधे घंटे में पूरा परिसर 'वी.पी. सिंह जिंदाबाद' के नारे से गूंज उठता है. भगवान जाने कहां से करीब 2,000 लोग नारे लगाते हुए अवतरित हो जाते हैं. और फिर रैली दो घंटे तक चलती है.

इसके बाद 8 बजे रात में तीन घंटे की सूचना पर पहली जनसभा होती है. शहर के लोगों के मुताबिक फतेहपुर में यह अब तक की सबसे बड़ी जनसभा है. सभा में वी.पी. सिंह कहते हैं, "यह चुनाव सिर्फ फतेहपुर के लिए नहीं है बल्कि यह पूरे देश के लिए है. हर घर के बाहर एक 'चक्र' टांग दीजिए और आपको भरोसा दिलाता हूं कि यहां किसी इकाई का कोई चक्कर नहीं चलेगा. इसे अपना सुदर्शन चक्र बनाइए." भीड़ से आवाज उठती है—"जनता दल का चक्र चलेगा, कांग्रेस के पंजे पर."

वे आगे कहते हैं, "याद रखिए कि मुझे यहां से बाहर भी लड़ाई लड़ने जाना है. इसलिए यहां जीत का दारोमदार आपके हाथों में है. अब आप लोग मुझे बताइए कि मैं बाहर जाऊंगा और लोग मुझसे फतेहपुर का हाल पूछेंगे तो मैं क्या कहूंगा?" भीड़ से गर्जना उठती है, "जीतेंगे, आप जीतेंगे, लाखों-लाखों में जीतेंगे."

अगले दिन वे यहां से बाहर चले जाते हैं. 8 से 10 तारीख के बीच वे पूर्वी, मध्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लगभग 2,000 किलोमीटर से अधिक की यात्रा पर निकल पड़ते हैं. उनके पड़ाव हैं—जहानाबाद, घाटमपुर, बिल्हौर (अरुण नेहरू का नया चुनाव क्षेत्र), उन्नाव, लखनऊ, फैजाबाद, जलालाबाद, बस्ती, गोंडा, बाराबंकी, हरदोई, पीलीभीत, बरेली, बदायूं आदि. इस दौरान वे हर दिन तीन घंटे से अधिक की नींद की आस नहीं कर सकते. और न ही वे कार में एकाध झपकी ही ले सकते हैं क्योंकि उन्हें कहीं भी रुकना पड सकता है और हर जगह छोटी या बड़ी भीड़ नारे लगाती मिलती है.

अपनी खासियत के अनुरूप प्रचार के दौरान भी वे निपट अकेले ही हैं. कार में उनके साथ सिर्फ ड्राइवर होता है या जरूरी हुआ तो पार्टी का कोई उम्मीदवार. अपने दल के झंडे के रंग यानी हरे रंग का गमछा उनकी गरदन में पड़ा होता है. रास्ते में वे भोजन नहीं करते. सिर्फ केला और मूंगफली या नारियल ही उनका आहार होता है. कभी-कभार सेब चल जाता है. गला साफ करने के लिए वे एकाध लाजेंस या अपने गाल में लवंग दबाए रहते हैं. वे घाटमपुर दो घंटे देर से पहुंचते हैं. वहां एक दिन की सूचना पर एक स्कूल के मैदान में जनसभा बुलाई गई है.

कुछ सौ लोग जमा हैं. उनमें कुछ स्वागत समिति के सदस्य हैं. इस समिति में अधिकांश कांग्रेसी हैं जो उनकी अगवानी के लिए अपनी पार्टी छोड़ आए हैं. उनमें से एक व्यक्ति 'मेरा भारत महान' नारे की, जिसका अब देश भर में मजाक उड़ाया जा रहा है, तर्ज पर नारा बुलंद करता है, "कांग्रेस बेईमान, रुपया देखकर राजीव का डोल गया ईमान, कांग्रेस में होता है गुंडों का सम्मान. मतदाता अब नहीं बिकेगा, गुंडों का सम्मान नहीं चलेगा."

वी.पी. सिंह का भाषण भी अक्सर इसी भावना की प्रतिध्वनि होती है. उनके प्रति लोगों का उत्साह ऐसा है मानो वे कोई मसीहा हों. यह सब जादूगर बांसुरीवाले के किस्से जैसा है. वे पहुंचते हैं और बोलना शुरू करते हैं तो जहां कुछ सौ लोग दिख रहे थे, वहां 10,000 की भीड़ नजर आती है. वे पनडुब्बी घोटाले और उसकी जांच के अपने प्रयासों की बात बताते हैं. इसके बाद बोफोर्स पर आते हैं. वे पूछते हैं, "लोग क्या चाहते है? यही न कि सबको इज्जत के साथ जिंदगी बिताने का मौका मिले. लेकिन वे आपको इसकी भी इजाजत नहीं देते. यहां तक कि आप जब माचिस की डिब्बी खरीदते हैं तब भी आप टैक्स चुकाते हैं जो केंद्र के खाते में जाता है ताकि इसे देश के विकास में लगाया जा सके. लेकिन आपका यह पैसा स्विट्जरलैंड के बैंकों में जमा हो जाता है."

फतेहपुर से करीब 100 किमी दूर मूसानगर और गजनेर के बीच विपरीत दिशाओं से आती हुई दो कारें उनकी कांटेसा के ठीक सामने आकर खड़ी हो जाती हैं और धूल का एक बादल छा जाता है. जब धूल छंटने लगती है तो एक भारी-भरकम आदमी की आकृति उभरती है. ये अरुण नेहरू हैं. वी.पी. सिंह अब नेहरू के क्षेत्र बिल्हौर में प्रवेश कर गए हैं. नेहरू मुस्कराकर अभिवादन करते है और कांटेसा में पिछली सीट

राजीव के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव: संसद से सड़क पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठ जाते हैं. वी.पी. सिंह एक केला छीलकर उनकी ओर बढ़ाते हैं. अरुण नेहरू कहते हैं, "यार विश्वनाथ मैं यहां चार दिन से हूं और लगभग सौ गांवों में हो आया हूं. आश्चर्यजनक माहौल है. मुझे तो 1984 से भी अधिक तेज लहर लगती है. लोगों में इतना उत्साह है कि आप जल्दबाजी में कहीं आ-जा नहीं सकते." वे कुछ बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बोल रहे थे, क्योंकि वी.पी. सिंह को देखकर उनके आगे उछलती-कूदती, छाती पीटती भीड़ रास्ता रोकने का ही काम करती है. उन्नाव तक की 150 किमी की यात्रा में इंका की एक जीप भर दिखती है, बाकी कहीं कोई सक्रियता नहीं.

सनचेदी के बाहर वी.पी. सिंह सड़क के किनारे एक पेड़ की ओर इशारा करके कहते हैं, "उधर देखिए, नीम के पेड़ से एक कांग्रेसी झंडा झूल रहा है. उन्हें इसे फहराने के लिए कोई मकान नहीं मिल सका. इसलिए पेड़ ही मिला उन्हें." कुछ दूर जाने पर वे फिर एक पेड़ की ओर उंगली उठाते हैं. क्या कोई इंकाई झंडा है? नहीं, इस बार वे लघुशंका से निवृत होने उस पेड़ के पीछे जाना चाहते हैं. नेहरू कहते हैं, "यहां नहीं, देखो लोग इंतजार कर रहे हैं. वे तुम्हें पकड़ लेंगे. किसी झाड़ी के आने तक रुको." अभी वे झाड़ी से निकलकर कार की तरफ लपके ही थे कि 50 किसानों का एक जत्था आ गया. इन किसानों ने उन्हें एक-एक रुपए के नोट की एक माला पहनाई.

> **सं**क्षेप में उनके मुद्दे ये होते हैं: राजीव द्वारा देश के स्वाभिमान को गिरवी रखना, बोफोर्स, महंगाई, सरकारी जवाबदेही का अभाव

अकबरपुर में लोग उनके स्वागत में सिर्फ सड़क के किनारे ही नहीं, छतों पर भी खड़े दिखे. इसके बाद आता है रूरी. इस कस्बे का तो नाम भी वी.पी. सिंह ने नहीं सुना था. यहां हजारों की संख्या में इकट्ठे लोग उन्हें देखकर मानो पागल हो जाते हैं. उनकी कार जैसे कस्बे में घुसी, लगा पूरा शहर उमड़ पड़ा. एक कार और पूरे कस्बे की भीड़ उसे घेरे हुए है. इसके बाद 20 मिनट तक वी.पी. सिंह के लिए लोग पागलों की तरह नारे लगाते रहे. और कार जब सभा-स्थल की ओर घिसटती हुई बढ़ी तो लोग आगे-पीछे नाचते जा रहे थे.

इसके बाद शिवली पहुंचते-पहुंचते शाम हो जाती है जहां लगभग 15,000 ग्रामीण वहां इन दोनों नेताओं का इंतजार पांच घंटे से कर रहे होते हैं. यहां इन दोनों का मामूली भाषण होता है. भीड़ में एक वृद्ध व्यक्ति खड़ा होता है और कहने लगता है, "पापियों के लिए नरक दूसरे लोक में नहीं बल्कि इसी दुनिया में है. राजीव ने पाप किया है. उसे जरूर दंड मिलना चाहिए. उसको यही दंड दो." उनकी इस मांग पर भीड़ में शोर उठता है.

अपनी कार में लौटकर वी.पी. सिंह कहते हैं, "शायद हमें मोरेस्को (बोफोर्स भुगतान में शामिल एक कंपनी) के बारे में एक नया नारा ईजाद करना होगा. यह कैसा होगा—'राजीव गांधी कौन है? मोरेस्को का चोरेस्को?" इसके बाद कुछ विनम्र होकर वे कहते हैं, "रक्षामंत्री पद से इस्तीफे के बाद जब मैं अंतिम बार राजीव गांधी से मिला तो उन्होंने मुझसे पूछा, 'आप यह राह क्यों अपना रहे हैं? यह तो बरबादी की ओर ले जाएगी.' तब मेरा जवाब था, 'आप अपनी राह चलिए मैं तो अब इस बरबादी के रास्ते पर चल ही पड़ा हूं.' अब देखना है किसकी राह कहां ले जाती है."

इसके बाद वे मौन हो जाते हैं. एक और लवंग अपने मुंह में दबाते हैं और रात के अंधेरे को तेजी से चीरती हुई उनकी गाड़ी आगे बढ़ती रहती है. —इंद्रजीत बधवार

वी.पी. सिंह: राहत के क्षण

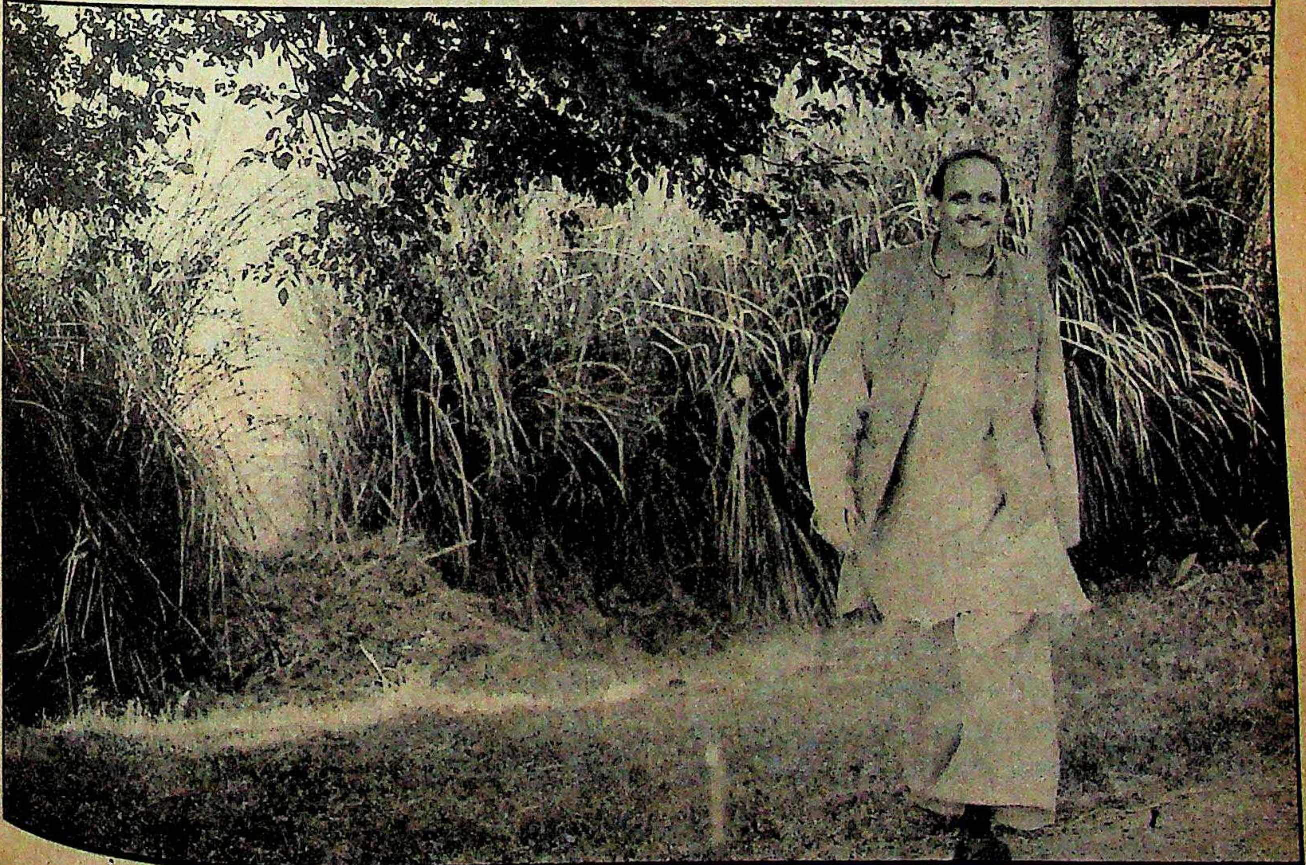

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

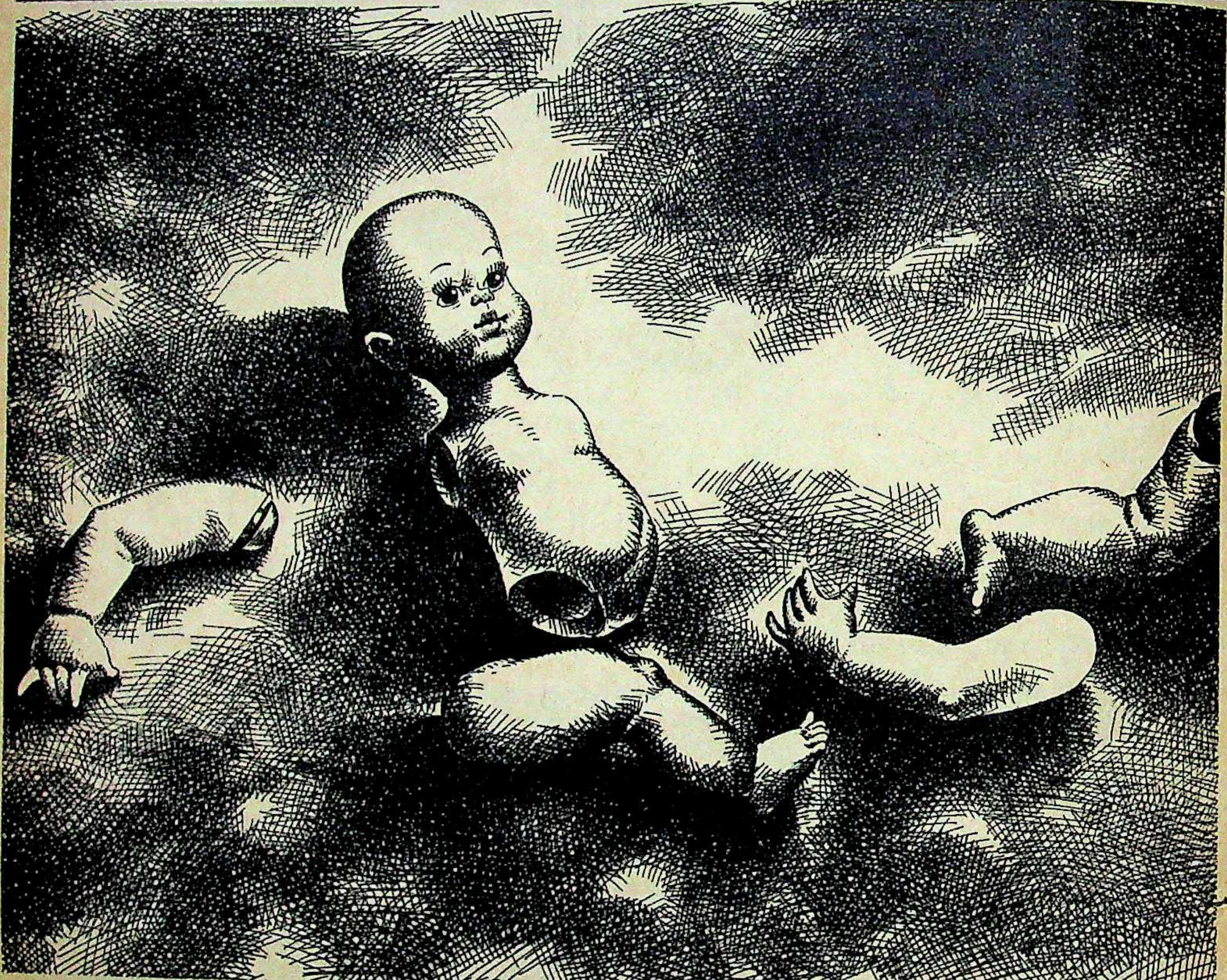

और मैं किसी को इसके टुकड़े नहीं करने दूंगा।

भारत एक विशाल हृदय है। इतना विशाल कि उसमें सारे परस्पर विरोधाभास, विभिन्न भाषा, विभिन्न रीति-रिवाज, विभिन्न जीवन पद्धतियां, विभिन्न धर्म-संप्रदाय, सब समा जाते हैं। भारत सबके लिये धड़कता है। फिर ऐसा कौन सा हृदय होगा जो भारत के लिये नहीं धड़कता? भारत अनेकता में एकता का चमत्कार है, जो पूरे संसार के लिये एक संदेश है कि जिस तरह भारत अपने तमाम अलग-अलग रंगों, रूपों और स्वरों के बावजूद एक है, यह पूरी दुनिया भी अपने तमाम विरोधाभासों के बावजूद एक हो सकती है।

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां एक तरफ दुनिया भारत से सीख ले रही है, वहीं भारत में कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें भारत की अनेकता में भारत की शक्ति नहीं, बारूद दिखाई पड़ती है जिसमें अपने स्वार्थों की चिनगारी लगाकर असंतोष की आग भड़काई जा सकती है। और जिस आग को सांप्रदायिकता, भाषा-विवाद, जातिवाद की हवा देकर एक धधकता हुआ सवाल बनाया जा सकता है। ताकि जब इस आग से भारत टुकड़े-टुकड़े हो जाय, तो उसका एक टुकड़ा हथियाकर वे उस पर हुकूमत कर सकें।

लेकिन उनकी ढाली हुयी तलवारों से ज़्यादा फौलादी है भारत। उनकी लगाई हुयी हर आग को शांत कर सकता है भारत। उनके तमाम क्षुद्र स्वार्थ मिलकर भी भारत की विशालता के आगे तुच्छ हैं। और हर भारतीय अपने हृदय में यह बात अच्छी तरह जानता है कि केवल सुदृढ़ और स्वस्थ भारत की धरती पर ही वे सुरक्षित हैं। क्योंकि भारत बचेगा तभी भारतवासी बचेंगे। क्योंकि भारत संपूर्ण रहेगा तभी भारत स्वस्थ रहेगा।

कांग्रेस (इ) देशवासियों के देश की सुरक्षा के दृढ़ संकल्प में सदैव उनके साथ है। पिछले ४२ साल से कांग्रेस (इ) ने देश को ऐसी विघटनकारी शक्तियों से सुरक्षित रखा है। देश के अंदर से भी और देश के बाहर से भी।

सिर्फ़ कांग्रेस (इ) भारत के लिये एक विश्वसनीय, मज़बूत केंद्रीय सरकार बनाने की क्षमता रखती है। ऐसी सरकार जो राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय हितों और देश की सीमाओं की सुरक्षा कर सके।

इसलिये अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइये। एक सुदृढ़, स्वस्थ, संपूर्ण भारत की सेवा में।

आपकी हर धड़कन भारत के लिये हो। कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये। भारत का हाथ मज़बूत कीजिए।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/36 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

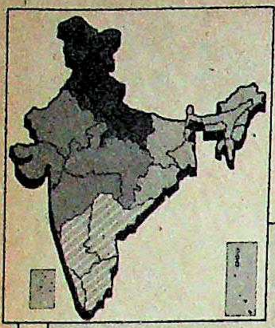

बदलाव के पक्ष में

सर्वेक्षण के अनुसार इंका को बहुमत नहीं मिल पाएगा, पूरी संभावना यही है कि किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत न मिले

लोकसभा में कांग्रेस (इ) की स्थिति

	126 सीटें उत्तर	132 सीटें दक्षिण	128 सीटें पूरब	143 सीटें पश्चिम	कुल इंकाई (I) सीटें	कुल लोकसभा सीटें	प्रतिशत सीटें
1989 पूर्वानुमान	**28**	**80**	**24**	**63**	**195**	**529***	**36.9**
1984	114	71	96	134	415	542	76.6
1980	80	95	60	118	353	527	66.9
1977	3	94	23	34	154	542	28.4

*असम के 14 सीटों के लिए मतदान नहीं हो रहा है

तालिका: राजीव मदान

चार्ट: बी.के. शर्मा

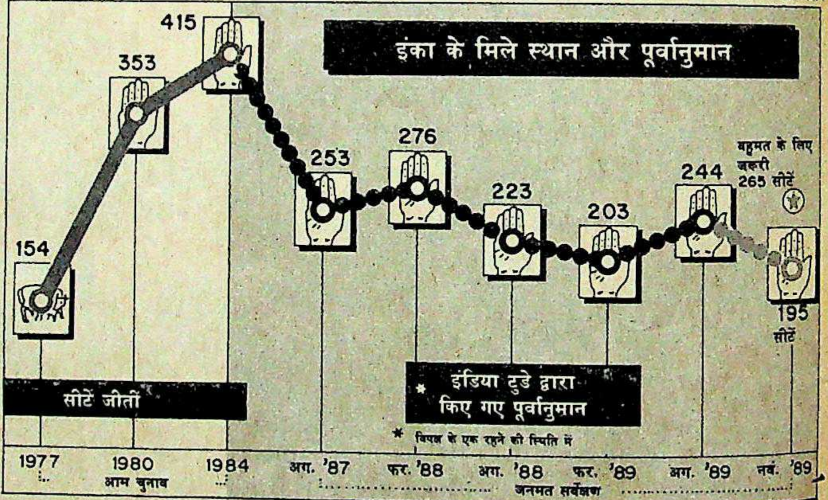

__इंडिया टुडे__ ने 37 लोकसभा क्षेत्रों में जनमत सर्वेक्षण करने के लिए 'मार्ग' (मार्केटिंग ऐंड रिसर्च ग्रुप) की सेवाएं लीं. चुनाव आंकड़ा विशेषज्ञ प्रणय राय ने सर्वेक्षण के लिए ऐसे क्षेत्रों का चयन किया जो पूरे देश के कुल चुनावी माहौल का प्रतिनिधित्व करते हैं. क्षेत्रों का चयन इनमें मतदान के पुराने रुखों के आधार पर ही किया गया है.

'मार्ग' के 200 से अधिक सर्वेक्षणकर्ताओं ने 12 से 16 नवंबर के बीच देश के 250 स्थानों पर जाकर 10,710 मतदाताओं से उनकी राय पूछी. इनमें 8,224 (77 फीसदी) ग्रामीण मतदाता थे. इन लोगों से पूछा गया कि अगले दिन चुनाव हुए तो वे किस पार्टी को वोट देंगे. उन्हें मतपत्र का नमूना दिया गया जिन पर क्षेत्र की प्रमुख पार्टियों के चुनाव चिन्ह छपे थे. मतदाताओं को अपनी पसंद के चुनाव चिन्ह पर निशान लगाकर मतपत्र सर्वेक्षणकर्ता के पास मौजूद मतपेटी में डालने को कहा गया. इनमें से 7.2 फीसदी ने मतपत्र पर निशान लगाने से इनकार कर दिया जबकि 5.4 फीसदी ने वहीं भी निशान नहीं लगाया. यह पूरा काम 'मार्ग' की ज्योति सिंह और सुमीता वेंकटरामन की देखरेख में हुआ.

इस सर्वेक्षण के नतीजों को प्रणय राय ने कंप्यूटर में भरा और कंप्यूटर ने इन 37 क्षेत्रों में मतदाताओं के रुख में आए बदलाव का हिसाब लगाया. इन्हीं परिणामों के आधार पर देश के अलग-अलग क्षेत्रों में शासक दल द्वारा जीती जाने वाली सीटों का अनुमान लगाया गया. इस काम के अनुसंधान संबंधी कार्यों में मदद नम्रता हरीश ने की.

जनमत सर्वेक्षण के दौरान यह बात भी सामने आई कि अभी भी कई मतदाता ऊहापोह में हैं. ऐसे मतदाताओं का अंतिम फैसला चुनाव परिणामों पर खासा असर दिखा सकता है. जनमत संग्रह के नतीजे प्रणय राय और 'मार्ग' ने निकाले हैं.

अगर आम चुनाव 12 नवंबर से 16 नवंबर के बीच होते (जिन दिनों में जनमत सर्वेक्षण कराया गया है) तो लोकसभा में इंका को मौजूदा लोकसभा में प्राप्त 415 स्थानों की जगह 195 स्थान ही मिलते जो बहुमत के लिए जरूरी 265 से काफी कम है. इस अनुमान के अनुसार 200 स्थान लेकर इंका राष्ट्रीय मोर्चे के बराबर ही रहेगी. इस हिसाब से देखें तो यही लगता है कि अगली सरकार भाजपा या माकपा (या दोनों) के सहयोग से ही बन पाएगी. ऐसी हालत में बड़ी संख्या में दलबदल कराने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता.

> **मतदान के दिन वोटों के प्रतिशत में थोड़ा भी अंतर निर्णायक हो सकता है. एक प्रतिशत का अंतर 15-20 सीटों के नतीजों पर असर डाल सकता है**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस जनमत सर्वेक्षण के अनुसार शासक दल के हाथ से जाने वाली 220 सीटों में से 160 तो 8 से 9 फीसदी मतदाताओं का फैसला बदल जाने से ही निकल जाएंगी. शेष 60 सीटें विपक्ष को आपसी तालमेल की वजह से 'प्रसाद' के रूप में मिलने जा रही हैं. (इस बार विपक्षी एकता सूचकांक करीब 85 पर रहेगा. 1984 में यह 74 और 1977 में सबसे अधिक, 90 था). इस एकता का सबसे अधिक फायदा उत्तरी क्षेत्र में होगा. दक्षिण में विपक्ष द्वारा इस बार एकता बनाए रखने में अपेक्षाकृत असफलता के कारण उसे अधिक घाटा होता दीखता है.

इंका की लोकप्रियता में गिरावट हर कहीं एक जैसी नहीं है. आंध्र में उसे पहले से अधिक स्थान मिलने की उम्मीद है जबकि दक्षिण के अन्य राज्यों में भी उसे अधिक नुकसान होने का डर नहीं है. लेकिन हिंदी-भाषी क्षेत्र में इस बार हवा एकदम बदली हुई दिखती है. राजस्थान और मध्य प्रदेश में इंका की संभावनाएं अंधकारमय लगती हैं. इन्हीं राज्यों में भाजपा को अगली लोकसभा में अच्छा-खासा प्रतिनिधित्व मिलने की संभावना है.

बिहार और उत्तर प्रदेश में भी इंका की लोकप्रियता में काफी गिरावट आने की संभावना है. हिंदीभाषी क्षेत्रों में विपक्ष की ताकत एक प्रमुख विपक्षी नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह के उभरने से काफी बढ़ी है.

कांग्रेस के लिए जिस मुद्दे ने सबसे ज्यादा परेशानी पैदा की है वह है भ्रष्टाचार. हालांकि इससे पहले भी यह प्रमुख मुद्दा रहा है पर इसने कभी लोगों के मतदान के फैसलों को प्रभावित नहीं किया. पहले मतदाता सभी दलों को बराबर भ्रष्ट मानता था. लेकिन इस बार पहला मौका है जब मतदाता को वी.पी. सिंह में भ्रष्टाचार से लड़ने की ताकत रखने वाले नेता की छवि दिखाई दे रही है.

जहां तक विपक्ष की बात है, जो चीज उसे चुनाव के दिन तक परेशान करती रहेगी वह लोगों की यह धारणा है कि अगर विपक्ष सत्ता में आ भी गया तो वह अधिक दिनों तक सरकार नहीं चला पाएगा. यह धारणा अंतिम दिन भी अनिश्चित मन वाले मतदाताओं के कुछ वोट इंका को दिलवा सकती है.

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मतदान के दिन से पहले अगर एक फीसदी मतदाताओं का मन भी बदला तो 15 से 20 सीटें इधर से उधर हो सकती हैं. इस सर्वेक्षण और मतदान के दिन के बीच बदलने वाली राय तथा सर्वेक्षण के लिए नमूने चुनने की गलती के कारण 3 फीसदी तक का अंतर आ सकता है. इसका मतलब हुआ कि सर्वेक्षण नतीजों और चुनाव के अंतिम नतीजों के बीच 45 से 60 सीटों का फर्क आ सकता है जो बहुमत वाली सरकार बनवाने के लिए काफी है.

हैरानी की बात है कि अयोध्या में 9 नवंबर को हुए शिलान्यास के बावजूद पहले के मुकाबले 10.4 फीसदी अधिक मुसलमान मतदाता शासक दल के पक्ष में हैं. इसी प्रकार हरिजनों और वनवासियों में भी इंका को औसत से 9 फीसदी अधिक समर्थन हासिल है. लेकिन मतदान की उम्र घटाने से वोटर बने लोग (18-21 आयु वर्ग) इंका की तरफ उतने झुके हुए नहीं हैं. जनता दल और भाजपा को इनका अधिक समर्थन (औसत से 3.5 फीसदी अधिक) प्राप्त है. इसके अलावा महिला मतदाताओं पर भी इंका की पकड़ पहले से ढीली हुई है. विपक्ष को ग्रामीण मतदाताओं के मुकाबले शहरी मतदाताओं में 2 फीसदी ज्यादा समर्थन हासिल है.

जनमत सर्वेक्षण के अनुसार 60 फीसदी से भी अधिक लोग बदलाव चाहते हैं. ऐसे में लगता है कि राजीव ने अपने 80 फीसदी मौजूदा सांसदों को फिर से मैदान में उतार कर गलती की है. वे मतदाताओं के बदलाव के मूड को भांप नहीं पाए. शासक दल को

चुनाव के प्रमुख मुद्दे

इंका के लिए | **विपक्ष के लिए**

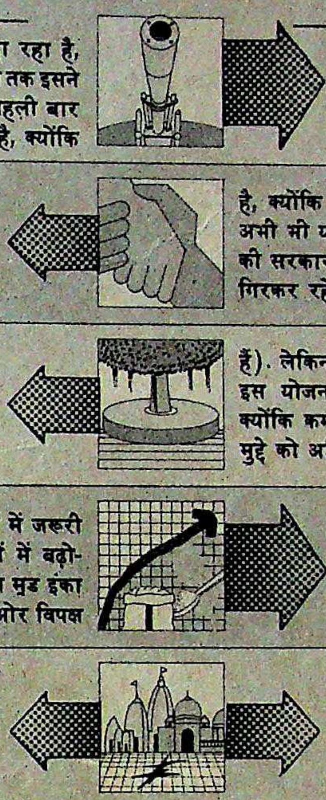

भ्रष्टाचार: शुरू से एक मुद्दा रहा है, लेकिन मतदान के रुख पर अब तक इसने खास असर नहीं डाला. अब पहली बार यह अहम चुनावी मुद्दा बना है, क्योंकि वी.पी. सिंह ने अपनी छवि ऐसे नेता के रूप में पेश की है जो भ्रष्टाचार रोकने में ज्यादा सक्षम है.

विपक्षी एकता: यह ऐसा मुद्दा है जो मतदान के आखिरी क्षण में भी मतदाता का मन बदल सकता है, क्योंकि लगभग दो-तिहाई मतदाता अभी भी यही मानते हैं कि यदि विपक्ष की सरकार बनती है तो वह देर-सबेर गिरकर रहेगी.

पंचायती राज: इस मुद्दे पर इंका का पलड़ा भारी है (65 फीसदी से ज्यादा लोग इस विधेयक के पक्ष में हैं). लेकिन ज्यादातर ग्रामीण मतदाता इस योजना से अब भी अनजान हैं क्योंकि कम समय के कारण इंका इस मुद्दे को अधिक नहीं भुना पाई.

महंगाई: पिछले कुछ महीनों में जरूरी उपभोक्ता जिंसों की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर मतदाताओं का मूड इंका के खिलाफ है. लेकिन दूसरी ओर विपक्ष भी यह आश्वासन देने में विफल रहा है कि वह इस मामले में इंका से बेहतर काम करेगा.

सांप्रदायिकता: इस मुद्दे को सभी पार्टियां जम कर—परोक्ष रूप से ही सही—भुनाती रही हैं. इस बार यह सबसे ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है और आखिरी क्षण में मतदाता का निर्णय बदल सकता है.

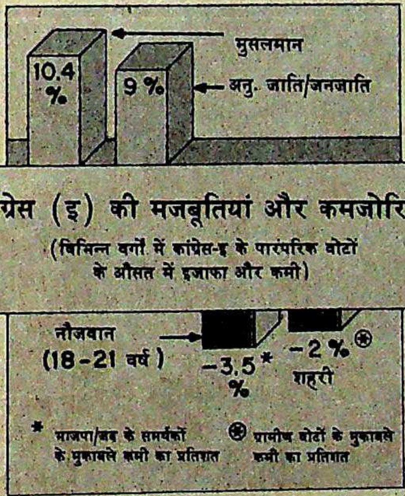

कांग्रेस (इ) की मजबूतियां और कमजोरियां

(विभिन्न वर्गों में कांग्रेस-इ के पारंपरिक वोटों के औसत में इजाफा और कमी)

अगर 8 या 9 फीसदी वोट भी इंका के खिलाफ गए तो उसे 160 सीटों का नुकसान हो सकता है, जबकि एका के कारण विपक्ष को 60 सीटें ज्यादा मिलेंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थन देना बंद करने वाले 8 से 9 फीसदी मतदाता एक प्रभावी और मान्य विकल्प तलाशने वाले लोग हैं. हर चुनाव में भारतीय मतदाताओं की बढ़ती बेचैनी किसी भी नई सरकार के लिए एक चेतावनी है कि अब मतदाता उसके कामकाज का अधिक कड़ा मूल्यांकन करेगा.

अगर यह सर्वेक्षण चुनाव के अंतिम नतीजे का स्पष्ट संकेत देता है तो इसका मतलब है कि यह साफ नहीं है कि अगली सरकार कौन बनाएगा. हालांकि मतदाताओं के रुख में बदलाव आम तौर पर निर्णायक होता है और स्पष्ट बहुमत दिलाने वाला भी. लेकिन इस बार संभावना यही है कि यह बदलाव हफ्तों चलने वाली राजनैतिक, संवैधानिक अनिश्चितता का कारण बन सकता है.

"संविधान के अनुसार प्रधानमंत्री को किसी पार्टी का नहीं, लोकसभा का समर्थन प्राप्त होना चाहिए.

—जुलाई 1987 में राष्ट्रपति चुने जाने के बाद राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन.

राष्ट्रपति

आसन्न परीक्षा

पचहत्तर वर्षीय रामास्वामी वेंकटरामन के लिए परीक्षा की घड़ी शायद आने ही वाली है. इस पखवाड़े उनके फैसले भारतीय राजनीति की दिशा तय करेंगे. पिछले पखवाड़े ज्यों-ज्यों यह संभावना बनने लगी कि चुनाव के बाद संसद में किसी भी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाएगा, सबकी आंखें राष्ट्रपति भवन की ओर मुड़ने लगीं. 1979 में भी ऐसा ही हुआ था जब तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने चरण सिंह को प्रधानमंत्री नियुक्त करने का विवादास्पद फैसला किया था.

एक बार फिर काफी कुछ राष्ट्रपति पर निर्भर होने जा रहा है. यह देश के प्रथम नागरिक के अधिकारों के बारे में संवैधानिक अस्पष्टता का नतीजा है. संविधान में बस इतना ही कहा गया है कि राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत का समर्थन प्राप्त व्यक्ति को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करेगा.

यह सवाल अब इसलिए अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि 1977 की तरह इस बार इंका का विकल्प कोई एक पार्टी नहीं है. इस बार पांच पार्टियों—जनता दल, तेलुगु देशम, द्रमुक, असम गण परिषद और कांग्रेस (एस)—को मिलाकर बना राष्ट्रीय मोर्चा उसका विकल्प है. अगर इंका और राष्ट्रीय मोर्चे में से किसी को भी बहुमत नहीं मिला तो राष्ट्रपति के लिए धर्मसंकट खड़ा हो जाएगा. इस बात की संभावना इसलिए भी है क्योंकि राष्ट्रीय मोर्चा सिर्फ 347 सीटों पर और इसका प्रमुख घटक जनता दल 238 सीटों पर चुनाव लड़ रहा है. इस जबरदस्त मुकाबले में भाजपा (जो 195 सीटों पर लड़ रही है) और माकपा (जो 66 सीटों पर से लड़ रही है) ही पलड़े को किसी तरफ झुका सकती हैं. दलबदल विरोधी कानून के कारण दलबदल की संभावना भी नहीं.

चुनाव के बाद इस तरह की संभावनाएं बन सकती हैं:—

पहली संभावना: राष्ट्रीय मोर्चा लोकसभा में सबसे बड़े गुट के रूप में आए और जनता दल को इंका से अधिक सीटें मिलें. तब राष्ट्रपति को राष्ट्रीय मोर्चा या जनता दल के सांसदों के नेता को सरकार बनाने का न्यौता देना ही होगा.

दूसरी संभावना: इंका स्पष्ट बहुमत वाली नहीं बल्कि सबसे अधिक स्थान पाने वाली अकेली पार्टी बनकर उभरे. उसे राष्ट्रीय मोर्चे से कम परंतु अकेले जनता दल से अधिक स्थान प्राप्त हों. ऐसी स्थिति में पुरानी परंपरा गड़बड़ रही है. ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति इंका के नेता को भी सरकार बनाने का न्यौता दे सकते हैं. 1979 में इसी प्रकार संजीव रेड्डी ने जनता पार्टी सरकार गिरने के बाद दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के नेता चरण सिंह को सरकार बनाने का न्यौता दिया. हरियाणा में राज्यपाल जी.डी. तपासे ने लोकदल-भाजपा मोर्चे के दावे को ठुकरा दिया जिसने न केवल साथ मिलकर चुनाव लड़ा था बल्कि इंका से अधिक सीटें भी जीती थीं.

लेकिन राजनैतिक मोर्चे को एक दल के रूप में मान्यता देकर सरकार बनाने का बुलावा देने के भी उदाहरण हैं. जैसे 1983 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में इंका को 81 स्थान मिले और वह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई. लेकिन सरकार बनाने का न्यौता जनता पार्टी-क्रांति रंगा मोर्चे को दिया गया जिसने 224 सदस्यों वाले सदन में 95 स्थान प्राप्त किए थे. इसमें जनता पार्टी के 63 सदस्य ही थे.

तीसरी संभावना: अगर राष्ट्रीय मोर्चा और इंका द्वारा जीती गई सीटों की संख्या में ज्यादा अंतर न हुआ—मान लें राष्ट्रीय मोर्चा को 220 और इंका को 210 सीटें मिलीं—तब भी राष्ट्रपति का फैसला काफी महत्वपूर्ण हो जाएगा. तब उन्हें यह फैसला करना होगा कि कौन पार्टी स्थायी सरकार दे सकती है. हो सकता है कि तब उन्हें भाजपा (मान लें इसे 50 सीटें मिलीं) की ओर से यह संदेश मिले कि वह मोर्चे को समर्थन देती है (इस प्रकार मोर्चे को 270 सदस्यों का समर्थन मिल जाएगा) और माकपा तथा अन्य पार्टियों (मान लें इन्हें कुल 60 सीटें मिलीं) से इंका को समर्थन देने का संदेश मिले. 1979 में भी रेड्डी के लिए ऐसा ही संकट था.

यानी अब वेंकटरामन के लिए अपनी भूमिका तय करने का वक्त आ गया है. अभी तक तो वे गैर-विवादास्पद रहे हैं. वे कायदे-कानून के पक्के हैं और मुंह नहीं खोलते. खुद भी वे उक्त संभावनाओं पर सोचते रहे हैं. हाल में भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने जब उनसे भेंट की तो उन्होंने इस बारे में चर्चा भी की. इससे पहले केंद्रीय मंत्री पी. शिवशंकर और पी. चिदंबरम भी उनकी राय जानने के लिए उनसे मिल चुके थे. अभी तक राष्ट्रपति इन सभी लोगों की बात ध्यान से सुनते भर रहे हैं. लेकिन शायद जल्दी ही उन पर यह मुश्किल फैसला करने का बोझ आएगा कि देश की बागडोर किसे सौंपें. यह फैसला करते समय उन्हें न सिर्फ न्याय करना होगा बल्कि यह एहसास कराना भी होगा कि उनका फैसला न्यायसंगत है.

—प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें

जिनमें छलके
मुग़लों की आन-बान
सदियों की शान और
प्राकृतिक अद्भुतता!

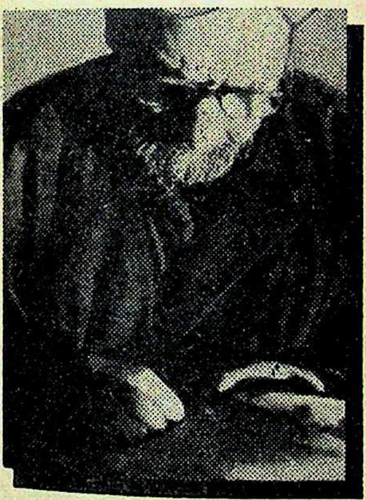

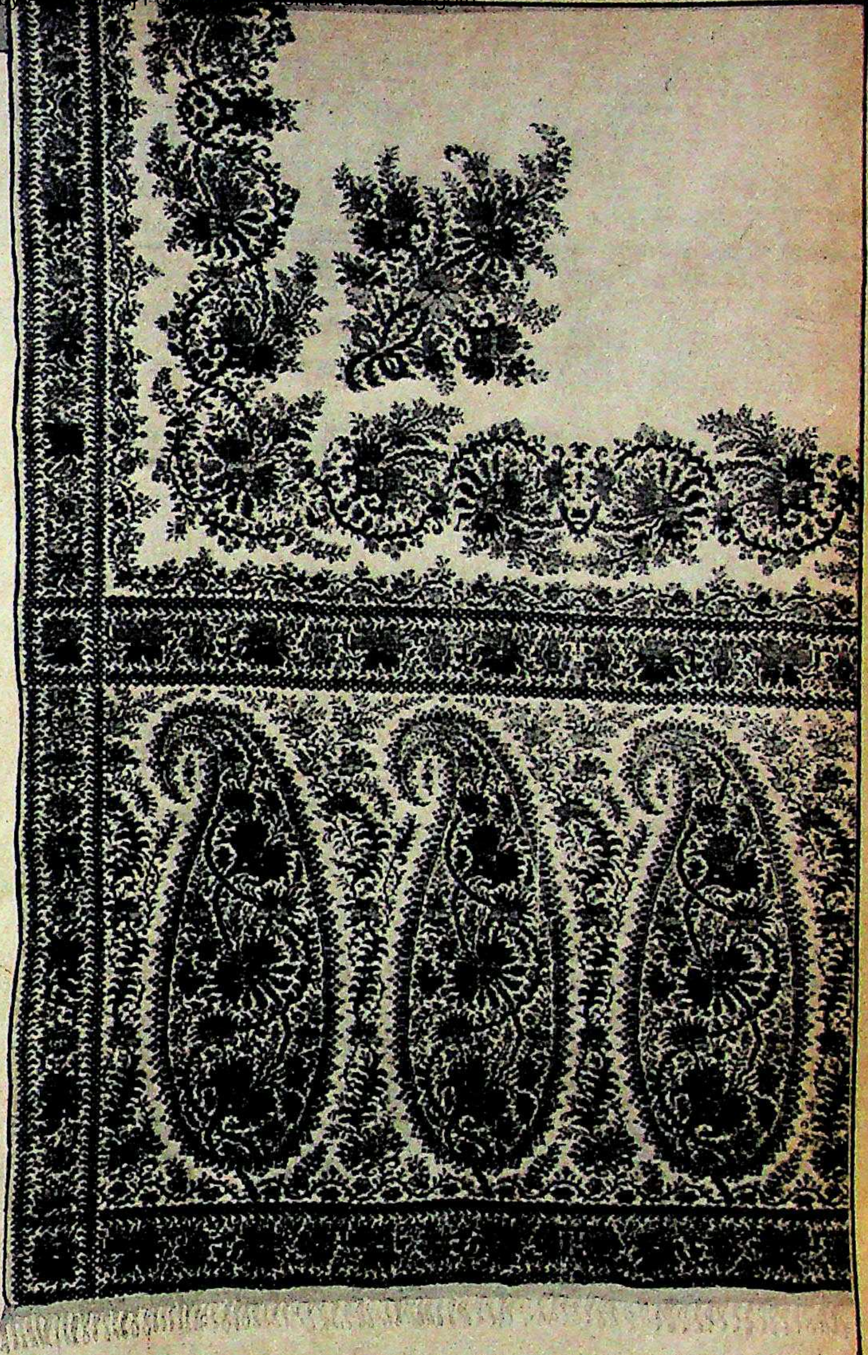

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रही हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है — वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—जिनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

Trends/1798/89

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 583154

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

चुनावी महाभारत का कुरुक्षेत्र

बेहद अहम राज्य होने के कारण संघर्ष चरम पर

इस चुनावी महाभारत के लिए उत्तर प्रदेश मानो कुरुक्षेत्र बन गया है जहां दोनों पक्ष गौरव या अस्तित्व या फिर दोनों की रक्षा के लिए जूझ रहे हैं. देश का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य (मतदाताओं की संख्या: 7.94 करोड़) होने के कारण यहां सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों का ही बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है. वैसे, उत्तर प्रदेश को जीते बिना भी देश की बागडोर संभालना आंकड़ों के हिसाब से तो असंभव नहीं है, भले ही लोकसभा की करीब 16 फीसदी सीटें—85 सीटें—इसी राज्य में हैं. लेकिन राजनैतिक रूप से यह असंभव ही है, खासकर वर्तमान संदर्भों में, जबकि प्रधानमंत्री पद के दो बड़े दावेदार राजीव गांधी और विश्वनाथ प्रताप सिंह अपने राजनैतिक जीवन के सबसे अहम चुनावी संघर्ष में उत्तर प्रदेश के मतदाताओं को लुभाने के लिए जी-जान से जुटे हैं. इस युद्ध में महारथियों की भी कमी नही है. चंद उदाहरण—प्रधानमंत्री पद के छुपे रुस्तम दावेदार चंद्रशेखर के अलावा अरुण नेहरू, अजीत सिंह तथा मेनका गांधी जैसे चमकते सितारे या फिर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के सर्वेसर्वा कांशीराम, और इंका के नारायण दत्त तिवारी भी, जो चाहते तो हैं राजा बनना मगर जिन्हें अंततः शायद किसी और का राज्याभिषेक करके संतोष करना पड़े.

कहने को तो तिवारी सिर्फ विधानसभा के लिए चुनाव लड़ रहे हैं जिसमें उनकी पार्टी विपक्ष और खुद अपनी कमजोरियों से जूझते हुए सत्ता में वापसी के लिए प्रयासरत है. लेकिन राज्य में लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ-साथ करवाने और टिकटों के बंटवारे जैसे कई महत्वपूर्ण राजनैतिक फैसलों में तिवारी की अहम भूमिका से जाहिर हो गया है कि वे इंका में क्षेत्रीय नेताओं के नए 'सिंडीकेट' के अगुआ की हैसियत में पहुंच गए हैं. यह सिंडीकेट प्रधानमंत्री की कभी अवहेलना करता है तो कभी जोड़-तोड़ करता है और कभी उन्हें सलाह दिया करता है. जाहिर है, तिवारी इस चुनाव को सत्ता शीर्ष तक पहुंचने की अपनी यात्रा का अंतिम नहीं तो उससे पहले का कदम मानते हैं.

इतना कुछ दांव पर लगे होने के कारण आश्चर्य नहीं कि राज्य में अब तक का सबसे तीखा, जोरदार और उद्देश्यपूर्ण प्रचार अभियान चल रहा है. इस अभियान की शुरुआत तो धीमी हुई पर पखवाड़े के बीतते-बीतते इसने जोर पकड़ लिया. पहले दौर की समाप्ति के बाद यही लगा कि विपक्ष को ऐसी बढ़त मिल गई है जिसे अंतिम दौर में, जबकि हालात बेकाबू होने लगते हैं, कम करना इंका के लिए भारी मुश्किल साबित हो सकता है. सो, इंकाई खेमे में परेशानी साफ दिखने लगी है. इसके प्रचार प्रबंधक लोकसभा चुनाव के नतीजों में 'कुछ शिकस्तों' की गुपचुप आशंका तो व्यक्त करते हैं पर उन्हें विधानसभा चुनाव में 'अधिकांश जगहों पर तिकोने संघर्ष

- *भैया का, भौजाई का वोट कांग्रेस-आई का.*

  इंकाई नारा

- *न यहां कोई जनता दल है, न यहां कोई डीएस-फोर, राजीव गांधी के पंजे से हारेंगे सब डाकू चोर.*

  इंकाई नारा

- *आप पिछले पांच वर्षों से कहां थे? आपके इंतजार में मैं सूखा जा रहा हूं.*

  ससामऊ क्षेत्र से इंकाई उम्मीदवार की अगवानी में कानपुर की सड़कों पर विशाल बोर्ड पर जूते के कटआउट में लिखा नारा

- *उनकी हर धड़कन भारत के लिए है, भारत रहे चाहे....*

  बनारस से एक निर्दलीय उम्मीदवार का पोस्टर

रघु राय

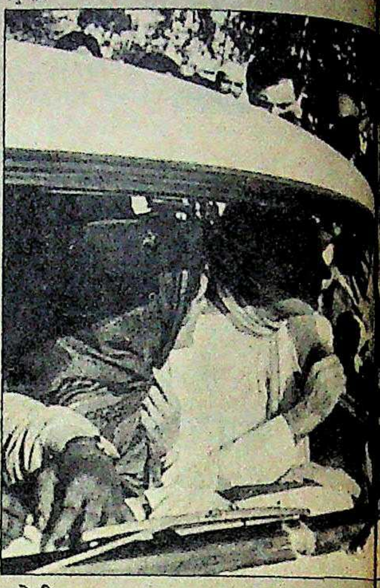

अमेठी

नाती बनाम पोते की लड़ाई

महात्मा गांधी के पोते का मुकाबला नेहरू के नाती से

अमेठी के मतदाताओं के सामने एक बड़ी समस्या है. पिछले चुनावों में उनके सामने स्पष्ट पसंद थी—देश के अगुआ राजनैतिक परिवार के वंशज को चुनने की. पर अब उन्हें दो गांधियों के बीच चुनाव करना है.

एक ही उपनाम वाले कोई दो शख्स व्यक्तित्व अथवा राजनैतिक तौर-तरीकों में शायद ही इतने भिन्न हों. एक राजीव गांधी हैं, जिनके परिवार ने सबसे सुरक्षित सीट समझकर उत्तर प्रदेश के मध्य में स्थित, गरीबी और बदहाली से त्रस्त अमेठी को चुना. अमेठी ने गांधी परिवार को सिर आंखों पर रखा, जिससे उसकी रंगत ही बदल गई. फैक्टरियों, सड़कों, ट्यूबवेल, टीवी सरीखी चीजों ने जल्द ही इस चुनाव क्षेत्र को देश के सबसे सुविधा-संपन्न क्षेत्र में बदल डाला. आज राजीव अपने मतदाताओं से इस सारे विकास की कीमत मांग रहे हैं.

इस अभियान में वे कम-से-कम तीन बार खुद यहां का दौरा कर चुके हैं. 200 से अधिक जीपों पर लगे लाउडस्पीकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिंदर चावला

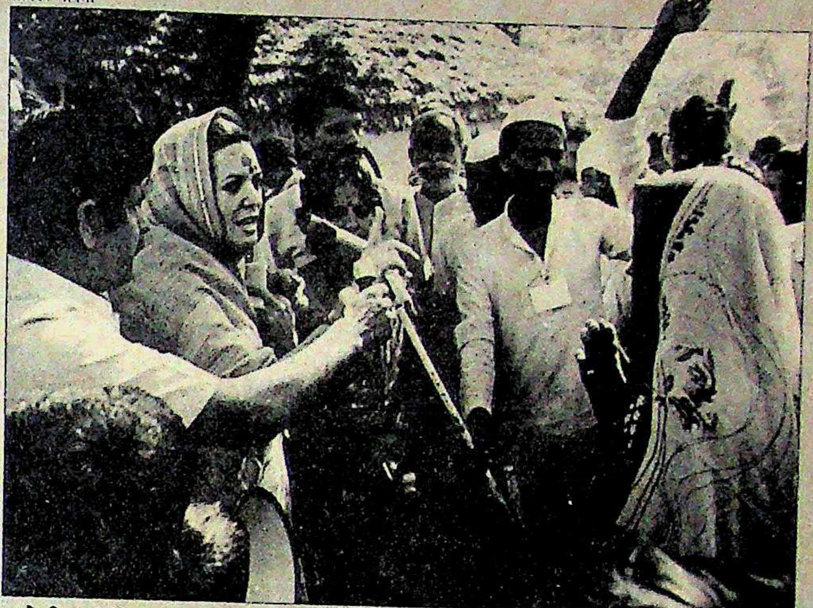

अमेठी पहुंचने पर राजीव; प्रचार करती सोनिया; और (नीचे) घर-घर जाते राजमोहन: शैली अलग-अलग

उनका संदेश घर-घर पहुंचा रहे हैं. इनमें 160 जीपें तो एकदम नई हैं और कइयों पर तीन-तीन वीडियो परदे लगे हुए हैं. 10 वीडियो रथ मतदाताओं को लुभाने में लगे हैं. सैकड़ों लाउडस्पीकरों पर उनकी मां के भाषणों के कैसेट लोगों पर भावनात्मक असर जमा रहे हैं. राजीव के करीबी दोस्त और विश्वासपात्र सतीश शर्मा रात-दिन प्रचार अभियान में जुटे हैं.

अमेठी से छह किलोमीटर बाहर कुशितली गांव में राजीव का प्रचार दस्ता पहुंचता है. पोजो इंजन लगी एक नई महिंद्रा जीप में लगे तीनों परदों पर श्रीमती गांधी राजीव के बचपन के बारे में बता रही हैं. इसके बाद उनकी अंत्येष्टि का दृश्य आता है जिसमें राजीव और सोनिया का चेहरा आंसुओं से तर नजर आता है. इसके बाद धुआं छा जाता है और एक परिंदा उसमें से प्रकट होता है. दृश्य बदलता है और राजीव एक बच्ची के आंसू पोंछते दिखाई देते हैं.

दूसरी ओर कसारा गांव में सांझ के धुंधलके में राजमोहन गांधी अपनी पत्नी उषा के साथ गांव के हरिजन मुहल्ले में एक खाट पर बैठे हैं. चांदनी के उजाले में वे बेहद सहजता से पूछते हैं, "महात्मा गांधी कौन थे?" एक ग्रामीण कहता है, "एक महान व्यक्ति, जिन्होंने देश पर शासन किया." वे बताते हैं, "न-न, उन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलवाई लेकिन शासन नहीं किया. यही उनकी महानता थी. मैं तो उनके पासंग बराबर भी नहीं. फिर भी मैं उनका पोता हूं."

उनका प्रचार मुख्यालय एक अनजान-से होटल संध्यम का एक छोटा-सा कमरा है. कांशीराम भी बगल वाले कमरे में ठहरते हैं. वहीं हाल ही में मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त सीधे-सादे गांधीवादी अर्थशास्त्री लक्ष्मीचंद्र जैन बताते हैं, "हमारे पास महज 11 जीपें हैं जिनमें से चार काम नहीं कर रहीं. लेकिन अगले 48 घंटों में और आ जाएंगी." राजमोहन के पास जो कार्यकर्ता हैं, वे अमेठी से विधानसभा उम्मीदवार संजय सिंह के समर्थकों ने उपलब्ध कराए हैं. वे खुलेआम मतदान केंद्रों पर कब्जा करने की शेखियां बघारते हैं. ये बातें राजमोहन को पसंद नहीं.

लेकिन इंका जानती है कि राज्य भर में चल रही लहर अमेठी की सीमाओं पर शायद ही रुके. उसे बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष कांशीराम के रूप में एक और अप्रत्याशित चुनौती का सामना करना पड़ रहा है. वे हरिजनों के सारे वोट तोड़ सकते हैं.

इसलिए इंका कोई मौका नहीं चूक रही. पहली बार सोनिया गांधी जगदीशपुर के नजदीक तातारपुर नहर के विश्रामगृह में डेरा डालकर खुद अमेठी में प्रचार कर रही हैं. वे धूल भरे रास्तों को नापती हैं, गावों में रुकती हैं, तीन इंच की हील की जूती के बावजूद गांव के ऊंचे-नीचे रास्तों को पार करती हैं, इंका के चुनाव चिन्ह वाली बिंदियां औरतों के माथे पर लगाती हैं और इंका के हाथ के निशान की ओर इशारा करती हैं. हिंदी में उनका उच्चारण सही होता है, "कृपया मेरे पति को ही वोट दीजिए और पंजे पर मुहर लगाइए." उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मैं इन लोगों के बीच आठ साल से काम करती आई हूं. इसलिए प्रचार करना मेरे लिए कोई नई बात नहीं है."

बहरहाल प्रचार अभियान में उनकी सक्रिय भागीदारी से राजीव खेमे की चिंता ही झलकती है. बाकी क्षेत्रों में नतीजा चाहे कुछ भी रहे पर अमेठी एकमात्र ऐसी सीट है जहां इंका जीतने के लिए पूरी बाजी लगा देगी.

—शेखर गुप्ता, अमेठी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चलते आसानी से बहुमत पाने की उम्मीद है. तिवारी दार्शनिकों वाले अंदाज में कहते हैं, "जैसे हालात हैं उन्हें देखते हुए तो हम ठीकठाक ही चल रहे हैं." राज्य इंका अध्यक्ष बलराम सिंह यादव ने कहा, "यह चुनाव 1984 के चुनाव से काफी भिन्न है. लेकिन मतदान के दिन तक हम निश्चित ही आगे हो जाएंगे."

इंका के नेतागण बचाव और बहानेबाजी की मुद्रा में बात करते हैं लेकिन विपक्षी नेताओं में भरपूर विश्वास दिखता है. पिछले हफ्ते ब्राह्मणबहुल पिछड़े क्षेत्र बिल्हौर में हरे रंग की मारुती जिप्सी पर दिन भर के तूफानी अभियान के बाद अरुण नेहरू ने भविष्यवाणी की, "हम एक लहर देख रहे हैं. और लहर में प्रतिष्ठा, जाति, धर्म, हैसियत सब कुछ बह जाता है. ऐसी धुलाई होगी कांग्रेस की, पिटाई होगी कि वे स्वाहा हो जाएंगे."

अपनी खासियत के अनुरूप नेहरू शायद विपक्ष के हौसले का कुछ ज्यादा ही बखान कर रहे हैं. लेकिन इस हौसले की ठोस वजहें भी हैं. राज्य भर में दौरे से 'इंडिया टुडे' के संवाददाताओं को यही एहसास हुआ है. कांग्रेस कहीं भी विपक्ष के आरोपों का जवाब देती नहीं दिखती है. वह विपक्षी गठजोड़ पर आरोप मढ़ने और उनकी एकता के खोखलेपन की ही बातें उठा रही है. इसके चलते प्रचार काफी दिलचस्प हो उठा है.

चार्ट: बी.के. शर्मा

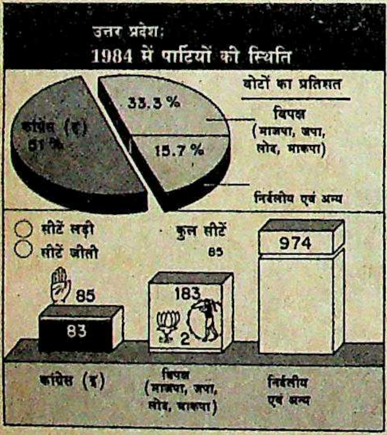

इंका के सामने चुनौती इसलिए भी कठिन हो गई है कि राज्य की 85 में से 78 लोकसभा सीटों पर सीधा मुकाबला है. कुछ हद तक वोट काटने का काम बसपा जैसी छोटी-मोटी पार्टियां ही कर सकती हैं. चार सीटों पर इंका के खिलाफ जनता दल और भाजपा दोनों के उम्मीदवार हैं. दोनों दलों के नेता इसे 'दोस्ताना लड़ाई' कहते हैं. सिर्फ तीन सीटों पर ही तिकोना संघर्ष है.

लेकिन विधानसभा चुनावों में विपक्ष की स्थिति इतनी उत्साहवर्द्धक नहीं है. इस चुनाव के लिए जनता दल और भाजपा में तालमेल नहीं हो सका. नतीजतन, इंका को 425 में से 350 सीटों पर मानो तिकोने संघर्ष का उपहार मिल गया है.

राज्य की अहमियत के मद्देनजर यह आश्चर्यजनक नहीं है कि प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इन चुनावों के लिए अपनी पार्टी का प्रचार अभियान यहीं से शुरू किया. दरअसल राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद से चर्चा में आए शहर फैजाबाद से ही उन्होंने अपना अभियान छेड़ा. यहां की सभा में रामराज्य कायम करने का वादा करने के बाद वे देश भर में घूम-फिरकर इस राज्य में पहुंच रहे हैं. इस तरह उन्होंने राज्य में औसतन हर दिन दो सभाएं कीं. मुख्यमंत्री तिवारी भी अपने फ्रांसीसी डॉफिन हेलिकॉप्टर से समूचे राज्य को जैसे नापते फिर रहे हैं.

इसके विपरीत बिल्हौर (अरुण नेहरू), बहराइच (आरिफ मुहम्मद खान), बलिया (चंद्रशेखर) और पीलीभीत (मेनका गांधी) जैसे कुछ क्षेत्रों को छोड़ दें तो जनता दल का प्रचार अभियान देर से और ढीलेढाले ढंग से शुरू हुआ. लेकिन वी.पी. सिंह सीटों के तालमेल की कभी न खत्म होने वाली कसरत से आखिरकार मुक्त होकर 7 नवंबर को ट्रेन से अपने चुनाव क्षेत्र फतेहपुर पहुंचे. इसके साथ ही माहौल बदलने लगा. उन्होंने राज्य भर में दौरा किया और लगा जैसे लड़ाई का बिगुल बज गया हो. नुक्कड़ पर, सड़क के किनारे गांवों में रुक-कर स्कूली छात्रों और हरिजनों, किसानों से अनौपचारिक मुलाकातें और बातें करके उन्होंने बुझते राजनैतिक शोलों को जैसे एकदम हवा दे दी.

हालांकि वी.पी. सिंह दिशाहीनता के माहौल में भी अभियान के पहले हफ्ते में एक लहर पैदा करने में सफल तो हुए हैं. परंतु इंका के संगठनात्मक तामझाम, संसाधन और व्यापक पहुंच के अलावा हरिजनों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के वोट बैंक पर उसकी मजबूत पकड़ तथा स्थायित्व के उसके वादों की काट तैयार करने के लिए इस लहर को बहुत जोरदार होना होगा. दोनों पार्टियों की प्रचार शैली में फर्क ही संसाधनों के मामले में इनकी हालत को बयान कर देता है. इंका का प्रचार हर जगह इलेक्ट्रॉनिक ध्वनि यंत्रों और रंगारंग चमकीले पोस्टरों से हो रहा है तो जनता दल के पास सिर्फ जबान

फतेहपुर

फैसला हो चुका है

विश्वनाथ प्रताप सिंह जीत के प्रति पूर्णतः आश्वस्त

चुनाव प्रचार के लिए इससे ज्यादा माकूल मंच और कौन-सा हो सकता था. फतेहपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के बीचोबीच गुजरती ग्रांट ट्रंक रोड से

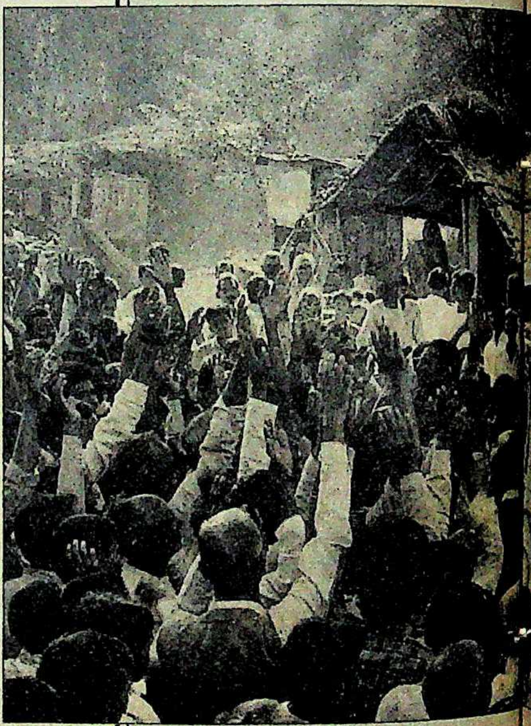

तीन किमी हटकर गोगौली गांव में केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री और इस क्षेत्र से इंका प्रत्याशी हरिकृष्ण शास्त्री पक्की चौपाल पर खड़े करीब 100 ग्रामीणों को संबोधित कर रहे हैं. उनके पीछे की ओर पक्का पंचायत घर है, जिस पर टीवी एंटेना लगा है. बाईं ओर पक्का कुआं और सामने एक ग्रामीण बैंक है. गांव के किसी भी व्यक्ति से पूछिए वह बता देगा कि यह चौपाल, पंचायत घर, कुआं और बैंक शास्त्री जी की बदौलत ही बन पाए हैं.

"क्या शास्त्री जी ने यहां के लिए काम नहीं किया?"

"हां, बहुत कुछ किया है. कृषिमंत्री के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रूप में तो और भी ज्यादा."

"मतलब यह कि वे बहुत अच्छे हैं?"

"जी हां, अच्छे भी हैं और मृदुभाषी भी. लेकिन..."

"लेकिन, क्या?"

"इस बार राजा सा'ब यहां से चुनाव लड़ रहे हैं. इसलिए इस चुनाव में वोट उन्हें ही देना होगा."

शास्त्री जब इस क्षेत्र के विकास में अपने योगदान का जिक्र करते हैं तो श्रोतागण सहमति में सिर हिला देते हैं. पर तत्काल बाद वहां मौजूद लोगों की राय पूछने पर वही भावनाएं उजागर होती हैं कि शास्त्री जी बेशक बहुत अच्छे नेता हैं लेकिन राजा सा'ब का मामला अलग है.

जोगिंदर चावला

22 वर्षीय फैक्टरी मजदूर विजय मोहन कहते हैं, "हम प्रधानमंत्री चुनने के लिए वोट डाल रहे हैं. इसमें बाकी मुद्दे गौण हैं."

इंका और विपक्ष में कई लोग ऐसे हैं जिनका कहना है कि वी.पी. सिंह के लिए फतेहपुर से ज्यादा सुरक्षित क्षेत्र कोई और नहीं हो सकता था. गंगा के किनारे फैला यह क्षेत्र गरीब भी है और पिछड़ा हुआ भी. इसके एक ओर रायबरेली और अमेठी जैसे दुलारे निर्वाचन क्षेत्र हैं तो दूसरी ओर डाकुओं से आतंकित बुंदेलखंड. और अब इसे ऐसे प्रतिनिधि का इंतजार है जो इसकी तकदीर पलट कर रख दे.

इसके अलावा इस क्षेत्र में वी.पी. सिंह को समर्थन देने वाले ठाकुर कुल मतदाताओं के 18 फीसदी हैं. लेकिन संख्या से भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात उनका दबदबा है. ठाकुरों की निष्ठा वी.पी. सिंह को यहां से वोट तो दिलवाएगी पर दलित और कमजोर वर्गों का असंतोष भी उन्हें झेलना पड़ रहा है.

वी.पी. सिंह ने हालांकि अपनी छवि एक गैर-जातिवादी, मृदुभाषी नेता की बनाई हुई है लेकिन आक्रामक रवैया रखने वाले उनके समर्थक ठाकुर इतने विनम्र नहीं हैं. पिछड़ी जाति के लोग इसकी शिकायत भी करते हैं. वी.पी. सिंह को इस निर्वाचन क्षेत्र का दो बार प्रतिनिधित्व कर चुके अपने भाई संत बख्श सिंह की अकर्मण्यता का आरोप भी झेलना पड़ सकता है. लेकिन वी.पी. सिंह समर्थक इस बात को खास अहमियत नहीं देते.

फिर, जिस तरह वी.पी. सिंह एक ही साल के भीतर फिर लालबहादुर शास्त्री के दूसरे बेटे के खिलाफ खड़े हुए हैं, उसे लेकर भी थोड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ है. 1988 में उन्होंने इलाहाबाद उपचुनाव में हरिकृष्ण शास्त्री के छोटे भाई सुनील शास्त्री को हराया था. लालबहादुर शास्त्री वी.पी. सिंह को अपने बेटे सरीखा मानते थे. कई लोगों का कहना है कि इससे इंका ने एक बार फिर वी.पी. सिंह की अंतरात्मा को तकलीफ देने की कोशिश की है.

वी.पी. सिंह दौरे पर; और (नीचे) एक चौपाल में शास्त्रीः कोई मुकाबला नहीं

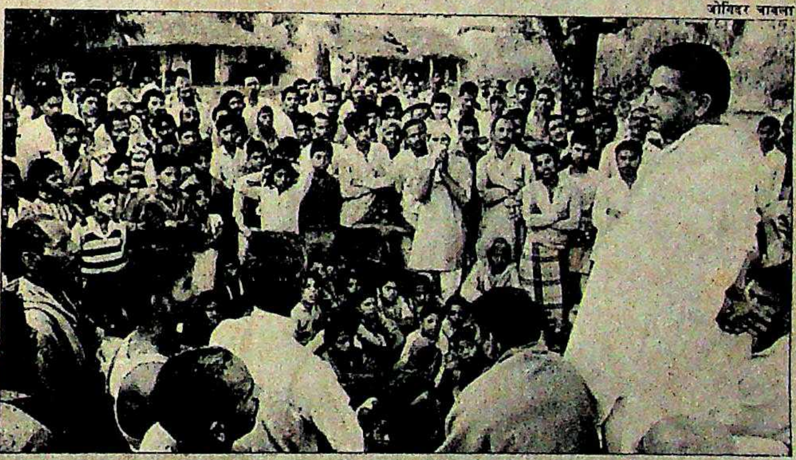

जोगिंदर चावला

वी.पी. सिंह का कहना है कि वे शास्त्री जी के एक और बेटे से टक्कर लेने से बचना चाहते थे. उन्होंने सुनील शास्त्री के जरिए हरिकृष्ण को "डेढ़ महीने पहले सलाह भिजवाई थी कि यदि वे चाहें तो अपना निर्वाचन क्षेत्र बदल सकते हैं."

लेकिन शास्त्री कुछ और बताते हैं. उनका कहना है कि वे वी.पी. सिंह के मुकाबले से बचना नहीं चाहते थे. उनके अनुसार वी.पी. सिंह "झूठे, बेहद स्वार्थी, दब्बू और महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं." संसद की सीढ़ियों पर वी.पी. सिंह ने उनसे वादा किया था कि वे फतेहपुर से नहीं लड़ेंगे. वे कहते हैं, "चुनाव प्रचार में पारिवारिक संबंधों को जोड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता. 1965 की लड़ाई जीतने के बाद इसी वी.पी. सिंह ने अपना अंगूठा काटकर अपने खून से मेरे पिता के माथे पर तिलक लगाया था. लेकिन अगर आज शास्त्री जी जिंदा होते तो वे भी इस शख्स के खिलाफ जरूर चुनाव लड़ते. इसे लिख लें."

सचमुच दोनों पक्षों ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है. पर हरिकृष्ण हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं. उनके खिलाफ एक बात यह भी है कि उनकी पार्टी इस निर्वाचन क्षेत्र के प्रति उदासीन हो गई लगती है. साथ होने वाले विधानसभा चुनावों के कारण उनका दायित्व और बढ़ गया लगता है. इस क्षेत्र के पांच में से चार विधायकों को संदिग्ध रिकार्ड के बावजूद दोबारा टिकट दे दिया गया है. बिंदकी से एकमात्र नए उम्मीदवार अमर सिंह भी एक सहकारी बैंक के संदिग्ध सौदे में शामिल होने के कारण विवादास्पद रहे हैं. वे इसी बैंक के अध्यक्ष भी थे.

इसके बावजूद शास्त्री हताश नहीं हैं. उनका दावा है कि "मेरी स्थिति मजबूत है." पर वी.पी. सिंह इसे कोई चुनौती नहीं मानते. वे कहते हैं, "मुझे तो दोबारा फतेहपुर आने की भी जरूरत नहीं है. फैसला हो ही चुका है." पांसा हरिकृष्ण के खिलाफ है लेकिन वे अपने प्रतिद्वंद्वी के अति आत्मविश्वास को अपने पक्ष में इस्तेमाल कर ही सकते हैं. —**शेखर गुप्ता, फतेहपुर में**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

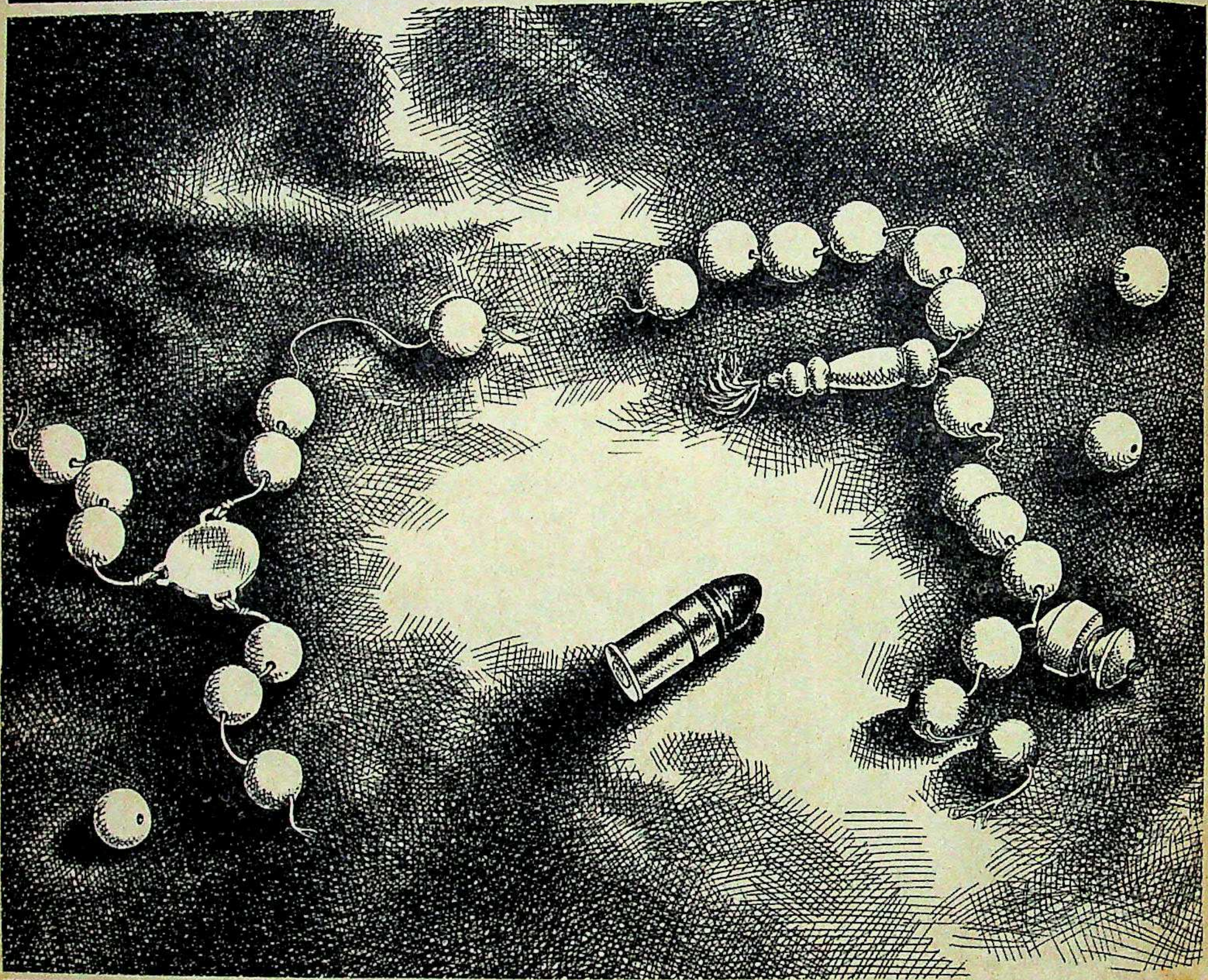

और मैं किसी को इसे विभिन्न धर्मों की आपसी लड़ाई का मैदान नहीं बनाने दूंगा।

कुछ लोग हैं भारत में जो हर चीज़ को अपने धर्म के रंगीन चश्मे से ही देखते हैं। उसके पार उनकी नज़र नहीं जाती। ये लोग धर्मस्थानों की किलेबंदी, धर्मप्राण अनुयायियों की भी हथियारबंदी और मानव हृदय को रणभूमि बना देना चाहते हैं। वे सीधे-सादे लोगों को जुनूनी पाठ

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाकर शहादत का सब्ज़बाग दिखाते हैं और खुद उनके कफ़न के कपड़े से अपनी जेबें बनाकर उसे खून की कमाई से भरते हैं। उनकी चिता की आग पर अपनी रोटियां सेकते हैं। उनकी कब्रों पर अपना महल तामीर करते हैं।

अजीब बात है कि धर्म के नाम पर इन्सानियत का खून हो रहा है।

वे लोग संख्या में ज़रुर कम हैं, मगर उनके इरादे बहुत खतरनाक़ हैं। उन्हें अपने नापाक़ इरादों में एक बार कामयाब होना काफी है, मगर हमें इनके विरुद्ध हर बार कामयाब होना पड़ेगा।

उन्हें भारतीय नहीं दिखाई पड़ते। उन्हें दिखाई पड़ते हैं हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई। उन्हें दिखाई पड़ते हैं ब्राम्हण, ठाकुर, बनिया और हरिजन। उन्हें दिखाई पड़ते हैं यादव, सिंह, शर्मा और चतुर्वेदी। उन्हें दिखाई पड़ते हैं शिया और सुन्नी।

आप उनकी नज़रों में इन्सान नहीं हैं। आप उनके लिये महज एक कंधा हैं जिस पर रख कर वे अपने निहित स्वार्थों और महत्त्वाकांक्षाओं की बंदूक चला सकें। आप उनके लिये एक संख्या हैं... अल्प संख्यक, या बहु संख्यक, जिसे वे अपने सत्ता के लालच और स्वार्थों की बलि चढ़ा सकते हैं।

कांग्रेस (इ) ने सदैव सभी धर्मों को समान मानकर सबको बराबर फलने-फूलने का अवसर दिया है।

कांग्रेस (इ) ने समाज के कमज़ोर और असहाय वर्गों को अधिक अवसर देकर उनकी उन्नति के लिये नये द्वार खोले हैं।

कांग्रेस (इ) को सदैव सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत में दृढ़ आस्था रही है। और इसी कारण कांग्रेस ही देशव्यापी पैमाने पर सांप्रदायिकता के विरुद्ध लड़ सकती है।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये ताकि वे लोग जिनकी हर धड़कन भारत के लिये नहीं है, उन्हें इतिहास रद्दी की टोकरी में फेंक दे।

अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइये। एक धर्मनिरपेक्ष भारत की सेवा में। आपकी हर धड़कन को भारत के लिये हो। कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये। भारत का हाथ मज़बूत कीजिये।

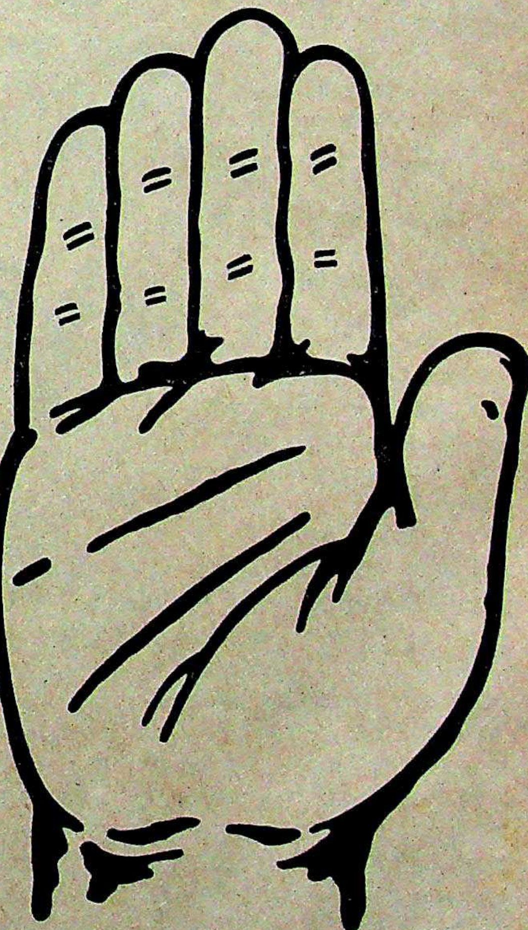

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/37 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ताकत काम कर रही है.

जनता दल के नेताओं का प्रचार जोर पकड़ने के बाद पोस्टरों या बैनरों का कोई मतलब नहीं रह जाएगा. वी.पी. ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "लोग पोस्टरों या बैनरों को वोट नहीं देते." जनता दल के कार्यकर्ताओं का कहना है कि उन्होंने अपने संसाधनों को अंतिम निर्णायक दौर के लिए बचाकर रखा है.

लेकिन इस तमाम तैयारियों में सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह कि शासक दल के कई प्रमुख उम्मीदवार मैदान में पूरी तरह उतरते नजर नहीं आ रहे. प्रतापगढ़ से उम्मीदवार केंद्रीय वाणिज्यमंत्री दिनेश सिंह अयोध्या में राम मंदिर शिलान्यास के खत्म होने के इंतजार में डाक बंगले में हाथ पर हाथ धरे बैठे दिखे. उन्होंने कहा, "अगर सरकार हिंदू उग्रपंथियों के आगे झुक जाती है तो हम सभी दिल्ली जाकर आराम से बैठ सकते हैं और बड़े मजे से जीत सकते हैं." लेकिन पड़ोसी इलाके कालाकांकर के इस राजा ने यह नहीं छिपाया कि उनके लिए मुकाबला कठिन है. उनके विरोध में अभय प्रताप सिंह या बड़े राजा (उन्हें शहर में इसी नाम से जाना जाता है) हैं. वे तिवारी मंत्रिमंडल में वनमंत्री तथा दिनेश सिंह के पुराने समर्थक अजीत प्रताप सिंह के बड़े बेटे हैं. वे हाल ही में इंका को छोड़कर जनता दल में शामिल हुए हैं. उनके भाई अरुण भी

राम मंदिर शिलान्यास

सांप्रदायिकता का पत्ता

यह एक अनोखा विजय उत्सव था. इस धर्मस्थल पर उमड़ी हजारों की भीड़ श्रद्धा से नतमस्तक थी और उनकी आंखों में धर्म की लौ कौंध रही थी. पर जो नारे लगाए जा रहे थे वे सिर्फ भगवान की जयकार वाले ही नहीं थे.

कुछ बानगियां देखें: 'यह तो केवल झांकी है; काशी, मथुरा बाकी है.' और 'तेल लगा के डाबर का, नाम मिटा दो बाबर का.' तुकबंदी की भौंडी कोशिश होने के बावजूद यह अयोध्या में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद पर 9 नवंबर की सुबह जुटी भीड़ के मूड का इजहार था.

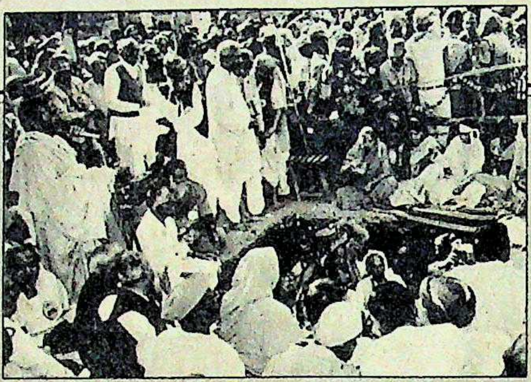

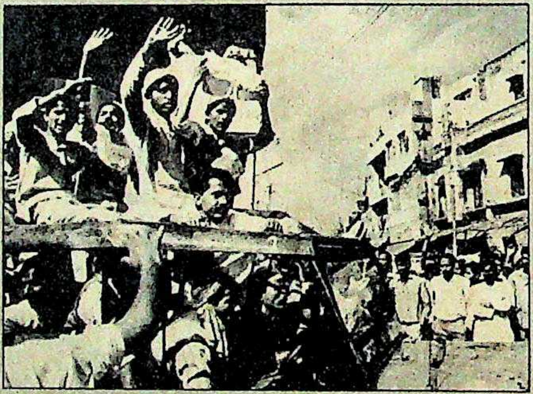

अयोध्या में शिलान्यास (ऊपर); और फैजाबाद में विरोध करते मुसलमान

हालांकि अधिकारियों ने विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं को इस विवादास्पद स्थल से 250 फुट दूर शिलान्यास करने के लिए मनाने की कोशिश की पर आखिरकार उन्हें वहीं शिलान्यास करने की इजाजत देनी पड़ी जहां वे चाहते थे, यानी मुख्य द्वार से सिर्फ 170 फुट दूर. अपने पक्ष के बचाव की कोशिश में सरकार ने कहा कि शिलान्यास उस जमीन पर हुआ जिसे इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गैर-विवादास्पद माना था. लेकिन मुसलमानों ने कहा कि यह विवादास्पद क्षेत्र में ही किया गया और हिंदू उग्रपंथियों ने कहा कि वे इसकी परवाह नहीं करते.

पंजाब पुलिस के छह सिख सुरक्षाकर्मियों से घिरे पंजाब शिवसेना प्रमुख जगदीश टांगडी ने कहा, "इस पवित्र स्थल की मूर्तियों को अपनी जगह से एक इंच भी नहीं हटाया जाएगा. नया मंदिर पुराने की जगह पर ही बनेगा." परिषद मंदिर के निर्माण को हालांकि अगले साल 27 जनवरी तक स्थगित करने को तैयार हो गई पर इसमें कोई शक नहीं कि वे निर्माण करने अवश्य आएंगे.

हिंदुओं में बढ़ते गुस्से को देखकर सरकार ने पूरी तरह हथियार डाल दिए, फिर भी भाजपा और दूसरे गुटों के जीत के दावों की वजह से इसमें संदेह है कि सरकार के इस कदम से इंका को हिंदुओं के वोट मिल जाएंगे उधर, सरकार ने मुसलमानों को भी नाराज कर लिया. शिलान्यास के बाद कई प्रमुख मुसलमान नेताओं ने इंका की मुखालफत की घोषणा की.

फिलहाल कहा नहीं जा सकता कि हिंदू वोट किस ओर झुकेंगे. 9 नवंबर को 'शांति बनाए रखने' की अपील करने और चुनावी फायदा बटोरने अयोध्या पहुंचे वी.पी. सिंह का दांव भी उलटा पड़ा. वे अभी फैजाबाद पहुंचे ही थे कि शिलान्यास शांतिपूर्ण ढंग से होने की खबर आ गई. हालत यह हो गई कि वे इसकी आलोचना करते तो हिंदू नाराज होते और आलोचना नहीं करते तो मुसलमान खफा हो जाते. इसीलिए संवाददाता सम्मेलन में वे कुछ परेशान दिखे.

परिषद के कार्यकर्ताओं ने शिलान्यास के लिए सही दिन चुना था. उस दिन पंचकोसी परिक्रमा के लिए लाखों श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे थे. इससे उनके साथ जनशक्ति बढ़ गई.

यहां से एक मील दूर परिषद के कैंप में एक प्रदर्शनी में गाईड श्रद्धालुओं को दिखा रहे थे कि कैसे बाबर ने मंदिर 'तोड़ा', पुजारियों की हत्या की और मस्जिद बनवाई. विवादास्पद स्थल की सुरक्षा के लिए अर्द्धसैनिक बलों की 15 कंपनियां घेराबंदी किए हुए थीं और उस पर एक परचम लहरा रहा था जिस पर लिखा था, "भगवान राम की पवित्र जन्मभूमि पर श्रद्धालुओं का स्वागत है." अनेक श्रद्धालु शिलान्यास के लिए खोदी गई जमीन की पवित्र मिट्टी लेकर लौटे. लगता है सांप्रदायिक तनाव का यह बीज आने वाले दिनों में अवश्य फूटेगा.

—शेखर गुप्ता, अयोध्या में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> ● जहां कोई शासक न हो उसे राजीव गणराज्य कहते हैं, जो धर्म बिना हो शासक उसे सेक्युलर राज्य कहते हैं, जहां प्रधानमंत्री सीधे घूस देता हो ग्राम प्रधान को, उसे शिष्ट भाषा में पंचायती राज कहते हैं.
>
> विपक्ष का जुमला

> ● एक दो तीन,
> चार पांच छः सात आठ नौ
> दस ग्यारह, बारह तेरह;
> तू है मेरे प्यारे वतन की बहार,
> आ जा कांग्रेस-आई सरकार.
>
> 'एक दो तीन चार...' फिल्मी गीत की तर्ज पर इंकाई प्रचार गीत

जनता दल में आ गए हैं. अरुण पड़ोस के विधानसभा क्षेत्र से जनता दल के उम्मीदवार हैं. इससे परेशान होकर उनके पिता ने लखनऊ में राजनैतिक संन्यास ले लिया है. दिनेश सिंह के लिए यह भारी पड़ सकता है. अभय प्रताप सिंह खुद भी उम्मीद के सहारे हैं. वे कहते हैं, "वास्तविकता तो यह है कि हमारा जहाज उतना बढ़िया नहीं है पर यह अनुकूल लहरों के सहारे पार लग जाएगा."

इस लहर को बनाने में कुछ हद इंकाई खेमे का भी हाथ रहा है. वजह: लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ-साथ कराने का फैसला और ज्यादातर पुराने सांसदों तथा विधायकों को ही टिकट देना. इंकाई हलकों में यह खुलेआम कहा जा रहा है कि राज्य स्तर की प्रारंभिक सूची में पार्टी के मौजूदा 67 सांसदों में कम-से-कम 25 के नाम के आगे लाल निशान लगाया गया था. प्रदेश इंका मुख्यालय से मिले संकेतों के अनुसार शीला दीक्षित, मोहसिना किदवई, राजेंद्र कुमारी वाजपेयी, जेड.आर. अंसारी और हरिकृष्ण शास्त्री जैसे केंद्रीय मंत्रियों ने अपना क्षेत्र बदलना चाहा था. प्रदेश इंका चुनाव समिति की पिछले महीने लखनऊ में बैठक के समय पीलीभीत के भानु प्रताप सिंह, नैनीताल के सतेंद्र चंद्र गुड़िया, बरेली की आबिदा अहमद, अल्मोड़ा के हरीश रावत, शाहजहांपुर के जितेंद्र प्रसाद, फैजाबाद के निर्मल खत्री और झांसी के सुजान सिंह बुंदेला जैसे कई मौजूदा सांसदों को मैदान से बाहर माना जा रहा था. लेकिन इन्हें फिर उम्मीदवार बनाया गया है.

हल्द्वानी

जनता की मर्जी पर

उत्तर प्रदेश में एक ऐसा विधानसभा क्षेत्र भी है जहां नारायणदत्त तिवारी एकदम चुनाव प्रचार नहीं कर रहे. यह है खुद उनका चुनाव क्षेत्र—हल्द्वानी. अपने चुनावी नतीजे के प्रति आश्वस्त मुख्यमंत्री कहते हैं, "हल्द्वानी के लोग ही मेरे भले-बुरे का खयाल रखेंगे."

आर.के. गुप्ता

हल्द्वानी में प्रचार करते तिवारी: आश्वस्त

इस क्षेत्र के लोग उसी तरह उनका खयाल रखेंगे जैसे वे लोगों का खयाल रखते हैं. हल्द्वानी से उनका रिश्ता पुराना है. यहीं से उन्होंने समाजवादी पार्टी के टिकट पर 1952 व 1957 के चुनाव जीते थे. उनके प्रतिद्वंद्वी जनता दल के हुकुम सिंह कुंअर और भाजपा के नंदकिशोर उनके सामने बौने लगते हैं.

लेकिन अगर इंका हल्द्वानी विधानसभा सीट जीतने के प्रति निश्चित है तो यही बात नैनीताल संसदीय सीट के बारे में नहीं कही जा सकती. यहां से इंका ने अपने मौजूदा सांसद सतेंद्र चंद्र गुड़िया को उम्मीदवार बनाया है और उनके लिए दोबारा जीत पाना मुश्किल है.

पंत प्रकरण ने भी पार्टी की चुनाव संभावनाओं पर असर डाला है. यहां के 8.83 लाख मतदाताओं में 22.5 फीसदी संख्या वाले ब्राह्मण मतदाताओं का एक वर्ग तिवारी के विरोध में जा सकता है. वजह यह है कि पंत लंबी धोती (ऊंचे) ब्राह्मण हैं जबकि तिवारी छोटी धोती (नीचे) ब्राह्मण.

यहां के चुनावी गणित को गड़बड़ाते हुए प्रभावशाली थारू (वनवासी) नेता रमेश राणा भी चुनाव मैदान में कूद पड़े हैं. इस चुनाव क्षेत्र में 60,000 थारू मतदाता हैं और राणा के मैदान में आ जाने से इंका इनका मत पाने की उम्मीद नहीं कर सकती.

इस इलाके के विधानसभा क्षेत्रों में भी इंका को परेशानी का सामना है. खटीमा विधानसभा क्षेत्र में जिला इंका के महासचिव और वर्तमान विधायक दोनों ही बागी उम्मीदवार की हैसियत से मैदान में हैं. काशीपुर में स्थानीय नगरपालिका के अध्यक्ष निर्दलीय उम्मीदवार हैं.

लेकिन इंका के लिए राहत देने वाली भी कई बातें हैं. नैनीताल संसदीय क्षेत्र और विधानसभा क्षेत्रों में जनता दल और भाजपा, दोनों ने ही उम्मीदवार खड़े किए हैं. लेकिन तिवारी को अभी भी पंत का भूत परेशान कर रहा है. यहां का अभियान तिवारी की तसवीर वाले पोस्टरों के सहारे ही चल रहा है, राजीव की तसवीर वाले पोस्टर नजर नहीं आते.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुज़ूकी की सफ़लता की रफ़्तार...

निप्पोन डेनरो इस्पात पेश करते हैं भारत में पहली बा…
उत्तम श्रेणी का को…

भारतीय स्कूटर व मोटर साइकिल उद्योग को उत्पादन के क्षेत्र में विश्व स्तर की कोल्ड रोल्ड स्टील की अनियमित आपूर्ति व कमी के कारण जो भी कठिनाइयां होती थीं, उन सभी का समाधान लेकर आयें है निप्पोन डेनरो इस्पात लि.। अब भारतीय स्कूटर व मोटर साइकिल उद्योग कई गुना ज़्यादा रफ़्तार से उत्पादकता के क्षेत्र में प्रगति कर सकता है। क्योंकि निप्पोन डेनरो इस्पात लि. अब भारत में लाये हैं, पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का कोल्ड रोल्ड स्टील।

अनेक चौड़ाइयों (100 मि.मी. से 1250 मि.मी.) ; गेज (0.15 मि.मी. से 2.00 मि.मी.) ; ग्रेड (सामान्य, ड्रॉइंग, डीप व एक्स्ट्रा डीप ड्रॉइंग) ; लम्बाइयों (1000 मि.मी. से 4000 मि.मी.) ; और 3 से 10 मेट्रिक टन के कॉयल्स में उपलब्ध यह कोल्ड रोल्ड स्टील अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुरूप हैं– IS 513, DIN 1623, JISG 3141....

पूरी तरह से कम्प्यूटर संचालित कारखाने में, यह कोल्ड रोल्ड स्टील अत्याधुनिक जापानी तकनीक से निर्मित हैं। हिताची द्वारा उपलब्ध की गयी 6-हाई सिंगल–स्टैन्ड हाई क्राउन कन्ट्रोल रिवर्सिबल कॉम्बिनेशन रोलिंग व स्किन पास मिल। रख-रखाव व संचालन जानकारी टाइयो स्टील से। और कन्टिन्युअस पिकलिग व इलेक्ट्रोलिटिक क्लीनिंग संयंत्र-

सेन्ट्रल मार्केटिंग ऑफिस : 'गुमान' छठी … 440001 ; … 25742, 25750 टेलेक्स : 0715 -426 NDIL I

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बजाज ऑटो, काइनेटिक, एल.एम.एल. व एस्कॉर्ट्स के भी पास !

बार स्कूटर और मोटर साईकिल उद्योग के लिये कोल्ड रोल्ड स्टील

निप्पोन डेनरो मैन्यूफ़ैक्चरिंग कंपनी के सौजन्य से।

निप्पोन की यह विश्व स्तरीय पेशकश देश भर में फैली वितरण प्रणाली के माध्यम से आसानी से उपलब्ध है। अतः अब भारतीय स्कूटर व मोटर साइकिल निर्माता बखूबी अपनी कठिनाइयों को भूल कर अपना उत्पादन तेज़ी से बढ़ा सकते हैं।

बिल्कुल जापानी स्कूटर-मोटर साइकिल निर्माताओं की तरह।

फैक्स : 0712-33194 ग्राम : 'NIPPON'.

ISPAT

NIPPON DENRO ISPAT LTD.

Park Plaza (Ist Floor), 71, Park Street, Calcutta–700016

THE NEW BREED OF STEEL

Mudra:D:NDIL:7378/Hi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

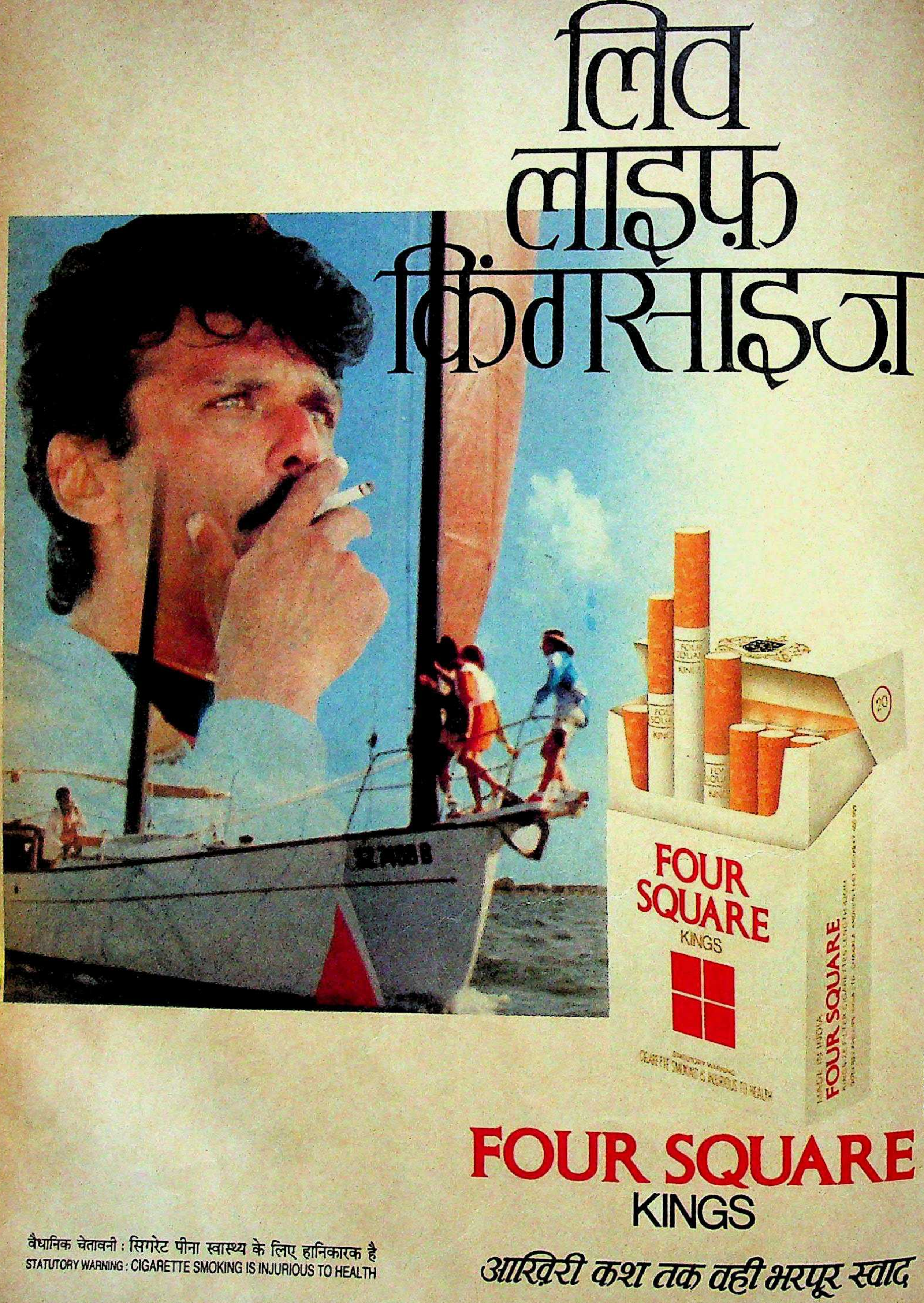

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- **भूखे को दो और दो, चार रोटियां विपक्ष को दो और दो, चार जूतियां**

  कानपुर में इंकाई नारा

- **समय मेरे खिलाफ जा रहा है. क्या मैं चुनाव प्रचार करूं या आरोपों का जवाब दूं? क्या मैं सुश्री या श्रीमती मुक्ति दत्ता की तथाकथित अस्मिता की परवाह करूं या मैं अपने राजनैतिक भविष्य और राष्ट्रीय हितों की चिंता करूं.**

  —जिया-उर-रहमान अंसारी उन्नाव से इंकाई उम्मीदवार, मुक्ति दत्ता से बलात्कार की कोशिश के आरोपी

विधानसभा चुनावों के लिए टिकटों के बंटवारे के मामले में भी लगभग यही स्थिति है. इंका के 268 मौजूदा विधायकों में से 56 को ही टिकट नहीं दिया गया. इनमें दिवंगत मुख्यमंत्री बीर बहादुर सिंह के समर्थक माने जाने वालों के अलावा 20 लोग ऐसे भी हैं जो पाला बदलकर जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं. बहरहाल, पार्टी में भयानक असंतोष उभरा है.

वैसे, विपक्षी उम्मीदवारों के चयन के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता कि सब कुछ ठीक रहा है. भाजपा और जनता दल के कम-से-कम 80 बागी उम्मीदवार भी मैदान में हैं. इससे विधानसभा चुनावों में विपक्ष के लिए मुश्किलें खड़ी हो गई हैं. प्रदेश जनता दल अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव कहते हैं, "जितना समय मिल सका उसमें हमने बेहतरीन उम्मीदवारों का ही चयन किया. बाद में हम उन नेताओं को कहीं भी खपा सकते हैं जिन्हें टिकट नहीं दिया जा सका है."

यह भाग्य के भरोसे रहने जैसी बात ही है. लेकिन उत्तर प्रदेश में विपक्ष का कुल रवैया ऐसा ही दिखता है. बहरहाल, असलियत तो यही लगती है कि लोकसभा चुनावों में तो विपक्ष ने काफी बढ़त ले ली है परंतु विधानसभा चुनावों में इसके खेमे में अफरातफरी के माहौल का फायदा इंका उठा सकती है. विपक्ष के लिए आखिरी उम्मीद इस बात पर टिकी है कि मतदाता शायद लोकसभा और विधानसभा के लिए अलग-अलग चिन्हों पर मुहर लगाने की जहमत न उठाएं.

—शेखर गुप्ता और दिलीप अवस्थी

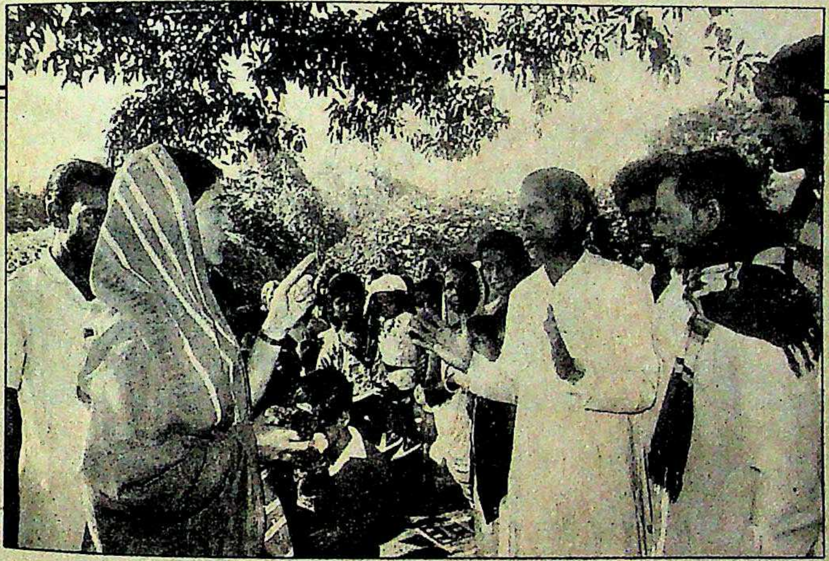

महिला मतदाताओं के बीच मेनका: कारगर अभियान

पीलीभीत

मेनका की मोहिनी

पीलीभीत में मेनका गांधी यदि बुलंदियां छू रही हैं तो इसकी ठोस वजह भी है. मेनका एक हफ्ते में जहां 100 जनसभाओं को संबोधित कर चुकी हैं, वहीं उनके प्रतिद्वंद्वी और मौजूदा इंका सांसद भानु प्रताप सिंह अभी अपनी उपस्थिति भी दर्ज नहीं करा पाए हैं.

जनता दल के दूसरे नेता अभी टिकटों के लिए लड़-झगड़ ही रहे थे कि गांधी परिवार की यह तेजतर्रार बहू चुनाव अभियान में कूद पड़ी. उनके एक चुनाव संचालक कहते भी हैं, "चुनाव अभियान जल्दी शुरू करने का फायदा यह है कि एक जगह का दो बार दौरा किया जा सकता है. इसके लिए सीमित साधनों से भी काम चल सकता है."

और मेनका का यह नया और कम खर्चीला चुनाव अभियान कारगर साबित हो रहा है. उनके समर्थकों ने महंगे रंग-बिरंगे पोस्टर छपवाने के बजाय पूरे चुनाव क्षेत्र को लाल रंग के नारों से भर दिया है. इनमें कुछ नारे नाटकीयता का पुट लिये भी हैं, जैसे 'देश के लिए देगी लहू, भारत की बहादुर बहू.'

इस बार के चुनाव अभियान में 'महाभारत' से बहुत सारे उद्धरण दिए जा रहे हैं और मेनका भी इसमें पीछे नहीं. वे गांववालों से कहती हैं, "वही सुदर्शन चक्र मेरे चुनाव चिन्ह के रूप में अब आपको उपलब्ध है. इससे आप देश पर शासन कर रहे शिशुपालों का वध कर डालिए." वैसे, प्रसंगवश मामलों को छोड़कर मेनका राजीव पर व्यक्तिगत हमले करने से परहेज करती हैं.

उनके व्यक्तित्व में भी भारी बदलाव आ चुका है. वे अब कहीं अधिक समझदार और आत्मविश्वासी हो गई हैं. ग्रामीण मतदाताओं के दिल में उतरना वे अब बखूबी जानती हैं. उनकी साड़ी हरे और केसरी रंग के उनकी पार्टी के झंडे से मेल खाती है. सिर पर हमेशा पल्लू लिये मेनका संकोची लेकिन दृढ़निश्चयी युवा विधवा की प्रतिमा लगती हैं.

मेनका के इस सुनियोजित प्रचार ने उनके प्रतिद्वंद्वी की सचमुच लुटिया डुबो दी है. आखिरी क्षण में भानु प्रताप के पक्ष में फैसला इस उम्मीद से किया गया कि कुर्मी होने के कारण 1.40 लाख कुर्मी मतदाताओं के वोट उन्हें मिल जाएंगे. लेकिन 8.5 लाख मतदाताओं की बहुसंख्या मेनका लहर में बहती नजर आ रही है. आत्मविश्वास से लबालब मेनका का दावा है, "पीलीभीत का मेरे लिए वही महत्व है, जो राजीव के लिए अमेठी का."

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक

मुद्दे नहीं, व्यक्तियों की टक्कर

विपक्ष इंका के खिलाफ साझा उम्मीदवार खड़ा करने में विफल

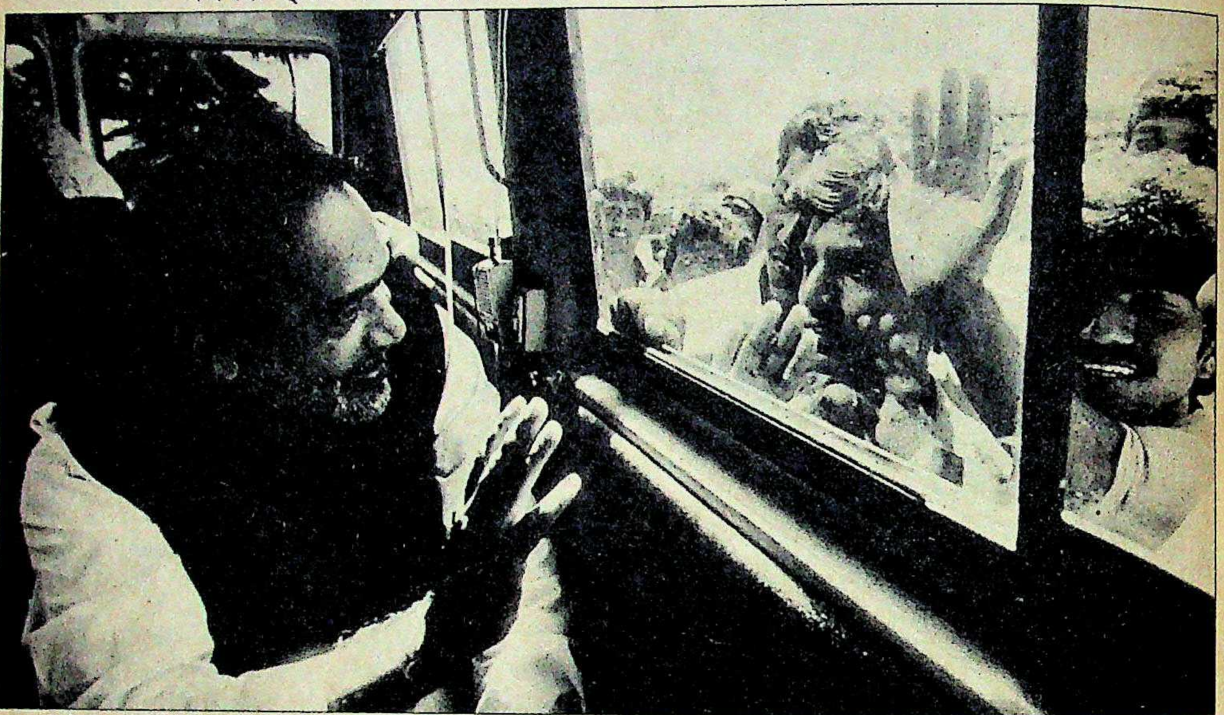

हेगड़े द्वारा प्रचार अभियानः जीवन-मरण का प्रश्न

महीनों के राजनैतिक अनिश्चय के बाद कर्नाटक में जब एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनावों की तैयारी शुरू हुई तो सारे मुद्दे गड्डमड्ड होते दिखे. और चुनाव प्रचार के अंतिम दौर में पहुंचने के साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि इस बार का चुनाव विभिन्न दिग्गजों के निजी करिश्मे के आधार पर ही लड़ा जा रहा है. व्यक्तित्वों की इस लड़ाई में बोफोर्स, नगरपालिका और पंचायती राज विधेयक जैसे मुद्दे कहीं पीछे छूट गए हैं.

कर्नाटक की राजनीति में जो तस्वीर उभरी है उसे राष्ट्रीय विपक्षी नेता जल्दी ही बिसर जाना चाहेंगे. देश भर में इंका उम्मीदवारों के मुकाबले एक-एक उम्मीदवार दे पाने में सफल विपक्ष उसी राज्य में एक होकर नहीं लड़ पा रहा है जो पिछले छह वर्षों से उसका एकमात्र किला रहा है. रामकृष्ण हेगड़े की अगुआई वाला जनता दल और उनके प्रबल विरोधी देवगौड़ा के नेतृत्व वाली जनता पार्टी ने राज्य की सभी 28 संसदीय सीटों के अलावा 224 विधानसभा क्षेत्रों में अधिकांश पर उम्मीदवार खड़े किए हैं. भाजपा भी छह लोकसभा और 120 विधानसभा सीटों पर अलग से लड़ रही है. जनता दल कर्नाटक में भाकपा से भी तालमेल नहीं कर पाया. इसलिए भाकपा ने यहां 15 विधानसभा और एक लोकसभा क्षेत्र से अपने उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं.

● हेगड़े के लिए तो यह चुनाव जीवन-मरण की लड़ाई है. दमदार नेता वाली छवि बचाए रखने के लिए अब उनके पास एक ही रास्ता है—जनता दल की जीत को पक्का करना. और यही जानकर उन्होंने लोकसभा के लिए चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया. लेकिन अपने 'विजयंत रथ' में पत्नी शकुंतला और भतीजे विनायक के साथ बैठे हेगड़े परेशान नजर आते हैं. चुनाव प्रचार के पहले दौर में हेगड़े की सभाओं में जो आए भी उन्होंने प्रश्नों की झड़ी लगाकर उन्हें परेशान किया.

● हेगड़े और उनके सपने के बीच एक मजबूत दीवार की तरह खड़े हैं उनके प्रबल विरोधी देवगौड़ा, जिनका वोक्कालिगा प्रभुत्व वाले दक्षिण और मध्य कर्नाटक के 50 चुनाव क्षेत्रों में खासा असर है. सभी 224 विधानसभा क्षेत्रों में उम्मीदवार खड़े करके देवगौड़ा ने अपने एकमात्र उद्देश्य—जनता दल को तबाह करने—के प्रति अपना पक्का निश्चय जता दिया है. अपने चुनाव प्रचार वाहन 'जनता वाहिनी' में बैठे देवगौड़ा कहते हैं, "मैं उन्हें बता दूंगा कि मैं क्या कुछ करने में समर्थ हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेगड़े के लिए तो यह चुनाव जीवन-मरण की लड़ाई है. दमदार नेता वाली छवि बचाए रखने के लिए अब उनके पास एक ही रास्ता है—जनता दल की जीत को पक्का करना. और यही जानकर उन्होंने लोकसभा के लिए चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया. लेकिन अपने 'विजयंत रथ' में पत्नी शकुंतला और भतीजे विनायक के साथ बैठे हेगड़े परेशान नजर आते हैं. चुनाव प्रचार के पहले दौर में हेगड़े को अपनी सभाओं में बहुत उत्साहजनक भीड़ नहीं मिली और जो आए भी उन्होंने भी प्रश्नों की झड़ी लगाकर उन्हें परेशान किया. खुद हेगड़े ने भी माना कि 1985 में उन्हें भीड़ से जबरदस्त समर्थन, सहानुभूति और प्रशंसा मिलती थी पर अब लोगों में निराशा दिखती है. उन्हें सबसे अधिक परेशानी बंगलूर से लगे मांड्या, मैसूर और हासन के चुनाव क्षेत्रों में हुई जहां देवगौड़ा का काफी असर है.

लेकिन देवगौड़ा के प्रभाव वाले इलाके से बाहर निकलने पर उन्हें उम्मीद की कुछ किरणें नजर आईं. जनार्दन पुजारी और ऑस्कर फर्नांडीस के गृह जिले दक्षिण कनारा में उन्हें जबरदस्त समर्थन मिला. हेगड़े कहते हैं, "इससे मेरा आत्मविश्वास लौटा है."

लेकिन हेगड़े और उनके सपने के बीच एक मजबूत दीवार की तरह खड़े हैं उनके प्रबल विरोधी देवगौड़ा, जिनका वोक्कालिगा प्रभुत्व वाले दक्षिण और मध्य कर्नाटक के 50 चुनाव क्षेत्रों में खासा असर है. सभी

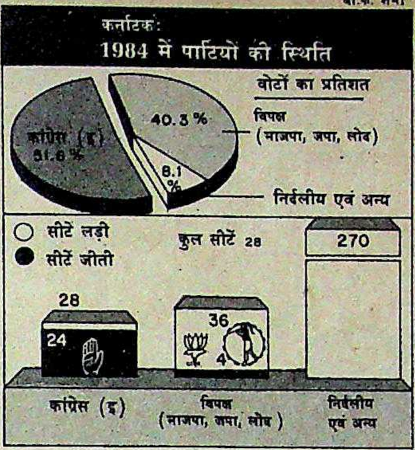

224 विधानसभा क्षेत्रों में उम्मीदवार खड़े करके देवगौड़ा ने अपने एकमात्र उद्देश्य—जनता दल को तबाह करने—के प्रति अपना पक्का निश्चय जता दिया है. 1985 में अविभाजित जनता पार्टी ने राज्य में 43.9 फीसदी वोट पाकर 139 सीटें हासिल की थीं जबकि इंका को 41.1 फीसदी वोट पाकर भी 66 सीटें ही मिलीं. ऐसे में अगर देवगौड़ा के साथ मात्र दो फीसदी वोट भी गए तो जनता दल संकट में पड़ जाएगा. अपने चुनाव प्रचार वाहन 'जनता वाहिनी' में बैठे देवगौड़ा कहते हैं, "मैं उन्हें बता दूंगा कि मैं क्या करने में समर्थ हूं."

भीड़ देखकर जहां-तहां अपनी गाड़ी रोककर लोगों से मिलने वाले देवगौड़ा ने पिछले पखवाड़े मात्र इसी उद्देश्य से राज्य भर का दौरा किया कि उनके 50-60 लोग जीत जाएं. इससे राज्य की राजनीति में मोल-तोल करने में उनका भाव बढ़ जाएगा. और वे अपने इस उद्देश्य में सफल होते भी लगते हैं. वैसे कर्नाटक में तीसरा मोर्चा चल नहीं पाता. '70 के दशक में कांग्रेस से निकले के.एच. पाटील और देवराज अर्स का हश्र बहुत बुरा रहा था. लेकिन अपने समुदाय के लोगों के बीच देवगौड़ा की लोकप्रियता और आम लोगों में जनता दल के प्रति नाराजगी उन्हें राज्य की राजनीति में प्रमुख स्थान दिलाती लगती है.

यह बात इंका को भी रास आती है, हालांकि इस राज्य में उसकी हालत भी कोई बेहतर नहीं है. राजीव गांधी के दौरे के मौके पर ही बंगरप्पा, गुंडुराव और वीरप्पा मोइली जैसे अलग-अलग गुटों के नेता एक साथ खड़े हो गए. लेकिन ऐसी क्षणिक एकता के परदे में भी उठापटक जारी है.

उम्मीदवारों के चयन के मामले में प्रदेश इंका अध्यक्ष वीरेंद्र पाटील को मार्गरेट अल्वा के नेतृत्व वाले गुट ने एकदम दरकिनार कर दिया. टिकटार्थियों की भीड़

बी.के. शर्मा

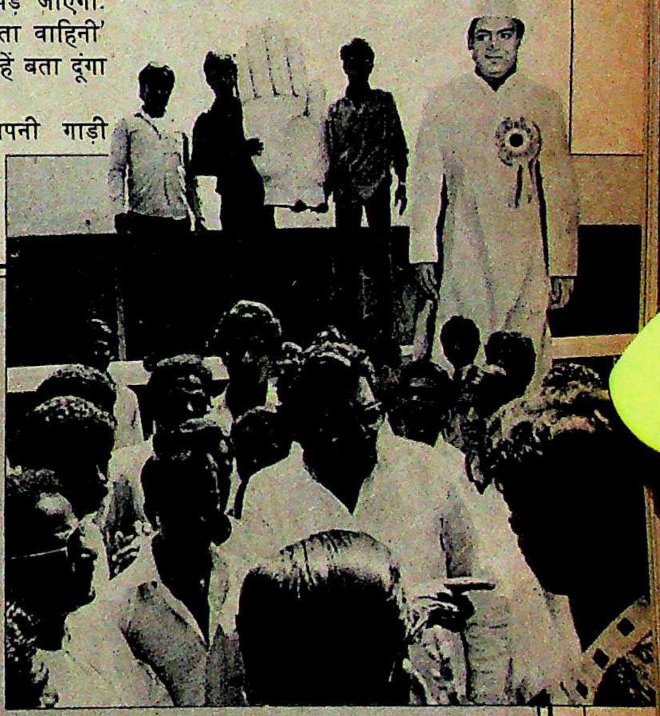

गुंडुराव

वापसी मुश्किल

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री आर. गुंडुराव दक्षिण बंगलूर संसदीय क्षेत्र से जीतकर क्या राजनीति की मुख्यधारा में लौट पाएंगे? यह शायद इतना आसान न हो जितना दिखता है क्योंकि 3.5 लाख शहरी ब्राह्मण मतदाता, जिन पर वे भारी आस लगाए बैठे हैं, गुंडुराव के अक्खड़ तौर-तरीकों की वजह से उन्हें ठुकरा सकते हैं. लेकिन युवक कांग्रेस में उनके सहयोगी रहे उनके प्रतिद्वंद्वी जनता दल के रघुपति भी राजनीति की लंपट धारा से ही आए हैं. उन्हें भी सभी जातिगत और सांप्रदायिक समीकरणों की अनदेखी कर मैदान में उतारा गया है. दरअसल, भाजपा के उम्मीदवार रामचंद्र गौड़ा इन दोनों से बाजी मार सकते हैं.

अनेक वर्षों का राजनैतिक वनवास भी गुंडुराव के तौरतरीकों में बदलाव नहीं ला पाया. जब वे मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने एक तरणताल का उद्घाटन उसमें छलांग लगाकर किया था. गुंडुराव अभी भी शहर को सुंदर बनाने का वादा कर रहे हैं. वे मतदाताओं को यह भी याद दिलाते हैं कि वे खोखले वादे नहीं करते. उन्होंने चुनाव लड़ने के लिए दक्षिण बंगलूर इसलिए चुना क्योंकि वे हेगड़े से दो-दो हाथ करना चाहते थे. पर उन्हें हेगड़े के विश्वस्त साथी से ही निबटना पड़ा. आत्मविश्वास से भरे गुंडुराव कहते हैं, "हेगड़े किस वजह से भाग खड़े हुए, मैं नहीं जानता."

लेकिन कम मतदान की आशंका सचमुच उनकी उम्मीदों पर पानी फेर सकती है. दरअसल, शहर में हर कहीं राजनैतिक खिन्नता व्याप्त है. यहां तक कि राजीव गांधी भी अपनी सभाओं में बहुत कम भीड़ आकर्षित कर पा रहे हैं. लेकिन खुद गुंडुराव चुनाव को रंगीन बना ही रहे हैं.

—चिदानंद राजघट्टा

गुंडुराव अपने समर्थकों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बचने के लिए जब पाटील सुरक्षा बलों के घेरे में एक पांचतारा होटल के इस कमरे से भागकर उस कमरे में छुप रहे थे तो गुंडुराव और जाफर शरीफ ने 30 नामों को बदलवा देने में सफलता हासिल कर ली. इन सबका नतीजा एक अधिकृत उम्मीदवार के अपहरण, एक टिकटार्थी द्वारा आत्महत्या की कोशिश, हत्या की कोशिश और बड़ी संख्या में बागी उम्मीदवारों के मैदान में आ जाने में निकला. पाटील ने कहा, "उम्मीदवारों के नाम आलाकमान ने तय किए हैं...अगर हमने एकजुट होकर काम किया तो जीत हमें ही मिलेगी."

दूसरी तरफ, हेगड़े और देवगौड़ा एकदम अलग मानसिकता के साथ मतदाताओं के पास पहुंच रहे हैं. हेगड़े ने अपने छह साल के शासन की साधारण उपलब्धियों—पंचायती राज, रियायती दाम पर राशन-कपड़ा मुहैया कराने, पेंशन तथा प्रत्येक गांव में बिजली, पानी पहुंचाने को ही अपने प्रचार का मुख्य मुद्दा बनाया है. पर मतदाता उनकी विनम्रता से ही प्रभावित होते हैं. वे सभाओं में कहते हैं, "हां, हमसे भी गलतियां हुई हैं. हम आपस में ही उलझ गए. लेकिन कांग्रेस ने 30 साल के राज में जितना काम किया, उससे बेहतर काम हमने छह साल में ही कर दिखाया है. बिडाडी गांव के किसान दोड़रंगे गौड़ा कहते हैं, "यह सही है कि उन लोगों ने कुछ अच्छे काम किए लेकिन उन्हें मुर्गों की तरह लड़ना नहीं चाहिए था."

दूसरी ओर देवगौड़ा बड़े-बड़े वादों के आधार पर प्रचार अभियान चला रहे हैं. इनमें एक वादा इस 20 फीसदी सिंचित भूमि वाले राज्य में हरित क्रांति लाने का भी है. वे कन्नड़ स्वाभिमान को लौटाने की बात भी करते हैं. वैसे राज्य में इस अभिमान को चोट पहुंचाने वाली कोई बात हुई नहीं है.

सही पूछें तो प्रदेश की 28 लोकसभा सीटों का चुनाव पृष्ठभूमि में ही चला गया है. जनता दल के नेता भी स्वीकार करते हैं कि प्रदेश की अधिकांश लोकसभा सीटें इंका की झोली में जाएंगी. देवगौड़ा के नेतृत्व वाली जनता पार्टी सिर्फ दो स्थानों—उत्तर बंगलूर (सैयद शहाबुद्दीन) और हासन (जहां इंका से निष्कासित नंजे गौडा उसके उम्मीदवार हैं)—के बारे में ही गंभीर है. खुद देवगौड़ा इस तथ्य से इनकार नहीं करते कि उन्हें लोकसभा चुनावों की परवाह नहीं है. जनता दल और जनता पार्टी, दोनों ही अपने अधिकांश साधन और ताकत को विधानसभा चुनाव में झोंक रही हैं.

सिर्फ इंका ही दक्षिण में अपनी जड़ें फिर से जमाने की कोशिश में लोकसभा चुनावों पर ध्यान दे रही है. देश के जिन 28 लोकसभा चुनाव क्षेत्रों से इंका हमेशा जीतती आई है, उनमें 11 अकेले कर्नाटक में हैं. इसके अलावा यहां से इंका के अनेक प्रमुख नेता—बी. शंकरानंद, ऑस्कर फर्नांडीस, जनार्दन पुजारी, जाफर शरीफ और गुंडुराव भी मैदान में हैं. गुंडुराव कहते हैं, "कर्नाटक ने कभी इंका का साथ नहीं छोड़ा है, आपातकाल में भी नहीं."

लेकिन कर्नाटक में एक खेमे से दूसरे की ओर पलटा खाने का इतिहास भी रहा है. दिसंबर 1984 में यहां 28 में से 24 सीटों पर इंका जीती थी जबकि चार महीने बाद ही विधानसभा में जनता पार्टी को प्रबल बहुमत मिला था. लोगों ने क्षेत्रीय समस्याओं के निपटारे के लिए इसी पार्टी को गद्दी सौंपी थी. कर्नाटक में केंद्र और राज्य सरकार के लिए लोगों की पसंद पहली बार इतनी अलग-अलग और स्पष्ट दिखी थी. पड़ोस के तमिलनाडु में जरूर मतदाता इस तरह का विभाजन कर लेते रहे हैं. और इस बार भी कर्नाटक का मतदाता लोकसभा और विधानसभा की जरूरतों और समीकरणों को ठीक-ठीक समझकर उसी के अनुरूप अपना फैसला देता लगता है. **—चिदानंद राजघट्टा**

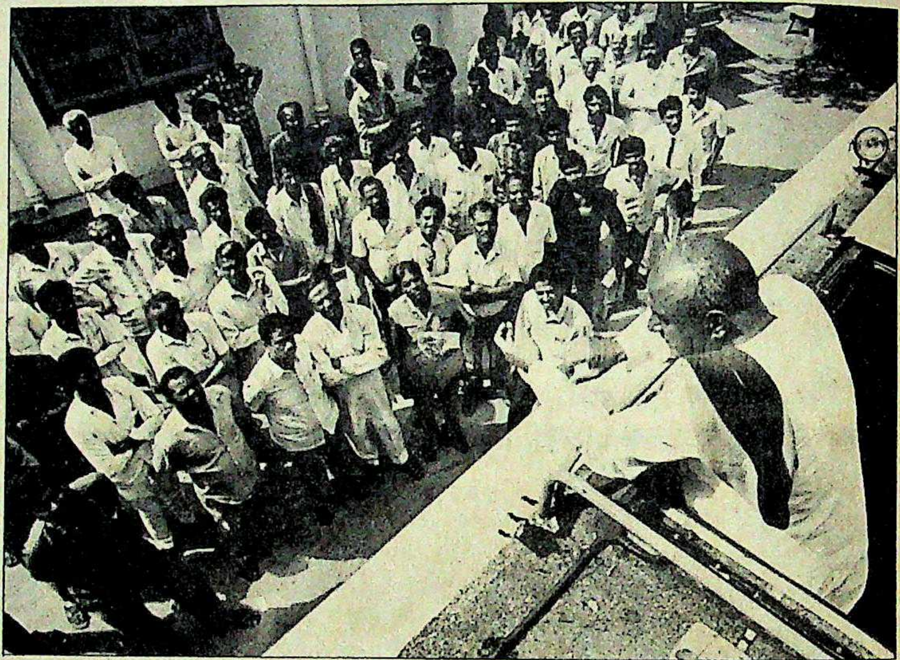

अपनी वाहिनी पर देवगौड़ा; और वीरेंद्र पाटील

● जन-प्रतिनिधित्व कानून 1951 के कुछ हिस्सों को लागू किया जाए तो कई नेताओं को गिरफ्तार या जुर्माना किया जा सकता है. कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ए. भारत ने सभी पार्टियों को इस कानून की धारा 127-ए के हवाले से कहा है कि सभी पोस्टरों, पर्चों आदि पर मुद्रक और प्रकाशक का नाम, पता होना ही चाहिए. मुद्रक को प्रकाशक के दस्तखत और दो व्यक्तियों द्वारा सत्यापित पहचानपत्र भी हासिल करना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Chennai and eGangotri

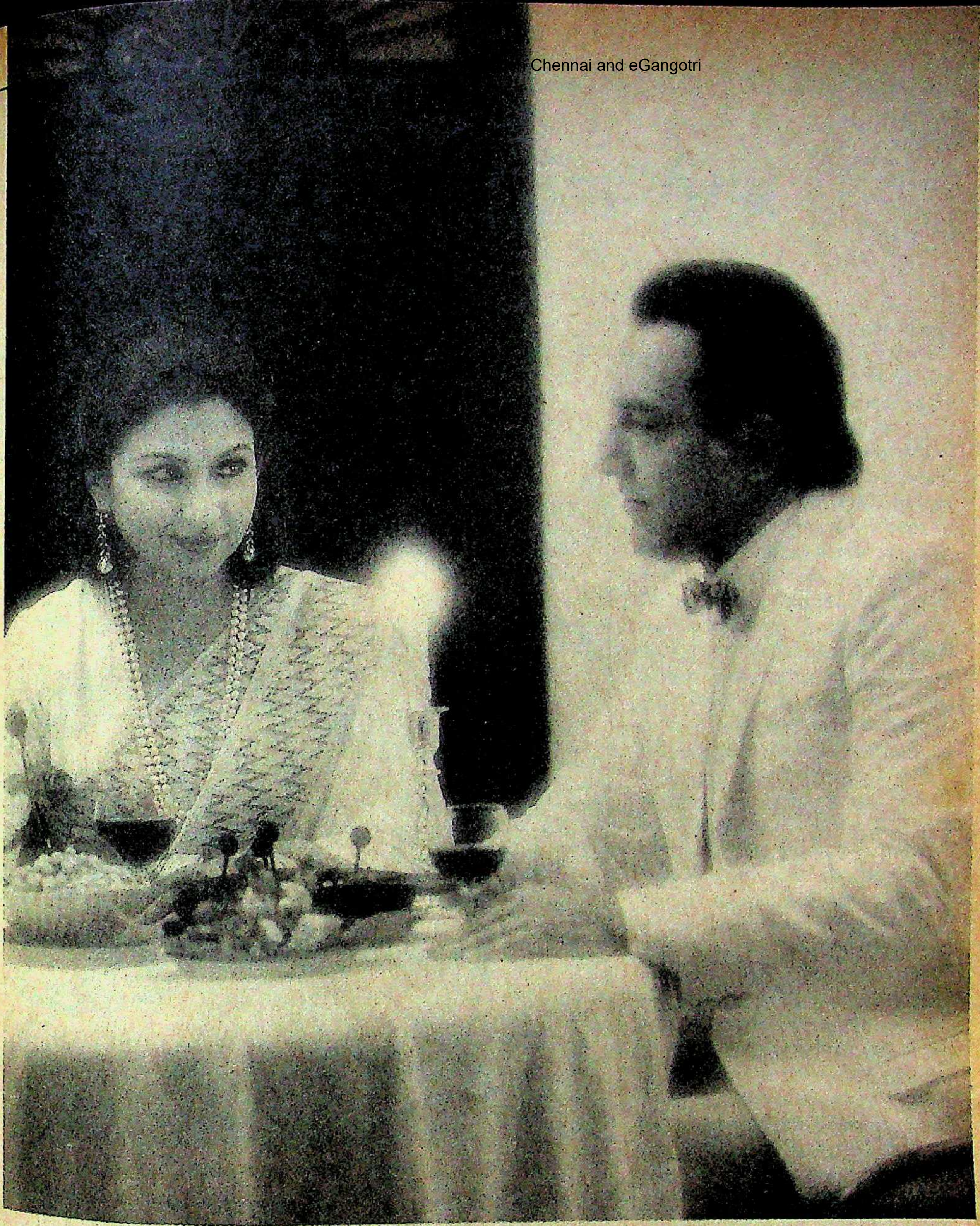

"मैं उसे बहुत खुश देखना चाहता हूँ"

शर्मिला को मेरे काम-काज की व्यस्तता से एक शिकायत रहती है कि हम साथ, समय नहीं गुजार पाते। इसलिए उसके जन्मदिन पर मैंने एक ऐसी दावत रखी जहाँ कोई भीड़ नहीं - सिर्फ वो और मैं। मोमबत्ती की मद्धिम पर गर्म रोशनी में उसकी आँखें मेरी ग्वालियर की मनपसंद डिनर जैकेट पर थीं और नजरें बहुत कुछ कह रही थीं।

— एम.ए.के. पटौदी

GRASIM
GWALIOR SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD.

MAPP-GR-89-1088

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

कड़ी चुनौती का सामना

भड़कीले प्रचार के बावजूद तेलुगु देशम संकट में

वही नाटक, वही अंक, यहां तक कि भगवा वेशभूषा और वाहन भी वही जाने-पहचाने हैं. तेलुगु देशम के जनक और कई पुराने राजनैतिक समीकरणों को धूल में मिला देने वाले 60 वर्षीय नंदमूरि तारक रामराव सात साल में पांचवीं बार सड़कों पर निकल आए हैं. पर इस बार उनका सपना नया आंध्र प्रदेश ही नहीं, एक नया भारत बनाना भी है.

राष्ट्रीय मोर्चे के अध्यक्ष और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के कंधों पर भारी जिम्मेदारी आन पड़ी है. सात साल पहले जिस इंका को वे धूल चटा चुके हैं, नए दमखम के साथ मैदान में उतरी इसी पार्टी को हराकर उन्हें न केवल तेलुगु देशम का किला बचाए रखना है बल्कि राज्य से 25 सांसद भी राष्ट्रीय विपक्ष की झोली में डालने हैं. विपक्ष के जीतने पर जनता दल की अगुआई में साझा सरकार के निर्माण में भूमिका भी अदा करनी है.

तेलुगु देशम का चुनाव अभियान रामराव शैली के अनुरूप ही है. इसमें फिल्मी दृश्यों और वीडियो फिल्मों की भरमार है. राज्य के हर सिनेमाघर को 'चैतन्य रथम' पर तैयार 22 मिनट की फिल्म और अधूरी पड़ी 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' का 18 मिनट का ट्रेलर दिया गया है.

पहली फिल्म में रामराव के बेटे बालकृष्ण को महात्मा गांधी की प्रतिमा के आगे राजनैतिक सदाचार के बारे में व्याख्यान देते हुए दिखाया गया है. इसमें पार्टी के इतिहास की प्रमुख घटनाओं को भी दर्शाया गया है. बालकृष्ण फिल्म अभिनेता हैं और राज्य के उन हिस्सों का दौरा कर रहे हैं, जहां रामराव को शायद पहुंचने का मौका ही न मिल पाए. तेलुगु देशम ने इस फिल्म के वीडियो

श्याम टेकवानी

रामराव चैतन्य रथम परः मैदान में

● आंध्र प्रदेश में जीवन कला का अनुकरण करता है. 'श्रीकृष्ण थुलाभरम' का एक दृश्य तेलुगु फिल्मों के बेहद यादगार दृश्यों में से एक है. इसमें सत्यभामा की भूमिका निभाने वाली आकर्षक अभिनेत्री जमुना अपने चरणों पर झुके कृष्ण को ठोकर मारती हैं. कृष्ण की भूमिका निभाई है नंदमूरि तारक रामराव ने. जमुना को विश्वास है कि असल जीवन में भी वे उस दृश्य को दोहरा सकती हैं. रामराव के साथ 50 फिल्मों में काम करने वाली यह अभिनेत्री इंका टिकट पर राजमुंदरी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रही है. उनमें अभी भी पहले जैसी ही मंचीय प्रतिभा है. वे कहती हैं, "रामराव की वादा-खिलाफियों के बारे में सुनने के लिए लोग मेरा देर रात तक इंतजार करते हैं."

● आदिलाबाद लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे निर्दलीय उम्मीदवार घनश्याम गुप्ता ने कुछ युवकों को एक बकरी देते हुए कहा कि उनकी पदयात्रा में उसे भी शामिल कर लिया जाए. 'बकरी' उनका चुनाव चिन्ह है. लेकिन अगले दिन जब वे चुनाव अभियान के लिए आए तो बकरी को गायब पाया. युवक उसका गोश्त बनाकर खा गए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कैसेट साठ रु. प्रति कैसेट की दर से लोगों में बेचे भी हैं.

रामराव ने अपने राजनैतिक पिटारे से 'प्रचार रथम्'. नामक एक नया करिश्मा निकाला है. रथ रूपी इन लारियों पर विश्वामित्र के रूप में रामराव और हरिश्चंद्र की भूमिका में बालकृष्ण के आदमकद चित्र लगे हुए हैं. राज्य के हर जिले में ऐसा एक रथ भेजा गया है जिसमें लोक कलाकारों की एक टोली भी है. पहले यह टोली नाच-गाकर जनता का मनोरंजन करती है और उसके बाद ये दोनों वीडियो फिल्में दिखाई जाती हैं या गानों अथवा रामराव के भाषणों के कैसेट सुनाए जाते हैं. यह टोली 'मि. क्लीन' नाम का एक व्यंग्य नाटक भी प्रस्तुत करती है.

इंका ने भी तेलुगु देशम की तर्ज पर वीडियो के जरिये वोट बटोरने का फैसला किया. पार्टी ने प्रभाकर रेड्डी द्वारा रामराव पर लिखे करारे व्यंग्य 'गांडीपेट रहस्यम' (तेलुगु देशम मुख्यालय 'गांडीपेट के रहस्य') के वीडियो कैसेट का आर्डर दे दिया है. सिनेमाघरों को भी 'इंदिराम्मा चरित्रम' (इंदिरा गांधी का जीवन चरित्र) के कैसेट दिए गए हैं. लेकिन रामराव की फिल्मी तड़क-भड़क के आगे वे कहीं नहीं ठहर पातीं.

दरअसल इंका के पास रामराव जैसा कोई नेता नहीं है. वह प्रदेश इंका अध्यक्ष चेन्ना रेड्डी को प्रचार कमान सौंपने में हिचकिचा रही थी, क्योंकि भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण उनकी छवि धुंधला चुकी है. शुरू में पार्टी ने राजीव गांधी की छवि भुनाने की कोशिश की लेकिन जैसे-जैसे प्रचार जोर पकड़ता गया, स्थानीय नेताओं को अपने भरोसे ही काम करने को कहा

एम.चेन्ना रेड्डी

मैदान में चुस्त

बीस वर्ष पहले 1969 के चुनाव में भ्रष्ट तरीके अपनाने पर सुप्रीम कोर्ट ने उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी थी. लेकिन आज वही डॉ. मारी चेन्ना रेड्डी आंध्र प्रदेश में इंका के चुनाव अभियान के कर्णधार बन गए हैं.

जाहिर है इंका आलाकमान यह मान चुका है कि रेड्डी जैसा जमीन से जुड़ा नेता ही, जिसके कोष जुटाने के किस्से प्रचलित हैं, आंध्र प्रदेश के लोगों पर रामराव की पकड़ तोड़ सकता है. अपने लंबे राजनैतिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देख चुके रेड्डी 71 वर्ष की उम्र में भी राजनैतिक अखाड़े के लिए चुस्त-दुरुस्त लगते हैं. इस साल मई में ही इंका ने तेलुगु देशम का राजनैतिक प्रभाव खत्म करने के लिए इंका की बागडोर उन्हें सौंपकर उनका राजनैतिक वनवास तोड़ा था. आंध्र प्रदेश इंका का अध्यक्ष होने के नाते अब उन्हें राज्य विधानसभा और लोकसभा दोनों के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है.

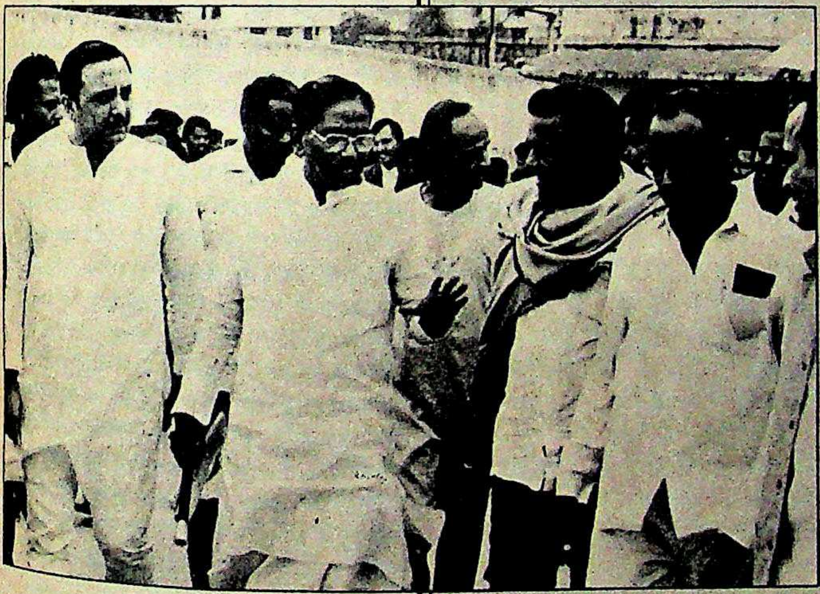

पदयात्रा करते चेन्ना रेड्डी

नियुक्ति के कुछ महीने के भीतर ही उन्होंने निश्चित रूप से प्रदेश इंका को काफी सक्रिय कर दिया है. उनका पहला काम पार्टी के उलझे गुटों को, कुछ समय के लिए ही सही, शांत कराना था. तेलुगु देशम सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जेल भरो आंदोलन और राष्ट्रपति से रामराव सरकार को बरखास्त कराने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाकर उन्होंने राज्य सरकार पर निरंतर दबाव बनाए रखा.

लेकिन रेड्डी को चुनावी मुकाबले के लिए अपनी पार्टी को तैयार करने का पूरा वक्त नहीं मिल पाया. चुनाव की घोषणा से वे हैरान रह गए. अब राज्य भर में पार्टी का चुनावी भाग्य संवारने की जगह वे खुद अपनी जीत निश्चित करने पर ही अधिक ध्यान दे रहे हैं.

चुनावी गणित के आधार पर उन्होंने हैदराबाद की सनतनगर सीट को सुरक्षित माना. पिछले चुनाव में यहां इंका हारी थी लेकिन 1986 के नगर निगम चुनाव में यहां के 11 में से 8 निगम क्षेत्रों से जीती थी.

शायद उनका यह हिसाब सही नहीं है. उनके मुकाबले खड़े तेलुगु देशम सरकार के आवासमंत्री श्रीपति राजशेखर काफी तगड़े उम्मीदवार हैं और एनटीआर फैंस एसोसिएशन के संस्थापकों में से हैं. बात-बात पर रामराव का पैर छूने वाले इस मंत्री को रामराव का पूरा समर्थन हासिल है.

राजशेखर कहते हैं, "अन्नागुरु जननायक हैं. मैं हमेशा उनके आशीर्वाद से जीतता आया हूं." और वे चेन्ना रेड्डी के खिलाफ उनके जीवन के पुराने किस्सों का उपयोग भी कर रहे हैं. वे कहते हैं, "रेड्डी ऐसे नेता हैं जिन पर देश के सर्वोच्च न्यायालय ने किसी सार्वजनिक पद पर जाने से रोक लगा दी थी." उधर रेड्डी घर-घर जाकर चुनाव प्रचार कर रहे हैं. वे कहते हैं, "चुनाव प्रचार का तरीका अब बदल गया है. अब सीधे पैसे से चुनाव पर प्रभाव नहीं डाला जा सकता. मतदाताओं के आगे माथा झुकाना ही होगा."

रेड्डी-राजशेखर की भिड़ंत होने से सबकी नजरें सनतनगर पर लग गई हैं. हाल ही में दोनों के समर्थकों की मुठभेड़ और उसके बाद पुलिस फायरिंग से पता चलता है कि दोनों ही इस चुनाव को जीतने के लिए जी-जान लगाए हुए हैं.

अगर राजशेखर हार भी गए तो उनकी पार्टी इसे एक तरह की जीत मान ही सकती है, क्योंकि जो आदमी तेलुगु देशम के प्रभाव को रोकने निकला था, खुद अपने चुनाव क्षेत्र में ही घिरकर रह गया.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया. राजीव गांधी ने भी 1 नवंबर और मतदान वाले दिन के बीच केवल दो बार यहां का दौरा करने का कार्यक्रम तय किया.

बीते दिनों की लोकप्रिय अभिनेत्री जया और फिल्म स्टार कृष्ण को उम्मीदवार बनाना ही इस बात का स्पष्ट संकेत है कि पार्टी भीड़ जुटा सकने लायक लोगों को अपने साथ लेने के लिए व्यग्र है. लेकिन चेन्ना रेड्डी उम्मीद से कहते हैं, "हमारी जीत की अच्छी संभावनाएं हैं." उनके इस आत्मविश्वास की वजह यह है कि यहां के मंडल और जिला परिषद चुनावों में इंका को 41.60 फीसदी वोट मिले थे.

तेलुगु देशम को भी आंतरिक कलह से जूझना पड़ा, क्योंकि रामराव ने आखिरी क्षण में कई नए टिकटार्थियों को किनारे कर दिया. उन्हें पता था कि यदि मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं दिए गए तो वे बगावत पर आमादा हो सकते हैं. अपनी पार्टी और राज्य पर निरंकुश नियंत्रण रखने वाले रामराव की यह हार ही कही जाएगी.

1984 के लोकसभा चुनावों में तेलुगु देशम के 41.81 फीसदी वोटों के मुकाबले 44.82 फीसदी वोट लेने वाली इंका के उत्साह की और वजहें भी हैं. एक तो रामराव का नक्सलवादियों के प्रति ढुलमुल रवैया रहा है. दूसरे, राज्य के कर्मचारी भी उनसे नाराज हैं. उधर, राज्य का घाटा बढ़कर 600 करोड़ रु. हो गया है. तेलुगु देशम पोलितब्यूरो के एक सदस्य भी मानते हैं, "इस बार हमारे सामने कड़ी चुनौती है. कई निर्वाचन क्षेत्रों में तो यह टक्कर कांटे की होगी." इसके बावजूद उन्हें उम्मीद है कि उनकी पार्टी लोकसभा की 25 और विधानसभा की 294 में से 180 सीटें जीत लेगी. दूसरी तरफ इंका भी लोकसभा की 25 और विधानसभा की कम-से-कम 140 सीटें जीतने का दावा करती है.

लेकिन यह तय है कि इंका 1984 के

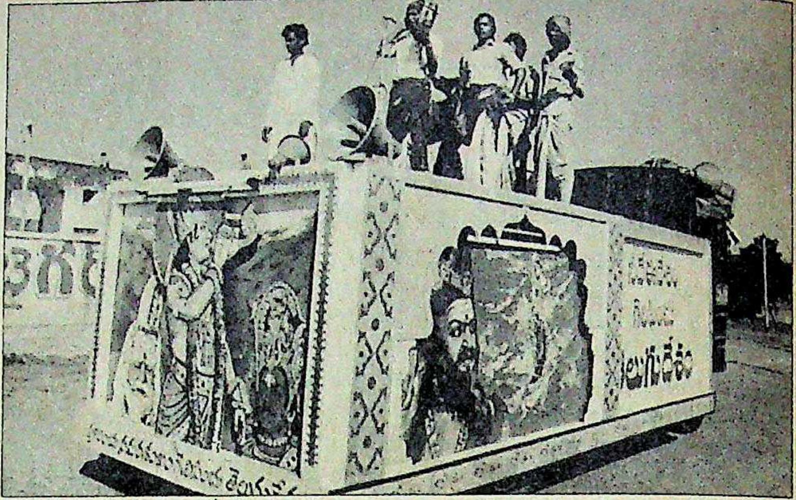

प्रचार रथमः नई तकनीक

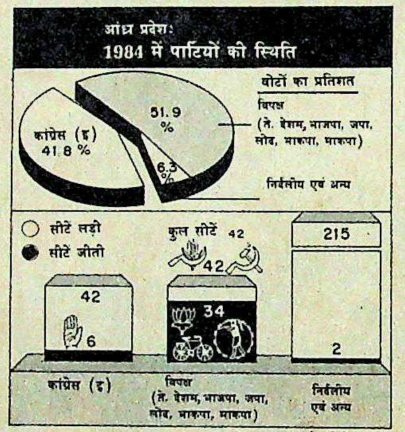

चार्ट: बी.के. शर्मा

मुकाबले बेहतर स्थिति में आएगी. तब उसने लोकसभा की छह और विधानसभा की 50 सीटें हासिल की थीं. तेलुगु देशम के लिए कुछ सीटों पर मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन कठिनाई पैदा कर सकती है.

तेलुगु देशम की तरह इंका भी आखिरी घड़ी तक अपनी सूची में फेरबदल करती रही. इससे स्थिति काफी भ्रामक रही और उसके कुछ उम्मीदवारों को हाथ का चुनाव चिन्ह नहीं मिल पाया. पार्टी ने तीन सांसदों, छह पूर्व मंत्रियों और तेलुगु देशम छोड़कर आए तीन विधायकों को भी टिकट दिया है. अंतिम समय रामराव से घात करने वाले विधानसभा अध्यक्ष नारायणराव को भी महाराजगंज विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र का टिकट दिया गया था. लेकिन युवक कांग्रेस के तीव्र विरोध को देखते हुए उनका नाम वापस लेना पड़ा. राव जब विधानसभा अध्यक्ष थे तो उन्होंने युवक इंका कार्यकर्ताओं को सदन में हल्ला मचाने के आरोप में गिरफ्तार करवाया था. केंद्रीय उद्योग-मंत्री जे. वेंगलराव, जिन्होंने नारायणराव को तेलुगु देशम से खींचने और फिर टिकट दिलवाने में अहम भूमिका निभाई थी, की उम्मीदें बुलंद हैं. उनके अनुसार, "इस बार राज्य में रामराव विरोधी लहर चल रही है."

मतदाताओं पर रामराव का पहले जैसा सम्मोहन नहीं रहा है. उनके चैतन्य रथम के साथ भी अब उतनी भीड़ नजर नहीं आती. लेकिन इस भगवा वस्त्रधारी का, कुछ कम बहुमत से ही सही, अपनी गद्दी बहाल रखना निश्चित है.

—अमरनाथ के.मेनन

● नंदमूरि तारक रामराव अपने अभियान में सिर्फ चटपटी वीडियो फिल्में ही नहीं दिखा रहे बल्कि लोगों के सामने अपनी अभिनय-प्रतिभा का प्रदर्शन भी कर रहे हैं. जहां जैसी जरूरत पड़ती है, वैसा ही भाषण देते हैं और आवाज में उतार-चढ़ाव लाते हैं. भाषण देने के पहले तीन से पांच मिनट तक उसका अभ्यास भी करते हैं. इन भाषणों के दौरान वे बराहकथा और हरिकथा जैसी आंध्र प्रदेश की लोककथाओं और देव कथाओं की भी मिसालें देते हैं. यही नहीं, कूडु (उखाड़ दो) जैसे आम बोलचाल वाले शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और श्रोताओं से तुरंत मेल-जोल बढ़ा लेते हैं. सो, ताज्जुब नहीं कि उन्हें तमाशों का बादशाह कहते हैं.

● विजयवाड़ा (पूर्व) विधानसभा सीट से इंका उम्मीदवार रत्ना कुमारी ने चुनाव अभियान शुरू होने के काफी पहले ही एक बाजी जीत ली. वी.एन. रंगाराव, जिनकी पिछले साल हत्या कर दी गई थी, की विधवा रत्ना ने अदालत में जाकर कहा कि राज्य पुलिस पर से उनका विश्वास उठ जाने के कारण उन्हें सीआरपीएफ का संरक्षण दिया जाए. अदालत ने उनका अनुरोध मान लिया. वे एकमात्र उम्मीदवार हैं जो सीआरपीएफ की सुरक्षा में अभियान चला रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Foundation

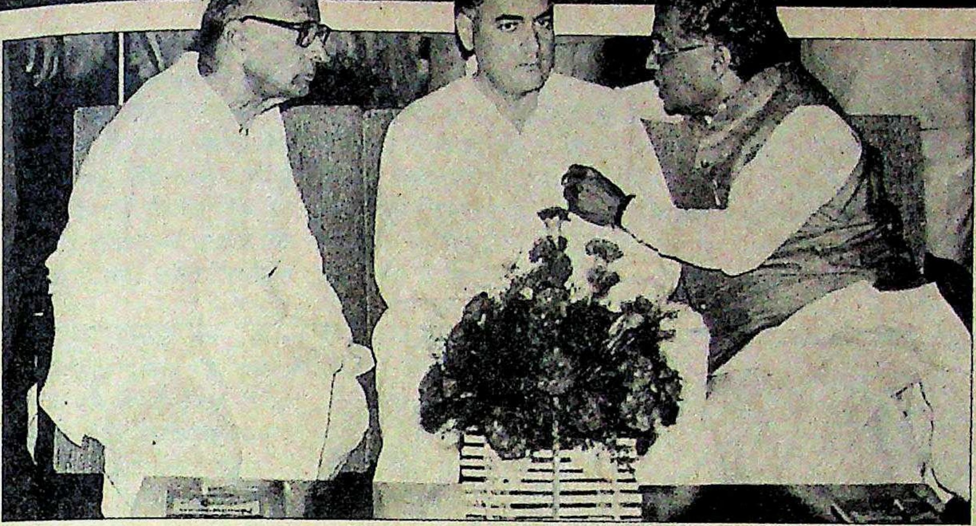

(बाएं से) सिन्हा, राजीव और मिश्र: मुसीबत में त्रिदेव

बिहार

जो बोया सो काटिए

उपेक्षा के कारण बदहाली से मतदाता इंका से नाराज

बिहार के चुनावी माहौल में गरमी थोड़ी देर से आई लेकिन लगता है इसका अंतिम नतीजे पर कोई असर नहीं पड़ने वाला. चुनाव प्रचार के दो हफ्ते बाद भी राज्य में इंका के लिए संभावनाएं कमजोर ही नजर आईं. विरोधी लहर को उलटने की इस पार्टी की तमाम कोशिशें नाकाम साबित होती दिखीं.

राष्ट्रीय एकता और अखंडता के खतरे का हौवा खड़ा करने वाला इसका नारा बेसअर होता दिखा. राजीव गांधी के 'हो-हल्ला प्रमुख' के.के. तिवारी सहित इंका उम्मीदवारों की हालत पतली और बोलती बंद थी. यहां तक कि विपक्ष में बिखराव, उसके घटिया उम्मीदवारों के चयन और 54 लोकसभा चुनाव क्षेत्रों में से तकरीबन 20 पर कथित 'दोस्ताना मुकाबले' आदि का मतदाताओं पर बहुत कम असर नजर आया.

लेकिन सबसे अहम बात यह थी कि पार्टी के सर्वोच्च नेता राजीव गांधी की सभाओं में भीड़ नजर नहीं आई. हाजीपुर और मुजफ्फरपुर में प्रधानमंत्री राजीव गांधी के दौरों के प्रति जनता की बेरुखी साफ बदलाव का संकेत है. पिछले साल इन्हीं जगहों पर उन्होंने भारी भीड़ को आकर्षित किया था.

शासक दल गंभीर संकट में है, इसके और भी संकेत हैं. पार्टी के प्रादेशिक क्षत्रप और राज्य इंका अध्यक्ष डॉ. जगन्नाथ मिश्र की हालत तो और खराब थी. मिश्र के अपने इलाके मिथिला में उनकी सभा में युवकों ने उनका स्वागत काले झंडों से किया.

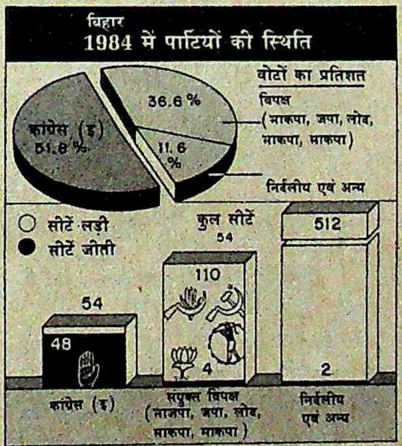

चार्ट: बी.के. शर्मा

राज्य के दो इंका विधायकों ने पार्टी छोड़ दी. एक को मुंगेर से जनता दल का टिकट मिल गया और उसने इंका की जीत की उम्मीद को धुंधला कर दिया. किशनगंज और खगड़िया में दो बागी उम्मीदवारों ने शासक दल की मुसीबत में और इजाफा कर दिया. गौरतलब बात यह है कि ये दोनों विधायक और एक पूर्व विधायक डुमरांव के बसंत सिंह, जो चुनाव की घोषणा से पहले इंका को छोड़ विपक्ष में शामिल हो गए, राजपूत हैं. ये घटनाएं चुनाव अभियान के शुरुआती दौर में ही घटीं और शासक दल के लिए अपशकुन-सी बन गईं. औरंगाबाद के एक मतदाता अशोक सिंह का कहना है, "यदि मिथिला में मिश्र के खिलाफ नारेबाजी हो गई और इंका औरंगाबाद और पूर्णिया सरीखे अपने गढ़ों में जीत के बारे में अनिश्चित है तो समझ लीजिए उसका सफाया ही होने वाला है."

उनकी बात में दम है. बिहार में इंका के खिलाफ लहर साफ नजर आ रही है. हर जगह इंका के दिग्गज पिछड़ते दिख रहे हैं के.के. तिवारी बक्सर में, कृष्णा साही बेगुसराय में और एल.पी.

• बिहार में जहां मतदान केंद्रों पर कब्जे की घटनाएं आम हैं, वहां इस बार पार्टियां कब्जे को रोकने के लिए दस्ते गठित कर रही हैं. विनोद मिश्र के नक्सलवादी धड़े इंडियन पीपुल्स फ्रंट ने, जो 11 सीटों पर चुनाव लड़ रहा है, मतदाताओं को मतदान केंद्रों तक सुरक्षित ले जाने और केंद्रों पर कब्जे के प्रयासों को रोकने के लिए दस्ते बनाए हैं. जनता दल के उम्मीदवार लालू प्रसाद यादव ने कब्जा करने वालों की नाक काटने के लिए ग्रीन ब्रिगेड बनाई है. एनएसयूआई ने गड़बड़ी फैलाने वालों के बाल मूंडने का अभियान चलाने की घोषणा की है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साही मुजफ्फरपुर में अपनी जीत के लिए हाथ-पांव मार रहे हैं. राज्य की बदहाली से लोगों में नाराजगी फूट पड़ी है. ज्यादातर सभाओं में इंका उम्मीदवारों के पास नाराज मतदाताओं के सवालों के जवाब नहीं होते. हार का मुंह देखने की नौबत तक पहुंचने के लिए इंका खुद जिम्मेदार है. वर्षों की उपेक्षा ने बिहार को देश के सबसे पिछड़े राज्यों में से एक बना दिया है. अब वह इसके खिलाफ नाराजगी का इजहार करने जा रहा है.

इंका ने मौजूदा सांसदों में से चार को छोड़ सभी को दोबारा उम्मीदवार बनाया है. चुनावी रूप से यह आत्मघाती साबित हो सकता है. 54 इंका सासदों में से आधे लगातार दो बार सदस्य रहे हैं. लोगों की अब उनमें दिलचस्पी नहीं रही है. यहां तक कि बिहार के पारंपरिक चुनावी हथियार—पैसा और लाठी—भी विरोधी लहर में बेकार हो गए हैं. मिसाल के तौर पर कुख्यात सहकारी माफिया के नेता और राजनीतिकों को पैसा देने वाले तपेश्वर सिंह की हालत भी पतली है. उनके अपने कई कार्यकर्ता उनके खिलाफ हो गए हैं. जैसा कि

भागलपुर

अशुभ संकेत

लगभग एक महीने से जारी सांप्रदायिक दंगे में हुई मौतों की दहशत यहां के चुनाव अभियान पर हावी हो गई है. इन दंगों ने हर कहीं मुस्लिम मानस को बुरी तरह झकझोर दिया है और उनका सारा गुस्सा इंका और प्रधानमंत्री पर उतर रहा है.

पटना में केंद्र सरकार के कर्मचारी मुहम्मद शमशाद तल्खी से कहते हैं, "26 अक्तूबर को प्रधानमंत्री ने भागलपुर आकर दो दिन के भीतर कानून व व्यवस्था बहाल करने का वादा किया था. लेकिन उनके जाने के बाद जो हुआ, उससे हमारा खून खौल उठा है."

सरकार के खिलाफ इस आक्रोश की वजह भी है. प्रधानमंत्री के दौरे के बाद ही भागलपुर का नृशंसतम हत्याकांड चंदेली में हुआ, जहां सेना द्वारा पुलिस संरक्षण में छोड़े गए करीब 100 व्यक्तियों को सेना के पीठ फेरते ही हलाल कर दिया गया. लूटपाट और आगजनी उसी तरह जारी रही. राहत सामग्री अपर्याप्त थी और अधिकारी थे कि अपना रौब गांठने के लिए लड़ रहे थे. रात का कर्फ्यू 8 नवंबर तक जारी रहा. यहां तक कि नामांकन पत्रों का दाखिला, उनकी जांच और उम्मीदवारों द्वारा नामों की वापसी की कार्रवाई भी कर्फ्यू के दौरान ही हुई.

इस क्षेत्र से इंका के मौजूदा सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद 1984 में सहानुभूति लहर चरम पर होने के बावजूद महज तीस हजार वोटों के अंतर से जीते थे. फैयाज भागलपुरी जैसी मामूली हस्ती ने 1,70,000 वोट—जिनमें ज्यादातर मुसलमानों के ही थे—हासिल कर, आजाद के निकटतम जनता पार्टी प्रतिद्वंद्वी पर उनकी जीत निश्चित करा दी थी. और अब सारे मुसलमानों के सत्ताधारी दल के खिलाफ हो जाने से आजाद की जीत की संभावनाएं धूमिल हो गई हैं.

इंका के मुसलमान नेता भी अपने समुदाय के गुस्से की आग से बच नहीं पा रहे. राज्य के स्वास्थ्यमंत्री मुहम्मद हुसैन आजाद से मिलने आए कुछ लोगों ने तल्खी से सवाल किया, "क्या हम भाजपा में शामिल हो जाएं? तब कम-से-कम हमारे जान-माल की हिफाजत तो हो जाएगी." पटना में इमरात-ए-शरिया की बैठक में वक्ताओं ने राज्य के मुसलमान नेताओं से कुर्सी छोड़ देने की गुजारिश की.

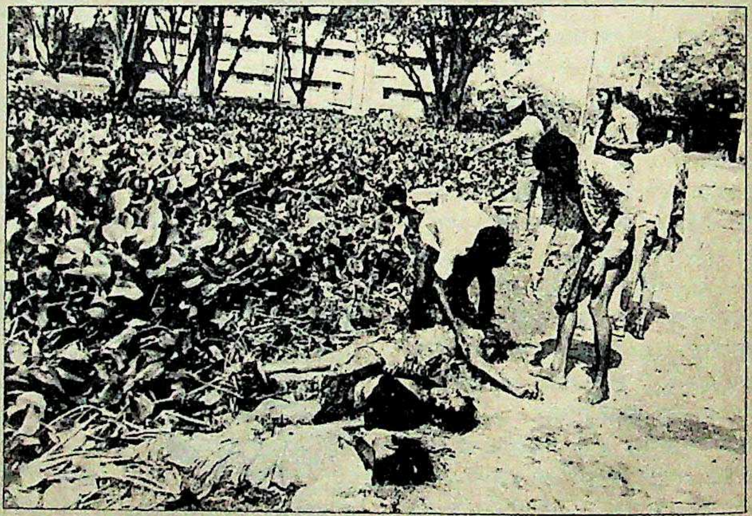

दंगे के शिकारः नाराज

इसका सबसे ज्यादा फायदा विपक्षी पार्टियों, खासकर कम्युनिस्ट पार्टियों को मिल रहा है. जमाते इस्लामिया के मुहम्मद सुहेल कहते हैं, "हमने कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार को समर्थन देने का फैसला कर लिया है." उर्दू अखबारों ने माकपा और भाकपा द्वारा रामशिला पूजन और सांप्रदायिक दंगे के बारे में स्पष्ट रवैया अपनाने पर दिल खोलकर उनकी प्रशंसा की.

आजाद के खिलाफ जनता दल ने चुनचुन यादव को खड़ा किया है जो पिछड़ी जातियों के अधिकांश वोटों के अलावा सवर्णों के वोट भी खींच सकते हैं. यादव इसके लिए कोशिशें भी कर रहे हैं. 5 नवंबर को छठ उत्सव के दिन उन्होंने इस कस्बे में जगह-जगह दूध से भरे मटके रखवा दिए ताकि जनता सूर्य पूजा कर सके. दूसरी ओर आजाद पर शहर के अनेक मुसलमान गुंडों को संरक्षण देने का आरोप लगाया जाता है.

मुसलमान और हिंदू, दोनों की नफरत के बावजूद आजाद को कोई उम्मीद है तो बस यही कि इतने तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए शायद चुनाव हो ही नहीं. हाईकोर्ट के वकील अजय त्रिपाठी कहते हैं, "इस चुनाव को कोई भी यह कहकर चुनौती दे सकता है कि कर्फ्यू के कारण वह अपना नामांकन पत्र नहीं भर पाया." उपमंत्री शकीलुज्जम्मा एक और दलील देते हैं, "राहत शिविरों में रह रहे 50,000 मुसलमान मताधिकार का उपयोग नहीं कर पाएंगे."

लेकिन शकीलुजम्मा का एक और बयान कि "यदि वे मतदान वाले दिन आ गए तो पता नहीं क्या होगा," शासक दल की दुविधा को दर्शाता है.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक ने कहा, "हमने उनके लिए बूथों पर कब्जा करने के लिए अपनी गरदन तक फंसाई. तबसे हम मुकदमे में फंसे हैं. उन्होंने हमारे लिए क्या किया?"

इस तरह स्थानीय मुद्दों ने राष्ट्रीय मुद्दों को पीछे छोड़ दिया है. और विपक्ष चुनावी फसल काटने में व्यस्त है. प्रधानमंत्री पर विपक्ष के कटाक्षों को हाथोहाथ लेना इसका एक संकेत हैं. चंद्रशेखर एक सभा में कहते हैं, "क्या आपने ऐसा साहसी प्रधानमंत्री कभी देखा है जो बुलेटप्रूफ जैकेट और शीशों के पीछे छिपकर निहत्थे लोगों को आतंकवादियों से हिम्मत के साथ मुकाबला करने की बात कहता हो?" इस पर लोगों में भारी प्रतिक्रिया होती है.

यहां तक कि इंका के गढ़ों में इसके उम्मीदवार—मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा की पुत्रवधू श्यामा सिंह औरंगाबाद में और श्यामा की मां पूर्णिया में कड़े मुकाबले का सामना कर रही हैं, जबकि उनके उम्मीदवार तुलनात्मक रूप से काफी कमजोर हैं. इसके अलावा भागलपुर में सांप्रदायिक नरसंहार ने मुसलमानों में इंका और राजीव के खिलाफ भारी नाराजगी पैदा कर दी है (देखें बॉक्स). शासक दल के पारंपरिक वोट बैंक—हरिजन, पिछड़ी जातियां, जनजातियां और मुसलमानों—के हाथ खींच लेने से इंका की चुनावी उम्मीदों पर ग्रहण लग गया है.

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि विपक्ष में सब कुछ सही चल रहा हो. राज्य के भाजपा और जनता दल नेता एक-दूसरे पर सीटों के तालमेल के उल्लंघन का आरोप लगा रहे हैं. नतीजा यह कि आधा दर्जन चुनाव क्षेत्रों में, उनके मुताबिक, 'दोस्ताना मुकाबला' हो रहा है. लेकिन अंततः इन मुकाबलों के दोस्ताना न रहने का खतरा भी है. कुछ अहम चुनाव क्षेत्रों में विपक्षी वोटों का बंटवारा इंका के लिए फायदेमंद हो सकता है.

लेकिन फिर भी शासक दल के खिलाफ विरोधी लहर ने विपक्ष का काम आसान कर दिया है. विपक्ष की रणनीति राजपूतों और यादवों को लुभाने पर केंद्रित है. मिसाल के तौर पर चंद्रशेखर की जीत यादवों के समर्थन के बिना संभव नहीं, वहीं लालू प्रसाद यादव राजपूतों के वोट के बिना छपरा से नहीं जीत सकते. इसलिए दोनों उम्मीदवार एक-दूसरे के लिए प्रचार कर रहे हैं.

लेकिन विपक्ष के प्रचार में सबसे बड़ी बाधा इंडियन पीपुल्स फ्रंट (आईपीएफ), जनता पार्टी और झारखंड मुक्ति मोर्चा सरीखे छोटे दल बनते जा रहे हैं. छपरा में जनता पार्टी के उम्मीदवार राजीव रंजन सिंह अपने प्रचार अभियान में भारी पैसा लगा रहे हैं. यदि वे राजपूत वोटों को काटने में सफल हो जाते हैं तो विपक्ष मुश्किल में पड़ सकता है. इसी तरह पटना में आईपीएफ की मौजूदगी भाकपा उम्मीदवार के लिए संकट बन गई है. गोड्डा में भाजपा उम्मीदवार झारखंड मुक्ति मोर्चा के उम्मीदवार के मैदान में कूद पड़ने से हार सकता है. यदि सब बातें उनके पक्ष में हों तो भी इन छोटी पार्टियों में से कोई भी चार अथवा पांच सीटों से ज्यादा नहीं जीतने वाली. लेकिन वे आधा दर्जन से ज्यादा चुनाव क्षेत्रों में विपक्ष की उम्मीदों पर पानी फेर सकती हैं. झारखंड समन्वय समिति द्वारा छोटानागपुर क्षेत्र में चुनाव बहिष्कार के आह्वान का बहुत असर नहीं है. लेकिन मतदान के दिन हिंसा का, खासकर सिंहभूमि के इलाकों में, खतरा है.

इसकी अपनी अहमियत तो है ही. राज्य में फर्जी वोट और मतदान केंद्रों पर कब्जा एक अहम मुद्दा बन गया है. आईपीएफ ने मतदान केंद्रों पर कब्जा रोकने के लिए

● मुजफ्फरपुर से चुनाव लड़ रहे केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री एल.पी. साही ने चुनाव आयोग से रविवार 26 नवंबर के बजाय 24 तारीख को मतदान का अनुरोध किया है. उन्होंने इसकी वजह बताई है—महाभारत.

● यदि इन दिनों के.के. तिवारी की बोलती बंद है तो इसकी पर्याप्त वजह भी है. जहर उगलने में माहिर तिवारी और उनके समर्थकों का फटौली के ग्रामीणों ने पीछा किया और केंद्रीय राज्यमंत्री एक खाई में जा गिरे. क्या बक्सर इस बार उन्हें खाली हाथ लौटा देगा?

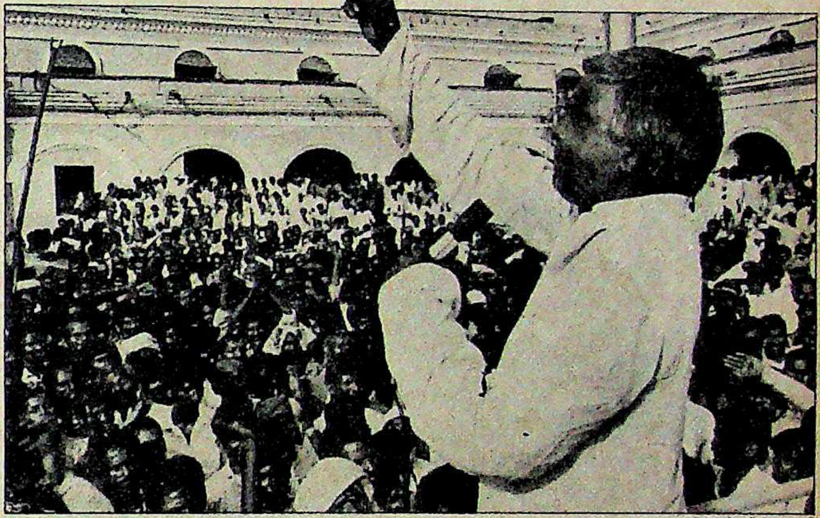

सभी फोटो: विजेंद्र त्यागी

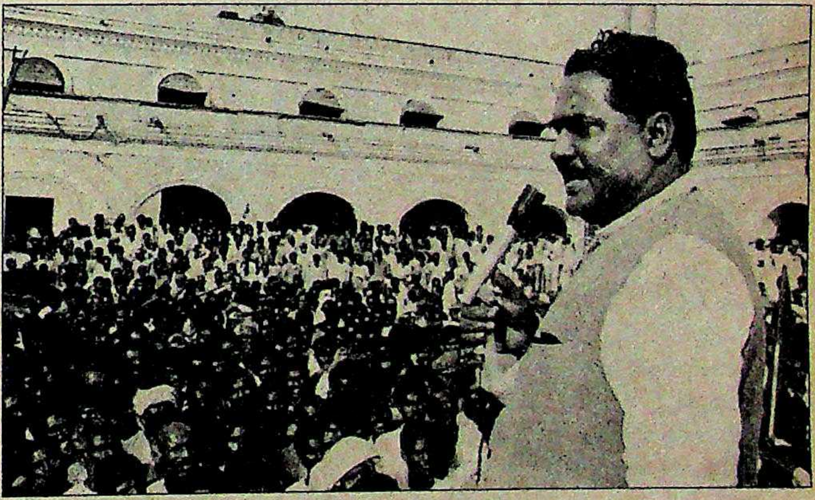

लालू यादव (ऊपर); रघुनाथ झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्ता गठित करके और फर्जी मतदान के खिलाफ सम्मेलन आयोजित करके पहल की है. और दूसरे विपक्षी दल ईमानदारी से होने वाले मतदान में अपनी जीत की संभावना देख इसमें शामिल हो गए. जब चुनाव आयोग ने महाराजगंज चुनाव क्षेत्र में गांवों से मतदान केंद्र दूर होने की बिना पर नौ मतदान केंद्रों की स्थिति बदली तो जनता दल ने मामले को दिल्ली में उठाया. पार्टी को आश्वस्त किया गया कि बदलाव नहीं किए जाएंगे.

औरंगाबाद से जनता दल उम्मीदवार रामनरेश सिंह ने ऐसे पुलिस अधिकारियों की सूची जारी की जिन्हें पिछले लोकसभा चुनावों के दौरान चुनाव क्षेत्रों में तैनात किया गया, बाद में उनका तबादला कर दिया गया और फिर चुनाव के पूर्व उन्हें वापस लाया गया. जनता दल उम्मीदवार ने आरोप लगाया कि अपनी पुत्रवधू की जीत पक्की करने के लिए मुख्यमंत्री की यह सुनियोजित कोशिश थी.

गड़बड़ी की आशंका वाले कुछ मतदान केंद्रों पर सीमा सुरक्षा बल तैनात करने के सरकारी फैसले की भी कटु आलोचना हुई है. लोकदल (ब) के महासचिव लक्ष्मी साहू का कहना था कि जिन मतदान केंद्रों पर शासक दल के पक्ष में 89 फीसदी से ज्यादा मतदान हुआ उन्हें 'गड़बड़ी' वाले केंद्रों की सूची से बाहर रखा गया जबकि ऐसे मतदान केंद्रों को जहां विपक्षी दलों के पक्ष में 70 फीसदी से ज्यादा मतदान हुआ इस सूची में शामिल किया गया. साहू ने कहा कि सशस्त्र सुरक्षा बल की मौजूदगी मतदाताओं को केंद्र से दूर रखती हैं और शासक दल को हेराफेरी करने की सुविधा पहुंचाती है. विपक्ष की चिंता वाजिब है. राज्य के वर्तमान चुनावी माहौल को देखकर तो यही लगता है कि शासक दल हेराफेरी के बूते ही वापस आ सकता है.

—उत्तम सेनगुप्त

महाराजगंज

निर्णय निर्विवाद

उनके चुनावी प्रचार का पहला पड़ाव चंचौरा बाजार है. बैंड-बाजे के साथ 200 लोगों की भीड़ चंद्रशेखर की खुली जीप को रोक लेती है. 'वीर चंद्रशेखर जिंदाबाद' के नारों से आकाश गूंज उठता है और उन्हें एक छोटे-से मंच की ओर ले जाया जाता है. उन्हें माला पहनाने के लिए धक्का-मुक्की होती है.

सबसे अनोखा दृश्य तो महाराजगंज का है. यहां इंतजार करती भीड़ पर मानो उन्माद सवार हो. बैनर और झंडे लिए लोग 'चंद्रशेखर भैया मत घबड़ाना' के नारे लगाते हैं. इस क्षेत्र से 'बाहर के' किसी व्यक्ति के लिए तो यह जीत का संदेश ही माना जाएगा.

चंद्रशेखर गंगा के उस पार उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के हैं. बलिया और महाराजगंज दोनों जगहों से लड़ने के उनके फैसले को पहले यह माना गया कि वे बलिया में अपनी जीत के प्रति आशंकित हैं. लेकिन उन्होंने यह कहकर इन अटकलों पर पानी फेर दिया कि महाराजगंज से लड़ने का उनका फैसला बिहार के मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा की वह चुनौती थी कि वे बिहार से कभी नहीं जीत सकते. जनता दल के पूर्व सांसद रामबहादुर सिंह, जिनकी इस बार महाराजगंज से खड़े होने की उम्मीद थी, कहते हैं, "चंद्र-शेखर जी को यहां लड़ने के लिए विशेष न्यौता भेजा गया था."

रामबहादुर सिंह को टिकट नहीं दिए जाने से उनके बहुत से समर्थकों में नाराजगी थी. लेकिन अब उनका गुस्सा ठंडा पड़ गया है. रामबहादुर सिंह चंद्रशेखर के साथ एक ही जीप में एकता का प्रदर्शन करते घूम रहे हैं.

बहरहाल, चंद्रशेखर की 'बाहरी' छवि का असर ज्यादा नहीं होने वाला क्योंकि यहां लोगों की पक्की धारणा है कि आखिर मौजूदा इंका सांसद कृष्ण प्रताप सिंह भी तो बाहरी ही हैं. जैसा कि एकनवार गांव के वृद्ध जलेश्वर यादव कहते हैं, "इंका उम्मीदवार को इस इलाके में शायद ही कोई जानता है. पिछले चुनावों के बाद उनका चेहरा हम लोगों ने नहीं देखा." वहां खड़े लोग मजाक में कहते हैं कि इन पांच वर्षों के दौरान उन्हें अपने सांसद से अधिक चंद्रशेखर के ही दर्शन हुए हैं, क्योंकि बलिया से पटना वे अक्सर इसी रास्ते जाया करते हैं.

बिहार से इंका के राज्यसभा सदस्य दयानंद सहाय की क्षेत्र में मौजूदगी भी चंद्रशेखर के पक्ष में जाती है. वे जनता दल नेता के पुराने दोस्त हैं. हालांकि सहाय इंका छोड़ने की बात का खंडन करते हैं पर उनकी टिप्पणी खुद ही बहुत कुछ कह जाती है, "इससे क्या फर्क पड़ता है? कांग्रेस (इ) तो आज सचमुच डूबी हुई पार्टी है."

प्रशांत पंजियार

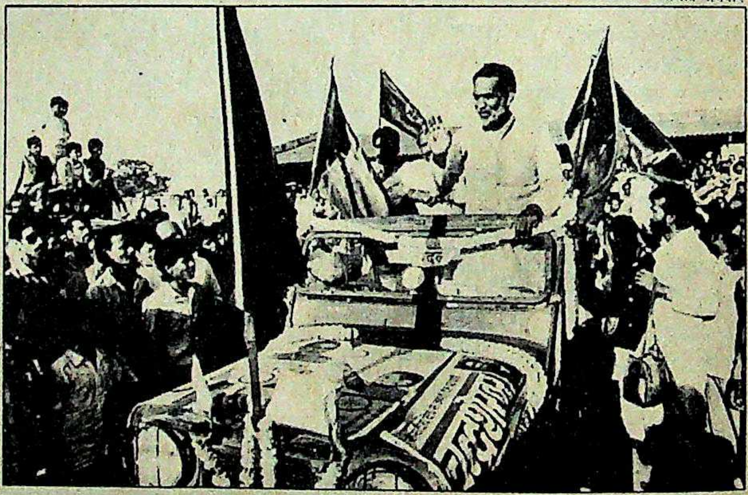

चंद्रशेखर प्रचार करते हुए

अगर चंद्रशेखर बलिया और महाराजगंज दोनों जगहों से जीते, जैसी कि संभावना है, तो वे वही सीट बरकरार रखेंगे जहां उन्हें ज्यादा वोट मिलेंगे. यह चाल भी महाराजगंज में फायदा देती दिखती है क्योंकि वहां सभाओं में वक्ता लोगों से चंद्रशेखर को सबसे अधिक अंतर से विजयी बनाने का अनुरोध करते हैं. एक मतदाता ने कहा, "यहां के लोगों के लिए यह प्रतिष्ठा का सवाल बन गया है."

लगता है महाराजगंज को एक नया महाराजा मिलेगा पर जनता दल नेता के लिए अब चुनौती यही है कि वे कितने ज्यादा अंतर से जीतेंगे.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र

गढ़ में पड़ी दरार

भीतरी असंतोष और शिवसेना के उत्कर्ष से इंका के लिए मुसीबतें

लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार जैसे-जैसे गरम होता जा रहा है वैसे-वैसे इंका के आखिरी गढ़ महाराष्ट्र के इंकाई नेता इस उधेड़बुन में फंसते जा रहे हैं कि उनकी पार्टी कुल 48 में से कितनी सीटें जीत पाएगी. ज्यादातर सीटों पर विपक्ष एक उम्मीदवार खड़ा करने में नाकाम रहा है. इसके बावजूद इंका उम्मीदवारों को कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा है, यहां तक कि उन इलाकों में भी जो इंका के गढ़ माने जाते रहे हैं.

ऐसा ही एक क्षेत्र है औरंगाबाद. इस शहर से महाराष्ट्र के लगभग सभी प्रमुख क्षेत्रों की सीमाएं जुड़ी हुई हैं. इसके 11.8 लाख मतदाताओं में 30 फीसदी मुसलमान और दलित मतदाता हैं. इसी वजह से यहां इंका का बोलबाला रहा है. परंतु अब वह औरंगाबाद को सुरक्षित नहीं मान सकती. दो साल पहले ही शिवसेना

नामस भोजानी

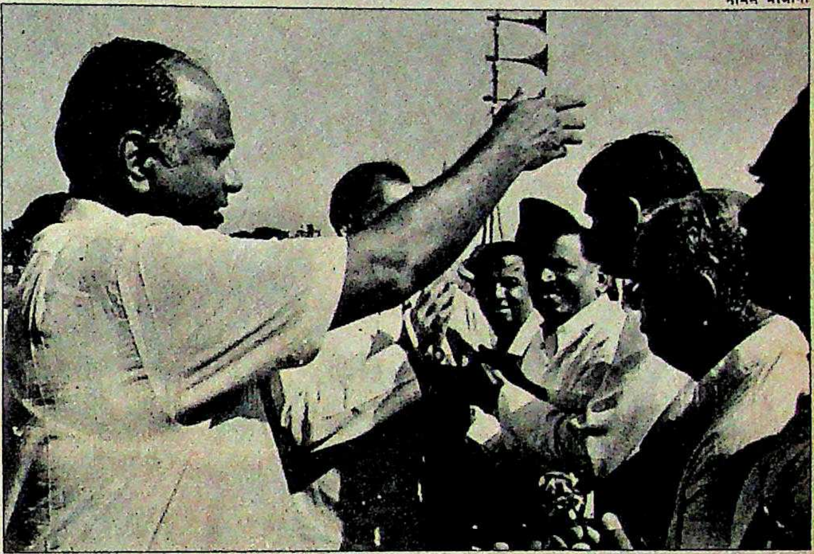

औरंगाबाद में राजीव के साथ पवारः उत्साहविहीन भीड़

बंबई

डांवांडोल हालत

बंबई में एक बार फिर कांग्रेस के लिए कई झटके खाने की स्थिति बन गई है. बंबई इंका के अध्यक्ष मुरली देवड़ा भी मानते हैं, "1984 की तुलना में इंका को इस बार अधिक कड़े मुकाबले का सामना है." इस बार दक्षिणपंथी दलों का गठजोड़ भी ताल ठोंक रहा है. शहर के संपन्न नगर निगम पर काबिज शिवसेना ने भाजपा के साथ चुनावी गठजोड़ बना लिया है. इस चुनावी गठबंधन के रचयिता और भाजपा के महासचिव प्रमोद महाजन कहते हैं, "भाजपा-शिवसेना गठजोड़ बंबई की सारी सीटें बटोर सकता है."

भगवा गठबंधन की सबसे बढ़िया स्थिति बंबई-उत्तर क्षेत्र में है, जहां भाजपा के राम नाइक का मुकाबला जनता दल की मृणाल गोरे और इंका के चंद्रकांत घोसालिया से है. ये तीनों ही विधायक हैं. मौजूदा इंका सांसद अनूचंद शाह के दोबारा चुनाव लड़ने से मना करने पर घोसालिया को इंका का टिकट मिला है. शाह की अनिच्छा इंका की स्थिति का संकेत देती है.

सिर्फ बंबई उत्तर-मध्य में ही शासक दल का सीधा मुकाबला है. यहां से इंका के मौजूदा सांसद और मृदुभाषी वकील शरद दीघे और मराठी दैनिक 'लोकसत्ता' के पूर्व संपादक विद्याधर गोखले (शिवसेना) लड़ रहे हैं. टक्कर कांटे की है.

इंका की ओर से सबसे अधिक मजबूत हालत में सुनील दत्त ही हैं, जो बंबई-उत्तर-पश्चिम से इस बार चुनाव लड़ना ही नहीं चाहते थे. उनकी निष्ठा और सादगी से मतदाता प्रभावित हैं. इंका की उठापटक के कारण और अमेरिका में कैंसर का इलाज करा रही अपनी बहू की देखभाल में लगे सुनील दत्त ने दोबारा चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया था. वे कहते हैं, "मैंने आलाकमान को यह बता दिया था लेकिन मेरी बहू ने कहा, 'डैडी, उन लोगों को

महेंद्र पारीख

फुटपाथी बच्चों के साथ सुनील दत्तः ग्लैमर भी, सादगी भी

आपकी जरूरत है. मैं ठीक हो जाऊंगी.' उसी के कहने पर मैं चुनाव लड़ रहा हूं."

मुरली देवड़ा शहर में इंका की जीत दर्ज कराने वाले दूसरे उम्मीदवार हो सकते हैं. उनके खिलाफ कई उम्मीदवार हैं. पर देवड़ा की चिंता पूरे शहर में इंका का प्रदर्शन भी है. उनकी पार्टी शहर की आधी सीटें भी बचा लेती है तो भाग्यशाली ही होगी.

—एम. रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

और मैं किसी भी झगड़ा दल को देश की क़ीमत पर पार्टी नहीं करने दूंगा।

जब सत्ता के पाये आपस में ही एक दूसरे पर गुरनि लगें और देश की बंदरबांट करने लगें तो उनके हाथ कुछ लगे न लगे, देश के हाथ शून्य ही लगता है।

जब मेल का कारण मौक़ापरस्ती और सत्ता का लोभ हो, समान कार्यक्रम नहीं, तो वो मेल ताश का महल साबित होता है जो सत्ता के पहले झोंके में ही बिखर जाता है। कभी-कभी उसके पहले ही। क्योंकि उनमें से हर कोई प्रधानमंत्री बनना चाहता है जबकि देश सिर्फ़ एक को प्रधानमंत्री बना सकता है। कभी-कभी जब वे एक होते से लगते भी हैं, तो उसका कारण लोगों की भलाई के लिये समान चिंता या सरोकार नहीं, सत्ता हथियाने की समान होड़ होती है।

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी उनके पास कैमरे के लिये एक मुस्कान तो होती हैं, मगर लोगों के लिये कोई कार्यक्रम नहीं।

मंच पर एकसाथ बैठे हुये भी वे एक नहीं होते। देश के मूलभूत सवालों पर या तो उनके पास कोई जवाब नहीं, या परस्पर विरोधी जवाब होते हैं।

वे अपनी-अपनी ताकत आज़माने, एक दूसरे की टांग खींचने और सीटों के सौदे में अपने लिये ज़्यादा से ज़्यादा सीटें हथियाने में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास लोगों की आशाओं, आकांक्षाओं के बारे में सोचने की फ़ुरसत कहां? देश के भविष्य का सपना संजोने की फ़ुरसत कहां?

ये तमाशा कोई नया नहीं है। न इसके पात्र नये हैं। उन्हें हर लेबिल, हर मुखौटे, हर रंग में पहचाना जा सकता है।

हालांकि वे अक्सर अपने लेबिल, अपने मुखौटे और अपने रंग बदलते रहते हैं।

उनका एक ही कार्यक्रम है – बंद।

देश के नव-निर्माण में उनका एकमात्र सक्रिय सहयोग है – उनका इस्तीफ़ा।

और उनका एकमात्र चुनाव घोषणापत्र है – 'राजीव हटाओ'।

उन्हें हर कीमत पर सत्ता चाहिये।

क्या उनके इरादों को कामयाब होने दिया जायेगा?

उसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी? यह सोचने की बात है।

कांग्रेस (इ) की विचारधारा एक है, मंच एक है और जनहित के लिए संघर्ष करना कांग्रेस (इ) के लिये सदैव सर्वोपरि रहा है। चाहे राष्ट्र की एकता का सवाल हो या पंचायतीराज और नगरपालिका विधेयकों का विषय हो, कांग्रेस ने हमेशा गरीब और असहाय की सेवा सामने रखी है।

कांग्रेस (इ) सदैव एक राष्ट्रव्यापी पार्टी रही है। 104 वर्ष से कांग्रेस अपनी नीति, सिद्धान्त और कार्यक्रमों द्वारा देश सेवा करती रही है।

कांग्रेस (इ) ही देश में मज़बूत और स्थायी केन्द्रीय सरकार बना सकती है। केवल कांग्रेस (इ) ही विकास, उन्नति, अच्छी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य की ओर देश को ले जा सकती है। कांग्रेस (इ) ही सब को समान अवसर प्रदान करा सकती है।

इसलिये अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइये। एक मज़बूत और संगठित भारत की सेवा में। आपकी हर धड़कन भारत के लिये हो। कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये। भारत का हाथ मज़बूत कीजिये।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/38 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा - शिवसेना की संयुक्त सभा में बाल ठाकरे: इंका को गंभीर खतरा

वहां की नगरपालिका पर काबिज हो गई थी. अब लोकसभा चुनाव में कांग्रेस परेशानी में पड़ी हुई है.

शासक दल ने अपना अभियान शुरू करने के लिए यहां के शिवाजी मैदान में राजीव गांधी को बुलाया. इससे पहले राजीव यहां दिसंबर 1986 में शरद पवार के इंका में वापसी के मौके पर आए थे. तब इसी मैदान पर करीब तीन लाख लोगों के हुजूम को उन्होंने संबोधित किया था. इस बार उन्हें फर्क पता चल गया होगा. लोगों में उत्साह तो दिख रहा था पर भीड़ तीन साल पहले के मुकाबले एक-तिहाई भी नहीं थी. राजीव हेलिकॉप्टर से सीधे वहां पहुंचे वरना वह देखते कि हवाई अड्डे से शहर तक के पूरे रास्ते में शिवसेना के भगवा झंडे पटे पड़े थे.

और शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे की रैली हुई तो जबरदस्त भीड़ थी. वे जहां कहीं भी पहुंचते, हजारों लोग जमा हो जाते. वे अब करिश्माई नेता बन चुके हैं और उग्र हिंदू समर्थक होने के बावजूद मुसलमानों को भी आकर्षित करते हैं.

जाहिर है, शिवसेना ने उस शून्य को भर दिया है जो पवार के इंका में शामिल होने की वजह से पैदा हुआ था और जिसे दूसरा कोई विपक्षी दल किसी राज्यस्तरीय नेता के अभाव में नहीं भर सका था. लोकसभा चुनाव में सेना सिर्फ छह सीटों पर चुनाव लड़ रही है. उसका भाजपा से चुनावी गठजोड़ है जिसने 33 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं. दोनों पार्टियां अपने उम्मीदवारों को लोकसभा में भेजने के प्रति पूरी तरह निश्चित दिख रही हैं. 1984 में विपक्ष को कुल पांच सीटें मिली थीं, जिनमें दो पवार की कांग्रेस (एस) ने जीती थीं. और अब पवार के सत्ता पक्ष में होने के बावजूद विपक्ष की झोली में निश्चित रूप से पहले से ज्यादा सीटें आएंगी.

मुख्यमंत्री पवार भलीभांति जानते हैं कि इंका का महाराष्ट्र में अब तक की सबसे कड़ी चुनावी लड़ाई से मुकाबल है. हालांकि वे जोर देकर कहते हैं कि पार्टी बड़े आराम से जीत जाएगी पर वे यह भी स्वीकार करते हैं कि कम-से-कम 16 सीटों पर उसे दिक्कत पेश आएगी. इंका के सामने समस्या यह नहीं है कि शिवसेना जैसे विपक्षी दल का असर बढ़ रहा है, बल्कि हर जिले में ऐसे कई असंतुष्ट इंकाई हैं जो इंका को हराने के लिए विपक्ष को तन-मन-धन से समर्थन दे रहे हैं. दरअसल राज्य पुलिस की खुफिया शाखा ने ऐसे 77 बड़े इंका नेताओं की सूची बनाई है जो 23 से 30 जिलों में इंका के लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं.

चार्ट: बी.के. शर्मा

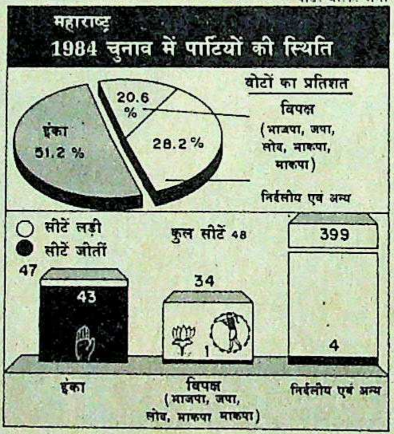

लोकसभा टिकट न मिलने के बाद तो कई इंका नेताओं ने खुली बगावत कर दी है. मौजूदा सांसदों को ही टिकट देने के राजीव के फैसले से पवार के समर्थक ही सबसे ज्यादा क्षुब्ध हैं. उनकी इन भावनाओं को महाराष्ट्र इंका की अध्यक्ष प्रतिभा पाटील, और पूर्व मुख्यमंत्रियों—शिवाजी राव पाटील निलंगेकर व अब्दुल रहमान अंतुले जैसे नेताओं ने लगातार भड़काया भी है. ठाकरे प्रसन्नता से कहते हैं, "कांग्रेस में बहुत चौड़ी दरार पड़ गई है."

जाहिर है, इंका के लिए सबसे सुरक्षित माना जाने वाला प्रदेश भी अब उसके लिए असुरक्षित हो गया है. पवार मंजे हुए राजनीतिक हैं और वे पार्टी की पुरानी पकड़ बरकरार रखने के लिए एड़ी-चोटी एक कर देंगे. लेकिन अगर पार्टी में भीतरी असंतोष गहराया तो तिकोना संघर्ष भी इंका के लिए घातक बन सकता है.

—एम. रहमान

- **1989 का अनूठे करतब के लिए पुरस्कार निस्संदेह 'कैपिटलिस्ट पोपुलिस्ट पार्टी' के कल्की गौड़ को मिलना चाहिए जिन्होंने अपने दक्षिण बंबई निर्वाचन क्षेत्र की दीवारों को 'सीआईए जासूस मोरारजी देसाई को फांसी दो' और 'भ्रष्ट मारवाड़ी व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण करो' जैसे नारों से रंग दिया है. उनके प्रतिद्वंद्वी देवड़ा मारवाड़ी व्यवसायी हैं.**

- **इंका एक के बाद एक अपना दुर्ग खो रही है. विधानसभा चुनावों का इंतजार तो करिए, हमीं सत्ता में आएंगे.** *—शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे*

- **अब सेना ही लोकप्रिय पार्टी है.** —सलीम अली, *जैना में पेट्रोल पंप कर्मचारी*

- **मैं इस निर्वाचन क्षेत्र का पुलिसमैन नहीं हूं.** **—मुरली देवड़ा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Maharishi
Ayurved

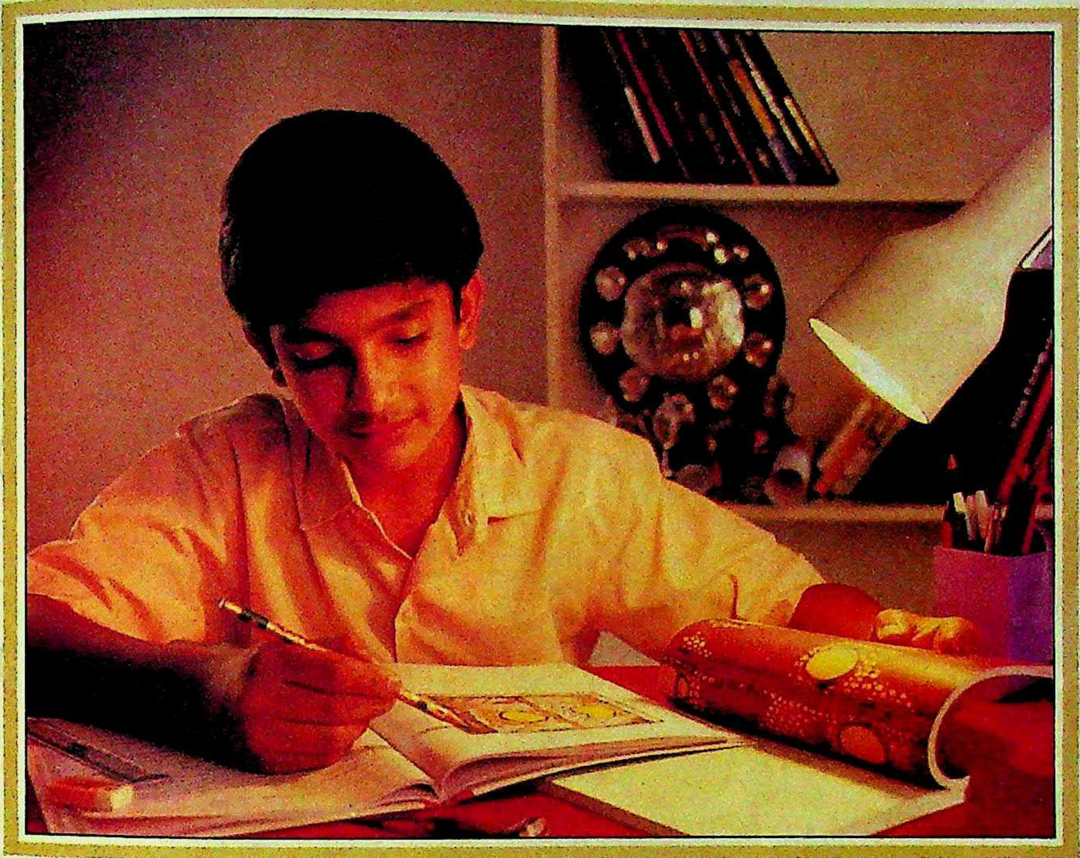

बच्चों की बुद्धि, स्मरणशक्ति और शारीरिक विकास के लिए अब एक आयुर्वेदिक टॉनिक.

बचपन का विकासकाल मनुष्य के पूरे जीवन का आधार होता है। यही वह समय है जब शरीर और मस्तिष्क की विकास प्रक्रिया सबसे तेज़ होती है।

अब उपलब्ध है आपके बच्चों की बुद्धि, स्मरणशक्ति और शारीरिक विकास प्रक्रिया को तेज़ी से बढ़ाने वाला एक अनूठा टॉनिक – विद्यार्थी अमृत।

महर्षि आयुर्वेद विद्यार्थी अमृत दुर्लभ और उपयोगी जड़ी बूटियों का विशेष मिश्रण है जो विख्यात वैद्यों की कुशल देख रेख में तैयार किया गया है।

यह सारे आवश्यक विटामिन और खनिज प्रदान करता है तथा शरीर के विकास के लिए ज़रूरी तत्वों को संतुलित रखता है। एक चम्मच टॉनिक दिन में दो बार लेने से रोगों से बचाव की क्षमता बढ़ती है और भोजन को पोषक तत्वों में बदलने की प्रक्रिया तेज़ हो जाती है।

इसके परिणाम स्वरूप बच्चा हमेशा शक्ति से भरपूर, चुस्त और सक्रिय रहता है।

इसलिए इसका नाम रखा गया है विद्यार्थी अमृत.....

यह महर्षि आयुर्वेद की विशुद्ध, प्रामाणिक आयुर्वेदिक औषधियों की व्यापक श्रृंखला का मात्र एक हिस्सा है। इस श्रृंखला में अस्थमा, जोड़ों का दर्द, अनिद्रा, एनीमिया, एसिडिटी, लिवर, सर्दी, खांसी इत्यादि के लिए उपचार शामिल हैं। ये सारी औषधियां कुशल वैद्यों की देख-रेख में तैयार की जाती हैं।

महर्षि आयुर्वेद उत्पाद प्रभावशाली और प्रतिकूल प्रभाव रहित उपचार के लिए सारे विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

सभी प्रमुख औषधि विक्रेताओं के यहाँ उपलब्ध।

महर्षि आयुर्वेद
ए-34 मोहन इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मथुरा रोड,
नई दिल्ली-110044.
फोन : 6846501.

विद्यार्थी अमृत
बच्चों के लिए एक आयुर्वेदिक टॉनिक

म ह र्षि आ यु र्वे द – नि रो ग स मा ज का नि र्मा ण

ULKA-D-MA-782-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश के पिछड़े इलाके में भद्राचलम पेपरबोर्ड्स प्लांट में शिफ्ट-ड्यूटी की भीड़-भाड़ शुरु हो गयी। नागेश्वर राव अब घर पहुंचने की जल्दी में है, क्योंकि उनकी बेटी कॉलेज से लौटकर उनकी राह देख रही होगी। मिल के निजी स्कूल में, अपनी दो-दो बहनों के साथ,वह कभी होनहार रत्न थी। आजकल वह कमप्यूटर-विज्ञान की छात्रा है और अपनी पढ़ाई पूरी करके उसी आइ टी सी कम्पनी का हिस्सा बनना चाहती है, जहां कभी उसके पिता ने काम शुरु किया था।

नागेश्वर आजकल भद्राचलम पेपरबोर्ड्स का गौरवशाली कर्मचारी है। अब वे प्लांट के स्वयं-सम्पूर्ण आवास कॉलोनी में रहते हैं, जिसे 'आधुनिक गांव' का आदर्श रूप दिया गया है और जिसमें हर तरह की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था है। अब पिछली हताशा के सपने की सिर्फ एक खौफनाक याद भर रह गयी है। ऐसा भी एक भयंकर वक्त था, जब उन्होंने अपने बंजर और पैतृक ज़मीन की उम्मीद छोड़ दी थी और इस पिछड़े इलाके से हमेशा के लिए चले जाने का इरादा कर लिया था। लेकिन यह दस साल पहले की बात है—तभी आइ टी सी ने उन्हें राह दिखायी...

भद्राचलम के नागेश्वर राव। उनके लिए पिछड़े इलाके में विकास और तरक्की सिर्फ सपना था।

तभी आइ टी सी ने भद्राचलम पेपरबोर्ड्स की उन्नति और नौकरी के अनगिनत संभावनाओं के ज़रिये उनकी प्रतिभा और समृद्धि को मौका दिया।

प्लांट का अंग्रेजी और तेलुगु माध्यम स्कूल अपने कर्मचारियों के १५०० बच्चों की पढ़ाई में भी मदद कर रहा है।

आइ टी सी द्वारा विकसित भद्राचलम पेपरबोर्ड्स अब १०० करोड़ रुपये के संचालन तक पहुंच गया है। कोर-सेक्टर के पेपर उद्योग को ताज़गी देने के उद्देश्य से इस परियोजना ने पिछड़े इलाके के विकास को प्रेरणा दी है।

आज भद्राचलम व्यापार और उद्योग के गहमागहमी से सरगर्म हो उठा है और जीवन के मूल स्रोत से जुड़ गया है। ग्रामीण-क्षेत्रों के लोगों और आदिवासियों के लिए करीब १२०० प्रत्यक्ष और उससे भी कहीं ज्यादा अप्रत्यक्ष नौकरियों का सृजन किया है। आज उनकी कमाई भी बढ़ गयी है और जीवन स्तर में भी काफी सुधार आया है।

यहां तक कि यह प्लांट लोगों के स्वास्थ्य और इलाज की सुविधायें भी प्रदान करता है।

आज आइ टी सी के अन्यान्य गौरवशाली कार्यों की तरह, भद्राचलम पेपरबोर्ड्स भी अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो चुका है। विशिष्ट तकनीक, उत्पादकता और उत्पादन के नये प्रतिमान स्थापित करके, यह परियोजना भी आइ टी सी के लिए महान गर्व का साधन बन चुकी है। कोर-सेक्टर में पिछड़े इलाके के विकास और उसकी अभूतपूर्व सफलता के संकल्प में आइ टी सी अब आदर्श बन चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और

शाली
ी अपने
नीक,
स्थापित
लिए
-सेक्टर में
भूतपूर्व
आदर्श

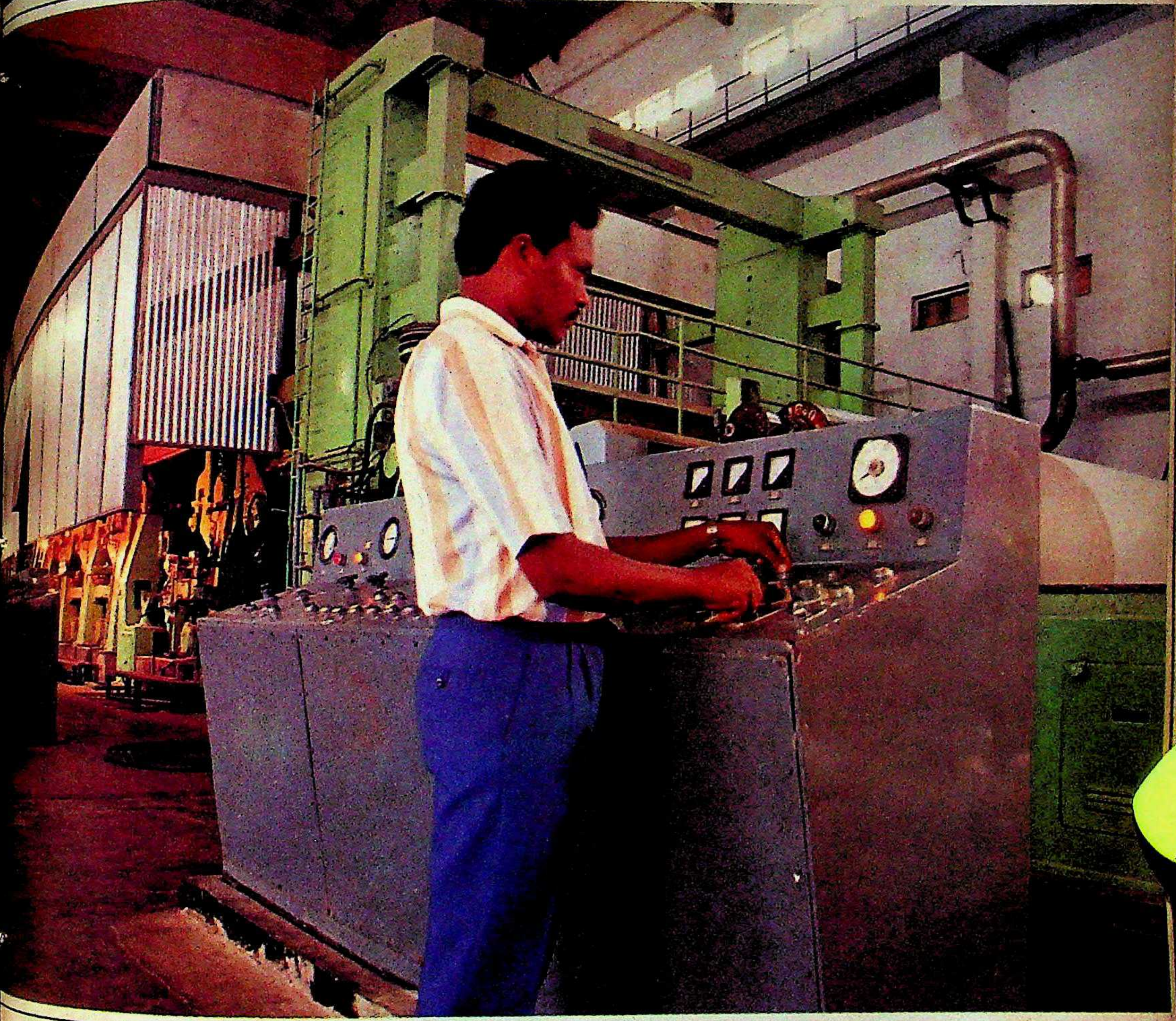

आई टी सी भारत के लिए और कहां-कहां कार्यरत है?

कृषि उद्योग : सालों के शोध और विकास के दम पर आई टी सी ने कई-कई क़िस्मों के तैल-बीजों के उत्पादन और विकास का भी सूत्रपात किया है, जिससे आयात की मात्रा कम होगी और हज़ारों-हजार किसानों के फलने-फूलने में मदद दिलेगी। खाद्य-अखाद्य तेलों एवं सहायक उत्पादनों के निर्माण और मार्केटिंग के साथ-साथ, आई टी सी ने आयात भी कम किया है।

कुटीर उद्योग : हथकर्घे, कच्चे माल और तकनीकी विशिष्टताओं के दम पर आई टी सी ने त्रिवेणी हैंडलूम्स के ज़रिये शाहजहांपुर की प्राचीन कालीन-बुनाई कला को पुनर्जीवित किया है। अब कालीनों के साथ-साथ अन्यान्य लघु और कुटीर उद्योगों की सामग्रियां भी आई टी सी द्वारा निर्यात की जाती हैं।

परिवार कल्याण : अपनी विस्तृत वितरण व्यवस्था द्वारा आई टी सी करोड़ों की संख्या में निरोध-साधन वितरित कर रही है और छोटे परिवार एवं कई साल के अन्तर में सन्तान-प्राप्ति के लाभ का प्रचार-प्रसार कर रही है। इसके अथक प्रयासों को सन् १९८८ के एफ आई सी सी आई पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

I.T.C. Limited

नई दिशाएँ, नई आशाएँ

Contract ITC 90.89 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो : नरेंद्र सक्सेना

प्रचार करते शेखावत

> "हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई, कांग्रेस की हो गई सफाई"
>
> *राजस्थान में भाजपा का नारा*
>
> "हमारी पार्टी की ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं. और हमारे पास कार्यकर्ताओं की भीड़ है"
>
> *मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर*
>
> "यह बिलकुल बारात जैसी स्थिति है. दोनों पार्टियों में कोई मतभेद नहीं है"
>
> *राज्य भाजपा प्रमुख भैरों सिंह शेखावत*

राजस्थान

पांच वर्षों में पलटे हालात

एकता के कारण विपक्ष का पलड़ा भारी

इंका ने 1984 के आम चुनावों में यहां लोकसभा की सभी 25 सीटों पर विपक्ष का सफाया कर दिया था. लेकिन इस बार हालात बदल गए हैं. इसकी एक वजह यह है कि 1984 के उलट इस बार 24 निर्वाचन क्षेत्रों में उसका मुकाबला संयुक्त विपक्ष से है. और दूसरी वजह यह है कि राम शिला पूजन आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला है, जिससे भाजपा को निश्चित रूप से लाभ पहुंचने जा रहा है. इन दोनों वजहों का मेल इंका के लिए खतरनाक साबित हो सकता है.

यह कितना खतरनाक हो सकता है इसे 1984 में पड़े वोटों से आसानी से समझा जा सकता है. उस समय इंका के पक्ष में व्यापक सहानुभूति लहर चलने के बावजूद पांच निर्वाचन क्षेत्रों—बाड़मेर, बयाना, भरतपुर, नागौर और झुंझुनू—में विपक्ष को शासक दल से कुल मिलाकर ज्यादा वोट मिले थे. इस बार इन निर्वाचन क्षेत्रों में साझा उम्मीदवार खड़े करने और वोटों के न बंटने की संभावना से विपक्ष इन सीटों को जीता हुआ मान रहा है. जनता दल इनमें से चार सीटों पर लड़ रहा है.

भाजपा को 1984 में 15 निर्वाचन क्षेत्रों में इंका के बाद सबसे अधिक वोट मिले थे. लेकिन इस बार विपक्षी एकता के लिए भाजपा ने सीकर की सीट हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल के लिए छोड़ दी है. यहां

जालौर

बूटा से बराबरी

केंद्रीय गृहमंत्री बूटा सिंह अपने दफ्तर में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद से संबंधित मोटी फाइल छोड़कर राजस्थान के अपने चुनाव क्षेत्र जालौर में प्रचार अभियान का श्रीगणेश करने तो गए लेकिन इस विवाद की आंच ने यहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा. विश्व हिंदू परिषद और भारतीय जनता पार्टी ने इस मुद्दे पर उन्हें बचाव की मुद्रा अपनाने पर मजबूर कर दिया है. लेकिन बूटा सिंह का कहना है कि "इस तरह का चुनाव प्रचार नितांत अनैतिक है."

हालांकि बूटा सिंह के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी भाजपा प्रत्याशी कैलाश मेघवाल कोई बड़ी राजनैतिक हस्ती नहीं हैं. लेकिन बूटा सिंह आरएसएस, भाजपा और परिषद की तिकड़ी पर हमला करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते.

वैसे, बूटा सिंह ने इस निर्वाचन को क्षेत्र सजाने-संवारने में कोई कसर नहीं छोड़ी है. जलाशय, गेस्ट हाउस, स्कूल, औषधालय, तेल कारखाना खुलवाने के अलावा जालौर में पहली रेलगाड़ी भी बूटा सिंह के कार्यकाल में ही पहुंची. इसे 'बूटा एक्सप्रेस' भी कहा जाता है. इंका को पूरी उम्मीद है कि इस क्षेत्र का तीव्र विकास विपक्ष के धार्मिक प्रचारों का माकूल जवाब बनेगा.

मेघवाल यह मानने को तैयार नहीं कि भाजपा राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर ही निर्भर है. वे कहते हैं, "हम धार्मिक नेताओं को चुनाव प्रचार करने से रोक तो नहीं सकते."

बहरहाल, भाजपा बूटा सिंह को कड़ी चुनौती देने में सफल दिख रही है.

—पंकज पचौरी, जालौर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उनके कट्टर विरोधी लोकसभा अध्यक्ष और जाट नेता बलराम जाखड़ इंका के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं. सीटों के तालमेल जैसे ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल पर जातिगत समीकरण भी गौण पड़ गए. नतीजा यह कि अब भाजपा 14 सीटों पर खुद लड़ रही है और 10 सीटें उसने जनता दल के लिए छोड़ दी हैं. एकमात्र त्रिकोणात्मक मुकाबला बीकानेर की सीट पर है जहां से माकपा के मौजूदा विधायक शिवपत सिंह भी खड़े हैं.

भाजपा और जनता दल में राष्ट्रीय स्तर पर हालांकि अनौपचारिक तालमेल ही है, लेकिन राजस्थान में दोनों ने संयुक्त चुनाव अभियान चलाने का फैसला किया है. यह इंका के लिए खतरे की घंटी है. प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भैरों सिंह शेखावत खुशी में कहते हैं, "यह बिलकुल बारात जैसी स्थिति है. दोनों पार्टियों में कोई मतभेद नहीं है." जनता दल के कल्याण सिंह कालवी कहते हैं,

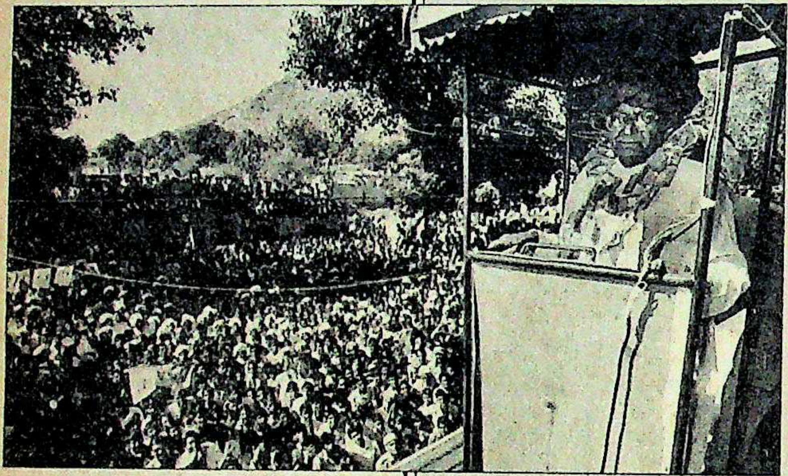

देवीलाल (ऊपर) और जाखड़: जबरदस्त अभियान

सीकर

पगड़ी की लड़ाई

सीकर सीट के लिए इस बार दो जाटों की पगड़ियां टकरा रही हैं. एक पगड़ी का रंग लाल है तो दूसरे का रंग हरा. एक पगड़ी आलीशान विजय रथ पर सवार है, तो दूसरी फूलों से सजी जिप्सी पर. एक पगड़ी हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल की है, तो दूसरी लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ की. और यह साले-बहनोई की भिड़ंत भी है.

लेकिन यहां चुनावी दंगल में दो चौधरियों के लंगोट संभालने के बावजूद लड़ाई कांटे की नहीं है. लोगों की भीड़ एक को देख तो दौड़ी चली आती है पर दूसरे के इर्दगिर्द फटकती भी नहीं. देवीलाल के रथ के पहिए जैसे ही इस संसदीय क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, भीड़ उमड़ पड़ती है. वे रथ की छत पर आते हैं तो नगाड़े बजने लगते हैं, फूल बरसने लगते हैं. फूल तो जाखड़ पर भी पड़ते हैं पर वैसा उत्साह नहीं दिखता.

देवीलाल माईक पर आते ही लुभावने वादों की झड़ी जो लगा देते हैं. मसलन, 10,000 रु. तक के सहकारी बैंकों के सभी कर्जों की माफी, शिक्षित बेरोजगारों को हर माह 100 रु. भत्ता, हरिजन परिवार में जन्मे पहले बच्चे को 300 रु. प्रति महीने और 65 साल से अधिक के लोगों को 100 रु. महीने का भत्ता. अक्सर वे भीड़ से पूछते हैं, "आज आपने एक कप चाय पी होगी. यह कितने की आई?" भीड़ में से आवाज उठती है, "एक रुपए की." "आपने एक बंडल बीड़ी भी खरीदी होगी. इसका कितना पैसा देना पड़ा?" "दो रुपए." अब वे अपनी बात पर आते हैं, "आप अभी तक तीन रुपए खर्च कर चुके. मैं आपसे हर पांच वर्ष पर एक रुपया मांगता हूं. क्या आप मुझे देंगे?" भीड़ से 'हां' का स्वर उभरता है.

इसके विपरीत जाखड़ के भाषण ठस्स होते हैं. जाखड़ कहते हैं, "इस चुनाव में मेरी जीत या हार कोई मतलब नहीं रखती. आज देश आज चौराहे पर खड़ा है. विपक्ष में प्रधानमंत्री पद के 12 उम्मीदवार हैं और वे देश को भी बेच सकते हैं."

देवीलाल के जोरदार हमलों का मुकाबला करने के लिए जाखड़ ने अपने प्रचार अभियान में दिन-रात एक कर दिया है. देवीलाल के दो दिन के तूफानी दौरे के मुकाबले उनकी रणनीति इस क्षेत्र के हर गांव में पहुंचने की है. जाखड़ के प्रचार के कर्ताधर्ता उनके बेटे सुनील जाखड़ कहते हैं, "रथ पर चढ़कर लोगों की तरफ हाथ हिलाने भर से ही आप वोट नहीं ले सकते."

लेकिन इस क्षेत्र से फिर जनादेश लेने की कोशिश कर रहे जाखड़ का रुख बचाव का ही दिखता है. रासायनिक खाद कारखाना और रेफरेल अस्पताल का वादा धरा ही रह गया. जाखड़ चारा घोटाले के मुद्दे पर भी एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं. इससे यह दिलचस्प नारा भी उछल पड़ा है. "चारा चोर, कमीशन खोर, सीकर छोड़, सीकर छोड़," बहरहाल, इस चुनावी दंगल में अब जाखड़ के अधूरे वादों का मुकाबला देवीलाल के सुनहरे भविष्य के वादों से है.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारा मुख्य मकसद राजीव सरकार को हटाना है. इस लड़ाई में हम एकजुट हैं."

दूसरी ओर इंकाई खेमे में उत्साह की कमी दिखती है. उसने सभी 25 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए हैं. इनमें से 16 मौजूदा सांसद हैं जिनमें तीन केंद्रीय मंत्री—बूटा सिंह, राजेश पायलट और रामनिवास मिर्धा—शामिल हैं. मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर जिन पर अभियान की पूरी जिम्मेदारी है, परेशान नहीं दिखते. वे कहते हैं, "हमारी पार्टी की ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं. और हमारे पास कार्यकर्ताओं की भीड़ है."

इंकाई अभियान में निश्चित रूप से आंडबर और शोरशराबा ज्यादा है. इंका उम्मीदवार अपनी सभाओं में भाजपा को निशाना बनाकर मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं. कुछ भाजपा

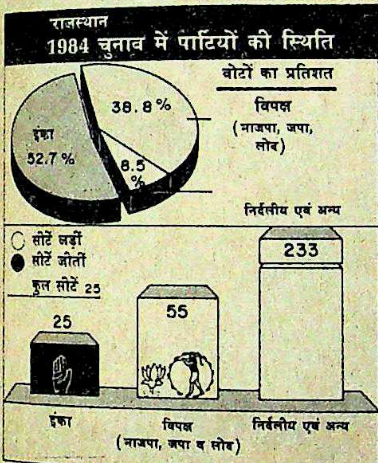

चार्ट बी.के. शर्मा

नेताओं पर तो सीधे हमले किए जा रहे हैं. इसकी मिसाल हैं पाली में भाजपा उम्मीदवार गुमानमल लोढ़ा. राजस्थान न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश लोढ़ा राम जन्मभूमि समिति की राज्य इकाई के अध्यक्ष हैं. गहलोत कहते हैं, "अभी कल तक नाथूराम मिर्धा (जो कि नागौर में अपने चचेरे भाई रामनिवास मिर्धा के खिलाफ जनता दल के टिकट पर लड़ रहे हैं) दंगों के लिए लोढ़ा को जिम्मेदार ठहरा रहे थे."

भाजपा ने भी इंका के हमले का जवाब देने की रणनीति बनाई है. अजमेर में भैरों सिंह शेखावत ने कहा, "मेरे 32 महीने के मुख्यमंत्रित्व काल में सिर्फ एक दंगा हुआ जबकि पिछले 12 महीने में 28 दंगे हुए. वजह यह है कि इंका मुसलमान वोट पाने के लिए दंगे भड़का रही है." वे एक नारे से अपना भाषण खत्म करते हैं, "हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई, कांग्रेस की हो गई सफाई." राजस्थान में विपक्ष के लिए यह नारा अब उतना निरर्थक नहीं लगता जितना दो महीने पहले लगता था.

—पंकज पचौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

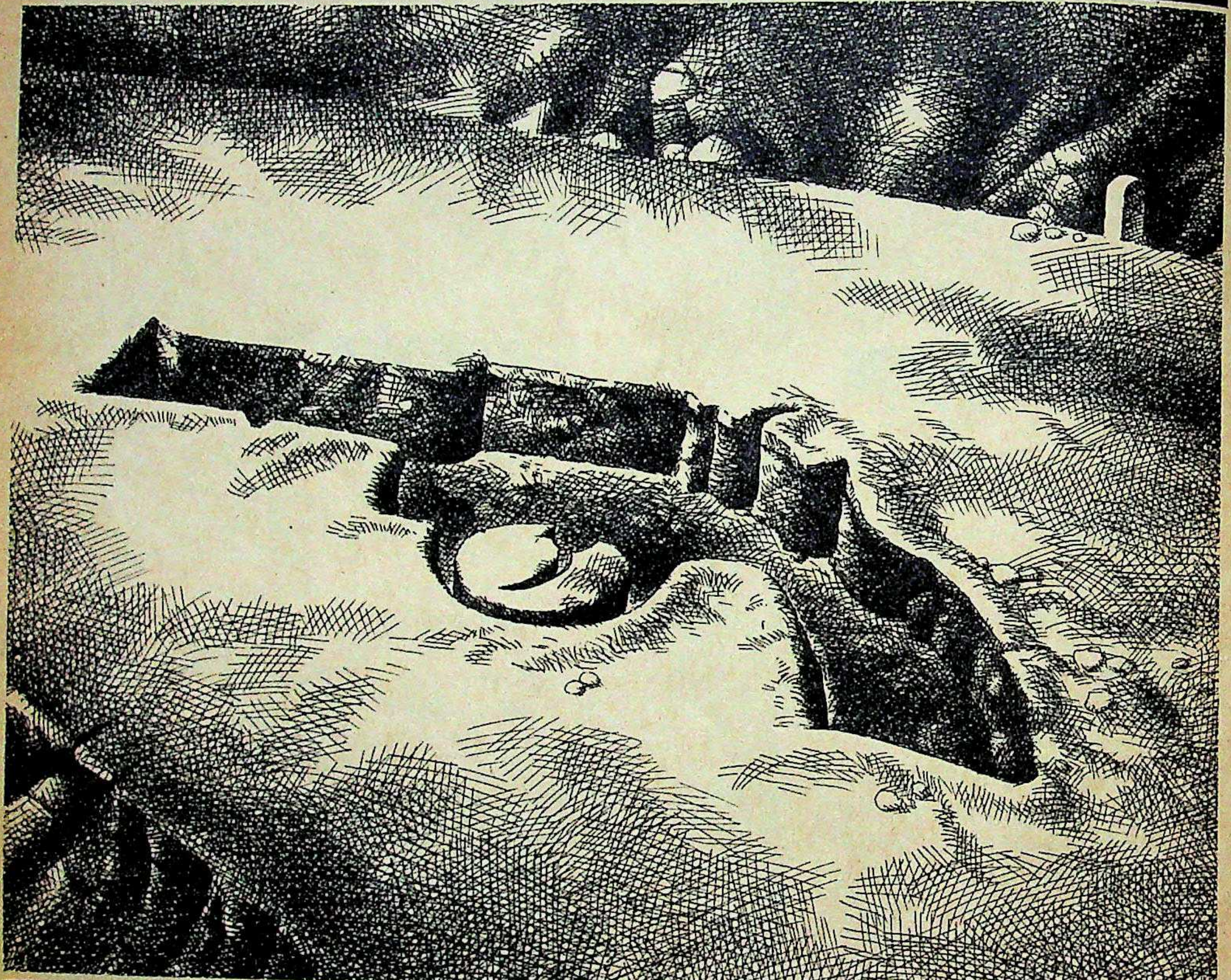

और मैं किसी को इसके जन-जीवन में आग नहीं लगाने दूंगा।

कभी-कभी भारत के सूर्य को ग्रहण लग जाता है। जब आतंक, अराजकता, असमानता और धर्मान्धता की परछाइयां उसे ढंक लेती हैं।

जब मिट्टी में फूल नहीं बारूद उगती है और धुआं चूल्हों से नहीं, पिस्तौल की नली से निकलता है और सारे शहर पर छा जाता है।

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि इंसानों के बीच कुछ जानवर भी रहते हैं। कुछ भेड़िये, कुछ सांप, कुछ सियार, कुछ बिच्छू। आमतौर पर ये अपनी गुफाओं या बिलों में दुबके रहते हैं। और इंतज़ार करते हैं।

इंतज़ार करते हैं कि कब कानून की गिरफ़्त थोड़ी ढीली हो। इंतज़ार करते हैं कि कब केन्द्र की शक्तियां आपस में ही लड़ने-भिड़ने, ज़ोर आज़माने, एक दूसरे की टांग खींचने में लगी हों।

और जब पहरेदार खुद ही ग़ाफ़िल हों, तो ये जानवर अपनी-अपनी गुफाओं और बिलों से निकलते हैं, सायों से बाहर आते हैं और शहर में फैल जाते हैं। और इनके साथ ही फैल जाती है हिंसा की आग। सांप्रदायिक हिंसा की आग, दंगे, गुंडागर्दी और अराजकता।

चाकू निकल आते हैं। पिस्तौलें निकल आती हैं। बम, एसिड बल्ब, लोहे की छड़ें निकल आती हैं।

और अचानक आप जैसे शांतिप्रिय, कानून और व्यवस्था में आस्था रखने वाले आदमी के लिये सड़कें सुरक्षित नहीं रहतीं।

अचानक सड़कें सुलग उठती हैं।

ऐसे में सिर्फ़ मज़बूत हाथ ही इनके नाखून और पंजे काट सकता है। इनके विषदंत तोड़ सकता है।

सिर्फ़ मज़बूत हाथ ही इन्हें कुचल सकता है, काबू में ला सकता है और उन्हें कानून के सामने झुकने और उसकी इज़्ज़त करने पर मज़बूर कर सकता है।

सिर्फ़ मज़बूत हाथ जनसाधारण को सुख की नींद, व्यक्ति एवं परिवार को सुरक्षा प्रदान कर सकता है।

ऐसा मज़बूत हाथ सिर्फ़ एक ही है। कांग्रेस (इ) का हाथ। समस्त भारत के सुख और शांति का प्रतीक।

सिर्फ़ कांग्रेस (इ) ही भय, असमानता, अन्याय, धार्मिक भेदभाव जैसे अभिशापों को मिटा सकती है। क्योंकि 104 साल पुराना इतिहास इस तथ्य का गवाह है कि कांग्रेस संकीर्ण क्षेत्रीयवाद तथा सांप्रदायिकता से दूर रही है और सदैव देश को सबल, शक्तिशाली और निष्ठावान नेतृत्व प्रदान करती रही है। जनजीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिये सदैव वचनबद्ध रही है।

इसलिये अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइये। एक सुरक्षित, निरापद और निर्भय भारत की सेवा में। आपकी हर धड़कन भारत के लिये हो। कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये। भारत का हाथ मज़बूत कीजिये।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/39 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

लाल किले की आस

देवीलाल का करिश्मा बरकरार

प्रतीक मानो एक-दम सटीक है. 'विजय रथ की छत तक पहुंचने वाली लिफ्ट पर बैठे हरियाणा के राजनैतिक दिग्गज ज्यों-ज्यों ऊपर उठते हुए जनता के सामने आते हैं, तालियों की गड़गड़ाहट आसमान गुंजा देती है. ढाई साल पहले राज्य की राजनीति में तूफान उठाते हुए जिस तरह देवीलाल मुख्यमंत्री बने थे, वह जन समर्थन खास तौर से जाटों का, अभी भी बरकरार है.

इस समर्थन में अगर कोई बदलाव आया है तो यही कि यह दीवानगी की हद तक पहुंच गया है. हरियाणा भले ही 10 सांसद भेज सकता है लेकिन यहां का मूड देखकर लगता है कि अगर यह संख्या दस गुनी भी होती तो जीत में कोई परेशानी नहीं होती. और यह चालाक जाट नेता भी जान चुका है कि उसका अंतिम लक्ष्य—प्रधानमंत्री पद—अब ज्यादा दूर नहीं है.

खुद वे बार-बार कहते रहे हैं कि अगर विपक्ष जीता तो विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री होंगे. लेकिन उनके चुनाव प्रचार अभियान से एक अलग ही संदेश साफ सुनाई देता है. उनके चुनाव प्रबंधक कहते फिर रहे हैं कि देश के भावी

प्रमोद पुष्करणा

भवान सिंह

देवीलाल (बाएं) ; और जनसभा में चौटाला: भारी समर्थन

भजनलाल

मात का अंदेशा

"लूट का राज हटाना है, भजनलाल को लाना है." पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल की जीप जैसे ही होडल में एक चुनाव सभा की ओर मुड़ी, उसके आगे नौजवानों की टोली ने बड़े उत्साह से यह नारा लगाया.

लेकिन खुद भजनलाल के मन में उत्साह नहीं है. हरियाणा की इंका राजनीति में उनके विरोधी बंसीलाल खेमे ने उन्हें फरीदाबाद से चुनाव लड़ने के लिए 'मजबूर' कर दिया. यहां उनका मुकाबला जनता दल के लोकप्रिय उम्मीदवार खुर्शीद अहमद से ही नहीं, सीधे देवीलाल से है.

बहादुरी दिखाने के लिए तो भजनलाल ने देवीलाल को चुनावी दंगल में भिड़ने की चुनौती दी, पर देवीलाल नें फरीदाबाद से नामांकन पत्र नहीं भरा. भजनलाल इसे भरकर फंस गए. इंका आलाकमान ने उन्हें नामांकन पत्र वापस नहीं लेने दिया. नतीजतन, भजनलाल को तितरफे हमले का सामना करना पड़ रहा है—मजबूत प्रतिद्वंद्वी खुर्शीद अहमद से, देवीलाल की हवा से और अपनी पार्टी के विरोधियों से. बंसीलाल के समर्थकों ने राजीव गांधी को यह समझाने में सफलता पा ली कि भजनलाल को चुनाव मैदान में बने रहने देना ही ठीक है, वरना वे पूरा समय बाकी इंका उम्मीदवारों के खिलाफ जोड़तोड़ और दलबदल कराने में लगाएंगे.

और मजेदार बात यह है कि 'आया राम गया राम' संस्कृति के जनक भजन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानमंत्री देवीलाल ही बनेंगे.

रोहतक की एक उत्साही भीड़ वाली सभा में राज्य चीनी सहकारी समिति के अध्यक्ष और विधायक वीरेंद्र कुमार कहते हैं, "कल के प्रधानमंत्री आज आपके बीच में बैठे हैं." प्रधानमंत्री के बड़े बेटे और प्रदेश जनता दल अध्यक्ष मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला सभा में कहते हैं, "विपक्ष के सभी प्रमुख नेता चौधरी देवीलाल के पीछे हैं. टिकटार्थी कहीं और नहीं, हमारे ही हरियाणा भवन में भीड़ लगाए रहे." उनकी इस बात पर सभा में उपस्थित श्रोताओं ने बार-बार तालियां बजाईं.

दरअसल हरियाणा का यह धुरंधर खुद ही 'भावी प्रधानमंत्री' की रणनीति का प्रमुख प्रवक्ता है. विजय रथ की छत से बोलते हुए वे कहते हैं, "मैंने गांधी जी की समाधि पर प्रार्थना करने के बाद अपना अभियान शुरू किया क्योंकि उन्होंने कहा था कि किसान के बेटे को प्रधानमंत्री बनाने से ही देश प्रगति कर सकता है." यही वह संदेश है जिसे सुनकर भीड़ नारे लगाती है, "देश का नेता देवीलाल."

हरियाणा के चुनावी संदर्भ में देवीलाल अपराजेय लगते हैं. राज्य के 79 लाख

चार्ट: बी.के. शर्मा

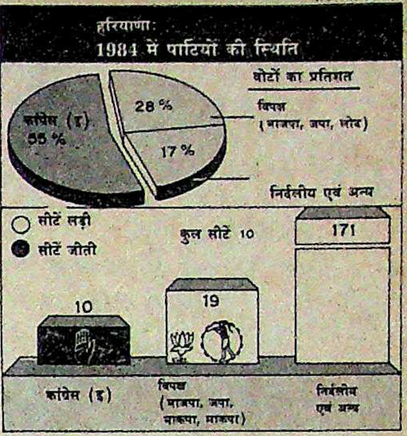

मतदाताओं में जाटों की संख्या 20 लाख होने से ही उनकी आधी जीत पक्की है. राज्य के हर कामकाज पर प्रभुत्व रखने वाला जाट समुदाय पूरी तरह उनके साथ है.

हरियाणा की राजनीति में सिर्फ दो जाट नेता—बंसीलाल और हरद्वारीलाल ही इंका के साथ हैं, जिनका अपनी बिरादरी में भी सीमित असर है. भजनलाल का जाटों में कोई असर नहीं. तीनों किसी भी मामले में 'ताऊ' देवीलाल के मुकाबले नहीं दिखते.

इंका का चुनाव अभियान देवीलाल के बेटों को निशाना बनाकर चल रहा है. भजनलाल कहते हैं, "रंजीत सिंह ने दिल्ली के सम्राट होटल में बैठकर सरकार गिराने का षड्यंत्र रचा और चंडीगढ़ में बैठा चौटाला अधिकारियों पर हुकम चलाता है तथा तबादले कराके पैसा बना रहा है. यह रामराज्य नहीं लूट राज्य है." लेकिन भजनलाल 1985 की तरह राज्य की सभी 10 सीटें इंका की झोली में डालने की सार्वजनिक घोषणा भले ही करें, असलियत यह है कि खुद उन्हें फरीदाबाद की सीट निकालने में खासी दिक्कत पेश आ रही है (देखें बॉक्स).

देवीलाल का प्रभाव तो एक तरफ, इंका की अंदरूनी लड़ाई ही उसकी अपनी लुटिया डुबो रही है. यहां बंसीलाल और भजनलाल समर्थकों के दो खेमे बन गए हैं. करनाल, कुरुक्षेत्र, अंबाला और सोनीपत में असंतुष्ट इंकाई खुलेआम पार्टी के अधिकृत उम्मीदवारों के खिलाफ काम कर रहे हैं.

देवीलाल सरकार में भागीदार भाजपा करनाल और अंबाला के टिकट पाकर संतुष्ट है. लेकिन राज्य में असली जलवा तो देवीलाल का ही है. झंडे, पोस्टरों, बैनरों, आडियो और वीडियो कैसेटों से हरियाणा के गांव-शहर पट गए हैं. लेकिन यह नारा चुनाव प्रचार और भाषणों के शोर से भी ऊपर पहुंच गया है—"ताऊ पूरा तौलेगा, लाल किले से बोलेगा," और कम-से-कम हरियाणा के लिए यह संदेश काफी महत्वपूर्ण हो गया है. —हरिंदर बवेजा

एक रैली में भजनलाल: थोथे दावे

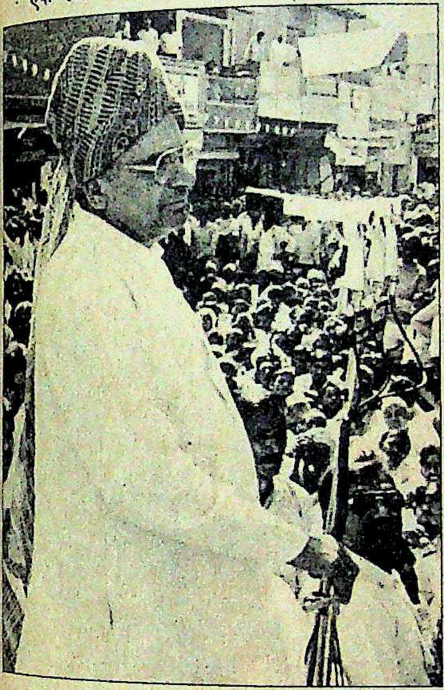

प्रमोद पुष्करणा

देवीलाल: आज आपने एक कप चाय तो पी होगी. कितने की थी?
भीड़: एक रुपया.
देवीलाल: बीड़ी का बंडल कितने में आया?
भीड़: दो रुपए में.
देवीलाल: यानी तीन रु. खर्च चुके. मैं आपसे पांच साल में सिर्फ एक रु. मांगता हूं. आप देंगे?
भीड़ (चीखकर): हां, एक से ज्यादा.

• हमको जिता दो. फिर देखना हम देवीलाल की क्या गत करते हैं.

फरीदाबाद में भजनलाल

खुर्शीद अहमद

ाल ने इस चुनाव में भी अपना कमाल दिखा ही दिया. उन्होंने जनता दल के मेव विधायक तैयब हुसैन को अपने पक्ष में कर लिया. देवीलाल ने आरोप लगाया, "तैयब को 15 लाख रुपए में खरीद लिया गया है." वे चाहे जो कहें, तैयब को तोड़कर भजनलाल ने एक बड़ी बाजी तो जीत ही ली. फरीदाबाद संसदीय क्षेत्र के तीन लाख मेवों के बीच खुर्शीद अहमद की तरह वे भी बहुत लोकप्रिय हैं.

रोज 20 घंटे चलने वाले प्रचार अभियान के दौरान भजनलाल देवीलाल के कुशासन और उनके बेटों के कुकर्मों पर ही सबसे अधिक हमला करते हैं. वे कहते हैं, "देवीलाल ने 1987 के अपने सारे वादे तोड़े हैं और प्रदेश को लूटा है. मुझे वोट दीजिए, मैं उन्हें सिरसा के उनके फार्महाउस में पहुंचा दूंगा."

अपने भाषण के आधे हिस्से में तो वे देवीलाल के खिलाफ जहर उगलते हैं जबकि बाकी हिस्से में मतदान में गड़बड़ी का अंदेशा जताते हैं. वे लोगों से कहते हैं, "देवीलाल के गुंडों को बूथ पर कब्जा मत करने दो. उनका कहना है—गोलियां चलवा देंगे पर भजनलाल को जीतने नहीं देंगे." 'बुलेट और बैलट' के फेर में पड़े हरियाणा की कांग्रेसी राजनीति के इस माहिर खिलाड़ी को इस बार अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ रही है. —हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

उम्मीद की चमक

बुलेट और वोट के संघर्ष से नई आशा

पंजाब के माहौल में आई तब्दीली एकदम नाटकीय है. पार्टियों के झंडे, लाउडस्पीकर और पोस्टरों से लैस सैकड़ों वाहन एक बार फिर गांव-गांव पहुंचने लगे हैं. गांवों की सड़कों पर गाड़ियों के काफिले धूल उड़ा रहे हैं. अखबारों की सुर्खियां भी इस नए जज्बे को अभिव्यक्त कर रही हैं जबकि आतंकवादियों द्वारा की जा रही हत्याओं की खबरें बीच के पन्नों तक सिमट गई हैं.

चुनाव प्रचार ने भविष्य के लिए उम्मीद की नई किरण जगाई है. इसका इजहार जालंधर से जनता दल के उम्मीदवार और पूर्व राजनयिक इंद्र कुमार गुजराल के इस नारे में होता है, "पंजाब में अमन बहाली को एक मौका दो." लेकिन आतंकवाद की छाया अभी बरकरार है. 13 लोकसभा सीटों के लिए 227 उम्मीदवारों में से हरेक को पांच सशस्त्र सुरक्षा गार्ड उलपब्ध करवाए गए हैं.

पटियाला में हुई 10 नवंबर की घटना ने, जिसमें एक आतंकवादी गुट ने 18 छात्रों को मार दिया और 6 को घायल कर दिया, खतरे को सामने ला दिया. आतंकवादियों द्वारा पांच साल की खूंरेजी ने पंजाब के सामाजिक ताने-बाने को बेहद नुकसान पहुंचाया है, जिससे सांप्रदायिक आधार पर वोटों के ध्रुवीकरण की संभावना है. अकाली दल के उग्र नेता सुखजिंदर सिंह कहते हैं, "चुनावी तालमेल के लिए आए भाजपा नेताओं से मैंने कह दिया था कि इसका कोई

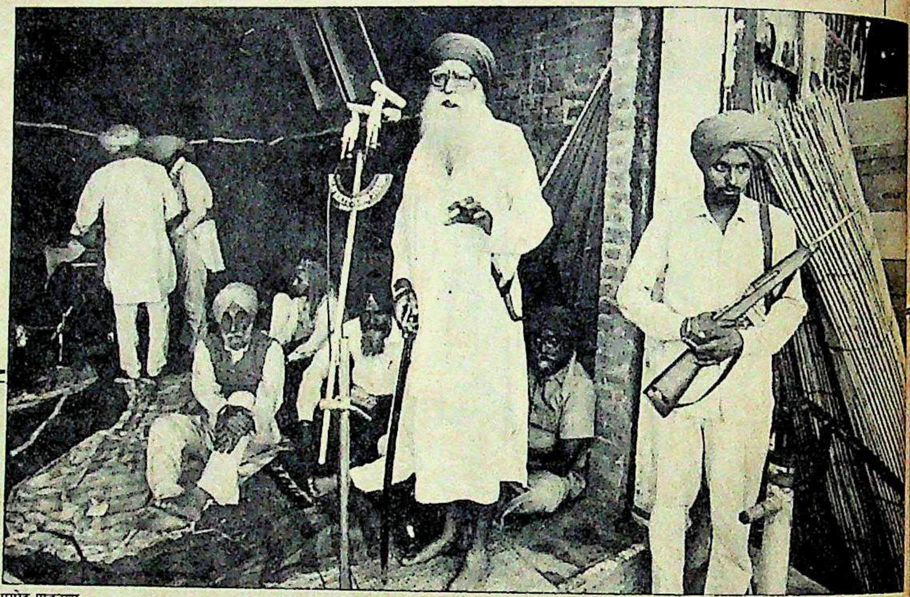

प्रमोद पुष्करणा

तरनतारन

मान का अभिमान

बाबा जोगिंदर सिंह और (इनसेट) मान

दो कारें जिन पर शेर के निशान वाले भगवा झंडे लहरा रहे हैं, तरनतारन संसदीय क्षेत्र के रकसेरों गांव की ओर जा रहे छात्रों के एक दल के पास रुक जाती हैं. एक कार का सवार छात्रों को पोस्टरों का बंडल देकर उन्हें गांव में चस्पां कराने के लिए कहता है. वह छात्रों को बताता है, "ये सिमरनजीत सिंह मान के चुनावी इश्तहार हैं."

छात्र उस सवार को हाथ हिलाकर विदा करते हैं. उनमें से एक कहता है, "मनोछल राजमार्ग पर पड़ने वाले गांवों के लिए इश्तहारों पर खर्च करने की कोई जरूरत नहीं है." इसका मतलब बिलकुल साफ है: यह खूंखार आतंकवादी गुरबचन सिंह मनोछल का कार्यक्षेत्र है. यहां भागलपुर जेल में बंद सिमरनजीत सिंह मान को चुनाव में समर्थन मिलना तय माना जा रहा है.

मान के चुनाव चिन्ह शेर की पूरे तरनतारन में दहशत है और मानो इंका डर से कहीं दुबक गई है. इस डर की वजह भी है. तरनतारन राज्य के सबसे खतरनाक इलाकों में से है. पाकिस्तान से सटा यह इलाका आतंकवाद का पोषक है.

मान का अभियान उनके पिता जोगिंदर सिंह, बहन दलजीत कौर और अकाली दल (मान) तथा अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के स्थानीय कार्यकर्ता चला रहे हैं.

बादल गुट 1986 में भी मान को यह संसदीय सीट देने पर जोर दे रहा था लेकिन बरनाला गुट ने उसे रोक दिया था. इस बार स्थिति भिन्न है और सभी अकाली गुट उनका समर्थन कर रहे हैं. सिख छात्र संघ (मंजीत) के कार्यालय सचिव अवतार सिंह बोपाराय ने घोषणा की, "जीतना कोई समस्या नहीं है. दरअसल हम तो उन्हें मतों के रिकार्ड अंतर से जिताना चाहते हैं."

ताज्जुब नहीं कि मान के अभियान में उग्रवाद का बोलबाला है. 6 नवंबर को अभियान के श्रीगणेश के समय कट्टरपंथी ही हावी रहे. जसबीर सिंह रोडे, बाबा जोगिंदर सिंह जैसे नेताओं को ही बोलने दिया गया.

इस निर्वाचन क्षेत्र में 90 फीसदी सिख हैं. वैसे, यह कांग्रेस की परंपरागत सीट रही है लेकिन 1977 में इसे अकालियों ने जीत लिया. तबसे कांग्रेस का प्रभाव लगातार घटता गया. इस बार अमृतसर जिला (ग्रामीण) इंका अध्यक्ष अजीत सिंह मान को मैदान में उतारा गया है. माहौल को देखते हुए उनकी हालत डांवांडोल लगती है.

पिछले कुछ वर्षों से तरनतारन क्षेत्र में बंदूक का ही बोलबाला रहा है. अब देखना है कि क्या मतपत्र उसकी जगह लेकर शांति बहाली की दिशा में बढ़ने में सक्षम हो पाता है.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फायदा नहीं. न तो आप हमें हिंदू वोट दिला सकते हैं और न हम आपको सिखों के."

'पंजाबी एकता' के लिए लड़ रहे गुजराल सरीखे उम्मीदवार भारी परेशानी में हैं. जालंधर क्षेत्र से दो बार सांसद रहे इंका के मेजर जनरल (अवकाशप्राप्त) राजिंदर सिंह स्पैरो से भिड़ रहे गुजराल को एक तरफ सिखों में कट्टरपंथी तत्वों से यह मांग सुनने को मिल रही है कि वे 'फर्जी मुठभेड़ों' की खुलेआम आलोचना करें, तो दूसरी तरफ हिंदू कट्टरपंथियों द्वारा जारी

चार्ट: बी.के. शर्मा

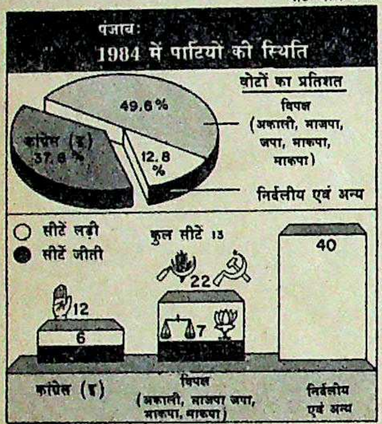

पर्चों में उनसे विवादास्पद आनंदपुर साहिब प्रस्ताव, 'खालिस्तान' आदि के बारे में अपना नजरिया स्पष्ट करने के लिए कहा जाता है.

अकाली एकजुट न होकर एक बार फिर अपनी उम्मीदों पर पानी फेर रहे हैं. तीनों प्रमुख अकाली धड़ों (लोंगोवाल, बादल और मान) ने अपने-अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं. उनमें तालमेल नहीं हो पाया.

कुछ कथित उग्रवादियों अथवा उनके रिश्तेदारों के मैदान में उतरने से इस बार वोटों के सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण का खतरा और भी बढ़ गया है. मान के अलावा चुनाव लड़ने वालों में जेल में बंद खालिस्तान लिबरेशन आर्गेनाइजेशन का स्वयंभू प्रमुख अतिंदरपाल सिंह भी है. श्रीमती गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह के पिता सुच्चा सिंह और विधवा बिमल कौर खालसा भी चुनाव लड़ रही हैं.

राजनैतिक पर्यवेक्षकों के मुताबिक इसका तात्कालिक नतीजा यह होगा कि पंजाब की 40 फीसदी जनसंख्या—हिंदुओं में से अनेक अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करेंगे.

1985 में उग्रवादी संगठनों के पूर्ण बहिष्कार के विपरीत इस बार उनमें से अधिकांश ने 'सीमित बहिष्कार' का एलान किया है. हालांकि उनका कोई सदस्य उम्मीदवार नहीं है लेकिन वे 'सिखी के उसूलों पर चलने वाले' उम्मीदवारों को अपना समर्थन दे रहे हैं. इस बार 18 से 21 साल की आयु के बीच के 7.78 लाख मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे. और यही वोट अहम साबित होंगे.

सुरजीत सिंह बरनाला सरीखे नरमपंथी अकाली चुनाव प्रचार के दौरान किनारे कर दिए गए हैं. पूर्व सांसद बलवंत सिंह रामूवालिया के मुकाबले हालांकि अतिंदरपाल सिंह के जीतने की उम्मीद नहीं है पर इससे ऐसे शख्सों को सामाजिक 'मान्यता' जरूर मिलेगी और सिख राजनीति पर भी गहरा असर पड़ेगा. अगर मान और बिमल कौर जीत गईं तो अकाली दल (मान) को ज्यादा प्रोत्साहन मिलेगा.

इंका को उम्मीद है कि 13 में से 7 सीटों पर विभिन्न अकाली धड़ों के उम्मीदवारों का टकराव उसके हित में रहेगा. लेकिन इंका भी अंदरूनी लड़ाई की शिकार है. इसके अलावा बहुजन समाज पार्टी 13 में से 11 सीटों पर चुनाव लड़ रही है. पंजाब में अनुसूचित जाति के 28 फीसदी वोट होने की वजह से उसके उम्मीदवार इंका के ही वोट काटेंगे.

137 उम्मीदवारों के मैदान में होने से पंजाब के चुनावी मैदान में मारामारी छा गई है. सबसे अहम बात यह है कि इससे पंजाब में राजनैतिक प्रक्रिया में फिर जान आई. इससे पंजाब में आतंकवादी हिंसा में कमी आने की उम्मीद जगी है. पांच वर्षों के खूंरेजी दौर और विध्वंस के शिकार इस राज्य में उम्मीद की यह किरण भी सूर्य की चमक सरीखी नजर आती है. —कंवर संधु

- अमृतसर से इंका के उम्मीदवार रघुनंदन लाल भाटिया और तरनतारन के अकाली उम्मीदवार सिमरनजीत सिंह मान के प्रचार मुख्यालय एक ही इमारत में हैं. दिन भर चुनाव प्रचार के बाद दोनों पक्ष एक साथ बैठकर दुर्लभ भाईचारे का इजहार करते हैं.
- सात लोकसभा सीटों पर लड़ने वाले मीत सिंह ने सुरक्षा बलों को चिंतित कर रखा है क्योंकि उन्होंने सुरक्षा गार्ड लेने से इनकार कर दिया. प्रचार के दौरान उन्हें भीड़ से तो कोई खतरा नहीं लेकिन अगर वे किसी दुर्घटना में मारे गए तो सभी सातों चुनाव क्षेत्रों में मतदान निरस्त हो जाएगा.

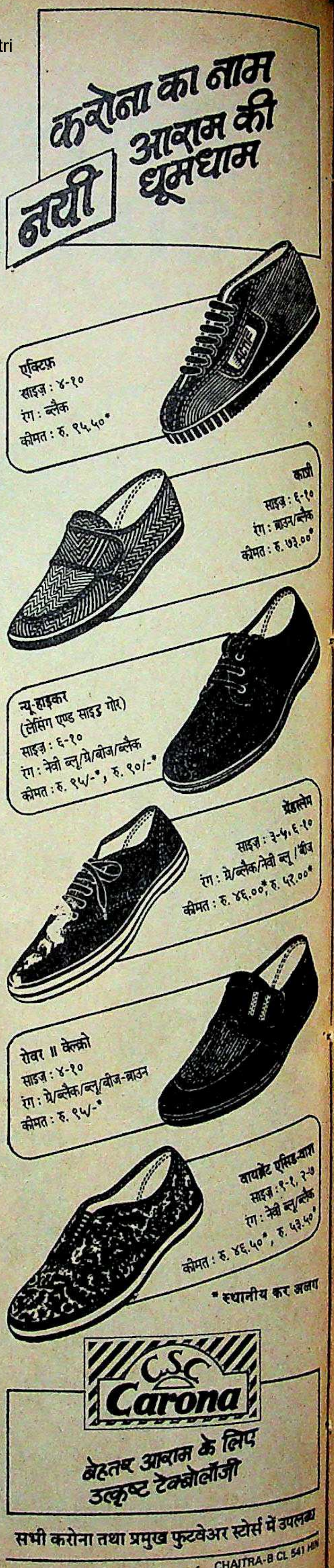

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम बंगाल

मोर्चे का मोर्चा मजबूत

वाम मोर्चे को कड़ी चुनौती देने में भाजपा या इंका असफल

इस बार विडंबना तो यह है कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की अगुआई वाले सत्ताधारी वाम मोर्चे की लड़ाई इंका से नहीं बल्कि सांप्रदायिकता के विशालकाय दानव से है. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कट्टर हिंदू मतदाताओं पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने की उम्मीद में इस सोये दानव को जगा रही है. 1984 के चुनावों में यहां सिर्फ 0.9 फीसदी वोट पाने वाली इस पार्टी ने इस बार 19 उम्मीदवार खड़े किए हैं. उसे उम्मीद है कि उसके वोटों का प्रतिशत बढ़कर 5 तक पहुंच जाएगा. माकपा इसे बहुत गंभीरता से ले रही है.

भाजपा काफी जोश से राज्य में काम करती रही है. पिछले पखवाड़े उसे मेहनत का फल भी मिला जब राज्य सरकार ने विश्व हिंदू परिषद को कलकत्ता में जुलूस निकालने और राम यज्ञ करने की अनुमति दे दी. भाजपा अब इस स्थिति को भुनाने की कोशिश कर रही है. दूसरी तरफ वाम मोर्चा ने बढ़ते हिंदू कट्टरवाद को अपने चुनाव अभियान में मुख्य मुद्दा बनाया है.

उधर इंका का अभियान कमजोर है. उसके पास जैसे कोई मुद्दा ही नहीं है. उम्मीदवारों की सूची को अंतिम रूप देते समय इंका दिग्भ्रमित दिखी. उसने आखिरी क्षण में दार्जिलिंग में गोरखा नेशनल

जनसभा में ज्योति बसु; और (नीचे) दीवार पर बना चित्र

सभी फोटो: शैबल दास

● राजीव गांधी ने भारत को 21वीं सदी में ले जाने का वादा किया था. उन्हें मालूम नहीं है कि भारत उनके बिना भी वहां पहुंच सकता है.

—ज्योति बसु

● पश्चिम बंगाल, खासकर कलकत्ता, टूटी-फूटी दीवारों पर खूबसूरती से लिखे नारों और व्यंग्य चित्रों के जरिये अपनी राजनैतिक भावनाएं व्यक्त करता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> ● *हाथे निये स्टेनगन, आमादेर गनी खान, जन गण सावधान! (लोगो सावधान हो जाओ! गनी खान स्टेनगन लिये आ रहे हैं)*
>
> *—डायमंड हार्बर में माकपा का नारा*
>
> ● *'देश भाग विरोध करो, हाथे छाप मारो' (देश के विभाजन का विरोध करो, हाथ पर मुहर लगाओ)*
>
> *—कलकत्ता में इंका का नारा*

लिबरेशन फ्रंट समर्थित उम्मीदवार इंद्रजीत का समर्थन करने का फैसला किया और पंचायत चुनाव में अपनी जमानत गंवा देने वाले सच्चिदानंद साव को माकपा के मजबूत उम्मीदवार सोमनाथ चटर्जी के खिलाफ बोलपुर से खड़ा कर दिया. इससे पार्टी कार्यकर्ता नाराज हो गए. इसी उलझन में इंका ने बार-बार चुनाव हारने वाले मुहम्मद सोराब, वारधेंदु नस्कर और अनवर अली को भी टिकट दे दिए.

प्रदेश इंका अध्यक्ष अब्दुल गनी खान चौधरी ने यह घोषणा करके मामले को और भी बदतर बना दिया कि पश्चिम बंगाल में कोई भी सीट, उनकी अपनी भी, सुरक्षित नहीं है. बारासात के नाराज मतदाताओं ने सांसद तरुण कांति घोष की कमीज फाड़ डाली. केंद्रीय वाणिज्य राज्यमंत्री प्रियरंजन दासमुंशी को हावड़ा में कई जगह नाराज भीड़ का सामना करना पड़ा.

यहां तक कि कलकत्ता में भी इंका को वाम मोर्चा से कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा है. 1984 में इंका को कलकत्ता की पांच में से चार संसदीय सीटों पर विजय मिली थी. इंका के परंपरागत गढ़ उत्तर-पश्चिम कलकत्ता से पिछली बार इंका टिकट पर जीतने वाले अशोक सेन इस बार जनता दल टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं और वाम मोर्चा उनका समर्थन कर रहा है. जादवपुर में तेजतर्रार इंका सांसद ममता बनर्जी को जादवपुर विश्वविद्यालय की एक अज्ञात अंग्रेजी शिक्षिका मालिनी भट्टाचार्य अप्रत्याशित चुनौती दे रही हैं. और पड़ोसी निर्वाचन क्षेत्र दक्षिण कलकत्ता में सांसद भोलानाथ सेन माकपा केंद्रीय समिति के सदस्य और मशहूर अर्थशास्त्री डॉ. विप्लव दासगुप्त के सामने हथियार डालते नजर आ रहे हैं. ऊपर से जले पर नमक यह कि इंका आलाकमान ने अपने हर उम्मीदवार को सिर्फ 50,000 रु. की ही सहायता दी है.

चार्ट: बी.के. शर्मा

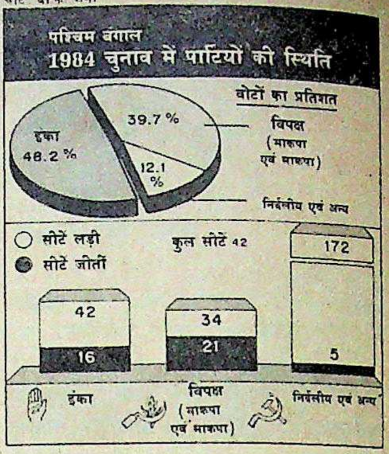

माकपा अपनी सीटों में वृद्धि की उम्मीद कर रही है. 1984 के चुनाव में उसे 18 सीटें मिली थीं जबकि इंका ने 16 सीटों पर जीत हासिल की थी. 1987 के विधानसभा चुनाव के नतीजे कुछ संकेत देते हैं तो यही कि माकपा अपने मजबूत गढ़ की कई दरारों को पहले ही पाट चुकी है. लेकिन हिंदू मतदाताओं पर भाजपा की पकड़ मजबूत न होने देने के लिए उसे अपने इस दुर्ग पर लाल रंग की नई परत चढ़ानी पड़ेगी.

—फरजंद अहमद

चौधरी: कमजोर नेतृत्व

इंका

डगमग नैया

कलकत्ता की सर्दियों की धुंध की तरह ही हाजी मुहम्मद मोहसिन चौक पर स्थित पार्टी मुख्यालय में उदासी की धुंध छाई हुई है. चुनाव अभियान के गिनती के दिन बचे हैं, लेकिन मुख्यालय में सिर्फ पांच लोग बैठे हुए मिले जिनमें से दो लोग टेलीविजन पर फुटबाल मैच देख रहे थे. उनमें एकमात्र वरिष्ठ पदाधिकारी पार्टी उपाध्यक्ष नंदलाल बनर्जी आशावादिता का दिखावा करते हुए कहते हैं, "जेल भरो अभियान और राइटर्स बिल्डिंग की घेराबंदी जैसे आंदोलनों के दौरान हमें लोगों का स्वत:स्फूर्त समर्थन मिला था. वे इंका के खिलाफ नहीं जाएंगे."

मुख्यालय के पास ही स्थित निजाम पैलेस के किराये के कमरों में विधायक सोमेन मित्रा और प्रदेश इंका अध्यक्ष गनी खान चौधरी महिला इंका नेताओं को यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि पर्याप्त चुनाव प्रचार सामग्री जुटाने में कितनी दिक्कतें आ रही हैं. लेकिन उन्होंने कहा, "गंभीर कोशिशों से हम सारी खामियां दूर कर सकते हैं."

यह सच है कि जल्दबाजी में की गई चुनाव घोषणा से प्रदेश इंका को अपना जर्जर ढांचा दुरुस्त करने का मौका नहीं मिला. वह गुटबाजी से त्रस्त तो थी ही, उसकी जिला इकाइयों में भी तालमेल नहीं था. और जब उम्मीदवारों की अंतिम सूची जारी की गई तो पार्टी में विरोध की लहर उठ गई. चुनाव अभियान शुरू होने के एक हफ्ते बाद भी गनी खान चौधरी ने पार्टी मुख्यालय की ओर रुख नहीं किया. वे अपने गढ़—मालदा—की रक्षा में ही लगे रहे. किसी लोकप्रिय नेता और दिशा-निर्देश के अभाव में पार्टी बिना पतवार की नैया सरीखी दिख रही है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

दर्शनीय दंगल

कई दिग्गज अखाड़े में

केंद्रीय सूचना और प्रसारणमंत्री हरकिशनलाल भगत का कहना है कि "राजनैतिक मामलों में मेरी घ्राण शक्ति बहुत तेज है. दिल्ली में इंका की जीत की महक मुझे अभी से आ रही है." भाजपा के महासचिव के.एल. शर्मा हालांकि ऐसा दावा नहीं करते लेकिन उनके अनुसार, "इस बार इंका विरोधी लहर बहुत तगड़ी है, और हम निश्चित रूप से जीतेंगे."

राजधानी के चुनावी दंगल के पहलवानों के कारण यह दंगल दर्शनीय जरूर बन जाता है. इस बार चुनाव मैदान में दो केंद्रीय मंत्रियों—भगत और जगदीश टाइटलर—के अलावा भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और बहुजन समाज पार्टी अध्यक्ष कांशीराम भी शामिल हैं. इन प्रत्याशियों के चुनाव मैदान में उतरते ही

भवान सिंह

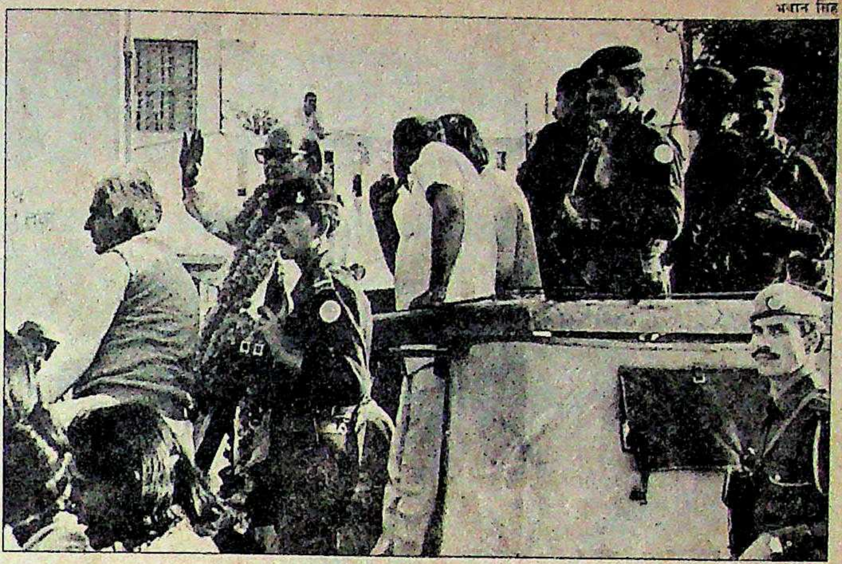

शरद सक्सेना

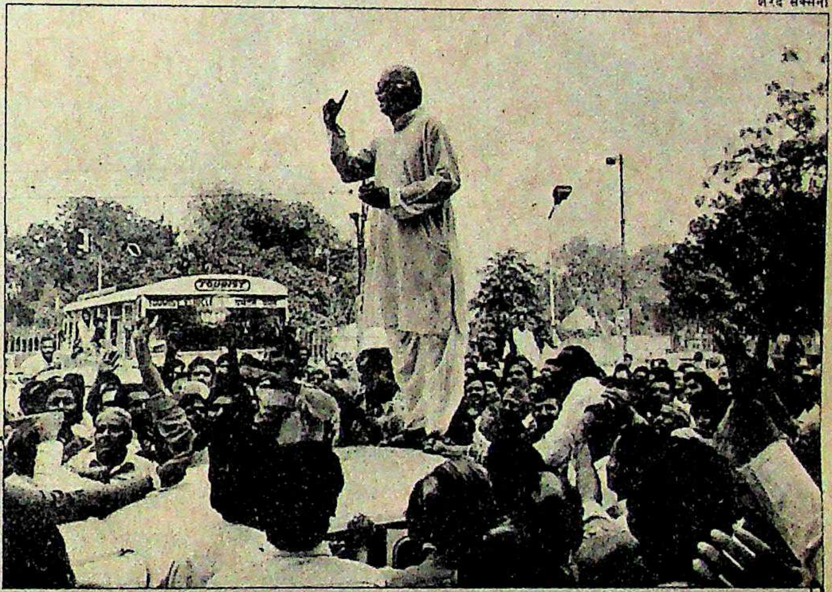

(ऊपर) भगत; और आडवाणी: जीत का भरोसा

लालकृष्ण आडवाणी

विजय की वाणी

नई दिल्ली में बोलबाला

भारतीय जनता पार्टी के लोग अपने पार्टी अध्यक्ष 62 वर्षीय लालकृष्ण आडवाणी को आला दर्जे का संगठनकर्ता और सिद्धांतकार मानते रहे हैं. अब वे उन्हें 'जन नेता' बनाना चाहते हैं. लेकिन आडवाणी खुद स्वीकार करते हैं, "मुझे माइक के सामने खड़े होकर भाषण देने से नफरत है."

शायद इसी कारण वे अब तक आम चुनाव लड़ने से इनकार करते रहे थे. अब वे नई दिल्ली की प्रतिष्ठित लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार हैं तो उन्हें कई अरुचिकर काम भी करने पड़ रहे हैं. आडवाणी ने कहा, "यह सब इस खेल का हिस्सा है. मुझे भी इसकी आदत डालनी पड़ रही है." लेकिन जब चुनाव रैलियों में बोलने का मौका आया तो वे माइक से घबराए नहीं. एक सभा में उन्होंने कहा, "हम अच्छा प्रशासन देंगे, बोफोर्स की तरह का नहीं...बिकाऊ सरकार नहीं, टिकाऊ सरकार."

वे इंका पर तो हल्ला बोलते हैं लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा का जिक्र तक नहीं करते. उनकी रणनीति साफ है—राजीव गांधी को हराने वाले हर कदम का साथ दीजिए परंतु भाजपा की अपनी पहचान को पुख्ता करते जाइए ताकि चुनाव के बाद लाभ उठाया जा सके.

इस क्षेत्र में इंका की हालत को देखकर ऐसा ही लग रहा है कि उसके पास कोई नीति ही नहीं है. 1984 में यहां से चुनाव जीतने वाले रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत ने ऐन वक्त पर उम्मीदवार बनने का प्रस्ताव ठुकरा दिया. तब इंका को मानो छूमंतर के खेल से 51 वर्षीया मोहिनी गिरि को निकालना पड़ा. उनकी तारीफ यह है कि वे सैनिक विधवा संघ की अध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रपति वी.वी. गिरि की पुत्रवधू हैं.

चुनाव प्रचार शुरू हुआ तो गिरि की राजनैतिक अनुभवहीनता भी जाहिर हो गई है. एक बार उन्होंने पदयात्रा शुरू की तो लोगों ने देखा कि वे एक जीप पर नमस्कार की मुद्रा में बैठीं गुजर रही थीं. बाद में एक छोटी-सी नुक्कड़ सभा में उन्होंने लोगों से कहा, "अगर आप मुझे वोट नहीं देते, तो भी मैं समाज सेवा के लिए आती रहूंगी."

उधर आडवाणी का चुनावी तामझाम सही चल रहा है. भाजपा जीत के प्रति आश्वस्त है.

—राज चेंगप्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

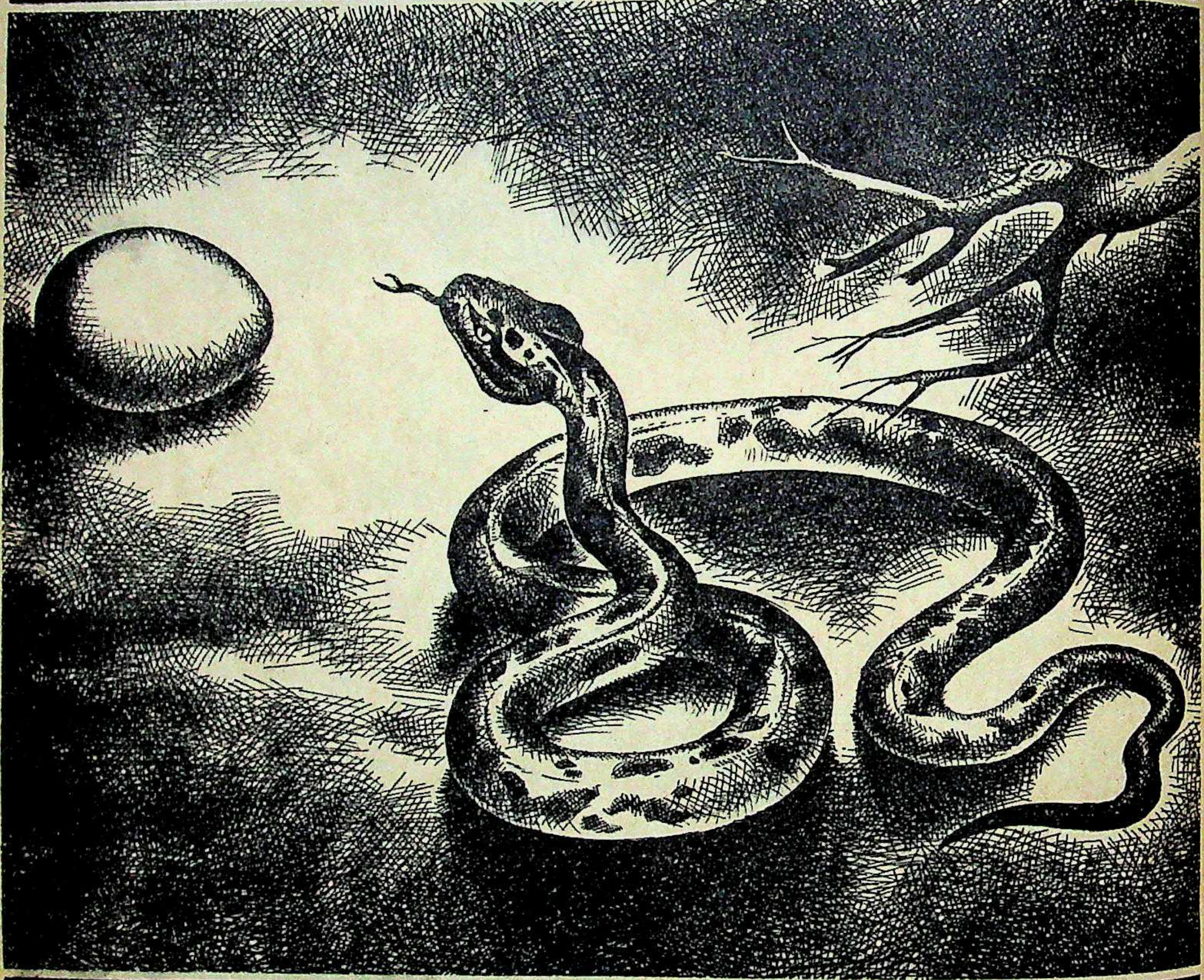

और मैं इसके भविष्य को किसी की अंधी महत्त्वाकांक्षा का शिकार नहीं बनने दूंगा।

भारत का भविष्य कुछ तो उसके जनसाधारण की सामूहिक आकांक्षाओं, अभिलाषाओं और सपनों का प्रतिबिंब है। और कुछ उसके नेताओं की कल्पना, जो साकार हो सकी।

वो भविष्य, वो हम सबका आनेवाला कल, कीचड़ उछालने वाली क्षुद्र मनोवृत्तियों का दास नहीं बनाया जा सकता। और न स्वार्थ और मौक़ापरस्ती की लंगड़ी घोड़ियों पर सवार अंधी महत्त्वाकांक्षाओं के यहां गिरवी रखा जा सकता है।

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वो भविष्य, वो हम सबका आनेवाला कल, उन लालची राजनीतिज्ञों की लार से दूषित नहीं किया जा सकता जो अपनी पार्टी के झंडे के पार न देख सकते हैं,न सोच सकते हैं। जो अपने क्षेत्रीय स्वार्थों के गुलाम और सांप्रदायिकता के हामी हैं।

वो भविष्य, वो हम सब का आनेवाला कल, कुर्सी के लिए दांव पर नहीं लगाया जा सकता। और न किसी वोट-बैंक से वोट लेने के लिये जमानत के बतौर इस्तेमाल किया जा सकता है।

क्योंकि वो भविष्य, वो हम सबका आनेवाला कल, तमाम राजनीतिज्ञों से बड़ा है। सारी पार्टियों से बड़ा है। न्यायपालिका, कार्यपालिका, और विधान मंडल से बड़ा है। महान है।

वो भविष्य भारत के ८० करोड़ लोगों का भविष्य है।

जिनके बाजू इतने बौने हैं कि इसका बोझ नहीं उठा सकते,वे इसे नहीं संभाल सकते।

जिनकी आंखें सिर्फ़ कुर्सी पर टकटकी लगाये बैठी हैं, उनकी आंखों में ये सपना समा नहीं सकता। और जो दिल सिर्फ़ मिलनेवाली सत्ता की आतुर प्रतीक्षा में धड़कते हैं, उन्हें इस सपने को बचाने, इसकी परवरिश करने का भार नहीं सौंपा जा सकता।

क्योंकि ये सपना पूरे भारत का, भारत के लोगों का सपना है।

कांग्रेस (इ) का १०४ वर्ष पुराना गौरवशाली इतिहास रहा है।

कांग्रेस (इ) का इतिहास वास्तव में आधुनिक, शक्तिशाली और संपन्न भारत का इतिहास रहा है।

एक विशाल और वैविध्यपूर्ण भारत का। अपने भविष्य के लिये लड़ते और उसे संवारते हुये भारत का। भूख, अज्ञान, सांप्रदायिकता, जातिवाद, अलगाववाद, आतंकवाद, पिछड़ेपन और अंधश्रध्दा से लड़ते हुये भारत का।

और लड़कर जीतते हुये भारत का। अपने बेहतर भविष्य की तरफ बढ़ते हुये भारत का। क्या आप इस भविष्य को, भारत के ८० करोड़ लोगों के भविष्य को खतरे में पड़ने दे सकते हैं?

हर्गिज़ नहीं।

इसलिये अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइये। एक सुदृढ़ और संपन्न भारत की सेवा में। एक सुनहरे भारत की सेवा में।

आपकी हर धड़कन भारत के लिये हो। कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये। भारत का हाथ मज़बूत कीजिये।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/40 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहसास हो गया था कि मुकाबला कांटे का होगा. पिछले एक दशक में यहां के मतदाताओं का स्वरूप बहुत बदल चुका है. दिल्ली के 56 लाख मतदाताओं में हर प्रांत के निवासी शामिल हैं.

जिस तेजी से दिल्ली का विस्तार हुआ है, उसके कारण नागरिक सुविधाओं की तंगी बढ़ी ही है. जहां भी ये प्रत्याशी जाते हैं, लोग खराब सड़क और पानी की कमी की शिकायतों की झड़ी लगा देते हैं.

1984 में दिल्ली में सातों सीटें हथियाने वाली इंका के खिलाफ इस बार कई बातें हैं. उसकी प्रमुख प्रतिद्वंद्वी भाजपा को बोफोर्स घोटाले के रूप में ऐसा चुनावी अस्त्र मिल गया है, जिसके बूते वह पढ़े-लिखे वर्ग को अपनी ओर खींच सकती है. और यहां के लाखों झुग्गी-झोपड़ी निवासियों को भड़काने के लिए महंगाई का शाश्वत मुद्दा तो काफी है ही. इंका द्वारा प्रत्याशियों के चयन ने रही सही कसर भी पूरी कर दी. रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत द्वारा नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने से इनकार करने के बाद पार्टी को सुभाष चोपड़ा और मोहिनी गिरि जैसे कमजोर उम्मीदवार खड़े करने पड़े. लेकिन धर्मदास शास्त्री का नामांकन सबसे ज्यादा हैरतअंगेज है. उनका नाम 1984 के दंगों के साथ जोड़ा जाता है.

आम तौर पर एकजुट नजर आने वाली भाजपा भी इस बार भीतरी कलह से मुक्त नहीं है. मदनलाल खुराना और विजय कुमार मल्होत्रा जैसे पुराने दिग्गजों के मैदान में उतरने के बाद पार्टी के युवा खुद

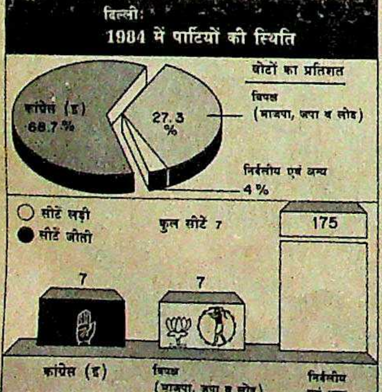

को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं. और जब भाजपा ने अपने सहयोगी जनता दल को दिल्ली की दो सीटें दे दी तब तो झगड़ा खुलकर सामने आ गया. पूर्वी दिल्ली से इंका प्रत्याशी भगत के खिलाफ जनता दल के दो उम्मीदवार चांदराम और किशोरलाल यह साबित करने पर तुले थे कि पार्टी के असली उम्मीदवार वे ही हैं.

—राज चेंगप्पा

तमिलनाडु

द्रमुक के लिए दांव ऊंचे

इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ राज्य के शासक दल पर भारी

तमिलनाडु में लोकसभा सीटें भले ही 39 हैं लेकिन मैदान में उतरे तीन प्रमुख राजनैतिक दलों—द्रमुक, अन्ना द्रमुक और कांग्रेस-इ—के लिए दांव कई गुना ऊंचे लगे हैं. यदि सत्तारूढ़ द्रमुक हारी तो विपक्षी अन्ना द्रमुक-इंका गठजोड़ आठ महीने पुरानी करुणानिधि सरकार को बरखास्त करने में अपने केंद्रीय अधिकार का इस्तेमाल कर सकता है. पर अगर द्रमुक जीत गई तो केंद्र में मिली-जुली सरकार बनने की सूरत में उसकी मोलतोल की ताकत बढ़ जाएगी.

श्याम टेकवानी

दौरे पर करुणानिधि: कठिन संघर्ष

पार्टी के सर्वेसर्वा करुणानिधि प्रचार के दौरान आत्मविश्वास से भरे नजर आते हैं. वे कहते हैं, "उनके मुताबिक यदि राजीव गांधी सत्ता में लौटे तो द्रमुक सरकार बरखास्त कर दी जाएगी. लेकिन ऐसा होगा नहीं. दिल्ली में अगली सरकार राष्ट्रीय मोर्चा की बनने जा रही है, जिसका द्रमुक भी एक हिस्सा है."

चुनाव में सबसे अहम मुद्दा बोफोर्स घोटाला है. फिल्म पटकथा लेखक करुणानिधि ने बोफोर्स मुद्दे से संबंधित कई आकर्षक नारे तैयार किए हैं, जो लोकप्रिय भी हो गए हैं. इसके बावजूद पूर्व सिने तारिका और अन्ना द्रमुक की नेता जयललिता उन्हें कड़ी टक्कर दे रही हैं. वे बढ़ती महंगाई, बस और बिजली की दरों में वृद्धि के मुद्दों को अपने पक्ष में इस्तेमाल कर रही हैं. वे कहती हैं, "करुणानिधि के सत्ता में आने से हर जिंस का अभाव हो गया है और कीमतें आसमान छूने लगी हैं. पानी,

चार्ट: बी.के. शर्मा

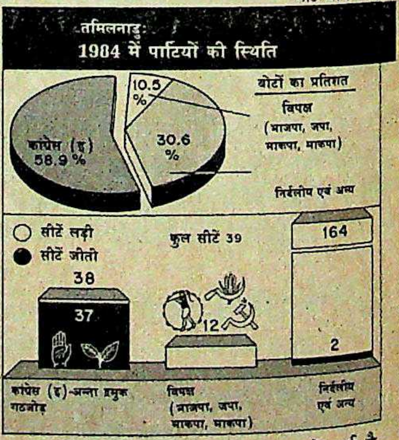

बिजली और चावल की किल्लत हो गई है. यह बात मैं नहीं कह रही हूं, यह तो जनता कह रही है."

जयललिता के लिए ये चुनाव दूसरी वजहों से भी महत्वपूर्ण हैं. राजनीति में पांव जमाने का यह उनका आखिरी मौका है. हालांकि वे राजीव अथवा करुणानिधि से कहीं ज्यादा भीड़ खींच रही हैं लेकिन कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी को शुद्ध करने के लिए अक्वा मिनरल बिसलेरी में भी उसी चांदी प्रक्रिया का इस्तेमाल होता है जो 'नासा' द्वारा अन्तरिक्षयानों में की जाती है

पानी को शुद्ध करने की २३ अलग-अलग पद्धतियों का परीक्षण करने के बाद 'नासा' के वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्षयानों पर इस्तेमाल के लिए चांदी प्रक्रिया का चयन किया. अक्वा मिनरल बिसलेरी (ए एम बी) ने भी चांदी को जलशुद्धि के लिए सर्वोश्रेष्ठ पाया. क्योंकि चांदी प्रक्रिया के बाद ओलीगोडायनामिक प्रभाव के कारण पानी में किटाणु जीवित नहीं रह पाते हैं. चांदी प्रक्रिया के बाद पानी को माइक्रोबियल प्रोसेस द्वारा भी ट्रीट किया जाता है. यह पानी डिस्पोज़ेबल बोतलों में पैक मिलता है. ए एम बी ऊबाल कर फ़िल्टर किए गए पानी से भी ज़्यादा सुरक्षित है क्योंकि यह किटाणुरहित पानी है. ए एम बी घर में हर किसी को बिना खटके पिलाया जा सकता है फिर वे बीमार व्यक्ति हों या नवजात शिशु. यात्रा में भी इसे साथ रखिए फिर चाहे यात्रा धरती पर हो या अन्तरिक्ष में.

अक्वा मिनरल बिसलेरी
Bisleri
धरती पर इससे सुरक्षित
पानी नहीं कोई

RADEUS/PE/AMB/3-89-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग इसके चुनावी समर्थन में तब्दील होने पर शंका कर रहे हैं. लेकिन इससे जयललिता के इरादे और कोशिशें कमजोर नहीं हुई हैं. वे कहती हैं कि इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ राष्ट्रीय मोर्चे की तरह अवसरवादी गठजोड़ नहीं है. इंका तमिलनाडु में लोकसभा चुनावों में सबसे पसंदीदा पार्टी रही है. हालांकि इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ द्वारा 1984 के चुनावी नतीजों को दोहराने की उम्मीद नहीं है, जब एमजीआर के करिश्माई असर के तहत इसने 39 में से 37 सीटें जीती थीं, पर इतना तय है कि इस बार वह द्रमुक के चुनाव आधार में सेंध लगाने जा रहा है.

शायद इसी वजह से द्रमुक कोई भी जोखिम मोल नहीं ले रही. इसने सीटों के चुनाव में भी सावधानी बरती है. द्रमुक विपक्षी गठजोड़ के भागीदारों की दुखती रग—दोनों की पांतों में अंदरूनी लड़ाई—पर भी हाथ रख रही है. इंका के लिए 29 सीटें छोड़ देने के जयललिता के फैसले ने अन्ना द्रमुक में भारी असंतोष पैदा किया है. इसके अलावा उम्मीदवारों के चयन के उनके फैसले पर भी उंगलियां उठी हैं.

दूसरी ओर, इंका में प्रदेश समिति के अध्यक्ष वी.के. राममूर्ति और जी.के. मूपनार के नेतृत्व में भारी धड़ेबंदी चल रही है. दोनों पक्ष उम्मीदवारों की सूची में नए चेहरों की कमी की वजह से नाखुश हैं.

तमिल परंपरा के मुताबिक यह ऐतिहासिक जंग बनती जा रही है. संसाधनों, प्रचारकों और मुद्दों के रूप में चुनावी हथियारों के मामले में दोनों पक्ष समान रूप से लैस हैं. द्रमुक और कुछ नहीं तो 1984 की अपनी दो सीटों की उपलब्धि में सुधार जरूर कर लेगी. लेकिन इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ के लिए 1984 के नतीजों को दोहराने के कम ही आसार हैं. वैसे चुनाव समेत हर मामले में तमिलनाडु परंपरा निभाता आया है.

—कविता शेट्टी

> **● इन आधुनिक दुस्साशनों और दुर्योधनों को गद्दी से हटाने के लिए अपने वोट का प्रयोग अर्जुन के गांडीव की तरह कीजिए.**
> *—जयललिता, चुनाव सभा में*
>
> **● करुणानिधि: वे कहते हैं राजीव जीते तो धमाका होगा. लेकिन धमाका तो दिल्ली में हो चुका है और आप जानते हैं यह क्या है?**
> *—भीड़ (तुरंत जवाब देती है): बोफोर्स का!*
>
> **● करुणानिधि कोई कुकुरमुत्ता नहीं है जो कल की बारिश में उग आया हो.** *—करुणानिधि (जयललिता पर कटाक्ष करते हुए)*

श्याम टेकवानी

समर्थकों के साथ जयललिता: लोकप्रिय

जयललिता

वापसी का मौका

एमजीआर उन्हें 'पुरुत्ची सेल्वी' (क्रांतिकारी महिला) कहा करते थे और अब उनका यही नाम लोकप्रिय हो गया है. खुद जयललिता को अभी अपने इस नाम को सार्थक कर दिखाना है. पिछले विधानसभा चुनाव में द्रमुक के हाथों उनकी पराजय, फिर उनकी राजनैतिक अनिश्चितता और विधानसभा में उन पर हुए कथित हमले ने जयललिता के राजनैतिक भविष्य पर कई सवाल खड़े कर दिए थे.

लेकिन कभी सिनेमा के परदे पर धूम मचाए रहने वाली जयललिता चुनावी मैदान में भी उसी धूम-धड़ाके से पहुंची हैं. लोकसभा चुनाव की घोषणा ने जैसे उन्हें 'राजनैतिक अमृत' पिला दिया वे सक्रिय हो उठी हैं और उनका चुनावी भविष्य भी उज्ज्वल होने लगा.

आगे-आगे मशाल लेकर चलने वाले कार्यकर्ताओं की फौज के पीछे जब वे जय रथम नामक स्वराज माजदा से उतरती हैं तो भीड़ लग जाती है. उनके मोहक रंगरूप और चमक-दमक से जुटे ये लोग जब 'पुरुत्ची सेल्वी वाझघ' (क्रांतिकारी महिला, जिंदाबाद) का नारा लगाते हैं तो साफ लगता है कि उनकी राजनैतिक वापसी हो चुकी है.

वैसे जयललिता शायद ही कभी पांच मिनट से अधिक भाषण देती हों. यह भाषण बहुत जोश वाला तो नहीं होता लेकिन इसमें मतदाताओं को अपनी ओर मोड़ने वाले मुद्दे वे बड़ी खूबसूरती से जोड़ देती हैं.

द्रमुक सरकार द्वारा चावल की पूरी आपूर्ति न करने या महंगाई पर अंकुश लगा पाने में असफलता जैसे मुद्दों को उठाकर वह लोगों, खासकर महिलाओं को अपनी ओर मोड़ने की कोशिश करती हैं. और इन भाषणों में वे करुणानिधि पर तीखे 'हमले' करती हैं. वे कहती हैं, "राज्य में सत्ता में आने के बाद से द्रमुक ने क्या किया है? करुणानिधि ने जनता की गाढ़ी कमाई के पांच करोड़ रु. सिर्फ प्रचार पर फूंक दिए हैं."

उनकी कोशिशों के नतीजे भी मिलने लगे दिखते हैं. उनकी सभाओं में नौजवान भले ही उनकी चमक-दमक से प्रभावित होकर जुटते हों पर वे उनकी बात गौर से सुनते हैं. और इससे दिखता है कि यह महिला अपनी लोकप्रियता वापस पाने के दौर में है.

—कविता शेट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस बच्चे पर हो आपका ख़ास प्यार
उसके लिए निहायत ख़ास उपहार

यूनिट ट्रस्ट की बाल उपहार वृद्धि निधि 1986.

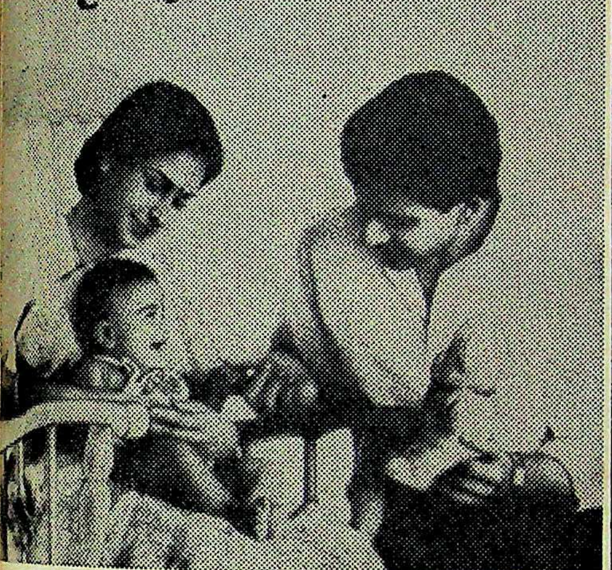

आपका धन बढ़ता ही जाता है— बारह गुना. इसके अलावा बोनस डिवीडेन्ड भी.

जिस बालक को आप प्यार करते हैं उसके लिए बाल उपहार वृद्धि कोष एक अनुपम उपहार है । इस योजना के अन्तर्गत 6 वर्ष में आपकी जमा राशि बढ़कर दो गुणा हो जाती है । जो 21 वर्ष में बढ़कर 12 गुणा हो जाती है । बालक के जन्म लेते ही इस योजना को अपनाना लाभप्रद है । लेकिन 15 वर्ष की आयु तक के बालक भी इस योजना में सम्मिलित हो सकते हैं ।

बालक को लखपति बनाइये

बालक के जन्म लेते ही अगर आप हर वर्ष केवल रु. 1100 बालक की 15 वर्ष आयु होने तक लगाते हैं तो आप उसे 21 वर्ष का होनें पर लखपति बना हुआ देख सकते हैं । विभिन्न आयु वर्ग से शुरू करने पर एक लाख रुपया पाने के लिए हर वर्ष निवेश करने वाली तालिका नीचे दी गई है ।

आयु (वर्ष)	निवेश राशि (रुपये)	आयु (वर्ष)	निवेश राशि (रुपये)
जन्मते ही	1100	8	4000
1	1300	9	4800
2	1500	10	6000
3	1700	11	7700
4	2000	12	10300
5	2400	13	14600
6	2800	14	23200
7	3300	15	49400

*निवेश राशि निकटतम 100 रुपये के गुणकों में दर्शायी गई है ।

योजना के मुख्य आकर्षण

इस योजना के अन्तर्गत कोई भी व्यस्क 15 वर्ष से कम आयु के बालक को उपहार दे सकता है । किसी आयु प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं ।

- आपका उपहार 12.5% का पूर्व निश्चित लाभांश अर्जित करता है जो प्रति वर्ष पुनर्निवेश कर दिया जाता है इसके साथ हर पाँच वर्ष में एक बोनस लाभांश भी दिया जाता है ।
- यह उपहार बालक के 21 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर परिपक्व होता है । 18 वर्ष की आयु पूरी करने पर भी निकासी का प्रावधान है । उस समय तक कोई भी – चाहे वह माता पिता हों अथवा बालक – इस उपहार या लाभांश को नहीं निकाल सकता ।
- इस योजना के आधीन यूनिट का अंकित मूल्य 10 रु. है । आवेदन 10 यूनिटों के गुणकों में किये जा सकते हैं । कम से कम आवेदन 50 यूनिटों के लिए होना चाहिये । अधिकतम की कोई सीमा नहीं ।

आवेदन पत्र किसी भी कार्यालय, मुख्य प्रतिनिधि, यूनिट ट्रस्ट एजेंट अथवा बैंकों की किसी भी शाखा से प्राप्त किये जा सकते हैं ।

कूपन नई दिल्ली कार्यालय को भेजें

कृपया मुझे बाल उपहार वृद्धि कोष की पुस्तिका मुफ्त भेजें :
नाम ______________________
पता ______________________
____
____

UNIT TRUST OF INDIA
सर्वजनयोगात् समृद्धिः

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की निवेश संस्था)

मुख्य कार्यालय : बम्बई

क्षेत्रीय कार्यालय : गुलाब भवन, 6, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 331-9786, 331-8638

शाखा कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र)

- सोहन पैलेस, 455, दी माल, लुधियाना- 141001 फोन : 50373
- 16/79 ई, सिविल लाईन्स, कानपुर-208001 फोन : 211858
- आनन्द भवन, संसार चन्द्रा रोड, जयपुर-302001 फोन : 68312
- 3, दी माल, शिमला-170001 फोन : 2098

BDK 2679

इस योजना के अन्तर्गत 10 रु. प्रति यूनिट की दर से यूनिटें सारे साल उपलब्ध है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

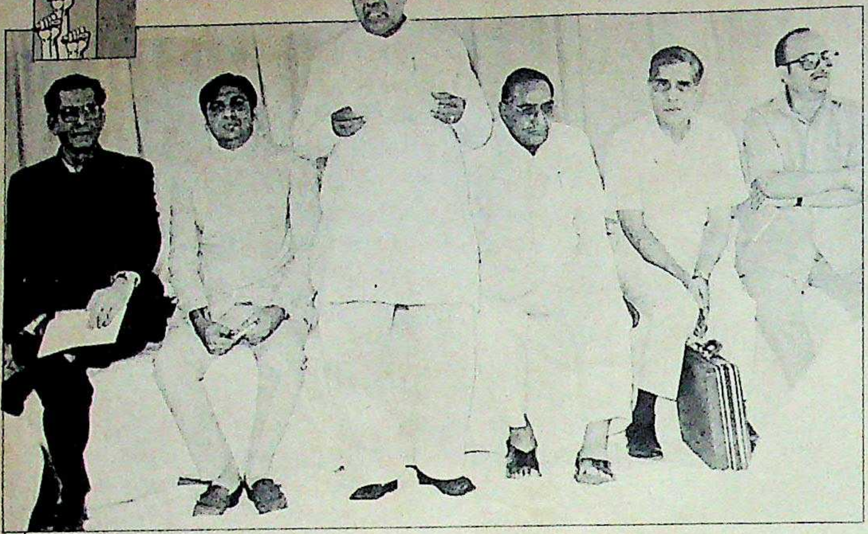

संयुक्त पत्रकार सम्मेलन में सोलंकी, श्यामाचरण शुक्ल, वोरा और अर्जुन सिंह

मध्य प्रदेश

पैर उखड़ने के आसार

पूरे राज्य में इंका विरोधी लहर

मध्य प्रदेश में इंका विरोधी लहर चल रही है. और हर रोज इसकी बढ़ती गति को देखते हुए लगता है ऐसी जबरदस्त आंधी उठेगी कि लोकसभा चुनावों में शासक दल के पांव उखड़ जाएंगे.

मध्य प्रदेश को हमेशा ही अपना मजबूत गढ़ मानने वाली इंका के लिए यह संभावना बहुत ही डरावनी है. 1977 के अपवाद को छोड़कर यह राज्य हमेशा इंका को ही सत्ता सौंपता आया है. 1984 के लोकसभा चुनावों में बिखरा विपक्ष यहां की 40 संसदीय सीटों में से एक भी नहीं जीत सका था. 1980 में उसे सिर्फ 4 सीटें मिली थीं.

इस बार यह इतिहास दोहराए जाने की उम्मीद नहीं है. हां, 1977 के दोहराए जाने की उम्मीद जरूर लगती है जब विपक्ष को

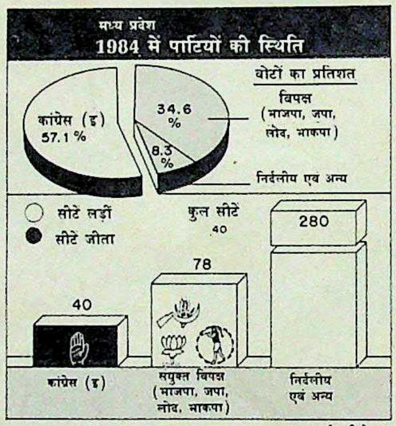

चार्ट: बी.के. शर्मा

38 सीटें मिली थीं. उस बार की तरह आज भी विपक्ष एक है. और इंका विरोधी लहर भी वैसी ही है. इन तत्वों के साथ इस बार एक तत्व और है इंका की अंदरूनी कलह का. यानी 1977 को दोहराना लगभग तय है.

वैसे, ऊपरी तौर पर चुनावी गणित इंका के पक्ष में लगता है. 1985 के विधानसभा चुनावों में इसे 49 फीसदी वोट मिले थे जबकि संयुक्त विपक्ष सिर्फ 35 फीसदी वोट ही बटोर सका था. लेकिन इस बार माहौल बेमिसाल है. यह भी सही है कि चुनाव में परंपराओं का निर्वाह हो ही, जरूरी नहीं.

इंका विरोधी लहर अपने आप में ही जबरदस्त चुनौती नहीं बन पाती, अगर विपक्षी तालमेल न हुआ होता. शहडोल में भाजपा उम्मीदवार की मौत से चुनाव स्थगित हो जाने के कारण 40 में से 39 क्षेत्रों में चुनाव हो रहा है. इनमें से 37 सीटों पर भाजपा और जनता दल ने संयुक्त उम्मीदवार खड़े किए हैं. भिंड और झाबुआ में ही दोनों पार्टियां आमने-सामने हैं जिन्हें वे 'दोस्ताना लड़ाई' कहती हैं.

इसके ठीक विपरीत इंकाई खेमे में मोतीलाल वोरा, अर्जुन सिंह, श्यामाचरण शुक्ल और माधवराव सिंधिया जैसे क्षत्रपों की सेनाएं आपस में ही भिड़ी हुई हैं. फिलहाल आलाकमान के दबाव पर इन सेनाओं में युद्धविराम हो गया है. पिछले पखवाड़े वोरा, सिंह और शुक्ल ने एकजुटता के प्रदर्शन के लिए एक संयुक्त पत्रकार सम्मेलन को संबोधित किया. जाहिर है, यह दिखावा भर ही है. प्रदेश इंका अध्यक्ष शिव भानु सिंह सोलंकी ने कहा, "हम यह दिखाने के लिए जुटे हैं कि हम एक हैं." लेकिन असलियत यह है कि आलाकमान द्वारा अपनी तौहीन से अर्जुन सिंह पार्टी की मदद के बदले खुलकर अपना आधार बनाने की कोशिश कर रहे हैं. इससे एकता का यह दिखावा भी मजाक बन जाता है.

विपक्षी खेमे में भाजपा की अगुआई राज्य प्रमुख सुंदरलाल पटवा के हाथ है, तो जनता दल की बागडोर विद्याचरण शुक्ल के हाथ. शुक्ल महासमुंद से उम्मीदवार भी हैं. भाजपा 31 सीटों पर लड़ रही है तो जनता दल 10 पर. पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा को 30 फीसदी वोट मिले थे जबकि मौजूदा जनता दल के दो प्रमुख घटकों— जनता पार्टी और लोकदल—की झोली में सिर्फ 15 फीसदी वोट ही पड़े थे. हालांकि दूसरे दलों ने भी उम्मीदवार खड़े किए हैं लेकिन कुछ ही क्षेत्रों में विपक्षी खेमे में विभाजन का फायदा इंका को मिलेगा. बस्तर में भाजपा ने

- राजीव गांधी का संदेश, एक रहेगा भारत देश
- नई पीढ़ी की नई उमंग, सदा रहे कांग्रेस के संग

—इंकाई नारे

- हालात इस कदर बिगड़-चुके हैं कि इस बूढ़ी मां को मैदान में उतरना पड़ा है. यदि आप के दिल में इस बूढ़ी मां के लिए कोई इज्जत है तो मैदान में कूद पड़ो.

—विजयाराजे सिंधिया

- बीजेपी जब राज करेगी, किसान का कर्जा माफ करेगी
- भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी, राजीव की पकड़ी गई चोरी
- महंगाई ना भ्रष्टाचार, हम देंगे अच्छी सरकार

—भाजपा के नारे

- आखिर वे चाहती क्या हैं? राज्यसभा की सदस्य होने के बावजूद वे इस दंगल में क्यों उतर रही हैं?

—माधवराव सिंधिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उम्मीदवार खड़ा किया है हालांकि वहां भाजपा 1984 में दूसरे स्थान पर रही थी. इसका फायदा मौजूदा इंकाई सांसद मनकूराम सौदी को मिलेगा. इसी तरह कांकर में भी मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी ने एक निर्दलीय उम्मीदवार को खड़ा किया. इंका को इससे भी फायदा मिलेगा.

भिंड में जनता दल का उम्मीदवार इंका के राजपूत उम्मीदवार के खिलाफ हवा बना रहा है. राजपूत वोटों के बंटने से यहां भाजपा को फायदा मिलेगा. लेकिन झाबुआ में दोनों पार्टियां एक-दूसरे की झोली में ही आग लगाएंगी. उम्मीदवारों के चयन के मामले में जनता दल और भाजपा में भी असंतोष है. नतीजतन कई बागी उम्मीदवार भी मैदान में हैं फिर भी कुल मिलाकर विपक्षी एकता की चमक-दमक पर ये एकाध धब्बे ही हैं.

दूसरी तरफ इंकाई नेताओं ने संयुक्त प्रचार अभियान का विचार छोड़ दिया है. प्रमुख नेता अपने-अपने गढ़ों पर ही ध्यान दे रहे हैं. अर्जुन सिंह विंध्य क्षेत्र में, शुक्ल छत्तीसगढ़ में, सिंधिया मध्य क्षेत्र में ग्वालियर के आसपास प्रचार कर रहे हैं. लेकिन उनकी मां, भाजपा की उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया का भी इस क्षेत्र में काफी असर है. वोरा का अपना कोई क्षेत्र नहीं है. वे दौरा करके राजीव गांधी की सभाओं की व्यवस्था कर रहे हैं. राजीव के दौरे इंका के लिए निर्णायक साबित हो सकते हैं, क्योंकि राजीव ही विपक्षी हमले के मुख्य लक्ष्य हैं. इंका के लिए एक और मुश्किल खड़ी हो गई है. भागलपुर दंगों में सरकारी विफलता से मुसलमान इससे नाराज़ हैं. परिणामस्वरूप भोपाल में इंसान समाज पार्टी के उम्मीदवार रऊफ खान को मुस्लिम वोट मिलने की उम्मीद है. इसके अलावा इंका हिंदू भावनाओं को भुनाने की पुरजोर कोशिश कर रही है फिर भी उसे वोट मिलने की उम्मीद कम ही है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

गुना

सामंती संघर्ष

रजवाड़ाशाही के अवशेष अब भले ही इक्का-दुक्का रह गए हैं पर लोकसभा की गुना सीट को अपनी मां, राजमाता विजयाराजे सिंधिया के हाथों जाने से बचाने के लिए माधवराव सिंधिया ने जो लड़ाई छेड़ रखी है, वह निश्चय ही सामंती परंपराओं के पूरी तरह अनुकूल है.

यह लड़ाई अब परिवार तक ही सीमित नहीं रह गई है. माधवराव इसे मध्य प्रदेश में इंका का आला नेता बनने का सुनहरी मौका मान रहे हैं. दरअसल अर्जुन सिंह हाईकोर्ट के फैसले की प्रेतछाया में हैं और माधवराव अपने आसपास के करीब 25 निर्वाचन क्षेत्रों में पार्टी उम्मीदवारों के पक्ष में धुआंधार अभियान चला रहे हैं. और अगर वे सफल रहे तो मुख्यमंत्री पद के द्वार उनके लिए खुल सकते हैं.

प्रशांत पंजियार

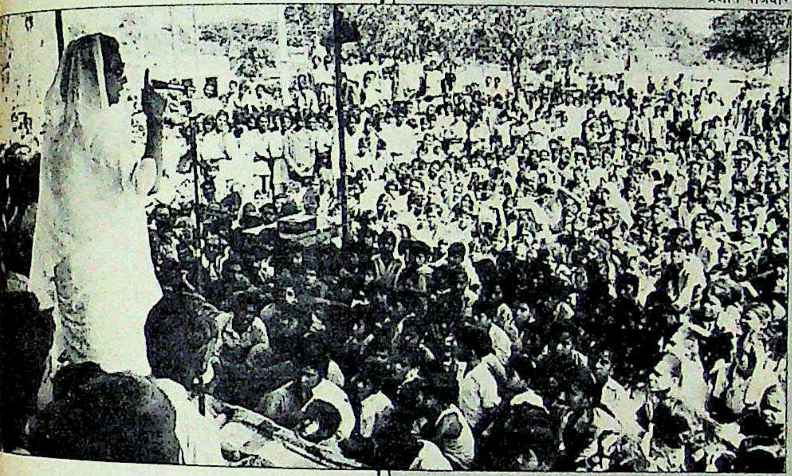

गुना में एक सभा को संबोधित करती विजयाराजे सिंधिया

लेकिन विडंबना यह है कि उनकी महत्वाकांक्षा पूरी होने में उनकी मां ही आड़े आ रही हैं. वैसे विजयाराजे का मुकाबला इंका प्रत्याशी महेंद्र सिंह से है लेकिन यह चुनौती चौदह साल तक गुना का प्रतिनिधित्व करने वाले उनके बेटे माधवराव को है. 1984 में वे गुना निर्वाचन क्षेत्र छोड़कर भाजपा नेता अटलबिहारी वाजपेयी के खिलाफ ग्वालियर से खड़े हुए थे.

सो, युवा रेलमंत्री ने पूरा ध्यान गुना पर ही केंद्रित किया है. अपने निर्वाचन क्षेत्र ग्वालियर में प्रचार का जिम्मा उन्होंने पत्नी, बेटी और बेटे के हवाले कर रखा है.

माधवराव के पास तुरुप का पत्ता है—गुना के विकास में इंका का योगदान. आंकड़े गिनाते हुए वे 600 करोड़ रु. की लागत वाले एक उर्वरक कारखाने, एक पेट्रोकेमिकल्स परियोजना, वायुदूत सेवा, गुना-इटावा रेल संपर्क और दो ट्रांसमीटरों को अपनी उपलब्धियों में शुमार करते हैं. उनका मतलब साफ है—यदि विकास चाहते हैं तो इंका प्रत्याशी को वोट दीजिए.

इस धुआंधार अभियान को जहां भारी कामयाबी मिल रही है, वहीं विजयाराजे भी चुनौती का डटकर मुकाबला कर रही हैं. 71 साल की उम्र में वे दुखियारी या भावुक महिला नहीं बल्कि प्रेरणा देती लगती हैं. लोगों को बदले के लिए प्रेरित करते हुए वे कहती हैं, "ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए, हमें जवाब देना ही चाहिए." वे मतदाताओं को 'मेरा हनुमान' से संबोधित कर उन्हें अपनी छिपी शक्ति के इस्तेमाल की प्रेरणा देती हैं.

वे मतदाता को लुभाना नहीं बल्कि उसे मीठी झिड़की देना अपना कर्तव्य समझती हैं. वे कहती हैं, "हालात इस कदर बिगड़ चुके हैं कि इस बूढ़ी मां को मैदान में उतरना पड़ा है. यदि आपके दिल में इस बूढ़ी मां के लिए कोई इज्जत है तो मैदान में कूद पड़ो."

लेकिन उनका सगा बेटा ही इस भावुक अपील से बिलकुल अछूता है. माधवराव का मानना है कि उनकी मां भाजपा के हाथ का खिलौना बन गई हैं और यह पार्टी उनकी हैसियत का दुरुपयोग कर रही है.

हताशा के क्षणों में माधवराव अपनी चुप्पी तोड़कर यही नाजुक सवाल उठाते हैं, "आखिर वे चाहती क्या हैं? क्या ग्वालियर में विकास नहीं हुआ, जिसके लिए वे बेहद चिंता का दावा करती हैं? राज्यसभा की सदस्य होने के बावजूद वे इस दंगल में क्यों उतर रही हैं?"

इन सवालों के जवाब तो मतदाता ही देंगे. बेटे के खिलाफ प्रचार करती मां और मां को हराने के लिए जी-जान से जुटा बेटा, इस स्थिति से ग्वालियर का जय विलास महल डोल उठा है. आखिर दोनों पक्ष एक-दूसरे पर हावी होने पर उतारू हैं.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रतिबंध?
इसलिए कि इसमें ५३ से.मि. एफ.एस.टी. है?
इसलिए कि यह वक़्त से कहीं आगे का टीवी है?
इसलिए कि इसमें दंग करने वाली ख़ूबियाँ हैं?
या सिर्फ़ इसलिए कि इसकी वजह से ईर्षा की
नई लहर उफ़न पड़ेगी?
ओनिडा २१
पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.
क्या नए
ओनिडा पर प्रतिबंध
लगाया जाए?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदूक का साया

चुनाव में कई अपराधी भी प्रत्याशी बने

भारत के हर चुनाव में बंदूक की ताकत का असर किसी न किसी रूप में दिख ही जाता है. लेकिन नौवें आम चुनाव में तो बंदूकों के खुलकर इस्तेमाल किए जाने की आशंका है. इसकी वजह है, राजनैतिक दलों में पहली बार कुख्यात अपराधियों को शामिल किया जाना. अपराधियों का नेताओं से हमेशा संबंध रहा है लेकिन उन्हें कभी हावी नहीं होने दिया गया. पर इस बार वे खुलकर सामने आ गए हैं. अकेले उत्तर प्रदेश, बिहार और आंध्र प्रदेश में ऐसे कम-से-कम 50 उम्मीदवार लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं, जिन पर चोरी से लेकर हत्या तक कई प्रकार के आरोप हैं.

बिहार तो अपराधी-राजनीतिकों का गढ़ ही है. यहां चुनावी हिंसा की सबसे ज्यादा घटनाएं होती हैं. 1984 के लोकसभा चुनावों में मारे गए 48 लोगों में से 28 बिहार के ही थे. उससे अगले ही साल कई राज्यों में विधानसभा चुनावों के दौरान 81 लोग मारे गए, जिनमें 51 अकेले बिहार से ही थे. बिहार में हिंसा चुनाव का एक अपरिहार्य हिस्सा है क्योंकि मतदान के दौरान नेतागण असामाजिक तत्वों पर ही निर्भर करते हैं, हालांकि सार्वजनिक रूप से वे उनकी आलोचना करते हैं. लेकिन इस बार यह नकाब भी उतर गया. कई अपराधियों को पार्टी उम्मीदवार बनाया गया है.

काली पांडेय की ही मिसाल लें. 1984 में उन्होंने जेल की सलाखों के पीछे से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीता था. उन्हें पार्टी में अपने प्रतिद्वंद्वी और एक अन्य कुख्यात अपराधी नगीना राय पर बम फेंकने के कारण कांग्रेस से निकाल दिया गया था. वे गिरफ्तार भी हुए. अब इन दोनों को पार्टी में वापस ले लिया गया है और पांडेय को तो गोपालगंज लोकसभा क्षेत्र से उम्मीदवार भी बनाया गया है.

सहकारिता माफिया सरगना तपेश्वर सिंह को विक्रमगंज संसदीय क्षेत्र से दुबारा इंका टिकट मिलना भी कम ताज्जुब वाली बात नहीं है. कुछ महीने पहले प्रधानमंत्री कार्यालय के निर्देश पर उनके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज किए गए थे. उन पर राज्य की एक सहकारी संस्था को चूना लगाने और मिलावटी उर्वरक तथा कीटनाशकों की आपूर्ति करने का आरोप था.

इंका टिकट पर क्रमशः धनबाद और सिंहभूम से लोकसभा चुनाव लड़ रहे शंकरदयाल सिंह और बागुन सुंब्रई का रिकार्ड भी संदिग्ध है. सिंह के तो धनबाद माफिया से संबंध हैं. खगड़िया से इंका उम्मीदवार सतीश प्रसाद सिंह, जो कि '60 के दशक में तीन दिन के लिए मुख्यमंत्री बने थे, धनबाद के पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज में दाखिलों के घोटाले से जुड़े थे.

बिहार में अपराधियों को चुनाव लड़ाने में विपक्ष भी इंका से पीछे नहीं है. माना जाता है कि हाजीपुर से जनता दल उम्मीदवार लालू प्रसाद यादव का हत्या के एक मामले में हाथ था. पूर्णिया और मुंगेर से इसी पार्टी के उम्मीदवार तस्लीमुद्दीन और धनराज सिंह हिस्ट्रीशीटर हैं.

उत्तर प्रदेश में तो, जहां लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ हो रहे हैं, हालात और भी खराब हैं. यहां सबसे अधिक हिस्ट्रीशीटर चुनाव अखाड़े में हैं. दुबारा चुनाव लड रहे, पुलिस रिकार्ड वाले 21 विधायकों में 15 इंका उम्मीदवार हैं

भोला पांडेय

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में दोआबा विधानसभा क्षेत्र से इंका उम्मीदवार भोला पांडेय के खिलाफ इस समय पांच आपराधिक मामले दर्ज हैं

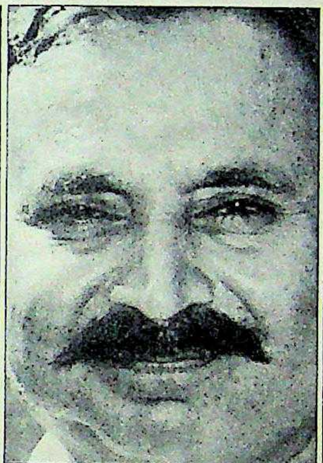

हरिशंकर तिवारी

इंका टिकट पर चिल्लूपार विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे तिवारी पूर्वी उत्तर प्रदेश के माफिया सरगना हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत जेल की हवा खा चुके हैं

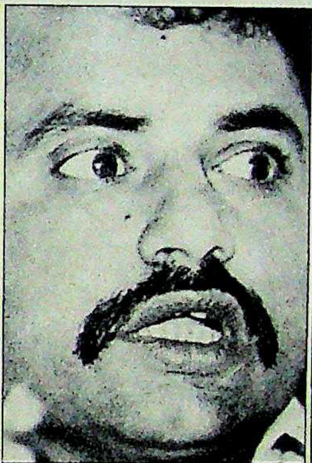

वीरेंद्र प्रताप शाही

लक्ष्मीपुर विधानसभा क्षेत्र से जनता दल उम्मीदवार वीरेंद्र प्रताप शाही राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत दो बार बंद रह चुके हैं और उन पर हत्या के 25 मामले हैं

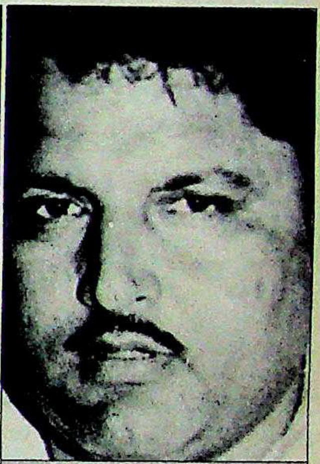

काली पांडेय

पटना में बम आक्रमण के आरोप में गिरफ्तार रहे,आपराधिक रिकार्ड वाले काली पांडेय को बिहार के गोपालगंज लोकसभा क्षेत्र से इंका ने अपना उम्मीदवार बनाया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चार जनता दल के.

हरिशंकर तिवारी इंका टिकट पर चिल्लूपार विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं, तो वीरेंद्र प्रताप शाही जनता दल टिकट पर लक्ष्मीपुर विधानसभा क्षेत्र से. पिछले महीने कांग्रेस में शामिल हुए तिवारी पूर्वी उत्तर प्रदेश के माफिया सरगना हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत जेल की हवा खा चुके हैं. हत्या के 30 मामलों में भी उनका नाम है. इसी तरह शाही भी राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत दो बार बंद रह चुके हैं और उन पर हत्या के 25 मामलों में शामिल होने का आरोप है.

अमेठी विधानसभा क्षेत्र से जनता दल महासचिव संजय सिंह की उम्मीदवारी भी काबिलेगौर है. उन पर सैयद मोदी की हत्या का षड्यंत्र रचने का आरोप है. इस सनसनीखेज मामले में सीबीआई की जांच से अपराधियों के साथ संजय के संबंध उजागर हो गए थे. दूसरे प्रमुख हिस्ट्रीशीटरों में भोला पांडेय इंका टिकट पर दोआबा (बलिया) विधानसभा क्षेत्र से और राजबहादुर सिंह तथा रमाकांत यादव जनता दल टिकट से जौनपुर और फूलपुर विधानसभा क्षेत्रों से चुनाव लड़ रहे हैं.

राजनीति का अपराधीकरण हिंदी क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है. दक्षिण में तेलुगु देशम ने भी हिस्ट्रीशीटरों को जगह दी है. इनमें सबसे प्रमुख देवीनेनी 'नेहरू' राजशेखर हैं, जिन्होंने जमानत पर जेल से बाहर आकर कांकीपाडु (आंध्र प्रदेश) से अपना नामांकन पत्र भरा. 'नेहरू' इंका विधायक मोहन रंगाराव की हत्या के अभियुक्त हैं. हैदराबाद से चुनाव लड़ रहे कुख्यात अपराधी-राजनीतिक कोठा दास के खिलाफ लूटपाट और डकैती के कई मामले दर्ज हैं. दास मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के सदस्य हैं.

पंजाब भी पीछे नहीं हैं. यहां इंदिरा हत्याकांड और दिल्ली बम विस्फोट कांड का सह-अभियुक्त अतिंदरपाल सिंह पटियाला से अखिल भारतीय सिख छात्र संघ का उम्मीदवार है.

अगर सरकार ने चुनाव आयोग द्वारा 1985 में की गई सिफारिश पर अमल किया होता तो कोई भी अपराधी आज चुनाव मैदान में नहीं होता. आयोग ने कहा था कि जिन पर मुकदमें चल रहे हैं या जो लोग विभिन्न कानूनों के तहत नजरबंद हैं, उन पर चुनाव लड़ने की रोक लगा दी जानी चाहिए. मौजूदा कानून के तहत सिर्फ उन्हीं लोगों पर चुनाव लड़ने की बंदिश है जिन्हें कम-से-कम दो साल की सजा हो चुकी हो. मधु लिमये कहते हैं, "इस रफ्तार से तो अपराधी सरगना और माफिया सरदार अगली शताब्दी में राजनैतिक दलों का नेतृत्व करने लगेंगे."

अपराधियों को पार्टी में शामिल किए जाने के खिलाफ इंका और जनता दल के भीतर आवाज भी उठती रही है. चंद्रशेखर ने जब अपने चेले और धनबाद के माफिया सरदार सूर्यदेव सिंह को टिकट देने की सिफारिश की तो क्रुद्ध पार्टी सदस्यों ने उनकी कड़ी आलोचना की. एक सदस्य ने कहा, "हम नहीं चाहते कि संसद में बलात्कारी, अपराधी और गुंडे आएं."

लेकिन दुखद हकीकत यह है कि राजनैतिक स्वार्थों के चलते इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. यहां तक कि विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी सारी नैतिकता को ताक पर रखकर अपराधी पृष्ठभूमि वाले लोगों को जनता दल का चिन्ह अपवित्र करने के लिए दे दिया है. दो महीने पहले उन्होंने ही कहा था कि 'इस देश की पीठ पर एक माफिया सवार है.' भारत के इतिहास में यह संभवतः बेहद कांटे का चुनाव होने जा रहा है लेकिन इसके एक नतीजे की भविष्यवाणी तो की ही जा सकती है. वह यह कि इस बार अनेक अपराधी तत्व संसद और विधानसभाओं में जन प्रतिनिधि बनकर बैठेंगे.

—पंकज पचौरी और ब्यूरो रिपोर्ट

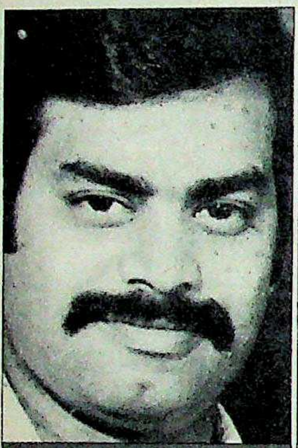

देवीनेनी राजशेखर

आंध्र प्रदेश में कांकीपाडु विधानसभा क्षेत्र से तेलुगु देशम के टिकट पर लड़ रहे देवीनेनी राजशेखर इंका विधायक मोहन रंगाराव की हत्या के अभियुक्त हैं

तपेश्वर सिंह

बिहार में विक्रमगंज लोकसभा क्षेत्र से इंका टिकट पर फिर से चुनाव लड़ रहे तपेश्वर सिंह को सीबीआई ने एक सहकारी संस्था से पैसा ऐंठने का दोषी ठहराया है

कोठा दास

हैदराबाद से मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ रहे कोठा दास के खिलाफ लूटपाट और डकैती के कई मामले दर्ज हैं

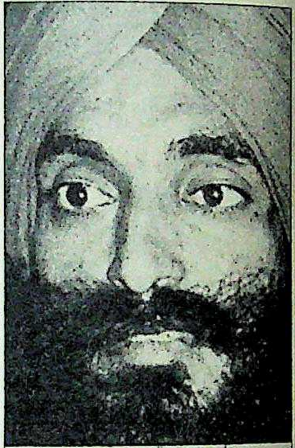

अतिंदरपाल सिंह

इंदिरा गांधी हत्याकांड और दिल्ली बम विस्फोट कांड में सह-अभियुक्त अतिंदरपाल को उम्मीद है कि पटियाला से जीतने के बाद वे बरी हो जाएंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सोमवार। उस दिन, सुरमई पहाड़ों
की बर्फ़ीली दूरी थी उसमें। यही वक्त था, उसके असर को कम करने का।
नीले नीलम की सर्द गहराई से। हाँ, बर्फ पिघली
और फिर वही नज़ाकत, वही बेसब्री।

कोहिनूर
फियेस्ता
हर पल की
अपनी अदा
अपनी मस्ती

TTK उत्पादन

3 रंगीन कोन्डोम एक ही पैक में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

loy. A l
Worksho
had no

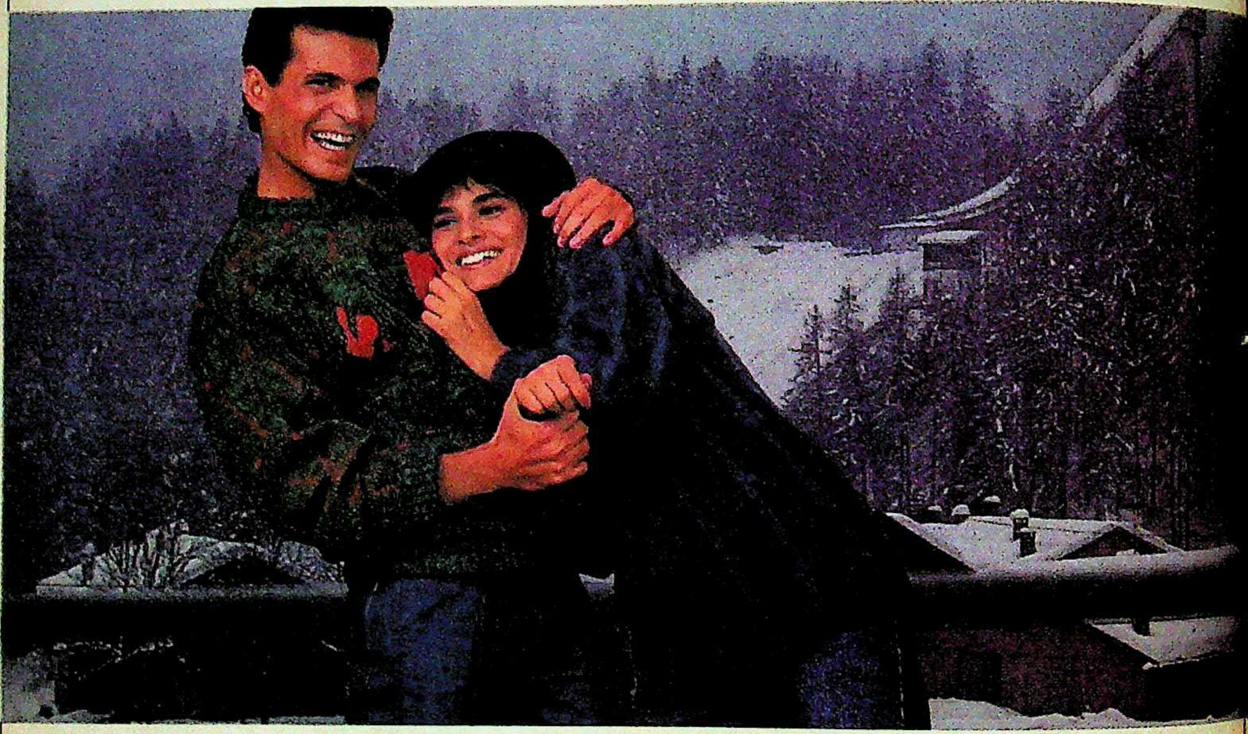

Alisha an
er eyes t
econd o

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Joy. A letter arrived in the morning post. I'd been invited to a Film Maker's Workshop. World-wide. In New York. Panic. I had to leave the next day. I had no warm clothes. And New York in the winter. Second only to the North Pole. Then of course there was the cosmetic angle. I'd have to look smart as well. After all, I'd soon be in designer country, right? Well, I reached designer country. And all went well. Eventless, till the last evening. We were watching a Hitchcock classic. In the darkness. A soft voice whispered behind me, "Nice sweater." My heart stood still for a second. That wasn't an American drawl. I know an Indian voice when I hear one. We went out that evening. Alisha and I. And the next. "You know, it's your sweater that did it...", she said, er eyes twinkling. "Its colour ... its style..." New York in the winter. econd only to heaven.

KNITWEAR by Park Avenue by Raymond's

Style... it never goes out of fashion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS PA 108 2539

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति का सम्मोहन

चुनाव के मैदान में इस बार कई नए मगर जाने-माने चेहरे

'योग्यता' का तकाजा

केरल के पूर्व इंकाई मुख्यमंत्री के बेटे मुरलीधरन की चुनावी योग्यता शायद ढूंढ़े न मिले. उन्होंने कानून की पढ़ाई शुरू की पर उसे छोड़कर मोबिल के कारोबार में हाथ आजमाने लगे. लेकिन मुख्यमंत्री का बेटा होना ही क्या पर्याप्त योग्यता नहीं होती? तभी तो कालीकट की प्रतिष्ठित लोकसभा सीट से इंका ने उन्हें उम्मीदवार बनाया.

लेकिन मुरलीधरन को राजनीति में लाना प्रदेश के इंकाइयों को नहीं भाया. इस सीट पर कई इंकाई दिग्गजों की नजर लगी हुई थी. सो, आननफानन नई दिल्ली में इंका मुख्यालय को नाराजगी भरे तार भेजे गए. लेकिन आलाकमान को उनकी राजनैतिक 'योग्यता' कुछ ज्यादा ही भा गई.

इस बीच मुरलीधरन के पांव आसमान पर हैं. पिछले पखवाड़े इस युवा उम्मीदवार के लिए प्रचार करने प्रधानमंत्री राजीव गांधी कालीकट पहुंचे. राजीव की सभा में भारी भीड़ देखकर उत्साहित हो उठे मुरलीधरन ने कहा, "मैं निश्चित ही जीतूंगा." मगर वास्तविकता यह है कि उन्हें राजनीति भी छोड़नी पड़ सकती है.

राग अनूठा

इस बार वे इतिहास लिखने के बदले इतिहास बना सकते हैं. कन्नड़ के दिग्गज लेखक के. शिवराम कारंत अगर कर्नाटक से लोकसभा चुनाव जीत जाते हैं तो यह भारत की राजनीति में पर्यावरणप्रेमियों के प्रवेश की शुरुआत होगी. 89 वर्षीय कारंत इस चुनाव में सबसे उम्रदराज उम्मीदवार हैं. उनका प्रचार अभियान आश्चर्यजनक नहीं, तो अनोखा जरूर है. वे पर्यावरण के मुद्दों को ही उठा रहे हैं. घने जंगलों के लिए मशहूर कर्नाटक के कनारा जिले के रहने वाले कारंत कैगा

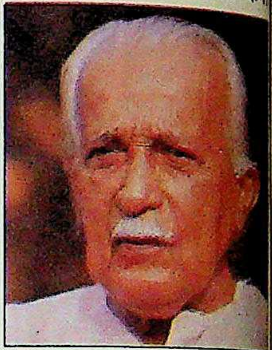

परमाणु संयंत्र और सी बर्ड नौसेना अड्डे जैसी परियोजनाओं के खिलाफ जेहाद छेड़े हुए हैं.

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कारंत खासी भीड़ खींच रहे हैं. कई पर्यावरणवादियों ने उनकी उम्मीदवारी का समर्थन किया है.

215 R PIP • 53 cms Full Square Picture Tube • Picture in Picture • Dynamic On-Screen Display • Action Freezing Facility • 32 Function Remote Control • Digital Technology
CORE 208 E • 51 cms Blackstripe Picture Tube • Auto Contrast & Brightness Control. (Bright or dark, the picture stays sharp) • 12 channels with HI-Tec features
5151 • 51 cms Large Screen Colour TV • Crystal Clear Picture & Sound • 8 channels with built-in SMPS & many more facilities
CORE 210 R • 51 cms Blackstripe Picture Tube • Hi-Tec Directional Sound System • Remote Control CTV with a host of features • Off-Timer • On-Screen Display Mute
2087 R • 51 cms Blackstripe Picture Tube • Hi-Tec STEREO styling • Features like-High Sound, On-Screen Display, On/Off Timer & Clock, all in one CTV • Multi System Facility
212 R • 53 cms Corner to Corner Excitement • Full Square Picture Tube • Increased Contrast ratio with Superb Image Depth in picture • Off Timer • On-Screen D... & Remote Control Facilities
POUSH VC 119 89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम बनाम कृष्ण

लगता है, नंदमूरि तारक रामराव ने अपने फिल्मी दिनों में कई दुश्मन बना डाले हैं. एक और लोकप्रिय फिल्म अभिनेता कृष्णा अब रामराव विरोधी कारवां में शामिल हो गए हैं. 54 वर्षीय कृष्णा फिल्मी दिनों से ही रामराव के कटु आलोचक रहे हैं. 1984 के लोकसभा चुनावों से ही वे सड़क पर उतर आए. उन्होंने आंध्र प्रदेश में इंकाई उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया और 1985 के विधानसभा चुनावों के पहले रामराव पर कटाक्ष करते हुए एक फिल्म 'ना पीलुपे प्रभंजनम' भी बनाई.

इस बार वे एलुरु लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. यहां उनका सामना सशक्त प्रतिद्वंद्वी तेलुगु देशम के मौजूदा सांसद, उद्योगपति बोल्ला बुल्ली रमैया से है. लेकिन विभिन्न जिलों में सक्रिय कृष्णा फैंस एसोसिएशन ने अपने हीरो की जीत निश्चित करने के लिए कार्यकर्ताओं का दस्ता भेजा है. कृष्णा कहते हैं, "मेरा कॉलेज एलुरु में ही था. यह तो मेरे घर जैसा है."

'हाथ' के साथ 'क्रॉस'

उनका मानना है कि वे एकदम तैयार हैं. लेकिन अब तक मामला सिर्फ नाम तक ही पहुंचा है. 12 साल विदेश में बिताने के बाद डॉ. गीता रेड्डी अपने राज्य आंध्र प्रदेश की राजनीति को नई घुट्टी पिलाने आ गई हैं.

मेडक जिले में गजवेल (सुरक्षित) विधानसभा सीट से इंकाई उम्मीदवार के तौर पर रेड्डी अपने चुनाव चिन्ह हाथ के साथ रेड क्रॉस के चिन्ह का भी सहारा ले रही हैं. गांवों में गरीबों के इलाज के लिए डॉक्टरों को राजीव गांधी के पोस्टरों से सजे एंबुलेंस में भेजना उनकी रणनीति दिख रही है. रेड्डी कहती हैं, "इंका के खिलाफ चाहे जो कुछ कहा जाए, पर इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि गांव के गरीबों के प्रति प्रतिबद्ध एकमात्र पार्टी यही है."

बहरहाल, रेड्डी अब चुनावी मैदान में पहली बार किस्मत आजमा रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

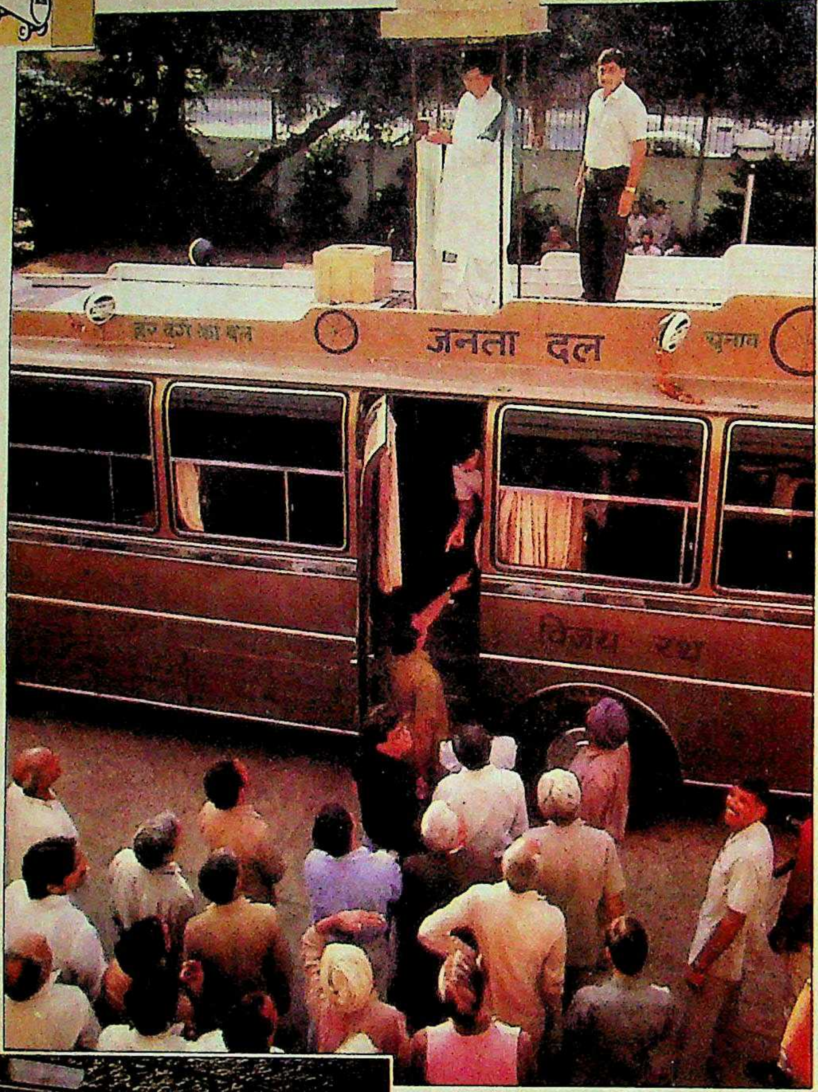

रथों पर सवार महारथी

सुविधाओं से लैस वाहनों से जनता तक पहुंचने की कवायद

सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, चुनाव रूपी समर जीतने के लिए दोनों के बीच श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वाहन इस्तेमाल करने की होड़ लग गई है. राजीव गांधी जहां वायुसेना के विशेष विमानों से कई चुनावी किलों को ध्वस्त करने की फिराक में हैं, वहीं अनेक विपक्षी नेता अपने-अपने रथों से ही राजनैतिक गोले दाग रहे हैं. ये रथ 1989 के चुनावों की विशिष्टता बन गए हैं.

पानी की तरह पैसा बहाकर तैयार कराए गए ये आलीशान रथ ऐशोआराम की सुविधा से लैस और उपयोगी तो हैं ही, मतदाताओं पर नाटकीय असर भी छोड़ते हैं. मसलन, हरियाणा की एक जनसभा में देवीलाल की प्रतीक्षा में खड़ी भीड़ जय-जयकार कर रही होती है कि अचानक सन्नाटा छा जाता है. हरी पगड़ी पहने देवीलाल हाथ में चक्र लिए विजय रथ से प्रकट होते हैं. लिफ्ट के जरिये ऊपर आकर वे 105 किलो वजन की अपनी काया इस सुनहरी भूरी बस की छत पर बिछी गद्दी पर टिका देते हैं. इसी बस रूपी रथ से वे संदेश देते हैं, "मेरा विजय रथ अपने नाम को साकार करते हुए मुझे इस चुनाव युद्ध में विजय दिलाएगा."

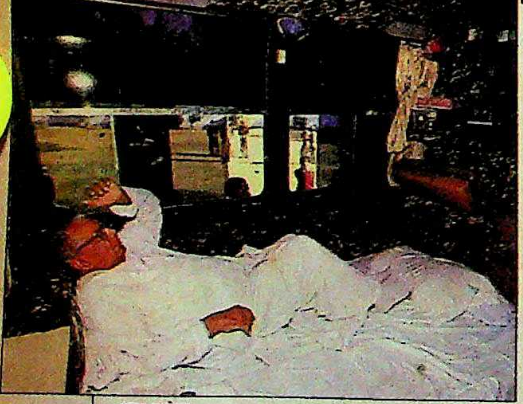

शरद सक्सेना

देवीलाल अपने 'विजय रथ' पर (ऊपर); और इसके भीतरः अभियान वाहन

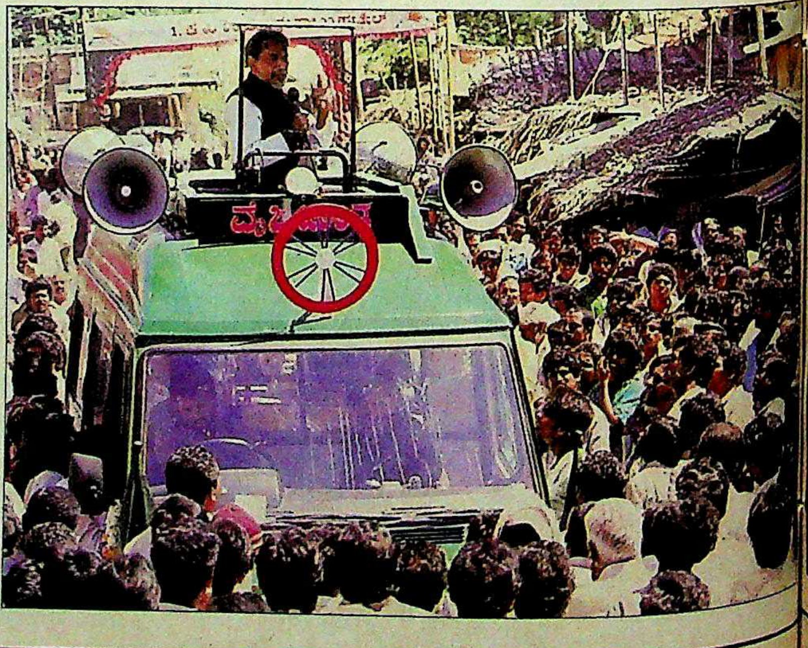

'जय वाहिनी' पर कर्नाटक में प्रचार करते हुए रामकृष्ण हेगड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीवी पर प्रचार का मौका पाने से वंचित ज्यादातर विपक्षी नेता इस रथयात्रा में शामिल हो गए हैं. उनका मानना है कि ऐसे प्रतीकों में अक्सर राजनैतिक संदेश निहित होता है. 1983 में अपने 'चैतन्य' रथ से भारतीय राजनीति के अगुआ शोमैन बनकर उभरे नंदमूरि तारक रामराव ने इस बार 23 प्रचार रथम छोड़े हैं. ये रथ दरअसल रामराव की पौराणिक फिल्मों के कट-आउट से जड़े ट्रक हैं. यहां तक कि 1985 के विधानसभा चुनावों में प्रचार के लिए मैटाडोर वैन इस्तेमाल करने वाले रामकृष्ण हेगड़े भी इस बार विजयंत नाम के बजाज टेंपो पर सवार हो गए हैं. इस 'रथ' के चारों ओर जनता दल के चमकीले चुनावचिन्ह बने हुए हैं. हैदराबाद की मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन जैसी कट्टरपंथी संस्था भी 'डॉज' सरीखे आधुनिक वाहनों का इस्तेमाल कर रही है. यह कार अमेरिका के आयातित पुर्जों को जोड़कर बंबई में बनाई गई है.

कांग्रेस नेता भी इस रथयात्रा में पीछे नहीं रहे हैं. गृहमंत्री बूटा सिंह जिस रथ का इस्तेमाल कर रहे हैं, उसका डिजाइन उनके बेटे ने तैयार किया है. उधर आंध्र प्रदेश के कांग्रेस कार्यकर्ता वी. हनुमंत राव ने रामराव के प्रचार रथम के मुकाबले इंदिरा विजय रथम छोड़ा है. बूटा सिंह के रथ पर उनके खुद के अलावा इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के भी आदमकद पोस्टर लगे रहते हैं. ट्रक पर मारवाड़ी भाषा में पंचायती राज के नारों के साथ-साथ जनता से वोट के लिए भी अपील की गई है. यह बात दीगर है कि बूटा सिंह खुद मारवाड़ी नहीं बोल पाते.

बहरहाल, इस बार चुनाव अभियान तकनीक और राजनीतिक दांवपेच के लिहाज से

बाबजी/जनता स्टुडियो

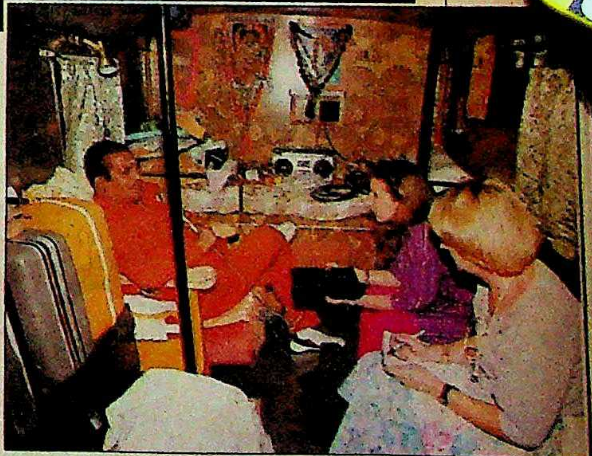

बाबजी/जनता स्टुडियो

रामराव 'चैतन्य रथ' पर (ऊपर); और इसके भीतरः सचल नेता

ओवैसी और उनका 'शाहीन': उच्च तकनीक से प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्पात एलायज

भारत का सबसे प्रतिभाशाली मेटल और फेरो एलॉयज कॉम्प्लेक्स

- हाई-कार्बन फेरो क्रोम
- फेरो सिलिकन केल्शियम्
- चार्ज क्रोम
- केल्शियम् सिलिसाइड
- मास्टर एलॉयज
- फेरो सिलिकन
- सिलिकन मेटल

★ **132** करोड़ रुपये लागत की विस्तार और विविधीकरण योजना – **जिसका प्रथम चरण पहले ही शुरू हो चुका है।** इसके पूरा होने पर यह भारत का सबसे प्रतिभाशाली मेटल और फेरो एलॉयज कॉम्प्लेक्स होगा।

★ **आयात विकल्प उत्पादों और निर्यात संभावनाओं** को ध्यान में रखते हुये नये संयंत्रों की स्थापना – जिसके फलस्वरुप विदेशी मुद्रा बचत एवं साथ ही साथ अर्जन।

★ उच्च-तकनीक **आयात विकल्प उत्पादों** का इलेक्ट्रॉनिक्स, परमाणु एवं सौर ऊर्जा, अन्तरिक्ष तकनीक, एल्यूमिनियम एलॉयज, रसायन, विशेष प्रकार के इस्पात और एलॉयज जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों में व्यापक उपयोग।

★ देश के समृद्ध **क्रोम-ओर** भण्डारों के उपयोग के लिए **चार्ज क्रोम** के अत्यधिक लाभदायक क्षेत्र में प्रवेश – विश्वभर में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने हेतु **100% निर्यात्तोन्मुख ईकाई** – एवं स्वदेश में आपूर्ति के लिए दूसरी ईकाई का कार्यान्वन।

★ **फिनलैण्ड** की **Outokumpu Oy** की श्रेष्ठ क्रोम-ओर पेलेटाइजेशन एवं प्रीहीटिंग तकनीक का प्रयोग – जिससे **ऊर्जा एवं परिचालन खर्च में व्यापक बचत।**

★ निरन्तर विद्युत आपूर्त्ति के लिए **कम्पनी का निजी विद्युत प्लान्ट** जिसका प्रथम चरण पहले ही शुरू हो चुका है।

★ द्रुत प्रगतिशील फेरो एलॉयज कम्पनी – 1988-89 के दौरान **लाभों में 127% एवं बिक्री में 41% वार्षिक वृद्धि।** और अब सम्पत्ति, बिक्री और लाभप्रदता में तीव्रतम् वृद्धि को तत्पर।

ISPAT

इस्पात एलॉयज लिमिटेड

'पार्क प्लाजा', 71 पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता 700 016

PRESSMAN

इस्पात है जहाँ, प्रतिभा है वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

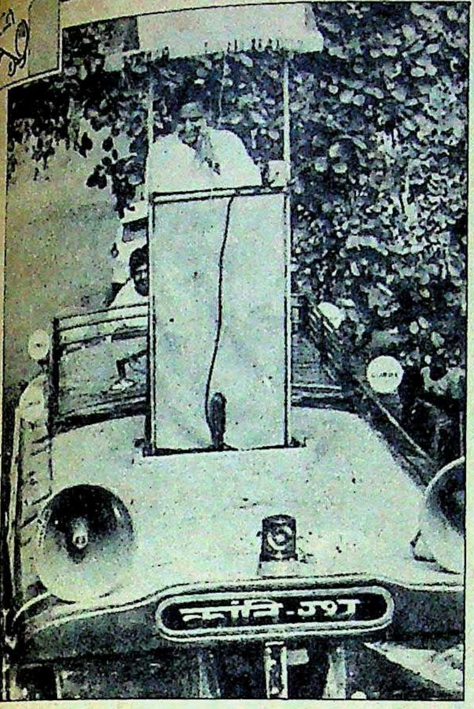

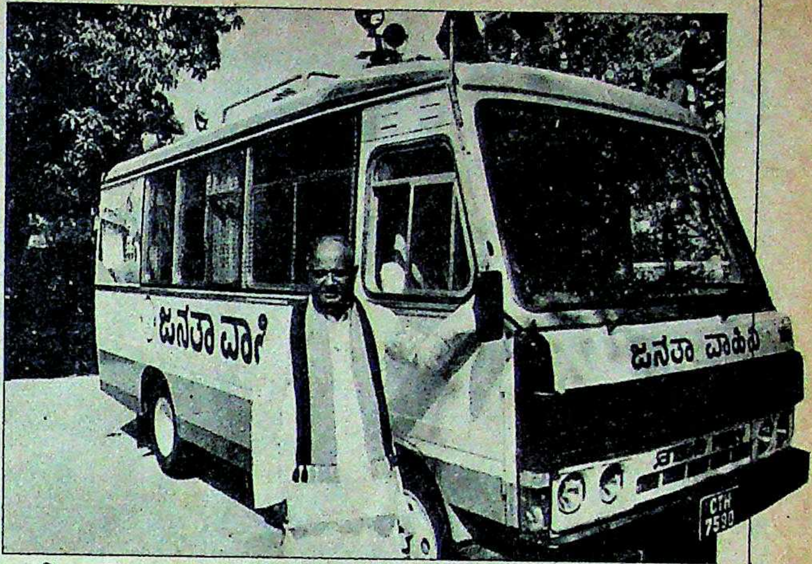

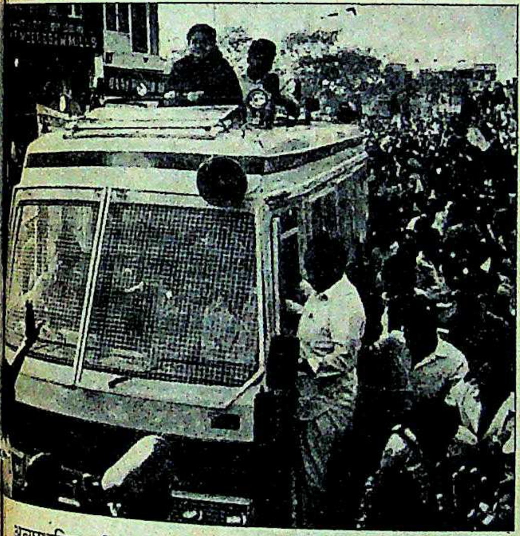

क्रांति रथ' पर मुलायम सिंह (ऊपर बाएं) ; देवगौड़ा, उनका रथ 'जनता वाहिनी'; और चुनाव अभियान चलातीं जयललिता (नीचे)

अत्याधुनिक ही है. नाम से प्राचीन युग का आभास देने के बावजूद रथ एक ऐसा नया आविष्कार है जिसने चुनाव का हुलिया बदल दिया है. कई रथों में तो शयनकक्ष भी बने हुए हैं, जहां नेता दिन भर के प्रचार की थकान उतारते हैं. देवीलाल के वातानुकूलित शयनकक्ष में मखमल लगा डनलप दीवान और दो सीटों वाला सोफा बिछा हुआ है. इसमें पाश्चात्य शैली का प्रसाधन कक्ष भी है, जिसमें छोटा वाश बेसिन, साबुन और टिशु-पेपर जैसी चीजों के अलावा चौबीसों घंटे पानी देने वाली टंकी भी है. यही नहीं, यह आलीशान रथ पाल-स्कैम वीडियो, पोर्टेबल सोनी टीवी सेट, क्वार्ट्ज घड़ी, नेशनल स्टीरियो सिस्टम और क्लैरियन स्पीकरों से भी लैस है.

अन्ना द्रमुक की जयललिता की वातानुकूलित स्वराज माजदा में गद्देदार बिस्तर के अलावा पढ़ने के लिए लैंप और कपड़ा मढ़ी कुर्सियां भी लगी हैं. ऊबड़-खाबड़ सड़क के झटकों से बचाने के लिए इस रथ में खास तरह के 'सस्पेंशन' लगाए गए हैं. कर्नाटक के जनता दल नेता एस.आर. बोम्मई के माजदा टी-3500 (जिसे वे विजय चक्र कहते हैं) के पिछले हिस्से में बने वातानुकूलित कमरे में कपड़े रखने की अलमारी, मेज और वाश बेसिन है. मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन की 22 फुट लंबी गाड़ी 'शाहीन' में शयनकक्ष के अलावा भोजनकक्ष और रसोईघर भी हैं.

चुनाव प्रचार में भी ये रथ बहुत उपयोगी साबित हो रहे हैं. रामराव की 46 साल पुरानी शेवरलेट गाड़ी तो आंध्र प्रदेश में चुनावी रथ के रूप में सचमुच ख्याति अर्जित कर चुकी है. देवीलाल के विजय रथ में 2,000 वॉट के छह स्पीकर लगे हैं, जिनसे हरियाणवी भाषा के गीत गूंजते रहते हैं. इनका संदेश कुछ इस तरह है—'सावधान ऐ कांग्रेसियो, हम आ गए हैं.' हेगड़े के रथ में हाइड्रॉलिक लिफ्ट लगी है, जिसके जरिये ऊपर आकर वे जनता को संबोधित करते हैं. लिफ्ट में माइक और लकड़ी की आराम कुर्सी भी है, जो उनके पीठ के रोग को ध्यान में रखकर तैयार की गई है. जयललिता का रथ आठ लैंपों से सुशोभित है. वैन की छत से जब वे जनता को संबोधित करती हैं तो इन लैंपों की रोशनी उन्हें जनता के आकर्षण का केंद्र बना देती है. इसमें माइक्रोफोन और लाउड-स्पीकर की व्यवस्था भी है.

रामराव और बूटा सिंह के रथ तो प्रचार के अलावा जनता का मनोरंजन भी करने लगे हैं. रामराव के भाषण से पहले उनके रथ पर नाचते-गाते लोगों की टोली तेलुगु संस्कृति का गुणगान करती है. बूटा सिंह के रथ पर रात के समय वीडियो फिल्में दिखाई जाती हैं, जिनमें उन्हें किसानों से बतियाते और पुलिस परेड में सलामी लेते दिखाया जाता है. इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के भाषणों के टेप भी बजाए जाते हैं. बीच-बीच में देशभक्ति संगीत भी ठूंसा गया है, जो कई मौकों पर विरोधी स्वरों को दबाने में कारगर साबित होता है.

आज के चुनावी अखाड़ों में ये रथ प्रतिष्ठा के प्रतीक बन गए हैं और नेता की आर्थिक हैसियत का प्रमाण देते हैं. देवीलाल ने आठ लाख और हेगड़े ने 2.6 लाख रु. खर्च करके ये रथ बनवाए हैं. अलबत्ता देवगौड़ा को जनता वाहिनी नामक अपने रथ पर एक पाई भी खर्च नहीं करनी पड़ी क्योंकि उन्हें यह चन्नारायापट्टन के नारियल उत्पादक किसानों से तोहफे में मिला था. ये रथ जुटाना हालांकि हर महारथी के बूते की बात नहीं लेकिन इनकी व्यावहारिक उपयोगिता के मद्देनजर हर पार्टी के नेताओं में ये लोकप्रिय हैं. लगता है ये रथ भारत की चुनावी संस्कृति का अभिन्न अंग बनकर रह जाएंगे.

—शांतनु दे और ब्यूरो रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हर धड़कन भारत के लिए है!

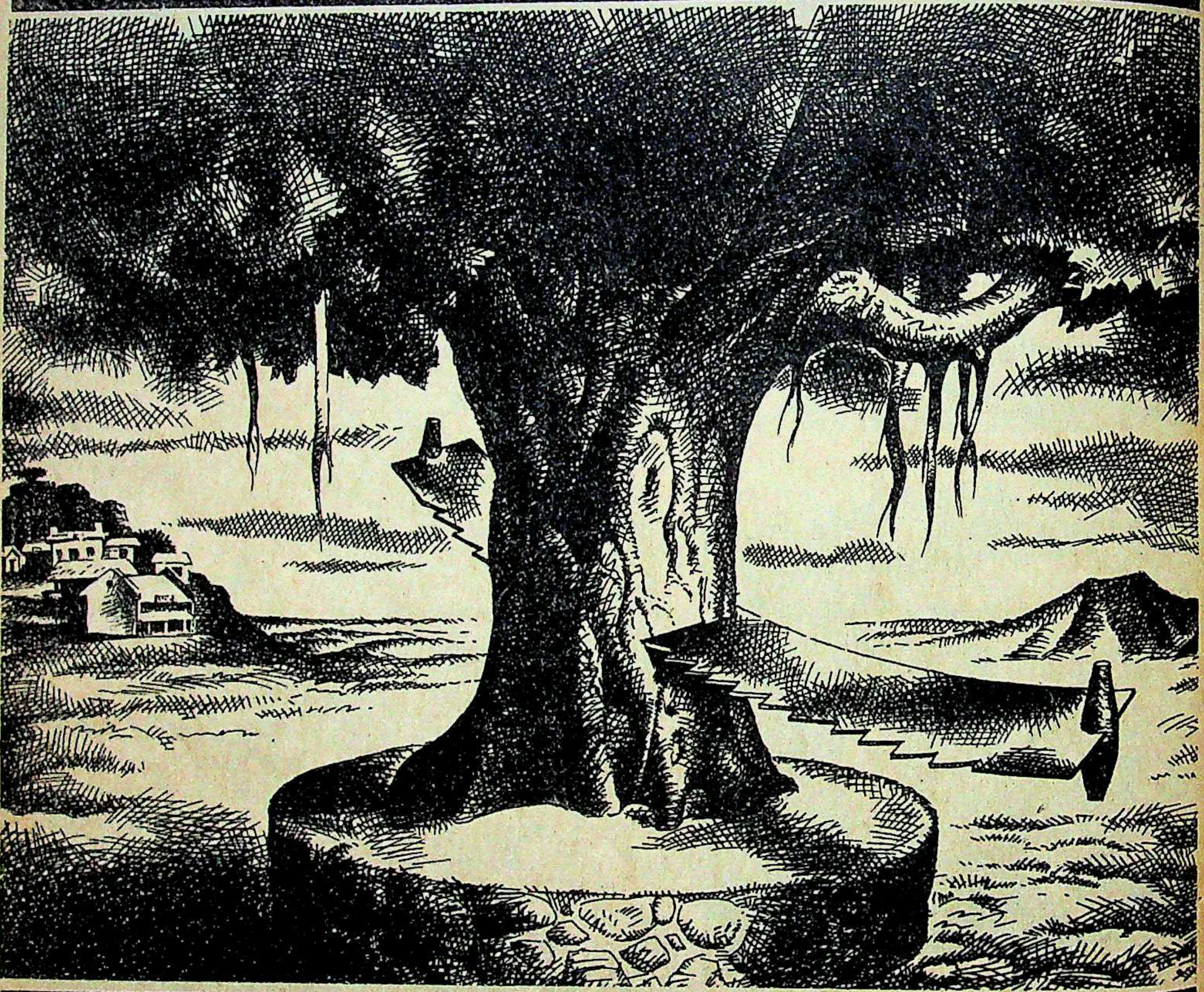

और मैं किसी को इसके पंचायती राज से विश्वासघात नहीं करने दूंगा।

पंचायती राज।
एक क्रांति जिसके साथ विश्वासघात किया गया। एक क्रांति जिसने सत्ता सीधे जनसाधारण को सौंपने का बीड़ा उठाया था।

यह क्रांति लालच और मौक़ापरस्ती की वेदी पर बलिदान कर दी गयी!
शुक्रवार - १३ अक्तूबर, १९८९ को।

Issued by General Secretary (In charge of Publicity) AICC, 24, Akbar Road, New Delhi 110 011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचायतीराज : प्रगति और समृद्धि के लिए क्रांति

पंचायतीराज की आकांक्षाओं, अभिलाषाओं के कुछ मूलभूत पहलू :

- पंचायतों को अपने विकास के कार्यक्रम स्वयं बनाने और उन्हें अमल में लाने की ज़िम्मेदारी देना। समाज की आवश्यकता के अनुसार आर्थिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज़ करना। ताकि कार्यक्रमों का समस्याओं के हल से सामंजस्य बना रहे और लाल फीताशाही, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार उसे बीच में ही हड़प न कर जाएं। ताकि हर गांव खुद अपना भाग्यविधाता बन सके.
- इस बात का पूरा ध्यान रखना कि जो भी योजना बने, वह गरीबों, दलितों, पिछड़े वर्ग के लोगों और ज़रूरतमंदों के हित को ध्यान में रखकर बनाई गयी हो। तभी इस योजना को स्वीकृति मिले।
- हर गांव के हाथ में सत्ता देना। हर पांच साल में सारी पंचायतों का चुनाव आयोग की देखरेख में निश्चित रूप से चुनाव करवाना।
- चुने हुए प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाना। प्रति ५००-१००० व्यक्तियों में से एक प्रतिनिधि चुने जाने की व्यवस्था, ताकि ज़िम्मेदारी बढ़े। ताकि भारत के हर नागरिक की आवाज़ साफ़-साफ़ और पूरी बुलंदी से सुनी जा सके और उसका उत्तर उसके दरवाज़े पर मिले।
- महिलाओं के लिए ३०% सीटें आरक्षित रखना, जो नामांकन से नहीं, सीधे चुनाव द्वारा भरी जाएं। ताकि महिलाएं जो हमारे परिवार और देश का मूल आधार हैं, परिवर्तन लाने वाले सारे कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। ताकि वे आगे बढ़ें और देश एवं देश के विकास में अपनी सही भूमिका निभा सकें।
- अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन-जातियों के लिए उनकी जनसंख्या के हिसाब से सीटें आरक्षित रखना। जो नामांकन से नहीं, सीधे चुनाव द्वारा भरी जाएं, अपना जीवन सुधारने का पूरा अवसर और अधिकार उनके हाथ में देना।
- असामाजिक और अपराधी तत्त्वों को पंचायत के चुनाव लड़ने पर पूरी रोक लगाना।

ये वो परिवर्तन थे जो लोगों का जीवन बेहतर बना सकते थे। ये वो परिवर्तन थे जिनसे विकास की गति लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं के साथ क़दम से क़दम मिलाकर चल सकती थी। ये वो परिवर्तन थे जिनके प्रवर्तक स्वयं भारत के लोग हो सकते थे। ये वो परिवर्तन थे जिनके अंतर्गत सारे साधन सीधे लोगों के हाथ में पहुंचते।

ये वो परिवर्तन थे जिन्होंने सत्ता के दलालों, बिचौलियों और ऐसे दूसरे निहित स्वार्थों का धंधा बन्द करवा दिया होता।

प्रगति के लिए परिवर्तन लाने की यही वो क्रांति थी जिसके साथ विश्वासघात किया गया।

क्या आप यह विश्वासघात बर्दाश्त कर लेंगे?

कांग्रेस (इ) पंचायती राज के लिए लड़ेगी।

कांग्रेस (इ) भारत के लोगों के अधिकारों के लिए लड़ेगी।

कांग्रेस (इ) भारत के लोगों का लोकतंत्र मज़बूत करने के लिए लड़ेगी।

कांग्रेस (इ) प्रगति, विकास और सामाजिक न्याय को और गति देने के लिए लड़ेगी।

कांग्रेस (इ) लड़ेगी एक ऐसे भारत के लिए जहां हर गांव जितना समृद्ध हो, उतना ही न्यायप्रिय भी।

इसलिए अपने वोट को भारत की सेवा में लगाइए।

आपकी हर धड़कन भारत के लिए हो।

कांग्रेस को वोट दीजिए।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिए।

भारत का हाथ मज़बूत कीजिये. कांग्रेस (इ) को वोट दीजिये.

Rediffusion/AICC/41 d HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अपनों की जंग

चुनाव के मैदान में कई राजनेताओं के रिश्तेदार भी

सिंधिया परिवार

विजयाराजे

माधवराव

वसुंधराराजे

कई चुनाव क्षेत्रों में बोफोर्स की गूंज है, पर मध्य प्रदेश के ग्वालियर और गुना में नजारा और ही है. यहां भ्रष्टाचार का मुद्दा अहमियत नहीं रखता.

ग्वालियर में केंद्रीय रेलमंत्री 'महाराज' माधवराव सिंधिया का मुकाबला भाजपा के शीतला सहाय से है. उधर पड़ोस के गुना में उनकी मां 'राजमाता' विजयाराजे सिंधिया भाजपा की तरफ से इंका के महेंद्र सिंह के खिलाफ डटी हैं. लेकिन असल जंग तो मां-बेटे के बीच है.

हर सभा में माधवराव ग्वालियर के लिए किए अपने कार्यों का बखान करने के साथ-साथ अपने शाही पुरखों का हवाला भी देते हैं. परेसेन गांव में वे लोगों को बताते हैं, "मेरे बाबा ने इसी गांव की एक लड़की से शादी की. यहां तो सब मामा लोग बैठे हैं."

गुना में उनकी मां पिछड़ेपन का दुखड़ा रोती हैं. एक गांव में वे कहती हैं, "अपने महाराज से पूछो कि वे भ्रष्ट प्रधानमंत्री के लिए क्यों काम कर रहे हैं. वे आपके पैसे से ही तो हेलिकॉप्टर उड़ा रहे हैं."

पारिवारिक कलह का एक और अध्याय राजस्थान में खुला है. यहां चित्तौड़गढ़ में भाजपा की ओर से माधवराव की बहन वसुंधराराजे कांग्रेस-इ की निर्मला कुमारी से भिड़ रही हैं. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता उनकी पीठ पर हैं. ■

हिमालय के तराई वाले राज्य सिक्किम में विधानसभा की 32 सीटों पर चुनाव में मुख्यमंत्री नरबहादुर भंडारी भले ही भारी साबित हों लेकिन राज्य की एकमात्र लोकसभा सीट पारिवारिक जंग का अखाड़ा बन गई है. यहां से भंडारी के उम्मीदवार का मुकाबला उनसे संबंध तोड़ चुकी उनकी बीवी, इंका उम्मीदवार दिल कुमारी से है. अपने कथित विवाहेतर संबंधों के बावजूद राज्य में एकछत्र नेता बने

भंडारी परिवार

नरबहादुर

दिल कुमारी

भंडारी को भरोसा है कि सत्ताधारी सिक्किम संग्राम परिषद चुनावों में भारी बहुमत से जीतेगी. बहरहाल, भंडारी अपनी पत्नी को कतई गंभीर खतरा नहीं मानते. उन्होंने एक छोटे नेता नंदू थापा को उनके खिलाफ उतारा है. ■

बेटों को उपहार

इंका में अपनी पैठ जमाने वाले वरिष्ठ नेताओं को इस बार एक अमूल्य उपहार मिला है. उनके बेटों को चुनाव लड़ने का टिकट दिया गया है.

आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए तीन केंद्रीय मंत्रियों—पी.वी. नरसिंह राव, पी. शिवशंकर और जे. वेंगल राव—के बेटों को टिकट मिला है. नरसिंह राव के बेटे पी.वी. रंगा राव हानमकोंडा क्षेत्र से उम्मीदवार हैं. शिवशंकर के बेटे, राज्य युवक इंका अध्यक्ष पी. सुधीर कुमार मालकपेट से मैदान में हैं. और वेंगल राव के बेटे जे. प्रसाद राव अपने गृह क्षेत्र सातुपल्ली से खड़े हैं.

इन मंत्रियों में सिर्फ वेंगल राव ही ऐसे हैं जो अपने राज्य आंध्र प्रदेश से लड़ रहे हैं. नरसिंह राव ने महाराष्ट्र में रामटेक से ही चुनाव लड़ना पसंद किया, जहां से वे 1984 में चुने गए थे जबकि शिवशंकर फिलहाल गुजरात से राज्यसभा के सदस्य हैं.

उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्यमंत्री लोकपति त्रिपाठी ने भी अपने बेटे को टिकट दिलवाया है. त्रिपाठी खुद तो मझवां (मिर्जापुर) विधानसभा क्षेत्र से लड़ रहे हैं जबकि उनके बेटे राजेशपति चंदौली से खड़े हैं, जहां से उनकी दिवंगत मां चंद्रा जीता करती थीं.

नरसिंह राव

पी.वी. रंगा राव

वेंगल राव

जे.प्रसाद राव

लोकपति त्रिपाठी

राजेशपति त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना करें अगर पुमाप्लाई को २००° सेंटीग्रेड तापमान में एक घंटे तक ओवन के भीतर रख दिया जाये तो क्या होगा ?

इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा।
जी हां – कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

पानी १००° सेंटीग्रेड पर उबलने लगता है।

पुमाप्लाई इससे कहीं अधिक–बहुत अधिक तापमान सहन कर सकता है।

क्योंकि यह १००% हीट रेज़िसटेंट है।

जरा गौर कीजिये, आपके किचन केबिनेटों के लिए यह कितना उपयुक्त प्लाइवुड है जो कि चूल्हा, प्रेशरकूकर, टोस्टर और रोज़-२ तलने व रसोई बनाने के काम से पैदा होने वाली गर्मी का लगातार मुकाबला करते रहते हैं।

सिर्फ यही नहीं, पुमाप्लाई दीमक प्रतिरोधक भी है।

इसीलिए पुमाप्लाई आपके घर और ऑफिस के लिए एक आदर्श प्लाइवुड है। जहां कहीं भी टिकाऊपन चाहिए, वहीं है इसकी ख़ास जरूरत।

याद रखिये, अगली बार फर्नीचर बनवाते समय ड्यूरो-पुमाप्लाई ही लें। तब आप २००% निश्चिंत होकर कह सकेंगे कि यह वही प्लाइवुड है जो सही माने में जीवन भर साथ निभाने में सक्षम है।

DURO पुमाप्लाई ™

ड्यूरोबोर्ड निर्माता का एक अनोखा उत्पादन

जीवनभर साथ निभाये!

शारदा प्लाइवुड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
कलकत्ता • दिल्ली • बम्बई • अहमदाबाद • मद्रास • बंगलौर

इस स्ट्रिप और लेबल को देखकर खरीदें

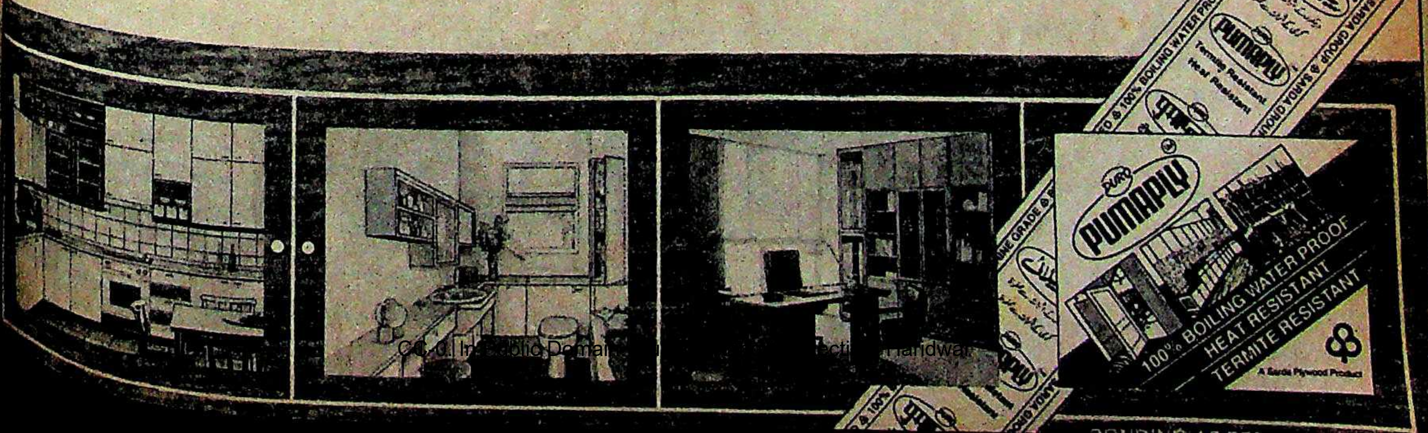

CC-0. In Public Domain...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंका को आम चुनाव में लोकसभा सीटों के लिए योग्य महिला उम्मीदवारों की कमी भले हो, बिहार का एक परिवार जरूर ऐसा है जिसमें राजनैतिक प्रतिभा वाली महिलाओं की कमी नहीं है. यह परिवार है मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा का. उनकी पत्नी किशोरी सिन्हा फिर से वैशाली संसदीय सीट की उम्मीदवार हैं. उनकी पुत्रवधू श्यामा सिन्हा औरंगाबाद संसदीय सीट से इंका उम्मीदवार हैं. श्यामा की मां माधुरी सिंह पूर्णिया से दोबारा चुनाव लड़ रही हैं.

कई लोगों को उम्मीद थी मुख्यमंत्री की पत्नी को इस बार वैशाली के बजाय औरंगाबाद से खड़ा किया जाएगा. इस उम्मीद में सिन्हा के राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी ललितेश्वर प्रसाद शाही ने मुजफ्फरपुर के बजाय वैशाली से टिकट की मांग की थी. उधर, माधुरी सिंह का स्वास्थ्य चूंकि खराब चल रहा था इसलिए उम्मीद की जा रही थी कि वे इस बार अपनी जगह अपने बेटे और राज्य के उद्योग विकास आयुक्त एन.के. सिंह को मौका देंगी.

श्यामा सिन्हा के नामांकन पर भी कुछ लोगों की भृकुटियां तनी. मुख्यमंत्री के इकलौते बेटे, नई दिल्ली में आईपीएस अधिकारी निखिल कुमार की पत्नी को औरंगाबाद जैसे चुनाव क्षेत्र के लिए कुछ कमजोर उम्मीदवार माना जाता रहा है. कई लोगों को उम्मीद थी कि मुख्यमंत्री इस बार निखिल कुमार को अपना राजनैतिक वारिस बनाने की प्रक्रिया शुरू करेंगे. अंततः इन तीन महिलाओं को ही हरी झंडी मिली.

अब आगे इन तीनों महिलाओं को चुनावी जंग में जुटना है. उम्मीद है कि किशोरी सिन्हा और माधुरी सिंह को अपनी सीट बचाने में ज्यादा मुश्किल नहीं होगी. लेकिन श्यामा सिन्हा को औरंगाबाद में कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है. ■

सिन्हा परिवार

माधुरी सिंह

किशोरी सिन्हा

श्यामा सिन्हा

खान परिवार

आरिफ मुहम्मद

रेशमा

भारत में महिलाओं के लिए राजनीति में प्रवेश करने का सबसे आसान तरीका है किसी नेता से शादी कर लेना. 38 वर्षीय आरिफ मुहम्मद खान तो राजनीति के मंजे खिलाड़ी हैं ही, अब उनकी 34 वर्षीया बीवी रेशमा भी जनता दल की ओर से कानपुर की आर्यनगर विधानसभा सीट से चुनाव लड़कर अपना राजनैतिक कैरियर शुरू करने जा रही हैं.

आरिफ इस बार भी उत्तर प्रदेश की बहराइच लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. जाहिर है उनकी मदद से ही उनकी पत्नी राजनीति में आई होंगी. लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि रेशमा का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है. कानून की पढ़ाई में स्वर्ण-पदक पा चुकीं रेशमा सुप्रीम कोर्ट में वकालत करती हैं. वे अखिल भारतीय महिला जनता दल की संचालन समिति की सदस्या भी हैं.

मियां-बीवी के सामने जबरदस्त चुनौती है. रेशमा का मुकाबला जहां इंका के मौजूदा विधायक हफीज मुहम्मद उमर से है, वहीं आरिफ का मुकाबला इंका के पूर्व राज्यपाल ए.आर. किदवई से है. ■

दामादों की चांदी

इस बार कई दामादों के भी पौ बारह हो गए. आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम के सर्वेसर्वा नंदमूरि तारक रामराव को ही लीजिए. उन्होंने अपने एक दामाद और पार्टी पोलितब्यूरो के सदस्य एन. चंद्रबाबू नायडू को कुप्पम विधानसभा सीट दी तो दूसरे दामाद और स्वास्थ्य-मंत्री डी. वेंकटेश्वर राव को प्रकाशम जिले की परचुर सीट पर खड़ा कर दिया.

इसी तरह पूर्व केंद्रीय मंत्री और कर्नाटक प्रदेश इंका अध्यक्ष वीरेंद्र पाटील ने गुलबर्गा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का टिकट अपने दामाद डॉ. बी.जी. जावाली को दिया है. 1984 में यह सीट पाटील ने जीती थी. इस बार वे चिंचोली विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे जो कि गुलबर्गा में आता है.

52 वर्षीय ईएनटी विशेषज्ञ जावाली राजनीति में आने से पहले गुलबर्गा स्थित एम.एम. मेडिकल कॉलेज में शिक्षक थे. उनकी शादी पाटील की सबसे बड़ी बेटी ललिता से हुई है. पिछले साल उन्होंने राज्य विधान परिषद का चुनाव भी लड़ा था लेकिन बहुत कम अंतर से मुंह की खा गए थे.

जावाली का कहना है कि उन्हें अपनी योग्यता के कारण टिकट मिला है. वे मजाक में कहते हैं, "मैंने आलाकमान से कहा कि अगर उन्होंने इस बिना पर टिकट नहीं दिया कि मैं पाटील का दामाद हूं तो मैं पार्टी छोड़ दूंगा या फिर पत्नी को तलाक दे दूंगा."

एन.टी. रामराव

एन.सी. नायडू

डी.वी. राव

वीरेंद्र पाटील

डॉ. बी.जी. जावाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान न करे कभी ऐसा हो...

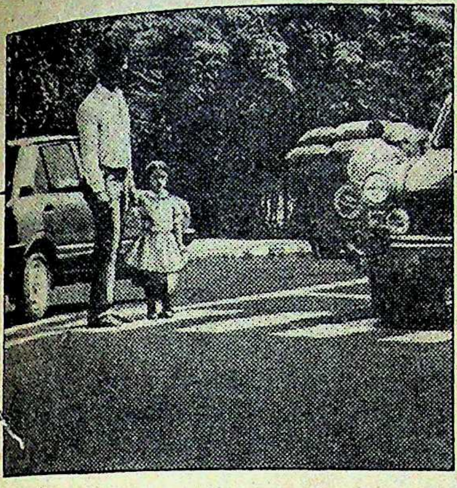

...मगर हुआ तो...

युनाइटेड इंडिया पर्सनल एक्सीडेंट पॉलिसी

एहतियात के लिए.

कौन चाहता है कि सड़क पार करते हुए उसे कुछ हो जाए?
या सीढ़ियों पर से उतरते हुए फिसल या गिर जाए!
लेकिन होनी को कोई टाल सका है?
ठीक है, किस्मत को बदलना किसीके बस में नहीं,
लेकिन अनहोनी का सामना किया जा सकता है युनाइटेड इंडिया की पर्सनल एक्सीडेंट पॉलिसी अपनाकर.
इस पॉलिसी में शामिल है - दुर्घटना से हुई मौत या अंग-भंग अथवा दृष्टि खो जाना या शारीरिक अपंगता.
बीमा करवाने का बहुत सीधा-सरल तरीक़ा है. युनाइटेड इंडिया की देशभर में 1000 शाखाएँ हैं. निकटतम केंद्र से संपर्क करें, आपको खुद ही पता चल जाएगा कि कितना आसान है हमारे द्वारा बीमा करवाना. तो अब दुर्घटना होने का इंतज़ार न करें. आज ही युनाइटेड इंडिया से बीमा करवाएँ... एहतियात के लिए.

युनाइटेड इंडिया इंश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
(जनरल इंश्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया की सहयोगी संस्था.)
24, वाइट्स रोड, मद्रास-600 014.

UNITED INDIA WE CARE

UNITAS M UI 1 2517 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौवें आम चुनाव में वंशवाद की राजनीति ने हर पार्टी में जगह बना ली है. इंका और विपक्ष दोनों ने ही जाने-माने नेताओं के रिश्तेदारों को टिकट दिया है. एक ही परिवार के लोगों को प्रतिद्वंद्वी दलों द्वारा टिकट देने के ढेरों उदाहरण हैं.

दिवंगत प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के सबसे बड़े बेटे और केंद्रीय कृषिशोध व शिक्षा राज्यमंत्री हरिकृष्ण शास्त्री को इंका ने फतेहपुर संसदीय क्षेत्र से फिर उम्मीदवार बनाया है. दूसरे बेटे और उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल के सदस्य सुनील शास्त्री इंका के टिकट पर गोरखपुर विधानसभा क्षेत्र से दोबारा अपनी किस्मत आजमा रहे हैं जबकि सबसे छोटे अनिल शास्त्री को जनता दल ने वाराणसी संसदीय क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया है.

तीनों भाइयों में हरिकृष्ण की ही चुनावी संभावनाएं सबसे ज्यादा धूमिल हैं. वजह यह कि फतेहपुर में उनका सामना विश्वनाथ प्रताप सिंह से है. हरिकृष्ण के लिए एक मुश्किल यह भी है कि केंद्रीय मंत्री होते हुए भी उन्होंने क्षेत्र से छत्तीस का रिश्ता रखा.

इलाहाबाद संसदीय उपचुनाव के दौरान छोटे भाई सुनील को भी वी.पी. सिंह से जूझना पड़ा था. शास्त्री बंधु भले ही वी.पी. सिंह की चुनौती झेलने को अभिशप्त हैं पर दोनों परिवारों के बीच मधुर संबंध कायम हैं. वी.पी. सिंह को शास्त्री ही राजनीति में लाए थे. और कुछ साल बाद वी.पी. सिंह ने सुनील को राजनीति में लाकर वह कर्ज चुकता कर दिया था.

अनिल का वी.पी. सिंह के जनता दल में शामिल होने का निर्णय भी आश्चर्यजनक नहीं है. लेकिन अपने परिवार के कांग्रेस से बरसों पुराने रिश्ते को तोड़कर उन्होंने सत्ताधारी दल को धक्का जरूर लगाया है. वैसे शासक दल हर जाने-माने नाम को भुनाने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता. ■

शास्त्री परिवार

हरिकृष्ण · अनिल · सुनील

गजपति राजू परिवार

अशोक (ऊपर बाएं), उमा और आनंद (नीचे)

राजनीति, विभिन्न रंगों में सही, विजयनगरम के शाही खानदान की रगों में रची-बसी है. बुजुर्ग पी.वी.जी. राजू शुरू से ही कांग्रेस के कट्टर समर्थक रहे हैं पर उनके बेटों ने 1982 में रामराव के तेलुगु देशम पार्टी गठित करते ही उनका दामन थाम लिया. दोनों ही 1983 में विधायक चुने गए. बड़े भाई आनंद राज्य के शिक्षामंत्री बन गए और 1984 में बोबिल्ली चुनाव क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए. इस बीच उनके छोटे भाई अशोक विधानसभा के लिए दोबारा चुने जाने पर मंत्री बने.

पिछले साल जब आनंद की पत्नी उमा ने दिल्ली में राजीव गांधी को समर्थन देने की घोषणा कर दी तो आनंद भी पाला बदलने पर मजबूर हुए. नतीजतन आनंद को बोबिल्ली और उमा को पड़ोस की विशाखापत्तनम सीट का टिकट मिला है.

बदले में रामराव ने दूसरे भाई अशोक को तोहफा दिया. राज्य मंत्रिमंडल से सामूहिक निष्कासन के बाद मंत्री पद गंवा चुके अशोक को पार्टी महासचिव बना दिया गया. अब उन्हें विजयनगरम विधानसभा सीट से टिकट भी मिला है. ■

आनुवंशिकी तत्व

इस बार लोकसभा और विधानसभा चुनावों में उम्मीदवारों की फेहरिस्त देखकर कोई आनुवंशिकी विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि मनुष्य के क्रोमोसोम में राजनैतिक गुणों का वाहक ऐसा 'जीन' भी होता है, जिसकी अभी खोज नहीं हो पाई है.

बाप-बेटा, मां-बेटा, बहन-भाई, भाई-भाई आदि उम्मीदवारों की फेहरिस्त दिनोदिन लंबी होती जा रही है. और ये राजनैतिक 'जीन' सिन्हा, शास्त्री और सिंधिया परिवारों तक ही सीमित नहीं हैं. अब तो छुटभैये नेता भी अपने मां-बाप या अग्रजों की राह पकड़ते दिखते हैं.

आंध्र प्रदेश विधानसभा के लिए नेल्लोर जिले में दो भाई चुनाव मैदान में हैं. इंका से तेलुगु देशम और फिर इंका में लौटे पूर्व मंत्री एन. श्रीनिवासुलु रेड्डी कावुर से उम्मीदवार हैं. लेकिन तेलुगु देशम में ही रहे उनके बड़े भाई एन. चंद्रशेखर रेड्डी वेंकटगिरी क्षेत्र से पार्टी के उम्मीदवार हैं.

उधर बिहार में बहनों की जोड़ी मैदान में है. केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णा साही बेगूसराय से इंका उम्मीदवार हैं, तो उनकी बहन उषा सिंह वैशाली से जनता दल उम्मीदवार. मजेदार बात यह कि उषा के पति इंका में हैं.

पर उत्तर प्रदेश में वाजपेयी परिवार कई दलों में नहीं बंटा है. केंद्रीय मंत्री राजेंद्र कुमारी वाजपेयी सीतापुर से लोकसभा की उम्मीदवार हैं. उधर उनके बेटे अशोक इसी पार्टी से इलाहाबाद उत्तर से विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं.

कृष्णा साही · उषा सिंह · राजेंद्र कु. वाजपेयी · अशोक वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

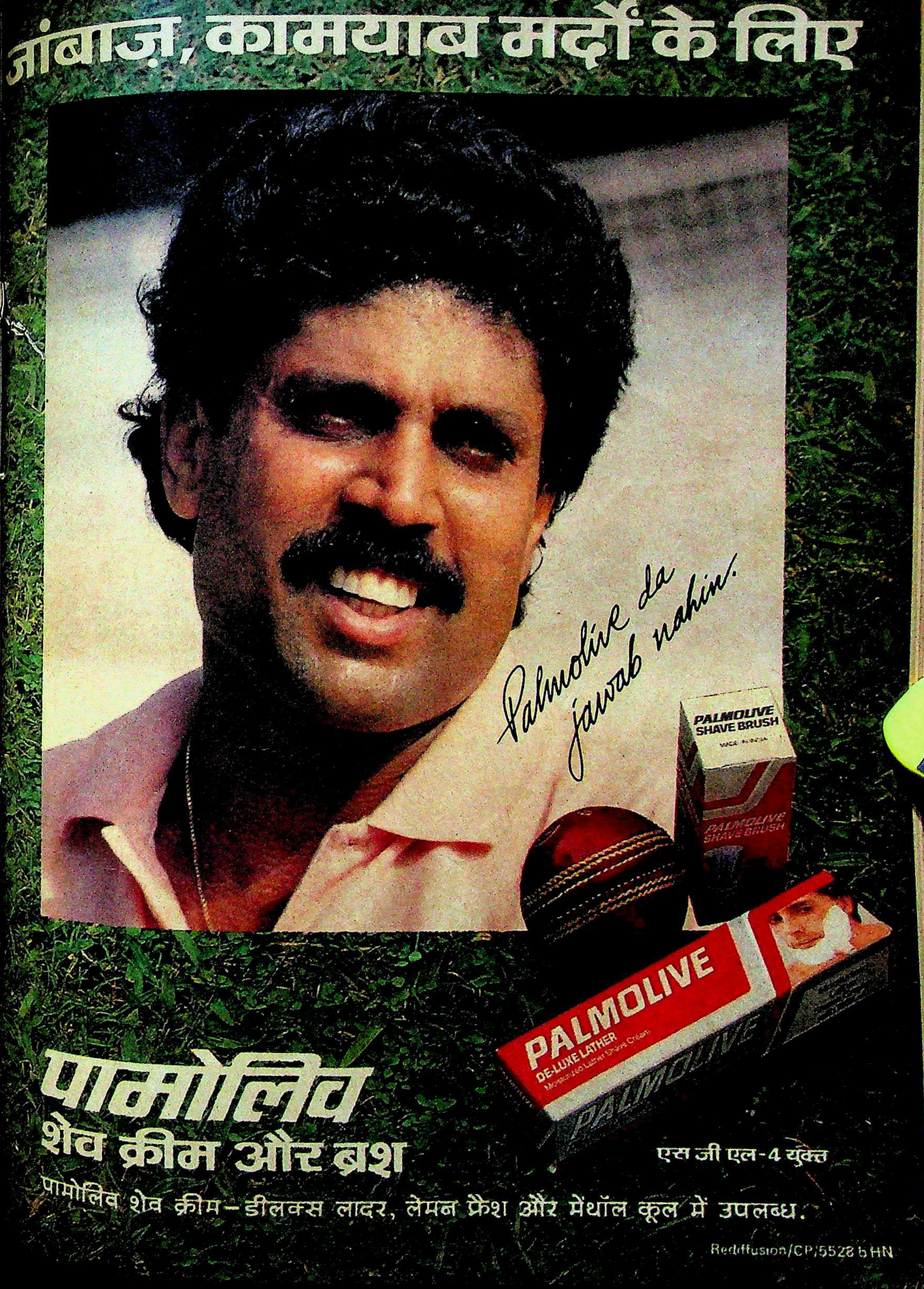

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमीं पर सितारे

चुनाव प्रचार में फिल्मी सितारों के उतरने से बनी नई फिजां

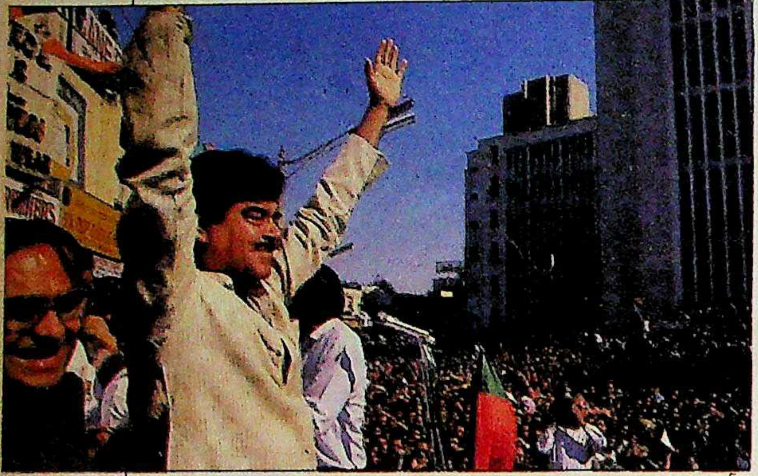

भवान सिंह

हीरो का हौसला

विश्वनाथ प्रताप सिंह के बाद विपक्ष की तरफ से सबसे अधिक भीड़ जुटा सकने वाले शख्स शत्रुघ्न सिन्हा ही हैं. वैसे भी आजकल फिल्मों में चाकलेटी हीरो का जमाना लद गया है. फिर अपने रोबीले व्यक्तित्व, मर्दाना आवाज और बोफोर्स मॉडल जैसे तामझाम के साथ शत्रुघ्न ने प्रचार अभियान को नया ही रूप दे दिया है. वे अपने जीवन की एक महती भूमिका निभाने में जुटे हैं.

फिल्मों में भी तालियां बजवाने वाले डायलॉग बोलने वाला यह बिहारी बाबू आजकल चुनावी भाषणों में भी डायलॉगबाजी करके वाहवाही लूट रहा है. जैसे इंका के चुनाव चिन्ह पंजे पर उनका डायलॉग: "कांग्रेस के इस चुनाव चिन्ह के साथ तो नारा होना चाहिए—हाथ की सफाई." जहां भी वे जाते हैं, वहीं बेहिसाब भीड़ जुट जाती है.

लेकिन सिन्हा के लिए यह सब मजाक का मामला नहीं है. वे कहते हैं, "सत्ता का विरोध करना दिलेरी का काम है और इसे वही कर सकता है जिसका पिछला हिसाब-किताब गड़बड़ न हो. शीशे के घरों में बैठने वाले यह नहीं कर सकते." शत्रुघ्न का यह अभियान सिर्फ नाटकबाजी नहीं है. राजीव को गद्दी से हटाने के अभियान में वे जेहादी जोश के साथ जुटे हैं. विपक्ष के प्रति अपने उत्साह को जताते हुए वे कहते हैं, "सत्ता में आने के बाद वे लोग बढ़िया काम करेंगे." अगर ऐसा नहीं हुआ तो? उनका उत्साह थोड़ा थमता है और वे चेतावनी देते हैं, "तब उन्हें मेरा गुस्सा झेलना पड़ेगा." साफ है कि शत्रुघ्न अपनी राजनैतिक ताकत के प्रति आत्मविश्वास से भरे है.

फिल्म हो या राजनीति, 'सर्वशक्तिमान' को चुनौती देने में ही शत्रुघ्न को मजा आता है. पहले अगर उनका निशाना अमिताभ बच्चन बनते थे तो अब कमलाकांत तिवारी हैं. तिवारी को 'बेशर्मी का प्रोफेसर' बताते हुए वे कहते हैं, "मैं खुद इस बात का पक्का बंदोबस्त करूंगा कि उनकी जमानत जब्त हो जाए."

फिल्मी जंग

विज्ञापनों की लड़ाई तो सुनी है लेकिन चुनावी दंगल में फिल्मों का सहारा लेना शायद महंगी कसरत लगती है. बहरहाल, एन. टी. रामराव के आंध्र प्रदेश में कुछ भी असंभव नहीं है. चुनाव के पहले 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' बनकर छा जाने की उनकी योजना राजीव द्वारा चुनाव की अचानक घोषणा कर देने से गड़बड़ा गई. इस दांव के असफल होने के साथ ही तेलुगु के प्रसिद्ध निर्देशक के.बी. तिलक अब रामराव के असली जीवन पर फिल्म लाकर उन्हें और झटका दे रहे हैं. रामराव के प्रबल विरोधी तिलक को उम्मीद है कि राजनैतिक व्यंग्य वाली उनकी फिल्मों 'ना पिलुपे प्रभंजनम' और 'गांडीपेट रहस्यम' की तरह यह फिल्म चुनाव पर जबरदस्त असर डालेगी.

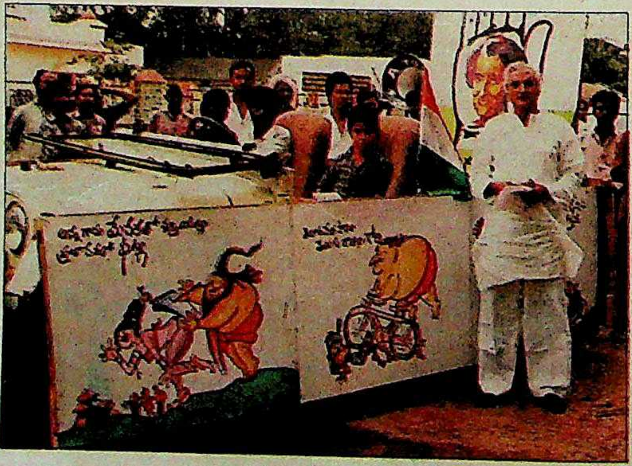

तोप का जवाब तोप

बोफोर्स का जवाब 'बोफो... जी हां, द्रमुक ने इस चुनाव... तमिल अभिनेत्री राधिका... अपना 'प्रचार वीरांगी' (तो... बनाया है. द्रमुक की ओर...

जयललिता के मुकाबले ... राधिका कहती हैं, "मेरी ... सेक्स बम की नहीं है. लोग ... सभाओं में द्रमुक से जुड़ाव ... कारण आते हैं."

भाषण नहीं डायलॉग

इंका का चुनाव प्रचार ... में कलयुगी कृष्ण, नीतीश भ... द्वाज को खासी परेशानियों ... सामना करना पड़ रहा है. ... सभा में लोग उनसे महाभारत ... डायलॉग सुनाने की मांग करते ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

...म्मेदारी का एहसास

...समांतर हिंदी सिनेमा के दौर ...औरत की एक प्रबल आवाज ...कर उभरीं शबाना आजमी के ...इन दिनों फिल्मी 'दीवाने' से ...यादा 'राजनैतिक दीवाने' नजर ...रहे हैं. उनको लेकर तरह-...के चर्चे थे. एक चर्चा यह कि ...हरकिशनलाल भगत के खिलाफ ...व लड़ेंगी. दूसरी चर्चा उनके ...आजमगढ़ से (जहां की वे मूल ...वासी हैं) चुनाव लड़ने की थी.

लेकिन शबाना ने हर किसी को चाहे वे मृणाल गोरे हों या वी.पी. सिंह या स्वामी अग्निवेश, यही जवाब दिया कि 'चुनाव लड़ने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है.' अपनी अलग पहचान बनाए रखने को उत्सुक शबाना ने तय किया कि वे पार्टी का नहीं बल्कि मुद्दों का समर्थन करेंगी. और जहां तक उम्मीदवार की बात है, वे सिर्फ धर्मनिरपेक्ष उम्मीदवारों का समर्थन करेंगी.

सांप्रदायिकता के खिलाफ उनकी नाराजगी उनके इस कथन से झलकती है, "यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि कुछ हिंदू मानते हैं कि राम सिर्फ अयोध्या में ही रहते हैं. और इसी तरह लगता है मुसलमान नेता भी मानते हैं कि अल्लाह सिर्फ बाबरी मस्जिद में ही रहते हैं."

मुद्दों के प्रति इस तरह प्रतिबद्ध व्यक्ति के लिए चुनावी हार-जीत छोटी चीज है. लेकिन वे अपनी राजनैतिक भूमिका के प्रति तो निष्ठावान हैं ही. शबाना उन फिल्मी सितारों से बेहद खफा हैं जो अपने आदर्शवाद को सिनेमा के परदे तक ही सीमित रखते हैं.

बड़बोले युवराज

रामराव के पांचवें पुत्र—फिल्मी अभिनेता बालकृष्ण भी अब तेलुगु देशम में दाखिल होने वाले हैं. उनका तौर-तरीका भी ठीक पिता वाला ही है. पिछले पखवाड़े वे रामराव के 'चैतन्य रथम' के नए रूप 'प्रचार रथम' के माध्यम से पार्टी का चुनाव प्रचार करने 'उतरे'. इन सभी 23 रथों पर रामराव और बालकृष्ण के कटआउट लगे थे जिनमें उन्हें हरिश्चंद्र के रूप में दिखाया गया है. लेकिन राजनैतिक दीक्षा पूरी होने के पहले ही उन्होंने जरूरत से ज्यादा मुंह खोल दिया. उन्होंने खुले आम स्वीकार कर लिया कि उनके दोनों बहनोइयों—एन. चंद्र बाबू नायडू और वेंकटेश्वर राव—में ठनी हुई है. इस बारे में काफी समय से उड़ रही अफवाहों की 'पुष्टि' करके रामराव को खासी मुश्किल में डालने के बाद उन्होंने अपनी बुद्धिमानी भी झाड़ी. उन्होंने कहा, "मैं उनके मतभेद खत्म करने की कोशिश करूंगा."

उनके इस कथन के कई

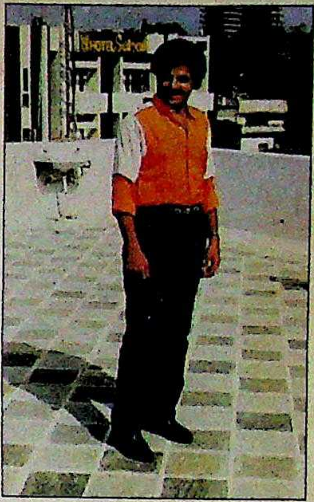

मतलब निकाले गए. पार्टी कार्यकर्ताओं को लग गया कि रामराव ने उत्तराधिकारी चुन लिया है. दिल्ली में एनटीआर-बालकृष्ण फैंस एसोसिएशन के गठन से ऐसी आशंका को बल भी मिला.

अब इस 'युवराज' का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि आंध्र प्रदेश चुनाव में उनकी पार्टी की स्थिति क्या रहती है. अगर उसकी स्थिति ठीक नहीं रही तो आज के युवराज कल विदूषक बनकर रह जा सकते हैं.

...पर भी बब्बर

...यदि शत्रुघ्न सिन्हा विपक्षी ...की एक नली हैं तो राज-...बर दूसरी. और यह जोड़ी जमी भी खूब है. भले ही बंबई की उनकी कोठी से दूर-दूर तक झोंपड़ी न हो या मुरझाए चेहरे न दिखे, पर चुनाव मंच पर राज-बब्बर प्रचारक की भूमिका बहुत

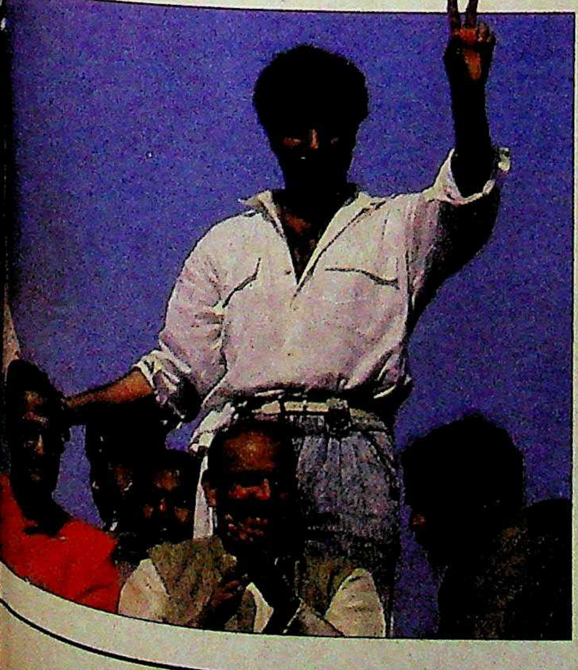

ही कुशलता और निष्ठा से निभाते हैं.

खूबसूरत चेहरे पर सजे-संवरे बालों वाले बब्बर मंच पर पूरे जोश से दहाड़ते हैं, "राजीव गांधी भारत को नेहरू परिवार की निजी जागीर बना लेना चाहते हैं." यह बोलते समय उनकी नाराजगी देखने लायक होती है.

परंतु चुनावी मंच पर भी उनका फिल्मी अंदाज हावी होता रहता है. फिल्म डायलॉग के अंदाज में वे कहते हैं, "इंका तो कौरवों की तरह है. दुर्योधन शासन कर रहा है और भीष्म, द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं. मैं विपक्ष के साथ हूं जो पांडवों की तरह सत्य की लड़ाई लड़ रहा है." फिल्म के बिछड़े भाइयों की तरह विपक्षी नेता भी हैं. वे देश को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे. बब्बर कहते हैं, "1977 में भी उन्होंने अपना ही नुकसान किया, देश का नहीं."

गीत गाने की कला

'आज का एमएलए' फिल्म में नेता की भूमिका निभाने वाले सत्तर के दशक के रोमांटिक हीरो राजेश खन्ना इस बार इंका का टिकट न पाकर कुछ खिन्न हैं. लेकिन लगता है कि उन्होंने दिल छोटा नहीं किया है. वे आजकल शासक दल के लिए प्रचार करने और गीत गाने में जुटे हैं. वे कहते हैं, "यह असली पार्टी है, बाकी सब तो कटआउट है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिंदर चावला

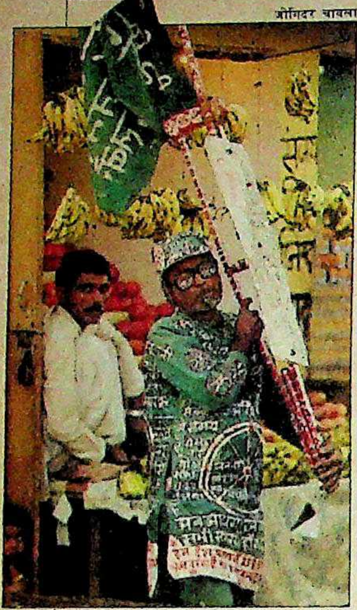

शर्मा: हरियाली ही हरियाली

◆ जनता दल खेमे के किसी शख्स की सबसे ज्यादा फोटो खींची गई होगी तो वे हैं—50 वर्षीय **परमानंद हरियाली शर्मा**. अपने नाम के अनुरूप वे सिर से पांव तक हरे ही हरे नजर आते हैं. शर्मा का झोला, कपड़े और टोपी भी इसी रंग के हैं. इन सब पर विश्वनाथ प्रताप सिंह की तारीफ वाले नारे लिखे हैं.

प्रचार पाने का कोई भी मौका न चूकने वाले शर्मा अमेठी में हुई राजीव गांधी की पहली चुनाव सभा में भी पहुंच गए. फोटोग्राफरों ने दनादन उनकी तस्वीरें उतारीं. और पूरी सभा में एक तरफ राजीव आकर्षण का केंद्र रहे तो दूसरी ओर शर्मा जी. वे कहते हैं, "विजय उत्सव पर 27 नवंबर को मैं दिल्ली जरूर जाऊंगा."

◆ महाराजा भी दर-दर याचना करने लगें तो जाहिर है मामला कुछ असामान्य है. गुलाबी शहर जयपुर के शासक रह चुके **भवानी सिंह** जब पिछले पखवाड़े अपने रेशमी सफारी सूट में जीप पर सवार होकर गली-गली वोट मांगते घूम रहे थे तब पूरा शहर जैसे शर्म से गुलाबी हो रहा था.

इसी दौरान उन्होंने अपना एक और भेष धरा. रणजी ट्रॉफी मैच का उद्घाटन करते समय नीला सूट पहनकर आए भवानी सिंह ने कहा, "मैं खिलाड़ियों के बीच नेता नहीं नजर आना चाहता." परंतु जल्दी ही यह चोला भी उतर गया. फिर नेता का भेष धरकर वे लोगों से कहने लगे, "मैं था को, थे म्हारो."

गोपाल संगड

भवानी सिंह: राजसी ढंग

◆ राजीव गांधी के बाद सबसे अधिक टीका-टिप्पणी झेलने का 'श्रेय' इधर अगर किसी इंका नेता को मिला है तो वे हैं इंका के प्रवक्ता **आनंद शर्मा**. युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष 34 वर्षीय शर्मा को राजीव ने हाल में ही शासक दल का प्रचार प्रबंधक नियुक्त किया है. शर्मा बातचीत में होशियार तो हैं लेकिन इतने भर से काम नहीं चलता. जब भी उनका सामना बोफोर्स, विपक्षी एकता और राम जन्मभूमि जैसे संवेदनशील मुद्दों से होता, तो उनका यही जवाब होता, "देखिए, आप लोग मुझे मुख्य मुद्दे से अलग ले जा रहे हैं." रोज शाम पांच बजे पत्रकारों से बात करने वाले शर्मा को चुनाव अभियान और प्रधानमंत्री दौरों के बारे में बहुत पता नहीं होता था. और पत्र-पत्रिकाओं की रिपोर्ट बहुत अनुकूल न आने पर भी वे खास चिंतित नहीं दिखे. वे कहते हैं, "प्रेस ने बहुत अच्छा कवरेज दिया है. रिपोर्टिंग उग्र तो रही है लेकिन भ्रामक नहीं." शायद शर्मा का मानना है—'बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा.'

शरद सक्सेना

आनंद शर्मा: जान सांसत में

◆ सामाजिक कार्यों में रुचि लेने वाली बंसीलाल की बहू **किरण चौधरी** को अब पता लग रहा है कि राजनीति में सिर्फ चमक-दमक ही नहीं है. पिछले हफ्ते जब उन्होंने दिल्ली में चुनाव प्रचार अभियान शुरू किया तो तालियां नहीं, फब्तियां मिलीं. लेकिन उनका हौसला टूटा नहीं. महिला कांग्रेस की इस नई संयुक्त सचिव ने नई दिल्ली के वोट क्लब लान पर धूप सेंकते सरकारी बाबुओं के बीच भाषण करना चाहा तो फिकरेबाजी का सामना करना पड़ा. किरण ने जब उनसे कहा कि "कोई औरत जब कुछ कहे तो कम-से-कम उसे सुन तो लेना चाहिए," तब जवाब में शोर और तेज हो गया.

प्रमोद पुष्करणा

किरण: जोरदार प्रचार

◆ वे सभी उन्हें आंध्र की 'अभिनव रुद्रम्मा' कहते हैं. काकातिया वंश की महारानी रुद्रम्मा ने युद्ध में सेना का नेतृत्व किया था. तेलुगु देशम की 35 वर्षीया सांसद **रेणुका चौधरी** को यह नाम यों ही नहीं मिल गया है. पिछले हफ्ते तेलुगु देशम और इंका समर्थकों की भिड़ंत में बीच-बचाव की कोशिश कर रहे एक सिपाही की नाक उन्होंने तोड़ डाली. तेजतर्रार रेणुका उस समय तेलुगु देशम 'पीतांबर टोली' का नेतृत्व कर रही थीं.

लेकिन सिपाही अपनी नाक तुड़वाकर चुप नहीं बैठा. उसने उनके खिलाफ मामला दायर कर दिया. अब रेणुका को अफसोस है कि "मैंने जिस आदमी को धु[illegible] मारा वह जिंदा कैसे बच गया."

रेणुका: नाक पर गुस्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके पास दुनिया के सबसे विविध चरित्रों और मान्यताओं वाले 47.5 करोड़ मतदाता हों और साथ ही राजनैतिक माहौल बेहद अनिश्चित हो तो चुनावी भविष्यवाणी करने की हिम्मत कोई मजबूत कलेजे और मोटी चमड़ी वाला ही कर सकता है. पिछले तीन चुनावों से ऐसी हिम्मत करते रहे हैं चुनाव आंकड़ा विशेषज्ञ प्रणय राय और 'मार्ग' के उनके सहयोगी. राय ने इस रहस्य विद्या का प्रदर्शन दिसंबर 1979 में इंडिया टुडे के पन्नों से शुरू किया था. तब उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि इंका को 291 सीटें मिलेंगी और इंदिरा गांधी की वापसी होगी. इंका को वास्तव में 353 सीटें मिलीं. 1984 में राय ने भविष्यवाणी की थी कि इंका को 366 सीटें मिलेंगी और यह भी कि "इंका और उसकी सहयोगी पार्टियों को कुल 400 से ज्यादा सीटें मिल सकती." तब इंका को 401 सीटें मिली थीं.

इस बार राय की भविष्यवाणी, जो हमारे पिछले अंक में छपी थी, एकदम सटीक साबित हुई है. इसके मुताबिक नौवीं लोकसभा में इंका को 195 सीटें मिलनी थीं और संसद में किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलना था. चुनाव के नतीजों के अनुसार इंका को कुल मिलाकर 193 सीटें मिली हैं. राय की चुनाव भविष्यवाणी को दुनिया की सबसे सटीक भविष्यवाणी माना जा सकता है. राय विनम्रता से कहते हैं, "भविष्यवाणी का बिलकुल सही साबित होना भी सबसे बड़ी गलती हो सकती है. आप कुछ नहीं कर सकते".

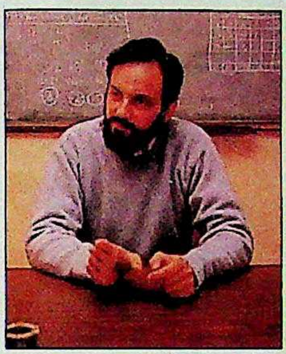

प्रणय: तीर निशाने पर

मेरे लिए यह राजनैतिक माहौल को आंकने के सर्वश्रेष्ठ पैमाने में अपनी आस्था को और मजबूत करने वाला साबित हुआ. इंडिया टुडे ने अगस्त 1987 में फैसला किया था कि वह लोगों के मूड को आंकने के लिए छह-छह महीने पर जनमत सर्वेक्षण कराएगी. अंतिम सर्वेक्षण इस प्रक्रिया का समापन था. दिलचस्पी की बात यह है कि अगस्त 1989 में कराए गए अंतिम सर्वेक्षण के मुताबिक: "इस सर्वेक्षण से पहला बड़ा नतीजा यह निकला है कि भाजपा की ताकत तेजी से बढ़ी है. इसकी लोकप्रियता मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे इसके पुराने गढ़ों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के पूरे हिंदीभाषी क्षेत्र में भी बढ़ी है." यह और उनकी कई दूसरी भविष्यवाणियां भी सच साबित हुईं.

देश ने बदलाव के लिए वोट दिया और उसे विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार मिली. वी.पी. सिंह 'इंडिया टुडे' के लिए अजनबी नहीं हैं. अंग्रेजी 'इंडिया टुडे' के मुखपृष्ठ पर पहली बार वे जून 1980 में नए बने मुख्यमंत्रियों के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में छपे थे. तब से वे करीब 12 बार अंग्रेजी 'इंडिया टुडे' के मुखपृष्ठ पर छप चुके हैं. उनसे संबंधित इतनी रिपोर्टें छपने के बावजूद उन्हें एक अबूझ व्यक्तित्व ही माना जा सकता है, क्योंकि अपने अनिश्चित आचरण और व्यक्तिगत मान्यताओं के कारण वे कभी भी अचरज में डालने वाला कोई काम कर बैठ सकते हैं.

बहरहाल, वे बेहद व्यवहारकुशल राजनेता हैं जिन्होंने शासक दल से बहिष्कृत किए जाने के बाद 28 महीने तक विपक्ष को अपनी झोली में डाले रखा और अंततः प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आसीन हो गए. लेकिन अब उनके राजनैतिक कौशल की अग्निपरीक्षा शुरू होगी—दो एकदम विपरीत मान्यताओं वाली पार्टियों—कम्युनिस्टों और भाजपा—के समर्थन से एक अल्पमत वाली सरकार चलाने की. लेकिन इस बार लोगों की आकांक्षाएं 1977 वाले दौर की तरह बहुत ऊंची नहीं हैं बल्कि उन्हें ठोस वास्तविकताओं का एहसास भी है. इसलिए उम्मीद है कि इस बार कुछ सुखद आश्चर्य भी उनके हाथ लग जाएं.

अरुण पुरी

अगले पन्नों पर

जद्दोजहद भरा परिवर्तन 16

'राजनीति अपनी शर्तों पर करूंगा' 26

तेवर 7
चुनाव-दर्पण 8
आवरण कथा 16
मुलाकात: वी.पी. सिंह 26
चुनाव विश्लेषण 30
विजेता और पराजित 39
चित्र-चर्चा 66
भाजपा 77
वामपंथी दल 79
मंदिर-मस्जिद विवाद 80
राजस्थान: दंगा 86
भागलपुर 89
विशेष लेख: बिहार 95
खेलकूद 129
परदे के उस पार 134
चर्चित चेहरे 136

आवरण: रघु राय

नाराजगी का लावा उबल पड़ा 30

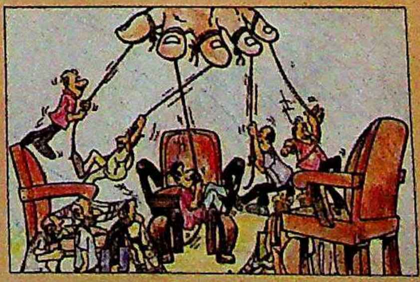

बिहार पर विशेष आयोजन 95

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

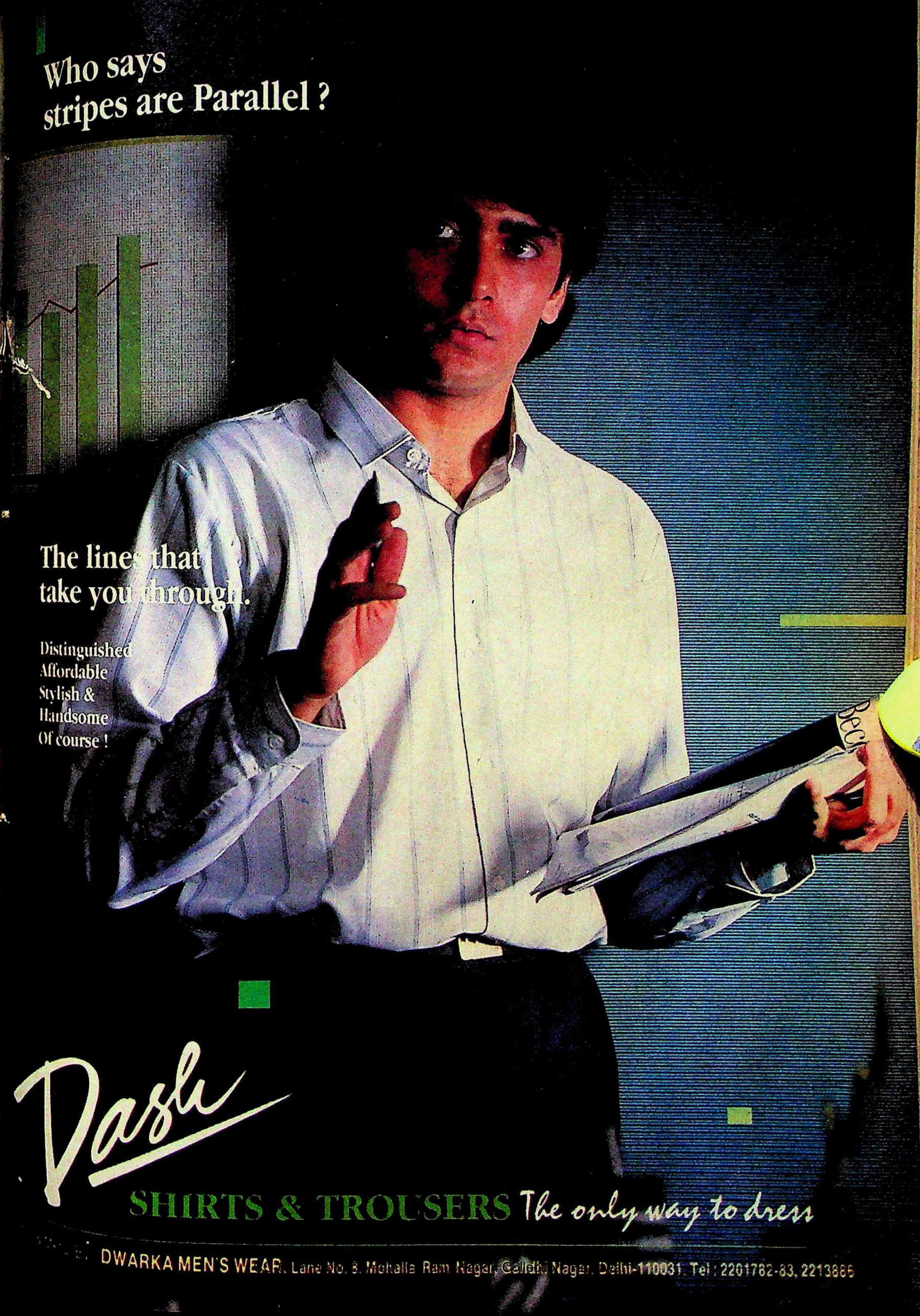
Who says
stripes are Parallel ?
The lines that
take you through.
Distinguished
Affordable
Stylish &
Handsome
Of course !
Dash
SHIRTS & TROUSERS The only way to dress
DWARKA MEN'S WEAR, Lane No. 6, Mohalla Ram Nagar, Gandhi Nagar, Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्पात एलॉयज

उच्च तकनीक उत्पादों द्वारा विदेशी मुद्रा अर्जन

विश्वभर में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए
100% निर्यातोन्मुख चार्ज क्रोम ईकाई

- ★ देश के समृद्ध क्रोम-ओर भण्डारों के उपयोग के लिए **चार्ज क्रोम** के अत्यधिक लाभदायक क्षेत्र.में प्रवेश – विश्वभर में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने हेतु **100% निर्यात्तोन्मुख ईकाई** – एवं स्वदेश में आपूर्ति के लिए दूसरी ईकाई का कार्यान्विन।
- ★ **आयात विकल्प उत्पादों** और **निर्यात संभावनाओं** को ध्यान में रखते हुये नये संयंत्रों की स्थापना – जिसके फलस्वरुप विदेशी मुद्रा बचत एवं साथ ही साथ अर्जन।
- ★ मूल्यवर्धक उत्पादों के निर्यात से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का अर्जन – इस निर्यात में **इस्पात के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अतिरिक्त लाभ।**
- ★ **132** करोड़ रुपयों की विस्तार एवं विविधीकरण योजना – **जिसका प्रथम चरण पहले ही शुरू हो चुका है।**
- ★ **फ़िनलैण्ड की Outokumpu Oy** की श्रेष्ठ क्रोम-ओर पेलेटाइजेशन एवं प्रीहीटिंग तकनीक का प्रयोग – **जिससे ऊर्जा एवं परिचालन खर्च में व्यापक बचत।**
- ★ निरन्तर विद्युत आपूर्त्ति के लिए **कम्पनी का निजी विद्युत प्लान्ट** – जिसका प्रथम चरण पहले ही शुरू हो चुका है।
- ★ द्रुत प्रगतिशील फेरो एलॉयज कम्पनी – 1988-89 के दौरान लाभों में **127%** एवं **बिक्री में 41% वार्षिक वृद्धि।** और अब सम्पत्ति, बिक्री और लाभप्रदता में तीव्रतम् वृद्धि को तत्पर।

ISPAT **इस्पात एलॉयज लिमिटेड**
'पार्क प्लाजा', 71 पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता 700 016

PRESSMAN

इस्पात है जहाँ, दूरदर्शिता है वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे
संपूर्ण समाचार पत्रिका

वर्ष : 4, अंक : 3, 1-15 दिसंबर 1989

प्रधान संपादक
अरुण पुरी

वरिष्ठ संपादक
प्रभु चावला

संपादकीय विभाग
जगदीश उपासने, अशोक कुमार, विजय क्रांति, ओम प्रकाश सराफ, अरविंद मोहन मिश्र, अ.ला. प्रजापति, विमल पाराशर, हरिमोहन मिश्र, हरजिंदर, आशुतोष चतुर्वेदी

प्रोडक्शन
अनिल शर्मा, सुबाचन यादव, सुनील सैनी

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली.

■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली.

■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई.

■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली • फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. • कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. • लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

PRESSMAN

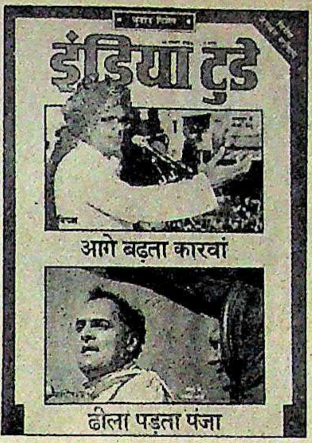

बदलाव की आकांक्षा

'चुनाव विशेष' (30 नवंबर) हर तरह से रोचक विशेषांक था. देश की जनता बदलाव जरूर चाहती है लेकिन उपयुक्त विकल्प उसके पास है ही नहीं. इंका जहां भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता फैलाने व बोफोर्स दलाली जैसे भ्रष्टाचार में शामिल रही, तो विपक्ष अलग-अलग सुर-ताल से लैस है.

—**राकेश जैन**, रतलाम (म.प्र.)

तर्कसंगत नहीं

जनमत सर्वेक्षण 'बदलाव के पक्ष में' (30 नवंबर) में आपका यह कहना कि इंका को महज 195 सीटें हासिल होंगी तर्कसंगत नहीं लगता क्योंकि 'कुछ' सीटों के 'कुछ' मतदाताओं की राय सभी सीटों पर सभी की राय हरगिज नहीं हो सकती. आपकी रिसर्च कंपनी का क्या मापदंड रहा इसका उल्लेख नहीं है.

—**नरेंद्र सिंह यादव**, नारनौल (हरियाणा)

एक ही आसरा

'फैसले की घड़ी' (30 नवंबर) में इंका के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द यह है कि सिर्फ एक नेता पर पूरी पार्टी को संसद में भेजने का दारोमदार है. यदि राजीव इसमें सफल रहते हैं तो विपक्ष के बड़े-बड़े नेताओं पर भारी पड़ेंगे. जनता बदलाव जरूर चाहती है लेकिन विपक्ष में भी तो ऐसे ही नेता भरे हैं जो कल तक कांग्रेस में थे.

—**प्रेम प्रकाश अरोड़ा**, मारवाड़ (राज.)

सच्चा विपक्ष

इंका के 27 करोड़ रु. के भारी-भरकम विज्ञापन वह प्रभाव नहीं डाल पाए जो आपकी 'अपनी बात' (30 नवंबर) की आखिरी पंक्ति डाल गई. प्रेस यदि आगे न आता तो दूरदर्शन द्वारा ही जनमत को दिग्भ्रमित करने की परंपरा चल निकलती. वैसे भी राजीव शासन के इन पांच वर्षों में पूरे प्रेस जगत की भूमिका प्रशंसनीय रही. सशक्त विपक्ष के अभाव में जिस तरह प्रेस ने अपना दायित्व निभाया उसे भारत का लोकतंत्र हमेशा याद रखेगा.

—**प्रवीण गुप्ता**, अलीगढ़ (उ.प्र.)

अपने ही चक्रव्यूह में

'नाकामियों से फीकी पड़ी वायदों की चकाचौंध' (15 नवंबर) राजीव गांधी की भूलों का लेखा-जोखा लगा. उन्होंने भूलें तो की लेकिन उनसे सबक लेने के बजाय वे उन्हें दोहराते ही रहे. वे जिस चक्रव्यूह में फंस गए हैं, उसके सेनापति वे खुद हैं और उनके सलाहकार हैं—अनुभवहीन स्वार्थी दोस्त, जिन्होंने देश को खजाना समझ लिया.

—**रामकृष्ण बैसवार**, लखनऊ (उ.प्र.)

शिक्षा जगत पर धब्बा

एल्फिंस्टन कॉलेज के छात्रों ने अपने ही कॉलेज की 'छवि पर कालिख' (15 नवंबर) नहीं पोती वरन पूरे शिक्षा जगत पर ऐसा धब्बा लगा दिया है जो कभी मिट नहीं पाएगा. बलात्कार के बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई न करना ही इस बात का सबूत है कि विद्या के मंदिर आज कितने पतित हो चुके हैं और महिलाओं की आबरू कहीं भी सुरक्षित नहीं है.

—**गुरुदेव सिंह (पाश)**, सेंधवा (म.प्र.)

सच्ची श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिवंगत कार्यकर्ता प्रकाश चंद जोशी ने आतंकवादियों की गोलियों से अनाथ हुए पंजाब के 8,000 बच्चों को अपनाने और उनका भविष्य संवारने का जो 'अनूठा अभियान' (15 नवंबर) शुरू किया था उसके लिए वे श्रद्धा के पात्र हैं. समाज में सांप्रदायिकता का जहर फैलाकर अपना स्वार्थ साधने वाले नेता क्या इस अभियान से कोई सबक लेंगे.

—**नंदकुमार विनायक**, धनबाद (बिहार)

■ पंजाब की दुखद घटनाओं के बीच प्रकाश चंद जोशी का यह अभियान सुखद अनुभूति है. सरकार बीस-बीस हजार रु. की अनुग्रह राशि बांटती रहती है लेकिन ऐसे प्रेरणादायक कामों को कोई आर्थिक सहायता नहीं देती. शायद इसमें भी उसे सांप्रदायिकता नजर आ रही है.

—**पूरनलाल**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर.के. लक्ष्मण, टाइम्स ऑफ इंडिया

सुधीर तैलंग, हिंदुस्तान टाइम्स

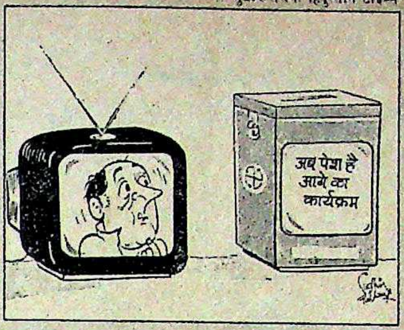

राजेंद्र धोड़पकर, इंडियन एक्सप्रेस

• जो लोग हरियाणा में ढाई साल सरकार न चला पाए और नए चुनाव कराने पर उतर आए वे दिल्ली को ढाई हफ्ते भी क्या संभाल पाएंगे.

■ **राजीव गांधी,** *लखनऊ की चुनाव सभा में*

• शुरू में राजीव गांधी को मि. क्लीन कहा जाता था. मगर वे क्लीन नहीं, ड्राईक्लीन हो गए हैं. इसलिए उनकी चमक उतर गई है.

■ **अटल बिहारी वाजपेयी,** *जयपुर की चुनाव सभा में*

• इस बच्चे ने पार्टी को डुबो दिया.

■ **के.एन. सिंह** (इंका महासचिव), *राजस्थान पत्रिका*

• यह हर दिन दिल धड़कने की क्या बात है? उन्हें क्या दिल की बीमारी हो गई है?

■ **बाबा साहब भोंसले** (इंका से इस्तीफा दे चुके नेता), *बांबे*

• वामपंथी दलों ने हमेशा राष्ट्रहित के खिलाफ काम किया है और हमेशा कोशिश की है कि भ्रष्ट सत्तारूढ़ दल को हर तरीके से फायदा पहुंचता रहे.

■ **लालकृष्ण आडवाणी,** *जनसत्ता*

• जनता दल से मैं प्यार करता हूं. मगर तब क्या किया जाए जबकि प्रेमिका आपके दुश्मन के साथ हो जाए?

■ **सैयद शहाबुद्दीन,** *नई दुनिया*

• मेरे पास अलादीन का चिराग नहीं है जो मैं आपको बता दूं कि चुनाव आयोग का जांच दल अमेठी में कहां है.

■ **आर.वी.एस. पेरी शास्त्री,** *नई दिल्ली में पत्रकारों से*

• आप (प्रेसवाले) तो जगदीशपुर (में हुई धांधली की खबरें) छापें...हरियाणा (में हुई धांधली) से आपको क्या मतलब?

■ **आनंद शर्मा** (इंका प्रवक्ता), *नई दिल्ली में पत्रकारों से.*

• संजय सिंह हीरो बने हैं, जो अभी मरे नहीं हैं....किसने गोली मारी पता नहीं.

■ **सीताराम केसरी,** *इंडियन एक्सप्रेस*

• *मेरे हाथों के तराशे हुए ये पत्थर के सनम, आज बुतखाने में भगवान बने बैठे हैं.*

■ **जैल सिंह** (यह पूछे जाने पर कि चुनाव में उनका आशीर्वाद किसको है), *पंजाब केसरी*

• मैं इस बात को लेकर बहुत परेशान थी कि क्या बदनामी के साथ खेलों से अवकाश लेना होगा. लेकिन ईश्वर को धन्यवाद कि उसने इज्जत बचाए रखी.

■ **पी.टी. उषा,** *दैनिक जागरण*

• हां, मैं खेल के मैदान पर अक्सर घूम घूम कर सूरज की ओर देखता हूं. लेकिन क्या करूं, एकमात्र वही एक भगवान हैं जो दिखाई देते हैं.

■ **कृष्णमाचारी श्रीकांत,** *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

• नाम तो है नेशनल कैंप का, मगर काम तो एक डिस्ट्रिक्ट लेवेल का भी नहीं है.

■ **बहादुर प्रसाद** (धावक), *हिंदुस्तान टाइम्स*

• जहां तक श्रीदेवी का सवाल है, भला वह मेरे से क्या मुकाबला कर सकती है? वह तो कल की छोकरी है. सिर्फ इतनी-सी बात थी कि बिल्ली जरा आराम करने चली गई थी और चूहे बेफिक्र खेल रहे थे.

■ **रेखा,** *नई दुनिया*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनूठा विरोध

अगर मुखर विरोध को पैमाना मानकर हिसाब लगाया जाए तो इसमें शक नहीं कि इंका को ही भारत की सबसे अधिक लोकतांत्रिक पार्टी पाया जाएगा. इस बार भी हर बार की तरह दर्जनों चुनाव क्षेत्रों में इंका के विद्रोही उम्मीदवार अपने पार्टी उम्मीदवार के खिलाफ ताल ठोंककर खड़े हुए. लेकिन अपने

सभी कार्टून: इरफान हुसैन

आधिकारिक उम्मीदवारों के विरोध का जो तरीका बूंदी के कुछ कांग्रेसियों ने अपनाया वह अनूठा ही रहा.

चुनाव अभियान के दौरान इंका प्रत्याशी शांति धारीवाल के नमाना गांव पहुंचने पर स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं ने गुलाल मलकर उनका स्वागत किया. इस जोरदार स्वागत का उत्साह अभी बीच में था कि इंका उम्मीदवार ने अजीब तरह की उछल-कूद मचाकर हड़कंप मचा दिया.

पूछताछ के बाद पता चला कि किसी कार्यकर्ता ने गुलाल में खुजली पैदा करने वाली केमच फली का पाउडर मिला दिया था. पूरे शरीर में खुजा-खुजाकर बेदम होते हुए इंका नेता को पंचायत भवन ले जाया गया. इस फली से राहत का एकमात्र स्थानीय हल गाय के गोबर का लेप माना जाता है. लेकिन यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि इंका उम्मीदवार को गोबर स्नान कराया गया या नहीं.

तेवर

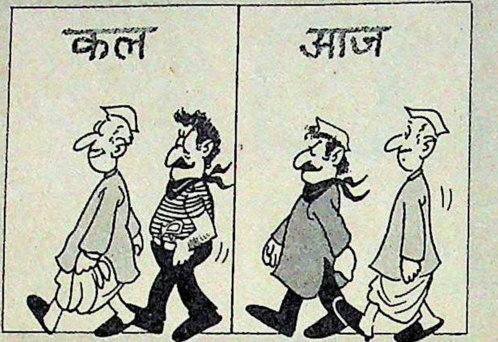

- आज अपराधी लोग सिर्फ किंगमेकर बनकर ही संतुष्ट नहीं हैं. वे खुद किंग बनना चाहते हैं.
  —*अटल बिहारी वाजपेयी, एशिया वीक*
- प्रधानमंत्री तो जनता का विश्वास मुद्दत से खो चुके हैं. —*लालकृष्ण आडवाणी, सूर्या इंडिया*
- इंका गुंडों की शरण स्थली है.
  —*सतपाल मलिक, सूर्या इंडिया*
- राजीव गांधी को प्रधानमंत्री बनाया जाना एक गलती थी. —*कमलापति त्रिपाठी, नवभारत टाइम्स*
- हम राम और रहीम को राजनीति में कैसे डाल सकते हैं. —*भैरों सिंह शेखावत, राजस्थान पत्रिका*
- सरकारी विभाग विज्ञापन लिख सकते हैं, इतिहास नहीं. —*राजमोहन गांधी, संडे आब्जर्वर*

प्रः *वी.पी. सिंह को देखकर राजीव ने क्या कहा?*
उः भला उसकी कमीज मेरी कमीज से सफेद कैसे?
—*एक चुनावी लतीफा*

- मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है. लेकिन मैं वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री बनाना चाहता हूं.
  —*देवीलाल, एक चुनाव सभा में*
- कुछ बातें गुप्त ही रहनी चाहिए.
  राजीव गांधी के साथ गुप्त भेंट के संदर्भ में
  —*देवराहा बाबा का जवाब, इंडियन एक्सप्रेस*
- आज के बाद कांग्रेस (इ) कांग्रेस (इटली) हो जाएगी. —*मतगणना के समय दिल्ली में प्रचलित एक भविष्यवाणी*
- राजीव गांधी तो अब इतिहास की बात हो गए. आइए अब भविष्य की बात करें.
  —*वी.पी. सिंह, प्रोब*
- कृपया धोखा खाइए, हम चुनाव तक एक हैं.
  —*विपक्षी एकता पर इकाई कटाक्ष*

विजय रथ का संकट

चुनाव अभियान के दिनों में हरियाणा और राजस्थान में जो चीजें सबसे अधिक चर्चित रहीं उनमें हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल का 'विजय रथ' सबसे आगे था. एक चलते-फिरते चुनाव मंच के रूप में चलने वाली इस बस में एक लिफ्ट की व्यवस्था थी जिसमें खड़े देवीलाल धीरे-धीरे छत पर बने मंच पर हाथ जोड़े प्रकट होते थे और चुनाव सभा खत्म होने पर उसी तरह हाथ हिलाते हुए बस में समा जाते थे.

लेकिन मतदाताओं के आकर्षण का केंद्र बने इस 'रथ' ने तब चौधरी साहब को सांसत में डाल दिया जब सीकर की एक चुनाव सभा में नीचे उतरती लिफ्ट बीच में ही अटक गई और बेचारे चौधरी साहब मतदाताओं के सामने हाथ हिला-हिलाकर

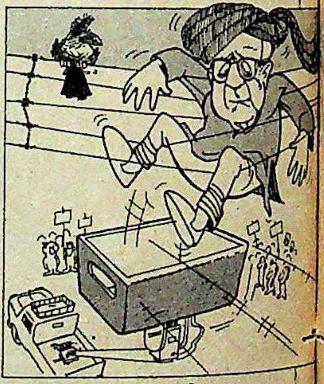

थक गए. एक बार तो एक छोटे पुल के नीचे से गुजरते हुए रथ के मंच के ऊपर बनी छतरी ही टूट गई. इसे बाद में ठीक किया गया.

ऐसा संकट फिर से न आ खड़ा हो इसलिए लिफ्ट की मरम्मत के लिए एक मैकेनिक को भी बस में तैनात कर दिया गया. लेकिन यह व्यवस्था भी तब चौपट हो गई जब एक जगह चुनाव सभा के दौरान यह मैकेनिक मौका देखकर अपने घर कपड़े बदलने चला गया और 'रथ' उसका इंतजार किए बिना आगे बढ़ गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

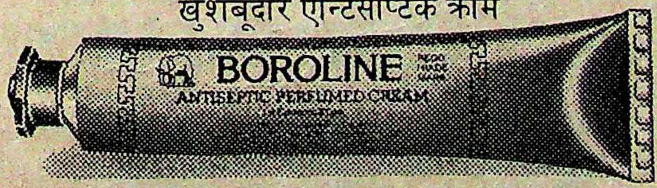

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल, आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1039

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम आए कबूतर

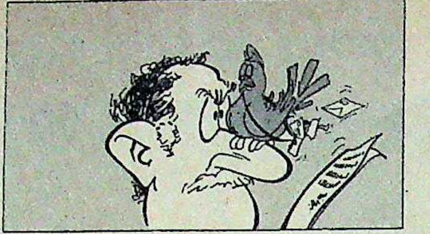

□ पिछले पांच साल से इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने को बेताब लोगों को इस बार चुनाव प्रचार के दौरान मध्ययुगीन संचार व्यवस्था का सहारा लेने को मजबूर होना पड़ा. ओडीसा के कोरापुट और फूलबनी जिलों के तराई के इलाकों तथा कटक के कुछ बाढ़ग्रस्त इलाकों के 40 मतदान केंद्रों से समाचार प्राप्त करने और सरकारी निर्देश भेजने के लिए किसी आधुनिक दूरसंचार सुविधा का नहीं, बल्कि कबूतरों को संदेशवाहकों के तौर पर इस्तेमाल किया गया.

नया 'सेवादल'

□ इस बार बेतूल (म.प्र.) में बेरोजगारों ने सरकार पर भरोसा करने के बजाय अपनी बेरोजगारी को खुद ही मिटाने का रास्ता निकाल लिया. उनके नवगठित 'श्रमजीवी कार्यकर्ता संघ' ने अपनी विशेष चुनाव सेवाएं अर्पित करते हुए जो रेट लिस्ट जारी की उसके मुताबिक नारे लगवाने का रेट 50 रु. प्रतिदिन, भाषणबाजी 75 रु. और विरोधियों की सभा भंग करने का रेट 100 रु. बताया गया था. कई पार्टियों ने इस दल के कार्यकर्ताओं की सेवाएं प्राप्त कीं.

कमाल का जादू

□ माकपा के गढ़ माने-जाने वाले प. बंगाल में इस बार भाजपा ने अपने 19 उम्मीदवार खड़े किए. अपने सीमित प्रभाव के बावजूद किसी जादू की उम्मीद लगाए बैठे भाजपा नेताओं ने चुनाव प्रचार में एक चर्चित जादूगर सुजीत चक्रवर्ती को झोंक दिया. चक्रवर्ती ने

अपनी सभाओं में कई तरह के करतब दिखाकर मतदाताओं का मनोरंजन किया. ऐसा ही एक करतब दिखाने के लिए मतदाताओं से पूछकर इंकाई भ्रष्टाचार के कारनामों की पर्चियां तैयार की गईं और उन्हें एक बक्से में डाल दिया गया. बक्सों में पर्चियां डालते ही उनमें आग लग जाती थी और फिर उस 'आग' में से भाजपा का चुनाव चिन्ह कमल का खिला हुआ फूल प्रकट होता था. जादू का यह खेल कितने विरोधी वोटों को भाजपा वोटों में बदल पाया यह तो पता नहीं पर रूखे-सूखे प्रचार में जादू के इस रस ने मतदाताओं का अच्छा-खासा मनोरंजन जरूर किया.

तेवर

प्र: राजीव इतने भरोसे से क्यों कहते हैं कि इंका को 400 सीटें मिलेंगी?

उ: क्योंकि उन्होंने 'अल-इटालिया' का जो विमान किराए पर बुक किया है उसमें इतनी ही सीटें हैं.

—चुनाव अभियान में प्रचलित एक मजाक

• इनका दिल देश के लिए धड़क रहा है या गद्दी के लिए? —*रामेश्वर बरुटा (चित्रकार), नभाटा*

• हम खामोश तमाशबीन रहकर लोकतंत्र का अपहरण होते नहीं देख सकते

—*अमेठी में चुनावी हिंसा पर विधिवेत्ता सोली सोराबजी*

• *जनता की तुम कर पाए पहचान नहीं*
इटली के दामाद तुम्हारे बस का हिंदुस्तान नहीं

—*अमेठी की एक चुनाव सभा में गाया गया गीत*

• हम तो डूबेंगे सनम, तुझको भी ले डूबेंगे

—हरसूद में नर्मदा परियोजना के खिलाफ एक चुनावी नारा

सस्ता सौदा

□ बड़े राजनैतिक दलों की आंखें भले ही गद्दी पर टिकी रहें पर निर्दलीय उम्मीदवारों की विशालकाय बिरादरी में ऐसे लोगों की संख्या अच्छी खासी है जो किसी सच्चे कर्मयोगी की तरह फल की इच्छा किए बिना मैदान में आ खड़े होते हैं. इस बार भोपाल से खड़े नारायण दास कांबरा ऐसे ही उम्मीदवार थे. 1952 से अब तक वे तीन बार राष्ट्रपति पद के लिए, चार बार उपराष्ट्रपति के लिए, दो बार लोकसभा के लिए और एक बार विधानसभा के लिए खड़े हो चुके हैं.

हारने की आशंका के बावजूद बार-बार मैदान में उतरने वाले उन्हीं के एक अन्य साथी निर्दलीय उम्मीदवार बोधरा की दलील थी, "अगर सिर्फ 500 रुपए खर्च करके अखबारों में चर्चा हो जाए और कई लाख मतपत्रों पर आपका नाम छप जाए तो ऐसे सौदे को मंहगा नहीं माना जा सकता है."

नाते हैं, नातों का क्या

□ यह जमाना है राजनीति का. और राजनीति का हाल यह है कि वह न तो रिश्तों का लिहाज करती है न दोस्ती का.

यही कारण है कि इस बार भी कई चुनाव क्षेत्रों में देवर-भाभी और पुराने यार-दोस्त भी मैदान में आमने-सामने खड़े दिखाई दिए. लेकिन राजनीति और रिश्तों के टकराव की यह कहानी तब गंभीर मोड़ ले बैठी जब राजस्थान के पिड़ावा कस्बे में दो भाइयों के बीच इस बात को लेकर झगड़ा शुरू हो गया कि उनकी मां किसके साथ

वोट देने जाएगी.

अलग-अलग पार्टियों के लिए काम करने वाले इन भाइयों के झगड़े में आखिर पंचायत को कूदना पड़ा. झगड़ा निबटाने के लिए खास तौर पर बुलाई गई आपातकालीन पंचायत ने आखिर सिक्का उछालकर विवाद को खत्म किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें

जिनमें छलके
मुग़लों की आन-बान
सदियों की शान और
प्राकृतिक अद्भुतता!

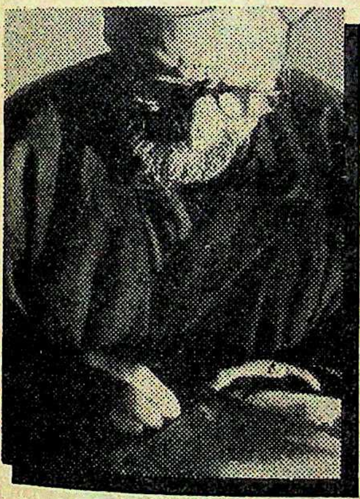

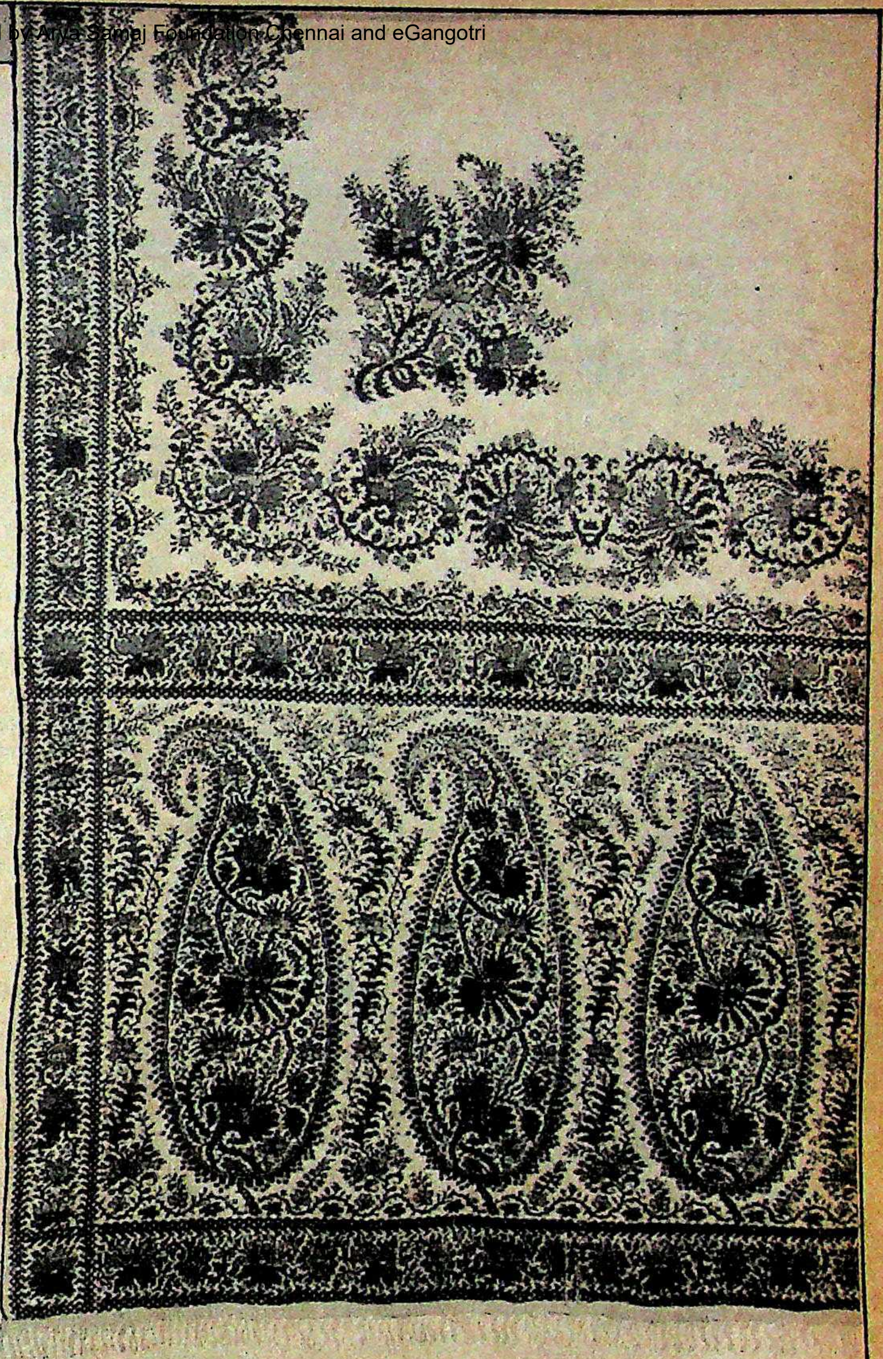

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रही हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है — वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—जिनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

Trends/1798/89

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 583154

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

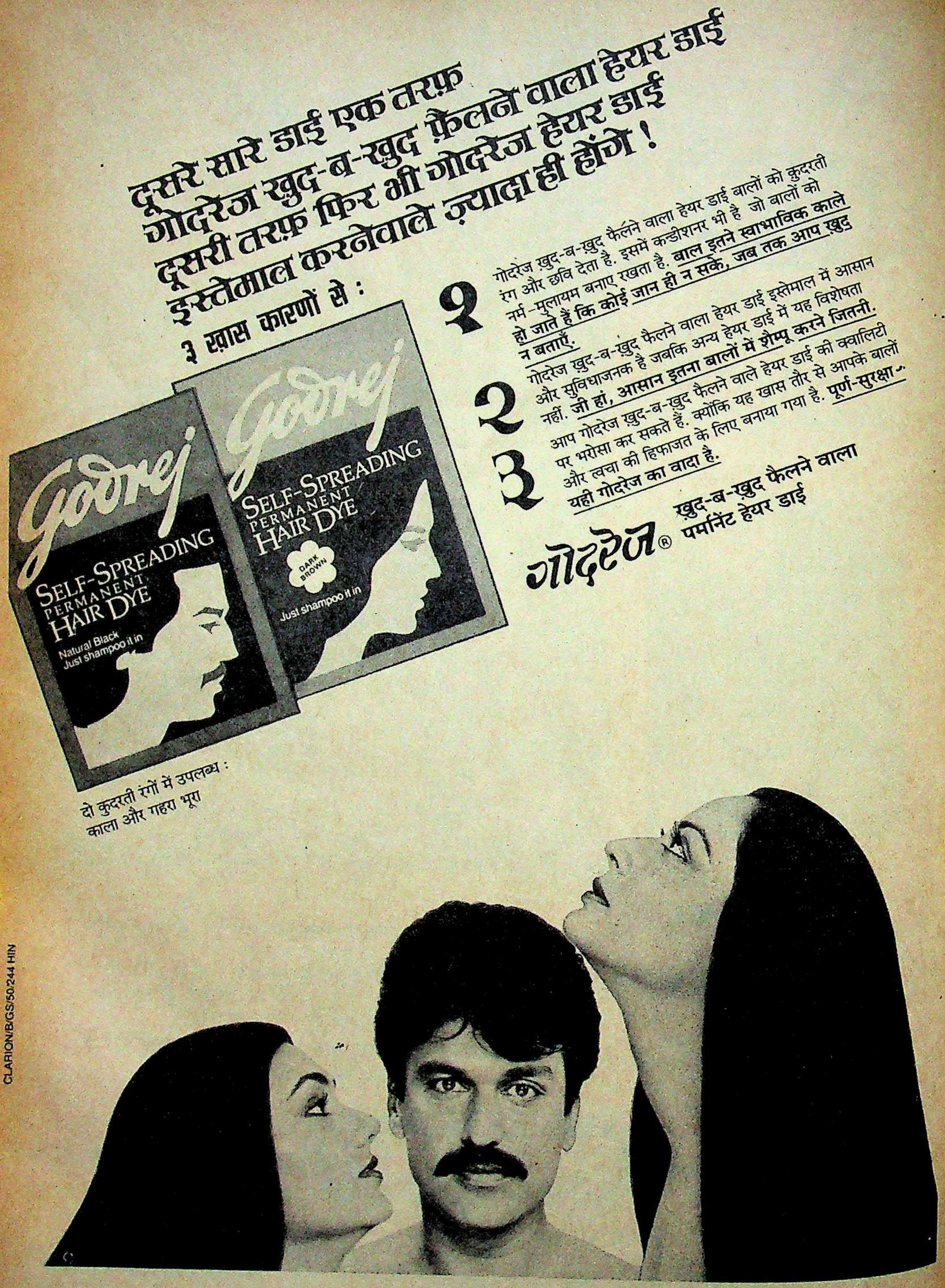

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हाथ' का हाथ

□ चुनावी बुखार ने कई उम्मीदवारों को इस कदर व्यामोह की स्थिति में पहुंचा दिया कि मध्य प्रदेश में रायपुर लोकसभा क्षेत्र के निर्दलीय उम्मीदवार और स्थानीय साप्ताहिक 'उबलते लहू' के संपादक राममूरत शुक्ल को हर घटना के पीछे गुप्त 'हाथ' का संदेह होता दिखा.

उन्होंने चुनाव प्रचार के

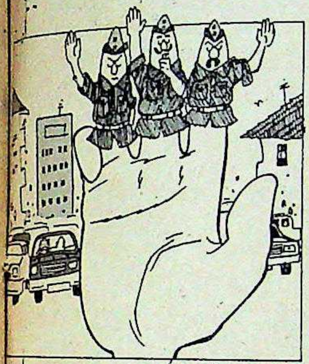

दौरान रायपुर से सभी ट्रैफिक सिपाहियों को हटाने की मांग की. उनका तर्क था कि चौराहों पर तैनात ट्रैफिक सिपाही हर गुजरते वाहन को 'हाथ' का इशारा करके इंका का प्रचार कर रहे हैं.

उनका आरोप था कि जिला-प्रशासन ने चौराहों पर ऑटोमेटिक सिग्नल प्रणाली को जानबूझकर ठप किया ताकि ट्रैफिक पुलिस मतदाताओं में इंका के चुनाव चिन्ह का प्रचार कर सके.

उनके वादों पर

□ चुनाव के दौरान अपने प्रतिनिधियों से मिलने वाले कोरे वादों को बार-बार हवा में काफूर होते देखने वाले मतदाता भी अब काफी होशियार हो गए दिखते हैं. कम-से-कम वाराणसी के औसानगंज के मतदाताओं का अभियान तो यही दिखाता है. इस बार मतदान से पहले इलाके के कुछ नागरिकों ने चंदा करके अपने इलाके में बैनर लगवा दिए जिन पर लिखा था "शौचालय नहीं तो वोट भी नहीं." नतीजाः सार्वजनिक शौचालय बनवाने के वादों का ढेर लग गया.

उनका चुनाव चिन्ह

□ चुनाव प्रचार के दौरान जहां एक ओर राजनैतिक दलों के प्रत्याशी अपनी पार्टियों के प्रचार में लगे रहे, वहां पंजाब में गुरदासपुर के मतदाताओं ने इस मौके को अपनी पुरानी शिकायतों के प्रचार के लिए इस्तेमाल किया. शहर में एक स्थान पर जमा रहने वाली गंदगी और प्रशासनिक उपेक्षा का मजाक उड़ाने के लिए वहां कपड़े के बड़े-बड़े बैनर टांगे गए जिन पर लिखा था—"वोटां मंग के शर्मिंदे न होवो. साडा चोण निशान ए गंद है" (हमारा चुनाव चिन्ह यह गंदगी है).

देर आयद, दुरुस्त आयद

□ चुनाव व्यवस्था में सहयोग देने वाले सरकारी कर्मचारियों की सुविधाओं और उनके हकों के बारे में सरकार कितनी चिंतित रहती है इसका एक अंदाजा मध्य प्रदेश के धार इलाके में कार्यरत एक सरकारी कर्मचारी एम.पी. शर्मा के अनुभव से लगाया जा सकता है. शर्मा ने 1984 की तरह इस बार भी चुनाव व्यवस्था में भाग लिया. और इस बार उनके लिए

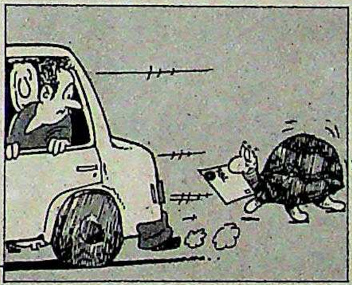

सुखद अनुभव यह रहा कि चुनाव ड्यूटी पर जाने से ठीक कुछ घंटे पहले उन्हें पिछले चुनावों के दौरान भी की गई ड्यूटी के यात्रा भत्ते का 22 रु. का चेक प्राप्त हुआ.

ससुर के घर बाद में जाना

□ चुनाव जीतने के बाद उम्मीदवारों द्वारा ढोल-बाजे

के साथ जुलूस निकाला जाना स्वाभाविक है. लेकिन इस बार बड़ौदा के निकट रुक्मा गांव के लोगों को मतदान के दिन ऐसा जुलूस देखने को मिला जिसमें एक मतदाता को गाजे-बाजे के साथ मतदान केंद्र तक जुलूस में ले जाया गया और फिर उसी शान के साथ उसे घर तक लाया गया. यह मतदाता स्थानीय युवती थी जिसका एक दिन पहले ही विवाह हुआ था. मतदान के दिन उसकी विदाई थी लेकिन उसने अपने पिता और दूल्हे को बता दिया कि बिना वोट डाले वह ससुराल नहीं जाएगी. परिवारवालों ने उसकी बात को माना और विदाई के लिए मंगाए गए बैंड-बाजे के साथ दुल्हन को मतदान केंद्र ले जाया गया. राजस्थान के बीकानेर में भी ऐसा एक नजारा देखने को मिला.

तेवर

- देश भर में कुल कितनी सीटें मिलेंगी, हम इसका तराजू लेकर अंदाज नहीं लगा रहे, तलवार लेकर लड़ रहे हैं. सरकार हमारी ही बनेगी.

  —वी.पी. सिंह, *स्वतंत्र भारत*

- *राजीव गांधी की पीठ में छुरी*
  सतीश शर्मा और ललित सूरी

  —इंकाइयों में चला नया नारा

- चाहे हम जीतें या लूजें (यानी कि हारें), हम सांप्रदायिकता से समझौता नहीं करेंगे.

  राजीव गांधी, अमेठी की एक चुनाव सभा में, टाइम्स ऑफ इंडिया

- बंदूक की गोलियों के सहारे सरकार नहीं बना करती.

  —गायत्री देवी, राजस्थान पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जोश

□ चुनाव अभियान के दौरान इंका की हवा का भले ही जो हाल रहा हो पर प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर पूरे देश में हवा के जोरदार बगूले छोड़ता रहा. और इस हवा ने विरोधियों को भले ही ज्यादा नुकसान न पहुंचाया हो पर उदयपुर में इसने तीन मंत्रियों को चुनाव के पहले ही धूल चटा दी.

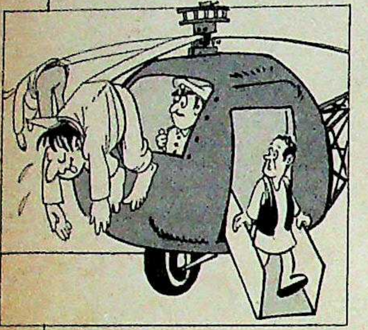

चुनाव प्रचार के लिए हेलिकॉप्टर में आए राजीव गांधी का स्वागत करने के लिए जब गुलाब सिंह शक्तावत और खेमराज कटारा हेलीकॉप्टर की ओर जल्दबाजी में आगे बढ़े तो इसके पंखों से उड़ने वाली हवा में वे संभल नहीं पाए और जमीन पर लुढ़क गए. एक और मंत्री कमला भील भी ऐसी गिरीं कि उनके हाथों की माला और पैरों की चप्पलें उड़कर दूर चली गईं. बाद में सुरक्षा कर्मचारियों ने आकर उन्हें उठाकर झाड़ा-पोंछा.

बूटा सिंह का बूटा

□ चुनावी कुरुक्षेत्र ऐसा होता है जिसमें योद्धा आमने-सामने लड़ते हुए आम तौर पर नजर नहीं आते. इस चुनाव में भी बड़े नेताओं की आपसी टक्करें बहुत कम हुईं लेकिन चुनावी अभियान के दौरान हवाई यात्राओं के दौरान अक्सर उनका आमना-सामना होता रहा. हालांकि आम तौर पर ये मुठभेड़ें दोस्ताना वातावरण में ही हुईं. पर कुछ मौके ऐसे भी आए जब चुनाव की तल्खी जबानों पर व्यंग्य बनकर उतर आई. एक ऐसा मौका था इंडियन एअरलाइंस को दिल्ली-जयपुर-जोधपुर उड़ान जिसमें केंद्रीय गृहमंत्री बूटा सिंह

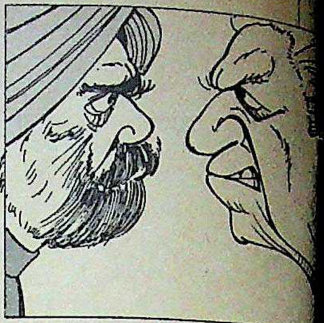

और हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल का आमना-सामना हो गया. उत्सुकतावश बूटा सिंह ने उनसे पूछ लिया कि आप सीकर क्या करने जा रहे हैं? इस पर देवीलाल का दो टूक जवाब था, "तुम्हारा बूटा उखाड़ने जा रहा हूं." अब बूटा क्या जवाब देते?

तेवर

- *यह एक करोड़ रुपए पर एक रुपए की जीत है.*

  —दौसा (राजस्थान) से विजयी भाजपा सांसद नाथू सिंह

- *जनता एक आदमी के साथ ज्यादा देर तक नहीं रहती.*

  —चुनाव हारने के बाद जगदीश टाइटलर

- कृपया धोखा खाइए, हम चुनाव तक एक हैं. *—विपक्षी एकता पर इंकाई कटाक्ष*
- वोटां मांग के शर्मिंदे न होवो... *—होशियारपुर में नागरिक असुविधाओं से असतुंष्ट नागरिकों का बैनर*

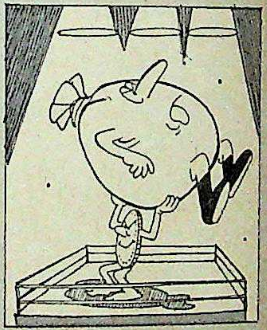

वज़नी समर्थन

□ चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों को सिक्कों से तौले जाने का रिवाज तो पुराना पड़ चुका है. चुनाव फंड इकट्ठा करने के लिए इस बार भी कई उम्मीदवारों ने यह रास्ता अपनाया. उम्मीदवारों ने इस क्षेत्र में कुछ नए करतब

दिखाए. बाहरी दिल्ली से जनता दल उम्मीदवार तारीफ सिंह को जब एक इलाके के लोगों ने सिक्कों से तौलने की पेशकश की तो उन्होंने तराजू में बैठने की यह शर्त रख दी कि उन्हें सिक्कों के बजाय देसी घी से तौला जाए. उनकी शर्त मान ली गई और उपहार में मिला यह घी चुनाव प्रचार में लगे कार्यकर्ताओं में बांट दिया गया. लेकिन चंडीगढ़ में निर्दलीय उम्मीदवार जगतराम के समर्थकों ने तो इससे भी अधिक ठोस समर्थन व्यक्त करके उनका मन प्रसन्न कर दिया. मनीमाजरा में उनके समर्थक उम्मीदवारों ने उन्हें इस बार सीमेंट से तौला. पिछले चुनाव के दौरान उन्हें आलुओं से तोला गया था.

चुनाव के पापड़...

□ हालांकि माना तो यह जाता है कि लोकतंत्र में व्यक्ति ही देश का राजा होता है पर इस विश्वास का जो साक्षात रूप चुनाव के दिनों में देखने को मिलता है वह आम दिनों में दिखना संभव नहीं है. चुनाव के दिनों मतदाता का दिल जीतने की होड़ में लगे प्रत्याशी कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं. सिर के बल चलने के लिए भी.

पिछले दिनों चुनाव अभियान के दौरान खंडवा लोकसभा चुनाव क्षेत्र में एक निर्दलीय उम्मीदवार बाजीराव ने अपने मतदाताओं को रिझाने के लिए वह कर दिखाया जो शायद किसी खाए-

पिए हुए उम्मीदवार के बस के बाहर की बात होती. उनका भाषण सुनने के लिए आए मतदाताओं की फरमाइश पर पहले तो वे पास के बिजली के खंभे पर चढ़ गए. बाद में मतदाताओं के उत्साह को देखते हुए उनकी फरमाइश पर उन्होंने दस कलाबाजियां भी खाईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय मोर्चा

जद्दोजहद भ

एक के बाद एक, तीन दिनों तक वह निर्णायक बैठक जब टलती गई तो पूरे देश में बेचैनी और अविश्वास का वातावरण बनने लगा—कांग्रेस (इ) को शिकस्त देने वाले लोग सरकार बना भी पाएंगे या नहीं. अंततः तीन दिनों की अनिश्चितता के बाद जनता दल ने अपने संसदीय बोर्ड का नेता और देश का अगला प्रधानमंत्री चुनने के लिए यह बैठक 1 दिसंबर की दोपहर 3.15 बजे संसद के केंद्रीय कक्ष में की.

आश्चर्यजनक रूप से यह बैठक सलीके के साथ चली. बैठक की अध्यक्षता कर रहे मधु दंडवते के अलावा मंच पर वी.पी. सिंह, देवीलाल और चंद्रशेखर बैठे थे. चंद्रशेखर अपनी आसन्न विजय के प्रति आश्वस्त दिख रहे थे. दंडवते ने नेता पद के लिए नामों के प्रस्ताव मांगे. और 15 मिनट में ही वारा-न्यारा हो गया. पहला झटका तो वी.पी. सिंह ने दिया—नेता पद के लिए देवीलाल का नाम प्रस्तावित करके. चंद्रशेखर ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया. कोई दूसरा नाम न आया तो दंडवते ने देवीलाल को निर्वाचित घोषित कर दिया. इससे केंद्रीय कक्ष में तो सन्नाटा छा गया पर संसद के बाहर मानो तूफान खड़ा हो गया. देसी और विदेशी समाचार एजेंसियों ने दुनिया के हर कोने में यह संदेश जारी कर दिया कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के अगले प्रधानमंत्री देवीलाल होंगे.

> **विश्वनाथ प्रताप सिंह के समर्थकों ने जिस सबसे जटिल अभियान में कामयाबी पाई, वह था देवीलाल और चंद्रशेखर के दावों को बेअसर करके रास्ते से हटाना**

लेकिन उक्त घोषणा के चार मिनट बाद ही समाचार एजेंसियों ने अपने टेलीप्रिंटर पर फौरन जरूरी संदेश भेजे—'पहली खबर रद्द, रद्द, रद्द.' लगा कि परिवर्तन आखिर हो ही गया. कद्दावर देवीलाल उठकर खड़े हो गए और बहुत संजीदगी से उन्होंने वी.पी. सिंह का शुक्रिया अदा किया. फिर उन्होंने कहा कि यह चुनाव सचमुच राजीव सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष था जिसके प्रमुख योद्धा वी.पी. सिंह ही थे. "और फिर हरियाणा में, जहां मुझे लोग ताऊ जी, ताऊ जी करके पुकारते हैं, मैं वहां ताऊ जी ही बन के रहना चाहता हूं." समूचा हॉल पूरी तन्यमता से उनकी बात सुन रहा था कि उन्होंने नेता पद के लिए वी.पी. सिंह के नाम का प्रस्ताव कर दिया. अभी उनकी बात खत्म ही हुई थी कि अजीत सिंह ने इसका अनुमोदन कर दिया. कोई और नाम नहीं उभरा और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच दंडवते ने वी.पी. सिंह को निर्वाचित घोषित किया. चंद्रशेखर का चेहरा एकदम फक पड़ गया दिखा.

चार घंटे बाद राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन ने वी.पी. सिंह को राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनाने का औपचारिक न्यौता दिया और अगले दिन शपथ ग्रहण समारोह का समय तय किया. इससे पहले राजीव गांधी ने 29 नवंबर को अपना इस्तीफा राष्ट्रपति को सौंप दिया. तब तक हर तरफ यही अटकलें गरम थीं कि राजीव गांधी आखिरी समय में कुछ-न-कुछ जोड़तोड़ करके सत्ता से चिपके ही रहेंगे.

ऊपर से तो यही लग रहा था कि सत्ता का यह परिवर्तन सहजता से हुआ. लेकिन चार दिनों तक भीतर ही भीतर एक राजनैतिक ज्वालामुखी फूट पड़ने के कगार पर था जो देश की स्थिरता के लिए घातक संभावनाएं लिए हुए था. सरकार बनने से पहले चले मोल-तोल, उठापटक, अफवाह और जोड़तोड़ ने जाहिर कर दिया कि इस सरकार के आगे का रास्ता कांटों से भरा हुआ है जिस पर चलने के लिए आला दर्जे की राजनैतिक चतुराई और प्रबंध कौशल की जरूरत होगी.

योजना के मुताबिक नई सरकार का नेता 28 तारीख की दोपहर 3 बजे चुना जाना था. लेकिन वह दिन आया और बीत गया. उसके बाद बैठक 29, फिर 30 और फिर 1 दिसंबर तक के लिए स्थगित की जाती रही. इन चार दिनों में भारतीय राजनीति पतन और गंदगी के काले अध्यायों को दोहरा गई. दो व्यक्तियों—देवीलाल के बड़े बेटे

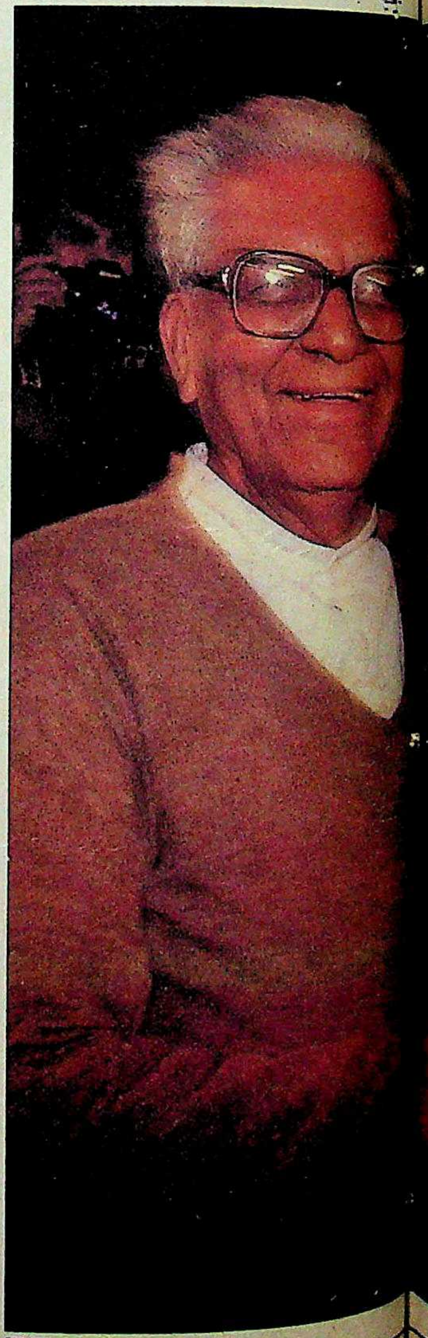

रघु राय

देवीलाल और वी.पी. सिंह
नाटकीय दौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द भरा परिवर्तन

र फिर 1
जाती रही.
नीति पतन
को दोहरा
बड़े ब्रेट.

ओमप्रकाश चौटाला और चंद्रशेखर—का स्वार्थ, उनकी अंधी महत्वाकांक्षा, पैसे और लाठी की ताकत, फरेबी जोड़तोड़ और विश्वासघात वगैरह जनता के फैसले का मज़ाक बनाते रहे और इससे पूरी राजनैतिक प्रक्रिया बंधक बनी रही. इन दोनों के समर्थक गुटों के साथ वी.पी. सिंह विरोधी उद्योगपतियों की टोली ने वी.पी. सिंह को रास्ते से हटाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखी. यह रणनीति कुछ तो आत्मघात की विकृत प्रवृत्ति तथा इंका और वी.पी. सिंह विरोधी ताकतों के खेल से उपजी थी. इसका मकसद वी.पी. सिंह द्वारा बनाए गए उस नाजुक संतुलन को बिगाड़ना था जिसके बल पर मध्यमार्गी जनता दल वामपंथियों और

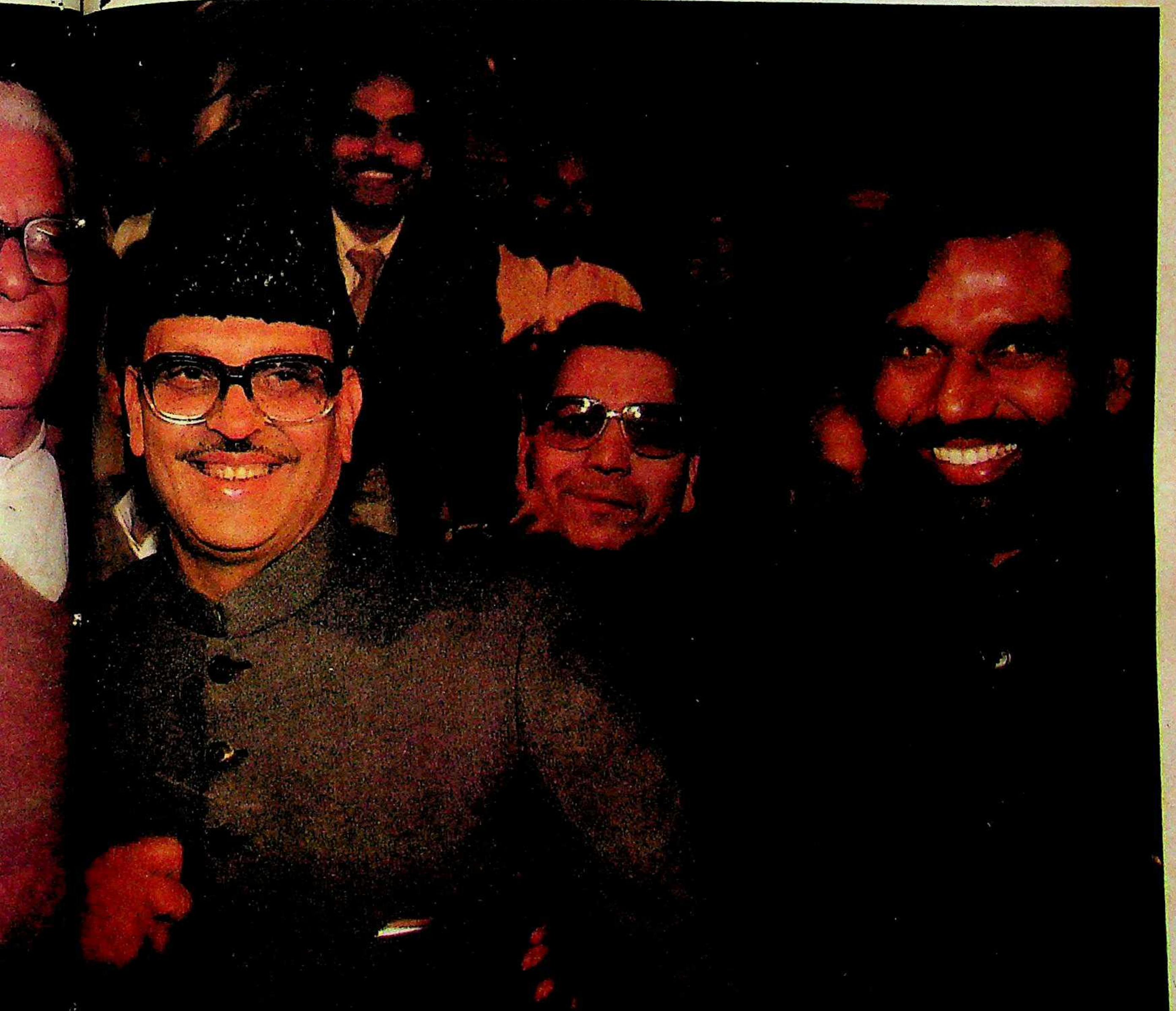

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...undation Chennai and eGangotri

रघु राय

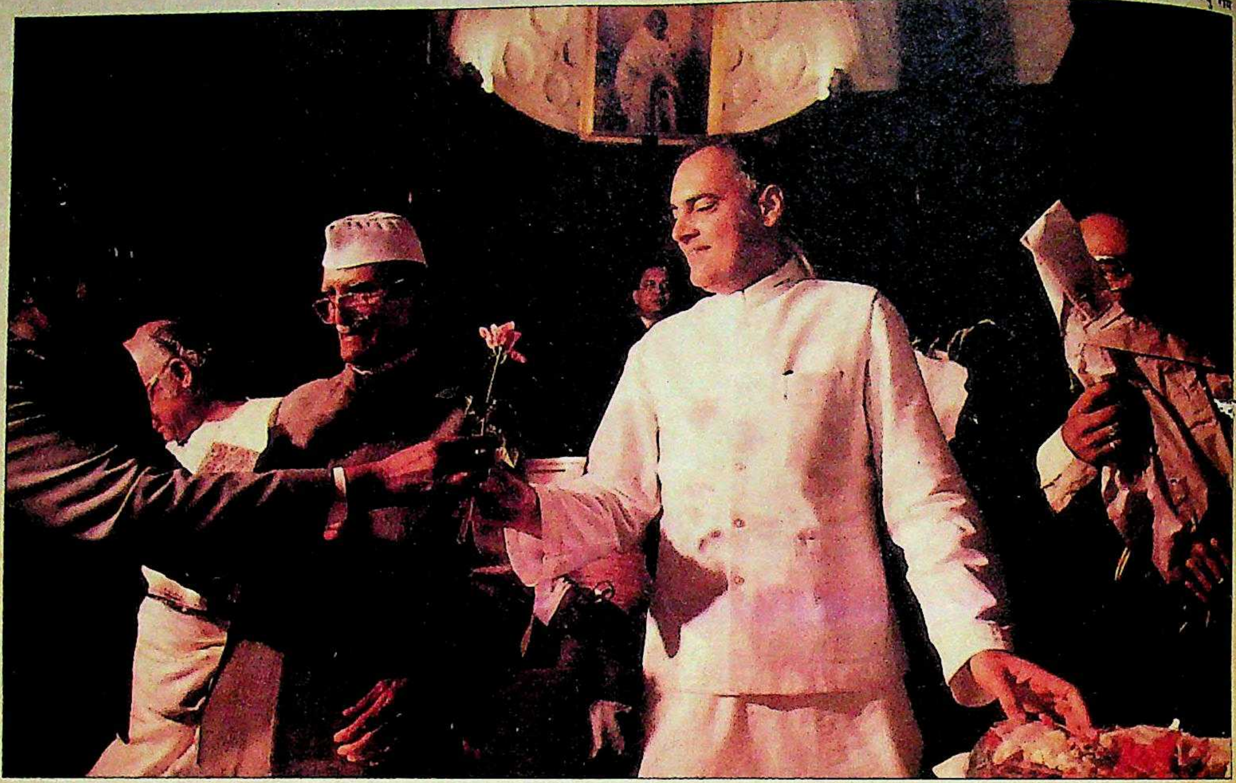

राजीव फिर इंका के नेता चुने गए: कोई चुनौती नहीं

भाजपा के बाहरी समर्थन के साथ सरकार बनाने वाला था.

इस पूरे दौर में कोई एक शख्स अगर आधुनिक चाणक्य बनकर उभरा, तो वे हैं अरुण नेहरू. वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री बनने से रोकने वाली तमाम चालों को नाकाम करने का श्रेय नेहरू को ही जाता है. वी.पी. सिंह के लिए अब अहम काम न केवल ताकतवर बनकर उभरी भाजपा से अपने रिश्ते सुधारना था बल्कि अपनी पार्टी के भीतर विरोधी ताकतों से लोहा लेना भी था. चुनाव प्रचार के दौरान हिंदू विरोधी रुख अख्तियार करके उन्होंने भाजपा को नाखुश कर दिया था. जिस चक्रव्यूह में वी.पी. सिंह फंस गए थे उससे विजयी होकर बाहर आने की कथा इस प्रकार है:

◆ **27 नवंबर:** देवीलाल खुद अपने लिए जोड़तोड़ में व्यस्त हैं. भाजपा का मन टटोलने के लिए वे लालकृष्ण आडवाणी से मिलते हैं. आडवाणी उन्हें साफ कह देते हैं कि देश ने वी.पी. सिंह को वैकल्पिक नेता के रूप में वोट दिया है और चूंकि हरियाणा में देवीलाल की अपनी सरकार का कामकाज अच्छा नहीं रहा है इसलिए उन्हें अपनी भूमिका पार्टी को मजबूत करने तक ही सीमित रखनी चाहिए. उसी शाम देवीलाल एक इंटरव्यू में कहते हैं, "मेरा व्यक्तिगत समर्थन वी.पी. सिंह को है."

◆ **28 नवंबर:** देवीलाल, अटलबिहारी वाजपेयी और एन.टी. रामराव वी.पी. सिंह के कट्टर विरोधी चंद्रशेखर से मिलते हैं. ये लोग उनसे वी.पी. सिंह का समर्थन करने को कहते हैं. चंद्रशेखर कोई वादा नहीं करते लेकिन देवीलाल को वी.पी. सिंह के मुकाबले खड़ा करने के लिए वे ओमप्रकाश चौटाला समेत वी.पी. सिंह के विरोधियों को गुपचुप उकसाने में लग जाते हैं. चंद्रशेखर ने अपने समर्थकों को टटोलने के बाद समझ लिया था कि वी.पी. सिंह से टक्कर में वे पिछड़ जाएंगे. लेकिन धारणा यह बनने देते हैं कि वे अभी भी दौड़ में कायम हैं. साथ ही वे यह भी जाहिर करते हैं कि वे देवीलाल का समर्थन करेंगे. उनकी रणनीति है कि अगर वे खुद वी.पी. सिंह का सफाया नहीं कर सकते तो यह काम देवीलाल के मार्फत करेंगे और ऐसे 'किंग मेकर' के रूप में प्रतिष्ठित होंगे जिसने वी.पी. का पत्ता साफ कर दिया.

◆ **29 नवंबर:** वी.पी. सिंह विरोधी उद्योगपतियों के साथ कथित अंतरराष्ट्रीय धर्मगुरु चंद्रास्वामी भी सक्रिय होते हैं. ये लोग चौटाला के साथ मिलकर देवीलाल को दौड़ में शामिल कराने और उनके लिए भाजपा का समर्थन जुटाने के लिए एक षड्यंत्र तैयार करते हैं. चंद्रास्वामी और उनके दूत 'मामा'

चार्ट: बी.के. शर्मा

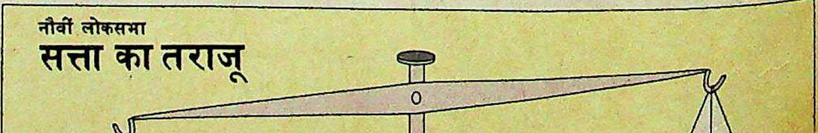

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अग्रवाल जाकर चंद्रशेखर से मिलते हैं और फिर अटल-बिहारी वाजपेयी से भेंट करते हैं. वे वाजपेयी को यह समझाने की कोशिश करते हैं कि भाजपा को नई सरकार में शामिल होना चाहिए और देवीलाल का समर्थन करना चाहिए क्योंकि देवीलाल ही 'हिंदू राष्ट्र' की कट्टर हिंदू मांग का समर्थन कर सकते हैं. वाजपेयी ये बातें ध्यान से सुनते हैं पर कोई वादा नहीं करते.

इस बीच चौटाला हरियाणा से बसों में भरकर हजारों की संख्या में जाटों का जत्था दिल्ली ले आते हैं ताकि देवीलाल पर दबाव डाला जा सके. ये लोग नारा लगाते हैं, "बन गए, बन गए, प्रधानमंत्री आप बन गए." यह मनोवैज्ञानिक दबाव अपना जादू दिखाने लगता है और देवीलाल अपने समर्थकों को दिलासा देते हैं कि वे अभी दौड़ में कायम हैं. जनता दल के नेता पार्टी की राजनैतिक मामलों की समिति और संसदीय दल की बैठक टालने का फैसला करते हैं.

उसी दिन देर रात गए अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां और विद्याचरण शुक्ल जवाबी मुहिम छेड़ते हैं. वे चिमनभाई मेहता और नाथूराम मिर्धा जैसे नेताओं पर, जो वी.पी. के खेमे के माने जाते रहे हैं मगर इधर विभिन्न घटकों के दबाव के कारण उलझन में हैं, दबाव डालते हैं. उसी रात वी.पी. सिंह और अरुण नेहरू ज्योति बसु और लालकृष्ण आडवाणी से अलग-अलग भेंट करते हैं. वे उन लोगों से यह मनवा लेते हैं कि वे राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का तभी समर्थन करेंगे जब वी.पी. सिंह नेता हों.

इसके बावजूद अभी भी एक बड़ी बाधा कायम है. गणितीय समीकरणों के अनुसार पार्टी के 141 सांसदों में से वी.पी. सिंह-बीजू पटनायक-अजीत सिंह-मिर्धा खेमे के सांसदों की संख्या 80 और देवीलाल-चंद्रशेखर गुट की संख्या 61 है. पार्टी सांसदों की एक-तिहाई से ज्यादा संख्या वाला एक गुट दलबदल विरोधी कानून से प्रभावित हुए बिना किसी भी पक्ष में शामिल हो सकता है.

◆ **30 नवंबर:** देवीलाल और वी.पी. सिंह के बीच मतभेद साफ दिखने लगता है. दोनों में दो दिन से बात तक नहीं हुई है. लेकिन प्रत्यक्ष तौर पर दिखने वाला यह मतभेद आरिफ मुहम्मद खां, सतपाल मलिक और खुफिया ब्यूरो के वरिष्ठ अधिकारी के साथ मिलकर तैयार की गई अरुण नेहरू की रणनीति का नतीजा था. योजना यह अनुमान लगाने की थी कि क्या चंद्रशेखर सचमुच मुकाबले में खड़े होंगे और यह भी कि उन्हें कितना समर्थन हासिल है. इसके साथ ही नेहरू ने चंद्रशेखर को यह विश्वास दिलाया कि देवीलाल और वी.पी. सिंह में वाकई ठन गई है. नेहरू अब वी.पी. सिंह खेमे के लोगों को देवीलाल से संपर्क तोड़ लेने की सलाह देते हैं. उधर उन्होंने वी.पी. सिंह समर्थकों को चंद्रशेखर के खेमे में गुपचुप प्रवेश कराया ताकि वे यह हवा बनाएं कि चंद्रशेखर देवीलाल को पूरा समर्थन दें. इस रणनीति का पेंच अगले दिन खुलता है.

◆ **1 दिसंबर:** देवीलाल 6 बजे सुबह जग जाते हैं और अजीत सिंह तथा शरद यादव जैसे प्रमुख सांसदों का समर्थन पक्का करने के लिए उनसे संपर्क करते हैं. इस बीच चौटाला चंद्रशेखर के घर पर ही जमे हुए हैं. नेहरू की इस रणनीति का दूसरा मकसद चंद्रशेखर को यह एहसास कराना है कि उन्हें ही असली 'किंग मेकर' माना जा रहा है और यह भी कि अगर वे देवीलाल के पक्ष में होड़ से हट जाते हैं तो उनकी स्थिति और मजबूत होगी. इस रणनीति के तहत नेहरू ज्योति बसु, पूर्व राष्ट्रपति जैल सिंह और चंद्रशेखर के करीबी अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा को चंद्रशेखर तक यह बात पहुंचाने को तैयार करते हैं कि उन्हें पार्टी को टूट से बचाने और संकट टालने के लिए आम सहमति के उम्मीदवार को अपना समर्थन देना चाहिए. आम सहमति के उम्मीदवार के रूप में देवीलाल उभरते हैं. राम जेठमलानी चंद्रशेखर को अपना रवैया बदलने को विवश करने के लिए उनके घर के सामने अनशन करने की कोशिश करते हैं. और इस प्रक्रिया में उनके साथ मारपीट होती है.

अगला कदम वी.पी. सिंह की उम्मीदवारी के लिए देवीलाल को मनाना है. नेहरू ऐसी गोटी बिठाते हैं कि चौटाला अपने पिता से दो महत्वपूर्ण घंटों—अपरान्ह 1 से 3 बजे—तक न मिलने पाएं. इसी समय जनता दल संसदीय पार्टी के नए नेता के चुनाव के लिए संसदीय बोर्ड की बैठक होनी है.

अब सबसे अहम सवाल देवीलाल से संपर्क कायम करना है. इस गुट के साथ मिलकर काम कर रहे पत्रकारों का एक दल देवीलाल से कहता है कि मामले के निबटारे के लिए

रघु राय

■ आडवाणी, वाजपेयी और दूसरे नेताओं के साथ वी.पी. सिंह ■

न्यूनतम कार्यक्रमों पर सहमति हासिल करके वी.पी. सिंह ने वामंपथी दलों और भारतीय जनता पार्टी दोनों का समर्थन हासिल करने में सफलता पाई

■ देवीलाल और रामराव का स्वागत करते हुए ज्योति बसु ■

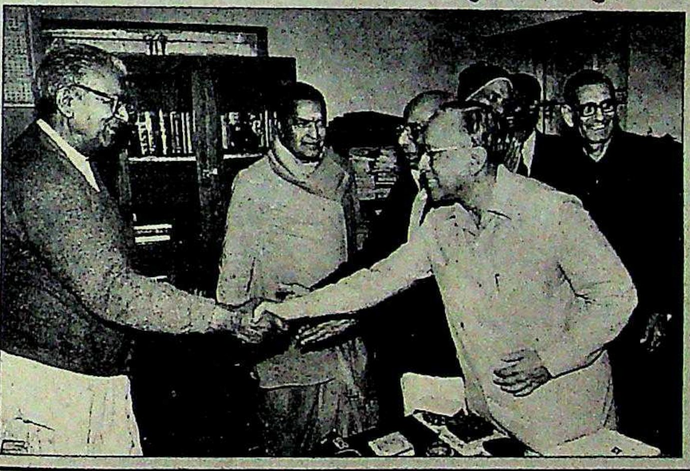

प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें वी.पी. सिंह और अरुण नेहरू से सीधे बात करनी चाहिए. थोड़ी देर की ना-नुकर के बाद देवीलाल सहमत हो जाते हैं. दोपहर 1.30 बजे अरुण नेहरू हरियाणा भवन आते हैं और वहां देवीलाल से आधे घंटे तक अकेले में उनकी बात होती है. दोपहर 2 बजे देवीलाल अरुण नेहरू के साथ ओडीसा भवन में जाने को तैयार हो जाते हैं. वहां वी.पी. सिंह और बीजू पटनायक उनका गुपचुप इंतजार कर रहे हैं. उनमें खुलकर बात होती है. देवीलाल पार्टी की छवि खराब होने की समस्या पर तो हामी भरते हैं परंतु यह भी कहते हैं कि उनके समर्थक उन्हें अगले प्रधानमंत्री के रूप में पेश कर रहे हैं और अब यह उनकी इज्जत का मामला बन गया है.

वी.पी. सिंह एक बार फिर अपनी जानी-पहचानी रणछोड़ नीति का इस्तेमाल करते हैं और देवीलाल को साफ तौर पर बता देते हैं कि अगर ऐसा है तो फिर वे प्रधानमंत्री पद के लिए स्वयं उनके नाम का प्रस्ताव करेंगे. नेहरू और पटनायक बीच-बचाव करते हैं और दोनों को समझाते हैं कि देवीलाल को भी तदनुसार पहल करनी चाहिए. इस पर समझौता हो जाता है जिसके तहत देवीलाल के मान की रक्षा की गारंटी दी जाती है लेकिन पलड़ा वी.पी. सिंह के पक्ष में ही झुका रहता है.

वी. पी. सिंह की ओर तनी तलवार को भोथरा करने की रणनीति तैयार करने वाले नेहरू आधुनिक चाणक्य नजर आते हैं

देवीलाल इसके तुरंत बाद नेहरू की योजना पर अमल करते हुए चंद्रशेखर को ओडीसा भवन में आने का न्यौता देते हैं. बलिया के इस राजपूत नेता को खबर दी जाती है कि देवीलाल सर्वसम्मत प्रत्याशी हैं जिनके नाम का प्रस्ताव वी.पी. सिंह करेंगे. चंद्रशेखर से पूछा जाता है कि क्या वे प्रस्ताव का समर्थन करेंगे. वे प्रसन्न मुद्रा में राजी हो जाते हैं और फिर देवीलाल के साथ संसद भवन पहुंचते हैं. उनके समर्थन में वहां नारे लग रहे हैं. कुछ मिनट बाद अरुण नेहरू और वी.पी. सिंह पहुंचते हैं. लेकिन वहां पहुंचने से थोड़ी देर पहले नेहरू अजीत सिंह को टेलीफोन पर योजना की जानकारी देते हैं.

अत्यंत सावधानीपूर्वक, गुप्त रूप से बनाई गई इस योजना की कड़ियों पर से एक-एक करके परदा दोपहर सवा तीन बजे शुरू हुई संसदीय दल की बैठक में उठने लगता है. और देश में अरसे से घाघ राजनीतिक और पार्टी-तोड़क के रूप में परिचित तिकड़मी चंद्रशेखर को होशियारी से मात दे दी जाती है. सदमा उनके चेहरे पर साफ दिखाई देता है और वे "मैं सबको दिखा दूंगा" बुदबुदाकर रह जाते हैं. बाद में अपने संक्षिप्त भाषण में वे कहते हैं, "मैं इस निर्णय का समर्थन करता हूं लेकिन मेरी अपनी आपत्तियां हैं क्योंकि मुझे इन सबसे अंधेरे में रखा गया." बाद में जब केसरिया वस्त्रधारी एन.टी. रामराव ने राष्ट्रीय मोर्चे की आम बैठक बुलाई तो निराश चंद्रशेखर अपने मुट्ठी भर समर्थकों के साथ वहां से चले गए.

प्रशांत पंजियार

आरिफ, अरुण नेहरू और शुक्ल

वी.पी. सिंह की लड़ाई दो मोर्चों पर थी. एक ओर जहां देवीलाल और चंद्रशेखर जैसी हस्तियों को बेअसर कर देने की योजना चल रही थी, वहीं भाजपा या वी.पी. सिंह की छवि को नुकसान पहुंचाए बिना भाजपा का समर्थन जुटाने का प्रयास भी जारी थी. इसका मुख्य कारण यह था कि जिस गणित के आधार पर चुनाव के बाद सरकार बनाने के लिए फार्मूले बनाए गए थे वह पूरी तरह गलत निकला. मोर्चे को कल्पना भी नहीं थी कि दक्षिण में इंका की हवा राष्ट्रीय मोर्चे की घटक क्षेत्रीय पार्टियों को तहस-नहस कर देगी जिसके कारण लोकसभा में जनता दल के हिस्से केवल 141 सीटें ही आ पाएंगी. न ही उन्होंने यह सोचा था कि केरल कम्युनिस्टों के हाथ से निकल जाएगा और माकपा के पास संसद में 32 सीटें रह जाएंगी.

भाजपा 86 संसदीय सीटों पर जीत जाएगी, यह तो मोर्चे ने सपने में भी नहीं सोचा होगा. वी.पी. सिंह ने अचानक महसूस किया कि वे भाजपा के समर्थन के बिना सरकार नहीं बना सकेंगे. वे भाजपा का समर्थन जुटाने के लिए आम अपील करने से कतरा रहे थे क्योंकि ऐसा करने का अर्थ होता भाजपा के प्रति चुनाव से पहले और चुनाव के दरम्यान अपनाए गए रुख के विपरीत आचरण.

एक बड़ा संकट सामने था: लगा कि मोर्चा सरकार नहीं बन सकेगा. क्षुब्ध आडवाणी ने कहा, "अगर उन्हें हमारा समर्थन चाहिए तो उन्हें हमें सार्वजनिक तौर पर स्वीकार करना होगा. हम कपट की उनकी राजनीति स्वीकार नहीं करेंगे."

यह संकट तब टला जब वी.पी. सिंह, रामराव, अरुण नेहरू और अजीत सिंह को लेकर भाजपा से बातचीत करने के लिए एक समिति बना दी गई. सबसे पहले रामराव ने राष्ट्रीय मोर्चे के अध्यक्ष के नाते और वी.पी. सिंह ने संयोजक की हैसियत से आडवाणी को पत्र लिखकर भाजपा का सहयोग मांगा. पत्र में लिखा था, "अब यह हम सबका पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि हम इस जनादेश को व्यर्थ न जाने दें और लोगों की आशाएं और आकांक्षाएं पूरी करने के लिए गैर-इंका सरकार के गठन में देर न करें."

बाद में वी.पी. सिंह, नेहरू और आडवाणी के बीच रात भर चली समझौते की गुप्त बातचीत में इस समस्या पर विचार हुआ कि भाजपा मोर्चे का समर्थन बाहर से करेगी या सरकार में शामिल होगी. आडवाणी के नेतृत्व में भाजपा का एक गुट चुनाव में भाजपा को मिली सफलता को देखते हुए सरकार में हिस्सेदारी पर जोर दे रहा था. लेकिन यह मांग नहीं मानी गई. वी.पी. सिंह इस बारे में अड़ियल रवैया अपनाए रहे. फिर, एक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समझौता किया गया. वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली सरकार को बाहर से समर्थन देने के बदले में भाजपा ने मांग की कि नई सरकार कुछ बुनियादी परिवर्तनों को लागू करे. मसलन, चुनाव में होने वाले खर्च का सरकार द्वारा वहन; न्यायपालिका को राजनैतिक तत्वों से मुक्त करना; दूरदर्शन और आकाशवाणी को स्वायत्तता प्रदान करना; विभिन्न राज्यों के लिए संस्कृत को राष्ट्रीय बहुभाषी फार्मूले में शामिल करने के वास्ते आम सहमति पर पहुंचना; अल्पसंख्यक आयोग की जगह मानवाधिकार आयोग का गठन; बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र

भवान सिंह

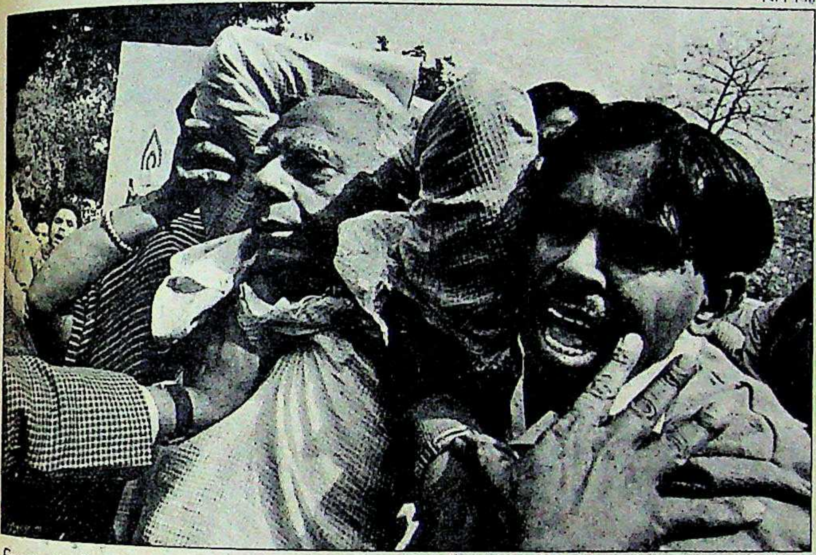

जेठमलानी के साथ दुर्व्यवहार

विधानसभाओं को तुरंत भंग करना और नौवीं लोकसभा में दलों की सदस्य संख्या के आधार पर विधानसभा चुनाव में सीटों पर तालमेल आदि.

ये सारी बातें भाजपा द्वारा नई सरकार को बिना शर्त समर्थन देने की बात की पुष्टि करती हैं. भाजपा ने यह भरोसा भी दिलाया है कि वह मंदिर के निर्माण को कम-से-कम विधानसभा चुनावों तक जरूर रोके रखेगी.

कम-से-कम इस समय तो वी.पी. सिंह एक राजनैतिक भंवर से निश्चय ही निकल आए हैं लेकिन सवाल है कि किसकी कमान उनके हाथ में है? उनकी अपनी पार्टी में ऐसे विद्रोही जाट हैं जो देवीलाल के खिलाफ बिगुल बजा सकते हैं. साथ में इंका संस्कृति से आए लोग और चंद्रशेखर के अनुयायी भी हैं जो कई तरह की राजनैतिक उठापटक करने की ताकत रखते हैं. इन सब विद्रोही स्वरों के ऊपर चंद्रशेखर हैं जो अभी तो खामोश कर दिए गए हैं लेकिन कब तक खामोश रहेंगे यह कहना मुश्किल है. उनके मित्रों में भाजपा नेताओं का एक गुट भी है जिसमें लालकृष्ण आडवाणी जैसे समर्थ नेता हैं जो वी.पी. सिंह द्वारा भाजपा को सार्वजनिक तौर पर सांप्रदायिक कह देने के घाव नहीं भूल पाए हैं.

फिर सवाल उठता है कि जब अयोध्या में मंदिर निर्माण की योजना आगे बढ़ने लगेगी तब भाजपा और मोर्चे के रिश्तों में कितना तनाव आ जाएगा और भाजपा खुद अपने कट्टर लोगों के दबाव से कैसे निबट पाएगी. साथ ही बजट सत्र के दौरान वामपंथी गुटों के साथ असहमति के पूरे आसार हैं क्योंकि वी.पी. सिंह के उदार आर्थिक सोच से वामपंथी बिलकुल सहमत नहीं हैं.

वी.पी. सिंह को राजीव की इंका से भी निबटते रहना है. सच तो यह है कि चुनाव परिणाम आने के साथ राजनैतिक पर्यवेक्षकों में इस बात को लेकर आम सहमति बन गई थी कि केवल इंका और जनता दल के भीतर के विद्रोही गुट मिलकर ही स्थायी सरकार दे सकते हैं क्योंकि उनकी 300 से अधिक सीटें हो जातीं. अनुमान यह था कि राजीव गांधी के नेतृत्व में हुई हार को देखते हुए इंका उनको छोड़कर वी.पी. सिंह के साथ नए राजनैतिक समीकरण बनाएगी.

लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ. आज राजीव गांधी अविभाजित और मजबूत विपक्ष के नेता हैं जिनके सामने एक ऐसी पार्टी सत्ता में है जिसमें मतभेदों की कई संभावनाएं हैं. इंका में इस समय कोई भी ऐसा नेता नहीं है जो उनका विरोध करने में सक्षम हो या ऐसा करना चाहता हो.

27 नवंबर की शाम सात बजे पार्टी की संसदीय बोर्ड की बैठक में यह बात साफ तौर पर सामने आई. चुनाव प्रचार के दौरान दयनीय दिखने वाले राजीव तब निश्चिंत से दिखे जब कांग्रेस सदस्यों ने हर्षध्वनि के साथ सर्वसम्मति से उन्हें एक बार फिर पार्टी का नेता चुना. राजीव ने उत्साहित सदस्यों से कहा, "इस चुनाव ने साबित कर दिया है कि हमारी पार्टी अकेली ऐसी राष्ट्रीय पार्टी है जिसकी नींव मजबूत आदर्शों पर टिकी है और जो तात्कालिक लाभ के लिए कोई समझौता नहीं करती."

राजीव के नए आत्मविश्वास का कारण ढूंढने के लिए बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है. शरद पवार को छोड़कर, जिन्होंने खुलकर सभी पार्टी सदस्यों से राजीव का समर्थन करने को कहा है, इंका के बाकी सभी क्षत्रपों की शक्ति इस चुनाव में क्षीण हो चुकी है. चुनाव में हासिल सीटों की संख्या ने पार्टी का रुख राजीव के पक्ष में मोड़ दिया है. नारायणदत्त तिवारी, जगन्नाथ मिश्र, अमरसिंह चौधरी, मोतीलाल वोरा जैसे चुनौती दे सकने वाले नेता अपने ही राज्यों में बुरी तरह पराजित हुए हैं. इससे इंका में

राम जेठमलानी को चंद्रशेखर के समर्थकों ने तब पीट दिया जब वे उनके विरोध में भूख हड़ताल पर बैठने जा रहे थे

राजीव ही सर्वशक्तिमान बनकर उभरे. साथ ही पार्टी की आधार-शक्ति दक्षिण में चली गई है जहां से पार्टी के कुल 193 संसद सदस्यों में से 104 निर्वाचित हुए हैं. इनमें से ज्यादातर टिकट पाने और जीत के लिए राजीव के आभारी हैं. इन लोगों द्वारा उनका साथ छोड़ जाने की उम्मीद कम ही है.

प्रत्यक्ष तौर पर इंका किसी दूसरे गुट का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश नहीं करेगी. लेकिन अर्जुन सिंह कहते हैं, "अगर वे हमें समर्थन देते हैं तो हम उनका समर्थन स्वीकार करने से पीछे नहीं हटेंगे." अपने साथियों से राजीव को समर्थन देने की अपील करने वाले वे पार्टी के पहले नेता हैं. जाहिर है कि माधव सिंह सोलंकी और शरद पवार के साथ वे राजीव के प्रमुख सलाहकार के रूप में फिर उभर आए हैं.

इंकाई रणनीति पार्टी की छवि एक संयमित संगठन वाली बनाने और नई सरकार के साथ जांच-पड़ताल में सहयोग करने की लगती है. साथ ही राजीव की छवि किसी पस्तहौसला नेता के बजाए इमरजेंसी-बाद संजय गांधी की छवि की तर्ज पर एक विनम्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

शपथ ग्रहण समारोह के बाद राष्ट्रपति और राजीव के साथ वी.पी. सिंह

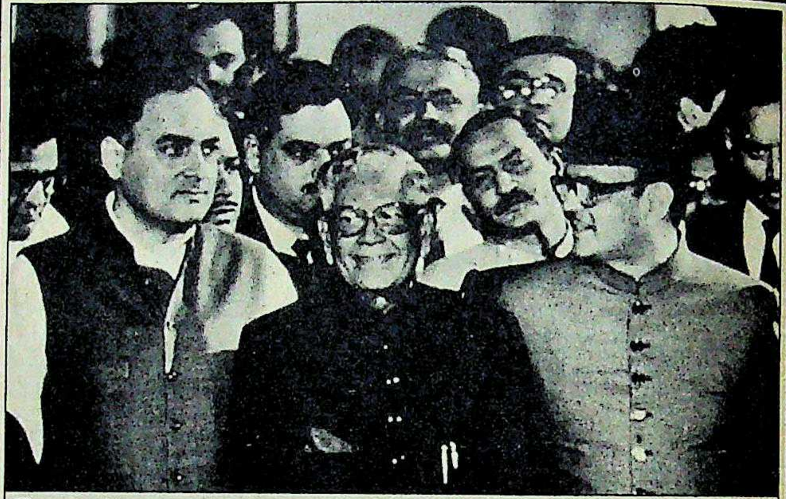

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने वह लक्ष्य हासिल कर लिया जिसे उनके समर्थक नामुमकिन समझ रहे थे. परंतु इसके लिए उन्हें लगातार जूझना पड़ा

और बुद्धिमान नेता की बनाने की भी लगती है. साथ ही पार्टी विधानसभा चुनाव के ठीक पहले राष्ट्रीय मोर्चा से दलबदल करवाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ेगी.

जैसा कि मध्य प्रदेश से विजयी मुट्ठी भर इंकाई सांसदों में एक कमलनाथ बताते हैं, "असली अभियान तो अब शुरू हुआ है. प्रधानमंत्री की इस विडंबनापूर्ण स्थिति के लिए जिम्मेदार कुछ तत्वों का जनता ने सफाया कर दिया है. जहां तक नई सरकार का मामला है, उसके लिए मेरा नारा है—हम उनका साथ देंगे, उनका आदर करेंगे, और फिर उन्हें पछाड़ेंगे." अगर राष्ट्रीय मोर्चा गठजोड़ ढीला पड़ता है तो स्थायी सरकार देने में उसकी नाकामी इंका के हाथ में अपनी वापसी के लिए एक धारदार हथियार थमा सकती है.

लेकिन वी.पी. सिंह की कुछ बातों को नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता. अगर वे 55 सदस्यों का मंत्रिमंडल बनाते हैं और हर मंत्री कम-से-कम तीन सांसदों का समर्थन बनाए रखता है तो इससे निहित स्वार्थ के कारण कम-से-कम 150 सांसदों के दलबदल करने की संभावना नहीं के बराबर रह जाएगी. साथ ही यह मानने के भी कारण हैं कि राष्ट्रीय मोर्चे को भाजपा और वाम मोर्चा का समर्थन कम-से-कम शुरुआती महीनों में तो मिलता ही रहेगा क्योंकि दोनों पार्टियां जानती हैं कि अगर सरकार गिरती है तो उनके लिए संसद में दोबारा इतनी सीटें पाने की उम्मीद धुंधली है. खासकर भाजपा खेमे को 1980 की याद अभी ताजा है जब जनता सरकार की नाकामियों के चलते वह निर्मूल-सी हो गई थी. पार्टी के नेता वह गलती न दोहराने के प्रति सचेत लगते हैं.

लेकिन उनके समर्थन के बावजूद राष्ट्रीय मोर्चा 281 सांसदों के मामूली बहुमत की ही आशा कर सकता है. इसलिए कुछ निर्दलीय सदस्यों और सिमरजीत सिंह मान के समर्थक जैसे छोटे-मोटे गुटों का समर्थन हासिल करने की पहल भी शुरू हो गई है. इनकी कुल संख्या 40 के करीब बैठती है और इन्हें मंत्री पद देकर सरकार में शामिल करने की कोशिशें शुरू हो गई हैं. तात्कालिक योजना फिलहाल इंका के समर्थक छोटे-मोटे गुटों को तोड़कर करीब 200 सांसदों का पक्का गुट बनाने की है.

लंबी योजना राजीव की स्थिति और भी कमजोर करने की है. इसके लिए उन्हें दंडित करने की योजना नहीं है बल्कि उनसे जुड़े घोटालों और गड़बड़ियों के मामलों की फाइलें खोलकर उनकी छवि इस हद तक गिरा देने की है जिससे वे खुद अपनी पार्टी के लिए ही बोझ बन जाएं. राष्ट्रीय मोर्चे के रणनीतिज्ञों के मुताबिक ऐसी हालत में इंकाइयों के पास कोई चारा नहीं रहेगा और वे बड़ी संख्या में दलबदल करेंगे. इस तरह राष्ट्रीय मोर्चे को भारी बहुमत मिल जाएगा जिससे उसे भाजपा या कम्युनिस्टों दोनों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं रहेगी.

वैसे, इस रणनीति को परे रखकर देखें तो वी.पी. सिंह खुद में ही एक पहेली हैं. फिलहाल तो वे नेहरू, आरिफ, विद्याचरण शुक्ल, इंद्रकुमार गुजराल और सतपाल मलिक की 'ए' टीम के आसरे हैं पर अंततः वे अपने किसी सहयोगी पर नहीं बल्कि अपनी अंतरात्मा की आवाज पर ही भरोसा करते हैं. वे बार-बार कहते रहे हैं कि उनकी अंतरात्मा हमेशा उन्हें सही फैसला करने में मदद करती रही है. इस उथल-पुथल भरे सत्ता हस्तांतरण से वी.पी. सिंह विकल्प के रूप में उभरे हैं और विपक्षी एकता के लिए न्यूनतम कार्यक्रम मिल गया है. लेकिन नई सरकार को अपनी एकता के न्यूनतम कार्यक्रम के जरिए साबित करके दिखाना होगा कि अगर इंका ने राष्ट्रीय आम सहमति की भावना को अपमानित किया, जैसा कि वी.पी. सिंह दावा करते हैं, तो वह एक नई आम सहमति का आधार बना सकती है.

मतदाताओं ने दिखा दिया है कि हर काम पर उनकी कड़ी निगाह है और वे निकम्मेपन, लापरवाही और अकर्मण्यता को क्षमा नहीं करेंगे. वी.पी. सिंह को भी इस कड़ी कसौटी पर खरा उतरना होगा. उनका सामना पर्वताकार समस्याओं से है, खासकर इसलिए भी कि वे अभी भी एक पतली डोर पर संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं. उन्हें मंत्री पद के आकांक्षी नेताओं से तो निबटना ही है, आम लोगों की आशा-आकांक्षाओं का भी ध्यान रखना है.

उनके प्रमुख मंत्री एकदम स्वच्छ प्रशासन दें यह नए मि. क्लीन के लिए अग्निपरीक्षा साबित होगी. अगर ऐसा न हुआ तो यह 'विकल्प' बेमानी साबित होगा.

इस बात में कोई शक नहीं कि वी.पी. सिंह ने वह मंजिल पा ली है जिसके बारे में उनके पक्के समर्थकों को भी भरोसा नहीं था. ढाई साल से उन्होंने दो मोर्चे एक साथ खोले रखे हैं—एक युद्ध और दूसरा शांति का. युद्ध का मोर्चा राजीव गांधी के खिलाफ था. शांति का मोर्चा उन्होंने अपनी पार्टी में खोल रखा था. हालांकि ढेर सारे चुके हुए और भ्रष्ट लोग उनके काफिले में शामिल हो गए हैं. इसलिए अब जल्दी ही उन्हें ऐसे ही दो मोर्चे अपनी पार्टी में खोलने पड़ सकते हैं. अभी यह युद्ध शुरू भर हुआ है. इन विरोधाभासों को दूर करके शायद वी.पी. सिंह तमाम अटकलबाजों और शक्की लोगों को झूठा साबित कर सकते हैं जैसा कि पिछले तीन साल से वे साबित करते आए हैं. लेकिन उनके इस कार्य की सिर्फ एक ही शब्द में व्याख्या हो सकती है और वह कि यह भगीरथ कार्य ही है.

—इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

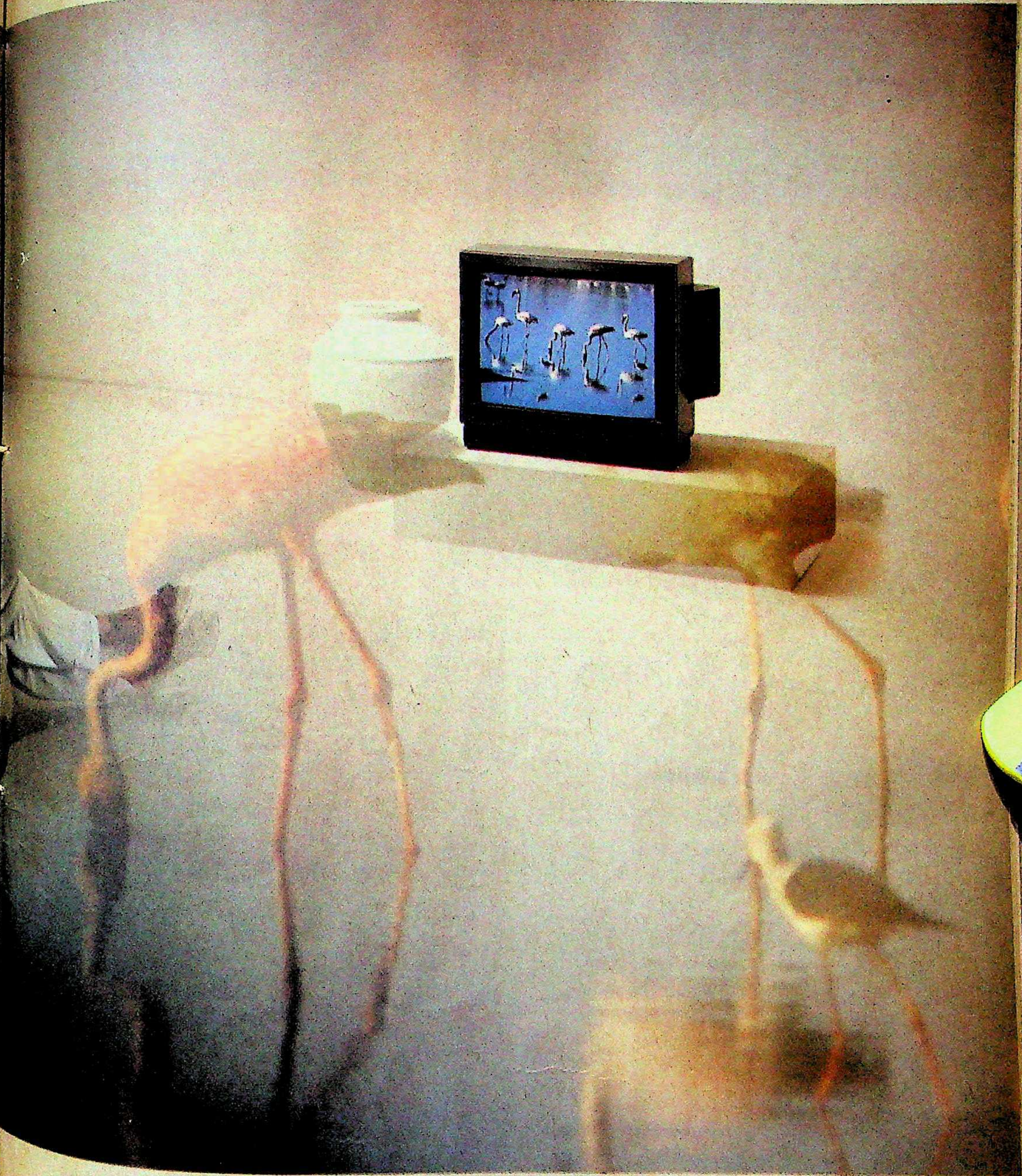

BUSH TV एक जीवंत एहसास.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह

'राजनीति तो अपनी शर्तों पर ही करूंगा'

*नव निर्वाचित प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने चुनाव प्रचार के दौरान और फिर प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने के दिन प्रधान संपादक **अरुण पुरी** और फीचर संपादक **शेखर गुप्ता** के साथ कई दौर की मुलाकात में सरकार और देश के सामने अनेक मुद्दों पर अपने विचार, योजनाएं और उम्मीदें अभिव्यक्त कीं. कुछ अंश:*

● ***प्रधानमंत्री बनने पर आपको कैसा लग रहा है?***

मेरे मन में झोंपड़ों और गांवों में रहने वाले लोगों के प्रति जिम्मेदारी का गहरा एहसास है, खासकर नौजवान पीढ़ी के प्रति जिसने केंद्र में हुए महत्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन से भारी उम्मीदें बांध रखी हैं.

● ***इंका से निष्कासित किए जाने के बाद आपने हमेशा यह कहा कि आप कोई राजनैतिक पद ग्रहण नहीं करेंगे. आपका मन कैसे बदल गया?***

मेरा वश चले तो मैं महाभारत के बलराम सरीखी भूमिका पसंद करूं. पर फिलहाल मैं राष्ट्रीय मोर्चे के नेताओं और जनता दल के सभी निर्वाचित सांसदों की इच्छाओं का पालन कर रहा हूं.

● ***आप अपनी पार्टी को मिले जनादेश की व्याख्या कैसे करेंगे? आपकी पार्टी को गंगा के मैदान की क्षेत्रीय पार्टी कहना कहां तक उचित होगा?***

दक्षिण में हमें निश्चय ही हार का मुंह देखना पड़ा है. लेकिन चुनावी विफलता का यह मतलब नहीं कि राजनैतिक तौर पर हमारा सफाया हो गया है. राष्ट्रीय मोर्चे की हमारी भागीदार द्रमुक और हमारे समर्थक वाम मोर्चा की दक्षिण के दो राज्यों में सरकारें हैं. हमें यकीन है कि हम इस असंतुलन को ठीक कर लेंगे.

● ***आपकी सरकार स्थिर रहेगी या नहीं, ऐसी आशंकाओं पर आपकी प्रतिक्रिया?***

1977 के बाद से विपक्ष स्थिरता और इंका अस्थिरता की ओर बढ़ी है. विपक्ष ने ही असम, प. बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल में स्थिर सरकारें दी हैं. और कर्नाटक में भी—पर वहां बेईमानी की गई. महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार को देखिए जहां कैलेंडर की तरह हर साल मुख्यमंत्री बदले जाते रहे हैं. इस राजनैतिक प्रक्रिया को पसंद नहीं किया जा सकता. हम इंका की तरह दिवालिया नहीं हैं, जहां राजीव गांधी जैसे व्यक्ति का कोई विकल्प ही नहीं है.

● ***आपके चयन की प्रक्रिया के दौरान असंतोष उपजा है और चंद्रशेखर खास तौर पर नाखुश हैं. इस स्थिति से कैसे निबटेंगे?***

मेरा किसी से भी कोई झगड़ा नहीं है. जहां तक चंद्रशेखर की बात है, मैं उनसे सहयोग मांगता रहूंगा.

● ***आप भाजपा की अद्भुत विजय को किस नजरिये से आंकते हैं? क्या पार्टी का सांप्रदायिक आग्रह इसकी वजह है?***

भाजपा लगभग हर राज्य में मूलतः एक के मुकाबले एक उम्मीदवार होने से जीती. जनता दल और भाजपा, दोनों ही पार्टियों

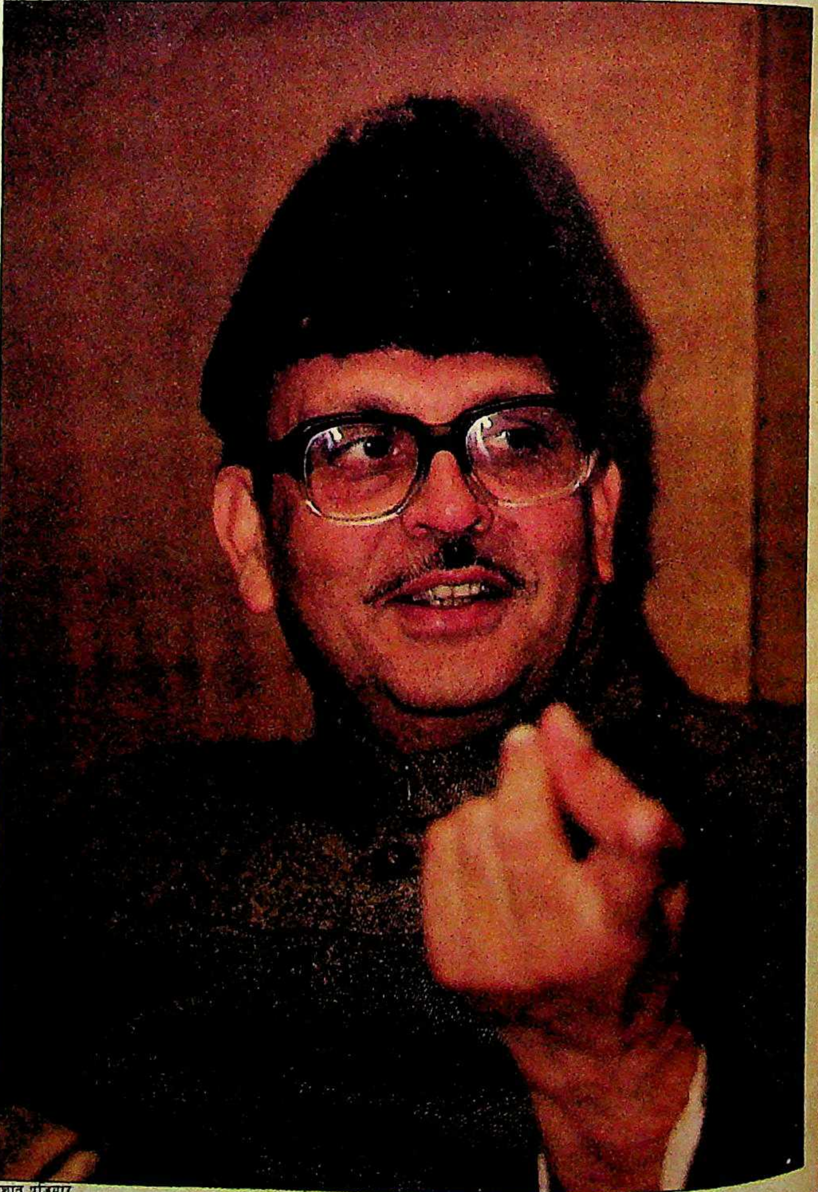

प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को इस तालमेल से फायदा हुआ.

• आप विपरीत विचारधाराएं रखने वाले वामपंथियों और दक्षिणपंथियों के समर्थन पर आधारित अल्पसंख्यक सरकार की अगुआई कर रहे हैं. इसलिए आप अपनी सरकार की स्थिरता पक्की करते हुए किस प्रकार सभी पक्षों को मान्य एक न्यूनतम कार्यक्रम को लागू करने की सोच रहे हैं?

हां, अल्पसंख्यक सरकार की अपनी अंतरनिहित समस्याएं होती हैं. पर मुझे न्यूनतम कार्यक्रम को लागू करने में कोई गंभीर समस्या नजर नहीं आती. केंद्र में एक स्वच्छ और स्थायी सरकार देने के प्रति हम सभी वचनबद्ध हैं. मैंने हमेशा कहा है कि मैं अपनी शर्तों पर ही राजनीति करूंगा.

• वह न्यूनतम कार्यक्रम क्या है?

राजनीति पर थैलीशाहों के असर के खिलाफ लड़ना.

• बतौर वित्तमंत्री आपको 'छापामार राज' चलाने वाला माना जाता था. क्या छापे फिर उसी शिद्दत से शुरू होंगे?

छापे किसी सरकारी नीति के अभिन्न अंग नहीं हो सकते. पर जब किसी के खिलाफ सरकारी नियमों के उल्लंघन का सबूत हो तो कानून लागू करने के उपाय सोचने ही पड़ते हैं. मजबूत औद्योगिक आधार के लिए सरकार कृषि आधारित उद्योगों के साथ-साथ मूल उद्योगों को बढ़ावा देने से नहीं हिचकेगी.

• क्या आप 1977 जैसे जांच आयोगों का गठन करेंगे?

मुझे इसकी जरूरत नजर नहीं आती. गड़बड़ियों से निबटने के लिए देश के कानून ही पर्याप्त हैं. हम बदले की भावना से प्रेरित होकर कोई काम नहीं करेंगे.

• पर आप बोफोर्स की दलाली खाने वालों की जांच तो करेंगे?

वह तो मातृभूमि के प्रति हमारा निश्चित कर्तव्य है.

• आप पिछली सरकार की आर्थिक नीतियों के एक रचयिता थे. क्या इस बार भी आप उन्हीं पर चलते रहेंगे?

हम कृषि क्षेत्र को अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार मानते हैं. हम उद्योग और कृषि में कोई विरोधाभास नहीं मानते. पर कृषि क्षेत्र अभी भी रोजगार मुहैया कराने वाला मुख्य क्षेत्र है. इस क्षेत्र में अपर्याप्त पूंजी निवेश हुआ है. कृषि उपज की वास्तविक कीमतें नहीं बढ़ीं पर जिन चीजों को किसान खरीदता है उनके दाम बढ़ गए हैं. व्यापार की ये प्रतिकूल शर्तें ग्रामीण क्षेत्र को कंगाल बनाए जा रही हैं. यह स्थिति बदलनी होगी. उद्योग की रक्षा के लिए भी यह जरूरी है वरना हमारा औद्योगिक विकास असंतुलित रहेगा.

• इसका मतलब है आपको उद्योग में भी लागत घटानी होगी?

हां. फिलहाल यह उच्च आय वर्ग के लोगों की जरूरतें पूरी करता है और इसमें आम आदमी के उपभोग की चीजों को नजरअंदाज किया जाता है. हमें छोटे उद्योगों के बारे में सोचना है. मानव शक्ति आज हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है. अगर यही बेकार पड़ी रही तो हमारी मुख्य संपत्ति निरर्थक है. इसलिए हमें वे तकनीकें काम में लानी होंगी जिनसे कुल मिलाकर रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा हों. हम कृषि पर आधारित उद्योग के पक्षधर हैं.

स्थिरता

"मुझे भाजपा या वामपंथी दलों के साथ कोई परेशानी नहीं दिखती. कई मुद्दों पर हमारे विचार समान हैं"

नेतृत्व

"हमारी पार्टी कांग्रेस (इ) की तरह दिवालिया नहीं हैं जहां राजीव गांधी तक का कोई विकल्प नहीं है"

बड़े व्यवसाय

"न जाने वे क्यों डरे हुए हैं. मैंने औद्योगिक विकास पर अंकुश लगाने की बात कभी नहीं सोची. हां, उनकी गलत गतिविधियों को जरूर रोका"

• बड़े व्यापारिक घराने इसमें दाखिल हों तो कोई फर्क पड़ेगा?

बड़े घरानों को छोटे उद्योगों में नहीं आना चाहिए. भारत में विभिन्न स्तरों पर इंजीनियरों वगैरह का नया उद्यमी वर्ग आगे आया है जिसने उद्योग और निर्यात को प्रोत्साहन दिया है, बड़े घरानों ने नहीं. इस वर्ग की शक्ति को मान्यता दी जानी चाहिए और यह हमारी रणनीति के अनुकूल है. फिर हमें भुगतान शेष की समस्या का भी सामना करना होगा. हमें आयात के लिए सकारात्मक रणनीति बनानी होगी.

• क्या आप आयात की उदार नीति में कुछ परिवर्तन लाएंगे?

इसमें लचीलेपन की बहुत गुंजाइश नहीं है. हमारा 70 फीसदी आयात पेट्रोलियम उत्पादों, अलौह धातुओं, सूक्ष्म मशीनों जैसी आवश्यक वस्तुओं का है. बाकी 30 फीसदी में से आधा उद्योग के कच्चे माल की जरूरतों के लिए होता है. विवाद तो बाकी बचे लगभग 15 फीसदी पर है. इसी में कम से कम परिवर्तन की गुंजाइश है.

• और ज्यादा से ज्यादा परिवर्तन?

आप दस रुपए देकर किसी व्यक्ति को बाजार भेज दीजिए और उसे कहिए कि वह कोई भी चीज खरीदने के लिए स्वतंत्र है. वह क्या खरीदे, इस पर बहस हो सकती है पर यह कोरे तर्क ही होंगे. एक और समस्या है. रुपया आसानी से विनिमय योग्य मुद्रा नहीं है. इसलिए आप उत्पादन बढ़ाकर रुपयों में भले ही कमाई कर लें पर वह पर्याप्त नहीं है. भुगतान दूसरे क्षेत्रों या निर्यात से कमाए गए डॉलरों में ही करना होगा. अगर आप तीनों बाध्यताएं एक साथ रखकर ठोस हकीकत पर नजर डालें तो विवाद के लिए बचता ही क्या है.

• इसलिए आपकी नजर में महत्वपूर्ण आर्थिक मुद्दा क्या है?

भुगतान शेष का प्रबंधन और कर्ज. मेरे विचार से हमें सकारात्मक और बहुत कारगर निर्यात नीति अपनानी होगी. आयात का मामला भी मूलतः भोजन सरीखा है—अगर आप बहुत कम खाएंगे तो भूखा रहना पड़ेगा और अगर बहुत ज्यादा खा लेंगे तो बीमार पड़ जाएंगे. सही अनुपात भी जरूरी है.

• बड़े औद्योगिक घरानों की भूमिका के बारे में आपकी क्या राय है? आपके सत्ता में आने से उनमें से अधिकांश भयभीत हो गए हैं.

न जाने वे क्यों भयभीत हैं. हम उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते. हमारे पास उनके विरुद्ध वैसा कुछ नहीं है. निर्यात के क्षेत्र में उनकी दिलचस्पी कम है. हाल ही में बड़े घरानों ने इसमें कुछ रुचि दिखाई है. पर उनकी आर्थिक ताकत की तुलना अगर देश की आयात संबंधी जरूरतों से की जाए तो मुझे नहीं लगता वे उम्मीदों पर खरे उतरते हों. उन्हें रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्रों में आगे आना चाहिए.

• क्या आप इस मामले में कुछ करेंगे?

हम औद्योगिक विकास के पक्षधर हैं. औद्योगिक गतिविधियों के जरिए मुनाफा कमाने के खिलाफ नहीं हैं. जिन गतिविधियों पर हमने आपत्ति उठाई थी उनका उचित मुनाफे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताल्लुक नहीं था. सत्ता के गलियारों तक पहुंच रखने वाला कोई व्यक्ति दूसरी बेहद कुशल इकाई से आगे निकल जाए, इस बात की कोई तुक नहीं है.

• ***क्या आप नियंत्रण की वित्त व्यवस्था में कोई बदलाव लाएंगे?***

नियंत्रण के मामले में हमें प्राथमिकताएं तय करनी होंगी. लाइसेंस जारी करने के मामले में एक मेज से दूसरी मेज तक देरी और भ्रष्टाचार पैदा करने वाली व्यवस्था को बदलकर हमें बेहतर तरीके ढूंढ़ निकालने होंगे.

• ***भ्रष्टाचार मिटाने के लिए आप क्या करेंगे?***

दुनिया भर में संसदीय लोकतंत्र के लिए यह गंभीर समस्या है. राजनीति खर्चीली होते जाने और चुनावों में खर्च बढ़ते जाने के कारण राजनैतिक पार्टियों के लिए पैसे की जरूरत बढ़ने लगती है. और पैसेवालों को भी सरकार का सहयोग चाहिए ही. इसलिए उनके बीच सांठगांठ स्वाभाविक है. मैं कोई नैतिक सवाल नहीं उठा रहा बल्कि यह समस्या बता रहा हूं कि इससे राजनैतिक व्यवस्था कैसे प्रभावित होती है.

• ***आप यह सांठगांठ कैसे तोड़ेंगे?***

पहली बात तो यह कि हमें कई चुनाव सुधार करने होंगे. हमारे पास चुनावों में सरकारी धन मुहैया कराने का निश्चित कार्यक्रम है. मेरा खयाल है कि हम इसे राष्ट्रीय समस्या मानकर इसका हल निकालें. सभी पार्टियों को मिल बैठकर इस पर सोचना होगा. दूसरे, हम नौकरशाही पर नियंत्रण कैसे पाएं? शासकों और शासितों के बीच खाई कैसे पाटी जा सकती है? यह भी दुनिया भर में प्रशासन की समस्या है. यह कम्युनिस्ट देशों के साथ-साथ पूंजीवादी देशों की भी गंभीर समस्या है. और मुझे यकीन है कि वह खाई मात्र निर्वाचित प्रतिनिधियों के जरिए ही नहीं पाटी जा सकती. जनता के स्तर पर भी प्रति संतुलन का कोई ढांचा खड़ा करना होगा. लोगों और नीति निर्धारकों की संयुक्त समितियां बनानी होंगी. दूसरी समस्या सरकारी गोपनीयता कानून है. ज्यादातर भ्रष्टाचार इसके परदे में होता है. मामले जितने खुले में होंगे, भ्रष्टाचार पर उतनी ही रोक लगेगी.

• ***पंचायती राज के सवाल पर इंका से आपका कोई मतभेद है?***

इस बारे में हमारा प्रारूप बेहतर है. हम संघीय व्यवस्था के तहत वित्तीय और प्रशासनिक अधिकारों को सचमुच हस्तांतरित करने के पक्षधर हैं. पर पंचायती राज की आड़ में इंका संघीय व्यवस्था पर आघात करना चाहती है. वे मिठाई में जहर मिलाने की कोशिश कर रहे थे. प्रधानमंत्री और जिला अधिकारी के बीच सीधा संपर्क बनाकर मुख्यमंत्री की हैसियत ही खत्म कर देना चाहते थे.

• ***अयोध्या वाले मामले पर आपका क्या रवैया है?***

ऐसे जटिल सवाल का जवाब इतना आसान नहीं है. सबसे पहले हम मित्रतापूर्ण समाधान पर जोर देंगे. यही स्थायी समाधान हो सकता है. अगर ऐसा संभव न हुआ तो मामला अदालत में जाएगा. कम से कम अदालत में मामले के चलते सामाजिक तनाव पैदा करने वाली किसी भी हरकत से बचा जाए. हम हिंदू मत, इस्लाम और देश के सभी धर्मों का आदर करते हैं. हिंदुओं में भावना यह है कि अयोध्या राम की जन्मभूमि है और वहां राम मंदिर बनाया जाना चाहिए. इस भावना की कद्र की जानी चाहिए. मैंने मुसलमान रहनुमाओं से बातचीत की थी. उनका कहना है कि राम मंदिर बनाए जाने को लेकर उनका हिंदुओं से कोई झगड़ा नहीं. पर उन्हें मस्जिद गिराए जाने का अंदेशा है—इससे और कई मस्जिदें गिराई जाने लगेंगी. सो, अयोध्या में मंदिर बनाने की हिंदुओं की तीव्र इच्छा और मस्जिद गिराए जाने के मुसलमानों के अंदेशे के बीच कोई रास्ता ढूंढ़ निकालना होगा.

• ***पंजाब के कई कथित उग्रवादियों को रिहा करने के राजीव सरकार के आखिरी मौके पर लिए फैसले के बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?***

इसका मतलब पिछली सरकार ने मान लिया है कि उनके खिलाफ दर्ज मामले गलत थे. हम देश की अखंडता और एकता के सवाल पर कोई समझौता नहीं कर सकते. हमें सुलह-समझौते की प्रक्रिया ही शुरू करनी होगी.

• ***पिछले पांच साल का मूल्यांकन करने पर आपको कोई अफसोस नहीं होता या निराशा की कोई भावना नहीं घेरती?***

मेरी अंतरात्मा साफ है. दिन भर जूझते रहने के बाद भी मैं रात को चैन की नींद लेता रहा. हां, अतीत की ओर झांकें तो एक मायने में यह सही है कि राजीव को काम कर दिखाने के बहुत मौके मिले. शुरुआत में किसी को भी उनके जितनी सद्भावनाएं नहीं मिली होंगी. मैंने खुद उनके लिए कड़ी मेहनत की क्योंकि उनकी मां के लिए मेरे मन में बहुत श्रद्धा थी. और मैंने सोचा कि राजीव को कामयाब बनाना मेरा फर्ज है. पर सारी उम्मीदें गलत साबित हुईं.

• ***तो इस मायने में आप निराश हुए?***

यह कह सकते हैं कि मेरा मोहभंग हुआ.

• ***आप भी उस स्थिति में पहुंच सकते हैं जब आप लोगों की उम्मीदें तोड़ देंगे?***

ऐसे नेताओं और ऐसी सरकारों को रद्द करने का साहस देश को दिखाना चाहिए. समूची व्यवस्था का नए सिरे से निर्माण करना होगा. केंद्र सरकार के बारे में यह भ्रम पैदा हो गया है कि वही राष्ट्र है और अगर केंद्र सरकार गिर गई तो देश टूट जाएगा. हमें इस भ्रम से निकलना होगा. बहुत-से देशों में सरकारें बदलती हैं पर देश नहीं टूटता.

• ***श्रीमती गांधी ने अपनी सरकार को काम करने वाली सरकार बताया था. राजीव ने अपनी सरकार को तेजी से काम करने वाली सरकार करार दिया. आप कैसी सरकार का वादा कर रहे हैं?***

जनता की साझेदारी वाली. गरीब का पक्ष, सरकार का पक्ष.

नियंत्रण

"नियंत्रण के मामले में हमें प्राथमिकताएं तय करनी होंगी और भ्रष्टाचार पैदा करने वाली व्यवस्था बदलनी होगी"

जांच आयोग

"मुझे इसकी कोई जरूरत नजर नहीं आती. देश के मौजूदा कानून पर्याप्त हैं. इन्हें लागू करने की राजनैतिक इच्छा भर चाहिए"

उम्मीदें

"हमें इस भ्रम को खत्म करना होगा कि केंद्र की सरकार बदलने से देश टूट जाएगा. उम्मीदें तोड़ने वाले नेताओं और सरकारों को रद्द करना ही चाहिए"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाराजगी का लावा उबल पड़ा

राज्यों के मतदाताओं का मानस एक नहीं, पर फैसला स्पष्ट और बुलंद हुआ

चुनाव आंकड़ा विशेषज्ञ चाहे जो भविष्यवाणी करें, राजनैतिक पंडित चाहे जो दावे करें, राजनैतिक नेता चाहे जैसे गणित बिठाएं लेकिन भारतीय मतदाता सबको भौंचक कर देता है. अंततः उसका फैसला ही अंतिम होता है. नौवां आम चुनाव भी कोई अपवाद नहीं साबित हुआ. शायद इस चुनाव के लिए सबसे सटीक भविष्यवाणियां की गई थीं. लेकिन आंकड़ों के जाल और महज गुणा-भाग में वह संदेश दब गया जिसे भारतीय मतदाताओं ने ऊंची आवाज में सुनाया.

हिंदी क्षेत्र में इंका के मजबूत गढ़ का ढह जाना देखिए. पार्टी के हारे हुए नेताओं की फेहरिस्त में आला नेतृत्व के कई नाम हैं. कभी अपने राज्य में देवता की तरह पूजे जाने वाले नंदमूरि तारक रामराव के पल्ले पड़े अपमान की ओर नजर दौड़ाइए. जनता दल के रामकृष्ण हेगड़े को निकम्मेपन और आपसी कलह से ऊबे लोगों के हाथों नेस्तनाबूद हुआ देखिए. साथ ही हरियाणा के मतदाताओं द्वारा जातिवाद, धांधली और लाठी की ताकत की परवाह न करके देवीलाल की हैसियत कम करने की मिसाल पर नजर दौड़ाइए और इस पर भी नजर डालिए कि कैसे मतदाताओं ने चुनाव के कूड़ेदान में फेंकने के लिए बड़े नेताओं की हिट लिस्ट ही बना ली थी.

यह चुनाव अपनी तरह की मिसाल बनने जा रहा था. जिसमें हर राज्य या क्षेत्र के मतदाताओं ने पडोसी राज्यों के मतदाताओं की राय से इत्तफाक न रखने वाला स्पष्ट और बुलंद फैसला सुनाया.

इसलिए हिंदी क्षेत्र के मतदाताओं ने अगर भाजपा के एकतरफा सांप्रदायिक आह्वान पर कान देकर तथा सत्तारूढ़ पार्टी को अंशतः भ्रष्टाचार के संदिग्ध आरोपों के लिए खारिज करके वैकल्पिक नेता वी.पी. सिंह को समर्थन दिया, तो दक्षिण के मतदाताओं ने दूसरा रुख अपनाना पसंद किया. आंध्र के मतदाताओं के लिए रामराव की सनकी कार्यशैली के प्रति अपने गुस्से का इजहार इससे बेहतर नहीं हो सकता था. और न ही ओडिया मतदाता अपनी आवाज इससे मुखर तरीके से उजागर कर पाते कि वे जानकी बल्लभ पटनायक के निकम्मेपन से बुरी तरह ऊब चुके हैं.

हालांकि बिहारी, तमिल, तेलुगु, गुजराती, कन्नड या मलयाली मतदाताओं ने अलग-अलग पार्टियों पर अपना नजला उतारा, पर उनके संदेशों में एक महत्वपूर्ण और साफ सहमति भी है. यह एक सचाई है कि देश भर में मतदाताओं ने अपना फैसला भ्रष्टाचार के खिलाफ दिया. इस सत्ता विरोधी लहर में सिर्फ एक ही क्षेत्रीय गुट अपना अस्तित्व बचा पाया. वह है पश्चिम बंगाल का वाम मोर्चा. उसे उसकी साफ-सुथरी छवि का लाभ मिला और इस तथ्य का भी कि वह भारतीय राजनीति की एक और बुराई—वंशवाद से अछूता रहा है. नेहरू शताब्दी समारोह के साल भर चले हो-हल्ले और टीवी पर इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि तथा जन्मदिन पर शोक-संवेदनाओं, श्रद्धांजलियों की झड़ी लगा देने के बावजूद देश भर के लोगों ने इस धारणा को खारिज कर दिया कि देश किसी की निजी संपत्ति हो सकता है.

यह भी गौरतलब है कि देवीलाल को अपने बेटों और रामराव को अपने दामादों की करतूतों की कीमत चुकानी पड़ी. हेगड़े के सिर भी आफत कुछ हद तक अपने परिवारवालों की बदौलत ही आई. भारतीय मतदाताओं का दंड देने का यह रवैया कोई

नक्शा: बी.के. शर्मा

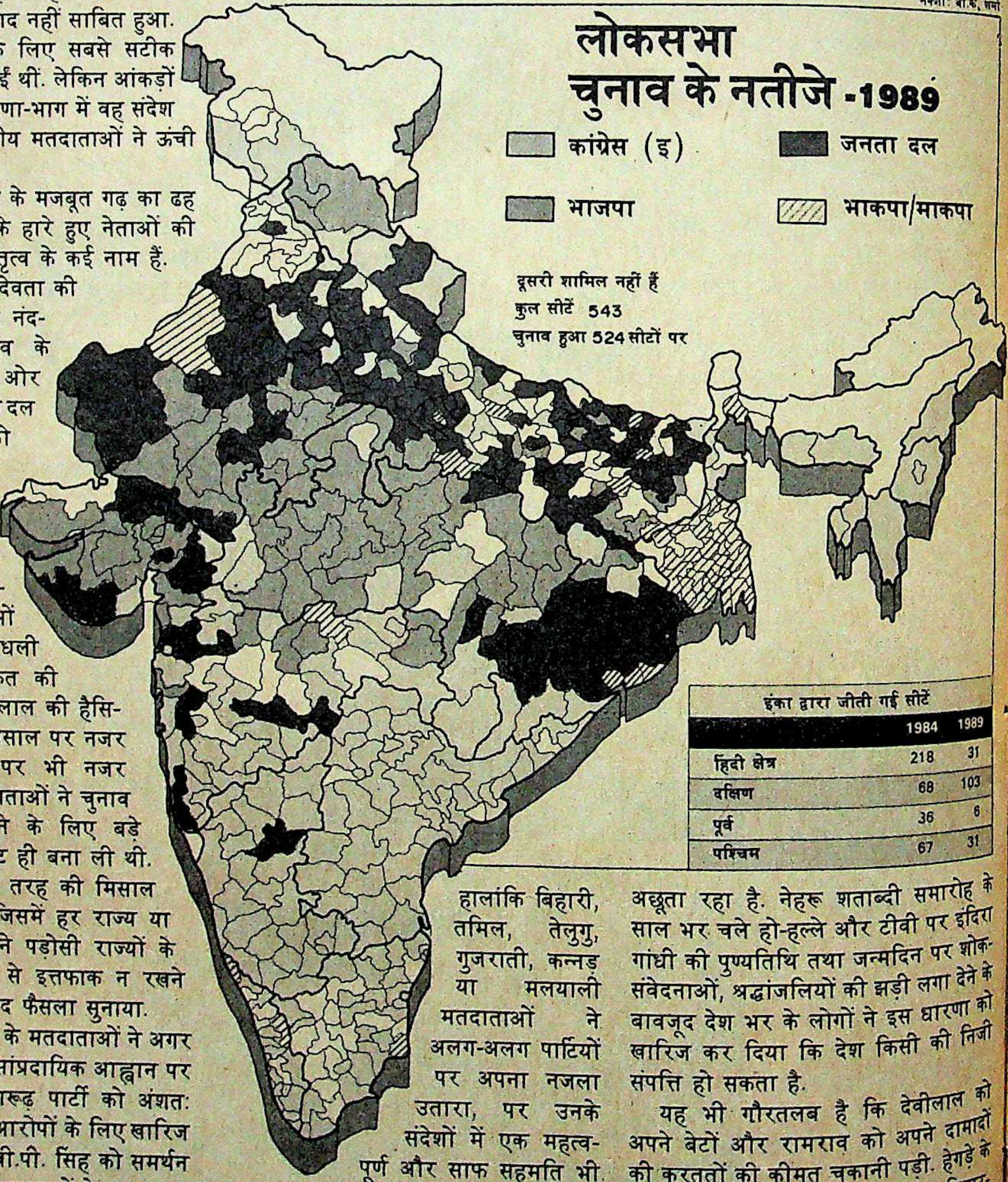

इंका द्वारा जीती गई सीटें

	1984	1989
हिंदी क्षेत्र	218	31
दक्षिण	68	103
पूर्व	36	6
पश्चिम	67	31

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपवाद नहीं है. 1977 में इंदिरा गांधी की इंका और फिर 1980 में जनता पार्टी के सफाए की मिसाल अभी भी ताजा है.

विंध्याचल के उस पार राष्ट्रीय मुद्दों के अभाव के कारण भी शायद मतदाताओं का एक जैसा मानस नहीं बन पाया. देश के बाकी हिस्सों में चुनावी इतिहास बदलने का कारण बनी मध्यमार्गी विपक्ष की एकता का असर दक्षिण भारत में इतने ज्यादा स्पष्ट रूप में प्रतिध्वनित नहीं हो सका.

साथ ही बोफोर्स और राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद दोनों ही विवाद उत्तर, पश्चिम तथा कुछ हद तक पूर्व में तो मुद्दा बने जबकि दक्षिण में ये मुद्दे ज्यादा असरकारी साबित नहीं हुए. इसके अलावा हिंदी क्षेत्रों के मतदाताओं के लिए मूल रूप से दो नेताओं—राजीव गांधी और वी.पी. सिंह के बीच चुनाव था और इस टक्कर में वी.पी. सिंह को उसने एकतरफा विजय भी दिला दी. लेकिन दक्षिण में वी.पी. सिंह का न पहुंच पाना बहुत बड़ी भूल साबित हुई. विपक्ष इस उम्मीद में दक्षिण से आश्वस्त हो चुका था कि वहां के सहयोगी क्षत्रप अपने ही बूते पर उसकी मुराद तो पूरी कर ही देंगे. इससे दक्षिण के मतदाताओं को लगा कि विपक्ष का नेतृत्व उत्तर-केंद्रित है. और उन्होंने यह जंता दिया कि उन्हें सेंत-मेत में न लिया जाए.

इस प्रक्रिया में मतदाता ने कुछ पेचीदगियां भी पैदा कर दी हैं. राजनैतिक जनादेश के इस भौगोलिक ध्रुवीकरण ने दोनों बड़ी राष्ट्रीय पार्टियों इंका और जनता दल को क्षेत्रीय पार्टियों की हैसियत में ला दिया. यही नहीं, यह चुनाव सबसे हिंसक और सबसे नकारात्मक भी रहा क्योंकि किसी पक्ष ने एक-दूसरे को नेस्तनाबूद करने के सिवा कुछ नहीं किया. यह चुनाव सबसे अधिक सांप्रदायिक भी रहा. भाजपा ने सांप्रदायिक रुझानों को कहीं नहीं छिपाया. इंका ने भी अयोध्या के मुद्दे को भुनाने की कोशिश की लेकिन वह अपना हाथ जला बैठी. और फिर पंजाब में उग्रवादियों के समर्थित उम्मीदवारों की भारी जीत की वजह से इस चुनाव में सांप्रदायिक ताकतें खुलकर वोट के मैदान में उतर आईं. इस चुनाव में स्वयंभू जाति आधारित दल बहुजन समाज पार्टी भी एक बड़े दबाव गुट के रूप में उभरकर आई. साथ ही चुनावी फायदा बटोरने के लिए अपनाए गए इन दावं-पेचों के चलते इस चुनाव से लाठी और गोली की ताकत भी नई ऊंचाई नापने लगी है.

जाहिर है, इस चुनाव से विजयी होकर उभरे लोग अपने साथ ये खासियतें भी लिए रहेंगे. मतलब यह कि देश राजनैतिक और सांप्रदायिक धरातल पर पहले से अधिक बंटा होगा.

—शेखर गुप्ता

हिंदी प्रदेश

उत्तर प्रदेश

राजा मांडा की आंधी

राजीव विरोधी बयार तेज

सिद्धांतों पर समझौते, खुलेआम सांप्रदायिक खेल और भ्रष्टाचार के आरोपों की कीमत इंका को उत्तर प्रदेश में चुकानी पड़ी. राजा मांडा ने उसे कहीं का न छोड़ा और राज्य की 85 लोकसभा सीटों में

सभी चार्ट: बी.के. शर्मा

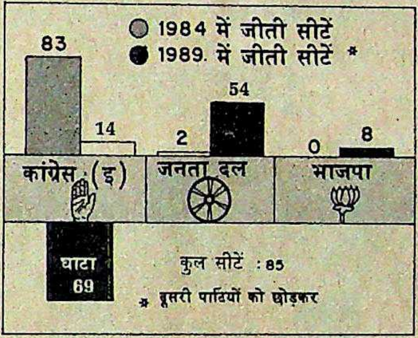

से अधिकांश जीत ली. इंका महज 14 सीटें ही जीत पाई.

राजीव गांधी और केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय, राजेंद्र कुमारी वाजपेयी, महावीर प्रसाद और ब्रह्मदत्त जीत गए मगर राज्य के आठ दूसरे केंद्रीय मंत्रियों को पराजय का मुंह देखना पड़ा. दूसरी ओर विपक्ष के तकरीबन सभी नेता—वी.पी. सिंह, अरुण नेहरू, मेनका गांधी, चंद्रशेखर, अजीत सिंह और आरिफ मोहम्मद खां भारी अंतर से जीते.

इस हार के लिए खुद इंका ही जिम्मेदार है. 9 नवंबर को जब इसने अयोध्या में विवादास्पद भूमि पर राम मंदिर की आधारशिला रखने की अनुमति देकर फिर निर्माण रुकवा दिया, उसी दिन इसने हिंदू और मुसलमानों दोनों के वोट गंवा दिए. इसके पारंपरिक समर्थक मुसलमान इसलिए खफा थे क्योंकि राज्य सरकार ने विश्व हिंदू परिषद से चुपचाप हाथ मिला लिया. बरेली, बदायूं, पीलीभीत और शाहजहांपुर में, जहां मुसलमान मतदाता 30 से 38 फीसदी हैं, इंका हार गई.

इंका की खामियों का फायदा उठाने के अलावा जनता दल की ओर से वी.पी. सिंह ने राज्य भर का दौरा करके और धर्मनिरपेक्ष अभियान चलाकर स्थिति मजबूत की. जनता दल से सीटों के तालमेल वाली भाजपा ने हिंदू भावनाओं को भुनाकर सीटें जीतीं.

मतदान के प्रतिशत से जाहिर है कि इंका खुद की पैदा की गई हिंदू लहर को भी नहीं भुना सकी. 1984 के 51 फीसदी के मुकाबले यह 31 फीसदी वोट ही हासिल कर पाई, जबकि भाजपा के उम्मीदवार जहां से भी लड़े उन्होंने 20 फीसदी वोट हासिल किए, जो 1984 के मुकाबले 6.4 फीसदी ज्यादा है. जनता दल के उम्मीदवारों को तकरीबन 40 फीसदी मत मिले जबकि 1984 में लोकदल और जनता को मिलाकर 25.2 फीसदी हासिल हुए थे.

घटिया चुनावी रणनीति ने सत्तारूढ़ दल की हालत पतली कर दी. लोकसभा और विधानसभा चुनावों के एक साथ कराए जाने की वजह से इंका में भ्रम का माहौल पैदा हो गया. आम तौर से चतुर माने जाने वाले मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी ने या तो अपनी चुनावी गणित में बुरी तरह घालमेल कर दिया अथवा आलाकमान ने उनको गलत कदम उठाने पर बाध्य किया.

लेकिन बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के उम्मीदवार छुपे रुस्तम निकले. उन्होंने सत्तारूढ़ दल के दो पारंपरिक वोट बैंकों—हरिजन और मुसलमानों में सेंध लगाकर इंका के ताबूत में आखिरी कील ठोंक दी. बीएसपी के 72 उम्मीदवारों को तकरीबन 13 फीसदी वोट मिले.

संदेश स्पष्ट था कि लगभग हर जाति और समुदाय इंका के कुशासन और निकम्मेपन से खफा था.

—दिलीप अवस्थी

बिहार

जनता लहर

निकम्मेपन से नाराजगी

इस बार वोट निकम्मेपन के खिलाफ पड़े. बड़े-बड़े इंकाई दिग्गज जैसे, तारिक अनवर, अब्दुल गफूर, भागवत झा आजाद और किशोरी सिन्हा वगैरह ताश की पत्तों की तरह ढह गए. बिहार की इंका का यह पतन मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा के लिए आखिरी धक्का साबित हो सकता है.

महज आठ महीने पहले सिन्हा को इस पद पर राजपूत वोटों को खींचने के लिए लाया गया था. लेकिन विडंबना यह है कि सिन्हा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

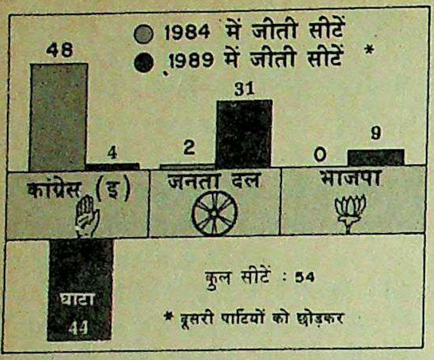

रिश्तेदारों समेत पार्टी के सभी राजपूत उम्मीदवार विपक्षी लहर में उखड़ गए. जनता दल के एक कार्यकर्ता ने दावे से कहा, "आखिरकार सिन्हा के राजपूत नेता होने की छवि मटियामेट हो गई."

चुनाव प्रचार शुरू होते ही सत्तारूढ़ दल की कमजोर हालत का अंदाज लगाने लगा था. तिस पर 34 सीटों पर सीधे मुकाबले से उसकी रही-सही आस भी खत्म हो गई. इसके अलावा उसके परंपरागत सहयोगी वनवासी, मुसलमान और हिंदुओं का एक बड़ा वर्ग भी उसका साथ छोड़ गया. वनवासी तो झारखंड मुक्ति मोर्चा और दूसरे झारखंड गुटों के साथ हो गए जबकि मुसलमानों ने वामपंथियों को पसंद किया. और पिछले चुनाव में इंका को वोट देने वाले ज्यादातर हिंदुओं ने भाजपा की ओर रुख किया. ज्यादातर मौजूदा सांसदों को टिकट देने के फैसले से भी मुख्यमंत्री की परेशानियां बढ़ीं. इन सांसदों ने अपने निकम्मेपन और क्षेत्र में मुंह न दिखाने से मतदाताओं को नाराज कर लिया था.

इंका को फायदा उन्हीं सीटों पर मिला जिन पर विपक्ष सीधा मुकाबला नहीं दे पाया. इसलिए विपक्षी वोट बंट गए. इंका पर चुनावी धांधली और मतदाताओं को डराने-धमकाने के आरोप भी लगे और इससे उसे नुकसान हुआ. जहानाबाद में तीन विधायकों —असगर हुसैन, जगदीश शर्मा और कृष्णा सिंह पर बूथ लूट में शामिल होने का आरोप है. बिहार प्रदेश इंका अध्यक्ष जगन्नाथ मिश्र ने कहा, "अगर राज्य सरकार का कामकाज अच्छा रहता तो स्थिति कुछ और होती." उन्होंने सिन्हा सरकार पर भागलपुर दंगों पर काबू पाने में नाकाम रहने का आरोप लगाया. इस तरह उन्होंने पार्टी के काम में एकरूपता न होने की ओर भी संकेत किया.

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद विधानसभा भंग भी हो सकती है. बहरहाल, सिन्हा के मुख्यमंत्री पद पर बने रहने की उम्मीद कम ही है. जैसा कि एक असंतुष्ट पार्टी विधायक ने कहा, "हम चुनावों की वजह से अपना मुंह सिए हुए थे. लेकिन अब हम यह स्पष्ट कर देंगे कि सिन्हा में हमारा भरोसा नहीं रहा."

—उत्तम सेनगुप्त

मध्य प्रदेश

पांसा पलटा

भाजपा ने ताकत दिखाई

हिंदी क्षेत्र के अनेक दूसरे राज्यों की तरह मध्य प्रदेश ने भी अचानक पांसा पलटा है. 1984 में जहां इस राज्य से इंका के सभी 40 उम्मीदवार चुने गए थे, वहीं इस बार पार्टी को करारी हार झेलनी पड़ी है. जिन 39 स्थानों पर यहां चुनाव हुए, उनमें से पार्टी को आठ सीटें ही हाथ लगीं. चुनावों से यह साफ हो गया है कि राज्य में 31 सीटों पर लड़कर 27 सीटें जीतने वाली भाजपा राज्य के राजनैतिक मंच पर नई ताकत बनकर उभरी है.

भाजपा की यह जीत राज्य में पिछले चार साल से उसके ठोस और समर्पित कार्य का ही

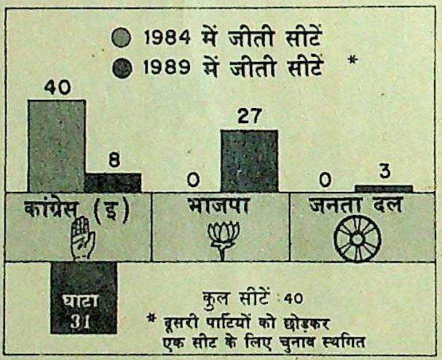

नतीजा है. कर्ज माफी के लिए चलाए गए उसके अभियान ने भी काफी असर डाला. इसके साथ ही उसने हिंदू भावनाओं को उभारा, जिसकी परिणति रामशिला पूजा के दौरान सांप्रदायिक दंगों में हुई. प्रदेश इंका अध्यक्ष शिवभानु सोलंकी कहते हैं, "भाजपा ने सांप्रदायिक उन्माद फैलाकर फायदा उठाया है. उसने मतदान केंद्रों पर अपने समर्थकों को चंदन के तिलक लगाकर भेजा." प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सुंदरलाल पटवा कहते हैं, "सोलंकी का अगला आक्षेप धोती पहनकर मतदान करने वाले लोगों पर होगा."

भाजपा ने अक्तूबर में इंदौर में सांप्रदायिक हिंसा के दौरान 23 लोगों की मौत को भुनाया. शासक दल के वोट बैंक का काफी बड़ा हिस्सा उसके हाथ से इसलिए भी निकल गया कि सरकार सांप्रदायिक तनाव पर काबू नहीं पा सकी. इंका के एक पराजित प्रत्याशी कहते हैं, "हम इस मुद्दे पर कोई ठोस नजरिया नहीं अपना सके."

इस बीच सांप्रदायिकता की आंच पर रोटी सेंकने की इंका की कोशिशों से बौखलाए मुसलमान मतदाताओं ने भी उससे मुंह मोड़ लिया. इसकी वजह से पार्टी को कम-से-कम पांच सीटों से हाथ धोना पड़ा.

भाजपा की जीत इतनी स्पष्ट रही कि वह इंका के मजबूत विकल्प के रूप में उभरी है. 10 जगहों पर चुनाव लड़कर तीन सीटें जीतने वाले जनता दल का भी कई जगह प्रभाव है. लेकिन दल की राज्य इकाई के अध्यक्ष विद्याचरण शुक्ल जिस तरह सिर्फ

पंजाब

उग्रपंथी रुझान

अपनी तमाम परेशानियों और मतलबी राज के खिलाफ पंजाब के लोगों ने इस चुनाव में अपनी तीखी प्रतिक्रिया जताई है. उन्होंने राज्य की 13 में से 10 सीटों पर गरमपंथी अकाली दल (मान गुट) को विजयी बनाया. उन्होंने न सिर्फ इंका से अपनी नाराजगी जताई बल्कि अकाली दल के बादल और बरनाला गुटों को भी ठेंगा दिखा दिया. लोगों ने साफ जता दिया कि वे अकाली नेताओं की सत्तालोलुपता और स्वार्थी राजनीति से ऊब गए हैं.

सिमरनजीत सिंह मान, विमल खालसा और अतिंदरपाल सिंह की जीत की उम्मीद तो सबको थी लेकिन फिरोजपुर से ध्यान सिंह मंड जैसे उम्मीदवार की जीत इस हिंसाग्रस्त राज्य के लोगों के सोच को अधिक स्पष्ट तरीके से उजागर करती है. करीब-करीब अनजान-से नेता ध्यान सिंह मंड ने इंका के जगजीत सिंह बराड़ और जाट नेता चौधरी देवीलाल को धूल चटा दी. उन्हें मान गुट का समर्थन हासिल था.

निश्चित रूप से मान गुट को पंजाब के लोगों में पुलिस ज्यादतियों से बढ़ते गुस्से का लाभ मिला. लुधियाना से राजिंदर कौर की जीत यही बताती है. उनके पति एक 'मुठभेड़' में मारे गए थे और सरकार ने इस मामले की जांच कराने से इनकार कर दिया था. शुरू में चुनाव मैदान में उतरने से झिझक रहीं राजिंदर कौर एक लाख से भी अधिक मतों से जीत गईं. मान गुट के एक नेता मेजर जगजीत सिंह कहते हैं, "राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय को इसे कुशासन की नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए." शहरों की जगह गांवों में हुआ अधिक मतदान भी इसी नाराजगी को जाहिर करता है.

इस चुनाव में वोटों का ध्रुवीकरण भी साफ दिखा. मान गुट को जहां सिखबहुल निर्वाचन क्षेत्रों में सफलता मिली वहीं गुरदासपुर जैसे हिंदूबहुल क्षेत्र में उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12,000 वोटों के साधारण बहुमत से जीते, उससे यहां जनता दल की सीमाओं का पता चल जाता है.

ग्वालियर से माधवराव सिंधिया और छिंदवाड़ा से कमलनाथ फिर जीत गए तो यह उस काम का इनाम था जो उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्रों में किया है. झाबुआ, बस्तर और कांकेर में इंका इसलिए जीत पाई कि विपक्ष वहां विभाजित था.

इंका की हार सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, राजनीति में अपराधी तत्वों की भरमार के कारण ही हुई. फिर, दो सीटों को छोड़कर बाकी सभी जगहों पर भाजपा-जनता दल में तालमेल और इंका की अंदरूनी लड़ाई ने उसकी संभावनाओं को और धूमिल कर दिया.

छिंदवाड़ा और सिवनी की दो सीटों को छोड़कर महाकौशल क्षेत्र और पूरे विंध्य क्षेत्र से इंका का सफाया हो गया है. और यह करारी हार राज्य में इंका के क्षय का शुरुआती लक्षण है. इंका को अब यहां दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ेगा—एक तो भगवाधारियों का और दूसरे अर्जुन सिंह की अगुआई में चलने वाले संभावित विद्रोह का. अर्जुन सिंह मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा की राजनैतिक कब्र खोदे बिना चैन से नहीं बैठने वाले. उधर पटवा दार्शनिक अंदाज में कहते हैं, "मैं उन्हें सत्ता से हट जाने के लिए नहीं कहूंगा. इस बारे में उन्हें खुद ही सोचना चाहिए." लेकिन समस्या यह है कि फिलहाल इंका संज्ञाशून्य हो गई है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

राजस्थान

सूपड़ा साफ

एकता का फल मिला

उसके लिए तो जैसे पूर्णमासी के बाद ही अमावस्या की रात आ गई. पिछले लोकसभा चुनावों में सभी सीटों पर जीतने के बाद इंका को इस बार राजस्थान की सभी 25 सीटों पर मात मिली. ऐसा सिर्फ 1977 में ही हुआ था जब चौधरी चरण सिंह के भारतीय लोकदल (जनता पार्टी) ने वहां एक को छोड़कर सभी सीटें जीत ली थीं. लोगों का इंका विरोधी रवैया इसी से जाहिर है कि विपक्षी उम्मीदवारों में छह 1.5 लाख से भी ज्यादा मतों के अंतर से जीते हैं.

भाजपा और जनता दल एक दूसरे से सहयोग करते हुए पूरे राज्य पर काबिज हो

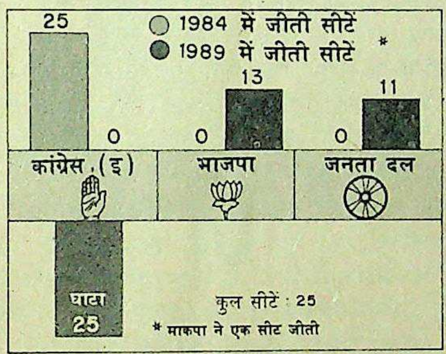

गए. भाजपा ने 13 सीटें जीतीं और जनता दल के सभी 11 उम्मीदवारों के सिर पर विजय का सेहरा बंध गया. भाजपा नेता भैरों सिंह शेखावत ने कहा, "लोग इंका से काफी नाराज थे इसलिए नतीजों में हैरत की कोई बात नहीं है." लेकिन बीकानेर में तो हैरत की ही बात हुई. वहां माकपा के पूर्व विधायक श्योपत सिंह भाजपा और इंका को हराकर जीत गए.

फूट से ग्रस्त इंका के खिलाफ विपक्षी एकता के जोरदार प्रदर्शन के अलावा इन नतीजों का एक और कारण भी है: अयोध्या के मुद्दे पर भाजपा का जोरदार प्रचार. पाली से चुनाव जीतने वाले गुमानमल लोढ़ा राम जन्मभूमि समिति की राज्य इकाई के अध्यक्ष हैं और इस मुद्दे की अदालती लड़ाई में हिंदुओं के वकील भी. चुनाव से एक महीने पहले हुए दंगों ने वोटों का भाजपा के पक्ष में ध्रुवीकरण कर दिया. शायद इसी ध्रुवीकरण के कारण चुनाव के बाद जयपुर और कोटा में भाजपा के विजयी प्रत्याशियों के जुलूस पर बमों, लाठियों, सरियों से हमले हुए और राजधानी में सेना को बुलाने की नौबत आई. प्रदेश इंका अध्यक्ष हीरालाल देवपुरा ने इस्तीफा देने के बाद कहा, "यह अनैतिक प्रचार था जिसमें धार्मिक मुद्दों को राजनैतिक मुद्दों से ज्यादा अहमियत दी गई." बहरहाल, प्रचार अनैतिक रहा हो या नहीं पर जाहिर है कि इसने विपक्ष के वारे-न्यारे कर दिए.

—पंकज पचौरी

उम्मीदवार चानन सिंह सिद्धू इंका की सुखबंस कौर भिंडर से हार गए.

जिस एक सीट पर इस तरह का ध्रुवीकरण नहीं दिखा, वह जालंधर थी. यहां से जनता दल के उम्मीदवार और पूर्व केंद्रीय मंत्री इंद्रकुमार गुजराल शांति और सांप्रदायिक सद्भाव के नारे पर ही जीते.

इंका की पराजय के अनेक कारणों में पार्टी नेताओं का हतोत्साह और उम्मीदवारों का नाम तय करने में देरी भी जिम्मेवार रही. इंका को 1984 में राज्य की छह सीटें मिली थीं जबकि इस बार उसे दो से ही संतोष करना पड़ा. उग्रवादियों के डर से उसके कार्यकर्ता गांवों में जाने से भी हिचकते रहे. राज्य के 11 निर्वाचन क्षेत्रों से उम्मीदवार खड़ा करके बहुजन समाज पार्टी ने इंका के परंपरागत वोट बैंक में सेंध भी लगा दी थी.

अभियान चलातीं बिमल खालसा

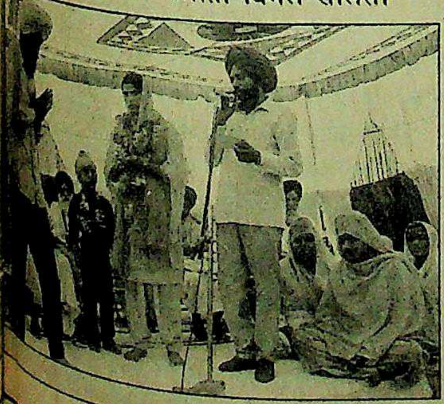

मान गुट के अन्य अकाली धड़ों से आगे निकलने की एक बड़ी वजह उसके साथ शहादत और कुर्बानी का जुड़ा होना भी है, जो पंजाब के धार्मिक-राजनैतिक माहौल के अनुकूल साबित हुई.

लेकिन मान गुट की जीत से लोग हैरान भी हैं. कुछ लोगों को लगता है कि मान गुट की इस जीत के साथ उग्रपंथियों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकेगा जबकि कई दूसरे लोग मानते हैं कि इस चुनाव से उग्रवादियों को जो 'वैधता' मिली है उससे उन्हें अपने अलगाववादी सुर तेज करने में मदद ही मिलेगी.

—कंवर संधू

दिल्ली

रुष्ट राजधानी

भाजपा के संगठित अभियान से इंका चारों खाने चित

इस चुनाव में दिल्ली की सात सीटों से यही संदेश निकला है कि अगर विपक्ष एक रहा तो जीतेगा. 1984 में इंका ने राजधानी की सातों सीटें जीत ली थीं जबकि इस बार भाजपा ने उससे चार और जनता दल ने एक सीट छीन ली. इस बार दिल्ली के सबसे प्रमुख विजेता रहे भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी.

देवीलाल के दुराग्रह ने यहां की एक सीट इंका की झोली में डलवा दी. वे पूर्वी दिल्ली से चांदराम को जनता दल का चुनाव चिह्न नहीं मिलने पर भी लड़ाने पर भिड़े रहे और भगत ने उन्हें और जनता दल के उम्मीदवार किशोरलाल को पराजित कर दिया. चांदनी चौक की सीट भी विपक्षी दलों में तालमेल न होने से ही इंका के जयप्रकाश अग्रवाल को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली. उन्हें भाजपा और जनता दल को मिले कुल मतों से 65 हजार कम वोट मिले.

दिल्ली में इंका को सबसे बड़ा झटका खाद्य परिष्करण राज्यमंत्री जगदीश टाइटलर की पराजय से लगा. उन्हें भाजपा के महासचिव विजय कुमार मल्होत्रा ने हराया. प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मदनलाल खुराना को दक्षिण दिल्ली से खड़ा करके भाजपा ने संसद में नया नेतृत्व भेजने की इच्छा जाहिर की. उम्मीद है कि जोरदार वक्ता खुराना संसद में भी दिल्ली को राज्य का दर्जा दिलाने का अपना अभियान जारी रखेंगे. अपने विजय जुलूस के बाद उन्होंने कहा, "हम इस मांग के लिए वचनबद्ध हैं और हम दिल्ली के नागरिकों को यह दर्जा दिलाकर रहेंगे." राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और दिल्ली के माध्यम से हिंदीभाषी इलाके में अपनी राजनैतिक पकड़ मजबूत करने की भाजपा की रणनीति को भी यह मांग रास आती है.

चुनाव नतीजे आने के बाद जहां विपक्षी

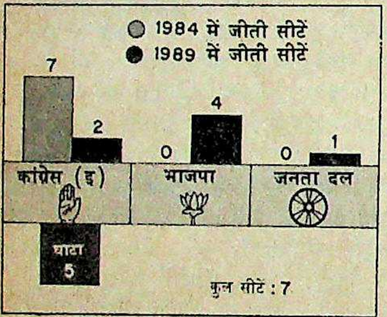

खेमे में खुशी फैल गई है, इंका में मायूसी छाई हुई है. इन परिणामों से एक महत्वपूर्ण संकेत यह मिलता है कि दिल्ली के बेताज बादशाह भगत के दिन लदने लगे हैं. करोलबाग से धर्मदास शास्त्री, दक्षिण दिल्ली से सुभाष चोपड़ा और नई दिल्ली से मोहिनी गिरी को उन्होंने टिकट दिलवाया था और ये सभी हार गए. अपनी पार्टी की पराजय पर भगत ने कहा, "इस चुनाव में जिस तरह सांप्रदायिक और जातीय जोड़-तोड़ देखने को मिला वह देश के लिए खतरनाक है."

चुनाव को लेकर दिल्ली के मतदाताओं में कोई खास उत्साह नहीं था. वे जानते हैं कि यहां का राजकाज तो केंद्र में बैठे लोगों को ही चलाना है. यहां कामकाज में जिस तरह स्थानीय और केंद्र सरकार के अधिकारियों के अलग-अलग आदेशों से घपला होता है उससे लोगों में उदासीनता आई है. लगता है दिल्ली को प्रदेश का दर्जा दिए जाने से—जिससे उसकी अलग राजनैतिक पहचान बनेगी—यहां के लोगों को राजनैतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाया जा सकता है. —पंकज पचौरी

हरियाणा

जातीय विभाजन

देवीलाल का रुतबा घटा

हरियाणा में लोकसभा चुनाव परिणामों की यदि एक शब्द में व्याख्या करनी हो तो वह है—जाट बनाम गैर-जाट; क्योंकि देवीलाल लोकसभा की दस में से छह सीटें हिसार, सिरसा, रोहतक, सोनीपत और महेंद्रगढ़ जैसे जाटबहुल इलाकों से ही जीतने में सफल हुए हैं.

इसके दो प्रमुख कारण रहे. एक तो यह कि भजनलाल और बंसीलाल जैसे इंका नेताओं ने देवीलाल सरकार पर 'जाटों के कुशासन' का गहरा ठप्पा लगा दिया है. दूसरे, चुनाव से हफ्ता भर पहले कृपाराम पूनिया और पार्टी के दूसरे पांच वरिष्ठ सदस्यों द्वारा बगावत और इस्तीफा दिए जाने का भी प्रतिकूल असर पड़ा. फिर हरियाणा सरकार में हावी परिवारवाद एक और अहम मुद्दा था, जो देवीलाल के खिलाफ गया. कभी देवीलाल के सहयोगी रहे पूनिया कहते हैं, "यहां गैर-जाट होना एक अभिशाप बन गया है." सभी बागी विधायकों की एक सुर में शिकायत थी, "देवीलाल हरियाणा में अपने परिवार का ही शासन स्थापित करना चाहते हैं."

मजेदार बात यह रही कि देवीलाल पर

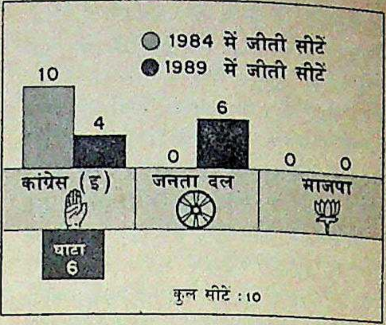

किए शाब्दिक हमलों के कारण कट्टर जाटों के वोट तो उन्हें मिल गए लेकिन भाजपा प्रत्याशियों—सूरजभान (अंबाला) और सुषमा स्वराज (करनाल) को इससे नुकसान उठाना पड़ा. हरियाणा के गैर-जाटों—ब्राह्मण, पंजाबी और पिछड़ी जातियों—ने भाजपा के बजाए इंका को अपने वोट देना पसंद किया.

इंका को यहां उम्मीद से ज्यादा सफलता मिली. जनता दल का गढ़ समझे जाने वाले हरियाणा में चार सीटें जीतकर उसने अपने अस्तित्व का एहसास करा दिया.

लेकिन देवीलाल जरा भी चिंतित नहीं. बड़े आत्मविश्वास से वे कैफियत देते हैं, "इस बार हमने छह सीटें जीती हैं, जबकि 1984 में हमें एक भी सीट नहीं मिली थी." लेकिन वे यह जानते हैं कि बंसीलाल और भजनलाल को यदि इंच भर जगह मिल जाए तो वे एक मील तक घुस आने की क्षमता रखते हैं. —हरिंदर बवेजा

तमिलनाडु

महंगाई ने मार दिया

जयललिता ने बदला भंजाया

द्रमुक के लिए इससे बड़ा सदमा और क्या हो सकता था. 1984 में वह अपने दो सदस्य लोकसभा में भेजने में कामयाब रही थी. और उम्मीद की जा रही थी कि इस बार वह बेहतर स्थिति में आएगी. पर सारा मामला गड़बड़ा गया और उसके सभी उम्मीदवार धराशायी हो गए. भाकपा की जीती एक सीट को छोड़कर इसके सहयोगी दलों का भी यही हश्र हुआ.

इसके एकदम विपरीत अन्ना द्रमुक-इंका गठबंधन ने 38 में से 37 सीटें बटोर लीं, जिनमें से अन्ना द्रमुक अपने सभी 11 उम्मीदवारों को जिताने में सफल रही.

लेकिन ये चुनाव परिणाम एकदम अप्रत्याशित भी नहीं हैं. तमिलनाडु के मतदाताओं ने केंद्र और राज्य में हमेशा अलग-अलग पार्टियों को सत्ता सौंपी है. लोकसभा के लिए इंका ही उनकी पहली पसंद रही है और इस बार भी यही हुआ. यहां से जीतने वाले इसके प्रमुख नेताओं में केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम, एम.वी. अरुणाचलम और आर. प्रभु के अलावा वैजयंती माला बाली शामिल हैं.

द्रमुक के सर्वेसर्वा एम. करुणानिधि को इस पराजय का शायद पूर्वाभास हो गया था. तभी चुनाव से पहले उन्होंने बयान दे दिया था कि चुनावों के नतीजे किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

तरह द्रमुक सरकार के कामकाज की कसौटी नहीं माने जाएंगे. दूसरी ओर इसके विरोधी गठबंधन—खासकर अन्ना द्रमुक अध्यक्ष जयललिता चुनाव को 'द्रमुक शासन के बारे में जनमत संग्रह' ही करार देती रहीं. तमिलनाडु इंका अध्यक्ष वी.के. राममूर्ति के अनुसार, "चुनाव नतीजे करुणानिधि के खिलाफ स्पष्ट जनादेश हैं."

असल में अन्ना द्रमुक-इंका गठबंधन की जीत आशावादिता की जीत है. दस महीने पहले दोनों ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया था. नतीजतन, विधानसभा चुनाव में द्रमुक भारी बहुमत से जीती.

मगर इंका-अन्ना द्रमुक की यह जीत चुनावी गणित का नतीजा भर नहीं है. आधे से ज्यादा चुनाव क्षेत्रों में इसके प्रत्याशी एक लाख से ज्यादा वोटों के अंतर से जीते. बोफोर्स घोटाला भी यहां के मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर पाया. उनके लिए तो खाद्य तेल और चावल की तंगी ही सबसे बड़ा मुद्दा रही, जिसे जयललिता अपनी हर जनसभा में जोर-शोर से उठाती रहीं.

यह जयललिता की व्यक्तिगत जीत भी है. पिछले एक साल में वे अन्ना द्रमुक की निर्विवाद नेता के रूप में उभरी हैं और अब तो राज्य की जनता ने भी उनके नेतृत्व पर अपनी मुहर लगा दी है.

हालांकि उनकी पार्टी ने लोकसभा की

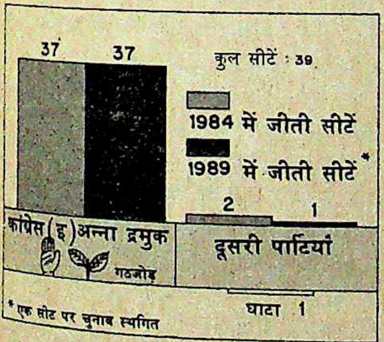

ज्यादातर सीटें इंका के लिए छोड़ दी थीं पर गठबंधन में वरिष्ठता उन्हीं की पार्टी की रही. अब उनकी नजरें मुख्यमंत्री की कुर्सी पर लगी हैं. उनका यह सपना पूरा होने में कोई अड़चन है तो यही कि इंका शायद केंद्र में सत्ता में न लौट पाने के कारण द्रमुक सरकार को बरखास्त न कर पाए.

केंद्र में इंका के सत्ता में लौटने पर राज्य सरकार की बरखास्तगी का डर द्रमुक खेमे में भी फैला हुआ है. उसकी यह आशंका मद्रास में पार्टी मुख्यालय के बाहर उसके एक कार्यकर्ता के हताशापूर्ण सवाल से जाहिर होती है कि "क्या वी.पी. सिंह सत्ता में आएंगे?" इस हताशा से शायद उन्हें राहत मिले.

—कविता शेट्टी

आंध्र प्रदेश

कुनबे के खिलाफ

तेलुगु देशम खतरे में

नंदमूरि तारक रामराव और उनकी तेलुगु देशम पार्टी के लिए चुनाव परिणाम भविष्य का संकेत देते हैं. रामराव सरकार के प्रति लोगों की नाराजगी का लाभ उठाते हुए इंका ने अपने 39 उम्मीदवारों को जितवा लिया. तेलुगु देशम को मात्र दो स्थान मिले.

ये परिणाम 1984 की धारा के ठीक उलट थे, जब इंका को राज्य की 42 में से सिर्फ छह सीटें ही मिली थीं. इस बार तो रामराव को भी पराजय का अपमान झेलना

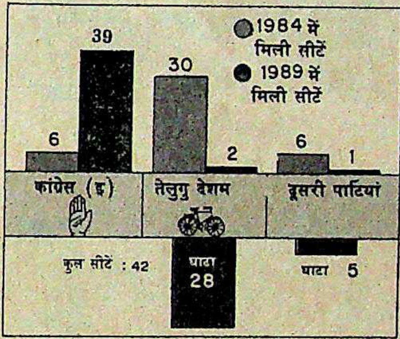

पड़ा. जिन दो विधानसभा क्षेत्रों से वे चुनाव लड़ रहे थे, उनमें कल्वाकुर्ती में वे हार गए. जनता दल महासचिव और राष्ट्रीय मोर्चे के उम्मीदवार एस.जयपाल रेड्डी जैसे दिग्गजों का भी यही हाल हुआ. उन्हें पूर्व केंद्रीय उपमंत्री एम. मल्लिकार्जुन ने हराया. जयपाल रेड्डी ने माना, "इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि लोग रामराव के कामकाज के तरीकों से नाखुश थे."

मजेदार बात यह है कि प्रायः सभी कांग्रेसी उम्मीदवार काफी बड़े अंतर से जीते. अकेले के. रामकृष्ण की जीत का अंतर बहुत कम था. उन्होंने अनकपल्ली संसदीय क्षेत्र में तेलुगु देशम के पी. अप्पल नरसिंहन को मात्र नौ वोटों से हराया.

भंग लोकसभा में तेलुगु देशम के नेता सी. माधव रेड्डी के अनुसार लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होने से भी इंका को फायदा हुआ. जयपाल रेड्डी भी मानते हैं, "स्थानीय और क्षेत्रीय मुद्दे राष्ट्रीय मुद्दों पर हावी हो गए. विधानसभा चुनाव कराना रामराव की गलती थी."

आधी सीटों पर नए उम्मीदवार देने का वादा न पूरा करना भी रामराव को महंगा पड़ा. उधर, दोनों दामादों—चंद्रबाबू नायडू और वेंकटेश्वर राव की लड़ाई से भी पार्टी में गुटबाजी और नाराजगी बढ़ी थी. अब नायडू समर्थक आरोप लगाते हैं कि वेंकटेश्वर राव ने ही 'कमजोर उम्मीदवारों' को टिकट दिलवाया.

लेकिन दरअसल इस चुनाव में रामराव विरोधी लहर और कांग्रेस द्वारा नए उत्साह से काम करना एकदम स्पष्ट दिखा. प्रदेश इंका अध्यक्ष मर्रि चेन्ना रेड्डी ने इस जीत का श्रेय "पार्टी कार्यकर्ताओं के मैदान में उतरने के मजबूत इरादों" को दिया. इसके अलावा पार्टी को रेड्डी की संगठन क्षमता का लाभ मिलने के साथ-साथ तेलंगाना क्षेत्र के रेड्डी समुदाय में उनके व्यापक असर का भी भरपूर फायदा मिला.

तेलुगु देशम के लिए इस चुनाव के नतीजों का अर्थ काफी 'गंभीर' है. इससे उसके भविष्य पर सवालिया निशान लग गए हैं. अगर रामराव को अपनी पार्टी बचानी है तो उन्हें पार्टी कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम दे सकने वाले कुशल लोगों की टीम बनानी पड़ेगी. अभी भी काफी उत्साह से भरी पार्टी की तेजतर्रार राज्यसभा सदस्य रेणुका चौधरी कहती हैं, "तेलुगु देशम तूफान की तरह एक बार फिर पूरे राज्य में छा जाएगी." लेकिन चुनावों में तेलुगु देशम की यह स्थिति देखते हुए फिलहाल यह खयाली पुलाव ही लगता है.

—अमरनाथ के. मेनन

कर्नाटक

बंटवारे से घाटा

इंका की लाज बचाई

कर्नाटक ने एक बार फिर लड़खड़ाती इंका को ठोस आधार मुहैया किया है. उत्तर भारत में बुरी तरह पिट जाने वाली इस पार्टी ने कर्नाटक की 27 सीटें जीतकर इमरजेंसी के बाद हुए 1977 के चुनावों में मिली अपनी 26 सीटों का आंकड़ा भी पार कर लिया है.

इस प्रचंड लहर के चलते इंका ने वे चार

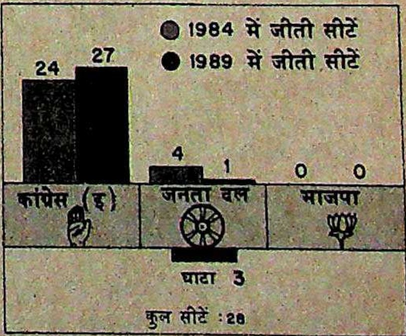

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीटें भी हथिया ली हैं, जो 1984 में उसने जनता पार्टी के हाथों खोई थीं. इनमें दक्षिण बंगलूर का प्रतिष्ठित निर्वाचन क्षेत्र भी शामिल है, जहां से पिछले तीन चुनावों में गैर-इंका प्रत्याशी ही संसद में जाते रहे हैं. पूर्व मुख्यमंत्री आर. गुंडूराव की जनता दल प्रत्याशी एस.एम. रघुपति पर एक लाख से भी अधिक मतों की विजय इंका के पक्ष में बह रही लहर का ही प्रतीक है.

उत्तर भारत में इंका प्रत्याशी जहां एक के बाद एक धराशायी होते जा रहे थे, वहीं कर्नाटक में प्रमुख इंका नेता बड़ी सहजता से कामयाबी की ओर बढ़े. केंद्रीय ग्रामीण विकासमंत्री बी. जनार्दन पुजारी और इंका महासचिव ऑस्कर फर्नांडीस तो एक लाख से भी ज्यादा मतों से जीते जबकि केंद्रीय राज्यमंत्री जाफर शरीफ ने जनता दल प्रत्याशी लारेंस फर्नांडीस को हराने के साथ-साथ जनता पार्टी समर्थित सैयद शहाबुद्दीन को तीसरे नंबर पर धकेल दिया. विवादास्पद बोफोर्स समिति के अध्यक्ष रहे बी. शंकरानंद, जो 1984 में सिर्फ 3,000 वोटों के अंतर से जीते थे, इस बार भारी बहुमत से विजयी हुए. शरीफ कहते हैं, "हमें हैरानी जीत से नहीं हुई बल्कि जिस सहजता से हम जीते वह हैरान करने वाली है."

स्पष्ट है कि इंका राज्य में जनता दल विरोधी लहर के चलते जीती है. उसके खिलाफ भीषण जन असंतोष मतदान के दिन ही उजागर हुआ. इंका नेता भी मानते हैं कि राज्य में राजीव के चुनावी दौरों के दौरान भी यह संकेत नहीं मिला.

उधर, जनता दल ने लोकसभा चुनावों को छह साल में जनता पार्टी/जनता दल सरकार के कामकाज के प्रति जनमत संग्रह के रूप में लिया लगता है. दल के मुख्य चुनाव संचालक रामकृष्ण हेगड़े ने बोफोर्स, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता जैसे प्रमुख मुद्दों को बहस के मुद्दे नहीं बनाए. अपने चुनाव अभियान को उन्होंने जनता शासन की उपलब्धियों के इर्द-गिर्द ही केंद्रित रखा, जो मतदाता की नजर में नगण्य थीं.

राज्य जनता दल ने लोकसभा के लिए उम्मीदवारों के चयन में भी लापरवाही बरती और सारा जोर विधानसभा चुनाव के लिए प्रत्याशी चुनने पर ही दिया. उसकी धारणा शायद यह थी कि यदि मतदाताओं ने विधानसभा प्रत्याशी को वोट दिया तो वे लोकसभा प्रत्याशी को भी वोट दे देंगे. एम. रघुपति मानते हैं, "हमारा सारा गणित गलत साबित हुआ."

1978 में चिकमंगलूर से इंदिरा गांधी को जिताकर दोबारा केंद्रीय मंच पर बैठाने वाले इस राज्य ने इंका के लिए एक बार फिर उम्मीदें बंधाई हैं. —चिदानंद राजघट्टा

केरल

तुरुप चल गया

इंका ने भावनाएं भुनाईं

केरल में अघोषित सुविधाभोगी गठजोड़ ने माकपा की अगुआई वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चे की सरकार की चूलें हिला दीं. इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे ने कुल 20 संसदीय सीटों में से 17 पर जीत हासिल कर वामपंथियों

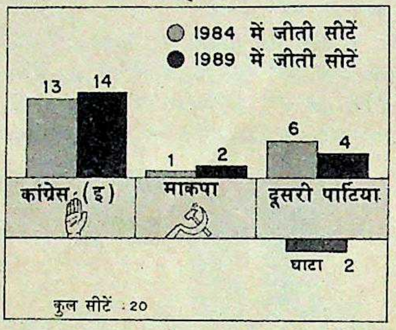

के पाले में सिर्फ 3 सीटें ही जाने दीं. मतदान के प्रतिशत से जाहिर हो गया कि भाजपा ने वामपंथियों को देश में उनके दो में से एक गढ़ में उखाड़ फेंकने के लिए संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे को अघोषित समर्थन दिया.

जाहिर है कि इंका की अगुआई वाले मोर्चे ने सांप्रदायिक वोटों को भुनाया.

साथ ही यह भी स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार, नैतिकता के संकट और सांप्रदायिकता के बढ़ते खतरों के मुद्दों पर चला माकपाई प्रचार अभियान भी देश के सबसे शिक्षित मतदाताओं के सामने नाकाम साबित हुआ. केरल के मतदाताओं ने आम चुनाव में कांग्रेस का ही समर्थन किया है और वह विपक्षी एकता के प्रयोगों के प्रति संशकित है. इंका के मुख्य रणनीतिक के. करुणाकरण ने कहा कि यह जीत केंद्र में स्थायित्व को जनादेश है.

बहरहाल, स्थानीय मुद्दों को उभारकर और सांप्रदायिक तुरुप के सही इस्तेमाल के कारण संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे ने तेजतर्रार कम्युनिस्टों का सफाया कर दिया और वाममोर्चा सरकार के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया. —रमेश मेनन

पूर्वी भारत

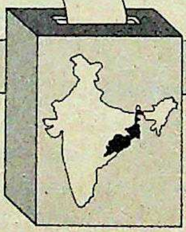

प. बंगाल

मोर्चे की मजबूती

वाम मोर्चे का गढ़ न टूटा

देश भर में अनेक मुख्यमंत्री जहां परिवर्तन की लहर में उखड़ गए, वहीं ज्योति बसु लौह स्तंभ की तरह डटे रहे. राज्य में लोकसभा की जिन 41 सीटों पर चुनाव हुए उनमें माकपा की अगुआई वाले वाम मोर्चे ने 36 स्थान जीतकर राष्ट्रीय चुनाव रुझान से अलग ही दिशा अपनाई. यहां मतदाताओं ने परिवर्तन की हवा में न बहकर निरंतरता के पक्ष में वोट दिया.

इंका महज चार सीटें ही हासिल कर पाई. इनमें दो तो राजनीति के पुराने खिलाड़ियों—प्रदेश इंका अध्यक्ष गनी खां चौधरी और केंद्रीय राजस्व राज्यमंत्री अजीत कुमार पांजा ने जीतीं. लेकिन इंका के नए प्रत्याशी देबीप्रसाद पाल की विजय सचमुच हैरानी वाली साबित हुई. पाल ने इंका में रहे पूर्व केंद्रीय कानूनमंत्री अशोक सेन को हराया. सेन इस बार कलकत्ता की सीट से जनता दल के टिकट पर लड़े थे.

मगर राज्य में इंका के एकमात्र गढ़ कलकत्ता में पार्टी को कई स्थान गंवाने पड़े. तेजतर्रार ममता बनर्जी जादवपुर से हार गईं तो केंद्रीय वाणिज्य राज्यमंत्री प्रियरंजन दासमुंशी हावड़ा से पिटे.

स्पष्ट है कि कम्युनिस्ट नेताओं ने बहुत-से नए चेहरों और कई सम्माननीय दिग्गजों को मैदान में उतारकर एक बार फिर अपने चातुर्य का प्रदर्शन किया. अनेक ऐसे लोग कामयाब हो गए. इनमें ममता बनर्जी को धूल चटाने वाली अंग्रेजी की लेक्चरार मालिनी भट्टाचार्य और जाने-माने अर्थशास्त्री डॉ. बिप्लब दासगुप्त भी हैं.

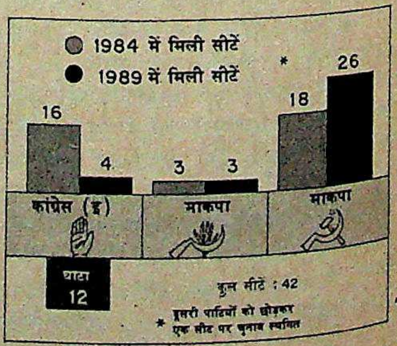

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वामपंथियों की एकता के विपरीत इंका खेमे में अंदरूनी झगड़े और उलझाव की स्थिति बनी रही. इंका के नेता एक-दूसरे की जड़ें काटने में लगे रहे. चुनाव से पहले उनमें आरोपों-प्रत्यारोपों का सिलसिला चलता रहा और जब पराजय सामने दिखने लगी तो वे 'कम्युनिस्ट गुंडों' की निंदा करने में एकजुट हो गए. उनका आरोप था कि इन गुंडों ने मतदान केंद्रों पर कब्जे किए और धांधली की. हिंसा और पुलिस फायरिंग की खबरों से चुनाव प्रक्रिया में बाधा भी आई. इंका विधायक सोमेन मित्रा ने कहा, "यह चुनाव नहीं, लोकतंत्र से बलात्कार है."

लेकिन वाम मोर्चा को कोई परेशानी नहीं हुई. माकपा नेता बिमान बोस ने कहा, "बंगाल ने निष्पक्ष चुनावों का एक और रिकार्ड कायम किया है. इंका की हार से स्पष्ट है कि लोगों ने उसकी नीतियों को रद्द करके वामपंथ पर भरोसा व्यक्त किया है." जाहिर है, दूसरे राज्यों के विपरीत बंगाल के शासकों का प्रदर्शन निराशाजनक नहीं था वरना उनके मंजे कार्यकर्ता भी बाकी देश में चल रहे तूफान के सामने कदापि नहीं टिक पाते.

—फरज़ंद अहमद

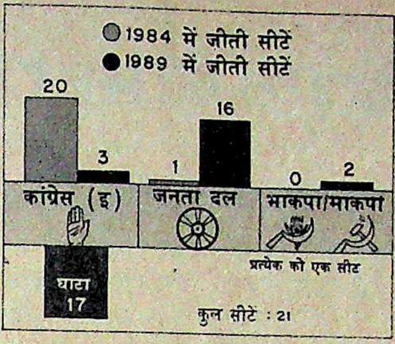

ओडीसा

छवि का असर

पटनायक को मात मिली

अरसे से राजनैतिक बियाबान में रहे एक पटनायक द्वारा ओडीसा में दूसरे पटनायक को पटखनी देने का मतलब साफ था. लोगों ने सिर्फ परिवर्तन के पक्ष में ही मतदान नहीं किया, जैसा कि मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक का मानना है, बल्कि मतदाताओं ने उनके कुशासन के खिलाफ बगावत की.

सत्तारूढ़ पार्टी की पराजय तो 1977 से भी ज्यादा भयानक रही. तब वह कम-से-कम पांच सीटें बचाने में कामयाब हुई थी. नतीजा यह है कि राज्य इंका में अब उथल-पुथल मच गई है. यहां तक कि अध्यक्ष कान्हूचरण लेंका भी इस्तीफा देने वालों की कतार में लग गए हैं.

राज्य में लोकसभा चुनाव के प्रचार में स्थानीय मुद्दों पर अधिक जोर था. जानकी बल्लभ पटनायक अपना 10 वर्षीय शासन जारी रखने पर लोगों की सहमति चाहते थे, तो जनता दल नेता बीजू पटनायक राज्य की अगली सरकार की अगुआई के लिए मतदाताओं का भरोसा जीतना चाहते थे.

पर नतीजे आने पर वे लोग भी दंग रह गए जिन्होंने जनता का मूड बहुत हद तक भांप लिया था. जनता दल-भाकपा-माकपा गठबंधन के 18 लोग भारी अंतर से जीते जबकि केंद्रीय संचार राज्यमंत्री गिरधर गोमांगो सहित इंका के मात्र तीन लोग मामूली अंतर से जीते.

इंका को करारा झटका उसकी सबसे तगड़ी उम्मीदवार और मुख्यमंत्री की पत्नी जयंती पटनायक के हारने से लगा. जनता दल के श्रीकांत जेना ने उन्हें कटक में शिकस्त दी. मुख्यमंत्री पटनायक के समर्थक इस हार के लिए अंदरूनी झगड़ों और लेंका की अगुआई में असंतुष्टों की चालों को उत्तरदायी ठहराते हैं. सत्तारूढ़ पार्टी को के.पी. सिंह देव और पूर्व प्रदेश इंका अध्यक्ष नित्यानंद मिश्र की हार से भी धक्का लगा.

आम धारणा यह मानी जा रही है कि राजीव गांधी और जे.बी. पटनायक दोनों की खराब छवि पार्टी पर भारी सिद्ध हुई. इंका में अब भगदड़ की स्थिति दिख रही है, हालांकि पटनायक ने बड़े पैमाने पर दल-बदल की संभावना से इनकार किया है. उधर मुख्यमंत्री ने तत्काल विधानसभा भंग करने और पार्टी आलाकमान से अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करने का इरादा जाहिर किया.

बरसों से वापसी की कोशिश में लगे 'कलिंग सम्राट' बीजू पटनायक के लिए यह एक व्यक्तिगत विजय है. चुनाव परिणाम स्पष्ट होने पर बीजू उत्तेजित नहीं हुए. उन्होंने कहा, "स्वामी की भूमिका निभाने वाली जनता ने अब अपने सेवक बदलने का फैसला किया है."

—फरज़ंद अहमद

पश्चिम भारत

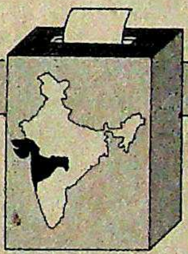

महाराष्ट्र

पकड़ ढीली पड़ी

और विपक्ष थोड़ा मजबूत

महाराष्ट्र में इंका के गढ़ में दरार पड़ गई है. और ऐसा किया हिंदुत्व के शंखनाद के साथ भाजपा-शिवसेना गठजोड़ ने 48 संसदीय सीटों में से 14 पर जीतकर. बंबई में इस गठजोड़ ने छह में से चार सीटें हथिया लीं. इंका 28 सीटों पर काबिज होकर सिर्फ आधा किला ही बचा पाई.

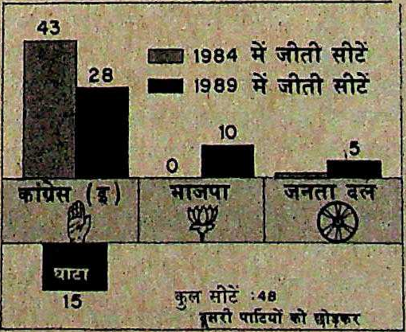

हालांकि जनता दल को निराशा हाथ लगी पर उसने पांच सीटें लेकर अपना हिस्सा बढ़ा लिया. और तो और, भाकपा भी एक सीट पर काबिज हो गई.

शिवसेना पहली दफा अपने सांसद लोकसभा में भेजेगी. उसके विजयी उम्मीदवारों में मजदूर नेता दत्ता सामंत को मात देने वाले वरिष्ठ शिव सैनिक वामन महाडिक, मराठी पत्रकार विद्याधर गोखले और परभणी से अशोक देशमुख हैं.

बंबई-उत्तर से प्रदेश जनता दल प्रमुख मृणाल गोरे पर सेना की गाज गिरी और बंबई इंका अध्यक्ष मुरली देवड़ा को उसने लगभग हार तक पहुंचा दिया था. सिर्फ अभिनेता सुनील दत्त ही बंबई-उत्तर-पश्चिम से चैन से जीत सके.

विपक्ष ने इंका के गढ़ में सेंध तो लगा दी पर सत्तारूढ़ दल ने पश्चिमी महाराष्ट्र के चीनी वाले क्षेत्र में 10 में से 9 सीटें जीतकर अपनी पकड़ कायम रखी. इस इलाके से जीतने वालों में कांग्रेस-इ महासचिव विट्ठल नरहरि गाडगिल सबसे प्रमुख हैं.

मुख्यमंत्री शरद पवार ने चुनाव प्रचार शुरू होने के तुरंत बाद ही नतीजों की भविष्यवाणी कर दी थी. उनका मानना था कि पिछली लोकसभा में इंका की 44 सीटों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कम-से-कम 16 पर मुश्किल हो सकती है. उन्होंने कहा था, "कुछ मौजूदा सांसदों की नामजदगी से पार्टी मुश्किल में पड़ सकती है." दूसरे राज्यों की तरह यहां भी नाराज मतदाताओं ने सिर्फ 23 मौजूदा सांसदों को ही जिताया.

इंका की हार का सबसे अधिक श्रेय हिंदुत्व की लहर को ही जाता है. विदर्भ और मराठवाड़ा जैसे इंका के परंपरागत गढ़ों में भी यह लहर तेज थी. शासक दल के लिए यही खास परेशानी का सबब है. इस आम चुनाव के पहले 1977 में इंका को मुंह की खानी पड़ी थी लेकिन उस समय भी वह विदर्भ की सभी 11 सीटें निकाल ले गई थी. इस साल यहां केंद्रीय विदेशमंत्री नरसिंह राव ने अपनी जीत पक्की तो जरूर की पर भाजपा ने चार सीटें और भाकपा ने एक सीट पर जीत दर्ज की. भाजपा के लिए यहां जीत काफी अहमियत रखती है क्योंकि इससे उसे 'ब्राह्मण-बनिया' पार्टी की छवि से निजात पाने में मदद मिलेगी.

पड़ोसी मराठवाड़ा में भाजपा ने जहां एक और सीट जीती वहीं शिवसेना ने अहम औरंगाबाद सहित दो सीटें जीतीं. इसी क्षेत्र से राजीव गांधी ने राज्य में प्रचार अभियान का श्रीगणेश किया था. मराठवाड़ा में औसत से ज्यादा मुस्लिम वोट हैं. और कुछ साल पहले सेना के पांव जमाने पर यहां सांप्रदायिक टकराव के आसार नजर आ रहे थे. जहां सेना के नेताओं का कहना था कि मुसलमानों तक ने उनके उम्मीदवारों को वोट दिया वहीं पवार ने इस दावे को पूरी तरह झूठा करार दिया.

अब साफ लगता है कि शिवसेना की जीत का मजबूत आधार माली, बंजारा और ढूंगर जैसी पिछड़ी जातियों का पुख्ता समर्थन है. राज्य में करीब आधी आबादी होने के बावजूद इन्हें हमेशा मराठा लोग दबाए रखते रहे हैं. मराठा आबादी राज्य में एक-चौथाई ही है और इंका में इनका दबदबा है. सेना की अगुआई तो ब्राह्मणों के हाथ है पर उसने पिछड़ी जातियों को एक नया और उग्र तेवर प्रदान किया है.

हिंदुत्व की जोरदार लहर ने सशक्त किसान नेता शरद जोशी को भी उनके गढ़ नासिक और विदर्भ में किनारे लगा दिया है. उम्मीद से भरे सेना प्रमुख बाल ठाकरे ने गर्जना की, "आगामी विधानसभा चुनाव में हमारी जीत की नींव पड़ गई है."

बहरहाल, राज्य के चुनावी नतीजों से यही लगता है कि तीन साल पहले पवार और उनकी कांग्रेस (स) के साथियों के इंका में शामिल होने से विपक्ष में जो शून्य पैदा हुआ था, उसे सेना-भाजपा गठजोड़ अब भरने लगा है.

—एम. रहमान

गुजरात

हिंदुत्व की लहर

भ्रष्टाचार भी बड़ा मुद्दा

गुजरात में सांप्रदायिकता जातिवाद पर हावी रही. इंका द्वारा रचा गया 'खाम' (क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी और मुस्लिम) समीकरण हिंदुओं के एकमुश्त मतदान से पूरी तरह धराशायी हो गया और नतीजतन सत्तारूढ़ दल का वस्तुतः सफाया हो गया. पार्टी राज्य की 26 लोकसभा सीटों में तीन ही हासिल कर पाई. भाजपा अपने सभी 12 उम्मीदवारों को बड़े अंतर से जिताने में कामयाब रही जबकि जनता दल की झोली में 11 सीटें पड़ीं, जिससे कुल मिलाकर विपक्ष ने 23 लोकसभा सीटें हथिया लीं. मजे की बात है कि इंका ने भी 1984 में इतनी ही सीटें जीती थीं. लेकिन इस बार इंका का प्रदर्शन 1977 के मुकाबले कहीं ज्यादा खराब रहा. उस दौरान इसने 26 में से 10 सीटें हासिल की थीं.

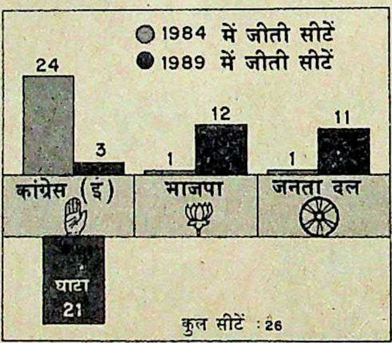

चुनावों में जातिवादी समीकरण अहम कतई नजर नहीं आए. लेकिन यह कोई प्रसन्नता की बात नहीं. जातिवाद हावी न होने की सीधी-सी वजह थी कि सांप्रदायिकता के आगे इसकी एक न चली. हिंदू लहर का सीधा मतलब है कि मतदाताओं ने विपक्ष का पल्लू थाम लिया और इंका के जातिवादी समीकरण की छुट्टी कर दी.

राजनैतिक शास्त्री प्रोफेसर प्रवीण सेठ कहते हैं, "अन्य पिछड़ी जातियों वाले इलाकों में विपक्षी उम्मीदवारों की जीत के अंतर से पता चलता है कि उन्होंने भी विपक्ष को ही भारी संख्या में वोट दिया. यह साफ तौर पर राम जन्मभूमि के मुद्दे से पैदा हुई हिंदू लहर का नतीजा है." मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी भी अपनी पार्टी की पराजय की यही वजह बताते हैं.

विश्व हिंदू परिषद द्वारा तकरीबन 8,000 गांवों में रामशिला पूजा कराए जाने से ग्रामीण इलाकों के हिंदू एकजुट हो गए. मतदान की पूर्वसंध्या पर सांप्रदायिकता भड़कने से उन्होंने भाजपा की ओर रुख कर लिया. इंका को 'हिंदुओं के शातिर दुश्मन' के रूप में पेश किए जाने से न केवल भाजपा को बल्कि जनता दल को भी फायदा पहुंचा. नतीजतन वित्त राज्यमंत्री बी.के. गढ़वी, पूर्व प्रदेश इंका अध्यक्ष अहमद पटेल और पूर्व केंद्रीय मंत्री योगेंद्र मकवाना सहित अनेक कांग्रेसी दिग्गजों को अपमानजनक हार का मुंह देखना पड़ा.

इसके अलावा दूसरे मुद्दों ने भी इंका की उम्मीदों पर पानी फेर दिया. राजीव गांधी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों के साथ-साथ चौधरी और उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगियों पर भी भ्रष्टाचार के आरोप थे. चौधरी और पूर्व मुख्यमंत्री माधवसिंह सोलंकी के समर्थकों के बीच खुली जंग ने तो और भी ज्यादा नुकसान पहुंचाया. उन लोगों ने एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए काम किया. दैनिक 'जय हिंद' के संपादक यशवंत शाह पूछते हैं, "अलग-अलग आस्थाओं वाला कोई घर क्या कभी एकजुट रह सकता है?"

अन्य मुद्दों ने भी इसमें भूमिका अदा की. मूंगफली की रिकार्ड फसल होने के बावजूद मूंगफली के तेल की कीमतें बढ़ गईं. और किसानों के दो संगठनों भारतीय किसान संघ और खेडुत समन्वय ने इंका के खिलाफ वोट देने का आह्वान किया. इसलिए किसानों की नजर में इंका उनकी नंबर एक दुश्मन थी. जाहिर है इंका के पापों का घड़ा लबालब भर गया था.

लेकिन इस सबके बावजूद पार्टी इन बाधाओं को पार कर सकती थी. लेकिन वह एक वजह से ऐसा न कर सकी, वह यह कि विपक्ष अपने मतभेद भुलाने और इंका के खिलाफ एक उम्मीदवार खड़ा करने में कामयाब रहा. चुनाव के पहले भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष शंकर सिंह वाघेला के शब्द इसकी मिसाल नजर आते हैं. उन्होंने कहा, "जनता दल का चक्र कांग्रेस (इ) के लिए कालचक्र साबित होगा और भाजपा का कमल नई शुरुआत का प्रतीक होगा."

यदि पार्टी कमजोर विपक्ष के मुकाबले लड़खड़ा सकती थी तो प्रतिद्वंद्वियों के एकजुट होने पर वह कैसे बचे रहने की उम्मीद कर सकती थी. मतदान के आंकड़े दिखाते हैं कि अगर सभी सीटों पर इंका के खिलाफ एक उम्मीदवार न खड़ा किया गया होता तो विपक्ष इतनी आसानी से नहीं जीत पाता. आपस में हाथ मिलाकर विपक्ष तकरार में जुटे कांग्रेसियों को बाहर करने में सफल रहा.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खूंटा जमाने और उखाड़ने वाले

जैसा कि उम्मीद थी, इस चुनाव ने भारी उथलपुथल किया, कई समीकरणों को गलत साबित कर दिया. कहा जाता है कि प्रेम और युद्ध में सब जायज है. शायद इसीलिए इस चुनावी जंग में तमाम सीमाओं का उल्लंघन किया गया. कई दिग्गज धराशायी हो गए, तो कई गुमनाम योद्धा चमक उठे. धराशायी हुए दिग्गजों, उन्हें परास्त करने वालों और अप्रत्याशित विजय हासिल करने वाले अनजान चेहरों का परिचय:

बूटा सिंह,
जालौर (राज.) से इंका उम्मीदवार

53,405 वोटों से हारे

रघु राय

बूटा सिंह का बूटा उखड़ गया है. राजीव राज के सबसे प्रमुख दरबारी और केंद्रीय गृहमंत्री अपना चुनावी 'गृह' भी नहीं बचा सके. उनका चुनावी 'गृह' जालौर भाजपा के हाथ जा चुका है. केंद्र सरकार में नंबर दो हैसियत वाले बूटा सिंह ने राजस्थान के इस रेगिस्तानी क्षेत्र को खूब 'सींचा'. लेकिन विश्व हिंदू परिषद के साधू भी वहां भगवा झंडा गाड़ देने के लिए जुट गए थे. दिल्ली में बूटा सिंह ने एक करोड़ रु. खर्च करके यज्ञ कराकर इसका मुकाबला करना चाहा पर नतीजा कुछ भी नहीं निकला. घोर सांप्रदायिक प्रचार के बीच हुए चुनाव में उनके प्रतिद्वंद्वी भाजपा के कैलाश मेघवाल ने उन्हें पटखनी दे दी. विक्षुब्ध बूटा सिंह कहते हैं, "अयोध्या मुद्दे पर बदला सधाने के लिए उन्होंने मुझे चुन लिया. यह कोई राजनैतिक प्रचार नहीं था." और सच पूछिए तो यहां त्रिशूल, मशीनगनों और कमांडो पर भारी पड़ गई.

"राम जन्मभूमि पर बदला सधाने के लिए उन्होंने मुझे चुन लिया. यह कोई राजनैतिक प्रचार नहीं था"

एस. जयपाल रेड्डी,
महबूबनगर (आंध्र प्र.) से ज.द. उम्मीदवार

30,000 वोटों से हारे

निश्चित रूप से नई लोकसभा में जनता दल के होशियार तथा विनोदप्रिय सांसद जयपाल रेड्डी की कमी खटकेगी. आठवीं लोकसभा के कमलाकांत तिवारी और कल्पनाथ राय जैसे इंकाई भोंपुओं के मुकाबले रेड्डी ही विपक्ष की मुख्य ढाल थे जो अपनी चुटीली टिप्पणियों और तेज तर्कों से उनकी बोलती बंद कर देते थे.

इंका के एम. मल्लिकार्जुन के हाथों रेड्डी की भारी पराजय का मुख्य कारण राज्य में चली एनटीआर विरोधी आंधी थी. अपनी पराजय से बिदके रेड्डी कहते हैं, "अपने कामकाज के तरीके से रामराव ने इस प्रदेश के शिक्षित मतदाताओं की लोकतांत्रिक संवेदनाओं को आहत कर दिया और लोकसभा के साथ ही विधानसभा चुनाव कराकर उन्होंने प्रदेश को पूरी तरह इंका के हाथ सौंप देने का पक्का बंदोबस्त कर दिया." अब रेड्डी को राज्यसभा में लाने की बात चल रही है शायद उनकी यह वापसी भी उतनी ही मजेदार रहेगी.

प्रमोद पुष्करणा

"अपने कामकाज के तरीके से रामराव ने मतदाताओं को पूरी तरह नाराज कर दिया"

मोहसिना किदवई,
उत्तर प्रदेश (मेरठ) से इंका उम्मीदवार

1,22,041 वोटों से हारीं

दो साल पहले सांप्रदायिक दंगों के बाद हिंसा में तबाह हुए अपने निर्वाचन क्षेत्र मेरठ का दौरा करने आईं तो केंद्रीय शहरी विकासमंत्री मोहसिना किदवई को वहां के लोगों ने 'लौट जाओ, वापस जाओ' के नारों से अपमानित किया था. किदवई के लिए यह संकेत काफी होना चाहिए था क्योंकि इस बार लोगों ने 1,22,041 वोटों से हराकर सचमुच ही उनका बोरिया-बिस्तर समेट दिया है. इस बार प्रत्याशी और निर्वाचन क्षेत्र में तालमेल न रखने की आलाकमान की अव्यावहारिक नीति ने उनकी इच्छा रौंद दी.

फिर, सांप्रदायिक वोटों के ध्रुवीकरण ने भी उनके विरोधी जनता दल उम्मीदवार हरीश पाल की जीत की राह आसान कर दी. मोहसिना के एक सहयोगी कहते हैं, "मुसलमान ही हमारे सबसे बड़े वोट बैंक थे. उन्हें ही हमने गंवा दिया."

"मुसलमान ही हमारे सबसे बड़े वोट बैंक थे. उन्हें ही हमने गंवा दिया"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. नटवर सिंह,
मथुरा (उ.प्र.) से इंका उम्मीदवार

37,688 वोटों से हारे

भरतपुर के राजघराने से संबंधित कुंवर नटवर सिंह के घर से मथुरा की दूरी मात्र 36 किमी है लेकिन इस इलाके ने उनके साथ जो कुछ किया उससे यह उन्हें विलायत-सा लग रहा होगा. पार्टी आलाकमान ने उन्हें पक्षी अभयारण्य के लिए विख्यात भरतपुर से दोबारा चुनाव लड़ने की इजाजत नहीं दी तो 'तीर्थस्थली' मथुरा में शरण लेनी पड़ी.

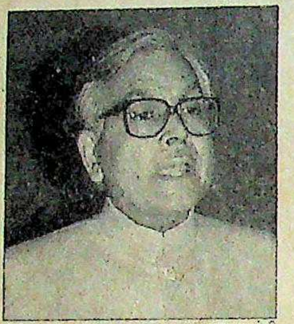
जगनाथ नेगी

लेकिन नटवर सिंह के लिए यह साइबेरिया साबित हुआ. मतदाताओं ने किसी 'बाहरी नेता' के बजाए वर्तमान सांसद मानवेंद्र सिह को ही अपना समर्थन दिया.

"विपक्ष ने चुनाव प्रचार में जिस तरह सांप्रदायिकता भरी उससे मुसलमान हमसे नाराज हो गए"

लेकिन नटवर सिंह इस तीर्थस्थल के 'हिंदूपन' को अपनी हार की मुख्य वजह मानते हैं. वे कहते हैं, "मुसलमान हमसे पहले से ही नाराज बैठे थे. विपक्ष ने चुनाव प्रचार में जिस तरह सांप्रदायिकता भरी उससे पूरा समुदाय ही हमारे खिलाफ हो गया." भारतीय विदेश सेवा में लंबे समय तक रहने के बावजूद अपनी पराजय पर वे कूटनैतिक शब्द नहीं बोल पाए. हार के लिए वे विपक्षी 'प्रचार के घटिया स्तर' को जिम्मेवार बताते हैं.

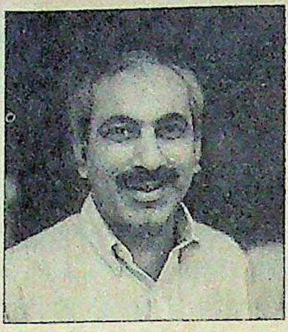

एम.जे. अकबर,
किशनगंज (बिहार) से इंका उम्मीदवार

35,000 वोटों से जीते

टेलीग्राफ' का संपादक पद छोड़कर चुनाव मैदान में इंका उम्मीदवार के रूप में उतरकर एम.जे. अकबर ने सबको हैरान कर दिया. लेकिन चुनाव जीतकर उन्होंने और भी अधिक हैरानी पैदा कर दी.

"सांप्रदायिक ताकतों को उखाड़ फेंकने वाले निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करना अपने में बड़ी बात है"

बिहार में बहने वाली इंका विरोधी आंधी में भी उनकी जीत का जितना श्रेय राजीव गांधी से उनके करीबी संबंधों और जबरदस्त प्रचार अभियान को नहीं जाता, उतना दो और मुसलमान उम्मीदवारों के बीच मुस्लिम मतों के बंटवारे को जाता है. देखना है कि इंका के सत्ता से बाहर रहने के बाद वे किशनगंज को 'मिनी अमेठी' बनाने का अपना वादा पूरा कर पाते हैं या नहीं. वे कहते हैं, "सांप्रदायिक ताकतों को उखाड़ फेंकने वाले निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करना अपने आपमें बड़ी बात है."

राजेश पायलट,
भरतपुर (राज.) से इंका उम्मीदवार

70,452 वोटों से हारे

नटवर सिंह को भरतपुर से टिकट न देकर वहां से भूतल परिवहनमंत्री राजेश पायलट को लड़ाने का इंका आलाकमान का फैसला उसकी नासमझी दर्शाता है. पायलट यहां से लड़ने को तैयार नहीं थे. वे पड़ोस की दौसा सीट पर ही सारा ध्यान दिए हुए थे, जहां से वे पिछली बार जीते थे. और आलाकमान के इस फैसले से वे मैदान में उतरे बिना ही बाजी हार चुके थे. रेगिस्तान जैसे इलाके में बसे गांवों में जाने पर पायलट को लगा, "हम तो बोरिया-बिस्तर समेटे घूमने वाले पर्यटक जैसे हैं. नेता ने जहां चाहा, हम चले गए." पायलट जहां भी गए वहां उन्होंने वादा किया, "मैं वादा करता हूं कि दौसा के लिए मैंने जो कुछ किया है, वैसा ही भरतपुर के लिए भी करूंगा." पर भरतपुर के मतदाताओं ने इस भारी-भरकम चुनावी वादे इस वादे पर किसी ने भरोसा नहीं किया

"हम तो पर्यटक जैसे हैं. नेता ने जहां चाहा, हम चले गए"

भवान सिंह

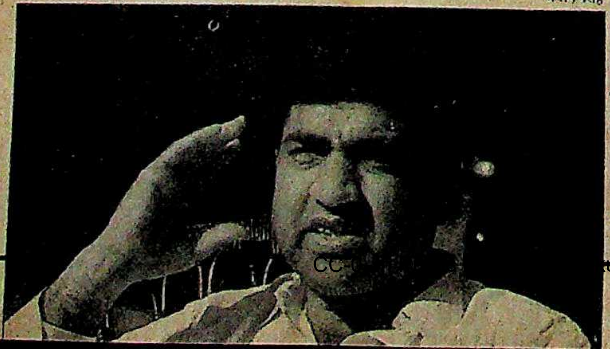

जगदीश टाइटलर
सदर, दिल्ली से इंका उम्मीदवार

32,099 वोटों से हारे

दिल्ली की राजनीति के धुरंधरों में से एक जगदीश टाइटलर राजधानी की सदर संसदीय सीट पर अपने को सुरक्षित महसूस कर रहे थे. लेकिन दस साल तक यहां की सेवा करने के बाद भी खाद्य परिष्करणमंत्री को यहां से 'भूखे' ही लौटना पड़ा. भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विजय कुमार मल्होत्रा से मतगणना के अंतिम दौर तक मुकाबला करने के बाद आखिरकार टाइटलर पिछड़ ही गए. पहले संजय और फिर राजीव के भक्त रहे टाइटलर को मतदाताओं की पुरानी यादों ने पछाड़ दिया. उनके चुनाव क्षेत्र में सिख मतदाताओं की संख्या अच्छी-खासी है और वे लोग 1984 के सिख विरोधी दंगों की खौफनाक याद को भुला नहीं पाए हैं. खुद टाइटलर भी मानते हैं, "एक खास समुदाय के लोगों को मेरे खिलाफ वोट देने के लिए भड़काया गया."

"एक खास समुदाय के लोगों को मेरे खिलाफ वोट देने के लिए भड़काया गया"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj

के.पी. उन्नीकृष्णन,
बाडागरा (केरल) से कांग्रेस (एस) उम्मीदवार

8,209 वोटों से जीते

के. पी. उन्नीकृष्णन लोकसभा में वजनी नेता माने जाते हैं. एक बार फिर उन्होंने यह साबित कर दिखाया है. केरल में इंका लहर से अपनी सीट बचा ले जाने वाले कांग्रेस (एस) के नेता उन्नीकृष्णन लगातार पांचवीं बार बाडागरा से जीते हैं.

भवान सिंह

"पांचवीं बार जीतना बहुत अच्छा लग रहा है. परंतु मुकाबला कड़ा था"

इस विजय पर उनकी विनम्र प्रतिक्रिया थी, "पांचवीं बार जीतना बहुत अच्छा लग रहा है. परंतु मुकाबला सचमुच कड़ा था."

प्रमोद पुष्करणा

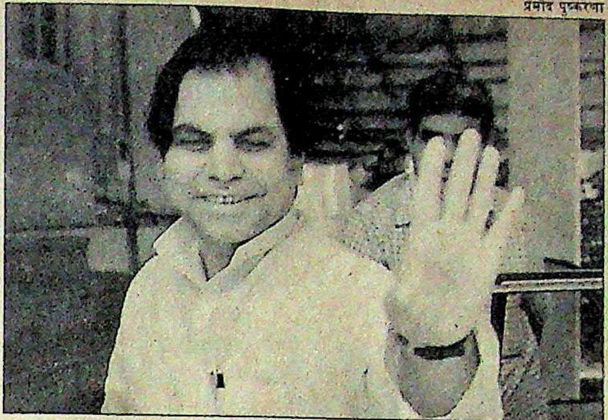

अब्दुर्रहमान अंतुले
कोलाबा (महाराष्ट्र) से इंका उम्मीदवार

1,15,434 वोटों से जीते

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री का 'राजनैतिक वनवास' आखिर खत्म हुआ. कड़े मुकाबले में विपक्ष के गढ़ कोलाबा से यह सीट उन्होंने एक लाख से ज्यादा मतों से जीती है.

उमंग से भरे अंतुले का मानना है कि भारी जनादेश देकर जनता ने उन्हें भ्रष्टाचार के उन आरोपों से बरी कर दिया है जिनके कारण उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ राजनैतिक बियाबान में खो जाना पड़ा. लोकसभा की यह सीट उनके राजनैतिक पुनर्जन्म के लिए भी बहुत जरूरी थी. 1984 में लोकसभा का टिकट न मिलने पर वे इंका छोड़ गए थे. तब उन्होंने बागी उम्मीदवार के तौर पर कोलाबा से चुनाव लड़ा लेकिन हार गए.

कभी अपनी साख खो चुके नेता की यह जीत उल्लेखनीय ही कही जाएगी. राज्य में इंका को लगे अनेक झटकों के मद्देनजर यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है. थके मगर उत्साह से भरे अंतुले ने कहा, "मुझे तो जेल के दरवाजे तक ही पहुंचा दिया गया था. मैंने मुसीबतों का सामना कर अपनी बेगुनाही साबित कर दी. यह वनवास से मेरी वापसी है."

"मैंने मुसीबतों का सामना कर अपनी बेगुनाही साबित कर दी. यह वनवास से मेरी वापसी है"

बलराम जाखड़,
सीकर (राजस्थान) से इंका उम्मीदवार

46,756 वोटों से हारे

सीकर में बलराम जाखड़ का चुनाव प्रचार करते उनके समर्थक गर्व से कहा करते थे, "प्रधानमंत्री तक को बोलने से पहले सीकर से इजाजत लेनी पड़ती है." उनका इशारा लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ के प्रतिष्ठित पद की ओर हुआ करता था. लेकिन उनके विरोधी देवीलाल के समर्थकों ने इसके जवाब में एक नया नारा गढ़कर जाखड़ को फंसा दिया. यह नारा था—'चारा चोर, कमीशनखोर, सीकर छोड़.'

संसद के आखिरी दिनों में चारा घोटाले से संबंधित विवाद के घेरे में फंसे रहे जाखड़ की इस नारे ने बुरी गत कर दी. हालत यह हो गई कि देवीलाल और जाखड़ का मुकाबला एकतरफा हो गया था. 46,000 से

शरद सक्सेना

जाखड़ का दावा कि 'मैं देवीलाल की धुनाई करके रख दूंगा' एक मजाक बनकर रह गया

ज्यादा मतों से हारने वाले जाखड़ का बार-बार दोहराया जाने वाला यह दावा कि 'मैं देवीलाल की धुनाई करके रख दूंगा' अब एक मजाक बनकर रह गया है. एक मतदाता की टिप्पणी थी, "देवीलाल की सभाएं शादी के समारोह जैसी हुआ करती थीं और जाखड़ की सभाओं में मातमपुर्सी का आलम था."

भवानी सिंह,
जयपुर (राजस्थान) से इंका उम्मीदवार

84,487 वोटों से हारे

शरद सक्सेना

जयपुर रियासत के महाराजा रहे भवानी सिंह पहली बार इंका टिकट पर चुनाव में उतरे थे. उन्हें यकीन था कि उनकी पूर्व प्रजा उन्हें दिल्ली के लिए जरूर चुनेगी लेकिन राजनैतिक अखाड़े में यह महाराजा अपेक्षाकृत कम जाने-माने गिरधारी लाल भार्गव से बुरी तरह मात खा गया.

इस हार की वजह भवानी सिंह के शाही रंग-ढंग थे. राजनीति में नए खिलाड़ी होने के कारण इंका के स्थानीय कार्यकर्ताओं को उनका हस्तक्षेप सहन नहीं था और न ही उनके साथ भवानी सिंह तालमेल बिठा पाए. पहले ही प्रयास में चारों खाने चित होने की वे दार्शनिक व्याख्या इस तरह करते हैं, "दूसरे नेताओं की तरह मैं पेशेवर राजनीतिक नहीं हूं. मैं तो लोगों की सेवा के लिए राजनीति में उतरा था. उन्होंने इसे मंजूर नहीं किया, तो न सही."

"मैं तो लोगों की सेवा के लिए राजनीति में उतरा था. उन्होंने इसे मंजूर नहीं किया, तो न सही."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस जीत से लोगों का मुझमें विश्वास झलकता है"

"मेरे लिए यह जीत कतई अप्रत्याशित नहीं थी"

"मैं कोई पहली बार चुनाव नहीं जीत रहा हूं"

शरद सक्सेना

देवीलाल,
रोहतक (हरियाणा) से ज.द. उम्मीदवार

1,88,000 वोटों से जीते

भवान सिंह

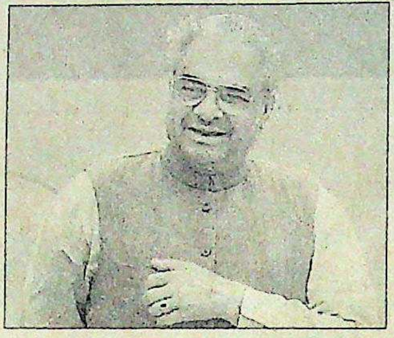

भजनलाल,
फरीदाबाद (हरियाणा) से इंका उम्मीदवार

1,31,227 वोटों से जीते

प्रमोद पुष्करणा

बंसीलाल,
भिवानी (हरियाणा) से इंका उम्मीदवार

1,57,330 वोटों से जीते

हरियाणा में इस बार फिर तीनों लाल—देवीलाल, भजनलाल और बंसीलाल— मैदान में उतरे और मजेदार बात यह रही कि तीनों ही जीत गए. चूंकि दो लाल एक तरफ थे तो उन्होंने प्रदेश की राजनीति पर चौतरफा पकड़ बना लेने वाले (देवी) लाल को मात दे ही दी. उनकी लाख कोशिशों के बावजूद ये दोनों बड़े-आराम से अपनी-अपनी सीट जीत गए.

भिवानी से जीतकर बंसीलाल ने देवीलाल को ठेंगा दिखा दिया. और बदला भी साध लिया. नाक-भौं सिकोड़कर वे कहते हैं, "मैं कोई पहली बार चुनाव नहीं जीता हूं." पर भजनलाल की खुशी तो छिपाए नहीं छिप रही थी. उन्होंने कहा, "मेरी जीत अप्रत्याशित नहीं थी." खुद देवीलाल ने भी रोहतक से भारी बहुमत से चौथे तथा (हल्के) लाल—हरद्वारी लाल—को परास्त किया. वे कहते हैं, "इस जीत से लोगों का मुझमें विश्वास झलकता है." शायद दोनों दूसरे लाल उनसे सहमत नहीं होंगे.

सुखराम,
मंडी (हिमाचल प्रदेश) से इंका उम्मीदवार

28,069 वोटों से हारे

अगर प्याज की महंगाई पूरी जनता पार्टी को बहुत 'तीखी' लगी थी तो इस चुनाव में चीनी की महंगाई निश्चित रूप से सुखराम को सबसे कड़वी लगी. नागरिक आपूर्ति राज्यमंत्री सुखराम जब चुनावी दंगल में उतरे तो उनके खिलाफ 'चीनी चोर' का नारा सबसे तेज सुर में उभरा.

उनके विरोध में खड़े भाजपा उम्मीदवार कुंजलाल ने अपनी हर सभा में चीनी की महंगाई का मुद्दा बोफोर्स घोटाले से भी अधिक जोर-शोर से उठाया और इसे अपने यहां के चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा बना दिया.

चीनी संकट से उबरने के लिए चीनी का आयात हुआ और इसमें घपले के भी आरोप लगे. चीनी की 'कड़वाहट' से भरे सुखराम ने कहा, "मैंने पूरे देश में आयातित चीनी भेजी थी लेकिन वह ठीक से बंट न पाई. चीनी की महंगाई ने विपक्ष को एक बड़ा चुनावी मुद्दा दे दिया."

प्रमोद पुष्करणा

"चीनी की आसमान छूती कीमत ने विपक्ष को एक बड़ा मुद्दा दे दिया"

सुभाषिनी अली,
कानपुर (उत्तर प्रदेश) से माकपा उम्मीदवार

57,014 वोटों से जीतीं

देहरादून के नामी पब्लिक स्कूल वेल्हम्स की लड़कियों के लिए तो वे 'शैब्बी' ही थीं. लेकिन यही शैब्बी जब सुभाषिनी अली बनकर कानपुर संसदीय क्षेत्र से माकपा उम्मीदवार के रूप में उतरीं और जीत गईं तो हर आदमी उनके नाम को लेकर भ्रम में था. लोग पूछते थे कि आप हिंदू हैं या मुसलमान. प्रसिद्ध फिल्म निर्माता मुजफ्फर अली की पत्नी सुभाषिनी 1969 से ही माकपा में सक्रिय हैं. उनका धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व और राजनैतिक पृष्ठभूमि उन्हें इंका के पूर्व महासचिव नरेशचंद्र चतुर्वेदी को परास्त करने में सहायक बनी. सुभाषिनी कहती हैं, "हम कानपुर के लोगों के लिए काफी समय से संघर्ष करते रहे हैं. यह जीत उसी संघर्ष की उपलब्धि है."

जोगिंदर चावला

"हम कानपुर के लोगों के लिए काफी समय से संघर्ष करते रहे हैं. यह जीत उसी संघर्ष की उपलब्धि है"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अशोक सेन,
कलकत्ता (उत्तर-पश्चिम) से ज.द. उम्मीदवार

54,732 वोटों से हारे

प्रमोद पुष्करणा

"मैंने अपने कार्यकर्ताओं को सचेत भी किया था लेकिन उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया"

बड़े-बड़े दावे करने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री अशोक सेन के लिए यह बड़ी पराजय रही अपने चुनाव प्रचार के दौरान वे कहा करते थे, "लोग कहते हैं कि यह कांग्रेस का गढ़ है लेकिन मैं कहता हूं कि यह अशोक सेन का गढ़ है." लेकिन पं. बंगाल में जनता दल की ओर से अकेला उम्मीदवार होने और शासक वाम मोर्चा का जबरदस्त समर्थन होने के बावजूद जनता की अदालत में देश का यह नामी वकील खुद अपना मुकदमा हार गया. सेन अपनी हार का कारण "इंका द्वारा बूथ कब्जा करना" मानते हैं. वे कहते हैं, "मैंने अपने कार्यकर्ताओं को सचेत भी किया था लेकिन उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया." लेकिन असलियत यह लगती है कि उनका अति आत्मविश्वास ही उनके लिए घातक सिद्ध हुआ. और मजेदार बात यह है कि सेन को उन्हीं के पेशे के एक आदमी ने हराया. उन्हें हराने वाले इंका उम्मीदवार देवी प्रसाद पाल कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश थे. शायद इसे ही कहते हैं 'न्याय'.

श्यामा सिंह,
औरंगाबाद (बिहार) से इंका उम्मीदवार

66,493 वोटों से हारीं

बिहार में आज तक बहुत कम ही किले अविजित रह गए थे—यह मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा का किला था. लेकिन यहां से अपनी बहू श्यामा सिंह को चुनाव लड़ाकर सिन्हा शायद कुछ अधिक ही आगे बढ़ गए थे. दिल्ली के बड़े लोगों की सभा-सोसाइटियों में छायी रहने वाली श्यामा को यह ग्रामीण और ठेठ राजपूती प्रभाव वाला चुनाव क्षेत्र रास नहीं आया. पराजय स्वीकार कर चुकीं श्यामा कहती हैं, "दुर्भाग्य से राज्य में इंका के खिलाफ गए वोट सांप्रदायिकता के समर्थन में हो गए." शायद वंशवाद वाली राजनीति के खिलाफ भी?

"राज्य में इंका के खिलाफ गए वोट सांप्रदायिकता के समर्थन में हो गए"

प्रकाशचंद्र सेठी,
इंदौर (मध्य प्रदेश) से इंका उम्मीदवार

1,11,697 वोटों से हारे

उनका चुनावी रिकार्ड बहुत ही अच्छा था. 1962 से लगातार केंद्रीय मंत्रिमंडल में रहने और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके प्रकाशचंद्र सेठी अब तक चुनाव नहीं हारे थे. लेकिन उसी इंदौर में उनके लिए खतरा बन गई एक गृहिणी सुमित्रा महाजन, जो भाजपा की ओर से उनसे सीट झटक ले गईं. सेठी कहते हैं, "लोकतंत्र में सबसे बड़ी अदालत लोगों की ही होती है."

जब सुमित्रा महाजन सेठी से आशीर्वाद मांगने पहुंचीं तो सेठी ने पितृ भाव से कहा, "विजयी हो." उन्हें क्या पता था कि शिष्टाचारवश मुंह से निकली यह बात सही हो ही जाएगी.

"लोकतंत्र में सबसे बड़ी अदालत जनता की होती है. उसका फैसला सिर माथे पर"

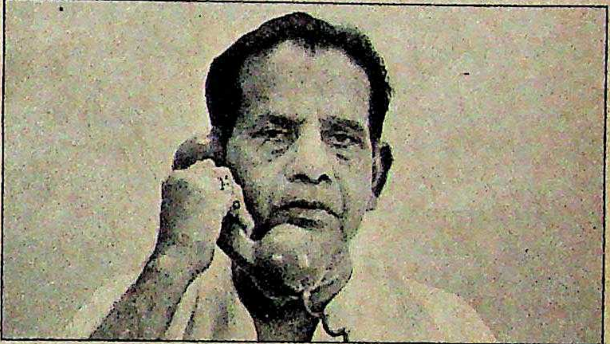

प्रमोद पुष्करणा

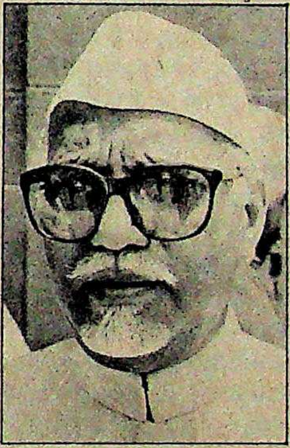

जियाउर्रहमान अंसारी,
उन्नाव (उ.प्र.) से इंका उम्मीदवार

29,364 वोटों से हारे

"मेरी हार का कारण वह षड्यंत्र है जिसमें खुद मेरी मेरे पार्टी के लोग भी शामिल थे"

चुनाव में कौन-सी बात गले की हड्डी बन जाएगी कोई नहीं कह सकता. केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जियाउर्रहमान अंसारी को इस चुनाव में इसका पता अच्छी तरह चला. सामाजिक कार्यकर्ता मुक्ति दत्ता से बलात्कार करने की कोशिश का आरोप तो उनकी 'जान' ही लेकर माना.

अंसारी 1971 से उन्नाव से जीतते (1977 छोड़कर) रहे थे. और इस बार इस मुस्लिम-बहुल क्षेत्र में भी जब वे हार गए तो उन्होंने कहा, "मेरी हार एक बड़े षड्यंत्र के कारण हुई जिसमें खुद मेरी पार्टी के लोग भी शामिल थे." अंसारी का मुकाबला सीधे जनता दल उम्मीदवार से होने की जगह अपनी पार्टी के विरोधी गुटों से ही था. शीला दीक्षित जैसे उनके विरोधी 'दोस्तों' ने मुक्ति दत्ता प्रकरण को उछाला. कहने को तो अंसारी जनता दल के अनवर अहमद से हारे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुंधरा राजे,
झालावाड़ (राजस्थान)
से भाजपा उम्मीदवार

1,46,541 वोटों से जीतीं

मध्य प्रदेश ग्वालियर राजघराने की 36 वर्षीया पूर्व राजकुमारी वसुंधरा राजे को बंबई मुकाम के दौरान मराठी बुलेटिन के माध्यम से मालूम हुआ कि भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें झालावाड़ लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया है तो खुद उन्हें भी भरोसा नहीं हुआ. वे धौलपुर से विधायक थीं लेकिन उन्होंने भाजपा नेतृत्व से लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा कभी नहीं जताई थी.

लेकिन कभी ग्वालियर के शासक रहे इस परिवार के खून में राजनीति समा गई है. उनकी मां विजयाराजे भाजपा की उपाध्यक्ष हैं और भाई माधव राव केंद्र में मंत्री हैं. मां मध्य प्रदेश के गुना से चुनाव लड़ीं और वे साथ लगे राजस्थान के झालावाड़ से. इस क्षेत्र के लिए एकदम अनजान होने के बावजूद वसुंधरा भारी बहुमत से जीतीं. मां और भाई भी जीते ही. और राजनैतिक रूप से भले ही यह परिवार छितराया हो पर अब लोकसभा में तो वे एक साथ बैठेंगे.

इस क्षेत्र के लिए एकदम अनजान होने के बावजूद वसुंधरा भारी बहुमत से जीतीं

सिमरनजीत सिंह मान,
(तरनतारन) पंजाब से
अकाली दल (मान) उम्मीदवार

4,64,000 वोटों से जीते

पंजाब के तरनतारन संसदीय क्षेत्र में नजारा किसी चुनावी मैदान की जगह युद्ध के मैदान जैसा ही नजर आ रहा था. हथियारों से लैस फौजी दस्ते चुनावी जीपों की जगह इस इलाके की धूल उड़ाते रहे. हवाई जहाज से नेताओं के पहुंचने की जगह और अधिक फौजें आती रहीं. और जब मत पड़े तो तीन साल से भागलपुर जेल में नजरबंद पड़े सिमरनजीत सिंह मान बड़ी आसानी और शांति से भारी मतों से जीत गए. इंदिरा गांधी की हत्या के षड्यंत्र में शामिल होने के आरोप में बंद अकाली दल के एक धड़े के इस अध्यक्ष की यह जीत काफी महत्वपूर्ण है.

वे न सिर्फ रिकार्ड मतों से जीते, बल्कि राज्य की राजनीति के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरे हैं. उनके दल ने भी राज्य की छह लोकसभा सीटें जीतीं. अपने जेल में बंद बेटे के लिए चुनाव प्रचार करने वाले जोगिंदर सिंह मान कहते हैं, "यह चुनाव राज्य में दमन के खिलाफ जनमत संग्रह था."

मान के पिता कहते हैं, "यह चुनाव राज्य में दमन के खिलाफ जनमत संग्रह था"

प्रियरंजन दासमुंशी,
हावड़ा (प. बंगाल)
से इंका उम्मीदवार

1,432 वोटों से हारे

वे डूबती नैया के आखिरी सवार की तरह थे. तेजतर्रार केंद्रीय वाणिज्य राज्यमंत्री प्रियरंजन दासमुंशी ने आखिरी दम तक मुकाबला किया जबकि पश्चिम बंगाल की सारी राजनैतिक परिस्थितियां उनके खिलाफ थीं.

पार्टी में उनके विरोधी, प्रदेश इंका अध्यक्ष गनी खां चौधरी ने दासमुंशी की इच्छा के विपरीत उन्हें हावड़ा से टिकट दे दिया. मन मारकर उन्हें यह जंग लड़नी ही पड़ी.

उधर, राज्य में सत्तारूढ़ वाममोर्चा ने हावड़ा और बंद पड़ी औद्योगिक इकाइयों की केंद्र द्वारा लगातार की जा रही उपेक्षा को चुनावी मुद्दा बनाया. अपनी बहादुरी दिखाने के लिए दासमुंशी ने भी इसके विरोध में जबरदस्त प्रचार अभियान छेड़ा. और यह बहुत हद तक कारगर होता भी लगा. इसी के चलते वे मात्र 1,432 मतों से हारे. वे कहते हैं, "अगर माकपा ने निर्लज्जता से मतदान केंद्रों पर कब्जा न किया होता तो मैं जीत गया होता."

"माकपा ने निर्लज्जता से मतदान केंद्रों पर कब्जा न किया होता तो मैं जीत जाता"

जयंती पटनायक
कटक (ओडीसा)
से इंका उम्मीदवार

2,04,000 वोटों से हारीं

कभी एक दशक से ओडीसा में वे ही सत्ता के 'असली' केंद्र में थीं. यह चुनाव उन्हें सचमुच 'गद्दी' दिलाने की तैयारी के तहत ही लड़े गए थे. पर मुख्यमंत्री जानकी वल्लभ पटनायक की यह योजना काम नहीं कर पाई. कटक संसदीय क्षेत्र से उनकी पत्नी जयंती

पटनायक की पराजय खुद जानकी बाबू के लिए जी का जंजाल बन गई है.

सबसे लंबे समय तक इंकाई मुख्यमंत्री की गद्दी पर बने रहने का उनका हिसाब भी गड़बड़ाता नजर आ रहा है. लेकिन जयंती के लिए मुश्किल बन गए प्रदेश जनता दल के नौजवान महासचिव श्रीकांत जेना. वे राज्य में सबसे अधिक वोटों से जीते. यह बात भी पटनायक दंपती के लिए बहुत अपमानजनक साबित हुई.

जयंती अपनी पराजय के लिए अपनी पार्टी के लोगों की ईर्ष्या को कारण मानती हैं, "मुझे सिर्फ विपक्ष का ही सामना नहीं करना पड़ा. इस बार तो अपनी पार्टी के बड़े लोग भी मेरे खिलाफ लगे थे."

"मुझे सिर्फ विपक्ष का ही सामना नहीं करना पड़ा. अपनी पार्टी के बड़े लोग भी मेरे खिलाफ लगे थे"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला बहुगुणा,
इलाहाबाद (उ.प्र.) से
इंका उम्मीदवार

39,470 वोटों से हारीं

"जब लोग एकदम से शासक दल के, खिलाफ वोट दें तो आप कर ही क्या सकते हैं"

इंका ने इस बार भी यहां से एक नामी उम्मीदवार दिवंगत हेमवती नंदन बहुगुणा की पत्नी कमला बहुगुणा को खड़ा करके बड़ा दांव खेला. बहुगुणा का नाम अभी भी वहां श्रद्धा से लिया जाता है और कमला बहुगुणा को लोगों की सहानुभूति मिल सकती थी.

1988 में सरकार की सारी ताकत के खिलाफ भी वी.पी. सिंह को जिता देने वाले इलाहाबाद ने इस बार भी विपक्ष का साथ दिया. कमला बहुगुणा कहती हैं, "जब लोग एकदम से शासक दल के, जिसकी ओर से आप मैदान में हों, खिलाफ वोट दें तो आप कर ही क्या सकते हैं."

अहमद पटेल,
भड़ौच (गुजरात) से
इंका उम्मीदवार

18,909 वोटों से पराजित

उनके समर्थक बस एक राग ही अलापते रहे, "अब चमत्कार ही उन्हें हरा सकता है." कभी प्रधानमंत्री के सबसे करीबी रहे अहमद पटेल के खिलाफ भगवा वस्त्रधारी साधुओं और विश्व हिंदू परिषद तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की पूरी टीम उतर गई तो यह 'चमत्कार' भी हो गया. पर इसके लिए चुनाव प्रचार को घोर सांप्रदायिक रंग देना पड़ा. इसी कार प्रदेश इंका अध्यक्ष रह चुके अहमद पटेल की 1977 के बाद से लगातार अपने पास रही भड़ौच सीट गंवानी पड़ी.

वे राज्य से अकेले मुसलमान सांसद हुआ करते थे. अपनी हार से विक्षुब्ध पटेल ने कहा, "यह मेरी नहीं धर्मनिरपेक्षता की पराजय है."

प्रमोद पुष्करणा

चुनाव प्रचार के जबरदस्त सांप्रदायिक स्वरूप के कारण पटेल को अपनी सीट गंवानी पड़ी

रामविलास पासवान,
हाजीपुर (बिहार) से
ज.द. उम्मीदवार

4,98,377 वोटों से विजयी

उम्मीदवार और मतदाताओं के बीच 'प्रेम' शायद बढ़ता ही जा रहा है. जनता दल के रामविलास पासवान ने इस बार 4,98,377 वोटों से जीत हासिल की. वे कहते हैं, "मैं गिनीज बुक में दोबारा नाम दर्ज करवाना चाहता था और मेरी यह इच्छा भी पूरी हो गई."

"मैं गिनीज बुक में दोबारा नाम दर्ज करवाना चाहता था और मेरी यह इच्छा भी पूरी हो गई."

प्रशांत पंजियार

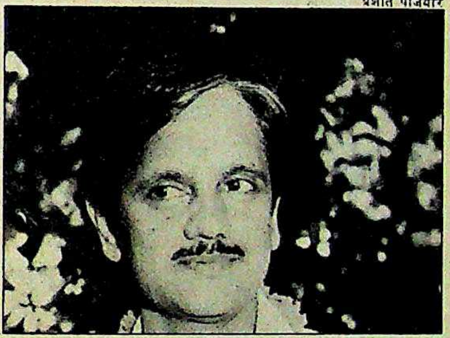

अनिल शास्त्री,
वाराणसी (उ.प्र.) से
ज.द. उम्मीदवार

1,75,800 वोटों से जीते

ग्वालियर के सिंधिया, बिहार के सिन्हा, आंध्र के राजू परिवार की तरह उत्तर प्रदेश के शास्त्री परिवार के भी तीन लोग इस बार चुनाव मैदान में थे. पर पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के सबसे छोटे बेटे अनिल शास्त्री ही चुनावी हिसाब में सबसे बड़े साबित हुए. जनता दल के उम्मीदवार की हैसियत से वाराणसी में केंद्रीय मंत्री श्यामलाल यादव को परास्त करने वाले अनिल राजनीति में एकदम नए थे. पूरा चुनाव प्रचार उन्होंने अपने दिवंगत पिता के नाम और छवि के सहारे ही चलाया. लेकिन उनका मानना है कि उनकी जीत मुख्यत: ब्राह्मण वोटों के कारण हुई क्योंकि राजीव गांधी ने कमलापति त्रिपाठी के साथ जो सलूक किया उससे भी ब्राह्मण नाराज हैं. शास्त्री कहते हैं, "मेरी जीत इंका की नीतियों के खिलाफ लोगों की जीत है."

"मेरी जीत इंका की नीतियों के खिलाफ लोगों की जीत है"

कल्पनाथ राय,
घोसी (उ.प्र.) से
इंका उम्मीदवार

60,000 वोटों से जीते

इंदिरा गांधी परिवार की भक्ति आखिरकार लोहियावादी रह चुके कल्पनाथ राय को फल गई. अपने बड़बोलेपन और इंदिरा परिवार की अंधी चापलूसी के लिए कुख्यात कल्पनाथ राय इंका विरोधी लहर में भी जीत आए. कभी राजीव गांधी को 'हीरा' बताने वाले राय चुनावी समुद्र में डुबकी लगाकर उत्तर प्रदेश के घोसी से 'हीरा' ले ही आए, भले ही वे इसके उतने हकदार न हों. लोगों ने उन्हें राजीव का करीबी मानकर ही जिताया. आखिर वे इसी का प्रचार करते रहे थे. अब राय बड़ी उम्मीद के साथ कहते हैं, "मेरी जीत बताती है कि इंका बहुत जल्द वापस आने वाली है."

"मेरी जीत बताती है कि इंका बहुत जल्द वापस आने वाली है"

प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

...सारी धड़कन थम गई

राजीव की मलिन छवि, हिंदू लहर, मुसलमानों की नाराजगी से इंका धराशायी

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में बड़े-बड़े महारथी चित हो गए. और कल तक प्रधानमंत्री पद के दावेदार माने जाने वाले मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी अपनी सीट भले ही निकाल ले गए पर देश के सबसे अहम राज्य में अपने दल को विजय पथ पर ले जाने में नाकाम साबित हुए. इससे उनकी छवि रातोरात धूमिल हो गई. हर मायने में यह इंका विरोधी जनादेश ही था. राज्य की जिन 422 सीटों पर चुनाव हुआ, उनमें से जनता दल ने न सिर्फ 207 स्थानों पर जीत दर्ज की बल्कि तिवारी सरकार के एक मंत्री को छोड़ बाकी सब वी.पी. लहर में बह गए. और 98 सीटें पाकर महत्वहीन हो गई इंका उन विपक्षी बेंचों पर पहुंच गई जिनका स्वाद उसने अरसे से नहीं चखा था.

राज्य में लोकसभा चुनाव में पार्टी के सफाए की तो ठोस वजहें थीं. ये हैं राजीव गांधी की छवि मलिन होना, हिंदू कट्टरवाद की लहर, मुसलमानों में असुरक्षा की भावना, भ्रष्टाचार के आरोप और सबसे अहम था विपक्षी तालमेल. लेकिन विधानसभा चुनाव में 335 सीटों पर तिकोने या बहुकोणीय संघर्ष के बावजूद पार्टी की भारी हार से संकेत मिलता है कि राज्य में लगभग सभी जातियों और समुदायों ने इंका से मुंह मोड़ लिया.

स्पष्ट जनादेश से इंका का मनोबल टूटने के साथ ही कई दूसरी धारणाएं भी टूटीं. इनमें सबसे प्रमुख यह थी कि तिवारी देश के अति जटिल राज्य और शायद राष्ट्र को भी चला सकने की क्षमता रखने वाले चाक-चौबंद नेता हैं. इस धारणा के टूटने की वजह यह है कि तिवारी के लगभग सभी तीर नाकाम साबित हुए. असलियत तो यह है कि उन्होंने लोकसभा के साथ-साथ विधानसभा चुनाव पर जोर देकर शायद समय से पहले अपने लिए कांटे बो लिये. शुरू में इस चाल के पीछे तर्क वजनी दिखता था और वह यह कि ऊहापोह की स्थिति पैदा करके विपक्षी खेमे पर हावी होना. दुर्भाग्यवश कागज पर जो तर्क प्रभावी दिखता था, अमल में आते ही फुस हो गया. नतीजा यह कि जिस राज्य ने इंका को सर्वोच्च नेता मुहैया कराए, वहीं का शासन तिवारी को दूसरी बार खोना पड़ा.

तिवारी के लिए दुर्भाग्य यह भी रहा कि उत्तर प्रदेश जनता दल के बड़े नेताओं का भी राज्य है. और जिस लड़ाई में बराबरी की टक्कर की उम्मीद थी, उसी में वी.पी. सिंह ने तिवारी को बौना साबित कर दिया. राजा और जनता दल के दूसरे नेताओं ने राज्य का धुआंधार दौरा करके प्रचार अभियान में जान डाल दी. तिवारी ने भी जोरदार प्रचार अभियान छेड़ा पर वे लोगों की धड़कन महसूस नहीं कर सके. उन्होंने राज्य सरकार का फ्रांसीसी डॉल्फिन हेलिकॉप्टर अपनी पार्टी के लिए किराए पर ले लिया और राज्य में दूरदराज के इलाकों तक पहुंचे. जाहिर है कि वे जिस राजनैतिक लहर में तैर रहे थे, वही उनके लिए भारी सिद्ध हुई.

भुवन सिंह

वी.पी. सिंह के धुआंधार प्रचार ने विपक्ष का समर्थन कर रहे मतदाताओं के मूड को इंका विरोधी लहर में बदल दिया

कई स्थानों पर त्रिकोणीय मुकाबला होने की वजह से जनता दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल सका

इंका	94
जनता दल	204
भाजपा	57

इसके अलावा विपक्ष को एक ही नेता पर निर्भर न रहने का भी फायदा मिला. उसके प्रचार अभियान में कई कारगर नेता थे जिनका राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रभाव था. खासकर पश्चिमी हिस्से में अजीत सिंह के अलावा प्रदेश जनता दल अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पद के सशक्त दावेदार मुलायम सिंह यादव ने विजयी अभियान चलाया. यादव ने न सिर्फ अपने इंकाई प्रतिद्वंद्वी को इटावा के जसवंतनगर क्षेत्र से मतों के भारी अंतर से हराया बल्कि पूरे जिले में इंका का वस्तुतः सफाया कर दिया. विजय के बाद उन्होंने कहा, "इंका की हार से जाहिर है कि लोगों ने सही फैसला किया."

स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने कुशासन, ढुलमुल नीति और ऊहापोह के खिलाफ मत दिया. ये आरोप मूल रूप से केंद्र सरकार पर ही थे पर राज्य नेतृत्व भी इनसे बरी नहीं था. देश के एक सबसे गरीब राज्य में आम आदमी अपनी हैसियत जताने के लिए उठ खड़ा हुआ. उसने ऐसी सरकार को बरदाश्त नहीं किया जो न सिर्फ निकम्मी साबित हुई बल्कि जिसने सिद्धांतों पर भी समझौता किया.

आंकड़ों पर सरसरी निगाह दौड़ाने से स्पष्ट हो जाता है कि इस बार बहुकोणीय मुकाबलों के बावजूद मतदाताओं ने इंका के खिलाफ ठोस फैसला सुनाने में कोई हिचक नहीं दिखाई. अधिकांश जगहों पर लोगों ने इंका के मुकाबले जनता दल का, और कुछ हद तक भाजपा का पक्ष लिया. भाजपा को 57 सीटें मिलीं. यहां तक कि उन 22 स्थानों पर जहां जनता दल और भाजपा के बीच टक्कर थी, इंका अधिकांशतः तीसरे स्थान पर रही. जनता दल और भाजपा की कुल सीटों की संख्या 270 के करीब पहुंच गई जबकि इंका 100 का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई. 1977 को छोड़कर, जब उसे महज 47 सीटें मिली थीं, यह उसकी सबसे बड़ी हार है.

भाजपा के जोरदार प्रदर्शन के लिए इंका खुद ही जिम्मेदार है. पार्टी के वोट 1984 के 10 फीसदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के मुकाबले अगर इस बार 18 फीसदी तक पहुंचे तो इसका श्रेय अयोध्या विवाद पर उठी हिंदू कट्टरता की लहर को जाता है. यह समस्या खुद सरकार ने पैदा की, जिससे राज्य को सांप्रदायिकता का खूनी खेल झेलना पड़ा. कुछ हद तक भाजपा विश्व हिंदू परिषद की पीठ पर सवार थी जिसने रामशिला पूजन और अयोध्या में प्रस्तावित राम मंदिर का शिलान्यास करके हिंदू लहर पैदा कर दी.

सत्तारूढ़ दल को हर ओर से पराजय हाथ लगने की एक वजह यह थी कि अब तक उसके प्रति वफादार रहा मुस्लिम समुदाय भी उसका साथ छोड़ गया. अयोध्या के मामले पर अपमान और गुस्से की वजह से मुसलमान वोट भाजपा को छोड़कर बाकी विपक्षी दलों में बंट गए. इनमें अधिकांश जनता दल के पक्ष में गए पर कई लोगों ने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को चुना. बसपा इस बार अप्रत्याशित रूप से 14 सीटें लेने में कामयाब रही. कुछ मामलों में मुसलमानों ने कम्युनिस्ट पार्टियों को वोट दिए, जिन्हें कुल मिलाकर आठ सीटें मिलीं.

रुहेलखंड, जहां मुसलमानों की करीब 31 फीसदी आबादी है और विधानसभा की 50 सीटें हैं, सत्तारूढ़ दल से मुसलमानों के मोहभंग की स्पष्ट मिसाल है. इंका 1985 में इस क्षेत्र से मिली 35 सीटों में से इस बार आठ ही बचा पाई.

मुस्लिम वोट बैंक पूरी तरह फिसल जाने के अलावा दो और परंपरागत वोट बैंक भी इंका के हाथ से निकल गए. ब्राह्मणों ने भाजपा को पसंद किया तो कांशीराम की बसपा ने राज्य के हरिजन-बहुल क्षेत्रों में सेंध लगा दी. ये सभी तथ्य इंका की हार का कारण बने. सिर्फ पर्वतीय क्षेत्र में

लोकसभा के साथ-साथ विधानसभा चुनाव कराने का निर्णय करके तिवारी ने अपने लिए ही कांटे बोए

मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री पद के सशक्त दावेदार बनकर उभर गए. लेकिन यह लड़ाई घालमेल भरी साबित हुई

इंका के हाथ से मुस्लिम वोट बैंक तो खिसका ही, ब्राह्मणों और हरिजनों के वोट भी उसे नहीं मिल पाए

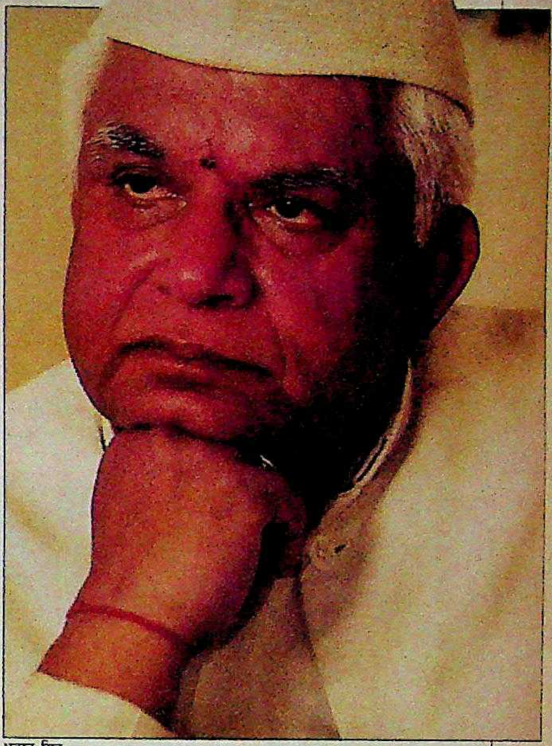

भवान सिंह

प्रशांत पंजियार

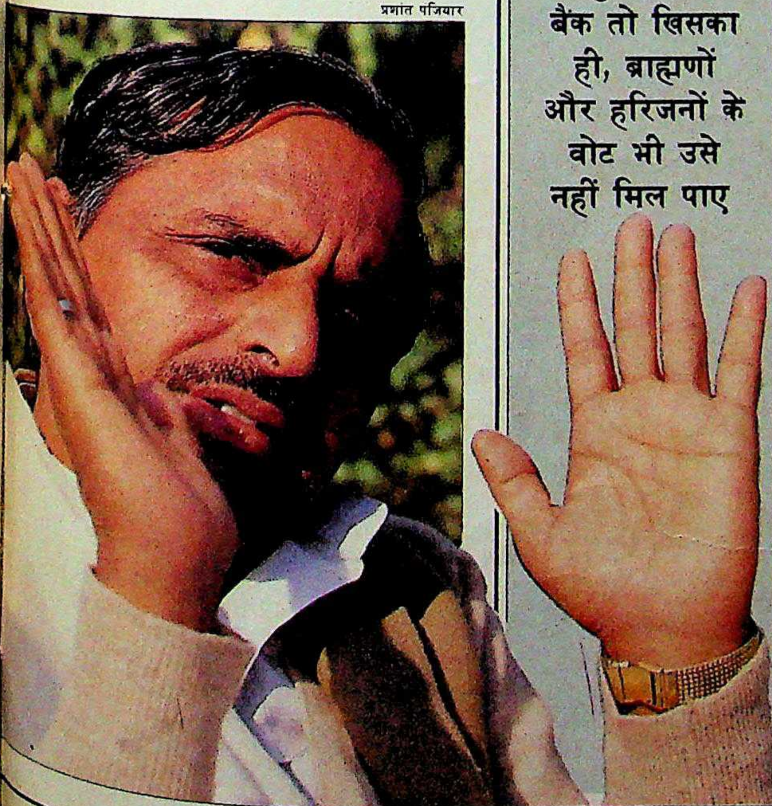

ही इंका अपनी जमीन बचा सकी और वह भी खुद तिवारी के व्यक्तिगत असर की वजह से. वे अपने क्षेत्र हल्द्वानी में तो प्रचार करने भी नहीं गए और 37,000 वोटों के फासले से जीतकर आए.

तिवारी की जीत अप्रत्याशित नहीं थी पर उत्तर प्रदेश से लोकसभा और विधानसभा दोनों में बसपा का खाता खोलना सचमुच आश्चर्यजनक रहा. बसपा ने 375 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और इंका तथा कुछ हद तक जनता दल के वोट काटे. उसे मिले 16 फीसदी मत इस बात का संकेत हैं कि बसपा ने कमर कस ली है. जाहिर है, कांशीराम हरिजन वोटों के ध्रुवीकरण में सफल रहे हैं.

इस पार्टी ने इंकाई वोट बैंक पर हाथ साफ जरूर किया लेकिन कुल मिलाकर सत्तारूढ़ दल ने खुद अपनी ही कब्र खोद ली. तिवारी के पूववर्ती बीर बहादुर सिंह के समर्थकों के अलावा ज्यादातर विधायकों को ही टिकट देने से इंका में व्यापक असंतोष भड़का. पार्टी ने युवा इंकाइयों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व न देकर भी भारी भूल की. एक वरिष्ठ युवा इंका नेता ने कहा, "मतदान की उम्र कम होने की वजह से युवा मतदाताओं की संख्या काफी बढ़ गई. ऐसे समय पार्टी ने युवकों को अलग-थलग कर दिया." इंडिया टुडे-मार्ग के मतदान-बाद मतसंग्रह से भी पता चलता है कि युवा मतदाताओं का साफ रुझान विपक्ष की ओर था.

इन रणनीतिक भूलों के प्रति सांप्रदायिक उफान और केंद्र में भ्रष्टाचार की विपक्षी गुहार ने सत्तारूढ़ दल को अप्रत्याशित पराजय का मुंह दिखा दिया. विधानसभा में तिवारी मंत्रिमंडल के चार राज्य-मंत्रियों के अलावा कैबिनेट स्तर के सिर्फ एक मंत्री अरुण कुमार सिंह अपनी सीट बचा पाए. विजयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

...सारी धड़कन थम गई

राजीव की मलिन छवि, हिंदू लहर, मुसलमानों की नाराजगी से इंका धराशायी

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में बड़े-बड़े महारथी चित हो गए. और कल तक प्रधानमंत्री पद के दावेदार माने जाने वाले मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी अपनी सीट भले ही निकाल ले गए पर देश के सबसे अहम राज्य में अपने दल को विजय पथ पर ले जाने में नाकाम साबित हुए. इससे उनकी छवि रातोरात धूमिल हो गई. हर मायने में यह इंका विरोधी जनादेश ही था. राज्य की जिन 422 सीटों पर चुनाव हुआ, उनमें से जनता दल ने न सिर्फ 207 स्थानों पर जीत दर्ज की बल्कि तिवारी सरकार के एक मंत्री को छोड़ बाकी सब वी.पी. लहर में बह गए. और 98 सीटें पाकर महत्वहीन हो गई इंका उन विपक्षी बेंचों पर पहुंच गई जिनका स्वाद उसने अरसे से नहीं चखा था.

राज्य में लोकसभा चुनाव में पार्टी के सफाए की तो ठोस वजहें थीं. ये हैं राजीव गांधी की छवि मलिन होना, हिंदू कट्टरवाद की लहर, मुसलमानों में असुरक्षा की भावना, भ्रष्टाचार के आरोप और सबसे अहम था विपक्षी तालमेल. लेकिन विधानसभा चुनाव में 335 सीटों पर तिकोने या बहुकोणीय संघर्ष के बावजूद पार्टी की भारी हार से संकेत मिलता है कि राज्य में लगभग सभी जातियों और समुदायों ने इंका से मुंह मोड़ लिया.

स्पष्ट जनादेश से इंका का मनोबल टूटने के साथ ही कई दूसरी धारणाएं भी टूटीं. इनमें सबसे प्रमुख यह थी कि तिवारी देश के अति जटिल राज्य और शायद राष्ट्र को भी चला सकने की क्षमता रखने वाले चाक-चौबंद नेता हैं. इस धारणा के टूटने की वजह यह है कि तिवारी के लगभग सभी तीर नाकाम साबित हुए. असलियत तो यह है कि उन्होंने लोकसभा के साथ-साथ विधानसभा चुनाव पर जोर देकर शायद समय से पहले अपने लिए कांटे बो लिये. शुरू में इस चाल के पीछे तर्क वजनी दिखता था और वह यह कि ऊहापोह की स्थिति पैदा करके विपक्षी खेमे पर हावी होना. दुर्भाग्यवश कागज पर जो तर्क प्रभावी दिखता था, अमल में आते ही फुस हो गया. नतीजा यह कि जिस राज्य ने इंका को सर्वोच्च नेता मुहैया कराए, वहीं का शासन तिवारी को दूसरी बार खोना पड़ा.

तिवारी के लिए दुर्भाग्य यह भी रहा कि उत्तर प्रदेश जनता दल के बड़े नेताओं का भी राज्य है. और जिस लड़ाई में बराबरी की टक्कर की उम्मीद थी, उसी में वी.पी. सिंह ने तिवारी को बौना साबित कर दिया. राजा और जनता दल के दूसरे नेताओं ने राज्य का धुआंधार दौरा करके प्रचार अभियान में जान डाल दी. तिवारी ने भी जोरदार प्रचार अभियान छेड़ा पर वे लोगों की धड़कन महसूस नहीं कर सके. उन्होंने राज्य सरकार का फ्रांसीसी डॉल्फिन हेलिकॉप्टर अपनी पार्टी के लिए किराए पर ले लिया और राज्य में दूरदराज के इलाकों तक पहुंचे. जाहिर है कि वे जिस राजनैतिक लहर में तैर रहे थे, वही उनके लिए भारी सिद्ध हुई.

इसके अलावा विपक्ष को एक ही नेता पर निर्भर न रहने का भी फायदा मिला. उसके प्रचार अभियान में कई कारगर नेता थे जिनका राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रभाव था. खासकर पश्चिमी हिस्से में अजीत सिंह के अलावा प्रदेश जनता दल अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पद के सशक्त दावेदार मुलायम सिंह यादव ने विजयी अभियान चलाया. यादव ने न सिर्फ अपने इंकाई प्रतिद्वंद्वी को इटावा के जसवंतनगर क्षेत्र से मतों के भारी अंतर से हराया बल्कि पूरे जिले में इंका का वस्तुतः सफाया कर दिया. विजय के बाद उन्होंने कहा, "इंका की हार से जाहिर है कि लोगों ने सही फैसला किया."

स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने कुशासन, ढुलमुल नीति और ऊहापोह के खिलाफ मत दिया. ये आरोप मूल रूप से केंद्र सरकार पर ही थे पर राज्य नेतृत्व भी इनसे बरी नहीं था. देश के एक सबसे गरीब राज्य में आम आदमी अपनी हैसियत जताने के लिए उठ खड़ा हुआ. उसने ऐसी सरकार को बरदाश्त नहीं किया जो न सिर्फ निकम्मी साबित हुई बल्कि जिसने सिद्धांतों पर भी समझौता किया.

आंकड़ों पर सरसरी निगाह दौड़ाने से स्पष्ट हो जाता है कि इस बार बहुकोणीय मुकाबलों के बावजूद मतदाताओं ने इंका के खिलाफ ठोस फैसला सुनाने में कोई हिचक नहीं दिखाई. अधिकांश जगहों पर लोगों ने इंका के मुकाबले जनता दल का, और कुछ हद तक भाजपा का पक्ष लिया. भाजपा को 57 सीटें मिलीं. यहां तक कि उन 22 स्थानों पर जहां जनता दल और भाजपा के बीच टक्कर थी, इंका अधिकांशतः तीसरे स्थान पर रही. जनता दल और भाजपा की कुल सीटों की संख्या 270 के करीब पहुंच गई जबकि इंका 100 का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई. 1977 को छोड़कर, जब उसे महज 47 सीटें मिली थीं, यह उसकी सबसे बड़ी हार है.

भाजपा के जोरदार प्रदर्शन के लिए इंका खुद ही जिम्मेदार है. पार्टी के वोट 1984 के 10 फीसदी

भवान सिंह

वी.पी. सिंह के धुआंधार प्रचार ने विपक्ष का समर्थन कर रहे मतदाताओं के मूड को इंका विरोधी लहर में बदल दिया

कई स्थानों पर त्रिकोणीय मुकाबला होने की वजह से जनता दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल सका

इंका	94
जनता दल	204
भाजपा	57

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के मुकाबले अगर इस बार 18 फीसदी तक पहुंचे तो इसका श्रेय अयोध्या विवाद पर उठी हिंदू कट्टरता की लहर को जाता है. यह समस्या खुद सरकार ने पैदा की, जिससे राज्य को सांप्रदायिकता का खूनी खेल झेलना पड़ा. कुछ हद तक भाजपा विश्व हिंदू परिषद की पीठ पर सवार थी जिसने रामशिला पूजन और अयोध्या में प्रस्तावित राम मंदिर का शिलान्यास करके हिंदू लहर पैदा कर दी.

सत्तारूढ़ दल को हर ओर से पराजय हाथ लगने की एक वजह यह थी कि अब तक उसके प्रति वफादार रहा मुस्लिम समुदाय भी उसका साथ छोड़ गया. अयोध्या के मामले पर अपमान और गुस्से की वजह से मुसलमान वोट भाजपा को छोड़कर बाकी विपक्षी दलों में बंट गए. इनमें अधिकांश जनता दल के पक्ष में गए पर कई लोगों ने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को चुना. बसपा इस बार अप्रत्याशित रूप से 14 सीटें लेने में कामयाब रही. कुछ मामलों में मुसलमानों ने कम्युनिस्ट पार्टियों को वोट दिए, जिन्हें कुल मिलाकर आठ सीटें मिलीं.

रुहेलखंड, जहां मुसलमानों की करीब 31 फीसदी आबादी है और विधानसभा की 50 सीटें हैं, सत्तारूढ़ दल से मुसलमानों के मोहभंग की स्पष्ट मिसाल है. इंका 1985 में इस क्षेत्र से मिली 35 सीटों में से इस बार आठ ही बचा पाई.

मुस्लिम वोट बैंक पूरी तरह फिसल जाने के अलावा दो और परंपरागत वोट बैंक भी इंका के हाथ से निकल गए. ब्राह्मणों ने भाजपा को पसंद किया तो कांशीराम की बसपा ने राज्य के हरिजन-बहुल क्षेत्रों में सेंध लगा दी. ये सभी तथ्य इंका की हार का कारण बने. सिर्फ पर्वतीय क्षेत्र में

लोकसभा के साथ-साथ विधानसभा चुनाव कराने का निर्णय करके तिवारी ने अपने लिए ही कांटे बोए

मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री पद के सशक्त दावेदार बनकर उभर गए. लेकिन यह लड़ाई घालमेल भरी साबित हुई

इंका के हाथ से मुस्लिम वोट बैंक तो खिसका ही, ब्राह्मणों और हरिजनों के वोट भी उसे नहीं मिल पाए

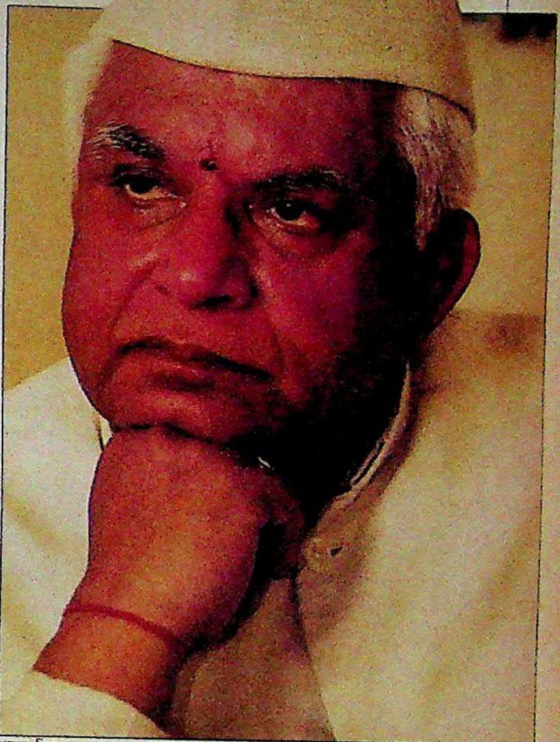

भवान सिंह

प्रशांत पंजियार

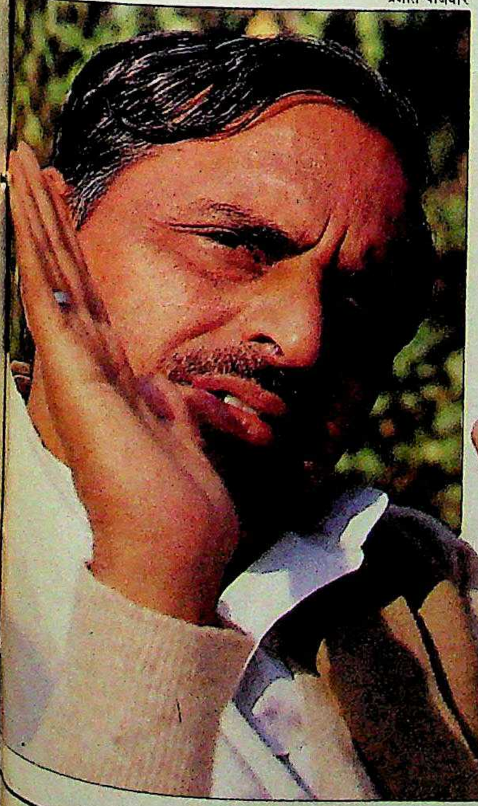

ही इंका अपनी जमीन बचा सकी और वह भी खुद तिवारी के व्यक्तिगत असर की वजह से. वे अपने क्षेत्र हल्द्वानी में तो प्रचार करने भी नहीं गए और 37,000 वोटों के फासले से जीतकर आए.

तिवारी की जीत अप्रत्याशित नहीं थी पर उत्तर प्रदेश से लोकसभा और विधानसभा दोनों में बसपा का खाता खोलना सचमुच आश्चर्यजनक रहा. बसपा ने 375 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और इंका तथा कुछ हद तक जनता दल के वोट काटे. उसे मिले 16 फीसदी मत इस बात का संकेत हैं कि बसपा ने कमर कस ली है. जाहिर है, कांशीराम हरिजन वोटों के ध्रुवीकरण में सफल रहे हैं.

इस पार्टी ने इंकाई वोट बैंक पर हाथ साफ जरूर किया लेकिन कुल मिलाकर सत्तारूढ़ दल ने खुद अपनी ही कब्र खोद ली. तिवारी के पूववर्ती बीर बहादुर सिंह के समर्थकों के अलावा ज्यादातर विधायकों को ही टिकट देने से इंका में व्यापक असंतोष भड़का. पार्टी ने युवा इंकाइयों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व न देकर भी भारी भूल की. एक वरिष्ठ युवा इंका नेता ने कहा, "मतदान की उम्र कम होने की वजह से युवा मतदाताओं की संख्या काफी बढ़ गई. ऐसे समय पार्टी ने युवकों को अलग-थलग कर दिया." इंडिया टुडे-मार्ग के मतदान-बाद मतसंग्रह से भी पता चलता है कि युवा मतदाताओं का साफ रुझान विपक्ष की ओर था.

इन रणनीतिक भूलों के प्रति सांप्रदायिक उफान और केंद्र में भ्रष्टाचार की विपक्षी गुहार ने सत्तारूढ़ दल को अप्रत्याशित पराजय का मुंह दिखा दिया. विधानसभा में तिवारी मंत्रिमंडल के चार राज्य-मंत्रियों के अलावा कैबिनेट स्तर के सिर्फ एक मंत्री अरुण कुमार सिंह अपनी सीट बचा पाए. विजयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यमंत्री हैं अवतार दीक्षित, सुरेंद्र सिंह चौहान, गुलाब सिंह और मोइद अहमद. 50 सदस्यीय मंत्रिमंडल के बाकी सभी सदस्य चित हो गए.

मात खाए दिग्गजों में लोकपति त्रिपाठी, जिनके बेटे राजेशपति भी लोकसभा चुनाव हार गए, के अलावा सुनील शास्त्री, नरेंद्र सिंह, अम्मार रिजवी, स्वरूप कुमारी बख्शी, हुकुम सिंह और गोपीनाथ दीक्षित हैं. हार के बाद एक प्रमुख मंत्री ने कहा, "हमें किसी और की नाकामियों की कीमत चुकानी पड़ी." इसमें संदेह नहीं कि उनका इशारा नई दिल्ली के आलाकमान की ओर था.

पर तिवारी ने माना, "यह सत्तारूढ़ दल के खिलाफ लोगों का फैसला है. चुनाव में हिस्सा लेने के लिए मैं लोगों को बधाई देता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि हम उनके फैसले का आदर करेंगे." 'लोकतंत्र का त्योहार, जम्हूरियत का मेला' कहकर अपना चुनाव भाषण शुरू करने वाले तिवारी को जनशक्ति के बारे में इस चुनाव से नए सबक मिले लगते हैं.

अयोध्या विवाद के चलते उत्तर प्रदेश में जद-भाजपा गठजोड़ को कई कड़ी चुनौतियां झेलनी पड़ेंगी

इनमें एक सबक तो यह है कि जो व्यक्ति लखनऊ में अपनी गद्दी नहीं बचा सकता, निश्चय ही नई दिल्ली के सिंहासन पर नहीं बैठ सकता. चुनावी रूप से महत्वपूर्ण इस राज्य के झटके देश की राजधानी में हमेशा महसूस किए गए हैं. यही नहीं, राज्य के नए विजेताओं—जनता दल-भाजपा गठजोड़—को भी एक सीख गांठ बांध लेनी चाहिए. अगर वे लखनऊ में अफरातफरी का माहौल बनाएंगे तो उसकी गूंज न सिर्फ उत्तर प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों तक ही सुनाई पड़ेगी बल्कि नई दिल्ली में भी अपना असर दिखाएगी. —दिलीप अवस्थी

प्रशांत पंजियार

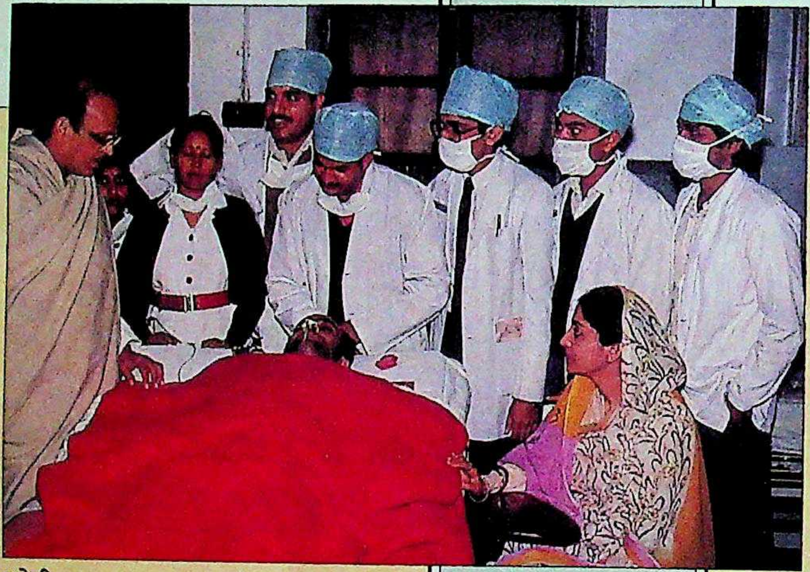

अस्पताल में संजय सिंह को देखने आए वी.पी. सिंह

अमेठी

बंदूक का जलवा

व्यापक चुनावी हिंसा की चरम परिणति इस बार 22 नवंबर को जनता दल नेता संजय सिंह पर अमेठी में हुए प्राणघातक हमले में हुई. हिंसा के खतरे का सबूत तब और मिला जब फतेहपुर में वी.पी. सिंह की मौजूदगी में गोलियां चलीं.

दोपहर 3 बजे संजय अमेठी के नजदीक रामनगर के अपने पुश्तैनी महल में थे. पंद्रह मिनट बाद उनके कुछ कार्यकर्ता, जो रायबरेली-सुलतानपुर रोड पर स्थित मटियार-बघौरा मतदान केंद्र पर तैनात थे, संजय को सूचित करने आए कि कुछ कांग्रेसी कार्यकर्ता अपराधियों के साथ मिलकर आसपास के मतदाताओं को आतंकित कर रहे हैं.

यह सुनकर संजय अपने समर्थकों को कार, जीप और मोटर साइकिलों में भरकर भुसियावां की ओर चल पड़े. वे पांच मील तक ही गए थे कि बगल वाली सड़क से इंका समर्थकों से भरी जीप आई और वे संजय के खिलाफ गाली-गलौज भरे नारे लगाने लगे. संजय के नेतृत्व में उनके समर्थकों ने तुरंत इंका की जीप को घेरकर उस पर हमला बोल दिया. लेकिन चंद मिनटों में एक और कार आई तथा दूसरी ओर आकर खड़ी हो गई. पांच-छह जीपें भी सड़क पर नजर आने लगीं. तकरीबन 20 हथियारबंद लोगों ने चौराहे के नजदीक बनी दुकानों की दीवार के पीछे मोर्चेबंदी कर ली. फिर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू हो गई जो 20 मिनट बाद तब थमी जब संजय को गोली लग गई.

संजय सिंह और वी.पी. सिंह पर गोलियां चलना ही साबित करता है कि इस चुनाव अभियान में बंदूक खतरनाक हद तक हावी रही

वी.पी. सिंह मतदान केंद्रों पर कब्जे की खबरों की जांच के लिए फतेहपुर में डुगरई गांव का दौरा कर रहे थे तो उनका भी ऐसी ही हिंसा से साबका पड़ा. वे पीठासीन अधिकारी से बात कर रहे थे तभी मतदान केंद्र से तकरीबन 150 गज दूर से संवाददाताओं और फोटोग्राफरों के सामने तीन लोगों ने गोलियां दागीं. वी.पी. सिंह के सुरक्षाकर्मियों के मोर्चा संभालने से पहले तीन गोलियां दागी गईं और हमलावर तुरंत गायब हो गए. इस पर वी.पी. का कहना था, "क्या वे पागल हो गए हैं?"

नौवें आम चुनाव, जिनमें तकरीबन सौ लोगों की जानें गईं, इस बात का सबूत हैं कि चुनाव में हिंसा दिनोदिन बढ़ती ही जा रही है. इससे देश की चुनाव प्रक्रिया पर कई गंभीर प्रश्न-चिह्न खड़े हो गए हैं.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

गफलत में मारे गए

चेन्ना रेड्डी के संगठित अभियान के सामने रामराव का करिश्मा हवा हो गया

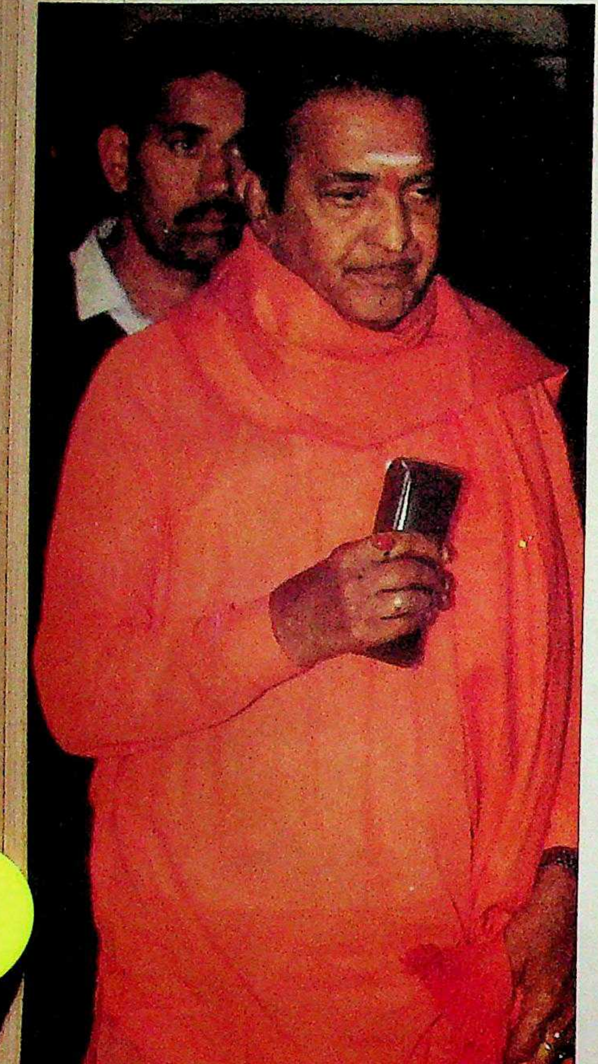

प्रशांत पंजियार

भगवान कृष्ण ने कहा है कि अपना कर्तव्य करो, फल की चिंता न करो"

एन.टी. रामराव

लोग मालिक हैं. वे किसी को भी कुछ भी कह सकते हैं"

चेन्ना रेड्डी

तेलुगु देशम 1985 की अपनी 202 सीटों के मुकाबले सिर्फ 74 सीटें ही ले पाई. जबकि इंका 50 से बढ़कर 180 सीटों पर पहुंच गई

इंका..................180
तेलुगु देशम...........74
भाजपा....................5

डी. रवींद्र रेड्डी

पिछले पखवाड़े इतिहास ने एक दशक पुराना नाटक आंध्र प्रदेश में दुबारा खेला लेकिन खेल में कांग्रेस-इ की झोली में गई सीटों की संख्या तकरीबन उतनी ही रही.

1978 में चेन्ना रेड्डी के नेतृत्व में पार्टी ने 175 सीटों पर जीत हासिल की थी. अपने लंबे राजनैतिक जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखने वाले आंध्र प्रदेश इंका के इस 71 वर्षीय अध्यक्ष को एक बार फिर विजय लहर पर सवार होने और चैतन्य रथम के भगवाधारी स्वामी को चलता कर देने का मौका मिला. उनकी अगुआई में इंका को 180 सीटों के साथ बहुमत मिल गया. नए मुख्यमंत्री चुने जाने पर चेन्ना रेड्डी ने कहा, "लोग मालिक हैं. वे कुछ भी कह सकते हैं." चेन्ना रेड्डी को जनता की ताकत का एहसास है. 33 वर्ष की उम्र में जब वे पुराने हैदराबाद राज्य में बी. रामकृष्ण राव के मंत्रिमंडल में मंत्री थे तब से लेकर मुख्यमंत्री तक के सफर के दौरान उन्होंने काफी राजनैतिक उतार-चढ़ाव देखे. राजनैतिक बियाबान में रहने की लंबी अवधि के दौरान उन्होंने दो राजनैतिक पार्टियां बनाई—समाजवादी लोकतांत्रिक दल और हाल में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल जो कुछ अरसे तक ही जीवित रहीं. वे 1969-70 के तेलंगाना आंदोलन का नेतृत्व करने वालों में से एक थे और उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के राज्यपाल भी रहे. पिछले साल तत्कालीन इंका महासचिव जी.के. मूपनार के पुराने कांग्रेसियों के दुबारा इंका में शामिल होने के आह्वान पर वे पार्टी में आ गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेन्ना रेड्डी की सत्ता में वापसी नाटकीय रही तो एन.टी. रामराव का पतन भी उतना ही आश्चर्य-जनक. तेलुगु देशम 1985 की अपनी 202 सीटों और इंका की 50 सीटों की तुलना में 74 सीटें ही हासिल कर पाई. चुनाव के बाद राष्ट्रीय मोर्चे के अध्यक्ष के रूप में दिल्ली में उनकी भूमिका प्रधान-मंत्री बनाने वालों में मानी जा रही थी. लेकिन देश की जनता ने परास्त रामराव को राज्यपाल कुमुदबेन जोशी को इस्तीफा सौंपते पाया. आंसुओं को किसी तरह रोकते हुए रामराव ने कहा "भगवान कृष्ण ने कहा है कि अपना कर्तव्य करो और फल की चिंता न करो. मैंने लोगों की सेवा की और उनके फैसले का मैं आदर करता हूं."

परदे पर भगवान कृष्ण की भूमिका करने वाला यह व्यक्ति सड़कों पर भगवान की वेशभूषा में लगे अपने निर्ज़ीव कटआउटों की तरह लोगों से कटा नजर आया. कुछ समय पहले से ही रामराव हकीकत से दूर होते गए. उनकी सनक भरी कार्यशैली का नमूना था फरवरी 1989 में समूचे मंत्रिमंडल को बरखास्त करना. फिर उनके दो दामादों चंद्राबाबू नायडू और डॉ. वेंकटेश्वर राव का उभरना भी हानिकारक सिद्ध हुआ. प्रमुख नियु-क्तियों में खम्मा समर्थक दृष्टिकोण रखना और औरतों को 30 फीसदी आरक्षण देने जैसे वादों को भुला देना भी रामराव को महंगा पड़ा. लेकिन उन्हें इसका एहसास नहीं हुआ. इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म के भड़कदार सेट पर वे ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की ध्यान-मग्न मुद्रा में बैठे रहे और मेनका उनके आगे नाचती रही. लेकिन इस बार जनता दूसरी धुन पर नाची. तेलुगु देशम पोलितब्यूरो के सदस्य मिटे पद्मनाभम ने कहा, "पहले की सफलताओं की वजह से हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे जिसका फायदा निश्चित रूप से इंका को मिला."

महबूबनगर लोकसभा सीट पर एक निहायत कम सक्रिय इंका नेता एम. मल्लिकार्जुन के हाथों परास्त हुए जनता दल के महासचिव और मुखर सांसद एस. जयपाल रेड्डी के मुताबिक रामराव ने साथ-साथ विधानसभा चुनाव कराकर गलती की. रेड्डी की दलील थी, "स्थानीय और क्षेत्रीय मुद्दे मतदाताओं के लिए ज्यादा अहम होते हैं और विधानसभा चुनाव साथ-साथ होने से राष्ट्रीय मुद्दे भुला दिए गए." राज्य जनता दल अध्यक्ष पी. बाबुल रेड्डी, राज्य भाजपा अध्यक्ष एम. वेंकैया नायडू और तेलुगु देशम के 21 पूर्व सांसदों और दूसरी पार्टियों की छुट्टी हो गई. विधानसभा चुनाव में 23 में से कम-से-कम 16 मंत्री हार गए.

योजनाबद्ध तरीके और उम्मीदवारों के चयन में ठोस नीति की कमी ने भी पार्टी की उम्मीदों पर पानी फेरा. मिसाल के तौर पर महबूबनगर के पार्टी कार्यकर्ताओं ने रामराव को सुझाव दिया कि उन्हें जिले के पिछड़े क्षेत्र कलवकुर्ती का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और वे तत्काल तैयार हो गए. लेकिन अपने मुख्यमंत्रित्व के दौरान रामराव ने इस इलाके का कभी दौरा नहीं किया था. उन्हें हराने वाले इंका

> **"पहले मिली जीत से हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे जिसका फायदा इंका को मिला"**
>
> पद्मनाभम

> **"स्थानीय मुद्दे ज्यादा महत्व के होते हैं. विधानसभा चुनाव साथ-साथ होने से राष्ट्रीय मुद्दे भुला दिए गए"**
>
> एस. जयपाल रेड्डी

> **इंकाई प्रचार अभियान में अहम मोड़ तब आया जब उसने अपने अलग घोषणापत्र में गरीबी हटाओ कार्यक्रमों का वादा किया**

के विधायक चित्तरंजन दास का कहना था, "उन्होंने मान लिया कि मतदाता उन्हीं को समर्थन देंगे." जब उन्हें बताया गया कि प्रधानमंत्री उस क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं तब रामराव ने चुनाव प्रचार के आखिरी दिन तीन घंटे वहां प्रचार करने का फैसला किया.

दूसरी ओर चेन्ना रेड्डी ने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी. उन्होंने राज्य की सभी इकाइयों को आंदोलन चलाकर सक्रिय रखा और पार्टी के दूसरे नेताओं को एकजुट बनाए रखा. तेलुगु देशम के घोषणापत्र के जवाब में उन्होंने राज्य के लिए रातोरात नौ पेजी घोषणापत्र तैयार करवा दिया. तेलुगु देशम के घोषणापत्र में बेरोजगारी से निबटने के लिए भूमिसेना के गठन की बात थी तो इंका के वादों में गरीबी हटाओ कार्यक्रम और तेलुगु देशम की 2 रु. प्रति किलो चावल मुहैया करने की योजना जारी रखने और रामराव द्वारा खत्म की गई विधान परिषद के पुनर्गठन और प्रवेश कर की समाप्ति का वादा शामिल था.

एक झटके में रेड्डी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को एकजुट कर दिया तथा व्यापारियों और ग्रामीण गरीबों की सद्भावनाएं हासिल कर लीं. आंध्र प्रदेश इंका के उपाध्यक्ष के. रोसैया का कहना था, "इससे पार्टी को ऐसे सभी तबकों का समर्थन हासिल करने में मदद मिली जो रामराव से खफा थे." पूर्व मुख्यमंत्री और कुरनूल से नवनिर्वाचित पार्टी सांसद के. विजयभास्कर रेड्डी का कहना था, "पहली बार मारवाड़ियों और दूसरे व्यापारियों ने हमें आमंत्रित कर समर्थन का भरोसा दिलाया."

इंका ने उत्तरी तटीय आंध्र प्रदेश को छोड़कर अच्छा प्रदर्शन किया. यहां तेलुगु देशम ने 37 विधानसभा सीटों में से 21 और बोब्बिली लोक-सभा सीट बरकरार रखी. तेलुगु देशम ने केवल एक और इलाके—पश्चिम गोदावरी जिले में अच्छा प्रदर्शन किया जहां पार्टी ने आधी विधानसभा सीटें और नरसापुर लोकसभा सीट हासिल की. इंका ने वहां से कापु जाति के मद्रास स्थित फिल्म निर्माता नाचु शेषगिरी राव को खड़ा किया. पार्टी को उम्मीद थी कि उम्मीदवार कापु होने के कारण जातीय वोट उसे मिल जाएंगे. नरसापुर से दुबारा चुने गए तेलुगु देशम के विजय कुमार राजू ने कहा "जातिगत समीकरण उस उम्मीदवार के खिलाफ पड़ सकता है जिसने अपने चुनाव क्षेत्र में काम न किया हो अथवा मतदाता उसे नहीं जानता हो."

चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद रामराव ने हालांकि सरकारी कर्मचारियों और कॉलेज अध्या-पकों की बकाया रकम का भुगतान कर दिया लेकिन उनमें से बहुत कम लोगों ने तेलुगु देशम का समर्थन किया. बापतला लोकसभा सीट से हारे भाजपा के वेंकैया नायडू ने स्वीकार किया, "तेलुगु देशम और उसके मित्र दल ग्रामीण मतदाताओं पर आश्रित थे जिन्हें सरकारी कार्यक्रमों के जरिये खाना और आश्रय मुहैया कराया गया."

शायद तेलुगु देशम का समर्थन केवल एक धड़े—पिछड़ी जातियों ने किया जिनके लिए रामराव ने चुनाव की घोषणा से कहीं पहले राज्य में आरक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2000 ई. तक बढ़ा दिया. पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व का सवाल चेन्ना रेड्डी को परेशानी में डाले है. इंका के कार्यकर्ता जिला इंका समितियों और उम्मीदवारों के चयन में पिछड़ी जातियों के लोगों की अनदेखी करने का आरोप लगाते हैं. यदि विधान परिषद का पुनर्गठन हुआ तो पार्टी को उन्हें और ज्यादा सीटें देनी होंगी. चुनावी दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है. पर चेन्ना रेड्डी के सामने सबसे गंभीर समस्या है टांग खिंचाई में लगे जिला स्तर के इंका नेताओं को एकजुट रखने की.

चेन्ना रेड्डी नौकरशाहों में अपने गुस्सैल मिजाज के लिए परिचित हैं, बावजूद इसके, उनका समर्थन उन्हें हासिल होगा. एक नौकरशाह ने कहा, "उनके साथ काम करना आसान है क्योंकि वे प्रशासन की कला जानते हैं और उनमें खुद फैसले लेने की समझ है." नतीजे निकलने वाली रात हैदराबाद में बंजारा हिल्स पर स्थित बंगलों में नौकरशाह ग्रुपों में इकट्ठे होकर रामराव की हार का जश्न मना रहे थे. एक वरिष्ठ नौकरशाह ने कहा, "खुशनुमा दिन अब वापस आ गए हैं. रामराव के घर पर सुबह-सुबह हमें तलब किया जाता था. नतीजतन हम अपनी शामें छोटी करने पर मजबूर हो गए थे." अपने अनुभव के बूते पर चेन्ना रेड्डी राज्य प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त बनाने और सरकारी कर्मचारियों से पर्याप्त काम ले सकने में सक्षम होंगे.

रामराव के विपरीत चेन्ना रेड्डी अफसरशाही का समर्थन जुटा लेंगे, हालांकि बात-बात पर बिगड़ जाना भी उनका स्वभाव रहा है

रामराव के लिए सत्ता खो देने के बाद पार्टी का निर्विवाद नेता बने रहना आसान नहीं होगा. उनके दो दामादों चंद्राबाबू नायडू और वेंकटेश्वर राव के नेतृत्व वाले दोनों धड़े पार्टी की हार के लिए एक-दूसरे को दोषी ठहराने लगे हैं. पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक रामराव उनकी सलाह पर पूरी तरह निर्भर थे. जैसा कि एक ने कहा, "यदि रामराव ने अपना तौर-तरीका नहीं बदला और लोकतांत्रिक न बने तो अगले चुनाव से पहले पार्टी खुद साफ हो जाएगी." यदि ऐसा नहीं होता, तो भी रामराव को 1989 के चुनावों की इस भयानक पराजय से कई सबक सीखने होंगे.

अजेयता के प्रभामंडल और सत्ता के झमेले से दूर रहकर रामराव के पास यह जानने के लिए पर्याप्त वक्त होगा कि जनता से उनका आधार क्यों कटा. अब कम-से-कम मेनका का नृत्य और चेलों की चौकड़ी तो नहीं होगी जो उन्हें हकीकत से दूर करती रही है. और उनकी अविश्वसनीय क्षमता की वजह से वे एक और राजनैतिक क्रांति के बारे में सोच सकते हैं. —अमरनाथ के. मेनन

सिक्किम

एकछत्र राज भंडारी का

सिक्किम के मुख्यमंत्री नरबहादुर भंडारी ने '32 में से 33 सीटें' जीतने की गर्वोक्ति सही साबित कर दिखाई है. उनकी अगुआई में सिक्किम संग्राम परिषद (सिसप) ने विधानसभा की सभी 32 सीटें तो जीती ही, लोकसभा की एकमात्र सीट भी भंडारी से अलग रह रहीं उनकी पत्नी दिलकुमारी से हथिया ली. यह भंडारी की व्यक्तिगत जीत है क्योंकि अभूतपूर्व सफलता ने इस करिश्माई नेता पर राज्य में 'भ्रष्ट और तानाशाही' शासन फैलाने के आरोप को धो दिया है.

यह भंडारी की व्यक्तिगत जीत है जिससे उन पर भ्रष्टाचार के आरोप धुल गए

दरअसल सिसप चुनाव अभियान के शुरू से ही आश्वस्त दिखती थी. सिसप के प्रचार प्रमुख संतोष कुमार राय कहते हैं, "एक साल पुरानी राइजिंग सन पार्टी (आरएसपी) और इंका तो हमारी पार्टी के आगे ठहर ही नहीं सकती थीं." लेकिन ये चुनाव नस्ली और जातीय मुद्दों पर लड़े गए थे. आरएसपी और कुछ दूसरे गुटों ने बहिरागतों को नागरिकता प्रदान करने, नेपालियों के लिए विधानसभा में सीटें आरक्षित रखने और संविधान की आठवीं अनुसूची में नेपाली भाषा को शामिल करने की नई मांगें उठाईं.

नैवल दास

जनता के मूड को भांपते हुए भंडारी ने अपनी पूरी राजनैतिक सत्ता और धन शक्ति के जरिये लोगों को भरोसा दिलाया कि वे 'निरंतरता और परिवर्तन' का प्रतिनिधित्व करते हैं. आरएसपी के नेता रामचंद्र पौड्याल ने घोषणा कर डाली, "भंडारी के जाने का वक्त आ गया है."

आखिरकार चुनावों के नतीजे प्रचार अभियान से भी ज्यादा नाटकीय सिद्ध हुए. विरोधी दल अब सिसप पर चुनाव में धांधली का आरोप लगा रहे हैं. इन आरोपों में चाहे जितना दम हो पर यह साफ है कि भंडारी की सहानुभूति में पड़े वोटों के कारण सिक्किम विधानसभा विपक्षहीन होकर रह गई है. दरअसल, सिक्किम के चुनाव में छा जाने की लड़ाई की क्षमता का कोई जवाब नहीं. —फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलम के पैनेपन का जो सबूत हिंदी इंडिया टुडे ने दिया है
उसने हिंदी पत्रकारिता को धार दी है.

तथ्यों, घटनाओं को परत-दर-परत उधेड़कर,
उन्हें नए सोच और नई दृष्टि की रोशनी में
जांच-परखकर पाठकों तक पहुंचाना
हिंदी इंडिया टुडे का उद्देश्य रहा है.

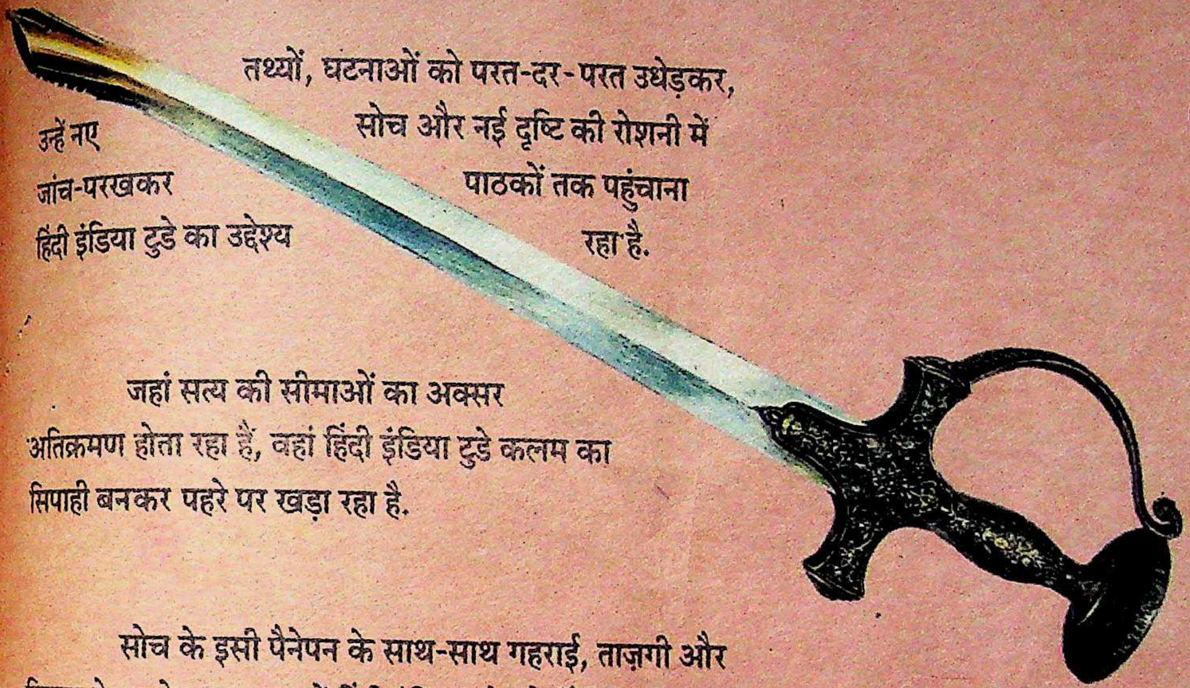

जहां सत्य की सीमाओं का अक्सर
अतिक्रमण होता रहा है, वहां हिंदी इंडिया टुडे कलम का
सिपाही बनकर पहरे पर खड़ा रहा है.

सोच के इसी पैनेपन के साथ-साथ गहराई, ताज़गी और
विस्तार ने, इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी की सर्वोत्कृष्ट
पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त हुआ है.

लेकिन हिंदी इंडिया टुडे सिर्फ समाचार पत्रिका ही नहीं है.
जीवन के विविध रंगों से परिचय के लिए पर्यावरण, जीवन शैली और
रहन-सहन जैसे स्तंभ भी हैं जिनमें बदलते परिवेश और ज़िंदगी के
नए नजरिए की झांकी प्रस्तुत की जाती है.

कलम का सिपाही

वार्षिक ग्राहक बनिए – प्रति अंक 1.50 रु. बचाइए (यानी 36/- रु. प्रति वर्ष) और अपनी चहेती पत्रिका घर बैठे पाइए! 132/- रु. चैक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिए 'लिविंग मीडिया इंडिया लि०' के नाम थॉमसन प्रेस बिल्डिंग, पो. बॉ. 706, फरीदाबाद-121007 (हरियाणा) पर भेजिए, अपने नाम व पते के साथ.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/271

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनाओं के अथाह मानसरोवर में हिंदी इंडिया टुडे राजहंस की तरह गहरी डुबकी लगाकर अक्सर अनमोल मोती लाता रहा है.

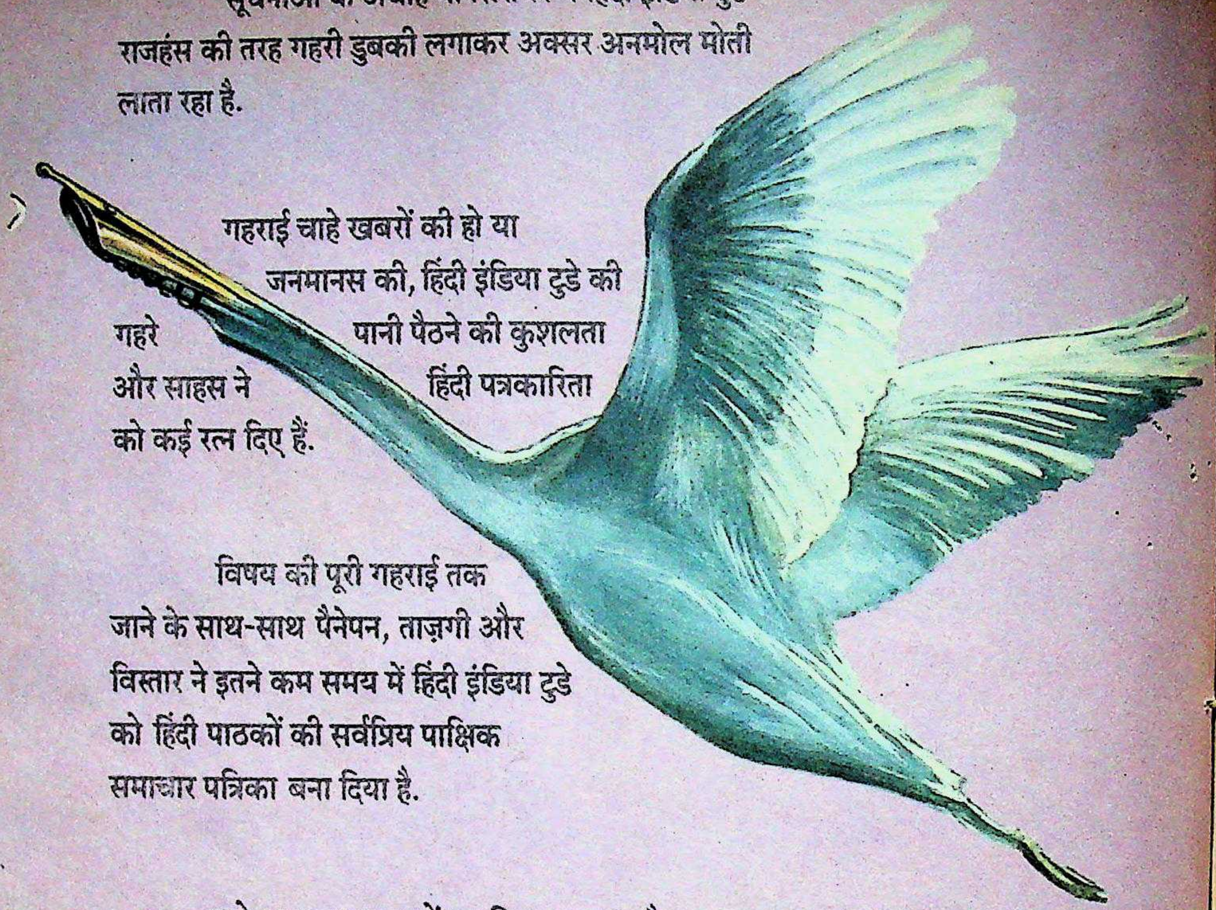

गहराई चाहे खबरों की हो या जनमानस की, हिंदी इंडिया टुडे की गहरे पानी पैठने की कुशलता और साहस ने हिंदी पत्रकारिता को कई रत्न दिए हैं.

विषय की पूरी गहराई तक जाने के साथ-साथ पैनेपन, ताज़गी और विस्तार ने इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी पाठकों की सर्वप्रिय पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त है.

और चूंकि आधी दुनिया महिलाओं की है इसीलिए हिंदी इंडिया टुडे उनकी रुचियों और जरूरतों के विषयों जैसे रसोईघर, गहने, सौंदर्य प्रसाधन, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति और उनके बदलते दृष्टिकोण की थाह लेता है. फिर यथार्थ की बेबाक टिप्पणियों के लिए एक विशिष्ट महिला पत्रकार का स्तंभ भी है.

जनमानस का राजहंस

इंडिया टुडे

देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/11/2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक

तूफान में उखड़ा तंबू

जनता दल को आपसी झगड़े और सरकार की अकर्मण्यता का परिणाम भोगना पड़ा

छह वर्षों तक पूरे देश की मुख्य धारा के खिलाफ कर्नाटक में खेमा गाड़े रहने वाले जनता दल का तंबू इस चुनाव में पूरी तरह उखड़ गया है. और जब तक भौंचक नेता इस तूफान से हुई बरबादी की तरफ ध्यान देते तब तक चुनाव परिणाम बता रहे थे कि जनता दल को मिले 24 स्थानों के मुकाबले इंका को 177 सीटें मिल चुकी हैं. भाजपा को चार और जनता पार्टी को मात्र दो स्थान मिले.

यह एक ऐसा तूफान था जिसे आते हुए किसी ने नहीं देखा, कांग्रेसियों ने भी नहीं. पंगु बन चुके आलाकमान के आदेशों तले दबे और आपस में उलझे कांग्रेसी नेता भी मान रहे थे कि पार्टी को हिंदीभाषी राज्यों में होने वाले नुकसान की कुछ हद तक भरपाई वे कर सकते हैं.

दरअसल जिस दिन परिणाम आने थे उस दिन तक पूर्व मुख्यमंत्री आर. गुंडुराव यही भविष्यवाणी कर रहे थे कि इंका को 224 सदस्यों वाली विधानसभा में 120 सीटें तक मिल जाएंगी. लेकिन जब परिणाम सामने आए तो वे खुद भी भौंचक रह गए. विधानसभा की 80 फीसदी सीटें जीतने के साथ ही इंका ने जनता दल को भी मटियामेट कर दिया. प्रदेश इंका अध्यक्ष और नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटील कहते हैं, "कर्नाटक के लोगों ने एक बार फिर जता दिया है कि वे सिर्फ इंका में ही आस्था रखते हैं."

कर्नाटक में जनता दल की इतनी बुरी गत होने के कई कारण भी थे. इंका इस बार अपने पक्ष के वोट से नहीं, जनता दल के खिलाफ पड़े वोटों की वजह से जीती. जनता दल ने अपने चुनावी वादे पूरे नहीं किए थे और उसकी भीतरी कलह सारी सीमाओं को तोड़ गई थी. चुनाव के परिणामों से सन्न रह गए रामकृष्ण हेगड़े कहते हैं, "एक बार फिर हमें अपने जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास की कीमत चुकानी पड़ी."

यह कीमत भी काफी अधिक थी. राज्य में बहने वाली जनता दल विरोधी आंधी ने हेगड़े, जीवराज अल्वा, आर.एल. जालप्पा और आर.वी. देशपांडे जैसे कुछ लोगों को छोड़कर सबका पत्ता साफ कर दिया. पूर्व मुख्यमंत्री एस.आर. बोम्मई, वरिष्ठ मंत्री जे.एच. पटेल और अनेक पूर्व मंत्री परास्त हो गए. दरअसल मात्र दस फीसदी स्थान पाकर जनता दल किसी तरह विधानसभा में मान्यता प्राप्त विपक्षी दल होने की स्थिति में पहुंच गया है.

"कर्नाटक एक बार फिर इंका का किला बन गया है"

वीरेंद्र पाटील

इंका ने न केवल 80 फीसदी का बहुमत हासिल कर लिया बल्कि जनता दल को भी नाकों चने चबवा दिए

इंका	177
जनता दल	24
भाजपा	4

इंका के उम्मीदवार विपक्षी वोटों के बंटने के हिसाब से भी अधिक मतों से जीते और इससे पता चलता है कि लोगों ने जाति और धर्म किसी भी आधार पर बंटे बिना वोट दिए. लोगों ने जनता दल की, खास तौर से सरकार में खेमेबंदी के बाद के दौर की अकुशलता के खिलाफ वोट दिए. इंका के नेता वीरप्पा मोइली ने कहा, "वे कोई फलदायी काम नहीं कर सके." बोम्मई भी मानते हैं, "आपसी लड़ाई ने सरकारी कामकाज में बाधा डाली." राजनैतिक पंडितों का मानना है कि वर्ष के शुरू में जनता दल सरकार को भंग किए जाने से लोगों में उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं पैदा हुई.

लेकिन जनता दल की पराजय का एकमात्र कारण उसके प्रति लोगों की नाराजगी ही नहीं थी. अगर जनता दल दूसरे विपक्षी दलों के साथ एकजुट होकर मैदान में आता तब उसकी इतनी बड़ी पराजय नहीं होती. जनता दल से टूटी देवगौड़ा के नेतृत्व वाली जनता पार्टी और कर्नाटक राज्य रैयत संघ तो किसी तरह का तालमेल ही नहीं करना चाहते थे लेकिन जनता दल, भाजपा और भाकपा से भी तालमेल नहीं कर पाया. इसका फायदा इंका को मिला. विपक्षी वोट बंटने से उसे 60 सीटें मिल गईं.

लोगों के मन में आपसी झगड़ों में ही फंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ndation Chennai and

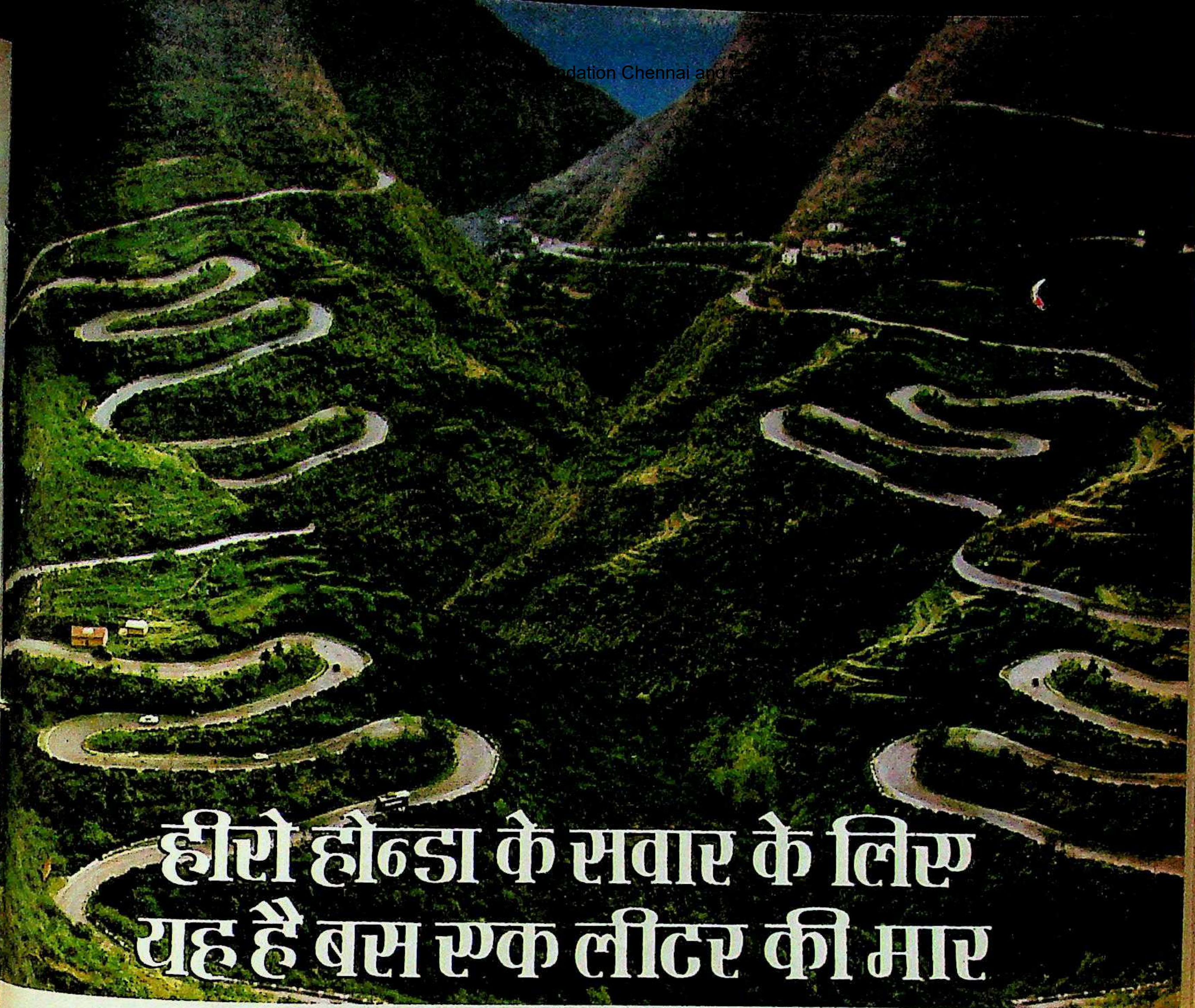

हम यह बात ज़रा भी बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कह रहे। अगर आप हीरो होन्डा सी डी 100 पर सवार हैं तो एक लीटर पेट्रोल आपको बहुत दूर–80 किलोमीटर दूर तक–ले जाएगा।

एक लीटर में आपको *इतनी* दूर भला और कौन सी मोटरसाइकिल ले जाएगी?

टैंक भरिए. और चलते चलिए.

होन्डा की तकनीकी श्रेष्ठता हीरो होन्डा सी डी 100 के असाधारण 4-स्ट्रोक इंजन की हर विशेषता में देखी जा सकती है। ईंधन पूरी मात्रा में जलने के कारण देखभाल में आसानी, 80 किलोमीटर प्रति लीटर* चलने की कुशलता, और साथ में प्रदूषणहीन एग्ज़ास्ट सुनिश्चित हैं...मीलों-मील बिना-परेशानी अच्छी सेवा के लिए।

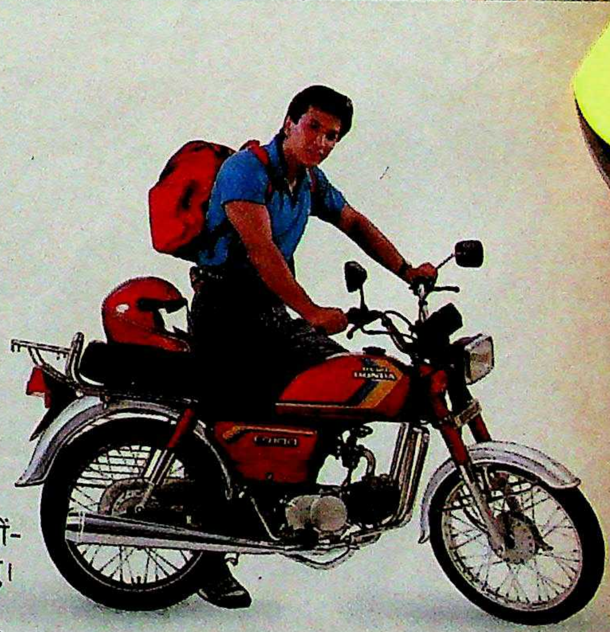

हां, हीरो होन्डा को लाखों ने अपनाया है। उन्हीं ने इसे भारत की सबसे अधिक बिकने वाली मोटरसाइकिल बनाया है।

HERO HONDA

आपका शानदार हमसफ़र!

** 40 कि.मी. प्रति घंटा और 130 किलो भार सहित.*

HTA 6347 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

dation Chennai and eGangotri

जिन्दल की एक और अभूतपूर्व सफ

• जिन्दल स्ट्रिप्स लि. का पूर्ण रूप से परिवर्तनीय डिबेन्चरों का राइट इशू 7.11.89 से 9.12.89 तक खुला है। •

•य

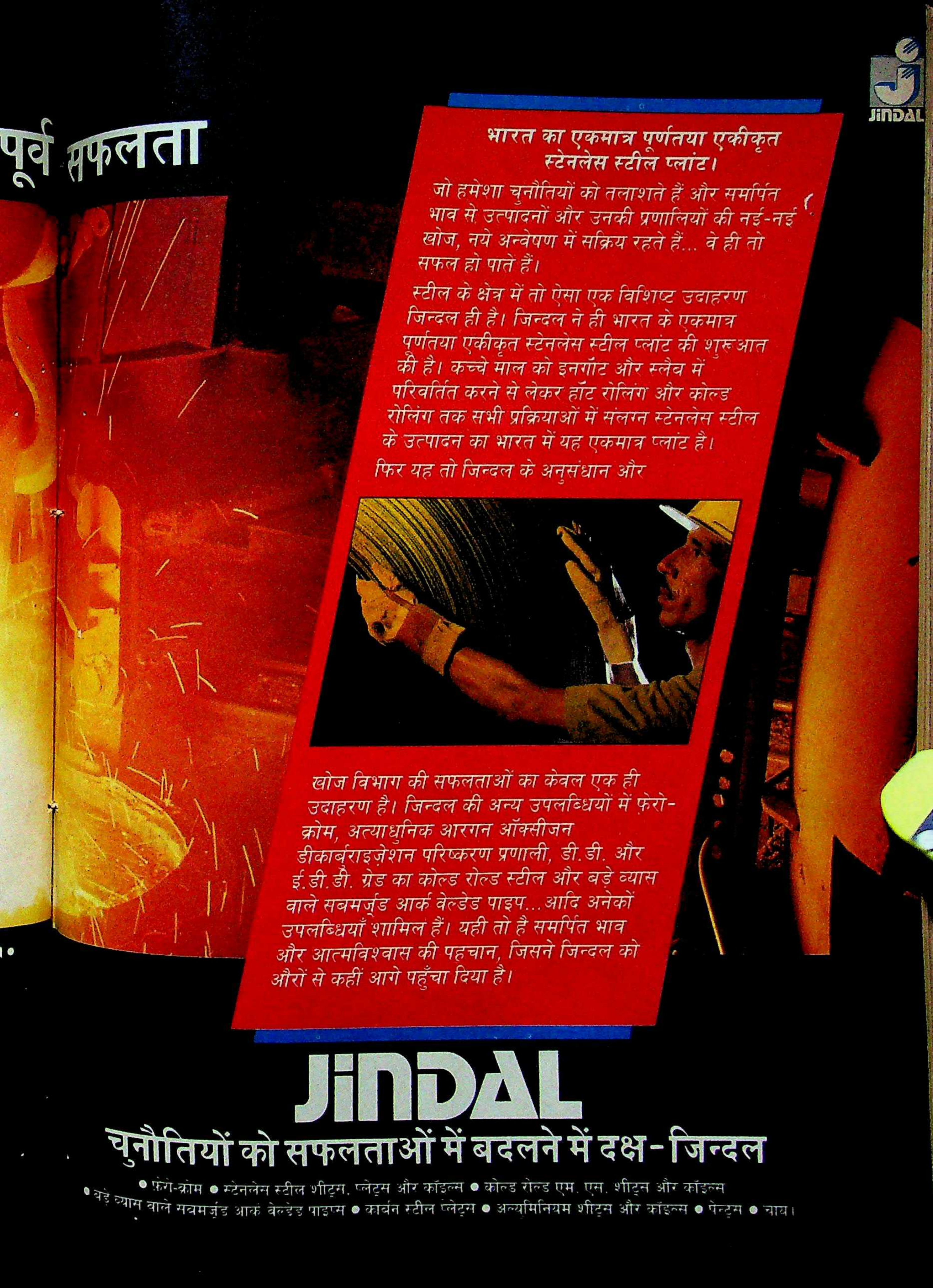
पूर्व सफलता
JINDAL
भारत का एकमात्र पूर्णतया एकीकृत स्टेनलेस स्टील प्लांट।
जो हमेशा चुनौतियों को तलाशते हैं और समर्पित भाव से उत्पादनों और उनकी प्रणालियों की नई-नई खोज, नये अन्वेषण में सक्रिय रहते हैं... वे ही तो सफल हो पाते हैं।
स्टील के क्षेत्र में तो ऐसा एक विशिष्ट उदाहरण जिन्दल ही है। जिन्दल ने ही भारत के एकमात्र पूर्णतया एकीकृत स्टेनलेस स्टील प्लांट की शुरुआत की है। कच्चे माल को इनगॉट और स्लैब में परिवर्तित करने से लेकर हॉट रोलिंग और कोल्ड रोलिंग तक सभी प्रक्रियाओं में संलग्न स्टेनलेस स्टील के उत्पादन का भारत में यह एकमात्र प्लांट है।
फिर यह तो जिन्दल के अनुसंधान और खोज विभाग की सफलताओं का केवल एक ही उदाहरण है। जिन्दल की अन्य उपलब्धियों में फ़ेरो-क्रोम, अत्याधुनिक आरगन ऑक्सीजन डीकार्बुराइज़ेशन परिष्करण प्रणाली, डी.डी. और ई.डी.डी. ग्रेड का कोल्ड रोल्ड स्टील और बड़े व्यास वाले सबमर्ज़्ड आर्क वेल्डेड पाइप...आदि अनेकों उपलब्धियाँ शामिल हैं। यही तो है समर्पित भाव और आत्मविश्वास की पहचान, जिसने जिन्दल को औरों से कहीं आगे पहुँचा दिया है।
JINDAL
चुनौतियों को सफलताओं में बदलने में दक्ष - जिन्दल
• फ़ेरो-क्रोम • स्टेनलेस स्टील शीट्स, प्लेट्स और कॉइल्स • कोल्ड रोल्ड एम. एस. शीट्स और कॉइल्स
• बड़े व्यास वाले सबमर्ज़्ड आर्क वेल्डेड पाइप्स • कार्बन स्टील प्लेट्स • अल्युमिनियम शीट्स और कॉइल्स • पेन्ट्स • चाय।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्टेक्स

वक्त की कसौटी पर अव्वल एकमात्र विश्वसनीय पानी की टंकिया

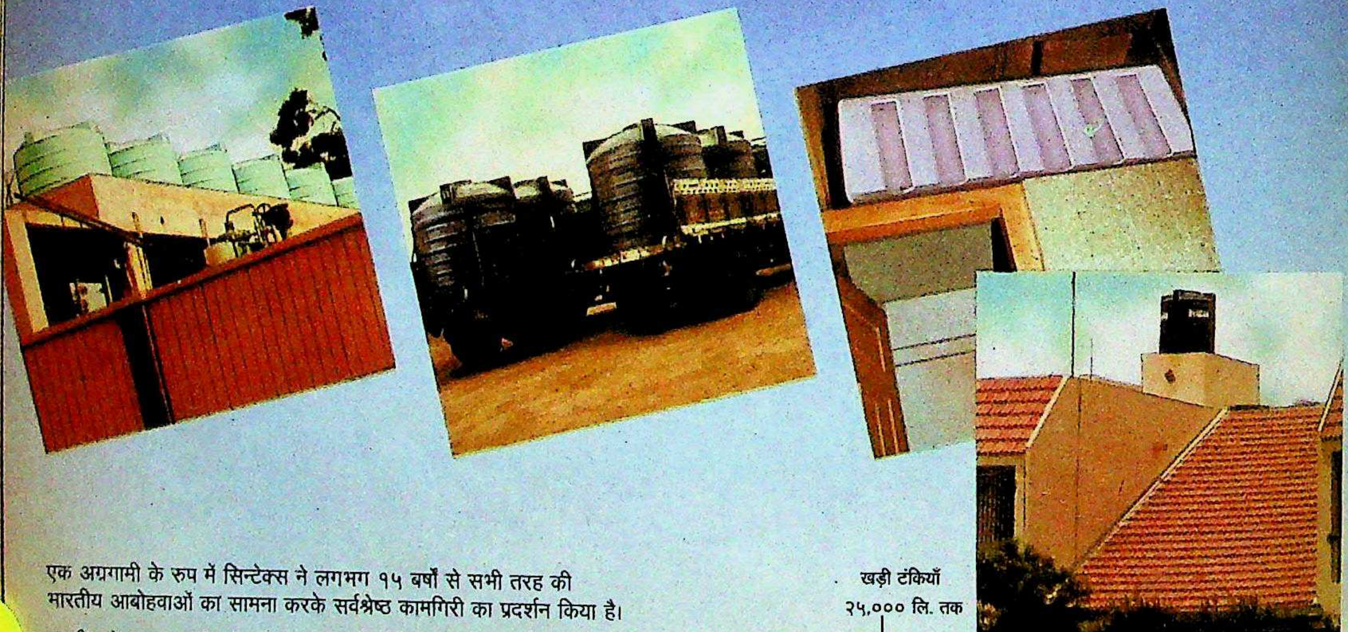

एक अग्रगामी के रुप में सिन्टेक्स ने लगभग १५ बर्षों से सभी तरह की भारतीय आबोहवाओं का सामना करके सर्वश्रेष्ठ कामगिरी का प्रदर्शन किया है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक, और कच्छ से कोहिमा तक, पानीके संग्रह एवं परिवहन के सभी उपयोगों में चल रही, लाखों सिन्टेक्स की टंकिया अब दिन ब दिन और भी लोकप्रिय होती जा रही है। यह सुबूत है सिन्टेक्स की अपार लोकप्रियता और विश्वसनीयताका तभी तो आज दुनियाभर में सबसे ज्यादा बिकनेवाली टंकियाँ है – सिन्टेक्स आखिर एक प्रवर्तक के लिए अभिनवता की कोई सीमा नहीं होती।

अधिक जानकारी के लिये यहां संपर्क करें:

सिन्टर प्लास्ट कन्टेनर्स

प्लास्टिक्स डिवीजन द भारत विजय मिल्स लि.कलोल (उ. गुजरात) ३८२ ७२१
फोन:(०२७६४), २२२८, ३१४४, ३१४५ ग्राम: "SINTEX"
टेलेक्स: ०१२०५–२०२ SPC IN फॅक्स: (०२७६४) २४३६

BIDHAN-SPC-139/89-Hindi

सिन्टेक्स दुनियाकी नं.१ प्लास्टिक टंकियां

ऑफीसेस: अहमदाबाद • वडोदरा • मुंबई • भोपाळ • कलकत्ता • नई दिल्ली • हैदराबाद • जयपूर • लखनौ • मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रहने वाले जनता दल के प्रति इतनी नफरत थी कि उन्होंने इंका के ऐसे दर्जनों उम्मीदवारों को राजनैतिक जीवनदान दे दिया जिन्हें वे खुद ही रद्दी की टोकरी में फेंक चुके थे. ऐसे लोगों में रेणुका राजेंद्र, ए.बी. जकनुर, चंद्र प्रभा अर्स और नागम्मा केशव मूर्ति शामिल हैं.

मतदाताओं ने देवगौड़ा के नेतृत्व वाली जनता पार्टी को एकदम ही ठेंगा दिखा दिया. राज्य में तीसरी शक्ति मानी जाने वाली जनता पार्टी को मात्र दो ही सीटें मिलीं. खुद देवगौड़ा जिन दो स्थानों से लड़े, हार गए. उनके दर्जनों लोग, जिन्होंने चुनाव प्रचार में बहुत ही रहस्यमय तरीके से भारी धनराशि खर्च की, धूल में मिल गए.

"एक बार फिर हमने अपनी आत्म-तुष्टि की कीमत चुकाई"

रामकृष्ण हेगड़े

वोक्कलिगा जाति के इस दिग्गज के सारे अरमान भले ही चकनाचूर हो गए हों लेकिन वे एक बात से संतुष्ट होंगे कि उन्होंने 50 से अधिक क्षेत्रों में जनता दल उम्मीदवारों को हरवा दिया. और उनकी पार्टी का जो असर है वह सिर्फ दो सीटों से नहीं झलकता. अनेक चुनाव क्षेत्रों में उनकी पार्टी के उम्मीदवार दूसरे स्थान पर थे. लेकिन मुख्यमंत्री पद के दावेदार नेता के लिए यह प्रदर्शन तो बहुत ही खराब रहा. लेकिन अभी भी देवगौड़ा हतोत्साहित नहीं हुए हैं और अपनी पार्टी के लोगों को फिर से कमर कसने को कह रहे हैं.

अगर 200 स्थानों से अधिक पर उम्मीदवार खड़े करके देवगौड़ा ने विपक्ष का बंटाधार किया तो भाजपा ने भी 120 स्थान पर लड़कर इस नाटक में अपनी भूमिका निभाई. उसे सिर्फ चार स्थान मिले. कर्नाटक राज्य रैयत संघ ने भी यही किया और उसके मात्र दो लोग जीते, जबकि करीब दर्जन भर क्षेत्रों में उसके उतरने का असर पड़ा. जीवराज अल्वा कहते हैं, "हमने तो यह राज्य इंका को थाल में परोसकर भेंट कर दिया."

दूसरी ओर छह वर्षों से सत्ता से बाहर रहने और आपसी कलह की शिकार इंका के लिए यह भारी जीत किसी अमृतपान से कम नहीं है. रातोंरात उसके नेता नए उत्साह से ताल ठोंकने लगे. 1982 में गुंडूराव मंत्रिमंडल से निकलकर राज्य में इंका को हराने वाले एस. बंगरप्पा उनके घर पर पहुंचने वाले लोगों में पहले थे. राव ने बंगरप्पा को गले लगा लिया. लाल

रामकृष्ण हेगड़े

बहुत कठिन है डगर...

रामकृष्ण हेगड़े के मौजूदा सूरतेहाल पर यही कहा जा सकता है, "वाह! इस दुर्गति के सदके!" कर्नाटक में जनता दल की नाकामी के साथ ही विपक्ष के इस सौम्य नेता का राजनैतिक जीवन फजीहत के दौर में पहुंच गया है. चुनाव से पहले उन्हें अभियान संचालक का पद दिया गया था पर अब उन्हें ही सारी तबाही का कारण माना जा रहा है.

उनके रुतबे में एकाएक आई इस कमी से गैर-इंका नेतृत्व में उनकी स्थिति दांव पर लग गई है. चुनाव में विधानसभा की सीट के लिए लड़ने का फैसला लेकर जनता दल के इस उपाध्यक्ष ने एक सोचा-समझा खतरा मोल लिया था. उनकी कोशिश थी कि वे घोटालों के आरोपों से मैली अपनी छवि धोकर दमदार नेता की अपनी हैसियत बहाल कर लेंगे. पर मतदाताओं के फैसले ने तो उनके राजनैतिक भविष्य को ही दांव पर लगा दिया है.

इस आधार को बरकरार रखना इतना आसान नहीं था. बासवानगुडी के अपने चुनाव क्षेत्र में हेगड़े इंका के हरनाली रामास्वामी को महज 8,400 वोटों से हरा पाए

भवान सिंह

हेगड़े जब प्रचार कर रहे थे तो हालात इतने बुरे नहीं लगते थे. उत्तरी कर्नाटक की उनकी सभाओं में भारी भीड़ घंटों उनका इंतजार करती थी. जिसे देखकर वे खुशी से कहते थे, "देखिए मैं वैसा छापामार राजनीतिक नहीं हूं जिसे देवीलाल तुच्छ समझते हैं. मेरा खुद का आधार है."

पर इस आधार को बरकरार रखना इतना आसान नहीं था. बासवनगुंडी के अपने चुनाव क्षेत्र से वे अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी, इंका के हरनाली रामास्वामी को महज 8,400 वोटों से हरा पाए. बाकी पार्टी के लिए भी नतीजे इतने उत्साह भरे नहीं रहे. इंका की भारी जीत से राजनैतिक जानकार दंग रह गए. अब हेगड़े कहते हैं, "मतपेटी के भेद को जान पाना मुश्किल है."

पिछले हफ्ते जब उनकी इस दुर्गति की खबरें आनी शुरू हुईं तो उन्होंने जैसे संन्यास ही ले लिया और अपनी पोतियों के साथ खेल में मन रमाने लग गए. बाद में संपर्क करने पर उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "शायद मेरी किस्मत में यही था." पर दो दिन बाद ही उत्तर में कामयाब होकर सरकार बनाने का दावा करने वाले जनता दल के अपने साथियों को बधाई देने के लिए वे दिल्ली की ओर उड़ गए.

—चिदानंद राजघट्टा

BIDHAN-SPC-139/89-Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश भट्ट

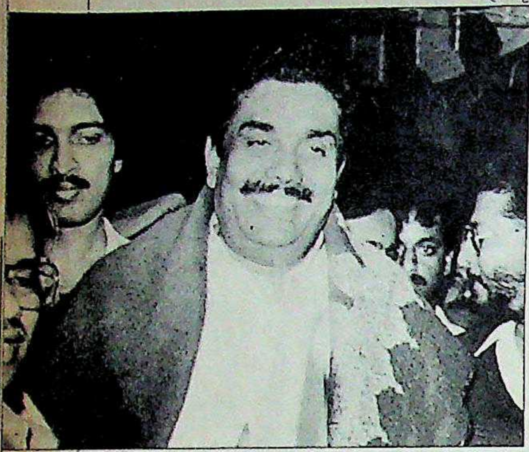

रेशमी चादर ओढ़े गुंडुराव बड़ी अकड़ के साथ चहलकदमी करते रहे. उनके दर्जनों समर्थक जीत गए. उनमें से करीब 20 तो वे लोग ही हैं जिनका नाम उन्होंने उम्मीदवारों की सूची में आखिरी वक्त जुड़वाया था.

दूसरे नेता थोड़े संयत थे, पर वे भी खुशी से भरे थे. उत्तर में कांग्रेस का पत्ता साफ हो जाने की खबर भी साथ ही आने के कारण प्रदेश के इंका नेता इस बात को लेकर प्रफुल्लित थे कि अब आलाकमान में उनकी पूछ बढ़ेगी. छह साल के दौरान पार्टी में उनकी कीमत घट गई थी. वीरेंद्र पाटील ने कहा, "कर्नाटक फिर इंका का गढ़ बन गया है."

यही नहीं, दक्षिण भारत के दूसरे राज्य भी अब इसी धारा में लौट आए हैं. छह वर्षों तक सत्ता में रहने के बाद जनता दल को अब फिर विपक्षी भूमिका में लौटना पड़ा है. सत्ता से बाहर रहकर अब उसे आत्मविश्लेषण करने का मौका मिलेगा. राज्य में पहली गैरकांग्रेसी सरकार के तौर पर उसका कामकाज उतना बुरा नहीं रहा था लेकिन उसके नेताओं का चरित्र तेजी से गिरा. मतदाताओं ने उन्हें जो चपत लगाई वह कुछ ज्यादा ही करारी है. हेगड़े कहते हैं, "मतदाताओं ने हमें धराशायी कर दिया है."

इंका उसके इस पतन से सीख ले सकती है कि अगर उसकी सरकार भी निकम्मी साबित हुई तो लोग उसकी भी यही दुर्दशा कर सकते हैं. आखिर सरकार पर किसी का पुश्तैनी अधिकार तो नहीं है.

—चिदानंद राजघट्टा

गुंडुराव के दर्जनों समर्थक जीत गए. इनमें 20 लोग वे भी हैं जिन्हें आखिरी वक्त में उम्मीदवार बनाया गया

महज दस फीसदी स्थान पाकर जनता दल किसी तरह विधानसभा में मान्यता प्राप्त विपक्ष की हैसियत पा सका

फैसला जनता दल की आपसी लड़ाई और उसकी सरकार के आखिरी दो वर्षों की अकर्मण्यता के खिलाफ हुआ

गोवा

बराबरी से बनी विचित्र स्थिति

संसद में किसी पार्टी को बहुमत न मिलने से देश भर में जिस तरह की अनिश्चितता का वातावरण बना रहा, देश के खूबसूरत तटवर्ती राज्य गोवा की विधानसभा में भी वही स्थिति थी. सत्तारूढ़ इंका और इसकी प्रतिद्वंद्वी महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी (मगोपा) दोनों ने 40 सदस्यों वाली विधानसभा में 18-18 सीटें जीतकर विचित्र स्थिति पैदा कर दी. दो सीटों पर चुनाव स्थगित हो जाने से सरकार के गठन का सारा दारोमदार दो निर्दलीय उम्मीदवारों पर टिक गया.

दोनों पार्टियों द्वारा सरकार बनाने के दावे पेश करने के कारण राज्यपाल खुर्शीद आलम खान अनोखी दुविधा में फंस गए. इससे पहले एक और रोमांचक नाटक खेला गया. दोनों निर्दलियों ने मगोपा को समर्थन देने का फैसला किया था लेकिन इससे पहले कि वे इसकी घोषणा करते, इंका ने उनमें से एक, डॉ. कार्मो पेगाडो को फोड़ लिया. पेगाडो उस रात मुख्यमंत्री राणे के साथ दिल्ली उड़ गए.

अब राज्यपाल के सामने वहां राष्ट्रपति शासन लागू करने के सिवा कोई चारा नहीं बचता, क्योंकि कोई दूसरा फैसला विस्फोटक हालात पैदा कर सकता है. मगोपा अध्यक्ष रमाकांत खलप कहते हैं, "यदि इंका से सरकार बनाने को कहा गया तो हमारी पार्टी के लोग भारी आंदोलन छेड़ देंगे."

अब दोनों पार्टियों की नजरें उन दो निर्वाचन क्षेत्रों पर टिकी हैं, जहां चुनाव नहीं हो पाए थे. गोवा प्रदेश इंका अध्यक्ष सुलोचना काटकर का कहना है, "इस गतिरोध को खत्म करने के लिए हम जल्दी चुनाव कराने के लिए दबाव डालेंगे." इंका इस बात से आश्वस्त है कि दोनों सीटें उसके गढ़, दक्षिण गोवा में ही हैं. लेकिन इंका के कई गढ़ों में सेंध लगाने वाली मगोपा को उम्मीद है कि मराठी को दूसरी राजभाषा बनाने जैसे नाजुक मुद्दे के बूते वह सारे वोट समेट ले जाएगी. लेकिन तब तक गोवा त्रिशंकु की स्थिति में रहेगा.

—रघुनंदन धर

अपने समर्थकों के साथ खलपः बहुमत के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सुरक्षा रेमण्ड सीमेंट से मिले वह पीढ़ी दर पीढ़ी चले.

इसलिए चाहे आपका अपना घर हो या दफ़्तर या फिर कोई अन्य निर्माण कार्य, भरोसा कीजिए केवल रेमण्ड सीमेंट पर. क्योंकि रेमण्ड सीमेंट ठोस हैं

इसके फ़ायदे : उत्तम दबाव शक्ति (कम्प्रैसिव स्ट्रैंथ), जमाव का बढ़िया मानक, मज़बूत पैकिंग.

जी हां, रेमण्ड सीमेंट को बरसात, धूप और समय जैसी कुदरत की फौलादी शक्तियों से मुकाबला करने के लिए ही बनाया गया है.

याद रखिए, रेमण्ड सीमेंट के कण-कण में भरी है सर्वोत्तम सुरक्षा और सर्वोत्तम शक्ति.

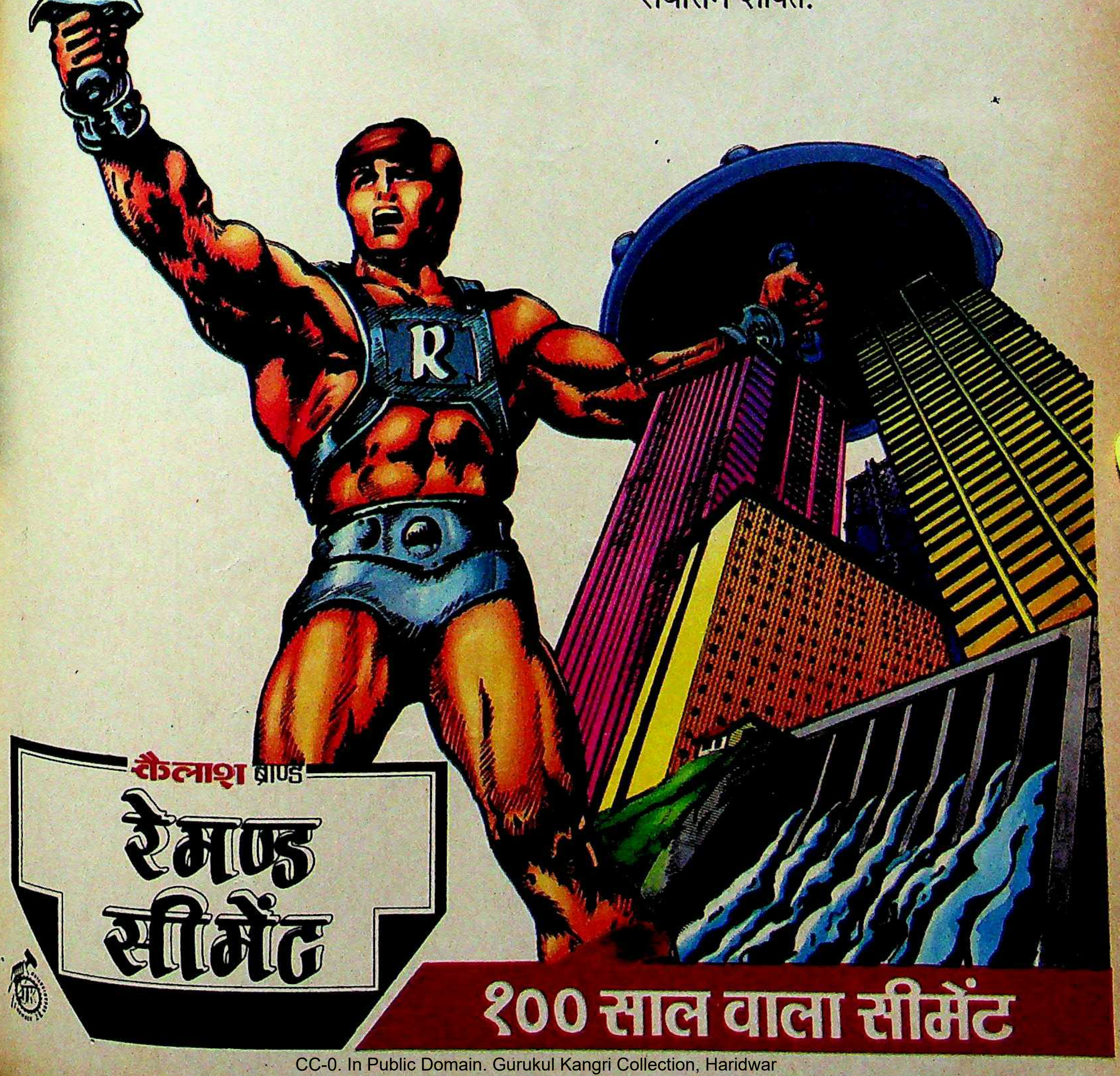

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Joy. A letter arrived in the morning post. I'd been invited to a Film Maker's Workshop. World-wide. In New York. Panic. I had to leave the next day. I had no warm clothes. And New York in the winter. Second only to the North

Pole. Then of course there was the cosmetic angle. I'd have to look smart as well. After all, I'd soon be in designer country, right? Well, I reached designer country. And all went well. Eventless, till the last evening. We were watching a Hitchcock classic. In the darkness. A soft voice whispered behind me, "Nice sweater." My heart stood still for a second. That wasn't an American drawl. I know an Indian voice when I hear one. We went out that evening. Alisha and I. And the next. "You know, it's your sweater that did it...", she said, her eyes twinkling. "Its colour ... its style..." New York in the winter. Second only to heaven.

KNITWEAR by Park Avenue by Raymond's

Style... it never goes out of fashion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS PA 108 2539

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

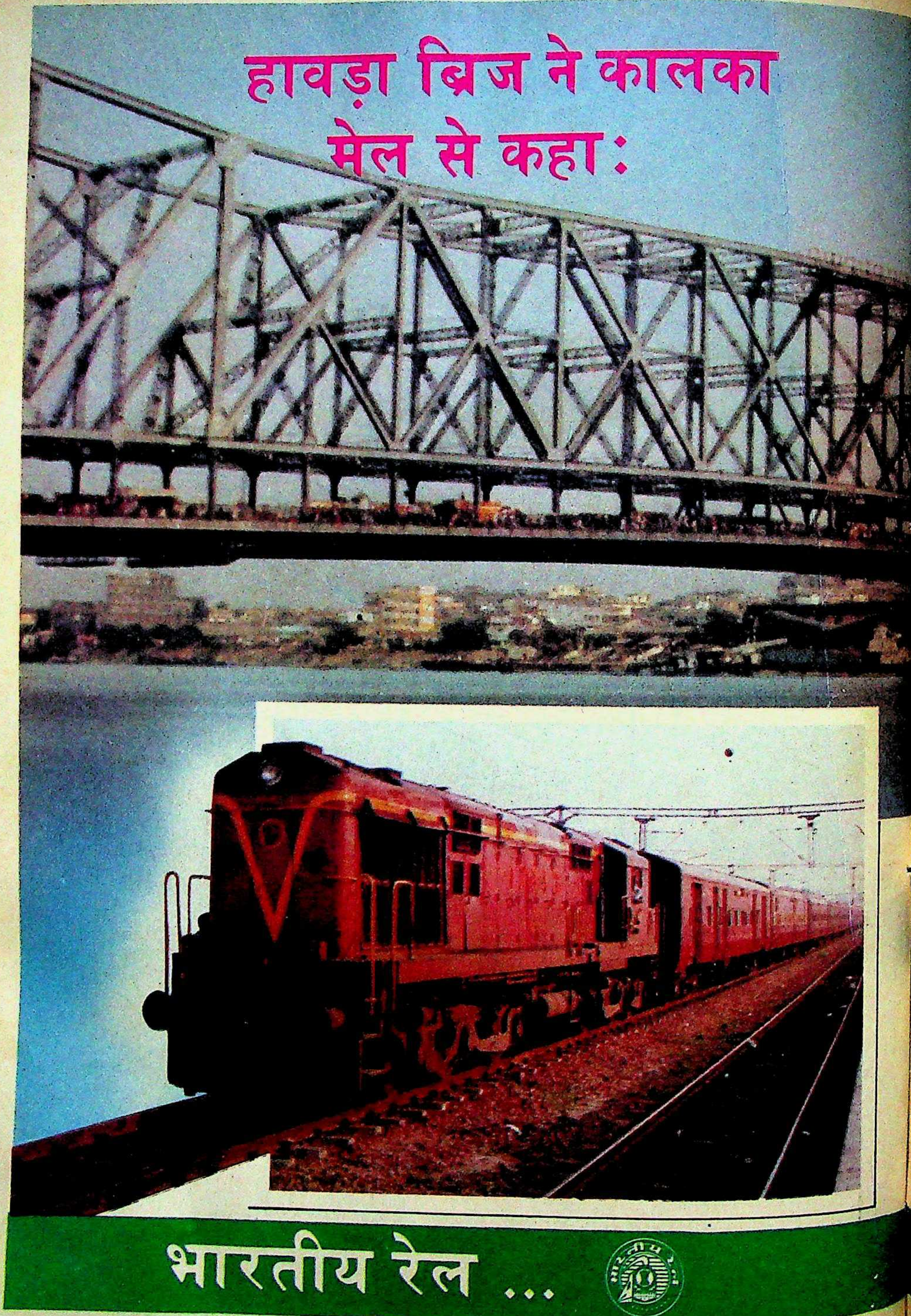

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

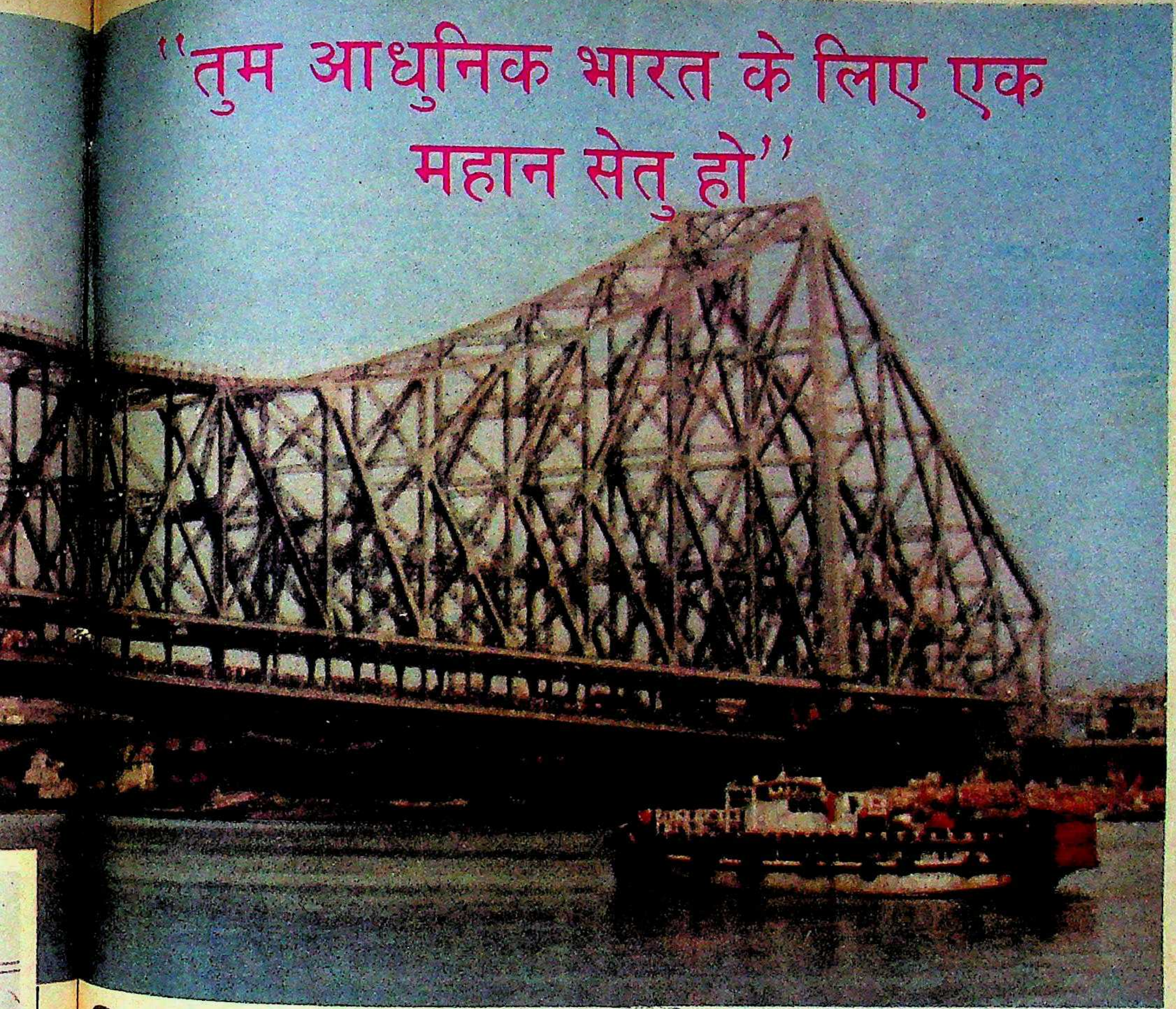

अथक प्रयासों की निरन्तर गाथा
भारतीय रेलवे की विशिष्टताएं :

- 136 वर्ष का एतिहासिक सफ़र
- ब्रिटिश राज का स्वतंत्र भारत में महान परिवर्तन
- यात्रियों तथा माल का भव्य गमनागमन - यात्रियों का दैनिक परिवहन, आस्ट्रेलिया की लगभग पूरी आबादी के बराबर
- हर 3 सेकन्ड में एक माल डिब्बे के लदान का आश्चर्यजनक औसत
- प्रति दिन, पृथ्वी के गिर्द 40 चक्करों के बराबर दूरी का सफ़र
- लगभग 18 लाख कर्मचारियों का विशाल भारतीय रेल परिवार विश्व का सबसे बड़ा कर्मचारी संगठन
- आवश्यक वस्तुओं, खनिज पदार्थों, तैयार माल, तथा सब से बढ़ कर, लोगों का भव्य गमनागमन – जो सचमुच भारतीय अर्थव्यवस्था के पहिए हैं।

जी हां, भारतीय रेल, आधुनिक भारत का एक महान सम्पर्क सेतु।

इंडियन रेलवे
फाइनेन्स कॉरपोरेशन लिमिटेड

आइए – विश्वास के कोष में साझीदार बनिए

Sobhagya/437/89 H

राष्ट्र का प्रगति रथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास रचने

यह शायद अब तक का सबसे चुनौतीपूर्ण चुनाव है. अगर कांग्रेस हारती है तो पारिवारिक शासन के अंत के साथ-साथ उस पार्टी का खात्मा भी हो जाएगा जो अपना लोकतांत्रिक चरित्र खो चुकी है

—खुशवंत सिंह, पत्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने का सार्थक क्षण

मैवन दास

प्रमोद पुष्करणा

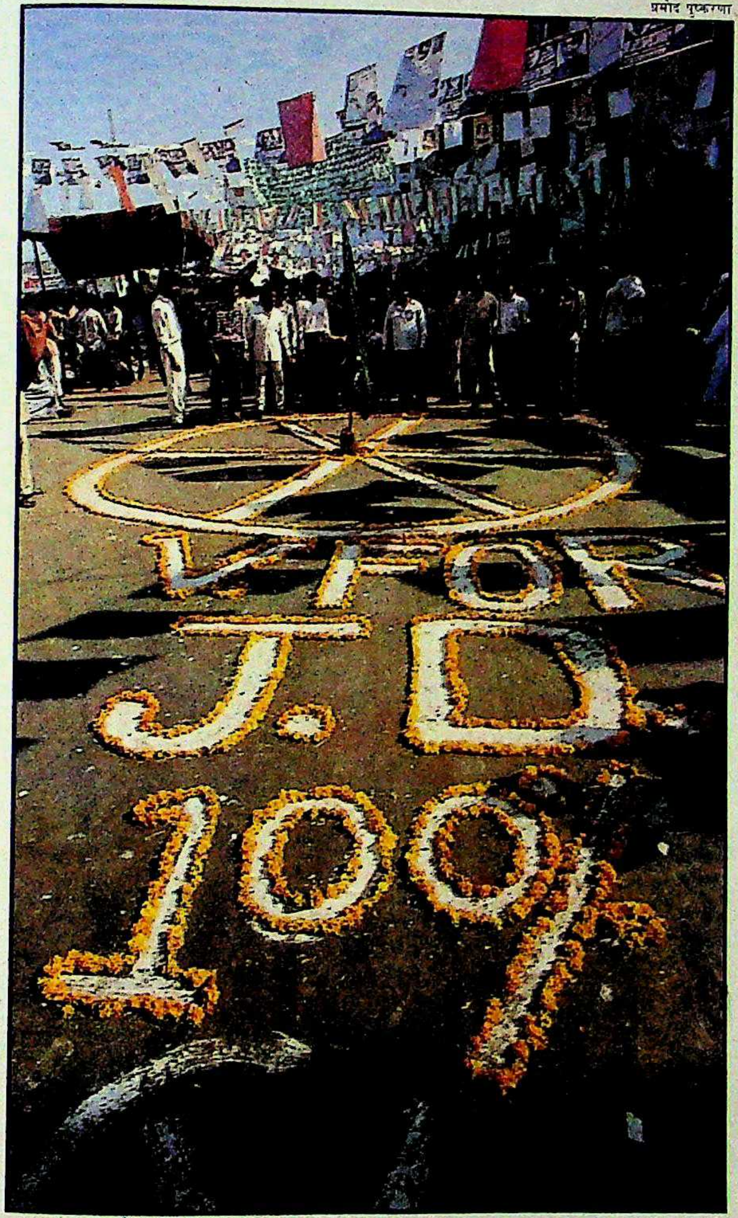

पान के पत्तों को जैसे गलने पर फेंक दिया जाता है, वैसे ही शासकों को भी कभी-कभी उखाड़कर फेंका जाना चाहिए

—बिहार के तारंग रामपुरहाट गांव की मतदाता बिजया

समय के पैमाने पर लंबा खिंचा कालखंड कभी-कभी एक सुखद क्षण की तरह गुजर जाता है. पिछला महीना ऐसे ही क्षण की तरह बीत गया. मगर इसकी याद अरसे तक बनी रहेगी. पूरा भारत जैसे समय के इस चौखटे में जड़ गया था. यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी, क्योंकि यह दौर था नौवें आम चुनाव का. गिनती के लिहाज से तो यह नौवां आम चुनाव था लेकिन अहमियत के संदर्भ में इसे पहले आम चुनाव से कम नहीं आंका जा सकता. इस बार कोई आंधी भले न दिखी हो लेकिन एक बयार तो थी ही. यह बयार थी बदलाव की.

ऊपर से तो यह चुनाव भी दूसरे आम चुनावों जैसा ही था. वैसी ही पोस्टरबाजी, वैसा ही प्रचार, वैसा ही उन्माद, वैसा ही उत्साह, वैसी ही गहमागहमी. महीने भर तक भारतीय जनमानस पर पंजा, चक्र, कमल या हंसुआ-हथौड़ा जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

भवान सिंह

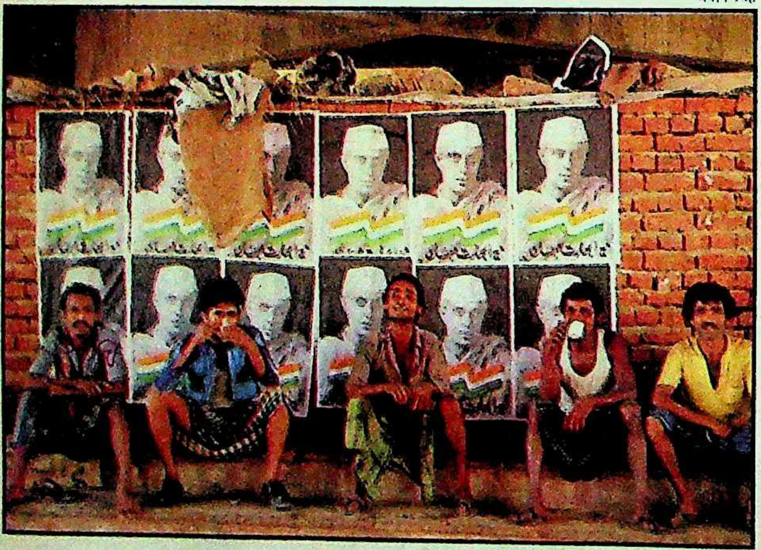

शरद सक्सेना

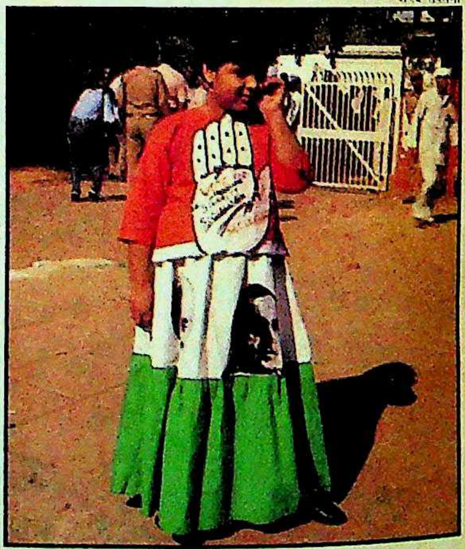

मैं उम्मीद करती हूं कि हर व्यक्ति जिम्मेदारी खुद समझेगा और नेता की ओर नहीं ताकेगा. नेता तो आते-जाते रहते हैं

—पुपुल जयकर, *इंदिरा गांधी को उद्धृत करते हुए*

यह आम चुनाव ऐसा दर्पण है जिसमें सभी दल अपना चेहरा देख सकते हैं

—भवानी सेनगुप्त, *स्तंभकार*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

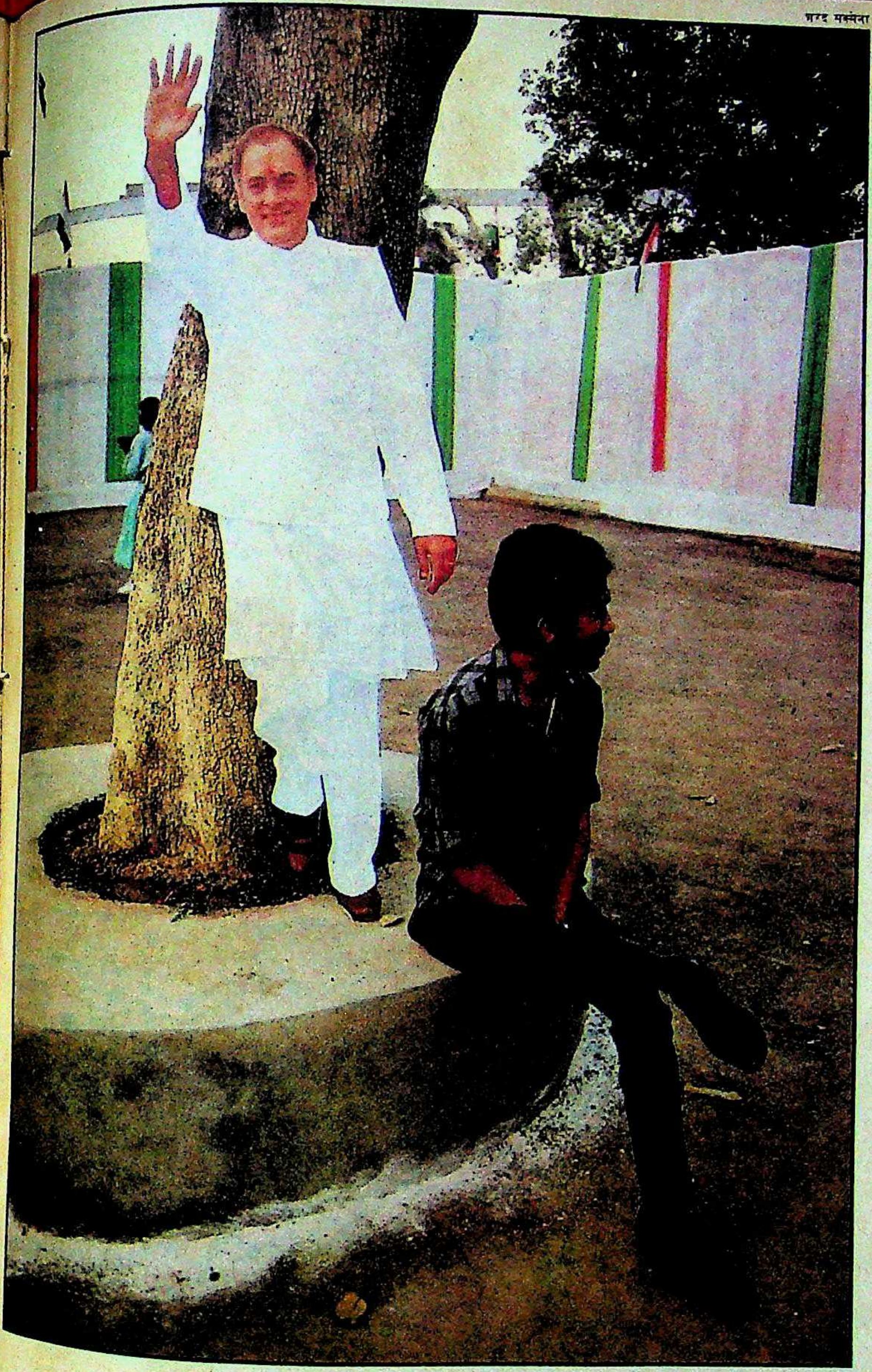

शरद सक्सेना

निशान ही छाये रहे. इस दौरान उठते चौतरफा शोर ने भारतीय चुनावों को एक लोकतांत्रिक महोत्सव बना दिया.

लेकिन इस बार एक स्पष्ट अंतर था. यह चुनाव एक त्योहार तो था ही, एक शुद्धीकरण यज्ञ जैसा भी था. यह देश के राजनैतिक परिदृश्य पर दूरगामी असर डालेगा. यह सही है कि इसके साथ ही अनिश्चितता और भय का भी तत्व जुड़ा है. पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ये बातें हाशिये पर ही नजर आती हैं.

पिछले 42 वर्षों में भारत कई निर्णायक मोड़ों से गुजरा है. लेकिन इस चुनाव से ज्यादा महत्वपूर्ण शायद ही कोई दौर था. पूरे देश में बदलाव के पक्ष में जो लहर चल रही है, वह सरकार के बदलाव भर के लिए नहीं है. इस लहर का एक संदेश तो यह है कि अब नेताओं को अपनी करनी और कथनी की जवाबदेही का जिम्मा लेना पड़ेगा.

मगर माहौल में संदेह का तत्व भी है जो शायद इस लहर को स्थायी नहीं

यह विज्ञापन अभियान विपक्ष का ही चित्रण है. जहर का प्रतीक बिच्छू ही हो सकते हैं, मधुमक्खियां नहीं

—आनंद शर्मा, इंका प्रवक्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

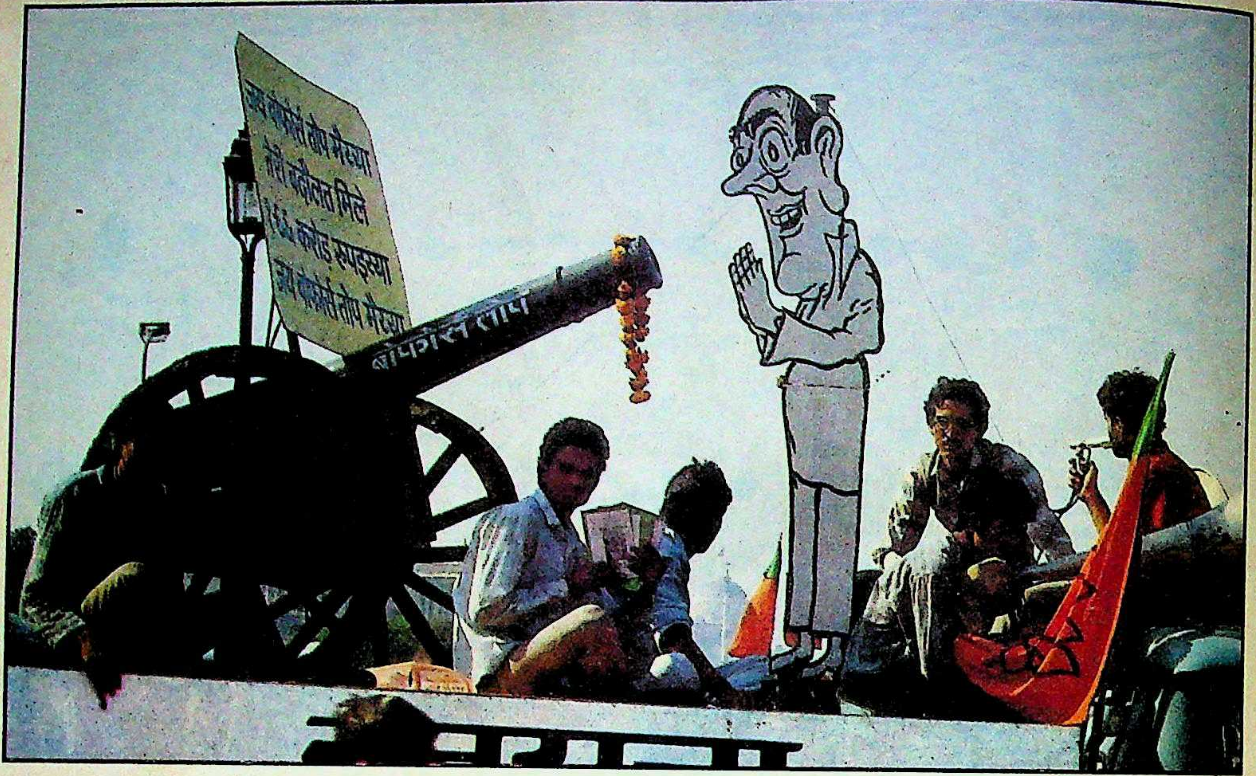

सैबल दास

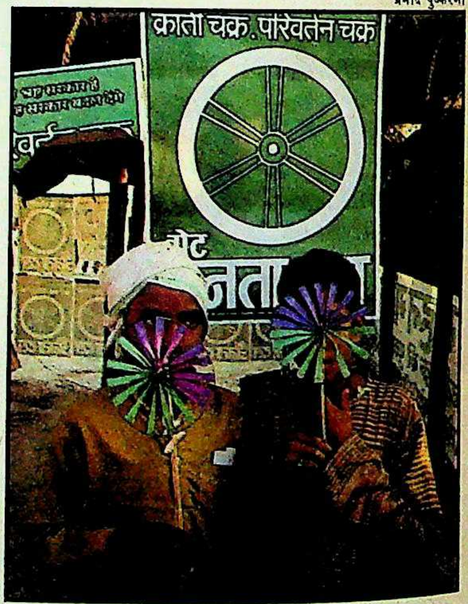

प्रमोद पुष्करणा

बोफोर्स और ऊंचे ओहदों पर भ्रष्टाचार के मुद्दे गांव-गांव तक पहुंच गए हैं और लोगों की चेतना में समा गए हैं

—मधु लिमये, *विपक्षी राजनीतिक*

संसदीय चुनाव में भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दा बन गया और उसे जोर-शोर से उछाला गया

—प्रीतीश नंदी, *संपादक*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

शरद सक्सेना

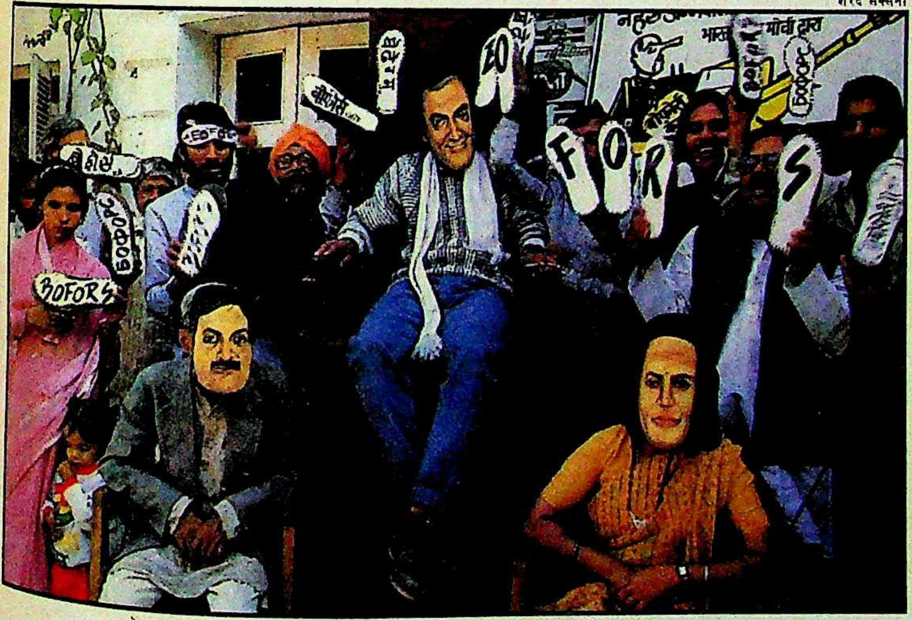

विपक्ष के बारे में हमें कोई भ्रम नहीं है लेकिन हम सत्ता परिवर्तन के लिए बेचैन हैं. मौजूदा राजीव सरकार को जाना ही चाहिए

—फैक्टरी मजदूर जगदीश कुमार

बनने दे. बहरहाल बदलाव के पूर्व संकेत इतने स्पष्ट हैं कि निराशा की गुंजाइश नहीं है. भारतीय राज्य-व्यवस्था में दो दलीय ढांचा उभरने की संभावना पहली बार बन रही है. भारतीय मतदाता को पहली बार यह सुनिश्चित करने का मौका मिला है कि भावी नेतृत्व उसके भले-बुरे की सुध लेता रहे. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार की हद भी पहली बार ही तय की जा रही है. और पहली बार भारतीय संसद हर विचारधारा का सही प्रतिनिधित्व करने वाली बनने जा रही है.

ये बदलाव कोई मामूली नहीं हैं. अपनी समग्रता में ये भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का संकेत देते हैं. इस चुनाव को भारत के इतिहास का सबसे हिंसक चुनाव बनाने के लिए जो लहू बहा है, वह बेकार गया नहीं लगता. पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय राजनीति ने सारी सीमाएं तोड़ दी थी. देश ने इस बार गाली-गलौज, आरोप-प्रत्यारोप, हिंसा, लूटपाट, आक्रामकता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदासीनता के खिलाफ भी वोट दिया.

यही इस चुनाव की सार्थकता सिद्ध करता है. यह आधुनिक महाभारत जैसा था. भाई भाई का दुश्मन बन गया, दोस्त ने दोस्ती छोड़ी, राज छिना, वनवास मिला, सेनाओं के बीच घमासान हुआ और अंततः असत्य पर सत्य की और अंधकार पर प्रकाश की विजय हुई. •

—दिलीप बॉब

प्रशांत पंजियार

चुनाव के दौरान वे (विपक्ष) इतनी नाटकबाजी कर सकते हैं तो सत्ता में आने के बाद वे नौटंकी ही करेंगे

—राजीव गांधी

बोफोर्स के बारे में हम क्या जानें कि वह क्या है? हम तो उस हाथ को वोट देते हैं जो हमें रोटी देता है

—*नई सीलमपुरी की मतदाता,* पलियानिम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डान युआन
विशेष संग्रह

क्योंकि, अनन्त अनुराग ही जीवन है.

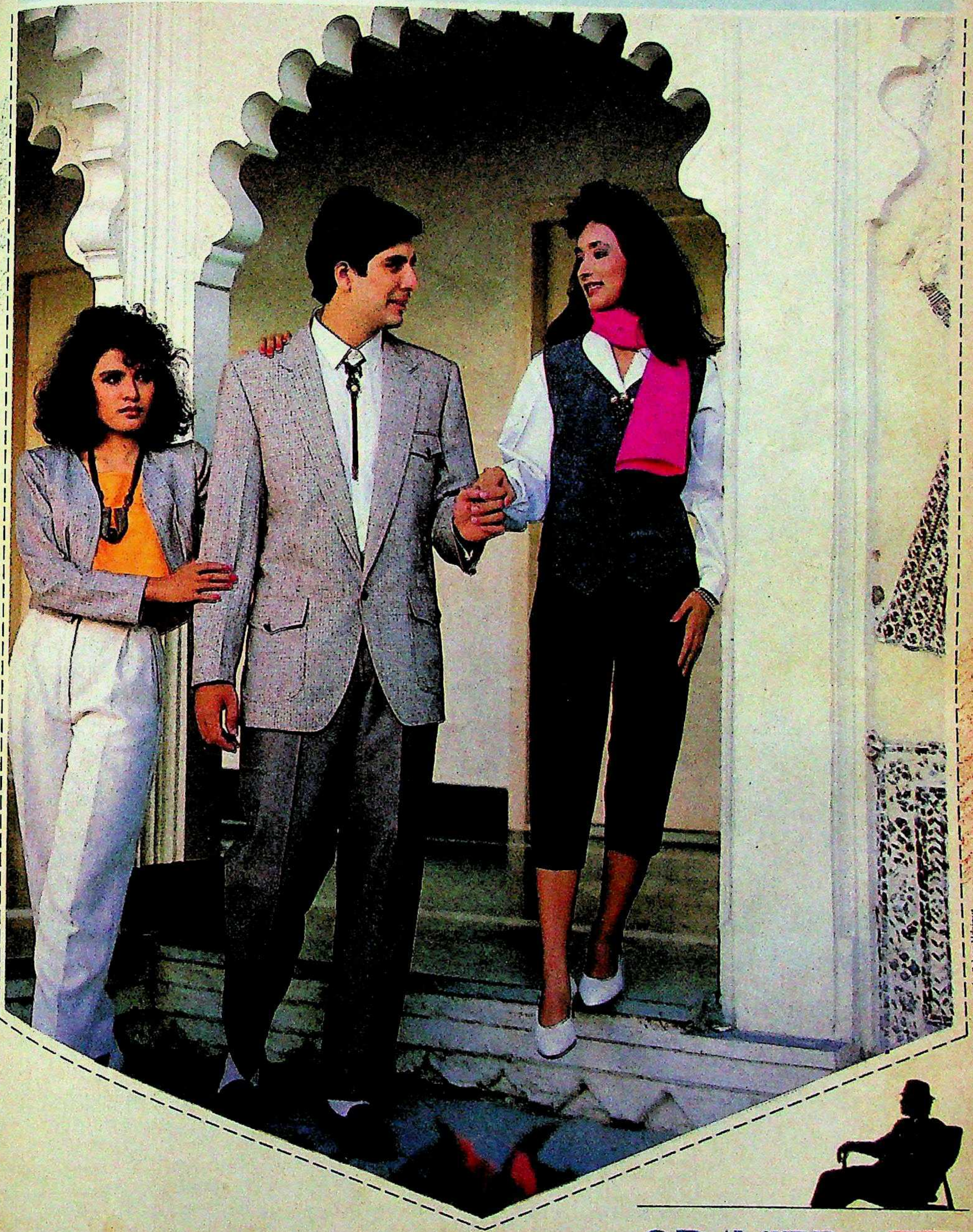

विशिष्ट. आप ही की तरह.

GRAVIERA
SUITING

KSHARA/GR-3171

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने हिताची को रेफ्रिजरेटरों में अग्रणी बनाया...

निप्पोन डेनरो इस्पात पेश करते हैं भारत में
उत्तम श्रेणी का

भारतीय रेफ्रिजरेटर उद्योग को अभी तक अक्सर ज़रुरत के अनुसार उचित ग्रेड, गेज, लम्बाई व चौड़ाई के कोल्ड रोल्ड स्टील न मिल पाने के कारण उत्पादन में जितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, उन सभी का अन्त अब निकट है।

निप्पोन डेनरो इस्पात की पेशकश - विश्व स्तरीय कोल्ड रोल्ड स्टील हमेशा उप्लब्ध।

यह कोल्ड रोल्ड स्टील 0.15 मि.मी. - 2 मि.मी. गेज; 1250 मि.मी. तक की चौडाई; 1000-4000 मि.मी. की लम्बाई व सामान्य, ड्राईंग, डीप ड्राईंग और एक्स्ट्रा-डीप ड्राईंग ग्रेड में उप्लब्ध है।

इसके लिये सयन्त्र व तकनीकी जानकारी तीन जानी-मानी जापानी कंपनीयों हिताची, टाइयो स्टील व निप्पोन डेनरो मैन्युफैक्चरिंग कं. द्वारा प्रदान किये गये हैं।

सेन्ट्रल मार्केटिंग ऑफिसः 'गुमान' छठी मंज़िल, 77 रेज़िडेन्सी रोड, सदर, नागपुर - 440 001 फ़ोनः 25742, 25750 टेलेक्सः 0715-426 NDIL IN फ़ैक्सः 0712-33194 ग्रामः 'NIPPON'.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब वही राज़ कैलविनेटर, गोदरेज, ऑल्विन और वोल्टास ने भी पाया.

पहली बार रेफ्रिजरेटर उद्योग के लिये कोल्ड रोल्ड स्टील

देश भर में निप्पोन डेनरो इस्पात की विस्तृत वितरण प्रणाली के माध्यम से यह कोल्ड रोल्ड स्टील आसानी से उप्लब्ध है।

यानि कि कुल मिला कर भारतीय रेफ्रिजरेटर निर्माताओं के लिए खुशखबरी। अब वे उत्पादकता बेरोकटोक बढ़ा सकते हैं — प्रसिद्ध जापानी रेफ्रिजरेटर निर्माताओं की तरह।

ISPAT

NIPPON DENRO ISPAT LTD.

Park Plaza (Ist Floor), 71, Park Street, Calcutta–700016

THE NEW BREED OF STEEL

Mudra:D:NDIL:7380

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

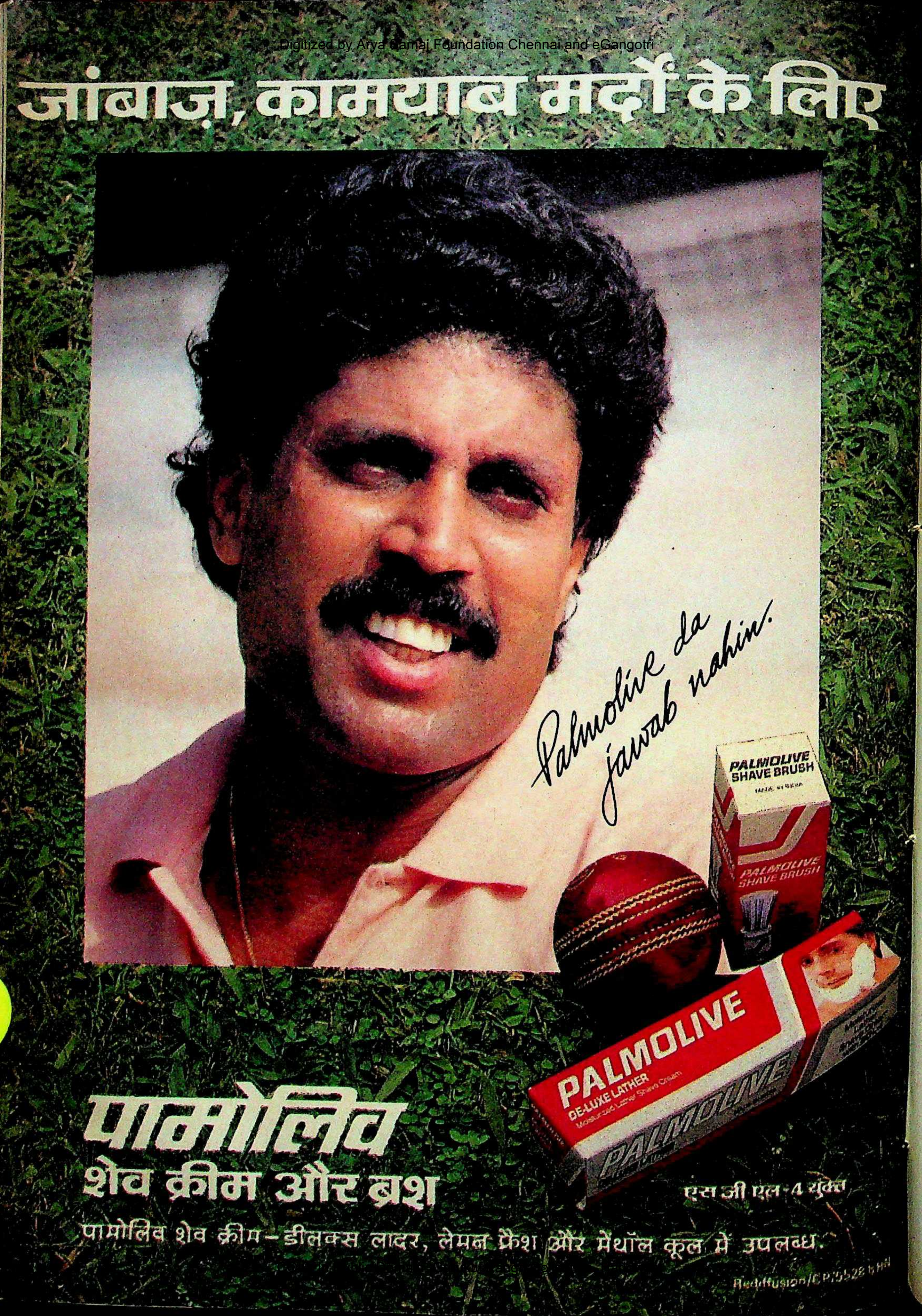

Digitized by Arya Samaj

शरद सक्सेना

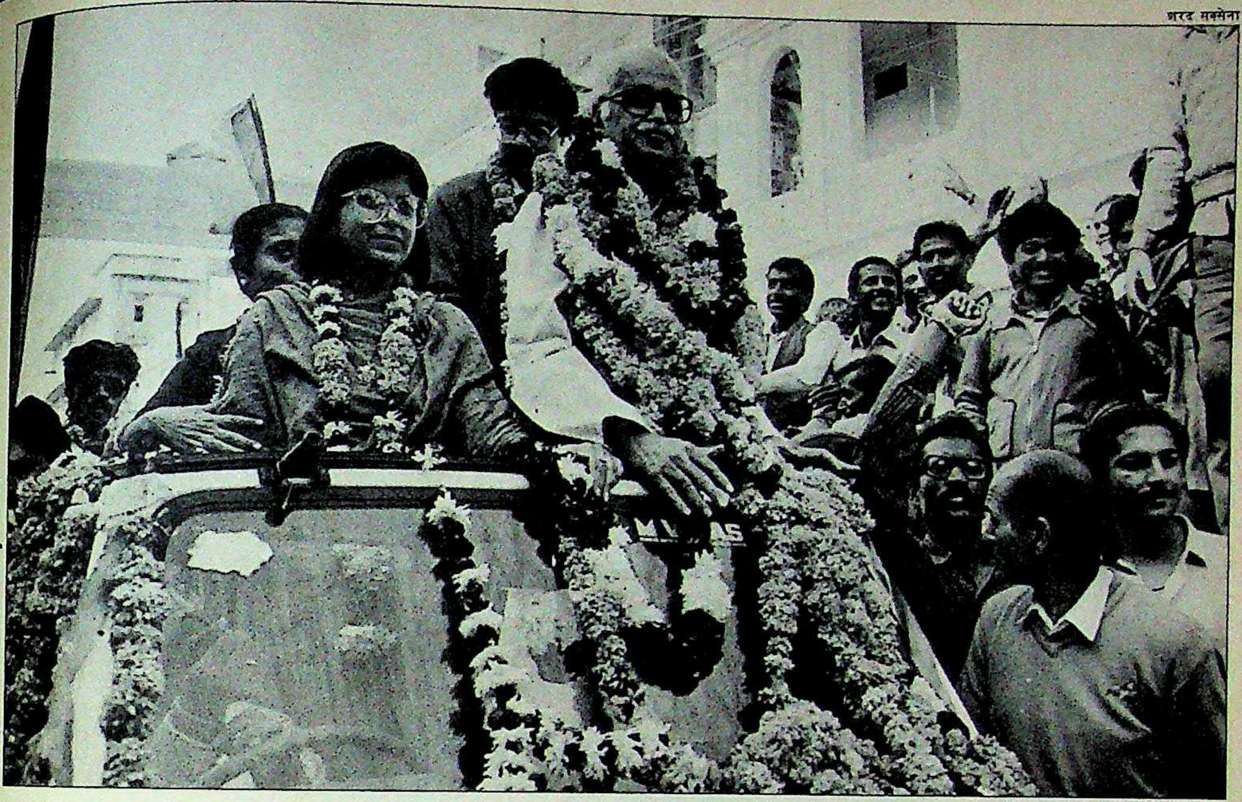

विजय जुलूस में आडवाणी

भारतीय जनता पार्टी

बड़ी कूच का अहम पड़ाव

पांच वर्षों की धैर्यपूर्ण साधना से मिली शानदार सफलता

"हमारी विचारधारा 1984 के आठवें आम चुनाव में प्रगति के सूचकांक के न्यूनतम विंदु पर रही. इस बंबई अधिवेशन की भावना और निर्णयों से हम ऐसा दृढ़ निश्चय कर लें कि हमारी अग्रगामी यात्रा में नौवां आम चुनाव हमारे लिए शिखर बिंदु साबित हो."

—लालकृष्ण आडवाणी 25 सितंबर को बंबई में भाजपा की 11वीं राष्ट्रीय परिषद के अधिवेशन में.

इस बयान के ठीक दो महीने बाद ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिन बहुर गए. ऊंचे कद के और गंजे पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने तो जैसे सारे बदले चुकाकर अपनी महारत के झंडे गाड़ दिए. पांच साल पहले महज दो सीटें जीतकर अपने पतन बिंदु पर पहुंच गई पार्टी नौवीं लोकसभा में तीसरे नंबर पर आ गई. और हालांकि यह अपने बूते सरकार नहीं बना सकती पर जो कोई भी सरकार बनाना चाहे उससे वह सौदेबाजी करके अपनी शर्तें जरूर मनवा सकती है. आडवाणी भी मानते हैं, "नतीजों ने हमारी उम्मीदों को भी कुछ हद तक पीछे छोड़ दिया."

सवाल सिर्फ सीटें जीतने का था भी नहीं. सवाल अस्तित्व का भी था. 1984 जैसी एक और निराशा पार्टी को तबाह कर देती. इसकी विचारधारा, इसके उद्देश्य सब दांव पर लग जाते. पर चुनाव से हफ्ता भर पहले हिंदुत्व की लहर चली तो स्पष्ट हो गया कि पार्टी चुनावी सफलता की ओर बढ़ रही है. इस कामयाबी के बीज तीन साल पहले ही तभी बो दिए गए थे जब मई 1986 में आडवाणी ने इसकी बागडोर संभाली. कमान संभालने के तुरंत बाद आडवाणी ने इस बात पर जोर देना शुरू किया कि बेमकसद गठजोड़ की राजनीति में उलझने के बजाय पार्टी के आधार को मजबूत बनाना होगा. इस नीति की फसल भी बहुत अच्छी रही. आडवाणी की अगुआई में भाजपा ने कट्टर रवैये वाली छवि बनाई जो एक तरह से जनसंघ का पुनर्जन्म ही था. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पार्टी की यह छवि कुछ समय के लिए धुंधली पड़ गई थी.

जनता पार्टी से रिश्ते तोड़ने के बाद पूर्व जनसंघ के लोगों ने जब भाजपा बनाई तो अपनी सांप्रदायिक छवि धोने के लिए जानबूझकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से अपने संबंध ढीले कर लिए थे. वाजपेयी की अगुआई वाले इस दल ने दिसंबर 1980 में बंबई में हुए पहले अधिवेशन में 'गांधीवादी समाजवाद' की विचारधारा अपना ली. पर कट्टर रवैये वाले लोग इस फैसले से नाराज थे. इसी सम्मेलन में विजयाराजे सिंधिया ने एक पर्चा बंटवाया था जिसमें तर्क दिया गया था कि नया दर्शन पार्टी की विचारधारा से मेल नहीं खाता. पर वाजपेयी के आगे किसी की नहीं चल सकी थी. 1984 के चुनाव में जब पार्टी नाकाम रही तो माना गया कि जनता ने पार्टी की मध्यमार्गी छवि को नकार दिया है.

भ्रम और पलायन के इस दौर के बाद आडवाणी ने पार्टी की कमान संभाली और जड़ों की ओर लौटने का नारा दिया. आडवाणी ने पंचवर्षीय योजना बनाई और कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि वे पांच साल बाद अपने बूते 375 सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी करें. अगले ढाई वर्षों में योजना अमल में लाई गई. इंका के दामन पर भारी-भरकम घोटालों की कालिख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुतती रही, विपक्षी दल एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने में ही व्यस्त रहे परंतु प्रचार की चकाचौंध से दूर भाजपा पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपने मोर्चे पर डटी रही.

हिंदू हितों की अलंबरदार वाली छवि बहाल करने की कोशिश में पार्टी फिर संघ के करीब जा पहुंची. पिछले अक्तूबर में भाजपा नेता नागपुर में संघ के मुख्यालय में हुई कार्यकारी मंडल की बैठक में भी शामिल हुए. एक और महत्वपूर्ण बात यह हुई कि संघ के कई लोगों को भाजपा के प्रमुख पदों पर बिठाया गया. संघ नेतृत्व द्वारा मनोनीत गोविंदाचार्य को पार्टी अध्यक्ष का विशेष सहायक बनाया गया. संघ के एक और युवा स्वयंसेवक नरेंद्र मोदी को भाजपा की गुजरात इकाई का परोक्ष सर्वेसर्वा बनाया गया. गुजरात में पार्टी की कामयाबी का श्रेय काफी हद तक मोदी के संगठन कौशल को ही जाता है.

इन नियुक्तियों के साथ ही अल्पसंख्यक आयोग, अनुच्छेद 370 और राम जन्मभूमि जैसे मुद्दों पर पार्टी का रवैया उग्र होता गया. इस साल के शुरुआत में संघ के सभी आनुषांगिक संगठनों के नेता अहमदाबाद में मिले और देश की राजनैतिक स्थिति का जायजा लिया. सरसंघचालक बालासाहब देवरस के भाई और संघ के प्रमुख नीति नियामक भाऊराव देवरस ने भाजपा नेतृत्व के साथ नियमित बैठकें शुरू कर दीं. बंबई अधिवेशन के बाद भाजपा नेताओं के साथ बैठक में उन्होंने सुझाव दिया कि आडवाणी को चुनाव लड़वाकर जन नेता के रूप में आगे लाया जाना चाहिए और बाकी लोगों को प्रचार तथा संगठन के काम पर ध्यान देना चाहिए.

भाजपा ने संघ के नेताओं को खुश करने के लिए हिंदुत्व की बात शुरू नहीं की. बल्कि यह फैसला तो एक ऐसा मुद्दा खोजने की लंबी कोशिशों के बाद हुआ जो देश भर में अपना असर दिखा सके. और राम जन्मभूमि के रूप में उसे यह मुद्दा मिल गया. पार्टी नेताओं को महसूस हुआ कि हिंदू भावनाओं का चुनावी फायदा इंका ही उठा सकती है. वाजपेयी के अनुसार, "इस बार हमने तय कर लिया था कि इंका को हिंदू पांसा नहीं फेंकने दिया जाएगा." फिर भी भाजपा नेता कहते हैं कि पार्टी की स्थिति में यह फर्क इसलिए आया क्योंकि उनकी पार्टी एक चाक-चौबंद संगठन वाली पार्टी है. पार्टी के महासचिव जे.पी. माथुर कहते हैं, "राम जन्मभूमि की मांग का समर्थन करने वाली हिंदू महासभा ने भी कई उम्मीदवार खडे किए थे. लेकिन क्या वे कुछ कर सके?"

अब भाजपा के खेमे में रौनक है. लेकिन उसमें सतर्कता का भाव भी है. नेताओं के लिए तो पार्टी की कामयाबी उसकी मंजिल-ए-मकसूद की राह पर एक कदम भर है. सरकार में न शामिल होने का फैसला दरअसल उसकी दीर्घकालिक रणनीति का ही एक हिस्सा है. जनता पार्टी वाले दौर की निराशा के घावों की याद अभी ताजा है. पार्टी फिर उसी इतिहास को दोहराना नहीं चाहती थी. इसके अलावा जिस सरकार का यह भी भरोसा न हो कि वह अपना कार्यकाल भी पूरा कर पाएगी या नहीं उसमें शामिल होना अपनी भद पिटवाना ही होगा. और राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का समर्थन न करने का फैसला भी छवि लिए घातक होगा क्योंकि पार्टी ने इंका विरोधी रुख के साथ ही चुनाव लड़ा था. इसके बजाय पार्टी उन चार राज्यों में सरकार बनाना ज्यादा पसंद करेगी जहां कुछ महीनों बाद ही चुनाव होने हैं. इस बीच पूर्व और दक्षिण में जनाधार फैलाने की योजना है, जहां पार्टी अभी कमजोर है.

पार्टी के नीति नियामक मानते हैं कि यह सब इंका के मौजूदा हार के सदमे से उबरने के पहले हो जाएगा. उनका मानना है कि जनता दल की आपसी जूतम-पैजार से देश में राजनैतिक शून्य पैदा हो जाएगा और इस शून्य को भाजपा तेजी से भर सकती है. वे मानते हैं कि अगला बड़ा कदम उठाने का मौका अगले आम चुनाव में आएगा तब तक पार्टी केंद्रीय सत्ता की प्रबल दावेदार बन चुकेगी.

लेकिन चुनाव की नौबत उससे कहीं पहले आ सकती है जितना कि भाजपा सोच रही है. राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार को वामपंथी और भाजपाई दो विपरीत दिशाओं की ओर धकेलेंगे, महत्वपूर्ण नीतिगत मामलों में वामपंथी दलों और भाजपा के रुख पूर्णतः परस्पर विरोधी हैं. पार्टी के कुछ नीति नियामकों को इसमें कोई समस्या नहीं दिखाई देती. पत्रकार और पार्टी के विचारक के.आर. मलकानी कहते हैं, "हम भी पेप्सी कोला परियोजना के उतने ही घनघोर विरोधी हैं जितने कि मार्क्सवादी. बस ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद को जरा ज्यादा यथार्थवादी होना होगा."

इस पर तो महज अटकल ही लगाई जा सकती है कि गैर-इंका सरकार स्थायी हो सकेगी या नहीं परंतु एक बात निश्चित है कि भाजपा राष्ट्रीय राजनीति की एक निर्णायक ताकत के रूप में उभर कर सामने आई है.

—भास्कर रॉय

सूत्रधार

—नानाजी देशमुख, 62 वर्ष

गुपचुप ढंग से सारे जोड़-तोड़ उन्हीं ने बिठाए. संघ तथा भाजपा के अहं की समस्या को भी उन्हीं ने खत्म किया.

—अरुण जेटली, 32 वर्ष

इस पूर्व छात्र नेता ने कोष इकट्ठा करवाया और भाजपा के प्रचार अभियान में प्रमुख भूमिका निभाई.

—गोविंदाचार्य, 36 वर्ष

संघ से भाजपा में भेजे गए विद्यार्थी परिषद के इस पूर्व नेता ने उत्तर में पार्टी की इकाइयों को पुनर्संगठित किया.

—अटल बिहारी वाजपेयी, 59 वर्ष

आडवाणी दिल्ली में ही बंधे रहे और वाजपेयी देश भर में अपनी सभाओं में भारी भीड़ इकट्ठी करते रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रघु राय

वामपंथी दल अब भाजपा के साथ मिलकर केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार का बाहर से समर्थन करेंगे

श्याम टेकवानी

वामपंथी दल

भोथरी हो गई धार

चुनाव में मिले-जुले परिणामों के कारण अकेले ही 'किंग मेकर' होने की आस धरी की धरी रह गई

रैली में बसु; और (दाएं) नयनार: कामयाबी, नाकामी

पश्चिम बंगाल में तो इसने भारी जीत दर्ज की. लेकिन अगर केरल में लगभग इसका सफाया हो गया तो उसने देश भर में कुछ एक सीटें हासिल कर एक हद तक इसकी भरपाई कर ली. कुल मिलाकर इसे मिला-जुला परिणाम ही कहा जाएगा. फिर भी वामपंथियों में निराशा छायी हुई है. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का बाहर से समर्थन करके देश में एकमात्र 'किंग' मेकर' की भूमिका निभाने और भाजपा को दरकिनार करने की उसकी आस धरी रह गई.

इस निराशा का कारण जानना भी कोई मुश्किल नहीं. सभी वामपंथी पार्टियों को मिली सीटों से भाजपा को अधिक सीटें मिलीं, इसलिए इनके छोटे-छोटे लाल टापू भगवा ध्वजों से घिर गए हैं. केरल में तो ऐसे संकेत रहे कि भाजपा ने इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे को अघोषित समर्थन देकर वाममोर्चा को अपमानजनक स्थिति में ला दिया. केरल के मुख्यमंत्री ई.के. नयनार को अब पद पर बने रहने में मुश्किल होगी. जाहिर है, वामपंथियों का चुनावी गणित गड़बड़ा गया. द्रमुक और तेलुगु देशम का सफाया हो जाने से राष्ट्रीय मोर्चा बस एक पार्टी—जनता दल—तक ही सीमित हो गया. चुनाव के बाद अब अकेले वामपंथियों के आसरे सरकार बनने की संभावना नहीं रह जाने से कम्युनिस्टों के सामने ऊहापोह की स्थिति बन गई है. अभी भी वे 'किंग मेकर' की भूमिका तो निभा सकते हैं. लेकिन अब इस भूमिका में उनके साथ भाजपा भी होगी. और दूसरा विकल्प यानी इंका को सरकार बनाने में मदद करना तो भयावह है.

लगता है, वामपंथियों या कम-से-कम माकपा ने अपना मन बना लिया है. पार्टी के वरिष्ठ नेता हरकिशन सिंह सुरजीत ने संकेत दिया कि माकपा भाजपा समर्थित राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार को भी तब तक समर्थन देती रहेगी जब तक भाजपा उसमें शामिल नहीं होगी.

लेकिन इस फैसले पर पहुंचना आसान नहीं रहा. ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद की अगुआई में एक घटक ने लगातार यह विचार रखा कि इंका और सांप्रदायिकता (यानी भाजपा) दोनों ही समान रूप से खतरनाक हैं. भाकपा महासचिव सी. राजेश्वर राव भी इसी विचार के लगते हैं.

माकपा के ज्यादा जोर वाले धड़े का, जिसके सबसे मुखर प्रणेता पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु हैं, भी लगातार यह तर्क रहा है कि इंका पहली दुश्मन है और बाकी सभी बातें दोयम दर्जे की हैं.

चुनाव खत्म होते ही लगने लगा कि बसु का ही सिक्का चलेगा, हालांकि वे खुद किसी फैसले की जानकारी से मुकरते रहे हैं. उन्होंने कहा, "मैं इस समय नहीं जानता कि पार्टी क्या फैसला करेगी." लेकिन एकाएक स्थिति बदल जाने से जाहिर हो गया कि वामपंथी दल राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का समर्थन करेंगे. ऐसा लगा कि विचारधारा पर व्यावहारिकता ने विजय पा ली.

दूसरे स्तर पर भी ये चुनाव बसु के लिए विजय के सूचक हैं. केरल में नंबूदिरिपाद की वह नीति बुरी तरह नाकाम रही कि वहां सांप्रदायिक पार्टियां कुछ नहीं कर सकतीं. राज्य में संप्रदायवादियों को दरकिनार करने की बात तो दूर रही, इस नीति ने उन्हें नया जीवन दे दिया है.

राष्ट्रीय मंच पर भी भाजपा के रूप में सांप्रदायिकता पहले से अधिक ताकतवर होकर वामपंथियों के सामने है. विडंबना तो यह है कि जनता दल पर भाजपा से तालमेल न करने का दबाव डालकर वामपंथी उसे अलग से अपना अस्तित्व बनाने को छोड़ सकते थे. अब वामपंथियों का जिस नई स्थिति से सामना है वह कमोबेश उनकी अपनी ही बनाई हुई है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर-मस्जिद विवाद

धधकता ज्वालामुखी

9 नवंबर को अयोध्या में हुए शिलान्यास समारोह ने सांप्रदायिक तनाव और कानूनी तकरार बनाए रखने की नींव डाल दी है. नई सरकार की पहली प्राथमिकता इस धधकती आग को बुझाना, शांति बनाए रखना और हिंदू-मुसलमानों में भड़के सांप्रदायिक उन्माद को ठंडा करना है. लेकिन मामला दिन-ब-दिन पेचीदा होता जा रहा है.

भारत में एक 7 फुट लंबा, 7 फुट चौड़ा और 7 फुट गहरा गड्ढा भी धर्म-निरपेक्षता की कब्र साबित हो सकता है. अयोध्या के भूखंड नं. 586 में इतनी ताकत छिपी हुई है कि वह 1947 के बाद की सबसे भीषण सांप्रदायिक तबाही मचा सकता है. भागलपुर, बदायूं, कोटा, मेरठ, बनारस... में हिंदू-मुस्लिम सौहार्द इसकी भेंट चढ़ चुका है.

अयोध्या में 9 नवंबर को हुआ शिलान्यास समारोह खतरनाक नाटक का महज पहला अंक था. धर्मांध हिंदू नेताओं को पिछले कुछ महीनों में हुए सांप्रदायिक खून-खराबे से कोई मतलब नहीं था. विश्व हिंदू परिषद के महासचिव अशोक सिंघल ने स्पष्ट कर दिया है कि चाहे कितना खून-खराबा क्यों न हो, परिषद के कार्यकर्ता विवादास्पद जमीन पर राम मंदिर बनाकर रहेंगे. इसी जमीन पर 16वीं सदी की एक मस्जिद भी है. परिषद के अनुसार, शिलान्यास सिंहद्वार पर हुआ और मंदिर गर्भगृह मस्जिद के भीतर होगा (चित्रांकन देखें). सिंघल कहते हैं, "यदि सरकार यह सोचती है कि उस पर धौंस जमाकर शिलान्यास की मंजूरी ली गई तो हम उस पर आगे भी धौंस जमा सकते हैं. हिंदू जाग उठा है. अब उसे नहीं रोका जा सकता."

नाटक का दूसरा अंक 26 जनवरी को इलाहाबाद में होने वाली साधु-संतों की बैठक के बाद खेला जाएगा. इस बैठक में अगली कार्रवाई तय की जाएगी. लेकिन सिंघल पहले से ही उनका फैसला जानते हैं, "वे मस्जिद को हटाने की मांग करेंगे और उनकी मांग न मानी गई तो वे सत्याग्रह शुरू करेंगे."

सो, केंद्र में बैठने वाली नई सरकार को तेजी से निर्णायक कार्रवाई करनी होगी. अयोध्या का भूखंड नं. 586 (जिसका क्षेत्रफल लगभग 15,800 वर्गफुट है) कोई साधारण जगह नहीं है और वह नजूल रिकार्ड में कब्रगाह के रूप में दर्ज है. यह भारत के दो सबसे बड़े समुदायों—मुसलमानों और हिंदुओं—के झगड़े का मुख्य मुद्दा है. मुसलमानों का नेतृत्व सैयद शहाबुद्दीन और उनके जैसे दूसरे लोग कर रहे हैं, तो हिंदुओं का नेतृत्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आका, जो विश्व हिंदू परिषद के मुख्य नेताओं के जरिए 'हिंदू राष्ट्र' के सिद्धांत का प्रचार कर रहे हैं (देखें इंडिया टुडे, 30 जून 1989).

अयोध्या का यह शिलान्यास लंबे नाटक का वह मोड़ था जहां सरकार हिंदू कट्टरपंथियों के आगे झुक गई. चुनाव बहुत करीब होने के कारण दिग्भ्रमित इंका नेताओं ने तनाव को खतरनाक बिंदु तक बढ़ जाने दिया. मंदिर में बजरंग दल कार्यकर्ताओं के जबरदस्ती घुसने की धमकी के कारण सरकार ने कोई जोखिम मोल नहीं ली. पूरा शहर खाकी वर्दीधारी अर्द्धसैनिकों से अटा पडा था. मंदिर के चारों ओर कंटीले तार लगा दिए गए और बालू की बोरियां रख दी गईं. दुनिया भर के अखबारों में जब सरकार के झुकने की बात छपी तो इस्लामी देशों, खासकर सऊदी अरब, ईरान

आर.के. गुप्ता

और पाकिस्तान में व्यापक प्रतिक्रिया हुई.

शिलान्यास समारोह पर विश्व हिंदू परिषद के अड़े रहने के कारण बड़े पैमाने पर हिंसा की आशंका व्यक्त की जा रही थी. हाईकोर्ट ने 14 अगस्त को विवादास्पद मंदिर-मस्जिद की कानूनी लड़ाई से संबंधित पांच मामलों को एक मानते हुए यथास्थिति बनाए रखने का अंतरिम आदेश दिया. आदेश में कहा गया, "इन मामलों में शामिल प्रमुख पक्ष विवादास्पद संपत्ति का स्वरूप नहीं बदलेंगे." इन पक्षों में सुन्नी वक्फ बोर्ड, राज्य सरकार, राम जन्मभूमि न्यास और विभिन्न हिंदू और मुस्लिम धर्मगुरु मुख्य हैं.

लेकिन विश्व हिंदू परिषद ने यह कहते हुए शिलान्यास की घोषणा कर दी कि वह

रेखांकन: बी.के. शर्मा

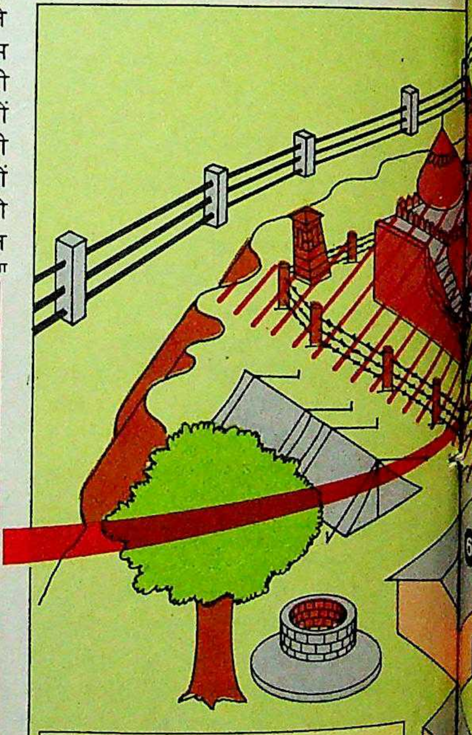

1. **मस्जिद के भीतर मूर्ति**
2. **शिलान्यास स्थल**
3. **राम चबूतरा**
4. **पुलिस चौकी**
5. **परिषद की प्रदर्शनी**
6. **राम भजन मंडली**
7. **हनुमान मंदिर**
8. **1986 में खुला मुख्य द्वार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालत का कोई आदेश नहीं मानेगी क्योंकि मामला न्यायिक प्रक्रिया से बाहर चला गया है. गृहमंत्री बूटा सिंह ने विवादास्पद जमीन पर शिलान्यास न करने के लिए परिषद को मनाने की कोशिश की. राज्य सरकार का कहना था कि विश्व हिंदू परिषद का प्रस्तावित शिलान्यास स्थल भूखंड नं. 586 में आता है. सुन्नी वक्फ बोर्ड ने अपने 1961 के मुकदमे में इसके कब्रगाह होने का दावा किया है. इसलिए यह विवादास्पद है.

इसी समय बूटा सिंह ने राजनैतिक मध्यस्थता का खतरनाक खेल खेला. 27 सितंबर को बूटा सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी के साथ परिषद के नेताओं से मिले ताकि उनसे किसी तरह की सुलह की जा सके. सरकार ने रामशिला यात्रा के लिए

जाहिर है, विवादास्पद जमीन के इस मामले में विश्व हिंदू परिषद ने राज्य सरकार को अपनी इज्जत बचाने के लिए अदालत के फैसले में कोई नया पेंच ढूंढ़ने को मजबूर कर दिया

सशर्त अनुमति देकर परिषद को पहली रियायत दी. फैजाबाद के जिला दंडाधिकारी आर.एस. श्रीवास्तव कहते हैं, "राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ हुई हर बैठक में हमने चेतावनी दी कि अगर यहां ईंटें आ गईं तो शिलान्यास नहीं रोका जा सकता." लेकिन सरकार ने फैजाबाद प्रशासन की आशंका की उपेक्षा कर दी

बूटा सिंह परिषद के साथ हुए समझौते पर भरोसा किए हुए थे जिसमें कहा गया था कि परिषद "इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ द्वारा 14 अगस्त 1989 को दिए गए निर्देश का पालन करेगी." बूटा सिंह और तिवारी की मौजूदगी में इस दस्तावेज पर परिषद के नेताओं—सिंघल, महंत अवैद्यनाथ, नृत्य गोपाल दास और दाऊदयाल खन्ना ने दस्तखत किए थे. लेकिन

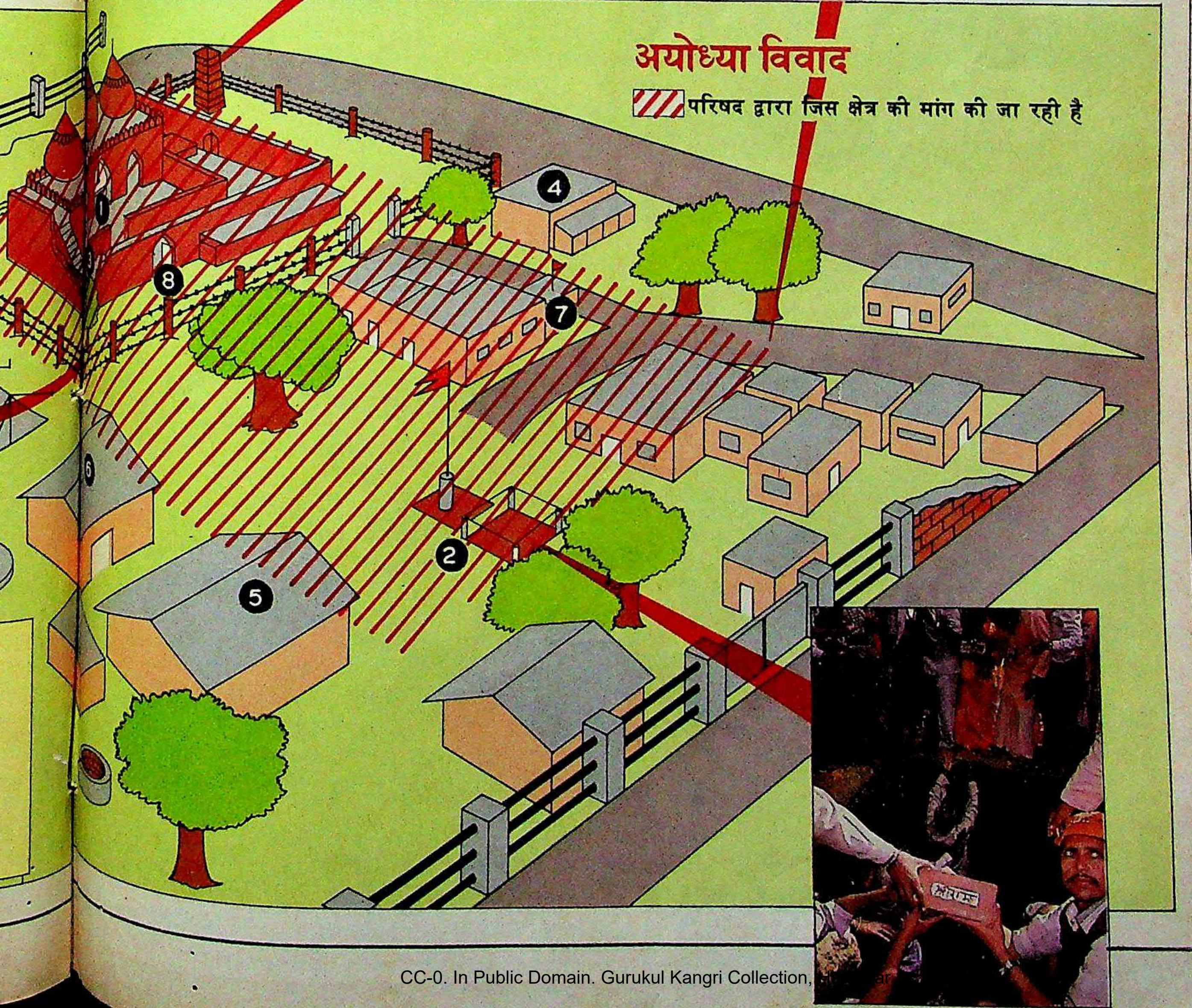

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

La Creme de la Creme

Principal G.D. Agrawal with some of our I.I.T. JEE, 1989, top-rankers at the 35th Annual Prize Distribution Function.

Agrawal Classes

Congratulates its top-rankers at the I.I.T. JEE, 1989.

What you see in this picture is the pick of our 1988-89 batch. With our expert coaching they rose to the top at the JEE 1989, securing 16 out of the first 17 positions, including the All India First Rank. One more feather in our caps. One more proud step in our pursuit of excellence. *(All India Ranks shown below.)*

Sitting (Left to Right)		*Vineet Buch*	**1st**	*Ashish Kr Banerji*	**2nd**	*K Shivkumar*	**3rd**
Sameet H Agrawal	**4th**	*G D Agrawal* **(Principal)**		*P G Agrawal* **(Director)**		*Kaustubh S Agashe*	**5th**
Mandar Mitra	**6th**	*Charu Aggarwal*	**9th**	*T Vikram*	**10th**		
Standing (1st Row)		*Rosen Sharma*	**11th**	*Manoj P Samanta*	**13th**	*Sudhanshu Aggarwal*	**14th**
Sanjeev Khirwar	**15th**	*Jayanth Majhi*	**16th**	*Jignesh R Jain*	**17th**	*P N Subramanya Rao*	**20th**
P Naga Vamsi	**22nd**	*R Anand*	**23rd**	*M S Sriram*	**24th**	*S Murali Dhar*	**26th**
Vijay Kumar	**27th**						
Standing (2nd Row)		*Samir Agrawal*	**28th**	*Niten Malhan*	**36th**	*V N Padmanabhan*	**37th**
Rahul Singh	**38th**	*Sanjeev Kumar*	**39th**	*Supratik Chakraborty*	**45th**	*Atul Gupta*	**46th**
Chander Kant	**47th**	*Rohit M Lotlikar*	**48th**	*V Sivakumar*	**51st**	*Naveen Ashish*	**53rd**
Rajiv Pratap	**58th**						
Standing (3rd Row)		*Vishal Gaur*	**60th**	*Purushottam S Prabhu*	**63rd**	*Prateek Sarkar*	**67th**
Hari Balakrishnan	**68th**	*Amit Narayan*	**69th**	*Ashwin J Rao*	**73rd**	*R Prakash Iyer*	**74th**
Dakshi Agrawal	**75th**	*Gaurav Suri*	**77th**	*Sandeep S Kulkarni*	**78th**	*Gaurav Gupta*	**79th**
Manoj Sehgal	**80th**						
Standing (Top Row)		*Sandeep Chhabra*	**81st**	*Chandra Prakash*	**82nd**	*Nischal Sheth*	**84th**
Sachin U Naik	**86th**	*Vishal Mishra*	**88th**	*B Girish*	**91st**	*Nitin Sharma*	**92nd**
V Kasturi Rangan	**95th**	*Puneet Sharma*	**96th**	*Srihari Cadambi*	**99th**		
Absentees		*B Sreekanth*	**8th**	*Kunal Kishore*	**12th**	*V S Anil Kumar*	**21st**
Archan Misra	**30th**	*Avnish Kr Rastogi*	**31st**	*D Harish*	**34th**	*Amit Goyal*	**35th**
Sudipto Ghosh	**54th**	*Jeetendra S Dublish*	**55th**	*K Vijaya Chander*	**62nd**	*V Vivekananda*	**64th**
Sandeep Gupta	**66th**	*Rajesh Bhatt*	**76th**	*Ravi Shekhar*	**90th**	*A Veena*	**93rd**

Top-ranking students almost always come from Agrawal Classes!

Agrawal Classes

For admission in our I.I.T. JEE 1991 and the CBSE's All-India PM/PD Entrance Examination 1991 courses, contact us in December 1989, along with a xerox copy of your Std. X marksheet. Courses start in April 1990.

Wallace Apts. 3, N. Bharucha Marg, Bombay 400 007.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Dattaram-AC 29/89

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार शिला यात्रा के लिए हरी झंडी मिल जाने पर उनके लिए यह समझौता कागज का एक टुकड़ा भर रह गया. नवंबर के पहले हफ्ते में अयोध्या में लगभग डेढ़ लाख ईंटें आईं जिससे परिषद का उत्साह और बढ़ गया.

अब सरकार समादेश याचिकाओं में कानूनी खामियां ढूंढ़कर अपने ही रचे कुचक्र से निकलने की कोशिश करने लगी. सुन्नी वक्फ बोर्ड ने अपनी याचिका में मस्जिद के आसपास के 23 भूखंडों पर अपना दावा किया था लेकिन उसमें भूखंड नं. 578 का जिक्र नहीं था जो कि उसी जगह पड़ता है (देखें चार्ट). सो, सरकार ने परिषद से इसी भूखंड पर शिलान्यास करने का अनुरोध किया. उसने दोनों समुदायों को खुश करने की कोशिश की: शिलान्यास की मंजूरी देकर हिंदुओं को और विवादास्पद भूखड पर शिलान्यास की मंजूरी न देकर मुसलमानों को.

भूखंड नं. 578 के मालिक राम गोपाल दास पर प्रशासन ने दबाव डाला कि वे इस जमीन पर शिलान्यास के लिए परिषद को लिखित आमंत्रण भेजें. शुरू में परिषद वहां शिलान्यास के लिए राजी हो गई लेकिन बाद में उसने देखा कि भूखंड नं. 586 को भी हथियाया जा सकता है. सो 2 नवंबर को जिस समय जिला दंडाधिकारी लखनऊ में गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सुरक्षा-व्यवस्था की रूपरेखा बनाने में व्यस्त थे, उसी समय पुलिस नियंत्रण कक्ष में वायरलेस से संदेश आया कि विश्व हिंदू परिषद अपनी बात से मुकर गई और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने भूखंड नं. 586 पर भगवा झंडा फहरा दिया है.

इस संदेश से राज्य सरकार अवाक रह गई. वह फिर हाईकोर्ट में गई और पूछा कि भूखंड नं. 586 तकनीकी रूप से विवादास्पद है या नहीं. राज्य सरकार के वकील ने कहा कि सुन्नी वक्फ बोर्ड की याचिका में दो अनुलग्नक हैं जिनमें से एक में भूखंड नं. 586 सहित 23 भूखंडों की सूची है और दूसरे में उस स्थल का एक सांकेतिक नक्शा है जिसमें निर्माण वाली जगह दिखाई गई है. अदालत ने अपना फैसला इसी सांकेतिक नक्शे के अनुसार दिया जिसमें निर्माण के चारों ओर की जमीन को कब्रगाह बताया गया है. अपने आवेदन में सरकार ने यह भी कहा कि वह उस जमीन को विवादास्पद मानती है जहां झंडा फहराया गया है.

कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश के.सी. अग्रवाल, यू.सी. श्रीवास्तव और एस.एच.ए. रजा की पीठ ने चार-पेजी फैसला दिया जिसके तीसरे पेज में उन्होंने स्पष्ट कहा कि सुन्नी वक्फ बोर्ड की याचिकाओं में 23 भूखंडों की सूची है. उन्होंने आगे कहा, "हमारी निषेधाज्ञा इन्हीं भूखंडों खासकर क ख ग घ द्वारा दर्शाए गए भूखंड पर लागू होती है जो कि याचिका के साथ नत्थी उस

जोगिंदर चावला

हिंदुओं का एक उग्र प्रदर्शन: दबाव की नीति

चुनाव के ऐन पहले हिंदुओं को नाराज न करने की गरज से बूटा सिंह और दूसरे नेताओं ने वादाखिलाफी के लिए परिषद की आलोचना न करने का फैसला किया

रेखांकन: बी.के. शर्मा

अयोध्या का शिलान्यास स्थल:
सुन्नी वक्फ बोर्ड के अनुसार विवादास्पद क्षेत्र

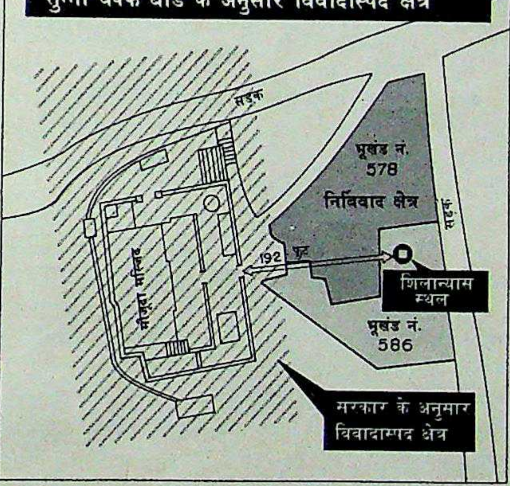

स्थल के नक्शे में च छ ज झ के जरिये दर्शायी गई सीमा के भीतर दिखाया गया है." न्यायाधीशों ने अपना फैसला इन शब्दों के साथ खत्म किया, "हम स्पष्ट करते हैं कि 14 अगस्त 1989 का आदेश याचिका में उल्लिखित समूची जमीन पर होगा जिसमें भूखंड नं. 586 शामिल है." दरअसल, दोनों अनुलग्नकों में दिखाई गई जमीन को फैसले में विवादास्पद संपत्ति बताया गया था.

सरकार फिर मुश्किल में फंस गई. विश्व हिंदू परिषद ने शिलान्यास स्थल पहले ही तय कर लिया था. उधर जिला अधिकारियों का मानना था कि बिना खून-खराबे के शिलान्यास स्थल बदलना संभव नहीं है. अपने निर्वाचन क्षेत्र में काले झंडों का सामना करने के बाद बूटा सिंह लखनऊ पहुंचे. उन्होंने राज्य के अधिकारियों से फैसले का सावधानी से अध्ययन करने के लिए कहा. तब मुख्य सचिव शिरोमणि शर्मा ने राज्य के महाधिवक्ता एस.एस. भटनागर को इस विवाद पर अपना विचार बताने और अदालत के फैसले के आखिरी अनुच्छेद की व्याख्या करने को कहा.

भटनागर ने समूचे आदेश के बजाय सिर्फ आखिरी अनुच्छेद का ही सूक्ष्मता से अध्ययन किया और तीसरे पेज की बातों को नजरअंदाज कर दिया जिसमें विवादास्पद भूखंडों की सूची थी. आखिरकार उन्होंने फैसले से एक नई बात निकाल ही ली: 'चूंकि सांकेतिक नक्शा आयताकार है, इस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए विवादास्पद जमीन भी आयताकार होगी.' मजे की बात यह कि अदालत में ऐसी दलील कभी नहीं दी गई थी. उन्होंने सरकार को मुसीबत से निकालने के लिए सांकेतिक नक्शे को विवादास्पद जमीन के समकक्ष रखकर एक नई व्याख्या निकाली. उनकी दलील थी कि नक्शे के पैमाने के अनुसार शिलान्यास स्थल विवादास्पद जमीन के बाहर पड़ता है (देखें चार्ट). दूसरी व्याख्या यह थी कि बगल का भूखंड 578 विवादास्पद न होने से भूखंड 586 की बाहरी सीमा भी विवादास्पद जमीन से बाहर होनी चाहिए. सो, सरकार की ताजा सफाई में भूखंड नं. 586 को दो भागों में बांट दिया गया. एक विवादास्पद और दूसरा अविवादास्पद.

इस तरह सरकार उस जमीन को 'अविवादास्पद' घोषित करने में सफल रही जिसे वह एक दिन पहले हाईकोर्ट में विवादास्पद बता रही थी. सरकार ने सुन्नी वक्फ बोर्ड के दावे वाले 23 भूखंडों की सूची दी थी. जाहिर है परिषद ने राज्य प्रशासन को अपनी इज्जत बचाने के लिए अदालत के आदेश में कोई नया तत्व ढूंढ़ने के लिए मजबूर कर दिया. चुनाव के ऐन पहले हिंदुओं को नाराज न करने की गरज से बूटा सिंह और दूसरे इंका नेताओं ने वादाखिलाफी के लिए परिषद की आलोचना न करने का फैसला किया.

मुस्लिम नेता सरकार के इस कदम से बहुत नाराज हो गए. अखिल भारतीय बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति के संयोजक जफरयाब जिलानी कहते हैं, "यह न्यायपालिका का मजाक उड़ाना है. इसी सरकार ने 6 नवंबर को इसे विवादास्पद जमीन कहा और दूसरे दिन अविवादास्पद जमीन. हम साबित करेंगे कि सरकार ने अदालत की अवमानना की है." जिलानी के मुताबिक, जो कि सुन्नी वक्फ बोर्ड के वकील भी हैं, भूखंड नं. 586 को विवादास्पद और अविवादास्पद भागों में बांटने की सरकार की रणनीति गलत थी.

फैजाबाद के वकील मोईनुद्दीन अहमद सिद्दीकी जिला दंडाधिकारी पर आरोप लगाते हैं कि उन्होंने विश्व हिंदू परिषद को शिलान्यास की हरी झंडी दिखाने के पहले मुसलमानों को अपना पक्ष रखने का मौका नहीं दिया. बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति के आज़म खां कहते हैं, "अदालतें सिर्फ फैसला दे सकती हैं. उन्हें निष्पक्षता से लागू करना कार्यपालिका का काम है. इंका सरकार ने मुसलमानों से धोखाधड़ी की है."

विवाद अभी खत्म नहीं हुआ है. मस्जिद को सौंपने की मांग का खुला समर्थन करने वाली एकमात्र राजनैतिक पार्टी भाजपा की संसद में ताकत बढ़ गई है, इसलिए नई सरकार पर भी दबाव डाले जाने की संभावना है. परिषद के नेता और पूर्व आईपीएस अधिकारी एस.सी. दीक्षित कहते हैं, "यदि नेहरू मंत्रिमंडल सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का फैसला ले सकता है तो मौजूदा सरकार क्यों नहीं ले सकती."

इससे दोनों समुदायों के बीच की दरार बढ़ गई है. लखनऊ में गृह विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने टिप्पणी की, "यह ऐसा मुद्दा है जिस पर हर कोई—वकील, नौकरशाह, शिक्षक, पुलिस कर्मचारी और राजनीतिक—बंटा हुआ है."

यहां तक कि तीन न्यायाधीशों की पीठ ने भी अपने फैसले में यह जिक्र करना उचित समझा कि "इस बात में संदेह है कि मुकदमे में शामिल कुछ सवालों को न्यायिक प्रक्रिया से सुलझाया जा सकता है." जाहिर है, न्यायपालिका इससे बचने की प्रक्रिया में परिषद के इस दावे को पुख्ता कर रही है कि मामला न्यायिक क्षेत्र से परे है.

दिल्ली में बैठने वाली नई सरकार को पेचीदा स्थिति का सामना करना होगा. उसे परिषद के नेताओं से निबटना होगा जो कब्रगाह खोदने की संभावना से भी इनकार नहीं करते. सिंघल कहते हैं, "यदि वहां कब्रगाह है तो उसे भी मस्जिद के साथ हटा दिया जाना चाहिए." परिषद के नेताओं का इस तरह का उग्र विचार यही साबित करता है कि इस समस्या को बातचीत के जरिए नहीं सुलझाया जा सकता, हालांकि वी.पी. सिंह और जनता दल यही प्रचार कर रहे थे कि इसे मिल-बैठकर हल किया जाएगा.

अयोध्या का मौजूदा विवाद वैसा ही है जैसा कि देश पंजाब में देख चुका है. पिछली सरकार धार्मिक कट्टरपंथियों के साथ हाथ मिलाकर अपने चेहरे पर पहले ही कालिख पोत चुकी है. उम्मीद की जानी चाहिए कि नई सरकार वैसी गलती नहीं करेगी. उसकी पहली प्राथमिकता अयोध्या में लगी आग को बुझाना होना चाहिए ताकि समूचा राष्ट्र सांप्रदायिक उन्माद की चपेट में आने से बच जाए ■

—पंकज पचौरी

अयोध्या में भूखंड नं. 586 सर्वइस्लामी एकता के झंडाबरदार मुसलमान कट्टरपंथियों और 'हिंदू राष्ट्र' के प्रचारक हिंदू धर्मांधतावादियों के बीच झगड़े का एक मुख्य मुद्दा बन गया है ■

शिलान्यास की पृष्ठभूमि

जनवरी 1885: एक हिंदू पुजारी फैज़ाबाद के उप-न्यायाधीश से मस्जिद के बाहर मंदिर बनाने की इजाजत मांगता है.

फरवरी: उप-न्यायाधीश मंदिर बनाने की इजाजत नहीं देते, क्योंकि 'यह वहां मौजूद मस्जिद के बहुत नजदीक' है.

मार्च 1886: जिला न्यायाधीश भी इजाजत नहीं देते.

नवंबर: न्यायिक आयुक्त भी इस दलील पर अपील रद्द कर देते हैं कि 'इस बात का कोई रिकार्ड नहीं कि वादी (पुजारी) का इस जमीन पर मालिकाना हक रहा हो.'

मार्च 1946: सिविल जज मस्जिद को वक्फ की संपत्ति घोषित कर देते हैं.

दिसंबर 1949: कुछ हिंदू जोर-जबरदस्ती से मस्जिद में राम की मूर्ति स्थापित करते हैं. प्रमुख द्वार पर ताला लगा दिया जाता है.

जनवरी 1950: सरकार इस विवादास्पद संपत्ति को अपने कब्जे में कर लेती है. लेकिन हिंदुओं को सीमित जगह पर पूजा करने की इजाजत मिल जाती है.

दिसंबर 1961: सुन्नी वक्फ बोर्ड मस्जिद और उसके चारों तरफ के कब्रिस्तान पर मालिकाना हक मांगने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाता है.

जून 1984: विश्व हिंदू परिषद इसकी मुक्ति के लिए राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति की स्थापना करती है.

फरवरी 1986: जिला न्यायाधीश द्वारा ताला खोलने का आदेश जिससे हिंदू बेरोकटोक वहां जा सकें.

मार्च: बाबरी मस्जिद एक्शन समिति की स्थापना.

फरवरी 1989: परिषद और साधु-संत राम मंदिर के निर्माण का आह्वान करते हैं.

अगस्त: हाईकोर्ट द्वारा यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश.

सितंबर: परिषद का निर्देश पर सरकार से समझौता.

2 नवंबर: परिषद सरकार द्वारा 'विवादित' करार दिए गए स्थल पर अपना झंडा फहरा देती है.

7 नवंबर: उक्त जगह विवादित है—हाईकोर्ट का स्पष्टीकरण.

9 नवंबर: सरकार उसी जगह शिलान्यास की इजाजत दे देती है लेकिन कहती है कि यह भूमि विवादित नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी इंडिया टुडे की शैली, भाषा और विषय
हिंदी पत्रकारिता में जैसे ताज़गी का एक झोंका.

हिंदी इंडिया टुडे के हर अंक में वह बात है
जो हिंदी पत्रकारिता में दुर्लभ हो गई थी.

हिंदी इंडिया टुडे ने वास्तव में हिंदी पाठक वर्ग को
वह नया नज़रिया दिया और वह नया एहसास कराया है कि
उनके सोच को एक नया स्फुरण मिल गया है.

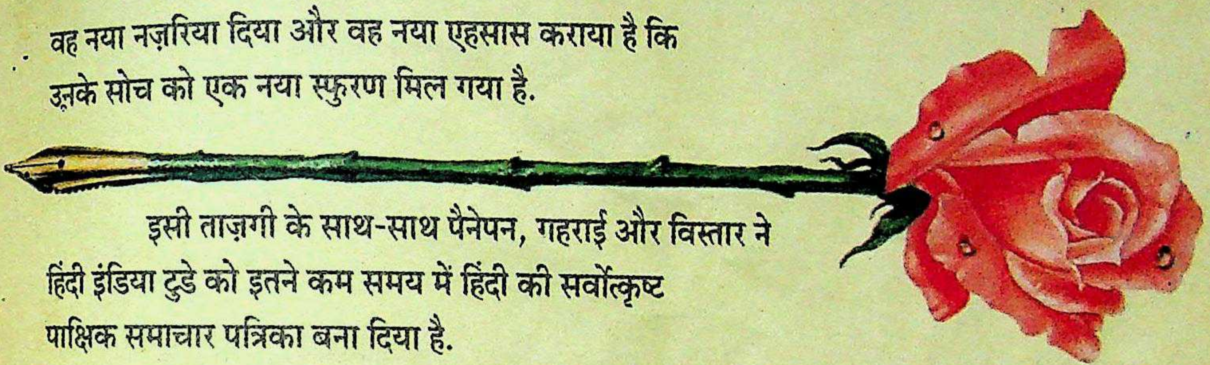

इसी ताज़गी के साथ-साथ पैनेपन, गहराई और विस्तार ने
हिंदी इंडिया टुडे को इतने कम समय में हिंदी की सर्वोत्कृष्ट
पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

18 लाख पाठकों के लिए हिंदी इंडिया टुडे इतना ही
ज़रूरी साबित होने लगा है जितना सांस लेने के लिए
ताज़ी हवा का झोंका.

हिंदी इंडिया टुडे में सुरताल, दूरदर्शन और सिनेमा
जैसे स्तंभ हल्का-फुल्का मनोरंजन तो करते ही हैं, अब तक अज्ञात
तथ्यों से भी परिचित कराते हैं. सूचनाओं के अंबार में ताज़गी का
यह एहसास सचमुच आल्हादकारी होता है.

ताज़गी
का
झोंका

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/273

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा है कि राजा बली ने ढाई डग में सारी दुनिया नाप ली थी. हिंदी इंडिया टुडे ने भी अपने 16" के छोटे कलेवर में पूरी दुनिया को नापकर अपनी अद्‌भुत पहुंच और विस्तार का परिचय दिया है.

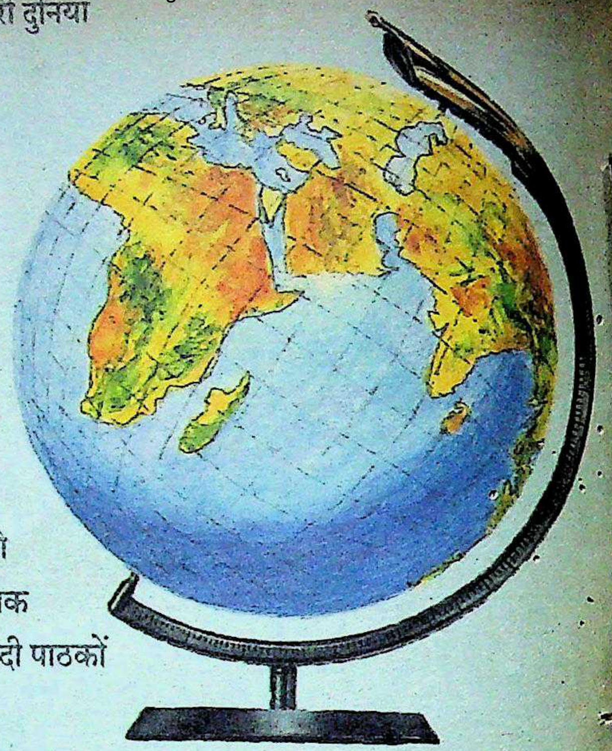

हिंदी पत्रकारिता में पाठकों की दुनिया सिकुड़कर रह गई थी. हिंदी इंडिया टुडे ने उनके लिए सारी दुनिया के दरवाज़े खोल दिए.

विस्तार जो सिर्फ भौगोलिक पहलुओं को ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं को भी पूरी ज़िम्मेदारी और सजगता से हिंदी पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है.

विस्तार के साथ-साथ पैनेपन, गहराई और ताज़गी ने इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी की सर्वोत्कृष्ट पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त है.

ढाई डग में दुनिया सारी

जहां सारे विश्व की बात हो रही हो वहां कला, साहित्य, संस्कृति जैसे जीवन के अभिन्न अंगों से वंचित कहां रहा जा सकता है. इसीलिए हिंदी इंडिया टुडे ने कहानी और उपन्यास अंश भी प्रकाशित करना शुरू किया है.

वार्षिक ग्राहक बनिए – प्रति अंक 1.50 रु. बचाइए (यानी 36/- रु. प्रति वर्ष) और अपनी चहेती पत्रिका घर बैठे पाइए! 132/- रु. चैक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिए 'लिविंग मीडिया इंडिया लि०' के नाम थॉमसन प्रेस बिल्डिंग, पो. बॉ. 706, फरीदाबाद-121007 (हरियाणा) पर भेजिए, अपने नाम व पते के साथ.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रू. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/274

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Why the Tandons are a family in Vogue?

Vogue Blankets offer something for everybody in the family.

"Just what I was looking for" — says Mrs. Tandon

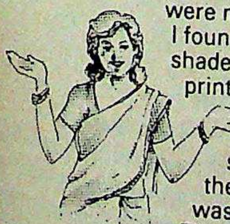

"When I first saw Vogue Blankets, I couldn't believe they were made here. I found such lovely shades, such pretty prints! Now, after using them for two seasons, I find they're so easy to wash, fold and store. They're mothproof, too! And even after regular use, they're still as good as new!"

"Light yet warm" — adds Mr. Tandon

"Being a textile engineer, I know how Vogue Blankets, made from synthetic fibres, are lighter yet warmer than woollens. The secret is their nonwoven structure. And, at their price, they offer real value for money!"

Mrs. Tandon finds them perfect for kids too!

"Vogue Blankets are not only soft and snug, but totally non-allergenic for babies. And now that our little one has grown, I've got her a Vogue Blanket from the Junior Range that's just been introduced."

Vogue Blankets. What a lovely gift idea!

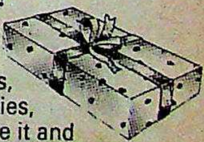

Vogue Blankets make an ideal gift. Marriages, arrivals, anniversaries, festivals... you name it and Vogue meets the need!

VOGUE BLANKETS

What a lovely way to tuck in this winter!

A quality product from UNIPRODUCTS (INDIA) LTD. In technical collaboration with UNIPRODUCTS CANADA INC.

CLARION O 280

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: गोपाल मगड़

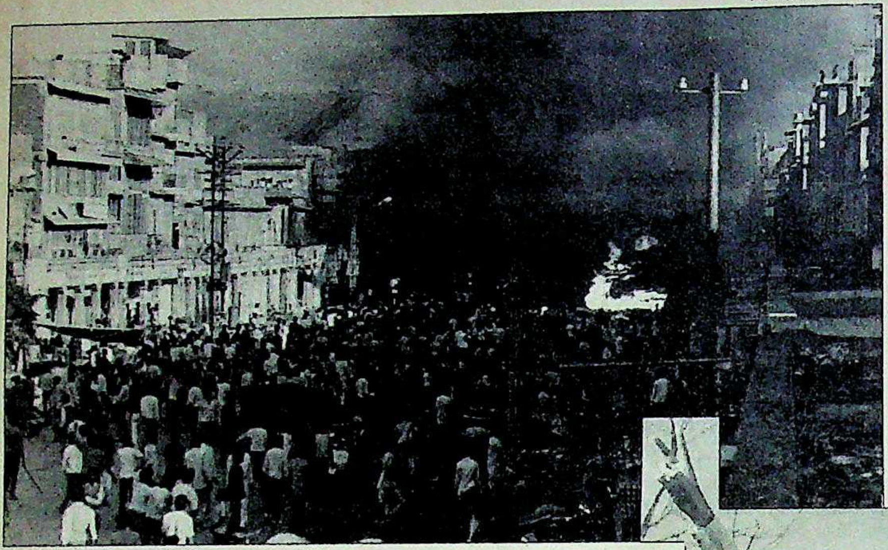

> **शहर झुलस रहा था और दंगे के लिए भाजपा और इंका एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे थे**

जयपुर में आगजनी; (नीचे) नाथू सिंह और भार्गव

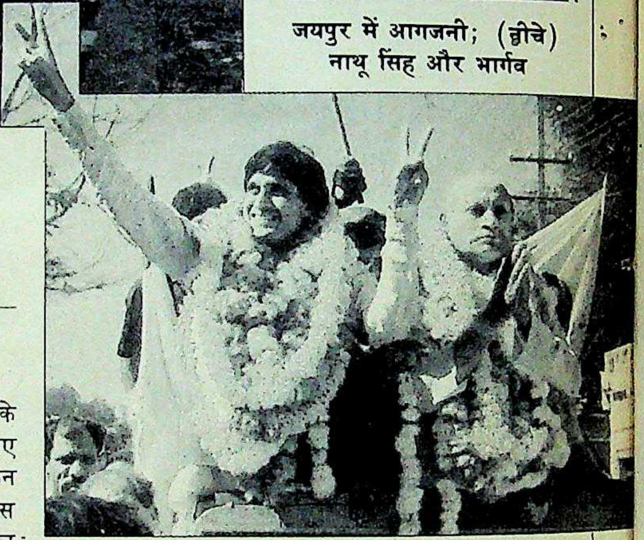

राजस्थान

सांप्रदायिक आग

जयपुर और कोटा में भाजपा के जुलूसों से दंगे भड़के

राजस्थान में एक बार फिर सांप्रदायिकता की आग धधक उठी. और जब तक प्रशासन स्थिति को ठीक से भांपता तब तक हालात काफी बिगड़ चुके थे. जयपुर और कोटा में भाजपा उम्मीदवारों के विजय जुलूस पर हुए पथराव ने कुछ ही देर में सारा माहौल बदल दिया.

27 नवंबर को चुनाव नतीजों के बाद जब भाजपा ने जयपुर में विजय जुलूस निकाला तो इस पर कई स्थानों पर पथराव हुआ जो हिंसा और आगजनी का सबब बन गया. शहर के प्रमुख बाजारों में आग की लपटें उठने लगीं और चारों ओर भगदड़ मच गई. प्रशासन जब तक हरकत में आता, तब तक काफी कुछ बरबाद हो चुका था. रात तक शहर को सेना के हवाले कर दिया गया. इसके बावजूद हिंसा, आगजनी और लूटपाट नहीं थमी. कोटा शहर में भी भाजपा के विजय जुलूस के साथ ऐसा ही कुछ हुआ जहां हिंसक वारदातों में दो लोग मारे गए. मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर ने जयपुर दंगे की न्यायिक जांच की मांग को ठुकराते हुए कहा, "कोटा के दंगे में तो कुछ लोग मारे गए हैं जबकि जयपुर में ऐसा नहीं हुआ." हालांकि बाद में पांच घायल लोगों की मृत्यु हो गई.

भाजपा का लगभग एक किमी लंबा विजय जुलूस नवनिर्वाचित सांसद गिरधारी लाल भार्गव और नाथू सिंह की अगुआई में सवेरे 11 बजे भाजपा के प्रदेश कार्यालय एमएलए क्वार्टर्स से शुरू हुआ. लेकिन जुलूस के साथ पर्याप्त पुलिस बल नहीं था. जुलूस का पहला छोर जब जौहरी बाजार से होता हुआ रामगंज बाजार पहुंचा तो कुछ मकानों की छतों से अचानक पथराव शुरू हो गया. पथराव के बाद हिंसा फैलने लगी. हिंसा ने शहर के बाहर का भी रुख किया. पुलिस ने 400 लोगों को गिरफ्तार कर भारी मात्रा में हथियार, तलवारें और धारदार शस्त्र बरामद किए.

एक सरकारी प्रवक्ता के अनुसार विजय जुलूस जब माणक चौक से रामगंज की ओर मुड़ा तो पुलिस ने उसे आगे बढ़ने से रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह सफल नहीं हुई. जुलूस में शामिल लोग पुलिस के घेरे को तोड़ते हुए रामगंज चौपड़, बांदरी का नासिक होते हुए सुभाष चौक पहुंच गए जहां एक संप्रदाय के लोग सड़क पर लाठी आदि लेकर आ गए. प्रवक्ता के अनुसार भाजपा कार्यकर्ता "धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले नारे लगा रहे थे" जिससे नाराज होकर एक संप्रदाय के लोगों ने उन पर पथराव शुरू कर दिया.

पथराव के बाद हिंसा का नंगा नाच शुरू हो गया. एक संप्रदाय विशेष की दुकानें जलाई जाने लगीं. इसके प्रतिक्रियास्वरूप दूसरे संप्रदाय के लोगों ने भी आगजनी शुरू कर दी. लोगों पर गैस के सिलिंडर तक फेंके गए. दंगाइयों ने रामगंज बाजार में फायर ब्रिगेड की एक गाड़ी को भी आग लगा दी.

मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हीरालाल देवपुरा और निवर्तमान गृहमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि इस सारी तबाही के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद और भाजपा जैसे कट्टरपंथी दल जिम्मेदार हैं. दूसरी तरफ विपक्ष ने दंगों के लिए कांग्रेस और प्रशासन को दोषी ठहराया. माथुर और देवपुरा ने आरोप को गलत बताया.

जयपुर से नवनिर्वाचित सांसद गिरधारी लाल भार्गव ने बड़े दुखी मन से कहा, "मैं रो तो नहीं सकता लेकिन जितना मुझे दुख हुआ उसकी कोई सीमा नहीं है. अगर यही सब होना था तो मैंने चुनाव क्यों जीता?"

सभी राजनैतिक दलों और सामाजिक संगठनों के लोग सांप्रदायिक सद्भाव के लिए जनसंपर्क में लगे हैं. शहर में आग बुझती दिख रही है लेकिन फिर भी भीतर लावा सुलगा हुआ है. पता नहीं इसे ठंडा होने में कितना वक्त लगेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित गर्भनिरोधक के बिना विवाहित जीवन आखिर कब तक सुखी रह सकता है?

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों का प्यार ही आपको एक-दूसरे के इतने निकट ले आया है। ऐसा प्यार जो विवाह के बन्धन में बन्धने व मिलकर ज़िम्मेदारियाँ निभाने से बढ़ता और सुदृढ़ होता है। किसी भी विवाहित जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है ऐसे दो व्यक्तियों की जो उसे आपस के विश्वास, भरोसे व घनिष्टता से भर दें। साथ ही एक दूसरे को सुखी रखने के लिए इतने समर्पित हों कि एक ऐसे गर्भनिरोधक का चुनाव करें जो दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

MAA COMMUNICATIONS 915A HIN

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग!

TTK उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
ग्लेंडेल ट्वीड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागलपुर

मौत, बरबादी और आतंक

हिंदू-मुसलमान दंगे में मौत के तांडव के बाद पूरे शहर में दहशत का माहौल, जख्म खाए लोगों में आपसी अविश्वास की खाई

सभी फोटोः प्रशांत पंजियार

भागलपुर आज जैसे 'भागे हुए लोगों का शहर' बन गया है. दंगे से बेघर हुए करीब 30,000 लोग विभिन्न शरणार्थी शिविरों में चले गए हैं और यह शहर 'भूतों का डेरा' नजर आने लगा है.

लोगों के सिर पर से सांप्रदायिक पागलपन का भूत तो उतर गया लगता है लेकिन मौत, बरबादी और आतंक के साये अभी भी मंडरा रहे हैं. इनकी छाप तहस-नहस हो चुके मुस्लिम-बहुल चंदेरी गांव के चंद बचे हुए लोगों में से एक मल्लिका बेगम के चेहरे पर देखी जा सकती है या अस्पताल में अपनी मां की गोद में पड़ी गौराचक्की की आठ वर्षीया उगनी कुमारी के चेहरे पर. उगनी के चेहरे पर बम के छर्रे लगे हैं और वह सूज गया है. मल्लिका बेगम कहती हैं, "मेरा तो विश्वास ही उठ गया."

दंगा थमने के बाद जब प्रशासन ने 24 घंटे का कर्फ्यू हटा लिया तब भी खौफ खाए लोग हफ्तों तक शाम ढलते ही घरों में बंद हो जाते. करीब तीन हफ्ते तक इस तरह बंद रहने के बाद जब लोग घरों से बाहर निकलने लगे तब तक शहर जैसे दो हिस्सों में बंट गया था. बंटवारे का कारणः डर और अविश्वास. न तो हबीबपुर का रिक्शावाला मोहम्मद जहांगीर शहर की किसी हिंदू बस्ती में सवारी ले जाने की हिम्मत कर पाता है और न नया बाजार का ललन साह किसी मुसलमान बस्ती में जाने की. दोनों इसका एक ही कारण बताते हैं, "डर लगता है."

यह दहशत तब भी उजागर हुई जब 21 नवंबर को जिला प्रशासन ने शांति जुलूस निकलवाया. प्रशासन सौ से अधिक लोगों को जुटा नहीं पाया और इस जुलूस के आगे-पीछे भी हथियारों से लैस पुलिस और सेना के जवान चल रहे थे. जुलूस में शामिल लोगों ने मुसलमान बस्तियों से होकर जाने से मना कर दिया. व्यापारी अजीज नसीरुद्दीन खान मनि कहते हैं, "जख्मों को

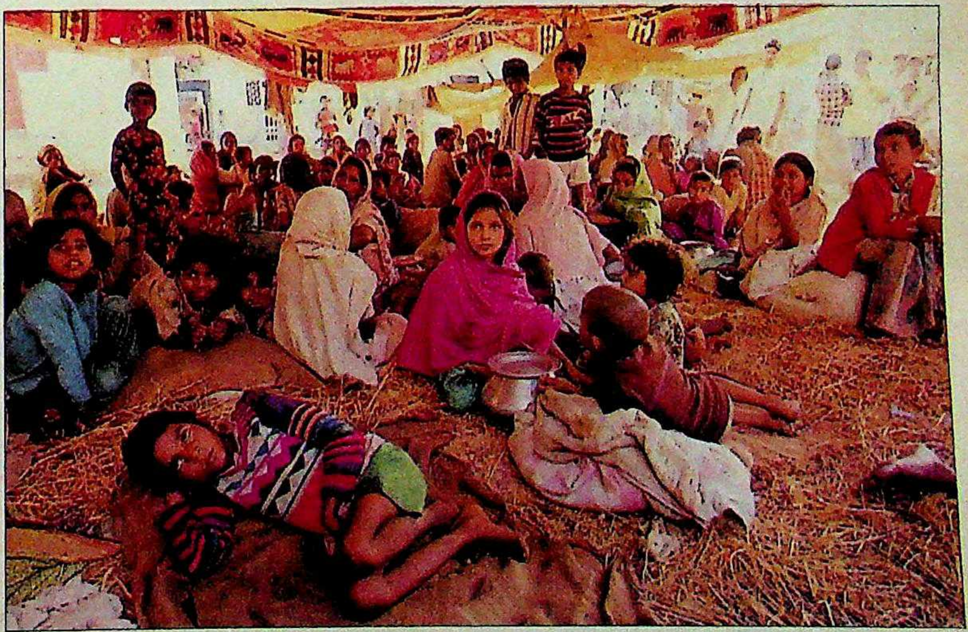

अपनी मां के साथ आतंकित आठ वर्षीया उगनी कुमारी; और एक राहत शिविर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंगाइयों द्वारा दूकान लूटे जाने के बाद हीरा देवी के गुजर-बसर का सहारा खत्म हो गया

भरने में काफी समय लगेगा." लेकिन दाग फिर भी बने रहेंगे. भीड़ की हिंसा के शिकार लोग, जो दोनों ही समुदायों के हैं, फटी-फटी आंखों से अपनी बरबादी को निहारते हैं. परबत्ता के मोहम्मद शमीम, जिनका घर और करघा जला दिया गया, कहते हैं, "नौ पीढ़ियों से हमारा परिवार यहीं रह रहा था. मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि हमारे साथ यह सब होगा."

उनसे मुश्किल से 50 गज की दूरी पर बी.एन. मजूमदार गुस्से में कहते हैं, "जरा यह देखिए, क्या किया है उन लोगों ने. लड़ाई में भी लोग रेडक्रॉस को बख्श देते हैं लेकिन इन लोगों ने मेरे दवाखाने को भी नहीं छोड़ा." मस्कन-बरारीपुर की हीरा देवी और राजू साह मलबे में कुछ ढूंढ रहे थे. रोती हुई हीरा देवी कहती है, "मेरा आदमी अंधा है. सिर्फ इसी दुकान के सहारे हमारा जीवन चल रहा था."

खूबसूरत रेशमी कपड़ों के लिए विख्यात इस शहर को एक और भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. यहां करघों पर करीब एक लाख लोग आश्रित थे. अब अधिकांश करघे जला दिए गए हैं. और जो बचे हैं उन्हें चलाने वाले जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए हैं. हुसैनाबाद के प्रमुख रेशमी वस्त्र व्यापारी मोहम्मद बहरम बताते हैं कि भागलपुर से 15 करोड़ रु. का रेशम निर्यात किया जाता है. जब दंगे फूटे तो बहरम खुद भी ऑर्डर लेने न्यूयॉर्क गए थे. वे कहते हैं, "मैं एक करोड़ रु. का ऑर्डर छोड़कर घर लौट आया." अपने घर में पड़े धागे-के बंडलों की ओर इशारा करते हुए वे कहते हैं, "एक महीने से कोई भी जुलाहा बुनाई के लिए सूत लेने नहीं आया है. इस सदमे से उबरने में अभी कई महीने लगेंगे." बहरम ने बिहार छोड़कर पश्चिम बंगाल में बसने का फैसला कर लिया है. वे कहते हैं, "अब मैं इस बेकायदा राज्य में नहीं रह सकता."

डर के कारण हिंदू जुलाहे मुसलमान बस्तियों में काम करने नहीं जा रहे हैं. नाथनगर के मोइन अंसारी के यहां काम करने वाला सुरेश 24 अक्तूबर से ही, जिस दिन दंगे शुरू हुए, काम पर नहीं आया है. इसी प्रकार नाथनगर के मोहम्मद शबाबुद्दीन को समझ में नहीं आता कि वे अपने पांच बिजली करघों पर काम कैसे शुरू कराएं. वे कहते हैं, "मेरे सारे मजदूर भाग गए हैं. और कच्चा माल है ही नहीं. मैं बाहर जाकर उन हिंदू व्यापारियों से अपने उधार भी वसूल नहीं सकता, जिन्हें मैंने अपना माल बेचा था."

आपसी अविश्वास का हाल यह है कि शहर का प्रायः हर आदमी मानता है कि कॉलेजों के खुलने के बाद एक बार फिर दंगे भड़केंगे. इस साल के अंत तक कॉलेजों के खुलने की उम्मीद तो नहीं है लेकिन कई तरह की अफवाहों के चलते डर बना हुआ है. एक अफवाह यह है कि हत्यारों ने पुलिस की वर्दी पहनकर अनेक छात्रों की हत्या कर दी है.

भागलपुर के पुलिस अधीक्षक के.एस. द्विवेदी इन अफवाहों का खंडन करते हैं. वे कहते हैं, "मैंने कम-से-कम दर्जन भर ऐसे लड़कों से खुद बात की है जिनके बारे में चर्चा थी कि उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए हैं. लेकिन मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि कुछ छात्र मारे गए होंगे." प्रशासन के लोग मानते हैं कि कुछ लड़के वाजिब कारणों से भी कॉलेज नहीं आते होंगे जिसके चलते संदेह और तनाव पैदा होता है.

शहर को तबाह करने वाली हिंसा के लिए एस.पी. को भी अप्रत्यक्ष रूप से दोषी बताया जाता है. नगरवासियों के अनुसार 24 अक्तूबर को रामशिला पूजा जुलूस पर बम से हमला होने के बाद जब लूटपाट और दंगा फूट पड़ा तो पुलिस मुंह ताकती रही. देसी बम फेंके जाने के बाद जब द्विवेदी के अंगरक्षक भाग खड़े हुए तो उन्होंने पुलिस को भीड़ पर गोलियां चलाने का निर्देश दिया. बाद में उन्होंने भौतिकशास्त्र के प्रोफेसर नसीमुल हक और डॉ. कलीमुर रहमान को गिरफ्तार किया. सभी मुसलमान इन दोनों को निर्दोष बताते हैं पर एसपी ने दावा किया कि उनके घर से बम बरामद हुए.

सच पूछा जाए तो द्विवेदी के कहने पर ही जिला प्रशासन ने जुलूस को संवेदनशील मुस्लिम इलाके से गुजरने की अनुमति दी. दूसरा रास्ता भी था लेकिन प्रशासन का मानना था कि किसी रास्ते पर किसी एक समुदाय की जमींदारी नहीं चलने दी जाएगी. लेकिन द्विवेदी कहते हैं कि उन्हें जुलूस के लिए तय रास्ते का पता नहीं था.

द्विवेदी का मुसलमान विरोधी नजरिया जुलाई में समुआ गिरोह के तथाकथित आठ 'डाकुओं' के मारने से भी उजागर हुआ. मुसलमानों का मानना है कि ये सभी निर्दोष थे. लेकिन इन आरोपों

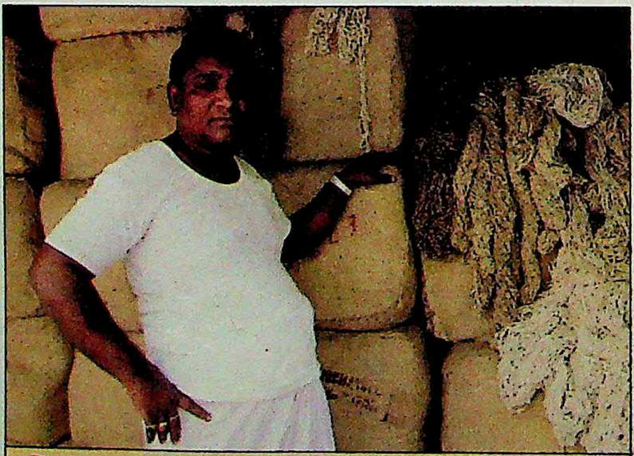

रेशम व्यापारी मोहम्मद बहरम ने तो पश्चिम बंगाल में बसने का ही फैसला कर लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परवाह न करते हुए द्विवेदी कहते हैं, "मैं यहां कानून-व्यवस्था की हिफाजत के लिए आया हूं. मैं किसी के धार्मिक मत की परवाह करूंगा तो काम नहीं चलेगा."

दूसरी तरह के विवाद भी जारी हैं. इस बात के सबूत मिले हैं कि राज्य सरकार को संभावित खतरों की जानकारी थी लेकिन इसके बावजूद उसने सुरक्षात्मक उपाय नहीं किए. जबकि सरकारी अधिकारियों का दावा है कि उन्होंने दंगे भड़कने से दो दिन पहले केंद्र सरकार को टेलेक्स भेजकर कुमुक की मांग की थी लेकिन वहां से कोई जवाब नहीं मिला. बाद में केंद्र ने अर्द्धसैनिक बलों की दो कंपनियां भेजीं जबकि राज्य सरकार ने 50 की मांग की थी. लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. राज्य सरकार जिले में अपेक्षाकृत कनिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति करने की भी दोषी है. मंडल आयुक्त, जिला मजिस्ट्रेट, क्षेत्रीय पुलिस अधीक्षक, डीआईजी और एसपी—ये सभी लोग अनुभवहीन अधिकारी ही थे जिससे मतभेद बढ़े ही. जुलूस पर फेंका गया बम वहां फैले तनाव की अभिव्यक्ति था और इसका निशाना जुलूस ही नहीं एसपी द्विवेदी भी थे.

सभी लोग मानते हैं कि अधिकांश हिंसा 'गंगोतों' (गंगा के किनारे दियारा में रहने वाले अपराधी किस्म के लोग) ने की. भागलपुर के अनेक क्षेत्रों में नहर-नालों को पार करने के लिए कामचलाऊ पुल बने हुए हैं जिससे गंगोतों को आने-जाने में परेशानी न हो. आलोकनाथ घोष कहते हैं, "इन्हीं पुलों से होकर आए लोगों ने हमले भी किए और इन्हीं की मदद से भागे भी."

इस तनाव भरे माहौल में ही चुनाव कराने का फैसला करके सरकार ने लोगों को हैरत में डाल दिया. स्कूल शिक्षक अरुण कुमार मिश्र कहते हैं, "24 दिनों से कर्फ्यू में पड़े रहने वाले शहर को चुनाव ने एकदम अजीब स्थिति में डाल दिया." दंगाग्रस्त शहर में तैनात कुछ जवानों को चुनाव के काम में भेजने के प्रशासन के फैसले से लोगों के मन में और आतंक पैदा हुआ.

लेकिन इन तमाम बातों की सबसे बड़ी कीमत जिस आदमी को चुकानी पड़ेगी वे हैं यहां के मौजूदा सांसद और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. भागवत झा आजाद. वे कहते हैं, "मैंने अनेक गड़बड़ियों की तरफ राज्य सरकार का ध्यान दिलाया था, परंतु मेरी बात सुनी ही नहीं गई. मेरा पक्का मानना है कि यह दंगा अस्थिरता पैदा करने वालों की बड़ी साजिश का हिस्सा है." लेकिन वे चुनाव कराए जाने के फैसले को सही बताते हैं, "भागलपुर संसदीय क्षेत्र शहर तक सीमित नहीं है. दंगे से 15 फीसदी मतदाताओं वाला इलाका प्रभावित हुआ है."

दंगों को लेकर आजाद की जो गत बन रही थी उसे देखते हुए उनका तर्क समझ में आता है. पूरे शहर में उनके कार्टून और पुतले लगाए गए. विडंबना यह है कि दोनों ही समुदायों के लोग उनसे नाराज हैं. हिंदुओं के बीच यह अफवाह बड़े जोर से फैली थी कि आजाद ने कुछ बदमाश मुसलमान गिरोहों का बचाव किया है और उन्हीं के लोगों ने दंगे कराए. एक नर्स कहती है, "वे तो झा (मैथिल ब्राह्मण) के नाम पर कलंक है." दूसरी ओर मुसलमानों का मानना है कि आजाद के करीबी लोगों—कामेश्वर यादव और महादेव सिंह—ने ही सब कुछ करवाया है. वे बताते हैं कि इन दोनों में से कोई भी पकड़ा नहीं गया जबकि वे दंगाइयों को खुलेआम उकसा रहे थे. कहा जाता है कि यादव ने दंगाइयों को संगठित किया जबकि सिंह ने पैसा दिया.

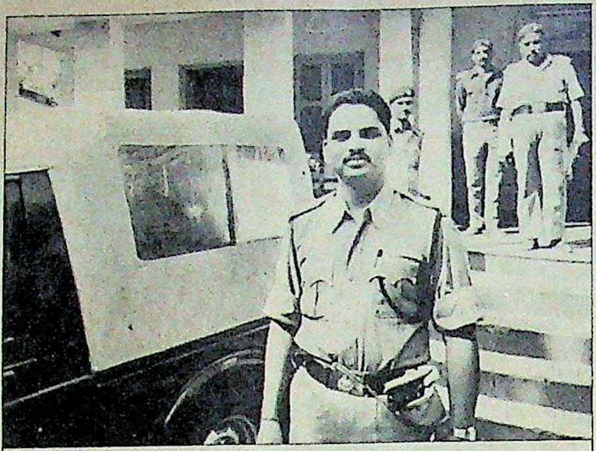

भागलपुर के एसपी के.एस. द्विवेदी की भूमिका को लेकर कई सवाल उठाए गए

जिले के अधिकारियों का कहना है कि ये दोनों ही 'लापता' हैं. परंतु उनकी बात पर किसी को भरोसा नहीं है. लोग मानते हैं कि यादव और सिंह को छुट्टा छोड़ दिया गया है. बढ़ती आलोचना से बचने के लिए प्रशासन ने भड़काऊ भाषण देने वाले पूरनमल बजोरिया को गिरफ्तार कर लिया.

इस खून-खराबे के बीच सांप्रदायिक एकता के उदाहरण भी मिले. भागलपुर शहर युवक इंका अध्यक्ष परवेज़ अहमद, जिनकी मां, मौसी और एक नौकरानी इन दंगों का शिकार हुईं, कहते हैं, "बहुत से हिंदुओं ने हमारी मदद की. मुन्ना सिंह, प्रतिभा सिन्हा और संजीव झा ने हमें शरण दी. मुन्ना सिंह ने तो खुद पुलिस से संपर्क किया और उसे यह खबर की कि हम उनके यहां छिपे हुए हैं."

आज इस शहर को मरहम की जरूरत है. लेकिन मरहम लगाने कोई आया नहीं. राजनैतिक नेता तो राहत कार्यों से भी दूर ही रहे. राजीव गांधी ने पटना की एक चुनाव सभा में घोषणा की कि भागलपुर को सेना के हवाले किया जाएगा. एक अधिकारी ने कहा, "जब तक सैनिक शासन नहीं लागू होता, सेना नागरिक अधिकारियों के सारे अधिकार नहीं ले सकती."

शहर का जीवन अस्तव्यस्त पड़ा है. बसें यहां आती नहीं, मानो यहां कोई महामारी फैली हो. मुसलमान बस-ट्रेन में नहीं चलते. जमालपुर के यादव अपने जल गए घरों की तरफ लौट गए है. लेकिन उनके अधिकांश जानवर दंगाई ले गए हैं. नागो यादव कहते हैं, "गाय-गोरू दो किलोमीटर दूर दूसरे गांव में हैं. हम उन्हें वापस लाने की कोशिश कर रहे हैं." उनके जानवर तो शायद लौट आएं परंतु लगता है भागलपुर अभी आगे आने वाली परेशानियों से झुलसता ही रहेगा.

—उत्तम सेनगुप्त

दोनों ही समुदायों के लोग मौजूदा सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद से बेहद नाराज हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☐ 180 मौलिक चित्र आलेखों सहित

☐ 12 बहुरंगीय (रंगीन) तस्वीरें आर्ट पेपर पर

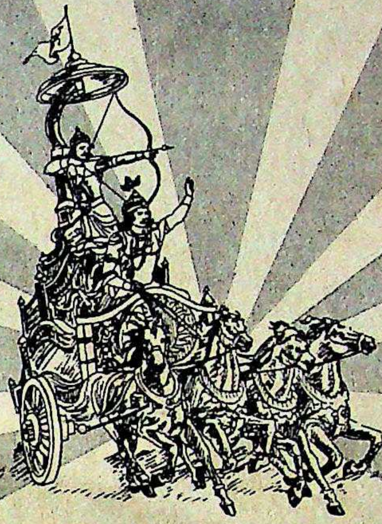

महाभारत डायरी

प्रस्तुत करते हैं **9 STAR**

एक संभाल कर रखने योग्य भेंट

अमर महाकाव्य महाभारत। अब डायरी के रूप में। हर पृष्ठ पर। शानदार तस्वीरें वृतांत सहित। सभी पौराणिक दृष्टों का वर्णन। भगवत गीता के अंशों का विवरण। उत्तम सिल्क में बंधी ज़िल्द। तीन तरफा स्वर्ण पालिश। सुरक्षा के लिए पारदर्शी आवरण।

महाभारत डायरी, 9 स्टार की अन्य सैंकड़ों मोहक डायरियों सहित शीघ्र ही भारत भर में मुख्य स्टेशनरों एवं डीलरों के यहाँ उपलब्ध होगी।

QUALITY PRODUCERS

India's leading Diary Manufacturers. Since 1961.

26, P. K. Tagore St, Sudama Sadan,
Calcutta-700006. Phone : 54-3940, 54-2831, 55-8400
Telex : 021-7252/55 & 021-7622/23

USER IT 380

-Cut along this line-------✂-------

Ms Quality Producers
26, P.K. Tagore St. Sudama Sadan
CALCUTTA - 700 006

Please mail ———— (number in words)
Mahabharat Diary/Diaries to my below address :

Name : ____________________

Address : ____________________

____________________ City ____________________

Pin ____________________

★ I enclose herewith Demand Draft/Money Order for Rs.———— @ Rs.180/- per Diary.

★ I agree to receive your Diary/Diaries by VPP @ Rs.180/- per Diary.

★ Offer valid for a limited period within India only.

V Dwan

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत पत्रिकाएं त्यौहार के मौके पर विशेष छूट

सोवियत संघ

सचित्र मासिक पत्रिका

नये जीवन का निर्झर

विश्व की बीस भाषाओं में प्रकाशित यह पत्रिका अपने पाठकों को सोवियत जीवन के सभी पहलुओं से, सोवियत जनता की रोजमर्रा की जिन्दगी और काम से परिचित कराती है।

सोवियत पुरुषों और महिलाओं के जीवन के सभी पहलुओं तथा क्रियाकलापों में नये खुलेपन के वातावरण को प्रतिबिम्बित करती है।

12 अंक मुफ्त 33% बचत कीजिए

विशेष छूट का लाभ उठाइये
तीन वर्ष के लिए चंदा भेजिए
और 33% की बचत कीजिए
12 अंक मुफ्त
रियायत साल के आखिर तक उपलब्ध

"सोवियत संघ" के लिए डी डी/एम ओ प्रेषित है
तीन वर्ष का चन्दा 60 रुपये
एक वर्ष का चन्दा 30 रुपये
(अवांछनीय काट दीजिये)

नाम ________________

पता ________________

____

यह विज्ञापन और भुगतान निम्न पते पर भेजिये

नवचेतन बुक्स (प्रा.) लि.
५-ई रानी झांसी रोड
नई दिल्ली-११००५५

मैगज़ीन सेन्टर
एम.सी.डी. बिल्डिंग
नं. २, दूसरी मंजिल
देशबन्धु गुप्ता रोड, पहाड़गंज
नई दिल्ली-११००५५

विजय एसोसिएटस
काम्मीसरीयट बिल्डिंग, १ मंजिल
२३१, द. न. रोड
बम्बई-४००००१

विश्व शताब्दि
७५-सि, पार्क स्ट्रिट
कलकत्ता-७०००१६

28

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभावनाओं से साक्षात्कार जरूरी

इसे संयोग नहीं बल्कि विडंबना ही कहा जाएगा कि प्राकृतिक संसाधनों के मामले में अमीर, जलवायु के मामले में खुशनसीब, उपजाऊ जमीन के मामले में समृद्ध और भौगोलिक स्थिति के मामले में अधिकांश दूसरे राज्यों से बेहतर स्थिति वाला बिहार राज्य आज भी देश के सबसे गरीब राज्यों की श्रेणी में गिना जाता है. हालांकि देश की राजनीति की नकेल थामने वाले नेताओं की बिरादरी में बिहारी नेताओं का अनुपात हमेशा अच्छा-खासा रहा है पर इस अनुपात की झलक राज्य के आर्थिक या औद्योगिक विकास पर देखने को नहीं मिलती.

बिहार के इस पिछड़ेपन के लिए कई कारण गिनाए जाते हैं. कोई इसे केंद्र सरकार की ओर से अपनाई जाने वाली 'उपेक्षा' का नतीजा मानता है तो कोई राज्य में संसाधनों की कमी को. किसी की नजर में इस अमीर राज्य की यह गरीबी उस जात-बिरादरीवाद और अनुशासनहीनता का प्रसाद है जिसने बिहार को अपने अजगरी पाश में जकड़ा हुआ है. और ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो इन सभी समस्याओं का सारा दोष राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में गहराई तक रच-बस चुकी लालफीताशाही और भ्रष्टाचार के मत्थे मढ़ते हैं. फर्क बस इतना है कि ऐसी हर दलील के पीछे एकमात्र उद्देश्य किसी और को दोषी ठहराकर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ना ही होता है. लेकिन ये दलीलें व्यर्थ ही हैं.

> **बिहार को मुक्ति चाहिए राजनैतिक जोड़तोड़, भ्रष्टाचार, जातिवाद, लालफीताशाही और आलसी जीवन शैली के दुष्चक्र से, तभी प्रगति और विकास का नव प्रभात यहां हो सकेगा**

ऐसे में हैरानी नहीं कि पूरे देश की खनिज जरूरतों का 40 फीसदी हिस्सा पूरा करने वाले और कोयले, लोहे, बॉक्साइट तथा यूरेनियम जैसे अमूल्य भंडारों से लैस बिहार में आज जो उद्योग हैं वे दूसरे अधिकांश राज्यों के सामने नगण्य हैं. देश की 11 फीसदी आबादी वाले इस राज्य के निजी क्षेत्र में कुल राष्ट्रीय निजी औद्योगिक पूंजी का सिर्फ 3 फीसदी हिस्सा लगा हुआ है और उत्पादक इकाइयों के मामले में बिहार का हिस्सा कुल मिलाकर सिर्फ 6 फीसदी है. और यह इस सचाई के बावजूद कि पिछले केवल पांच साल के भीतर ही बिहार में काम करने वाले राष्ट्रीयकृत बैंकों का 15 हजार करोड़ रुपया गुजरात और महाराष्ट्र जैसे औद्योगिक राज्यों के उद्योगपतियों ने अपने यहां के औद्योगिक विकास के लिए खर्च किया. कारण? बिहार में उद्योगों में पूंजी लगाने का न तो समुचित वातावरण बन पाया है और न कोई उद्यमी संस्कृति ही विकसित हो पाई है. ऐसी स्थिति के कारण टिस्को और टेल्को जैसे शानदार औद्योगिक उपक्रमों के बावजूद बिहार में मध्यम दर्जे के उद्योगों का ऐसा ढांचा भी नहीं खड़ा हो पाया है जो बड़े और छोटे उद्योगों के विकास को नई गति दे सके. इस दुर्दशा की वजह से राज्य के मुख्यमंत्री को भी दुख के साथ स्वीकार करना पड़ रहा है कि आज बिहार की हालत 'भयावह' हो चुकी है.

उधर प्राकृतिक सुंदरता और रंगबिरंगी संस्कृति वाले इस राज्य की असीमित पर्यटन संभावनाएं भी अभी चीन्ही जानी बाकी हैं. और जहां तक बात है मानव संसाधनों की, तो खूंटी के वनवासी हाकी खिलाड़ियों से लेकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में ऊंचे-ऊंचे पदों पर पहुंचे अनगिनत बिहारी युवा इस बात के प्रमाण हैं कि प्रकृति ने दूसरी खूबियों के साथ-साथ इस राज्य को होनहार सपूतों का भी वरदान दिया है. जरूरत बस इतनी ही है कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और दांवपेंच भरी जीवन शैली के दुष्चक्र से बाहर निकलकर राज्य की प्रगति की संभावनाओं को पहचाना जाए. संतोष की बात है कि ऐसी जागृति के संकेत अब औद्योगिक मोर्चे पर धीरे-धीरे उभरने लगे हैं. उम्मीद की जानी चाहिए कि पान, पॉलिटिक्स, पैंतरेबाजी, पैरवी, पुलिस, पावर और प्रभाव के बूते पर चलती आ रही व्यवस्था में जल्दी ही प्रगति और विकास का नया प्रभात होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढ़ने की चुनौती से सामना

पूरे भारत में बिहार को हर तरह से पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता है. लेकिन हकीकत यह है कि यहां के लोग हर क्षेत्र में आगे हैं. यह विडंबना ही है कि बेसिर-पैर की योजनाओं और भ्रष्टाचार की वजह से यह बरबाद हो रहा है

हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल के साथ बिहार के दौरे पर गए उनके एक राजनैतिक सहयोगी छोटानागपुर के रमणीय प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर दंग रह गए. उनकी टिप्पणी थी, "अगर यह जगह हरियाणा में होती तो हम अपने राजस्व कोष में पर्यटन से दस गुना इजाफा कर लेते." सचमुच बिहार के पास आखिर क्या नहीं है. गंगा का विशाल उर्वर मैदान है जहां करीब आधा दर्जन बड़ी नदियां बहती हैं, खनिज संपदा से भरपूरा एक क्षेत्र है जिसे भारत की खनिज थाती कहते हैं, घने जंगल हैं और विशाल जनसंख्या की ताकत भी.

लेकिन बिहार की छवि सबसे पिछड़े राज्य की बनी हुई है. लोगों में इसकी छवि एक अंधकाराछन्न, मध्ययुगीन प्रदेश की बनी हुई है जहां देश के सबसे असभ्य 10 फीसदी लोग रहते हैं.

इस साल सितंबर महीने की एक शाम को पटना हवाई अड्डे पर विमान से उतरे यात्री एक दंपती को घेरे हुए थे. इस दंपती के लिए पटना नया शहर था और वे अपने मित्र का पता ढूंढ़ने में लोगों की मदद चाहते थे. लेकिन अगर कोई मदद को आगे नहीं आता तो हवाई अड्डे पर ही रुकना चाहते थे. बाद में पता चला कि शाम ढलने के बाद उन्हें राज्य की राजधानी में बाहर न निकलने की हिदायत दी गई थी.

यह घटना कोई अजूबा नहीं है. बिहार आने वाले यात्रियों के मन में एक डर बैठा होता है. वे हर अनजाने व्यक्ति से घबराते हैं. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ईश्वरी प्रसाद कहते हैं, "पूरे उपमहाद्वीप में बिहारी एक गाली है. पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारत के दूसरे हिस्सों में बिहारी शब्द अपमान और घृणा का पर्याय बन गया है."

रांची में रहने वाले हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार कृष्णचंद्र

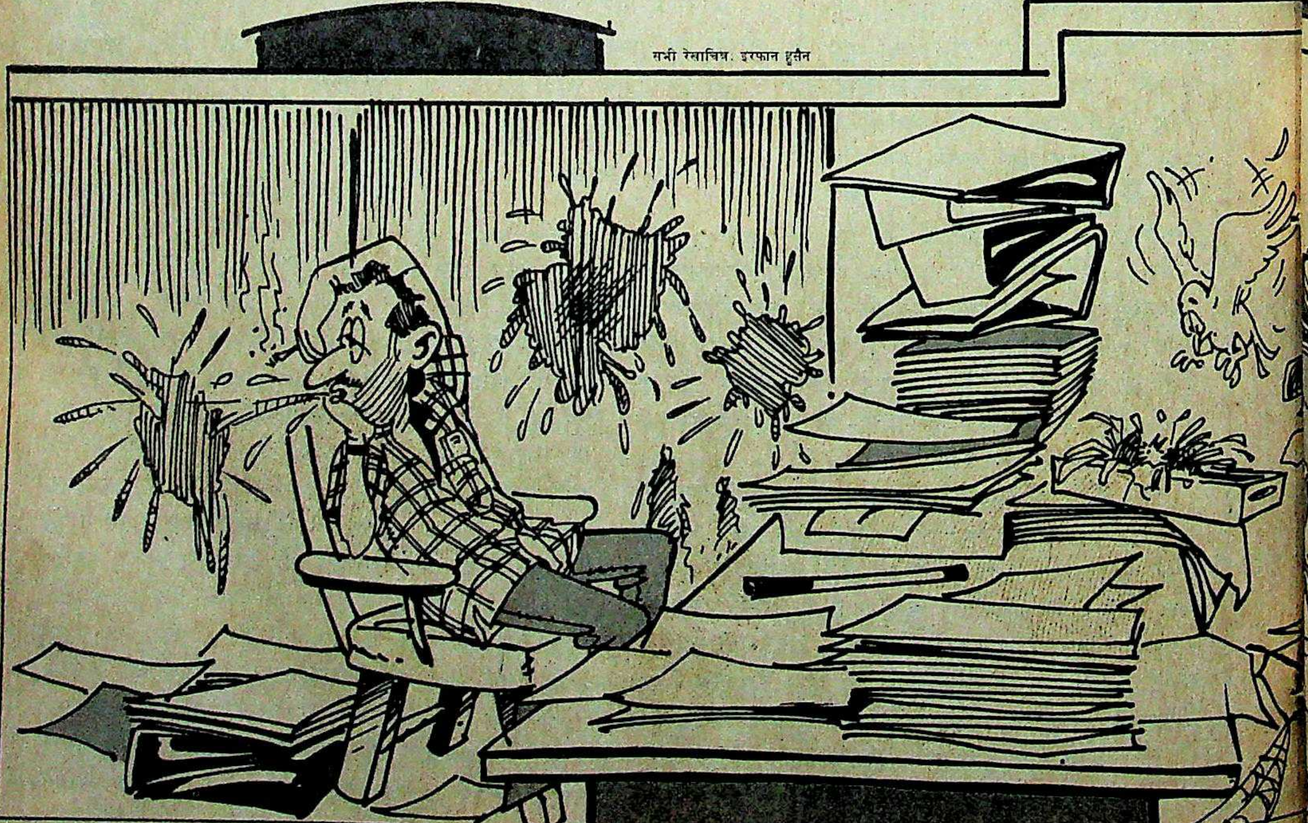

सभी रेखाचित्र: इरफान हुसैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी उर्फ किट्टू कहते हैं, "राज्य के बारे में एक ही सकारात्मक बात मेरे जेहन में आती है वह यह कि इसने अनेक व्यंग्यकारों को पैदा किया है. इसकी मिट्टी में ही ऐसा कुछ है जो व्यंग्यकारों के माफिक आता है."

जब ट्रेन बिहार में घुसती है तो लोग दरवाजे-खिड़की बंद कर लेते हैं. बंबई के एक व्यावसायिक अधिकारी ने, जिनकी नियुक्ति अब बिहार में हो गई है, हंसते हुए कहा कि वे जब भी पटना के मौर्य होटल में स्वीमिंग पूल में नहाने जाते हैं, वहां लोग राजनीति की चर्चा करते मिलते हैं.

भागलपुर आंखफोड़ कांड के बाद एक पत्रकार ने जुमला कसा था, "बिहार को बिहारियों से और बिहारियों को खुद अपने-आप से बचाया जाए." यह जुमला इस कदर चल पड़ा कि खुद बिहारी लोग भी इसे दोहराने लगे. और दिल्ली में सरकारी अधिकारी अक्सर बिहार को देश का गटर कहकर उद्योगपतियों को वहां पूंजी लगाने से निरुत्साहित करते रहे हैं.

लेकिन राज्य के कई मामलों को नजर-अंदाज किया जाता रहा है. बिहार में नियुक्त एक दक्षिण भारतीय सरकारी अधिकारी कहते हैं, "बिहार प्रशासकों, अर्थशास्त्रियों, राजनैतिक नेताओं और साथ ही प्रेस के लिए एक चुनौती है. दुर्भाग्यवश हर कोई इस राज्य और इसके लोगों के सामने नाकाम साबित हुआ है." इस बात में बहुत हद तक सचाई है कि औसत बिहारी आदमी कड़ी मेहनत करता है असम के चायबागानों, पंजाब के खेतों, दूरदराज के सीमावर्ती इलाकों में सड़क बनाने या निर्माण के काम में बिहारी ही दिखते हैं. यही नहीं, हावड़ा स्टेशन पर कुली का काम हो या कलकत्ता की सड़कों पर रिक्शा चलाने से लेकर सफाई का काम या जूट मिलें, हर जगह वही लगा दिखता है. फिर भी पूरे देश में आम धारणा यही है कि बिहार के लोग कामचोर, निकम्मा और सबसे भ्रष्ट होता है.

राज्य की विडंबना का सही चित्रण एक रेलवे अधिकारी के शब्दों में होता है. उन्होंने कहा, "यह नियम-सा बन गया है कि बिहार से गुजरने वाली गाड़ियों में खराब डिब्बे लगाए जाएं." वे इसकी वजह बताते हैं कि राज्य से गाड़ियों में चढ़ने वाली भीड़ अनुशासनहीन और असभ्य होती है जिसे डिब्बों के तोड़फोड़ में एक तरह का मजा आता है.

लेकिन अधिकारी एक बात नजरअंदाज कर देते हैं कि वहां ट्रेन में रोजाना चलने वालों की भारी संख्या है. गाड़ियों की कमी के कारण वहां लोगों को गाड़ियों की छतों पर, खिड़कियों से लटककर और कई बार इंजन के आसपास झूलते हुए यात्रा करनी पड़ती है. लोग अगर इतना खतरा मोल लेकर यात्रा करते हैं तो इसकी वजह विकल्प का अभाव है. जाहिर है कि इतनी बड़ी संख्या में लोग अगर यात्रा करेंगे तो डिब्बों की हालत बिगड़ेगी ही. जैसा कि कलकत्ता और बंबई के लोकल ट्रेनों में होता है. लेकिन यहां फर्क यह है कि बिहार में रोजाना यात्रा करने वालों के लिए कोई रिंग या लोकल ट्रेनों जैसी व्यवस्था नहीं है. यात्रियों को लंबी दूरी की गाड़ियों या एक्सप्रेस ट्रेनों में ही सफर करना पड़ता है. इसका हल यही है कि वहां और पटरियां बिछाई जाएं तथा गाड़ियां चलाई जाएं. लेकिन इस मामले में भी बिहार के बदले दूसरे राज्यों को ही तरजीह दी जाती रही है.

बिहार के लोगों में इस उपेक्षा और अपमान के प्रति गुस्सा भी है. एक पत्रकार ने कहा, "बंगालियों को अपनी संस्कृति का बड़ा अभिमान है. लेकिन मैं दावे से कह सकता हूं कि बंगाली युवाओं से अधिक बिहारी युवाओं को बंगला साहित्य की जानकारी है." और वाकई बंगाली और दूसरे प्रदेशों के लोग हिंदी साहित्य

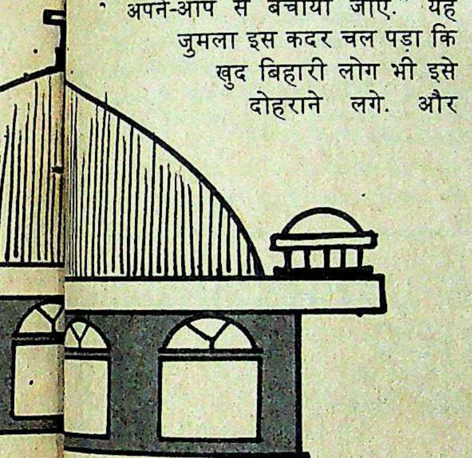

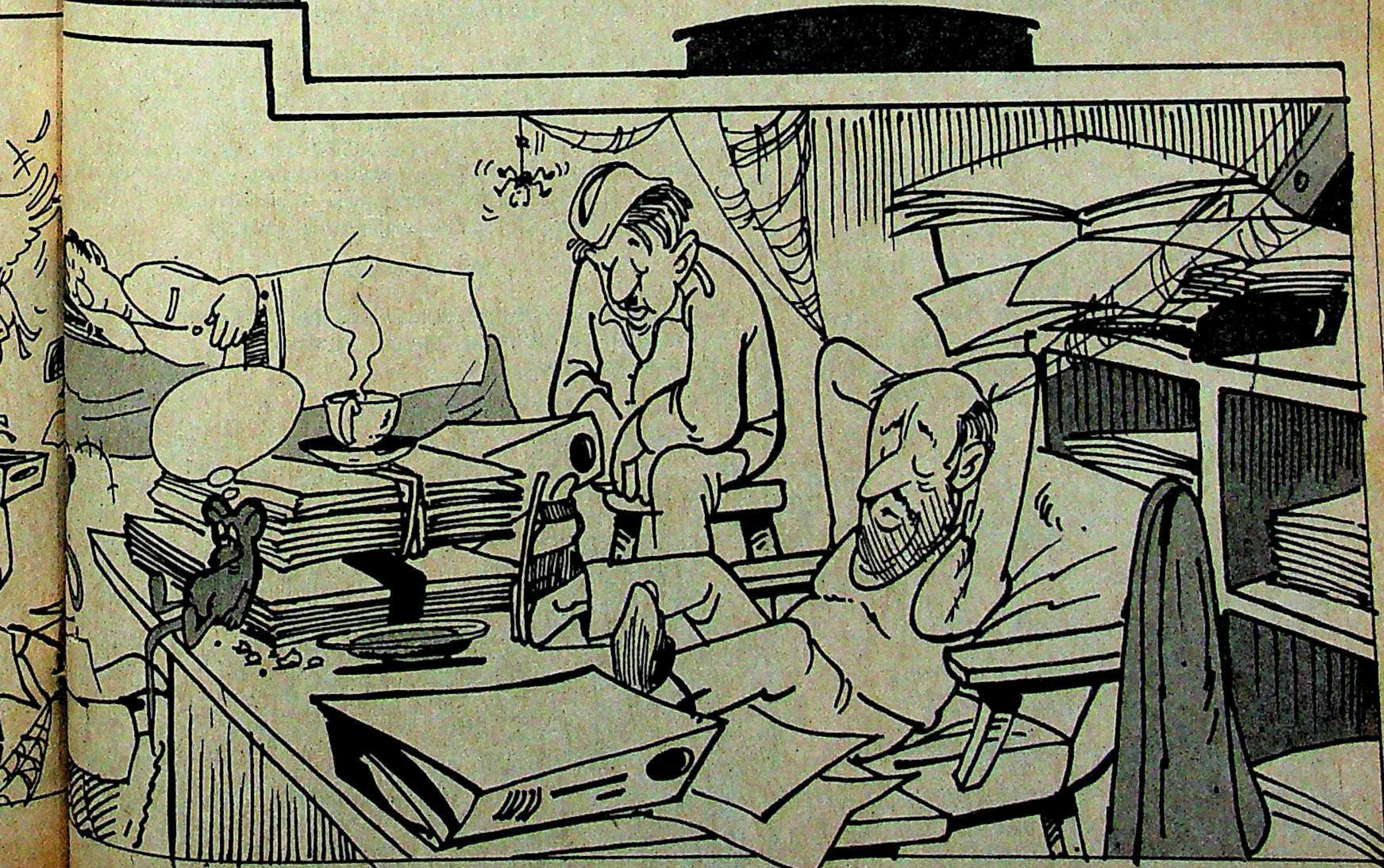

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Recognised by Department of Human Resources Development, Dept. of Science & Technology, Dept. of Labour & Employment and Affiliated to Magadh University)

REGULAR ACADEMIC PROGRAMMES:-

A. MASTER OF BUSINESS ADMINISTRATION (MBA)
B. MASTER OF COMPUTER APPLICATION (MCA)
C. POST-GRADUATE DIPLOMA IN COMPUTER APPLICATION (P.G.D.C.A.)
D. DIPLOMA IN HOTEL MANAGEMENT, CATERING & APPLIED NUTRITION (3 Years)
E. POST-GRADUATE DIPLOMA IN MANAGEMENT

(DISTANCE EDUCATION PROGRAMME)

INDIAN INSTITUTE OF BUSINESS MANAGEMENT

BUDHA MARG, PATNA-800001

Tel: 222174, 223872. Telex. 022 - 406

Established in January, 1979 with the help of Indian Business community, Management thinkers, experts, trainers, social workers, planners, Educationers and administrators by Professor P.R. Trevidi and Prof. Uttam Kumar Singh, the Institute I.I.B.M. has completed a complete decade of excellance, perfection and productivity as a centre for higher learning in India and abroad. The I.I.B.M. Patna, has the credit to be Father of Computer Science and Hotel Management education in the state of Bihar. The Govt. of Bihar duly recognised the Post-Graduate Programme in Management (MBA) and Diploma Programme in Hotel Management in the year 1983, through the special notifications issued by the Dept. of Education, Dept. of Science & Technology and Dept. of Labour, Employment & Training. Finally Magadh University has accredited the excellent teaching standard at the Institute and affiliated its MBA and MCA academic programmes. The Department of Electronics, Govt. of India approved the Institute's Post-Graduate Diploma in Computer Application Programme. The DOE also approved the Institute for establishment of National Centre for Instructional Material Development and Training and imple mentation of Information Technology awareness programme in the country. The Institute organise P.G. Programme in management (MBA) for Defence personnels and working executives under it's Distance Education Programme with the help of Ministry of Defence, Government of India.

NATIONAL INSTITUTE OF COMPUTER EDUCATION

B-46. S.K. PURI. PATNA — 800001 Tel. Ph. 32684

(AN AUTONOMOUS RECOGNISED INSTITUTION)

ALL INDIA FRANCHISE NETWORK:

NICE offers Franchise to Technocrats, professionals, and Entrepreneurs of important towns and cities in India for the promotion of computer awareness and competence to cater to the needs of computer users, organisation. The Franchise membership is offered to the individuals and organisations, having initiative and drive with around 1000 sq. space and more than one lakh Rs. financial capacity for infrastructural development. At present Nice-Franchise centres are in operation at the following places. Allahabad, Asansol, Arrah, Begusarai, Calcutta, Chapra, Delhi, Dhanbad, Jamshedpur, Muzaffarpur, Patna and 14 more are in the offering.

RECOGNISED ACADEMIC COURSES:

A. DIPLOMA IN COMPUTER SCIENCES. Duration 1 year.
B. DIPLOMA IN COMPUTER MAINTENANCE ENGG. Duration 9 Months.
C. DIPLOMA IN COMPUTER PROGRAMMING. Duration 6 Months.
D. DIPLOMA IN DATA-ENTRY & COMPUTER OPERATION. Duration 3 Months.

SHORT TERM PROGRAMMES

DIPLOMA & CERTIFICATE COURSES IN, BASIC, COBOL, FORTRAN, D-BASE, C-LANGUAGE, PASCAL, DATA-BASE MANAGEMENT Etc.

COMPUTERS (INDIA) LIMITED

B—46, S.K. PURI. PATNA—800001.
Tel. Ph. 33565 Telex 022-406

FIRST COMPUTER INDUSTRY OF BIHAR

COMPUTERS (INDIA) LTD., the only computer manufacturing organisation in the state, was inaugurated by Sri. SAM PITRODA, Advisor to P.M. on technology Mission. Within the span of one odd year, the products and services of CIL has acclaimed praise and satisfaction from more than hundred client-organisations comprising Govt. Deptts., Public Sector Corporations, Private sector organisations, Research and Educational establishments.

PRODUCT RANGE

Personal COMPUTERS (PCS) XTs SUPER - ATs. CIL DTP SYSTEMS, CIL TEACHERS (HOME-COMPUTER) CAD/CAM SYSTEMS, CAD DEVICES, PRINTERS etc.

(Dealership enquiries solicited)

DELHI OFFICE
B/2/13, JANAK PURI
NEW DELHI-110058.

CHOOSE CIL AND YOU ARE IN BUSINESS

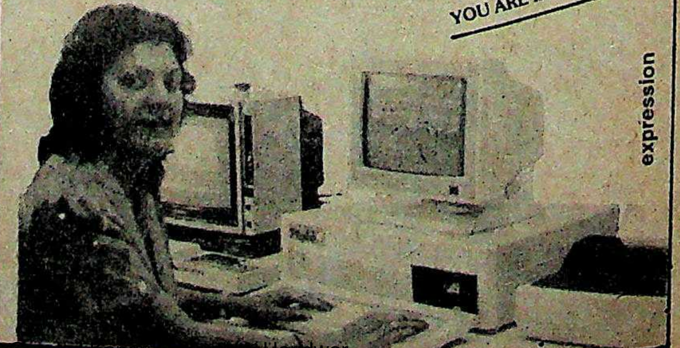

expression

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रति उदासीन ही रहते हैं जबकि समसामयिक बंगला रचनाओं के हिंदी अनुवाद भी धड़ल्ले से बिक जाते हैं.

बिहार के पठारी इलाके में सबसे ज्यादा बिकने वाले दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलबीर दत्त कहते हैं, "राज्य में भारी बदलाव आया है. साक्षरता बढ़ी है. अब रिक्शाचालक को भी अखबार पढ़ते देखा जा सकता है. जागरूकता का स्तर भी काफी बढ़ा है. यहां तक कि वनवासी भी अब ज्यादा जागरूक हैं. पर बेहतर प्रशासन नदारद है. बदकिस्मती से सरकार अधिकारियों पर जरूरत से ज्यादा निर्भर हो गई है. अगर संबंधित अधिकारी अच्छे हुए तो कभी-कभार प्रशासनिक स्तर सुधर जाता है अन्यथा बदतर रहता है. यह परेशानी पैदा करने वाला रुझान है. इस पर जल्द अंकुश लगाया जाना चाहिए."

राजनीति के जानकार अक्सर बिहार में सामंतवादी राजनीति का भी हल्ला मचाते हैं. लेकिन एक राजनैतिक कार्यकर्ता बड़े भरोसे से कहते हैं, "सामंतवादी रुझान बिहार से अधिक कहीं मध्य प्रदेश और राजस्थान में हावी है." वे बताते हैं, "सामंतवाद के खिलाफ बिहार में बड़ी लड़ाइयां भी लड़ी गई हैं. बिहार में मध्य जातियों का उभरना और सवर्णों से उनके हाथ में सत्ता हस्तांतरण भी एक अहम मुद्दा है. इसके अलावा राज्य के वनवासी भी अन्य राज्यों की तुलना में अच्छे हैं."

राज्य में जयप्रकाश नारायण का संपूर्ण क्रांति आंदोलन भले ही खत्म हो गया हो पर छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के कार्यकर्ताओं ने कुछ बहुत ही अच्छा और सकारात्मक काम किया है जिसकी चर्चा राज्य में या बाहर कम ही हुई है. उन्होंने जाति व्यवस्था के विरोध में न सिर्फ अपने नाम से जाति सूचक शब्द हटा दिए हैं बल्कि शादी-ब्याह की भी एक साधारण विधि अपनाई है. किसी सभा में लड़का-लड़की साथ रहने की इच्छा जाहिर करते हैं और इसके बाद कोर्ट में रजिस्ट्री हो जाती है. कुछ महीने पहले दो कार्यकर्ताओं ने सीतामढ़ी के एक चौक पर शादी की घोषणा की. यह साहस और सामंती व्यवस्था के विरोध का ही एक जोरदार कदम है.

बोधगया के महंत के खिलाफ वाहिनी का ऐतिहासिक संघर्ष 1987 में सफल परिणति तक पहुंचा. उस समय बोधगया में दस हजार एकड़ से अधिक भूमि का पट्टा सरकार ने गांववालों को देना मंजूर कर लिया. इस शांतिपूर्ण संघर्ष के दौरान दो हजार कार्यकर्ताओं और गांववालों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे दर्ज हुए. इस संघर्ष की एक और ऐतिहासिक विजय यह भी रही कि पहली दफा सरकार औरतों को जमीन का पट्टा देने को तैयार हुई.

हाल के महीनों में वाहिनी के कार्यकर्ताओं ने धनबाद में होटल कर्मचारियों को वेतन और पक्की नौकरी दिलाने की सफल लड़ाई लड़ी. इन लोगों ने एक बरखास्त कर्मचारी का मामला सुप्रीम कोर्ट में भी उठाया और कर्मचारी को बहाल कर लिया गया. पलामू जिले में युवा कार्यकर्ताओं ने एक हजार एकड़ जमीन को भूमिहीनों में बंटवा दिया.

एक दूसरे सामाजिक संगठन ने बिहार के जिलों में तीन साल से पड़े करीब एक हजार बच्चों का मामला हाईकोर्ट में उठाया. बाल अधिकार सुरक्षा परियोजना के सनत सिन्हा कहते हैं, "पहली दफा किसी हाईकोर्ट ने इतनी संख्या में लोगों को रिहा करने का आदेश दिया."

राज्य के एक बुजुर्ग स्वतंत्रता सेनानी कहते हैं, "बिहारी लोग लड़ाकू होते हैं. वे हर तरह के अन्याय और गलत तौर-तरीकों के खिलाफ उठ खड़े होते हैं. लेकिन व्यवस्था ने उन्हें दबा रखा है और उनकी आवाज को अवरुद्ध कर रखा है."

जेपी आंदोलन में सक्रिय रहे राजनैतिक कार्यकर्ता शिवानंद तिवारी कहते हैं, "मैं 1967 को बिहार में बदलाव का महत्वपूर्ण मोड़ मानता हूं. उस समय तक बिहार को प्रशासन के लिहाज से सर्वोत्तम राज्य माना जाता था. दुर्भाग्यवश, 1967 के बाद अराजकता की ओर कदम बढ़ते गए. राजनीतिकों और जनता के बीच रिश्ता कमजोर होता गया. प्रशासन चरमरा गया है और सभी तरह के संस्थान महज पैसा कमाने का जरिया बना दिए गए हैं."

राज्य की दूसरी

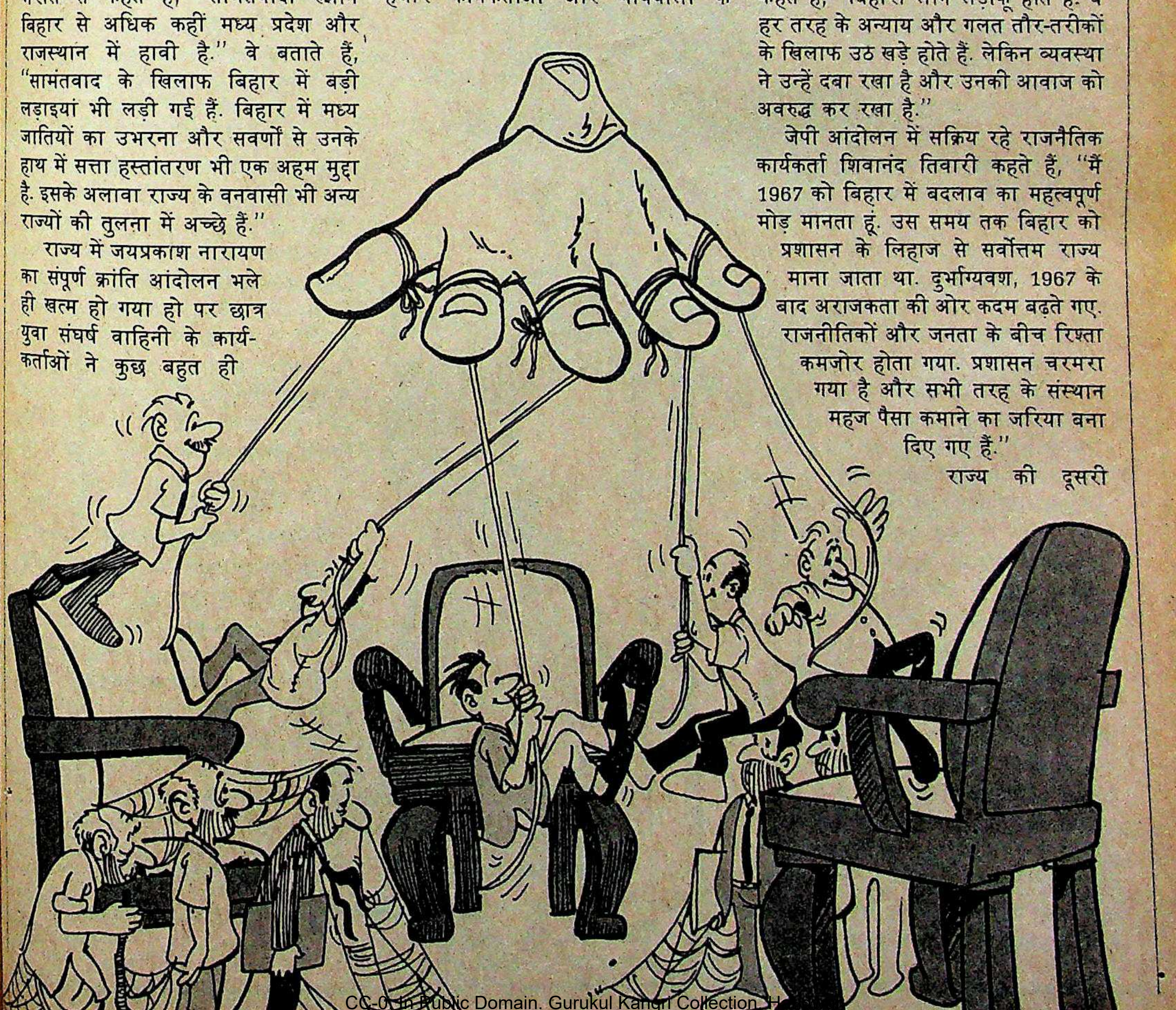

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विडंबना यह है कि बेशकीमती संसाधनों का भंडार बेसिर-पैर की योजनाओं और भ्रष्टाचार की वजह से बरबाद हो रहा है. यही वजह है कि अस्पतालों और अन्य संस्थानों के सुंदर भवन तो दिख जाते हैं पर उनमें उपयुक्त तकनीक के अभाव या बिजली गोल होने के कारण काम नहीं हो पाता.

राज्य में बड़े उद्योगों और इस्पात संयंत्रों ने बिहार के वनवासी क्षेत्रों का हुलिया भले बदल डाला है लेकिन यहां पनबिजली क्षमता का दो फीसदी से अधिक उपयोग नहीं किया जा सका है. साथ ही यहां जितना बड़ा बाजार उपलब्ध है उससे देश के हर हिस्से से व्यवसायियों और व्यापारियों के जत्थे यहां खिंचे चले आते हैं. लेकिन यही इसकी विडंबना भी है.

दवा व्यापार में शामिल लोग मानते हैं कि दवाइयों के मामले में बिहार देश का सबसे बड़ा बाजार है. इस उद्योग के सूत्रों का अनुमान है कि बिहार में दवा का कारोबार लगभग चार सौ करोड़ या उससे अधिक का होगा. इसके अलावा मद्रास तक के अंडों और दिल्ली के आलू के पापड़ों का भी अच्छा-खासा बाजार मिल जाता है. इससे पता चलता है कि यहां के लोगों में उद्यम का अभाव बैंक तथा अन्य सुविधाओं का अकाल है.

उद्योग विकास आयुक्त एन.के. सिंह कहते हैं, "राज्य में कच्चे माल के सस्ते स्रोत और निर्मित तथा अर्द्धनिर्मित माल के बाजार की व्यापक क्षमता पर लोगों का ध्यान बहुत देर से गया."

इसके साथ ही भ्रष्टाचार का मामला भी कम भयावह नहीं है. तिवारी कहते हैं, "यह देखकर शर्म आती है कि अपनी पसंद की नियुक्ति पाने के लिए आईएएस अधिकारी तक पैसा लुटाते एक से दूसरे नेता के पास भागते हैं. मैं ऐसे विधायकों को भी जानता हूं जो भ्रष्ट अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए अपने विशेषाधिकारों का फायदा उठाते हुए सदन में सवाल उठाते हैं."

वे 1967 का एक वाकया बताते हैं, "एक डीआईजी को इसलिए मुअत्तिल किया गया क्योंकि यह बात साबित हो गई थी कि उन्होंने किसी शादी में एक नर्तकी को एक हजार रु. दिए थे. इसके लिए जांच बैठाई गई कि इतना पैसा जुटाने की सामर्थ्य उनमें कैसे आई. उन दिनों विधायक विधानसभा में नौकरशाहों द्वारा सरकारी कार के दुरुपयोग और पटना में घर बनाने पर सवाल उठाया करते थे. अब ऐसा नहीं होता. हमने अव्यवस्था के आगे घुटने टेक दिए हैं."

लंबे अरसे तक कर्पूरी ठाकुर के सचिव रहे प्रदेश लोकदल महासचिव लक्ष्मी साहू कहते हैं, "अज्ञानता का स्तर बढ़ने के साथ ही हमारी प्राथमिकताएं भी बदल गई हैं. की हाल यह है कि विपक्षी दल भी सार्वजनिक मुद्दों पर बहस से मुंह चुराने लगे हैं."

अव्यवस्था का जीता-जागता उदाहरण राज्य की शिक्षा व्यवस्था भी है. हालांकि पटना विश्वविद्यालय सबसे पुराना विश्वविद्यालय है. किट्टू कहते हैं, "मेरी सबसे बड़ी बेटी का मामला ही लें. उसे 1986 में स्नातक हो जाना चाहिए था लेकिन नतीजे इसी साल घोषित हुए. उसके सहपाठी, जो आगे की पढ़ाई के लिए दूसरे राज्यों में गए थे, अब स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल कर कहीं नौकरी कर रहे हैं जबकि मेरी बेटी ने अभी एमएससी में ही दाखिला लिया है. उससे महज एक साल बड़े मेरे बेटे ने तो आईआईटी (खड़गपुर) से साढ़े चार साल पहले बीटेक कर लिया था. फिर भी, राज्य की मौजूदा अव्यवस्था के बारे में कोई सोचता तक नहीं."

लेकिन इन तमाम खामियों के बावजूद देश के लिए राज्य की उपलब्धियों को कम करके आंका जाता रहा है और इसके पिछड़ेपन के पहलुओं को ही ज्यादा उभारा गया है. बिहारी जहां भी जाता है वहीं अच्छा कर दिखाता है. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद या दिल्ली विश्वविद्यालय में बिहारी छात्रों का रिकार्ड अच्छा रहता है. वेल्लोर, चंडीगढ़, बंबई और नई दिल्ली में बिहारी डॉक्टरों ने नाम कमाया है. भारतीय प्रशासनिक सेवा में राज्य से अच्छे-खासे उम्मीदवार हर साल आते हैं. यहां के साहित्यकारों को विश्व साहित्य में स्थान प्राप्त है. और इसके राजनीतिक तो उत्तर भारत की राजनीति की धड़कनें तय करते ही हैं.

लखनऊ दिल्ली के नजदीक और सबसे बड़े राज्य की राजधानी भले ही हो लेकिन पटना की उंगलियां ही दिल्ली की नब्ज पहचानती हैं. हो सकता है कि कभी-कभार यहां की राजनीति कुछ दुरूह लगे पर बिहार में 'परिवर्तन की राजनीति' करने वाले उत्साही युवकों का अभाव कभी नहीं रहा. वे पोस्टर बनाने के लिए रात भर जुटे रहते हैं, अपनी गाढ़ी कमाई से पर्चे वगैरह छपवाते हैं और राजनैतिक प्रदर्शनियां आयोजित करते हैं. थाने का घेराव, रास्ता जाम करना वगैरह तो आम है ही. 1989 के चुनाव में राज्य में धांधली भी खूब हुई और कई जगह लोगों ने इसका खुलकर विरोध भी किया. कई जगह मतदान केंद्रों पर भारी संख्या में जुटकर और पत्थर फेंककर लोगों ने गुंडा तत्वों को भगा दिया है. कुछ की तो मौत भी हो गई. ऐसा साहसिक विरोध कम ही देखने को मिलता है.

बहरहाल, राज्य में बदलाव की हवा अब बहने लगी है. यों तो ज्यादातर संस्थाएं चरमरा रही हैं लेकिन उनकी यह स्थिति ही बताती है कि पुराना ढांचा ढह रहा है और नया ढांचा आकार लेगा. आने वाले वर्षों में देश के 'इस सबसे पिछड़े राज्य' के आगे बढ़ने के लिए चुनौती और मौका दोनों ही होगा बशर्ते इसके राजनैतिक नेता फिर साथ न छोड़ दें.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

USHERING
ENTREPRENEURIAL *Renaissance* IN THE STATE ABUNDANTLY RICH IN RESOURCES

INSTITUTE OF ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT, BIHAR

(Sponsored by IDBI,IFCI,ICICI,Govt. of Bihar, BSFC,BICICO ,Bank of India & Allahabad Bank)

At Grass-Root Level:

Entrepreneurship Development Programme For various target groups: Women, Science & Technology Graduates, General, Schedule Castes, Tribals.
'Mass Entrepreneurship through **OPEN - END UNIT** Concept

At Thrust-Area Level:

Special Programmes to promote enterprises in Applied Electronics, Chemicals, Agriculture, Marine, Minerals, Metals, Silk, Jute etc.

At Regional Level:

Special Programmes to promote
Exclusive Industrial Estate
- For women entrepreneurs in Hajipur
- For silk-based enterprises in Bhagalpur
- For jute-basod enterprises in Purnia
- For bauxite based enterprises in Lohardagga
- For banana based enterprises in Naugachia
- For electronic based enterprises in Jhumritelaya.

At Institutional Level:

- Six -month Course on Marketing Entrepreneurship (COME)
- One year course to promote Hi-Tech Enterprises : "Bachelor in Enterprise Building (BEB)"
- Two years course to groom enterprise inheritors "Master in Enterprise Management (MEM)

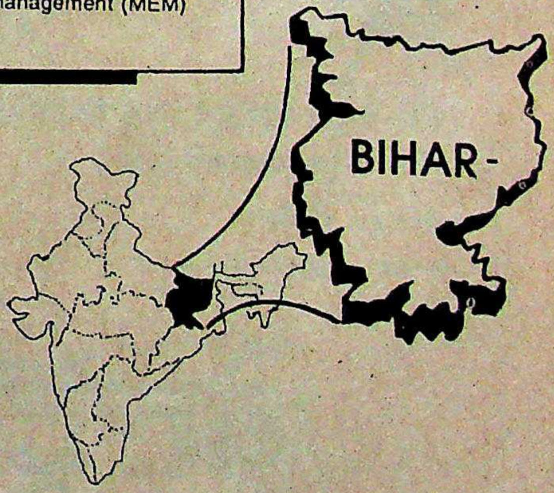

At Academic Level:

- Special Entrepreneurship Cell in the Universities
- New Discipline of Entrepreneurship at Intermediate level
- Introduction of entrepreneurship as a subject in Higher Secondary Schools, Polytechincs
- Training of Teachers of Engg. & Science Colleges & Polytechnics in Entrepreneurship Development.

For more information please write to :
Ashok K. Sinha, Executive Director.
Institute of Entrepreneurship Development ,Bihar
Nasheman Building , Dak Bunglow Road, Patna - 800 001

Cross Connections

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार की प्रगति में अग्रणी

बिहार प्रदेश के पिछड़े आदिवासी क्षेत्र पलामू में स्थापित बिहार कास्टिक, B.S.I.D.C, HINDALCO, GRASIM एवं P.I.I.C का संयुक्त प्रतिष्ठान है. इस कारखाने में (अ) 33,000 टन कास्टिक सोडा (लाई), (ब) 13,200 टन तरल क्लोरिन, तथा (स) 29,000 टन नमक के अम्ल प्रतिवर्ष की उत्पादन क्षमता है. इसका उद्घाटन 5 सितम्बर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री (स्व.) इन्दिरा गांधी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था.

इस कारखाने ने बिहार की प्रगति तथा आर्थिक उत्थान में अपनी क्षमतानुसार सराहनीय योगदान दिया है, जो निम्न आँकड़ों से स्वयं सिद्ध है.

1. इस कारखाने में लगभग 400 कर्मचारी कार्यरत हैं, जिसमें 77% बिहार के निवासी हैं. इसके अलावा अप्रत्यक्ष रूप से लगभग कई सौ स्थानीय परिवार इस पर निर्भर हैं.
2. बिहार राज्य विद्युत बोर्ड को प्रतिमास 1 करोड़ 10 लाख रुपये का भुगतान.
3. राज्य के राजस्व में लगभग 1 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष सेल्स टैक्स का योगदान.
4. केन्द्रीय राजस्व में लगभग 3 करोड़ 50 लाख रुपये प्रतिवर्ष सेन्ट्रल एक्साइज का योगदान.
5. पर्यावरण को स्वच्छ रखने तथा प्रदूषण को रोकने हेतु सघन वृक्षारोपण तथा प्रदूषित जल तथा वायु को स्वच्छ करने हेतु, लगभग 20 लाख रुपये प्रतिवर्ष का व्यय.
6. स्थानीय प्रशासन को जल व्यवस्था के सुधार स्वरूप, नगर सुन्दरीकरण योजनाओं, नये कारखानों के निर्माण हेतु प्रोत्साहन आदि में सहयोग.

बिहार कास्टिक एन्ड कैमिकल्स लि.
घनश्याम कुंज, रेहला-822124
पलामू (बिहार)

महंगे टेलिविजन ही अच्छे होते हैं...

~~सही~~ **गलत**

क्योंकि बेल्ट्रॉन आपको दे रहा है डीलक्स खुबियों वाला टी.वी. बिल्कुल किफायती दर पर !

शाम्भवी सुपर डीलक्स

रंगीन टी वी कॉर्डलेस रिमोट कंट्रोल के साथ

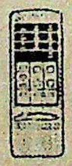

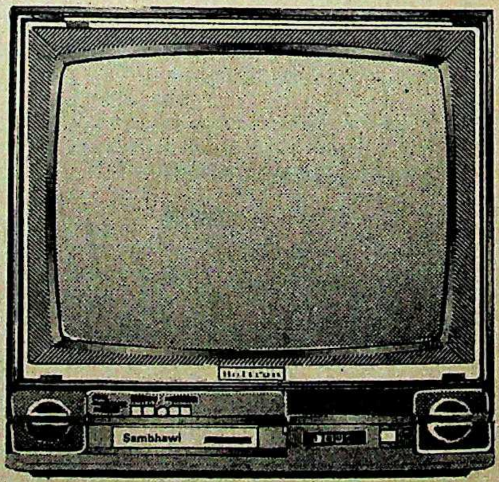

बेल्ट्रॉन

निर्भरता का आधार, जीवन भर का साथ

expression

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

For U.P.S.C. & Other Exams.

Freedom Struggle – *V. P. Varma*
विश्व इतिहास के प्रमुख अध्याय – *दीनानाथ वर्मा एवं शिवकुमार सिंह*
प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – *राधाकृष्ण चौधरी*
एशिया का आधुनिक इतिहास – *दीनानाथ वर्मा*
यूरोप का इतिहास – *धनपति पांडेय*
पूर्व मध्यकालीन भारत – *राधाकृष्ण चौधरी*
विश्व इतिहास का सर्वेक्षण – *दीनानाथ वर्मा*

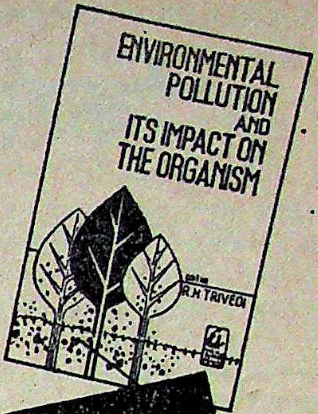

For Various Engineering & Medical Entrance Exams.

Intermediate Zoology – *V. Benarjee*
Intermediate Botany – *Bilgrami & Shrivastava*
Introductory Physics (Pts. I & II) – *N. N. Ghosh*
Numerical Examples in Physics – *N. N. Ghosh*
Principles of College Physics – *J. Ashok*
Intermediate Physical Chemistry – *Sinha & Ghosh*
Intermediate Inorganic Chemistry – *Sinha & Ghosh*
Model Question Papers in Chemistry for I. I. T. – *Dutta*
Chemical Calculation in Chemistry – *R. C. Mukherjee*
Coaching At Your Home Series : Physics – *N. N. Ghosh & D. Mukherjee*
(Series I) : Mechanics, General Properties
(Series II) : Heat, Sound, Light
(Series III) : Electrostatics, Current Elec., Magnetism & Mod. Physics
Coaching At Your Home Series : Mathematics
– *Dasgupta, Prasad, Das & Sinha*
(Series I to VI) : Algebra, Trigonometry, Calculus, Co-ordinate Geometry, Set Theory–Probability–Statistics, Vector–Statics–Dynamics.

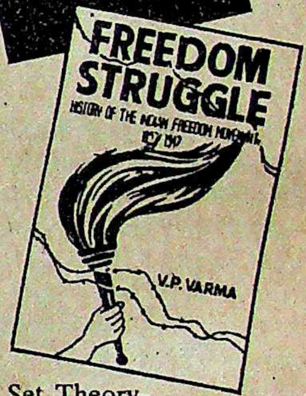

For General English

Degree Level English Grammar & Composition – *Imam & Rajhans*
How to Write Correct English (Anglo-Hindi) – *R. P. Sinha*
How to Translate into English (Anglo-Hindi) – *R. P. Sinha*
Common Errors in English – *Thakur & Prasad*
Firaq's A Garden of Essays – *Edited by Dr Mangal Murti*
A Handbook of English Grammar & Usage – *D. Thakur*

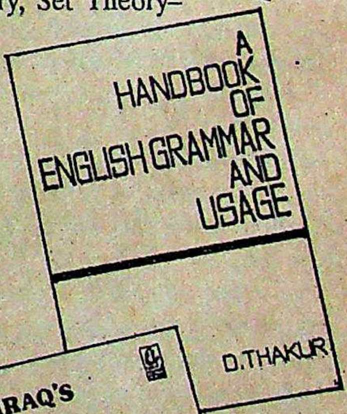

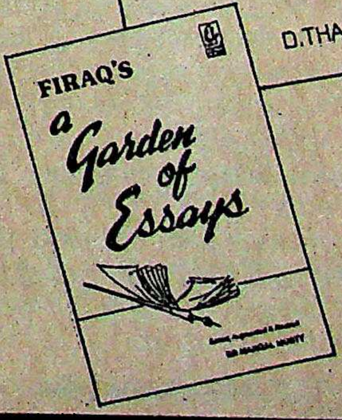

BHARATI BHAWAN
(Publishers & Distributors)
RISHI BAZAR, THAKURBARI ROAD
KADAM KUAN, PATNA-800 003

mahima/BB/10625/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्येंद्र नारायण सिन्हा

'किसी को कोई फिक्र नहीं है'

दो दशक से ज्यादा समय तक सत्ता से बाहर रहने के बाद सत्येंद्र नारायण सिन्हा को जब बिहार के मुख्यमंत्री का कांटों भरा ताज पहनाया गया तो आम प्रतिक्रिया यही थी कि इंका ने राजपूतों को अपने पक्ष में करने के लिए यह कदम उठाया है. वैसे आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो राजपूतों की संख्या इतनी नहीं है कि सत्ता के समीकरण को उलट-पलट दें. लेकिन उनके पास पैसे और लाठी की ताकत जरूर है. इसके अलावा नौकरशाही और पुलिस में भी उनकी अच्छी-खासी पैठ है.

सिन्हा का मुख्य काम बिहार में गुटबाजी से ग्रस्त शासक दल को मजबूत बनाना और पार्टी को एक संगठित रूप देना था ताकि मौजूदा चुनावों में वह विपक्ष के जोरदार हमलों की काट कर सके. पर वे इसमें कितने कामयाब हो सके, इसका अंदाज इसी से लगता है कि उनके सत्तारूढ़ होते ही पार्टी के लोगों ने यह कहना शुरू किया कि सिन्हा तो 'बेकार हो चुकी दवा' की तरह हैं. चुनाव खत्म होने के साथ ही इंका के लिए उनकी उपयोगिता खत्म हो जाएगी. सिन्हा खुद भी कहते हैं कि चुनाव के बाद इस पद पर बने रहने का उनका कोई इरादा नहीं. पिछले पखवाड़े उन्होंने अपनी सात माह पुरानी सरकार की समस्याओं के बारे में खुलकर बातचीत की. इस बातचीत के कुछ अंश:

• *क्या बिहार के मुख्यमंत्री को कभी कोई शुभ समाचार भी मिलता है?*

(मुस्कराते हुए) शुभ समाचार सचमुच दुर्लभ होता है.

• *प्रधानमंत्री ने पिछले जून में राज्य के लिए कोई 4700 करोड़ रु. के विकास पैकेज की घोषणा की थी. क्या इस मामले में कोई प्रगति हुई है?*

वह घोषणा तो राज्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर की गई थी. इन परियोजनाओं पर काफी कुछ काम हुआ है और इनमें से कई आठवीं योजनावधि में पूरी होंगी. इनके लिए अधिकांश पैसा केंद्र या केंद्रीय वित्तीय संस्थाओं से मिलेगा.

• *आपके विचार में आज बिहार की स्थिति क्या है?*

भयावह, बिहार ने जरा भी तरक्की नहीं की है. समस्याएं सुलझने के बजाय बढ़ी ही हैं. बेमतलब की मांगें उठती रही हैं. लेकिन किसी को कोई फिक्र ही नहीं है.

• *क्या आप सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल का जिक्र कर रहे हैं?*

हां, उसका भी. कर्मचारियों और शिक्षकों से मैंने जो वायदा किया है, उससे राज्य पर हर साल 700 करोड़ रु. का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा. भविष्य भयावह दिखता है.

• *तब आपने वायदे क्यों किए?*

पिछली सरकारों द्वारा किए गए वायदों के कारण. हम पिछले समझौतों को खत्म नहीं कर सकते. लोगों को हम सिर्फ समझा सकते हैं. आप देखिए, राज्य के सालाना बजट की 52 फीसदी रकम कर्मचारियों और शिक्षकों

के वेतन के रूप में खर्च की जाती है. इस मद में इससे ज्यादा रकम सिर्फ पश्चिम बंगाल ही खर्च करता है.

• *शासक दल के एक तबके का मानना है कि आपको राजपूत वोट खींचने के लिए लाया गया. जाहिर है, आपको मुख्यमंत्री बनाने का राजनैतिक मकसद सफल नहीं हुआ. कोई टिप्पणी?*

यह दरअसल विपक्ष का प्रचार है, सोचा-विचारा हुआ.

• *आप पर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि आप जनता पार्टी के अपने पूर्व सहयोगियों की सलाह से काम कर रहे हैं क्योंकि आप राज्य जपा के अध्यक्ष रह चुके हैं.*

मैं मुख्यमंत्री हूं, इसलिए मेरा दरवाजा हर आदमी के लिए खुला है. आप मुझे कुछ खास लोगों से घिरा हुआ कभी नहीं पाएंगे. जहां तक सलाह देने की बात है, लोग इसके लिए स्वतंत्र हैं. लेकिन मेरे पास भी तो दिमाग है. मैं खुद अपने फैसले करता हूं.

• *अंदरूनी झगड़ों का पार्टी पर क्या असर पड़ा है?*

पार्टी के भीतर ऐसा कोई झगड़ा नहीं है इतना कह सकते हैं कि कुछ मतभेद जरूर हैं. जैसा कि आप जानते हैं, भागवत झा आजाद के मुख्यमंत्रित्वकाल में पार्टी में बगावत जैसी स्थिति थी. लेकिन अब सब कुछ शांत है. पार्टी के भीतर एकजुटता का माहौल है.

• *क्या आप यह कहना चाहते हैं कि प्रदेश इंका अध्यक्ष डॉ. जगन्नाथ मिश्र के साथ आपका कोई मतभेद नहीं है?*

मैं उनसे जब भी बात करता हूं, उन्हें विवेकपूर्ण ही पाता हूं.

• *लेकिन आप संगठन से अलग-थलग होते दिख रहे हैं. अब आप सदाकत आश्रम (पटना में इंका मुख्यालय) में उतना नहीं जाते जितना पहले...*

मुख्यमंत्री के रूप में अपनी व्यस्तता के कारण मैं वहां ज्यादा नहीं जा पाता; लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG[redacted]

पार्टी के मामलों और सहयोगियों से तो संपर्क बनाए ही रखता हूं.

• आपने अपने मंत्रिमंडल में जब कुछ विवादास्पद विधायकों को शामिल किया तो आरोप लगाया गया कि आप 'बेईमानों के मंत्रिमंडल' का नेतृत्व कर रहे हैं.

उनमें से कुछ विवादास्पद हो सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे बुरे हैं. सचाई तो यह है कि वे सभी सक्रिय कार्यकर्ता हैं और फिर, जब सूची को अंतिम रूप दिया जा रहा था तो उनके नामों पर किसी ने आपत्ति नहीं की. यहां तक कि डॉ. मिश्र ने भी नहीं. गिरीश नारायण मिश्र की ही मिसाल लीजिए. वे पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ता हैं. गैर-मैथिल ब्राह्मणों में से हम ऋषिकेश तिवारी को मंत्रिमंडल में शामिल करने जा रहे थे. तो, गिरीश नारायण मिश्र को न शामिल किए जाने की कोई तुक ही नहीं थी.

• सच-सच बताइए, क्या आपको इंका कार्यकर्ता दहशत में नहीं दिखते?

काश! मैं ऐसा देख पाता. मैं तो उन्हें पूरी तरह से संतुष्ट देख रहा हूं. दरअसल, उनमें जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास है. इससे मैं बहुत चिंतित हूं. प्रधानमंत्री जहां भी गए, लोगों की भारी भीड़ जुटी. सच कहूं तो मुझे तो इतना भरोसा नहीं था कि उनकी सभाओं में इतनी भारी संख्या में लोग आएंगे.

राज्य की स्थिति भयावह है. तदर्थ फैसलों से समस्याएं सुलझने के बजाय और बढ़ी ही हैं. बेमतलब मांगें उठ रही हैं. किसी को कोई फिक्र नहीं है

• वैसे तो पश्चिम बंगाल में भी तो राजीव की सभाओं में भारी भीड़ होती थी. लेकिन चुनाव में इंका का क्या हश्र हुआ...

यह तुलना ठीक नहीं, क्योंकि पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री को ठोस संगठन का समर्थन नहीं मिला.

• आपकी सरकार बड़े पैमाने पर तबादले कर रही है, जो कि अभूतपूर्व है. इससे तो नौकरशाही के मनोबल पर असर पड़ेगा..

मैं आपको बता दूं, इससे मुझे खुशी नहीं होती. लेकिन मैं मजबूर हूं. हर कोई तबादले के लिए आग्रह कर रहा है.

• शायद आपको मालूम हो कि पटना को छोड़ राज्य का बाकी हिस्सा अंधेरे में डूबा रहता है. इसका औद्योगिक विकास पर असर पड़ता है. बिजली के मामले में क्या करने जा रही है आपकी सरकार?

मुझे मालूम है कि बिजली नहीं है. हमने राज्य बिजली बोर्ड को सुधारने के कदम उठाए हैं. मुजफ्फरपुर ताप बिजली घर और चुक्का पनबिजली संयंत्र से बिजली लेकर स्थिति सुधारने की कोशिश की जा रही है. उम्मीद है कि केंद्र 1400 करोड़ रु. की नबीनगर सुपर ताप बिजली परियोजना को मंजूरी देगा.

• राज्य के औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

पूंजी और बिजली का तो अभाव तो है ही, खराब प्रबंधन और परियोजना निर्माण के अलावा विपणन की भी समस्या है. हम इन्हें दूर करने के लिए वित्तीय संस्थाओं और उद्योग परिषदों आदि को शरीक करने के उपाय कर रहे हैं. मैं राज्य औद्योगिक पुनर्गठन निगम बनाने पर गंभीरता से विचार कर रहा हूं.

• क्या आप इस बात से सहमत हैं कि यहां भ्रष्टाचार के खिलाफ गंभीरता से नहीं लड़ा जा रहा है?

हां, भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई लड़ाई नहीं चल रही. राजनैतिक मजबूरियां और नेताओं की इच्छाशक्ति—दोनों ही इसके लिए जिम्मेदार रही हैं.

• क्या आपके मन में कभी यह विचार नहीं उठता कि आपके लिए वक्त तेजी से गुजरता जा रहा है?

बिलकुल. अभी बहुत कुछ करना है और समय खत्म होता जा रहा है. मैं हताशा महसूस करता हूं.

• राज्य के पतन के आपके विचार से क्या कारण हैं?

मैं इसके लिए किसी को दोष नहीं देता. बिहार में किसी समय सर्वोत्तम शासन था. लेकिन आज यह बदतर माना जाता है.

• क्या यह विडंबना नहीं है बिहार की युवा प्रतिभाएं आईएएस और आईपीएस में नियमित रूप से काफी संख्या में चुनी जाती हैं और वे अच्छे प्रशासक के रूप में नाम कमाती हैं. बावजूद इसके बिहार घटिया प्रशासन वाला राज्य माना जाता है?

आप तो देख ही रहे हैं कि पूरी संस्कृति में आमूल परिवर्तन आ गया है. मैं विस्तार में नहीं जाऊंगा क्योंकि यह मेरी परेशानी का सबब बन सकता है. लेकिन मैं यह जरूर कहूंगा कि लोग पहले समस्याओं पर चर्चा करते थे. लेकिन आज महत्वपूर्ण मुद्दों पर कोई ध्यान नहीं देता. मेरे पास किसी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आती.

ARE YOU LOOKING FOR A SOUND BUSINESS OPPORTUNITY IN BIHAR ?

YES ? HERE IS YOUR GOLDEN OPPORTUNITY !

B S P C D C

Invites Entrepreneurs/Industrialists/ Established Business Houses for the following :—

- Financial Participation in Assisted Sector
- Marketing tie up
- Technical tie up

Name of Unit/Project under production

1. Bihar Insecticides Ltd.
Product : Malathion (Technical & Formulations)
2. Synthetic Resins Ltd.
Product : Alkyd Resins

Unit under commissioning

1. Bihar Drugs & Chemicals Ltd.
Product : Basic Drugs & Formulations.
2. Vishwamitra Paper Industries Ltd.
Product : Duplex Board
3. Bihar State Glazed Tiles & Ceramic Industries Ltd.
Product : Floor & wall glazed tiles.
4. Magadh Minerals Ltd.
Product : Minerals.

New Projects in pipe line

1. Conveyor Belt
2. Carbon Black
3. Naphthalene based Dye intermediates
4. Red Oxide
5. Maize Starch & Liquid Glucose Project.
6. Aspirin
7. Lactic Acid

We also provide Engineering Consultancy Services to Industries.

Interested parties please contact :

P.R.O./Senior Manager (Chemical)

BIHAR STATE PHARMACEUTICAL & CHEMICAL DEVELOPMENT CORPORATION LIMITED

Mauryalok, 'A' Block, 5th Floor, New Dakbunglow Road, Patna-800 001 (Bihar). Phones : 222497, 226093, 225705 Tlx : 022-246 Gram : BIHARCHAM.

[redacted]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप जीवन की विविधताओं में वि

यदि हां

तो

बिहार आइ

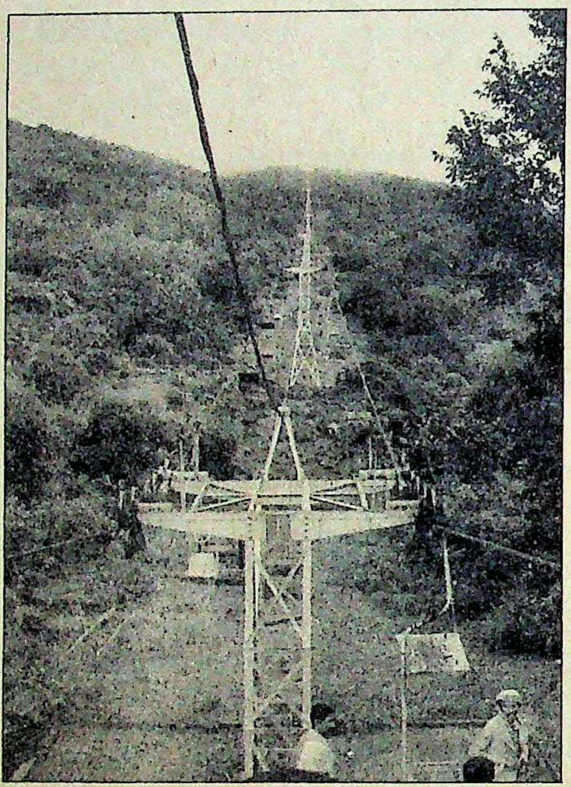

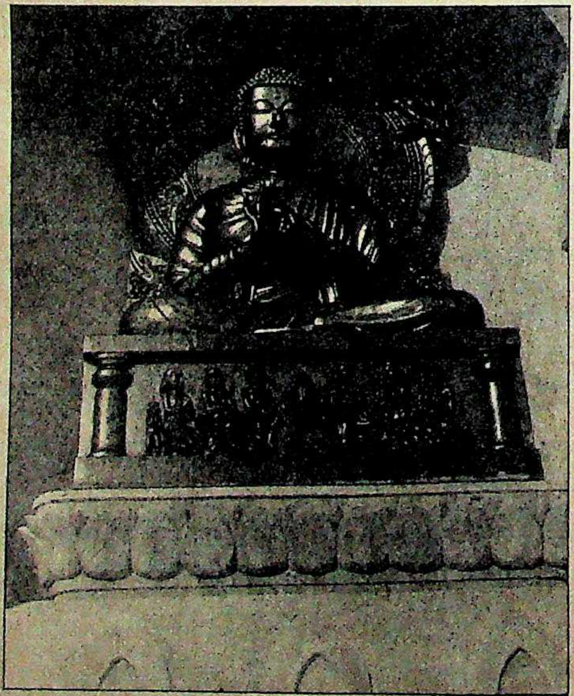

गौरवशाली अतीत और विकासशील वर्तमान के
नैसर्गिक सुषमा का धनी बिहार आपको पर्य
का बहुआयामी सुख देगा. यदि आप धार्मि
व्यक्ति हैं तो सभी धर्मों का केंद्र है बिह
यदि आप प्रकृति के पुजारी हैं तो छोटा
आइए और यहां के वनस्थलियों पर्वत श्रृंख
जल प्रपातों जैसे हुंडरू, नेतरहाट, जरप्पा
की सैर का मखमली आनन्द लीजिए औ
पसंद करें तो हजारीबाग और पलामू के
विशाल राष्ट्रीय उद्यानों में वन्य जीवों के ब
विचारिए. बिहार का पर्यटन है गागर
सागर। यहां के सीधे-सादे लोगों की स
यहां की कला, यहां के उत्सव आपको ब
बांध लेंगे। आप एक बार बिहार आइए, आ
बार-बार आना चाहेंगे। राज्य सरकार ने
पर्यटन को उद्योग घोषित किया है पर्यटन
हर सुविधा आपको उपलब्ध कराने के लिए कृ
संकल्प है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताओं में विश्वास रखते हैं?

हां
ो
आइ

सशीमान के साथ
बिहार को पर्यटन
यदि धार्मिक
केंद्र है बिहार.
हैं तोर छोटानागपुर
लियों श्रृंखलाओं,
रहाट जरप्पा आदि
नन्द जिए और रोमांच
और ला के घने और
वन्य वों के बीच
र्यटन ति गागर में
लोग की संस्कृति,
त्सव को बरबस
बिहार ए, आप यहां
ाज्य कार ने बिहार
किया पर्यटन संबंधी
कर लिए कृत

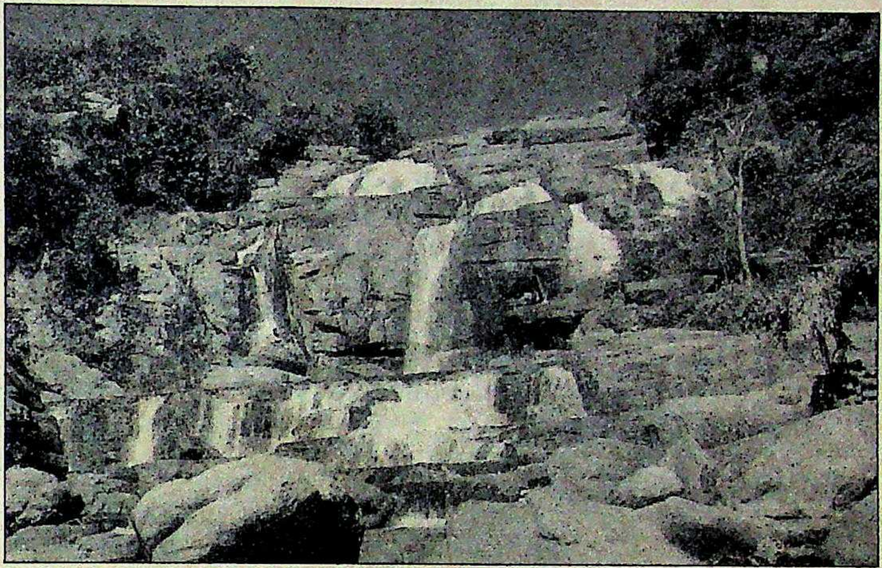

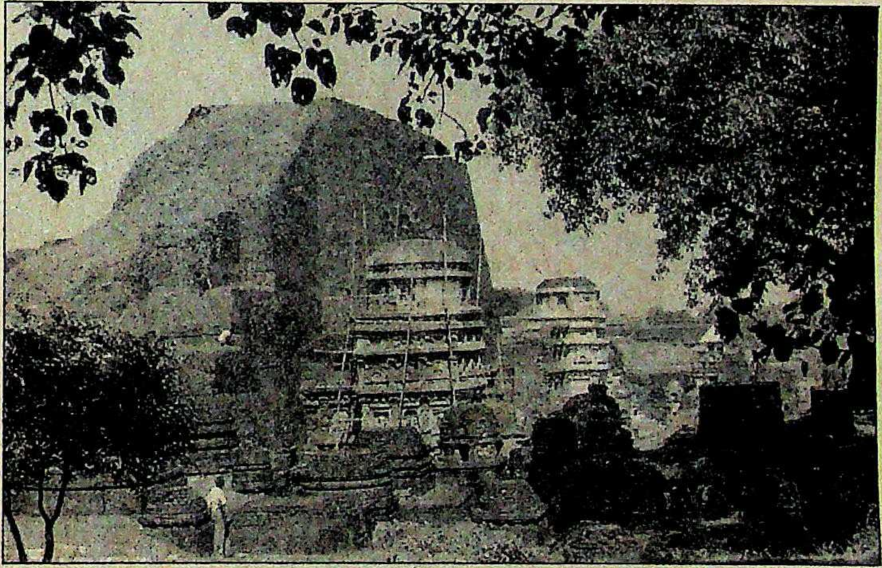

संपर्क करें:

पर्यटक सूचना केन्द्र, मजहरुलहक पथ, पटना, दरभंगा
दूरभाष संख्या-25295
पर्यटक सूचना केन्द्र, कचहरी परिसर, रांची
दूरभाष सं० — 20426

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के नए आयाम

पर बिजली की कमी सबसे बड़ी समस्या

कुछ साल पहले तक वहां उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखाई देती थी. बिहार के औद्योगिक पिछड़ेपन के कारणों की कोई कमी नहीं दिखती थी. पिछले ही साल केंद्रीय उद्योगमंत्री ने संसद में एक सवाल का जवाब देते हुए बिहार में बिजली की कमी को इसके लिए दोषी ठहराया था. एक राष्ट्रीयकृत बैंक के अध्यक्ष ने इसकी वजह वहां 'औद्योगिक माहौल' की कमी बताई थी. कुछ लोग इसके दूसरे कारण भी बताते हैं. मसलन, कृषि का सीमित आधार, संचार, यातायात व ढुलाई समेत मूलभूत सुविधाओं का अभाव वगैरह.

ये परिस्थितियां भले ही पूरी तरह बदली न हों पर बिहार के प्राकृतिक संसाधनों व खनिज संपदा की ओर बहुत से उद्योगपति व उद्योग आकर्षित हो रहे हैं. राज्य के औद्योगिक विकास आयुक्त एन.के. सिंह बताते हैं, "उद्योगपति अब यह महसूस कर रहे हैं कि बिहार के संसाधनों का अभी तक इस्तेमाल नहीं हुआ और इसीलिए बिड़ला, टाटा, मोदी व श्रीराम समूह बिहार में संयुक्त क्षेत्र के उद्योग लगा रहे हैं." मोदी घराने, बिहार राज्य औद्योगिक विकास निगम व पश्चिम जर्मनी की 'लुर्गी' के सहयोग से चांडिल के पास संयुक्त क्षेत्र में लगने वाली बिहार स्पंज आयरन लिमिटेड के अध्यक्ष उमेश कुमार मोदी कहते हैं, "जब भी कोई प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित उद्योग की बात सोचता है तो बिहार का चुनाव सबसे तार्किक होता है."

ऐसा सोचने वाले लोगों में अकेले उद्योगपति ही नहीं हैं. बिहार में उद्योगीकरण का नया दौर शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय में विशेष सेल बनाया गया. यह सेल नई परियोजनाओं के लिए जमीन लेने और दूसरी औपचारिकताओं के पूरा होने पर नजर रखे हुए है.

बिड़ला घराने का ओरिएंट ग्रुप स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया के साथ मिलकर 400 करोड़ रु. लागत वाला एक कैप्रोलेक्टम संयंत्र स्थापित करने जा रहा है जिसमें बोकारो इस्पात संयंत्र की कोयला भट्टियों से निकलने वाले अवशिष्ट रसायनों का दोहन किया जाएगा. इसी तरह जमशेदपुर में टाटा स्टील उद्योग से निकलने वाले स्लैग से सीमेंट उत्पादन की योजना बनाई जा रही है. बंगलूर के शराब निर्माता खोडे समूह को राज्य सरकार ने एक औद्योगिक अल्कोहल उत्पादन संयंत्र लगाने के लिए राजी किया है जिसमें राज्य की चीनी मिलों से निकलने वाले शीरे को कच्चे माल के तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा. लेकिन इन प्रस्तावित उद्योगों को उत्पादन प्रणाली चालू रखने के लिए अपना बिजली उत्पादन करना होगा क्योंकि राज्य में बिजली सप्लाई की मौजूदा हालत को देखते हुए उसके भरोसे ऐसे उद्योग चला पाना लगभग असंभव है.

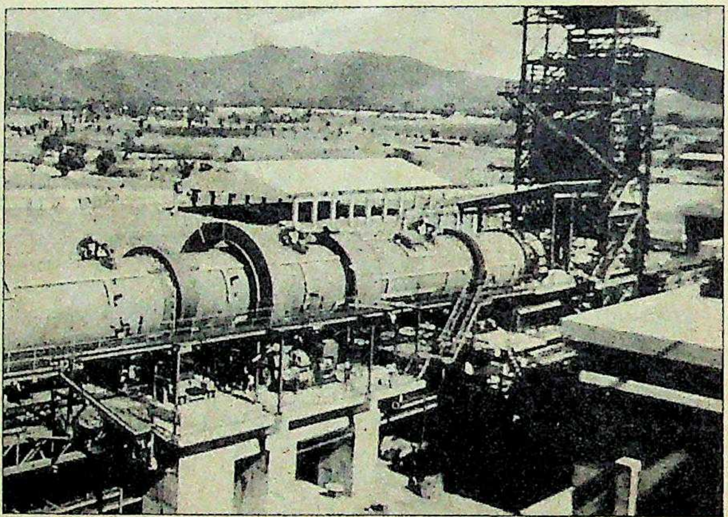

बिहार स्पंज आयरन का संयंत्र और अध्यक्ष मोदीः कामयाबी

मूलभूत सुविधाओं का अभाव होने पर भी बहुत से उद्योगपति बिहार के प्राकृतिक संसाधनों व खनिज संपदा की ओर आकर्षित हो रहे हैं

औद्योगिक विकास के मामले में बिहार के पिछड़ेपन का हाल यह है कि राज्य के वार्षिक बजट का केवल 5 फीसदी उद्योग पर खर्च किया जाता है. राज्य में बड़े उद्योगों और छोटी इकाइयों की संख्या तो अच्छी-खासी हैं पर मध्यम दर्जे के उन उद्योगों की संख्या नगण्य है जिनके बूते औद्योगिक विकास को गति मिलती है.

पहले भी बिहार में बहुत अधिक पूंजी वाले उद्योग लग चुके हैं जिनमें न तो बहुत लोगों को रोजगार ही मिल सका है और न उपभोक्ता सामग्रियों का उत्पादन होता है. ऐसी इकाइयों में रांची स्थित हेवी इंजीनियरिंग कार्पोरेशन (एचईसी) तो बंद होने के कगार पर पहुंच गई है. इस तरह औद्योगिक पूंजी निवेश में बहुत पिछड़ा न होने पर भी औद्योगिक और उपभोक्ता उत्पादन में बिहार काफी पिछड़ा हुआ है. लेकिन सरकार इस राज्य में अब भी अधिक पूंजी वाली इकाइयां लगाने पर ही जोर दे रही है.

देश की कुल खनिज संपदा का 40 फीसदी भंडार बिहार में ही है और यहां निवेश भी भारी हुए हैं. इसके बावजूद बिहार की अर्थव्यवस्था में बदलाव न हो पाने के अनेक कारण हैं. कोयला, लोहा, बॉक्साइट और यूरेनियम जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की भरमार भी कृषि पर इसकी अर्थव्यवस्था की निर्भरता को कम नहीं कर पाई है. उमेश मोदी का मानना है, "बिहार में कामकाज में राजनीति और जातिवाद बहुत अंदर तक घुसे हुए हैं. फिर उद्योगों के विकास के लिए जरूरी संरचना का अभाव भी बहुत बड़ी बाधा है. खुद हमें ही संरचनात्मक सुविधाओं के अभाव और बिहार सरकार की अनुभवहीनता के कारण परेशानी हुई."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिलसिला-
टॉफ़ी और मिंट का!

कितनी शीतल ताज़गी...

और सफ़ेदी भी क्या खूब.

साथ खूबियों से लबालब
सांवरे-सलोने का संग.

सब कुछ हूबहू
मिंट और टॉफ़ी जैसा.

दोनों जब मिलें -
मज़ा आ जाए.

लीजिए मज़ा...
कीजिए सिलसिले की शुरुआत,
टॉफ़ी और मिंट से.

नयी

Parry's

पै री ज़ मिं ट ए क्ले अ र

PARRY'S

HTA 7246

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

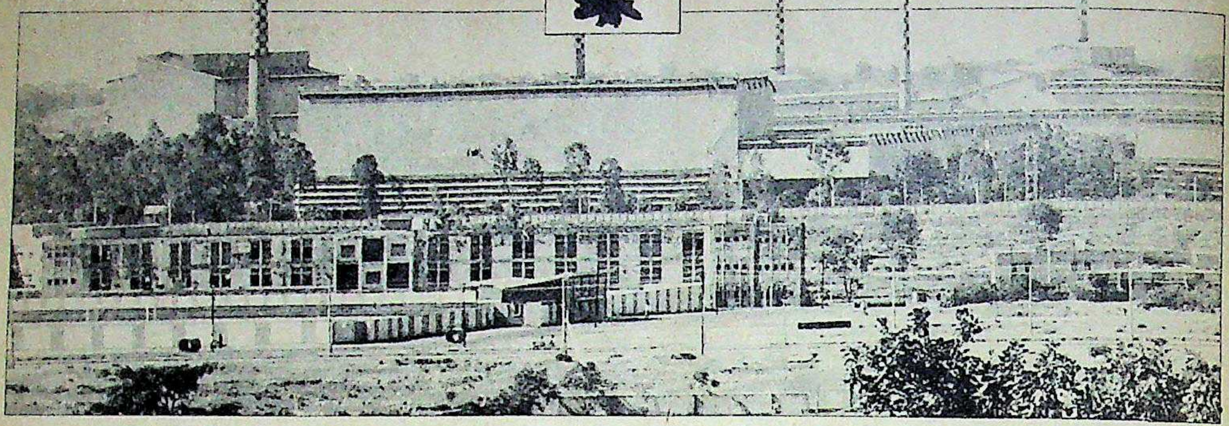

रांची का एचईसी कारखाना: बंदी के आसार

सरकार ने औद्योगिक विकास के लिए जरूरी संरचनाएं उपलब्ध कराने की दिशा में कई कदम उठाए भी हैं. बिजली की कमी एक बड़ी समस्या है जिसे दूर करने की कोशिशें हो रही हैं. कांटी (मुजफ्फरपुर) स्थित बिजलीघर की क्षमता बढ़ाने की कोशिश की जा रही है. भागलपुर के पास कहलगांव और तेनूघाट में ताप बिजलीघर बनाने का काम शुरू हो गया है. हाल ही में प्रधानमंत्री ने औरंगाबाद जिले (मुख्यमंत्री का क्षेत्र) के नबीनगर में सुपर ताप बिजलीघर लगाने की योजना को मंजूरी देने की घोषणा भी की है. उधर, पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले ने कोयल कारो पनबिजली योजना का काम आगे बढ़ाने का रास्ता खोल दिया है.

लेकिन एन.के. सिंह को उम्मीद है, "अगले कुछ वर्षों में ही बिहार के औद्योगिक परिदृश्य में नाटकीय बदलाव आएंगे." उनकी यह आशावादिता राज्य सरकार द्वारा चार नई चीनी मिलें लगाने और पुरानी मिलों का आधुनिकीकरण करने के फैसले से उपजी है. इसके अलावा 10 लाख टन क्षमता का एक सीमेंट कारखाना भी संयुक्त क्षेत्र में लगेगा. सिंह को उम्मीद है कि इसके लिए विश्व बैंक से मदद मिल जाएगी. उनका मानना है कि तब तक प्रदेश की तीन वनस्पति इकाइयों में से कम-से-कम एक में उत्पादन भी शुरू हो जाएगा. वे बताते हैं कि राज्य सरकार ने केंद्र से यहां रेल डिब्बा फैक्टरी, एक हथियार कारखाना लगाने और 50-50 करोड़ रु. के निवेश से औद्योगिक विकास केंद्र विकसित करने का अनुरोध भी किया है. केंद्र में वाणिज्य सचिव रह चुके सिंह के दिमाग में और भी बड़ी योजनाएं हैं. लेकिन बिहार के पिछले अनुभवों को देखते हुए इनकी सफलता पर संदेह होने लगता है.

खुद बिहार के कुछ जानकार लोग पिछड़ेपन का कारण केंद्र सरकार और बैंकों द्वारा इस राज्य की उपेक्षा बताते हैं. बिहार सरकार के एक अधिकारी के मुताबिक यहां के बैंकों में प्रति वर्ष 4,000 करोड़ रु. जमा किए जाते हैं जबकि ये मात्र 600 करोड़ रु. कर्ज के रूप में देते हैं. पिछले पांच वर्षों में यहां जमा करीब 5,000 करोड़ रु. की रकम दूसरे राज्यों में निवेश की गई. और फिर पूरे देश में समान दर पर खनिज उपलब्ध कराने की केंद्र की नीति भी बिहार के हक में नहीं है. इससे राज्य में उद्योग लगाने पर खास फायदा नहीं रह जाता और उद्योगपति इधर रुख नहीं करते. देश की

"अगले कुछ वर्षों में ही बिहार के औद्योगिक परिदृश्य में नाटकीय बदलाव आएंगे"

एन.के. सिंह
औद्योगिक विकास आयुक्त, बिहार

11 फीसदी आबादी वाले इस राज्य में निजी क्षेत्र के निवेश की तीन फीसदी से भी कम राशि लगी है और यहां देश की मात्र 6 फीसदी उत्पादक इकाइयां हैं. राज्य के बड़े बैंकों में जमा राशियों और जारी किए गए कर्ज का अनुपात 60 फीसदी के राष्ट्रीय औसत के मुकाबले पिछले साल 36 फीसदी था. देश के बिजली उत्पादन में भी प्रदेश का हिस्सा तीन फीसदी से कम है.

लेकिन इस चौतरफा निराशाजनक माहौल में भी बिहार की कुछ औद्योगिक इकाइयों ने देश भर में उदाहरण बनने लायक सफलताएं हासिल की हैं. टाटा समूह की दोनों प्रमुख कंपनियां—टिस्को और टेल्को—की मुख्य इकाइयां जमशेदपुर में स्थित हैं. उधर, एकदम पिछड़ा माने जाने वाले क्षेत्र मुजफ्फरपुर की प्रभात जर्दा फैक्टरी ने भी एक ठेठ देसी उपभोक्ता सामग्री के मामले में लखनऊ की कंपनियों को भी पीछे छोड़ दिया है.

उपभोक्ता सामग्री बनाने के मामले में देश के नक्शे पर बिहार का नाम उजागर करने वाली दूसरी कंपनी है राज्य सरकार की 'बेकोन.' रांची के पास स्थित इस कंपनी में सूअर के मांस से बनने वाले विभिन्न व्यंजन दूर-दूर तक लोकप्रिय हैं. इसी प्रकार बिहार राज्य फल एवं सब्जी निगम द्वारा आम और लीची के रस से तैयार पेय 'रसवंती' बाजार में उपलब्ध किसी भी शीतल पेय से बेहतर है.

जिस तरह दक्षिण बिहार खनिज के लिए पूरे भारत में विख्यात है उसी तरह उत्तर बिहार का चमड़ा (खास तौर से बकरी का) भी चमड़ा उद्योग के लोगों के बीच सबसे अधिक पसंद किया जाता है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए काफी महले बाटा ने भी यहां अपना कारखाना लगाया था. अब बिहार राज्य चमड़ा विकास निगम ने सस्ते और बेहतर जूते बनाने का काम शुरू किया है.

इन सफलताओं से बिहार में औद्योगिक विकास न होने का भ्रम टूटता-सा लगता है. अगर पूंजी आती है तो बिहार की अपार खनिज संपदा और सस्ती मजदूरी औद्योगिक विकास के सपने को साकार करने में सक्षम हैं ही.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BSIDC
WHEELS OF INDUSTRIAL GROWTH

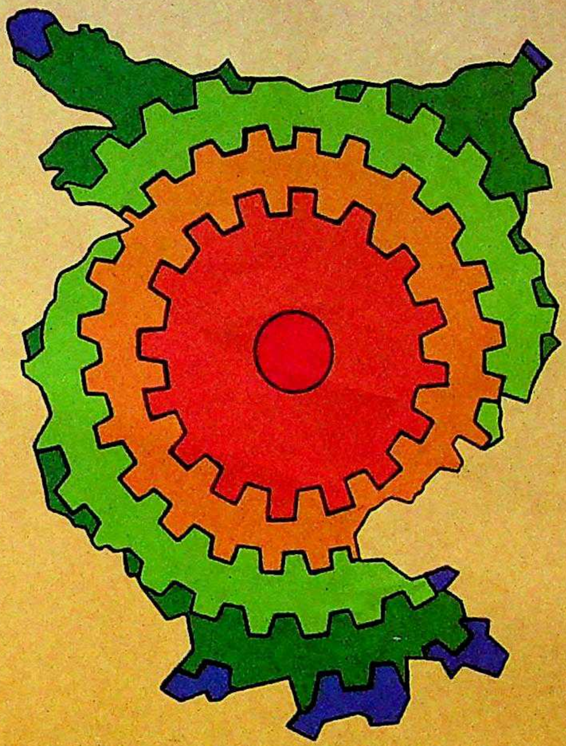

Today BSIDC proudly symbolizes the industrial growth of the state. The time is now right for the investor entrepreneur to make his move. BSIDC offers expert advice and assistance for obtaining technical know-how.

Public Sector Units.
* Bihar State Superphosphate Factory, Sindri
* Electric Equipment Factory, Tatisilwai, Ranchi
* High Tension Insulator Factory, Namkum, Ranchi
* Bihar Spun Silk Mills, Bhagalpur
* Malleable Cast Iron Foundry, Namkum, Ranchi
* Swarnrenkha Watch Factory, Namkum, Ranchi

Joint Sector Companies.
* Bihar Caustic and Chemicals Limited, Garhwa Road, Palamau
* Bihar Air Products Ltd., Adityapur, Jamshedpur
* Bihar Fasteners Ltd., Gaya
* Vaishali Woollen & Textile Mill, Hajipur
* Kumardhubi Metal Casting and Engineering Limited, Kumardhubi, Dhanbad.
* Bihar Gases Limited, Jasidih
* Magadh Spun Pipe Ltd., Hirodih, Koderma
* Bihar Sponge Iron Limited, Chandil
* Progressive Cement Limited., Patratu
* Mayur Lime Products, Patratu

Projects in Public Sector.
* Bihar Paper Mills Ltd., Saharsa
* Light Roofing Project, Fatwah (Patna)

Projects in Joint Sector (Under Implementation)
* Trans Fibre Pipes (I) Ltd., Jhajha
* Bagasse based paper Project, Kumarbagh, West Champaran
* Slag Based Cement Plant, Bokaro
* Aluminium Foil and Extrusion Plant, Sindri
* Caprolactum Project, Sindri
* Organic Colour Coated/Laminated Sheets Projects, Ranchi
* Synthetic Filament Yarn Project, Bhojpur
* Vanaspati Ghee Project, Mihijam, Dist. Dumka
* Carbon Black Project, Barauni
* Beer Project, Patna Distt.
* Flyash Brick Project, Patratu
* Granite Cutting & Polishing Project, Dumka (S.P.)
* Particle Board Project, Siwan
* Galvanised Iron Sheets Projects, Jamshedpur
* Bakers yeast Project, Hajipur
* Anti-Friction Bearing Project, Munger

Projects in Pipe Line
* Mini Steel Plant
* Alternate Energy Source
* Food Processing Projects
* Freese Drying Projects of Fruits and Vegetables
* Potato Complex
* Pig Iron Project.

BIHAR STATE INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LIMITED.
INDIRA BHAWAN, BORING CANAL ROAD, PATNA-800001 PHONE: 32165, 32106
Gram: INDUSTRIAL Telex-022-315 BIDC IN

mahima/BSIDC/10657/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फर्नेस में बिना किसी परिवर्तन के इस्पात निर्माण में दुगनी वृद्धि।"

श्री राजेश्वर सिंह, डिविजनल मैनेजर, एस एम एस-३ का विश्वास है कि उन्होंने अपने तजुर्बे से बहुत कुछ सीखा, साथ ही उनके विचार से, प्रत्येक भारतीय उद्योग को शायद इससे सबक मिले।

आज, टाटा स्टील ने अपने स्टील मेल्टिंग शॉप नं.३ में कई मार्गदर्शी कदम उठाये हैं, जैसे पुराने फर्नेसों (अधिक ऊर्जा खर्च करने वाले) को रद्द करना—जो कि एक बड़ा मुश्किल व खर्चीला काम है। टाटा स्टील ने कॉर्फ तकनीक चालू करके अपनी पुरानी धमन भट्टियों में सफलतापूर्वक हीट टाइम को ९-१० से ४ घंटे तक कम किया। इसलिये निर्धारित ईंधन खर्च में सीधे ५०% कमी हो गई।

ऊर्जा की भारी बचत के लिये टाटा स्टील ने एक अहम कदम उठाया, कॉन्कास्ट तकनीक को अपनाकर हीटिंग और रोलिंग के एक स्तर पर ईंधन खर्च समाप्त कर दिया। टाटा स्टील का लक्ष्य है कुछ ही वर्षों में निरंतर कास्टिंग (कॉन्कास्ट) पद्धति से ४००% की वृद्धि करना—जिससे भारी परिमाण में ऊर्जा की बचत होगी।

एल डी प्रक्रिया शुरू होने से फर्नेस की लाइनिंग को बदलना पड़ा। गैस एनलाइज़र के प्रयोग सहित उन्नत उपकरणों का उपयोग, सभी हरेक स्तर पर बेहतर ऊर्जा बचत की निश्चयता प्रदान करते हैं।

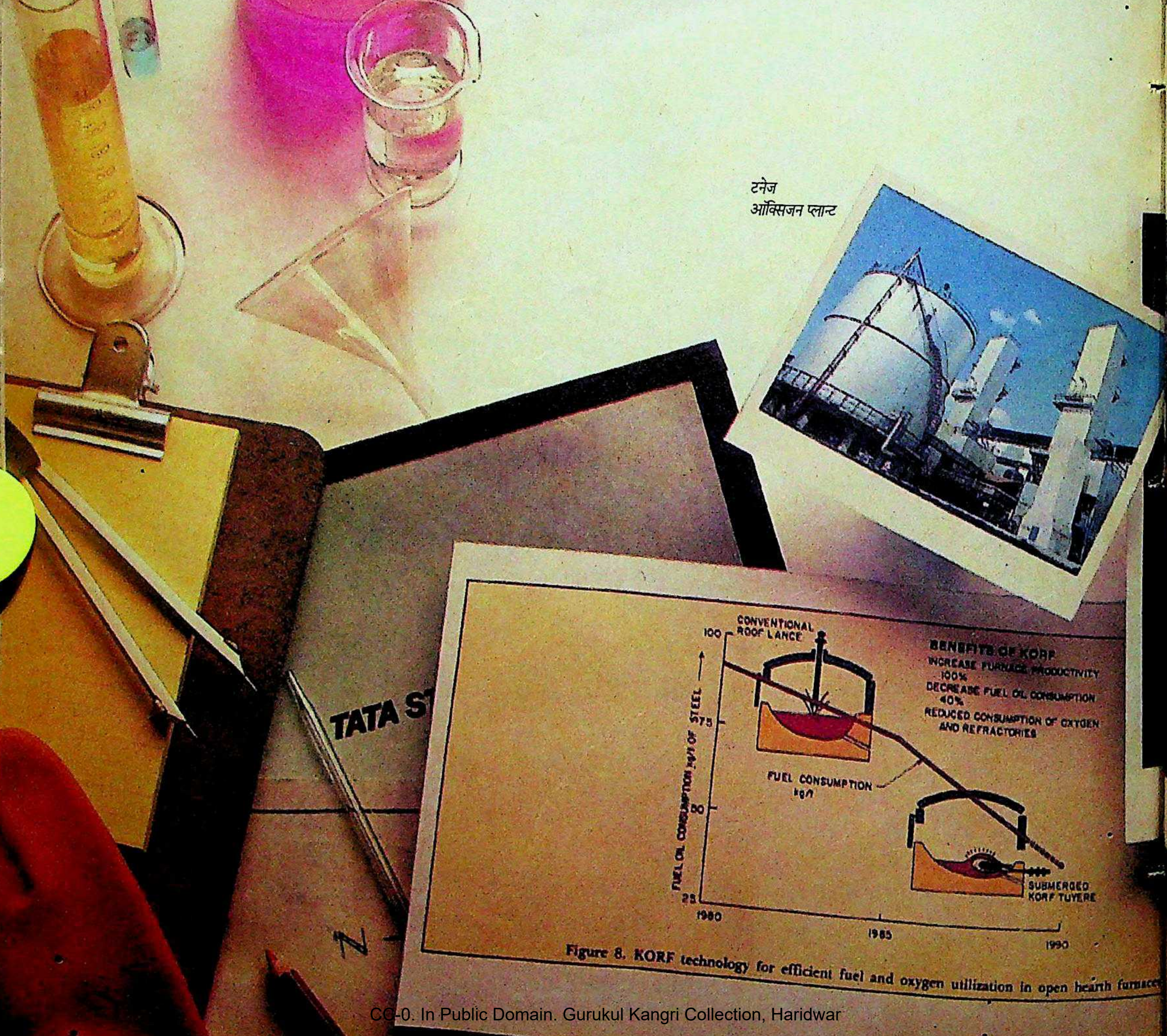

टनेज ऑक्सिजन प्लान्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ कच्चे माल से इस्पात निर्माण तक ही नहीं, आज टिस्टेक के प्रत्येक स्तर पर कारगर ऊर्जा प्रबन्धन कार्यक्रम कमाल दिखा रहा है। कोक के लिये स्टैम्प चार्जिंग, ब्लू डस्ट से सिन्टर का निर्माण, रद्द किये गये मालों से बिजली और स्लैग से सिमेन्ट उत्पादन हो रहा है। एल डी टॉप गैस से फर्नेस रीहीटिंग आदि की तालिका दिन-ब-दिन लम्बी होती जा रही है।

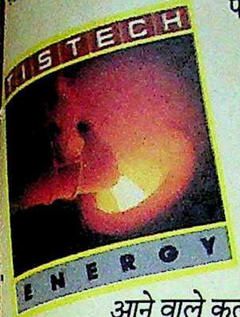

टिस्टेक का ऊर्जा कार्यक्रम सिर्फ प्रत्येक मशीन को ही नहीं, प्रत्येक मन को भी इसमें शामिल कर रहा है। टिस्टेक लोगों को सचेत और अग्रणी बना रहा है। अब टाटा स्टील का प्रत्येक कर्मी सिर्फ ऊर्जा संरक्षण की चर्चा ही नहीं करता बल्कि इसके बारे में कुछ न कुछ ठोस काम अवश्य कर रहा है।

टिस्टेक ऊर्जा—स्टील प्लान्टों के ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एक मार्गदर्शक प्रयास—जिसका लक्ष्य है एक प्रासंगिक तकनीक का उद्भावन, एक आधुनिक प्रगतिशील धारणा का प्रसारण। आने वाले कल के प्रयोजन को न भूल कर आज के जमाने की आवश्यकताओं को पूरा करने के वायदों का एक और नाम — टिस्टेक!

- **ईंधन-तेल खर्च में ४०% की कटौती।**
- **प्रति वर्ष एल डी टॉप गैस से ४.५ करोड़ Nm^3 की वसूली।**
- **कॉर्फ़ तकनीक के प्रयोग से ओपन हर्थ फर्नेसों में हीट वर्किंग समय आधा हुआ।**
- **ऊर्जा संरक्षण के लिये बार एण्ड रॉड मिल में फ्लैट फ्लेम बर्नर का इस्तेमाल शुरू।**

टाटा स्टील
सबसे पहले सबसे आगे

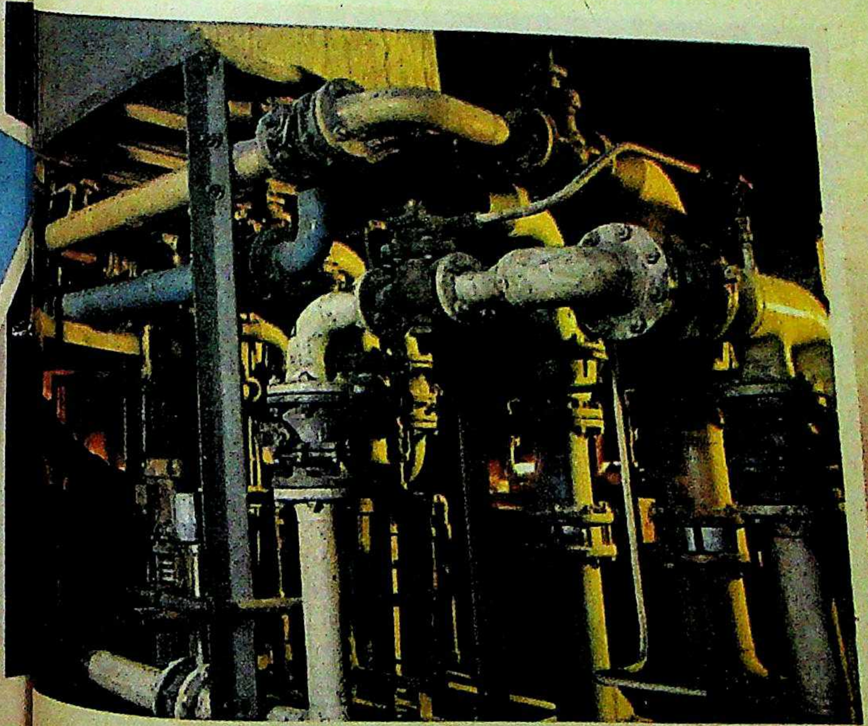

एस एम एस-३ में
कॉर्फ़ कन्ट्रोल पैनल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही निर्णय का

अन्दरूनी राज़

प्रश्न जब त्वचा की सुरक्षा का है, तो सावधानी बरतने में ही समझदारी है। गलत निर्णय आपके लिये परेशानी का कारण बन सकता है। इसलिये रूपा फ्रन्टलाइन ही ख़रीदिये और निश्चिंत रहिये। भारतीय जलवायु के उपयुक्त, नवीनतम तकनीक से बना रूपा फ्रन्टलाइन आपकी त्वचा को बराबर सुरक्षा देता है।

शतप्रतिशत सुती धागे से बना। इसकी उत्कृष्ट फिनिश रेशम सी कोमलता का अहसास दिलाये। फिटिंग पूर्णतः आरामदायक। इम्पोर्टेड रबर से बना इलास्टिक। निराले रंगों में उपलब्ध। इन्हीं सब ख़ूबियों के कारण रूपा फ्रन्टलाइन सही निर्णय लेने में आपका सहायक होता है।

RUPA®

Frontline
BRIEFS

'फ्रन्ट ओपन' की स्पेशल सुविधा
सिर्फ रूपा फ्रन्टलाइन ब्रीफ़ में

बिनोद होसियारी, कलकत्ता ७०० ००७ का एक उत्कृष्ट उत्पादन

भारत में पहली बार, अपनी किस्म का ख़ास

DPS/BH-886

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधाओं के अभाव का उलटा असर

इन जंगलों और पहाड़ियों की खूबसूरती अरसे से बंगाल के लेखकों, सैलानियों और सौंदर्यप्रेमियों के आकर्षण का केंद्र रही है. पर खूबसूरती भरे नजारे देश के सबसे पिछड़े राज्य बिहार के पलामू, राची और सिहभूमि जिलों में ही नहीं फैले, वे पूरे बिहार के नक्शे पर बिखरे पड़े हैं और उनकी ओर विदेशी पर्यटक आकर्षित होते हैं.

लेकिन बिहार में पर्यटन का स्वर्ग इसका दक्षिणी हिस्सा ही है. देश के इस्पात शहर जमशेदपुर से कुछ ही दूर नोआमंडी के पास पहुंचते ही इस स्वर्ग के अद्भुत नजारे दिखने लग जाते हैं. मोटरगाड़ी से चार घंटे का सफर तय करके सरडा (सात सौ पहाड़ों की भूमि) में पहुंचा जा सकता है. पहले तीन घंटे तो खूबसूरत नजारों में बीतते हैं पर अनोखे नजारे उस चौथे घंटे में दिखते हैं जो थोलकोबाद के घने जंगल में बीतता है.

यह शांत, निर्जन जंगल इस उपमहाद्वीप के सबसे घने जंगलों में से एक है. यहां रात गुजारना शहरों की भागदौड़ से दूर, घने जगलों में बसी सभ्यता की धडकन को महसूस करने जैसा अनुभव है. काली अंधेरी नीरव रात में दूर जंगल से सुनाई पड़ती नगाड़ों की गूंज, कभी-कभी वनवासी बस्ती में चमकती आग की लपटें, जहां आदमियों, औरतों और बच्चों का झुंड हंडिया (चावल का देसी शराब) पीता जलती लकड़ियों के चारों ओर नाचता, गाता, झूमता अलमस्त दिखाई देता है.

इसी तरह चाइबासा के गोइलखेड़ा में पत्थरों से टकराते-गिरते कुदरती झरने के अलावा हाथियों के झुंड भी विचरते दिख जाते हैं. रांची से 175 किलोमीटर दूर बेतला के जंगलों में तो हाथियों के ये झुंड कभी-कभी मचान पर चढ़े पर्यटकों को घेर लेते हैं. ऐसे में बचाव दल ही वहां पहुंचकर पर्यटकों को इस संकट से बचाता है.

पर प्रदेश में पर्यटन के आकर्षण ऐतिहासिक स्थल और खंडहर भी हैं जो प्राचीन और मध्यकाल के बिहार के वैभव की गाथा कहते हैं. राजधानी पटना में ही गोलघर और उसके पास ही कुम्हरार में अशोककालीन स्तंभ हैं. पड़ोसी जिले नालंदा में विश्वविख्यात प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर हैं. इसी तरह भागलपुर में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के खंडहर हैं. बोधगया और राजगीर दुनिया भर के बौद्धों के तीर्थ हैं.

लेकिन अभी बहुत सारे स्थान ऐसे हैं जो पर्याप्त विकास के अभाव में पर्यटन क्षेत्रों में अनजान हैं. मसलन, चंपारण की विशाल झील, साहेबगंज की पहाड़ियां, बेगूसराय की कबर झील. इनके विकास की योजनाएं दो दशकों से धूल खा रही हैं. पर्यटन विभाग तो बक्सर के किले और सासाराम में शेरशाह सूरी के मकबरे जैसे पर्यटन केंद्रों की ओर भी लोगों को आकर्षित नहीं कर पाता.

पर बिहार में पर्यटन के विकसित न हो पाने की यह अकेली वजह नहीं है. आवागमन के साधनों और ठहरने के स्थानों का उपलब्ध न होना भी इसकी बड़ी वजह है. ज्यादातर इलाकों में ठहरने के लिए वन विभाग के ही अतिथि गृह या विश्राम गृह हैं.

बोधगया का बुद्ध मंदिर और राजगीर का विश्व शांति स्तूप पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण हैं. राजगीर में जहां जापान और प्रशांत क्षेत्रों के पर्यटक काफी संख्या में आते हैं, वहां सेंटूर समूह ने एक छोटा-सा होटल खोला है. अब तिलैया में वातानुकूलित कॉटेज बन रहे हैं, बेतला में भी आधुनिक रेस्ट हाउस बन गया है. साथ ही भारतीय पर्यटन विकास निगम ने बोधगया में होटल भी बनाया है. राजगीर और रांची में भी पर्यटकों के लिए बंगले बने हैं. इनकी संख्या अपर्याप्त ही मानी जा सकती है.

लेकिन तमाम अपर्याप्त सुविधाओं के बावजूद पर्यटक बिहार का खंडित वैभव देखने पहुंचते हैं. सुविधाएं बढ़ें तो उनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है.

—उत्तम सेनगुप्त

(बाएं से) बेतला का जंगल; चंपारण में अशोककालीन स्तंभ; और बोधगया

सभी फोटो- कृष्ण मुरारी किशन

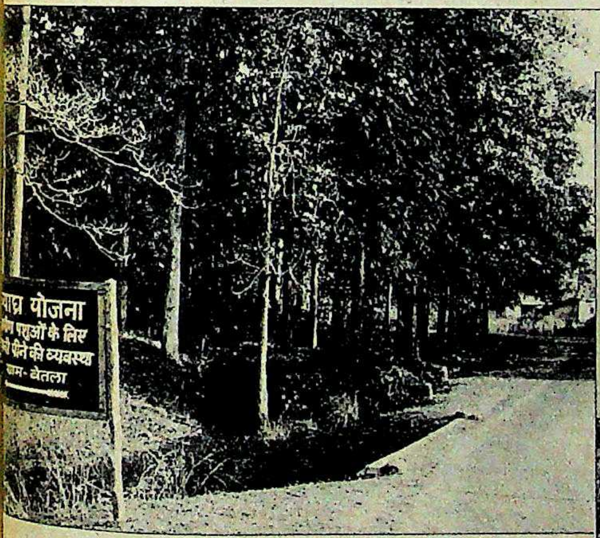

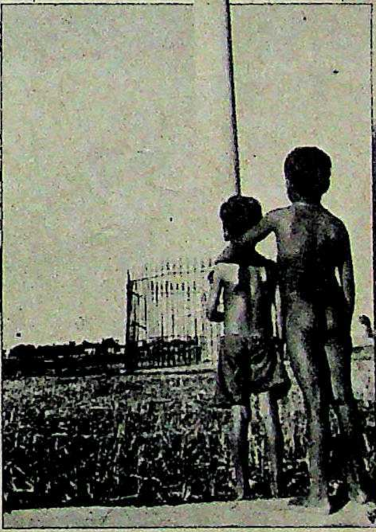

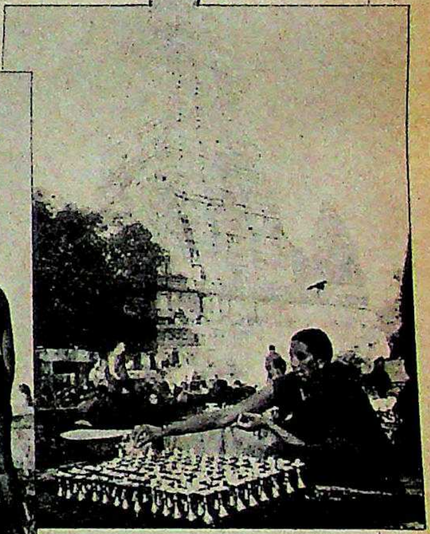

बिहार में पर्यटन के आकर्षण प्राकृतिक सौंदर्य के स्थल ही नहीं, ऐतिहासिक स्थल और खंडहर भी हैं. पर्याप्त सुविधाएं हों तो पर्यटकों की संख्या बढ़ सकती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोकारो प्रगति की ओर

30,000 से अधिक व्यस्त कर्मियों का बल लेकिन एक ही है दल।

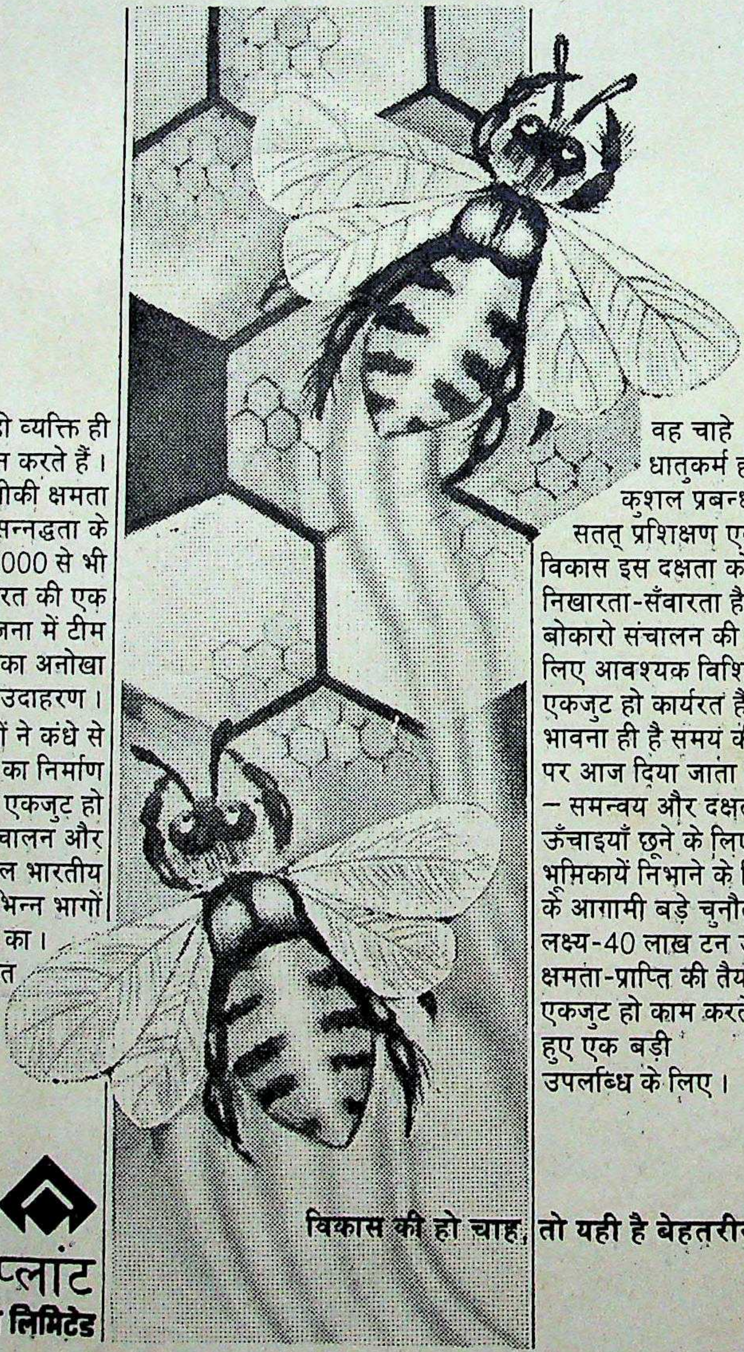

तकनॉलॉजी चाहे जो हो व्यक्ति ही उसे स्वरूप प्रदान करते हैं। बोकारो की उच्च तकनीकी क्षमता के पीछे हैं—व्यापक सन्नद्धता के साथ कार्यरत 30,000 से भी अधिक व्यस्त कर्मी। भारत की एक विशालतम परियोजना में टीम भावना की एकलयता का अनोखा उदाहरण।

रूसियों तथा भारतीयों ने कंधे से कंधा मिलाकर बोकारो का निर्माण किया और आज भी एकजुट हो कार्यरत हैं इसके संचालन और प्रगति में। बोकारो अखिल भारतीय संगम भी है देश के विभिन्न भागों से आये दक्ष कर्मियों का। दक्ष कर्मी जिन्हें महारत है इस्पात उद्योग के सभी महत्वपूर्ण कामों में।

वह चाहे धातुकर्म हो या कुशल प्रबन्धन। सतत् प्रशिक्षण एवं विकास इस दक्षता को निरंतर निखारता-सँवारता है। समग्र बोकारो संचालन की सफलता के लिए आवश्यक विशिष्ठ संस्कृति में एकजुट हो कार्यरत हैं सभी। टीम भावना ही है समय की पुकार। इसी पर आज दिया जाता है विशेष बल – समन्वय और दक्षता की नई ऊँचाइयाँ छूने के लिए। बड़ी-बड़ी भूमिकायें निभाने के लिए। बोकारो के आगामी बड़े चुनौतीपूर्ण लक्ष्य-40 लाख टन उत्पादन क्षमता-प्राप्ति की तैयारी के लिए। एकजुट हो काम करते हुए एक बड़ी उपलब्धि के लिए।

विकास की हो चाह, तो यही है बेहतरीन राह

बोकारो स्टील प्लांट
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड

CONTAD/BSL-871 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर एक ऐसा च्यवनप्राश, जो तन और मन दोनों को चुस्त रखे

बैद्यनाथ

मकरध्वज युक्त

च्यवनप्राश

तन और मन दोनों चुस्त-तन्दुरुस्त न हो तो आज की तेज रफ्तार जिन्दगी में आगे बढ़ पाना बहुत मुश्किल पड़ता है। लेकिन अब चिन्ता की कोई बात नहीं। बैद्यनाथ का मकरध्वज युक्त स्पेशल च्यवनप्राश अपनाइये और जिन्दगी में तेजी से आगे बढ़ते जाइये। बैद्यनाथ स्पेशल च्यवनप्राश में है, मकरध्वज। आयुर्वेद की वो विशिष्ट बूटी जो सदियों से अपनी उपयोगिता के लिए पहचानी जाती है। मकरध्वज के लगातार उपयोग से मानसिक थकान कम होती है और धमनियों को भी आराम पहुंचता है। इसलिए मकरध्वज और शरीर तन्दुरुस्त बनाये रखने वाली आयुर्वेद की ५१ प्रमुख जड़ी बूटियों को मिलाकर तैयार किया गया बैद्यनाथ स्पेशल च्यवनप्राश, किसी भी अन्य च्यवनप्राश की तुलना में अधिक गुणकारी है। चाहे शारीरिक काम काज करें या मानसिक उलझनों को सुलझायें, हर क्षेत्र में सफलता के लिए आप भी आज से बैद्यनाथ स्पेशल च्यवनप्राश ही अपनायें।

स्वस्थ तन और मन के लिये

expression/BAB/HIN/PAT/89

HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पान, पॉलिटिक्स और पटना

आजकल 'फटाफट' चीजों का बड़ा जोर है. चाहे एक दिन का क्रिकेट हो या राजनैतिक दलों की लंका में विभीषणों की घुसपैठ, बिना 'डिफेक्शन' न इलेक्शन मुमकिन है, न माफिया के बिना अमन-चैन. पंचायती राज में सुधार, नगरों का उद्धार, दलितों पर उपकार सभी कुछ अभी होना है वरना कल तो चुनाव का रोना है. किसी भी वर्ग के सत्ता के दलाल को मलाल रह गया तो क्या होगा.

इस माहौल में अपना सिर्फ एक सवाल है. संसार को आनन-फानन खानपान से किसने परिचित कराया. शून्य का सिद्धांत अगर भारत की देन है तो संसार को फटाफट भोजन देने का श्रेय बिहार को जाता है. सत्तू जो है वह दुनिया का सर्वप्रथम, सर्वश्रेष्ठ, सुपाच्य, स्वास्थ्यवर्धक, बना-बनाया तत्काल उपलब्ध भोज्य पदार्थ है. इसे झोले में ले जाएं या पैकेट में, पानी में घोल के पिएं या प्याज-हरी मिर्च के साथ गटकें. पर ऐसी ऐतिहासिक खोज वाला बिहार इधर चुप है. दिल्ली में 'टेंशन' है पर पटना में न अनशन है, न जन-जागरण, न धुआंधार भाषण. बस कैबिनेट के मंत्री बढ़े तो लोग उत्सव बतौर आपस में मारपीट का त्योहार मना लेते हैं.

"पटना में सन्नाटा क्यों है?" हमने अपने मित्र बिहारी प्रसाद से चिंता जताई.

"मोनीटाइजेशन' किया फिर 'सैनीटाइजेशन'," उन्होंने उत्तर दिया. फिर अपनी कठिन अंग्रेजी से हमें अनभिज्ञ पाकर समझाया, "एक नारायण ने नकदी की राजनीति चलाई, दूसरे ने नाली साफ करने की कौन कहता है कि हमारा मुल्क पर असर कम हुआ है. आज की सियासत पर भी असली साया ललित नारायण और जयप्रकाश नारायण का है. सत्ता दल से लेकर विरोधी बल तक."

वे अपना सिद्धांत समझाने मुझे पटना के एक सरकारी दफ्तर में ले गए. दस बजने के काफी बाद कार्यालय खाली पड़ा था. बस कुछ चूहे मेजों पर मटरगश्ती कर रहे थे और कुछ कबूतर छत पर गुटुरगूं. इतने में तिरछी टोपी लगाए, बगल में डंडा दबाए और एक हाथ की हथेली पर रखी खैनी को दूसरे हाथ से पीटते एक सज्जन पधारे.

"साहब से मिलना है क्या. दस रुपैया लगेगा," उन्होंने घोषणा की.

हमने इनकार में सिर हिलाया.

"यह सरकार का दफ्तर है. म्युनिसपैलिटी का 'पार्क' नहीं जो टहलते चले आए," उन्होंने हमें खदेड़ा.

"यह कार्यालय नहीं, कला केंद्र है," मेरे विद्वान साथी ने मुझे जानकारी और चौकीदार को टिप दी. इसी दौरान झोला लटकाए

सभी रेखांकनः जिया फ़ैजी

एक बाबू ने प्रवेश किया. जैसे गलती से सही जगह पहुंच गए हों. चारों और नजर घुमाकर मुआयना करते-करते उनकी दृष्टि हमें अजनबी पाकर हम पर ठहर गई. उनका मुंह छत की ओर उठा. 'पिच्च' की जोरदार आवाज हुई और स्वर गूंजा—"कोहिए". बिहारी ने जैसे मंजिल पा ली. वे चिल्लाए, "देखा जाए." पान की पीक आठ-दस फीट की ऊंचाई पर पहुंची थी और छींटें छत तक. "हमारे पटना का हर पान खाने वाला पिकासो है. है कहीं मुकाबला?" उन्होंने विजेता की मुद्रा से हमें ताका. हम प्रभावित हुए. अगर यही रफ्तार रही तो वह दिन दूर नहीं जब संसार के महत्वाकांक्षी कलाकार पेरिस के कला केंद्रों के बजाय पटना के कार्यालयों में आकर इस अनूठी पीक कला का प्रशिक्षण लेने लगें.

दफ्तर के पास एक स्कूल था. वहां छात्र और अध्यापक पतंग उड़ा रहे थे. "यह पॉलिटिक्स का प्राइमरी ट्रेनिंग सेंटर है. दांवपेच लगाकर दूसरे की पतंग काटने का पाठ यहीं पढ़ाया जाता है," उन्होंने मेरी ज्ञानवृद्धि की, "इसके बाद का डिग्री कॉलेज यूनिवर्सिटी में मिलता है. फिर एक्चुअल प्रैक्टिस पान की दुकान पर होती है."

"कौन-सा पान दू, बाबू! व्रिरोध का, कि सरकार का," पानवाले ने दरयाफ्त किया.

"सादा," बिहारी बोले.

"तो आप अभी भी 'फेंस' पर हैं," पानवाले ने आरोप लगाया. पता लगा कि जर्दा-किवाम का पान विपक्ष का है और खुशबू-मीठे का रूलिंग पार्टी का.

"हमारा पान खाकर विरोधी थू-थू करता और कड़वा बोलता है और 'पावर' पक्ष 'हैं हैं' कर खुशामद करता है," पान के प्रोफेसर ने सिद्धांत बखारा.

सामने के गांधी मैदान में एक तरफ जवान नेकर पहने लाठी भांज रहे थे और दूसरी ओर पहलवान लकड़ी के बक्सों को उठाकर दौड़ लगा रहे थे.

"यह अगले एशियाड की तैयारी है क्या?" मैंने जानना चाहा.

"जी नहीं. यह आने वाले चुनाव का पूर्वाभ्यास है. लाठी वाले स्वयंसेवक सामुदायिक सदभाव कायम करेंगे और तय करेंगे कि सिर्फ सही' लोग ही वोट दें. 'कैंडिडेट' के मन में उसके बाद भी संशय रहा तो मतपेटी पर कब्जा करने वाली टोली 'एक्शन' में आएगी,". उत्तर मिला.

गांधी-जयप्रकाश का नाम बढ़ाने के लिए जितना अनुकरणीय काम बिहार में हो रहा है, कहीं और मुमकिन ही नहीं है. हमें उस दिन का बेसब्री से इंतजार है जब शहरों का हर खाली स्थान गांधी मैदान बन जाएगा.

मैं बिहार के नेतृत्व में देश के सुरक्षित भविष्य की बात सोच ही रहा था कि एक जुलूस आ गया. लोग नारे लगा रहे थे, "चील मारना बंद करो. खूनी हो, हरजाना दो." उड़ते हवाई जहाज से टकराकर एक चील चल बसी थी. क्रुद्ध लोग पत्थर फेंक रहे थे. पुलिसवाले उनका हाथ बंटा रहे थे.

"आपने 'आर्ट फौर आर्ट सेक' का अंग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कोल इंडिया लि॰ का ही एक और रूप है.

कोल इंडिया लि॰

आज, यह सफल कंपनी, अपनी सात सहयोगी कंपनियों के साथ भारत के सम्पूर्ण कोयला उत्पादन का 88% से अधिक उत्पादित करती है.

कोल इंडिया लि॰ में, कोयला उनके स्वरूप का एक पहलू भर है.

एक सच्चाई जो कंपनी के कर्मचारियों में झलकती है. सात लाख कर्मचारियों की विशाल कार्य शक्ति जो कोल इंडिया लि॰ के बनाए संसार में एक परिवार की तरह रहती है.

घर, स्कूल, अस्पताल, पार्क, मनोरंजन केंद्र, खेल केंद्र, बाजार आदि का भरा-पूरा संसार.

जहाँ जीवन स्तर में सुधार के लिए पर्यावरण और प्रकृति संतुलन का पूरा ध्यान रखा जाता है.

कोल इण्डिया
Coal India

कोल इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का एक उपक्रम)

राष्ट्र के विकास के लिए जन विकास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ईस्टर्न कोलफ़ील्ड्स लि. ●वेस्टर्न कोलफ़ील्ड्स लि. ●सेंट्रल कोलफ़ील्ड्स लि. ●भारत कोकिंग कोल लि. ●साउथ ईस्टर्न कोलफ़ील्ड्स लि. ●नार्दन कोलफ़ील्ड्स लि. ●सेंट्रल माइन प्लानिंग एण्ड डिज़ाइन इंस्टीट्यूट लि.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आपका ख़ास दोस्त अपनी जी

को आप क्या समझाएं ?

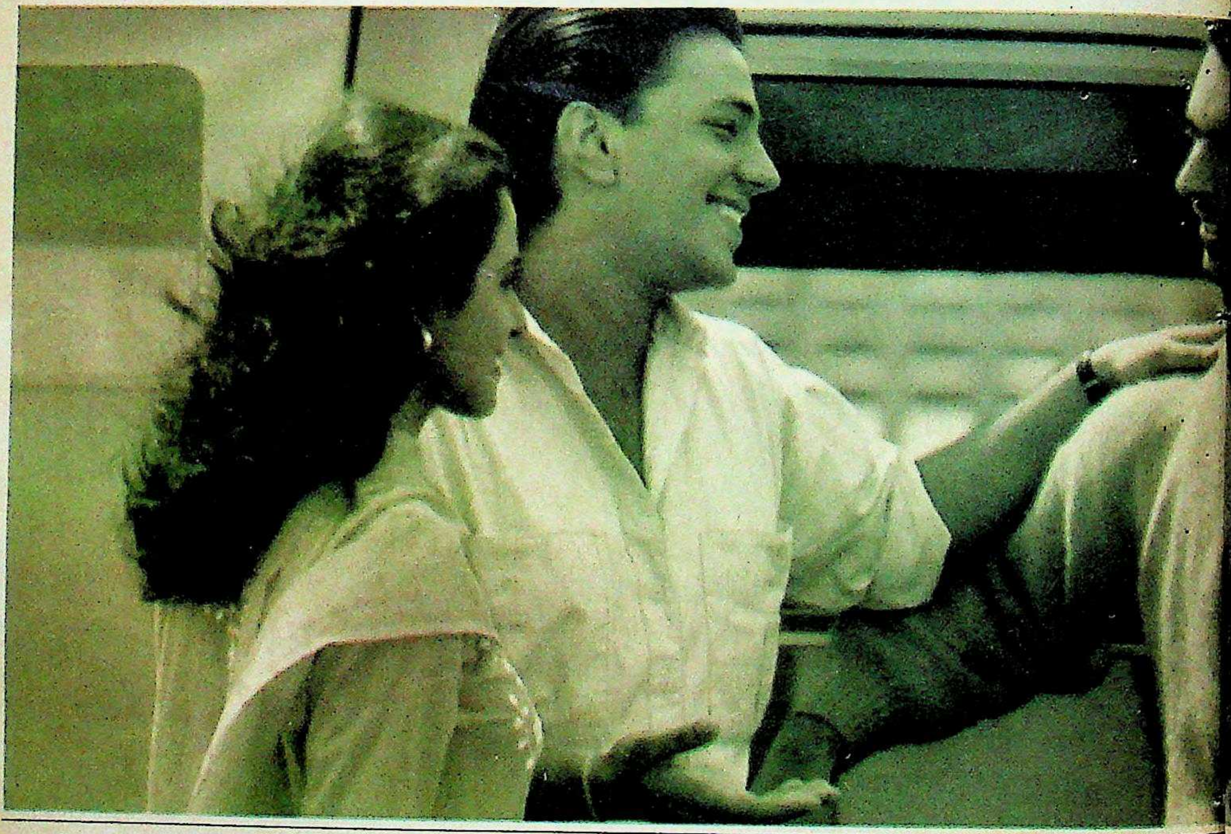

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़ाई देना बेकार है. क्योंकि यक़ीनन वो नाक चढ़ाएगी. आपके दोस्त पर इसका कोई असर नहीं होनेवाला. वो कोई ऐसा

आपके घर आए... तो अपनी बीवी

इंसान नहीं, जो एक ढूंढ़ने से सौ मिलें. बड़ा ही अनोखा है. दुस्साहसी भी, दुनियादार भी; सभ्य भी, शक्तिशाली भी.

अपनी पत्नी को ये बताने पर भी कि आपके दोस्त को इस साल बेहतरीन बिज़नेसमैन होने का इनाम मिला है या वो आज अपने कारोबार में सबसे बढ़िया सॉफ़्टवेयर डिज़ाइनर माना जाता है, आपकी बीवी उसका ज़रा भी रौब न खाए.

पर हां, एकबार जब वो अपनी जीप का ज़िक्र छेड़ेगा तो फिर देखिए आपकी बीवी कैसे अपनी राय बदलती है. जब वो बताएगा कि किस क़दर उसे चाह है किसी तेज़ रफ़्तार शक्ति पर हुकूमत करने की... या एक ऐसे दोस्त की जो हर अच्छे-बुरे वक़्त में उसका साथ निभाए. फिर शान से कहेगा कि ये सारी खूबियां मौजूद हैं उसकी जीप में, जो लेती है बहुत कम, देती है ढेरों फ़ायदे (२५ पैसे में चले १ किलोमीटर). ये कहना भी नहीं भूलेगा कि जीप की यही किफ़ायती ख़ूबी तो उसके कारोबारी दिमाग़ को बेहद जंचती है. फिर तो आपकी बीवी उसकी सूझबूझ का लोहा पूरी तरह मान जाएगी.

लेकिन ज़रा संभलकर रहिए... आपके दोस्त को जीप में आया देखकर मुंह बनानेवाली आपकी यही बीवी कहेगी कि कितनी ख़ुशक़िस्मत है आपके दोस्त की पत्नी कि उसका पति ज़मीन पर मज़बूती से खड़ा रहकर, उसके लिए आसमान से तारे ला सकता है!

शायद ये भी फ़रमाइश कर दे कि चलिए न हम भी इनकी जीप पर ड्राइव के लिए चलें!

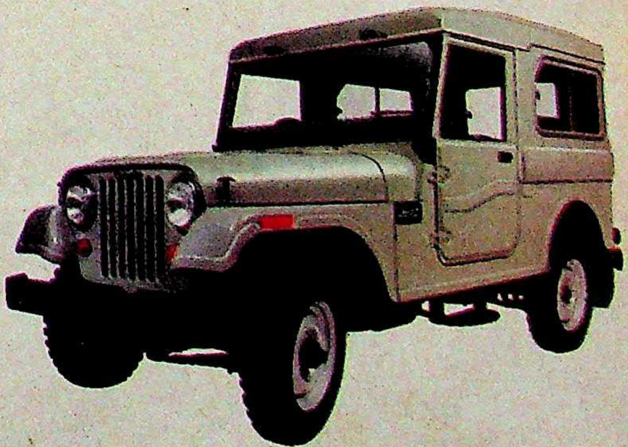

Mahindra
Jeep MM 540
D I E S E L

जोशीली रफ़्तार... सूझबूझ अपार

वर्तमान डीज़ल मूल्यों के अनुसार परीक्षण परिस्थितियों में इंधन-खपत : 40 कि.मी. प्रति घंटा वेग पर 15 कि.मी. प्रति लीटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS MM P7 2537 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उक्ति सुना है का?" बिहारी ने पूछा.

"जी हां", हमने स्वीकार किया.

"हमारे अधिकतर आंदोलनों का मकसद सिर्फ आंदोलन करना होता है," वे बोले.

"बिहार का मूल स्वर व्यवस्था के विरोध का है. वह तो जयप्रकाश तकदीर वाले थे कि कभी 'पावर' में नहीं रहे वरना हम उनको भी ठिकाने लगा देते," बिहारी ने बिहार की मानसिकता समझाई.

हमें यकीन होने लगा कि यहां के लोग मिल-जुलकर काम करते हैं, चाहे भारत सेवक समाज हो या भारत साधु समाज.

तभी "पुलसिया, पुलसिया" के हल्ले ने हमारा ध्यान बंटा दिया.

एक पुलिस की जीप के पास एक आला अधिकारी, उनका सारथि और सहायक खड़े थे. उनका वार्तालाप हम जनता के साथ मंत्रमुग्ध हो सुनने लगे.

"थानेदार कहां हैं?", आला अफसर गरजे.

"यहीं कहीं होगा सरकार!" उत्तर आया. "इस थाने में ताला कैसे लगा है?"

"पता नहीं हुजूर!"

"हुजूर के बच्चे! मैं सबको सस्पेंड कर दूंगा!"

"जो हुकुम सरकार!"

उस रोचक वार्तालाप के बीच हांफता हुआ एक आदमी 'चाभी', 'चाभी' चिल्लाता हुआ आया.

"तो आप यहां के थानेदार हैं," साहब ने दहाड़ा.

"नहीं सरकार!"

"तो कौन हैं आप?," साहब ने दोनों हाथों से अपने सिर के बाल नोंचे.

"हमरा नाम अखौरी हुकुमदेव नारायण चंद्रिका प्रसाद वर्मा हुजूर!"

"थाने के स्टाफ हैं आप!"

"नहीं मालिक! हम पास में रहते हैं. जब थानेदार साहब डेरे को जाते हैं तो हम को चाभी दे जाते हैं. हम रात को चौकीदारी करते हैं और भोर में सफाई."

साहब बौखलाए से चले और हादसे की खबर पाकर थानेदार हड़बड़ाए से आए.

"क्यों बे हुकुमा! क्या हो गया?" उन्होंने तफतीश की.

"सरकार! नए आईजी साहब 'सर प्राइज' पर आए थे", हुकुमदेव नारायण चंद्रिका प्रसाद वर्मा ने बयान दिया.

"क्या जमाना आ गया है. अब क्या चौबीसों घंटे थाना खुला रखें. आखिर सब जगह काम का बंटवारा है. दिन में हम करते हैं- रात को तो चोर-डाकू करें," उन्होंने थाने पर लगे ताले का राज उजागर किया.

"कैसी पारस्परिक सहयोग की भावना है. इसी से तो बिहार बिहार बना है," बिहारी चहके.

थानेदार साहब उपस्थित जन समुदाय को समझाने लगे कि 'प्रसासनवा' कितना कमजोर हो गया है, "अब पत्रकार को हथकड़ी लगाओ तो अफसर का तबादला हो जाता है. राज तो अंग्रेज बहादुर का था. मौ खून करो और एक सलाम ठोको! सब साफ! और अब? दस जगह 'परनाम' करो, मत्था टेको, 'परसाद' चढ़ाओ तब तो थाना मिलता है. कोई पूछे कि पत्रकार को नहीं पकड़ेंगे तो क्या तस्कर को पकड़ेंगे?

'माफिया' से पिटेंगे?"

"देखा आपने! हमारे अधिकारी कितने कर्तव्यनिष्ठ हैं," बिहारी बाबू बोले. फिर आईजी साहब की प्रशंसा करने लगे, "ऐसे जब हमारे शिवसागर जी आईजी थे, तब बात ही कुछ और थी."

"वह कैसे," मैंने उत्सुकता जताई.

"वह अपने कायस्थ थे, ये तो भूमिहार हैं न", उन्होंने कारण बताया. यों बिहार में जात-पांत का भेदभाव नहीं है. अधिकतर लोग उसूलों की बोली बोलते हैं और विश्व-भ्रातृत्व में विश्वास रखते हैं. बस जिज्ञासु होने के नाते एक दूसरे की जाति, वर्ण, गोत्र, आदि का पता लगने की उत्सुकता जताते हैं. इस प्रकार सामाजिक क्षेत्र में भी वतन की "लीडरशिप" बिहार के मजबूत कंधों पर टिकी है.

लगता है जैसे बिहार की हर संपदा अंडरग्राउंड है उसी तरह बिहार की अधिकांश प्रतिभा भी "अंडरग्राउंड" है. कोयले की खानों से लेकर इंसानों तक इनमें लीची और लंगड़ा आम जैसे फल और राजेंद्र बाबू तथा जयप्रकाश बाबू जैसे अपवादों को छोड़ दें तो.

"इतनी काबिलियत है फिर भी न लोग नाम कमाते हैं, न प्रांत तरक्की करता है. आखिर क्यों?" मैंने आश्चर्य जताया.

"हमारे यहां हर काम के लिए 'पैरवी' की दरकार है. मेरिट वाला रह जाता है, पैरवी वाला हो जाता है. लेकिन सिर्फ पैरवी के बूते आखिर वह कहां तक जा पाएगा", बिहारी ने रहस्य खोला.

"हमारी सरकार 'सर' और 'कार' के सहारे सरकती है. अब दौड़े भी तो कैसे! हर साल बाढ़ आती है और सड़क बह जाती है. पैरवी और 'पुल' से पुल के ठेके बंटते हैं. कभी न दिखनेवाले निराकार पुल बनते हैं, कभी सड़क. बेरोजगार रोजगार के लिए आंदोलन करते हैं और नौकरीपेशा लोग शोषण के खिलाफ काम करने वाले हैं तो बहुत, लेकिन उन्हें इन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्याओं से फुरसत मिले, तब न काम हो. इसीलिए भारत बंद एकाध रोज होता है, हमारा बंद शाश्वत है", बिहारी ने तकरीर की.

अब तक हम आत्मविकास की उस चरम अवस्था को प्राप्त कर गए थे कि क्षणभंगुर जीवन के सुख-दुख से ऊपर उठकर बुद्धत्व हासिल कर लें. हमारा सिर चकरा रहा था यह सोचकर कि जो है, वह तो नहीं है, तो क्या यह संभव है कि जो नहीं है, वह है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि दफ्तरों में भूमिगत होकर या अदृश्य रहकर कर्मचारी काम में जुटे हों और नेता एक दूसरे की टांग खींचते दिखने के बावजूद जन-कल्याण में. हमें लगा कि बिहार में यह सिफत है कि इंसान को स्थितप्रज्ञ बना दे.

महान ऋषि-मुनि गुफा-कंदरा में रहकर साधना करते थे. अब अपना बिहार इतनी सामूहिक प्रगति कर चुका है कि कहीं आने-जाने की जरूरत ही नहीं है. कोई सिर्फ चंद दिन बिहार में रहे तो अपने आप सांसारिक मोह-लालच, सफलता-असफलता के भाव से ऊपर उठ जाएगा. हम यकायक अकेले नारा लगाने लगे:

देश का नेता कैसा हो?
किसी बिहारी जैसा हो!

—गोपाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी.एस.एफ.सी.

पैकेज

हम आपके सपनों को लाभदायक उद्योगों में साकार करते हैं।

ब्याज की दरों में भारी रियायत

नियम पहले से अधिक उदार – आसान कार्य पद्धति तथा उद्यमियों के लिए एक सम्पूर्ण पैकेज जिसमें हैः

* नये उद्योग लगाने, आधुनिकीकरण तथा विस्तार के लिये साठ लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता।
* रु. ३ करोड़ तक के उद्यमों के लिए वित्तीय संस्थाओं से गठबंधन की सुविधा।
* उद्योगविहीन तथा औद्योगिक रूप से पिछड़े जिलों में उद्योग स्थापित करने हेतु विशेष सहायता।
* महिला उद्यमियों के लिए विशेष सुविधा।

बिहार राज्य वित्तीय निगम

फ्रेज़र रोड, पटना – ८००००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

PROXY

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

To fly an aircraft is simple but to keep it flying requires a calibre, talent and skill which only a few possess.

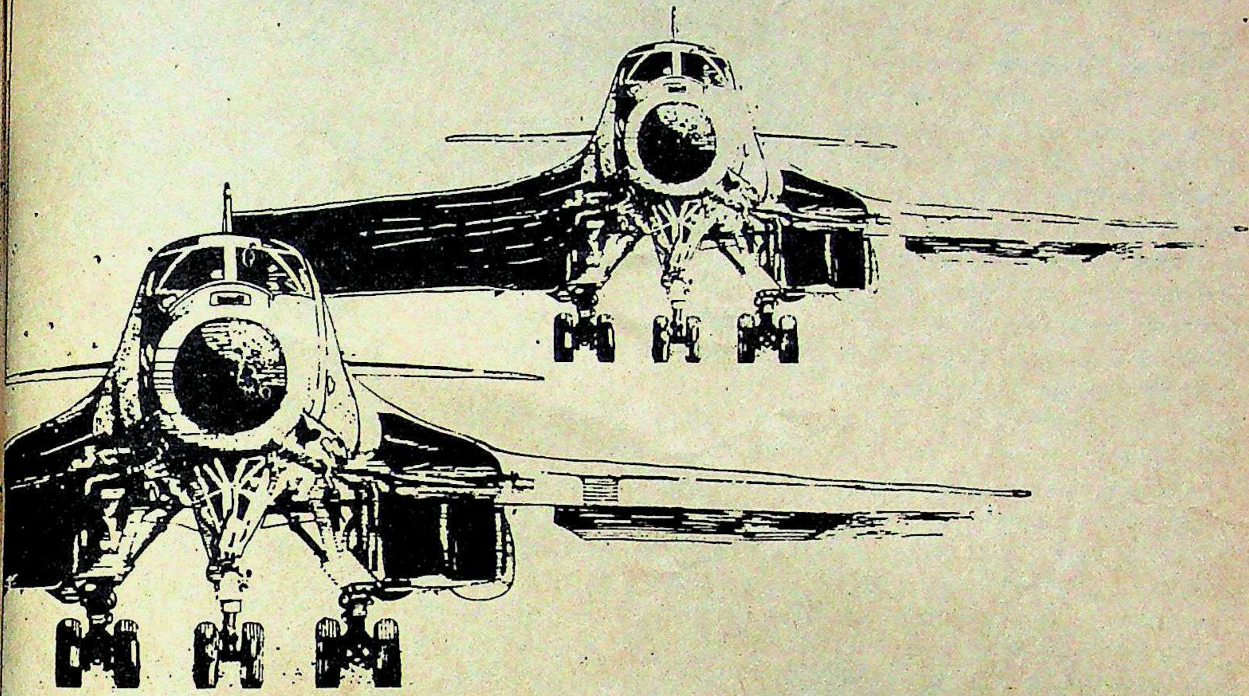

HERE IS YOUR CHANCE

Take off to the high demand world of
Aircraft Maintenance Engineering

If you have passed I.Sc. or equivalent with Physics, Chemistry and Mathematics, then you are eligible for the 3½ years A.M.E. Course.

20% Seats reserved for girl candidates

For Details Contact:

INDIAN INSTITUTE OF AERONAUTICS.

Patna Airport, Patna-800 014

(Approved by Director General of Civil Aviation, Govt. of India to impart Training in the field of Aircraft Maintenance Engineering.)

mahima/IIA/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभरती प्रतिभाएं

जंगल के फूल

वनवासी लड़कों में हॉकी प्रिय

अठारहवीं जूनियर हॉकी नेहरू कप में रांची की टीमः नई पौध

बात है 1977 की. नेहरू जूनियर हॉकी प्रतियोगिता के फाइनल में एस.एस. हाईस्कूल खूंटी (रांची) का मुकाबला पश्चिम जर्मनी की स्कूल एकादश से होना था. खूंटी स्कूल के अधिकांश खिलाड़ी पहली बार दिल्ली आए थे और कुछ तो पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े थे.

फाइनल के पहले टीम के मुख्य गोली को तेज बुखार चढ़ गया. दूसरा गोली भी घायल था. इसका मतलब था कि उस टीम को मैच में किसी अनाड़ी को गोल में खड़ा करना पड़ता. यह तय माना जा रहा था कि जर्मनी स्कूली बच्चों के आगे ये नंगे पांव टिक नहीं पाएंगे.

लेकिन खूंटी के लड़कों ने सारी भविष्य-वाणियां गलत साबित करते हुए बड़े आराम से जर्मनी की स्कूली टीम को पराजित कर दिया और ट्रॉफी जीत ली. भारतीय हॉकी में वनवासी शक्ति की यह दूसरी दस्तक थी. ईसाई मिशनों की मदद से इंग्लैंड पढ़ने पहुंचे खूंटी के ही वनवासी जयपाल सिंह ने 1928 के एमस्टर्डम ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व किया था. उनके बाद से बहुत कम वन-वासी हॉकी खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर चमक सके.

किंडोः मजबूत खूंटा

पुराने रांची जिले, खास तौर से खूंटी, गुमला और सिमडेगा के आसपास के वनवासियों में हॉकी की स्वाभाविक प्रतिभा झलकती है. यहां के मां-बाप परंपरा से अपने बच्चों को हॉकी का डंडा पकड़ाते हैं. हॉकी के मौसम में स्कूल जाते बच्चों के कंधे पर एक तरफ बस्ता और दूसरी तरफ हॉकी का डंडा लदा होना आम बात है.

इस इलाके के गांव-गांव में होने वाले 'खस्सी मैच' यहां की हॉकी की खासियत हैं. मैच जीतने वाली टीम को पुरस्कारस्वरूप खस्सी यानी बकरा मिल जाता है. फाइनल वाले दिन यह ट्रॉफी एक गोल से बांध दी जाती है और फिर उस दिन से मैच में जो हल्ला मचता है, उसमें बकरे की मिमियाहट दब-सी जाती है.

खेल को और भी मजेदार बनाने के लिए इसके नियमों में जरूरी बदलाव कर लेना भी इस इलाके की हॉकी की एक विशेषता है. मैच में अधिक गोल हों, इसके लिए गोल की चौड़ाई बढ़ा देना आम है जबकि कई बार गोलरक्षकों की सुविधा के लिए गोल की चौड़ाई कम भी कर दी जाती है.

सत्तर के दशक में इस इलाके के वनवासी हॉकी खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण और जरूरी सुविधाओं की कमी महसूस करते हुए सरकार ने सबसे पहले एस.एस. स्कूल खूंटी और फिर राजकीय कन्या विद्यालय, रांची को खेल प्रशिक्षक केंद्र घोषित किया. यहां के लिए चुने गए लड़के-लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई और रहने का पूरा खर्च सरकार ने उठाना शुरू किया. पटियाला स्थित खेल संस्थान से प्रशिक्षक बुलाए गए और खिलाड़ियों को छात्रवृत्तियां भी दी गईं.

कुछ समय बाद इन दो स्कूलों में एथलेटिक्स और वॉलीबाल के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई. लेकिन एक दशक से अधिक समय तक ऐसा सघन कार्यक्रम चलाने के बाद यह महसूस किया जाने लगा कि प्रतिभा के धनी वनवासी खिलाड़ियों से शुरू में जितनी उम्मीदें लगाई गई थीं, वे पूरी नहीं हो पा रही हैं.

इस इलाके में खेल प्रतिभाओं के विकास के मार्ग में एक दिक्कत तो यह है कि सेना, सीमा सुरक्षा बल, नौसेना और सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक निगम बड़ी संख्या में वनवासी खिलाड़ी लड़के-लड़कियों की भर्ती करते आ रहे हैं. छोटी से छोटी नौकरी के लालच में ये लोग स्कूल की पढ़ाई खत्म करते ही या उससे पहले उधर रवाना हो जाते हैं. बेहतर खिलाड़ी बनने की जगह नौकरी देने वाले संस्थान की ओर से दनादन मैच खेलकर ये लोग अपनी सारी ऊर्जा पहले ही खत्म कर लेते हैं. फिर वे न तो अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ा पाने की स्थिति में होते हैं और न नौकरी से संतुष्ट.

रांची जिले, खास तौर से खूंटी, गुमला और सिमडेगा के आसपास के वनवासियों में हॉकी की स्वाभाविक प्रतिभा झलकती है

प्रशिक्षक मानते हैं कि वनवासी लड़के-लड़कियों में बहुत प्रतिभा, कुशलता और दमखम है. वे बहुत मेहनती हैं. लेकिन लगभग सभी प्रशिक्षकों की शिकायत है कि आज के खेल के लिए जो निश्चय चाहिए उनमें इसका अभाव है. ऐसे ही एक प्रशिक्षक ने कहा, "माइकेल किंडो जैसे वनवासी हॉकी खिलाड़ी, जिन्होंने भारत का प्रति-निधित्व किया है, अगर आक्रामक की जगह 'रक्षा पंक्ति' में ही खेले तो यह बेवजह नहीं था."

आम तौर पर शर्मीले और चुप रहने वाले वनवासी खिलाड़ी खुद के लिए हवा नहीं बना पाते और अक्सर खेल संगठनों की गुटबंदी का शिकार बन जाते हैं. ऐसी गुटबंदियां तो खैर आम हैं ही. मौजूदा खेल नीति की कड़ी समीक्षा और इसमें जरूरी बदलाव लाए बिना वनवासी खिलाड़ियों की प्रतिभा को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एथलेटिक्स

हर तरह की बाधा के पार

भारतीय एथलीटों की मेहनत मशक्कत रंग लाई

एकाएक 30,000 लोग रोमांचित हो उठे. लोग उस छरहरे मगर गठीले बदन के व्यक्ति को किसी अविजित अश्व की तरह आगे बढ़ते देख रहे थे. 26 वर्षीय अर्जुन देवैया 1600 मीटर की दौड़ के आखिरी दौर में जब सिर पीछे किए, दांत भींचकर लंबी टांगों को खास लय में आगे बढ़ाते हुए जापानी प्रतिद्वंद्वी वाई. ताची से अपना फ़ासला कम करते जा रहे थे तब पूरा स्टेडियम तुमुल ध्वनि से गूंज रहा था. मानवीय शक्ति और गति की जीती-जागती मिसाल कायम करते हुए दोनों 30 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से आगे बढ़ रहे थे. ताची ने आखिरी रेखा को छू लिया. और पूरा स्टेडियम हर्षोल्लास से गूंज उठा.

पिछले पखवाड़े नई दिल्ली में एशियाई ट्रैक ऐंड फील्ड की आठवीं द्विवार्षिक प्रतियोगिता के दौरान भारतीय एथलेटिक्स ने अपनी पूरी पहचान बना ली. लंबे समय से क्रिकेट और हॉकी जैसे खेलों के सौतेले भाई की हैसियत में रहे एथलेटिक्स का रंग इस बार सचमुच निखर आया. भारत-पाक क्रिकेट टेस्ट चलने के बावजूद लगातार पांच दिनों तक अखबारों के पन्नों में स्पर्धा छाई रही. लोग विकेट और मेडन ओवरों के बदले बेटन और हर्डल (बाधा) की बात करने लगे. टैक्सी ड्राइवरों ने इसके प्रतीक चिन्ह मधुमक्खी को देखकर पूछा कि यह किसका चुनाव चिन्ह है और तीन साल के बच्चे भी अपने टीवी सेटों के सामने तकियों को लांघते नजर आए.

इस आयोजन को अनदेखा करना मुश्किल था. एमेच्योर एथलेटिक फेडरेशन ऑफ इंडिया (एएएफआई) के अध्यक्ष सुरेश कलमाडी की भारी चंदा उगाहने की कोशिशों के चलते वे बड़े आराम से चंदे की राशि 7 अंकों तक जुटा ले गए. तिस पर यह कि प्रवेश शुल्क मुफ्त था और सरकारी मदद भी नहीं मिली थी. उन्होंने कहा, "हमारा प्रयास एथलेटिक्स को बेहद लोकप्रिय बनाना रहा है." जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम और दिल्ली की सड़कें बैनरों, झंडों

तीन साल के बाद पी.टी. उषा ने फिर से खुद को एशियाई उड़नपरी के रूप में स्थापित कर लिया

▼ पी.टी. उषा (26 वर्ष): 400 मी. (51:9 सेकेंड), 200 मी. (23:27 से.) और 400 मी. बाधा दौड़ (56:14) में स्वर्ण पदक

▼ बहादुर प्रसाद (24 वर्ष): एशिया के सर्वश्रेष्ठ एथलीट. 1,500 मी. (3:45:77) में स्वर्ण और 5,000 मी. (13:58:93 मि.) में रजत पदक

बहादुर की कामयाबी से मध्य दूरी की दौड़ में भारतीय दबदबे का युग फिर लौट आया

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

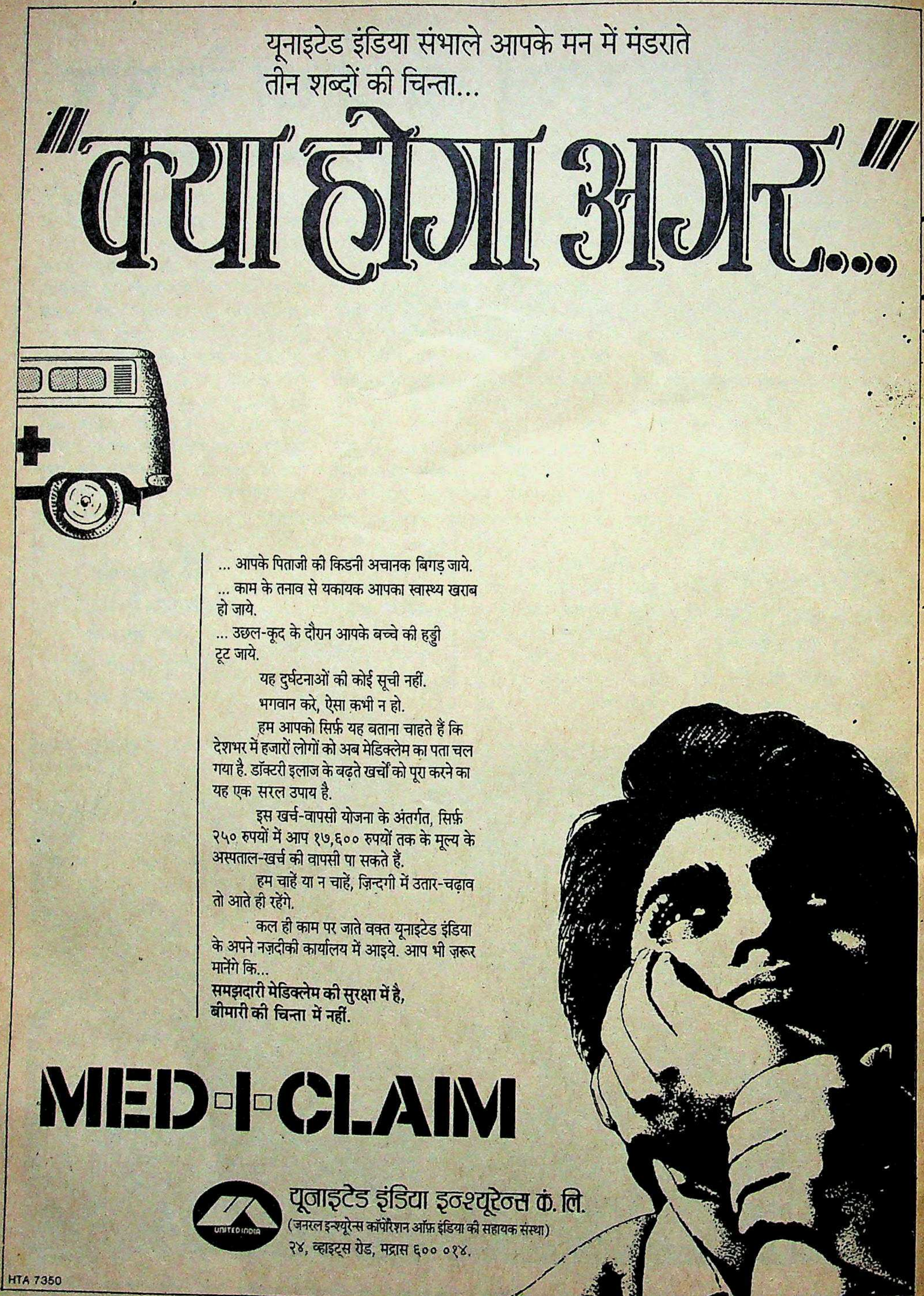

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

▶ बलविंदर सिंह (28 वर्ष): गोला फेंक में स्वर्ण पदक (18:16 मी.)

थोड़ी-सी कोशिश से कई खिलाड़ी अगले एशियाड में पदक हासिल कर सकते हैं

इस उम्र में उसने जो लगातार बेहतर प्रदर्शन किया है वह अच्छा संकेत है

◀ एस.डी. इशान (23 वर्ष): गोला फेंक में कांस्य पदक (17:71 मी.)

और गुब्बारों से भरी पड़ी थीं और इन पर होटलों से लेकर बिस्कुटों तक के विज्ञापन चमचमा रहे थे. प्रमुख आयोजक आईटीसी ने तो 1 करोड़ रु. की भारी-भरकम रकम दी. आई-टीसी कंपनी ने स्टेट बैंक के साथ मिलकर इस आयोजन के पहले जवाहर ज्योति की महा-मैराथन मशाल दौड़ का भी आयोजन किया. इसके 8,800 किमी के यात्रा पथ में चंदा देने वालों की होड़ लगी रही. इस कोशिश से पुराने खिलाड़ियों के कोष के लिए 10 लाख रु. की रकम जुट गई.

इसका प्रचार भी खूब हुआ. इसकी प्रतीक मधुमक्खी 'भारती' शहर के तकरीबन हर बिजली के खंभे पर लटकती नजर आई. स्टेडियम में हर्षोल्लास करती भीड़ खेल के बारे में जानती थी. इसलिए आश्चर्य नहीं कि भारत के पाले में इस बार सात स्वर्ण, नौ रजत और छह कांस्य पदकों की शृंखला किसी एशियाई प्रतियोगिता में पहली दफा आई. हालांकि एशिया के उभरते चैंपियन चीन के 22 स्वर्ण समेत 43 पदकों के आगे यह काफी कम है. फिर भी भारत का सिर ऊंचा ही हुआ है.

अपनी अद्वितीय गरिमा, शक्ति और गति के बूते पी.टी. उषा इस आयोजन में छायी रहीं. उन्होंने इस आयोजन में 400 मीटर (51:9 सेकेंड) और 200 मीटर (23:27 सेकेंड) में नया रिकार्ड कायम किया. साथ ही पहले शाइनी विल्सन और बाद में अश्विनी नाचप्पा ने रजत पदक बटोरा. इन दोनों ने अपना अभी तक का बेहतरीन समय निकाला. युवा कविता गुरारी ने 10 किमी पैदल प्रतियोगिता में अप्रत्याशित रूप से रजत पदक बटोर लिया.

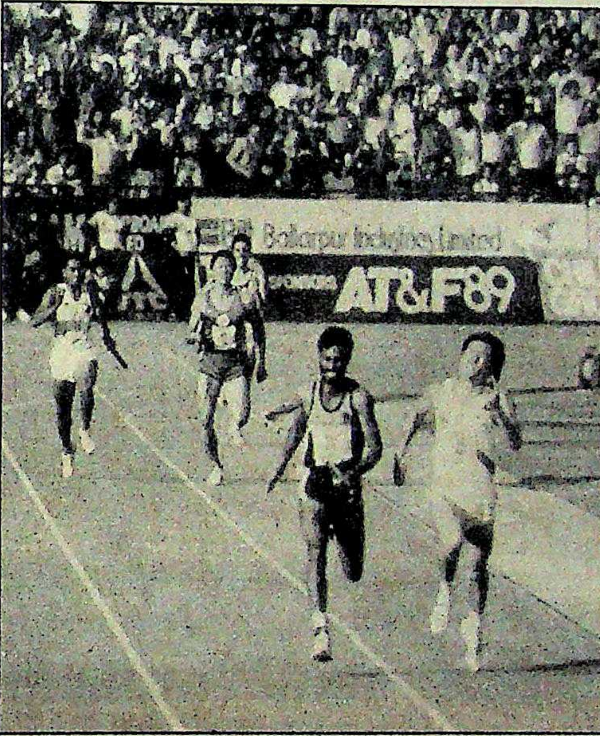

▲ अर्जुन देवैया (26 वर्ष): 4 × 400 मी. टीम रिले रेस (3:07:22 से नया राष्ट्रीय रिकार्ड) में रजत पदक

देवैया ने साबित कर दिया कि भारतीय पुरुष अभी भी फर्राटा भर सकते हैं

लेकिन सुखद आश्चर्य में डाला भारतीय पुरुष खिलाड़ियों ने. अगर बेहतरीन महिला एथलीट का पुरस्कार उषा को मिला तो इस आयोजन के बेहतरीन पुरुष एथलीट रेलवे के खुशमिजाज टिकट चेकर बहादुर प्रसाद रहे. उन्होंने 1,500 मीटर दौड़ में स्वर्ण और 5,000 मीटर दौड़ में रजत पदक प्राप्त किया. पहली दौड़ में उनके ठीक पीछे उनकी टीम के साथी राम निवास रहे. दूसरे दिन के सितारे तो हवलदार दीना राम रहे. 3,000 मीटर के स्टीपलचेज के आखिरी दौर में पानी के गड्ढे को पार करने के बाद उन्होंने अद्भुत जीवट दिखाया. बलविंदर सिंह ने जो गोला फेंका (18.16 मीटर) वह भी स्वर्ण पदक के लिए पर्याप्त दूरी पर पहुंचा. लोकप्रिय चीनी खिलाड़ी मा चंगफेंग चौथे स्थान पर रहे जबकि बंगलूर के एस.डी. इशान ने 17.71 मीटर की दूरी निकालकर कांस्य पदक बटोरा.

लेकिन अंततः इस आयोजन के भविष्य के लिए पदकों की फेहरिस्त उत्साहवर्धक नहीं रही. इससे भारतीय एथलीटों के अपने प्रशिक्षकों के प्रति नए रुझान का पता चला. ये सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के हैं. गुस्से में बहादुर प्रसाद ने कहा कि वे अपने प्रशिक्षक हरगोविंद प्रसाद के अलावा किसी और से प्रशिक्षण नहीं लेंगे. उन्होंने कहा, "अगर उषा का व्यक्तिगत प्रशिक्षक हो सकता है तो मेरा भी हो सकता." लेकिन देवैया अपने प्रशिक्षक की प्रशंसा कर रहे थे. उन्होंने कहा, "(उदय) प्रभु सर ने मेरे लिए कठिन परिश्रम किया है. मुझे चोट के बावजूद दौड़ना पड़ा." शॉट पुट (गोला फेंक) जैसे खेलों में इस बार स्थिति बेहतर दिखी. इसके खिलाड़ी बहादुर सिंह ने कहा, "1982 के एशियाई खेलों में 18 मीटर से अधिक गोला फेंकने वालों में मैं अकेला ही था. अब चार लोग हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे उत्साहवर्धक बात तो खिलाड़ियों में दिखा सुव्यवस्थित और लक्ष्य केंद्रित रुझान है. बहादुर प्रसाद और राम निवास अपने चेहरे से पसीना और उदासी पोंछते और 1,500 मीटर दौड़ में अपने स्वर्ण और रजत पदकों को लहराते ट्रैक से बाहर आए. उन्होंने कहा, "हम बेहतर समय के लिए नहीं बल्कि पदकों की खातिर दौड़े."

मा इक्रोसेकेंड तक के रिकार्ड को तोड़ने का जीवट भारतीय एथलीटों में आ चुका है

▼ बहादुर प्रसाद और राम निवासः 1,500 मीटर में क्रमशः स्वर्ण (3:45:77) व रजत पदक (3:46:53)

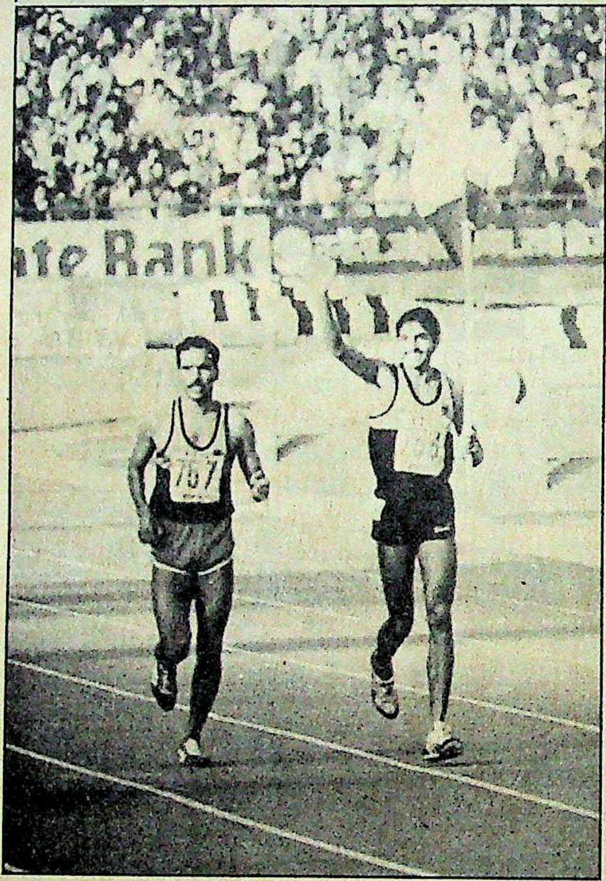

लेकिन साफ है कि भारतीय एथलीटों के रिकार्ड सुधरने लगे हैं. हालांकि इनमें कुछ तो विश्व स्तर के बेहतरीन रिकार्डों में हैं. सितंबर के परमिट आयोजन में बहादुर प्रसाद ने 1966 में बनाया 3:43:7 मिनट का रिकार्ड तोड़ दिया था. पहले 10,000 मी. के धावक रहे बहादुर ने छोटी दूरी की दौड़ के लिए कुछ महीने पहले ही प्रयास शुरू किया था. उनका मौजूदा रिकार्ड 3:43:4 मिनट का है और उनके बाद राम निवास का 3:43:43 मिनट का समय है.

फिर भी भारत को एशिया के बेहतरीन रिकार्ड के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ेगी. 400 मीटर में मिल्खा सिंह के 45:73 सेकेंड के रिकार्ड को अगले साल सितंबर में 30 साल पूरे हो जाएंगे और देवैया का बेहतरीन समय 47:10 सेकेंड का है. हालांकि अद्भुत प्रदर्शन करके उन्होंने 4 × 400 मीटर दौड़ में 3:07:22 मिनट का नया राष्ट्रीय रिकार्ड कायम किया. लेकिन यह जापान के 1986 के 3:2:33 मिनट से 5 सेकेंड पीछे है. बलविंदर भी 18.16 मीटर गोल फेंककर मा चांगफेंग के बेहतरीन 19.09 मीटर से पीछे हैं.

▶ हैरी विल्सनः ब्रिटिश प्रशिक्षक

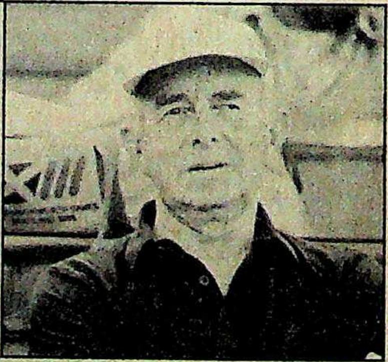

वि ल्सन ने विदेशी प्रशिक्षकों का महत्व साबित कर दिया

हालांकि अभी भी लंबी दूरी नापनी है लेकिन पिछले तीन साल की कड़ी मेहनत से फायदा तो मिला ही है. इंटरनेशनल एमेच्योर एथलेटिक फेडरेशन के महासचिव जॉन हाल्ट की टिप्पणी थी, "संगठन की आचार व्यवस्था, राज्यों के संघ, प्रशिक्षण हर मामले में भारतीय ढांचा दुनिया में बेहतर है."

भारत में प्रशिक्षण शिविर अब हमेशा चलते रहते हैं और खिलाड़ी विदेश में प्रशिक्षण शिविरों और प्रतियोगिताओं में अधिक शामिल होने लगे हैं. अभी पिछले जून में ग्लासगो में लगा शिविर ऐसा ही उदाहरण है. ब्रिटिश प्रशिक्षक हैरी विल्सन और पूर्वी जर्मनी के जॉर्ज रामलो के प्रयास भी असर दिखा रहे थे. दीनाराम, बहादुर प्रसाद, शक्ति सिंह और एशान उनसे प्रशिक्षण ले चुके खिलाड़ियों में शामिल हैं.

ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उद्यम भी खासा असर दिखाता है. इसकी मिसाल बंगलूर स्थित सुनील और रीथ अब्राहम दंपती के 'श्योर' शिविर हैं. एशियाई एमेच्योर एथलेटिक एसोसिएशन के महासचिव मोरिस निकोलस कहते हैं, "भारतीय एथलीटों को उपलब्ध प्रोत्साहन एशिया के दूसरे मुल्कों में देखने को नहीं मिलता." इस आयोजन में स्वर्ण पदक पाने वालों को सरकार ने 1 लाख रु. और एएएफआई ने 50,000 रु. देने का वादा किया था. साथ ही और भी नकदी पुरस्कार थे. कांस्य पदक बटोरने वाला भी 80,000 रु. की उम्मीद कर सकता था.

कट्टर आलोचकों को हालांकि शिकायत थी कि खेल प्रतियोगिता को किसी पैसा कमाऊ उत्सव में बदल दिया गया. आयोजन के और भी आकर्षण थे. जैसे आयोजन की शुरुआत में कुलाचे भरते कंगारू और दुलकी चाल चलते घोड़ों का नृत्य. इतना ही पर्याप्त न मानकर कलमाडी ने गैरोन प्रभाकर को इसमें जोड़ा और एलिक पद्मसी की अगुआई में एक टोली ने बंबइया शैली के नाच-गाने का हंगामा ही खड़ा कर दिया. इसके अलावा हरियाणा के सूरजकुंड पर्यटन परिसर में स्थित एथलीट गांव में शाम को सपेरों का खेल और ऊंट की सवारी चल रही थी.

इस आयोजन में कोई एशियाई रिकार्ड नहीं टूटा. इस तरह एशिया में भारतीय प्रभुत्व की बात इससे साबित नहीं होती. लेकिन इससे हाल की देसी प्रतियोगिताओं में सुधार की बात सिद्ध हुई. इससे यह जाहिर हो गया कि अगले एशियाई खेलों में भारत कुछ स्वर्ण पदकों का दावेदार बन सकता है. यह बात अभी कुछ महीने पहले तक संदिग्ध लगती थी. मौजूदा हालत में उषा भी दो स्वर्ण पदकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तस्वीर कहती है क्या, सुनिए मेल्ट्रैक पर

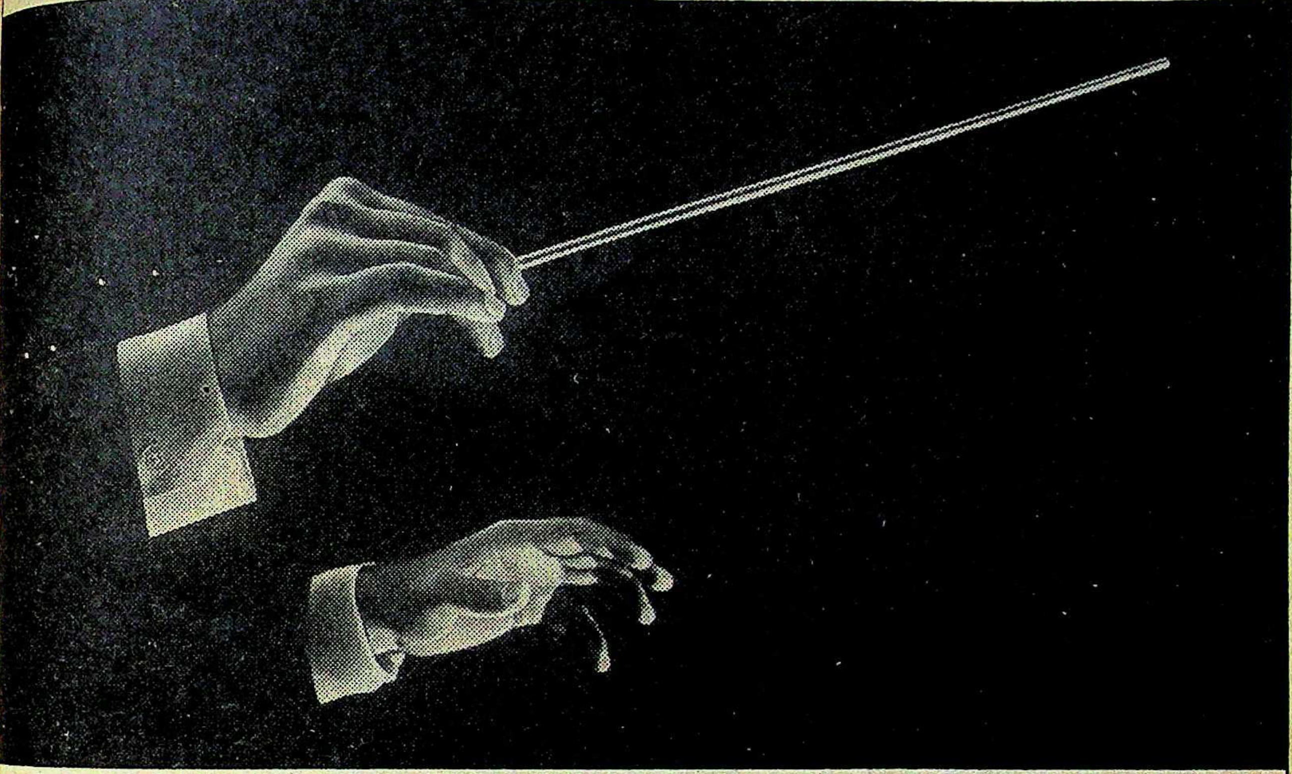

संगीतकार की आत्मा... रागों की रचना। स्वरों की जादूगरी। लय, ताल और धुन का संगम। यह है संगीत। मन का मृदुल महानाद। और संगीत को एक अनमोल भेंट – मेल्ट्रैक।

जापान की प्रमाणित तकनॉलॉजी। सख़्त क्वालिटी कंट्रोल और परीक्षण। इन सब का नतीजा है आवाज़ का यह जादूगर। मेल्ट्रैक। ताकि संगीत का वही रस मिले जिससे आपको प्रेम है। अनुराग है।

मेल्ट्रैक। संगीत की सांसों ने बुना यह सुरीला नाम।

MURUGAPPA ELECTRONICS LTD.

मेल्ट्रैक
ऑडियो कैसेट
सुरीली सुहानी आवाज़.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:M:ME:3746 Hin

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(400 मीटर दौड़ और रिले में) की उम्मीदवार हो सकती हैं. साथ ही अगर भाग्य ने साथ दिया तो वे अपनी प्रिय बाधा दौड़ में भी उम्मीद कर सकती है. इसके अलावा अगर मद्रास राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल न होने के कारण इस आयोजन से बाहर रहने वाली वंदना राव भी लौट आती हैं तो महिला रिले टीम अपने 3:31:55 मिनट के एशियाई रिकार्ड को कुछ बेहतर बना सकती है.

इनके अलावा सिर्फ बहादुर प्रसाद और राम निवास एशियाई खेलों में पदकों के भारतीय उम्मीदवार हो सकते हैं क्योंकि पेइचिंग में चीनी जांबाजों के लिए स्वदेशी मैदान मिल जाएगा. और जापानी तो इस बार अपने चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी मिजो गुची और पोल वाल्टर यामादाह के बगैर एक नई टीम लेकर आए थे. जाहिर है कि इसे एशियाई खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए तैयार किया जा रहा है.

ऐसे ही दूसरे देश भी मुकाबले में होंगे. कतर के एथलेटिक्स अधिकारी बाघतोलास सलेम ने कहा, "हम यहां यह देखने आए हैं कि मैदान कैसा है. हमने पेइचिंग के लिए अपनी बेहतरीन टीम सुरक्षित रखी है."

▲ पी.टी. उषा, मर्सी कुट्टन, शाइनी विल्सन और के. शरम्मा, 4 × 400 मीटर रिले दौड़ की टीमः स्वर्ण टीम (3:32:95 के रिकार्ड के साथ).

भारत की प्रिय स्पर्धा की पुरानी टीम बदल जाने के बावजूद ये लड़कियां मैदान में काफी आगे रहीं. यह धाविकाओं के अदम्य जीवट का सबूत है

यही नहीं, उषा और अश्विनी नाचप्पा के सामने भी अगले साल शायद फिलीपीन की लीडिया दे वेगा भी होंगी. वे प्रसव के कारण इस आयोजन में नहीं आ सकीं. दे वेगा का 200 मीटर का बेहतर समय (23:35 सकेंड) उषा के बेहतरीन (23:44 सेकेंड) से बढ़िया है. साथ ही चीनी खिलाड़ी च्यांग शियाओ शिंग का 23:41 सेकेंड का रिकार्ड भी है. शाइनी की पक्की दावेदार मानी जाने वाली आधे मील की दौड़ में भी अब दो चीनी खिलाड़ी आ गई हैं. सुन सुमई (1:58:56 मिनट) और फेंग यानवो (2:1:29 मिनट) भारतीय रिकार्ड 2:3:16 मिनट से काफी आगे हैं.

भले ही अगले एशियाई खेलों में शैंपेन की बोतलें दनादन नहीं खुल पाएंगी फिर भी यह तो कहा ही जा सकता है कि भारतीय खेलों ने सही पटरी पकड़ ली है. अभी खिलाड़ी कुछ सुस्ता रहे हैं पर एएएफआई की आंखें दूर भविष्य पर लगी हुई हैं. कलमाडी ने कहा, "एथलेटिक फेडरेशन का जोर अब जूनियर एथलेटिक्स खिलाड़ियों पर ही है."

इस संघ ने छह साल की योजना तैयार की है. देश भर में राज्यस्तरीय और क्षेत्रीय आयोजनों के बाद 40 से 50 के बीच लड़कों (17-18 आयुवर्ग के) और लड़कियों (16-17 आयुवर्ग के) को सघन प्रशिक्षण के लिए चुना जाएगा. पहली जमात खड़ी हो चुकी है और उनका प्रशिक्षण भी इन्हीं गर्मियों में शुरू होने जा रहा है. विचार गर्मियों की छुट्टियों में चार से छह हफ्ते का प्रशिक्षण शिविर लगाने का है और बाद में दो हफ्ते के शिविर लगाने का. इनमें से कुछ अगले साल एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में हिस्सा लेंगे और उनमें से 1994 के एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम का एक हिस्सा बनेगा.

हर दो साल में एक नई जमात तैयार हो जाएगी ताकि यह प्रक्रिया जारी रहे. कलमाडी कहते हैं, "सन् 2,000 तक हमारा इरादा विश्व चैंपियनों की जमात खड़ी करना है." अगर सरकारी संस्थाएं भारतीय खेल प्राधिकरण और एएएफआई इस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करती हैं तो भारतीय एथलेटिक्स के खिलाड़ियों के लिए कोई बाधा पार करना मुश्किल नहीं होना चाहिए.

—डेविड देवदास और बीनू के जॉन

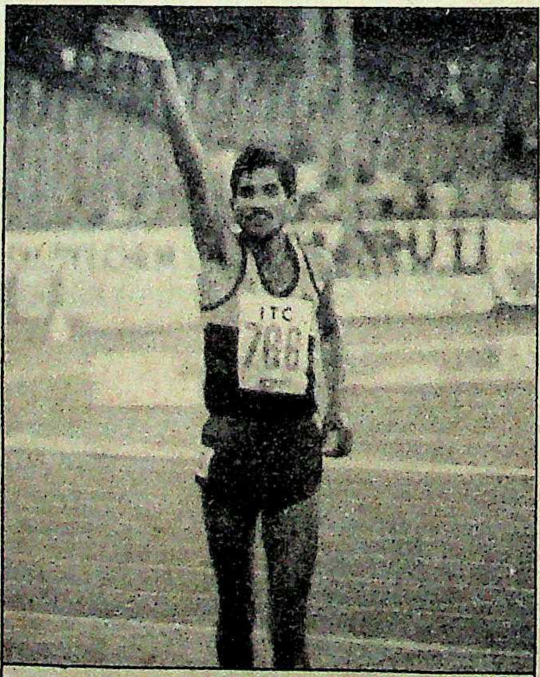

▲ दीना राम (25 वर्ष): स्टीपल चेज में स्वर्ण पदक (8:48:16)

दीना राम ने इस खेल में भारत की श्रेष्ठता को फिर सिद्ध किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्योर न्यू वुल. एक अपना ही अन्दाज़.

प्योर न्यू वुल के बने शानदार ऊनी कपड़े.
...सम के रुख को ऐसे पहचानें कि सर्दी में
...पको गर्म रखें और गर्म में ठंडा-ठंडा. पहनने
...भी कितने नरम, मुलायम. सिकुड़न को तो पास
...नहीं आने देते. आपके सपनों की तरह आपसे
...पट जाएं. इनका स्टाइल ऐसा कि हमेशा
...शन से मेल खाए.
प्योर न्यू वुल के ऊनी कपड़े. इन्हें घर ले आइए.

Woolmark
(वूलमार्क)
PURE NEW WOOL

O&M/5540 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चा की चाह

शबाना आजमी ने यह साबित करने में कोई कसर नहीं रहने दी है कि वे **रेखा** से किसी तरह कम हैं.

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि अपनी-अपनी स्टाइल में दोनों आज भी टॉप हीरोइनें मानी जाती हैं. अपने से कम उम्र नायकों के साथ दोनों के नाम जोड़े जाते रहे हैं, कुछ अलग कर दिखाने के लिए दोनों फ्लॉप फिल्मों में भी काम करती रही हैं. लेकिन काम न होने के कारण इधर दोनों ही 'न्यूज' में बने रहने के मौकों की तलाश में छटपटा रही हैं. रेखा ने इसके लिए जब ऊंचे दर्जे का स्क्रीन प्ले तैयार करके अपने अपहरण की कोशिश की कहानी के जरिये पत्र-पत्रिकाओं में जगह पा ली, तभी से शबाना खुद को कुछ पिछड़ा महसूस कर रही थी. लेकिन उनकी एक मुश्किल यह भी है कि वे रेखा की तरह 'चीप गिमिक्स' नहीं कर सकतीं. उन्हें अपने कामों में बुद्धिजीवी होने का मुलम्मा चढ़ाने का शौक है.

इसी शौक को पूरा करने के साथ रेखा से 'वन अप' रहने का मौका निकालते हुए उन्होंने पहले महिला पत्रकारों के प्रति सहानुभूति जताने के लिए बंबई टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन के बाहर धरना दिया था और अब उस पब्लिसिटी से प्रभावित होकर बंबई में नुक्कड़ नाटक करने में लगी हुई हैं. यह उनके अतिनाटकीय रुझानों का ही एक और नमूना है कि जब उनके जुहू स्थित घर के साथ लगे पृथ्वी थियेटर में थियेटर प्रेमियों का नाट्य समारोह चल रहा था तब शबाना घर से 30-40 किलोमीटर दूर, शाम के बेहद भीड़भाड वाले समय में चर्चगेट स्टेशन के बाहर प्रचारवादी नाटक करने में लगी थीं.

शबाना और रेखाः सेर और सवा सेर

आमिर और जुहीः नोंकझोंक

बढ़ती खटास

आमिर खां और **जुही चावला** की जोड़ी के बीच बढ़ती खटास अभी हाल में तब और बढ़ गई जब आमिर ने एक शूटिंग के दौरान जुही को जानबूझकर नीचा दिखाने की कोशिश शुरू कर दी.

इस जोड़ी पर एक प्रेम गीत फिल्माया जा रहा था जिसके साथ नृत्य भी था. हालांकि इस जोड़ी में से कोई भी अच्छा डांसर नहीं है लेकिन जुही के स्टेप्स खास तौर पर खराब हो रहे थे. आमिर को ज्यादा नाचना भी नहीं था. आर्टिस्ट विश्वास से काम करे तो ऐसी दिक्कतें जरा-सी देर में आई गई हो जाती हैं लेकिन आमिर तो जैसे जुही का साथ देने नहीं, विश्वास डिगाने ही आए थे. वे पहले जुही की गलतियों पर मुस्कराए, फिर ठहाके लगाने लगे.

जुही बड़ी देर तक तो गुस्सा जब्त किए रहीं लेकिन अपनी हंसी को भी बेकार जाता देख जब आमिर ने बाकायदा उनकी खिल्ली उड़ानी ही शुरू कर दी तो जुही ज्यादा बरदाश्त नहीं कर सकीं. मामला तू तू... मैं मैं पर उतरता देख निर्देशक ने वह शॉट पैकअप करवा कर बला टाली दी.

"इस सारे मामले की जड़ जानते हैं क्या है?" जुही ने बाद में बताया, "एकता, जिसके साथ आमिर ने देव साहब की फिल्म 'अव्वल नंबर' में एक्स्ट्रा का रोल किया है. आजकल आमिर साहब के सपने उसी के साथ अमीर हो रहे हैं."

खून खून का फर्क

परदे पर जाने कितने —खून कर दिए, करवा दिए लेकिन जब बात अपने खून की चलती है तो बस, खून के घूंट पीकर रह जाना पड़ता है. **रजा मुराद** का यह अपना खून है सोनम. वह उनकी भांजी यानी बहन की बेटी है. अभी हाल में सोनम ने एक बार फिर एक बड़े फोटोग्राफर के साथ एक सनसनीखेज फोटो सेशन शुरू किया. रजा इस तरह के सेशनों के सख्त खिलाफ हैं क्योंकि वे जानते हैं कि कुछ घंटों की यह करामात कल रक्तबीज दानवों की तरह सौ जगह प्रकट (छप कर) होकर शरीर का कोई कोण कल्पना के लिए बाकी नहीं छोड़ती. सो, वे अपनी शूटिंग छोड़ चल पड़े मॉडल और फोटोग्राफर दोनों को सबक सिखाने.

लेकिन जब तक वे फोटोग्राफर के स्टुडियो पहुंचते, फोटोग्राफर ने मॉडल बदल दी और अब उनकी भांजी के बदले जो पेड मॉडल आई वह सोनम से सौ गज आगे थी. यह फोटो सेशन रजा को इतना भाया कि वे सारे दिन स्टुडियो में ही रमे रहे.

यही होता है खून खून का फर्क.

रजा मुरादः ऐसे पूरी हुई मुराद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज आगे थी.
को इतना
स्टुडियो में

न का फर्क.

...लियों की गोलाबारी

...र हालांकि कई दिन पहले ...ई थी लेकिन गालियों का ...बारूद दगा उस दिन जब हाल ...ी फिल्म 'पराक्रमी' का मुहूर्त ...के फिल्मिस्तान स्टुडियो में ...हुआ.

...र्त के साथ एक पार्टी भी हुई. ...नी में आज के पराक्रमी हीरो ...**चक्रवर्ती** के साथ हीरोइन की ...ा हथिया ली है **संगीता** ...ानी ने. और इस तरह उन्होंने ...कट्टर प्रतिद्वंद्वी सोनू वालिया ...ारी मात दी है क्योंकि इसी ...के लिए सोनू ने भी जमीन-...ान के कुलाबे मिला दिए थे. ...ामयाबी उसके हाथ नहीं लग ...पार्टी में संगीता से जब यह ...कि वे सोनू को कैसे पछाड़ पाईं ...न्होंने सोनू का नाम लिये बगैर ...कुछ लड़कियां सिर्फ तन से ...न करती हैं और कुछ मन से. ...से काम करती हूं इसलिए ...तो मेरा ही होना था."

...ीता ने 'तन से एक्टिंग' कह-...ोनू वालिया पर 'आकर्षण' में ...र तन की नुमाइश करने पर ...मारा था और वह भी इसलिए ...ोनू उनका जिक्र सदा 'कपड़े धोने वाली' कहकर करती हैं. इसके अलावा गौर तलब यह भी है कि टिप्पणियों और तानों के ये तीखे इशारे दोनों के ही व्यक्तिगत संबंधों का भी पर्दाफाश करते हैं.

संगीता का कमेंट सोनू को सुनाने और सोनू के जवाब संगीता तक पहुंचाकर मजा लेने वालों की बदौलत दोनों के 'डर्टी लिनेन' की वह धुलाई देखी सुनी गई कि शालीन कलम उसका कुछ भी हिस्सा लिखने में शर्म से स्याह हुई जा रही है.

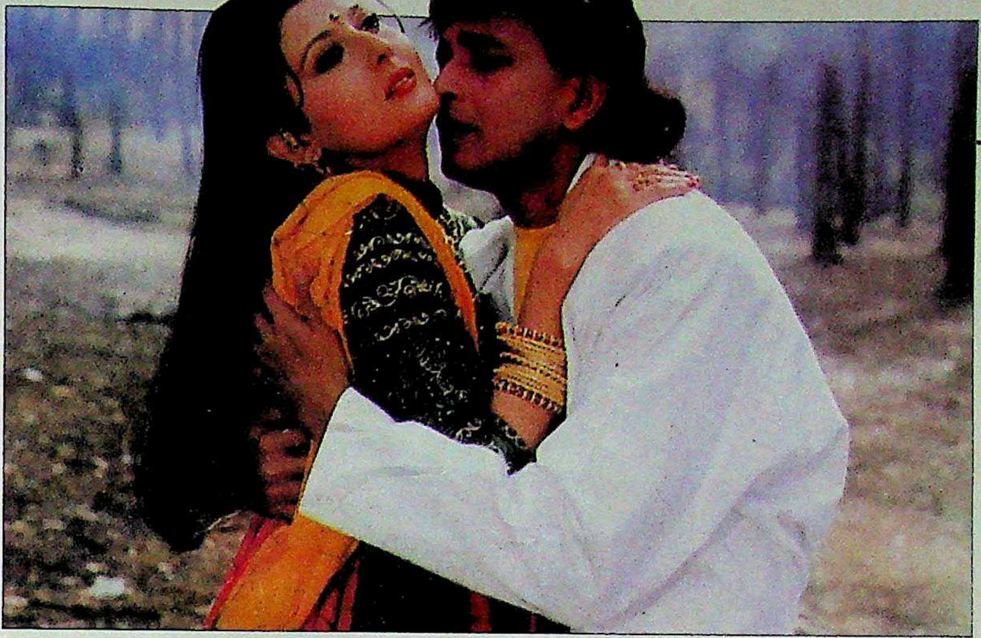

मिठुन और संगीताः पछाड़ने का पराक्रम

आलू का वजन

...न के डर ऐसे होते हैं कि रस्सी ...ांप नजर आने लगती है. शायद ...िए **किमी काटकर** उस पार्टी ...ो एक बड़े प्रोड्यूसर ने अपना ...दिन मनाने के लिए फाइव ...होटल में दी थी, भड़क गईं. ...इतना ही पूछा गया था, ...कल आपका वजन कुछ ज्यादा ...ता नजर आ रहा है. फिगर ...ेकर रखनी क्यों छोड़ दी ...?" किमी बुरी तरह नाराज ...ईं लेकिन वहां मौजूद कोई ...ार किमी को वहां से हटा ले ...और प्यार से समझाया, "इस ...का इतना ज्यादा बुरा मानने ...ा जरूरत थी? इन्हें तो यूं ही ...ना सीखो."

...आप नहीं समझते," किमी ...ी ही रहीं, "अगली बात वे ...यही पूछते कि कहीं इसकी ...आपका फोटोग्राफर ब्वाय फ्रेंड ...हीं? सुना है आप दोनों इसी ...में जल्दी में शादी कर लेना ...है... ऑल सार्ट्स ऑफ रबिश..." लेकिन समझाने वाला पहुंचा हुआ उस्ताद था. उसने कहा, "आप यह क्यों नहीं सोचतीं कि सवाल पूछने वाले एक तरह से आपकी फिगर की तारीफ ही तो कर रहे थे."

बात किमी को समझ आ गई. वे खुशी-खुशी पार्टी में लौट आईं और सवाल पूछने वाले को बता डाला, "आप पूछ रहे थे न मैं मोटी क्यों होती जा रही हूं? इसकी वजह है आलू! मुझे खाना न मिले, पानी न मिले, चलता है, पर आलू को देखकर मेरी लार टपकने लगती है. मैं खुद पर काबू नहीं रख पाती."

अपनी तरफ से शानदार जवाब दिया था किमी ने लेकिन पूछने वाला यह कहकर उन्हें अवाक् छोड़ गया "आलू? बड़ा अजीब नाम है आपके ब्याय फ्रेंड का."

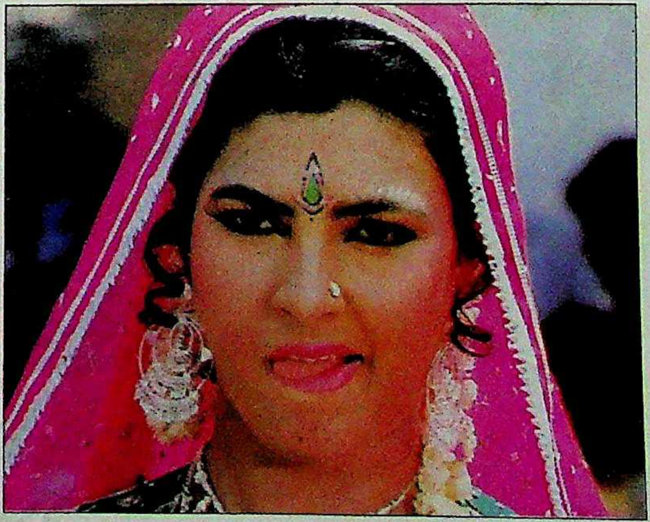

...किमीः आलू से बेकाबू

बहती गंगा का लोभ

लगता है हिंदी फिल्मों के परदे पर पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ी **मोहसिन खान** ने एक मजबूत पारी की नींव जमा ली है. अब यह लगने लगा है कि रीना राय ने अपने मियां को फिल्मी मैदान में उतारने का जो फैसला किया था वह आखिर सही साबित होगा. वैसे, कई पंडितों ने उस पर शक की सूई घुमाई थी.

मड आइलैंड में 'फतह' की शूटिंग के समय फौजी बने मोहसिन ने जिस तर्ज में बातचीत की, वह सचमुच चौंकाने वाली थी. 'बटवारा' फिल्म में अपनी असफलता के जिम्मेदार डायरेक्टर जे.पी. दत्ता को उन्होंने जोरदार बचाव किया और दावा किया कि "सन् '90 मेरा ही साल होगा." इस विश्वास के पीछे सबसे बड़ी वजह यह है कि महेश भट्ट ने उन्हें एक नहीं, दो-दो फिल्मों के लिए साइन कर रखा है.

लेकिन अंदरूनी बात कुछ और ही है. सच यह है कि हिंदी फिल्मों की जानी-मानी हीरोइनों ने मियां मोहसिन को कभी घास डाली ही नहीं. इससे मार खाकर उन्होंने एक खूबसूरत पाकिस्तानी लड़की ढूंढ निकाली और अब निर्माताओं पर दबाव डाल रहे हैं कि उनके साथ उसकी बड़े पैमाने पर लॉंचिंग की जाए. बताया जाता है कि 'हिना' की हीरोइन जेबा की तरह यह लड़की भी पढ़ी-लिखी है और 'हिना' की खोज के समय उसके नाम पर भी विचार किया जा रहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामस भोजानी

शीना: खूबसूरती भी, प्रतिभा भी

◆ कंप्यूटर बेचने और वस्त्रों की मॉडलिंग में भले ही कोई साम्य न हो लेकिन छह फुट लंबी, 25 वर्षीया **शीना सिंह** को दोनों व्यवसायों में एक-सी महारत हासिल है. ईव्स सां लारां फैशन शो में सैकड़ों खूबसूरत प्रतियोगियों को पछाड़कर जाने-माने वस्त्र डिजाइनर लारां की मॉडल बनने का गौरव हासिल करने वाली शीना मार्केटिंग ऐंड डेटाबेस मैनेजमेंट से जुड़ी रही हैं और फिलहाल बंबई की एक जनसंपर्क फर्म में कार्यरत हैं. रूसी भाषा पर उनका खासा अधिकार है और वे चीफ एक्जिक्यूटिव बनने का सपना पाले हुए हैं. बकौल शीना, "मेरी शुरू से धारणा रही कि खूबसूरती को भुनाने के बजाए मैं अपनी प्रतिभा के बल पर ही आगे बढ़ूं," लेकिन कौन जाने पेरिस की चकाचौंध भरी फैशन परेडें उनके इस दावे पर कब हावी हो जाएं.

◆ आयोजकों को तो उम्मीद थी कि वे एशियन ट्रैक ऐंड फील्ड मीट का सबसे बड़ा आकर्षण साबित होंगी. लेकिन सबसे ज्यादा निराश भी उन्होंने ही किया. **शैरोन प्रभाकर** ने जब लुभावनी अदा मे दर्शकों को 'आओ मेरे साथ गाओ' का आमंत्रण दिया तो कोई अपनी जगह से नहीं हिला. अब शैरोन ने 'एक-दो-तीन' गाने पर थिरकना शुरू किया. फिर भी कोई साथ देने नहीं आया. लेकिन सबसे ज्यादा दुर्गति तब हुई जब हाईड्रॉलिक लिफ्ट ने उन्हें काफी समय तक कार्डबोर्ड के पट्टे पर ही बिठाए रखा. हुआ यह कि कुछ अनियमितताओं की वजह से समापन समारोह लंबा खिंच गया और शैरोन कम-से-कम सैकड़ों बार एक-दो-तीन गिनते हुए वहीं अटकी रहीं.

प्रमोद पुष्करणा

शैरोन: गिनती अटकी

मर्चेंट और आइवरी

◆ फिल्म निर्माता **इस्माइल मर्चेंट**, निर्देशक **जेम्स आइवरी** और पटकथा लेखक **रूथ पी. झाबवाला** की तिकड़ी से आप क्या उम्मीद करेंगे? भारतीय पृष्ठभूमि या किसी साहित्यिक कृति पर फिल्म? लेकिन इस बार ये ईवान कॉनेल के बहुचर्चित उपन्यास 'मिस्टर ऐंड मिसेज ब्रिजेज' पर फिल्म बना रहे हैं जो शादी और घरेलू समस्याओं से संबंधित है. प्रमुख भूमिका नीली आंखों वाले सुपर स्टार पॉल न्यूमैन निभा रहे हैं. उनकी पत्नी जोन वुडवर्ड भी फिल्म में उनके साथ हैं. मर्चेंट कहते हैं, "यह बड़ी परियोजना है." हां, इसमें भी निर्माता का भारत प्रेम झलक जाता है. फिल्म में वुडवर्ड का नाम इंडिया ब्रिजेज जो है.

◆ पिछले एक महीने से राष्ट्रपति सचिव का पद खाली पड़ा था. आखिरकार, राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन को अपना इस्तीफा सौंपने के साथ राजीव गांधी सरकार को उनके सचिव के खाली पद का भी ध्यान आ गया और जाते-जाते उसने **बॉब मुरारी** को उनकी सेवा में नियुक्त कर दिया. नई नियुक्ति के बारे में सूचना और प्रसारण सचिव मुरारी की टिप्पणी थी, "राष्ट्रपति के साथ काम करना मेरे लिए प्रतिष्ठा और गौरव की बात है." मौजूदा स्थिति में राष्ट्रपति के सलाहकारों की महत्वपूर्ण भूमिका के मद्देनजर यह तो कहा ही जा सकता है कि पूर्ववर्ती सरकार के कम-से-कम एक अधिकारी का रुतबा पूर्ववत बना रहेगा.

मुरारी: प्रतिष्ठापूर्ण पद

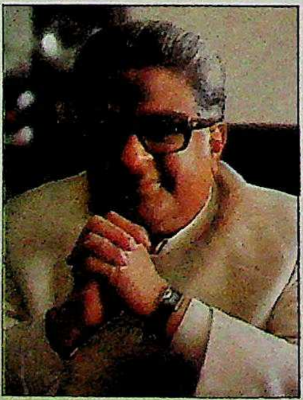
प्रमोद पुष्करणा

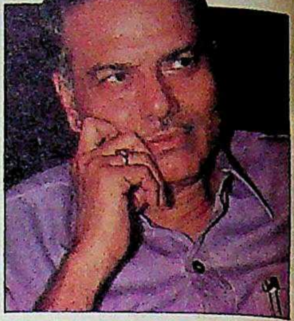
शरद सक्सेना

सिन्हा: सौम्य शिष्ट

◆ जनता दल के गवई स्वरूप को देख नाक-भौं सिकोड़ने वाले देश के अभिजात वर्ग के लोग पार्टी के नए प्रवक्ता **यशवंत सिन्हा** को देखकर जरूर थोड़ा खुश हुए होंगे. चुनाव चर्चा के दौरान सिन्हा ने अपनी सौम्यता, शिष्टता और मुहावरेदार भाषा से सभी को मुग्ध कर दिया. लेकिन पूर्व आईएएस अधिकारी सिन्हा थोड़े खिन्न भी हैं. "मेरे जैसे विनम्र आदमी को भी कभी-कभी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करनी पड़ती है." लेकिन लोगों की प्रतिक्रिया ठीक है तो चिंता क्यों?

हेमंत पिठवा

परवीन: दुखद वापसी

◆ जब वे फिल्मी दुनिया में आईं तो 'जीनत अमान की कॉपी' कहलाईं. छह साल पहले उनका गायब हो जाना पहेली बना रहा. 'टाइम' जैसी पत्रिका के मुखपृष्ठ पर जगह पाने वाली सत्तर के दशक की सेक्स बम **परवीन बाबी** अब लौट आई है. लेकिन अब उन पर दया आती है. सूजे गाल और बिखरे बाल वाली परवीन का कहना है कि एक बड़े अभिनेता ने उन्हें मारने का षड्यंत्र रचा था लेकिन दुख तो इस बात का है कि उनका दुखड़ा सुनने वाला कोई नहीं है. जाहिर है, यह वापसी उनके लिए दुखदायी रही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निपरीक्षा का दौर

नई सरकार ने आश्चर्यजनक सहजता और उद्देश्यपूर्ण ढंग से कामकाज शुरू कर दिया है. गृहमंत्री की बेटी का अपहरण जरूर एक अनहोनी घटना थी पर यह शुरुआत उत्साह-वर्द्धक है. मंत्रालयों के बंटवारे और कई मुद्दों पर जाहिर हुई नई नीतियों का स्वागत हुआ है.

आवरण कथा 14

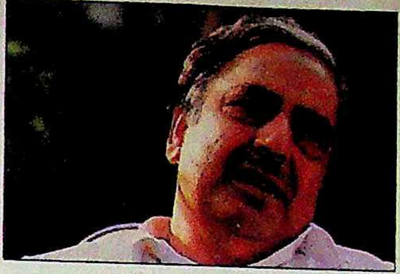

दुःस्वप्न का सुखद अंत

गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबाइया की जम्मू-कश्मीर मुक्ति मोर्चे के उग्रवादियों के कब्जे से रिहाई से देश में पांच दिनों तक चले संकट का अंत हुआ. बहरहाल, अपहरण की इस घटना से राज्य के बदतर हालात की ओर देश का ध्यान गया है.

खास रपट 26

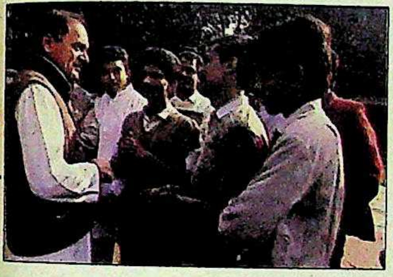

धक्के से उबरने की कोशिश

कभी सर्वशक्तिमान रही कांग्रेस (इ) चुनाव में हुई हार के बाद धूल झाड़ रही है. उधर पार्टी के दिग्गजों को फिर अहमियत दी जाने लगी है. अब पार्टी को बलि के बकरों की तलाश है लेकिन उंगलियां राजीव गांधी को घेरे रहने वाली उनकी सखा मंडली पर ही उठ रही हैं.

खास रपट 38

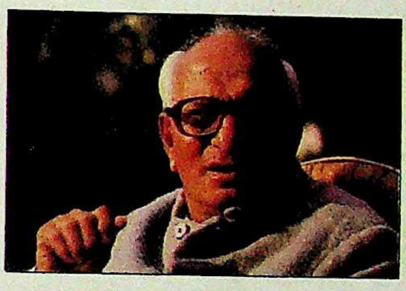

सर्वहारा के कल्याण की ओर

गद्दीनशीन होने के कुछ दिनों बाद घोषित नई सरकार की आर्थिक नीतियों की चहुं ओर प्रशंसा हुई है. लेकिन इन नीतियों पर अमल सरकार की इच्छा-शक्ति के अलावा इस पर भी निर्भर करेगा कि वह विरासत में मिली आर्थिक गुत्थियां सुलझाने में कितनी सफल होती है.

कारोबार....................................56

बला की बिजलियों को बुलावा

बेनजीर भुट्टो ने सरकार में साल तो पूरा कर लिया पर उनके सिर पर अविश्वास प्रस्ताव की तलवार लटक रही है और हर तरफ उनके तौर-तरीकों की आलोचना हो रही है. वे मौलिक परिवर्तन लाने में नाकाम रही हैं. फिर भी उनके लिए कोई वास्तविक खतरा अभी नहीं है.

पास-पड़ोस....................................69

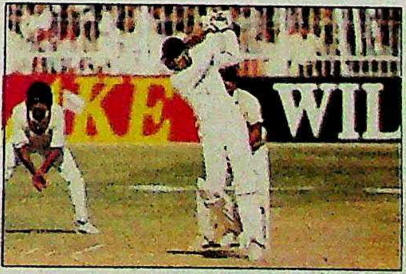

बल्ला और गेंद फिर काबू में

भारतीय क्रिकेट टीम पाकिस्तानी शृंखला में अपना गौरव फिर स्थापित करके अपमानजनक स्थिति से उबर गई है. इसमें सबसे अधिक प्रशंसा के पात्र निश्चय ही संजय मांजरेकर रहे. गौरव वापस लाने की कसरत में खिलाड़ियों की खेल भावना, एकजुट प्रयास काबिलेतारीफ है.

खेलकूद 79

कसौटी....................................9
तेवर....................................10
राजरंग....................................11
हिंदोस्तां हमारा....................................12
बीता पखवाड़ा....................................13

आवरण कथा
नई सरकार: अग्निपरीक्षा का दौर 14

खास रपट
रुबाइया: दुःस्वप्न का सुखद अंत 26
कांग्रेस (इ) नेता:
जाने कहां गए वो दिन 30
कांग्रेस (इ):
धक्के से उबरने की कोशिश 38
उत्तर प्रदेश: कांटों भरा ताज सिर पर 42
पंजाब: सद्भावना की शुरुआत 46

आजकल
हरियाणा: वारिस की ताजपोशी 49
राजस्थान: फिर पुराने हाथ में 50
महाराष्ट्र: भारी पड़ती भगवा चुनौती.......51
तमिलनाडु: आखिर सिक्का जम गया.......53
राज्य-दर्पण....................................54
व्यापार चक्र....................................55

कारोबार
आर्थिक नीति:
सर्वहारा के कल्याण की ओर..........56
मफतलाल समूह: सही राह पर..........60
शेयर बाजार....................................61

खास रपट
नई लोकसभा: सतरंगा सदन..........62

पास-पड़ोस
पाकिस्तान:
बला की बिजलियों को बुलावा..........69
आरपार....................................74

समाचार जगत
दूरदर्शन: खुलेपन की फिजां..........75

सिनेमा
सच: रिश्तों की हकीकत..........76

खेलकूद
क्रिकेट: बल्ला और गेंद फिर काबू में.......79

कायाकल्प
संपेरे: पर जिंदगी नहीं झूमती 85
कहानी....................................88
किताबें....................................92
चर्चित चेहरे....................................96

आवरण: शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे परिवार का आपके परिवार को उपहा

वीडिओकोन वी सी आर और वी सी

वीडिओकोन–घरेलू उपकरणों में घर-घर में जाना पहचाना नाम–उत्कृष्ट रंगीन टेलीविजन्स, वाशिंग मशीन्स और ऑडियो सिस्टम्स की पहचान. वह कम्पनी जिसने कड़ी मेहनत और अटूट लगन से थोड़े ही समय में नई-नई मंज़िलें तय की हैं. इस समूह का १९८८-८९ में टर्नओवर लगभग ३५० करोड़ रुपये रहा है.

वीडिओकोन–अब पेश करते हैं आपके परिवार के लिए एक और उत्कृष्ट उपहार. जापान के तोशिबा के तकनीकी सहयोग से बने चमचमाते एवं सुडौल वीसीपी और वीसीआर.

तोशिबा कॉरपोरेशन–दुनिया में अग्रणी. उपभोक्ता और औद्योगिक इलेक्ट्रोनिक्स, इलेक्ट्रिक पुर्ज़ों और हैवी इलेक्ट्रिक यन्त्रों के क्षेत्र में नवें स्थान पर. तोशिबा है "फॉरच्यून ५००" में विश्व में ५०वीं सबसे बड़ी कम्पनी– चुकता पूंजी १५०० करोड़ रुपये और बिक्री ४२,००० करोड़ रुपयें– अब वे हैं वीडिओकोन की इक्विटी में साझेदार.

वीडिओकोन वीसीपी और वीसीआर–घर बैठे मनोरंजन के नवीनतम साधन. सुन्दर, चमचमाते, मज़बूत–आधुनिकतम वीडिओ तकनालॉजी का चमत्कार–स्लो मोशन, प्लेबैक x २, फ्रेम एडवान्स, एडिट फेसिलिटी जैसी ख़ास खूबियों के साथ–२७ फंक्शन रिमोट कण्ट्रोल यूनिट–२ सिस्टम (पाल/मेसेकैम)वाला डायरेक्ट ड्राइव.

वीडिओकोन तोशिबा वीसीपी और वीसीआर–वीडिओकोन परिवार की ओर से आपके परिवार को एक और उत्कृष्ट उपहार.

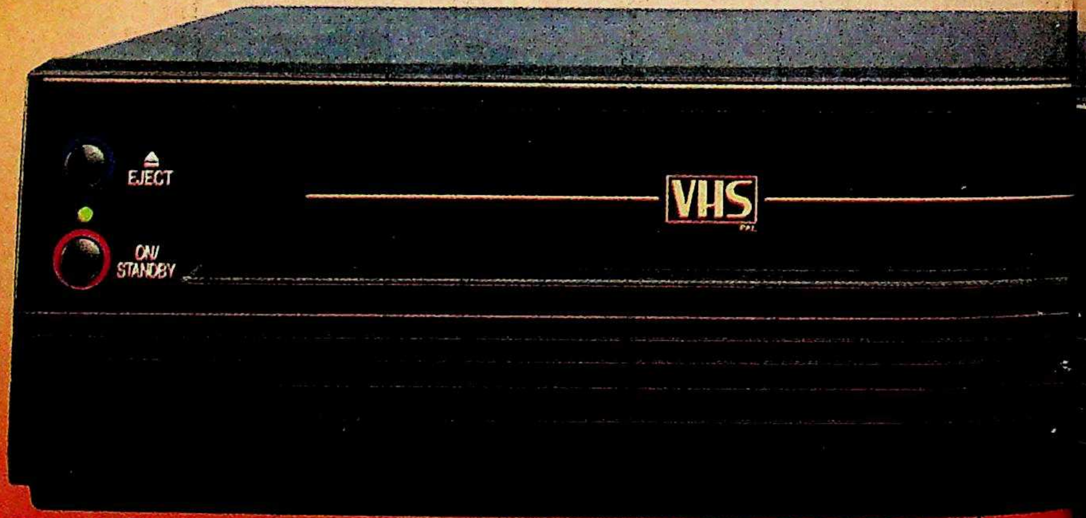

खास खूबियां *डायरेक्ट ड्राइव *२७ फंक्शन रिमोट *प्लेबैक x

वीडि

वीडिओकोन वी सी आर लिमिटेड पंजी. कार्यालय : ऑटो कार्स कम्पाउण्ड, अदालत रोड, औरंगाबाद ४३१ ००५. महाराष्ट्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

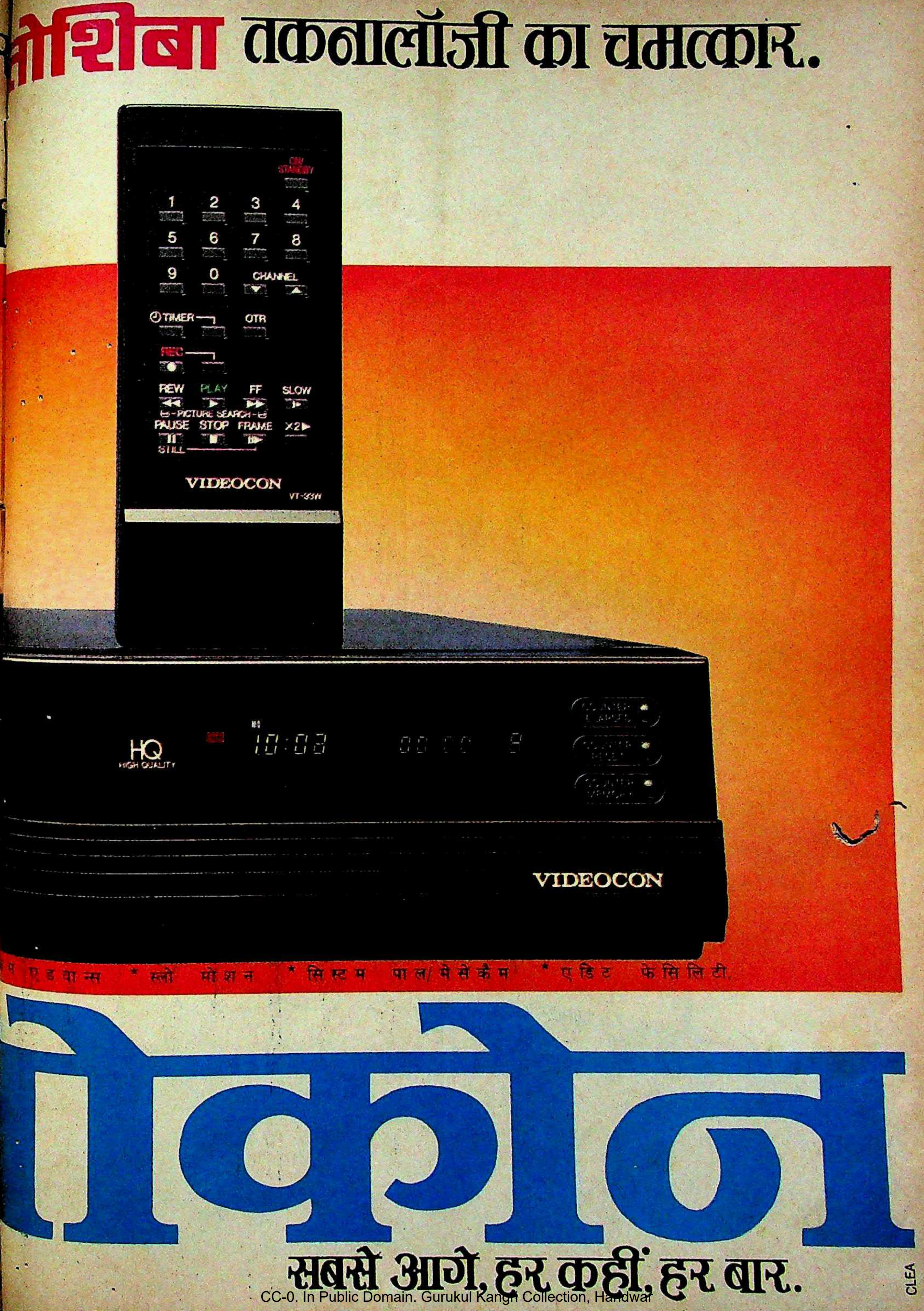

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

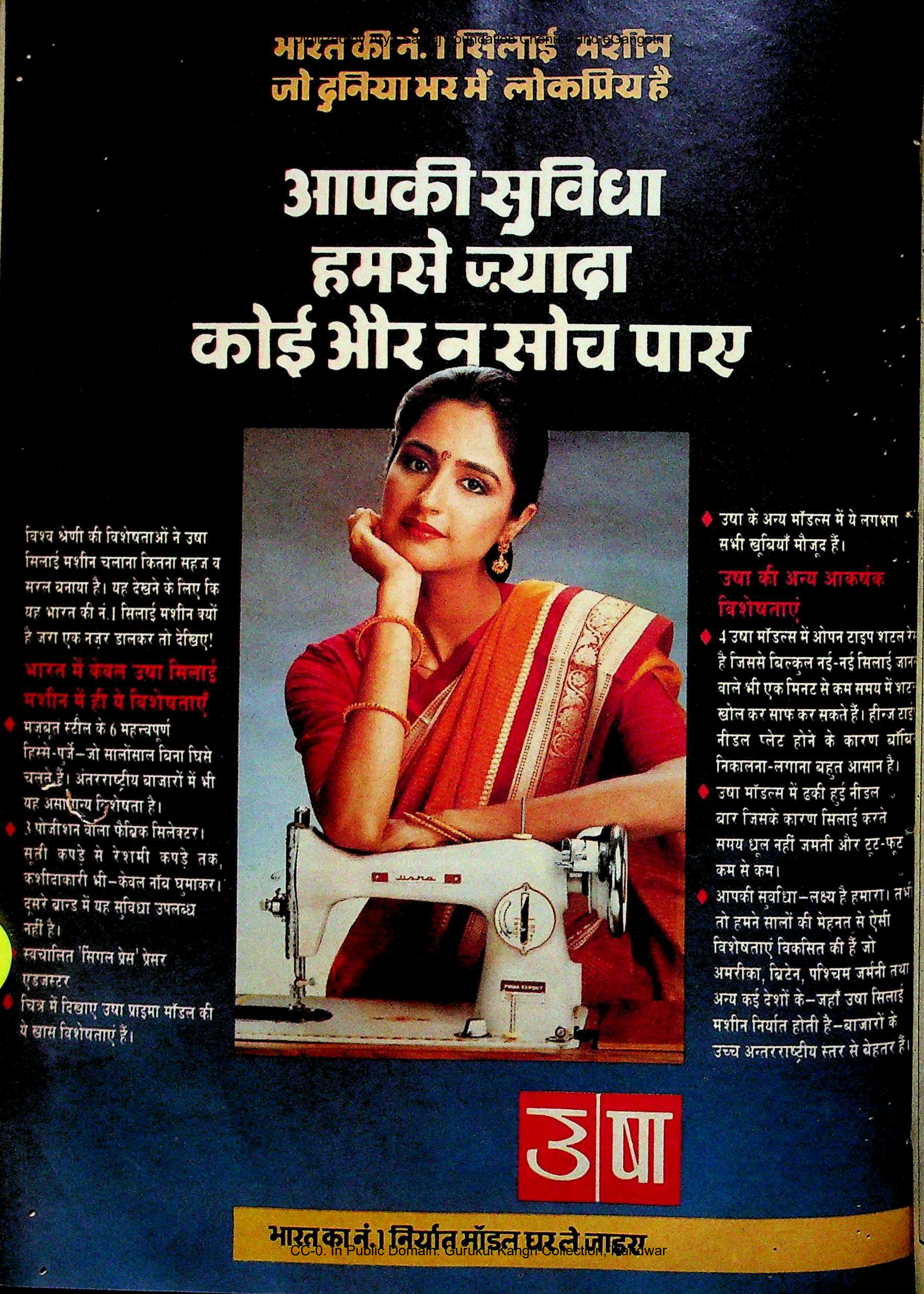

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे
संपूर्ण समाचार पत्रिका

वर्षः 4, अंकः 4, 16-31 दिसंबर 1989

प्रधान संपादक
अरुण पुरी

वरिष्ठ संपादक
प्रभु चावला

संपादकीय विभाग
जगदीश उपासने, अशोक कुमार, विजय क्रांति, ओम प्रकाश सराफ, अरविंद मोहन मिश्र, अ.ला. प्रजापति, विमल पाराशर, हरिमोहन मिश्र, हरजिंदर

प्रोडक्शन
अनिल शर्मा, सुबाचन यादव, सुनील सैनी

■ **संपादकीय कार्यालयः** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोनः 331 5801-4, टेलेक्सः 31-61245 INTO IN, तारः लिवमीडिया, नई दिल्ली.

■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालयः** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोनः 3313076-8, टेलेक्सः 31-62634 INTO IN, तारः सर्कुलेट, नई दिल्ली.

■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालयः** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोनः 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्सः 11-5373 THOM IN, तारः लिवमीडिया, बंबई.

■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालयः** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोनः 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्सः 31-62124 THOM IN, तारः लिवमीडिया, नई दिल्ली • फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोनः 477188, टेलेक्सः 041-6177 INTO IN, तारः लिवमीडिया, मद्रास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोनः 568448, 579037, 579089, टेलेक्सः 0845-2217 INTO IN, तारः लिवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोनः 445398, 447726, टेलेक्सः 021-3138 INTO IN, तारः लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. • कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. • लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

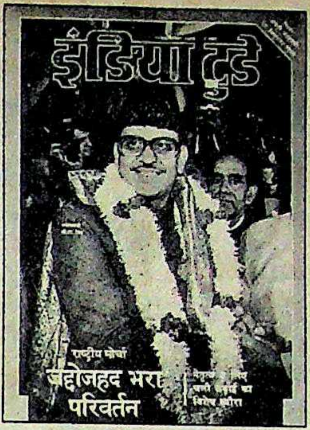

उम्मीदें बढ़ीं

'जद्दोजहद भरा परिवर्तन' (15 दिसंबर) के बाद अब नई सरकार का दायित्व बन जाता है कि वह स्थायी सरकार दे. इसके लिए भाजपा को अपने सिद्धांतों को यथार्थ के धरातल पर लाना होगा. केवल 'हिंदू राष्ट्र' की नीति नहीं चल सकती. साम्यवादी दलों में भी परिवर्तन जरूरी है अन्यथा इस सरकार का चल पाना कठिन होगा. सरकार न चल पाई तो जनता उन्हें कभी माफ नहीं करेगी.

—**बद्रीलाल स्वर्णकार**, कोटा (राज.)

■ जनता ने कांग्रेस के प्रति नाराजगी दिखाते हुए जिस तरह विपक्ष को जिताया है, उससे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है. दो नितांत विरोधी गुटों के सहयोग से मिले मामूली बहुमत से सरकार चलाना बहुत मुश्किल है. इस पर भारी घाटे की अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, महंगाई जैसी समस्याएं विरासत में मिली हों तो चुनौती और कड़ी हो जाती है.

—**महेंद्र कुमार नागा**, ठाणे (महाराष्ट्र)

■ यह जानते हुए भी कि जनता दल को इतने वोट वी.पी. सिंह की बदौलत मिल पाए हैं, चंद्रशेखर ने वी.पी. सिंह विरोधी रुख अपनाकर अपनी क्षुद्रता का परिचय दिया है. लगता है ये एक बार फिर सरकार गिराने का कलंक अपने माथे लगाकर रहेंगे.

—**पृथ्वीराज सिंह**, नई दिल्ली

■ जिस तरह वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री चुना गया, उसे किसी भी तरीके से लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता. कम-से-कम वी.पी. सिंह जैसे ईमानदार और साफ छवि वाले नेता को तो सर्वसम्मति से नेता चुने जाने की जिद छोड़कर चुनाव लड़ना चाहिए था. उन्हें तो पता था कि जीत उन्हीं की होगी.

—**वंदना मिश्र**, आगरा (उ.प्र.)

■ जयप्रकाश नारायण के समर्थक समझे जाने वाले चंद्रशेखर के समर्थकों द्वारा राम जेठमलानी पर किया गया हमला जनता दल की अंदरूनी कलह और निजी महत्वाकांक्षाओं की टकराहट को उजागर करता है. काश! चंद्रशेखर देश की राजनीति में कुछ सकारात्मक योगदान देने की बात सोच पाते. इतिहास उन्हें हमेशा विघटन की राजनीति के लिए ही याद करेगा.

—**गिरीश कुमार त्रिपाठी**, गाजियाबाद (उ.प्र.)

■ जनता के अधिकारों की पैरवी करने वाले जेठमलानी चंद्रशेखर को उनके मौलिक अधिकार से क्यों वंचित रखना चाहते थे. जनता के चुने नेता का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार होना कोई अपराध है क्या?

—**डॉ. सुरेंद्र अनल**, भागलपुर (बिहार)

सटीक पूर्वानुमान

आपके चुनाव विश्लेषण और लोकसभा में दलगत स्थिति के संबंध में किए गए पूर्वानुमानों का वर्तमान परिणामों से साम्य चकित करने वाला है. तथाकथित भविष्यवक्ता भी इतने सटीक परिणामों की भविष्यवाणी नहीं कर सके. जिस निष्पक्षता से आपने जनता के मनोभावों को विश्लेषित कर पूर्वानुमान दिए उससे पाठकों का विश्वास बढ़ा है.

—**विनोद कुमार तैलंग**, धनबाद (बिहार)

■ भारत की गरीब, अशिक्षित और मूढ़मति समझी जाने वाली जनता अवश्य ही बधाई की पात्र है जिसने चुनावी प्रलोभनों, धड़कनों, मेरा भारत महान, भारत एक खोज, बोफोर्स सौदे के आरोप-प्रत्यारोप सबको सुना-समझा और नीर-क्षीर विवेक का परिचय दिया. कितनी सहजता से इसने बड़े-बड़े नेताओं का दंभ चूर-चूर कर दिया.

—**राजेंद्र सिंह पंवार**, नौगा (उ.प्र.)

■ विशेष जनमत सर्वेक्षण, जिसे राजीव गांधी ने अपनी सभाओं और वक्तव्यों में मजाक बताया था, वह कितना सही था, अब साफ हो गया है. लोकतंत्र में जनमत की अवहेलना का क्या नतीजा होता है, यह राजीव भलीभांति समझ गए होंगे.

—**लीलाधर वर्मा**, होशंगाबाद (म.प्र.)

■ जिन लोगों ने वी.पी. सिंह को कभी विभीषण कहा था, वे शायद भूल गए कि इतिहास खुद को दोहराता है. विभीषण को न्याय का पक्ष लेने पर राज्य से निर्वासित कर दिया गया था. किंतु जब सत्ता का अंत हुआ तो राजतिलक भी उसी विभीषण का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था और अब भी यही हुआ है.

—विनेश बिदुआ, जबलपुर (म.प्र.)

■ चुनावी भविष्यवाणियां अक्सर दिल बहलाव और बहस-मुबाहिसों के लिए ही मानी जाती रही हैं. शायद ही कभी अख़बारी भविष्यवाणियों को गंभीरता से लिया जाता हो पर 'इंडिया टुडे' में इंका की सीटों को लेकर जो भविष्यवाणी की गई वह शत प्रतिशत सच हुई है. भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में यह पूर्वानुमान अद्भुत है. आशा है आगे भी ऐसी स्वस्थ तथा निष्पक्ष सामग्री उपलब्ध कराते रहेंगे.

—क़े.के. मिश्र, भोपाल (म.प्र.)

■ जनमत सर्वेक्षण में आपके पूर्वानुमान की सटीकता लोकतंत्र में प्रेस के महत्व को इंगित करती है. राजीव सरकार यदि मानहानि विधेयक लाने में सफल हो जाती तो शायद पत्रकारिता पंगु हो जाती.

—प्रभात कुमार सिंह, ग्वालियर (म.प्र.)

■ नौवें आम चुनाव में विभिन्न दलों द्वारा इस्तेमाल किए गए नारों 'चुनाव-दर्पण' (15 दिसंबर) को पढ़कर और सुनकर बेहद कोफ्त हुई. ऐसे हल्के स्तर के और विपक्षी नेताओं पर व्यक्तिगत लांछन लगाने वाले नारों के जरिए वोट मांगने वाले प्रत्याशी संसद की गरिमा क्या बढ़ाएंगे.

—दादूराम सलोने 'चौकन्ना', सतना (म.प्र.)

■ जनमत सर्वेक्षण के अंतर्गत 'बदलाव के पक्ष में' (30 नवंबर) में आपने जो संभावनाएं प्रस्तुत की थीं वे बहुत कुछ सही साबित हुईं. इस सर्वेक्षण से आपकी पत्रिका की विश्वसनीयता में चार चांद लग गए हैं.

—नरेंद्र सिंह शिवाजी, विदिशा (म.प्र.)

पूर्वाग्रह से ग्रस्त

'फैसले की घड़ी' और 'रस्मअदायगी की रवानी' (30 नवंबर) दोनों ही लेख पूर्वाग्रह से भरे लगे. लेख पढ़ने के बाद लेखक

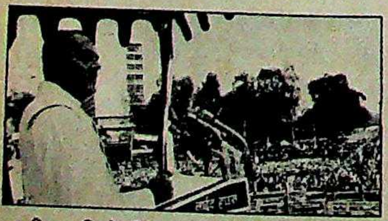

राजीव विरोधी और वी.पी. सिंह के अंधसमर्थक लगे. —नीरज खरे, सागर (म.प्र.)

■ कांग्रेस की हार का एक प्रमुख कारण यह भी था कि राजीव के सिपहसालारों ने उन्हें यथार्थ से दूर रख चिकनी-चुपड़ी बातों में उलझाए रखा. इन्हीं की सलाह पर चलते हुए उन्होंने योग्य तथा कुशल राजनीतिकों की बजाए ऐसे लोगों को टिकट दिलवा दिया जो पार्टी को ले डूबे.

—सुरेश विश्वकर्मा, सतना (म.प्र.)

यह कैसा लोकतंत्र

'मुकाबले में माफिया' (30 नवंबर) पढ़कर सदमा लगा. हमारी राजनैतिक पार्टियां ऐसे कुख्यात अपराधियों को अपना उम्मीदवार बनाकर क्या संसद तथा

विधानसभाओं में गुंडा राज कायम करवाना चाहती हैं? क्या ये ही अपराधी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को मजबूत करेंगे? यदि सरकार ने '85 में चुनाव आयोग की सिफारिशों को माना होता तो आज कोई अपराधी चुनाव मैदान में न होता.

—रवींद्र कुमार वार्ष्णेय, आगरा (उ.प्र.)

■ लेख ने सोचने पर मजबूर कर दिया कि भारत की राजनीति में जल्द ही आतंकवादी और भ्रष्ट व्यक्ति हावी हो जाएंगे. इंका ही नहीं, दूसरी पार्टियों ने भी माफिया सरगनाओं को टिकट देकर देश की राजनीति को कलंकित किया है. यदि वे ऐसे गुंडा तत्वों को छोड़कर राजनीति नहीं कर सकते तो उन्हें जनसेवा के नाम पर लोगों के सामने जाने का कोई अधिकार नहीं है.

—सुनील कुमार अग्रहरि, फतेहपुर (उ.प्र.)

■ इस चुनाव में पंजाब से छह सीटें उन्हीं लोगों को मिली हैं जिन्होंने बंदूक के साये में चुनाव करवाए. रासुका में बंद रहे सिमरनजीत सिंह मान की जीत से साबित होता है कि उ.प्र. और बिहार के साथ पंजाब में भी जनता का प्रतिनिधित्व अपराधी किया करेंगे.

—दीपक मैनी, अमृतसर (पंजाब)

छल-बल असफल

'जो बोया सो काटिए' (15 नवंबर) बिहार के संदर्भ में एकदम सटीक प्रतीत होता है. नौवें लोकसभा चुनाव बिहार में कांग्रेस के लिए घातक साबित हुए. चुनावी जंग में एक-एक करके सभी महारथी धराशायी हो गए. इस जंग में न इनका छल कामयाब हुआ न बल.

—दिलीप कुमार, औरंगाबाद (बिहार)

अपने ही चक्रव्यूह में

'नाकामियों से फीकी पड़ी वादों की चकाचौंध' (15 नवंबर) राजीव गांधी की भूलों का सटीक लेखा-जोखा था. जनता से मिले भारी बहुमत का तो उन्होंने दुरुपयोग किया ही, कदम-कदम पर गलतियां भी करते रहे. स्वार्थी दोस्तों, चापलूसों की सुनते रहे. नतीजा सामने है.

—मुकेश बहुखंडी, नौगांव (उ.प्र.)

■ राजीव गांधी की अचानक चुनावी घोषणा इंका पर ही भारी पड़ी. इंका ने शायद यह सोचकर चुनावों की घोषणा करवाई कि विपक्ष सीटों के बंटवारे पर कट मरेगा लेकिन अब विपक्ष ने तो अपना 'एक के खिलाफ एक' वाला वादा निभाकर उसे ही मात दे दी है.

—वीरेंद्र कुमार 'अग्र', आगरा (उ.प्र.)

शर्मनाक मामला

'नाजुक मामला' (15 नवंबर) में जेड. आर. अंसारी की करतूत पढ़कर सारे देश का सिर शर्म से झुक गया है पर कांग्रेसियों को कोई फर्क नहीं पड़ा. हमारे पूर्व प्रधान-

मंत्री को क्या कहें, विपक्षियों को तो वे हिस्ट्रीशीटर बताते रहे लेकिन खुद अंसारी जैसे लोगों को टिकट देकर चुनाव जीतने की उम्मीद करते रहे.

—रोहित तिवारी, भोपाल (म.प्र.)

घनघोर अराजकता

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र होने के नाते मैं महसूस करता हूं कि 'किताबें और बंदूक' (15 नवंबर) में आपने यहां फैली अराजकता का सही चित्रण किया है. यदि कुलपति की ही तरह सभी उच्चाधिकारी इसी तरह अपनी निजी कमांडो फोर्स तैयार करने लगें तो वे माफिया गिरोह के सरदार नजर आएंगे.

—आलोक श्री, इलाहाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध श्रृंखला

जनरुचि के 50 लघु विश्वकोशों की एक अनूठी संग्रहणीय श्रृंखला

मूल्य: 18/- प्रत्येक
डाकखर्च: 4/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें
मंगाने पर डाकखर्च माफ

■ प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री ■ प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित ■ सरल कथा शैली ■ फोटोटाइप सेट ■ बढ़िया कागज पर ऑफसेट छपाई ■ बहुरंगी आवरण ■ वाजिब दाम

इस श्रृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार है।

उदाहरणार्थ **रोमांचक कारनामे** में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो **खोजें** में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। **अनसुलझे रहस्य** में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो **खेल और खिलाड़ी**, ***101 व्यक्तित्व*** व **वैज्ञानिक** जीवनी-प्रधान पुस्तकें हैं। **विनाश-लीलाएं** व **दुर्घटनाएं** में मर्मांतक तबाहियों का लेखा-जोखा है तो **गुप्तचर संस्थाएं**, **जासूस** व **जासूसी कांड** में जासूसों की रोमांचकारी गतिविधियां हैं। **सभ्यताएं**, **मिथक एवं पुराण कथाएं** और **प्रेरक-प्रसंग** किसी भटके हुए मन के लिए प्रकाश-स्तंभ हैं तो **हत्यारे** में रक्त-पिपासु हैवानों की कथाएं हैं। **रोमांस-कथाएं** तथा **हस्तियों के प्रेम-प्रसंग** में लैला-मजनूं से लेकर हिटलर, कैनेडी, चार्ली चैपलिन, नेहरू जैसे व्यक्तियों के दिलों की धड़कनें हैं तो **अनमोल खजाने** में रहस्य और रोमांच से भरे खजाने हैं। **दुस्साहसिक खोज-यात्राएं** में कोलंबस, मार्को पोलो जैसे खोज-यात्रियों की गौरव-गाथाएं हैं तो **जन-क्रांतियां** में सभी महत्त्वपूर्ण क्रांतियों का ब्यौरा है। **भूत-प्रेत घटनाएं**, **अलौकिक रहस्य** तथा **मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़-पौधे** पढ़कर आपकी रातों की नींद उड़ जायेगी। **कुख्यात महिलाएं** व **विलासी सुंदरियां** में मर्लिन मुनरो, जैक्लीन कैनेडी जैसी औरतों का निजी जीवन है तो **सनकी तानाशाह**, **राजनैतिक हत्याएं**, **तख्ता-पलट घटनाएं** व **आतंकवादी संगठन** में आपको विश्व-कूटनीति का असली चेहरा दिखायी देगा।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र ***मिनि एनसाइक्लोपीडिया*** है।

अपने निकट व ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुकस्टॉलों पर मांगें। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते:—

पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली-110006

शोरूम: 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ किताबें और बंदूक एक साथ रहना छात्रों के भविष्य के लिए हितकर नहीं. उपकुलपति मलिक का यह सुरक्षा दस्ता छात्रों और शिक्षकों दोनों में भय उत्पन्न करता है. शिक्षा संस्थान में इस तरह का दस्ता रखना शर्मनाक ही नहीं, खतरनाक भी है. यदि वे सुरक्षा चाहते ही हैं तो प्रशासन से इसकी मांग करें या अपने व्यक्तित्व को इतना ऊंचा उठाएं कि बंदूक की जरूरत ही न रहे.

—मुहम्मद तारिक, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

■ जब तक शिक्षा संस्थाओं को राजनीति से दूर नहीं रखा जाएगा तब तक 'किताबें और बंदूक' और 'छवि पर कालिख' जैसी घटनाएं होती ही रहेंगी. मतदान की उम्र 21 से घटाकर 18 साल कर सरकार ने इसे बढ़ावा ही दिया है.

—अमियभूषण दुबे, फैजाबाद (उ.प्र.)

कुशल कप्तान

'डूबते-उतराते सितारे' (15 नवंबर) पढ़ा. इमरान ने अपने हर खिलाड़ी का इस्तेमाल जिस सूझबूझ से किया, वह दूसरे कप्तानों के लिए अनमोल सबक है. यह बात नहीं कि पाकिस्तानी टीम का हर खिलाड़ी श्रेष्ठ था लेकिन उनकी कप्तानी ने हर प्यादे को इतना मजबूत बना दिया कि वह बिगड़ते हालात में पासा पलटने में कामयाब

हो गया. पाकिस्तान की यह फतह इमरान के आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति, जुझारूपन और खिलाड़ियों को सही मौके पर भुनाने वाली अद्वितीय खूबियों का परिचय देती है.

—अंजू वर्मा 'उर्मिला', रीवा (म.प्र.)

संवेदनहीन रवैया

ममता कालिया की कहानी 'सेवा' (15 नवंबर) पारिवारिक संबंधों की विसंगतियों का सशक्त चित्रण है. नई पीढ़ी की संवेदनहीनता, स्वार्थी रवैया आज हर घर की दास्तान बन गया है.

—डॉ. रेखा गांधी, इंदौर (म.प्र.)

सच्ची मानवता

'अनाथों को अपनाने का अनूठा अभियान' (15 नवंबर) में शुरू के तीन सवाल और बच्चों के जवाब दिल को कचोट गए. प्रकाश चंद जोशी ने यह अभियान शुरू कर साबित कर दिया कि मानवता अभी बाकी है.

—अरुणकुमार असाटी, छतरपुर (म.प्र.)

■ प्रकाश चंद जोशी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि अनाथ, अनाश्रित बच्चों को अपनाने का अभियान पूरे देश में ही चलाया जाए.

—हरीश शर्मा, पिथौरागढ़ (उ.प्र.)

महज अटकलबाजी

'सितारों से मिले संकेत' (15 नवंबर) में जिन छह ज्योतिषियों की राजनैतिक भविष्यवाणियां दी गई थीं, उनमें से लंबे रिकार्ड वाले चार ज्योतिषियों के आकलन पूरी तरह गलत निकले जबकि अपेक्षाकृत कम रिकार्ड वाले ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां ही ठीक निकलीं. तो क्या यह समझा जाए कि ये भविष्यवाणियां गणना कम और अटकलबाजी ज्यादा हैं?

—हरिशंकर प्रसाद चौधरी, भागलपुर (बिहार)

बिछाने व रखरखाव में बेहद आसान ● प्राकृतिक द्रव्यों से निर्मित ● स्वच्छ व स्वास्थ्यकर ● टिकाऊ व ध्वनिरोधक ● एक पोंछे में ही जगमगा उठे ● आकर्षक डिजाइनों, रंगों व मोटाई का एक अद्भुत संगम ● रुपयों की सही कीमत।

लिनोलियम
आपके स्थान को चार-चाँद लगाये।

इण्डिया लिनोलियम्स लिमिटेड
९/१, आर. एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता-७०० ००१

CCIIL-2/88HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसा देने वाली भंगिमाएं

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मुफ्ती मुहम्मद सईद को देश का पहला मुसलमान गृहमंत्री बनाकर यह जाहिर करने की कोशिश की है कि अपनी सरकार को भाजपा द्वारा प्राप्त नाजुक समर्थन के बावजूद वे अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी चिंता का इजहार करने में हिचकिचाएंगे नहीं. इसमें शक नहीं कि मुफ्ती की नियुक्ति से देश के करीब 10 करोड़ मुसलमानों के मन में बैठे डर को दूर करने में कुछ हद तक मदद मिलेगी, खासकर हिंदी क्षेत्र में जहां चुनाव के पहले और बाद सांप्रदायिक उन्माद का माहौल था. उस उन्माद की कड़वाहट कायम है. और सांप्रदायिकता का यह नाग अभी भी कुंडली मारे बैठा है, कभी भी फुफकार उठने के लिए.

इस चुनाव से बदलाव हुआ है. और एक बार फिर साबित हो गया है कि भारतीय मतदाताओं के सामने राष्ट्रीय मुद्दे तर्कसंगत रूप में प्रस्तुत किए जाएं तो वह अपने मताधिकार का प्रयोग पूरी बुद्धिमत्ता से करता है. लेकिन इस चुनाव ने यह भी दिखा दिया है कि भारतीय मतदाता धर्मनिरपेक्षता जैसी उदार परंपराओं पर चोट करने के कट्टरपंथी तत्वों के अभियानों के प्रति भी भावनात्मक रूप से उतना ही आकर्षित होता है. इस प्रवृत्ति का सबसे विकृत और कट्टरपंथी रूप उन चुनाव क्षेत्रों में उभरकर सामने आया जिनमें कट्टरपंथी पार्टियों द्वारा समर्थित हिंदू उम्मीदवार खुल्लमखुल्ला प्रचार कर रहे थे कि उन्हें एक भी मुसलमान वोट नहीं चाहिए, कि मुसलमान वोट उनके लिए कोई मतलब नहीं रखता. यह एक खतरनाक संकेत है. इसमें अल्पसंख्यकों के लिए यह संदेश छिपा है कि लोकतंत्र में उनकी भागीदारी का कोई मतलब नहीं है, और यह भी कि हिंदूवादी लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

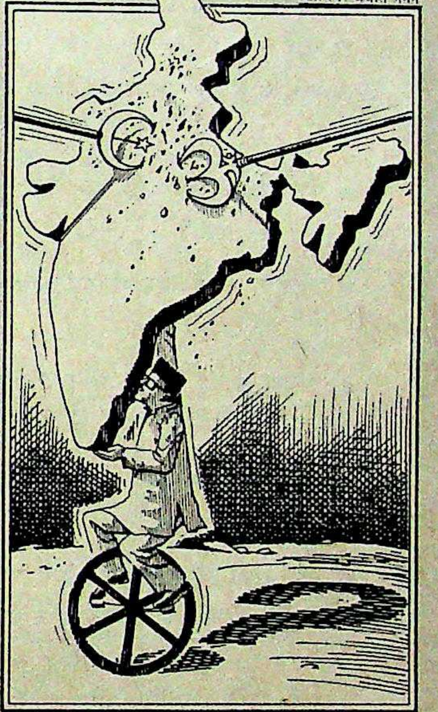

संविधान के अनुच्छेद 370 को समाप्त करने या अल्पसंख्यक आयोग की जगह मानवाधिकार आयोग बनाने जैसी मांगों से ज्यादा खतरनाक है यह संदेश जो कि इन चुनावों में साफ तौर पर उभरकर सामने आया. सांप्रदायिकता का यही असली चेहरा है. हिंदू राष्ट्र या हिंदुत्व की अवधारणा में ही यह तथ्य छिपा है कि हिंदुस्तान में अल्पसंख्यकों को दोयम दर्जे का नागरिक बनना होगा. धर्म के नाम पर किए जाने वाले प्रभुत्व-प्रदर्शन के नतीजे भयावह हो सकते हैं. जिस देश की राष्ट्रीयता आम सहमति के कमजोर ताने-बाने से बुनी हुई हो उसमें अल्पसंख्यकों का अलग-थलग पड़ जाना देश की स्थिरता के लिए घातक होगा.

इन सारी बातों का सार यही है कि भारतीय लोकतंत्र की नींव के एक पत्थर—धर्मनिरपेक्षता—की मजबूती एक बार फिर कसौटी पर है. इसे कमजोर करने की बड़ी जिम्मेदारी राजीव गांधी की सरकार से ज्यादा और किसी की नहीं मानी जा सकती. मध्यमार्गी ताकतों—जनता दल और इंका—से खिलवाड़ करने वाला फैसला 9 नवंबर को किया गया था जब दो परस्पर विरोधी सलाहों के बीच उलझे प्रधानमंत्री ने आखिरी वक्त पर हिंदू मतदाताओं को खुश करने के लिए अयोध्या में शिलान्यास की अनुमति दे दी. इस एक फैसले ने मध्यमार्गी और उदारवादी मतदाताओं को असंतुलित कर दिया, मुसलमानों को इंकाई छत्रछाया से निकल जनता दल का दामन थामने का रास्ता दिखाया और इंका तथा जनता दल समर्थक बहुसंख्य हिंदू मतदाताओं को भाजपा समर्थित उम्मीदवारों का पक्ष लेने की प्रेरणा दी. बिहार में यह सांप्रदायिक अलगाव अशुभ साबित हुआ.

बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि विवाद की जड़ें मुस्लिम महिला विधेयक का राजीव द्वारा समर्थन करने के फैसले में छिपी हैं. इस फैसले ने शाहबानो के मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को बेमानी कर दिया था. और इसने हिंदू प्रतिक्रियावाद को जन्म दिया. हिंदुओं को लगा कि सरकार अगर कानून का अनादर कर सकती है तो वे क्यों नहीं अयोध्या के मामले में अदालत के फैसले को मानने से इनकार कर सकते. जब-जब भी तेज और निर्णायक कार्रवाई की जरूरत थी—जैसे मलियाना में अपराधी पीएसी जवानों के खिलाफ कार्रवाई या सती प्रथा का प्रचार करने वालों के खिलाफ कार्रवाई या पंजाब में पुलिस दमन पर रोक या फारूक अब्दुल्ला के कुशासन पर अंकुश —तब-तब हिंदू या मुसलमान या सिख समुदाय के तुष्टीकरण की नीति अपनाई गई. इसने राजीव की 21वीं सदी वाली छवि को हास्यास्पद बना दिया. धर्मनिरपेक्षता के प्रति राजीव की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पर कभी किसी ने संदेह नहीं किया. लेकिन उनके समर्थक तरह-तरह की तमाशेबाजी और विज्ञापनबाजी के सहारे उनकी जो आधुनिकतापरस्त व्यक्ति की छवि बनाने की कोशिश कर रहे थे वह रूढ़िवादी तत्वों के खिलाफ सख्ती करने की निर्णायक चुनौती के आगे बौनी साबित हुई.

बैसाखियों पर टिकी इस नई सरकार के लिए इन तमाम बातों में कई सबक छिपे हैं. विश्वनाथ प्रताप सिंह के सामने भी ये चुनौतियां आने वाली हैं. उनकी असंदिग्ध धर्मनिरपेक्षता के बावजूद भाजपा के साथ उनकी अप्रत्यक्ष राजनैतिक दोस्ती के कारण शंकाएं उठ सकती हैं क्योंकि भाजपा का नेतृत्व तो उदारपंथियों के हाथ में है लेकिन इसके निचले स्तर के कार्यकर्ता अक्सर धार्मिक उग्रता प्रदर्शित करते रहे हैं. इसलिए अपने पूर्ववर्ती की तरह नए प्रधानमंत्री को भी आज या कल इस अग्निपरीक्षा से गुजरना होगा. उनकी सफलता धर्मनिरपेक्षता पर आए संकट से जूझने की उनकी क्षमता पर निर्भर होगी, हिंदू या सिख अथवा मुसलमान पत्ता खेलने की परंपरा का निर्वाह करने के बदले राष्ट्रीय आम सहमति को मजबूत करने के लिए भारतीय पत्ता खेलने के साहस पर ही निर्भर होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A year full of fun for your kids

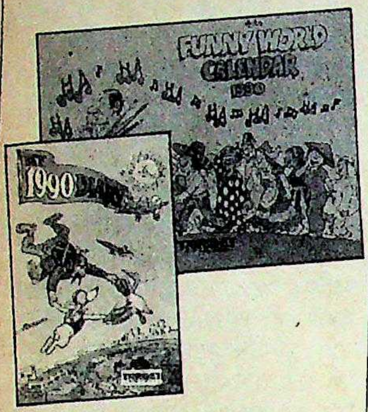

The Target 1990 Diary has all the things children love. Jokes, magic tricks, puzzles, things to make'n do, amazing facts...and of course pages and pages for them to record the year.

Its perfect companion is the Target 1990 calendar with 12 rip-roaring cartoons from Ajit's Funny World in full colour.

Fill up the coupon below and gift them a year full of fun.

But hurry! As the Target Diary has been a sell-out for three years running. So book your order now to avoid disappointment.

TARGET
The Children's Magazine

I'd like to gift my child
☐ Target 1990 Diary—Rs.39.00
☐ Target 1990 Calendar—Rs.23.00
☐ Both—Rs.55 (at a saving of Rs.7!)
My cheque*/DD for Rs..........
in favour of **Living Media India Ltd.** is enclosed.

Name ____________

Address ____________

____

____________ Pin ________

Mail Coupon to:

Living Media India Ltd.
P.B.No.29, New Delhi-110001
*Please add Rs.5 for outstation cheques, i.e. outside Delhi

रविशंकर, टेलीग्राफ

● पांच साल बहुत काम कर लिया. अब आराम करने दें.

■ **राजीव गांधी**, *नए प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के बाद पत्रकारों से*

● मैं चमन में चाहे जहां रहूं, मेरा हक है फसले बहार पर.

■ **चंद्रशेखर**, *हिंदुस्तान टाइम्स*

● चंद्रशेखर पार्टी छोड़ भी गए तो इससे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और जनता दल पर कोई असर नहीं पड़ेगा.

■ **देवीलाल**, *दैनिक ट्रिब्यून*

● दोजख में मय मिले न मिले, शेख साहब से जां तो छूटेगी.

■ **नामवर सिंह** (हिंदी के प्रख्यात आलोचक, नई सरकार के गठन के बारे में), *नवभारत टाइम्स*

● प्रधानमंत्री महोदय! चुनाव में किसी तरह जीत जाना और बात है, सरकार चलाना और.

■ **मणिशंकर अय्यर**, *संडे*

● हमें अपनी निरक्षरता मिटाने के लिए किसी कोरिया या ब्राजील की ओर देखने की जरूरत नहीं है. हमें अपने केरल की ओर देखने की जरूरत है.

■ **सैम पित्रोदा**, *धर्मयुग*

● मेरी पीढ़ी में मुझसे ज्यादा लोकप्रिय कवि और कोई हुआ ही नहीं.

■ **गोपाल दास 'नीरज'**, *स्वतंत्र भारत*

● अगर मुझे राज्यसभा में जाने का शौक होता तो मुझे किसी हाकिम ने नहीं रोका था कि मैं लोकसभा के लिए नहीं चुनाव लड़ूं.

■ **शत्रुघ्न सिन्हा**, *नई दुनिया*

● हमेशा के लिए साफ कर दूं कि मैं सुबह से शाम तक मशीन की तरह काम करने वाला नहीं. मैं कोई रोबोट नहीं हूं.

■ **विनोद खन्ना**, *स्टारडस्ट*

● मेरे नाम पर दर्शक सिनेमाघर की महंगी टिकट खरीदते हैं, वितरक मुंहमांगी रकम देकर फिल्म खरीदते हैं तो हम अपना हक क्यों न लें?

■ **श्रीदेवी**, *आज*

● सभी सीनियर खिलाड़ियों को बाहर निकाल देना चाहिए और एक नई भारतीय टीम बनानी चाहिए.

■ **अंजन चौधरी** (भारतीय फुटबाल टीम के प्रशिक्षक), *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

● हमेशा सफल रहा हूं. फिर भी (टीम से) बाहर जाता रहा. यह राजसिंह डूंगरपुर कौन है? आखिर वह क्या चीज है?

■ **मोहिंदर अमरनाथ**, *दैनिक जागरण*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सरकार, नया झमेला

● सरकार बदलते समय प्रमुख मंत्रालयों में विवाद, अराजकता और भ्रम पैदा होना आम बात है. ऐसा ही कुछ विदेश विभाग के साथ हुआ जो नए मंत्रिमंडल के शपथ लेने के साथ इस ऊहापोह में पड़ गया कि गणतंत्र दिवस समारोह का मुख्य अतिथि कौन होगा.

आम तौर पर कोई महत्वपूर्ण

विदेशी शासक ही इस समारोह का मुख्य अतिथि होता है. इस चयन से पता चल जाता है कि देश की विदेश नीति की दिशा क्या है. चुनाव से पहले इस मसले पर राजीव से सलाह-मशविरा किया गया था और उन्हें कुछ नाम सुझाए गए थे. राजीव ने उनमें से मॉरीशस के प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ का नाम चुना. मॉरीशस में भारतीयों की खासी आबादी है.

लेकिन विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद हालात बदल गए. इस बारे में उनके सलाहकारों की राय थी कि गोर्बाचेव जैसी किसी हस्ती या बेनजीर भुट्टो को मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित किया जाए जो कि नए प्रधानमंत्री के पहले गणतंत्र दिवस समारोह के लिए उपयुक्त होंगे. इस सिलसिले में विदेश मंत्रालय को ताजा अनुरोध भेजा गया.

इससे विदेश मंत्रालय भारी उलझन में पड़ गया क्योंकि वह मॉरीशस सरकार को पहले ही अनौपचारिक रूप से सूचित कर चुका था कि जगन्नाथ को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया जाएगा. यहां तक कि नए विदेशमंत्री के शपथ लेते समय भी मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी इस समस्या का कोई कूटनैतिक समाधान निकालने के लिए माथा-पच्ची कर रहे थे.

भारी पड़ी भेंट

● लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (इ) की हार के साथ राजधानी दिल्ली में तनावपूर्ण माहौल भी खत्म हो गया. यह बदला हुआ माहौल संसद के केंद्रीय सभागार में भी दिखा जहां नया प्रधानमंत्री चुनने के लिए राष्ट्रीय मोर्चे और जनता दल की पहली बैठक हुई. वहां न तो ब्लैक कैट कमांडो थे और न ही ढेर सारे अंगरक्षकों से घिरे वीआईपी. सभागार में लोग बड़ी आसानी से एक दूसरे से मिल-जुल रहे थे और बतिया रहे थे.

कुछ ऐसा ही माहौल राष्ट्रपति भवन में विश्वनाथ प्रताप सिंह के शपथ ग्रहण समारोह में भी देखने को मिला. शपथ ग्रहण समारोह में अपने कई पूर्व मंत्रियों के साथ शामिल होने आए राजीव गांधी के चेहरे पर भी सहजता दिख रही थी. इस सौहार्दपूर्ण माहौल का लाभ उठाते हुए एक दुबला-पतला, चश्माधारी युवक कई अति विशिष्ट

सभी कार्टून: अजीत नैनन

व्यक्तियों के बीच से होता राजीव के पास जा पहुंचा और अपना हाथ बढ़ाते हुए ऑक्सफोर्डी अंग्रेजी में बोला, "मिस्टर गांधी, मेरा नाम अजेय सिंह है. मैं वी.पी. सिंह का बेटा हूं." इतना सुनते ही राजीव की हंसी हवा हो गई. पास ही खड़े एक पत्रकार ने मजाक किया, "अच्छा होता यदि वे राजीव को सेंट किट्स में छुट्टी बिताने का न्यौता दे देते."

सहानुभूति लहर

● चुनाव अभियान के दौरान एक प्रमुख कार्टूनिस्ट ने भविष्यवाणी की थी राजीव के पक्ष में सहानुभूति लहर तो चलेगी लेकिन सरकार उनकी नहीं बनेगी. कार्टूनिस्ट की भविष्यवाणी सही निकली. राजीव की सरकार नहीं बनी. लेकिन जहां तक सहानुभूति लहर की बात थी, ऐसी कोई लहर

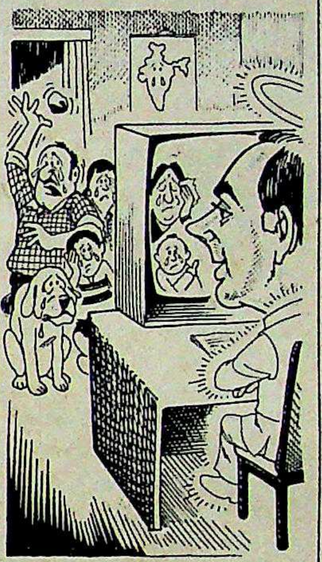

थी नहीं. हां, देश के पूर्व युवा कर्ताधर्ता के चेहरे पर फीकी मुस्कान के साथ विछोह का भाव जरूर था.

29 नवंबर को जब राजीव थोड़ी देर के लिए टीवी के छोटे परदे पर आए तो समूचे देश ने विछोह के इस भाव को साफ देखा. राजीव ने राष्ट्र के नाम अपने संक्षिप्त संदेश में कहा, "लोगों का फैसला सिर-माथे. पद से रुख्सत होते हुए मैं लोगों का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे बहुत ज्यादा लाड-प्यार दिया."

राजीव की ये बातें लोगों के दिलों को गहरे तक छू गईं. पहले वाला भोला-भाला युवक एक बार फिर उनके सामने था और उन्होंने उसकी बातें ध्यान से सुनीं. इसके बाद लोगों ने अचानक ही कहना शुरू कर दिया कि कुल मिलाकर वह इतना बुरा युवक नहीं है.

राजीव के सलाहकारों का एक गुट उन पर जोर दे रहा था कि वे अपने विदाई भाषण में कड़े शब्दों का इस्तेमाल करें लेकिन गोपी अरोड़ा की राय थी कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा. राजीव का भाषण अरोड़ा ने ही लिखा.

मजेदार बात यह कि वी.पी. सिंह का राष्ट्र के नाम पहला संदेश लिखने में राजीव के दून सखा सुमन दुबे ने भी हाथ बंटाया था.

बाज नहीं आए

● बिहार के भागलपुर जेल से पूर्व आईपीएस अधिकारी सिमरनजीत सिंह मान और उनके साथियों की रिहाई तो हुई लेकिन रिहाई के ऐन पहले दो परस्पर-विरोधी आदेशों के कारण थोड़ी अड़चन पैदा हो गई. पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह ने 30 नवंबर को आदेश दिया कि उनके खिलाफ इंदिरा गांधी की हत्या के षड्यंत्र का मामला ही नहीं बल्कि बिहार में दर्ज देशद्रोह का मामला भी वापस ले लिया जाए. लेकिन पूर्व गृह राज्यमंत्री पी. चिदंबरम ने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा को निर्देश दिया कि मान को जमानत पर ही रिहा किया जाए.

बूटा सिंह को जब इस बात की जानकारी मिली तो वे आग-बबूला हो गए. उन्होंने सिन्हा को फोन किया और बड़ी नाराजगी से कहा कि अगर मान के खिलाफ मामला वापस न लिया गया तो निवर्तमान

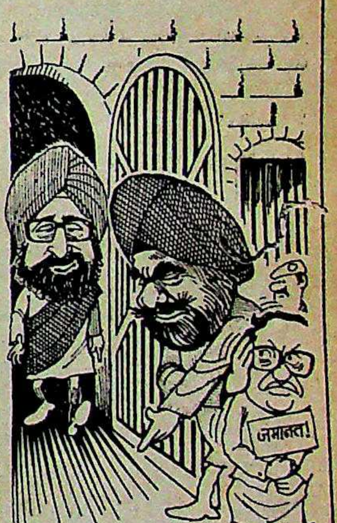

प्रधानमंत्री के आखिरी महत्वपूर्ण फैसले की अवहेलना होगी. सिन्हा ने मान को तुरंत रिहा करने का आदेश दिया और बूटा सिंह को लिखित में सूचित किया, "आपकी इच्छानुसार मैंने श्री मान और उनके साथियों के खिलाफ बिहार मामले की वापसी और न्यायिक हिरासत से उनकी रिहाई के आदेश दे दिए हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत उपहार

● आए दिन अखबारों में खबरें छपती रहती हैं कि फिरौती न मिलने पर डाकुओं ने अपहृत व्यक्ति की हत्या कर डाली. ऐसे में अगर किसी दिन यह खबर आ जाए कि किसी व्यक्ति का अपहरण

सभी कार्टूनः इरफान हुसैन

करने के बाद डाकुओं ने उसे हाथ जोड़कर और नकद उपहार देकर विदा किया तो पढ़ने-सुनने वाले यकीन करने को तैयार नहीं होंगे. लेकिन ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों हजारीबाग जिले में हुई.

साइकिल पर भारत यात्रा के लिए निकला भिलाई का एक युवक दिवाकर पांडे देश के गांव-गांव की हजारों किलोमीटर लंबी गलियों की धूल फांकने के बाद जब हजारीबाग के कोडरमा घाटी इलाके में पहुंचा तो उसका वास्ता डाकुओं से पड़ गया. जब उसने लोगों से इलाके की जानकारी इकट्ठी करनी शुरू की तो डाकुओं ने उसे पुलिस का भेदिया समझकर धर लिया.

डाकुओं ने पहले तो उसे धमकाकर और मारपीट कर सच्चाई उगलवानी चाही. लेकिन जब इससे भी बात नहीं बनी तो आखिर झख मारकर उन्हें दिवाकर की बातें ध्यान से सुननी पड़ीं और अखबारों की वे कतरनें भी देखनी पड़ीं जो उसने अपनी यात्रा के दौरान इकट्ठी की थीं. अपनी गलती का एहसास होते ही डाकुओं का रवैया बदल गया. उन्होंने पहले तो उसे अच्छी तरह खिलाया-पिलाया और फिर तोहफे के तौर पर लूट के कुछ जेवरात पेश किए. लेकिन दिवाकर ने उनकी इस पेशकश को ठुकरा दिया. लंबी मान-मनौवल के बाद डाकुओं ने उसे 501 रु. नकद भेंट देकर विदा किया.

स्मैक का कमाल

● हर बार की तरह इस बार भी चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को कई तरह के तनावों से गुजरना पड़ा.

एक मजेदार वाकया दिल्ली के महरौली इलाके में हुआ जहां स्मैक के एक नशेड़ी ने चुनाव ड्यूटी पर तैनात एक मजिस्ट्रेट और पुलिस अफसरों के चेहरों के रंग उड़ा दिए. चुनाव से पहले वाली रात मतपत्रों और चुनाव सामग्री की रखवाली के लिए जिम्मेदार मजिस्ट्रेट की जीप के ड्राइवर ने पुलिस को खबर दी कि जीप में लगाया गया वायरलैस सेट गायब है. जो चुनाव आयोग के कंट्रोल रूम से सीधा जुड़ा हुआ है. इस वायरलेस सेट के दुरुपयोग की संभावना से पुलिस अफसरों के होश उड़ गए. जब आरंभिक खोज-खबर से भी बात नहीं बनी तो एक स्थानीय पुलिस अधिकारी ने जुगत लड़ाई. उसके निर्देश पर घंटे भर में ही उस इलाके के सभी स्मैकियों को पकड़कर थाने में हाजिर कर दिया गया. इस चाल ने अपना असर दिखाया और इससे पहले कि पुलिस अपने हाथ दिखाती, एक स्मैकिए ने मान लिया कि सेट उसने चोरी किया. पूछताछ में पता चला कि जीप की सीट पर रखे सेट को उसने वीसीआर समझकर गायब कर दिया था. लेकिन घर जाकर जब उसने वायरलेस सेट को

टीवी से जोड़कर जांचने की कोशिश की तब उसे एहसास हुआ कि वह वीसीआर के चक्कर में कुछ और ही चीज उठा लाया है. बाद में उसकी निशानदेही पर पुलिस ने वायरलेस सेट को एक जगह झाड़ियों में से खोज निकाला.

सांस्कृतिक समस्या

● लोकतंत्र की जो खूबी उसे दूसरी सभी व्यवस्थाओं के मुकाबले इक्कीस ठहराती है वह है हर व्यक्ति को उसके मूल अधिकारों की गारंटी. इस गारंटी के मामले में जितनी जानकारी पुलिस और

अदालत वालों को है, शायद उससे कहीं ज्यादा कुछ खास किस्म के लोगों को है. पिछले पखवाड़े कानून का ऐसा ही जानकार होने का दावा करने वाले एक कैदी ने जेल अधिकारियों के लिए नई समस्या खड़ी कर दी.

चर्चित अंतरराष्ट्रीय अपराधी चार्ल्स शोभराज के साथ गिरफ्तार किए गए नरेंद्र सिंह ने पिछले पखवाड़े लखनऊ जेल से अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश को लिखे अपने आवेदन में शिकायत की है कि जेल में 'रामायण' और 'महाभारत' सीरियल से वंचित रखे जाने के कारण उसकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंच रही है. अपने आवेदन में जेल मैनुअल की धारा 719 और 720 का हवाला देते हुए नरेंद्र ने मांग की है कि जेल में रहने वाले कैदियों की धार्मिक भावनाओं की कद्र की जानी चाहिए. पत्र के अनुसार चूंकि पिछले 22 महीनों से जेल में उसे उक्त दोनों सीरियल देखने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी इसलिए उसे भारतीय संस्कृति से विलग हो जाने का खतरा लगने लगा है. इन समस्याओं और अधिकारों का हवाला देते हुए उसने न्यायाधीश से अनुरोध किया है कि जेल में उसे टीवी और वीसीआर उपलब्ध कराया जाए ताकि वह इन धार्मिक सीरियलों को देखकर अपना मनोरंजन भी कर सके और संस्कृति से अपना रिश्ता भी कायम रख सके.

खतरे की घंटी

● जेल में कैदी बंद हो तो वहां पुलिस का चौकस रहना लाजिमी ही है. और अगर देश में चुनाव हो रहे हों तो भी यह पुलिस की ही जिम्मेदारी है कि व्यवस्था और कानून की वह रक्षा करे. लेकिन अगर ऐसा मौका आ जाए जब दोनों में से एक को चुनने का फैसला करना पड़ जाए तो? पिछले पखवाड़े यह मुसीबत कलकत्ता के दक्षिणी इलाके में तैनात पुलिस अधिकारियों के सामने आ खड़ी हुई.

मतदान के बाद मतगणना केंद्रों की हिफाजत करने तथा वहां व्यवस्था बनाए रखने के लिए शहर के लगभग पूरे पुलिस बल को चुनाव व्यवस्था में तैनात कर दिया गया था. यहां तक कि जेल जैसी नाजुक जगह पर भी केवल थोड़े-से पुलिस कर्मचारी ही तैनात किए गए थे. पुलिस अधिकारी अपनी चुनाव ड्यूटी में व्यस्त थे कि अचानक ही अलीपुर प्रेसीडेंसी जेल से वायरलेस पर खबर आई कि जेल का इमरजेंसी अलार्म बज रहा है. अब बेचारे अधिकारियों की सांस गले में आ अटकी. इधर चुनाव, उधर जेल! उनकी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि कहीं चुनावों का फायदा उठाने के लिए कैदियों ने कोई बड़ी योजना न बनाई हो.

अधिकारियों ने विचार-विमर्श किया और शहर भर में तैनात उड़नदस्तों में से अधिकांश को

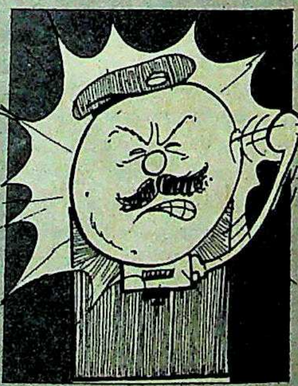

जेल के लिए रवाना होने का आदेश जारी कर दिया गया. पुलिस की गाड़ियां सायरन बजाती जेल तक जा पहुंचीं. लेकिन वहां जाकर पता चला कि किसी यांत्रिक खराबी की वजह से अलार्म बजने लगा था. बेचारे कैदी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारीकी से बदलाव का वादा

प्रमोद पुष्करणा

अमृतसर में प्रधानमंत्री का खुली जीप पर घूमना अपने-आप में भरोसा देने वाली भंगिमा है

ऐसे ही पखवाड़े की शायद सबको प्रतीक्षा थी. अराजकता भरा सत्ता परिवर्तन अंततः एक खामोश राजनैतिक विजय में बदल गया; एक ऐसा मंत्रिमंडल सामने आया जिसमें खोट निकालना मुश्किल है; गड़बड़ करने वालों को किनारे कर दिया गया और बेवजह टांग न अड़ाने वाले शासन के बहाल होने का माहौल बना. नई सरकार ने खामोशी से बागडोर संभाल ली. और, कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा केंद्रीय गृहमंत्री की बेटी के दुखद अपहरण के बावजूद लोगों के उत्साह में कमी नहीं दिखी. विश्वनाथ प्रताप सिंह के सत्ता में आने को 'धुंधली सुबह' बताया जा रहा था. लेकिन उसकी धुंध धीरे-धीरे छंटने लगी है और शासन की शैली में महीन मगर महत्वपूर्ण फर्क उजागर होने लगा है.

केंद्र में एक ऐसा मंत्रिमंडल सामने आया, जिसमें कोई खोट निकालना मुश्किल है

प्रशांत पंजियार

बंबई के किसी उद्योगपति ने कहा है कि "भारत के लोग शासन पसंद करते हैं, हुकूमत नहीं." और आज यही फर्क दिखने लगा है. भारत में शासन तो है लेकिन वह शाही हुकूमत नहीं जो राजीव गांधी के कार्यकाल के अंतिम दिनों में हावी हो गई थी. सुरक्षा के बदनुमा परदे का अचानक उठ जाना इसका एक उदाहरण है. लेकिन यह महत्वपूर्ण है. आतंकवादियों के गढ़ अमृतसर में प्रधानमंत्री का खुली जीप पर घूमना अपने-आप में भरोसा देने वाली भंगिमा है जिसकी जरूरत देश और पंजाब दोनों को है.

इसका अधिकांश श्रेय वी.पी. सिंह को जाता है. उनके राजनैतिक जीवन पर हावी रहने वाली उनकी रणछोड़ नेता वाली छवि और उनकी पहचान बन चुकी किंकर्त्तव्यविमूढ़ता गायब हो चुकी है. किसी मुसलमान को गृहमंत्री बनाना और पंजाब का दौरा अगर साहसी कदम था तो यह साफ है कि उन्होंने अपनी सरकार के कामकाज पर अपनी छाप डाली है. अपेक्षाएं झूठी साबित हो सकती हैं क्योंकि राजीव सरकार के अनुभवों के बाद राजनैतिक नेतृत्व में बहुत ज्यादा भरोसा करने से लोग डरने लगे हैं. राजीव के विपरीत वी.पी. सिंह काफी कम अपेक्षाएं जगाते हुए सत्ता में आए. इसका उन्होंने बड़े कौशल से फायदा भी उठाया.

प्रमोद पुष्करणा

गृहमंत्री की बेटी के दुखद अपहरण के बावजूद लोगों के उत्साह में कमी नहीं दिखी

बदला लेने या अपनी महत्ता जताने, पिछली सरकार की निंदा करने या देश की समस्याओं के लिए उसे दोषी ठहराने की कोई कोशिश नहीं हुई है. कई लोगों की आशंकाओं के विपरीत राजीव की सुरक्षा व्यवस्था को कमजोर करने के बदले और मजबूत किया गया है. ये सब परिपक्वता और शालीनता के संकेत हैं जोकि भारतीय राजनीति से गायब हो गए लगते थे.

भारतीय क्रिकेट टीम किसी भी बाधा को पार करने का हौसला रखने वाली टीम के रूप में उभर रही है

प्रदीप मधानी

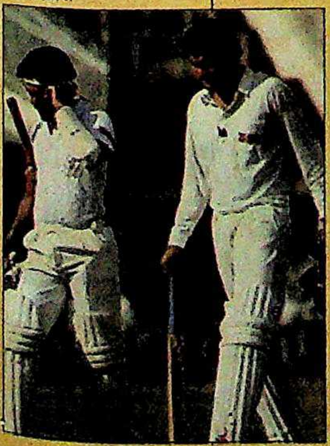

राजनीति और संसद में मजबूती की दृष्टि से अपनी साख बनाने में निस्संदेह सरकार को समय लगेगा. लेकिन यह साफ है कि वी.पी. सिंह को मिला जनादेश लोगों की नजरों में वह विश्वसनीयता हासिल कर चुका है जिसे लोकसभा में बहुमत के पैमाने से नहीं नापा जा सकता. यह उनके मूल्यों के प्रति सम्मान तो है ही, निरक्षर भारतीय मतदाता की उदारता का भी प्रमाण है.

चुनौतियां बड़ी तो हैं मगर ऐसी नहीं कि पार न पाई जा सकें. दोष व्यवस्था में है जिसे बदलने की जरूरत है. यह इसी व्यवस्था का नतीजा है कि फारूक अब्दुल्ला जनता की समस्याओं की उपेक्षा करते हुए विदेश भ्रमण कर रहे हैं फिर भी मुख्यमंत्री बने हुए हैं.

वी.पी. सिंह शालीनता से परिवर्तन की उम्मीदें जगा रहे हैं. और यह भी शायद पूरे माहौल का सटीक प्रतीक है कि हमेशा पिछड़ने वाली भारतीय क्रिकेट टीम किसी भी बाधा को पार करने का हौसला रखने वाली टीम के रूप में उभर रही है. नई सरकार ने जिस तरह से शुरुआत की है उससे भी ऐसी ही उम्मीदें जगती हैं.

—दिलीप बॉब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सरकार

अग्निपरीक्षा का दौर

देश के पहले रोएंदार टोपीधारी प्रधानमंत्री के लिए यह पखवाड़ा भागदौड़ भरा रहा. उन्हें कुछ करके दिखाना था; महत्वपूर्ण फैसले करने थे; दीर्घकालिक रणनीति बनानी थी; सरकार का गठन करना था. और अपने महत्वाकांक्षी सहयोगियों को, चाहे जोड़तोड़ से ही सही, संतुष्ट करना था और सबसे खौफनाक साबित हुआ कश्मीरी उग्रवादियों से पांच दिन चली समझौता बातचीत पर निगाह रखने का अनुभव. अंततः गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबाइया रिहा कर दी गई (देखें खास रपट).

शपथ ग्रहण करने के तीन दिन के भीतर ही वी.पी. सिंह न केवल 18 सदस्यों वाला संतुलित मंत्रिमंडल बनाने में कामयाब रहे वरन विभागों के बंटवारे के झगड़े को भी उन्होंने किसी तरह निबटा दिया. फिर एक हफ्ता बीतते न बीतते वे दृढ़निश्चय के साथ 542 सदस्यों वाली लोकसभा के आसन्न सत्र में विश्वास मत प्राप्त कर लेने की तैयारी में दिखाई दिए. अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया है कि भाजपा और वामपंथी दलों जैसी दो विपरीत ध्रुवों पर बैठी शक्तियों के समर्थन से सत्ता में पहुंचे 141 सदस्यों वाले जनता दल के नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह देश के सत्ता सूत्रों पर अपनी पकड़ मजबूत करने लग गए हैं.

इस घुड़सवार की लगाम किसी और के हाथ में नहीं है. यह न सिर्फ मंत्रिमंडल के गठन और विभागों के वितरण से जाहिर हो गया वरन उनकी स्वर्ण मंदिर की अचानक यात्रा से भी यही पता चला. यह फैसला खुद प्रधानमंत्री ने यात्रा के महज एक दिन पहले किया था.

मंत्रिमंडल का गठन विश्वनाथ प्रताप सिंह की निजी विश्वसनीयता की पहली परीक्षा थी. इसी से जाहिर होना था कि प्रतिबद्धता, नैतिकता और सरकार चलाने के व्यावहारिक तरीके की उनकी बातें इस कसौटी पर खरी

अमृतसर में खुली जीप में वी.पी. सिंह: सकारात्मक संकेत

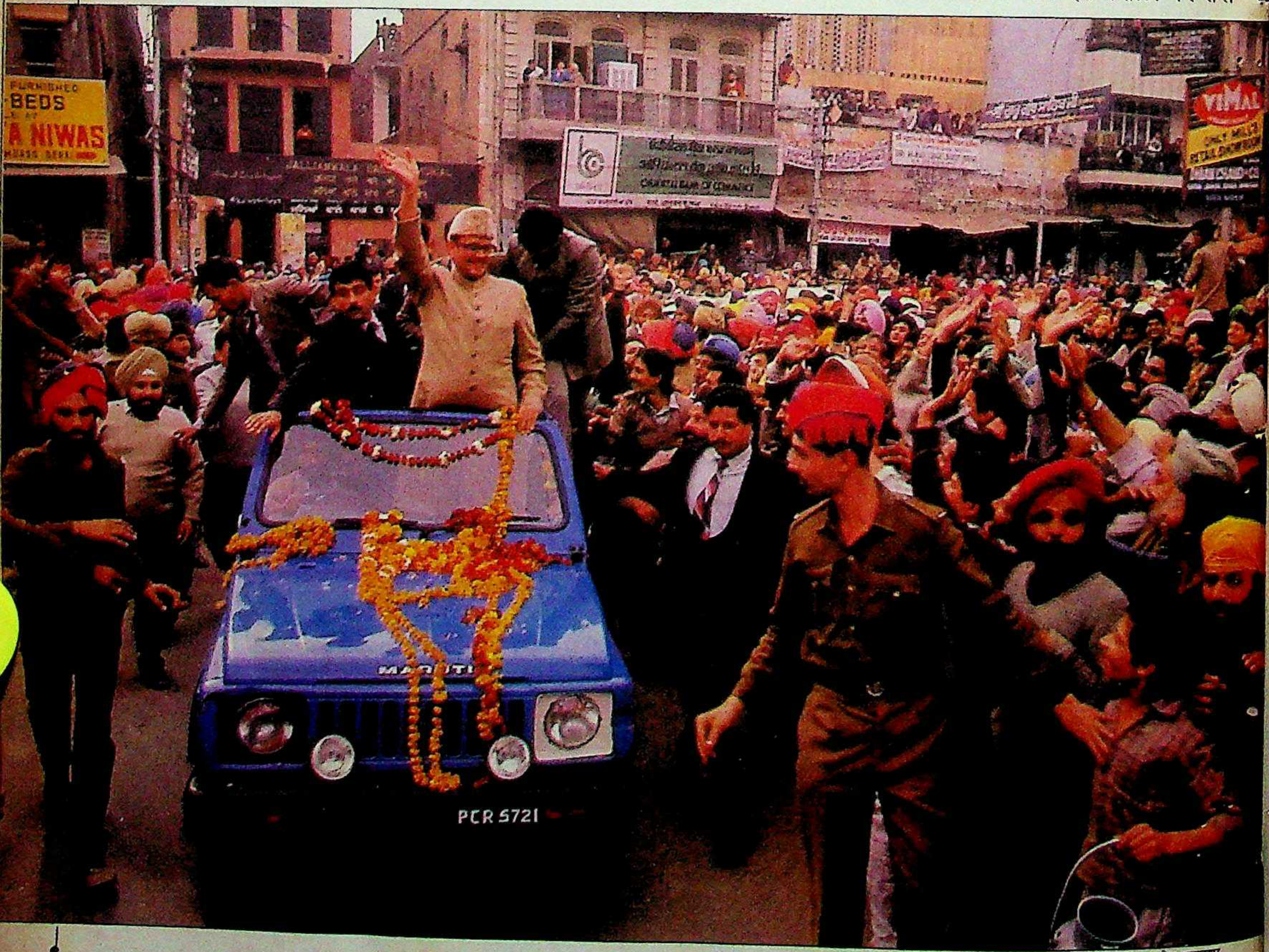

प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल, 75 वर्ष, उप-प्रधानमंत्री

हरियाणा के छोटे-से गांव तेजा खेड़ा से दिल्ली के 3, रेसकोर्स रोड स्थित उप-प्रधानमंत्री निवास तक पहुंचने के लिए 75 वर्षीय चौधरी देवीलाल को काफी लंबा राजनैतिक रास्ता तय करना पड़ा है.

कृषि मंत्रालय का काम देखने वाले इस बुजुर्ग जाट नेता की "पहली प्राथमिकता सभी किसानों को नियमित पानी और बिजली की आपूर्ति करना है."

वे कहते हैं, "हमारे किसान कर्ज से दबे हैं सो हमने 10,000 रु. तक के कर्ज माफ करने का वादा किया है. मैं कृषि पैदावार का समर्थन मूल्य बढ़ाना चाहता हूं. सिंचाई सुविधाएं भी बढ़ानी होंगी. अब तक किसी योजना में कृषि के मद में 34 फीसदी से अधिक धन नहीं दिया गया है. मैं इस बात का इंतजाम करूंगा कि अब 50 फीसदी धन इस पर खर्च हो."

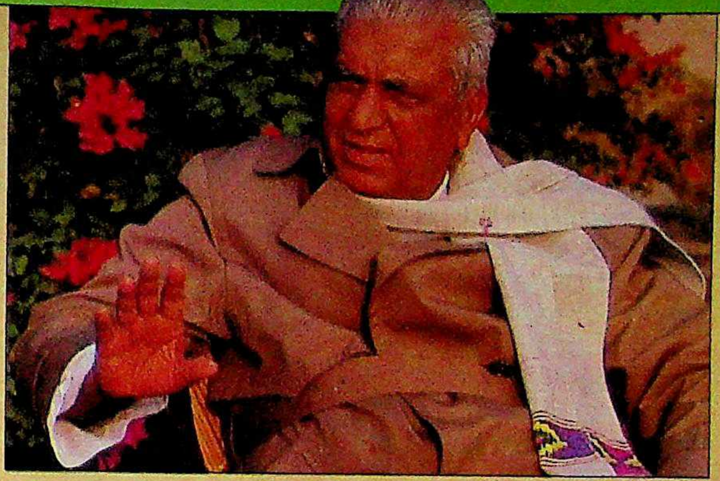

प्रमोद पुष्करणा

उतरती हैं या नहीं. उन्होंने फूंक-फूंककर कदम बढ़ाए. बड़ी चालाकी से (जो अब उनकी विशेषता बनती जा रही है) सब बड़े नेताओं की राय जान ली लेकिन मन की बात किसी से नहीं कही. आखिर में जो मंत्रिमंडल सामने आया वह विशुद्ध रूप से प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का था. सत्ता के दलालों को भी लिया गया लेकिन उनकी हैसियत और तादाद ऐसी रखी गई कि वे इस ढांचे पर हावी न हो सकें. 18 मंत्रियों में से 14, जिनमें सहयोगी दलों के चार सदस्य भी शामिल हैं, जनता दल के किसी और नेता के प्रति नहीं बल्कि उन्हीं के प्रति निष्ठावान हैं. बाकी तीन मंत्री देवीलाल समर्थक हैं.

वी.पी. सिंह ने वफादारी को तो ध्यान में रखा ही, अपनी मंत्रिपरिषद को एक और अहम तथ्य—वैचारिक संतुलन—से भी वंचित नहीं रखा. मधु दंडवते, जॉर्ज फर्नांडीस, शरद यादव, नीलमणि राउतराय, एम.एस. गुरुपदस्वामी और रामविलास पासवान समाजवादी हैं. के.पी. उन्नीकृष्णन और इंद्र-कुमार गुजराल वामपंथी रुझान वाले मध्य-मार्गी माने जाते हैं जबकि अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां, देवीलाल और अजीत सिंह दक्षिणपंथी हैं. वी.पी. सिंह ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "मंत्रिमंडल के सदस्य चुनते समय मैंने उनकी पृष्ठभूमि, हैसियत, और राजनैतिक तजुर्बे का खयाल रखा. हरेक का चयन मैंने उनकी पसंद और विचारधारा को ध्यान में रखते हुए किया."

अगली समस्या मुख्य विभागों के वितरण की थी, जिसे उन्होंने काफी सावधानी से योजना बनाकर इस तरह अंजाम दिया कि प्रत्येक को उसकी सामर्थ्य के अनुरूप मंत्रालय मिले और सरकार की छवि भी ठीक बने. उम्मीद थी कि वित्त विभाग प्रधानमंत्री अपने पास रखेंगे पर उन्होंने सभी के आदर के पात्र और निष्कलंक विश्वसनीयता वाले मधु दंडवते को यह विभाग देकर सबको हैरत में डाल दिया. उम्मीद है कि दंडवते 'गरीब-समर्थक' बजट लाएंगे. पर दंडवते से काले धन और बड़े निजी उद्योगों पर हल्ला बोलने के अभियान की अगुआई के लिए भी कहा जाएगा ताकि थैलीशाहों का चुनावी प्रक्रिया पर असर कम हो.

टीकाकारों की नजर में वी.पी. सिंह का सबसे जोरदार दांव था अमेरिका में पढ़े अजीत सिंह को उद्योगमंत्री बनाना. इस पद पर फर्नांडीस समेत कइयों की निगाहें थीं. पर वी.पी. सिंह ने अजीत सिंह को चुना क्योंकि उनमें कोई कट्टरता नहीं है. औद्योगिक नीति वित्तीय और मुद्रा संबंधी नीति से ज्यादा उदार रहने की संभावना है. वे कहते भी हैं, "इस मंत्रालय में बड़ा गड़बड़ घोटाला है. यहां सफाई की जरूरत है. आम धारणा है कि यह मंत्रालय उद्यमशीलता को मारकर एका-

मधु दंडवते, 65 वर्ष, वित्त

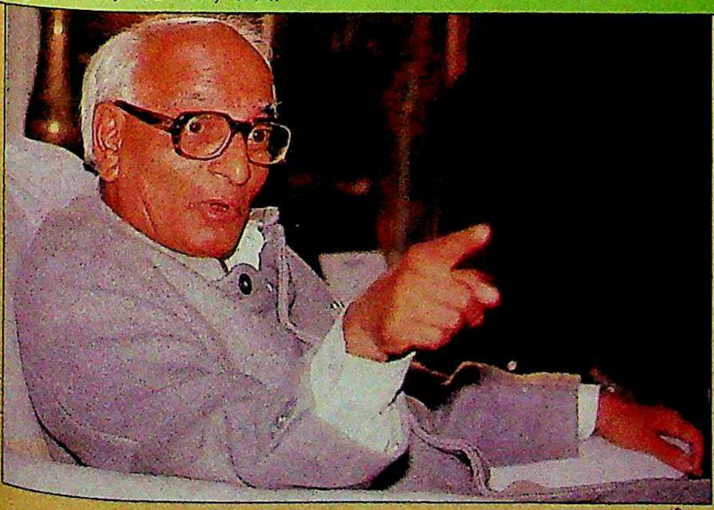

प्रशांत पंजियार

अहंकार से कोसों दूर रहने वाले मृदुभाषी मधु दंडवते कभी बंबई के एक कालेज में भौतिक शास्त्र पढ़ाया करते थे. वित्तमंत्री की कुर्सी पाकर वे देश के सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक हो गए हैं. लेकिन बजट घाटा, व्यापार घाटा, विदेशी मुद्रा की कमी, महंगाई जैसी अनेक समस्याएं उन्हें घेरे हुए हैं.

वे कहते हैं, "जरूरी चीजों की महंगाई रोकना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है. रोजगार के अधिक अवसर बढ़ाने के लिए हम यह व्यवस्था भी करेंगे कि जो चीजें लघु उद्योगों में बन सकती हैं, वे बड़े उद्योगों के पास न रहें. विदेशी मुद्रा की कमी का मामला गंभीर है. लेकिन अगर हमें विदेशों से कर्ज लेना ही पड़ा तो हम अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे संगठनों की अपमानजनक शर्तें कतई मंजूर नहीं करेंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुण नेहरू, 45 वर्ष, वाणिज्य और पर्यटन

वाणिज्य और पर्यटनमंत्री की हैसियत से अरुण नेहरू का मुख्य काम व्यापार घाटा कम करना और पर्यटन को बढ़ावा देना है. एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रबंध में ऊंची कुर्सी संभाल चुके नेहरू ने राजीव राज में ऊर्जा और आतंरिक सुरक्षा जैसे विभागों में अपना कमाल दिखाया भी था. स्वभाव के अनुरूप मंत्री बनते ही उन्होंने अधिकारियों से मिलकर और विभिन्न दफ्तरों में जाकर समस्याओं का पता लगाना शुरू कर दिया.

उनकी योजना है, "अब से सरकार निर्यात बढ़ाने पर मुख्य रूप से जोर देगी. इस मामले में हमारी नीति

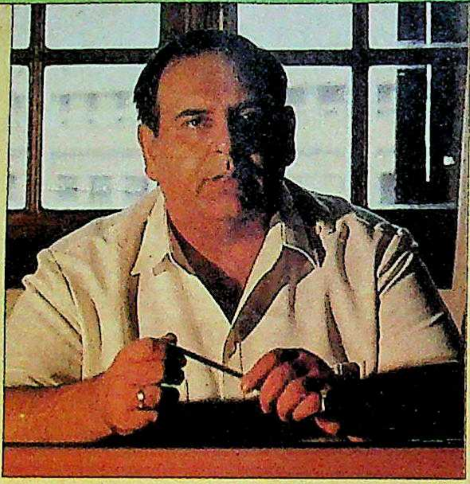
रघु राय

एकदम साफ है—निर्यात बढ़ाओ, आयात घटाओ.

"हम यह पक्की व्यवस्था करेंगे कि राज्य व्यापार निगम जैसी एजेंसियां निर्यात का काम देखें. मुझे यकीन है कि अगले साल निगम द्वारा किए जाने वाले निर्यात में 1,000 करोड़ रु. से भी अधिक की कमी होगी और गैर-सारणीबद्ध निर्यात में इतनी ही वृद्धि हो जाएगी.

"पर्यटन विदेशी मुद्रा कमाने का प्रमुख स्रोत बन जाएगा. भारतीय पर्यटन विकास निगम होटल चलाने की जगह प्रबंध कौशल दिखाएगा और विदेशों में नए बाजार खोजेगा."

धिकार की नींव रखता है. पर हम जल्द ही इस छवि को बदल देंगे."

इसी तरह रेलमंत्री के रूप में नियुक्ति से उग्र मजदूर नेता फर्नांडीस ऐसी स्थिति में पहुंच गए हैं, जहां उन्हें मजदूर नेताओं का दुलार-पुचकार करने के बजाए उनसे ज्यादा जिम्मेदारी का बरताव करवा लेना होगा. और फिर उथल-पुथल भरी ट्रेड यूनियन राजनीति को उनसे ज्यादा अच्छी तरह भला कौन समझ सकता है? कूटनयिक के तौर पर दीर्घ अनुभव को देखते हुए विदेशमंत्री के रूप में गुजराल का चयन तो अपेक्षित ही था.

सिर्फ एक नेता को मंत्रालय सौंपने को लेकर वी.पी. सिंह मुश्किल में पड़ गए. और वे थे देवीलाल, जिनके समर्थक उन्हें गृहमंत्री बनाने के लिए आकाश-पाताल एक किए दे रहे थे. लेकिन अंततः वी.पी. ने उन्हें कृषि मंत्रालय दिया. यह भी एक सूझबूझ भरा सियासी फैसला था. गृहमंत्री के रूप में देवीलाल की नियुक्ति से नई सरकार का दामन जरा-सा दागदार दिखता क्योंकि लोगों को लगता है कि तब उनके बेटे ओमप्रकाश चौटाला अपने मतलब के लिए उनका दोहन करने की कोशिश करते. जाट राजनीति के 'ताऊ' देवीलाल ज्यादातर किसानों की नुमाइंदगी करते हैं और कृषिमंत्री के रूप में वे तमाम किसान समर्थक नीतियों को देश भर में लागू कर सकेंगे.

पर मुफ्ती मुहम्मद सईद को गृहमंत्री बनाने को अमूमन सराहा गया है. इस पद पर किसी मुसलमान को बिठाकर हिंदी क्षेत्र के मुसलमानों और जम्मू-कश्मीर में राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग-थलग जा पड़े उग्रवादियों को एक तरह से आश्वासन दे दिया गया है कि जनता दल के भाजपा से रिश्तों के बावजूद मुसलमानों के हितों की अनदेखी नहीं होगी. साथ ही मुफ्ती हिंदू कट्टरवादियों से व्यवहार करते समय सावधानी से काम लेंगे. पर मुफ्ती के चयन की एक और वजह भी है. बीते जमाने में नेहरू को तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल से प्रतिस्पर्धा का खतरा पैदा हो गया था. इसलिए उस प्रकरण से सबक लेकर गृहमंत्री का पद ऐसे व्यक्ति को दिया जाता रहा है जिसकी राष्ट्रीय नेता बनने की कोई ख्वाहिश न हो. मुफ्ती इस पैमाने पर भी फिट बैठते हैं. उनका अपना कोई जनाधार नहीं है जिसके

इंद्र कुमार गुजराल, 70 वर्ष, विदेश

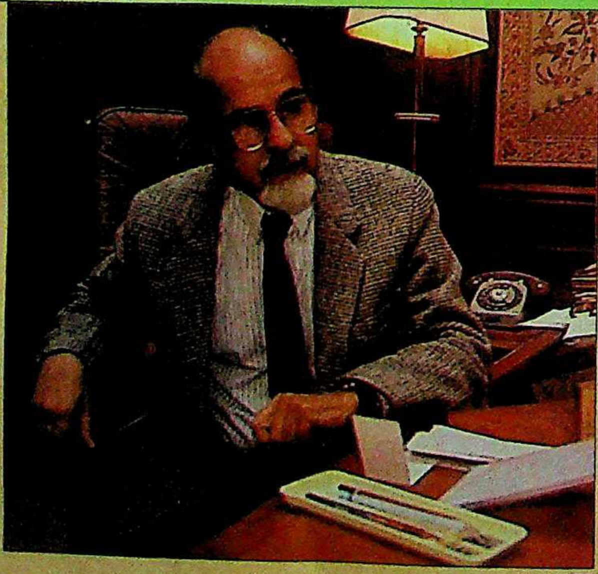
शरद सक्सेना

इंद्र कुमार गुजराल जिस दिन अपने मंत्रालय में पहली बार बैठे तभी स्पष्ट हो गया कि नई सरकार की विदेश नीति क्या होगी. उसी दिन श्रीलंका सरकार का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल भारतीय शांति सेना की वापसी के मसले पर बातचीत करने के लिए उनके पास आया. सोवियत संघ में राजदूत रह चुके गुजराल नई सरकार में विदेशमंत्री पद के सबसे योग्य उम्मीदवार भी थे.

अपनी प्राथमिकताओं के बारे में वे कहते हैं, "हमारी पार्टी के घोषणापत्र में श्रीलंका और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों से रिश्ते सुधारने पर जोर दिया गया है. इस मामले में हमें कुछ परिस्थितियां विरासत में मिली हैं. हम इतिहास को उलट नहीं सकते.

"जैसी सद्भावना हम दिखा रहे हैं, अपने पड़ोसियों की तरफ से भी हमें वैसी ही उम्मीद है. हम चाहते हैं कि पाकिस्तान से हमारे रिश्ते गर्मजोशी वाले हों. चीन से भी रिश्ते सुधरने की पर्याप्त संभावनाएं हैं. फिर, हम अफगानिस्तान को स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और निर्गुट राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं.

"सोवियत संघ हमारा भरोसेमंद दोस्त रहा है. अमेरिका से भी रिश्ते सुधारने के लिए हम अपने दरवाजे खोलना चाहेंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्ती मुहम्मद सईद, 53 वर्ष, गृह

कश्मीर की राजनीति में कोई खास वजन न रखने वाले मुफ्ती मुहम्मद सईद ने शायद कभी सोचा भी नहीं होगा कि उन्हें देश का पहला मुसलमान गृहमंत्री होने का गौरव मिल जाएगा. बूटा सिंह द्वारा खाली की गई इस कुर्सी पर पर्याप्त कांटे भी बिछे हैं. अपनी बेटी के अपहरण का पहला कांटा तो उन्हें दिल तक चुभा लगा होगा. आगामी महीनों में जो चुनौतियां उनके सामने आने वाली हैं, उनसे यह भी साबित हो जाएगा कि वे किस मिट्टी के बने हैं.

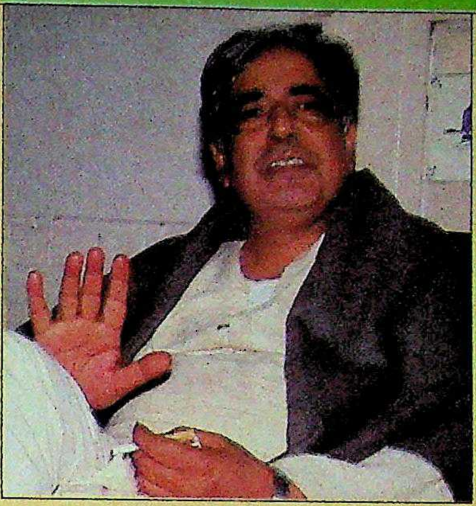
शरद सक्सेना

अपनी चुनौतियों के बारे में वे कहते हैं, "हमें विभिन्न समुदायों को एकजुट करना है. नफरत और बंदूक की जगह आपसी सद्भाव लाना है. हम धार्मिक भावनाओं का नाजायज फायदा उठाने के बजाए विपक्ष में या सड़क पर बैठना पसंद करेंगे.

"हम देश की धर्मनिरपेक्ष परंपरा के जीते-जागते उदाहरण अयोध्या में खून की नदियां नहीं बहने देंगे. हम अयोध्या के लोगों की भागीदारी से राम जन्मभूमि मसले को सुलझा लेंगे.

"उग्रवाद के खिलाफ सख्ती बरतते हुए आतंकवाद को बरदाश्त नहीं किया जाएगा. हमारा विश्वास लोगों का दिल जीतने में है, उन्हें मारकर जीत हासिल करने में नहीं."

बूते पर वे चुनौती दे सकें. मुफ्ती के अनुसार, "साम्प्रदायिकता और उग्रवाद से लड़ना मेरा पहला उद्देश्य है. कोई समस्या ऐसी नहीं जो बातचीत से हल न हो सके. पर हम मुल्क को बांटने वालों से समझौता नहीं करेंगे."

मंत्रिमंडल का गठन हालांकि अभी अधूरा है पर कुल मिलाकर इससे यही पता चलता है कि नेहरू, आरिफ, मुफ्ती, गुजराल और फर्नांडीस को लेकर बनी वी.पी. सिंह की अग्रगामी टीम के हाथों में ही प्रमुख मंत्रालयों का कार्यभार है. नेहरू को सबसे महत्वपूर्ण वाणिज्य मंत्रालय दिया गया है—जिसके नियंत्रण में 60,000 करोड़ रु. का विदेश व्यापार है. आरिफ को नागरिक उड्डयन तथा ऊर्जा विभाग से निबटने की जिम्मेवारी सौंपी गई है. स्पष्ट है कि वी.पी. सिंह नेहरू, पासवान, आरिफ, अजीत, और यादव जैसे नौजवानों के सहारे सरकार चलाना चाहते हैं.

वी.पी. सिंह ने खुद अपने लिए रक्षा और कार्मिक विभाग रखे हैं. जैसे-जैसे सरकार की मंशाएं स्पष्ट होती जाएंगी, इन दोनों विभागों की भूमिका महत्वपूर्ण होती जाएगी. वे बोफोर्स में दलाली पाने वालों का पता लगाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और यह काम रक्षा मंत्रालय और सीबीआई के जरिए ही किया जा सकता है. सीबीआई कार्मिक विभाग के मातहत काम करती है.

अगर वी.पी. सिंह रक्षा खरीद के मामलों की मुश्कें कसने में कामयाब हो जाते हैं तो पिछली सरकार से उनके बाहर होने के लिए कारणीभूत हुए रक्षा सौदों के दलालों पर यह उनकी भारी विजय होगी. रक्षा खरीद से दलाली तथा अनियमितताओं का खात्मा करके वे रक्षा बजट में कमी भी कर सकेंगे. और जैसा कि उन्होंने वादा किया है, रक्षा बजट की यह बचत वे गरीब समर्थक बजट बनाने में लगा सकेंगे.

नए मंत्रिमंडल का जातिगत स्वरूप जनता दल पर हावी जातीय समीकरण जैसा ही है. वी.पी. सिंह को छोड़कर मंत्रिमंडल के 18 में से 14 सदस्य जनता दल के हैं. राजपूत प्रधानमंत्री के बाद इसमें—देवीलाल, अजीत सिंह और नाथूराम मिर्धा जैसे तीन जाट हैं. इसके अलावा इसमे दो मुसलमान तथा दो अनुसूचित जाति के मंत्री हैं. उत्तर-दक्षिण का विभाजन कम करने के लिए दक्षिण को कैबिनेट स्तर पर 25 फीसदी से ज्यादा जगह

अजीत सिंह, 50 वर्ष, उद्योग

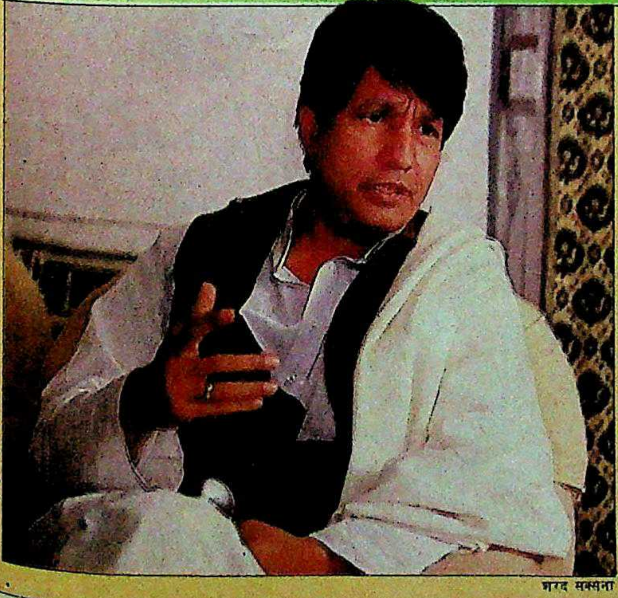
शरद सक्सेना

1987 में अजीत सिंह जब लोकदल में अपने बीमार पिता की 'गद्दी' संभालने के लिए अमेरिका से भारत आए तो किसी ने भी इस धूल-धक्के वाली राजनीति में इस कंप्यूटर वाले के चल पाने की उम्मीद नहीं की थी. लेकिन तीन वर्ष से भी कम अरसे में केंद्रीय मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण विभाग पाकर उन्होंने राजनैतिक पंडितों की भविष्यवाणियां गलत साबित कर दीं.

वे कहते हैं, "उद्योगों को अधिक उत्पादन के साथ-साथ रोजगार के अधिक अवसर भी पैदा करने होंगे. सभी विकसित देशों में कृषि में मजदूरों का अनुपात घटा है. लेकिन भारत में ऐसा नहीं हुआ. इसे बदलना होगा.

"बड़े व्यापारिक घरानों को निर्यात का अपना वादा पूरा करना होगा. अगर छोटे और कुटीर उद्योग निर्यात कर सकते हैं तो बड़े घराने क्यों नहीं?

"जहां तक मारुति की बात है, मैं नहीं कहता कि हमें ईंधन बचाने वाली कारों की जरूरत नहीं. लेकिन इस पर गरीब जनता की गाढ़ी कमाई के जो 500 करोड़ रु. लगाए गए हैं उसे परिवहन व्यवस्था सुधारने पर लगाया जा सकता था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रधानमंत्री

आजाद हवा, आजाद खयाल

अगली बार जब कभी आप नई दिल्ली की किसी ट्रैफिक बत्ती पर रुकें हों और बगल की कार में बैठा इंतजार करता व्यक्ति प्रधानमंत्री की शक्ल से मिलता-जुलता लगे, तो पलटकर गौर करें. हो सकता है—वे कोई और नहीं, खुद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह हों.

ऐसा पहली बार है कि देश की सरकार का मुखिया शहर की सड़कों पर हम-आप जैसा चलेगा. दर्जनों बुलेटप्रूफ मर्सिडीज और कंटेसा गाड़ियों की विदाई हो गई है. वातानुकूलित एंबुलेंस भी उनके साथ नहीं चलेगी. साथ चलेंगी केवल तीन गाड़ियां. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 50 लाख रु. प्रतिदिन खर्च कराने वाली उस सुरक्षा व्यवस्था से किनारा करने का निश्चय कर लिया है जो कभी राजीव गांधी को अपने भीतर समेटे हुए थी. ऊपर गिनाए कदम इसकी शुरुआत भर हैं.

पहले जहां 400 से अधिक विशेष सुरक्षा कर्मचारी तीन स्तरीय सुरक्षा चक्र की देखभाल किया करते थे, वहां अब कुल जमा 15 रह गए हैं. वी.पी. सिंह की सुरक्षा के सबसे भीतरी घेरे में मुट्ठीभर सुरक्षा कर्मचारी रखे गए हैं और बाकी बचे करीब एक दर्जन बाहरी घेरे के लिए हैं. प्रधानमंत्री निवास—28, लोधी एस्टेट की ओर जाने वाली सड़कों पर कहीं भी रास्ता रोकने वाली बाधाएं नहीं खड़ी की गई हैं. मुलाकातियों के लिए बाहर लगे एक मेटल डिटेक्टर से होकर गुजरना भर जरूरी है.

पदभार ग्रहण करते ही नए प्रधानमंत्री ने अपने इरादे स्पष्ट कर दिए थे. एक दिन बाद ही कोई 500 समर्थकों और राजनैतिक सहयोगियों का हुजूम उनसे मिलने आया. तीन कमरों वाले प्रधानमंत्री आवास में भीड़ जुटते ही विशेष सुरक्षा दस्ते के एक दर्जन जवानों ने प्रधानमंत्री को घेरे में ले लिया. वी.पी. सिंह उबल पड़े, "कृपया मुझे लोगों से अलग करने की कोशिश न करें. मेरी सुरक्षा उनसे बेहतर कोई नहीं कर सकता." यह घटना आने वाले तूफानी बदलाव का पहला संकेत थी.

नए प्रधानमंत्री ने बुलेटप्रूफ जैकेट पहनने से इनकार कर दिया है. उनकी पत्नी सीता देवी, बेटे और बहुएं साधारण सरकारी गाड़ियों में आते-जाते हैं. उनके साथ हथियारबंद जवानों की सिर्फ दो गाड़ियां चलती हैं. जिन सड़कों से प्रधानमंत्री गुजरते हैं, वहां ट्रैफिक का आना-जाना पांच मिनट से अधिक नहीं रोका जाएगा. उनके रास्ते में पड़ने वाली बाकी सभी जगहों पर ट्रैफिक आखिरी मिनट तक जारी रहेगा. सुरक्षा कर्मचारी नए नियमों की आंच से उबर नहीं पाए हैं. लेकिन जब वी.पी. सिंह ने कहा कि पुलिसवाले रास्ते के दोनों ओर नहीं खड़े होंगे तो वे अड़ गए.

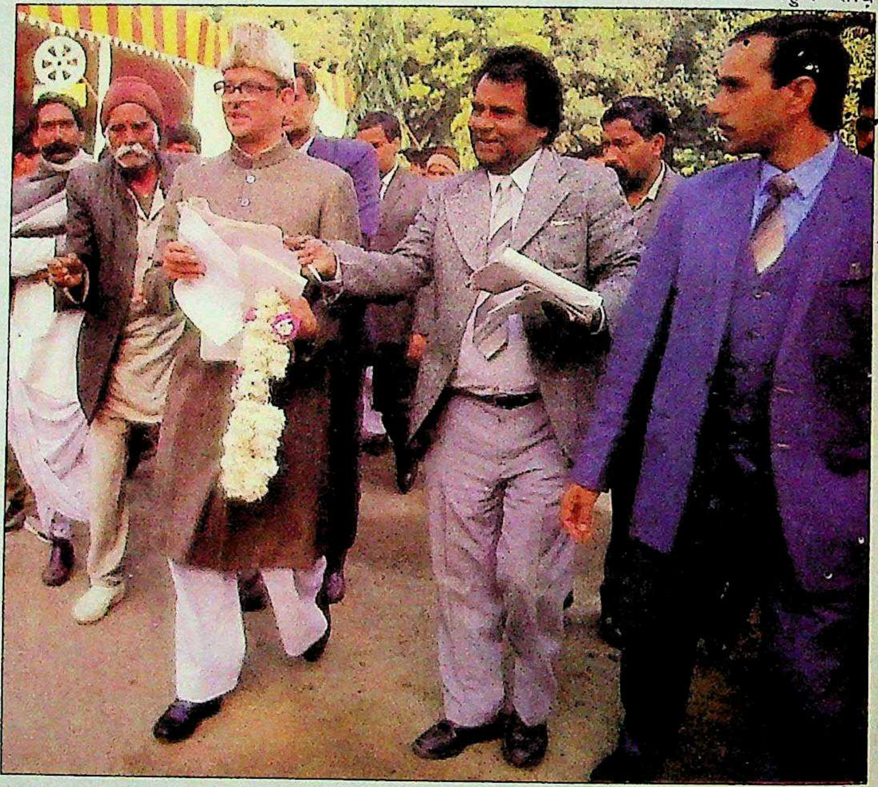
शरद सक्सेना

समर्थकों के साथ वी.पी.: पहुंच आसान

बाकी परिवर्तनों का भी दौर जारी है. नए प्रधानमंत्री ने आदेश दिया है कि 1,200 की संख्या वाली एसपीजी, जिस पर हर महीने 2 करोड़ रु. का खर्च है, को भी या तो समाप्त कर दिया जाए या उसकी संख्या घटाई जाए. वी.पी. सिंह ने सिर्फ राजीव गांधी के लिए छूट दी. वे अपनी सुरक्षा के लिए जिन अधिकारियों को चाहें, रख सकते हैं.

प्रधानमंत्री कार्यालय में आने वालों की तलाशी तो अब भी होती है लेकिन गलियारों में आधुनिकतम अस्त्रों से लैस सुरक्षा गार्डों की भीड़ अब नदारद है. प्रधानमंत्री कार्यालय में राजीव के नीचे काम कर चुके एक उप सचिव कहते हैं, "इसी पूरी जगह में मानो ताजी हवा बह रही है, स्वतंत्रता का आभास हो रहा है."

जनता दल नेताओं की पहुंच सीधे प्रधानमंत्री तक आसान है. वी.पी. सिंह के नए निजी सचिव एच.पी. शर्मा खुद फोन उठाते हैं. उनसे कहा जा चुका है कि प्रधानमंत्री को संबद्ध व्यक्ति के बारे में खबर किए बगैर कभी इनकार न करें. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह कहते हैं, "अगर लोगबाग किसी भी कार्यालय में बेहिचक घुस सकें तो सरकार पर अंकुश रखने का इससे बढ़िया शक्तिशाली माध्यम नहीं हो सकता."

पुरानी और नई व्यवस्था में महत्वपूर्ण अंतर यह लगता है कि जहां राजीव व्यापक सुरक्षा घेरों में संतुष्ट और प्रसन्नचित दिखाई देते थे, वहीं वी.पी. सिंह सुरक्षा प्रबंधों के सख्त खिलाफ हैं.

—प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जॉर्ज फर्नांडीस, 59 वर्ष, रेलवे

1974 में जॉर्ज फर्नांडीस ने रेल कर्मचारियों की राष्ट्रव्यापी हड़ताल कराके जिस मंत्रालय का कामकाज ठप कर दिया था, अब वह उन्हीं के जिम्मे है.

लेकिन उद्योगमंत्री रह चुके जॉर्ज अपने मंत्रालय में 'यात्री' ही नहीं बने रहना चाहते. पहले कुछ ही दिनों में वे समस्याओं से रू-ब-रू हो चुके थे.

वे कहते हैं, "रेलवे का यात्री सेवा अनुभाग भारी घाटे में चल रहा है. हमें तय करना होगा कि हम सुपरफास्ट गाड़ियों के वातानुकूलित डिब्बे में चलने वालों को रियायत दें या रेलगाड़ी की छत पर यात्रा करने वालों के लिए कुछ करें.

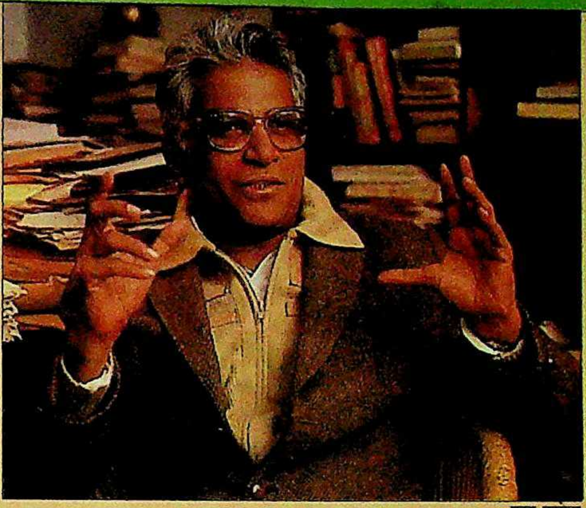
शरद सक्सेना

"रेलवे को संसाधनों की कमी है. मैं बांड जारी करके लोगों से पैसा उठाने और रेलवे की वित्तीय परेशानियों में राज्यों को हिस्सेदार बनाने का विचार कर रहा हूं.

"हमारा भाड़े की मद वाला राजस्व घटता जा रहा है. हमारे व्यापार का काफी हिस्सा झटक लेने वाले शक्तिशाली ट्रक ट्रांसपोर्टरों से निबटने के लिए हमें कुछ कदम उठाने होंगे."

दी गई है, हालांकि वहां से मोर्चा के सिर्फ तीन सांसद ही जीते हैं.

एक और नारा, जिस पर नई सरकार ईमानदारी से अमल कर रही है, वह है—विकेंद्रीकरण. मंत्रिमंडलीय समितियों की व्यवस्था का कड़ाई से पालन करते हुए प्रधानमंत्री ने महंगाई, पंचायती राज्य, इलेक्ट्रॉनिक प्रसार माध्यमों की स्वायत्तता, पंजाब और जम्मू-कश्मीर, जानकारी का अधिकार, काम का अधिकार जैसे मूल मसलों पर पांच समितियां गठित की हैं. अमल के लिए प्रस्ताव देने के वास्ते इन समितियों की समय सीमा भी तय कर दी गई है. दरअसल मंत्रिमंडल की पहली बैठक में उन मुद्दों को प्राथमिकता देने का फैसला किया गया जिनका कांग्रेस भी कोई खास विरोध न कर सके. नई संसद के पहले संक्षिप्त सत्र में जिन विषयों पर चर्चा हो सकती हैं, वे हैं:

- आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्तता देने का विधेयक.
- दूरगामी चुनाव सुधारों के लिए विधेयक.
- लोकपाल की नियुक्ति का विधेयक, जिसे प्रधानमंत्री समेत सभी मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच का अधिकार होगा.
- द्रमुक और मार्क्सवादियों के सुझाव लेते हुए पंचायती राज पर विस्तृत विधेयक.

प्रधानमंत्री सभी मंत्रियों की सक्रिय भागीदारी से इन उद्देश्यों को हासिल करना चाहते हैं. पिछली सरकार में सारी सत्ता प्रधानमंत्री कार्यालय में सिमटकर रह गई थी. इसके उलट वी.पी. सिंह ने मंत्रियों से स्पष्ट रूप से कह दिया है कि उनका दफ्तर दूसरे मंत्रालयों के कामकाज में दखल दे, यह बात उन्हें तनिक भी नहीं भाएगी. अपने दफ्तर और सर्वसत्तासंपन्न मंत्रिमंडलीय सचिवालय के पर कतरना उन्होंने शुरू कर दिया है.

वरिष्ठ सरकारी सचिवों को सीधे प्रधानमंत्री के दफ्तर से बात करने की आदत पड़ गई है. जैसे ही वी.पी. सिंह ने बागडोर संभाली ये अधिकारी निर्देश लेने के लिए उनसे मिलने का समय मांगने लगे. उनसे कह दिया गया कि अब वे अपने मंत्री से ही मिलें और अगर जरूरत पड़ी तो प्रधानमंत्री उनसे सामूहिक रूप से मिलेंगे. यहां तक कि वरिष्ठ नौकरशाहों की नियुक्ति में भी वी.पी. सिंह ने अपने मंत्रियों को पूरी आजादी दी. मसलन, जब पंजाब के लिए नया मुख्य सचिव चुनने का सवाल आया तो बहुत से लोगों ने कई नाम सुझाए. पर प्रधानमंत्री ने साफ कह दिया कि यह फैसला नए राज्यपाल निर्मल मुकर्जी पर छोड़ दिया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें ही सारे हालात से निपटना है. इसी तरह भूरेलाल को बहाल करने के लिए भी उन पर काफी दबाव डाला गया. पर वी.पी. ने स्पष्ट कर दिया कि भूरेलाल की किस्मत का फैसला

आरिफ मुहम्मद खां, 38 वर्ष, ऊर्जा और नागरिक उड्डयन

राजीव गांधी से सीधे भिड़े वी.पी. सिंह के साथ पिछले तीन वर्षों से आरिफ मुहम्मद खां भी पूरी मुस्तैदी से जुटे रहे हैं. अब सबसे कम उम्र के कैबिनेट मंत्री होने के बावजूद दो-दो विभागों का काम संभालना उनके लिए खासा चुनौती भरा है. विमान सेवाओं की प्रतिष्ठा वापस दिलाना और देश भर में पर्याप्त बिजली की व्यवस्था का काम आसान नहीं है.

वे कहते हैं, "हम देश में बिजली की बनावटी कमी को दूर कर देंगे. हम देखेंगे कि बिजली की कमी के कारण किसी उद्योग को परेशानी न हो. अगर सब ठीक चला तो हमारा (विज्ञापन का) नारा होगा, 'दूरदराज के गांवों में बिजली दिखे तो हमें धन्यवाद दीजिए!'

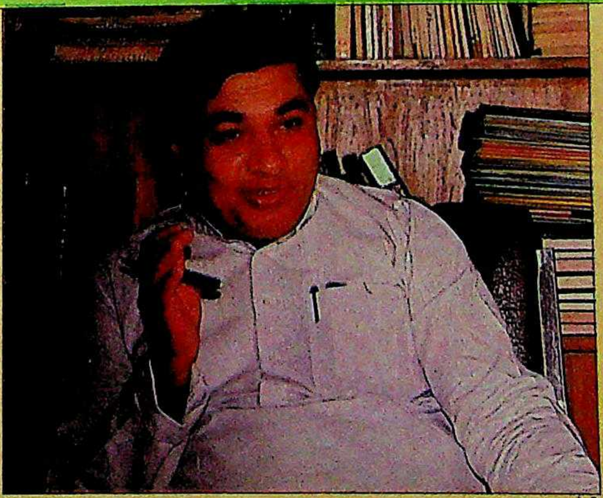
जगन नेगी

"नागरिक उड्डयन के मामले में हम ऐसी व्यवस्था लाना चाहते हैं कि लोग उड़ानों से अपनी घड़ी का समय मिलाएं. मैंने एअरलाइंस के अधिकारियों से कहा है कि सरकार उन्हें बढ़िया सुविधाएं देने में नहीं हिचकेगी लेकिन उन्हें बढ़िया सेवा भी देनी होगी. वरना..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महफ़िल की जान
यह नई शान!
McDowell's
DIPLOMAT
DISPOSABLE
ICE CUBE BAGS
The new
smooth choice!
McDOWELL & CO. LTD.
McDowell's
DIPLOMAT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेनका गांधी, 33 वर्ष, पर्यावरण एवं वन

सत्तर के दशक में तौलिए की मॉडलिंग कर चुकी लड़की आज केंद्र में मंत्री है. लेकिन इस बीच संजय गांधी से शादी, उनकी मौत, फिर नेहरू-गांधी परिवार द्वारा घर से निकाला जाना, पिता की मौत, 1984 में अपने जेठ राजीव गांधी के हाथों अमेठी संसदीय क्षेत्र से अपमानजनक पराजय झेल चुकी मेनका गांधी का अब अपना व्यक्तित्व बन चुका है. पत्रिकाओं में अपने लेखों के जरिए लगातार पशु-पक्षियों की चिंता जताने वाली जनता दल की यह महासचिव सरकार में पर्यावरण और वन मंत्रालय ही पाएगी, इस बारे में पहले से ही अटकलें लग रही थीं.

गोपाल संगर

मेनका कहती हैं, "मैं अपनी नियुक्ति को पर्यावरणवादियों की जीत मानती हूं. पर्यावरण संबंधी कानूनों का हमने ठीक से पालन नहीं किया है. नर्मदा सागर परियोजना से संबंधित सारे ब्यौरे देखने के बाद ही मैं इस बारे में कोई बयान दूंगी.

"मैं पश्चिमी देशों में पर्यावरणवादियों की पार्टी की अवधारणा की तो समर्थक हूं. लेकिन अभी ऐसी किसी पार्टी में नहीं हूं. मैं देश में फिर से हरियाली लाने की कोशिश करूंगी. हम स्वयंसेवी संगठनों से अधिक मदद मांगेंगे और इस बात का पक्का प्रबंध करेंगे कि उनकी बात हर स्तर पर सुनी जाए."

सिर्फ वित्तमंत्री ही करेंगे. सूचना प्रसारण जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय में एक नौकरशाह की नियुक्ति का मामला भी पूरी तरह विभाग के मंत्री पी. उपेंद्र के जिम्मे छोड़ दिया गया. वी.पी. सिंह ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मेरा दफ्तर केवल प्रमुख नीतियों की दिशा और निगरानी के काम को ही देखेगा और बाकी काम उन लोगों के लिए छोड़ दिया जाएगा जिन्हें दरअसल सरकार चलाने में हिस्सेदारी करनी है."

वी. पी. सिंह एक और बात स्पष्ट रूप से कह देना चाहते हैं कि वे राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक मसलों पर संघर्ष का नहीं, सुलह-सफाई का रुख अपनाएंगे. दूरदर्शन पर उनके पहले भाषण से भी यही जाहिर हुआ. यह भाषण उन्होंने खुद ही लिखा. हालांकि इस भाषण के ज्यादातर हिस्से किसी हिंदी फिल्म की पटकथा की तरह लगे लेकिन सुनने वालों के दिल पर इसका असर पड़ा. उन्होंने कहा, "सरकार की तिजोरी खाली है, दिलों में आग लगी है, जमीन लहू से रंगी है और कीमतों ने इंसानी जानें सस्ती कर दी हैं. हमारे पास दो ही ताकतें हैं—आपकी हिम्मत और आपका विश्वास." जनता दल और विपक्षी उम्मीदवारों के लिए धुआंधार चुनाव प्रचार करने वाले फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा, "मेरे लिए तो यह राजा साहब का नया रूप था. भाषण का उनका ढंग और उनका हर शब्द इतना असरदार था कि जनता पर वैसा असर डालने के लिए मेरे जैसे अभिनेता को भी शायद महीनों इसका रियाज करना पड़े."

वी.पी. सिंह समझौतावादी रुख के चलते ही अपनी पार्टी के उग्र नेताओं को निष्प्रभावी करने में कामयाब हुए हैं. ये नेता बड़ी शिद्दत से कोशिशें कर रहे थे कि वी.पी. इंकाशासित उन सभी राज्यों की सरकारों को भंग कर दें जहां इंका की पराजय हुई है; कैबिनेट सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारी, सीबीआई तथा इंटेलीजेंस ब्यूरो (आईबी) के प्रमुखों जैसे उन सभी वरिष्ठ अफसरों को हटा दें जो राजीव राज में सियासी गोटियां बिठाने का काम करते थे; ललित सूरी, सतीश शर्मा और अमिताभ बच्चन जैसों के खिलाफ मुकदमे दर्ज करने का आदेश दें और इंका समर्थक राज्यपालों की तुरंत छुट्टी कर दें. वी.पी. सिंह मानते हैं कि नई सरकार को अगर स्वच्छ छवि बनानी है तो उसे राजीव सरकार की तरह बदला साधने की कार्रवाइयां और कानून से हटकर कोई काम नहीं

एम.एस. गुरुपदस्वामी, 67 वर्ष, पेट्रोलियम एवं रसायन

कर्नाटक से जनता दल का वस्तुतः सफाया हो जाने के बाद जब राज्य से किसी को मंत्री बनाने की बात आई तो वी.पी. सिंह ने सांवले रंग के तेजतर्रार राज्यसभा सदस्य एम.एस. गुरुपदस्वामी को चुना.

1967 से 1969 तक श्रीमती गांधी के मंत्रिमंडल में रहे गुरुपदस्वामी ने उसके बाद उनका साथ छोड़ दिया. 20 वर्ष बाद अब वे पेट्रोलियम और रसायन मंत्रालय लेकर केंद्रीय मंत्रिमंडल में लौटे हैं. उनकी प्राथमिकताएं हैं:

शरद सक्सेना

"तेल, गैस और रसायन अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं. इस मंत्रालय को आर्थिक विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभानी होगी.

"उपभोक्ताओं तक पर्याप्त मात्रा में किरासन तेल और रसोई गैस पहुंचनी चाहिए. हम वितरण व्यवस्था सुधारने में राज्यों की मदद भी लेंगे. तेल का उत्पादन बढ़ाने में हम कोई कसर नहीं रहने देंगे.

"दूसरे देशों में प्रतिबंधित दवाओं का अपने यहां चलन बहुत गलत बात है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद यादव, 44 वर्ष, कपड़ा और खाद्य परिष्करण

कपड़ा और खाद्य परिष्करणमंत्री शरद यादव के दफ्तर को सजाने संवारने में हथकरघा विभाग के अधिकारी जी-जान से जुटे हैं लेकिन इतनी चमक-दमक से वे खुद कुछ परेशान लगते हैं. अंग्रेजी की तुलना में वे हिंदी को पसंद करते हैं. उनकी प्राथमिकताएं:

"हम हथकरघा और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देंगे. आबिद हुसैन की अगुआई में नई कपड़ा नीति का जो दस्तावेज बन रहा है, उसे हम तेजी से पूरा करने पर जोर देंगे. अगर यह कमेटी कोई सार्थक सुझाव नहीं देती तो हम दूसरी कमेटी गठित करेंगे.

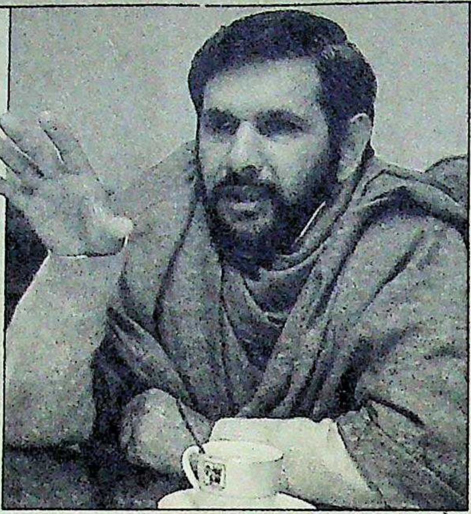
शरद सक्सेना

"हमारी पार्टी ने पेप्सी का विरोध किया है. मैं उसकी पूरी फाइल देखकर पुर्नविचार करूंगा. हम देखेंगे कि इस परियोजना से किसानों को क्या लाभ होगा. कोई फैसला करने के पहले हमें इसके हानि-लाभ पर सोच-विचार करना होगा.

"खाद्य परिष्करण की नीतिं के मामले में हम गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के काम पर ध्यान देंगे और दूसरी तरफ गर्भवती औरतों को देने लायक सस्ता पौष्टिक आहार विकसित करेंगे. अभी तक यह विभाग अमीरों के लिएं साफ्ट ड्रिंक जैसी चीजों पर ही ध्यान दे रहा था. हम खाद्य परिष्करण के काम में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घुसपैठ नहीं चाहेंगे."

करना चाहिए. पर उन्होंने विवादास्पद वित्त सचिव गोपी अरोड़ा का तुरंत तबादला कर दिया और उनकी जगह विमल जालान को ला बिठाया जो पहले वित्त मंत्रालय के सलाहकार रह चुके हैं.

पर नई सरकार जब रफ्तार पकड़ रही है तो उसके सामने समस्याओं का भी अंबार लगा हुआ है. कुछ समस्याएं तो उनके अपने बीच से ही हैं. इनमें दुर्दम्य देवीलाल हैं, जिन्हें हर समय संभाले रहने की जरूरत है. उन्हें रुतबा जमाना और अपने पार्टी सहयोगियों से सलाह-मशविरा किए बिना अहम नीतिगत, राजनैतिक तथा सरकारी मसलों पर सार्वजनिक तौर पर बोल देना अच्छा लगता है. पर गैर-जिम्मेदाराना बयानों से सरकार परेशानी में पड़ सकती है या जैसे-तैसे संतुलित राष्ट्रीय मोर्चे की यह सरकार अस्थिर भी हो सकती है. मसलन उप-प्रधानमंत्री (यह पद उन्होंने खुद चुना) की शपथ लेने के एक घंटे बाद ही देवीलाल ने मद्रास जाने के लिए भारतीय वायुसेना के विमान की मांग की ताकि वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि की बेटी के विवाह में शामिल हो सकें. नई सरकार की सादगी वाली जो छवि पेश की जा रही है. यह उसके बिलकुल उलट था. इसलिए प्रधानमंत्री तो इंडियन एअरलाइंस के जहाज में गए पर उप-प्रधानमंत्री को बीएसएफ का विमान दिया गया.

इतना ही नहीं, मद्रास में देवीलाल ने तमिलनाडु को 50,000 टन अतिरिक्त चावल देने की भी सार्वजनिक घोषणा कर दी. यह सब बिना किसी की जानकारी के ही हुआ. और उस समय तक उन्हें कोई भी विभाग नहीं दिया गया था. बाद में उन मुंह से छूटी बात ने सरकार के लिए एक औ परेशानी खड़ी कर दी. उन्होंने घोषणा कर कि सरकार अनुसूचित जातियों-जनजाति के लिए आरक्षण एक व्यक्ति प्रति परिवा तक सीमित कर देगी. अभी तक परिवार के सभी लोगों को इसका फायदा मिलता रहा है हद तो यह कि मंत्रिमंडल की पहली बैठक मौजूदा नीति को 10 साल तक बढ़ाने प सहमति हो गई थी.

और उधर मात खाई हुई इंका मौक मिलते ही हमला बोलने के लिए घात लगा बैठी है. इंका के प्रवक्ता आनंद शर्मा कहते है "इस अपाहिज सरकार की असली रंगत अ सामने आने लगी है. यह सरकार न सि धोखे से बनी है बल्कि इसके लालची शास सरकार के पूरे अस्तित्व में आने से पहले

मुरासोली मारन, 52 वर्ष, नगर विकास

तमिल फिल्मों के नामी निर्माता और पटकथा लेखक तथा द्रमुक के राज्यसभा सदस्य मुरासोली मारन पार्टी को वैचारिक दिशा देने वाले लोगों में से हैं. वे पार्टी के मुखपत्र 'मुरासोली' के संपादक भी हैं. लेकिन नगर विकासमंत्री बनने के साथ ही उन पर इससे भी अधिक बड़ी जिम्मेवारियां आ गई हैं क्योंकि उनके विभाग के पास कुल 36 विषय हैं. इनमें आवास और केंद्रीय निर्माण से लेकर दिल्ली के चार बाजारों का प्रशासन और नेहरू रोजगार

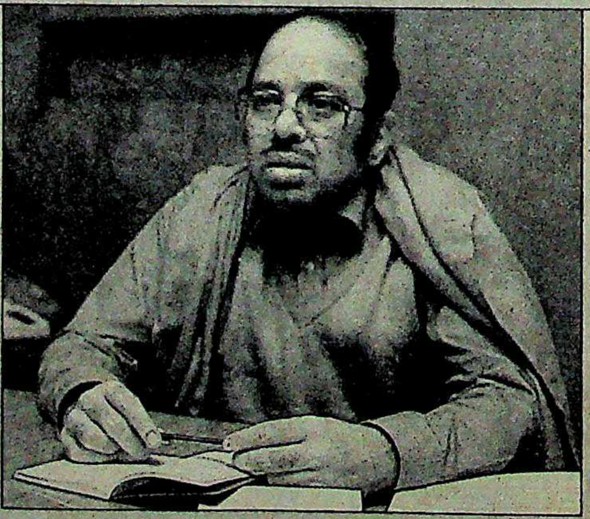
प्रमोद पुष्करणा

योजना तक शामिल हैं. उनकी प्राथमिकताएं:

"हमें महानगरों पर. जनसंख्या का दबाव घटाने के लिए दूसरे उपनगर बसाने होंगे.

"हम रोजगार योजना को नए सिरे से बनाएंगे और इसे मात्र कर्ज-मेला या पैसा बांटने का खेल नहीं रहने देंगे.

"आवास के मामले में अकेले सरकार ही सारा पैसा नहीं लगा सकती. सामुदायिक मिल्कियत को बढ़ावा देना होगा.

"नगर परिवहन व्यवस्था हमारी प्राथमिकता होगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामविलास पासवान, 43 वर्ष, श्रम एवं कल्याण

श्रम शक्ति भवन के कामकाज में रामविलास पासवान का ठेठ बिहारी लहजा कोई बाधा नहीं बन पाया. राजस्थान के एक पूर्व मंत्री को काफी देर इंतजार करने के बाद भी टरकाने वाले पासवान इस दौरान दूसरे लोगों से खुलकर गले मिलते हैं और कॉफी पिलवाते हैं. अपनी प्राथमिकताओं के बारे में वे कहते हैं:

"श्रम मंत्रालय में मेरा पहला काम पूरे देश से बंधुआ मजदूरी को खत्म करने के लिए समयबद्ध योजना बनाना है. मैं प्रबंध में मजदूरों की भागीदारी का पक्षधर हूं और इसे मैं प्रोत्साहन देना चाहूंगा.

प्रमोद पुष्करणा

"खेतिहर और प्रवासी मजदूरों समेत दूसरे सभी तरह के असंगठित मजदूरों का शोषण रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे.

"चुनाव घोषणापत्र के वादे के अनुसार हम कहीं भी आरक्षण समाप्त नहीं करेंगे—60 फीसदी स्थान हरिजन, आदिवासी, विकलांग और महिलाओं के लिए आरक्षित रहेंगे.

"भूमि सुधार कानूनों को लागू कराना भी हमारी पहली प्राथमिकताओं में हैं. हम नशीले पदार्थों के खिलाफ तितरफा हल्ला बोलेंगे."

इसका बंटाधार कर देंगे." पर जनता दल के नेता इसे इंकाइयों के खयाली पुलाव मानते हैं. आरिफ कहते हैं, "हमारी पार्टी लोकतांत्रिक है. इंका की तरह दासों और मालिक वाली पार्टी नहीं. यहां हर किसी के विचार को महत्वपूर्ण माना जाता है. पर अंत में फैसला सर्वसम्मति से होता है, तानाशाही से नहीं."

पर इस लिहाज से पार्टी के सामने कुछ समस्याएं भी हैं. इसके पास इंका जैसा कोई संगठनात्मक ढांचा नहीं है इसलिए इसके पास कोई आधिकारिक प्रवक्ता भी नहीं है जो गलत खबरों का तुरंत खंडन कर सके और विपक्ष पर जवाबी हमला बोल सके. जबकि इंका शुरू से ही इसके लिए मुस्तैद हो चुकी है. जब वी.पी. सिंह ने दूरदर्शन पर कहा कि 'सरकार की तिजोरी खाली है' तो तुरंत ही पूर्व वित्तमंत्री चव्हाण ने इसका खंडन जारी कर दिया.

पर सिर्फ देवीलाल और उनका गुट ही समस्या नहीं है. मंत्रिमंडल के गठन का काम हालांकि शांति से निबटा पर पार्टी के कुछ धुरंधर अभी भी मुंह फुलाए बैठे हैं. अल्पमत सरकार की यह मजबूरी है कि उसके ज्यादातर सांसद या तो मंत्री बनना चाहते हैं या किसी प्रदेश में मुख्यमंत्री. और बहुत से अभी भी रूठे हुए हैं. मेनका गांधी और चंद्रशेखर के समर्थक यशवंत सिन्हा नई सरकार में दी गई भूमिका से नाखुश हुए. दोनों को कैबिनेट मंत्री बनने की उम्मीद थी. सिन्हा ने तो सरकार में शामिल न होने का ही फैसला किया.

विश्वनाथ प्रताप सिंह पर इन ताकतों का दबाव और खिंचाव जोर मारता रहेगा. अजीत सिंह और चंद्रशेखर को कई सांसदों का समर्थन हासिल है. यदि निष्ठा बदली तो सरकार के लिए खासी परेशानी खड़ी हो सकती है. जनता दल के सूत्रों के अनुसार देवीलाल के सबसे ज्यादा 25 सांसद समर्थक हैं जबकि अजीत सिंह के 20 और चंद्रशेखर के आधा दर्जन सांसद समर्थक हैं. पर फिलहाल वी.पी. सिंह को इनसे कोई खतरा नहीं है क्योंकि अपने में से किसी भी नेता की अगुआई में वे एक साथ खड़े नहीं हो सकते. पर जनता दल के एक तिहाई से भी ज्यादा सांसद उन्हीं के साथ हैं अगर विधानसभा चुनावों में पार्टी की स्थिति ज्यादा अच्छी न रही तो वे वी.पी. सिंह के लिए खासी परेशानी खड़ी कर सकते हैं.

पर प्रधानमंत्री के कौशल और राज-

दिनेश गोस्वामी, 54 वर्ष, इस्पात और कानून एवं न्याय

1971 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने के साथ ही दिनेश गोस्वामी का सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ. लेकिन 1977 में चुनाव हारने के बाद वे कांग्रेस (स) में चले गए. 1978 में वे राज्यसभा में आए और 1979 में पार्टी छोड़कर निर्दलीय हो गए. बाद में वे असम गण परिषद में शामिल हो गए.

गोस्वामी को अब इस्पात एवं खान तथा कानून एवं न्याय मंत्रालयों का काम संभालकर अपनी प्रशासनिक क्षमता का परिचय देना होगा.

सव्यसाची मुकर्जी को भारत का

प्रशांत पंजियार

सर्वोच्च न्यायाधीश बनाने के फैसले का उदाहरण देते हुए गोस्वामी ने कहा: "हम अपवादों को छोड़कर परंपराओं को न तोड़ने पर वृढ़ हैं.

"हम चुनाव सुधारों पर ध्यान देंगे. इसका स्पष्ट उद्देश्य चुनाव पर पैसे और बाहुबल के नाजायज असर को कम करना है.

"जिन दूसरे मामलों पर ध्यान देने की जरूरत है उनमें चुनाव आयोग को मजबूत बनाना, चुनाव लड़ने के लिए सरकारी पैसा देना और निर्दलीय उम्मीदवारों की स्थिति शामिल है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के.पी. उन्नीकृष्णन, 53 वर्ष, भूतल परिवहन एवं संचार

"मैं संचारमंत्री के घर से बोल रहा हूं. हमारे फोन में घंटी नहीं आ रही किसी को जल्दी भेजिए." फोन पर यह संदेश दे रहे थे नए संचारमंत्री के.पी. उन्नीकृष्णन के निजी सचिव. और यह घटना बताने के बाद यह कहने की जरूरत नहीं कि उनके सामने कितना मुश्किल काम है.

1971 से संसद में रहे. अनुभवी राजनेता उन्नीकृष्णन ने मंत्री बनने के तुरंत बाद अपने मंत्रालय के हर काम पर 'कब्जा' जमाए बैठे और राजीव गांधी के जमाने से नियुक्त टेक्नोक्रेट सैम पित्रोदा को भी अपने 'कब्जे' में कर लिया. वे कहते हैं:

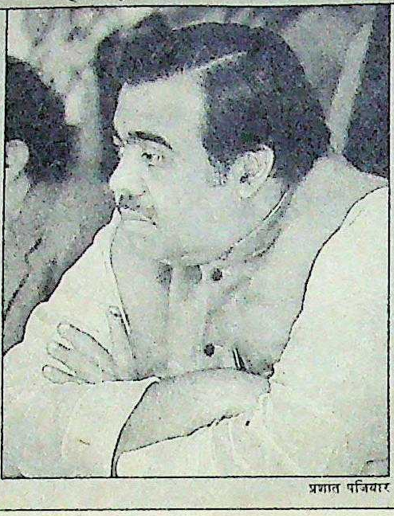
प्रभात पजियार

"मंत्रालय के काम में हर आदमी के सहयोग का स्वागत है. लेकिन उसे एक ढांचे के तहत काम करना होगा. लोगों के प्रति संसद के माध्यम से सिर्फ एक प्रधानमंत्री, एक मंत्रिपरिषद और एक मंत्री ही उत्तरदायी है.

"परिवहन और संचार किसी भी देश की 'जीवनरेखा' है और राष्ट्र के अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है. लेकिन संसाधनों को सावधानी से बांटना होगा और आठवीं योजना के दौरान इस मामले में गंभीर समस्या पैदा हो सकती है. ग्रामीण इलाकों को भी सड़कें चाहिए. लेकिन मेरी प्राथमिकता राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास करने की होगी."

नैतिक सूझबूझ की असली परीक्षा है कम्युनिस्टों और भाजपा को साथ लेकर चलने में. विवाद तब उभरेगा जब भाजपा राम जन्मभूमि हिंदुओं को सौंपने और संविधान का अनुच्छेद 370 खत्म करने की मांग करेगी. साथ ही निर्वाचित हुए कुछ वरिष्ठ भाजपा नेता इस बात पर अड़े हुए हैं कि उन्हें सरकार में ज्यादा अर्थवान भूमिका मिलनी चाहिए. इनमें से कुछ इसलिए नाराज हैं कि वी.पी. सिंह उन्हें अपने साथ स्वर्ण मंदिर क्यों नहीं ले गए.

पर वी.पी. सिंह का मानना है कि ये सब शुरुआती समस्याएं हैं और तरह-तरह के विरोधी गुटों से बातचीत चलाते हुए उन्होंने इतना कुछ कर दिया तो आगे भी इसी तरह समाधान निकाल ही लेंगे. आगामी विधानसभा चुनावों में हालांकि भाजपा और जनता दल के मतभेद उग्र हो सकते हैं पर जनता दल नेताओं को यकीन है कि उनकी अपनी पार्टी के धड़े इससे और करीब आएंगे. इन धड़ों को तब तक एहसास हो जाएगा कि उन्हें कुछ करके दिखाना है तो एकजुट रहना होगा. अरुण नेहरू कहते हैं, "हमारी सरकार अल्पमत सरकार है और हम दूसरों पर निर्भर हैं. इसी एहसास के कारण हमारी सरकार पांच साल निकाल लेगी. विधानसभा चुनावों के बाद हम अपनी स्थिति मजबूत कर लेंगे."

पर जहां तक संगठनात्मक एहसास की बात है, ऐसा नहीं लगता कि पार्टी विभिन्न राज्यों में चुनावी लड़ाई लड़ने लायक स्थिति में है. ज्यादातर पार्टी नेता मंत्री पद की शपथ लेकर अपनी-अपनी कुर्सियों से चिपक गए हैं. फिर जनता दल के मुख्यालय को देख नहीं लगता कि वहां चुनावों की तैयारी चल रही है.

यह कठिन राह है. पर विश्वनाथ प्रताप सिंह की किस्मत तो उनके कामकाज पर निर्भर करेगी—उनके फैसलों, उनके नेतृत्व और उनकी राजनैतिक समझदारी पर. चंद हफ्तों में ही उन्होंने अपनी छवि बड़बोले, स्वप्नजीवी और अनिच्छुक नेता से बदलकर कर्मयोगी की बना ली है. और वह भी बिना किसी चमत्कार, विज्ञापनी नारों या चाकचौबंद पार्टी प्रचारकों के. अगर उन्होंने राष्ट्रीय नेता की हैसियत वाला कामकाज लगातार कर दिखाया तो निस्संदेह आगामी विधानसभा चुनावों में वे जनता दल के सबसे ज्यादा वोट खींचने वाले नेता होंगे. उस हालत में उनकी सरकार के लिए भीतर और बाहर से उठने वाले खतरे निश्चित ही खत्म हो जाएंगे. क्योंकि शक्ति से ही शक्ति का उत्सर्ग होता है.

—प्रभु चावला

पी. उपेंद्र, 53 वर्ष, सूचना प्रसारण एवं संसदीय कार्य

निरुत्तर करने वाली टिप्पणियों और तीखे मजाक के कारण राज्यसभा में छाए रहने वाले पर्वतनेनी उपेंद्र अब खुद संसदीय कार्यमंत्री हो गए हैं. पर उनकी मुख्य जिम्मेवारी आकाशवाणी-दूरदर्शन संभालने वाले सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की है. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को स्वायत्तता देने के राष्ट्रीय मोर्चे के एक प्रमुख वादे पर अमल कराने की जिम्मेवारी संभालने वाले उपेंद्र कहते हैं:

"आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्तता देने के मामले में हम बीबीसी के माडल पर गौर कर रहे हैं. मुझे मंत्रिमंडल के लिए एक दस्तावेज तैयार करना है और संसद के अगले सत्र तक हम फैसला ले लेंगे.

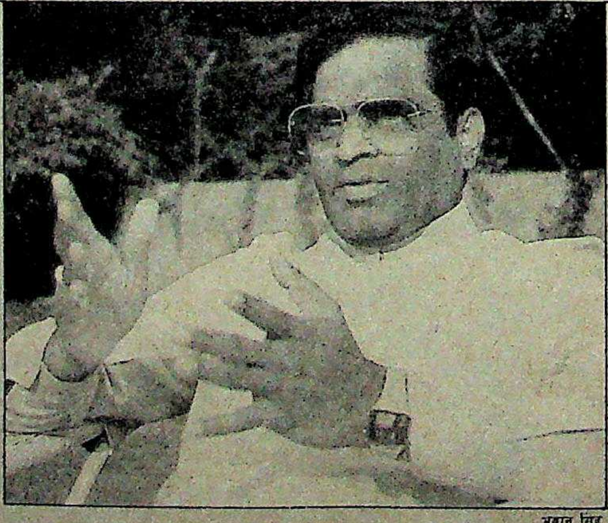
भवान सिंह

"स्वायत्तता दिए जाने के पूर्व ही दूरदर्शन अब पहले के मुकाबले आजाद हो गया है. मैंने इसके महानिदेशक से कह दिया है कि वे किसी भी मंत्री के आग्रह पर ध्यान न दें. सब कुछ अपने महत्व के हिसाब से चलेगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष तौर पर उन लोगों के लिए जो अधिक परिश्रम करते हैं।

आप दिनभर समय के साथ भागते हैं. समय सीमाएँ. बैठकें. काम का दबाव. कोई आश्चर्य नहीं कि आप घर पहुँचने तक एकदम थका हुआ महसूस करते हैं.

आज की तेज़रफ़्तार ज़िंदगी के साथ चलने का प्राकृतिक उपाय

केवल एक चम्मच च्यवनशक्ति दिन में दो बार लेने से आप दिनभर ताज़ादम और फुर्तीले बने रहते हैं. आयुर्वेद द्वारा अनुमोदित इसके प्राकृतिक तत्व आपको पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त रखते हैं.

आंवला, च्यवनशक्ति में एक प्रमुख तत्व है, जो विटामिन सी का सबसे समृद्ध स्रोत है. यह न केवल खाँसी-ज़ुकाम की रोकथाम करता है बल्कि आपके शरीर के तंतुओं को भी नई ताकत देता है.

अश्वगंधा, इसकी क्रिया को और भी तेज़ करता है जिससे आप शारीरिक तथा मानसिक दबावों से मुक्ति का अनुभव करते हैं. केसर, जो उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और आपको दिनभर चुस्त बनाए रखता है. द्राक्षा, जो आपको आंत्रशोध की तकलीफों से दूर रखता है और अकरकरा, जो आपके समूचे स्नायुतंत्र को एकदम स्वस्थ बनाए रखता है.

इन सभी के गुणों को बढ़ाता है– ताज़ा प्राकृतिक शहद जो पूरक पोषक तत्व के रूप में भी कार्य करता है. ताकि आप दिन-ब-दिन तरोताज़ा और दमदार रहें जीवन के संघर्ष के लिए तैयार.

च्यवनशक्ति

डाबर च्यवनप्राश के निर्माताओं की ओर से

डाबर इंडिया लिमिटेड
हर्ष भवन ई ब्लाक, कनॉट प्लेस
नई दिल्ली-110001.

everest/d89/DIL/228 hig

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुबाइया सईद

दुःस्वप्न का सुखद अंत

तनाव भरे पांच दिनों बाद कश्मीर के उग्रवादियों ने अपने पांच साथियों के एवज में केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबाइया को छोड़ दिया.

बुधवार की उस दोपहर आसमान बादलों से भरा था. श्रीनगर का राजौरी कदल इलाका लगभग सुनसान था. तीन बजकर चार मिनट पर दो एंबेसेडर कारें चौक पर आकर रुकीं और पांच आदमी बाहर निकले. इनमें से एक लंगड़ा व्यक्ति दो लोगों के सहारे चल रहा था. दो ऑटोरिक्शा इन लोगों के इंतजार में ही खड़े थे. पांचों को लेकर ये ऑटोरिक्शा गलियों में अदृश्य हो गए. इसके घंटे भर बाद पत्रकार जफर मेराज के पास जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) के प्रवक्ता जावेद अहमद मीर का फोन आया, जो बड़े उत्साह से उन्हें बता रहा था, "हमारे लड़के हमारे पास पहुंच गए हैं. यह बहुत अच्छी बात है. लड़की जल्दी ही अपने वालिदैन के पास पहुंच जाएगी."

इधर नई दिल्ली में अकबर रोड के 10 नंबर बंगले पर भीड़ जुटने लगी थी. केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद हर आगंतुक से हाथ मिलाकर, गले लगकर, कह रहे थे, "यह सब ऊपर वाले की मेहरबानी है." सईद के लिए यह व्यक्तिगत यातना की समाप्ति थी. अनिश्चय और आशंका भरे छह दिनों के बाद उनकी 23 वर्षीया अपहृत बेटी रुबाइया सईद को जेकेएलएफ के उग्रवादियों ने अपने पांच साथियों की रिहाई के एवज में छोड़ दिया.

रुबाइया का अपहरण सईद के लिए अगर निजी संकट था तो देश के गृहमंत्री के रूप में पहली चुनौती से सामना भी. यह नई सरकार को ठप करने का प्रयास भी था. विडंबना यह कि जब अपहरण हुआ तो सईद गृह मंत्रालय के अधिकारियों के साथ पहली बैठक कर रहे थे. 8 दिसंबर की शाम लगभग 3.25 बजे मृदुभाषी सईद अपने कनिष्ठ अधिकारियों को कश्मीरियों के दिमाग की बारीकियां समझा रहे थे. उधर तकरीबन इसी वक्त रुबाइया इकबाल पार्क रोड पर बने ललदेद मेमोरियल वूमंस हॉस्पीटल से बाहर निकलीं, जहां वे इटर्नी हैं. सड़क पर आकर उन्होंने नौगांव, जहां सईद परिवार रह रहा है, जाने के लिए लोकल वैन— जेकेएफ 677—पकड़ी. वैन रोज इसी रास्ते आती-

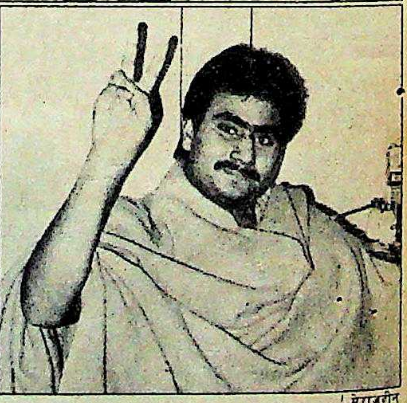

मेराजुद्दीन

रुबाइया और दूसरी बेटी के साथ मुफ्ती; और अब्दुल हामिद शेखः अग्निपरीक्षा

जाती थी. लेकिन उस रोज तकलीपुरा इलाके में छनपोर रोड के पास जो कुछ हुआ वह दुःस्वप्न ही था. वैन में यात्रा कर रहे तीन व्यक्तियों ने वैन रुकवाई और बंदूक की नोंक पर रुबाइया को अगवा करके नीले रंग की मारुति में ले भागे. इस पूरी कार्रवाई में 20-25 मिनट लगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस हादसे के दो घंटे बाद एक अनजान आदमी ने रुबाइया के घरवालों को उनके अपहरण की खबर फोन पर दी. अपहरणकर्ताओं ने उनकी रिहाई के बदले अलगाववादी आंदोलन के कर्ताधर्ता अब्दुल हामिद शेख, पाकिस्तान में रह रहे उग्रवादी शेर खां और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के आरोप में गिरफ्तार तीन और उग्रवादी नूर मुहम्मद कलवल, अल्ताफ अहमद और जावेद अहमद जरगर की रिहाई की मांग की.

दिल्ली में खबर फैलते ही सईद के घर आने वालों का तांता लगा गया. सबसे पहले पहुंचने वालों में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह, केंद्रीय ऊर्जामंत्री आरिफ मुहम्मद खां और पर्यटन एवं वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू थे.

इस संकट से निबटने के लिए अरुण नेहरू की अगुआई में पूरी नौकरशाही सक्रिय हो गई. मंत्रिमंडल की उपसमिति, जिसमें अरुण नेहरू, विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल और आरिफ शामिल थे, नौकरशाहों को निर्देश देने के अलावा मामले के राजनैतिक पहलू के आकलन में मशगूल हो गई. उधर बड़ी राजनैतिक पार्टियों, मुस्लिम संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं, यहां तक कि इस्लाम के धार्मिक नेताओं ने भी अपहरण की भर्त्सना शुरू कर दी. दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी का कहना था, "ऐसी हरकतों के लिए इस्लाम में कोई जगह नहीं है." जेकेएलएफ को शह देने वाला पाकिस्तान भी अपहरण की निंदा करने में सबसे आगे था.

इन प्रतिक्रियाओं के जवाब में जेकेएलएफ ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करके कश्मीरी राष्ट्रवाद की भावना भड़काने की कोशिश की. उसने यह कहकर अपने आलोचकों की निंदा की कि उन्होंने उस समय कोई विरोध नहीं किया था जब फारूक अब्दुल्ला के सुरक्षा बलों ने कश्मीर की मां और बेटी को परेशान किया था. उग्रवादियों के खिलाफ अभियान के दौरान सुरक्षा बलों ने हामिद को गिरफ्तार करने से पहले उसकी मां को बंदी बना लिया था.

अपहरण की घटना से लोगों का ध्यान मुख्यमंत्री फारूक की ओर भी गया. साफ है कि 32 महीनों के कुशासन के बाद अब वे जनता से अलग-थलग पड़ गए हैं. उस समय वे अपने इलाज के लिए अमेरिका गए थे. अपहरण के दिन ही इसकी निंदा करने वाले नेशनल कांफ्रेंस विधायक दल ने भी बाद में इस मुद्दे पर चुप्पी साध ली, शायद उन पर उग्रवादियों का खौफ हावी था. दरअसल ऐसा लग रहा था जैसे समूचा श्रीनगर शहर ही दहशत के साये में जी रहा हो.

और जब उग्रवादी रिहा किए गए तो भारी भीड़ ने भारत विरोधी नारे लगाए. लोग सड़कों पर नाचते-गाते नजर आए. एक नारा था—'जो करे खुदा का खौफ, उठा ले कलाश्निकोव'. पूरे शहर

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

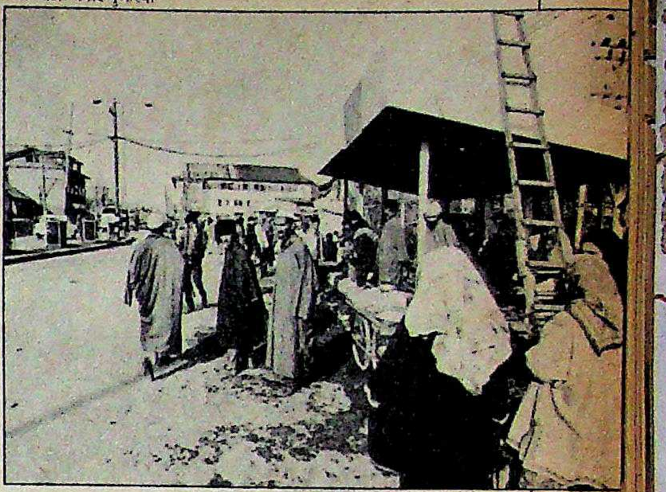
रुबाइया जिस स्टॉप से वैन में चढ़ीं

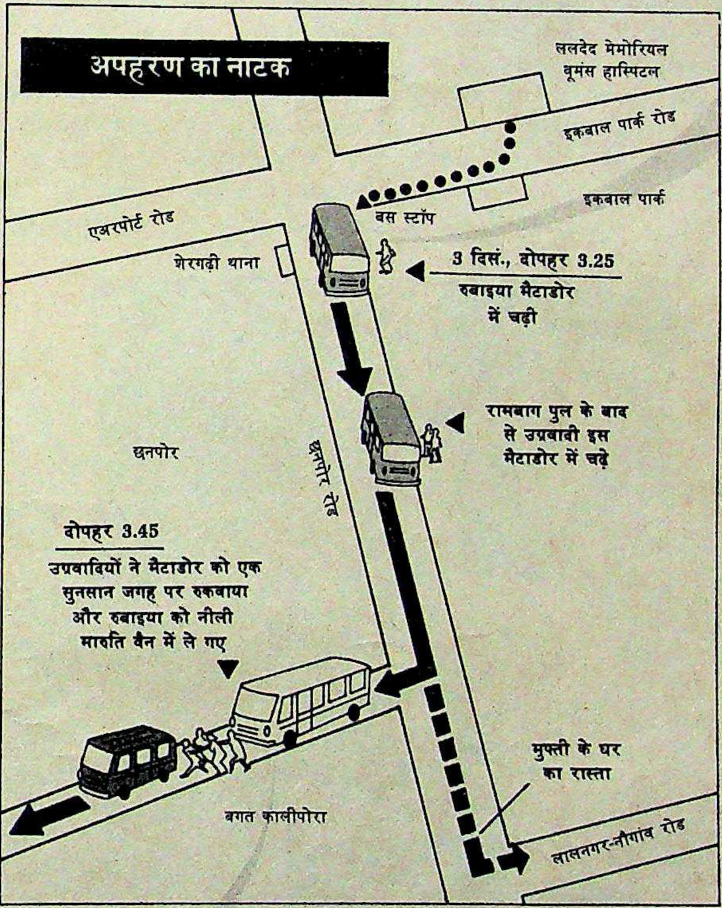

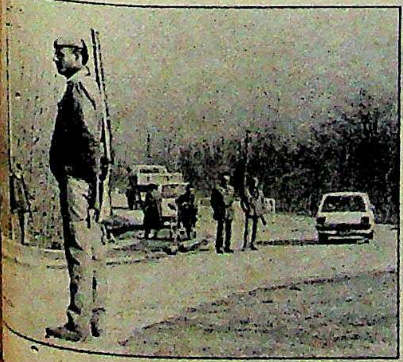
अपहरण का दृश्य

अपहरण की घटना से लोगों का ध्यान फारूक अब्दुल्ला के नाकारा प्रशासन की ओर गया जो जनता से अलग-थलग पड़ गया है

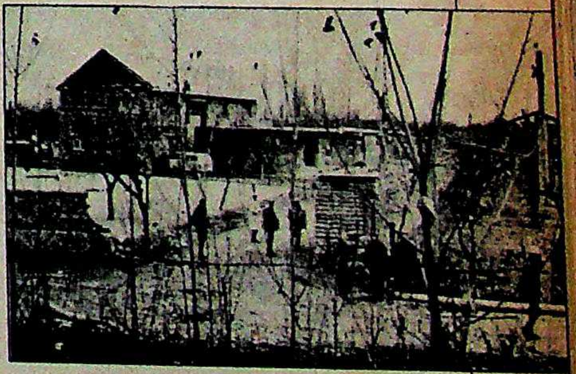
श्रीनगर में मुफ्ती का घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अर्द्धसैनिक बल के जवान फैल चुके थे.

रुबाइया की रिहाई में हुई देरी से राज्य प्रशासन की खामियां भी सामने आ गई. उसकी जड़ता की वजह से अपहरण के बाद कई महत्वपूर्ण घंटे बरबाद हो गए. राज्य की खुफिया पुलिस भी इतनी नाकारा साबित हुई कि मध्यस्थता करने वाले किसी उग्रवादी का नाम नहीं सुझा सकी. अंततः ये लोग मध्यस्थ बने—इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज एम.एल. भट; पुलिस मुकाबले में घायल हामिद का सौरा अस्पताल में इलाज करने वाले डॉक्टर अब्दुल अहमद गुरु; निर्दलीय विधायक मीर मुस्तफा और स्थानीय बाशिंदे मिर्जा अब्दुल कयूम. और जब फारूक सरकार की नींद खुली तब उसने उग्रवादियों की रिहाई के तौर-तरीके आदि के बारे में फैसला करने में देर कर दी. समझौता तभी हो सका जब आरिफ और गुजराल श्रीनगर पहुंचे.

मुफ्ती को पहले ही आशंका थी. उन्होंने अपने 14 वर्षीय बेटे निक्की से कह दिया था कि वह अकेला न रहे. परिवार में सभी को उम्मीद थी कि घर की औरतों पर किसी तरह की आंच नहीं आएगी.

प्रशांत पंजियार

फारूकः अवाम से कटे

जेकेएलएफ उग्रवादियों के बारे में वैसे किसी को ज्यादा जानकारी नहीं है. नेताओं की अहं की लड़ाई की वजह से संगठन का कोई निश्चित रूप नहीं रह गया है. पर इतना साफ है कि इसका अध्यक्ष अमानुल्ला खां है जो लंदन, एम्सटर्डम और रावलपिंडी वगैरह में रहते हुए अभियान चलाता है. गृह मंत्रालय के सूत्रों का विचार है कि अपहरण की यह घटना अजीम इकबाली या मुश्ताक लतरम के गुटों की करतूत हो सकती है.

दोनों ही घाटी में भूमिगत रहते हुए सक्रिय हैं. इकबाली को 'पढ़ा-लिखा और समझदार' माना जाता है जो अलगाववाद की वकालत करता फिरता है. लतरम तेजतर्रार उग्रवादी है जिसका जेकेएलएफ के नौजवानों पर खासा असर है.

इस घटना ने घाटी के युवकों के एक तबके को राजनैतिक रूप से अलग-थलग कर दिया है. फारूक प्रशासन के कड़े तौर-तरीकों पर जो प्रतिक्रिया हो रही है उससे साहस के साथ निबटने की जरूरत है. अपहरण के विरोध में व्यक्त भावनाओं से जो माहौल बना है वह कश्मीर समस्या के समाधान में मददगार हो सकता है. मुफ्ती के जनमोर्चा वाले दिनों के साथी और सांसद मानवेंद्र सिंह के अनुसार, "अपहरण कांड की जिस तरह से निंदा हुई है उसने सरकार की धर्मनिरपेक्ष छवि को पुख्ता कर दिया. भविष्य में समस्याएं सुलटाने में यह काफी काम आएगी." अपहरण कांड के बाद थोड़ी देर के लिए ही सही, लगा कि 'दिलों को जोड़ने' के वी.पी. सिंह के आह्वान पर लोग उनके साथ हो गए हैं.

—पंकज पचौरी

*पूरा देश जबकि 53 वर्षीय मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी की रिहाई की खबर जानने को उत्सुक था, वे खुद एक चिंतित पिता और परेशान गृहमंत्री लग रहे थे. मुफ्ती इन दोनों ही भूमिकाओं को धैर्य से निभाते रहे. वरिष्ठ संवाददाता **पंकज पचौरी** से उनकी बातचीत के अंश:*

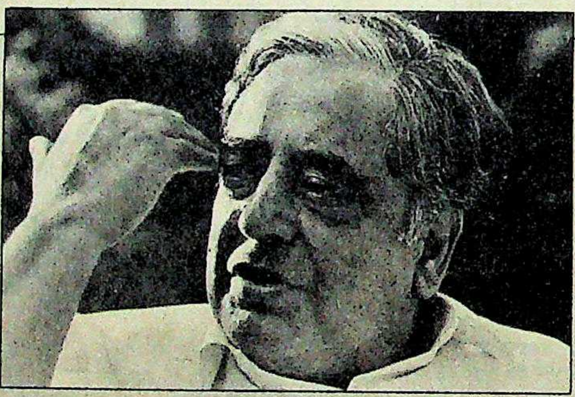

मुफ्ती मुहम्मद सईद

'मैं ही नहीं, मुल्क परेशान था'

● ***अपहरण के राजनैतिक पहलुओं पर आपकी राय?***

केंद्र और राज्य की पिछली सरकारों ने गठजोड़ की अपनी राजनीति के जरिए आबादी के एक बड़े हिस्से को अलग-थलग कर दिया है. लोग उग्रवादियों की बातें सुनने लगे हैं. 1987 के विधानसभा चुनावों में जमकर धांधली हुई. उसके बाद से लोकतांत्रिक संस्थाओं पर से लोगों का भरोसा उठ गया. घाटी के युवक हिंसा की ओर मुखातिब हो गए. आर्थिक तरक्की के उपायों की उपेक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्ट प्रशासन और केंद्र के सौतेले व्यवहार ने अधिकारियों के प्रति लोगों के गुस्से को और बढ़ा दिया.

● ***लेकिन यह असंतोष फिर उग्रवाद में क्यों और किस तरह बदल गया?***

कश्मीर हमेशा से अंतरराष्ट्रीय साजिशों का केंद्र रहा है. यहां का एक तबका कश्मीर को भारत में मिलाए जाने से सहमत नहीं था. लेकिन यह तबका हमेशा शांत रहा. लोगों को जब मौजूदा व्यवस्था का कोई विकल्प नजर नहीं आया तो उनका रुझान उग्रवादियों की ओर हुआ. प्रशासन और दूसरी संस्थाएं तो ठप हो गई हैं. मेरी राय में यहां हालात पंजाब से भी बदतर हैं.

● ***इसे सुधारने की आपकी क्या योजना है?***

हमारा मानना है कि यह सिर्फ प्रशासकीय उपायों का ही मामला नहीं है. लोकतांत्रिक संस्थाओं में लोगों का भरोसा भी कायम करना होगा. जो लोग कश्मीर को भारत का अंग मानते हुए भी यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, उनका हौसला बढ़ाना होगा. लोग अच्छी व्यवस्था, अच्छा प्रशासन और आर्थिक योजनाएं चाहते हैं. हमारी प्राथमिकता होगी बेरोजगारी दूर करना, शासन व्यवस्था को मजबूत करना.

● ***क्या इस अपहरण के बाद अब सुरक्षा व्यवस्था में ढील की नई सरकार की नीति छोड़ दी जाएगी?***

नहीं. हम दिखावे वाले सुरक्षा इंतजाम के खिलाफ हैं. सुरक्षा तो होगी पर इसे हैसियत का प्रतीक नहीं बनने देंगे.

● ***पिछले छह दिन जरूर यातनादायी रहे होंगे?***

मैं अकेला नहीं था. मेरे साथ पूरा देश था. मुझे अपने इस देश पर गर्व है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

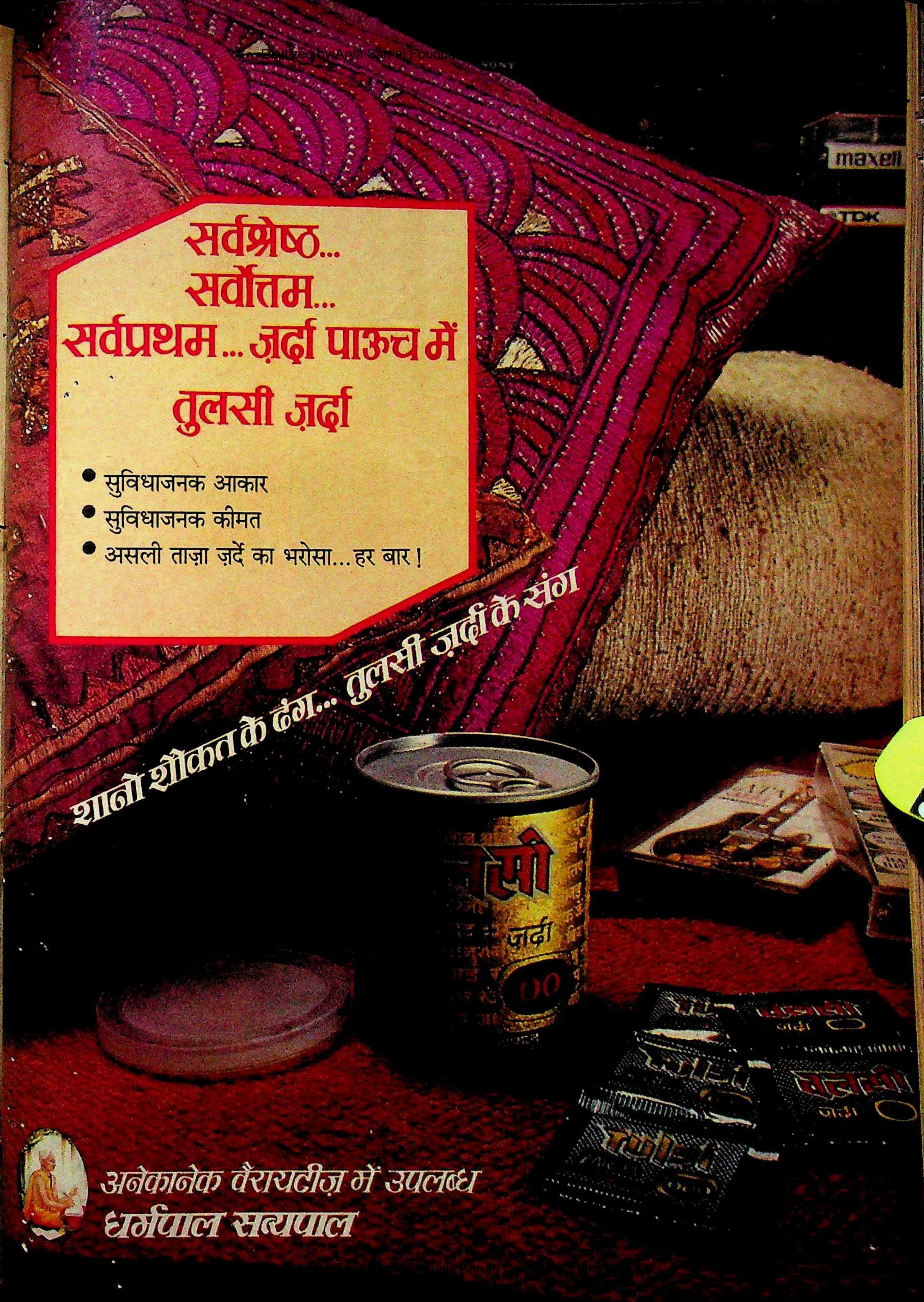

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ) नेता

जाने कहां गए वो दिन

कभी जिन इंका नेताओं की तूती बोलती थी, आज वे सत्ता से वंचित हो जीवन की सचाइयों का सामना कर रहे हैं. कई नेताओं ने तो अपनी हार को समय का फेर मानकर स्वीकार कर लिया है मगर कई ऐसे हैं जो आहत हैं. लेकिन इनमें से ज्यादातर नेता इसे विश्राम का दौर मान रहे हैं.

राजीव गांधी

दरबार तो लगता है मगर वह शानोशौकत नहीं दिखती

दिल्ली में दिसंबर की हाड़ कंपाने वाली ठंड में भी 7, रेसकोर्स रोड में रहने वाले व्यक्ति के लिए गरमी देने वाली कई स्मृतियां ताजा हैं. उन झक सफेद मर्सिडीज और तांबई रंग की रेंज रोवर कारों की, जिन्हें वे मनमर्जी से हांका करते; उन विमानों और हेलिकॉप्टरों की जो उनकी भृकुटी के इशारे पर उड़ान भरा करते, और 80 करोड़ लोगों के उस देश की जिस पर उनका फरमान चला करता.

लेकिन राजीव गांधी के पास सुखदायी यादें भर नहीं हैं. हालांकि उनका वह रुतबा और वह तामझाम अब नहीं रहा पर कई चीजें अभी भी कायम हैं. सुबह की धुंध छंटती भी नहीं कि सैकड़ों लोग विपक्ष में जा पहुंचे इस नेता के मकान के बाहर जमा हो जाते हैं. इनमें गुजरात से लेकर हिमाचल प्रदेश तक के कांग्रेसी, तिब्बती बौद्ध भिक्षु, जम्मू की महिला कांग्रेस की कुछ कार्यकर्ता और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुछ छात्र हैं. करीब 8.30 बजे सुरक्षाकर्मी दर्शकों को अंदर भेजने लगते हैं. सत्ता और विशेषाधिकार का प्रभामंडल अब भी बाकी है. प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए गठित किए गए विशेष सुरक्षा दस्ते (एसपीजी) के जवान आज भी यहां ड्यूटी पर हैं.

चारदीवारी के भीतर विशाल लॉन पर दरियां बिछी हुई हैं. एक कोने में दो पेड़ों के बीच दलित साहित्य अकादमी का एक बैनर टंगा है. 9.05 पर कुर्ता-पाजामा में धूसर रंग की जैकेट पहने, हाथ जोड़े राजीव प्रातः दर्शन के लिए अपने निवास से बाहर निकलते हैं. लॉन में घूमते हुए वे आगंतुकों से मिलते हैं. दलित अकादमी के लोगों के सामने संक्षिप्त भाषण में वे अपनी शिक्षा

हार से उनके हाव-भाव में कोई बदलाव नहीं आया है. नई हकीकत से तालमेल बिठाने में उन्हें मुश्किल होती है

सभी फोटो: भवान सिंह

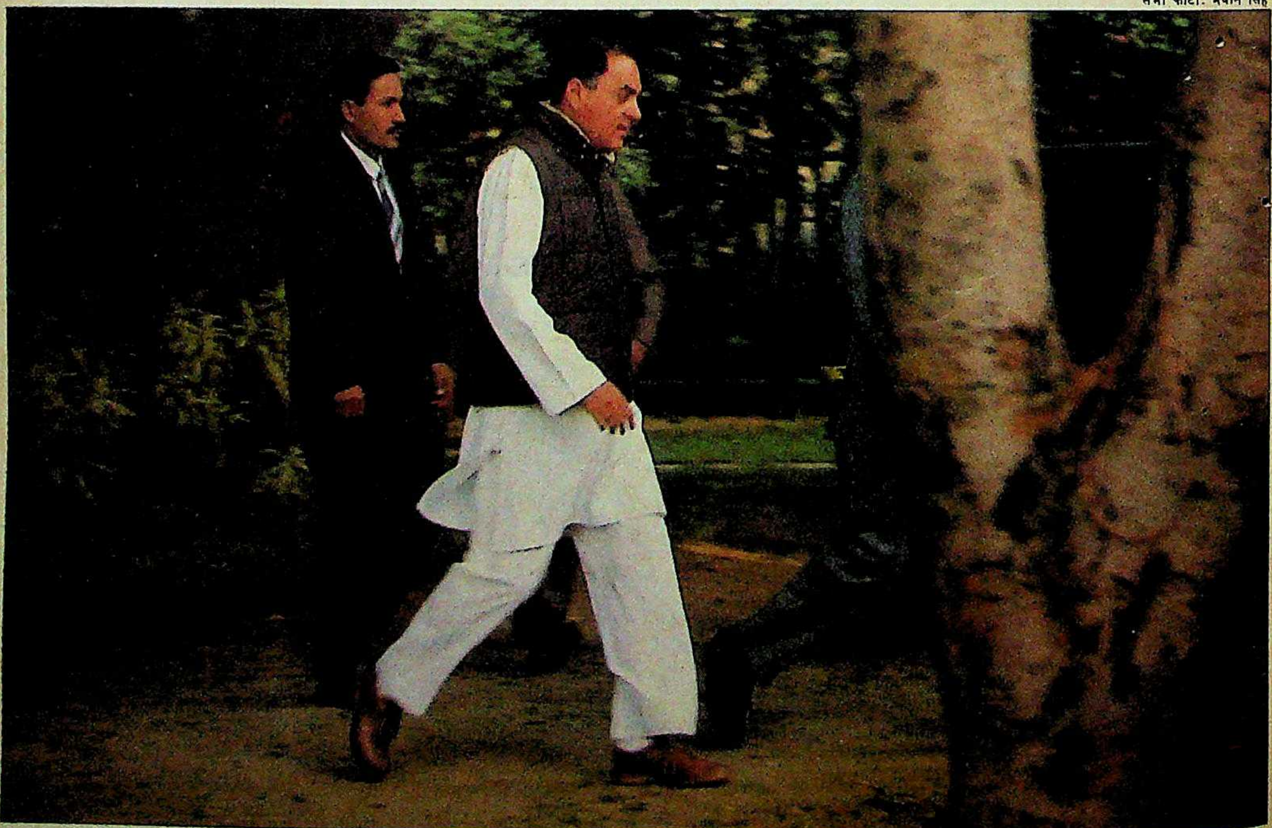

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति का बखान करने लगते हैं कि किस तरह उन्होंने उसे लागू करना चाहा. वे कहते हैं, "सरकारी स्कूलों में दी जा रही शिक्षा के बारे में आप जानते हैं. और कितने लोग अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में भेज सकते हैं?" हार से उनके हाव-भाव में कोई बदलाव नहीं आया है. नई हकीकत से तालमेल बिठाने में उन्हें मुश्किल होती है.

इसी बीच दरबारा सिंह, भजनलाल, एआर. मल्लू और प्रतिभा पाटील पहुंचती हैं. सतीश शर्मा कहीं दिखाई नहीं पड़ते. क्या इसे पार्टी के पुराने दिग्गजों की वापसी समझा जाए? पश्चिम बंगाल से चुनाव हार गई पार्टी की तेजतर्रार नेता ममता बनर्जी राजीव से राज्य का दौरा करने का आग्रह करती हैं. उर्दू के साहित्यकार तथा राज्यसभा सदस्य बेकल उत्साही उन्हें अपनी ताजा किताब 'रंग हजारों, खुशबू एक' भेंट करते हैं.

हरे कृष्ण संप्रदाय (इस्कान) के बंबई से आए साधू राजीव का इंतजार कर रहे हैं. महामंत्र दास उन्हें भगवद्गीता की प्रति भेंट करते हैं. इसी बीच पार्टी के कुछ नेता अकेले में कुछ कहना चाहते हैं. राजीव उन्हें एक तरफ ले जाते हैं.

लेकिन इसमें संदेह नहीं कि वह शाही शानोशौकत अब नहीं रही. अफरातफरी के माहौल के अभाव में आत्मविश्वास से ज्यादा उदासीनता ही दिखती है. इसका सही बयान राजीव की हंसी कर देती है. इस हंसी में थकान और उदासी का भाव है. भले ही उत्तर प्रदेश के सोनभद्र से आए स्वतंत्रता सेनानी भुवनेश्वर प्रसाद गुप्ता राजीव से कहते हैं, "आप संघर्ष करो, हम सब आपके साथ हैं" पर कोई उनके इस संघर्ष में शामिल होने को तैयार नहीं लगता.

अब भी राजीव की दिनचर्या सुबह 6.30 बजे शुरू हो जाती है पर उनके सामने देखने को कोई सरकारी फाइल नहीं होती. उन्हें कहीं दस्तखत नहीं करने होते. इसके अभाव में वे वह समय बागीचे में टहलकर और कसरत करने वाली साइकिल पर पैडल मारकर गुजारते हैं. फोन की घंटी अब भी घनघनाती है और लगातार घनघनाती है पर अब रैक्स और ऑपरेटर समेत टेलीफोन बोर्ड की सुविधाएं नहीं हैं.

बावजूद इसके कुछ आदतें अभी भी कायम हैं. दोपहर के 2 से 4 बजे तक दो घंटे वे पत्नी और बच्चों के साथ बिताते हैं. लेकिन हमेशा की तरह पहुंचने में उन्हें देर हो जाती है. इस बीच लंच लेकर बेयरा पहुंचता है. उसमें हमेशा की तरह टमाटर का सूप होता है. इसके बाद रात 1 बजे तक बैठकें चलती हैं.

अभी भी उनके बंगले के चारों ओर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था है, दर्शकों को पांच जगहों की जांच-पड़ताल से गुजरना होता है. और जब वे घर से बाहर निकलते हैं तो पुलिसवाले पहले की तरह ही सड़क के किनारे खड़े हो जाते हैं. हिटलिस्ट में सबसे ऊपर होने की वजह से राजीव दिसंबर के पहले हफ्ते में सिर्फ तीन बार ही बाहर निकले.

इस साल दिसंबर महीना कई मायने में अलग साबित हुआ है. यह महीना छुट्टियों का हुआ करता था. पर इस साल सुरक्षा संबंधी समस्याएं और हार का बोझ है. अभी भी वे अपने फार्म हाउस महरौली नहीं गए हैं. उनके सहयोगियों का कहना है कि अब उनकी नजर मार्च में होने वाले राज्यों के संभावित विधानसभा चुनावों पर है.

यह पेंडुलम की गति की तरह है जिसमें संतुलन की जरूरत है. ऐसा लगता है कि कभी देश दुनिया के आसमान को नापने वाले बेहद सक्रिय प्रधानमंत्री को एकाएक 7, रेसकोर्स रोड की चारदीवारी में घिरकर रह जाना पड़ा है.

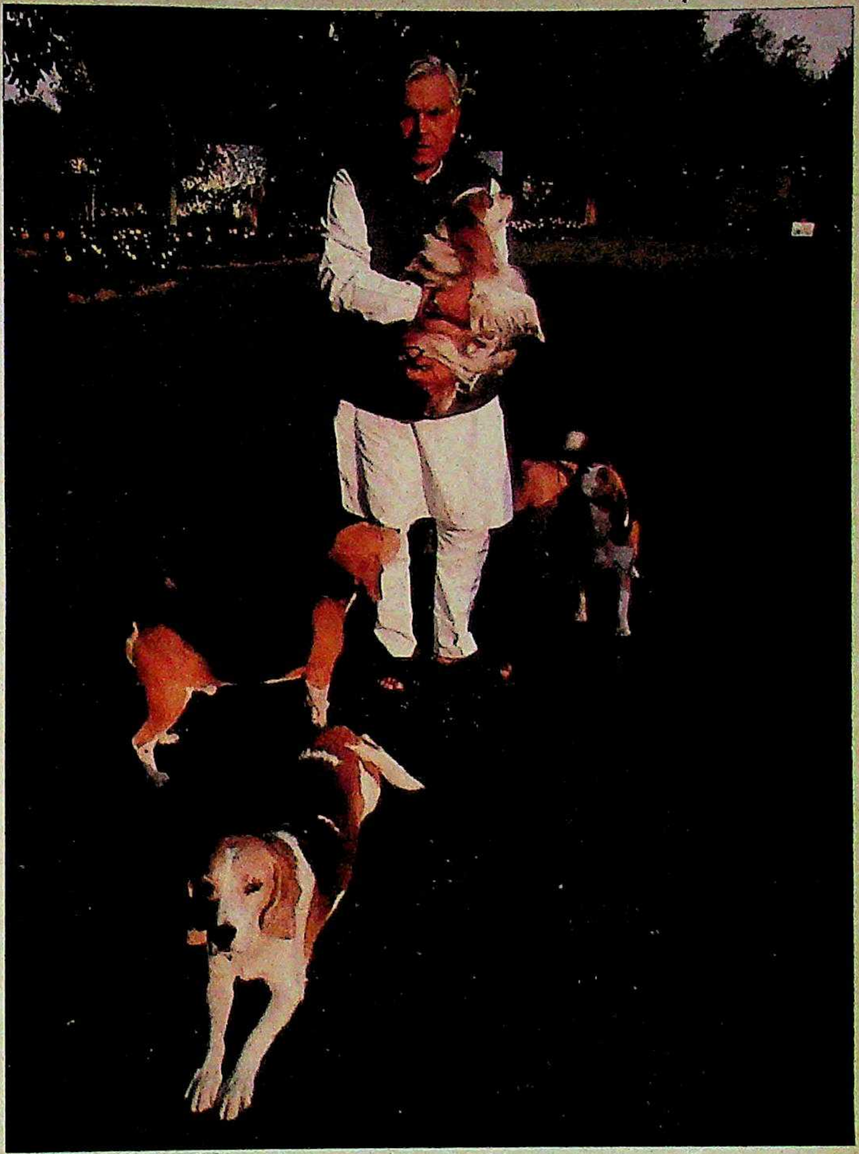

कुंअर नटवर सिंह

किताब और स्तंभ लिखेंगे, भाषण देंगे और गोल्फ खेलेंगे

तेजतर्रार राजनयिक के बाद सौम्य विदेश राज्यमंत्री की कुर्सी संभालते रहे नटवर सिंह कुछ दिन पहले तक भारत या विदेश में कहीं भी विदेशी हस्तियों के साथ बैठकों में व्यस्त रहा करते थे. 37 साल बाद अब पहली बार अचानक ही उनके हाथ से काम छिन गया है.

आरामदेह सोफे में धंसे नटवर सिंह दावा करते हैं, "फिलहाल चुप बैठने का मेरा कोई इरादा नहीं है." आजकल वे अपनी पुस्तक 'डिप्लोमेसी, ओल्ड ऐंड न्यू' लिखने के लिए सामग्री जुटाने के साथ-साथ विदेशों में कई व्याख्यान देने की योजना बना रहे हैं. उनके पास लंदन के अखबार 'फाइनांशियल टाइम्स' के लिए पुस्तक समीक्षा का काम भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी नई भूमिका अब एक स्तंभ लेखक की होगी. वे बताते हैं, "पूर्वी यूरोप में ऐतिहासिक घटनाएं हो रही हैं. कुछ समय मेरा इरादा वहीं ध्यान देने का है. इस संबंध में मैं विभिन्न प्रकाशनों में लेख लिखूंगा."

अब न तो कोई प्रतिनिधिमंडल उन्हें मिलने आता है और न ही कोई फाइल उन्हें आगे बढ़ानी होती है. इसलिए वे अपना प्रिय खेल टेनिस भी फिर से शुरू करने की सोच रहे हैं. दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व टेनिस चैंपियन और अखिल भारतीय टेनिस महासंघ के अध्यक्ष नटवर सिंह बताते हैं कि पिछले 10 साल से उन्हें टेनिस रैकेट तक छूने का समय नहीं मिला. उस आदमी के लिए यह दुख की बात ही होगी जो सुमंत मिश्र, नरेंद्र नाथ और प्रेम पांडेय जैसे डेविस कप के कप्तानों के साथ खेल चुका हो.

इसलिए अपने प्रिय खेल के लिए उनकी शामें जिमखाना क्लब में बीतेंगी. सुबह वे पहले योगासन और फिर बगीचे में अपने पांच कुत्तों के साथ चहलकदमी किया करेंगे. जहां तक उनके परिवार—पत्नी, एक बेटा, एक बेटी—का ताल्लुक है, वे बताते हैं कि "मेरे पास उनके लिए या फिर खुद अपने ही लिए जरा भी समय नहीं होता था." पर उन्होंने तय कर लिया है कि "अब से मैं फ्रांसीसी कहावत—खुद से संगत साधिये—के अनुसार जीना शुरू कर रहा हूं."

निजी कर्मचारियों, कार और सुरक्षा प्रहरियों के हटा लिए जाने से वे चिंतित नहीं हैं. वे हंसते हुए कहते हैं, "अब कम-से-कम मैं किताबों की दुकान में घुस सकता हूं और मुझे यह भी महसूस नहीं होगा कि मैं किसी कैदी की तरह जेल ले जाया जा रहा हूं." अब उन्हें सिर्फ एक स्टेनोग्राफर की जरूरत है जो उनके लेखों को टाइप कर दे. नौकर तो हमेशा ही उनके घर पर रहे हैं.

दिल्ली की समृद्ध कॉलोनी वसंत विहार में नटवर सिंह का अपना महलनुमा मकान है. उनके पास एक टोयोटा कार और एक मारुति जिप्सी पहले से ही है.

वे दर्शन बघारते हैं, "तन-मन और दिमाग के लिए संयमी जिंदगी ज्यादा अच्छी है. सत्ता तो आती-जाती है. मैं रोने-चिल्लाने वाला आदमी नहीं. जिंदगी में बहुत धक्के खाए हैं."

राजनीति से बाहर धकेल दिए जाने पर वे कहते हैं, "दूसरे सिरे पर जा पहुंचना भी अपने आप में एक अनुभव है." अब वे सपरिवार पहाड़ी सफर पर जा रहे हैं. डोची और चैल (हिमाचल प्रदेश) में छुट्टियां मनाने की वे अरसे से सोच रहे थे.

प्रशांत पंजियार

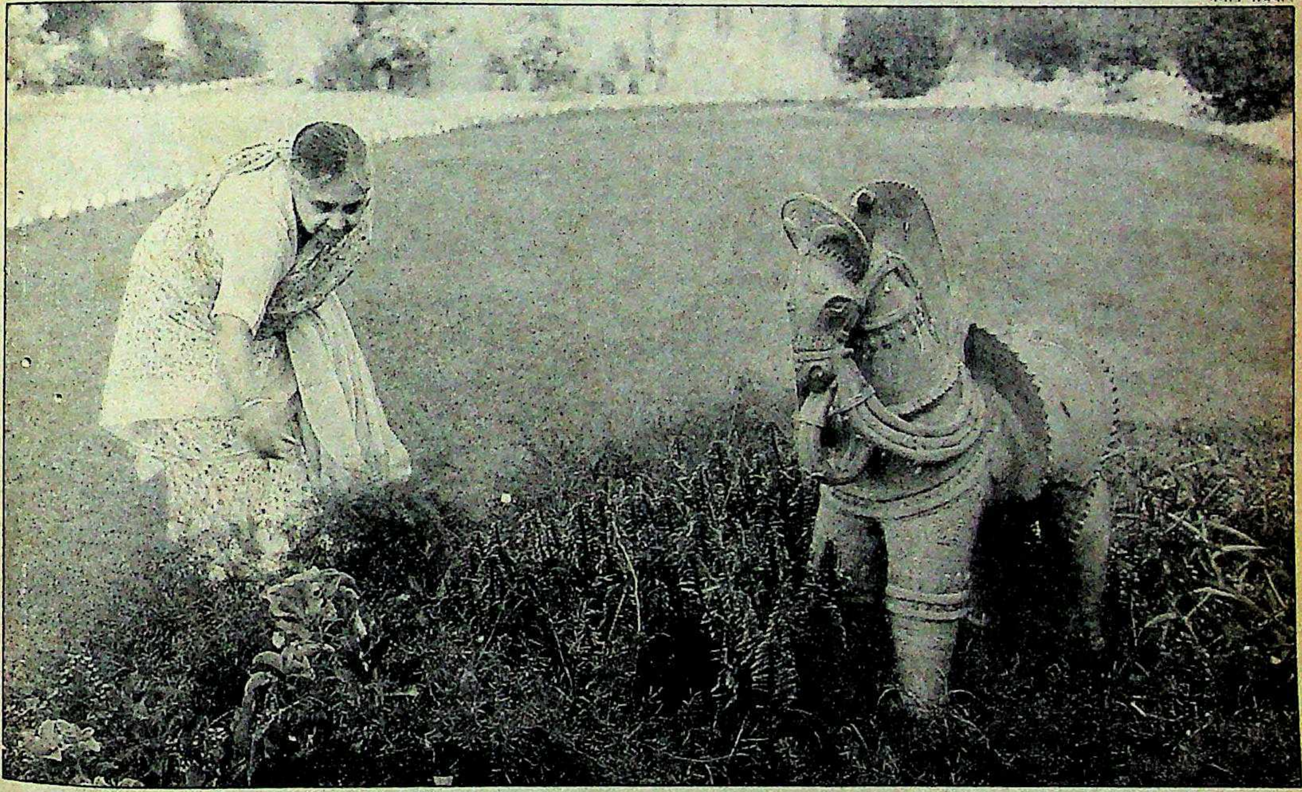

शीला दीक्षित

अब वे 'सुरुचिसंपन्न गृहिणी' की भूमिका में हैं जो उन्हें पसंद है

प्रधानमंत्री कार्यालय की 'तुर्रम खां' राज्यमंत्री शीला दीक्षित एक साथ दो टेलीफोनों पर हुकुम जारी करने के लिए मशहूर रही हैं. पर अब वे एक 'सुरुचिसंपन्न गृहिणी' की भूमिका में आ गई हैं. वे बताती हैं, "पिछले तीन साल में मैं बहुत महत्वपूर्ण बन गई थी."

पर अब उनके सारे निजी कर्मचारी हटा लिए जाएंगे. सुबह अब उनके लिए बेहतर होती है. उन्हें परेशान करने के लिए टेलीफोन बहुत कम ही घनघनाता है और वे आधा घंटा ज्यादा सो सकती हैं.

पारंपरिक शैली में सजे अपने कमरे में हीटर पर हाथ तापती वे कहती हैं, "बदलाव मुझे पसंद है. पर सत्ता से हटते ही अस्त-व्यस्तता घेर लेती है. मैं सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक दफ्तर में खटने वाली औरत नहीं हूं. पर मैं किसी भी फाइल को छोड़ती नहीं. मैं आत्म-निर्भर हूं और अब यह सिद्ध करने का समय आ

> **बदलाव मुझे पसंद है. पर सत्ता से हटते ही अस्त-व्यस्तता घेर लेती है"**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है." अब उन्हें बागवानी करने और संगीत सुनने का काफी समय मिलेगा ही.

लेकिन जल्द ही उनके भीतर बैठा राजनीतिक भी सामने आ जाता है, "करने के लिए पार्टी का बहुत सारा काम है. दो हफ्तों से मैंने अपने बाल तक नहीं धोए. मुझे अभी भी इतवार की छुट्टी नहीं मिल पाती."

वे स्वीकार करती हैं कि उनका घर अब फिर से 'सामान्य' हो गया है. पहले वहां ढेर सारे लोग आते थे और एक आदमी तो हमेशा चाय ही बनाता रहता था.

अब वहां सिर्फ वे, उनकी बेटी लतिका और ससुर (उमाशंकर दीक्षित) होंगे. "खर्च भी कम होगा. मेरी 500 रु. और पति की 2,500 रु. पेंशन में ही गुजारा हो जाएगा." कुछ सोचकर वे फिर बोलती हैं, "हमारे दिन मुफलिसी में नहीं कटेंगे."

भारी-भरकम बंगले से एक छोटे से फ्लैट में जा बसने के विचार ने ही शीला दीक्षित की रातों की नींद हराम कर दी है. वे आह भरकर कहती हैं, "अब तो मेरे पास शायद बगीचा भी न हो." चिंता की रेखाएं उनके चेहरे पर उभर आती हैं. "आईएएस अफसर से शादी करने के बाद मैं हमेशा सरकारी आवास में रही. एक साल पहले ही तो मैंने अपना फ्लैट बेचा था. निजामुद्दीन में एक घर खरीदने के लिए बातचीत चल रही है पर सौदा अभी तक नहीं पटा." और इसीलिए दिल्ली स्कूल ऑफ सोशल वर्क में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही उनकी बेटी ने छात्रावास के लिए अर्जी दे रखी है.

पर अपने ही अंदाज में दीक्षित इन बाधाओं को पार करने की तैयारी कर रही हैं. "मैं देखना चाहती हूं कि फ्लैट में रहना कैसा लगता है. और जब मैं बोर हो जाती हूं तो सोचती हूं हम (इंका) फिर लौटेंगे." यह कहकर वे मुस्करा देती हैं.

कुछ दिन की छुट्टियां उन्हें चिंताओं से दूर कर देंगी? यह पूछने पर वे आह भरकर कहती हैं, "छुट्टियां, हे भगवान! मुझे तो काफी सामान बांधना पड़ेगा." और यह कहकर वे फिर मुस्करा देती हैं.

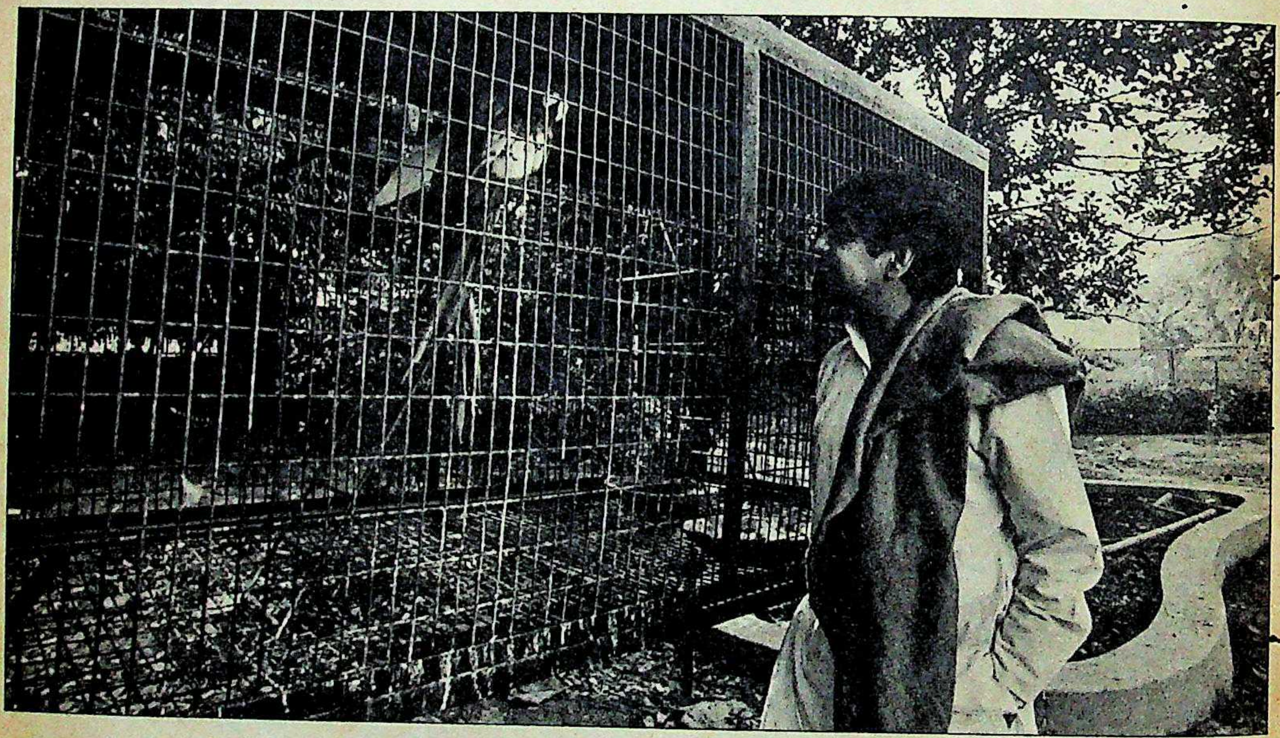

जगदीश टाइटलर

हार से हताश होकर इन दिनों वे पक्षियों के बीच समय बिता रहे हैं

सत्ता से बाहर आते ही अब जगदीश टाइटलर बेहद परेशानी महसूस करने लगे हैं. वे कहते हैं, "मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं चुनाव हार जाऊंगा. मैंने इतना काम किया है..." अभी तक अपनी हार स्वीकार नहीं कर सकने वाले टाइटलर नतीजों की घोषणा के तुरंत बाद बाहर आकर लोगों से पूछने लगे थे, "आपने मुझे वोट क्यों नहीं दिया?"

चुनाव की धूल अभी छंटी नहीं है. कम-से-कम टाइटलर के लिए तो यही स्थिति है. एक शाम वे अपने निर्वाचन क्षेत्र की झुग्गी-झोंपड़ी कॉलोनी में लोगों के यहां खाना खा रहे होते हैं तो अगले दिन नेहरू बिहार में, जहां 5 करोड़ की जमीन लोगों को महज 2 लाख रु. में दिलवाने के बावजूद उन्हें वोट नहीं मिले थे. और धीरे-धीरे वे सच स्वीकारने लगे हैं.

> **"मेरा घर सुरक्षित नहीं. मैं गृहमंत्री से कहूंगा कि मुझे मौजूदा बंगले में रहने दें"**

आतंकवादियों की हिटलिस्ट में उनका नाम तभी से शामिल है जब दो मानवाधिकार संगठनों ने उन पर आरोप लगाया था कि वे 1984 के दंगों में सक्रिय रूप से शामिल थे. संसद से बाहर हो जाने के कारण उन्हें अब मंत्रियों वाला सुरक्षित बंगला छोड़कर करोलबाग के अपने घर जाना पड़ेगा. वे बताते हैं, "वह घर मेरे लिए सुरक्षित नहीं है. मैं यह कहने के लिए गृहमंत्री से मिलने जा रहा हूं कि मुझे मौजूदा बंगले में ही रहने दें." सुरक्षा हासिल करने के लिए वे अपने चुनाव क्षेत्र के हर सिख के घर भी जाना चाहते हैं.

अब वे अपना खाली समय 10 वर्षीय बेटे सिद्धार्थ के साथ बिताते हैं. पहली बार चैन से बैठते हुए वे कहते हैं, "वह बिना मेरी देखभाल के ही बड़ा हो गया."

अब उनका दिन कैसे बीतता है? "ओह!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सुबह उठता हूं और अपनी चिड़ियों से बातें करता हूं." टाइटलर पक्षीप्रेमी हैं और अपने लॉन में एक बड़े से पिंजरे में उन्होंने दो मकाओ तोते और एक ऑस्ट्रेलियन चिड़िया रखी हुई है.

अब उन्हें पढ़ने का वक्त भी मिलेगा वरना उनके पास किताबों को देख पाने की भी फुर्सत नहीं थी. वे बताते हैं, "मैं नेपोलियन की जिंदगी के बारे में पढ़ रहा हूं."

आमदनी की बाबत पूछने पर उनका कहना है, "माली लिहाज से मेरी हालत कभी खस्ता नहीं रही." 10,000 रु. उन दो मकानों से आ जाते हैं जो उन्होंने किराए पर चढ़ा रखे हैं. दो कंपनियों में उनके शेयर भी हैं. वे मुस्कराकर बताते हैं, "रिलायंस में नहीं: उसमें तो मेरे बेटे के शेयर हैं."

निजी सहायक के आने पर टाइटलर उठ जाते हैं, "बाहर लोग मेरा इंतजार कर रहे हैं." टाइटलर एक कमरे से दूसरे कमरे में परदे के पीछे गायब हो जाते हैं, मानो वे भी पिंजरे में बंद मकाओ की तरह हों.

राजेश पायलट

तैराकी, घुड़सवारी और पुराने दोस्तों के साथ गपबाजी में कटता वक्त

भूतल परिवहन राज्यमंत्री रहे राजेश पायलट के निवास—3 सफदरजंग रोड पर भीड़ अभी भी जुटती है पर संख्या करीब आधी हो गई है. पहले लोग अर्जियां लेकर आते थे, ट्रक या स्कूटर का लाइसेंस लेने के लिए. अब लोग सांत्वना देने आते हैं.

पर पायलट इससे भी खुश हैं. ठहाका मारकर वे कहते हैं, "खुशकिस्मती से लोग अभी भी आ रहे हैं." 27 वर्षीय विश्वेंदर सिंह के हाथों मात ने पायलट के हास्य बोध को जरूर जगा दिया है.

अब वे बंद गले के कोट और धोती वाली चिरपरिचित पोशाक छोड़ चुके हैं. पतलून, कमीज और स्वेटर पहने पायलट अब भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर ही लगते हैं. 1979 में वे इसी पद को छोड़कर राजनीति में आए थे.

अब बीते हुए दिन फिर आ गए हैं. उनकी शामें फिर एअरफोर्स की मेस या डिफेंस सर्विसेज आफिसर्स इंस्टीट्यूट में अपने पुराने साथियों के संग बीतने लगी हैं. गिलासों की खनखनाहट में मूंगफलियां चबाने के दिन एक बार फिर लौट आए हैं.

वे जिमखाना क्लब में अपने बच्चों सचिन और सारिका के साथ तैराकी करते हैं. अब उनके पास प्रेसीडेंट्स इस्टेट में घुड़सवारी करने का समय भी है और बच्चों के साथ अशोक होटल के फंटियर रेस्टोरेंट में महीने में एक बार भोज उड़ाने का भी. मंत्री रहते हुए वे यह वादा कभी पूरा नहीं कर पाए.

आधुनिक वेशभूषा में पायलट अब वायुसेना के अफसर ही लगते हैं

अगर उन्हें कोई चिंता है तो सिर पर छत की. उनके पास दो घर हैं पर वे देहरादून और गाजियाबाद में हैं. दक्षिण भारत से जीतने वाले कई सांसद उनकी मदद के लिए तैयार हैं. पायलट उस समय सुखद आश्चर्य में पड़ गए जब उनसे मिलने आए कुछ किसानों ने उन्हें बताया कि पायलट की कोई आमदनी न रह जाने से मीरगपुर गांव (जिला मुजफ्फरनगर) की पंचायत ने उनका सारा खर्च उठाने का फैसला किया है.

उन्हें 9,000 रु. मासिक तनख्वाह मिलती थी पर अब 500 रु. पेंशन मिला करेगी. पायलट मजाक करते हैं, "मैं जिंदा रहूंगा." उनके दोनों घर किराए पर चढ़े हैं इसलिए उन्हें तनख्वाह जितनी आमदनी तो हो ही जाएगी.

भविष्य की उनकी योजना किसानों से संपर्क बनाए रखना है. और इसके लिए जय जवान, जय किसान ट्रस्ट है, जो युद्ध में मारे गए सैनिकों की विधवाओं की देखभाल करता है और किसानों के बच्चों को आईएएस, आईपीएस और एनडीए जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षण देता है.

हार न मानने वाले इस राजनीतिक का कहना है,

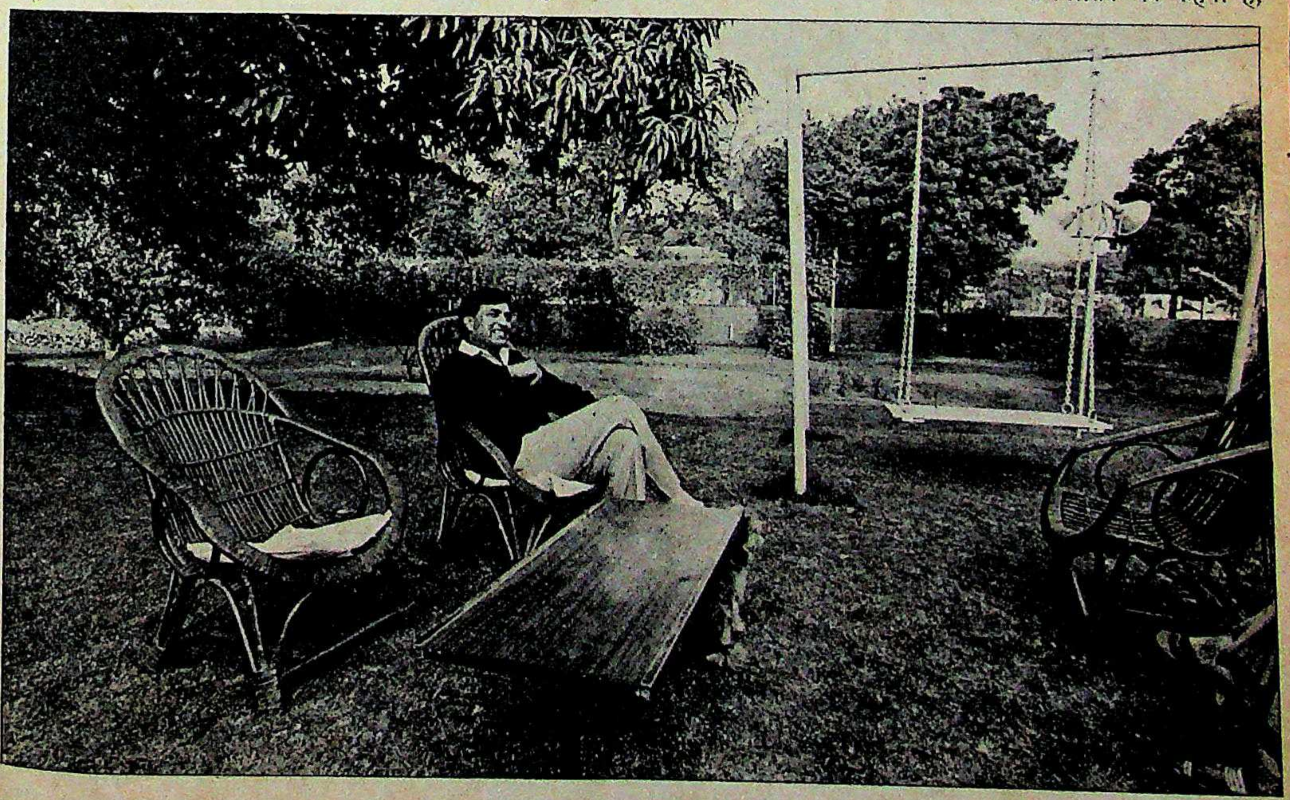

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं फिर जनता में जाकर उनका भरोसा जीतूंगा. उन्होंने ही तो मुझे जीवन दिया है." "और मैं विपक्ष से लड़ाई जारी रखूंगा. (तुरंत वाक्य को ठीक करते हुए) विपक्ष नहीं शासक दल से." परिवहन निगमों की हड़ताली यूनियनों और टिकैत के धरने से निबटने वाले पायलट में आया यह बदलाव निश्चय ही स्वागत योग्य है.

बलराम जाखड़

कुछ दिन पहाड़ों पर बिताकर फिरोजपुर के फार्म में लौटने का इरादा

"आर्डर, प्लीज. आर्डर, आर्डर. शांति. कार्रवाई से खारिज कर दिया जाए. मैं कुछ कह रहा हूं. कृपया सुनिए. अब माननीय प्रधानमंत्री जी बयान देंगे." ये सारे शब्द दिनों के लिए फिर अपने 40 एकड़ के फार्म पर, जहां गेहूं की फसल बो दी गई है, लौटने की सोच रहे हैं. उनके 200 एकड़ के बाग में आड़ू, माल्टे और अंगूर की फसल भी लगी है. वे गर्व से बताते हैं, "पंजाब में मुझे अंगूर और कपास का बादशाह करार दिया गया है." फिरोजपुर जाने से पहले वे मनाली के बर्फीले पहाड़ों पर जाने की सोच रहे हैं.

पांच बच्चों के पिता और नौ बच्चों के दादा बलराम जाखड़ को करारी मात मिली है. वे कहते हैं, "तो क्या हुआ, कोई आसमान तो नहीं टूट पड़ा. आ जाएंगे फिर वापस." जाखड़ घर में खुश है. सूर्योदय के साथ ही वे जग

अब चैन की जिंदगी जी रहे हैं. वे अपने लॉन में आराम से बैठकर गंडेरियां चूसते हैं

दोपहर का समय परिवार के लिए होता है, जब हर कोई खाने के लिए जमा होता है. "दाल और सब्जी के साथ ढेर सारी लस्सी, घर का बना मक्खन और घी." इसके बाद झपकी आना तो स्वाभाविक ही है. यह आदत उन्हें हाल ही में पड़ी है, वरना संसद के सत्र में तो यह मुमकिन नहीं था.

घर, कार, नौकर, पैसा? इन सबकी चिंता जाखड़ को नहीं है. "मेरे पास नोएडा में एक घर है. हम वहीं चले जाएंगे. मेरे बेटों के पास कई कारें हैं. वे मुझे भी एक दे देंगे." नौकर हमेशा ही उनके यहां रहे हैं. खेती से पैसा आ जाता है. वे कहते हैं, "तनख्वाह से क्या बनता था."

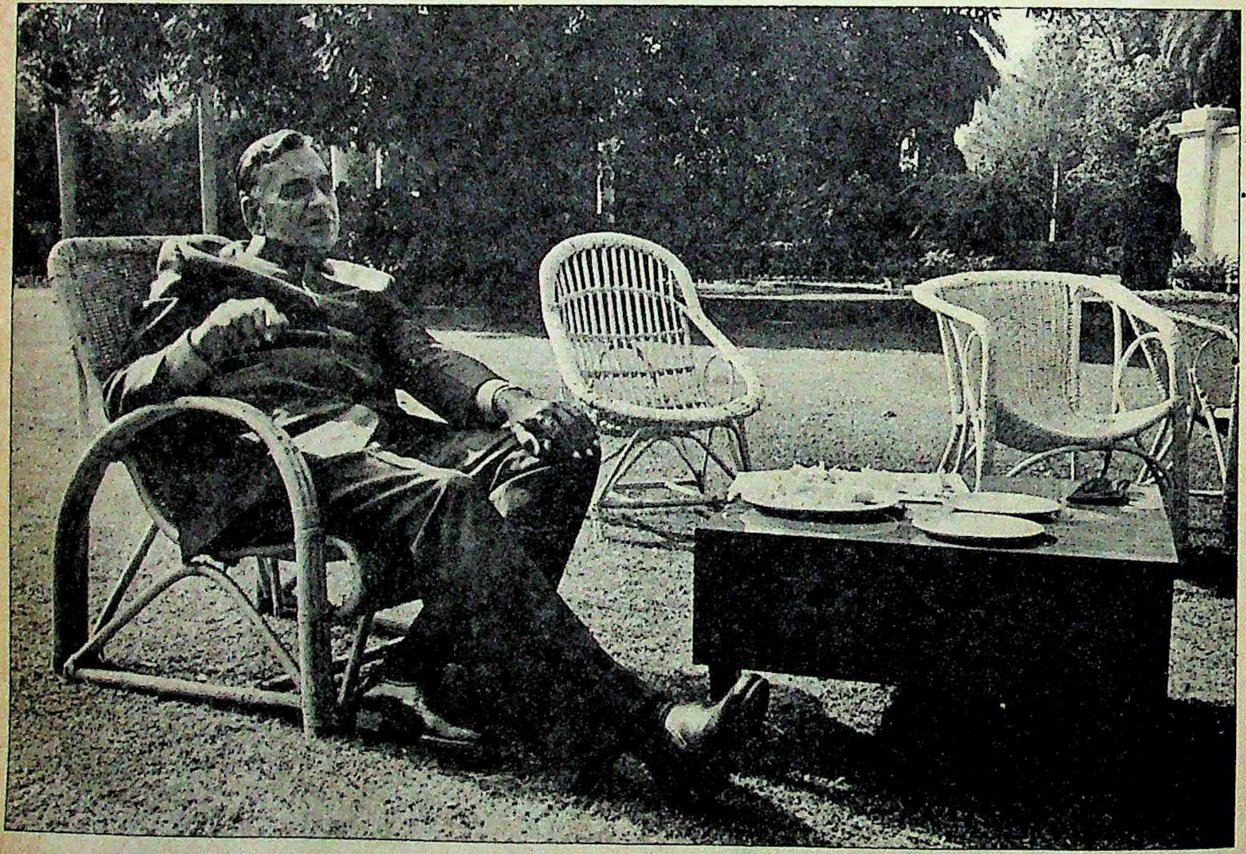

लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष बलराम जाखड़ की पहचान बन चुके थे. वही माननीय अध्यक्ष महोदय अब चैन की जिंदगी जी रहे हैं. वे अपने लॉन में आराम से बैठकर गंडेरियां चूसते हैं. टांगें पसारते हुए वे कहते हैं, "गन्ना चूसो, सेहत बनाओ और फिर से राजनीति के मैदान-ए-जंग में कूद पड़ो. यही मेरी नीति है."

फिरोजपुर के किसान जाखड़ अब कुछ जाते हैं, बाग में थोड़ा टहलते हैं. सुबह मालिश करने वाला आता है और वे मालिश करवाते हैं. दूध का एक बड़ा गिलास पीते हैं और बहुत से फल खाते हैं, फिर ढेर सारी पत्रिकाएं लेकर धूप में आ बैठते हैं. वे बताते हैं, "पढ़ने के प्रति मेरा बहुत आकर्षण है." पर अभी वे 'टाइम' और 'रीडर्स डाइजेस्ट' ही पढ़ रहे हैं. किताबों का नंबर बाद में आएगा.

चारा मशीन कांड में शामिल होने के कारण नई सरकार उन्हें परेशान कर सकती है? इस सवाल पर उनके चेहरे से डर का कोई भाव जाहिर नहीं होता. सत्ता से बाहर होने का मतलब है दार्शनिक हो जाना. "हम हमेशा से सत्ता में नहीं रहे, न हम हमेशा के लिए सत्ता से बाहर रहेंगे," यह कहते हुए अपने कंधे उचकाकर वे एक और गंडेरी चूसने लग जाते हैं. —हरिंदर बवेजा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

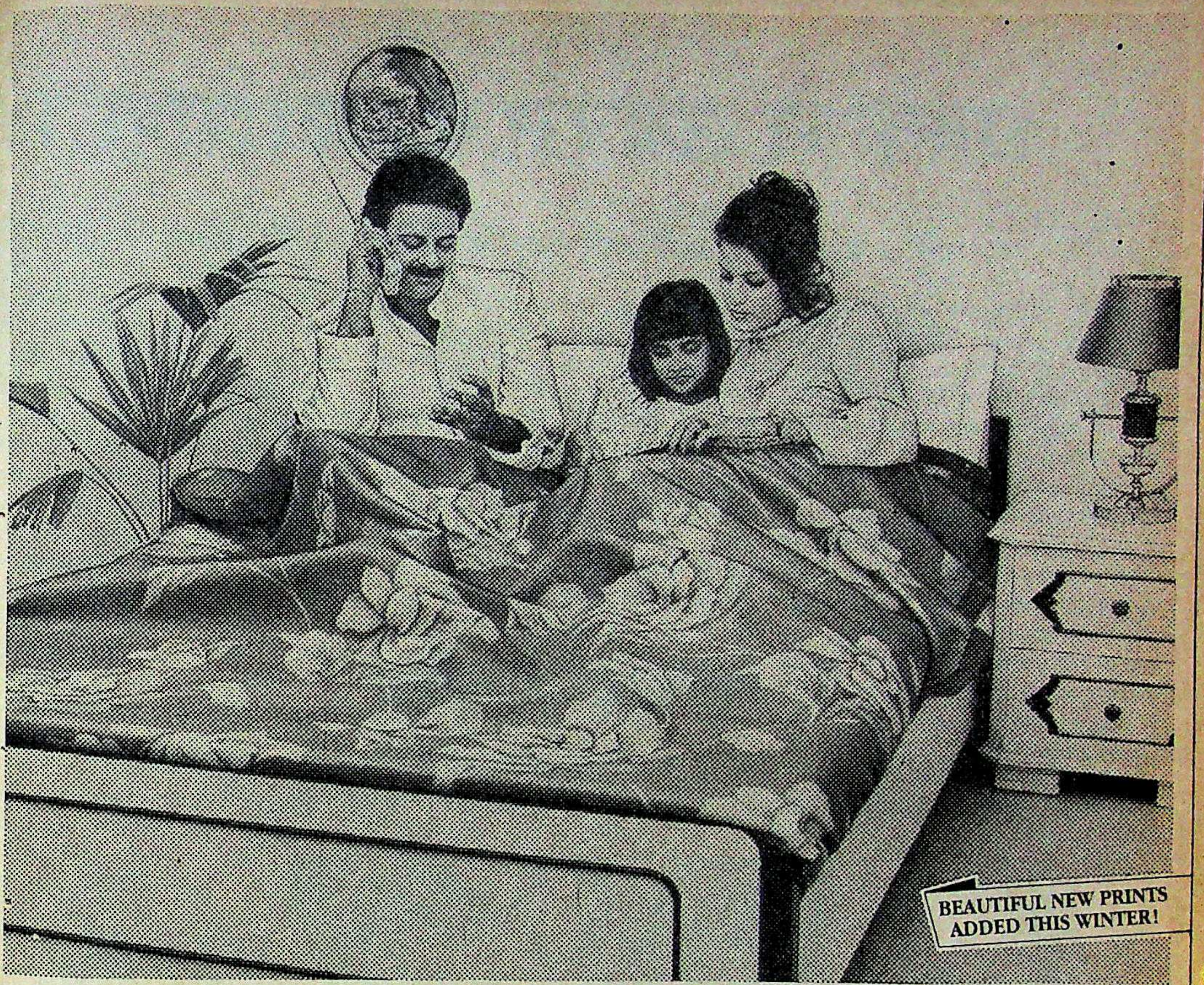

Why the Tandons are a family in Vogue?

Vogue Blankets offer something for everybody in the family.

"Just what I was looking for" — says Mrs. Tandon

"When I first saw Vogue Blankets, I couldn't believe they were made here. I found such lovely shades, such pretty prints! Now, after using them for two seasons, I find they're so easy to wash, fold and store. They're mothproof, too! And even after regular use, they're still as good as new!"

"Light yet warm" — adds Mr. Tandon

"Being a textile engineer, I know how Vogue Blankets, made from synthetic fibres, are lighter yet warmer than woollens. The secret is their nonwoven structure. And, at their price, they offer real value for money!"

Mrs. Tandon finds them perfect for kids too!

"Vogue Blankets are not only soft and snug, but totally non-allergenic for babies. And now that our little one has grown, I've got her a Vogue Blanket from the Junior Range that's just been introduced."

Vogue Blankets. What a lovely gift idea!

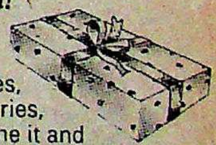

Vogue Blankets make an ideal gift. Marriages, arrivals, anniversaries, festivals... you name it and Vogue meets the need!

VOGUE BLANKETS

What a lovely way to tuck in this winter!

CLARION D 280

A quality product from UNIPRODUCTS (INDIA) LTD., in technical collaboration with UNIPRODUCTS CANADA INC.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

धक्के से उबरने की कोशिश

राजीव के दरबारी चारों खाने चित, पुराने दिग्गजों की वापसी

इस बार के चुनावी नतीजों की तुलना बरबस ही 1977 से हो जाती है. उस बार की तरह अब भी इंका केंद्र में सत्ता से बाहर हो चुकी है. एक बार फिर दक्षिण ने उसे पैर टिकाने की जमीन दी है. हिंदीभाषी क्षेत्रों ने जिस बुरी तरह उसे ठुकराया, दक्षिण ने उसी शिद्दत से उसे अपना लिया है.

लेकिन समानताएं यहीं खत्म होती दिखती हैं. 1977 की तरह इस बार इंका में न तो उतनी हायतौबा है न नेतृत्व के खिलाफ वैसी सुगबुगाहट. इसके विपरीत इस बार वह ज्यादा आक्रामक मूड में नजर आती है. और यह बात पंजाब के बारे में वी.पी. सिंह की चुनाव के ठीक बाद की स्थिति में तो यह कथन सही हो सकता है. लेकिन पार्टी और इसके नेतृत्व के भविष्य का फैसला 12 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में होने वाले विधानसभा चुनावों के नतीजे ही करेंगे. अभी तो इंका 15 प्रदेशों में सरकार में है. लेकिन हाल के चुनावी नतीजों से यही संभावना बनती है कि सात राज्य—गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, ओडीसा और केंद्रशासित दिल्ली उसके हाथ से निकल जाएंगे.

लेकिन फिलहाल अगली बडी राजनैतिक अग्निपरीक्षा को सामने देखते हुए पार्टी और मणिशंकर अय्यर को कोसा जा रहा है.

इंका संसदीय बोर्ड के सदस्य और मध्य प्रदेश इंका के अध्यक्ष अर्जुन सिंह कहते हैं, "जिन थोडे से लोगों को अधिकार और जिम्मेवारियां सौंपी गई थीं, उन्होंने ऐसी धारणा बनाने की कोशिश की मानो चलती सिर्फ उन्हीं की है. उन पर अंकुश न रखना ही राजीव गांधी की एकमात्र गलती थी." नौकरशाहों पर भरोसा करने के राजीव के तरीकों पर बुजुर्ग कांग्रेसी दरबारा सिंह की टिप्पणी है, "हो सकता है कि आप मुझसे बढ़िया अंग्रेजी बोलते-लिखते हों लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि राजनीति की

नए मुख्यमंत्री

राजनीति में नए मूल्य स्थापित करने का राजीव का अभियान चार राज्यों में पुराने कांग्रेसी नेताओं के पदारोहण के साथ ही घूम-फिरकर अपनी जगह वापस आ गया

श्यामाचरण शुक्ल

हेमनंद बिस्वाल

जगन्नाथ मिश्र

माधव सिंह सोलंकी

पहल तथा खजाना खाली होने के सरकारी बयान पर उसकी प्रतिक्रिया से झलकती है. लेकिन हो सकता है इंका का यह बहादुराना रुख अभी असली खतरे का एहसास न होने के कारण हो या फिर कांग्रेसियों के इस भरोसे के कारण कि नई सरकार आपसी विवादों के कारण जल्दी ही गिर जाएगी. अपनी मां इंदिरा गांधी की तरह पार्टी तोड़कर सिर्फ विश्वस्त लोगों के भरोसे उसे मजबूत करने की जगह राजीव गांधी इस बार सभी लोगों को एकजुट करने की कोशिश में लगे दिखते हैं. इंका महासचिव विठ्ठल नरहरि गाडगिल कहते हैं, "पार्टी पूरी तरह राजीव गांधी के साथ है और इसके टूटने की जरा-सी भी संभावना नहीं है."

बलि के बकरे तलाश रही है. राजीव के इर्दगिर्द जमी रहने वाली सखा मंडली पर ही सारा गुस्सा निकाला जा रहा है. पार्टी के वे वरिष्ठ नेता, जो इन लोगों के कारण राजीव से ठीक से मिलजुल भी नहीं पाते थे, आज सबसे अधिक मुखर हो गए हैं. राम जन्मभूमि मुद्दे को ठीक से न संभाल पाने के लिए पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह की सबसे अधिक खिचाई हो रही है. इंका के एक राज्यसभा सदस्य कहते हैं, "हमारे चुनावी भविष्य का फैसला तो 9 नवंबर (शिलान्यास के दिन) को ही हो गया था." इसके बाद राजीव के राजनैतिक और मीडिया सलाहकारों जैसे माखनलाल फोतेदार, आर.के. धवन, एम.जे. अकबर और निजी सलाहकारों सतीश शर्मा

आपकी समझदारी भी बेहतर हो."

पुराने कांग्रेसियों का गुस्सा कंप्यूटर को लेकर भी है. 'कंप्यूटरवालों' के खिलाफ उनकी नाराजगी एकदम जायज ही हो, यह जरूरी नहीं. लेकिन बिहार से पराजित इंका की पूर्व सांसद मनोरमा सिंह जब संभावित इंका उम्मीदवारों का जीवन-वृत्त कंप्यूटर पर तैयार करने वाले राज्यसभा सदस्य एस.एस. अहलूवालिया से मिलीं तो एकदम बिफर पडीं, "आपके इसी बकवास कंप्यूटर के चलते मैं चुनाव हार गई." अहलूवालिया ने पलटकर कहा, "लेकिन मेरे कंप्यूटर के हिसाब से तो आपको टिकट ही नहीं मिलना था."

इसमें कोई शक नहीं कि मतदाताओं की बदलाव की चाह को न समझते हुए अधिकांश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखाओं की मंडली

अगली राजनैतिक अग्निपरीक्षा सामने दिखते ही इंका बलि के बकरे तलाश करने में जुट गई है. सबसे ज्यादा खिंचाई राजीव को घेरे रहने वाली उनकी सखा मंडली की हो रही है.

विश्वजीत सिंह

सतीश शर्मा

आर.के. धवन

एम.एल. फोतेदार

बूटा सिंह

मणिशंकर अय्यर

सांसदों को फिर से टिकट दे देना ही इंका की सबसे बड़ी गलती साबित हुई. पार्टी में आम धारणा है कि राजीव के प्रियपात्र सखाओं की मंडली ने अपने ऊटपटांग फैसलों और बेवकूफियों से पार्टी को आम चुनावों में दोबारा पिटवा दिया.

पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार राजीव ने भी यह 'गलती' महसूस की है और वे अब अपने आपको इस दून स्कूलिया मंडली से दूर रख रहे हैं. अमेठी में मतदान केंद्रों पर कब्जा करवाने और गोलीबारी करवाने के लिए जिम्मेवार माने जाने वाले कैप्टन सतीश शर्मा आजकल बड़े रहस्यमय तरीके से राजीव दरबार से गायब पाए जाते हैं (लेकिन राजीव उनसे अब भी गुपचुप संपर्क रखे हुए हैं). बूटा सिंह और शिवशंकर ने चुनाव में इंका के सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बाद राजीव को सुझाव दिया था कि जनता दल से दलबदल कराके सरकार बना ली जाए. लेकिन पुराने और वरिष्ठ कांग्रेसियों ने ऐसा नहीं होने दिया.

महत्वपूर्ण बात यह है कि इंका संसदीय बोर्ड की अब नियमित परंतु अनौपचारिक बैठकें होने लगी हैं जबकि पिछले पांच वर्षों से यह मात्र शोभा की चीज बनकर रह गया था. संसदीय बोर्ड ने ही उन राज्यों के मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष बदल देने के फैसले किए जहां इंका बुरी तरह पराजित हो गई. राजीव अब दरबारा सिंह, नरसिंह राव, के. करुणाकरन और गाडगिल से हर मुद्दे पर बात करते हैं जबकि पहले ऐसा नहीं होता था.

संसदीय बोर्ड ने कई और महत्वपूर्ण फैसले भी किए हैं. करीब आधे दर्जन राज्यों में नेतृत्व बदलने का काम खत्म होते ही संगठन के केंद्रीय ढांचे में भारी फेरबदल होने जा रहा है. पुराने और अनुभवी लोगों को संगठन के काम में लगाया जाएगा. 1977-80 के बुरे दौर में श्रीमती गांधी की मदद करने वाले लोगों को इस बार उनके बेटे को भी संकट से उबारने में मदद के लिए बुलाया जा रहा है. कभी राजीव द्वारा 'सत्ता के दलाल' बताकर छंटनी कर दिए गए प्रणब मुकर्जी और अब्दुल रहमान अंतुले की वापसी निश्चित है.

पार्टी वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली अल्पमत सरकार के कामकाज पर भी नजर रखे हुए है. इसके 'दुष्प्रचार विभाग' ने हाल में ही एक चिट्ठी जारी की है जिसे वी.पी. सिंह द्वारा लिखा बताया जाता है. इसमें शाही इमाम से वादा किया गया है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की निगरानी में आ चुकी पुरानी मस्जिदों को भी नमाज के लिए खोल दिया जाएगा. इस अभियान के पीछे मंशा साफ है: भाजपा और जनता दल में मतभेद पैदा करना. सरकार ने शुरुआत बहुत अच्छी तरह से की है इसलिए इंका ने विधानसभा चुनाव के पहले आने वाले महीनों में सांप्रदायिकता का मुद्दा बड़े जोर-शोर से उठाने का फैसला किया है. अर्जुन सिंह कहते हैं, "सिर्फ राजनैतिक उद्देश्य के लिए भाजपा ने जो सांप्रदायिक अलगाववाद पैदा किया है उसे हमें मुख्य चुनावी मुद्दा बनाना चाहिए." लेकिन धर्मनिरपेक्षता की यह चिंता मात्र दिखावा भर है. एक ओर पार्टी पंजाब में हिंदू पत्ता खेलते हुए भाजपा को जनता दल के खिलाफ भिड़ा देना चाहती है, वहीं उत्तर प्रदेश में यह एकदम अलग तरह का सांप्रदायिक खेल खेल रही है. इंका एक ओर कट्टर हिंदूवादी तत्वों को राम जन्मभूमि मुद्दे को ठंडा न पड़ने देने के लिए उकसा रही है, वहीं वह मुसलमानों से कह रही है कि जनता दल को वोट देकर

पुराने दिग्गज

अब जबकि राजीव के मुंहलगे दरबारी चारों खाने चित हो चुके हैं, पुराने दिग्गज पार्टी में अपना दबदबा फिर कायम करने की कसरत में जुट गए हैं

करुणाकरन

दरबारा सिंह

अर्जुन सिंह

वी.एन. गाडगिल

नरसिंह राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने बहुत बड़ी गलती कर दी है.

हालांकि पार्टी में राजीव की पहले जैसी स्थिति बनी हुई है लेकिन विधानसभा चुनावों में उन्हें एक बार फिर अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ सकता है. ये चुनाव शायद फरवरी में होंगे. आम चुनाव में पार्टी की दुर्गति ही जाने के बाद इतनी जल्दी हवा को अपने पक्ष में मोड़ना राजस्थान, बिहार, ओडीसा, मध्य प्रदेश और गुजरात के नए मुख्यमंत्रियों के लिए आसान काम न होगा.

पिछले पखवाड़े राजस्थान के मुख्यमंत्री पद की तीसरी बार बागडोर संभालते हुए 68 वर्षीय हरिदेव जोशी ने जनता से कोई वादा नहीं किया. उन्हें राज्य की उदासीन अफसरशाही और गुटबाजी से ग्रस्त पार्टी के बारे में अच्छी तरह मालूम है. इसीलिए उन्होंने दूरदर्शिता दिखाते हुए कहा, "मैं राज्य में सांप्रदायिक सौहार्द और शांति की बहाली को सर्वोच्च प्राथमिकता दूंगा."

सांप्रदायिकता की आग में झुलस रहे बिहार में पार्टी ने मुसलमानों का विश्वास फिर से हासिल करने के लिए जगन्नाथ मिश्र को सत्ता की कमान सौंपी है. अपनी मलिन छवि के बावजूद मिश्र का दावा है कि उन्हें अल्पसंख्यकों का विश्वास हासिल है. राजपूतों, यादवों और कुर्मियों के जनता दल की तरफ मुड़ जाने के कारण पार्टी को उम्मीद है कि मिश्र इंका के पारंपरिक वोट बैंक—ब्राह्मणों, हरिजनों और मुसलमानों को जीतने में सफल हो जाएंगे.

लेकिन सत्येंद्र नारायण सिन्हा, बिंदेश्वरी दुबे, भागवत झा आजाद और तारिक अनवर के गुटों ने मिश्र का विरोध किया है और वे विधानसभा चुनाव में शायद ही उन्हें सहयोग दें. आजाद अपनी नाराजगी कतई नहीं छिपाते. वे कहते हैं, "बिहार में इंका उस मोमबत्ती की तरह है जिसके दोनों सिरे जल रहे हैं." मिश्र साम, दाम, दंड, भेद में माहिर माने जाते हैं लेकिन उनके रास्ते में कदम-कदम पर मुश्किलें हैं. उन्होंने पहला काम यह किया कि अपने समर्थक कमलनाथ सिंह ठाकुर को इंका विधायक दल का मुख्य सचेतक नियुक्त कर दिया. फिर मंत्रिमंडल में उन लोगों को भरा जो छह साल के राजनैतिक बनवास के दौरान उनके साथ रहे.

आखिरकार ओडीसा में भी ऊंट पहाड़ तले आ ही गया. मुख्यमंत्री जानकीवल्लभ पटनायक ने फोतेदार और राजीव के दूसरे विश्वासपात्रों के आशीर्वाद से इस राज्य को अपनी बपौती समझ रखा था. राज्य के ज्यादातर पार्टी नेताओं के विरोध और खुफिया एजेंसियों की चेतावनी के बावजूद पटनायक और उनकी पत्नी जयंती पर राजीव का वरदहस्त बना रहा. इसलिए लोकसभा चुनाव में ओडीसा में पार्टी के धूल चाटने से किसी को ताज्जुब नहीं हुआ. प्रदेश इंका अध्यक्ष पद की कमान संभालने के बाद से नंदिनी सत्पथी बहादुराना अंदाज दिखाने की कोशिश कर रही हैं. वे कहती हैं, "हमें पार्टी को फिर से मजबूत बनाना और लोगों का विश्वास जीतना होगा." लेकिन राज्य में कांग्रेस विरोधी लहर खत्म करने की उनकी क्षमता पर संदेह व्यक्त किया जा रहा है. आम चुनाव में इंका को राज्य के 147 में से सिर्फ 17 विधानसभा क्षेत्रों में ही राष्ट्रीय मोर्चा के मुकाबले बढ़त हासिल हुई थी.

जाहिर है, अगर इंका ने अपना कामकाज न सुधारा तो उसे 25 से ज्यादा विधानसभा सीटें नहीं मिलेंगी. सत्पथी के एक सहयोगी कहते हैं, "उनमें आत्मविश्वास जरूर है लेकिन इतने कम समय में वे कोई चमत्कार नहीं कर सकतीं." पार्टी के ज्यादातर विधायक और पटनायक के समर्थक भी उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर रहे हैं. हालांकि पटनायक ने अब 'साहित्य लिखने' का फैसला किया है लेकिन सचाई यह है कि वे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बीजू पटनायक को देखना पसंद करेंगे क्योंकि वे उन्हें सत्पथी की बनिस्बत कम खतरनाक मानते हैं. यह देखते हुए कि विधानसभा चुनाव में

आंध्र प्रदेश

आशाएं अपार

मर्रि चेन्ना रेड्डी आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चुने जाने के बाद जब राज्य सचिवालय पहली बार गए तो उनका स्वागत किसी महायुद्ध के विजेता की तरह हुआ. लेकिन इस हर्षोल्लास और उन्माद के पीछे छिपी है चुनौती: लोगों की आशा-आकांक्षाओं को साकार करने की.

कार्यभार संभालने के तुरंत बाद किए गए निर्णयों से चेन्ना रेड्डी ने स्पष्ट कर दिया है कि वे यह बात अच्छी तरह समझ रहे हैं. पहली जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने अपनी प्राथमिकताओं का खास तौर से जिक्र किया. उनका कहना था कि वे स्वच्छ, गतिशील और जिम्मेदार प्रशासन उपलब्ध कराएंगे; गरीबों को 2 रु. प्रति किलो चावल देने की योजना पर फिर से काम होगा और इस बार वितरण और खुदरा बिक्री का जिम्मा बेरोजगार लोगों को दिया जाएगा.

शरद सक्सेना

चेन्ना रेड्डी: अपनों को पद

जैसा कि अनुमान था, चेन्ना रेड्डी ने अपने मंत्रिमंडल के गठन के काम में भी शुरू से सावधानी बरती. लेकिन मंत्रिमंडल का गठन उतना आसान भी नहीं रहा. शपथ ग्रहण समारोह के तुरंत बाद इंका विधायक वंगवीति मोहन रंगाराव की विधवा रत्ना कुमारी के समर्थकों ने उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने की मांग की. उनके पति की पिछले दिसंबर में तेलुगु देशम समर्थकों ने हत्या कर दी थी. मुख्यमंत्री को बाध्य होकर सफाई देनी पड़ी कि मंत्रिमंडल बनाने का काम अभी खत्म नहीं हुआ है.

पर पांच और रेड्डी लोगों को मंत्रिमंडल में शामिल कर तथा उन्हें महत्वपूर्ण विभाग देकर मुख्यमंत्री ने इस आलोचना को बल दिया है कि इंका अपने आपको रेड्डी पार्टी के रूप में प्रदर्शित कर रही है. चेन्ना रेड्डी कहते हैं, "अगर ऐसा लग रहा है तो हम सुधार अवश्य लाएंगे."

इस सबके बावजूद ऐसा नहीं लगता कि पार्टी के विभिन्न गुट चेन्ना रेड्डी को बहुत दिनों तक मनमानी करने देंगे. पूर्व मुख्यमंत्री जे. वेंगलराव, जो चेन्ना रेड्डी के खिलाफ हैं, अपने बेटे जलागम प्रसाद राव को मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए दबाव डाल सकते हैं. ठीक ऐसी ही स्थिति पूर्व केंद्रीय मंत्री पी.वी. नरसिंह राव और पी. शिवशंकर भी पैदा कर सकते हैं.

जहां यह अनिवार्य लग रहा है कि चेन्ना रेड्डी को सभी गुटों को संतुष्ट करना पड़ेगा, वहीं ऐसा करके वे मतदाताओं की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाएंगे.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटनायक खेमा चुप न बैठेगा, मुख्यमंत्री के रूप में हेमनंद बिस्वाल को चुना गया. इससे पार्टी आलाकमान दो मकसद पूरा करना चाहता है—पटनायक विरोधी तीव्र भावनाओं को इंका विरोधी वोट में बदलने से रोकना और राज्य की 40 फीसदी आबादी वाले हरिजनों और वनवासियों को खुश करना. बिस्वाल कहते है, "इस परिवर्तन से नया उत्साह पैदा हुआ है."

मध्य प्रदेश में इंका को एक बार फिर तलवार की धार पर चलना पड़ा. भारी जोड़तोड़ और खूब हाथ-पैर मारने के बावजूद अर्जुन सिंह को मुख्यमंत्री पद नहीं मिल पाया. उन्हें प्रदेश इंका अध्यक्ष और श्यामाचरण शुक्ल को वोरा की जगह मुख्यमंत्री बनाया गया. इसका मकसद विधानसभा चुनाव में सभी गुटों का सहयोग हासिल करना है. शुक्ल कहते हैं, "मुझे पूरी उम्मीद है कि चुनाव में पार्टी की जीत के लिए सभी कांग्रेसी एकजुट होकर काम करेंगे." लेकिन इसमें संदेह दिखता है क्योंकि लोकसभा चुनाव में इंका को 312 विधानसभा क्षेत्रों में से सिर्फ 76 में ही बढ़त हासिल हुई. इसके अलावा राज्य की राजनीति में अर्जुन सिंह की वापसी से माधवराव सिंधिया और वोरा समर्थक गुट चुप नहीं बैठेंगे.

सचाई यह है कि वोरा के इस्तीफा सौंपते ही सिंधिया ने मुख्यमंत्री पद के लिए अपना दावा पेश कर दिया था. लेकिन अर्जुन सिंह खेमे ने यह कहते हुए उनका विरोध किया कि उनकी मां और भाजपा उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया को उनकी पार्टी भावी मुख्यमंत्री के रूप में पेश कर रही है. और फिर, शुक्ल तथा अर्जुन सिंह में भी कभी नहीं पटी, हालांकि अब वे अपने मतभेदों को भुला देने का दावा कर रहे हैं. कुछ भी हो, इन दोनों के चयन से यही साबित होता है कि इंका नेतृत्व एक बार फिर राजनीति के पुराने खिलाड़ियों का सहारा ले रहा है.

गुजरात में कई प्रशासनिक भूलें करने वाले अमर सिंह चौधरी की जगह माधव सिंह सोलंकी को मुख्यमंत्री बनाया गया. इस उम्मीद में कि यह पुराना योद्धा राज्य में पार्टी को नई दिशा देने में सफल होगा.

लेकिन महाराष्ट्र के चतुर मुख्यमंत्री शरद पवार अपनी कुर्सी पर मजबूती से जमे हुए हैं. हालांकि लोकसभा चुनाव में उनके अपने चार उम्मीदवार हार गए लेकिन वे दिल्ली को यकीन दिलाने में सफल रहे कि विधानसभा चुनाव में सिर्फ वही पार्टी की नैया पार लगा सकते हैं क्योंकि भाजपा-शिवसेना गठबंधन सत्ता में आने की भरपूर कोशिश करेगा.

नतीजा यह कि आम चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन के लिए आलाकमान प्रदेश इंका अध्यक्ष प्रतिभा पाटील से इस्तीफा मांगकर उन्हें बलि का बकरा बना रहा है. बावजूद इसके इंका की संभावनाएं अच्छी नहीं दिखतीं. आशंका व्यक्त की जा रही है कि छोटे-मोटे असंतुष्ट कांग्रेसी नेता शिवसेना की तरफ जा सकते हैं. एक इंका विधायक चेतावनी देते हैं, "यदि असंतोष दूर न किया गया तो भाजपा-शिवसेना गठबंधन की झोली में ढेर सारी सीटें चली जाएंगी."

इन सभी राज्यों में निर्विघ्न नेतृत्व परिवर्तन से यही साबित होता है कि पार्टी में राजीव की स्थिति कमजोर नहीं हुई है. पार्टीजन किसी विकल्प के अभाव में अब भी उनके साथ हैं. उन्होंने 'धर्मनिरपेक्षता खतरे में' के नारे के साथ समूचे देश के दौरे का फैसला पहले ही कर लिया है. अगले महीने से उन्हें चुनाव अभियान में कूदना होगा. राज्य के नेता चाहे जैसे हों, चुनाव में सफलता के लिए वे राजीव पर ही निर्भर रहेंगे. अगर फरवरी में पार्टी का प्रदर्शन फिर घटिया रहा तो उनके नेतृत्व पर बड़ा सवालिया निशान लग जाएगा और तब बलि का बकरा बनाने के लिए उनके अलावा शायद ही कोई और मिल पाएगा.

—भास्कर राय, उत्तम सेनगुप्त, नरेंद्र कुमार सिंह और ब्यूरो रिपोर्ट

कर्नाटक

अलग शैली

शरद सक्सेना

पाटीलः कठिन रास्ता

पूरे देश में चली मौजूदा राजनैतिक लहर भी उन्हें रोक नहीं पाई. पिछले पखवाड़े कर्नाटक के मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटील 18 साल बाद सत्ता में लौटे और उन्होंने परंपरा से हटकर मंत्रिमंडल का मनमाफिक गठन किया.

इससे न सिर्फ राजनीति के पंडित ही चौंक उठे बल्कि उनके विरोधी भी चक्कर में पड़ गए. 177 सदस्यों के विधायक दल से मात्र 10 लोगों का चयन करके पाटील ने बहुत से लोगों की नाराजगी तो मोल ली ही, उन्हें चक्कर में भी डाल दिया. और तो और, उन्होंने क्षेत्रीय और जातिगत प्रतिनिधित्व की मान्य परंपरा भी तोड़ डाली. उनके मंत्रिमंडल में उत्तरी कर्नाटक से उन्हें छोड़कर कोई सदस्य नहीं है.

ईमानदारी के साथ-साथ कानून और अनुशासन के प्रति दृढ़निश्चयी माने जाने वाले पाटील राज्य के भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता वाले माहौल में एक अनोखे व्यक्तित्व हैं. उनके एक पार्टी सहयोगी ने कहा, "पाटील हठधर्मी हैं. वे समय की धारा के एकदम उलट हैं." पाटील खुद भी मानते हैं कि "समसामयिक राजनीति के साथ चल पाना मेरे लिए कठिन है. मैं उस पीढ़ी का हूं जब लोग जेब में इस्तीफा लेकर घूमते थे."

पार्टी आलाकमान से फिलहाल अच्छे रिश्तों के चलते वे कई विरोधियों को दरकिनार करने में सफल हुए हैं. इनमें एस. बंगरप्पा, के.एच. पाटील, के.एस. नागरत्नम्मा, एस.एम. कृष्ण आदि जैसे वे दिग्गज हैं जिन्होंने पाटील को मुख्यमंत्री बनाए जाने के खिलाफ अभियान छेड़ रखा था. यही नहीं, वे गुंडुराव सरकार में दूसरे नंबर पर रहे वीरप्पा मोइली की हैसियत कम करने में भी सफल रहे.

मंत्री पद के एक आकांक्षी कहते हैं, "पाटील की यह अकड़ ज्यादा दिन नहीं चलेगी. वे आफत बुला रहे हैं."

पाटील को फौरी खतरा बंगरप्पा से है. इस तेजतर्रार पूर्व मंत्री का मानना है कि उन्हें कई बार मुख्यमंत्री पद से दूर रखा गया है. इस बार उनकी अनदेखी इस आधार पर की गई कि उन्होंने हाल के लोकसभा चुनाव में पार्टी के उम्मीदवारों के खिलाफ काम किया. पाटील के लिए यह बात वरदान साबित हुई. लेकिन अब बंगरप्पा असंतोष की धुरी बनेंगे. इसलिए चौथाई पांच के भारी बहुमत के बावजूद पाटील का काम इतना आसान नहीं है. उन्होंने अपने लिए जो राह चुनी है उसमें असंतोष के कांटे उग सकते हैं. **—चिदानंद राजघट्टा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

कांटों भरा ताज सिर पर

मुलायम सिंह यादव को मुख्यमंत्री बनने के लिए पार्टी में समर्थन जुटाने के वास्ते एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा. कट्टर प्रतिद्वंद्वी अजीत सिंह को हराकर उन्होंने देश के सबसे बड़े राज्य को चलाने की चुनौती कबूल की है. समय ही बताएगा कि वे इस कड़ी परीक्षा में कितने खरे उतर पाते हैं.

आखिर वे मंजिले-मकसूद तक पहुंच ही गए. जोड़तोड़ के लिए विख्यात 50 वर्षीय मुलायम सिंह यादव ने हर बाधा को पार करके उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने का अपना वह सपना साकार कर लिया जिसे उनके विरोधी 'मुंगेरी लाल का हसीन सपना' कहा करते थे. छोटे कद मगर मजबूत काठी के यादव की वह विजयी मुस्कान शायद ही कोई भुला पाए, जो सचिवालय की छठी मंजिल पर बने अपने दफ्तर में पहली बार प्रवेश करते समय उनके चेहरे पर तैर रही थी. इसी दफ्तर से वे अब उत्तर प्रदेश के 18 करोड़ लोगों पर राज करेंगे.

खुशी से चहकते हुए यादव ने कहा, "गांधी और डॉ. लोहिया का सपना साकार हो गया है. मैं खुद ग्वाला रहा हूं, मैंने पशुओं की सेवा-टहल की है और उनका दूध दुहा है." ऐसा जीवन जी चुके व्यक्ति का उत्तर प्रदेश जैसे राज्य का मुख्यमंत्री बनना कोई मामूली उपलब्धि नहीं है. लेकिन इस कुर्सी तक पहुंच पाना उनके लिए बहुत आसान भी नहीं रहा है. चुनाव के बाद सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरे जनता दल में अपने लिए समर्थन जुटाने के लिए उन्हें तीन दिन तक एड़ी-चोटी एक करनी पड़ी. आखिर जनता विधायक दल के नेतृत्व की लड़ाई में उन्हें अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वी अजीत सिंह से दो-दो हाथ करने पड़े.

दोनों गुटों के मूड और 3 दिसंबर को जनता विधायक दल की बैठक में भाग लेने के लिए अजीत सिंह के लखनऊ पहुंचने के फैसले से यह साफ हो गया कि शक्ति परीक्षण होकर रहेगा. हालांकि प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अजीत सिंह को मुकाबले में उतरने से मना किया था मगर अजीत सिंह को अपनी जीत का पक्का भरोसा था. उन्होंने पत्रकारों से कहा था, "मैं कोशिश कर रहा हूं कि मुकाबला न हो परंतु इसकी नौबत आ ही गई तो मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी."

बैठक के दिन तो तनाव चरम सीमा तक जा पहुंचा. दोनों ही गुटों के समर्थक सरकारी गेस्ट हाउस, जहां अजीत सिंह ठहरे थे, और मुलायम सिंह यादव के घर जमा हो गए. हजारों की तादाद में ये लोग गेट तोड़कर सचिवालय के तिलक हॉल में, जहां विधायक दल की बैठक होनी थी, जा पहुंचे थे. अजीत सिंह और मुलायम सिंह यादव दोपहर बाद सवा तीन बजे हॉल तक पहुंच तो गए परंतु नारे गुंजाती भीड़ के कारण मंच पर बैठे तीन केंद्रीय पर्यवेक्षकों तक बमुश्किल ही पहुंच पाए. बहुत कोशिशों के बाद भी जब शोर नहीं थमा तब विधायकों और मुलायम सिंह ने लोगों के बीच आकर हाथ जोड़कर विनती की कि पत्रकारों समेत, सभी लोग हॉल से बाहर हो जाएं. और आखिरकार पौने चार बजे बैठक शुरू हो पाई.

सभी फोटो: आर.के. गुप्ता

नए मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को न सिर्फ सतर्क हो उठी नौकरशाही और भाजपा के दबावों से निबटना है बल्कि पार्टी के भीतर असंतोष की आग को भी ठंडा करना है

जनता दल के 204 विधायकों और विधान परिषद के आठ सदस्यों को एक-एक पर्ची दी गई, जिसमें उन्हें मुलायम सिंह और अजीत सिंह में से एक के लिए अपनी प्राथमिकता लिखकर देनी थी. हालांकि तीनों केंद्रीय पर्यवेक्षकों—मुफ्ती मुहम्मद सईद, मधु दंडवते और चिमनभाई पटेल—ने यह ब्यौरा देने से इनकार कर दिया कि किसके पक्ष में कितने वोट पड़े लेकिन बाद में सूत्रों ने बताया कि अजीत ग्यारह वोटों से हारे. केंद्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यवेक्षक इसी बात पर जोर देते रहे कि मुलायम सिंह यादव सर्वसम्मति से चुने गए, और यह कि मतदान तो विधायकों की पहली पसंद का अंदाज लगाने के लिए कराया गया. मगर एकता का प्रदर्शन दिखावा भर था.

नतीजा सुनने के बाद भीड़ के कुछ लोगों ने 'मुलायम सिंह, वी.पी. सिंह मुर्दाबाद' के नारे लगाने शुरू किए. अगले दिन अजीत सिंह के खासमखास राजेंद्र सिंह के घर पर हुई बैठक में, जिसमें जनता दल नेता सत्यप्रकाश मालवीय भी उपस्थित थे, अजीत सिंह के समर्थकों ने वी.पी. सिंह और देवीलाल विरोधी नारे लगाए. इन समर्थकों ने, जिनमें ज्यादातर गैर-विधायक थे, अजीत सिंह से अपील की कि वे जनता दल की सदस्यता तो छोड़ें ही, उनके गुट का कोई सदस्य केंद्र या राज्य की सरकार में शामिल भी न हो.

विधायक दल की बैठक के बाद खिसियाए-से अजीत सिंह ने पत्रकारों से बात करने या कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया. उसी शाम वे दिल्ली लौट आए. उनके समर्थकों ने भी कोई टिप्पणी करने से तो इनकार कर दिया लेकिन यह जरूर बुदबुदाते रहे कि बैठक में जो कुछ हुआ वह पार्टी के लिए घातक था. जनता दल नेताओं ने शायद बाद में उन्हें समझाया-बुझाया होगा क्योंकि न केवल 5 दिसंबर को लोकदल (अ) गुट के तीन विधायकों को उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडल में शामिल किया गया बल्कि उसी शाम अजीत सिंह को केंद्रीय मंत्री पद की शपथ दिलाई गई.

बहरहाल, विधायक दल द्वारा नेता चुने जाने के बाद मुलायम सिंह की गद्दी पक्की हो गई. शपथ लेने के लिए मोटरसाइकिलों के भारी काफिले के बीच उन्होंने लखनऊ के के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम में प्रवेश किया. यादव के बाद राज्यपाल की कार वहां पहुंची. पूर्व मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी और उनके मंत्रिमंडल के कुछ सदस्य भी वक्त पर पहुंच चुके थे. उसी शाम इंका विधायक दल के नेता चुने गए तिवारी का कहना था, "मैं इस सरकार की सफलता की कामना करता हूं लेकिन मैं उन्हें बता देना चाहता हूं कि एक सजग पहरुए की तरह हम उनके कामकाज पर नजर रखे रहेंगे."

बहरहाल, लोगों की हर्षध्वनि और नारों के बीच मुलायम सिंह यादव और उनके मंत्रियों ने शपथ ली. उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों के बारे में पहले से ही अनुमान लगाया जा चुका था. अलबत्ता जनता दल के कुछ विधायकों—विशेषकर रवींद्रनाथ तिवारी—की अनुपस्थिति जरूर रहस्यमय बनी रही. तिवारी यादव के कट्टर आलोचक रहे हैं. जनता दल के रेवती रमण सिंह और विक्रमादित्य पांडेय को शपथ दिलाने के साथ ही इन अटकलों का भी अंत हो गया कि चंद्रशेखर समर्थक विधायक शायद इस मंत्रिमंडल का बहिष्कार करें.

अभी तक जनता पार्टी के दो, लोकदल (ब) के छह, लोकदल (अ) के तीन और जनमोर्चा के दो विधायकों को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है. जातिगत विश्लेषण के आधार पर तीन ब्राह्मण, तीन मुसलमान, एक ठाकुर, एक भूमिहार, एक कुर्मी, दो अनुसूचित जाति और एक गूजर विधायक को लिया गया है.

बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के संयोजक मुहम्मद आजम खां को मंत्रिमंडल में शामिल करना भी मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का एक हिम्मत भरा फैसला था. उनके इस फैसले पर अभी तक लोगों की प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है लेकिन निश्चित रूप से हिंदूवादी गुट के लोग इससे बिदकेंगे. रामपुर से चुने गए आजम खां विश्व हिंदू परिषद द्वारा राम जन्मभूमि की मांग उठाने के एकदम विरोधी रहे हैं.

राम जन्मभूमि विवाद के संदर्भ में भाजपा द्वारा विधानसभा में विपक्ष की भूमिका चुनना भी बहुत महत्वपूर्ण है. 6 दिसंबर को प्रदेश भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष राजेंद्र गुप्त और भाजपा विधायक मंडल के नेता कल्याण सिंह ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में अपनी पार्टी का, जिसके 57 सदस्य विधानसभा में हैं, नजरिया साफ किया. इन दोनों ने राम जन्मभूमि हिंदुओं के हवाले करने और उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने के कानून वापस लेने की मांग की. भाजपा के इन नेताओं ने साफ-साफ कहा कि उनकी पार्टी नई सरकार से उन मुद्दों पर कोई समझौता नहीं करेगी जिन मुद्दों पर उसने हाल का चुनाव लड़ा है.

अजीत सिंह के घावों पर मरहम लगाने के लिए न सिर्फ उनके तीन समर्थकों को उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में शामिल किया गया बल्कि खुद उन्हें केंद्रीय मंत्री पद की शपथ दिलाई गई

भाजपा के इस रुख से नए मुख्यमंत्री को परेशानी हो सकती है. वैसे, प्रदेश में जनता दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त है. उसके 204 विधायक जीते हैं और मुख्यमंत्री का दावा है कि जनता दल के वैसे 14 लोग भी जीतकर आए हैं जिन्हें पार्टी का चुनाव चिन्ह नहीं मिल सका था. मुख्यमंत्री का दावा है कि कुछ दूसरे निर्दलीय विधायकों का समर्थन भी उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त है. ऐसे में भाजपा के इस नए रुख से नई सरकार की स्थिरता को कोई खतरा नहीं है. लेकिन 27 जनवरी से जब विश्व हिंदू परिषद अपने घोषित कार्यक्रम के तहत राम मंदिर का निर्माण शुरू करेगी तब उन्हें खासी परेशानी होगी.

यादव सरकार को दूसरी बड़ी चुनौती नौकरशाही की तरफ से मिल सकती है जो अभी से सतर्क हो उठी है. एक वरिष्ठ अधिकारी की टिप्पणी थी, "मुलायम सिंह जैसे लोग मुख्यमंत्री हों तो पता नहीं कब किस तरह के आदेश आपको मिल जाएं." अधिकारियों की आशंका बेबुनियाद भी नहीं है क्योंकि यादव भ्रष्ट और निकम्मे नौकरशाहों के खिलाफ बोलते रहे हैं.

राज्य की खस्ता हो रही अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए मौजूदा संसाधनों का उपयोग और नए स्रोतों की तलाश तीसरा बड़ा काम है. एक ऐसे मुख्यमंत्री के लिए जिसके सामने पार्टी को एकजुट रखना ही बड़ी चुनौती हो, निश्चित रूप से यह एक कड़ी परीक्षा होगी. बहरहाल, यादव ने मुख्यमंत्री बनकर इस सवाल का जवाब तो दे ही दिया है कि 'क्या वे मुख्यमंत्री बन भी पाएंगे?' अब उनके सामने यह सवाल मुंह बाये खड़ा है—"क्या वे मुख्यमंत्री बने रहेंगे?"

—दिलीप अवस्थी

यादवः हैसियत पलटी

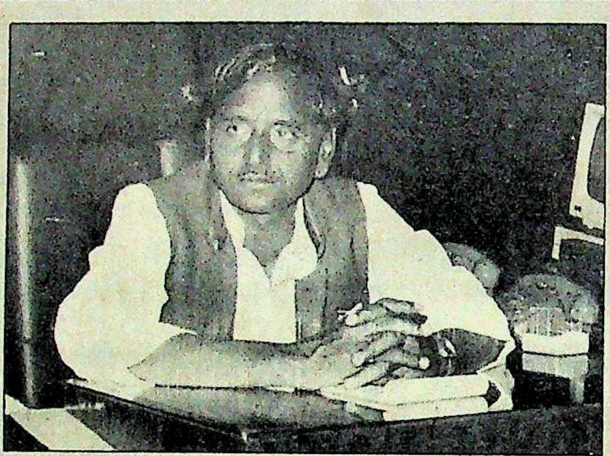

मुलायम सिंह यादव

'जमने तो दीजिए'

यह समझ पाना आसान है कि मुलायम सिंह यादव के विरोधी उन्हें कम करके क्यों आंकते हैं. उनकी छोटी-छोटी बेचैन आंखों से किसी ऐसे आशंकित व्यक्ति का ही भान होता है जो उत्तर प्रदेश की राजनीति की ऊबड़-खाबड़ राह का पथिक नहीं लगता. लेकिन धोखा न खाइए. यह व्यक्ति राजनीति का पारंगत खिलाड़ी है. वे बड़ी मामूली हैसियत से यहां तक पहुंचे हैं. वे गाय-भैंसों की देखभाल किया करते थे. अपने अतीत पर उन्हें गर्व भी है. वहां से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर बैठने की राह आसान नहीं रही है. इसमें वे बचे रहे और विजयी होकर उभरे. शपथ ग्रहण के बाद इस 50 वर्षीय राजनीतिक ने वरिष्ठ संवाददाता ***दिलीप अवस्थी*** *से बातचीत की. उसके अंश:*

● ***आपकी सरकार कितने दिन टिक पाएगी?***

पूरे पांच साल तक. और मैं यह सिर्फ यों ही नहीं कह रहा हूं. क्या आज शपथ ग्रहण समारोह के दौरान जनता दल के विशाल जनसमर्थन का नजारा आपने नहीं देखा? लोग हमसे उम्मीद पाले बैठे हैं और हम कुछ अच्छा करने को कटिबद्ध हैं.

● ***लेकिन नेतृत्व के लिए अजीत सिंह के दावे और उनकी हार से शुरू में ही जो विवाद उभरा उसके मद्देनजर क्या भविष्य में ऐसी और बातें नहीं उभरेंगी?***

नेता का फैसला दिल्ली में हो तो आप लोग कहने लगते हैं कि विधायकों पर दिल्ली से नेता थोप दिया गया. जब विधायक लोकतांत्रिक तरीके से नेता का चुनाव करते हैं तो आपको कलह दिखने लगती है. मुझे यकीन है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया का असर पार्टी की एकता पर नहीं पड़ेगा.

● ***आपका सामना किन परिस्थितियों से है?***

बहुत कठिन परिस्थितियां हैं. खजाना खाली है, सांप्रदायिक भावनाएं चरम पर हैं और भ्रष्टाचार निचली तह तक पहुंच चुका है. महंगाई, गरीबी और बेरोजगारी जैसी भयावह समस्याएं तो हैं ही.

● ***इन सभी से निबटने के लिए आपकी क्या योजना है?***

हमें सिर्फ छह महीने की मोहलत दीजिए और कोई मुश्किल सवाल न पूछिए. फिर मैं दिखा दूंगा कि हम क्या कर सकते हैं.

● ***क्या सरकारी मशीनरी सरकार चलाने की उम्मीद के अनुरूप है?***

यह मेरे लिए एक और गंभीर समस्या है जिससे मुझे तत्काल निबटना होगा. प्रशासकीय मशीनरी पूरी तरह कांग्रेसी संस्कृति में रंग चुकी है. इसका रवैया पूरी तरह जन विरोधी और अफसराना है. इस व्यवस्था में हमें ऐसा परिवर्तन लाना होगा कि प्रशासन के हर आदमी की जवाबदेही सीधे जनता के प्रति हो. लालफीताशाही अब कतई नहीं चलेगी.

● ***आपका कितना समय सिर्फ लोगों के लिए होगा?***

जनता दल का मुख्यमंत्री मात्र किरानी बनकर नहीं रह जाएगा. मैं हमेशा लोगों के लिए उपलब्ध रहूंगा पर इसके साथ ही यह भी चाहूंगा कि मेरा प्रशासन काम करे.

● ***आप राम जन्मभूमि मुद्दे पर क्या रुख अख्तियार करने जा रहे हैं?***

हम कोई सर्वमान्य हल ढूंढ़ निकालेंगे. पहले मुझे जमने तो दीजिए.

● ***जनता विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद पत्रकार वार्ता में आपने कहा था कि भ्रष्ट और निकम्मे अफसरों को अवकाश लेने पर मजबूर किया जाएगा. इस बारे में कुछ बताएंगे?***

हम किसी भी स्तर पर निकम्मापन और भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं करेंगे, खासकर अधिकारियों के स्तर पर तो एकदम नहीं.

● ***राजनीति के अपराधीकरण पर आपके क्या विचार हैं?***

मोटे तौर पर इसके लिए इंका ही जिम्मेदार है. हम राजनीति में अपराधियों से जूझने के प्रति कटिबद्ध हैं. मैंने कहा था कि मेरे मंत्री पूरी तरह स्वच्छ छवि के होंगे.

● ***आपकी अपनी छवि के बारे में क्या कहना है? यह विवाद उभरता रहा है कि अपराधियों से आपकी सांठगांठ है और आप उन्हें बचाते रहे हैं?***

यह मेरे खिलाफ इंका का दुष्प्रचार है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या बालों का गिरना — गंजेपन की निशानी — एक भयंकर सपना है? जी नहीं! अब ऐसी कोई बात नहीं है!

गंजेपन का एकमेव डॉक्टरी इलाज!

- एक नया क्रांतिकारी डॉक्टरी नुस्ख़ा — मिनॉक्सीडिल (हेयरेक्स) सॉल्यूशन महिलाओं और पुरूषों, दोनों, के बालों को झड़ने से और उनलोगों को गंजा होने से रोकता है!
- मिनॉक्सीडिल भारत समेत पचास से भी ज्यादा देशों में त्वचा विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत और निर्धारित नुस्ख़ा है!

कामयाबी का वादा

- यूएसए में 2300 लोगों पर ये नुस्ख़ा इलाज के तौर पर लागू किया जा चुका है और 80% तक कामयाब साबित हुआ है।
- शुरुआत के पहले ही वर्ष में हेयरेक्स (मिनॉक्सीडिल) टॉपिकल सॉल्यूशन ने भारत में बहुसंख्य लोगों को फ़ायदा पहुंचाया है। मिसाल के तौर पर कुछ नाम इस प्रकार हैं :
- श्री ओ. पी. भट्टड़ (बंबई) — 26 साल — बालों का झड़ना बंद हो गया और तीन महीने के भीतर बाल फिर से उगने लगे।
- डॉ. (मिसेज़) एस. खातून (हैदराबाद) — तीन महीनों में बाल फिर से उग आए।
- डॉ. पी. एस. केरकर (वाशी) — दो लड़कियों समेत पांच मरीज़ों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा।
- श्री एम. आर. पाटिल (जलगांव) — 60 साल — हेयरेक्स के इस्तेमाल का नतीजा अच्छा निकला।
- श्री पुजारी, श्री अरविंदन और दूसरे भी कई लोगों को हेयरेक्स के इस्तेमाल से फ़ायदा हुआ है।

सुरक्षित :
हेयरेक्स (मिनॉक्सीडिल) साइड इफेक्ट्स से मुक्त है। इसके लोकल रिऐक्शन भी विरल हैं और ये बड़ा ही सहनीय इलाज उपलब्ध कराता है।

HAIREX

Your solution for hairloss and baldness

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के पास उपलब्ध

Kopran त्वचा-रक्षा विभाग, 1076 डॉ. ई. मोज़ेज़ रोड, वरली, बंबई-400 018

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

सद्भावना की शुरुआत

वी.पी. सिंह की पंजाब यात्रा से सद्भाव का माहौल बना है जो पहले के प्रयासों के मुकाबले एक बड़ी उपलब्धि है. पर अभी कुछ कहना मुश्किल है. पंजाब की राजनैतिक सचाइयां दीर्घकालिक प्रयासों का तकाजा करती हैं.

सहज और मर्मस्पर्शी इस कदम ने नई उम्मीदों को जन्म दिया. केंद्रीय मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण करने के 48 घंटे के भीतर ही प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह अपने सहयोगी मंत्रियों—देवीलाल, इंद्रकुमार गुजराल और मुफ्ती मुहम्मद सईद के साथ अमृतसर में स्वर्ण मंदिर की यात्रा कर आए. नितांत धार्मिक और गैर-राजनैतिक बताई गई इस यात्रा के दौरान उन्होंने शहर में सिखों और हिंदुओं के प्रमुख पूजा स्थलों पर प्रार्थना की. ये लोग उत्साह से भरी भीड़ में न सिर्फ घुलमिल गए बल्कि खुली जीप में अमृतसर की सड़कों से भी गुजरे.

हालांकि इस यात्रा से कोई तत्काल या दूरगामी परिणाम नहीं निकले पर इतना जरूर है कि इससे सद्भाव का माहौल बना जो पहले के प्रयासों के मुकाबले एक बड़ी उपलब्धि है. वी.पी. सिंह की इस यात्रा की तुलना 1984 में ऑपरेशन ब्लूस्टार के तुरंत बाद श्रीमती गांधी की अमृतसर यात्रा से की जाने लगी है. स्वर्ण मंदिर से वी.पी. सिंह को निकलता देखकर एक वयोवृद्ध सिख ने अपनी राय जाहिर की, "वे जख्म देखने आई थीं, ये मरहम लगाने आए हैं."

पूर्व अधिकारी और अकाली राजनीति के नए केंद्रबिंदु सिमरनजीत सिंह मान की रिहाई के मद्देनजर वी.पी. सिंह की यह यात्रा महत्वपूर्ण हो गई है. देशद्रोह के आरोप में बंद रहे मान को तरनतारन लोकसभा सीट पर हुई शानदार जीत के बाद राजीव सरकार ने जाते-जाते रिहा करने के आदेश दिए थे. इस यात्रा के दौरान हालांकि उन्होंने वी.पी. सिंह से भेंट नहीं की लेकिन प्रधानमंत्री के सद्भावना प्रदर्शन का समूचे अकाली नेतृत्व पर अच्छा असर हुआ दिखता है. शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक समिति द्वारा नियुक्त अकाल तखत के जत्थेदार प्रोफेसर दर्शन सिंह ने घोषणा की कि केंद्र सरकार ने पंजाब समस्या सुलझाने के लिए पहला सच्चा प्रयास किया है. सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के साथ गठबंधन के कारण मान गुट ने खुलकर

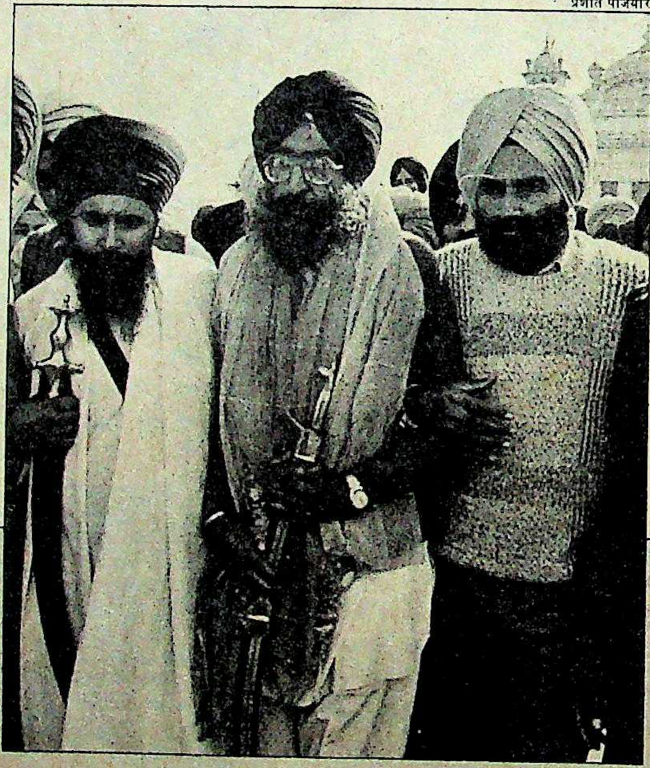

प्रशांत पंजियार

स्वर्ण मंदिर में मानः अभूतपूर्व स्वागत

*पब्लिक स्कूलों में पढ़े और आईपीएस अफसर रहे 45 वर्षीय सिमरनजीत सिंह मान भारी मतों से चुनाव जीतकर जेल से बाहर आए. अकाली दल की अध्यक्षता की अहम जिम्मेदारी के एहसास से वे दबे नजर आए. पंजाब के गांवों के दौरे के क्रम में उन्होंने प्रधान संवाददाता **कंवर संधू** से बात की. उसके अंश:*

सिमरनजीत सिंह मान

'सभी भले लोग इस सरकार की मदद करें'

● क्या आप अकाली दल के गुटों को एक करने की कोशिश करेंगे?

यह मेरी पार्टी पर निर्भर करेगा. पार्टी में अनेक लोग हैं जो पुराने अकाली नेताओं से कोई रिश्ता रखने के सख्त खिलाफ हैं.

● आपकी पार्टी में और अगर यह पंजाब में सत्ता में आती है तो उसकी सरकार में दमदमी टकसाल और सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन की क्या जगह होगी?

बहुत ही महत्वपूर्ण जगह. उन्हीं के सहयोग से हम जीते हैं. विधानसभा चुनाव में हम उम्मीदवार तय करने में दोनों संगठनों की मदद लेंगे.

● वी.पी. सिंह की सरकार के साथ आपकी पार्टी क्या रिश्ता रखेगी?

सौहार्दपूर्ण. मैं तो सभी भले लोगों से प्रार्थना करूंगा कि वे सरकार की मदद करें. सरकार को भी यह समस्या सुलझाने में पूरी गंभीरता बरतनी चाहिए.

● अकाली दल और सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के गठजोड़ से हिंदुओं और मुसलमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

प्रमोद पुष्करणा

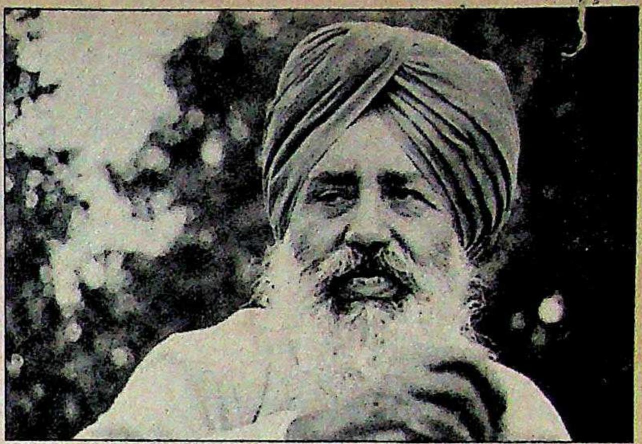

बरनाला (बाएं) और बादल: अनिश्चित भविष्य

इसकी प्रशंसा नहीं की लेकिन निजी बातचीत में उसके लोग इस सद्भावना प्रदर्शन का स्वागत करते हैं. इस गुट के एक सदस्य ने कहा, "वी.पी. सिंह ने राजनेता होने का परिचय दिया है."

अकाली नेतृत्व को गति प्रदान कर मान आशा के नए दूत बनकर उभरे हैं. लेकिन आज वे चहुं ओर ऐसी उद्दंडता और परस्पर विरोधी आकांक्षाओं से घिरे हुए हैं जिनका सामना दूसरे अनेक अकाली नेताओं को करना पड़ा है. उनकी रिहाई के बाद एक स्थानीय अखबार की सुर्खी 'तख्ते तों तखत तक' (फांसी के तख्ते से ताज तक) स्थिति को बहुत सरल बनाकर पेश करती है क्योंकि फिलहाल उनकी राह में कांटे भरे दिखते हैं.

मान के सामने उग्रवादियों से ही नहीं, बादल और बरनाला के नरमपंथी गुटों से भी निबटने का चुनौतीपूर्ण काम है

मान के सामने सबसे बड़ा काम उग्रवादियों पर नियंत्रण करने के साथ-साथ नरमपंथी प्रतिद्वंद्वियों का असर खत्म करना है. इस समय तो फेडरेशन ने पार्टी के नवनिर्वाचित सांसदों को अपनी पांचों मांगें पूरी न होने तक शपथ न लेने के लिए कहकर पहल अपने हाथ में ले ली है. इनमें ऑपरेशन ब्लूस्टार के लिए केंद्र की ओर से क्षमा याचना और नवंबर 1984 के दंगों के दोषी व्यक्तियों को सजा दिलाना शामिल है. मान गुट ने इस निर्देश को मानने से इनकार कर दिया है लेकिन नवनिर्वाचित सांसद सरकारी समारोहों से अभी तक दूर ही रहे हैं.

मान के सामने सिर्फ जरनैल सिंह भिंडरांवाले और अमरीक सिंह के अनुयायियों को ही नहीं बल्कि प्रकाश सिंह बादल और सुरजीत सिंह बरनाला के नरमपंथी गुटों से भी निबटने का चुनौतीपूर्ण काम है. निचले स्तर के कार्यकर्ताओं में बादल अभी भी लोकप्रिय हैं. पर मान मानते हैं कि उनकी पार्टी का एक धड़ा पुराने अकाली नेताओं के साथ कोई समझौता करने को तैयार नहीं है. खुद मान गुट भी केंद्र और खासकर देवीलाल के साथ बातचीत करने के प्रति उदासीन है. उनका मानना है कि बुजुर्ग जाट नेता अपने पुराने मित्र बादल को मुख्यमंत्री या अकाली दल अध्यक्ष बनाना चाहेंगे. पूर्व मंत्री सुच्चा सिंह छोटेपुर चेतावनी देते हैं, "केंद्र को चाहिए कि वह अकाली राजनीति को अपनी राह चलने दे."

लेकिन मान गुट के ही एक दूसरे धड़े का मानना है कि बादल के साथ समझौता जरूरी है, खास तौर से इसलिए कि गुरद्वारा प्रबंधक समिति पर उनके गुट का नियंत्रण है. दूसरे, अकाल तखत का असली जत्थेदार कौन है? इस बात का भी अभी फैसला होना है. बादल गुट जहां प्रोफेसर दर्शन सिंह को जत्थेदार मानता है, वहीं मान गुट जसबीर सिंह रोडे को. मान के सामने एक और महत्वपूर्ण काम बाबा जोगिंदर सिंह (भिंडरांवाले के पिता) और मनजीत सिंह (अमरीक सिंह के भाई) को साथ रखने का है क्योंकि वे ऐसे 'सर्वोच्च बलिदान' के प्रतीक हैं जिसके लिए सिखों के दिल में भारी श्रद्धा है. राजनीति में आगे बढ़ने के लिए मान को उग्रवादी दमदमी टकसाल का समर्थन पाना ही होगा.

उग्रवादियों के चुनावी अखाड़े में कूदने की वजह से उनके अधिकांश गुट इस समय बिखराव की हालत में हैं. इसलिए अब यह देखना है कि करीब 700 उग्रवादियों (पुलिस के अनुसार) में से कुल कितने लोग अपने रास्ते पर टिके रह पाएंगे. मान ने अभी

में असुरक्षा की जो भावना पैदा हुई है उसे आप कैसे दूर करेंगे?

असुरक्षा की भावना होनी ही नहीं चाहिए. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू राष्ट्र की मांग करता है, जो खालिस्तान की मांग जैसा ही है. भाजपा अगर आरएसएस से प्रेरणा ले सकती है तो हम सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन की मदद लेते हैं तो क्या बुरा है?

● ***पंजाब के सिखों की आकांक्षाएं किन उपायों से पूरी होंगी?***

हमारा उद्देश्य संविधान के दायरे में ही अपनी शिकायतों को दूर करना है. मुझे मालूम है कि हमारी मांगों के पूरा होने की इसमें पर्याप्त गुंजाइश है. अगर इंका ने संविधान के अनुसार ही निष्ठापूर्वक काम किया होता तो यह स्थिति पैदा ही नहीं होती.

● ***आतंकवादियों से कैसे निबटेंगे?***

सिख आतंकवादी नहीं हैं. वे एक मकसद के लिए लड़ रहे हैं. सरकारी नीतियों के कारण उन्हें विवश होकर हथियार उठाने पड़े हैं. जो लोग खालिस्तान की मांग कर रहे हैं, मैं उनके विचार सुनूंगा. समाधान के लिए उनका सहयोग जरूरी है.

● ***जेल में आपके साथ कैसा बरताव हुआ?***

राजस्थान के भरतपुर में तो मुझे नंगा कर दिया गया. फिर उन लोगों ने मुझे बिजली के झटके दिए. बिजली का एक तार मेरे नाखून से सटाया गया तो दूसरा गुप्तांग से. भागलपुर में मुझे चार दिनों तक पागलों वाली जेल में रखा गया. बंबई में मुझे जो सेल दिया गया उसकी दीवारें टट्टी और थूक-खखार से भरी थीं. अगर मेरे वकील राम जेठमलानी और डॉ. बी.एल. वढेरा ने हस्तक्षेप न किया होता तो यह सब चलता ही रहता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक इन सबको एक संगठन के तहत लाने का कौशल नहीं दिखाया है. हालांकि उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी है कि वे ऐसा समाधान चाहते हैं जो संविधान के अंतर्गत हो (देखें बातचीत) लेकिन कई आतंकवादी संगठन 'खालिस्तान' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताते ही रहते हैं.

मान और केंद्र के प्रयासों में फेडरेशन के महासचिव हरमिंदर सिंह संधू बाधा बन रहे हैं. उन्हें पिछली सरकार ने जाते-जाते रिहा किया था. ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद सरकारी गवाह बने संधू अब अचानक पलटकर कहते फिर रहे हैं कि सिखों का लक्ष्य 'खालिस्तान' ही है. उनकी रिहाई और उसके बाद उनके बयानों के आधार पर राजनैतिक पर्यवेक्षक यह मानने लगे हैं कि वे पंजाब में संभावित शांति प्रयासों की राह में बाधा हैं.

इस बीच मान गुट ने 10 दिसंबर को अमृतसर में हुई अपनी कार्यकारिणी की बैठक में एक प्रस्ताव पारित कर अपने राजनैतिक लक्ष्यों की व्याख्या की. प्रस्ताव में मांग की गई कि उत्तर में 'एक स्वायत्तशासी सिख क्षेत्र' बनाया जाए जो भारतीय संघ का एक अविभाज्य हिस्सा हो और जिसे विदेश संबंध, रक्षा, मुद्रा और सामान्य संचार को छोड़कर अपना अंदरूनी संविधान बनाने सहित सारे अधिकार हासिल हों. इस क्षेत्र में पंजाब से सटे हरियाणा, राजस्थान, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के सिखबहुल इलाकों को शामिल किया जाएगा.

अगर उग्रपंथी 'खालिस्तान' की मांग पर अड़े रहे तो मान गुट को विभाजन का शिकार भी होना पड़ सकता है. अमृतसर में कार्यकारिणी की बैठक से तीन सांसदों सहित 12 पार्टी सदस्यों के वॉकआउट से इसका पहला संकेत मिला है.

हां, फिलहाल माहौल अच्छा बना है. सरकार ने राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय को हटाकर नई नीतियों की पहल का संकेत दिया है (देखें बाक्स). प्रस्तावित सर्वदलीय बैठक और पंजाब के बारे में बनी समिति के मद्देनजर हो सकता है केंद्र विधानसभा और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के चुनावों के बारे में राय की सिफारिशों पर फिर से विचार करे. सूत्रों का कहना है कि सरकार विधानसभा चुनावों की घोषणा करने से पहले पंजाब के राजनैतिक गुटों के साथ समझौता करना चाहेगी. राष्ट्रपति शासन की तीन साल की अधिकतम अवधि 11 मार्च 1990 को खत्म हो जाएगी. पंजाब में फिर से आस जगी है लेकिन अभी संभावनाएं दोनों किस्म की हैं.

—कंवर संधू

प्रभात पतियार

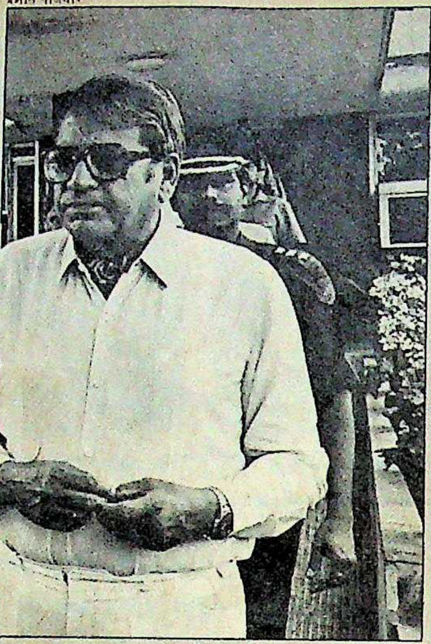

सिद्धार्थ शंकर राय

आखिर जाना पड़ा

जब उन्हें आतंकवाद से जूझ रहे पंजाब का राज्यपाल बनाया गया तो उम्मीद की नई किरण दिखी थी. लेकिन सिद्धार्थ शंकर राय ने पिछले पखवाड़े इस्तीफा दिया तब भी उम्मीद जगी मगर दूसरी तरह, कि अब वे जा रहे हैं तो राज्य की मुश्किलें आसान होंगी. यह धारणा उनकी कठोर नीतियों के कारण बनी जिन्हें वे तीन सालों से बेरहमी से लागू करते रहे थे.

यह साफ था कि पंजाब मसले पर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की पहल राय की रवानगी से शुरू होगी. राय ने इस्तीफा दे भी दिया. उनकी जगह पंजाब काडर के पूर्व आईसीएस अधिकारी निर्मल कुमार मुकर्जी को नियुक्त किया गया. मुकर्जी हाल ही में कैबिनेट सचिव के पद से रिटायर हुए हैं.

वी.पी. सिंह के प्रधानमंत्री बनते ही राय ने 72 घंटों के भीतर चार संदेश भेजकर उन्हें ऑल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के महासचिव हरमिंदर संधू से निबटने के निर्देश मांगे. संधू के बारे में, जिसने हाल में खालिस्तान समर्थक बयान दिया था, राय ने संदेश भेजा कि, "वह लोगों में उत्तेजना फैला रहा है."

इस संदेश से केंद्र को झटका देकर राय यदि किसी कड़ी कार्रवाई का निर्देश मिलने की उम्मीद कर रहे थे तो उन्हें

चंडीगढ़ में राय

निराशा ही हुई क्योंकि वी.पी. सिंह ने उन्हें कोई जवाब देने की जरूरत नहीं समझी और माहौल का खुद जायजा लेने का फैसला किया.

इस्तीफा देते वक्त राय ने कहा कि राज्य की समस्या सुलझने में बस तीन महीने की देर रह गई है. राय की चाल शायद यह थी कि यदि नई सरकार कोई हल ढूंढ़ लेती है तो इसका श्रेय उन्हें ही जाएगा. यदि नहीं, तो इसका दोष नई 'उदारवादी नीतियों' के सिर होगा.

कार्यकाल के आखिरी हफ्ते में राय ने जो कुछ किया उस पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं. सबसे पहले उन्होंने बटाला के एसएसपी गोविंदराम के खिलाफ चल रहा मुकदमा बंद करवाया (गोविंदराम पर सरपंचों को सरेआम पीटने का आरोप था). इसके बाद राय ने पंजाब विधानसभा के चुनाव कराए जाने की सिफारिश की. और हरमिंदर संधू जैसे कई नेताओं की रिहाई के आदेश दिए. आखिर वी.पी. सिंह को कहना पड़ा कि उनसे पूछे बिना वे कोई नई घोषणा न करें.

इन तीन वर्षों में राय की उपलब्धि? खुद राय के शब्दों में, "इन तीन वर्षों में हमने जो सफलता हासिल की है, उसे लोग इससे तिगुने समय में भी शायद हासिल न कर पाएं." उनका यह बयान शायद ही किसी के गले उतरे क्योंकि उनकी नीतियों के चलते सिखों का एक बड़ा तबका अलग-थलग पड़ गया है, नागरिक अधिकारों की अवहेलना हुई और पुलिस ज्यादतियों की शिकायतें बढ़ीं.

यही नहीं, कथित उग्रवादियों की बड़ी संख्या में हत्या के बावजूद वे तेजी से पनपते रहे. सरकारी सूत्रों के अनुसार मई 1987 में, जब राय ने बरनाला से शासन संभाला, तब कट्टर आतंकवादियों की संख्या 90 और कम खतरनाक आतंकवादियों की संख्या 225 थी. अब उनकी रवानगी के वक्त पुलिस रिकार्ड के अनुसार पंजाब में 150 कट्टर और 550 कम कट्टर आतंकवादी हैं.

इस्तीफा देने से चार दिन पहले राय ने दार्शनिक अंदाज में कहा, "मेरे काम का मूल्यांकन इतिहास ही करेगा." वह तो खैर करेगा ही लेकिन इस संबंध में वह निश्चित ही बहुत उदारता नहीं बरतेगा.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

वारिस की ताजपोशी

चौटाला की मुश्किलें कम नहीं

राजधानी के हरियाणा भवन में जब वे मंच पर शपथ ग्रहण समारोह के लिए आए तो उनके चेहरे पर विजयी मुस्कान थी. और होती भी क्यों नहीं. पारिवारिक शासन की परंपरा निबाहते हुए हरियाणा के दिग्गज देवीलाल के बड़े बेटे ओमप्रकाश चौटाला ने आखिर छह घंटे के नाटक के बाद मुख्यमंत्री पद विरासत में जो पाया था. इस अप्रत्याशित सत्ता हस्तांतरण से जनता दल के केंद्रीय नेतृत्व के साथ-साथ राज्य सरकार में साझेदार भाजपा भी अवाक रह गई.

नाटक सुबह सवेरे शुरू हो गया. उप-प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के तीन घंटे पहले देवीलाल और उनके बेटे ने हरियाणा के राज्यपाल एच.आर. बराड़ी से उसी शाम दिल्ली पहुंचने का अनुरोध किया. जिलाधीशों और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों को वॉयरलेस संदेश भेजकर सभी विधायकों को दोपहर दो बजे तक दिल्ली पहुंचाने की व्यवस्था करने के लिए कहा गया.

देवीलाल ने मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए ही उप-प्रधानमंत्री पद की शपथ ली. समारोह के तुरंत बाद वे अपने महत्वाकांक्षी छोटे बेटे रणजीत सिंह को मनाने हरियाणा भवन लौट आए. चौटाला के मुख्यमंत्री बनने में रणजीत रोड़े अटका सकते थे क्योंकि उन्हें ज्यादातर विधायकों का समर्थन हासिल था. सर्वसम्मति से चौटाला के चुने जाने की बात तो रणजीत ने बेमन से मान ली लेकिन उनके नाम का प्रस्ताव रखने से इनकार कर दिया. आखिरकार देवीलाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में पार्टी के सचिव किशन सिंह संगवां ने चौटाला के नाम का प्रस्ताव रखा और राव नरबीर सिंह ने उसका अनुमोदन किया. इसके बाद देवीलाल ने हरियाणा भवन की छत पर टहल रहे रणजीत को फैसला सुनाया, "चौटाला को शाम साढ़े पांच बजे शपथ दिलाई जाएगी."

हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने की बरसों पुरानी आकांक्षा पूरी होने के बाद चौटाला कुर्सी सलामत रखने का पक्का बंदोबस्त कर देना चाहते थे. उन्होंने पुराने मंत्रिमंडल—जिसमें ज्यादातर रणजीत समर्थक लोग थे—को ही बरकरार रखा. उनका यह फैसला कूटनीतिक दृष्टि से समझदारी भरा था. एक मंत्री की टिप्पणी थी, "उन्होंने ईमानदारी भरी शुरुआत की है."

भवानी सिंह

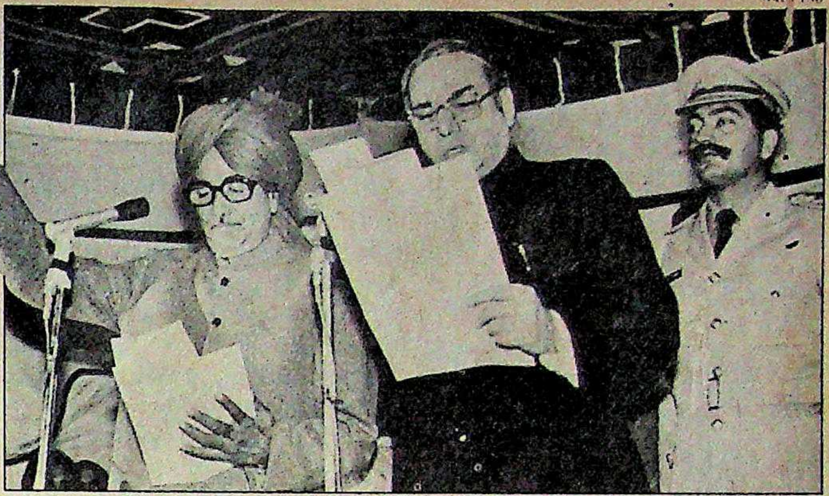

शपथ लेते चौटाला; और रणजीत: सुलह का नाटक

प्रमोद पुष्करणा

पारिवारिक शासन बरकरार रखने का खेल जिस तरह खुलकर खेला गया उससे नाराज भाजपा ने सरकार से बाहर आ जाने का फैसला किया

चौटाला ने शुरुआती मुसीबतों पर भले ही काबू पा लिया हो लेकिन असंतोष के बादल छंट नहीं पाए हैं. सबसे बड़े खतरे के संकेत भाजपा की तरफ से मिले हैं. पार्टी ने सरकार से बाहर रहकर समर्थन देने का फैसला किया है. उसके 17 विधायकों में से छह देवीलाल के मंत्रिमंडल में रहे थे, इस तथ्य के मद्देनजर यह फैसला अहमियत रखता है. इस फैसले का असर जरूर पड़ेगा.

भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी हालांकि कैफियत देते हैं, "हरियाणा में जड़ें मजबूत करने के लिए हम संगठनात्मक काम पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं." पर असलियत यह है कि हरियाणा में जिस तरह पारिवारिक शासन बरकरार रखने का खुला खेल खेला गया उससे भाजपा नाखुश है. राज्य में दो संसदीय सीटें गंवा देने की वजह से भी पार्टी देवीलाल से रूठी हुई है. भाजपा-जनता दल गठबंधन 90 में से 40 विधानसभा क्षेत्रों में पिछड़ गया. भाजपा का आरोप है कि ऐसा देवीलाल सरकार की 'भ्रष्ट और जाट-समर्थक छवि के कारण ही हुआ. लोग उसके खिलाफ हो गए.

अब चौटाला को सरकार की इसी छवि को धोना है. पार्टी विरोधी गतिविधियों की वजह से निष्कासित किरपाराम पूनिया और आठ दूसरे विधायक इस काम को और मुश्किल बनाएंगे. फिलहाल चौटाला ने निष्कासित विधायकों को पार्टी में दोबारा शामिल करने की पेशकश की है, बशर्ते वे माफी मांग लें.

मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने का औचित्य साबित करते हुए चौटाला कहते हैं, "मुझे गर्व है कि मेरी रगों में देवीलाल का खून है लेकिन मेरी अपनी हैसियत भी है." सौभाग्य से ऐसा ही दावा पेश कर चौटाला के किए धरे पर पानी फेर देने वाला शख्स फिलहाल मौन है. रणजीत दिखावे से ही सही, कहते हैं, "हमारे परिवार में अब कोई कलह नहीं है." यह सच हो तो भी कठोर रवैया अपनाए बैठी भाजपा और नई ताकत के साथ उभरी राज्य इंका से घिरे चौटाला के लिए शासन चलाना रस्सी पर चलने जैसा होगा.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

फिर पुराने हाथों में

इंका की बागडोर बुजुर्गों को

इंका को 'पुराने चावल' फिर याद आ गए हैं. जिंदगी के छठे दशक को पार करते परसराम मदेरणा को जब 7 दिसंबर की दोपहर प्रदेश इंका अध्यक्ष पद सौंपा गया तो उसी समारोह में मौजूद एक बुजुर्गवार नेता ने अपनी भाषा में टिप्पणी की कि "छोरी छापरी से ही काम चाल जाए तो बाबा बूढ़ी क्यूं राखे?" यह टिप्पणी वहां इसलिए सार्थक थी क्योंकि युवा अशोक गहलोत को हटाकर अब प्रदेश इंका की जिम्मेदारी फिर बूढ़े परसराम मदेरणा को सौंपी गई.

मुख्यमंत्री चुने जाने के बाद हरिदेव जोशी: कड़ी चुनौती

जोशी तीसरी बार मुख्यमंत्री बने हैं. राज्य इंका की कमान अब बुजुर्ग नेता परसराम मदेरणा को सौंप दी गई

वैसे देखा जाए तो राजस्थान की राजनीति के चक्र ने पिछले पांच साल में एक चक्कर पूरा कर लिया है. संवैधानिक अड़चनों और राजनैतिक रुकावटों के बीच तिरते-उतराते हरिदेव जोशी तीसरी बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराज गए हैं और प्रदेश इंका अध्यक्ष पद से नवल किशोर शर्मा के इस्तीफे से शुरू हुआ चक्र फिर परसराम मदेरणा पर आकर थम गया है. और फिर एक बार विधानसभा के चुनाव सिर पर खड़े हैं. जिन राजनीतिक दिग्गजों से मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर ने मुख्यमंत्री बनते ही मुंह मोड़ा था वे फिर से राज्य में सत्ता की नैया पर सवार हो गए हैं.

दिवराला सती कांड में नकारा साबित हुए हरिदेव जोशी ने सांप्रदायिक दंगों की आग पर काबू पाने में असफल रहे शिवचरण माथुर पर विजय हासिल कर ली है. प्रदेश इंका अध्यक्ष और दो बार कार्यवाहक मुख्यमंत्री रहे हीरालाल देवपुरा फिर इस बार मुख्यमंत्री बनने का सपना पूरा नहीं कर पाए और पिछली बार 'उप मुख्यमंत्री' नहीं बनने वाले नाराज जगन्नाथ पहाड़िया भी चुपचाप देखते रह गए.

3 दिसंबर की सर्द दोपहर में हरिदेव जोशी को 'सर्वसम्मति' से विधायक दल का नेता चुना गया, हालांकि उस समय तक न तो जोशी का असम के राज्यपाल पद से इस्तीफा स्वीकार किया गया था और न ही किसी की वहां नियुक्ति होने की अधिसूचना जारी हुई थी. बहरहाल, तीन बार टलने के के बाद दिसंबर की शाम सवा पांच बजे जोशी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली. उन्होंने मंत्रिमंडल में उस दिन 11 लोगों को शामिल किया. जोशी का कहना था, "अभी कई हिस्सों को इसमें प्रतिनिधित्व नहीं मिला है इसलिए मंत्रिमंडल का विस्तार जल्दी ही किया जाएगा." जोशी सरकार के गठन के तुरंत बाद ही कई असंतुष्ट उभर आए और उनकी गतिविधियां भी तेज हो गईं. कुछ तो दिल्ली दरबार में भी शिकायत लेकर पहुंच गए. लिहाजा जोशी को भी शपथ लेने के दूसरे दिन ही आलाकमान के पास जाना पड़ा और एक सप्ताह के भीतर ही 9 दिसंबर को मंत्रिमंडल में फिर विस्तार किया गया जिसमें 17 और को मंत्री पद सौंप दिया गया. इस 29 सदस्यीय मंत्रिमंडल में नौ विधायक पहली बार मंत्री बने हैं. परंतु दूसरी बार हुए शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित एक विधायक ने कहा कि यह तो "खिचड़ी मंत्रिमंडल" हो गया और वह भी ऐसे चावलों की खिचड़ी जिन्हें एक साथ नहीं पकाया जा सकता. असंतुष्टों के नेता रहे दामोदर दास आचार्य को राज्यमंत्री से कैबिनेट मंत्री बना दिया गया, शायद खुश रखने के लिए.

इस बीच असम के निवर्तमान राज्यपाल हरिदेव जोशी को मुख्यमंत्री के रूप में शपथ दिलाने की वैधानिकता को जनता दल के मुख्य सचेतक यदुनाथ सिंह ने राजस्थान हाईकोर्ट में चुनौती दी. इस याचिका पर सुनवाई के वक्त हरिदेव जोशी के वकील ने आपत्ति करते हुए कहा कि जोशी ने कांग्रेस विधायक दल की बैठक में तब हिस्सा लिया, जब उन्होंने राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा सौंप दिया था. दोनों पक्षों को सुनने के बाद न्यायाधीश एस.एन. भार्गव ने यदुनाथ सिंह की याचिका खारिज करने का फैसला सुनाया.

मुख्यमंत्री और मंत्रियों के शपथ समारोह से भी ज्यादा रोचक रहा प्रदेश इंका कार्यालय में 7 दिसंबर को आयोजित वह सादा समारोह जिसमें मदेरणा को प्रदेश इंका अध्यक्ष बनाया गया. कुर्सी पर बिठाने और 'नेम प्लेट' बदलने की औपचारिकता के बाद भाषण व स्वागत समारोह हुआ तो उसमें ठहाके गूंजते रहे और मदेरणा ने अपना भरा हुआ गुस्सा उंडेल दिया. उस समय शिवचरण माथुर तथा हीरालाल देवपुरा की हालत देखते बनती थी. मदेरणा का कहना था कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की हार का सबसे बड़ा कारण यह था कि पार्टी जन एक दूसरे की टांग खिंचाई कर रहे थे. रामशिला पूजन, महंगाई, भ्रष्टाचार तो कारण थे ही.

उन्होंने कहा कि "बाकी स्थानों की तो देवपुरा जी जानें, लेकिन जोधपुर में ही तीन कांग्रेस चल रही थी." उन्होंने बाद में बताया कि देवपुरा ने प्रदेश इंका की जो-टीम बनाई थी वह बनी रहेगी.

अब देखना यह है कि बदलते-बदलते इंका कितना बदल पाती है. इसका अंदाज विधानसभा चुनाव के नतीजे ही देंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

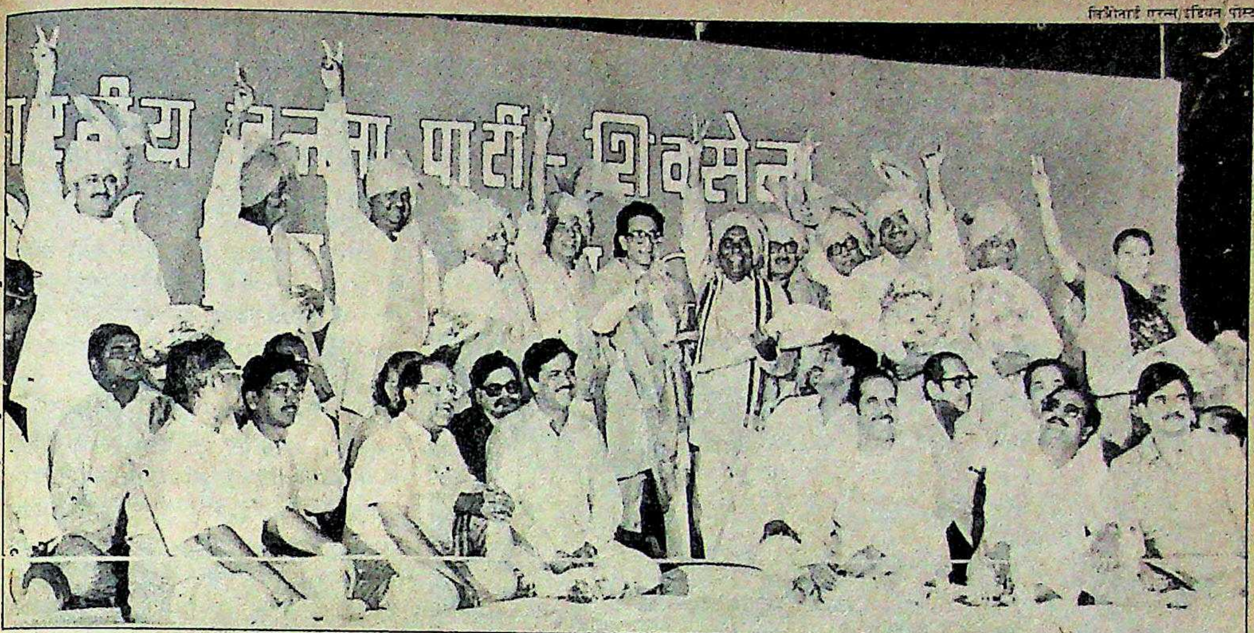

महाराष्ट्र

भारी पड़ती भगवा चुनौती

ठाकरे के साथ भाजपा और शिवसेना के सांसदः विजयी गठजोड़

भाजपा-शिवसेना गठजोड़ की नजर अब राज्य की गद्दी पर

बंबई के ऐतिहासिक शिवाजी पार्क में पिछले पखवाड़े हुई विशाल विजय रैली ने साफ कर दिया है कि भाजपा-शिवसेना गठजोड़ महाराष्ट्र की राजनीति में पहली बार राजनैतिक ताकत के रूप में उभरकर सामने आया है. इस मौके पर हुई शानदार आतिशबाजी के बीच शिवसेना के प्रमुख बाल ठाकरे और भाजपा महासचिव प्रमोद महाजन नव-निर्वाचित 14 सांसदों के साथ मंच पर आए. ये सारे लोग भगवा वस्त्रों में थे. रैली में लहराते भगवा झंडों के 'समुद्र' ने मानो मुख्यमंत्री शरद पवार को खुली चुनौती दी.

लोकसभा चुनाव में इस गठजोड़ का प्रदर्शन किसी भी पैमाने से शानदार माना जाएगा. शिवसेना का आज तक कोई सांसद नहीं था. केवल एक विधायक था राज्य की विधानसभा में, जिसका कार्यकाल मार्च में समाप्त हो रहा है. 1984 के लोकसभा चुनाव में तो भाजपा का सफाया ही हो गया था. दरअसल 1957 के बाद से राज्य से कोई जनसंघी या भाजपाई लोकसभा के लिए नहीं चुना गया. 1957 में जनसंघ के दो लोग जीते थे. अब 288 सदस्यों वाली विधानसभा में भाजपा के मात्र 15 विधायक हैं. पिछले महीने हुए संसदीय चुनाव में भाजपा के 10 और शिवसेना के 4 लोग चुन लिए गए.

यह हिंदूवादी गठजोड़ कितना प्रभावशाली साबित हुआ, इसका सबूत यह है कि अधिकांश सीटों पर तिकोने संघर्ष के बावजूद गठजोड़ विजयी हुआ. इसके उम्मीदवारों को इंका के साथ ही जनता दल या रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवारों का मुकाबला करना पड़ा. उत्तरी बंबई सीट से प्रदेश जनता दल अध्यक्ष मृणाल गोरे और इंका उम्मीदवार को पराजित करने वाले राम नाईक कहते हैं, "हमने दिखा दिया है कि तिकोने मुकाबले में भी विपक्ष जीत सकता है. इस चुनाव का यह महत्वपूर्ण सबक है."

इसके अलावा इस गठजोड़ के उम्मीदवार 15 दूसरी सीटों पर दूसरे नंबर पर रहे. उन्हें काफी वोट मिले और उन्होंने दूसरे विपक्षी उम्मीदवारों को तीसरे नंबर पर धकेल दिया. छह स्थानों पर तो वे मामूली अंतर से चुनाव हारे. इंका को 45 फीसदी से अधिक और जनता दल को करीब 11 फीसदी वोट मिले जबकि इस गठजोड़ को 28 फ़ीसदी से अधिक. बाल ठाकरे कहते हैं, "लोकसभा चुनाव तो पहला कदम था. हमारा असली उद्देश्य तो राज्य की सत्ता हासिल करना है."

ठाकरे के दावे को अब हवाई नहीं माना जा सकता. भाजपा-शिवसेना गठजोड़ ने महाराष्ट्र के नक्शे पर अपनी भगवा छाप छोड़ी है. बंबई और ठाणे से लेकर भंडारा और चिमूर तक उसका असर दिखा है. महाजन ने कहा, "मध्य प्रदेश या राजस्थान में तो हिंदूवादी लहर थी ही, महाराष्ट्र में इसे पैदा करना पड़ा. लोकसभा चुनाव के नतीजों ने हमारी हिंदूवादी धारा को बल दिया है."

इस दक्षिणपंथी गठजोड़ के जनक माने जाने वाले महाजन के लिए तो ये चुनाव नतीजे उनकी राजनैतिक रणनीति की सफलता के प्रमाण हैं. शिवसेना से गठजोड़ करने के उनके आग्रह का विरोध भाजपा के कई नेताओं ने किया था.

राम नाईक कहते हैं, "हमारी उपलब्धियों ने साबित कर दिया है कि महाजन की रणनीति सही थी. यह भाजपा और शिवसेना के कार्यकर्ताओं के एकजुट होकर काम करने से संभव हुआ है. इन दो दलों से नाक-भौं सिकोड़ने वाले लोगों की उम्मीदें गलत साबित हुई और दो भिन्न राजनैतिक संस्कृतियों का विवाद नहीं उभरा." दरअसल जिन जगहों पर दोनों पार्टियों के बीच का पुराना विवाद सुलझ नहीं पाया, वहां-वहां इंका की जीत हुई. जैसा कि रत्नागिरि में हुआ.

हालांकि इस बात पर काफी विवाद है, पर संभव है कि इस गठजोड़ को कुछ मुसलमान और दलित वोट भी मिले होंगे. नाईक कहते हैं, "मुसलमानों ने हमें वोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिए, भले ही बड़ी संख्या में न दिया हो. और यह भी सिर्फ हवाई बात ही है कि दलितों ने सिर्फ जनता दल और रिपब्लिकन पार्टी को ही वोट दिया." प्रदेश भाजपा महासचिव और पार्टी के अल्पसंख्यक सेल के प्रमुख अब्दुल अलीम खां कहते हैं, "हम अभी भी प्रत्येक मतदान केंद्र पर पड़े मतों का विश्लेषण कर रहे हैं लेकिन इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि हमें मुस्लिम वोट मिले

महाजनः सफल रणनीति

महाराष्ट्र में इंका को धूल चटाने के लिए इस गठजोड़ को यहां के महत्वपूर्ण पश्चिमी क्षेत्र में कुछ करके दिखाना होगा

हैं." लेकिन बाल ठाकरे मुस्लिम वोटों की गिनती करते ही नहीं. विजय रैली में भी उन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ जहर उगला और यह घोषणा करके बवाल मचा दिया कि सड़कों पर नमाज पढ़ने और मस्जिदों में लाउडस्पीकर बजाने पर रोक लगा दी जाएगी.

बहरहाल, भाजपा को यह आलोचना तो सहनी ही होगी कि उसने शिवसेना के भरोसे ही जीत हासिल की है. चुनाव नतीजों से उसकी सांगठनिक शक्ति नहीं झलकती. इस चुनाव के जरिए अपनी ताकत बढ़ाने की जगह भाजपा के सामने यह खतरा पैदा हो गया है कि उसके कार्यकर्ता अधिक उग्र शिवसेना के साथ न चले जाएं, जैसा कि कुछ वर्षों पहले प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के साथ हुआ था. अक्तूबर में बंबई में हुए भाजपा के राष्ट्रीय सम्मेलन तक भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता ठाकरे से बचते फिर रहे थे. ठाकरे सार्वजनिक तौर पर इन लोगों की खिल्ली उड़ाया करते थे. आज भी इस मामले में ठाकरे पर बहुत अंकुश नहीं लग पाया है. चुनाव के बाद भी उन्होंने 'राष्ट्रीय सहमति' से सरकार बनाने के अटल बिहारी वाजपेयी के सुझाव का मजाक उड़ाया और ब्राह्मण समर्थक होने के लिए आरएसएस की आलोचना की. उन्होंने कहा, "आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद ने काफी मेहनत की लेकिन हिंदुत्व में उग्रता तो मैं ही ला पाया हूं. मैं जनेऊ और चोटी में विश्वास नहीं करता."

लेकिन भाजपा के नेता इस बात का खंडन करते हैं कि उन्हें शिवसेना के बल पर जीत मिली. अलीम खां कहते हैं, "हमें सबसे अच्छी कामयाबियां विदर्भ में मिली हैं जहां हमने पिछले तीन बरसों में काफी काम किया. शिवसेना तो वहां अभी हाल में ही पहुंची है." बंबई में इस गठजोड़ का काफी असर दिखा. यहां की चार सीटें इसकी झोली में गईं.

भाजपा-शिवसेना गठजोड़ चीनी पैदा करने वाले पश्चिमी जिलों में नहीं जीत पाया. यहां इंका और उसको मजबूती देने वाले मराठा लोगों का ही दबदबा रहा. ठाकरे ने कहा, "हमारे पास समय कम था. अगर मैंने वहां सभाएं की होतीं तो तस्वीर कुछ और ही होती. चीनी उगाने वाली जमीन राजनैतिक रूप से भी उपजाऊ है. विधानसभा चुनाव में वहां हम अपनी फसल काटेंगे." उनका मानना है कि चीनी के सहारे इंका की राजनीति में दबदबा रखने वाले अनेक लोग इंका से नाराज हैं और वे इंका का बंटाढार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. लेकिन अभी तक सिर्फ एक प्रमुख मराठा पूर्व मुख्यमंत्री बाबा साहेब भोंसले ने ही ठाकरे के साथ आने की घोषणा की है.

प्रदेश में इंका को पराजित करने के लिए भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को उसका यह पश्चिमी किला ध्वस्त करना होगा. महाराष्ट्र की राजनीति में कोई भी पार्टी चीनी वाले क्षेत्र पर नियंत्रण किए बिना शासन नहीं कर सकती. लेकिन विडंबना यह है कि कभी छत्रपति शिवाजी का मराठा साम्राज्य रह चुका यह क्षेत्र ही हिंदुत्व की लहर से अप्रभावित रहा.

लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्रदेश के दूसरे इलाकों, खास तौर से विदर्भ और मराठवाड़ा में राम जन्मभूमि और रामशिला पूजन अभियानों के कारण इस गठजोड़ को काफी मदद मिली. पुलिस द्वारा लगाए प्रतिबंधों की परवाह न करते हुए खुद ही कई स्थानों पर शिलापूजन समारोह आयोजित कराने वाले अलीम खां का मानना है, "यह अभियान राज्य के 17,000 गांवों तक पहुंचा. इससे भाजपा को काफी फायदा हुआ. हमने इस दौरान उन गांवों में भी अपने झंडे गाड़ दिए जहां पांच साल तक एड़ी रगड़कर भी हम अपने पांव जमा पाने की उम्मीद नहीं कर सकते थे."

लेकिन इस चुनाव में मिली कामयाबी पक्की करने से पहले ही भाजपा और शिवसेना के बीच विधानसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे को लेकर मोल-तोल शुरू हो चुका है. शिवसेना विधानसभा की 200 सीटों पर खुद लड़ना और शेष सीटें भाजपा को देना चाहती थी. लेकिन लोकसभा की इतनी सीटें जीतने और दूसरी सीटों पर बढ़िया प्रदर्शन करने के बाद भाजपा मात्र 88 सीटों से ही संतुष्ट नहीं है. उधर जनता दल के नवनिर्वाचित सांसद बबनराव ढाकणे जैसे लोगों के साथ व्यापक विपक्षी एकता की बात भी चल रही है. जनता दल के नेता सदानंद वर्दे ने कहा, "सीटों का तालमेल न हो पाने के कारण ही हम कोई आठ स्थानों पर हार गए. अब हमें तालमेल के मामले पर नए सिरे से गौर करना होगा. अगर वे लोग उग्र हिंदूवादी रुख पर अड़े रहे तब तो मिलकर चुनाव लड़ने का सवाल ही नहीं पैदा होता."

बहरहाल, उम्मीद की जा सकती है कि दिल्ली की गद्दी पर जनता दल के आ जाने और अयोध्या के 'प्रभामंडल' से दूर होने के कारण यह दक्षिणपंथी गठजोड़ विधानसभा चुनाव के लिए अपना हिंदूवादी तेवर कुछ नरम करेगा. ऐसा नहीं हुआ तो अधिकांश स्थानों पर तिकोना मुकाबला होगा जिसमें अब अधिक साधनों के साथ उतरने वाला जनता दल भी कमजोर नहीं रहेगा. हाल के चुनावी दंगल में इस गठजोड़ ने भले ही दूसरों को मात दे दी लेकिन सिर्फ अपने ही बल पर राज्य की गद्दी हथियाना इसके लिए शायद संभव नहीं होगा. —एम. रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिलनाडु

आखिर सिक्का जम गया

अन्ना द्रमुक में जयललिता के नेतृत्व को चुनौती नहीं

पार्टी की नेता मैं हूं. केवल मेरे बयानों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए, न कि पार्टी के ऐरे-गैरे सदस्य के गैर-जिम्मेदाराना बयान को.

—चुनाव के बाद मद्रास में संवाददाता सम्मेलन में जयललिता का वक्तव्य

श्याम टेकवानी

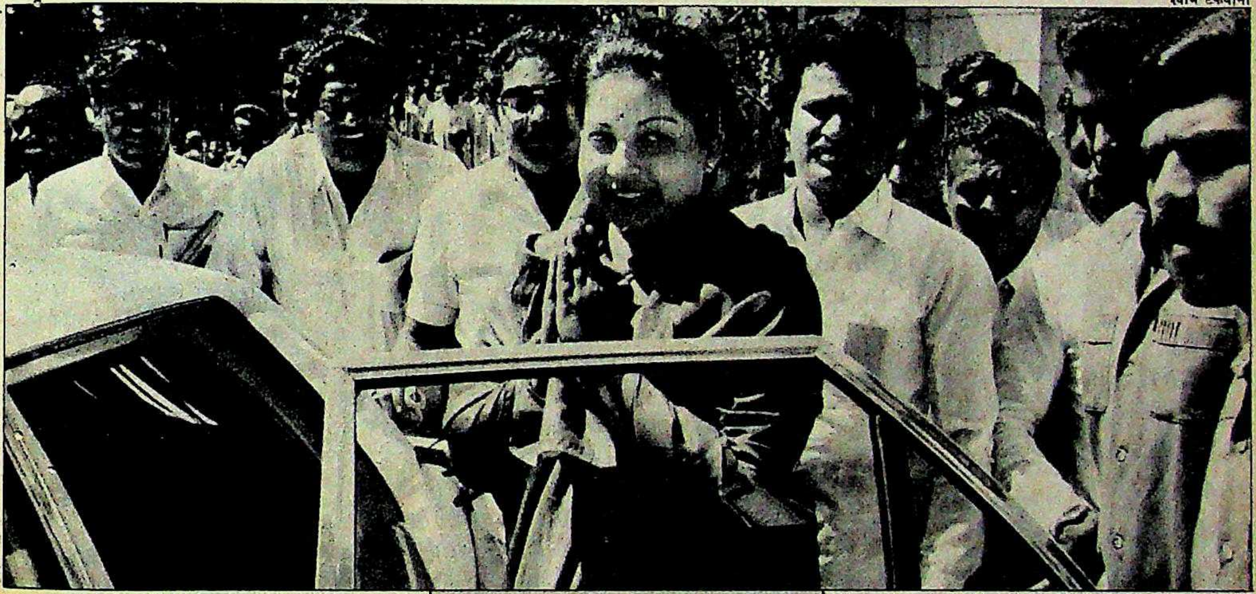

अन्ना द्रमुक में किसका सिक्का चलता है इसे लेकर पहले चाहे जितनी शंकाएं रही हों लेकिन अब यह बात दिन के उजाले की तरह साफ हो गई है कि बागडोर पूरी तरह जयललिता के हाथों में है. इस बात को सभी मान रहे हैं. न मानने वालों को जयललिता खुलकर चुनौती दे रही हैं.

वैसे बड़े अचरज की बात है कि पार्टी के कई नेता प्रसन्न नहीं दिख रहे. उनके चेहरों पर यह सवाल उभर रहा है कि पार्टी में उनका राजनैतिक भविष्य क्या होगा. इस का जवाब केवल जयललिता ही दे सकती हैं. अपनी जगह एस.आर. राधा को विधानसभा में विपक्ष का नेता बनाकर जयललिता ने पार्टी के भीतर के इस सच को जाहिर भी कर दिया. पूर्व मंत्री राधा की कोई खास राजनैतिक बिसात नहीं है. विपक्ष के नेता के रूप में मिले सम्मान से वे भी चकित रह गए. इसके विपरीत अन्ना द्रमुक विधानमंडल दल के उपनेता तिरुनावक्करासु के हृदय पर सांप लोट गया. वैसे तो विधानसभा में जयललिता की जगह उन्हें मिलनी चाहिए थी. लेकिन वे तो पहले ही एक अक्षम्य अपराध कर चुके थे. उन्होंने जयललिता द्वारा वरिष्ठ पार्टी नेताओं पर चुनाव सभाओं को संबोधित करने पर लगाई रोक की परवाह नहीं की थी.

इस रोक का एक उद्देश्य यह भी था कि पार्टी नेताओं को इस बात की सनद हो जाए कि जहां तक मतदाताओं का सवाल है, केवल जयललिता ही महत्व रखती हैं, दूसरा कोई नहीं. द्रमुक का सूपड़ा साफ करने वाले चुनावी नतीजों से जयललिता का यह रुख सही भी साबित हुआ. इसलिए अब वे पार्टी में उठने वाले हर विरोधी स्वर को खामोश करने पर आमादा दिखती हैं.

वरिष्ठ पार्टी नेताओं को शिकायत है कि फैसले लेते समय जयललिता उनसे राय नहीं मांगतीं

ऐसी ही कार्रवाई के शिकार हुए हैं विधानसभा में पार्टी के सचेतक के.के. एस.एस.आर. रामचंद्रन. अन्ना द्रमुक जिन दिनों दो खेमों में बंटी थी, तब रामचंद्रन पर एसिड बल्ब से हमला हुआ था. कहते हैं यह हमला जानकी गुट के पूर्व अन्ना द्रमुक विधायक तमारइकणि के इशारे पर किया गया था. अब जबकि दोनों खेमे आपस में मिल गए हैं, जयललिता चाह रही हैं कि रामचंद्रन तमारइकणि के विरुद्ध अपना मुकदमा वापस ले लें. रामचंद्रन ने ऐसा करने से इनकार कर दिया है.

कई वरिष्ठ पार्टी नेताओं की भी शिकायत है कि राजनैतिक निर्णय लेते समय जयललिता न तो उनसे संपर्क करती हैं और न उनकी राय मांगती हैं. और तो और, उनसे भेंट होनी भी मुश्किल है. फिर भी पार्टी में खुलकर बगावत होती नहीं दिख रही है. हाल के चुनावों ने एक बात तो साबित कर ही दी है कि अन्ना द्रमुक पार्टी में वोट खींचने की ताकत अगर किसी में है तो वह जयललिता ही हैं.

दूसरे खेमे में मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि लोकसभा चुनाव में पराजय के झटके से उबरने की कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने अपने मंत्रिमंडल और प्रशासन में फेरबदल किया है. जयललिता के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए ये कदम पर्याप्त होंगे या नहीं, यह तो समय ही बताएगा. मगर जयललिता के सामने दूसरी समस्या है.

केंद्र में नई बनी राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार को देखते हुए लगता नहीं कि द्रमुक सरकार भंग की जाएगी. इसलिए जयललिता को सत्ता से अलग रहने के दिनों में अपनी ताकत का निरंतर प्रदर्शन करते रहने के साथ-साथ पार्टी की एकता को भी बचाए रखना होगा. इस हिसाब से उनकी हाल की कार्रवाइयां बिलकुल सही नहीं लगतीं.

—कविता शेट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र
नया राजमहल

● रिलायंस उद्योग के भाग्य के सामने बड़ा सवालिया निशान लगा होने के बावजूद कोलाबा में धीरूभाई अंबानी की 12 मंजिला इमारत का काम जोरों पर है. दिल्ली का राज बदलने का यहां कोई असर नहीं दिखता.

एक साल से ज्यादा अरसा गुजर गया जब टाटा ने 'सी विंड' नामक इस इमारत को अंबानी के हाथों बेचा था (बताया जाता है कि अंबानी ने इसे 9 करोड़ रु. में खरीदा था). और तब से इसकी मरम्मत का काम निरंतर चल रहा है. बेहतरीन ग्रेनाइट, संगमरमर और सागवान की लकड़ी रोज ट्रकों में भरकर लाई जा रही है और वास्तुशिल्पी इसे भारत के एक

बंगला बन रहा न्यारा

अमीरतरीन घराने के लिए राजमहल की शक्ल देने में जुटे हुए हैं.

हालांकि अंबानी परिवार का कहना है कि उन्होंने अपने कंपनी अफसरों के रहने के लिए यह इमारत खरीदी है लेकिन इमारत के शाही रूप-रंग को देखकर उनकी बात पर विश्वास नहीं होता. बंबई की अटकलों के अनुसार 'सी विंड' में समूचे अंबानी वंश का बसेरा होगा. धीरूभाई अंबानी और उनके बेटों मुकेश तथा अनिल के पास दो-दो मंजिलें, दोनों बेटियां जब बंबई में होंगी तो एक-एक मंजिल उनके पास और एक मंजिल अतिथियों के लिए होगी. बाकी तीन मंजिलें विभिन्न शोध और विकास सुविधाओं के लिए होंगी.

गुजरात
अपमान के जख्म पर मरहम

● देश भर में न्याय सेवा अधिकारियों के लिए पिछला पखवाड़ा सुखद रहा. खुशी का कारण था भी. नाडियाड के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एन.एल. पटेल पर हुए पुलिस हमले की जांच रिपोर्ट ने उनके दृष्टिकोण की पुष्टि की है.

इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश आर.एम. सहाय ने 140 पृष्ठों की अपनी रिपोर्ट में नाडियाड पुलिस के साथ-साथ राज्य सरकार को भी "न्यायपालिका की स्वतंत्रता बरकरार रखने में असफलता और इसके लिए जिम्मेदार पुलिस अफसरों को अनुचित तरीके से पनाह देने" का दोषी ठहराया है. यह जांच तथ्य जानने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने मुकर्रर की थी.

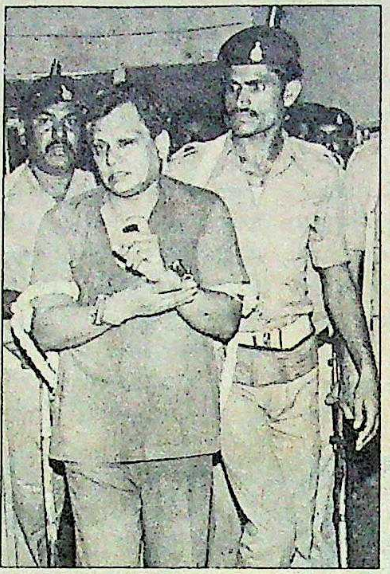

पटेलः जुल्म का शिकार

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जब एक मजिस्ट्रेट ही खुद को असुरक्षित महसूस कर सकता है, तो फिर आम आदमी की नियति क्या होगी. सहाय ने सिफारिश की है कि पटेल के खिलाफ चल रहे मुकदमों को वापस लिया जाए, उन्हें नाडियाड में फिर से ड्यूटी पर जाने की इजाजत देने के लिए हाईकोर्ट को निर्देश दिया जाए और सरकार से अपमान और जुल्म के एवज में पटेल को उचित मुआवजा देने को कहा जाए.

सहाय ने जिला पुलिस अधीक्षक, सरकारी अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक और घटना में शामिल दो दूसरे अधिकारियों को प्रशासनिक जिम्मेदारियों से मुक्त करने का आग्रह करते हुए संबद्ध विभागों से उनके खिलाफ उचित कार्रवाई करने के लिए भी कहा है.

अंत में, राज्य सरकार और प्रशासन की निष्क्रियता पर कड़ी टिप्पणी करते हुए सहाय ने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट पुलिस महानिदेशक केकी दादाभाय के विरुद्ध भी उचित कार्रवाई करने पर विचार कर सकता है.

रिपोर्ट में कहा गया है, "जुर्म छूत का रोग है. लेकिन जब सरकार ही कानून तोड़ने लगे तो वह कानून की अवज्ञा को प्रोत्साहित करती है." न्यायिक अधिकारियों के लिए यह निश्चय ही जीत का पैगाम है.

तमिलनाडु
शुद्धता पर जोर

● तमिलनाडु के तिरुचिरापल्लि शहर की दुकानों में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था. अचानक एक सरकारी फरमान पहुंचा जिसमें तमिल भाषा को लेकर ऐसे निर्देश दिए गए हैं जिनका जवाब नहीं. श्रम विभाग ने निर्देश दिया कि दुकानों के सभी गैर-तमिल नामों को तत्काल बदलकर विशुद्ध तमिल यानी 'थूया' में लिखा जाए. उद्देश्य है: शुद्ध तमिल का आम लोगों में प्रचार-प्रसार.

इस आदेश को लेकर लोगों में गंभीर असंतोष फैल गया. शुद्ध तमिल बोलचाल वाली तमिल से काफी भिन्न है और बहुत कम लोगों के पल्ले पड़ती है. यह आदेश 'दुकान' शब्द को 'कडइस' या 'अंगाडिस' में बदल देगा.

कुछ धर्मनिरपेक्ष नागरिकों और राजनैतिक पार्टियों ने इस पर आपत्ति उठाई है. उधर, कई दुकानदार भी इसके सख्त खिलाफ हैं. उनका कहना है कि वे अपनी ही दुकानों के नाम याद नहीं रख सकते. पर लगता है कि सत्ता बदलाव के बाद उठे भाषा विवाद पर यह करुणानिधि का जवाब है.

पश्चिम बंगाल
लाल बनाम केसरिया

● केसरिया लहर अब पश्चिम बंगाल के कम्युनिस्टों को लपेट में लेती दिखती है. हाल के चुनावों में उत्तर भारत में हासिल शानदार जीत से उत्साहित भाजपा ने पिछले पखवाड़े मुख्यमंत्री ज्योति बसु के इस्तीफे की मांग करते हुए राज्य भर में आंदोलन की धमकी दे डाली. वामपंथी सरकार के विरुद्ध आरोप पत्र तैयार करने के लिए एक समिति का गठन करने वाली इस पार्टी ने बक्रेश्वर परियोजना को रद्द करने की भी मांग की है.

यह दावा करते हुए कि लोग 'मार्क्सवादी कुशासन' से निराश हैं, भाजपा ने 1992 के विधानसभा चुनावों में माकपा के सफाए की भविष्यवाणी कर दी. भाजपा की

बसुः केसरिया खतरा

राज्य शाखा के अध्यक्ष सुकुमार बनर्जी ने कहा, "केरल और त्रिपुरा की हार के बाद माकपा एक क्षेत्रीय पार्टी होकर रह गई है."

हालांकि भाजपा राज्य की एक भी लोकसभा सीट नहीं जीत पाई पर पिछले चुनाव के 0.4 फीसदी के मुकाबले इस बार इसने 1.3 फीसदी अधिक वोट हासिल किए हैं. माकपा के लिए यह इस बात का संकेत है कि सांप्रदायिकता उसके घर में ही घुसपैठ कर रही है.

वाममोर्चा सरकार यह सोचकर भले ही खुश हो ले कि मतदाताओं ने परिवर्तन के बजाए निरंतरता के पक्ष में वोट दिया है पर वह केसरिया लहर की इस चुनौती की अनदेखी नहीं कर सकती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहलहाता लीवर

भारत में कारोबार करने वाली सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी हिंदुस्तान लीवर को निर्यात के मामले में पिछड़ा हुआ मानने की गलती नहीं की जा सकती. दूसरी बड़ी कंपनियां अभी निर्यात के लिए अलग इकाइयां लगा ही रही हैं जबकि साबुन और डिटर्जेंट के इस बड़े निर्माता की फिलहाल नौ इकाइयां सिर्फ विदेशी बाजार के लिए ही चल रही हैं. इस साल इसका निर्यात 104 करोड़ रु. से भी अधिक होने की उम्मीद है. हिंदुस्तान लीवर ने इस मकसद से कई छोटी और बीमार इकाइयों को भी खरीद लिया है या पट्टे पर ले लिया है. हाल ही में सरकार ने हिंदुस्तान लीवर को दिल्ली स्थित स्वदेशी इंटरप्राइजेज की खाद्य पदार्थों के मानकीकरण और पैकिंग इकाई को खरीदने या पांच साल के लिए पट्टे पर लेने की मंजूरी दे दी है. स्वदेशी इंटरप्राइजेज बासमती चावल का निर्यात करती है.

ज्यादा हिस्सा चाहिए

क्राम्पटन ग्रीव्स लिमिटेड भारतीय रेलवे की पटरियों और दूरसंचार के नवीकरण की योजना का अच्छा-खासा हिस्सा झटकने की कोशिश में है. 320 करोड़ रु. के कारोबार वाली यह इंजीनियरिंग कंपनी रेलवे के लिए ट्रांसफॉर्मर और स्विचगीयर बनाती है. अब इसकी योजना सिग्नल व्यवस्था के ठोस उपकरण, गार्डों और स्टेशन कर्मचारियों के लिए दोहरा संचार उपकरण तथा शंटिंग के लिए छोटे इंजन के निर्माण पर अगले साल 50 से 60 करोड़ रु. निवेश करने की है. यह छोटे इंजनों की मरम्मत और पटरियों के नवीकरण का ठेका भी हथियाने की सोच रही है. इन योजनाओं में तकनीक परिवर्तन के लिए क्राम्पटन विदेशी कंपनियों से सहयोग के लिए बातचीत कर रही है. लेकिन कंपनी के सूत्रों के मुताबिक उसे पटरियों के नवीकरण के मामले में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड और सिग्नल व्यवस्था के मामले में सीमेंस इंडिया से कड़ी होड़ की उम्मीद है.

कंप्यूटर से पर्यटन

मद्रास स्थित स्टर्लिंग कंप्यूटर्स लिमिटेड कई क्षेत्रों में पांव पसारने में मशगूल है. इस कंपनी का कारोबार 85 करोड़ रु. का है. सी. शिवशंकर की अगुआई में पर्सनल कंप्यूटर के बाजार में धाक जमाने वाली स्टर्लिंग कंपनी की नजर अब पर्यटन और अचल संपत्ति जैसे क्षेत्रों को टटोलने पर है. अमेरिकी पर्यटकों के लिए प्रति व्यक्ति 1000 डॉलर (17000 रु.) से कम की किफायती एकमुश्त पर्यटन योजना के लिए इस कंपनी ने सार्वजनिक क्षेत्र की आईटीडीसी तथा दूसरी होटल शृंखलाओं से सौदा कर लिया है. इस एकमुश्त योजना में विमान किराया, होटल तथा पर्यटन के खर्च के साथ कुछ कर मुक्त सामान देना भी शामिल है.

अब आए साझा कोष

अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक बैंक भारत के लिए नई-नई लुभावनी योजनाएं ला रहे हैं. अब बारी है साझा कोषों की. इस क्षेत्र में ताजा आमद सिटी बैंक इंडिया है. यह अगले साल के शुरू में आप्रवासी भारतीयों के लिए सात साल का 2.5 करोड़ डॉलर (42 करोड़ रु.) का साझा कोष शुरू करने जा रहा है. यह योजना चैनल आइलैंड ऑफ जर्सी से शुरू होगी. बैंक के सूत्रों का कहना है कि इस कोष की पूरी रकम का निवेश साल भर में ही कर दिया जाएगा और इसका बड़ा हिस्सा नई कंपनियों के शेयरों में निवेश किया जाएगा. ऐसे पांच साझा कोष पहले ही चल रहे हैं. जाहिर है कि भारतीय पूंजी बाजार अंतरराष्ट्रीय बैंकरों के लिए लहलहाता चरागाह बन गया है.

भ्रामक वृद्धि

यह धारणा बन गई थी कि आयातित मशीनों से पिछले तीन साल में औद्योगिक विकास की गति तेजी से बढ़ी है. लेकिन सरकारी आंकड़े गवाह हैं कि सचमुच ऐसा कुछ नहीं हुआ. उद्योग मंत्रालय के ताजा अध्ययन के मुताबिक मूल उत्पादों का आयात नहीं बढ़ा है. रुपए के मूल्य में तेजी से गिरावट की वजह से पिछले

चार्ट: बी.के. शर्मा

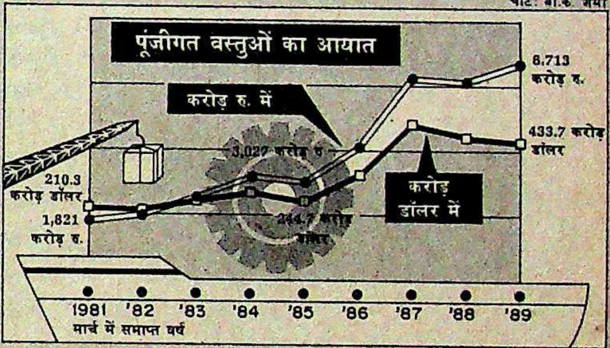

तीन साल में आयात बढ़ता नजर आता है (देखें चार्ट). लेकिन इन आंकड़ों को अमेरिकी डॉलर में बदलकर देखें तो मूल उत्पादों का आयात निरंतर गिरावट की ओर रहा है. वह 1986-87 में 4.8 अरब डॉलर (6,279 करोड़ रु.) के मुकाबले 1987-88 में 4.4 अरब डॉलर (6,136 करोड़ रु.) और उसके अगले साल 4.3 अरब डॉलर (6,113 करोड़ रु.) रहा.

गुप्त रिश्ते

भारत के साथ इस्राएल के औपचारिक आर्थिक रिश्तों की उम्मीद नहीं की जा सकती. लेकिन यह सभी जानते हैं कि देश में हीरा पालिश करने का भारी-भरकम कारोबार अनगढ़ हीरे हासिल करने और तैयारशुदा नगों की बिक्री के लिए इस्राएली कंपनियों और यूरोप में उनके सहयोगियों के ऊपर ही काफी हद तक निर्भर है. दो देशों के बीच इस गैरकानूनी धंधे की खबर हाल ही में इस्राएल-एशिया चैंबर ऑफ कॉमर्स की पत्रिका में छपी है. इस खबर के मुताबिक भारत में इस्राएल के आयात ने 1987 और '88 के बीच 12.3 करोड़ डॉलर (197 करोड़ रु.) पर पहुंचकर लगभग 82 फीसदी की छलांग मार ली जबकि इसी अवधि में भारत से निर्यात 4 करोड़ डॉलर (60 करोड़ रु.) से 8.6 करोड़ डॉलर (138 करोड़ रु.) पर पहुंच गया. लेकिन मजेदार बात यह है कि चैंबर को भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, संचार, दवा और कृषि के क्षेत्रों में कई इस्राएली उपकरणों के लिए 'लुभावना बाजार' उपलब्ध होने की उम्मीद है. इसे कहते हैं लंबी अवधि की योजना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक नीति

सर्वहारा के कल्याण की ओर

नई सरकार को विरासत में मिली हैं विकराल समस्याएं

क्या सरकार दिवालिया हो गई है? राष्ट्र के नाम अपने पहले प्रसारण में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि राजीव सरकार से विरासत में उन्हें खाली खजाना मिला है. लेकिन इस कथन में निश्चय ही अतिशयोक्ति का पुट था. वित्तमंत्री मधु दंडवते भी मानते हैं कि ऐसी स्थिति नहीं है, कई गंभीर समस्याएं जरूर हैं.

ऐसा नहीं है कि पिछली सरकार की सारी आर्थिक नीतियां ही खराब रहीं और उनके बुरे नतीजे ही निकले. इस दौरान बरती गई उदारता से कई उद्योगों में प्रतियोगिता का नया दौर शुरू हुआ. इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार और पेट्रोरसायन जैसे उद्योगों का आधुनिकीकरण हुआ है. लाइसेंस देने के मामले में लालफीताशाही की जकड़ कम हुई, पूंजी बाजार पहले से कई गुना बढ़ गया, उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री तेजी से बढ़ी और देश में विदेशी पूंजी ज्यादा आसानी से आई.

लेकिन दूसरी तरफ बेरोजगारी, महंगाई, औद्योगिक रुग्णता और असमानता जैसी समस्याओं का जोर बढ़ा. लगातार दो वर्षों तक मानसून अच्छा होने के कारण कृषि पैदावार की स्थिति बढ़िया है. लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश की दर कम हो जाने से अगर एक साल भी अच्छी बरसात नहीं हुई तो स्थिति एकदम बदल जाएगी.

नई सरकार की पहली प्राथमिकता महंगाई को काबू करना बताई गई है. दिसंबर के पहले हफ्ते तक थोक मूल्य सूचकांक का ऊपर चढ़ना जारी था. बजट घाटे को कम करना दूसरी प्राथमिकता होगी.

देश के पास अभी इतनी ही विदेशी मुद्रा है जिससे छह हफ्ते के आयात का भुगतान किया जा सके. इस लिहाज से यह वर्ष अच्छा है. आंतरिक और विदेशी कर्ज की मात्रा भी नई बुलंदियां छू रही हैं. निर्यात में वृद्धि होने के बावजूद व्यापार घाटा बढ़ता जा रहा है. बचत दर जस की तस है और सारे संरचनात्मक उद्योगों का कामकाज बढ़िया होने के बावजूद सार्वजनिक क्षेत्र के काम में कोई सुधार नहीं दिख रहा. मशीनों का आयात घट गया है. एक सरकारी अर्थशास्त्री कहते हैं, "पूंजीगत माल के आयात में कमी होने से औद्योगिक विकास पर बुरा असर होगा जिससे रोजगार के क्षेत्र भी प्रभावित होंगे."

नई सरकार के पास विदेशी मुद्रा के भंडार को बढ़ाने का कोई सुगम उपाय नहीं है. फिलहाल सरकार खेती से पैदा होने वाली चीजों के निर्यात पर जोर देकर विदेशी मुद्रा की कमाई कर सकती है. लेकिन इसमें यह जोखिम भी है कि घरेलू बाजार में ये चीजें महंगी हो जाएं.

स्पष्ट है कि नई सरकार बड़े औद्योगिक घरानों पर निर्यात बढ़ाने के लिए जोर डालेगी. उद्योगमंत्री अजीत सिंह कहते हैं, "बड़े व्यापारिक घरानों ने इतने फायदे पाए हैं लेकिन छोटी इकाइयों की तरह उन्होंने अपना निर्यात नहीं बढ़ाया है. अगर अब

सरकार की आर्थिक कार्यसूची

समस्या

▲ आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतें

समाधान के रास्ते

◀ दुर्लभ विदेशी मुद्रा खर्च करके चीनी, खाद्य तेलों और अनाज जैसी जिंसों का आयात किया जाए जिनकी कीमतें विश्व बाजार में कम हैं. चाय, किरासन तेल और आम इस्तेमाल की चीजों के वितरण पर नजर रखना.

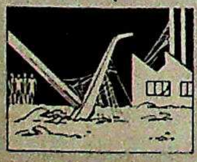

▲ बढ़ती बेरोजगारी

◀ ग्रामीण विकास में अधिक निवेश. हथकरघा पर जोर. बड़े, लघु और घरेलू उद्योगों में बनने वाले सामान का स्पष्ट विभाजन. कपड़ा जैसे उद्योग में इसका सख्ती से पालन. अधिक श्रम वाली तकनीक को बढ़ावा.

▲ विदेशी मुद्रा की कमी

◀ इलेक्ट्रॉनिक और आटोमोबाइल के पुर्जों समेत 'विलासिता' की चीजों के आयात में कमी. खेती की पैदावार का निर्यात बढ़ाना. दुर्लभ विदेशी मुद्रा बाहर ले जाने वाली परियोजनाओं की समीक्षा.

समस्या

▲ आंतरिक कर्ज का बोझ

समाधान के रास्ते

◀ तड़क-भड़क, प्रतिरक्षा और आंतरिक सुरक्षा के खर्चों में कमी करके बजट घाटे को कम करना.

▲ बढ़ता काला धन

◀ सरकार और वित्तीय संस्थानों को किसी कंपनी या व्यक्ति के फायदे में, इस्तेमाल होने पर रोक लगाने की कोशिश. बदले की भावना न रखते हुए भी आर्थिक अपराधियों के खिलाफ सख्ती.

▲ सार्वजनिक क्षेत्र के कामकाज में सुधार

◀ अधिक स्वायत्तता देना पर जवाबदेही भी तय करना. प्रबंध के ऊंचे पदों पर पेशेवरों को लाना और नौकरशाही पर निर्भरता कम करना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…होंने निर्यात का अपना वादा पूरा नहीं …या तो हम उन्हें नए लाइसेंस या विस्तार …ी इजाजत नहीं देंगे."

जहां तक आयात पर अंकुश लगाने की …त है, सरकार के हाथ बहुत हद तक बंधे …ए हैं. 80 फीसदी आयात तो पेट्रोलियम …त्पादों और आयातित मशीनों के लिए …रखाव के पुर्जों का होता है. इनमें कमी …रने से देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा असर …ड़ेगा. हां, सरकार तथाकथित विलासिता की …ीजों के आयात पर भारी शुल्क लगाकर इसे …म करने की कोशिश जरूर करेगी. कांग्रेस …समर्थक भी अब मानते हैं कि बेकार का …आयात भी होता रहा है. पूर्व वित्तमंत्री …करराव चव्हाण कहते हैं, "व्यापार नियमों को उदार करने के फैसले का दुरुपयोग हुआ है और उपभोक्ता वस्तुओं के आयात पर बेशकीमती विदेशी मुद्रा बर्बाद की गई है."

आयात के बारे में नई सरकार के नजरिए से लगता है कि अधिक मात्रा में विदेशी पुर्जों को जोड़कर तैयार की जाने वाली उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत बढ़ेगी. प्रस्तावित मारुति-1000 कार और कंप्यूटर भी इसी श्रेणी में आते हैं. विदेशी मुद्रा की तंगी के कारण हो सकता है विदेशी निवेश संबंधी नजरिए में भी बदलाव आए. दंडवते कहते हैं, "जहां तक संभव होगा हम विदेशी गठबंधनों को बढ़ावा नहीं देंगे. जहां एकदम जरूरी होगा, वहीं मैं इसकी इजाजत दूंगा."

दिल्ली में तैनात एक पश्चिमी राजनयिक का कहना है, "पेप्सी का मामला देखने लायक होगा." खाद्य संसाधन और कपड़ामंत्री शरद यादव कहते हैं, "हम पेप्सी के मामले में फिर से विचार करेंगे." लेकिन वे साथ ही यह भी जोड़ते हैं कि खाद्य संसाधन विभाग अब से सिर्फ आलू के चिप्स और नवधनाढ्यों के खाने की चीजों भर की फिक्र ही नहीं करेगा. इसकी जगह गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार देने की भारी भरकम योजना बनाई जा रही है. जाहिर है अब जोर लोकप्रियता दिलाने वाले कार्यक्रमों पर होगा.

रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए औद्योगिक नीति में भी बदलाव होगा. कुछ चीजों का उत्पादन सिर्फ लघु और ग्राम उद्योग में ही करने का प्रावधान होगा. दंडवते कहते हैं,

अजीत सिंह

'उदार नीति जारी रहेगी'

देखने में तो वे अपनी 50 वर्ष की उम्र से 10 साल छोटे लगते हैं. 17 साल तक अमेरिका में कंप्यूटर के कारोबार से जुड़े रहने के बाद भी उनका लहजा ठेठ देसी लगता है. कंप्यूटरवाला से किसान नेता बन चुके अजीत सिंह अब देश के उद्योगमंत्री हैं.

*अपने पिता चौधरी चरण सिंह की बीमारी के समय ही स्वदेश लौट आए अजीत सिंह, ने मई 1987 में उनकी मौत के बाद लोकदल की कमान संभाली. फिर पार्टी दो हिस्सों में बंटी और उनके नेतृत्व वाला धड़ा मई 1988 में जनता पार्टी में मिला और अजीत सिंह चंद्रशेखर की जगह इसके अध्यक्ष हो गए. पिछले साल अक्तूबर में जब जनता दल बना तो वे उसके प्रधान महासचिव हो गए. भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में उन्होंने अपनी राय **परंजय गुहा ठाकुरता** और **सुरजीत दासगुप्त** को बताई. कुछ अंश:*

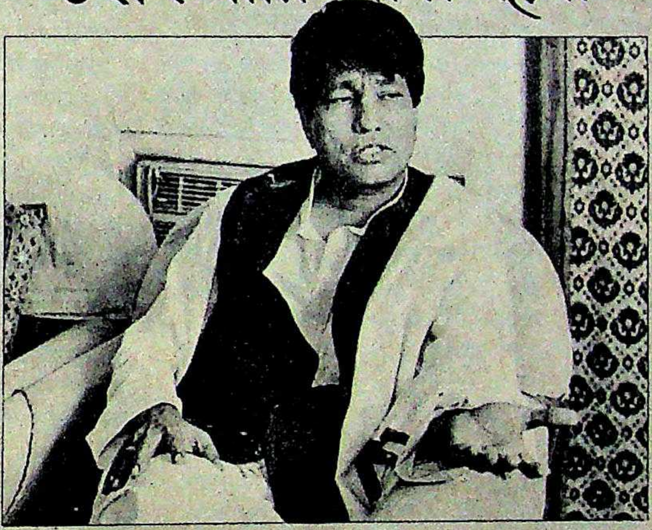
शरद सक्सेना

● ***आपकी प्राथमिकताएं क्या होंगी?***

औद्योगिक विकास दर ऊपर उठनी चाहिए. हम औद्योगिक नीतियों में उदारता जारी रखेंगे पर हमारा जोर छोटे और घरेलू उद्योगों पर होगा.

● ***आप एकाधिकार विरोधी कानून और विदेशी मुद्रा विनियमन कानून को किस तरह मजबूत करेंगे.***

हम उदार नीति के पक्ष में हैं. दरअसल वित्तमंत्री के रूप में वी.पी. सिंह ने ही इस नीति की शुरुआत की थी. इसका मतलब आर्थिक शक्ति का केंद्रीकरण नहीं है. लेकिन पिछली सरकार की नीतियों के तहत यही हुआ है. इसीलिए एकाधिकार विरोधी कानून की जरूरत है. बड़े औद्योगिक घरानों ने अनेक लाभ लिए हैं लेकिन उन्होंने निर्यात बढ़ाने संबंधी अपनी जिम्मेवारी नहीं निभाई है. हम इसे नहीं चलने देंगे: वे अपने वादे पूरे नहीं करते तो उन्हें नए लाइसेंस नहीं देंगे. जहां तक विदेशी मुद्रा विनियमन कानून का सवाल है, हम विदेशी निवेश को प्रोत्साहन तो देंगे लेकिन चुने हुए उद्योगों में ही.

● ***भारतीय कंप्यूटर उद्योग के बारे में आपकी क्या राय है?***

जहां तक कंप्यूटरीकरण की बात है, भारत की ताकत उसके लोग हैं. हमारे लोग कंप्यूटर प्रोग्राम और सॉफ्टवेयर विकसित करने के मामले में बहुत कुशल हैं. मैं विमान सेवा और रेलवे के आरक्षण के लिए कंप्यूटर लगाने के पक्ष में हूं. लेकिन यहां बेरोजगारी बहुत बड़ी समस्या है इसलिए कंप्यूटरीकरण बहुत ही सोच समझकर करना होगा.

● ***आप सार्वजनिक क्षेत्र की समस्याओं से किस प्रकार निबटेंगे?***

मुझे लगता है बुनियादी समस्या प्रबंध की है. साथ ही इसे निजी क्षेत्र के मुकाबले भी आना होगा.

● ***लघु उद्योगों के लिए कुछ चीजों का उत्पादन आरक्षित करने की नीति आप कितनी कठोरता से लागू करेंगे?***

ऐसे आरक्षण की जरूरत है. अगर सरकार बड़े उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता से बचाती है तो वह छोटे उद्योगों को भी बड़ों से बचाएगी.

● ***मारुति उद्योग के बारे में और खास तौर से इसकी नई कार की योजना के बारे में आपकी क्या राय है?***

मुझे स्पष्ट मालूम नहीं है कि नई कार योजना से कितनी विदेशी मुद्रा देश से बाहर जाएगी. मारुति अपने पुर्जों के देसीकरण के बारे में जो दावे करती है, उसके बारे में भी मुझे पक्का पता नहीं है. निजी तौर पर मेरा मानना है कि सरकारी खजाने की बेशकीमती विदेशी मुद्रा प्राथमिकता के तौर पर ऐसे कामों के लिए नहीं खर्च होनी चाहिए. मारुति में जनता के जो 500 करोड़ रु. लगे हैं, उन्हें सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था सुधारने पर खर्च किया जा सकता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम नहीं चाहते कि छोटे उद्योगों के लिए तय क्षेत्र में बड़े उद्योग टांग घुसेड़ें." साबुन, दियासलाई और टूथपेस्ट जैसी चीजें बनाने में लगी बड़ी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए यह बुरी खबर है. वैसे दंडवते और अजीत सिंह जोर देकर कहते हैं कि उद्योग के प्रति नरमी की नीति बदली नहीं जाएगी, सिर्फ सरकार की आर्थिक प्राथमिकताएं बदलेंगी.

हम विदेशी गठबंधनों को प्रोत्साहित नहीं करेंगे. एकदम जरूरी होने पर ही इसकी इजाजत दी जाएगी

मधु दंडवते

इसी हिसाब से हथकरघा क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए कपड़ा नीति में भी बदलाव की उम्मीद की जा रही है. यह बात शरद यादव भी बताते हैं. मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित लक्ष्मीचंद्र जैन, जिनके योजना आयोग में आने की संभावना है, कहते हैं, "पिछले पांच वर्षों में करीब 18 लाख बुनकरों की रोजी-रोटी छिन गई है जबकि कृत्रिम रेशा उद्योग को 1,000 करोड़ रु. का लाभ हुआ है. इसमें तो बदलाव करना ही होगा."

योजना आयोग में भी बदलाव आएगा. आयोग के नए उपाध्यक्ष रामकृष्ण हेगड़े कहते हैं, "योजना आयोग पूर्व प्रधानमंत्री की बेवकूफी भरी योजनाओं पर मंजूरी की मोहर लगाने भर की हैसियत में पहुंचा दिया गया था."

फिलहाल यह तय है कि अगले वित्त वर्ष की योजना अब सामने आने वाली है और आठवीं योजना मार्च 1991 के पहले शुरू नहीं होगी. साथ ही यह भी तय है कि अब जोर सिर्फ विकास दर बढ़ाने की जगह समुचित वितरण, आत्मनिर्भरता और उपयुक्त तकनीक पर होगा. भारतीय सांख्यिकी संस्थान के प्रोफेसर बी.एस. मिन्हास कहते हैं, "अर्थव्यवस्था की विकास दर उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि कई योजनाकार इसे अक्सर बताते हैं. हमें बड़ी योजना को बेहतर योजना मानने का भ्रम तोड़ना होगा."

ग्रामीण विकास और रोजगार पैदा करने की योजनाओं पर अधिक खर्च करने के अलावा नई सरकार की योजना में बड़े

उद्योग जगत

खुशहाली से दूर

चार साल तक औद्योगिक विकास की ताबड़तोड़ कोशिशों के बाद अब एक बुरी खबर है. भारतीय उद्योग उम्मीद से कहीं कम गति से रेंग रहे हैं. इस चिंता का स्पष्ट कारण भी है. इस्पात, सीमेंट, उर्वरक, पूंजीगत वस्तुओं, चीनी और मिल में बने कपड़े जैसे प्रमुख उद्योगों में उत्पादन की रफ्तार कम हो गई है.

शुरू में तो सरकार ने इस मंद गति पर ध्यान ही नहीं दिया. बाद में सफाइयां गढ़ी गई. राजीव सरकार के एक प्रमुख आर्थिक सलाहकार मोंटेक सिंह अहलूवालिया कहते हैं, "इस साल औद्योगिक विकास दर 6 फीसदी रहेगी, पहले 8 फीसदी की उम्मीद थी. पर चुनाव वर्ष में तो ऐसा होता ही है."

इस सफाई में भले ही कितना भी दम हो पर उद्योग मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि कंपनियों के महानिर्गमों में घरेलू बचत के खप जाने की वजह से हर प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं की मांग कम हो गई है. तथ्य चौंकाने वाले हैं:

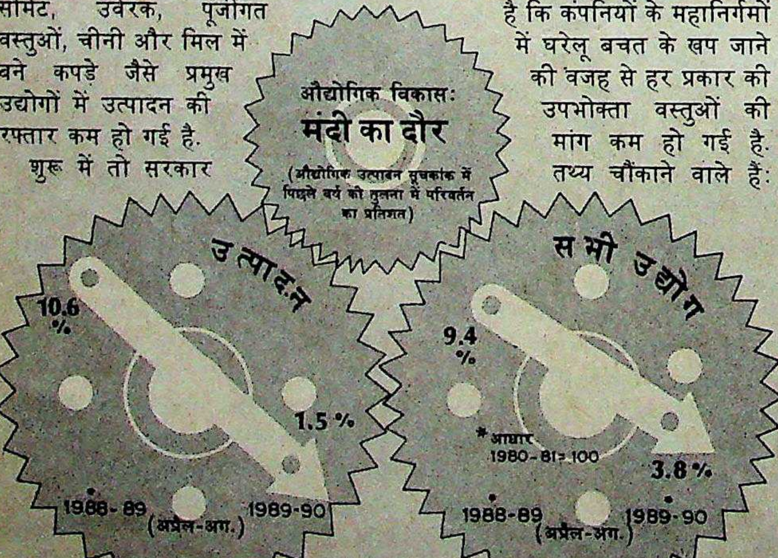

► अप्रैल से अगस्त तक सकल औद्योगिक विकास दर 3.8 फीसदी रही जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 9.4 फीसदी थी.

► सितंबर में फास्फेट उर्वरकों के उत्पादन में एक-तिहाई, चीनी में दो फीसदी और सीमेंट में 1.85 फीसदी की कमी आई.

► अप्रैल से जून तक बैंकों द्वारा दिया गया व्यावसायिक कर्ज पिछले साल इसी अवधि के कर्ज से 20.5 फीसदी कम था.

► अक्तूबर के अंत तक राजस्व वसूली बजट अनुमान से 2.5 फीसदी कम थी.

तो फिर समस्या क्या है? सीमेंट उत्पादक संघ के महासचिव एस.एम. चक्रवर्ती बताते हैं, "अप्रैल और सितंबर में सरकार से जितना सीमेंट उठाने की उम्मीद थी उससे उसने 20 लाख टन कम खरीदा." इस्पात, इंजीनियरिंग उद्योगों की भी यही कहानी है. योजना आयोग के पूर्व सदस्य जयदेव सेठी कहते हैं, "1985 से 1988 के दौरान हुआ ज्यादातर आर्थिक विकास भ्रामक है."

क्या उत्पादन की धीमी गति से मंदी आएगी? ज्यादातर अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ऐसा कहना अतिशयोक्ति है. सच यही है कि हालात खुशहाली से बहुत दूर के हैं.

—सुरजीत दासगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारियों के खिलाफ कड़ा रुख अख्तियार करना भी शामिल है. वामपंथी दल भी यही चाहते हैं. माकपा के युवा नेता प्रकाश करात कहते हैं, "पिछली सरकार ने सिर्फ उद्योग-पतियों की मदद की. अब हम बड़े उद्योग-पतियों के खिलाफ रोक चाहते हैं." दंडवते भी कहते हैं, "अब सरकार और वित्तीय संस्थान मुट्ठी भर औद्योगिक घरानों के फायदे का सामान नहीं बनने जा रहे हैं. हमें इन संस्थाओं से राजनैतिक संरक्षण प्राप्त लोगों को हटाकर इन्हें स्वच्छ करना है."

एक बार फिर 'गरीबी हटाओ' नारा फैशन में आ गया है. लेकिन नए शासक समूह के अधिकांश समाजवादी तेवर भी दिखावे भर के ही हैं. राजीव सरकार को भी आखिर लोकप्रियता दिलाने वाले आर्थिक कार्यक्रम अपनाने पड़े थे. गरीबों का हमदर्द बनने और अमीर समर्थक छवि हटाने के लिए जवाहर रोजगार योजना वगैरह की घोषणाएं की गई. आने वाले समय में सरकार की आर्थिक नीतियां, दिखावे भर के लिए ही सही, अधिक गरीब समर्थक रुख लेने जा रही है.

—परंजय गुहा ठाकुरता और सुरजीत दासगुप्त

प्रतिक्रियाएं

संदेह और आशा

पहला दृश्य: दिसंबर 1984. इंका लोकसभा की 401 सीटें जीतने का कीर्तिमान स्थापित करती है. राजीव गांधी उद्योग जगत में एक नई शुरुआत का वादा करते हैं. उद्योगपतियों की उम्मीदें और शेयरों की कीमतें सातवें आसमान पर हैं.

दूसरा दृश्य: दिसंबर 1989. अल्पमत सरकार सत्ता संभालती है. निजी क्षेत्र की आंख की किरकिरी और राजीव के पहले वित्तमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह नए प्रधानमंत्री बनते हैं. 1984 की भारी उम्मीदें ढह चुकी हैं. व्यापारी और औद्योगिक घराने चिंतित है और नई आर्थिक नीतियों के गूढ़ार्थों को समझने के लिए नजर गड़ाए हुए हैं.

सीधे चर्चाएं हो रही हैं कि क्या वी.पी. सिंह अपने पुराने नैतिकतावादी उत्साह को फिर से जगाकर छापे मारने शुरू करेंगे? राजीव की उदारीकरण की नीतियां कहीं बदल तो नहीं दी जाएंगी. उद्योग जगत में उत्साह का माहौल नहीं है पर निराशा के भी संकेत नहीं हैं. महिंद्रा ऐंड महिंद्रा के अध्यक्ष केशव महिंद्रा कहते हैं, "मतदाताओं ने फैसला सुना दिया है कि वे प्रशासन चाहते हैं, हुकूमत नहीं. मैं ऐसी खुली सरकार का स्वागत करता हूं, जो लोगों से कुछ न छिपाए."

पिछले पखवाड़े तक इंका के कट्टर समर्थक माने जाने वाले व्यापारी भी कलाबाजियां खाकर नई सरकार के स्वागत में बयान देने लग गए. पर कुछ समय के लिए उन्हें लगा कि अगर जॉर्ज फर्नांडीस उद्योगमंत्री बनाए गए तो जैसे उनका सब कुछ लुट जाएगा. एक विदेशी बैंक के मुख्य अधिकारी ने बताया, "हमने अपने मुख्यालय से कह दिया कि सभी संभावित गठबंधनों को रोक दें."

पर जब मंत्रालयों की घोषणा हुई तो उद्योगपतियों ने भारी राहत की सांस ली. आर्थिक मंत्रालयों के वितरण पर एक कंप्यूटर कंपनी के निदेशक की टिप्पणी थी, "मधु दंडवते ठीक हैं, अरुण नेहरू भी बढ़िया हैं क्योंकि वे उद्योग की जरूरतों को समझते हैं और अमेरिका से डिग्री पाकर लौटे अजीत सिंह भी हमारे विचार के हामी हैं. ये लोग ठीक काम करेंगे."

हैरत की बात नहीं कि सभी उद्योग-पति 'विश्वास का माहौल' और 'ज्यादा उदारता' चाहते हैं. क्राम्प्टन ग्रीव्ज के प्रबंध निदेशक के.के. नोहरिया के अनुसार, 'उदार नीतियां एक सीमा पर जाकर रुक गई थीं. हमें उम्मीद है कि नई सरकार तेजी से फैसले लेगी और समस्याओं को टालना बंद कर देगी."

मतदाता प्रशासन चाहते हैं, हुकूमत नहीं. मैं खुली नीति वाली सरकार का हामी हूं

केशव महिंद्रा
अध्यक्ष, महिंद्रा ऐंड महिंद्रा

पर जनता दल का घोषणापत्र उद्योगों में पूरी तरह आत्मविश्वास नहीं जगाता. इसमें कृषि पर दिए गए जोर से यह आभास होता है कि उद्योगों के कई निवेश, संसाधन कृषि क्षेत्र में चले जाएंगे. मुकुंद आयरन इंडस्ट्री के अलावा एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कामर्स ऐंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष और भाजपा के सक्रिय सदस्य वीरेन शाह विभिन्न दलों के चुनाव घोषणापत्रों के बारे में कहते हैं, "उन्हें ऐसे लोगों ने लिखा है जो न तो उद्योग में और न ही कृषि में कोई दखल रखते हैं."

पर घोषणापत्रों को गंभीरता से नहीं लिया जाता. उद्योगों को ज्यादा चिंता इस बात की रहती है कि कौन लोग मंत्रालयों की बागडोर संभाले हुए हैं. और इस समय जो लोग वहां हैं वे समझौतावादी हैं. ज्यादातर लोग मानते हैं कि नई सरकार कुछ अप्रिय फैसले करेगी ही.

1989-90 का निर्यात लक्ष्य 40,000 करोड़ रु. है. 1992 तक व्यापार आधिक्य की आशा है

रामू देवड़ा
अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट आर्गेनाइजेशंस

व्यापार और रखरखाव की चीजों का आयात रोकने की भी एक सीमा है. इसलिए, निर्यात लगातार बढ़ाना ही होगा. फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट आर्गेनाइजेशंस के रामू देवड़ा कहते हैं, "1980-90 का निर्यात लक्ष्य 40,000 करोड़ रु. का है और जिस तरह की प्रगति है उसके चलते हम 1992 तक ही व्यापारिक लाभ की स्थिति में होंगे."

यह बहुत लंबा रास्ता है. दो अलग मत के सहयोगी दलों और पार्टी के भीतरी असंतोष के चलते वी.पी. सिंह की सरकार तलवार की धार पर चल रही है. उद्योगपतियों की उम्मीदें पस्त हैं. पर उन्हें अपने अनुमान गलत साबित होने का इंतजार है.

—एस.एन. वासुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मफतलाल समूह

सही राह पर

विस्तार की कई योजनाएं

इसी वर्ष अक्तूबर में अरविंद मफतलाल को छियासठवें जन्मदिन पर अनेक बधाई-संदेश मिले. लेकिन 1,059 करोड़ रु. की अरविंद मफतलाल समूह की कंपनियों के ये मालिक और भी बातों को लेकर जश्न मना सकते हैं. एक दशक पहले अपने भाई योगेंद्र और राकेश से अलग हुए अरविंद ने अपने हिस्से की कंपनियों की कुल बिक्री चार गुना बढ़ा ली है और इनमें से अधिकांश विस्तार के दायरे में कदम रख चुकी हैं. लेकिन सबसे अच्छी खबर उन्हें नवंबर मध्य में मिली. यह थी मफतलाल ग्रुप की 482 करोड़ रु. की प्रमुख पेट्रोकेमिकल कंपनी नेशनल ऑर्गेनिक केमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड (एनओसीआईएल) के विस्तार और आधुनिकीकरण की योजना को सरकारी मंजूरी और इस आशय का अनुमतिपत्र.

नेप्था क्रैकर की क्षमता में बढ़ोतरी के साथ ही एनओसीआईएल का एथिलीन उत्पादन अभी के 75 हजार टन से चौगुना बढ़कर तीन लाख टन हो जाएगा. यही नहीं बंबई के पास ठाणे-बेलापुर क्षेत्र के पास कंपनी का 28 वर्ष पुराना संयंत्र भी बेहतर और आधुनिक बनाया जाएगा. इन योजनाओं पर लागत आएगी 1800 करोड़ रु.

इस सबके बाद भी एनओसीआईएल की विस्तार योजना, अरविंद मफतलाल ग्रुप की विचाराधीन महत्वाकांक्षी योजनाओं का एक हिस्सा भर है. रसायनों और प्लास्टिक के कई उत्पादों में काम आने वाले उच्च घनत्व के पॉलिएथिलीन का उत्पादन करने वाली 237 करोड़ रु. की पॉलिएलेफिंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (पीआईएल) भी अपने विस्तार और दूसरे क्षेत्रों में प्रवेश पर 50 करोड़ रु. खर्च करने का विचार कर रही है. कपड़ों और रसायनों का उत्पादन करने वाली 192 करोड़ रु. की मफतलाल फाइन स्पिनिंग ऐंड मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि. और 136 करोड़ रु. की मफतलाल इंडस्ट्रीज लि. कपड़ा उद्योग के साथ-साथ बाहर के क्षेत्रों में भी पांव पसारना चाह रही हैं.

यह समूह कृषि रसायन और बीजों के क्षेत्र में भी दमदारी से अपनी उपस्थिति जताने के प्रयास कर रहा है. इलेक्ट्रॉनिक इंटीग्रेटेड सर्किट को डिजाइन कर उनका उत्पादन करना भी इसकी योजना में शामिल है. साथ ही हिंदुस्तान लीवर के पूर्व अध्यक्ष टी. थॉमस के साथ मिलकर इंडस वेंचर फंड मैनेजमेंट सर्विसेज लि. के नाम से 10 करोड़ रु. का पूंजी कोष बनाने का भी विचार है. और इन सब बातों के अलावा मफतलाल समूह विशेष निर्यात कार्यक्रम चलाने की योजना बना रहा है.

अरविंद मफतलाल यकीन के साथ कहते हैं, "शताब्दी के अंत तक हमारे समूह की कंपनियों का दुनिया भर में नाम हो जाएगा." समूह के विस्तार में यह तेजी दरअसल एनओसीआईएल की विस्तार योजना के बाद आई है. वैसे इस प्रस्ताव ने पर्यावरण विशेषज्ञों में सनसनी फैला दी थी. एक उद्योग विश्लेषक बताते हैं, "अतिरिक्त पूंजी लगाने के गुण-दोषों को लेकर सातवें दशक के अंत और आठवें दशक के शुरू में एनओसीआईएल की अनिश्चय की स्थिति उसे बहुत भारी पड़ेगी."

लेकिन एनओसीआईएल को औरों के मुकाबले कुछ अतिरिक्त फायदे हासिल हैं. इनमें से एक है, बहुराष्ट्रीय पेट्रोकेमिकल संस्थान रॉयल डच शेल कॉर्पोरेशन के साथ इसका पुराना संबंध. इस बहुराष्ट्रीय कंपनी के पास एनओसीआईएल के 33 प्रतिशत शेयर हैं और वह इनमें इजाफा करना चाहती है. मफतलाल बताते हैं, "हमें शेल से दोतरफा फायदा होगा. तकनीक की दृष्टि से भी और आर्थिक रूप में भी."

हर हाल में इसका असर समूह की बाकी कंपनियों पर भी पड़ेगा. उदाहरण के लिए पीआईएल का विस्तार भी एनओसीआईएल के तुरंत बाद होना है. कंपनी 175 करोड़ रु. की लागत से अपनी एचडीपीई क्षमता को 50 हजार टन प्रति वर्ष से 150 हजार टन प्रति वर्ष करना चाह रही है.

इस सदी के अंत तक हमारे समूह की कंपनियों का दुनिया भर में नाम हो जाएगा"
अरविंद मफतलाल
अध्यक्ष, मफतलाल समूह

चार्ट: बी.के. शर्मा

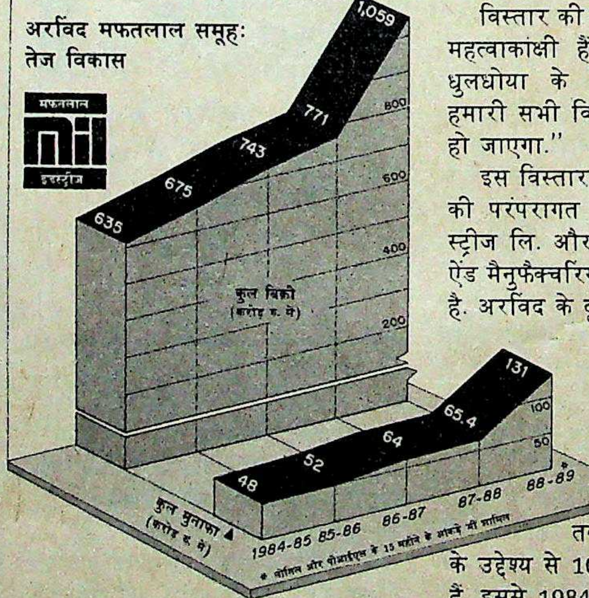

विस्तार की दूसरी योजनाएं भी ऐसी ही महत्वाकांक्षी हैं. प्रबंध निदेशक एन.एम. धुलधोया के अनुसार, "1994-95 तक हमारी सभी विस्तार योजनाओं पर अमल हो जाएगा."

इस विस्तार का यह अर्थ नहीं कि समूह की परंपरागत कंपनियों—मफतलाल इंडस्ट्रीज लि. और मफतलाल फाइन स्पिनिंग ऐंड मैनुफैक्चरिंग कं. लि. की उपेक्षा की गई है. अरविंद के दूसरे बेटे और उनके वारिस 34 वर्षीय हृषिकेश मफतलाल के नेतृत्व में ये कंपनियां कई दूसरे क्षेत्रों में कदम रखने के लिए तत्पर हैं. 1984 से अब तक दोनों कंपनियों ने निर्यात के उद्देश्य से 100 करोड़ रु. खर्च कर डाले हैं. इससे 1984 में 4 करोड़ रु. का निर्यात 1990 में 75 करोड़ हो जाएगा.

लेकिन मीन-मेख निकालने वालों का कहना है कि मफतलाल इंजीनियरिंग में रकम झोंकने के कारण मफतलाल फाइन मुश्किलों से गुजर रही है और सरकारी तंत्र तक प्रभावी पहुंच नहीं है.

वैसे, ताकत बढ़ाने के लंबे दौर के बाद मफतलाल समूह की सभी कंपनियों का भविष्य उज्ज्वल लगता है. —शिव तनेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उतरे, फिर चढ़े

नई सरकार में भरोसा

क्षणभंगुरता शायद भारतीय शेयर बाजार का स्वभाव है. चुनाव के पहले, नवंबर के दूसरे हफ्ते में और नतीजे आने के तुरंत बाद शेयर बाजार में तेजी से गिरावट आई जिसे सरकारी वित्तीय संस्थानों के जरिए भारी खरीद कराके रोकने की कोशिश की गई. पर अब निवेशकों का उत्साह बल्लियों उछल रहा है.

9 दिसंबर तक शेयर मूल्य सूचकांक नई ऊंचाइयों को छू रहा था और वह भी बिना वित्तीय संस्थाओं के समर्थन के. 7 दिसंबर को नए वित्तमंत्री मधु दंडवते ने कहा कि सरकार औद्योगिक घरानों के खिलाफ अंधाधुंध छापे नहीं मारने जा रही है. उद्योगमंत्री अजीत सिंह ने भरोसा दिया कि औद्योगिक नीतियों में उदार नीति को बदला नहीं जाएगा.

और फिर हर कहीं 'खुशहाली' दिखने लगी—बंबई के दलाल स्ट्रीट, दिल्ली के आसफ अली रोड और कलकत्ता के लायंस

चार्टः बी.के. शर्मा

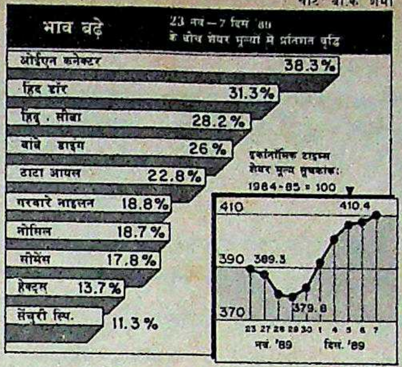

रेंज में. इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक अगले दिन 415.6 पर पहुंच चुका था जो 26 अक्तूबर के सर्वोच्च बिंदु 400.8 से भी 15 अंक ऊपर है. बंबई शेयर बाजार का मूल्य सूचकांक 24 घंटों में 24 अंक चढ़ गया और वहां के 100 प्रमुख शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक 11 अंक बढ़कर 408.02 पर आ गया.

यह उफान यूं ही नहीं आ गया. इसके संकेत पहले से नजर आ रहे थे. वी.पी. सिंह के प्रधानमंत्री बनने के चार दिन बाद ही, 4 दिसंबर को इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक चुनाव पूर्व के 386.6 से बढ़कर 401.5 पर आ चुका था.

शेयर बाजार के इस उत्साह के बारे में कुछ लोगों का मानना है कि वी.पी. सिंह द्वारा 'सर्वानुमति' वाली राजनीति की बात करने से सरकार की स्थिरता के प्रति बाजार के लोगों का भरोसा बढ़ा. यह माना गया कि भारी पूंजी निवेश वाली कुछ पेट्रोकेमिकल परियोजनाओं में देरी लग सकती है और महानिर्गम वाली कुछ कंपनियों को 'अनुशासित' किया जा सकता है लेकिन नई सरकार बाजार में अस्थिरता पैदा करने वाले कदम नहीं उठाएगी.

ऐसे में एक पखवाड़े के अंदर रिलायंस के शेयरों की कीमत में 5 रु. की गिरावट से भी लोगों को अचरज नहीं हुआ. लोगों की उम्मीद के मुताबिक ही बांबे डाइंग के शेयर भी 38 रु. चढ़कर 193 रु. तक पहुंच गए.

पिछले महीने के आखिर में बाजार को संभालने के लिए भारी खरीद कर चुकी वित्तीय संस्थाएं इस पखवाड़े सुस्त पड़ी रहीं. लेकिन स्टेट बैंक कैपिटल फंड इस दौरान बहुत सक्रिय था. चुनाव के दौरान अधिक शेयर निकालने के दौर का भी असर हुआ. जिन लोगों ने शेयर निकाले वे अपने बटुए में फिर कुछ शेयर डालते ही.

कुल मिलाकर बाजार ने नई सरकार के लिए अच्छे संकेत दिए हैं. लेकिन बाजार का यह उफान स्थायी है या नहीं इसका पता भी कुछ हफ्तों में चल जाएगा.

जमा स्टॉक

	1989 ऊंचा	1989 नीचा	बंद 7.12.89	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	93.00	61.00	93.00	4.50 +
एसोसिएटेड सीमेंट	345.00	230.00	329.00	20.00 +
एशियन पेंट्स	226.25	165.00	210.00	16.25 +
एटलस कोप्को	53.00	32.00	43.00	1.00 −
बजाज ऑटो	450.00	290.00	367.50	38.75 +
बड़ौदा रेयॉन	837.50	285.00	695.00	25.00 −
बाटा इंडिया	89.00	60.00	65.00	2.00 −
बेयर	910.00	580.00	800.00	30.00 +
भारत फोर्ज	202.50	65.00	82.50	5.00 +
बिरला जूट	73.75	41.50	47.00	—
बॉम्बे डाइंग	193.00	104.00	184.00	38.00 +
ब्रिटानिया इंडिया	150.00	89.00	147.50	25.50 +
ब्रुक बांड	155.00	75.00	115.00	5.00 +
सेंचुरी स्पिनिंग	2865.00	1230.00	2860.00	290.00 +
क्लोराइड इंडिया	88.50	72.00	85.50	1.50 +
कोलगेट पामो.	371.25	162.50	192.50	15.00 +
सायनामिड	108.75	55.00	97.50	1.50 −
डीसीएम	85.00	31.00	48.00	1.50 +
डनलप	95.50	62.80	73.00	10.00 +
ईआई होटल्स	68.00	50.00	65.00	1.00 +
एस्कार्ट्स	84.00	58.00	81.00	3.00 +
फिनोलेक्स केबल्स	430.00	225.00	260.00	30.00 −
फूड स्पेशिलिटीज	224.00	100.00	112.50	11.00 +
गरवारे नाइलोन	57.00	36.00	57.00	9.00 +
जी.ई. शिपिंग	53.00	33.75	49.75	3.00 +
गुजरात स्टेट फर्टि.	195.00	123.75	193.75	13.75 +
ग्लासिम इंडिया	137.00	75.00	121.00	14.00 +
हिंदु. एल्यूमिनियम	327.50	155.00	277.50	28.75 +
हिंदु. सीबा	1270.00	600.00	1250.00	275.00 +
हिंदुस्तान कोफोआ	150.00	98.75	141.25	5.00 −
हिंदुस्तान लीवर	113.50	69.50	105.50	3.50 +
हिंदुस्तान मोटर्स	52.50	22.00	23.00	0.75 +
आई.सी.आई.	68.00	39.00	42.50	3.00 −
इंडियन आर्गेनिक	54.50	23.00	47.00	3.25 +
इंडियन रेयन	106.00	75.75	87.00	1.75 +
इंड़ॉल	335.00	175.00	195.00	—
इंगरसॉल-रैंड	425.00	180.00	235.00	17.50 +
आई.टी.सी.	129.00	46.25	64.00	—
जे.के. सिंथेटिक्स	92.00	55.00	62.50	1.50 +
काइनेटिक इंजी.	395.00	120.00	140.00	12.25 +
किर्लोस्कर क्युमिंस	88.75	54.50	66.00	1.00 −
केसीबी पंप्स	445.00	185.00	202.50	10.00 +
लारसन-टुब्रो	128.00	69.00	73.50	2.50 −
लिप्टन	98.00	65.00	93.00	3.50 −
लोहिया-मशीन्स	28.00	12.50	20.00	2.50 +
मदुरा कोट्स	104.00	92.25	101.00	1.50 +
महिंद्रा-महिंद्रा	113.50	76.50	88.50	9.50 −
मिल्क फूड	320.00	180.00	229.00	75.00 +
मोटर इंडस्ट्रीज	850.00	560.00	750.00	15.00 +
मुकुंद लिमि.	145.00	75.00	139.25	1.75 +
नेशनल आर्गेनिक	1525.00	710.00	1525.00	240.00 +
निरलॉन	17.00	8.00	16.00	3.50 +
ओरके सिल्क मिल्स	29.00	12.50	15.25	1.25 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	30.50	16.50	24.50	3.00 +
फाईजर	80.00	58.00	78.00	7.00 +
पांड्स	220.00	151.25	200.00	18.75 +
प्रीमियर ऑटो	68.00	40.00	64.50	2.75 +
रेमंड	85.00	60.00	78.00	9.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	158.00	70.00	73.50	5.00 −
सीमेंस इंडिया	95.00	65.00	86.00	13.00 +
शॉ वैलेस	103.25	62.00	88.00	8.00 +
श्रीराम फाइबर्स	94.00	53.50	63.00	9.00 +
एसकेएफ बैयरिंग्स	3020.00	1140.00	1360.00	90.00 +
स्पिक	67.00	39.00	56.00	4.00 +
टाटा स्टील	158.00	102.50	115.25	9.00 +
टेल्को	1097.50	657.50	1060.00	33.00 +
वाम ओर्गेनिक	178.00	132.50	138.75	20.25 −
वीडियोकोन	200.00	55.00	192.50	2.50 +
वोल्टास	1000.00	470.00	920.00	15.00 −
विमको	32.00	15.00	23.25	1.00 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.3823	13.2348
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	135.3517	134.8116
बहरीन	दीनार	1	45.2889	44.7705
बांग्लादेश	टका	100	54.1741	52.7872
कनाडा	डालर	1	14.6858	14.5307
डेनमार्क	क्रोना	1	2.4678	2.4421
मिस्र	पौंड	1	6.8534	6.7298
फ्रांस	फ्रैंक	1	2.8694	2.7972
हांगकांग	डालर	1	2.1842	2.1617
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9603	0.9453
ईरान	रियाल	100	24.2345	24.1402
इटली	लीरा	100	1.3037	1.2885
जापान	येन	100	12.0048	11.7096
केन्या	शिलिंग	1	0.7882	0.7766
कुवैत	दीनार	1	57.6515	56.9710
मलेशिया	डालर	1	6.3056	6.2394
मारीशस	रुपया	1	1.1264	1.1113
नेपाल	रुपया	1	0.5956	0.5875
हालैंड	गिल्डर	1	8.4689	8.3748
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8126	0.7678
सिंगापुर	डालर	1	8.8145	8.7206
स्पेन	पेसो	1	0.1484	0.1466
श्रीलंका	रुपया	1	0.7551	0.7441
स्वीडन	क्रोना	1	2.6756	2.6476
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	10.7427	10.6272
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1004	0.0938
थाईलैंड	बहत्त	100	66.9210	64.8688
ब्रिटेन	पौंड	1	26.8061	26.6134
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.0648	16.8919
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.6486	4.5977
सोवियत संघ	रूबल	1	27.5018	27.2011
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	9.7943	9.5511

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 7.12.89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौवीं लोकसभा

सतरंगा सदन

पिछली लोकसभा से एकदम विपरीत नौवीं लोकसभा में प्रखर, विवादास्पद और हंगामा करने वाले हर तरह के व्यक्तित्व हैं. कट्टरपंथियों, उग्रवादियों और कड़वी जबान वालों के चलते यह संसद पिछली के मुकाबले कहीं ज्यादा हंगामेदार साबित हो सकती है

सभी कार्टून: अजीत नैनन

संसदीय मामलों के अंग्रेज विशेषज्ञ वाल्टर बेगहॉट ने कहा था कि हर संसद अपना खास स्वरूप विकसित कर लेती है. नव-निर्वाचित नौंवी लोकसभा भी इसका अपवाद नहीं. पूर्ववर्ती आठवीं लोकसभा से यह इस मायने में भिन्न है कि 60 फीसदी सदस्यों के दोबारा चुने जाने की परंपरा के विपरीत इस बार पुराने सदन के 30 फीसदी प्रतिनिधि ही लौट पाए हैं. जाहिर है पिछले दो साल से चल रहा आडंबर और चालबाजियां मतदाताओं के बरदाश्त के बाहर हो गई थी. लिहाजा नई लोकसभा के 525 सांसदों में से 371 चेहरे नए हैं.

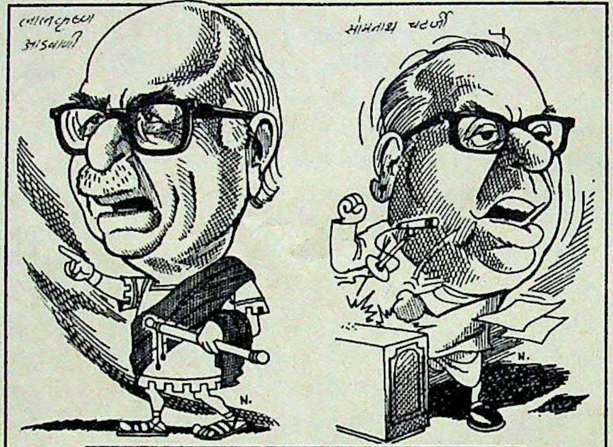

दिग्गज

बड़ी संख्या में दिग्गज नेताओं के पहुंचने से बहस में वजन तो आएगा ही, सदस्यों के व्यवहार पर भी अंकुश बना रहेगा

इस बार लोकसभा में किसी दल को बहुमत नहीं प्राप्त है. यह स्थिति पिछली लोकसभा से ठीक उलट है जब तत्कालीन सत्तारूढ़ पार्टी ने चौथाई पांच बहुमत के मद में एक तरह अंधे होकर लोकसभा को कभी गंभीरता से नही लिया. लेकिन अब कोई भी दल इस सदन की उपेक्षा नहीं कर सकता. प्रेक्षकों का तो मानना है कि यह लोकसभा पिछली के मुकाबले ज्यादा हंगामेदार रहेगी.

मौजूदा लोकसभा में एक ओर प्रतिष्ठित पत्रकार और पूर्व पुलिस अधिकारी, न्यायाधीश और प्रबंधक, शिक्षाविद और धर्म-प्रचारक जैसे लोग हैं तो पांचवां हिस्सा शिवसेना, अकाली दल (मान), हिंदू महासभा, भाजपा और बहुजन समाज पार्टी जैसे विपरीत विचारधारा वाले दलों से मिलकर बना है, जो किसी एक मुद्दे पर एकमत तो नहीं हो ही नहीं सकते.

आठवीं लोकसभा यदि एक सुर में हुल्लड़ मचाने वालों का झुंड थी तो नौवीं लोकसभा में अलग-अलग ढपली पर अलग राग सुनने को मिलेंगे.

पहली बात तो यह कि धर्म के प्रति कट्टर आस्था रखने वाले जितने लोग इस लोकसभा में हैं उतने पहले कभी नहीं रहे. हालांकि मुस्लिम लीग के गुलाम महमूद बनातवाला और इब्राहिम सुलेमान सैत एक तरह से लोकसभा के स्थायी अंग बने हुए हैं लेकिन उनकी आवाज सामान्यत: परिष्कृत हुआ करती थी. इस बार उनका सामना हिंदू महासभा का प्रतिनिधित्व करने वाले और राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष महंत अवैद्यनाथ से है. उनका साथ देने के लिए हिंदवी स्वराज्य की हामी शिवसेना के चार सासद तो हैं ही.

भाजपा के कुछ सांसद भी खुशी-खुशी उनका साथ दे सकते हैं. इनमें खजुराहो से जीतकर आईं युवा धर्मोपदेशक उमा भारती; पूर्व पार्षद और अहमदाबाद के स्तंभकार हरीन पाठक और हजारीबाग के भद्रनाथ पांडेय प्रमुख हैं. पांडेय विश्व हिंदू परिषद और बजरंग

तीखे स्वर

इस बार अध्यक्ष को बार-बार धर्म में अंधी आस्था रखनेवालों की नई जमात से जूझते रहना पड़ सकता है

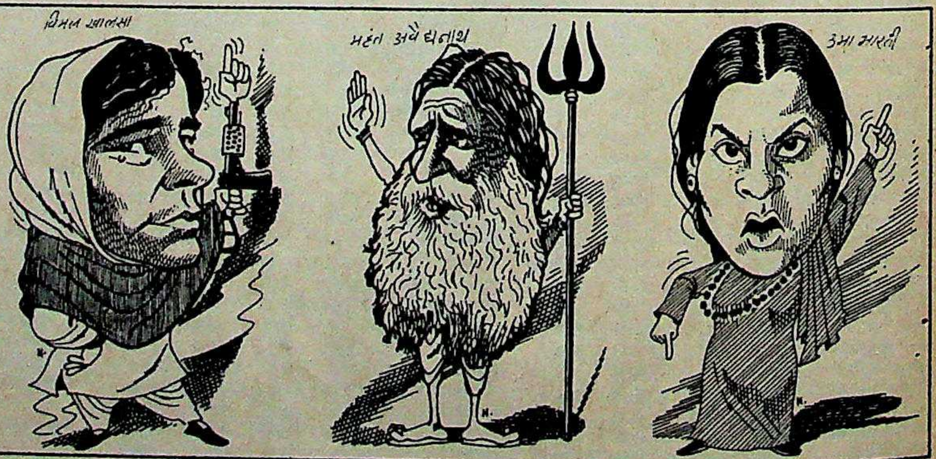

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दल दोनों ही संगठनों के नेता हैं और हाल में हजारीबाग में हुए दंगों में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी की कई खबरें उछलीं.

सदन में पहली बार पहुंचे भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी जैसे सुसंस्कृत व्यक्ति भी ज्वलंत सांप्रदायिक मुद्दे पर उत्तेजित हो सकते हैं. सदन में पार्टी की उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया भी अपने पसंदीदा विषय राम जन्मभूमि को उठाने में पीछे नहीं रहेंगी.

फिर पंजाब से चुनकर आए सात उग्रवादी सांसद भी हैं जिनमें से कुछ पर आतंकवाद फैलाने से लेकर हत्या तक के आरोप हैं. सबसे दिलचस्प सामना होगा इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह की विधवा बिमल कौर खालसा का राजीव गांधी से. बिमल कौर पत्रकारों का ध्यान बहुधा अपने छोटे बेटे की ओर खींचती रही हैं जो अपनी खिलौना पिस्तौल से 'राजीव गांधी को गोली मारने' की तैयारी करता रहता है.

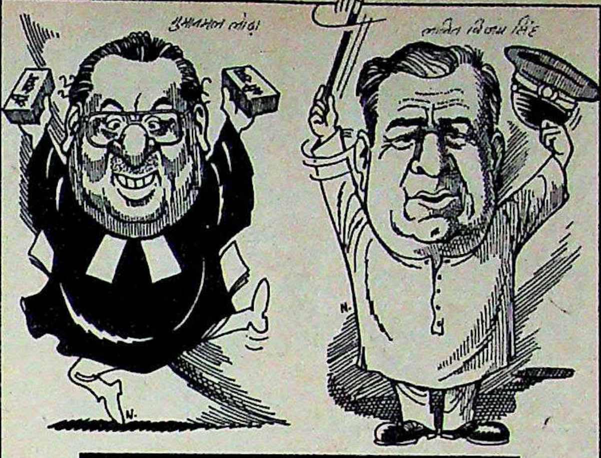

कानून के जानकार

गुमानमल लोढ़ा और ललित विजय सिंह अपने पुराने अनुभवों से कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था को भी लाभ पहुंचाएंगे

बहुजन समाज पार्टी को भी इस बार आवाज मिली है—एक नहीं इकट्ठी तीन. ऊंची जाति वालों के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार वे किस भाषा में करेंगे इसका अभी अंदाजा ही लगाया जा सकता है. उग्रवादी वामपंथी संगठन इंडियन पीपुल्स फ्रंट ने भी पहली बार सदन का मुंह देखा है. बिहार के आरा निर्वाचन क्षेत्र से रामेश्वर प्रसाद एकमात्र सांसद चुने गए हैं.

ये तीखे सुर जहां तेज से तेज वक्ता को चुप करा सकते हैं, वहां ऐसे भी लोग सदन में हैं जिनके धारावाहिक भाषणों से कानों में दर्द हो सकता है. सौभाग्य से कड़वी जबान वाले दो इंकाई सांसद—ममता बनर्जी और वी.पी. सिंह को भारतीय राजनीति की पामेला बॉर्डेस कहने वाले के.के. तिवारी इस संसद में नहीं होंगे. लेकिन उनकी कमी शायद कल्पनाथ राय पूरी कर देंगे. चीखने-चिल्लाने के मामले में राय की टक्कर उत्तर प्रदेश के दो नए सांसदों—वी.पी. सिंह के कट्टर समर्थक राम पूजन पटेल और इंका सांसद रामलाल राही से होने की पूरी संभावना है. राही ने चुनाव भले ही इंका टिकट पर जीता हो लेकिन प्रचार अभियान के दौरान अपने पार्टीजनों की आलोचना से वे नहीं हिचके.

एक सज्जन और हैं जिनसे वाक् तंतुओं का भरपूर उपयोग करने की उम्मीद की जा सकती है. ये हैं देवीलाल की ग्रीन ब्रिगेड के मुखिया जयप्रकाश. लालू प्रसाद यादव और शरद यादव खेमे के कृष्णचंद्र त्यागी भी मुसीबतें खड़ी करने में पीछे नहीं हैं. भाजपा में भी आक्रामक तेवर रखने वाले सांसद हैं. इनमें से दो राम नाईक और राम कापसे बंबई से हैं, जबकि दिलीप सिंह जू देव जांजगीर (म.प्र.) से और नाथू सिंह राजस्थान से हैं.

सौभाग्य से इस बार संसद में शिक्षाविद्, पत्रकार और दूसरे बुद्धिजीवी भी काफी तादाद में हैं जो बहस को नए आयाम दे सकते हैं. इनमें बिहार विश्वविद्यालय और ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के उपकुलपति रह चुके जनता दल के शकील-उर-रहमान का नाम सबसे ऊपर है. माकपा टिकट पर जीतकर आईं मालिनी भट्टाचार्य ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की डिग्री ली है और फिलहाल जादवपुर विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्रोफेसर हैं. शिक्षाविदों की टोली में भाजपा के कोटे से पटना के सांसद शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव हैं, जो अध्यापकों के संघर्ष के अगुआ रहे हैं.

सदन में बैठने वाले पत्रकारों में इंका टिकट से जीते 'टेलीग्राफ' के पूर्व संपादक मुबाशर जावेद अकबर हैं जो खुद को सांप्रदायिकता का कट्टर विरोधी बताते हैं. फिर गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट का प्रतिनिधित्व करने वाले इंद्रजीत खुल्लर हैं जो 'इंडियन न्यूज ऐंड फीचर' एजेंसी के संपादक हैं. हिंदी साप्ताहिक 'चौथी दुनिया' के पूर्व संस्थापक संपादक संतोष भारतीय वी.पी. सिंह खेमे के हैं तो अजय सिंह चौ. चरण सिंह की 'असली दुनिया' के संपादक रह चुके हैं. 'इंडियन एक्सप्रेस' समूह के मराठी अखबार 'लोकसत्ता' के पूर्व संपादक विद्याधर गोखले भी सदन में पहुंचे हैं.

पुलिस के पूर्व महानिदेशक ललित विजय सिंह पूर्व राज्यमंत्री

शिक्षाविद् व पत्रकार

इस बार सौभाग्य से संसद में अच्छी तादाद में पहुंचे शिक्षाविद् और पत्रकार बहस को नए आयाम दे सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

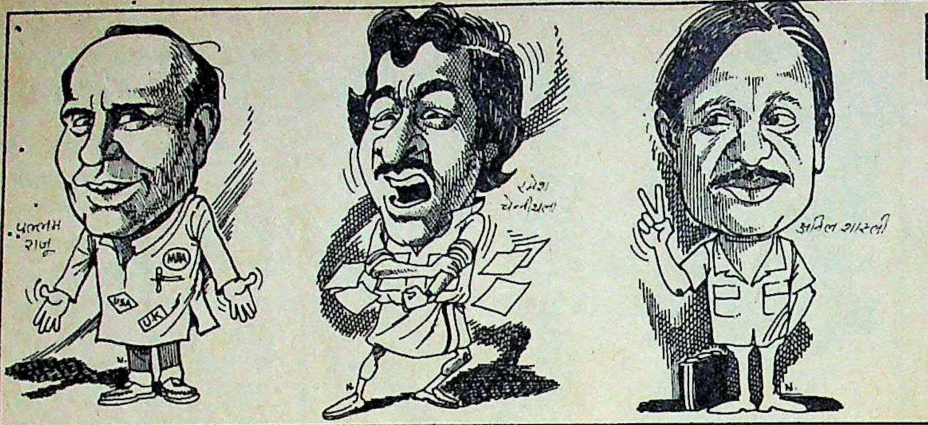

युवा चेहरे

कुछ प्रतिभावान नए युवा चेहरे भी हैं लेकिन इनमें से संसद में कौन चमकेगा कहा नहीं जा सकता

कृष्णा साही को बेगूसराय से हराकर संसद में आए हैं. विजय सिंह की ख्याति ईमानदार पुलिस अधिकारी की रही है जिन्होंने भागलपुर आंखफोड़ कांड की रिपोर्ट में अपने सहयोगी अधिकारियों का पर्दाफाश किया था. भाजपा के टिकट पर राजस्थान के पाली निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव जीतने वाले गुमानमल लोढ़ा हाल ही में गुवाहाटी हाईकोर्ट के प्रमुख न्यायाधीश के पद से रिटायर हुए हैं. जीवन भर कानूनों का पालन कराने का अनुभव रखने वाले लोढ़ा और सिंह कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था को भी योगदान देंगे.

जब तक मौजूदा संसद भंग होगी, दूसरे पेशों में नाम कमा चुके इनमें से कुछ सदस्य भाकपा के इंद्रजीत गुप्त और माकपा के सोमनाथ चटर्जी जैसे योग्य और प्रतिभाशाली सांसदों की श्रेणी में आ चुके होंगे. मधु दंडवते और दिनेश गोस्वामी जैसे राष्ट्रीय मोर्चे के अग्रणी सांसद मंत्री होने के कारण व्यवस्था के सवाल और बार-बार हस्तक्षेप करने के पुराने रवैए पर तो नहीं चल पाएंगे लेकिन यह कमी भाजपा के आडवाणी और जसवंत सिंह पूरी कर देंगे.

महिलाओं की संख्या पिछली संसद के मुकाबले भले ही घटकर 44 से 26 रह गई हो लेकिन जो महिलाएं इस बार आई हैं वे अपने क्षेत्र में अग्रणी हैं. इनमें एक हैं माकपा के टिकट पर कानपुर से जीतने वाली सुहासिनी अली. भाजपा से विजयाराजे सिंधिया हैं. साथ ही उनकी बेटी वसुंधरा राजे पहली बार संसद में आई हैं. भाजपा के टिकट पर जीतने वाली सातों महिलाएं तेजतर्रार कार्यकर्ता हैं.

बिहार की पूर्व विधायका ऊषा सिंह जनता दल टिकट पर चुनकर आई हैं. वे पूर्व केंद्रीय मंत्री कृष्णा साही की बहन हैं. केरल की सावित्री लक्ष्मणन भी पहली बार संसद में आई हैं. जोशीले भाषणों के लिए विख्यात यह लेक्चरर केरल के पूर्व इंकाई मुख्यमंत्री के. करुणाकरन की खोज है.

दूसरी ओर आंध्र से जीतने वाली सामाजिक कार्यकर्ता उमा गजपति राजू और फिल्म अभिनेत्री जमुना, मद्रास से दुबारा जीतने वाली वैजयंतीमाला के साथ मिलकर सदन को ग्लैमरस बनाने में योगदान देंगी.

कुछ प्रतिभावान नए युवा चेहरे भी हैं. इनमें लालबहादुर शास्त्री के सबसे छोटे बेटे अनिल शास्त्री और जाने-माने वक्ता और सक्रिय विधायक रामसजीवन प्रमुख हैं. बिहार से आए सुबोधकांत सहाय जे.पी. के अनुयायी और चंद्रशेखर के करीबी माने जाते हैं. फिर नितीश कुमार हैं जो पेशे से इंजीनियर और प्रभावी वक्ता हैं.

दो युवा नेता केरल से भी आए हैं. कोट्टायम का प्रतिनिधित्व करने वाले 33 वर्षीय रमेश चेन्नीथला राज्य युवा इंका के अध्यक्ष हैं. धाराप्रवाह हिंदी बोलने के कारण भाजपा को वे जरूर अच्छे लगेंगे. केरल में ही पालघाट से माकपा के टिकट पर जीतने वाले ए. विजयराघवन स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष हैं.

आंध्र प्रदेश के एम.एम. पल्लम राजू (27), भरतपुर राजवंश के विश्वेंद्र सिंह और सिवनी, मध्य प्रदेश के प्रह्लाद सिंह (27) इस लोकसभा के सबसे कम उम्र के सांसद हैं. पूर्व इलेक्ट्रॉनिक्स उपमंत्री एम. एस. संजीवी राव के बेटे राजू इसी अक्तूबर में नार्वे से लौटे हैं. वे वहां एक कंप्यूटर फर्म में बिक्री संयोजक थे.

अभी से यह कहना मुश्किल है कि विविध क्षेत्रों से आई इन प्रतिभाओं में से सांसद के रूप में कौन चमकेगा. भाजपा सांसद जसवंत सिंह का मानना है कि नामी-गिरामी वकील भी जब कानून की व्याख्या करना छोड़ कानून बनाने वाली इस संस्था में बैठे तो सफल नहीं हुए और विधानसभा में चमकदार सितारे रह चुके विधायक सांसद बनते ही चमक खो बैठे.

बहरहाल, 15 से 17 दिसंबर तक संसद सौध में आयोजित कार्यशाला में जब वरिष्ठ सांसद नए सांसदों को संबोधित करेंगे तो निश्चय ही उन्हें अपनी विराट जिम्मेदारी का एहसास होगा. इस बार संतुलन की डोर नाजुक होने की वजह से यह तो तय है कि सदन क्रियाशील रहेगा. और संसद के प्रति लोगों की बढ़ी हुई दिलचस्पी को देखते हुए लगता है कि आने वाले वर्षों में इसकी गरिमा में नए आयाम जुड़ेंगे.

—डेविड देवदास और ब्यूरो रिपोर्ट

महिलाएं

संसद में इस बार भले ही महिलाओं की संख्या पिछली लोकसभा के मुकाबले कम हो पर जो हैं वे अपने क्षेत्र में अग्रणी हैं

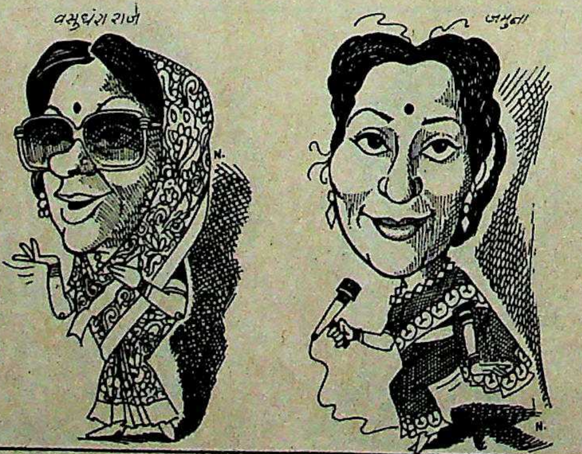

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसे के पीछे हैं कारण अनेक

गोदरेज. गुणवत्ता और तकनीकी कुशलता का प्रतीक. इससे नये स्वचालित कारखाने में आधुनिकतम तकनीक की मदद से सही मायनों में अंतर्राष्ट्रीय दर्जे के रेफ्रिजरेटर बनाये जाते हैं. तभी तो लोग गोदरेज का ही नाम लेते हैं. ऐसा नाम जिस पर वे पूरी तरह भरोसा कर सकें.

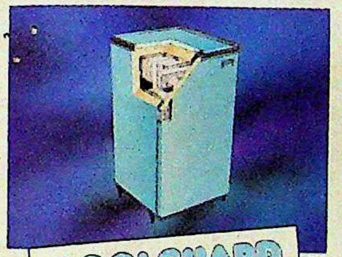

COOLGUARD

ज़्यादा ठंडा, ज़्यादा मज़बूत, ज़्यादा साफ़-सुथरा. 100% पॉलीयूरीथेन इंस्युलेशन – संसार के नामी रेफ्रिजरेटरों के बराबर. इस **बेहतर इंस्युलेशन** के कारण गोदरेज ज़्यादा देर तक ज़्यादा ठंडा रहता है. पॉलीयूरीथेन से मिलनेवाली मज़बूती व सख्ती रेफ्रिजरेटर को ज़्यादा सुदृढ़ बनाती है. इंस्युलेशन के कारण गरमी निकलने नहीं पाती और कीड़े-मकोड़े अंदर नहीं घुस पाते.

MEGA FORCE

बिजली बचानेवाला मज़बूत कम्प्रेसर जो वोल्टेज की भारी घट- बढ़ को भी मज़े में संभाल लेता है. कूलगार्ड के सहयोग से यह **तेज़ी से ठंडा करता है** और **बिजली भी बचाता है.**

SPECTRUM

तरह-तरह के **ख़ास** लुभावने रंगों की अभूतपूर्व श्रेणी. डेज़र्ट सैंड. डस्की ब्लू. इलेक्ट्रिक रेड. स्प्रिंग ग्रीन. कूल ब्लू. क्लासिक व्हाइट. और मिस्टी ग्रे. सब के सब एपॉक्सी पाउडर कोटेड फ़िनिश में, जो खूबसूरत भी लगें और ज़्यादा टिकें भी. साथ ही मेल खाते रंगों में आकर्षक टेबल टॉप.

ULTRASPACE

गोदरेज 165 लीटर रेफ्रिजरेटर में है सबसे बड़ी सब्ज़ी ट्रे.
और ख़ास डिज़ाइन की बदौलत दरवाज़े के पैनल में भी बोतलों और अंडों के लिए ज़्यादा जगह.

भरोसा, पूरा भरोसा

Godrej®

HTA-1643 R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

केवल ७२ घंटे पहले यह एक घिसा-पिटा पुराना फ़र्श था.

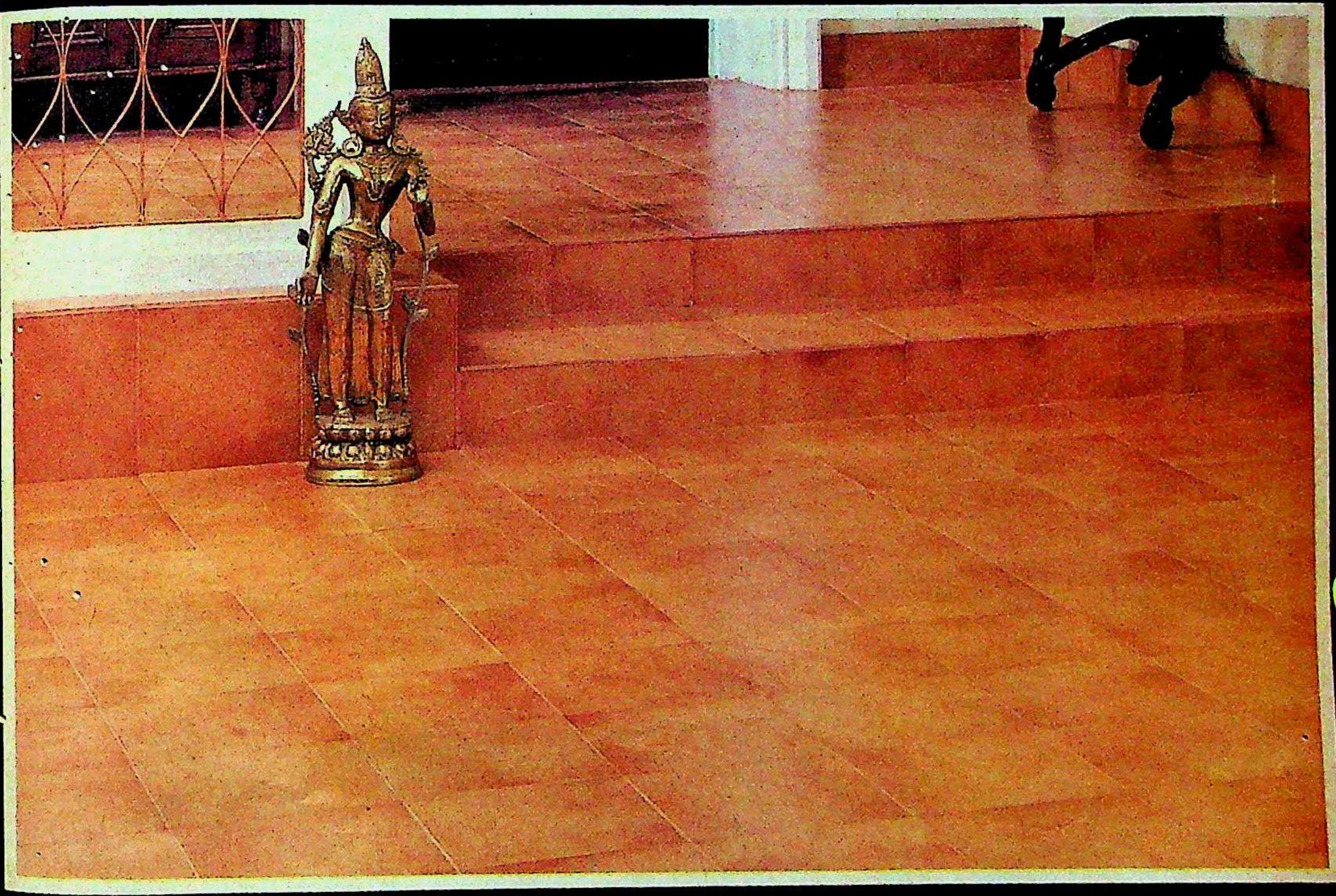

ये काया पलट कर दिखायी स्पारटेक फ़्लोर टाइल्स ने. जी हां, स्पारटेक फ़्लोर टाइल्स से आप जब चाहें, जैसे चाहें अपने फ़र्श को दे सकते हैं एक नया रूप, एक नया निखार!
जैसे, मार्बल के मुकाबले ये कहीं ज़्यादा किफ़ायती है. और पुराने फ़ैशन के मोज़ेक के मुकाबले इन्हें लगाना-बिठाना भी बिल्कुल आसान है.
यही नहीं, वज़न में हलकी होने के कारण स्पारटेक टाइल्स आप अपने मौजूदा फ़र्श पर भी लगा सकते हैं. और लगाने के केवल ७२ घंटे बाद, आप अपना फ़र्श इस्तेमाल कर सकते हैं.
और तो और, स्पारटेक फ़र्श आग, तेज़ाब और दाग़-धब्बों से भी बेअसर है. उस पर आपकी पसंद के लिए मौजूद हैं ८० अलग-अलग खूबसूरत डिज़ाइनें और रंग!
तो फिर इससे कम में समझौता क्यों?

स्पारटेक
सिरामिक्स इंडिया लि.
५२, चामियर्स रोड, मद्रास ६०० ०२८.

सिर्फ़ फ़र्श बदलने से न बने बात... इसे दें स्पारटेक अंदाज़!

फ़र्श पर स्पारटेक लगाना चाहते हैं तो किसी भी निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्यालय या अपने नज़दीकी स्पारटेक विक्रेता से सम्पर्क करें:
☐ मद्रास: ५२, चैमियर्स रोड, मद्रास ६०० ०२८. फ़ोन: ४५५४७३/४५६४९५/४५२७८० ☐ बम्बई: नं. २०५, बी विंग, दलामल टावर्स, नरीमन पॉइंट, बम्बई ४०० ०२१. फ़ोन: २८७३७२७ ☐ दिल्ली: २०७, प्रकाश दीप बिल्डिंग, ७, टॉलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली ११० ००१. फ़ोन: ३३१९४३३ ☐ बैंगलोर: २२, पहली मंज़िल, [illegible] ४१, [illegible] रोड, बैंगलोर ५६० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: अनीस हमदानी

पाकिस्तान

बला की बिजलियों को बुलावा

चुनौतियों से जूझते हुए बेनज़ीर भुट्टो ने सत्ता का एक वर्ष पूरा किया

बेनज़ीरः कड़ी चुनौतियां

बगल में पाकिस्तानी झंडा, पीछे जिन्ना की तस्वीर और सामने टीवी कैमरों की ओर मुल्क के नाम संदेश पढ़ती बेनज़ीर भुट्टो जज्बाती दिख रही थीं. वे अपनी सरकार की कामयाबियों के आंकड़े ही गिनाती रहीं—भ्रष्टाचार और नशीले पदार्थों के सरगनाओं के खिलाफ जंग, विदेशों में पाकिस्तान की छवि में निखार, गांवों तक बिजली और परमाणु बिजली संयंत्र के लिए चीन से मंजूरी वगैरह-वगैरह. उनकी आवाज में जोश बस तभी दिखा जब उन्होंने जम्हूरियत की बहाली की चर्चा की.

36 वर्षीया बेनज़ीर, जो जल्दी ही दूसरे बच्चे की मां बनने वाली हैं, अपनी सरकार की पहली सालगिरह मना रही हैं. इस दौरान वे जिया की 'अनाथ संतानों' की तमाम जोड़तोड़ और संसद में मामूली बहुमत की चुनौती झेलती रही हैं. और फिर साल भर का समय इतना कम होता है कि अर्थव्यवस्था पर कोई बड़ा असर डालने वाला काम कर दिखाना मुश्किल ही होता है. पाकिस्तानी संसद के ऊपरी सदन सीनेट में बहुमत के अभाव में वे पूरे साल कोई महत्वपूर्ण विधेयक नहीं पास करवा सकीं. बदलाव सिर्फ उन्हीं मामलों में हो पाया जिनमें उन्हें बहुमत की जरूरत नहीं थी.

उन्होंने दुनिया भर में घूमकर पाकिस्तान को सम्मानजनक स्थान दिलाया. पहले पश्चिमी देश सामरिक महत्व के कारण पाकिस्तान पर ध्यान तो देते थे लेकिन इसकी तानाशाही व्यवस्था के कारण इसके प्रति हिकारत का भाव भी रखते थे. बेनज़ीर भारत के साथ भी ताल्लुकात सुधारने में कामयाब रहीं. कुछ हद तक वे अफगानिस्तान के मामले में कभी बेहद कामयाब रहे खुफिया तंत्र इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस के पतन को रोकने में भी कामयाब रहीं. देश में उन्होंने विकास के मोर्चे पर मामूली शुरुआत की है. शिक्षा के बजट में 68 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है.

मामूली बहुमत की सरकार और देश टूटने के खतरे सिर पर होने से बेनज़ीर के लिए सबको खुश करना नामुमकिन बन गया है

लेकिन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि लोकतांत्रिक प्रक्रिया की बहाली रही है. उनकी पार्टी के पंजाब के नेता सलमान तासीर कहते हैं, "हम लोगों के बीच मतभेद हो सकते हैं. पर अब ये सियासी लड़ाइयां जम्हूरी तरीके से लड़ी जाती हैं. जो समाज फौजी फरमान सुनने का आदी रहा हो, उसके लिए यह कामयाबी कम बड़ी नहीं है." सरकारी मीडिया में भी खुलापन दिखाई पड़ता है. हालांकि इस मामले में कुछ विवाद भी उभरे. बेनज़ीर को पार्टी के वफादारों के दबाव में आकर सूझबूझ वाले सूचना राज्यमंत्री जावेद जब्बार को हटाना पड़ा. उन पर कुछ ज्यादा ही उदारवादी होने का आरोप था.

भारत के साथ रिश्ते को सामान्य बनाने की दिशा में उठाए गए अपने कदम भी बेनज़ीर को खींचने पड़े हैं. कट्टरपंथियों के दबाव में उन्हें बाबरी मस्जिद विवाद पर बयान जारी करना पड़ा. फिर भारत में अपने राजदूत नियाज़ नाइक को इसलिए वापस बुलाना पड़ा क्योंकि उन्होंने नई दिल्ली में पाकिस्तानी दूतावास में शराब की दावत दी.

यह भी गौरतलब है कि अगर बेनज़ीर साल बीतने पर संतोष की सांस नहीं भर सकतीं तो उसकी एक वजह विरासत में मिली व्यवस्था है और दूसरी, फैसले करने में उनकी गलतियां और उनके तौर-तरीके हैं. अफसरशाही में पूरी तरह से जिया समर्थकों का वर्चस्व है. उधर, फौज की निष्ठा बंटी हुई दिखती है. और राष्ट्रपति तो जिया द्वारा नियुक्त हैं ही.

उनके समर्थकों का कहना है कि इन्हीं पेचीदा परिस्थितियों के कारण बेनज़ीर को कई ऐसे कदम उठाने पड़े हैं जिनके लिए उनकी आलोचना होती है. सबसे विवादा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान न करे
कभी ऐसा हो...

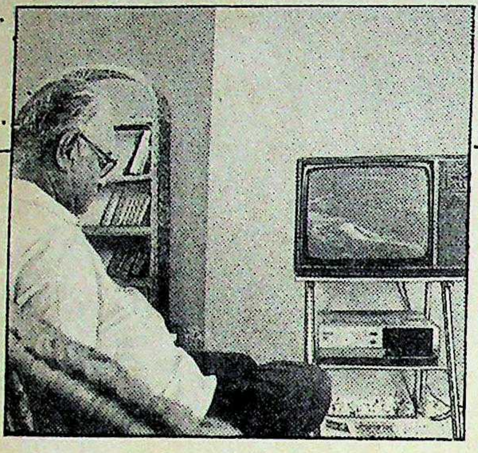

...मगर हुआ तो...

युनाइटेड इंडिया
टी.वी. पॉलिसी
एहतियात के लिए.

ज़ाहिर है टी वी देखते वक्त हम यह नहीं चाहेंगे कि वोल्टेज बढ़कर हमारे सेट को क्षति पहुँचाए, या वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से पिक्चर ट्यूब फट जाए. लेकिन होनी को कोई टाल सका है?

ठीक है, क़िस्मत को बदलना किसी के बस में नहीं, लेकिन अनहोनी का सामना किया जा सकता है युनाइटेड इंडिया की टी वी पॉलिसी अपनाकर. इस पॉलिसी में शामिल है आग, बाढ़, तूफ़ान, भूकंप, चोरी, दंगे-फ़साद, शॉर्ट-सर्किट, टांकियों से बहते पानी से हानि, फट जाना और दुर्घटनाओं से हुए नुकसान एवं आकस्मिक कारणों से हुई टी वी सेट को हानि.

बीमा करवाने का बहुत सीधा-सरल तरीक़ा है. युनाइटेड इंडिया की देशभर में 1000 शाखाएं हैं. निकटतम केंद्र से संपर्क करें, आप को खुद ही पता चल जाएगा कि कितना आसान है हमारे द्वारा बीमा करवाना. तो अब दुर्घटना होने का इंतज़ार न करें, आज ही युनाइटेड इंडिया से बीमा करवाएँ... एहतियात के लिए.

युनाइटेड इंडिया इंश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड
(जनरल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहयोगी संस्था)
24, वाइट्स रोड, मद्रास 600 014.

UNITED INDIA
WE CARE

LINTAS MUI 32517 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पद कदम रहा है अफसरशाही में अपने पार्टी समर्थकों को पिछले दरवाजे से प्रवेश दिलाना. पाकिस्तानी प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के वर्चस्व वाला तंत्र इसके विरोध में मुखर हो उठा. बेनज़ीर ने संदिग्ध वफादारी वाले कई अधिकारियों की हैसियत कम कर दी और उन्हें वास्तविक जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया. इसके ताजा शिकार भारत में राजदूत रह चुके विदेश सचिव हुमायूं खां हैं. उन्हें पिछले पखवाड़े इसलिए हटा दिया गया क्योंकि उन्होंने नियुक्तियों और तबादलों के सरकारी आदेशों पर अमल करने में आनाकानी की.

लगभग महीने भर पहले विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को किसी तरह झेल पाने में कामयाब रहीं बेनज़ीर ने माना कि उनसे गलतियां हुई हैं. लेकिन उन्होंने अपने तौर-तरीकों में सुधार का कोई प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं दिया है. बल्कि यह कहना मुश्किल होता जा रहा है कि वे कब क्या कर बैठेंगी. अविश्वास प्रस्ताव के बाद उन्होंने पूरे मंत्रिमंडल और कैबिनेट मंत्री की हैसियत वाले पांच सलाहकारों का इस्तीफा मांग लिया था. अब छह हफ्तों से ज्यादा बीतने के बाद भी न तो उन्होंने इस्तीफे मंजूर किए हैं और न ही उन्हें लौटाया है. नेशनल असेंबली में इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) के नेता शुजात हुसैन कहते हैं, "पार्लियामेंट को लटकाए रखने की बात तो देखी-सुनी गई है. पर यहां तो मोहतरमा ने पूरी कैबिनेट को ही लटका रखा है." इस बीच इजइ और बेनज़ीर की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पापीपा) सांसदों की खरीद-फरोख्त में मशगूल हैं. अफवाह है कि असेंबली के एक सदस्य की कीमत 2 करोड़ रु. तक पहुंच गई है.

बेनज़ीर ने विदेशों में तो खूब प्रशंसा बटोरी लेकिन देश में वे बचाव की मुद्रा अपनाने पर ही मजबूर हैं. सब कुछ व्यवस्थित करने की जल्दबाजी में उन्होंने

सब कुछ व्यवस्थित करने की जल्दबाजी में बेनज़ीर ने पंजाब में इजइ सरकार, राष्ट्रपति इस्हाक खां और नशीले पदार्थों के सरगनाओं के खिलाफ एक साथ कई मोर्चे खोल लिए

भवान सिंह

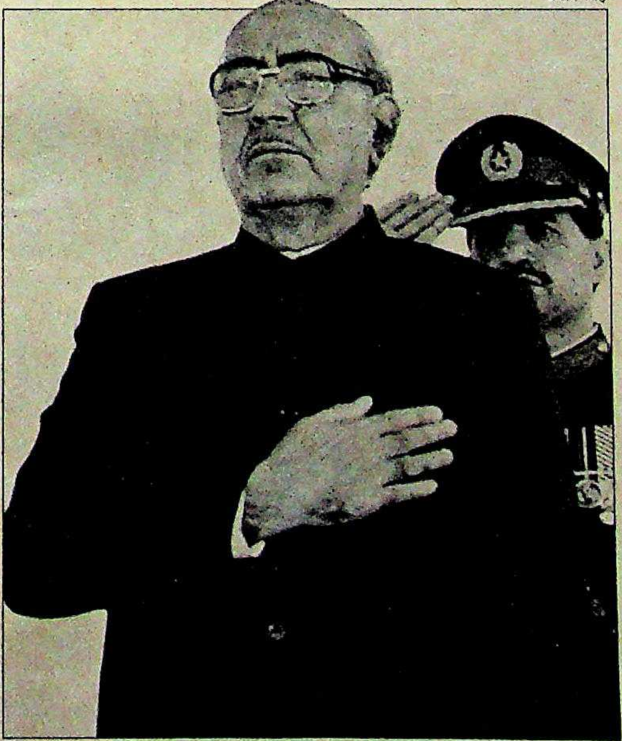

(ऊपर) इजइ के नेता; और इस्हाक खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर एक के लिए दस!

अपना मनपसंद कैमरा चुन लीजिए, बस !

एकमेव !
हॉट शॉट ११० एस
फ्लैश लगाने का इन्तज़ाम. दो लैंस.

**पड़ गए ना
द्विविधा में?**
हॉट शॉट ११० ई एफ़
इलेक्ट्रानिक फ्लैश. दो लैंस.

तीन—बेहतरीन !
हॉट शॉट ११० टेली
इलेक्ट्रानिक फ्लैश.
टेली व सामान्य लैंस

**अब सुनिये
चार का समाचार !**
हॉट शॉट ३५ यू.एफ़.
बिल्ट-इन फ्लैश.
यूनिवर्सल. फ़ोकस सिस्टम.

पांच सितारा !
हॉट शॉट ३५ यू.आर.
फ्लैश लगाने का इन्तज़ाम.
यूनिवर्सल फ़ोकस सिस्टम.

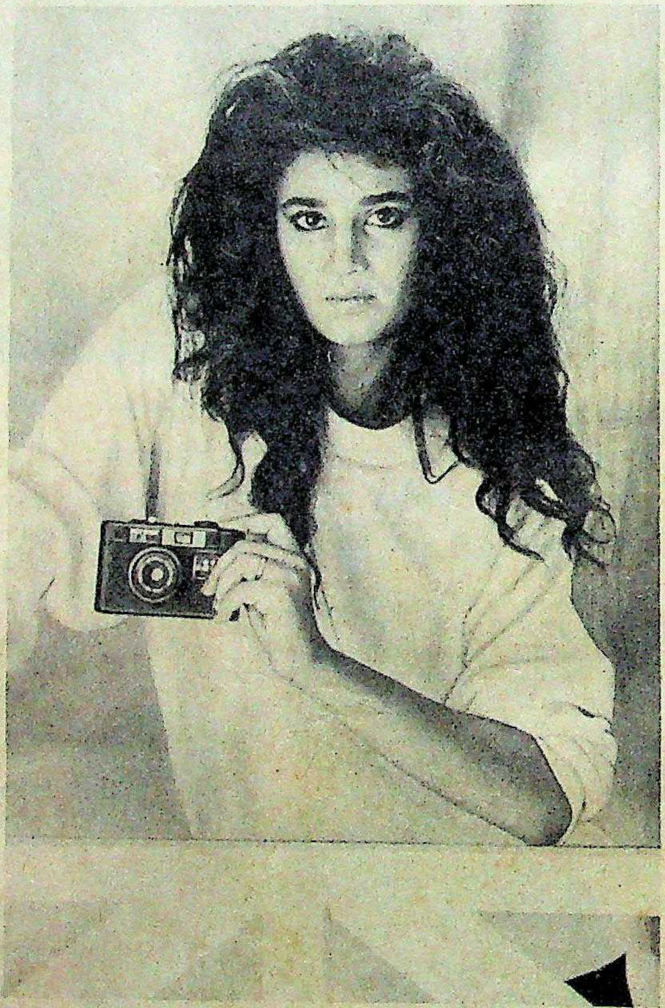

मारा छक्का !
हॉटशॉट ३५ सिम्पलर.
फ़ोकस फ्रीलैंस.
फ्लैश के लिए इन्तज़ाम.

सात की क्या बात !
हॉटशॉट ३५ ऑटो.
ऑटोमैटिक खूबियों से भरपूर

आठ के क्या ठाठ !
हॉटशॉट ११० मिनी
इतना नन्हा कैमरा आपने न देखा होगा !

नौ हमारा. अब पौ बारह !
हॉटशॉट ११० मी
इलेक्ट्रानिक फ्लैश के साथ.

दस-अभी इतना ही बस !
मिनोल्टा फ़ोटोफ़ोन
कंप्युटर नियंत्रित पूरी तरह.

HOT SHOT
कैमरे

फ़ोटोफ़ोन. फ़ोटोग्राफ़ी के उत्कृष्ट उत्पादन

फोटोफ़ोन इंडस्ट्रीज़ इंडिया लिमिटेड
७, साकी विहार रोड, बंबई ४०० ०७२

Sista's-420/88 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लिए एक ही साथ कई मोर्चे खोल लिए. उन्होंने पंजाब में इजइ की सरकार को उखाड़ने की मुहिम छेड़ने की हरी झंडी पार्टीवालों को दिखा दी. इजइ नेता विदेश मंत्री याकूब खां, राष्ट्रपति गुलाम इस्हाक खां और नशीले पदार्थों के सरगनाओं के साथ भी मोर्चा खोल लिया. उनके कई समर्थकों का कहना है कि नशीले पदार्थों के सरगनाओं से इतनी जल्दी उलझना गलती थी. इससे विपक्ष को फौरन खूब पैसे मिलने लगे.

पंजाब के मुख्यमंत्री नवाज शरीफ के प्रमुख सलाहकार हुसैन हक्कानी कहते हैं, "कुल मिलाकर यह साल अनर्थकारी ही रहा है." वे बेनज़ीर की शरीफ से भी दुश्मनी मोल लेने की भारी भूल की है. नेशनल असेंबली की निर्दलीय सदस्या तथा एकजुट विपक्ष के संसदीय दल की नेता आबिदा हुसैन कहती हैं, "यह बेमतलब जंग है. अभी भी वे नवाज शरीफ को जिया का वारिस ही समझती हैं." चालाक सलाहकारों के सहयोग से नवाज शरीफ ने इस मसले को केंद्र-राज्य संबंधों के टकराव का रूप दे दिया है.

यह बेनज़ीर के लिए भारी पड़ सकता है. हालांकि यह पूरी तरह से एकतरफा मामला नहीं है पर यही उनकी सबसे बड़ी रही है लेकिन नवाज शरीफ का कहना है कि संविधान में इसके खिलाफ कोई बात दर्ज नहीं है.

पंजाब सरकार ने पापीपा के कई नेताओं के खिलाफ आपराधिक मुकदमे दर्ज किए हैं. इनमें 19 नेता नेशनल असेंबली के सदस्य हैं और 27 पंजाब प्रांतीय असेंबली के सदस्य. सबसे मजेदार मामला संघीय श्रम राज्य-मंत्री मुल्तान अवां का है. उनके ऊपर हत्या का आरोप है. पापीपा के नेता ऐसे दर्जनों मामले गिनाते हैं जहां यह लड़ाई शीतयुद्ध की सीमा लांघ चुकी है. इजइ के समर्थक भी

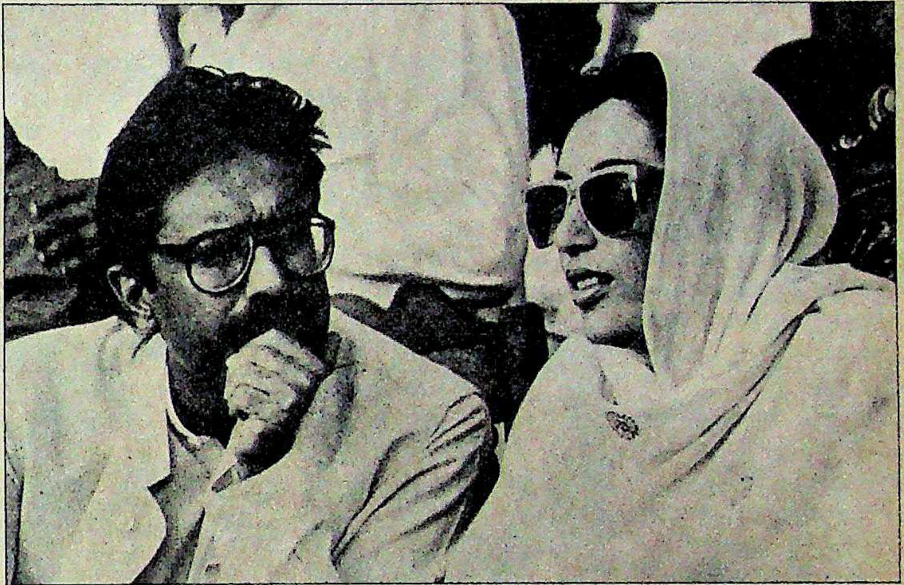

पति ज़रदारी के साथ

उनकी सरकार पर भ्रष्टाचार के भी कई आरोप हैं. इनमें अनेक तो खास तौर पर उनके पति और उनके परिवार पर ही हैं

'नाकामियों' की तुलना राजीव की नाकामियों से करते हैं. वे कहते हैं, "ये दोनों ही जमीन से कटे हुए नेता हैं. बेनज़ीर के पाकिस्तान का नारा भी वही है—मेरी हर धड़कन इटली के लिए है." रोजी-रोटी के सवालों को एक तरफ रखकर पियरे कार्दा के फैशन शो का आयोजन इसकी मिसाल है.

इस बीच विपक्ष और एकजुट हुआ है. उनके गठजोड़ के शुरुआती सहयोगी दल कराची का मुहाजिर कौमी महाज और खां वली खां की अवामी नेशनल पार्टी अब विपक्ष में बैठने लगी है. इससे भी बुरी बात तो यह है कि उनकी सरकार पर, खासकर उनके पति आसिफ ज़रदारी और उनके परिवार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जा रहे हैं. पिछले पखवाड़े एकजुट विपक्ष के नेता गुलाम मुस्तफा जतोई ने जरदारी के परिवार पर पाकिस्तान इंटरनेशनल एअरलाइंस के लिए एअरबस विमानों की खरीद में करीब 70 करोड़ रु. दलाली लेने का आरोप लगाया. उन्होंने कहा, "बोफोर्स घोटाला तो इसके मुकाबले कुछ भी नहीं है."

मामूली बहुमत की सरकार और देश के टूटने के खतरे की तलवार तो बेनज़ीर के सिर पर लटक रही ही है. उन्होंने नवाज नाकामी है. बेनज़ीर और नवाज शरीफ की इस राजनैतिक लड़ाई के कारण ही संघीय सरकार और सबसे बड़े प्रदेश की चुनी हुई सरकार के बीच शीतयुद्ध छिड़ गया है. इससे पहले ही पाकिस्तान सिंधी राष्ट्रवाद, मुहाजिर कट्टरवाद की चुनौतियों से जूझ रहा है. पख्तून तथा बलूच राष्ट्रीयतावादी खूनी आंदोलनों की याद अभी मिटी नहीं है. यह मामला कितना गंभीर है, इसे समझने के लिए यह याद रखना होगा कि पाकिस्तान की 60 फीसदी आबादी पंजाब में बसती है और देश की अफसरशाही, फौज और दूसरे ऊंचे संस्थानों पर इसी प्रदेश के लोगों का दबदबा है.

हालत यह है कि पंजाब सरकार ने बैंक ऑफ पंजाब के नाम से एक अलग बैंक बना लिया है. लेकिन इस बैंक को इस्लामाबाद से मंजूरी नहीं मिली है. यह बैंक पाकिस्तान में अपना कारोबार बैंक ऑफ अमीरात और दूसरे अरब बैंकों के मार्फत करता है. इसके अलावा पंजाब सरकार ने केंद्र को बाखबर किया है कि वह अपना टेलीविजन केंद्र खोलने की योजना बना रही है. पापीपा इस कार्रवाई को देशद्रोह बताकर विरोध कर इसी तरह कहते हैं कि उन्होंने संघीय ढांचे को कतई नहीं तोड़ा है. इन आरोपों-प्रत्यारोपों के बीच देश की हालत बदतर होती जा रही है.

बीते साल पर निगाह डालने से लगता है कि बेनज़ीर शायद बहुत कुछ दूसरे तरीकों से भी कर सकती थीं. वे नवाज शरीफ के मामले में कुछ सब्र से काम ले सकती थीं. इस बीच नवाज शरीफ अपनी पार्टी के विरोधाभासों में खुद ही उलझ जाते. वे राष्ट्रपति से भी तब तक सामंजस्य बनाए रख सकती थीं जब तक वे उन्हें अपनी बात मनवाने या संविधान के आठवें संशोधन को रद्द करने की हैसियत में नहीं आ जातीं. इस संशोधन से जिया ने राष्ट्रपति के हाथ में व्यापक अधिकार दे दिए हैं. और, वे अफसरशाही पर वार करने का ज्यादा नफीस तरीका भी अपना सकती थीं. लेकिन भुट्टो खानदान में उदारता और धैर्य तो विरले ही गुण हैं. अपनी खानदानी खासियत से उबरकर जिस क्षेत्र में वे कुछ कर सकी हैं वह है लोकतंत्र और बोलने की आजादी की गारंटी देना.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंभों के खेल

क्रिकेट और राजनीति अपने देश के प्रमुख खेल हैं. हमारी खेल-भावना के सब कायल हैं. जब पाकिस्तान के विकेट गिरते हैं, हम ताली बजाते हैं. हमारी आस्था प्रजातंत्र और निष्पक्ष चुनाव में है. हार के संशय से ग्रस्त नेता अच्छे वोटर को परिभाषित करता है—

देश का वोटर जाग गया है,
मतपेटी ले भाग गया है!

चुनाव-परिणाम के दिनों में लोगों ने दिन-रात टीवी को ताककर लगातार तकाई-त्योहार मनाया है. दर्शकों ने जय-पराजय के भावनात्मक रुझान से कतई निरपेक्ष होकर केवल खेल का मजा लिया है. दूरदर्शन के सामने बैठी उल्लसित भीड़ से एकाएक शोर उठता है—

"अरे! राजस्थान भी साफ हो गया!"

"क्या हुआ!"

"टूट गया, भई टूट गया, बूटा पीछे छूट गया!"

प्रसन्नता के अतिरेक की बधाई के बाद सन्नाटा छाते-छाते समवेत स्वरों का दूसरा छक्का लगता है—

"नौटंकी वाला भी चला गया!"

"कौन", हम पूछते हैं!

"बहुत पड़े बेभाव के, एन.टी. रामराव के!" आशु नारे का उत्तर आता है.

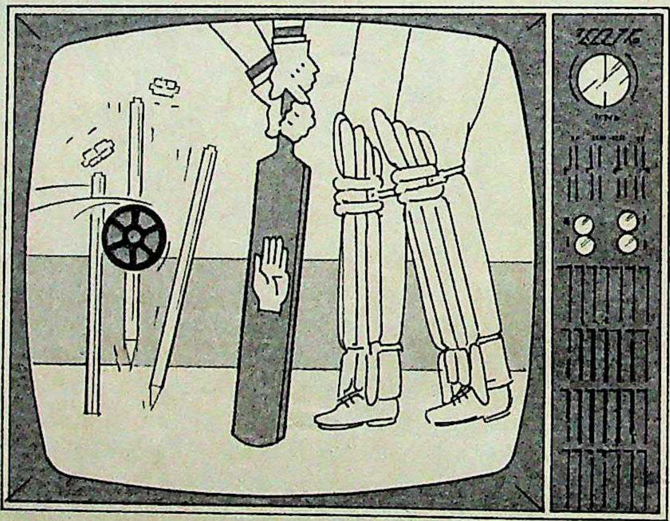

कार्टून: जिया फैजी

दूसरे नतीजों के इंतजार के अंतराल में एक दर्शक समझाते हैं—"इन ज्योतिषियों से तो सटोरिए अच्छे हैं!"

"क्यों भला!"

"जब अधिकतर ज्योतिषी कांग्रेसी बहुमत के खयाली पुलाव पका रहे थे, सट्टा बाजार हार-जीत का सही अनुमान लगा रहा था."

चुनाव के दौरान और उसके बाद का खंभा-खेल जारी है. बचपन में हम सब सड़क के खंभों पर पत्थर फेंककर निशानेबाजी का अभ्यास करते हैं. बड़े होकर वोट के हथियार से राजनीति के स्थापित खंभों को उखाड़कर खुश होते हैं. यों सियासी खंभे भी उसूलों के पक्के हैं. जनता के प्रति उनका खुफिया प्रेम और निराकार लगाव सिर्फ चुनाव के वक्त जग-जाहिर होता है.

इलेक्शन के नतीजों के पश्चात दूरदर्शन का जन-आकर्षण कुछ कम हो चला है. उसका स्थान आपसी चर्चा और विश्लेषण ने ले लिया है. एक परिचित घर लौटते समय गुनगुना रहे हैं—

"जो राम का नहीं, किसी काम का नहीं!"

दूसरे उनसे सवाल करते हैं—"क्या 'हिंदू' के एन. राम भी चुनाव लड़े थे!"

"बोफर वाले राम तो नहीं लड़े थे. पर हिंदुओं के राम की उत्तर से पश्चिम तक जोरदार 'वेव' थी. पता नहीं दक्षिण तक वह क्यों नहीं पहुंची!"

वैसे दूरदर्शन को भी आजादी का कुछ एहसास हो गया है. आज के सत्ताधारी और पूर्व के विपक्षी नेताओं की अनजानी शक्लें छोटे परदे पर दिखने लगी हैं. अविश्वास की मुद्रा में एक सज्जन जानना चाहते हैं—

"टीवी पर समाचार आने क्या आजकल बंद हो गए हैं!"

"नहीं तो! न्यूज तो हमेशा की तरह आ रही है," दूसरे बताते हैं.

"पर राजीव गांधी के बिना खबरें आ सकती हैं क्या!"

अधिकतर को अब तक यकीन नहीं है कि दूरदर्शन बिना राजीव-दर्शन के दूसरे कार्यक्रम भी कैसे प्रसारित कर रहा है. एक तबका यह सोचकर उदास है कि बिना वंशवाद के देश की अखंडता-एकता का निर्वाह हो भी पाएगा कि नहीं! जनता की राय है कि कांग्रेस 'आई' की गई सरकार तमाशा सरकार थी. नए-ताजे विरोधियों के अनुसार उनके नेता के बगैर अल्पमत की कोई भी सरकार सिर्फ बताशा सरकार है. अपने ही अंतरविरोधों में बस घुलने ही वाली है. उनका निर्णय है—

"जो न कार चलाए न जहाज उड़ाए, वह सरकार क्या खाक चलाएगा!"

इसके विपरीत एक नए चुने सांसद हमें अपना निश्चय सुनाते हैं—

"बमुश्किल तमाम हमने तीसरी आजादी पाई है. हम इसे किसी भी कीमत पर अब गंवाएंगे नहीं!"

"यह तीसरी आजादी क्या है!"

"1947 में देश ने अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा पाया था. 1977 में आपातकाल से और अब 1989 में एक ही परिवार की सरकार से." पर उनके दूसरे साथी अपने खंभा-खेल में लगे हैं. वह सार्वजनिक शिकायत करते हैं—

"सत्ता पर चिरकुटों की जमात जुड़ गई है. अब देश का क्या होगा!"

"आपके दल ने तो जनता द्वारा पहले से निर्धारित नेता को औपचारिक स्वीकृति ही दी है. असली लोकतंत्र जनमत का पर्याय है." एक सहयोगी उन्हें दिलासा देते हैं पर उनकी चिंता कम नहीं होती. "यहीं तो गड़बड़ है. जनता का 'रोल' चुनाव तक है. उसके बाद का खेल नेताओं का है. हमारे नेता जी जनता के हों न हों, नेताओं के नेता हैं."

सियासी खंभों का खेल भी क्रिकेट-सा अनिश्चित है. अब यह खेल जीतकर जनता खुश है. दूर के गांव में लालटेन की रोशनी में ठिठुरता हुआ एक कृशकाय वृद्ध अपने आप से बड़बड़ा रहा है—"वी.पी. सिंह ने लाई है, नई रोशनी आई है."

पर खंभे हैं कि अब भी खम ठोंकने से बाज नहीं आ रहे हैं. उनके नेता अपने अनुयायियों को विश्वास दिलाते हैं—

"बस राज्यों के चुनाव निबट जाने दो. एक एक चिरकुट को देख लेंगे." एक बुद्धिजीवी का विचार है कि देश ने सोनिया से सीता तक का सफर तय कर लिया है. अब रामराज्य भी आकर ही रहेगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरदर्शन

खुलेपन की फिजां

नई सरकार आने से आमूलचूल बदलाव की उम्मीद बंधी

दूरदर्शन के पांवों की बेड़ियां जैसे अचानक खुल गई हैं. खुलासा कहने-सुनने के दिन एकाएक वापस आ गए हैं. पूरी तरह पेशेवर संगठन बन पाने में तो समय लगेगा लेकिन इतना जरूर है कि नई सरकार ने उसे इस रास्ते पर चला दिया है. आकाशवाणी के पूर्व महानिदेशक सुरेश माथुर और दूरदर्शन के पूर्व महानिदेशक भास्कर घोष को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की जिम्मेवारी सौंपी गई है. यह भी बात चली थी कि घोष इसके अतिरिक्त दूरदर्शन का अपना पुराना काम भी देखेंगे. यह सारी तैयारी समूचे ढांचे में परिवर्तन का संकेत थी. बहुत संभव है कि यह परिवर्तन बी.जी. वर्गीज समिति द्वारा दस वर्ष पूर्व की गई सिफारिशों के अनुसार होगा. इस समिति ने इसे स्वायत्त निगम बनाने का सुझाव दिया था.

इस बीच दूरदर्शन अपने दर्शकों को अपना नया रूप भी दिखा चुका है. पिछले पखवाड़े उसने जो नए तरह के कार्यक्रम दिखाए उनमें से कुछ ये थे—एक रिपोर्ट में साफ तौर पर दर्शाया गया कि सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री का चुनाव बिना हीले हवाले के नहीं हुआ; राम जेठमलानी की पिटाई के दृश्य और चंद्रशेखर का यह कथन कि 'मैं कोई बेसहारा नहीं हूं'; राजमोहन गांधी द्वारा अमेठी में हुई धांधली की निंदा और बूथ पर कब्जे की रोमांचकारी दास्तान. इन सबके बाद अब जो कार्यक्रम दिखाया जाने वाला है उसका विषय है—राजनीति का अपराधीकरण.

कुछ मायनों में परिवर्तन की शुरुआत चुनाव के पहले ही हो गई थी. लेकिन कठिनाइयां बहुत थीं. अस्पताल में बिस्तर पर पड़े संजय सिंह की उनकी पत्नी से हो रही बातचीत जब दूरदर्शन ने रिकार्ड की तो राजीव गांधी के एक खासमखास ने आकाशवाणी के एक वरिष्ठ अधिकारी को धमकी दे डाली कि क्या उन्हें अपने बच्चों की सुरक्षा की जरा भी परवाह नहीं. एक और उदाहरण यह कि प्रणय राय की टीम द्वारा तैयार चुनाव चर्चा कार्यक्रम को दूरदर्शन पर शुरू होने के कुछ ही घंटे पहले रद्द करने का आदेश दिया गया. अंततः वित्त सचिव गोपी अरोड़ा और प्रधानमंत्री के सलाहकार (सूचना और प्रसारण) सुमन दुबे ने हस्तक्षेप किया और इस कार्यक्रम को अकाल मौत से बचा लिया.

कुछ अधिकारी तो ऐसे निकले जो वी.पी. सिंह द्वारा शपथ ग्रहण कर लेने के बाद भी अपनी करतूतों से बाज नहीं आए. दूरदर्शन ने जब राजमोहन गांधी का इंटरव्यू लिया तब एक शीर्षस्थ अफसर ने, जिन्हें समाचार कक्ष में 'एल्सेशियन' यानी खूंखार स्वामिभक्त कुत्ता कहकर जाना जाता है, इसका प्रसारण रोकने की भरसक कोशिश की. लेकिन कार्यक्रम नहीं रुका. अगले ही दिन स्तंभ लेखिका नलिनी सिंह ने बूथ कब्जों पर एक सनसनीखेज रपट पेश कर दी.

सचाई तो यह है कि दूरदर्शन अधिकारियों ने चुनाव की घोषणा के साथ ही अपना खुशामदी राग बंद कर दिया था. दूरदर्शन के महानिदेशक शिव शर्मा कहते हैं कि तत्कालीन सरकार ने जब बोफोर्स शब्द पर रोक लगा दी तब उन्होंने विभिन्न पार्टियों के चुनाव प्रसारण की पांडुलिपियों को अपनी आपत्तियों के साथ चुनाव आयोग के विचारार्थ भेजा. नेहरू स्मारक व्याख्यान के लिए राजीव गांधी के भाषण का प्रारूप मांगकर शर्मा ने बहुत साहस का परिचय दिया. चुनाव के दौरान दूरदर्शन ने इंदिरा महिला योजना से संबंधित एक समाचार लेने से भी इनकार कर दिया.

जाहिर है कि आकाशवाणी और दूरदर्शन के अधिकारी सत्ता परिवर्तन की आस लगाए बैठे थे. इसीलिए नई सरकार के शुरुआती दिनों में यह कोशिश हुई कि उसे प्रसन्न किया जाए. दर्शकों ने समाचारों में एन.टी. रामराव के कार में बैठने के दृश्य देखे. सूचना और प्रसारण मंत्री पी. उपेंद्र ने, जो तेलुगु देशम के ही सदस्य हैं, दूरदर्शन अधिकारियों से कहा कि वे नई सरकार की छवि खराब करने की कोशिश न करें.

प्रधानमंत्री को दूरदर्शन पर दिखाने के नियमों में भी तुरंत भारी तब्दीली की गई. पहले राजीव गांधी के प्रातःदर्शन को कवर करने के लिए दो कैमरा टीमें हमेशा तैनात रहती थीं. उस हिसाब से वी.पी. सिंह तो कभी-कभार ही टीवी पर दिख रहे हैं. दूरदर्शन के पास प्रधानमंत्री की अमृतसर यात्रा से संबंधित डेढ़ घंटे की फिल्म थी लेकिन समाचारों में केवल दो मिनट ही दिखाया गया. निदेशक (समाचार) हरीश अवस्थी कहते हैं, "जरूरत से ज्यादा दिखाने की प्रथा खत्म हो चुकी है."

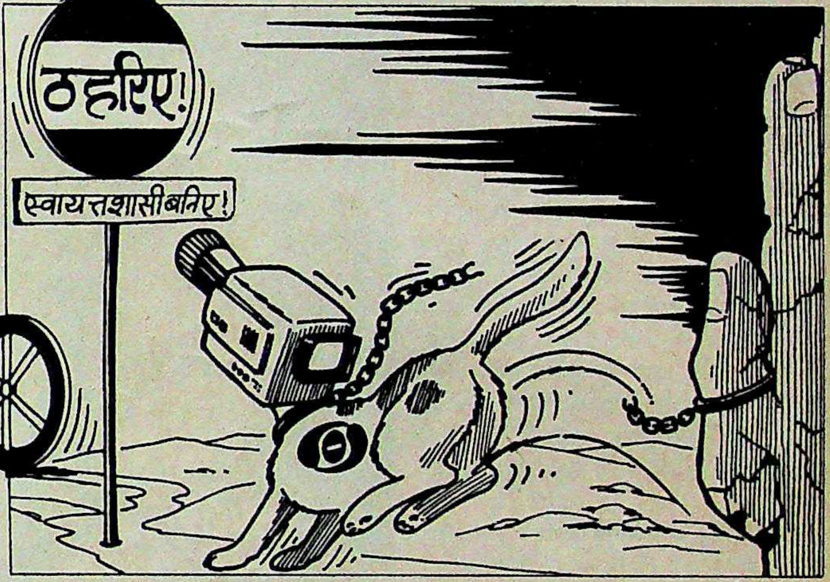

कार्टून: अजीत नैनन

यह सारा बदलाव कितने दिन टिक पाएगा, कहना बहुत मुश्किल नहीं है. मंत्रियों को समाचार कक्ष से फोन जाने लगे हैं कि उनका फलां समाचार प्रसारित किया जाए या नहीं. गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद से यह पूछे जाने पर कि उनकी बेटी के अपहरण का समाचार दिया जाए या नहीं, उनका टका-सा जवाब था, "कृपया अपने मंत्री से पूछें."

लेकिन हर नए मंत्री का रुख ऐसा नहीं था. उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के समर्थकों ने जानना चाहा कि ओमप्रकाश चौटाला के हरियाणा के मुख्यमंत्री बनने का समाचार शाम 7.30 बजे के बुलेटिन में क्यों नहीं दिखाया गया. जाहिर है खुलापन ही काफी नहीं है. जरूरत है ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन की जिसमें पेशेवर लोगों को काम करने की इतनी स्वतंत्रता हो कि वे दाएं-बाएं देखे बिना काम कर सकें और अच्छे काम के लिए शाबाशी पा सकें.

—डेविड देवदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सच'

रिश्तों की हकीकत

स्त्री-पुरुष संबंधों की तफतीश

विवाह के बाद अगर पति-पत्नी के संबंधों में खटास आ जाए और साथ रहना सजा मालूम होने लगे तो? तो शायद तलाक एक रास्ता हो सकता है फिर से एक नई जिंदगी की शुरुआत का. लेकिन जब बच्चे भी हो जाएं और उम्र जवानी के ज्वार को पार कर चुके, क्या तब भी संबंधों की खटास से निजात का रास्ता तलाक हो सकता है? शायद नहीं क्योंकि परिवार को तोड़ सकना तब न तो सरल लगता है और न ही श्रेयस्कर.

ऐसी स्थिति में विवाहित पुरुष का किसी और स्त्री की ओर आकृष्ट हो जाना बहुत स्वाभाविक है. इसी तरह विवाहित स्त्री, बढ़ती उम्र के बावजूद, घर में जवान होते बच्चों के रहते अगर अन्यत्र प्रेम संबंध, मात्र प्रेम नहीं, प्रबल शारीरिक संबंध और वह भी स्वेच्छा से, सिर्फ शारीरिक भूख के लिए नहीं, भावात्मक संतुष्टि के लिए स्थापित कर ले तो? इसे स्वाभाविक मानेंगे कि नहीं?

शायद यह बात आपको चौंका जाए और अगर चौंकाती है तो फिल्म निर्देशक, कथाकार और निर्माता विनोद पांडे अपने उस प्रयत्न को सफल मानते हैं जो उन्होंने अपनी नवीनतम फिल्म 'सच' में किया है. "सच यही है कि ऐसे संबंध हमारे समाज में हमेशा थे और हैं जिन्हें हमने हमेशा बड़े यत्न से छिपाकर रखने की कोशिश की है."

'सच' में विनोद पांडे तथा नई अभिनेत्री अनुराधा सावंत द्वारा प्रेम प्रसंगों का चित्रण कहीं ज्यादा उन्मुक्त, कहीं ज्यादा वासनायुक्त आवेगों से परिपूर्ण है.

यही वह बिंदु है जो 'सच' को विवाद के कटघरे में ला खड़ा करता है. क्या निदेशक की मंशा मानसिक उद्वेगों की आड़ में मात्र शरीर संबंधों का प्रदर्शन करने की नहीं है? पर अपनी फिल्म के पक्ष में विनोद पांडे दलील देते हैं, "मैंने चुंबन की जरूरत होने पर चुंबन, आलिंगन की जरूरत पर आलिंगन दिखाया है, क्या इसीलिए मेरी फिल्म 'पोर्नोग्राफिक' हो गई?"

'सच' कहानी है उस सफल और ईमानदार संपादक की जो मध्यमवर्गीय संस्कारों में, गरीबी में रहा और अपने संघर्ष के बल पर प्रतिष्ठित पद, मान-सम्मान पा सका.

विनोद पांडे और अनुराधा (ऊपर); (नीचे) अनुराधाः आत्मावलोकन

संघर्ष के दौर से ही पत्नी से दूरी बढ़ने लगी थी क्योंकि पत्नी यह समझने में असमर्थ थी कि वैभवशाली ससुर के होते हुए उनके इस इकलौते दामाद को संघर्ष की जरूरत क्या है? स्वाभिमान शब्द से अपरिचित, वह पति में पिता को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते ही मानसिक संतुलन खो बैठी और शायद इसीलिए दो किशोरवय बच्चों का यह पिता (विनोद पांडे) एक और विवाहिता में अपने जीवन की सार्थकता तलाशने लगा...

'सच' कहानी है उस युवती (अनुराधा सावंत) की जिसने प्रेम विवाह किया और धोखा खाया. जिसका पति उसी के बिस्तर पर, उसी की बहन को उसी की मौजूदगी में अपने साथ सुला लेने में नहीं हिचकिचाया. और यह युवती अपने इस बेवफा पति से अलग हो जाने के बाद, अपनी बेटी को होस्टल भेज देने के बाद, जिंदगी के खालीपन से घबराकर, अधेड़ावस्था में संपादक का मौन आमंत्रण स्वीकार कर बैठी.

क्या इन दो चरित्रों के जीवन की यह त्रासदी उस मूल विचार को ही कमजोर नहीं कर देती जो 'सच' सामने रखना चाहती है? अगर यह जिंदगी का एक सच है कि शादी के बाद भी स्त्री-पुरुष किसी तीसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं और यह आकर्षण सेक्स संबंधों तक पहुंच सकता है तो इसे कहने के लिए पति या पत्नी को खलनायिका बनाने की क्या जरूरत है? और एक न एक समय तो ऐसा आता ही है जब ये संबंध खुलने लगते हैं, तब क्या होता है? जीत किसकी होती है? 'सच' में यह विकट परिस्थिति सामने आई है एक हत्या के जरिए. फर्जी नाम से एक होटल में कमरा लेकर वहां पर्याप्त समय मिल लेने के बाद, वापस लौट रहे प्रेमी-प्रेमिका के देखते-देखते एक खून हो जाता है. उस वक्त तो इन दोनों को वहां से चुपचाप भाग आना ही श्रेयस्कर लगता है लेकिन हत्या के जुर्म में फंस जाता है होटल का सीधा-सादा मैनेजर.

हत्या के 'प्रमाणों' के साथ 'स्टोरी' छपने आती है इसी संपादक के पास जो निश्चित रूप से जानता है कि खून मैनेजर ने नहीं किया. हत्यारे को तो उसकी प्रेमिका पहचान भी सकती है लेकिन वह यह बात कहे तो कैसे कहे?

अब चुनाव दो चीजों के बीच है. या इस अन्याय को स्वीकारो और मूक बने रह कर व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को बचाए रहो, या फिर हिम्मत के साथ स्वीकार कर लो कि हां, शादी के दायरे के बाहर विकसित हो गए हमारे संबंध विवाह से कहीं ज्यादा सुदृढ़ हैं.

निर्देशक द्वारा किए गए फिल्म के अंत और फिल्म को दिए गए ट्रीटमेंट से हर कोई सहमत हो ही, यह आवश्यक नहीं होता. 'सच' फिल्म से आप सहमत हों या न हों, पर फिल्म कुछ सोचने को विवश तो करती ही है. मार-काट से भरपूर फिल्मों के दौर में क्या यही कुछ कम है?

—विनोद तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

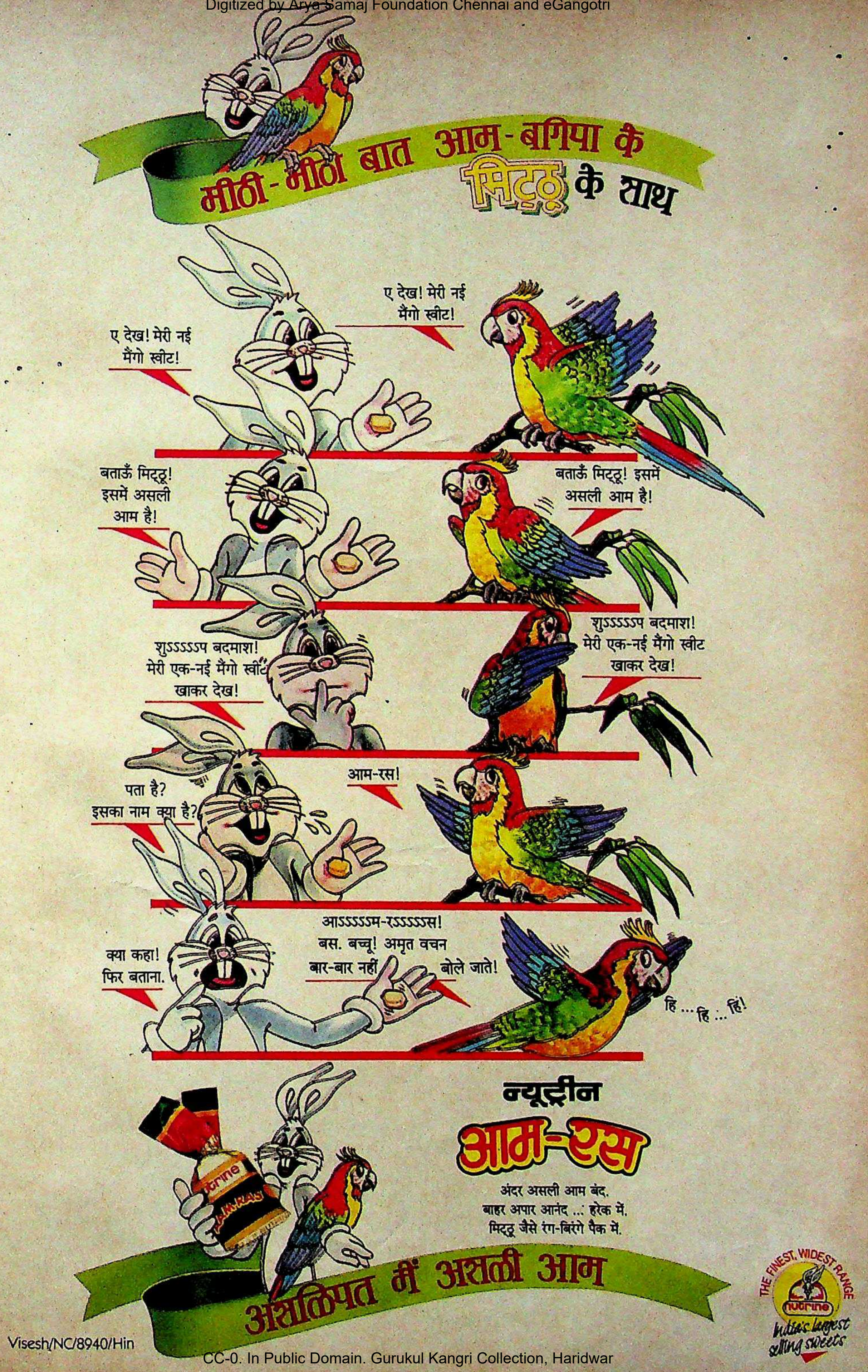

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार जीतने वालों को 'इंडिया टुडे' की ओर से बधाई

आपका फ़ैसला

इंडिया टुडे

चुनाव ● विशेष प्रतियोगिता

विवेकानंद कोटला, नई दिल्ली
एयर इंडिया की बिजनेस क्लास में दो व्यक्तियों के लिए न्यूयार्क भ्रमण

संजीव मार्कण्डेय, चण्डीगढ़
बुश रंगीन टी वी और वी सी आर

अहमद शकील, सहसपुर
ए सी एन रैन्यूट्रॉल इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर

आर सी अय्यर, बड़ौदा
काइनेटिक होन्डा डीलक्स स्कूटर

सनवर मल मील, कोलिदा
रैकॉल्ड वाशिंग मशीन

पूनम कुमारी, पटना
हीरो पुक सुपर डीलक्स मोपेड

गोविंद कुमावत,. अजमेर
गोदरेज 300 लिटर रैफ्रिजरेटर

लखी राम, नई दिल्ली
त्रिभुवन दास भीमजी ज़ावेरी, डायमंड घड़ी

के वी एस यजनारायणा, ठाणे
बीनाटोन हाई-फाई म्यूज़िक सिस्टम

वी आर सुधाकर, बम्बई
माइक्रोविन माइक्रोवेव ओवन कुकर

मोहनभाई डी मकवाना, अहमदाबाद
माइक्रोविन माइक्रोवेव ओवन कुकर

कनाई लाल चटर्जी, नई दिल्ली
हॉटलाइन कुकिंग रेन्ज

दिलीप गोखले, भोपाल
सिंगर मेरिट सिलाई मशीन

हेमन्त चन्द कपूर, नई दिल्ली
फिलिप्स डी आर 878 स्टीरियो टू-इन-वन

रमेश चन्द्र राठी, अजमेर
फोटोफोन हॉटशॉट कैमरा

गोष्ठाबिहारी कोले, हावड़ा
फोटोफोन हॉटशॉट कैमरा

पूनम विनोद गुप्ता, कोटा
फोटोफोन हॉटशॉट कैमरा

जॉन कुमार छेत्तरी, कालिमपोंग
फोटोफोन हॉटशॉट कैमरा

धर्मवीर सिंह, मुरादाबाद
फोटोफोन हॉटशॉट कैमरा

हम इंडिया टुडे की चुनाव विशेष प्रतियोगिता 'आपका फैसला' में भाग लेने वालों को धन्यवाद देते हैं. इसकी हमें कुल 61694 प्रविष्टियां मिलीं जिनमें 52716 अंतिम तिथि के पहले प्राप्त हुईं और उन्हें प्रतियोगिता के लिए उपयुक्त माना गया. इसमें भाग लेने वालों की भारी संख्या ने इस प्रतियोगिता को विशेष और महत्वपूर्ण दर्जा दिला दिया.

1010 सांत्वना पुरस्कार विजेताओं सहित सभी विजेताओं को जल्द ही डाक द्वारा सूचित किया जाएगा.

इंडिया टुडे

देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/394

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

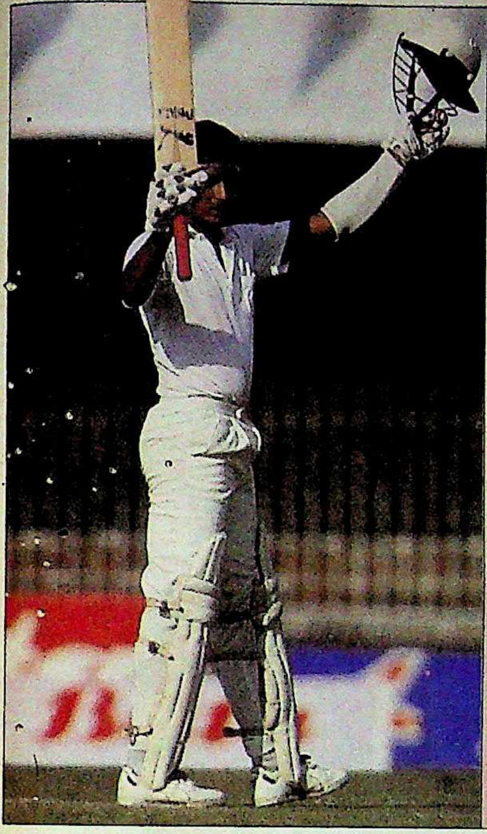

मांजरेकर (24) एक नए बैटिंग सुपरस्टार के रूप में उभरे हैं और वे कई वर्षों तक दूसरे नंबर पर खेल सकते हैं

◆

तेंदुलकर (16) ने अपनी प्रतिभा के अनुरूप प्रदर्शन किया. थोड़ा और अनुभवी होने पर वे विश्वस्तरीय बल्लेबाज बन सकते हैं

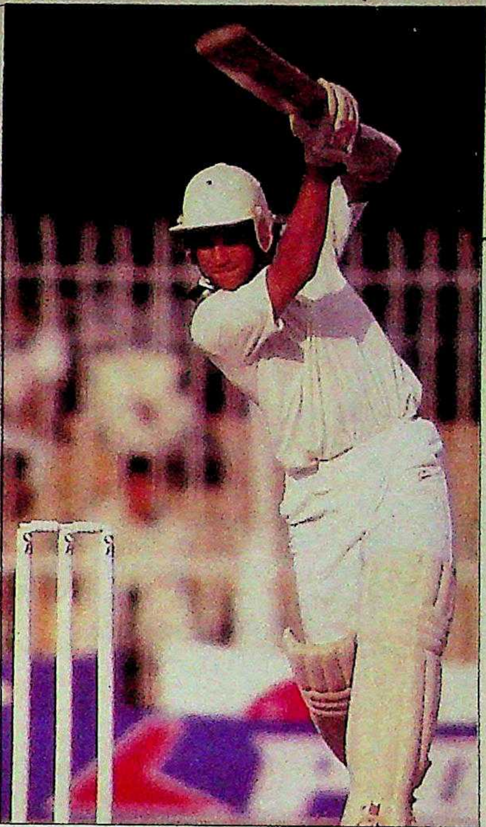

सभी फोटो: प्रदीप मंधानी

भारतीय क्रिकेट

बल्ला और गेंद फिर काबू में

नौजवानों की नई-नवेली टीम ने अप्रत्याशित जौहर दिखाया

अजीत वाडेकर और उनके खिलाड़ियों के 1970 के वेस्ट इंडीज दौरे के बाद यह पहला मौका था जब किसी भारतीय टीम को बहुत हल्के-फुल्के ढंग से लिया गया. महज 24 साल की औसत उम्र वाली यह टीम सबसे युवा और अनुभवहीन भारतीय टीमों में से एक थी. ज्यादातर क्रिकेट पंडितों का यही कहना था कि यह अधिक-से-अधिक एक या दो टेस्ट ड्रा करा लेगी.

लेकिन अब विचार बदल रहे हैं. कहा जा रहा है कि यह अब तक की सबसे दमदार और प्रतिभाशाली भारतीय टीमों में से एक है जो सशक्त टीम के रूप में विकसित हो सकती है. कप्तान कृष्णमाचारी श्रीकांत कहते हैं, "इस दौरे से टीम का कायाकल्प हो रहा है. एक साल में यह फिर दुनिया को हराने वाली टीम बन जाएगी." टीम के प्रबंधक चंदू बोर्डे कहते हैं, "इस शृंखला से भारतीय क्रिकेट की वापसी हुई है. हमारा प्रदर्शन उम्मीद से कहीं ज्यादा अच्छा रहा है, खास तौर पर युवा खिलाड़ियों के उम्दा खेल को देखते हुए."

भारतीय टीम ने अनुभव और फॉर्म की कमी को संघर्ष की भावना से पूरा किया. और फिर तटस्थ अंपायरों के कारण भी उनका मनोबल बढ़ा. टीम ने आत्मविश्वास से बल्लेबाजी की शुरुआत नहीं की लेकिन धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया और 24 वर्षीय संजय मांजरेकर टीम के संकटमोचन बन गए.

बल्लेबाजों के फॉर्म में आने के साथ मनोज प्रभाकर को अचानक पुरानी गेंद को विकेट पर घुमाने की कला याद आ गई और कपिल को जिस सक्षम जोड़ीदार की बेहद जरूरत थी, वह उन्हें मिल गया. रमन लांबा के घायल होने के कारण पहले टेस्ट में जगह पाने वाले मुहम्मद अजहरुद्दीन ने चौथे नंबर पर बढ़िया बल्लेबाजी की. नवजोत सिद्धू ने तेज गेंदबाजी का बहादुरी से मुकाबला किया लेकिन विकेट पर उनकी दौड़ ठीक नहीं रहीं. रवि शास्त्री भी ठीक ही खेले. और टीम के 'बेबी' कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर ने बाउंसरों की परवाह न करते हुए संकेत दे दिया कि वे उभरते हुए अच्छे खिलाड़ी हैं.

इस शृंखला में 113 रनों की औसत से 565 रन बटोरने वाले मांजरेकर न सिर्फ अंगद के पैर की तरह जमे रहे बल्कि पाकिस्तान के सबसे खतरनाक गेंदबाज वसीम अकरम के खिलाफ बार-बार स्ट्राइक अपने पास रखकर उन्होंने साबित कर दिया कि तेज से तेज गेंदबाज का वे बखूबी मुकाबला कर सकते हैं.

अजहरुद्दीन ने अपनी तकनीकी खामियों को पाकिस्तान के पूर्व कप्तान जहीर अब्बास की मदद से दूर किया. अब्बास कहते हैं, "कराची टेस्ट के बाद वे मेरे पास आए और कहने लगे कि बल्ला गलत तरीके से पकड़ने के कारण वे कामयाब नहीं हो पा रहे हैं." अब्बास ने उन्हें सही तरीके से बल्ला पकड़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कला सिखाई. नतीजा, अजहरूद्दीन रातोरात अपने फॉर्म में लौट आए.

इस दौरे से भारतीय क्रिकेट को सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि उसे एक नई शक्ल मिली है. उसकी बल्लेबाजी में निखार आया है. टीम में अपनी जगह के प्रति आश्वस्त होने के कारण युवा खिलाड़ियों का खेल निखरता गया. कुछ दिन पहले तक भारत को बुरी तरह हराने की बात करने वाले इमरान खां कहते हैं, "इस दौरे में इस भारतीय टीम का शानदार विकास हुआ है." पाकिस्तान के पूर्व विकेट कीपर वसीम बारी ने भविष्यवाणी की, "प्रतिभाशाली खिलाड़ी मांजरेकर और तेंदुलकर आपकी टीम में लंबे समय तक खेलेंगे."

पाकिस्तान के खिलाफ पहली बार खेल रहे युवा खिलाड़ियों को एक लाभ यह मिला कि उन पर इमरान के खिलाफ पुरानी विफलताओं का मनोवैज्ञानिक दबाव नहीं था. उप-कप्तान रवि शास्त्री ने कहा, "तेंदुलकर के खेलने की शैली तो देखिए! आप टेस्ट क्रिकेट में उसकी उम्र के किसी लड़के से ऐसे शॉट खेलने की उम्मीद नहीं करेंगे. वह प्रतिभाशाली है."

लेकिन समस्याएं बरकरार हैं. और कुछ समस्याओं की जड़ तो खुद रवि शास्त्री ही हैं जो 27 साल की उम्र में कपिल के बाद सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं. उनकी गेंदबाजी तो घटिया रही ही, उन्हें एक-एक रन के लिए भी संघर्ष करना पड़ा. इससे भी बदतर बात यह कि वे पूरी टीम से अलग-थलग ही रहे, हालांकि इसमें सिर्फ उन्हीं का दोष नहीं है. सब जानते हैं कि वरिष्ठ खिलाड़ियों में शास्त्री को लेकर असंतोष है. उनका मानना है कि क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड शास्त्री को कप्तानी के लिए तैयार कर रहा है. कई खिलाड़ी तो उन्हें टीम में, वह भी उप-कप्तान के रूप में बनाए रखने पर उंगली उठाते हैं जबकि मोहिंदर अमरनाथ को बेहतर प्रदर्शन के बावजूद टीम में नहीं रखा गया. शास्त्री भी अपनी कड़वाहट छिपाने की कोशिश नहीं करते. वे कहते हैं, "समाचार जगत के लोगों ने, जिन्हें मेरे खेल प्रदर्शन के बजाए मैदान के बाहर की गतिविधियों में ज्यादा दिलचस्पी है, मुझे बट्टे खाते में डालने की कोशिश की. लेकिन मैं टीम से हटने वाला नहीं. मैं अभी 8-10 साल और खेलूंगा."

पाकिस्तानी शृंखला के नतीजे को देखते हुए श्रीकांत को कप्तान बनाए रखना ही बुद्धिमानी होगी, भले ही उनका अपना प्रदर्शन खराब रहा हो. उन्होंने अपने सकारात्मक और मिलनसार रवैए से टीम के कायाकल्प में काफी मदद की है. टीम के एक सदस्य कहते हैं, "शायद धाकड़ खिलाड़ी कपिल के नेतृत्व में टीम का मनोबल थोड़ा और बढ़ा होता. लेकिन व्यक्तिगत प्रदर्शन के दबाव में वे भी टूट जाते."

श्रीकांत के खेल में लचीलापन है. उनके

आक्रामक और धारदार मध्यम तेज गेंदबाज के रूप में देर से लेकिन सही समय पर मनोज प्रभाकर के विकास से भोथरे भारतीय हमले में नया पैनापन आया है

मंजे हुए खिलाड़ी कपिल देव और अजहरूद्दीन फिर अपने फॉर्म में आ गए और वे टीम के लिए बहुत मददगार साबित हुए. उन्होंने युवकों को प्रोत्साहित किया और श्रीकांत को सहयोग दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नोविनो गोल्ड
एकमात्र पैनलाइट बैटरी मैटल जैकेट वाली जो प्रायः 100% लीकप्रूफ है.

नोविनो–पेनलाइट बैटरी के क्षेत्र में नए युग का प्रारंभ करता है... नोविनो गोल्ड के साथ जो ज़िंक क्लोराइड की नवीनतम तकनीक से बनी होती है.

अब आप अपने बेशकीमती उपकरणों के खराब होने की चिंता से छुट्टी पा सकते हैं. नोविनो गोल्ड प्राय : १०० % लीकप्रूफ है. यही एकमात्र पेनलाइट बैटरी है जिसकी मैटल जैकेट और वन-पीस थर्मो प्लास्टिक सील है ताकि आपको पक्का भरोसा रहे कि आपके उपकरण पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे.

एक के पैक में भरी शक्ति चार की !

ज़्यादा शक्ति की खपत वाले उपकरणों में नोविनो गोल्ड से परम्परागत पेनलाइट बैटरियों की अपेक्षा दुगनी शक्ति मिलती है. इन्हें आपके कैमरा, वॉकमेन, डिक्टोफ़ोन या अपने बच्चे के इलेक्ट्रॉनिक खिलौनों में इस्तेमाल कीजिए. और फ़र्क देखिए. नोविनो गोल्ड दुगनी चलती है या उससे भी अधिक: मसलन् कैमरा फ़्लैश में आपको ११० फ़्लैश मिलते हैं, सिर्फ़ ५० नहीं. कम शक्ति की खपत वाले उपकरण (जैसे ट्रांज़िस्टर, पॉकेट रेडियो, हियरिंग ऐड आदि) में नोविनो गोल्ड परम्परागत बैटरियों की भांति ही चलती है. यहाँ भी इसकी लीकप्रूफ गुणवत्ता के कारण नोविनो गोल्ड बेहतर और आदर्श बैटरी साबित होती है.

सिर्फ़ नोविनो ही कर सकता है ऐसा कमाल !

पहले हमने प्रस्तुत की नोविनो हाइपर और नोविनो स्पेशल. अन्य के मुकाबले ये दोनों ही आगे थीं. अब पेश है नोविनो गोल्ड.

आप तक नोविनो गोल्ड पहुंचाने के लिए हम जापान तक गए. ताकि वहाँ विश्व प्रख्यात नेशनल और पेनासोनिक उत्पादनों के निर्माता मात्सुशिता से नवीनतम ज़िंक क्लोराइड टेक्नॉलॉजी हासिल कर सके.

हमने इंदौर के पास रु. १६ करोड़ की लागत वाला नया संयंत्र भी स्थापित किया.

हमने कोशिशों में कोई कसर नहीं छोड़ी
हमने लागत की भी परवाह नहीं की.
उसी का नतीजा है कि आज हम आपको ऐसी बेमिसाल पेनलाइट बैटरी दे सके.

नोविनो गोल्ड ही अपनाइए.

National **नोविनो गोल्ड** पेनलाइट

टेक्नॉलॉजी की सही विजय

इस्टर्न जनपाल नेशनल लिमिटेड, नोविनो हाइपर, नोविनो स्पेशल और नोविनो गोल्ड के निर्माता.

Sista's-LNL-227/88-A HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी खिलाड़ी इस बात की ओर संकेत करते हैं कि वे स्थिर चित्त होकर नहीं खेल सकते. वे ऐसे बल्लेबाज हैं जिसका औसत 30 से कम ही रहता है. लेकिन गेंदबाज उनसे हमेशा खौफ खाए रहता है क्योंकि एक बार उनके जमने पर गेंदबाजों की लाइन और लैंथ बिगड़ जाती है.

अब जबकि चयनकर्ता और बोर्ड आगामी शृंखलाओं पर नजरें टिकाए हुए हैं, कुछ समस्याएं बरकरार हैं. अगले छह महीने में न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ दो शृंखलाएं और शारजाह में एकदिवसीय टूर्नामेंट खेलने जा रही यह टीम अधूरी दिखती है. जहां तक बल्लेबाजी का सवाल है, यह मजबूत दिखती है. इतनी मजबूत कि उसमें दिलीप वेंगसरकर को शामिल करने में भारी कठिनाई होगी. लेकिन टीम में मनोज प्रभाकर के आने के बावजूद गेंदबाजी अभी भी कमजोर है. श्रीकांत विकेट चटखाने की क्षमता रखने वाले गेंदबाजों की जरूरत पर बार-बार जोर देते रहे हैं. लेकिन चयनकर्ता ऐसे गेंदबाज लाएं कहां से? हालांकि उन्होंने युवा गेंदबाजों को आजमाने का दुस्साहस जरूर किया लेकिन पाकिस्तान जैसी कांटे वाली शृंखला में सलिल अंकोला और विवेक राजदान को उतारना अनुचित था. राजदान ने सियालकोट में तेज गेंदबाजों को मदद करने वाली विकेट पर अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन बेजान विकेट पर जानदार गेंदबाजी करने के लिए उन्हें अभी काफी कुछ सीखना होगा. चयनकर्ताओं ने भारतीय क्रिकेट के हित पर कोई ध्यान न देते हुए फिर पहले जैसी भूल की. उन्होंने श्रीकांत के इस अनुरोध को नजरअंदाज कर दिया कि सियालकोट टेस्ट के लिए एक अनुभवी तीसरा तेज गेंदबाज भेजा जाए.

एक शुभ खबर यह है कि लेग स्पिनर

कपिल देव और श्रीकांत की हौसला अफ्जाई से विवेक राजदान (19) ने तेज रफ्तार से घातक गेंदबाजी की और पाकिस्तानियों को छकाया

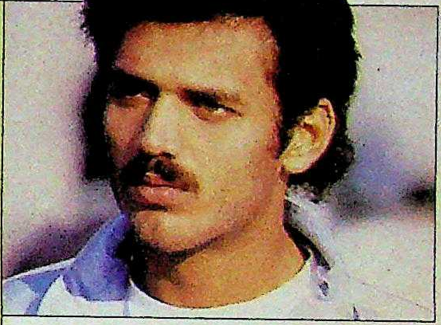

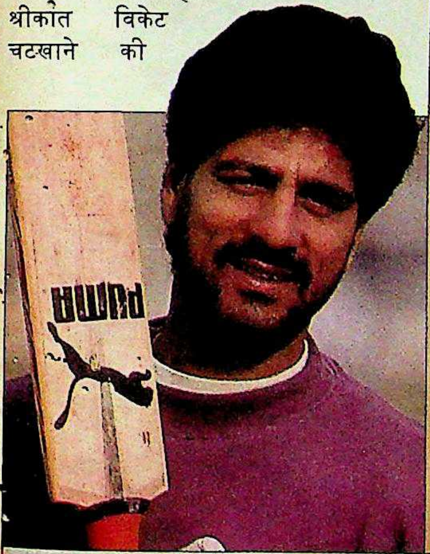

"इस दौरे से टीम का कायाकल्प हो रहा है. एक साल के भीतर हम फिर दुनिया को हराने वाली टीम बन जाएंगे"

'हमसे ऐसे खेल की उम्मीद नहीं थी'

*किसी भी भारतीय कप्तान के लिए पाकिस्तान का दौरा दुःस्वप्न सरीखा होता है. लेकिन पिछले महीने जब 28 वर्षीय कृष्णमाचारी श्रीकांत के नेतृत्व में युवा और अनुभवहीन टीम पाकिस्तान के लिए रवाना हुई तो उनसे किसी तरह की उम्मीद नहीं की गई थी. उनके साथ फीचर संपादक **शेखर गुप्ता** की बातचीत के कुछ अंश:*

● ***अपनी टीम के प्रदर्शन के बारे में आपका क्या विचार है?***

हम यहां बिना किसी तनाव के और जूझने के इरादे से आए. मेरा यह सिद्धांत रहा है कि किसी भी चीज को आसानी से हाथ से न निकलने दो. हमारी टीम पर किसी को भरोसा नहीं था. लोगों का कहना था कि पाकिस्तान में तो इसका भुर्ता बन जाएगा. हम जैसा खेले हैं उसकी किसी को उम्मीद नहीं थी.

● ***क्या इस दौरे से भारतीय क्रिकेट टीम का पुनर्गठन शुरू हो गया है?***

यदि आप कपिल और रवि शास्त्री को निकाल दें तो बाकी सभी खिलाड़ियों ने कुल मिलाकर 10-20 टेस्ट से ज्यादा नहीं खेले होंगे. आज मुझे छोड़कर हर खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रहा है. अजहर का फॉर्म में लौटना भारतीय क्रिकेट के लिए शुभ है. और फिर मांजरेकर का खेल भी तो देखिए. तेंदुलकर भी हर मैच के साथ अनुभव बटोर रहा है. इस हिसाब से तो हमारी टीम एक साल के भीतर दुनिया को हराने वाली टीम बन जाएगी.

● ***क्या टीम का प्रदर्शन इसलिए बेहतर रहा कि नए खिलाड़ियों में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने को लेकर किसी तरह का मनोवैज्ञानिक उलझन नहीं है?***

उलझनों का सवाल नहीं है. आखिरकार क्रिकेट आत्मविश्वास का खेल है. खिलाड़ी में 95 फीसदी आत्मविश्वास और 5 फीसदी दमखम चाहिए.

● ***आपको अपनी टीम में क्या खामी नजर आती है?***

विकेट झटकने की क्षमता. इसके लिए मैं स्पिनरों को दोष नहीं देता. उन्होंने अच्छी गेंदबाजी की है, लेकिन विकेट नहीं झटक पाए.

● ***क्या इसीलिए आपने एक अतिरिक्त मध्यम तेज गेंदबाज की मांग की थी? क्या बोर्ड ने इस अनुरोध को ठुकराकर आपके साथ अन्याय किया?***

उम्मीद तो थी ही कि पाकिस्तानी सियालकोट में हरा-भरा विकेट बनाएंगे. अगर हमारे पास एक और तेज गेंदबाज होता तो वे ऐसा विकेट बनवाने से पहले कम-से-कम दो बार सोचते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• नरेंद्र हीरवाणी के घुटनें का ऑपरेशन ठीक हो गया है और वे चयन के लिए संभवतः उपलब्ध रहेंगे. हो सकता है, वे 1988 जैसा करिश्मा फिर न दिखा पाएं जब उन्होंने मद्रास में एक के बाद एक कैरिबियाई खिलाड़ी को पैवेलियन भेज दिया था. बावजूद इसके भारत को उनके जैसे आक्रामक गेंदबाज की जरूरत है.

आखिर क्या वजह है कि भारतीय क्रिकेट में अब अच्छे स्पिनर भी पैदा नहीं हो रहे हैं? मोहिंदर अमरनाथ इसके लिए भारतीय विकेटों को दोषी ठहराते हैं. वे कहते हैं, "यहां के विकेट रन से भरे हुए हैं. इसमें गेंदबाजों के लिए कुछ नहीं होता." हालांकि कपिल अभी भी अच्छी गेंदबाजी कर रहे हैं लेकिन मैदान में उनसे जिस तरह से गेंदबाजी कराई जा रही है, अधिक-से-अधिक वे तीन-चार साल तक ही चल पाएंगे. अगर बोर्ड ने जल्द से जल्द नए गेंदबाज तैयार नहीं किए तो भारतीय क्रिकेट संकट में पड़ जाएगा. क्रिकेट को बल्लेबाजों का खेल कहना भले ही फैशन हो लेकिन मैच जिताने में गेंदबाजों की भी अहम भूमिका होती है. —शेखर गुप्ता, पाकिस्तान में

विदेशी टीमें

ऊब से उबरने के लिए

पाकिस्तान का दौरा करने वाली विदेशी क्रिकेट टीमें यहां की बोरियत से परेशान हो जाती हैं क्योंकि यहां सामाजिक मेलजोल का अभाव है.

सो, वे मनोरंजन के नए-नए उपाय ईजाद करती रहती हैं. इंग्लैंड की टीम कच्छा-बनियान में पार्टियां करती नजर आती है, तो ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी एक-दूसरे के गुसलखानों में पटाखे छोड़ते नजर आते हैं. यही नहीं, होटल परिसर में होने

पाकिस्तान में बोरियत से ऊबे भारतीय खिलाड़ियों और पत्रकारों ने एक संडे क्लब बनाया जिसके कायदे-कानून बिलकुल निराले थे

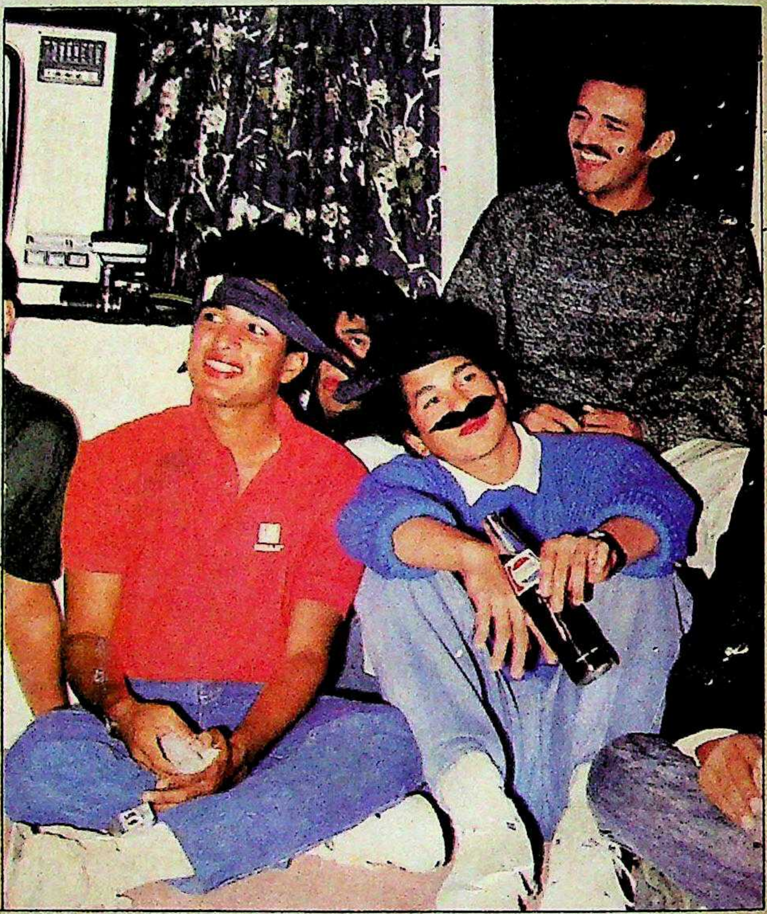

वाली शादी की पार्टियों में वे बियर की बोतलों से रॉकेट भी छोड़ते नजर आते हैं. वेस्ट इंडीज के खिलाड़ी तो मनहूसियत से बचने के लिए एक पर एक इतने जाम चढ़ा गए कि यहां फिर कभी न आने की कसमें खा बैठे.

सुरक्षा की समस्या और टीम के अनुशासन के चलते कोई भी खिलाड़ी अकेला कहीं घूम-फिर नहीं सकता. खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ लेने के लिए होटल में न तो प्रशंसकों की भीड़ होती है और न ही हाथ मिलाने को उत्सुक किशोरों का हुजूम. कप्तान श्रीकांत कहते हैं, "अगर आपका लड़का पढ़ता-लिखता न हो तो उसे पाकिस्तान भेज दीजिए. वहां उसके पास कोई काम नहीं होगा."

बोरियत से ऊबे भारतीय खिलाड़ियों और खेल पत्रकारों ने पिछले पखवाड़े 'संडे क्लब' का गठन किया. भारतीय खिलाड़ियों और पत्रकारों ने हर रविवार या टेस्ट के विश्राम के दिन आपस में मिलने का फैसला किया. इस क्लब के कायदे-कानून कलकत्ता के क्रिकेट लेखक एम. पाथेरया ने तैयार किया. मसलन, टाई सिर पर बांधनी होगी, लिपस्टिक का भरपूर इस्तेमाल किया जाएगा, नकली मूछें और दाढ़ियां लगानी होंगी. इन नियमों को तोड़ने वालों पर जुर्माना करने का अधिकार 'एक सदस्यीय कंट्रोल बोर्ड के मुखिया' डिकी रत्नागर को दिया गया.

मांजरेकर, तेंदुलकर और राजदान

और सचमुच किसी खिलाड़ी ने इन नियमों को नहीं तोड़ा. श्रीकांत सफेद दाढ़ी लहराते हुए, कपिल विश्वामित्र बनकर और किरण मोरे काला विग तथा लिपस्टिक लगाए आए. मांजरेकर तो यदि कमरे के बाहर आ जाते तो सारा पाकिस्तान उन पर कुरबान हो जाता. उन्होंने अपने गालों पर लिपस्टिक पोत रखी थी और सारे खिलाड़ियों में उनका चुंबन लेने के लिए होड़ मची थी. सचिन तेंदुलकर नकली मूंछ लगाए हुए थे. भारतीय खिलाड़ियों में फिर पहले जैसा उत्साह दिख रहा था. —शेखर गुप्ता, लाहौर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपेरे

पर जिंदगी नहीं झूमती

न अपना पेट भर पाते हैं और न सांपों का

सदियों तक विदेशों में भारत की यही छवि रही है. माना जाता था कि यह संपेरों का देश है जहां पिटारे से निकलते नाग के आगे बीन बजाता, छरहरे कद का व्यक्ति हर कहीं दिख जाएगा. पर भारत की यह छवि अब सिर्फ अधकचरी जानकारी वाले कुछ पर्यटकों के दिमाग में ही बची है. कभी हजारों लोगों की रोजी-रोटी चलाने वाले इस पेशे में वैसा आकर्षण नहीं बचा है और इसमें लगे लोगों की संख्या तो अब धीरे-धीरे कम होती जा रही है.

हर जगह इसका आभास मिलता है. फरीदाबाद के तिलपत गांव में बसे संपेरों के 40 परिवारों के मुखिया श्यामलाल को पांच लोगों के अपने परिवार की गुजर-बसर अब मुमकिन नहीं लगती. ऐसी माली हालत के चलते वे अब शादियों में बीन बजाने और दूध बेचने को बाध्य हैं.

श्यामलाल की तरह ही कई दूसरे संपेरे भी जिंदगी की इसी मजबूरी के चलते अपना पुश्तैनी धंधा छोड़कर नए काम-धंधे ढूंढ़ने लगे हैं. वे दिन गए जब संपेरे की बीन सुनकर बच्चों का हुजूम इकट्ठा हो जाया करता था और बीन की धुन पर नागिन का नाच देखता था. फिल्मों में संपेरों के करतब देखने वाले पश्चिमी पर्यटक भी अब इसमें दिलचस्पी नहीं लेते क्योंकि भारत अपनी पुरानी छवि बदलने में लगा है.

रोष से भरे श्यामलाल कहते हैं, "सांप नचाना एक दुर्लभ कला है और इसकी रक्षा की जानी चाहिए. पर क्या हमारे पास कोई रास्ता बचा है? पैसे की तंगी के अलावा अब इस धंधे की कोई इज्जत भी नहीं है." अक्सर उनसे भिखारियों जैसा बरताव किया जाता है. सांप नचाने के पूरे प्रदर्शन के बाद कुछ तमाशबीन चंद सिक्के फेंक देते हैं और अधिकांश तो चुपचाप वहां से खिसक लेते हैं.

पर्यटक स्थलों पर सांप नचाने का मजमा जुटाने वालों के अनुभव भी काफी तल्ख हैं. तमाशबीन पैसा देने से तो कतराते ही हैं, पुलिस भी उनसे समाज विरोधी तत्वों जैसा बरताव करती है. कई बार तो सांपों का नृत्य चल ही रहा होता है कि पुलिसवाले उन्हें बीच मजमे से खींच ले जाते हैं.

लोगों का बरताव तो और भी कहर ढाने वाला है. आजकल एक संपेरे का आम अनुभव यही है कि जब वह पिटारी खोलकर सांप निकालता है तो कुछ भीड़ जुट जाती है पर जल्द ही लोग वहां से खिसक लेते हैं. 30 वर्षीय फूलनाथ कहते हैं, "कभी-कभी तो मैं और मेरे सांप ही वहां रह जाते हैं. ऐसे समय में मेरे आंसू निकल पड़ते हैं. इसलिए नहीं कि आमदनी नहीं होती बल्कि यह तो मेरी और मेरे धंधे की बेइज्जती है."

पर इस समुदाय में सबसे बड़ा बदलाव नई पीढ़ी के नजरिए में आया है. नई पीढ़ी पुश्तैनी काम को छोड़कर अब ज्यादा इज्जत और ज्यादा पैसे वाले धंधों की ओर भाग रही है. 36 वर्षीय महेंद्रनाथ अब दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) में नौकरी करके 1,400 रु. प्रति माह कमा रहे हैं. खूबराम की महत्वाकांक्षा ज्यादा ऊंची थी. उन्होंने पुश्तैनी धंधा छोड़कर शादी-ब्याह के लिए नगीना डिस्को बैंड नामक बैंड टोली बना ली.

महेंद्रनाथ और खूबराम दोनों ही इस बदलाव से खुश हैं. महेंद्रनाथ कहते हैं, "बुजुर्गों ने शुरू में भला-बुरा कहा पर अब वे खुश हैं." खूबराम का घर हालांकि कच्चा है पर गांव में सबसे अच्छा है. यहां तक कि उसमें टेलीविजन भी लगा है. वे कहते हैं, "अब मैं अपनी बिरादरी के लोगों को रोजगार दे सकता हूं. मैं संपेरा होने की दुर्दशा भोग चुका हूं और इस

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

संपेरों के खानदान में जन्मे महेंद्रनाथ ने अपना पुश्तैनी पेशा छोड़कर दिल्ली परिवहन निगम की नौकरी करना बेहतर समझा

महत्वाकांक्षी खूबराम ने भी अपना पारिवारिक पेशा छोड़ दिया है और शादी-ब्याहों में बीन बजाने वाली बैंड पार्टी बना ली है

CC-0 ... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दलदल से निकल गया."

पर उनकी बिरादरी के कई लोग अभी इस दलदल में ही जी रहे हैं. सांप पकड़ने का काम ही काफी मुश्किल, खतरनाक और समय बरबाद करने वाला है. फूलनाथ कहते हैं, "पिछले पांच साल में सांप पकड़ते वक्त हमारे तीन लोग सांप के काटने से मर गए. क्या यह काम-धंधा जिंदगी को दांव पर लगाने के लायक है?"

जाहिर है, नहीं. दरअसल सांपों को पालने की मौजूदा लागत से तो लगता है कि यह धंधा घाटे का सौदा है. एक मजमे में 10 रु. से ज्यादा हासिल नहीं होते. बहुत किस्मत वाले ही हफ्ते में दो या तीन मजमे जुटा पाते हैं और उनकी मासिक आय 200 रु. से ज्यादा नहीं होती. सांप महंगे पड़ते हैं. उन्हें मांस, अंडे और दूध पर पालना होता है. यानी उन पर हर महीने करीब 600 रु. का खर्च आता है. श्यामलाल बताते हैं, "हमारे बच्चों को कभी भी पीने के लिए दूध नहीं मिलता पर सांप हमारे बच्चों से भी ज्यादा खुशकिस्मत हैं."

अक्सर दिन भर की मशक्कत के बाद संपेरे महज एक कटोरा भर आटे के साथ ही घर पहुंचते हैं, क्योंकि कई गांवों में अभी भी सपेरों को आटा देने का रिवाज है. फूलनाथ के छोटे भाई 16 वर्षीय चंदर ने साइकिल मरम्मत की दुकान खोल ली है. वह कहता है, "बताइए, हम सिर्फ रोटियां ही खाते हैं? क्या हमें सब्जी और दाल नहीं चाहिए." डूबती नाव को छोड़ने का विचार जोर पकड़ता जा रहा है. खूबनाथ का बेटा, 33 वर्षीय रोहतास कुमार दिल्ली पुलिस में कांस्टेबल हो गया है. वह कहता है, "मैं दर्द और शर्म से भरी खानाबदोशों की जिंदगी नहीं जीना चाहता था."

कई दूसरे समुदायों की तरह संपेरों को भी विकास की कीमत चुकानी पड़ रही है. भारत की कई परंपरागत कलाएं—बाजीगरी, भालू और बंदर नचाने का खेल तथा हस्तकलाएं भी इसी संकट से गुजर रही हैं. इसकी बड़ी वजह भारतीयों का बदलता नजरिया भी है. शहरों की तेज रफ्तार जिंदगी में कम ही लोगों के पास इतना वक्त है कि वे रुककर सांप का नाच देख सकें. और पहले जो बच्चे इसमें दिलचस्पी लिया भी करते थे, अब वे वीडियो खेलों, कार्टून फिल्मों, कॉमिक्स और रूबिक क्यूब में ही उलझे रहते हैं. ज्यादातर बच्चे संपेरे के खेल को पुराने फैशन की चीज कहकर नकार देते हैं. यह ऐसी चीज नहीं है जिसे देखकर वह स्कूल में इसके बारे में शेखी बघार सके.

दो जून रोटी जुटाने की मजबूरी ने संपेरे के भाई चंदर को साइकिल मरम्मत की फुटपाथी दुकान खोलने पर मजबूर कर दिया

रोहतास कुमार ने दिल्ली पुलिस में नौकरी करके ज्यादा सम्मानजनक और बेहतर आमदनी वाली नौकरी ढूंढ ली है

इस दुर्दिन के लिए फिल्मों को सबसे ज्यादा जिम्मेदार ठहराया जाता है. तीन साल तक संपेरे का धंधा करने के बाद 23 वर्षीय ओमी नारायण सीमा सुरक्षा बल में कांस्टेबल हो गया. वह कहता है, "टेलीविजन और फिल्मों ने नएपन की कला चुरा ली है. हमारी ही कला वे ज्यादा तड़क-भड़क से दिखाते हैं." और संपेरे इसका मुकाबला नहीं कर सकते. बंसीलाल जैसे खुशकिस्मत संपेरे ही फिल्मों तक पहुंचने में कामयाब हुए. वे बताते हैं, "बंबई की फिल्मों में तीन महीने काम करने के मुझे 8,000 रु. मिले."

तबाही जारी है पर इस दौर में भी कुछ लोगों ने अपने धंधे में जमे रहने की अदम्य ताकत दिखाई है. ऐसे ही एक व्यक्ति हैं छोटूनाथ. वे कहते हैं, "मुझे अपनी कला से प्रेम है. मैं सांपों से प्यार करता हूं और मैं इन्हें कभी नहीं छोड़ूंगा. अगर हर कोई इस धंधे को छोड़ दे तो वह खत्म नहीं हो जाएगा?" पर छोटूनाथ जैसे लोग भी अब इक्का-दुक्का ही बचे हैं. कोई सहारा न होने की वजह से भारत की यह सबसे रंगीन कला लुप्त होने की कगार पर है.

—शमिलू चंद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078593

कल्पना करें अगर पुमाप्लाई को २००° सेंटीग्रेड तापमान में एक घंटे तक ओवन के भीतर रख दिया जाये तो क्या होगा ?

इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा।
जी हां – कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

पानी १००° सेंटीग्रेड पर उबलने लगता है ।

पुमाप्लाई इससे कहीं अधिक–बहुत अधिक तापमान सहन कर सकता है ।

क्योंकि यह १००% हीट रेज़िसटेंट है ।

जरा गौर कीजिये, आपके किचन केबिनेटों के लिए यह कितना उपयुक्त प्लाइवुड है जो कि चूल्हा, प्रेशरकूकर, टोस्टर और रोज़-२ तलने व रसोई बनाने के काम से पैदा होने वाली गर्मी का लगातार मुकाबला करते रहते हैं ।

सिर्फ यही नहीं, पुमाप्लाई दीमक प्रतिरोधक भी है ।

इसीलिए पुमाप्लाई आपके घर और ऑफिस के लिए एक आदर्श प्लाइवुड है । जहां कहीं भी टिकाऊपन चाहिए, वहीं है इसकी ख़ास जरूरत ।

याद रखिये, अगली बार फर्नीचर बनवाते समय ड्यूरो-पुमाप्लाई ही लें । तब आप २००% निश्चिंत होकर कह सकेंगे कि यह वही प्लाइवुड है जो सही माने में जीवन भर साथ निभाने में सक्षम है ।

DURO पुमाप्लाई (TM)

ड्यूरोबोर्ड निर्माता का
एक अनोखा उत्पादन

जीवनभर साथ निभाये !

...ता प्लाइवुड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
...कत्ता • दिल्ली • बम्बई • अहमदाबाद • मद्रास • बंगलौर

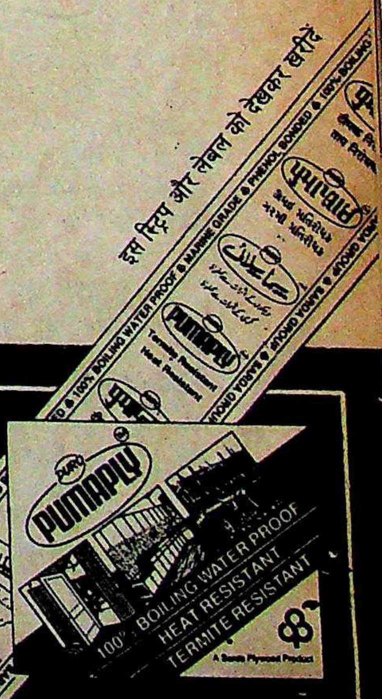

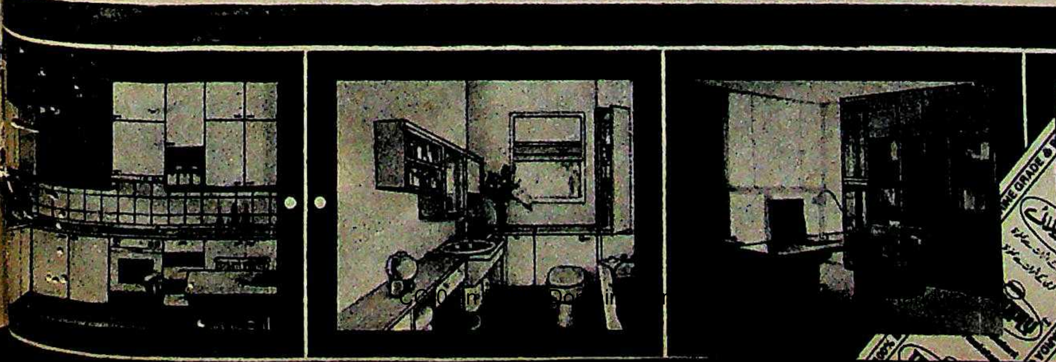

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत मिश्र

रिमोट कन्ट्रोल

आजाद हिंदुस्तान में पल-बढ़कर खड़ी हुई पहली पीढ़ी के प्रतिनिधि कथाकारों में गिने जाने लायक नवनीत मिश्र की लगभग दो दर्जन कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं. 'मणियां और जख्म' कथा संग्रह के लेखक की प्रस्तुत कहानी बदलते हुए सामाजिक मूल्यों के आगे भोथरी होती संवेदनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण है.

"आ गए? आओ." बाबू ने उस दिन बस स्टैंड के इसी मोड़ पर कहा था. मुझे देखते ही कुछ बोलने से पहले मुस्करा देते थे. बाबू की वह खास अंदाज की मुस्कान स्वागत करती थी जैसे कब से राह देख रहे हों. और फिर वह आत्मीय-सा "आ गए? आओ." इतने छोटे से संबोधन में जैसे वे कितना बड़ा सत्कार कर देते थे.

जाड़ों की वह एक ठिठुरती सुबह थी. अपने गुनगुने अंक में बाबू ने मुझे घेरते हुए कहा था, "मैं भी नवें दर्जे में था जब मेरे पिता नहीं रहे थे." नवें दर्जे में अनाथ होने की समानता जैसे कहीं ढाढ़स बंधा गई थी. उनका वह एक वाक्य जैसे सिरिंज बनकर अंदर घुमड़ रही मेरी असहाय छटपटाहट को खींच ले गया था. श्मशान में भी मुझे साथ लिये रहे—"तुम्हारे पिता मेरे अच्छे मित्र थे, कोई जरूरत पड़े तो संकोच न करना.." उनके गांधी आश्रम के मोटे, भूरे कोट का रंग आज भी याद है. नेप्थिलीन की वह गंध भी जैसे आज तक ताजा है जो उनसे लिपटे रहने के कारण मेरी नाक में बस गई थी. उनके और मेरे बीच 'अंकल' का अधकचरा या 'बाबूजी' का औपचारिक संबोधन रह ही नहीं सकता था. भुवन की तरह मेरे लिए भी वे सिर्फ बाबू ही थे.

बाबू के घर का सदस्य बन जाने के पीछे फिर भुवन भी एक कारण बन गया. वह भी नवें दर्जे में था. बाबू जिस स्कूल में पढ़ाते थे, भुवन भी उसी में पढ़ता था. मैं दूसरे स्कूल में था. अक्सर इतवार का दिन भुवन के घर पर ही बीतता. बाबू हम दोनों को साथ बिठाते. स्कूली पढ़ाई की दिक्कतें तो दूर करते ही, जीवन का संस्कार देते.. हम में नई तरह की संवेदनाएं पिरोते.

'जहां न जाएं वही अच्छा और जहां न खाएं वही अच्छा' जैसे स्वाभिमान के मूल सूत्र हमारे हाथों में सधाते बाबू एकदम सहज रहते. कोई गुरुडम का भाव नहीं, कोई अतिरिक्त गंभीरता नहीं. दिल-दिमाग की खिड़कियां खुली हों तो बाबू से हर समय कुछ लिया जा सकता था. दरवाजे पर सवाल कर रहे एक भिखारी को मैंने कोई और घर देखने को कहा था एक बार, पर बाबू ने उसे रोक लिया था. भुवन से एक कटोरा आटा मंगवाकर खुद उसकी झोली में डाला और उसके जाने के बाद कहने लगे थे, "मांगना किसी को अच्छा नहीं लगता. देखो तो हमें ईश्वर ने कितना दिया है कि हम देने का सुख उठा सकते हैं." मेरे प्रतिवाद करने पर बोले थे, "हमारे पास कितना भी कम क्यों न हो, उससे तो ज्यादा ही है न?" और फिर निश्छल हंसी की एक धूप थी जो उनके चेहरे को कम, आखों को ज्यादा दप-दप बनाए रखती.

"अरे बेटा आया है, कुछ खिलाओगी नहीं इसे?" मेरे घर पहुंचते ही बस जरा देर बाद ही बाबू आवाजें लगा-लगाकर अम्मा को हाथ का काम छोड़ने पर विवश कर देते. और अम्मा भी क्या कम वत्सली थीं? कृत्रिम खीझ के बीच स्नेह जैसे फूटता-सा लगता. अम्मा और बाबू के लिए मैं पांच वर्षों बाद जैसे अभी कल ही अनाथ हो गया निरीह बालक था. उठकर चलने लगता तो बाबू के मुंह से आशीर्वाद की धाराएं फूट पड़तीं "यशस्वी हो, खूब जियो, सुखी रहो, परम पिता तुम्हें आनंद दें, खूब बड़े हो जाओ, अपनी मां के अभिमान बनो..." लंबा आंगन पार करके मुख्य द्वार तक आते-आते बाबू के आशीर्वचन तब तक झरते रहते जब तक मैं दिखता रहता. कभी-कभी लालच लगता कि उनकी आंखों से ओझल होने से पहले ही रुक जाऊं, सुनता रहूं... जुड़ाता रहूं.

मैं और भुवन, पत्थर के बेडौल टुकड़ों की तरह बाबू के हाथों में थे. उनके पास अनुशासन और मूल्यों की छेनी-हथौड़ी थी जिनसे वह एक कुशल शिल्पी की तरह हमें गढ़ते रहे. जिस दिन भुवन प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में पास हुआ. मैं जानता हूं बाबू उस दिन पूरी तरह खुश नहीं हुए थे. किसी लालची जुआरी की तरह वह अपनी दूसरी गोटी भी हरी होती देखना चाह रहे थे. उनकी पूरी खुशी जैसे उसी दूसरे दांव पर टिकी हुई थी. बैंक की प्रोबेशनरी अधिकारी की परीक्षा में मेरे भी सफल हो जाने पर बाबू खुशी से छलक पड़े थे. अपने मनोभावों को मुझ तक पहुंचाने के लिए वे कितनी देर तो मेरा हाथ अपने हाथों में दबाए बैठे रह गए थे. उस एक स्पर्श में बाबू कितना कुछ कह गए थे. जीत की खुशी... भविष्य के लिए आशीर्वाद.. और जल्दी...

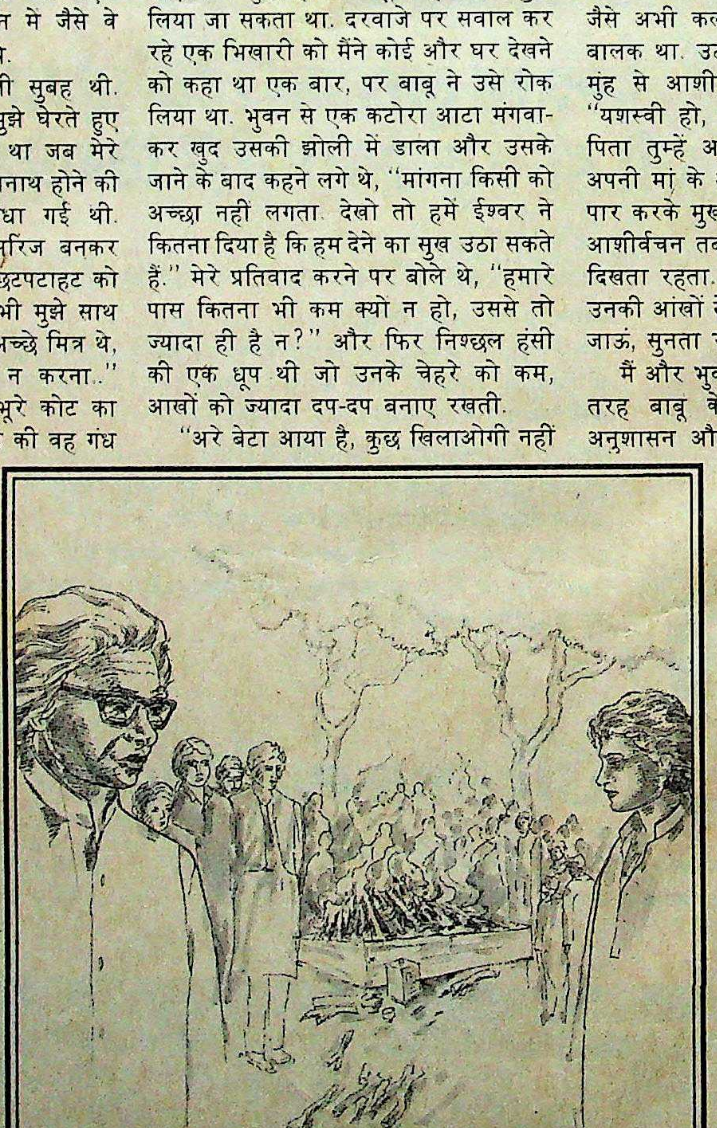

सभी रेखाचित्र जिया फ़ैज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले विलगाव की टीस... सब कुछ.

हम दोनों अपनी ट्रेनिंग शुरू होने की ...ता की प्रतीक्षा में थे. पास-पड़ोस में ...हरण के तौर पर गिनवाए जा रहे हम ...ं अब ज्यादातर बाबू के ... ही बैठने लगे थे. वे ...को लोभ और बेइमानी ... भूलभुलइया से बचते ...ने के लिए उन रास्तों का ... बताते जिनको पकड़कर ... अपने को दमघोंटू मौत ... बचा सकते थे. हमारे ...र शीतनिद्रा में पड़े ...तोष के विषधर के दांत ... समय रहते तोड़ देना ...हते थे, ताकि आगे वह ...भी जागे भी तो इसने ...यक न रह जाए.

उस दिन ट्रेनिंग पर जाने ... कागज लिये मैं इसी बस ...ड पर उतरा था. कहीं से लौट रहे थे, ...नक सामने आ गए—"आ गए? आओ." ... हाथ में. लंबा लिफाफा देखकर उनकी ...खों में चमक तो आई पर होंठ हमेशा की ...रह मुस्करा नहीं सके. मुझे अपने पास ...चकर सीने से लगा लिया. दमे की जकड़ी सांस, सों-सों की आवाज के साथ आज ... कानों में बज रही है.

और आज ट्रेनिंग और पहली पोस्टिंग में ...र्यभार ग्रहण करके एक साल बाद लौट ...या हूं. एकाएक भूल ही गया था कि बाबू ...गए एक साल हो गया है. लगता रहा जैसे ...हीं कहीं, किसी मोड़ पर, ...लते-फिरते. किसी से ...तियाते मिल जाएंगे. अभी ...हीं से सामने आ जाएंगे, ...गे— "आ गए? आओ."

...बू के न रहने की खबर ... भुवन के पत्र से ट्रेनिंग दौरान ही मिली थी. उस ...मय सिवाय जवाब में एक ... डाल देने के मैं और कुछ ...कर सका था. और अब ...ट रहा हूं, दूसरी बार ...नाथ होकर.

बस स्टैंड से घर का ...सला तय करते हुए मुझे ...की अठन्नी भर की ...दी याद आती रही. भुवन ... बाबू का न रहना कैसे ...हा होगा? उनके न रहने ... उस घर के अर्थ ही बदल ...होंगे. बाबू के न रहने के ... भुवन का पहली बार ...ता होगा. सारा कुछ फिर ताजा हो उठेगा. बाबू के साथ जिये हुए दिन, उनकी बातें—जिनकी साझेदारी बस हम दोनों की है—फिर सामने आकर खड़ी हो जाएंगी... और बाबू के चले जाने की चोट,

उनके रुतबे की कहानियां तो वह कमरा ही कह रहा था जिसमें कपड़ा लगी आराम कुर्सी की जगह चमड़ा मढ़ा हुआ सोफा था. बाबू के आदर्श पुरुष विवेकानंद के चित्र की जगह आंखों में पनियल लकीर लिए एक औरत का बड़ा-सा चेहरा था. चटाई, जिस पर बाबू बैठा करते थे, अब कालीन को गर्द से बचाने के लिए उसके नीचे बिछा दी गई

जिस पर समय का हल्का खुरंड आ चुका है फिर दुख जाएगी..

क्या कहूंगा? कौन से शब्द लाऊंगा जो हमें उस मारक स्थिति में डाले बिना निकाल ले जा सके.. "धीरज रखो.." जैसे वाक्य कितने अर्थहीन लगते हैं. और फिर धीरज कौन किसको बंधाएगा? भुवन की हानि क्या सिर्फ इसलिए ज्यादा मान ली जाएगी कि उसका बाबू के साथ रक्त संबंध है?

"अमां तुम कब टपके?" भुवन ने मुझे देखते ही चहककर पूछा.

"सबेरे ही आया हूं"—मैंने सहज रहने की कोशिश करते हुए कहा.

"और सुनाओ.." भुवन ने ऐसे कहा जैसे हम लोग घंटों बातें करके थक चुके हों. और सुनाने या और कुछ पूछने के लिए मेरी शब्दों की तलाश अभी जारी थी.

भुवन बता रहा था कि ट्रेनिंग पूरी करने के बाद कैसे एक तहसील की पूरी जिम्मेदारी वह कुशलता से निभा रहा है. कैसे उसने जिलाधिकारी को ऐसा प्रभावित कर लिया है कि नया होने के बावजूद उसके बगैर वह एक कदम नहीं चलते. अर्दली, जीप और जिले में अपने रुतबे की बातें वह न भी बताता तो मैं जान सकता था.

भुवन के रुतबे की कहानियां तो वह कमरा ही कह रहा था जिसमें हम दोनों ने बाबू के साथ अनगिनत शामें बिताई थी. उनके जमाने की कपड़ा लगी वह लेटी-सी आराम कुर्सी अब वहां नहीं थी. उसकी जगह चमड़ा मढ़ा हुआ सोफा रखा था. बाबू के आदर्श पुरुष विवेकानंद के चित्र की जगह आंखों में पनियल लकीर लिए एक औरत का बड़ा-सा चेहरा था. चटाई, जिस पर बाबू बैठा करते थे, अब कालीन को गर्द से बचाने के लिए उसके नीचे बिछा दी गई थी जो बड़ी होने की वजह से कालीन के आगे निकल गई थी और दिखाई दे रही थी.

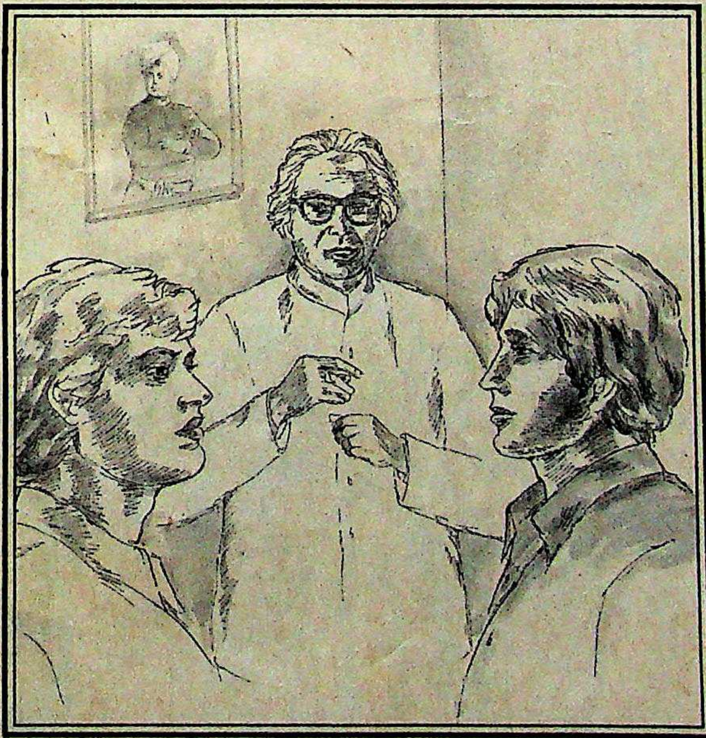

"अम्मा कैसी हैं?"—मैंने सोचा अम्मा से ही बात का कोई सूत्र निकलेगा. भुवन जवाब देता इससे पहले ही तमतमाया चेहरा लिये एक युवती ने कमरे में प्रवेश किया. एक अपरिचित को बैठा देख उसकी तेजी में कुछ कमी आई. मेरे वहां होने का पहले पता न होने के कारण वह चेहरे पर कोई खोल चढ़ाने का अवसर नहीं पा सकी थी. और फिर एक बार सामने आ जाने के बाद उसने इसकी कोई कोशिश भी नहीं की.

"फॉर गॉड सेक"—उसने बिफरते हुए भी अपने पर काबू रखने की कोशिश की और अलमारी में पहले से ही करीने से रखी चीजों को व्यर्थ में इधर से उधर रखने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हटाने में व्यस्त हो गई.

भुवन ने इस स्थिति से सबको उबारने की कोशिश में युवती की बांह पकड़कर उसे अपनी ओर घुमाया और "अमां छोड़ो, देखो—इनसे मिलो—" के वाक्यों से उसे सहलाने की कोशिश करने लगा. "मेरा खयाल है आप..." मैंने वाक्य अधूरा छोड़कर उन्हें जैसे मुअम्मा भरने को उत्साहित किया.

"आपका खयाल एकदम सही है. ये हैं कुम्मी, मेरी घरैतिन"—भुवन ने कहा और अपने 'घरैतिन' शब्द पर खुद ही ठठाकर हंस पड़ा.

बोझिल वातावरण कुछ सहज हुआ.

"तुमने किसी चिट्ठी में जिक्र नहीं किया"—मैंने शिकायत की.

"सोचा था सरप्राइज दूंगा तुम्हें पर ट्रेनिंग के बाद तुम्हारी सीधी इतनी दूर पोस्टिंग हो गई"—फिर बीच ही में कुम्मी की ओर घूमकर उसने पूछा—"क्यों, क्या बात हो गई थी?"

"नहीं कुछ खास नहीं"—कुम्मी ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए टालना चाहा.

"अब इनसे क्या छिपाना"—कहकर भुवन ने कुम्मी को उत्साहित-सा किया और कहने लगा—"सच यार, बाबू ऐसे नहीं थे. ही वाज सो कन्सीडरेट.. पर ये अम्मा हैं. बट इट्स ए ग्रेट प्रॉब्लम फॉर अस.."

इतनी देर बाद बाबू हमारे बीच आए भी, मगर बात तुरंत अम्मा की ओर मुड़ गई.

"अरे तुम कैसी बातें करते हो? वो ठहरीं पुराने जमाने की, देखो बिचारी पढ़ी-लिखी तो हैं नहीं उनको क्या दोष देना.. सब ठीक हो जाएगा धीरे-धीरे"—कुम्मी ने भुवन को शांत करने की कोशिश की.

"अब तुम्हीं बताओ, बाबू होते तो क्या घर का वातावरण ऐसा ही होता? अम्मा तो ऐसा करती हैं जैसे ये बहू न हो, उनकी दुश्मन हो कोई.. अब ये दूसरी जगह पोस्टेड हैं, एक तो ऐसे ही कभी-कभी आ पाएंगी, एक-दो दिन के लिए आईं तो बेकार का कोहराम." भुवन मुझे अपनी तरफ मिलाने की कोशिश करने लगा—"तुम्हीं न्याय करो. शादी के बाद रिसेप्शन हुआ और अम्मा अपनी कोठरी से बाहर तक नहीं निकलीं—तुम बताओ, तुम

सच, यार बाबू ऐसे नहीं थे. ही वाज सो कंसीडरेट...पर ये अम्मां हैं. बट इट्स ग्रेट प्राबल्म फार अस...अब तुम्हीं बताओ, बाबू होते तो क्या घर का वातावरण ऐसा ही होता? अम्मा तो ऐसा करती हैं जैसे ये बहू न हो, उनकी दुश्मन हो कोई...अब ये दूसरी जगह पोस्टेड हैं. एक तो ऐसे ही कभी-कभी आ पाएंगी. एक दो दिन के लिए आईं भी तो बेकार का कोहराम

होते मेरी जगह तो तुम्हें कैसा लगता?" भुवन ने एक नई बात सामने रखी.

"तुम इस बात को सबसे हमेशा इस तरह क्यों कहते हो? बीमार हो सकती हैं, थकी हो सकती हैं, आराम करने का मन हो सकता है.. पार्टी में शामिल नहीं हुई तो क्या इसका मतलब यह लगा लोगे कि.. नहीं-नहीं, यहां तुम गलत हो"—कुम्मी ने न्याय कर दिया.

"अब आजकल एक ही रामधुन है कि बाबू की बरसी आ रही है, फंड का पैसा उनका है, सारा पैसा निकालकर उन्हें दे दो"—भुवन ने खीझ भरे स्वर में कहा.

"अभी यही बात तो हुई.. अभी मुझसे भी कह रही थीं तो मैंने कहा कि ज्यादा पैसा इस पर खर्च न कीजिए तो नाराज होने लगीं, मैं फिर उठकर चली आई"—उस समय तमतमाया चेहरा होने का रहस्य कुम्मी ने अब खोला.

"देखो, मैं मानती हूं कि बाबू का यह आखिरी काम है लेकिन जरा हाथ रोककर खर्च करेंगी तो आगे उन्हीं को आराम रहेगा"—भुवन ने कहा.

"चलो, समझाना अपना फर्ज था, हमने किया. फंड में जितना पैसा है उन्हें दे दो—तुम बेकार में इस पचड़े में पड़ते ही क्यों हो"—कुम्मी ने जैसे उकताकर कहा.

"मेरा तो इन पोंगा-पंथियों में जरा भी विश्वास नहीं लेकिन भैया पैसा उनका है, मैं कौन हूं मना करने वाला"—भुवन ने कहा तो एकाएक मुझे लगा कि मैं इस घर में पहली बार आया हूं. ऐसे घर में, जहां 'मेरा-तेरा' की दुर्घटना से अकाल मौत के शिकार हुए लोग दुष्टात्मा बनकर सारा कुछ तहस-नहस किए डाल रहे हों.

शाम का धुंधलका आंगन में उतरता आ रहा था. अम्मा की कोठरी में अंधेरा गहरा गया था और बाहर की रोशनी में खड़े होकर अंदर के अंधेरे का कुछ अंदाजा नहीं मिल पा रहा था. कमरे में झांककर धीरे से आवाज दी तो मचिया पर स्थिर सफेद आकृति कुछ हिली-डुली.

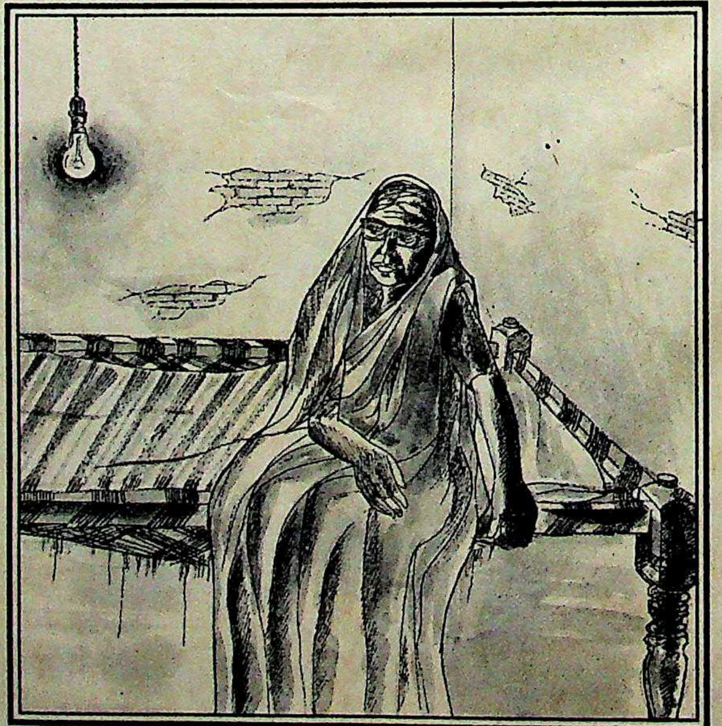

"लाइट तो जला लो अम्मा"—मैंने उनके पास जाते हुए कहा.

"हां"—अनुमान नहीं लगा सका कि उन्होंने 'हां' कहा या बल्ब जलाने के लिए उठते हुए निःश्वास के साथ कराहीं.

कमरे में मरी-मरी पीली रोशनी फैल गई. अम्मा ही थीं? आंखों के नीचे उभर आए काले-काले धब्बों ने उनकी आंखों को कोटरों में और अंदर ढकेल दिया था. कलाइयों, माथे से, और आंखों में. एक-सा सूनापन.

कोठरी में सीलन की गीली गंध अटकी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी-सी धुंआई हुई कोठरी में एक झूला गया खटोला था. एक कोने में टीन का संदूक था और एक मचिया थी जिस पर आने से पहले अम्मा बेकार बैठी अंधेरे को रही थीं.

"कब आयो?" अम्मा ने आ. उनकी आवाज रुंधी सी लगी.

"आज ही आए अम्मा."

"भैया मिले?" उन्होंने वन के बारे में पूछा.

"हां".

"बियाहौ हुइगा, तुमका वर नाईं पठाइन रहै?" म्मा जैसे कोई पोली जगह ोज रही थीं, जहां से छेद रके वे अपने और मेरे बीच छले एक साल की बातों लिए रास्ता बना सकतीं.

"नहीं."

"अइस तो न सोचा रहै. अइस जल्दी रिगै बिहाव की.. एक बरिस नाईं रुकि कत रहै?" अम्मा मेरे पास ही थीं लेकिन ह सब वह मुझसे नहीं कह रही थीं—रमो नाईं लाग दूनन का.. मार गाजा-जा, सजावट.. अरे लोगन की न सोचत एक ई अम्मे क सोच लेत... फिरौ हम कहा लो, हमरे औरु को बैइठ है.. जइस है ठीकै बड़े भाग से यू दिन आवा है.. सब बड़े-बड़े ोग अइहैं, नीक लागी.. बहुरिया आए जाई घर भर जाई.. मगर ई जो महारानी जी ाई हैं अबै भोगिउ नाईं गईं औ लच्छन खांवै लागीं.. तुमसे जो री झूठ कहित होय भैया. भर मरि-मरिके सब ावी, तइयार किया और ा के आईं औ हमसे हिन, अम्मा तुम खाना ावै मां थकि गई हुइहौ, व तक दावत चलत है तुम 'हां' वाली कुठरिया मां पउढ़ी लिए.. कहिन जब सब जने जांयें तबै कमरा मां ायो. हमहूं कहा कि ठीक है हुरिया, अब हम रहब यही ठरिया मां.. हमका अइसे लग कई दीनिन्ह जइसे हम कोढ़ियल हन.. को हियां कुठरिया मां रि दीनिन्ह." अम्मा मेरे से लगकर फूट पड़ीं. रुका हुआ बांध टूट गया ा 'रिसेप्शन' वाली कोठरी में ही रोक दिए बात याद करके हिलग-हिलगकर रो रही थीं पर मुझे लगा जैसे वह बाबू की निष्प्राण देह पर छटपटा रही थीं, जो जैसे अभी-अभी अस्पताल से लाकर आंगन में रखी गई हो.

अपनी कोठरी में अकेली बैठी और अंधेरे को ताकती अम्मा मेरे कंधे से लगकर फूट पड़ीं. रुका हुआ बांध टूट गया था. अम्मा 'रिसेप्शन' वाली रात कोठरी में ही रोक दिए जाने की बात याद करके हिलग-हिलगकर रो रही थीं. पर मुझे लग रहा था कि वह बाबू की निष्प्राण देह पर छटपटा रही थीं, जो जैसे अभी-अभी अस्पताल से लाकर आंगन में रखी गई हो

जाड़े के दिनों में बाबू धूप का पीछा करते-करते शाम को आंगन के जिस कोने में पहुंच जाया करते थे, वहां एक चमचमाता हुआ वाशबेसिन लग गया था. भुवन की पत्नी वहां हाथ धोने के लिए आकर खड़ी हो गई थी और लगातार कमरे की ओर देख रही थी.

तभी भुवन ने चाय पीने के लिए मुझे आवाज लगाई.

"हम जौउन कुछ तुमसे कहा है कुछ बतायो ना"—अम्मा ने पल्लू में नाक सिनकते हुए कहा—"जाओ, चाय पी लेव जाये के, फिर आयो, कोई दिन दुपहरियां मां आयो" —अम्मा ने फुसफुसाकर कहा और उठकर खड़ी हो गईं.

'बोन चाइना' के आसमानी रंग के प्यालों में चाय सजी हुई थी. मेरे पीछे-पीछे भुवन की पत्नी भी कमरे में आ गई थी. उसने कोने की मेज पर से छोटी काले रंग की एक पट्टी जैसी कोई चीज उठाई और बेपरवाही से उसका एक बटन दबा दिया. कमरे में मनहूसियत तोड़ते, हंसते, बतियाते रंगीन चेहरे आ बिराजे.

"ओ हां मैं तुम्हें दिखाना ही भूल गया. यह बाबू की यादगार है, फंड का पैसा मिला तो ले लिया, सोचा अम्मा का भी मन लगा रहेगा.. पूरा जापानी किट है. वैसे मानना पड़ेगा कि टेक्निकली हम लोग अभी सौ साल पीछे तो हैं ही.. अच्छा सेट है. कई एडजस्टमेंट हैं इसमें."

भुवन की बात का प्रमाण पेश किया कुम्मी ने एक और बटन दबाकर. भुवन ने बताया—"ये देखो, ये जो स्क्रीन पर एक अलग खाना बन गया है इसमें वीडियो फिल्म भी चलती रहेगी और पूरे स्क्रीन पर अपने दूर के दर्शन का सड़ियल कार्यक्रम भी... मान लीजिए आपको वीडियो फिल्म फ्रीज करनी है तो वह भी आप कर सकते हैं." कुम्मी ने एक बटन और दबाया. "फिल्म जहां की तहां रुकी रहेगी.. अरे, चाय तो एकदम ठंडी हो गई, अभी दूसरी बनवाता हूं"— भुवन ने कुम्मी की ओर घूमकर कहा—"कुम्मी डियर." मगर तभी कुम्मी ने एक और बटन दबा दिया था, इसलिए भुवन ने फिर से चाय बनाने के लिए कहने के बजाय बताना शुरू किया—"एक चीज ये भी मजेदार है— एलार्म.."

मैंने बांह सरकाकर घड़ी देखी और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ, हालांकि 'रिमोट कंट्रोल' की खूबियां अभी खत्म नहीं हुई थीं.

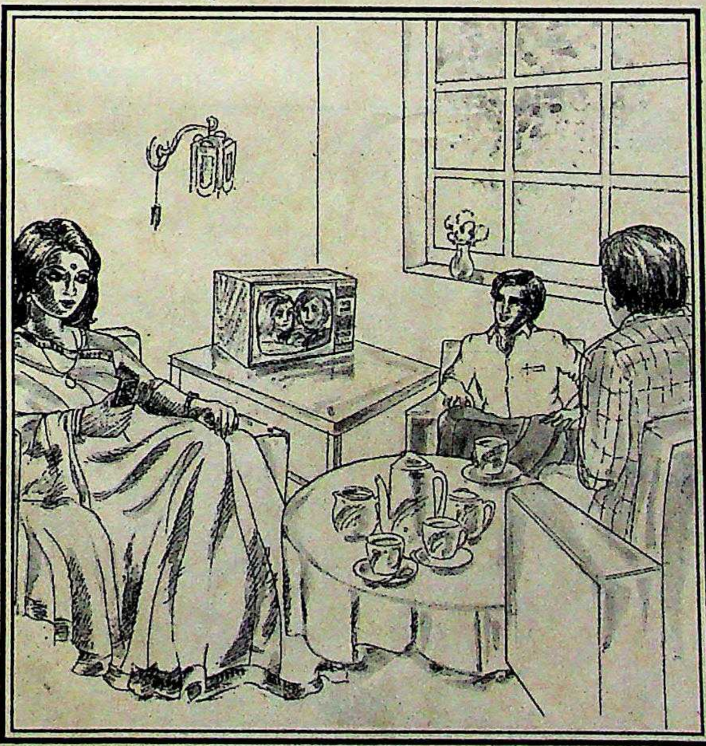

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी संग्रह

इंकलाबी उबाल

नारी संघर्ष की मार्मिक कथाएं

कस्बे की लड़की
कहानी संग्रह
क्षमा शर्मा
राजधानी प्रकाशन,
नई दिल्ली
कीमत: 35 रु.,
कुल पृष्ठ: 139

क्षमा शर्मा का 'कस्बे की लड़की' कहानी संग्रह मुख्य रूप से पुरुष प्रधान समाज की ज्यादतियों के खिलाफ संघर्षरत नारी का जेहादनुमा लंबा प्रलाप है. इसमें भारत के वे कस्बे हैं जहां की परंपरागत जीवन पद्धति में स्त्रियों के लिए कोई स्वतंत्र गुंजाइश नहीं थी. पुरुष प्रधान समाज के कायदेकानून मान लो तो सती-वती जैसा सम्मान और, भावुकता या गलती से ही न मान सको तो 'पतिता' या 'बाजारू' जैसे लांछनों का जबरन प्रसाद.

लेकिन औद्योगीकरण अपनाने की ललक में समाज को चाहे-अनचाहे प्रगतिविरोधी परंपराओं तथा रूढ़ियों में संशोधन करना पड़ा और आवश्यकता पड़ने पर त्यागना भी पड़ा. इस तरह सदियों के बाद हमारे देश में पहली बार महिलाओं, विशेषकर मध्यमवर्ग की महिलाओं के लिए स्वतंत्र गुंजाइश ने जन्म ले लिया. अब वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकती थीं. पुरुष, परिवार, बच्चे, समाज—उनकी भावनात्मक आवश्यकता थे, उनके गले से जबरदस्ती झूलते पत्थर नहीं. शुरू में यह प्रवृत्ति बड़े शहरों तक सीमित थी पर अब यह छोटे शहरों, कस्बों तथा गांवों तक फैलती जा रही है.

लेकिन यह सब सहज-स्वाभाविक रूप में नहीं हुआ. यह सब पाने के लिए औरतों को जूझना पड़ा. क्षमा शर्मा की इन कहानियों में कस्बे की यही संघर्षरत औरत है. उसे अनजान राह पर चल निकलने के कष्ट भी सहने पड़ रहे हैं और पुरुषों के अतीतोन्मुख अहंकार का सर्पदंश भी भोगना पड़ रहा है. घेर की चारदीवारी से बाहर दफ्तरों या कारखानों में काम कर रही औरत इन मर्दों के लिए 'बाजारू' है. 'कस्बे की लड़की' आर्थिक आत्मनिर्भरता और पुरुष प्रधान समाज की कटूक्तियों—एक साथ दोनों के दबाव में रहती है. इन दोनों दबावों को वहन कर रहे पात्रों की मदद के लिए अक्सर कथाकार वहां उपस्थित हो जाती है और 'नारी मुक्ति' का आवेशित भाषण दे डालती है. कहानियों का कमजोर पक्ष यही है. शायद कथाकार आवेश को कहानी कला की सीमाओं में बांधना उचित नहीं समझती. लेकिन इन रचनाओं में 'कस्बे की लड़की' की व्यथा, पीडा, छटपटाहट, आक्रोश असहाय स्थिति, इंकलाबी उबाल और समाज की विराट जड़ता के आगे उसकी निरर्थकता—सभी को महसूस किया जा सकता है. और यही इस संकलन की खासियत भी है और ताकत भी.

अगर इन मार्मिक कहानियों में अधिकतर महिला कथाकारों जैसी निर्जीव वैचारिकता नहीं है तो इसे संकलन का गुण ही माना जाएगा. 'जिंदा है प्रतिभा बर्मन', 'अनुभव जी', 'कस्बे की लड़की' और 'पिता' संकलन की प्रतिनिधि रचनाएं मानी जा सकती हैं.

—गौरीशंकर कपूर

कविता संग्रह

सफल संयोजन

विश्व कविता का जायजा

भारत सरकार तथा भारत भवन के संयुक्त संयोजन में पंडित नेहरू की जन्म शताब्दी के अवसर पर विश्व कविता समारोह का आयोजन किया गया. इस समारोह में संसार के अनेक महत्वपूर्ण कवियों ने हिस्सेदारी की तथा उन्हीं की अनूदित कविताओं से एक किताब भी तैयार की गई—'पुनर्वसु'. इसके संपादक अशोक वाजपेयी ने 43 कवियों की 193 कविताएं यहां संकलित की हैं जिनमें से कुछ के अनुवाद तो सीधे मूल भाषा से किए गए हैं और अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हमारे सामने आए हैं.

पुनर्वसु
कविता संग्रह
सं.: अशोक वाजपेयी
राजकमल प्रकाशन,
नई दिल्ली
कीमत: 175 रु.;
कुल पृष्ठ: 459

इस चयन की सभी कविताओं से गुजरकर जहां कविता की संवेदनशील प्रहारता पर विश्वास दृढ़ होता है, वहीं यह भी लगता है कि पूरे विश्व की त्रुटियों से लोहा लेने के लिए कविता वाकई कितनी करामाती विधा है. प्रकृति, प्रेम, विवशता, युद्ध तथा स्वयं कविता के कटघरों में खड़ी होकर ये कविताएं मानो पाठक को एक चिट्ठी लिखती हैं जिसमें हमारे भीतर मौजूद गहरे सड़ाव की गंध का ढक्कन खुल जाता है. हमारे स्थायी विकारों में ये कविताएं सफल जासूसों की तरह घुसती हैं और प्रायः अपनी अवसादपूर्ण भाषाई चमक से हमारे दिलों को एकबारगी तो आलोकित कर ही देती हैं. मलिन मनरो को जो लोग केवल 'सेक्स की पुड़िया' के रूप में जानते हैं तो वे कार्देनाल की यह पंक्ति जरूर पढ़ें कि 'वह भूखी थी प्यार की और हमने दीं उसे नींद की गोलियां'...और तब 'देखें कि अब वे मनरो को क्या सोचते हैं?'

प्रसंगतः हेनरिक नोर्डब्रांट की एक संकलित कविता 'गृहयुद्ध' भी देखी जा सकती है: 'चांद जिस पर चमकने आया था/वह उसे नहीं मिल पा रहा/पुताई झर चुकी है मकानों की/नदीतल हो चुका है खुश्क/और जवान विधवाएं/ भूल चुकी हैं कि कैसे उठाते हैं सिर'. वस्तुतः आदमी के बाहर और भीतर घट रही आज की दुनिया का शाब्दिक बयान हैं ये कविताएं जो कि कभी डराती हैं, सच के नए-नए नाम बताती हैं, दिवालिया हो गयी मानवता को थहाती हैं और जीवन की अग्निशिखा पर जमी धूल को भी हटाती हैं.

अच्छी कविताओं की इस भुखमरी में 'पुनर्वसु' की कविताएं हमें संतोष देती हैं. साहित्य की इस विधा के कुनबे को एक जिल्द में जुटाने का काम अनुवादकों के लिए भी महत्वपूर्ण रहा होगा. हिंदी के लगभग सभी ख्यात कवियों ने इन कविताओं को अनूदित किया है. विश्व कविता का आधुनिक मुहावरा तथा जायजा इस किताब से निश्चय ही प्राप्त किया जा सकता है.

मगर बावजूद इस सबके कविताओं का वाया अंग्रेजी आना कुछ खलता है. कवियों/कविताओं के चयन में एक निश्चित सीमा तो यह है ही. यदि मूल भाषा से ही सीधे अनुवाद करवा लेने की योजना को कार्यरूप दिया जा सकता तो शायद पाठक के पास कविता का अपेक्षाकृत अधिक असली रूप आ जाता. यह बात केवल अनुमान के तौर पर ही कही जा सकती है कि मूल कविता का यह 'अनुवाद' देह है या आत्मा या फिर दोनों? मगर यह भी स्वीकार योग्य है कि यदि ये मात्र देह भी हैं तो भी सफल कविताएं हैं. इस किताब को इसलिए भी तरजीह देनी चाहिए क्योंकि अपनी तरह की एक शुरुआती किताब है.

—राजकुमार गौतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करा-
ा, युद्ध
होकर
चिट्ठी
द गहरे
ता है.
सफल
अपनी
दिलों
देती हैं.
क्स की
तो. वे
क 'वह'
ी नींद
अब थे

क संकु-
मकती
था/वह
चुकी है
क/और
कैसे
बाहर
या का
क कभी
ती हैं,
ाती-हैं
ी धूल

री में
ती हैं.
ी एक
कों के
दी के
कवि-
कविता
ा इस
ा जा

शेरों का
वियों/
सीमा
सीधे
ार्यरूप
पास
ी रूप
क तौर
कविता
फिर
है कि
सफल
र भी
ह की

Digitized by Arya Sam... Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निप्पोन डेनरो इस्पात ने दी है स्टील को एक नयी रंगीन पहचान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सेन्ट्रल मार्केटिंग ऑफिस: 'गुमान' छठी मंज़िल, 77 रेज़िडेन्सी रोड, सदर, नागपुर - 440 001 फ़ोन: 25742, 25750 टेलेक्स: 0715-426 NDIL IN फ़ैक्स: 0712-33194 ग्राम: 'NIPPON

Digitized by Arya Sa

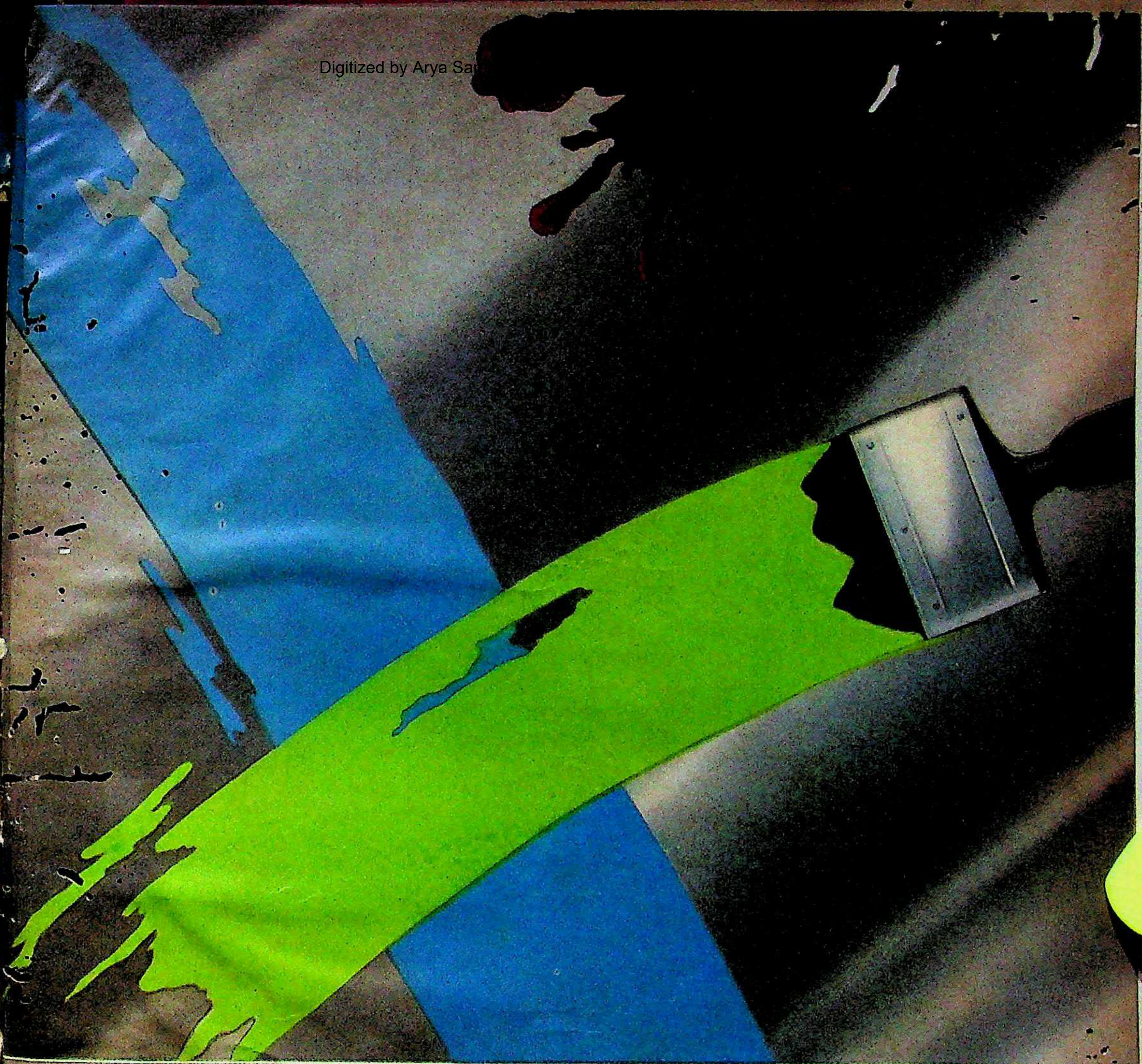

अब प्रस्तुत हैं...भारत में पहली बार! घरों एवं दफ़्तरों की आंतरिक एंव बाहरी साज सज्जा, वाहनों के भीतरी व बाहरी भागों, फ़र्नीचर और उपकरणों के लिये रंगीन स्टील शीट्स।

स्टील - जिसके बिना बहुत सी चीज़ों की कल्पना ही नहीं की जा सकती. स्टील - जो सभी उद्योग धन्धों की रीढ़ है... और निरंतर बदलते विश्व में भी कभी नहीं बदलती.

स्टील - बहुत मज़बूत और बहुपयोगी! लेकिन बेजान व अनाकर्षक.

अब निप्पोन डेनरो इस्पात ने स्टील को एक नयी पहचान दी है - रंग! भारत में इससे पहले कभी भी आकर्षक रंगों में रंगी स्टील शीट्स उपलब्ध नहीं थी.

कलर कोटेड, पी वी सी कोटेड शीट्स और अन्य रासायनिक कोटिंग वाली शीट्स, जो अधिक टिकाऊ और मज़बूत हैं.

रंगीन स्टील शीट्स - जो उत्पादनों में एक नई जान डाल दें - और आकर्षक भी बनायें. ये स्टील शीट्स फ़ाल्स सीलिंग, वॉल पैनलिंग, रेलवे कोच के भीतरी भागों, छतों, फ़र्नीचर, बसों, कारों तथा स्कूटरों की बॉडी और घरेलु उपकरणों के लिए अति उपयोगी है.

निप्पोन डेनरो इस्पात लि. की ये रंगीन शीट्स ज़्यादा मज़बूत, अधिक उपयोगी और कल्पना से कहीं अधिक खूबसूरत हैं.

ISPAT

NIPPON DENRO ISPAT LTD.

Park Plaza (Ist Floor), 71, Park Street, Calcutta-700016

THE NEW BREED OF STEEL

Mudra:D:NDL:7380/Hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामस भोजानी

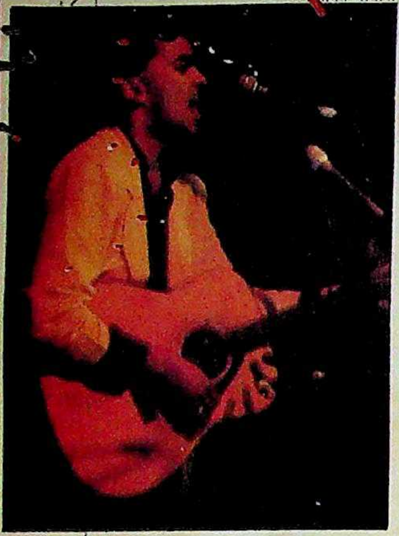

रेमो: दूरदर्शन से शिकायत

◆ श्रोताओं को थिरका देने वाले पॉप संगीत पर तैयार कार्यक्रम को किस कदर नीरस और ऊबाऊ बनाया जा सकता है यह कोई दूरदर्शन से सीखे. इतवार की रात नौ बजे 'पॉप टाइम' में पॉप गायक **रेमो फर्नांडीस** को जिस तरह पेश किया गया उससे वे बेहद परेशान हैं क्योंकि पुराने स्टुडियो शॉट्स को जोड़कर बनाए कार्यक्रम में न कल्पनाशीलता थी न काव्यात्मकता. हताश रेमो की प्रतिक्रिया थी, "इस प्रोग्राम ने तो मेरी प्रसिद्धि का कबाड़ा ही कर दिया. दूरदर्शन ने सरासर बेइंसाफी की है." रेमो को अब कौन बताए कि दूरदर्शन के मामले में यह कोई नई बात नहीं.

◆ प्रधानमंत्री बदले तो निजी सचिव भी बदले. लेकिन खासियत यह है कि देश के नए प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के 50 वर्षीय सचिव **हरप्रसाद शर्मा** भी उन्हीं के सांचे में ढले लगते हैं. राजीव के सचिव जॉर्ज के विपरीत शर्मा हर तरह के प्रचार से दूर ही रहते हैं. उत्तर प्रदेश कॉडर के इस आईएएस अधिकारी ने अपनी नौकरी के 25 में से 15 साल वी.पी. सिंह के साथ ही बिताए हैं. इतिहास में एम.ए. शर्मा ने इलाहाबाद विवि में चार साल पढ़ाया भी है. लेकिन इस नई भूमिका में उनका इतिहास ज्ञान नहीं बल्कि वे गुण काम आएंगे जो उनकी पहचान बन चुके हैं यानी नम्रता से सीधी दो टूक बात कहने का लहजा और गैर-बनावटी रंग-रूप. ऐसे गुण बहुत कम ही देखने को मिलते हैं.

शर्मा: वी.पी. के जॉर्ज

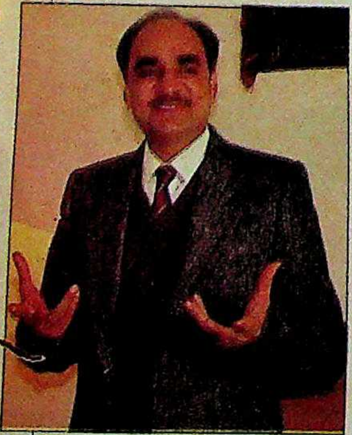

शरद सक्सेना

◆ हर समारोह में वैभव और शानो-शौकत के प्रदर्शन के लिए विख्यात कपूर खानदान का यह समारोह वैसा नहीं था. लेकिन 22 वर्षीया **संजना कपूर** और 26 **वर्षीय आदित्य भट्टाचार्य** ने शादी की रस्में पूरी होने के बाद कपूर खानदान के युवा सदस्यों के साथ जो रंग जमाया वह याद रह जाने वाला था. आम तौर पर ऐसे मौकों पर नाच-गाने में सबसे आगे रहने वाले पापा शशि कपूर और ताऊ शम्मी कपूर इस बार सिर्फ दर्शक ही बने रहे. और खानदान के युवा लड़के रात भर नाचते-गाते-झूमते रहे. आदित्य का कहना था, "छह साल पहले हम पृथ्वी थिएटर में ही एक-दूसरे से मिले थे और आज इसी थिएटर में शादी करना बहुत अच्छा लग रहा है." पृथ्वी थिएटर का शायद यह सबसे कामयाब शो था.

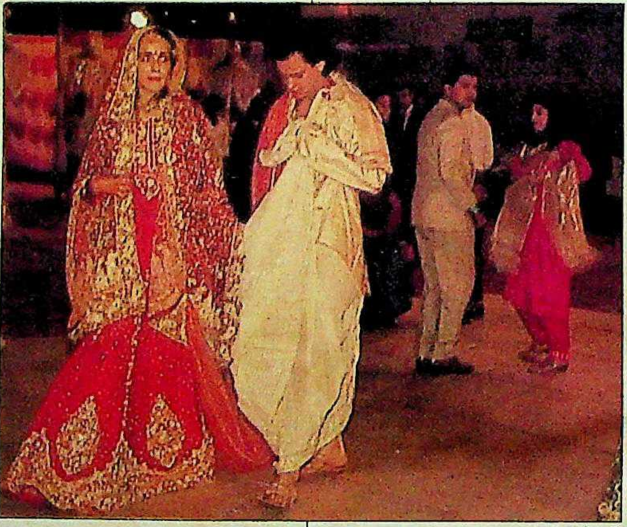

नामस भोजानी

संजना और आदित्य

गडोरा: रोमांचक अनुभव

◆ इसे सचमुच लंबी दौड़ ही कहा जाना चाहिए क्योंकि इसका फल उन्हें सोने-चांदी के रूप में मिल रहा है. पिछले पखवाड़े तीस वर्षीया **सुनीता गडोरा** ने सिंगापुर में आयोजित मोबिल अंतरराष्ट्रीय मैराथन में 23 देशों के 5,000 प्रतियोगियों को पछाड़कर रजत पदक झटक लिया. थाईलैंड में अंतरराष्ट्रीय मैराथन में रजत और मलेशिया से स्वर्ण पदक जीत लाने वाली सुनीता के लिए इनसे बढ़िया उपहार और क्या हो सकते थे. वे कहती हैं, "सचमुच यह एक रोमांचक अनुभव है."

◆ अब तक वे पार्टियों के [illegible] बंधन में मसरूफ रहे. पर इस बार राष्ट्रीय नहीं घरेलू मोर्चे की [illegible] थी. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि ने पिछले पखवाड़े अपनी बीस वर्षीया बेटी **कणिमोड़ी** का गठबंधन 25 वर्षीय **अदीपन बोस** से कर दिया. अदीपन जहां लखपति पिता के वारिस होंगे, वहीं कविता की शौकीन दुल्हन को अपने पिता की विरासत—राजनीति में 'कतई दिलचस्पी नहीं है.' यह बात अलग है कि उनकी शादी में राजनीति के दिग्गज सितारे—ज्ञानी जैल सिंह, देवीलाल और नंदमूरि तारक रामराव भी पहुंचे, शायद द्रमुक के मुखिया को लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी की भारी पराजय पर सांत्वना देने.

कणिमोड़ी और अदीपन

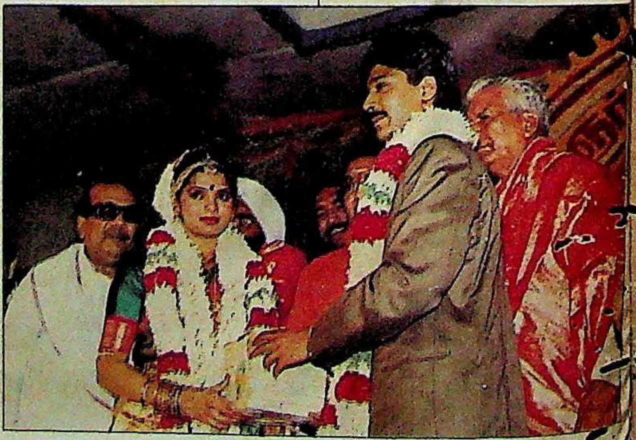

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1?.9-2009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar